



सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

९

(सितम्बर १९८-नवम्बर १९९)



प्रकाशन विभाग
सुषमा बीर प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

सितम्बर १९६३ (माघपद १८८५)

© मधुजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद १९६३

साम्ने ताल कपडे

कापीराइट

मधुजीवन ट्रस्टकी सौजन्यपूर्ण अनुमतिसे

निदेशक प्रकाशक विनाय बिस्वी-१, द्वारा प्रकाशित
बीर भीमजी बाह्यामाई देसाई, मधुजीवन प्रेस अहमदाबाद-१४ द्वारा मुद्रित

आभार

इस सम्बन्धी सामग्रीके लिए हम साबरमती आयम संरक्षक तथा स्मारक ट्रस्ट और संग्रहालय नवजीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ प्रशासन अहमदाबाद गांधी स्मारक निधि तथा संग्रहालय नई दिल्ली भारत सेवर समिति (सर्वोच्च ऑफ इंडिया सोसाइटी) पूना क्लोनिडस ऑफिस तथा इंडिया ऑफिस पुस्तकालय सभन प्रिटोरिया आर्कडिम्ब प्रिटोरिया श्री कम्पलाक गांधी अहमदाबाद श्री अरुण गांधी बम्बई श्री अरुण बेस्ट श्री सी० एम डोक स्वर्गीय श्री एच एच एक पोरुक् श्री लई फिथर श्री नारणदास गांधी श्रीमती मुधीकाबेन गांधी तथा बापुना बाने पत्रो इन्डिपेन्डो उद्धारक कक्षा मुस्तफा कामेरु पाधानो श्रीनलचरित्र तथा श्रीजा सेखो गांधीजीना पत्रो गांधीजीनी साधना श्रीननु पराड महारमा साइड ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी एम के गांधी एन इंडियन पेट्रिअट इन साउथ आफ्रिका (मो क गांधी इतिहास आफ्रिकामें एक भारतीय वेदमन्त्र)

एम के गांधी ऐंड साउथ आफ्रिकन इंडियन प्रोग्राम (मो क गांधी और इतिहास आफ्रिकी भारतीयोंकी समस्वा) तथा टॉन्सॉय ऐंड गांधी आधिके प्रकाशक और इंडिया इंडियन ओपिनियन केप टाइम्स गुजराती नेटाल मन्सरी रीड बेसी मेक स्टार तथा ट्रान्सनाक सीडर आदि समाचारपत्रोंके आभारी हैं।

अनुसंधान और संदर्भकी सुविधाके लिए कश्मिळ भारतीय कांग्रेस कमेटी पुस्तकालय गांधी स्मारक संग्रहालय इंडियन कौंसिल ऑफ बर्डे अफमर्स पुस्तकालय और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालयके अनुसंधान तथा संदर्भ विभाग नई दिल्ली साबरमती संग्रहालय और गुजरात विद्यापीठ प्रशासन अहमदाबाद श्री प्यारेसाक नैपट, नई दिल्ली और कामजातकी फोटो-अफिस तैयार करनेमें सहायताके लिए सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालयका फोटो विभाग हमारे बन्धुभावके पात्र हैं।

पाठकोंको सूचना

विभिन्न अधिकारियोंको लिखे गये प्रार्थनापत्र और निवेदन अक्षरारोंको भेजे गये पत्र और समाजोमें स्वीकृत किये गये प्रस्ताव जो इस सत्रमें सम्मिलित किये गये हैं उनको गांधीजीका लिखा गानेके कारण बीसे ही है बीसे कि एण्ड १ की भूमिकामें दिये जा चुके हैं। जहाँ किनी लेखको सम्मिलित करनेके विनये कारण है वहाँ वे पाठकियोंमें बढा दिये गये हैं। इंडियन ओपिनियन में प्रकाशित गांधीजीके लेख जिनपर उनके हस्ताक्षर नहीं हैं उनको आत्मकथा-सम्बन्धी लेखोंकी सामान्य छापी उनके सहयोगी श्री छपनसाह मांजी और हेनरी एच एम गोसवती सम्मति और अन्य उपलब्ध प्रमाण-सामग्रीके आधारेपर पहचाने गये हैं।

अंग्रेजी और मुद्रणतीने अनुवाद करनेमें अनुवादको मूकके समीप रखनेका पूरा प्रयत्न किया गया है। किन्तु साथ ही अनुवादकी भाषा सुपाठ्य बनानेका भी पूरा ध्यान रखा गया है। अनुवाद मूक सामग्रीकी भाषेकी स्पष्ट भूमि सुधारनेके बाद किया गया है और मूकमें व्यवहृत शब्दोंके संश्लेष रूप मबासम्भव पूरे करके दिये गये हैं। यह ध्यान रखा गया है कि नामोंको सामान्यतः वीसा बोसा जाता है वीसा ही लिखा जाने। जिन नामोंके उच्चारण सन्दिग्ध हैं उनको वीसा ही किया गया है वीसा गांधीजीने अपने गुजरगुठी लेखोंमें लिखा है।

मूक सामग्रीके बीचमें चौकोर कोष्ठकोंमें बी गई सामग्री सम्पादकीय है। गांधीजीने किसी लेख भाषण वक्तव्य आदिका जो बंध मूल रूपमें उद्धृत किया है वह हासिया छोड़ कर गहरी स्वाहीमें छापा गया है लेकिन यदि ऐसा कोई बंध अनुरित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोड़कर, साधारण ग्राहकोंमें ही छापा गया है। इस अण्डमें उपलब्ध मापकोंके परोक्ष विवरण और व्यापारिकोंके कार्य-विवरण तथा वे सत्र जो गांधीजीके कहे हुए नहीं हैं बिना हाशिया छोड़े गहरी स्वाहीमें छापे गये हैं।

शीर्षककी छेदन-तिथि जहाँ उपलब्ध है वहाँ वारों कोनेमें उभार दी गयी है किन्तु जहाँ वह उपलब्ध नहीं है वहाँ उसकी पूर्ति अनुमानसे और चौकोर कोष्ठकोंमें की गई है और जहाँ आवश्यक हुआ है उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। शीर्षकके अन्तमें साधन-सूचके साथ ही गई तिथि प्रकाशनकी है।

सत्यता प्रयोगो मयबा आत्मकथा और दक्षिण आफ्रिकामा सत्याग्रहो इतिहास के अनेक संस्करण होनेसे उनकी पृष्ठ-संख्याएँ विभिन्न हैं इसलिए हवाका देनेमें केवल उनके मान और अम्बावका ही उल्लेख किया गया है।

साधन-सूत्रोंमें एच एन सकेत साधनमती संघहास्य अहमदाबादमें उपलब्ध सामग्रीका भी एन गांधी स्मारक निधि और संघहास्य नई दिल्लीमें उपलब्ध कागजपत्रोंका और सी डब्ल्यू कलेक्ट्रेड बर्नस बोर्ड महाराजा गांधी (सम्पूर्ण गांधी बाइबल) द्वारा संयुक्त पत्रोंका सूचक है।

पृष्ठभूमिका परिचय देनेके लिए मूकसे सम्बद्ध कुछ सामग्री परिशिष्टोंमें दे दी गई है। अन्तमें साधन-सूत्रोंकी सूची इस सत्रसे सम्बन्धित काकका तारीखवार-कुलात्त और इस सत्रकी पारिभाषिक अम्बावकी भी दी गई है।

प्रस्तावना

इस वर्षमें सितम्बर १९ / से नवम्बर १९ ९ तक की सामग्री दी गई है। इसका आरम्भ द्वांसवाचके सत्याग्रह-आन्दोलनमें लेनी जाने और अन्त अन्तसे गांधीजीके जानेके साथ होता है। वे चार महीने तक द्वांसवाचकी समस्याकी बाह्यभीत द्वाय सुझानेका अन्तवत् प्रयत्न करते रहे। किन्तु यह निष्फल हुआ। राजनीतिक झगड़ोंको हल करनेके लिए सचपके साथ-साथ समझौतेका प्रयत्न करते रहना गांधीजीके सत्याग्रह-दर्शनका मूल तत्व था। सार्वत्रिक गतिविधियाँ पीछे पीढानके प्रति सदैव ही उनका एक निश्चित नैतिक दृष्टिकोण रहता था। इस कालमें सत्याग्रहकी उनकी कल्पनाके साथ ही हम उनके उक्त नैतिक दृष्टिकोणका भी एक निश्चित स्वरूप ग्रहण करते हुए पाते हैं।

सन् १९ ८ के अगस्त माहके उत्तरार्धमें पंजीयन-प्रमाणपत्रोंकी जो सामूहिक होखी बचाई गई, उसने सत्याग्रहके पुनराारम्भके लिए एक नाटकीय पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। सितम्बर २ के सरकारी गजट में एशियाई पंजीयन संशोधन अधिनियम प्रकाशित हुआ। यह अधिनियम स्पेस्यता पंजीयनको ठीक करता था लेकिन १९ ७ के उस शोभजनक अधिनियम २ को रद्द नहीं करता था जिसे गांधीजीने कथनानुसार स्मृत्सने रद्द करनेका वादा किया था। अधिनियमको रद्द कराने और शिक्षित भारतीयोंके लिए उपनिवेशमें प्रवेशका अधिकार प्राप्त करानेके लिए गांधीजीको सत्याग्रहके अलावा कोई दूसरा चारा दिखाई नहीं पड़ा। तथापि सत्याग्रह आरम्भ करनेसे पहले उन्होंने दूसरे रास्तोंसे परिस्विति सुधारनेके प्रयत्न किये। सितम्बर ९को ब्रिटिश भारतीय संघने उपनिवेश-मन्त्रीको एक निवेदनपत्र भेजा। पत्रमें, पंजाबियों और मूठपूर्व सैनिकों आदि भारतीय समाजके विभिन्न वर्गों भी प्रार्थनापत्र भेजे। सम्भव इसी समय गांधीजी और उनके सहयोगी हॉस्केनसे मिले और समझौतेके लिए जो कसबे-कस घटते हो सकती थीं उन्हें उनके सामने रखा। लेकिन ये सारे प्रयत्न विफल हुए।

एक शिक्षित भारतीयके मते प्रवेशके अपने अधिकारको दृढ़तापूर्वक बतानेके विचारसे अर्धनक एक प्रमुख पारसी संरक्षक — सोराबजी — नेटालकी सीमा पार करके द्वांसवाचमें शामिल हुए। इस बन्दनाके साथ ही सत्याग्रहने अपने दूसरे चरणमें प्रवेश किया। इस बार गिरफ्तार किये गये सत्याग्रहियोंको सख्त कैदकी सजाएँ दी गईं। स्वयं गांधीजीको द्वांसवाचकी सीमामें प्रवेश करने और अपना पंजीयनपत्र न दिखा सकनेके कारण दो-दो बार जेलकी सजा मोगनी पड़ी। वे अपना प्रमाणपत्र तो पहले ही मागको होम चुके थे। दिसम्बर ११ १९ ८को उन्हें दो महीनेकी और फिर फरवरी २५, १९ ९को ३ महीनेकी जेलकी सजा हुई, और दोनों बार सख्त कैद मिली। गांधीजीने बाबमें लिखा कि जेलमें रहते हुए वे अपने-आपको शस्त्रवाचका सबसे मुझी आचमी मानते थे। सामान्य अधिकारोंसे वंचित होकर अपना बन्दक जीवन पीनेकी अपेक्षा वे जेल भागना बेहतर समझते थे। इंडियन ओपिनियन में जेलके अपने अनुभवोंके बारेमें लिखते हुए उन्होंने उन अनेक कष्टोंका जिक्र किया जो उन्हें अन्य भारतीय कैदियोंके साथ भागने पड़े थे। उदाहरणार्थ जेलमें सुराक कार्यालय और अनुपमुक्त थी। उन्होंने सुराकमें सुराकके लिए प्रार्थनापत्र दिये और जो सुराक

मिलती थी उसके प्रति असन्तोष और रोष व्यक्त किया किन्तु किसी विशेष रियायतको केवल अपने लिए सेगसे इनकार कर दिया। कठोर कारावास का मतलब कभी सड़क बनाता कभी मगरपासिकाके बाटर बसंतकी सफाई करता कभी मैमिकोकी कन्नोकी मुभराई करता कभी जेलके फर्श और परबाजोंको साफना-पोंछना भादि होता था। गांधीजीने ये सब काम सहर्ष किये। एक बार उन्हें कैदियोंकी बर्दीमें अपना साध सामान ढाढे हुए ओहानिसबमें रसमे स्टेजमे जोड़ानिसबमें जेल तक पैदल ले जाया गया। एक दूसरे मौकेपर वे जोर डालुओंकी तरह हूपकड़ी पहनाकर गबाही बनेके लिए अवाञ्छित पैदल ले जाये गये। गांधीजीने अपने इन अनुभवोंकी बात बिना किसी प्रकारकी कटुता महसूस किये बड़े भाषीन और जबरन बड़े ही पुरमजाक ढंपसे किम्बी। इन अनुभवोंका उत्तर अगर कोई जबरन हुआ तो यह कि तारिखक दृष्टिसे सोधनेका उमका स्वभाव और भी बूढ़ हो गया। किन्तु उनके साथ होनेवाले दुर्घटनाएँकी जबर एव एस एक पोलकके द्वारा प्रकाशमें आई और बसिज जाधिकाके समाधारपत्रोंमें इसकी बड़ी चर्चा हुई। परिणामत ब्रिटेनकी संसदमें इसपर प्रश्न पूछे गये। अधिकारियोंने कैफियत दी कि गांधीजी किसी विशेष सुविधाके हक्कार नहीं थे। यह तो यह है कि गांधीजीने किसी प्रकारकी विशेष सुविधाकी कभी भी इच्छा हा नहीं की। जनवर १९८ में जब कस्तूरबा छान्त बीमार थी उस समय गांधीजीका उनके पास होना बकरी था। वे स्वयं ऐसा चाहते भी थे। लेकिन उन्होंने ज़ुर्माना देकर जेलसे रिहाई पाना स्वीकार नहीं किया।

भारतीयोंका जन-आन्दोलन जारी रहा। चलता देता बिना परवाता फेटी जगाना और व्यापार करना मॉनेपर पंजीयन-अमाजपत्र न दिखाना अँगुठोंकी छाप देनेसे इनकार करना और नेटाककी सीमा पार करके ट्रांसवालमें प्रवेश-निषेधका उल्लंघन करना — इन सभी रूपोंमें यह चलता रहा। संघर्षका एक नया और महत्वपूर्ण पहलू यह था कि जो भारतीय महिलाएँ जबतक रुड़ियोंके कारण इन सब चीजोंसे जसग छुटी आई थीं वे भी जागे आईं, और सत्याग्रहका समर्पण करनेके लिए उन्होंने एक महिला संघकी स्थापना की। सरकारने आन्दोलनका जबाब गिरफ्तारी ज़ुमनि और सख्त कैदकी सजा तथा निर्वासनकी नीति अपनाकर दिया। निर्वासितोंको ट्रांसवालकी सीमासे बाहर निकालकर पुर्तगाकी अधिकारियोंके सहयोगसे डेलगोआ-वेके रास्ते भारत भेज दिया जाता था। जून १९१९ तक जेल जानेवालोंकी संख्या २५ तक पहुँच गई थी। अपने अन्तिम चरणमे उत्पाग्रह आन्दोलनमें एक नई बात यह पैदा हुई कि बहुत-से प्रमुख भारतीय व्यापारियोंने अपना माल-जसबाज तथा अन्य साधन-सामग्री अपने युरोपीय साहूकारोंको सौंप देना बेहतर समझा, लेकिन व्यापारिक परवाने पानेके लिए अपने पंजीयन-अमाजपत्र दिखानेकी अग्रमातजसक स्थिति स्वीकार करनेसे उन्होंने इनकार कर दिया। इसके फलस्वरूप उन्हें बहुत कष्ट उठाने पड़े महात्मा कि कुछ क्रोध तो दिखलिया हो गये। किन्तु फिर भी सत्याग्रही अपने व्यापारित संघर्षके सारे परिणाम सेलनेके लिए तैयार थे।

हाँस्कनकी अध्यक्षतामें संघटित युरोपीय समिति युरोपीयोंके एक ऐसे बर्गका प्रतिनिधित्व करती थी जो भारतीय समस्वाके प्रति उदार दृष्टिकोण अपनातेका समर्थक था। इस समितिने ट्रांसवालकी सरकारको इस विषयमें अनेक निवेदनपत्र दिये और ब्रिटेनके लखबारोंमें पत्र प्रकाशित किये। किन्तु इन प्रयत्नोंका कोई ठोस परिणाम नहीं निकला। तथापि धीरे-धीरे

दक्षिण आफ्रिकाके समाचारपत्रोंका एक सत्याग्रह खान्दोलनके प्रति कुछ मुझायम पड़ा। मई १९१९ में जब गांधीजी जेलसे छूटे उस अवसरपर प्रिटोरिया म्यूज ने अपन सत्याग्रहीयमें कहा कि गांधीजी खन्तपालाकी आवाजपर कष्ट भोग रहे हैं। उनका उद्देश्य "बहुत उष्ण और उनके तरीके पुरु हैं।" उसने ट्रान्सवाल सरकारसे अनुरोध किया कि ऐसे व्यक्तिको बारम्बार जेल भेजनेकी जगह उसके सहयोगी कुछ साम उद्योग खोलें। जून १९१९ में भारतीयोंके एक ऐसे समिति का अवतरण सत्याग्रहसे दूर रहा था एक समझौता-समिति स्थापित की। गांधीजीको इन समितिके प्रयत्नोंकी सफलतामें विश्वास नहीं था कि मी उन्होंने समितिके प्रति सम्मान रखा। समितिको माँगोंको जब अनुरोध स्मृत्यन्त उकरा दिया तो गांधीजीको इसपर कोई आश्चर्य नहीं हुआ।

गांधीजी स्वयं सत्याग्रह जारी रखनेके पक्षमें थे किन्तु अपने सहयोगियोंके विचारोंका ध्यान करते हुए उन्होंने जून १९१९ में समझौता-कार्यकी विषयमें एक और प्रयास" करना स्वीकार कर लिया। सत्याग्रहका अन्त बस तो हूँ हासिलमें उनके पास था ही। परिस्थितियाँ भी समझौता-कार्यके पक्षमें लयती थीं। दक्षिण आफ्रिकी उपनिवेशोंका मंत्र स्थापित करनेके प्रस्तावको अन्तिम रूप दिया जा रहा था। सत्य-स्थापनाके इस प्रयत्नको दक्षिण आफ्रिकाके भारतीय छात्रोंकी दृष्टिके देख रहे थे। गांधीजीने भी कहा कि यदि साम्राज्यीय सरकार भारतीयोंको कुछ संवैधानिक संरक्षण दिये जानेका आग्रह नहीं करेगी तो सम्भावना इसी बातकी है कि स्व-सरकारके अधीन भारतीयोंकी रक्षा और भी उत्तम हो जायेगी और उन पर अधिक नियंत्रण कायम दिये जायेंगे। दक्षिण आफ्रिकाके राजनयिक नेता सत्य-विषयके प्रतिकेपर विचार-विमर्शके लिए इंग्लैंड जा रहे थे। यह तीव्र ही इंग्लैंडकी संसदमें पेश होनेवाला था। आम तौरपर यह अनुभव किया जा रहा था कि साम्राज्यीय सरकारके बीच-बचावके एक सन्तोषजनक समझौता करानेका यह एक सुभवतर हो सकता है। गांधीजीने यह स्वीकार किया कि परिस्थिति देखते हुए यह उचित प्रतीत होता है कि एक विप्लवजनक इंग्लैंड जाये। जून १९१९ का त्रि भा संघर्ष था विप्लवजनक—एक इंग्लैंड और एक भारत—संघर्षका निरूपण किया। इन विप्लवजनकोंका उद्देश्य इंग्लैंड और भारतकी जनताको ट्रान्सवालके संघर्षका महत्त्व बताना और साम्राज्यीय सरकारको हस्तगत करनेके लिए राजी करना था। ट्रान्सवाल सरकारने आक्रामक बचाबी कार्रवाई करके विप्लवजनकोंके उपागार निरर्थक मरस्योंको गिरस्तार कर लिया। गांधीजीने संघर्षका पैदाकरण सुझानके प्रयत्न द्वि पर विफल हुए। अन्त में २३ को गांधीजी और हानी हबीब इन ७ मरस्योंका एक विप्लवजनक इंग्लैंडके लिए रवाना हुआ। हमारे विप्लवजनकमें एक ही मरस्य था—भी पाठक।

जहाजर गांधीजीकी घर रिचर्ड सॉन्डोम भी मरियन भी आदर और भी माँवर-जैसे दक्षिण आफ्रिकी नतामोंसे बागचीत हुई और उनके मनमें भारतीय संघर्षके प्रति सहानुभूति उत्पन्न करनेमें वे सफल हुए। यात्राके दौरान ही उन्होंने ट्रान्सवालके भारतीयोंकी समस्या एक विप्लव जनसभा का संस्थापन भी तैयार किया। जुलाई १ को लन्दन पहुँचनेपर संघार नतामोंको जेल भेज दिए गांधीजीने यह स्पष्ट कर दिया कि मरा यह विप्लवजनक इंग्लैंडमें दक्षिण आफ्रिका विभिन्न भारतीय समितिके परामर्शके अनुरोध कार्य करेगा। व समितिके अध्यक्ष मी ईस्टवुडके मिने और इंग्लैंडमें विप्लवजनक क्रिय रूपसे करना कार्य करे, इसके बारेमें

विचार-विमर्श किया। लॉर्ड ऐंस्टहिलके मुझाबपर गांधीजीने "संक्षिप्त वक्तव्य" का प्रकाशन स्पष्ट कर दिया था ही यह भी तय किया कि जबतक निजी टीएवर होगेवासी समझौता-बातार्जोका परियाम स्पष्ट न हो जाये तबतक वे सार्वजनिक रूपसे कोई काम न करेंगे। गांधीजीको लॉर्ड ऐंस्टहिलसे जमीन विश्वास था और जैसा कि इन दोनोंके बीच हुए पत्र व्यवहारसे प्रकट होता है समझौता-नामके बारेमें लॉर्ड ऐंस्टहिलकी भी यही समस्त नीति विषयक समझको उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

यह इतमीनान हो जानेके बाद कि गांधीजी और उनके सत्याग्रही अनुयायियोंका भारतके अतिवाधियोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है लॉर्ड ऐंस्टहिलने पूरी शक्तसे द्वायबात्मकी समस्याका कोई हक निकालनेका प्रयत्न शुरू किया। उन्हें विश्वास था कि भारतमें बढते हुए असन्तोष और साम्राज्यीय शक्तके विचारसे समस्याको हक करना बर्यावश्यक है। ऐसे छोटे-छोटे भागछोंमें जिनमें किसी सिद्धान्तका सवाल नहीं था उन्होंने गांधीजीको समझौता करनेके लिए राजी पाया। लॉर्ड ऐंस्टहिल जनरल बोबा और जनरल स्मट्छसे भी मिले जो संघ-विधेयके मसविदेके सिद्धसिद्धेमें उस समय इन्हींमें ही थे। उन्होंने पहले तो गांधीजीसे यह आशा मत किया कि यदि कासा कानून रद कर दिया गया और भारतीयोंकी सैद्धान्तिक समानता मान ली गई तो भारतीय आन्दोलनको आगे नहीं बढ़ायेगे इसके बाद उन्होंने स्मट्छसे कहा कि संघके निर्माणकी बड़ीमें इन माँगोंको स्वीकार करके ब्रिटिश भारतीयोंको निश्चर कर दिया जाये।

हाँ यह ठीक है कि बाधपीठ गांधीजीने ही जसाई थी। वे लॉर्ड ऐंस्टहिलसे बराबर सम्पर्क बनाने चककर काम करते रहे। घर मंचरणी भावतगरी और न्यायमूर्ति जमीर जसी-जैसे भारतीय नेता सर रिचर्ड सॉलोमन सर ब्रिक्लियम भी-बॉरलर और बियोडोर मॉरिसन-जैसे प्रभावशाली ब्रिजिज आधिकारी और अपेक्ष राजनयिकों और रेबरैड एक भी मायर तथा कुमारी फर्जरिस् ब्रिटरबॉटम-जैसे मित्रोंसे भी मिले।

सरकारी स्तरपर गांधीजी उपनिवेश मन्त्रालयमें लॉर्ड नू और इंडिया ऑफिसमें लॉर्ड मॉर्सिसे ही ज्यादा मिले-जुले। लॉर्ड नू को समझौतेकी कोई आशा नहीं थी और उन्होंने नि-सकोच रूपसे इसे स्वीकार किया। १९७ के अधिनियम २ के बारेमें भारतीयोंकी आपत्तियोंको उपनिवेश मन्त्रालयकी १८ अगस्त १९१९ को किसी गई एक टिप्पणीमें कुटिल या निहायत भावुकतापूर्ण बताया गया। गांधीजीके इस आपहका कि साम्राज्यके नागरिककी हैसियतसे भारतीयोंका एक नियत रूपमें ही सही द्वायबात्ममें प्रवेश करनेका कानूनी अधिकार मान्य किया जाये स्मट्छने हठपूर्वक विरोध किया। वे ज्यादासे-ज्यादा इस बातके लिए तैयार थे कि भारतीय प्रवासियोंकी एक सीमित संख्याको स्वामी अधिकारका प्रमाणपत्र दिया जाये। उपनिवेश मन्त्रालयने जाकारी प्रकट करते हुए कहा कि संवैधानिक दृष्टिसे उसके लिए यह सम्भव नहीं है कि वह ब्रिजिज आधिकारी राजनयिकोंसे उक्त मान्यता दिसवा सक। लॉर्ड ऐंस्टहिलने हारतब कोसिस की कि उपनिवेश मन्त्रालय स्मट्छको गांधीजी द्वारा प्रवागी कानूनमें मुझावा बना सक्षोपत स्वीकार करनेके लिए किसी प्रकार तैयार करे लेकिन वे शकामयाव रहे।

नवम्बर ३ को यह विस्तृत स्पष्ट हो गया कि समझौता-बातार् निश्चय हो गई है। उपनिवेश मन्त्रालयने गांधीजीको सूचित किया कि वह उन्हें ऐसा कोई आश्वासन देनेमें असमर्थ है कि प्रवास-सम्बन्धी सैद्धान्तिक समानताको मान्यता दिसाई जा सकेगी। नवम्बर ५ को

गांधीजीने जनमत तैयार कराने के लिए कमिशन पत्र करते हुए ब्रिटेन के समाचारपत्रों में अपना '१९ जुलाई का बक्तव्य' प्रकाशनार्थ भेजा जिस में अबतक सर्वेष्ट ऐंस्ट्रिलक कहनेसे रोके हुए थे। उन्होंने इमर्सन क्लब इंडियन सोसल युनियन और इंडियन युनियन सोसाइटी द्वारा आयोजित समारोहों में भाग लिया किये जिनमें उन्होंने ट्रान्सवाल के संघर्ष का स्वरूप समझाया और जनता से उसका समर्थन करनेका अनुरोध किया। गांधीजीने ट्रान्सवाल के सत्याग्रहियों से महानुभूति रखनेवाले अंग्रेजोंकी ओरसे भेजे जानेवाले एक स्मरणपत्र (मेमारेण्डम) का मसविदा तैयार किया और उसपर हस्ताक्षर कराने और चन्दा जमा करनेके लिए भारतीय और अंग्रेज स्वयंसेवकोंकी सेना तैयार की। ट्रान्सवाल के प्रवासी-कानून के विषयमें उपनिवेद्य मन्त्रालयको लिखे गए जगमे अन्तिम पत्रमें उन्होंने ज्ञाना व्यक्त की कि रंगभेदका कर्त्तक दूर करानेके लिए जाये भी कोई नू बनने प्रभावका उपयोग बराबर करते रहेंगे।

नवम्बर १ को गांधीजीने डेसी एक्सप्रेस के संवाहकाको बताया कि सत्याग्रह पूरे उत्साहक साथ जारी रहेगा। अगले दिन उन्होंने ब्रिटेन के समाचारपत्रोंसे अपील की कि वे ट्रान्सवाल के संघर्षकी समता समर्थन प्रदान करें। नवम्बर १२ को अपनी बिबार्सके अक्षरपर भाषोजित एक समामें उन्होंने ब्रिटेनक मतांसे अनुरोध किया कि वे ट्रान्सवाल के आन्दोलनको उदार दृष्टिसे समझनेका प्रयत्न करें।

इन समाम अक्षरोंमें उनके विनागमें सत्याग्रहका वास्तविक रूप धूम रहा था। उनके सेतों भाषणों और पत्रोंमें सत्याग्रह-सम्बन्धी उनके विचार भरे पड़े हैं। अमिस्लममें बोलते हुए उन्होंने कहा कि "जनाजानक प्रतिरोध" वा मरुत मामकरण है। इसके पीछे जो विचार है वह "बाल्य-बल धरुसे जमादा ठीक ढंगसे अविध्यक्त होता है। यह "उतना ही पुराना है जितना पुराना इस्लाम" और ईसा मसीह, ईदियक और सुक्राय-जैमे सेगोंने इसका पुष्टम रूपमें प्रयोग किया है। यह आरमबल मन्दिर आदि म्बालोंमें जाने-जैसे बाहरी उपचारोंमें दिखुस नहीं है। मरुत और अक्षरकी विकसित करता उसका पहला पाठ है (पृष्ठ १९२)। कष्ट-महत उसमें समिहित है। "मरुतग्रही ज्यो-ज्यो कूटा जाये त्यो-त्यो उसका तेज प्रखर हो और जनकी हिम्मत भी बढ़े" (पृष्ठ ४४९)।

सत्याग्रहके लीकेको गांधीजी "जीवनकी बहुत-नी बुराइयोंकी अचूक दवा मानने से (पृष्ठ १९२)। उनके विचारमें किसी भीर अत्यायके विरुद्ध सीपा मरुत और धीग्र म्याय पानेका मार्ग सत्याग्रह ही था। (पृष्ठ ४४९)। उनका बिस्वास था कि इस्लिम आक्रिकामें दून निपाकर सत्याग्रह विरुद्ध नहीं हुआ। जून १९१९ में मेदमावकी व्यवस्था करनवाये अनुमक विरुद्ध उसकी लच्छताको उन्होंने उदाहरणके रूपमें बताया। ट्रान्सवालक भारतीयोंकी लच्छन लींई नू ने जो-कुछ कोमिड की थी उसका कारण भी गांधीजीके अनुसार भारतीयों द्वारा लच्छन कष्ट-महत करना ही था। प्रबुद्ध बयोंमें लिच्छमरुदने जो महानुभूतिकी भावना उगाय की थी उसकी लच्छक पान्सी मारर द्वारा "विपुष्टतामें बजोट और अत्यन्त निस्कार्य भावसे बताया जानेवाले उस समय क अनुमोन्तमें मिलती है (पृष्ठ ५४५)।

लच्छनमें अपने अति ध्यस्त कार्यक्रमसे बाबनूर गांधीजी भागमें पांयनक गाव बराबर पन्नाक बताये रहे। उनक लच्छे-लच्छे पत्रोंसे जिन्हें वे बहुत मुबड़ बोलकर लिग्गवाने से पूरी शीघ्रतर उनकी पकड़ छोटी-छोटी लच्छनीकोंका ध्यान गानकी समता और सभी मामलामें भारतीय लच्छे प्रति बिम्ता प्रच्छ होती है।

गांधीजीके मनमें द्वांसवासके संबंधके व्यापकतर परिणामोंका विस्तृत स्पष्ट चित्र था। भारतकी जनता द्वारा संबंधके व्यापकतर महत्त्वको समझनेमें बेरका कारण गांधीजीके अनुसार, आर्थिक रूपसे उनका आराम-संस्कृति का अज्ञान था। उनकी विविधत बारबा थी कि क्या वे यह नहीं देख सकते कि द्वांसवासमें बसनेवाले प्रयत्नों और तबनुस्य भारतमें किसे जानेवाले प्रयासोंका स्वरूप ही ऐसा है कि वे भारतको उसके लक्ष्यके अधिकाधिक निकट के लक्ष्यमें और जो भी बहुत विद्युत् तरीकेसे? (पृष्ठ ४६२)। पोलकको लिखे अपने एक पत्रमें उन्होंने हैरत प्रकट करते हुए पूछा कि क्या वे नहीं देख सकते कि इस कड़ाईके द्वारा हम मातृभूमि भारतकी सेवामें नबिन्द्यके लिए एक अनुशासित सेना तैयार कर रहे हैं। यह सेना ऐसी होगी जो बड़ीसे-बड़ी बहुरी ठाकठका सामना होनेपर भी अपना बाहर बिबा सनेगी (पृष्ठ ४६२)। हिंसात्मक तरीकेसे भारतकी स्वतंत्रता-प्राप्ति गांधीजी अत्यन्त और अबासनीय मानते थे। उन्होंने पोलकके माध्यमसे अधिकाधिकोंको बताया कि वे जो स्वतंत्रता चाहते हैं या उनका क्यास है कि उन्हें जिसकी बरत है वह स्वतंत्रता लोनोंको मारने या हिंसा करनेसे न मिलेगी। (पृष्ठ ४८)

यह काळ इस दृष्टिसे भी महत्त्वपूर्ण है कि गांधीजीने इसी समय स्वकी विचारक काउंट कियो टॉन्स्टॉमसे सम्पर्क स्थापित किया। टॉन्स्टॉमको गांधीजीने "इस सिद्धांतका सबसे स्पष्ट और प्रसिद्ध व्याख्याकार माना। अत्याइह आन्दोलनके बारेमें टॉन्स्टॉमको गांधीजीने लिखा "मेरी सममें द्वांसवासमें भारतीयोंका यह संघर्ष आधुनिक युगका सबसे महान संघर्ष है। यदि यह आन्दोलन सफल होता है तो वह न सिर्फ अपने अत्य और विवेकपर धर्म सत्य और प्रेमकी विजय होगी बल्कि बहुत सम्भव है कि वह भारतके कासों-करोड़ों विचारियों और बुनियाके घुसरे हिंसोंमें बसनेवाले पदस्थ लोगोंके लिए एक अनुकरणीय उदाहरण होगा।" (पृष्ठ ५३४) टॉन्स्टॉमने द्वांसवासके अपने प्यारे भाइयों और सहयोगियोंके लिए ईश्वरीय सहायता मिलनेकी कामना व्यक्त की और स्वमें भी कठोरतासे कोमलताके र्प और हिंसासे विनम्रता व प्रेमके ठीक उसी संबंध का चिक्र किया। (पृष्ठ ४८२-८३)।

इस लक्ष्यमें हम आधुनिक समयताके बारेमें गांधीजीके विचारोंको स्पष्ट होते हुए देखते हैं। भविष्यत गांधीको लिखे अपने पत्रोंमें और इंडियन ओपिनियन को लिखे गये अपने संवादपत्रोंमें वे इस विषयकी बर्ता करने हैं। किन्तु पोलकको लिखे गये अपने अक्टूबर १४ के पत्रमें उन्होंने अपने उन विविधत निष्कर्षों को स्पष्ट रूपसे व्यक्त किया जो उन्हें सन्वादपत्रकी सखी माचना से प्राप्त हुए थे और जिन्हें उन्होंने छीम ही अपनी पुस्तक हिंसात्मक में विस्तारसे लिखा। यह पुस्तक उन्होंने इंग्लैडसे बसित आधिका वापस लौटते हुए बहावपर लिखी।

विषय-सूची

भूमिका

आमार

पाठकोंको सूचना

विषय-सूची

१	बोहानिसबकी बिट्टी (३१-८-१९८)	१
२	साम्राज्य-सरकारके बिचार (५-९-१९८)	९
३	रिश्तेकी स्थिति (५-९-१९८)	९
४	भारतके राष्ट्रियतामहका जन्मदिन (५-९-१९८)	१०
५	बाबासाहेबकी जन्मती (५-९-१९८)	१०
६	बोहानिसबकी बिट्टी (७-९-१९८)	११
७	शार्बनाथ उपनिषेद-मन्त्रीको (९-९-१९८)	१७
८	शर द आ वि मा ममिठिको (९-९-१९८)	२८
९	शेट स्टार के प्रतिनिधितो (९-९-१९०८)	२९
१०	सापस शार्बनिक मसाम (१-९-१९८)	३१
११	प्रस्ताव साबनिक मसामे (१-९-१९८)	३२
१२	परिषेद मुरुवना (१२-९-१९८ क पूर्व)	३२
१३	नटानकी सभाए (१२-९-१९०८)	३४
१४	हैमी या रोयन? (१२-९-१९८)	३५
१५	मगतनको मसाम करे (१२-९-१९८)	३६
१६	हमारा शूठ (१२-९-१९८)	३६
१७	शार्बनाथ उपनिषेद मन्त्रीको (१४-९-१९८)	३७
१८	शर्मी मु शयम तथा अन्य सोयोंका मुरुवना (१५-९-१९८)	३९
१९	बोहानिसबकी बिट्टी (१९-९-१९८)	४०
२०	शेट रायटरको (१६-९-१९८)	४८
२१	शय जल-निरेगाहको (१७-९-१९८)	४९
२२	शय स्टारको (१७-९-१९८)	५
२३	शेट स्टार का (१७-९-१९८)	५२
२४	शय जल-निरेगाहको (१८-९-१९८)	५३
२५	शय स्टारको (१८-९-१९८)	५४
२६	शय मिया और उनके उत्तराधिकारी (१९-९-१९८)	५
२७	शय मसाम (१९-९-१९०८)	५६
२८	शय मसामको (१९-९-१९८)	५७
२९	शय जल-निरेगाहका (१९-९-१९८)	५७

३	पत्र डब्ल्यू हॉल्सलेको (१९-९-१९८)	५९
३१	पत्र उपनिवेश-सचिवको (२१-९-१९८)	६२
३२	ओहानिसबगोकी बिट्टी (२१-९-१९८)	६२
३३	पत्र जेल्-निवेशको (२४-९-१९८)	७
३४	पत्र जेल्-निवेशको (२५-९-१९८)	७१
३५	गटाल कसे सहायता कर सक्ता है? (२६-९-१९८)	७२
३६	पत्र उपनिवेश-सचिवको (२८-९-१९८)	७३
३७	पत्र जेल्-निवेशको (३-९-१९८)	७४
३८	पत्र इंडियन ओपिनियन को (३-९-१९८)	७५
३९	ठार ए आ डि० भा समितिको (३-९-१९८)	७६
४	भेंट गटाल मर्चुरी को (३०-९-१९८)	७६
४१	ठार उपनिवेश-सचिवको (२-१०-१९८)	८१
४२	ठार ए आ डि भा समितिको (२-१-१९८)	८२
४३	पावरियकि सिण्ड मसबिदा (२-१-१९८)	८३
४४	लेगलके गिरमिटिया (३-१-१९८)	८३
४५	सच्ची शिक्षा (३-१-१९८)	८५
४६	हमारा काम (३-१-१९८)	८६
४७	ओहानिसबगोकी बिट्टी (३-१०-१९८)	८७
४८	ठार ए आ डि भा समितिको (३-१-१९८)	८९
४९	ठार ए आ डि भा समितिको (५-१०-१९८)	९
५	पत्र जे ए डाको (८-१-१९८)	९१
५१	सेठ सोम क्यों नहीं छूटते? (१०-१-१९८)	९२
५२	गटालक कुछ प्रश्न (१-१-१९८)	९३
५३	कैदियोंकी स्थिति (१-१-१९८)	९४
५४	प्रारंभापत्र रेजिडेंट मजिस्ट्रेटका (११-१०-१९८)	९७
५५	मन्वेण मत्पाश्र्वियों और हुमरे भारतीयोंको (११-१-१९८)	९८
५६	तुकमीहन रामायण का ठार (१६-१-१९०८ के पूर्व)	९९
५७	सर्प (१७-१-१९८ के पूर्व)	११
५८	कुछ भारतीयोंका (१७-१-१९८ के पूर्व)	११
५९	पत्र जे जे होइका (१४-१-१९८)	१२
६	छात्रा भारतीय तन्त्रिके नाम (१४-१-१८)	१२
६१	दायरी आमाड और हुमरांका मुहदमा (१४-१०-१९८)	१३
६२	फामरल्लमे मुहदमा (१४-१-१९८)	१५
६३	मन्वेण भारतीयोंका (१६-१०-१९८)	१७
६४	ठार उपनिवेश-सचिवको (७-११-१९८)	१७
६५	पत्र ए एच वेस्टको (११-१-१८)	१८
६६	पत्र श्रीमती कस्तुरबा गांधीको (९-११-१८)	१

६७ जलम सन्ध (५-१२-१८)	१०
६८ मेट जमिस्तन स्थानपर (१२-१२-१९८)	११
६९ भाषण जोहानिसबागके स्वागत-समारोहमें (१२-१२-१९८)	११
७ भाषण हुमीरिया इस्लामिया अंजुमनकी स्वागत-समारोहमें (१२-१२-१९८)	१११
७१ भाषण लमिस स्वागत-समारोहमें (१४-१२-१९०८)	११६
७२ नामक सज्जनों और कुसरोका मुकदमा (१८-१२-१०८)	११६
७३ भारी घर्ष (१९-१२-१९०८)	११६
७४ नेकमनको पुलक मेट से घण्ट (२३-१२-१९८)	११८
७५ वर्षका मेला-जोला (२६-१२-१९८)	११८
७६ पत्र मगतमाल गांधीकी (२८-१२-१८)	१२
७७ क्या वर्ष (२-१-१९९)	१२१
७८ फीनिक्सकी पाठ्याला (२-१-१९०९)	१२२
७९ गटाल जानेवाले भारतीय यात्री (२-१-१९९)	१२२
८ सरपाइहसे सबक (२-१-१९९)	१२२
८१ मेरा जलका दूसरा अनुभव [-१] (२-१-१९९)	१२३
८२ मेट गेटाल मर्षरी को (५-१-१९०९)	१२०
८३ इफ्तदार बनाम परीवाले (९-१-१९९)	१२२
८४ गेटालके सप गटा (९-१-१९९)	१२५
८५ हिन्दू-मुस्लिम बगा (९-१-१९९)	१३६
८६ बंदूकके भारतीय (९-१-१९९)	१३६
८७ फीनिक्सकी पाठ्याला (९-१-१९९)	१३७
८८ इफ्तदार विद्यालय (९-१-१९९)	१४१
८९ मेरा जलका दूसरा अनुभव [-२] (९-१-१९०९)	१४२
९० पत्र रैड इली मस को (९-१-१९९)	१४४
९१ गेटालमें भारतीयोंकी शिक्षा (१६-१-१९९)	१४६
९२ प्रदानी-आयोग (१६-१-१९०९)	१४६
९३ मेरा जलका दूसरा अनुभव [-३] (१६-१-१९९)	१४७
९४ पत्र श्रीमती जलसजल गांधीकी (१६-१-१९९)	१५१
९ पत्र इडियन ओपिनियन को (१९-१-१९९)	१५२
९६ पत्र अगवारांको (२०-१-१९९)	१५४
९७ पत्र सेनदारोंको (२-१-१९९)	१५६
८ मेट गेटाल मर्षरी के प्रतिनिधिका (२१-१-१९९)	१५७
९ काउंसिलका सेनदारानी बैठकमें पैरकी (२२-१-१९९)	१५८
१ पत्र रैड इली मस को (२२-१-१९९)	१५९
११ लड़ाईया जयें क्या हैं? (२३-१-१९९)	१६
१२ मेरा जलका दूसरा अनुभव [-४] (२३-१-१९९)	१६२
१३ पत्र सेनदारोंका नाम (२३-१-१९९)	१६६

१०४	पत्र अलबार्नोको (२३-१-१९ ९)	१६७
१०५	मैंट रैड बेसी भय के प्रतिनिधिको (२५-१-१ ९)	१६९
१ ६	पत्र सर चार्ल्स ब्रुसको (२७-१-१९ ९)	१७
१ ७	पत्र लॉर्ड कजगको (२७-१-१९ ९)	१७१
१ ८	पत्र हरिसाल गांधीको (२७-१-१९ ९)	१७४
१ ९	पत्र श्रीमती बंजसरेन गांधीको (२८-१-१९ ९)	१७५
११	पत्र मयनसाल गांधीको (२९-१-१९ ९)	१७६
१११	श्री काछरियाका आत्मत्याग (३ -१-१९ ९)	१७७
११२	अग्नेयी हवा (३०-१-१९ ९)	१७८
११३	मुर्कीका उदाहरण (३०-१-१९ ९)	१७९
११४	मेरा बलका दूसरा अनुभव [-५] (३ -१-१९ ९)	१८
११५	द्राम्बालकी कड़ाई (६-२-१९ ९)	१८३
११६	श्री काछरियाका विधोप आत्मत्याग (६-२-१९ ९)	१८५
११७	सम्मेलन (१३-२-१९ ९)	१८५
११८	हारे हुए लोभोके लिए (१३-२-१९ ९)	१८७
११९	श्री उदिरियाकी अपील (१३-२-१९ ९)	१८८
१२	अकलके विचार (१३-२-१९ ९)	१८८
१२१	श्री बाउब मुहम्मदकी वेस-सेवा (१३-२-१९ ९)	१९
१२२	रोडसियाकी भीठ (१३-२-१९ ९)	१९१
१२३	द्राम्बालको बाहरके भागीपोंका कर्तव्य (१३-२-१९ ९)	१९१
१२४	संबंध (२०-२-१९ ९)	१९२
१२५	संबिधान (२०-२-१९ ९)	१९२
१२६	पापसियोंकी बहाबुपी (२ -२-१९ ९)	१९३
१२७	क्या भारतीय झुक जायेंगे? (२०-२-१९ ९)	१९४
१२८	हवा बसी (२०-२-१९ ९)	१९६
१२९	फोक्सरस्टर्न मुद्रमा (२५-२-१९ ९)	१९६
१३	सन्देश दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयोंको (२५-२-१९ ९)	१९७
१३१	सन्देश तमिल भाइयोंको (२५-२-१९ ९)	१९८
१३२	पत्र श्रीमती बंजसरेन गांधीको (२६-२-१९ ९)	१९९
१३३	एम ए की परीक्षा (२७-२-१९ ९)	२
१३४	नेटालस सहायता (२७-२-१९ ९)	२ १
१३५	पत्र ए एब डेटको (२-३-१९ ९)	२ २
१३६	मसविदा अकले यवनरको किले प्रार्थनापत्रका (११-३-१९ ९क भाग)	२ ३
१३७	पत्र मजिनास गांधीको (२५-३-१९ ९)	२ ४
१३८	ठार व आ वि मा समितिको (७-४-१९ ९)	२०९
१३	भारतीय और शराब (१०-४-१९ ९के पूर)	२१
१४	पत्र एब एस एस एल पोन्नडको (२६-४-१९ ९)	२१२

१४१	भाषण प्रिटोरियाकी सभामें (२४-५-१९०९)	२१४
१४२	भाषण प्रिटोरियामें (२४-५-१९०९)	२१६
१४३	मॅट प्रिटोरिया म्यूज के प्रतिनिधिको (२४-५-१९०९)	२१७
१४४	भाषण जोहानिसबर्गकी सभामें (२४-५-१९०९)	२१८
१४५	भाषण जोहानिसबर्गकी सभामें (२४-५-१९०९)	२२०
१४६	पत्र बालबालोंको (२६-५-१९०९)	२२१
१४७	खत्याघ्रही कौन हो सकता है? (२९-५-१९०९)	२२५
१४८	मेरा जलका वीसरा अनुभव [१] (२९-५-१९०९)	२२७
१४९	भाषण अस्वात और किशनकी स्वागत-सभामें (२-६-१९०९)	२३४
१५	भाषण चाय-पार्टीमें (२-६-१९०९)	२३५
१५१	बेस कौन हो सकता है? (५-६-१९०९)	२३६
१५२	मेरा जलका वीसरा अनुभव [२] (५-६-१९०९)	२३८
१५३	भाषण बर्मिस्टनमें (७-६-१९०९)	२४२
१५४	पत्र ट्रान्सवाल लीडर को (८-६-१९०९ के बाद)	२४४
१५५	कुछ विचार (१२-६-१९०९)	२४५
१५६	केपके भारतीय (१२-६-१९०९)	२४६
१५७	जोहानिसबर्गकी बिट्टी (१२-६-१९०९)	२४६
१५८	नामदू और अन्य सौगोंका मुकदमा (१६-६-१९०९)	२५१
१५९	भाषण नावजनिक सभामें (१६-६-१९०९)	२५२
१६	प्रस्ताव सार्वजनिक सभामें (१६-६-१९०९)	२५४
१६१	पत्र स्टारको (१८-६-१९०९)	२५५
१६२	निप्टमण्डल (१९-६-१९०९)	२५७
१६३	पत्र ट्रान्सवालके भारतीयोंको (२१-६-१९०९ के पूर्व)	२५९
१६४	स्वर्णीय भीमती गुलबार्ई (२१-६-१९०९ के पूर्व)	२६
१६५	जोहानिसबर्गकी बिट्टी (२१-६-१९०९ के पूर्व)	२६
१६६	पत्र हबीब मोहनको (२१-६-१९०९ के पूर्व)	२६४
१६७	पत्र मणिलाल माधीको (२१-६-१९०९)	२६५
१६८	पत्र डी ई बाछाको (२३-६-१९०९)	२६६
१६९	मॅट केप टाइटलको (२३-६-१९०९)	२६६
१७	निप्टमण्डलकी यात्रा [-१] (२३-६-१९०९ के बाद)	२६८
१७१	श्री पोन्नक और उनका काय (३-७-१९०९)	२७३
१७२	पत्र रामराज माधीको (७-७-१९०९)	२७५
१७३	निप्टमण्डलकी यात्रा [-२] (९-७-१९०९ के पूर्व)	२७५
१७४	पत्र बगनलाल माधीको (९-७-१९०९)	२७८
१७५	मॅट रायटरके प्रतिनिधिको (१०-७-१९०९)	२७९
१७६	मॅट ग्रेड एजेंसीके प्रतिनिधिको (१०-७-१९०९)	२८
१७७	निप्टमण्डलकी यात्रा [-३] (१०-७-१९०९ के बाद)	२८०

१७८ पत्र एच एस एस एस पोस्टरको (१४-७-१९ ९)	२८२
१७९ ट्रांसबालवासी भारतीयोंके मामलेका विवरण (१६-७-१९ ९)	२८७
१८ कन्वन् (१६-७-१९ ९के बाद)	३
१८१ पत्र लॉर्ड कू के निजी-सचिवको (२-७-१९ ९)	३२
१८२ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (२१-७-१९ ९)	३३
१८३ पत्र साठव वायिका'को (२२-७-१९ ९)	३४
१८४ पत्र एच एस एस एस पोस्टरको (२२-७-१९ ९)	३५
१८५ पत्र मो कू दोसरेको (२३-७-१९ ९)	३७
१८६ पत्र श्रीमती बॉयलको (२३-७-१९ ९)	३८
१८७ कन्वन् (२३-७-१९ ९)	३८
१८८ पत्र उप-उपनिवेश-मन्त्रीको (२४-७-१९ ९)	३९
१८९ सिष्टमम्बरकी यात्रा [-४] (२४-७-१९ ९)	३९१
१९ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (२६-७-१९ ९)	३९३
१९१ पत्र लॉर्ड मार्सेके निजी सचिवको (२६-७-१९ ९)	३९५
१९२ सिष्टमम्बरकी यात्रा [-५] (२६-७-१९ ९के बाद)	३९६
१९३ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (२८-७-१९ ९)	३९७
१९४ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (२९-७-१९ ९)	३९८
१९५ पत्र एच एस एस एस पोस्टरको (३-७-१९ ९)	३९९
१९६ कन्वन् (३-७-१९ ९)	३९३
१९७ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (३-८-१९ ९)	३९५
१९८ पत्र इंग्लिशमैन'को (३-८-१९ ९)	३९६
१९९ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (४-८-१९ ९)	३९७
२ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (५-८-१९ ९)	३९९
२ १ पत्र उपनिवेश उपमन्त्रीको (६-८-१९ ९)	३९३
२ २ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (६-८-१९ ९)	३९४
२ ३ पत्र एच एस एस एस पोस्टरको (६-८-१९ ९)	३९५
२ ४ कन्वन् (६-८-१९ ९)	३९७
२ ५ सिष्टमम्बरकी यात्रा [-६] (७-८-१९ ९के पूर्व)	३९९
२ ६ पत्र बमीर बलीको (७-८-१९ ९)	३९९
२ ७ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (९-८-१९ ९)	४०१
२ ८ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (९-८-१९ ९)	४०२
२ ९ नेटासनासी भारतीयोंके कर्षणका विवरण (१०-८-१९ ९)	४०३
२१ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको (१०-८-१९ ९)	४०६
२११ ठार एच एस एस एस पोस्टरको (१०-८-१९ ९)	४५
२१२ ठार ब्रिटिश भारतीय संघको (१०-८-१९ ९के बाद)	४५
२१३ पत्र मन्त्रिमन्त्रीको (१०-८-१९ ९)	४५१
२१४ पत्र लॉर्ड कू के निजी सचिवको (११-८-१९ ९)	४५२

२१५ पत्र लॉर्ड ऐंस्ट्रिह्लको (११-८-१९ ९)	३५३
२१६ सम्बन्ध (१२-८-१९ ९के बाद)	३५४
२१७ पत्र एच एच एस० पोलकको (१३-८-१९ ९)	३५५
२१८ सिष्टमन्त्रकी यात्रा [-७] (१३-८-१९ ९)	३५६
२१९. पत्र लॉर्ड ऐंस्ट्रिह्लको (१४-८-१९ ९)	३५७
२२० तार एच एच एस पोलकको (१९-८-१९ ९)	३५७
२२१ पत्र लॉर्ड कू के निजी सचिवको (१९-८-१९ ९)	३५८
२२२ पत्र लॉर्ड ऐंस्ट्रिह्लको (१९-८-१९ ९)	३६
२२३ पत्र एच एच एस पोलकको (२-८-१९ ९)	३६१
२२४ सम्बन्ध (२-८-१९ ९के आसपास)	३६३
२२५ सिष्टमन्त्रकी यात्रा [-८] (२१-८-१९०९के बाद)	३६३
२२६ पत्र डॉ अर्जुन्मानको (२१-८-१९ ९)	३६४
२२७ पत्र लॉर्ड कू के निजी सचिवको (२४-८-१९ ९)	३६५
२२८ पत्र लॉर्ड ऐंस्ट्रिह्लको (२४-८-१९ ९)	३६६
२२९ तार एच एच एस पोलकको (२५-८-१९ ९)	३६६
२३ पत्र एच एम एस पोलकको (२६-८-१९ ९)	३६७
२३१ सिष्टमन्त्रकी यात्रा [-९] (२७-८-१९ ९)	३६९
२३२ सम्बन्ध (२७-८-१९ ९के बाद)	३६९
२३३ पत्र श्रीमती बागी गांधीको (२८-८-१९ ९)	३७३
२३४ पत्र लॉर्ड ऐंस्ट्रिह्लको (३०-८-१९ ९)	३७४
२३५. पत्र अमीर अलीको (३०-८-१९ ९)	३७४
२३६ पत्र स्वामी वंशरान्धको (३०-८-१९ ९)	३७६
२३७. पत्र मणिलास गांधीको (अगस्तका अन्त १९ ९)	३७७
२३८ पत्र लॉर्ड ऐंस्ट्रिह्लको (१-९-१९ ९)	३७७
२३९. पत्र मणिलास गांधीको (१-९-१९ ९)	३७८
२४ तार एच एच एस पोलकको (२-९-१९ ९)	३७९
२४१ पत्र लॉर्ड कू के निजी सचिवको (२-९-१९ ९)	३८
२४२ पत्र लॉर्ड ऐंस्ट्रिह्लको (२-९-१९)	३८
२४३ पत्र एच एम एस पोलकको (२-९-१९ ९)	३८१
२४४ पत्र एच एम एस पोलकको (३-९-१९ ९)	३८३
२४५ सिष्टमन्त्रकी यात्रा [-१] (३-९-१९ ९के बाद)	३८५
२४६ सम्बन्ध (४-९-१९ ९के पूर)	३८८
२४७ पत्र लॉर्ड कू के निजी सचिवको (६-९-१९ ९)	३८९
२४८ पत्र अमीर अलीको (६-९-१९ ९)	३९
२४९. पत्र तुगासमार्द गांधीको (७-९-१९०९)	३९१
२५ पत्र वारणदाज गांधीको (७-९-१९ ९)	३९२
२५१ पत्र श्रीमती बागी गांधीको (७-९-१९ ९)	३ ३

२५२	पत्र एच एस एस एल पोस्टरको (८-९-१९ ९)	३९३
२५३	पत्र डॉर्ड ऐंस्टहिलको (९-९-१९ ९)	३९७
२५४	पत्र मणिमाङ्ग गांधीको (९-९-१९ ९)	३९७
२५५	पत्र डॉर्ड मू के निजी सचिवको (१०-९-१९ ९)	३९८
२५६	पत्र डॉर्ड मोर्सेके निजी सचिवको (१-९-१९ ९)	३९९
२५७	पत्र डॉर्ड ऐंस्टहिलको (१०-९-१९ ९)	३९९
२५८	कन्वन् (१०-९-१९ ९)	४
२५९	डिप्टिमन्टकी यात्रा [- ११] (११-९-१९ ९से पूर्व)	४ ३
२६	पत्र डॉर्ड ऐंस्टहिलको (१३-९-१९ ९)	४ ४
२६१	पत्र डॉर्ड मू के निजी सचिवको (१४-९-१९ ९)	४ ५
२६२	पत्र डॉर्ड मोर्सेके निजी सचिवको (१९-९-१९ ९)	४ ६
२६३	पत्र डॉर्ड ऐंस्टहिलको (१६-९-१९ ९)	४ ७
२६४	डॉर्ड मू के साथ भेटका सार (१६-९-१९ ९)	४ ८
२६५	पत्र डॉर्ड ऐंस्टहिलको (१६-९-१९ ९)	४११
२६६	पत्र एच एस एस एल पोस्टरको (१६-९-१९ ९)	४१२
२६७	डिप्टिमन्टकी यात्रा [- १२] (१६-९-१९ ९के बाद)	४१६
२६८	पत्र मणिमाङ्ग गांधीको (१७-९-१९ ९)	४१७
२६९	पत्र नारनबास गांधीको (१७-९-१९ ९)	४१८
२७	भारतीय मुस्लिम लीगकी कन्वन् सात्ताको लिखे पत्रका सचिवा (१७-९-१९ ९के बाद)	४१९
२७१	कन्वन् (१८-९-१९ ९से पूर्व)	४२
२७२	पत्र डॉर्ड मू के निजी सचिवको (१८-९-१९ ९)	४२१
२७३	पत्र डॉर्ड मोर्सेके निजी सचिवको (१८-९-१९ ९)	४२३
२७४	पत्र डॉर्ड ऐंस्टहिलको (१८-९-१९ ९)	४२३
२७५	पत्र उपनिवेश-उपसचिवको (२०-९-१९ ९)	४२४
२७६	पत्र डॉर्ड मू के निजी सचिवको (२३-९-१९ ९)	४२६
२७७	पत्र एच एस एस एल पोस्टरको (२३-९-१९ ९)	४२६
२७८	कन्वन् (२५-९-१९ ९के पूर्व)	४३
२७९	डिप्टिमन्टकी यात्रा [- १३] (२५-९-१९ ९के पूर्व)	४३१
२८	तार डिप्टिभ भारतीय संघको (२७-९-१९ ९)	४३२
२८१	पत्र अनीर बघीको (२७-९-१९ ९)	४३२
२८२	पत्र मणिमाङ्ग गांधीको (२७-९-१९ ९)	४३३
२८३	पत्र ऐंस्टहिलको डॉर्ड इडिया को (२८-९-१९ ९)	४३४
२८४	पत्र डॉर्ड मू के निजी सचिवको (२९-९-१९ ९)	४३६
२८५	पत्र एच एस एस एल पोस्टरको (२९-९-१९ ९)	४३६
२८६	पत्र डॉर्ड मोर्सेके निजी सचिवको (३०-९-१९ ९)	४३८
२८७	पत्र एच एस एस एल पोस्टरको (३०-९-१९ ९)	४३९

२८८ पत्र विमो टॉक्टॉयको (१-१०-१९ ९)	४४३
२८९ सन्ध (१-१०-१९०९ के बाद)	४४६
२९० पत्र भास्वराज गांधीको (१-१०-१९०९)	४४२
२९१ पत्र गुनात्मक गांधीको (१-१०-१९०९)	४४३
२९२ पत्र साईं एंस्ट्रिस्को (५-१०-१ ०९)	४४४
२९३ भास्व गुजरातियोंके समामें (५-१०-१९०९)	४४६
२९४ पत्र साईं एंस्ट्रिस्को (६-१ -१९ ९)	४४९
२९५ पत्र एच एम एम० पोकरको (६-१०-१९)	४६१
२९६ सिन्धमण्डली यात्रा [-१४] (८-१ -१९ ९के पूरा)	४६६
२९७ पत्र उद्विगेत उद्विगीको (८-१ -१९ ९)	४६७
२९८ पत्र साईं मॉन्के निजी सचिवको (८-१०-१९)	४६८
२ ९ पत्र साईं एंस्ट्रिस्को (८-१ -१९ ९)	४६९
३०० पत्र गुजराती पत्रको (८-१०-१ ९)	४७०
३ १ भास्व समर्थन समामें (८-१ -१९ ९)	४७०
३०२ सिन्धमण्डली यात्रा [-१५] (८-१ -१९ ९के बाद)	४७०
३ ३ सन्ध (८-१०-१९ ९के बाद)	४७२
३ ४ पत्र मणिमाल गांधीको (१२-१ -१९ ९)	४७४
३ ५ भास्व सिन्धमण्डलमें (१३-१०-१९ ९)	४७४
३०६ पत्र साईं एंस्ट्रिस्को (१४-१०-१९०९)	४७६
३०७ पत्र एच० एम एम यात्राको (१४-१०-१९ ९)	४७७
३ ८ सिन्धमण्डली यात्रा [-१६] (१५-१०-१९ ९)	४८०
३ ९ पत्र भास्व आठिना को (१६-१ -१९०९ के पूरा)	४८३
३१० पत्र मणिमाल गांधीको (१८-१०-१९०९)	४८५
३११ पत्र बड़ीको (१८-१०-१९ ९)	४८५
३१२ पत्र उद्विगेत उद्विगीको (१९-१०-१९ ९)	४८६
३१३ पत्र साईं एंस्ट्रिस्को (१९-१०-१९०)	४८७
३१४ सन्ध (२०-१०-१९ ९के पूरा)	४८८
३१५ पत्र एम एम गुजराको (२१-१०-१९ ९)	४९२
३१६ पत्र साईं च के निजी सचिवको (२२-१०-१९ ९)	४९३
३१७ पत्र एच एम एम पोकरको (२५-१०-१९०९)	४९३
३१८ सिन्धमण्डली यात्रा [-१७] (२७-१०-१ ९)	४९४
३१९ पत्र मणिमाल गांधीको (२२-१ -१९)	४९५
३२ सन्ध (२३-१०-१९ ९के पूरा)	४९६
३२१ सन्ध (२८-१ -१९ के बाद)	४९८
३२२ पत्र साईं च के निजी सचिवको (६-१ -१९)	४ ९
३२३ पत्र साईं च के निजी सचिवको (६-१ -१९ ९)	५
३२४ सन्ध (२९-१ -१ के बाद)	५ १

३२५	पत्र लॉर्ड ऐंम्सहिलको (२८-१०-१९ ९)	५४
३२६	पत्र लॉर्ड ऐंम्सहिलको (२९-१-१९ ९)	५५
३२७	पत्र एस्मर मॉडको (२९-१-१९ ९)	५६
३२८	पत्र एच एस एस पोम्पको (२९-१०-१९ ९)	५७
३२९	सिष्टमण्डलकी यात्रा [-१८] (२९-१-१९ ९)	५८
३३	पत्र जी ए मटेसनको (२९-१०-१९ ९के बाद)	५९
३३१	पत्र लॉर्ड ऐंम्सहिलको (३०-१०-१९ ९)	५९२
३३२	भाषण म्बू रिफॉर्म क्लबमें (३-१-१९ ९)	५९५
३३३	भाषण भारतीयोंकी समारोहमें (२-११-१९ ९)	५९६
३३४	पत्र उपनिवेश-उपमन्त्रीको (३-११-१९ ९)	५९७
३३५	पत्र लॉर्ड ऐंम्सहिलको (४-११-१९ ९)	५९८
३३६	पत्र एच एस एस पोम्पको (५-११-१९ ९)	५९८
३३७	पत्र बसबारीको (५-११-१९ ९)	५९
३३८	पत्र उपनिवेश-उपमन्त्रीको (६-११-१९ ९)	५९४
३३९	पत्र ट्रान्सवालके सिटिया भारतीयोंको (६-११-१९ ९)	५९५
३४	सिष्टमण्डलकी वासिरी बिट्टी (६-११-१९ ९के बाद)	५९६
३४१	क्लब (८-११-१९ ९के पूर्व)	५९
३४२	मेट सप्टरके प्रतिनिधिको (९-११-१९ ९)	५९९
३४३	पत्र एस्मर मॉडको (१०-११-१९ ९)	५९२
३४४	पत्र लॉर्ड ऐंम्सहिलको (१-११-१९ ९)	५९३
३४५	पत्र किंगो टॉस्टॉयको (१०-११-१९ ९)	५९३
३४६	पत्र एच बस्टको (१०-११-१९ ९)	५९५
३४७	पत्र उपनिवेश-उपमन्त्रीको (१०-११-१९ ९)	५९५
३४८	मेट डेली एक्स्प्रेस के प्रतिनिधिको (१०-११-१९ ९)	५९६
३४९	पत्र जो डू योबलेको (११-११-१९ ९)	५९७
३५	पत्र एच एस एस पोम्पको (११-११-१९ ९)	५९८
३५१	पत्र उपनिवेश-उपमन्त्रीको (११-११-१९ ९)	५४
३५२	डेली टेलीग्राफ को (११-११-१९ ९)	५४२
३५३	पत्र उपनिवेश-उपमन्त्रीको (१२-११-१९ ९)	५४३
३५४	पत्र भारतीय बसबारीको (१२-११-१९ ९)	५४३
३५५	भाषण विदाई-समारोहमें (१२-११ १९ ९)	५४५

परिशिष्ट

- १ दक्षिण अफ्रीका संकेतन परिचय (१९ ८) ५५१
- २ म्बू १९०७के प्रथमी परिचयके परिचयके क्लब के के मन्त्री
सिटी परिचय सिस्टमके सिने वार्ड ५५८
- ३ एके प्रथम जी वी संकेतन मन्त्र ५५८
- ४ अफ्रीका मन्त्री परिचय वार्डमें दक्षिणमें ५५९

५. प्रस्ताव सर्वजनिक सममे	५२३
६. सर्वोदायिका वारी के के दाखल वर	५२३
७. बेचमे वामन लाल मूल्य	५२४
८. कानन दुर्गावर (क) देविगोरी पोलागमे वैरल क वाम लो	५२०
(ग) इवाडिनी पालार वैरल कानन लो	५२९
९. १४ देवी मेळ की लिपनी	५०२
१०. वारिदा वामन	५०३
११. वामन का वारिगोदा वर	५०४
१२. सर्वोदाय वर लो वरिगोदा वर	५००
१३. वेडवनी वारिगोदा वर १३ १९ १ का दुर्	५०८
१४. सर्वोदाय लो वरिगोदा वर	५०६
१५. वामन वर वरिगोदा वरिगोदा	५०
१६. सर्वोदाय वर लो वरिगोदा वर	५०३
१७. सर्वोदाय वर लो वरिगोदा वर	५०४
१८. वर के वारी वर इतिहास लिख्य लो वर वरिगोदा	
लो वरिगोदा वर लिख्य वरिगोदा	५०५
१९. वर वर लिख्य वरिगोदा वर	५०८
२०. वरिगोदा वर वर वरिगोदा वर वरिगोदा	५१
२१. वरिगोदा वरिगोदा वर वर वरिगोदा वर	५१४
२२. वर वर सर्वोदाय वर लो वरिगोदा वर	५१५
२३. सर्वोदाय वर लो वरिगोदा वर	५१०
२४. लो वरिगोदा लिपनी	५१८
२५. सर्वोदाय वर लो वरिगोदा वर	५१९
२६. वरिगोदा वर वर लो वरिगोदा वर	१
२७. सर्वोदाय वर वरिगोदा वर	१ १
२८. सर्वोदाय वर वरिगोदा वर	१ १
२९. वर वर वरिगोदा वर	१ २
३०. वर वरिगोदा वर वरिगोदा वर	१ ४
३१. वरिगोदा वर वर वरिगोदा वर	१ ५
३२. वरिगोदा वर वरिगोदा लिपनी	१ ६
३३. वरिगोदा वर वरिगोदा लिपनी	१ ७
वामन-वामन-वामन	१ ९
वामन-वामन-वामन	१ ११
वामन-वामन-वामन	१ १८
वामन-वामन-वामन	१ ४
वामन-वामन-वामन	१ ६

चित्र-सूची

याँचीजी — छंदनमें	मुखविष
छार उपनिषेद्य सविष	८१ के सामग
बाँसिबर याँची	९६ " "
प्रार्थनापत्र रेजिडेंट मजिस्ट्रेटको	९७ " "
एगियार्ड साविषा	२८ " "
पत्र मजिस्ट्राळ याँचीको	२९ " "
संसिप्त विवरणका मुखविष	२८८ " "

१. ओहानिसबर्गकी घिंटो

सोमवार [अगस्त ११ १९८]

सबसे किस प्रकार करें?

यदि समाचार देनेके पहले ऊपरके समाजका बनाव दे दिया जाये तो पाठक ज्यादा समझ सकेंगे। आध्यात्म देखनेसे जान पड़ता है कि इस बार संघर्षके बहुत सख्त और सच्चा होनेकी सम्भावना है। सरकार बहुत ब्रूम करेगी। ऐसा नहीं लगता कि सारे भारतीय मिलकर एक साथ शक्ति लगायेंगे। अजानेके लिए कितने प्रयासपत्र बाने चाहिए वे उतने नहीं बाने। कुछ मित्राकर २३ प्रयासपत्र बजावे गये हैं। यह संख्या बुरी नहीं है, किन्तु संघर्षका बल बरती जानेके लयाखते कम है।

फिर, यह भी यथा स्या है कि कुछ लोग पंजीयन कराने पंजीयन कार्यालय (रजिस्ट्रेशन ऑफिस) जाते रहते हैं। ओहानिसबर्गमें यह शुक्रवारको लगभग २५ भारतीय गये। इस बातसे सरकारको यह अनुमान लगानेका अधिकार है कि बहुत-से भारतीय कानूनकी बचीनता स्वीकार कर लेंगे।

किन्तुहक कानूनको माननेकी बात तो नहीं बची है फिर भी गये कानूनको न माननेपर ही हमारे संघ संघर्षकी बीज निभर है। नया विधेयक (बिल) अभीतक तो कानून नहीं बना है। उसपर संसदके हस्ताक्षर नहीं हुए हैं। किन्तु हस्ताक्षर ही जानेपर भी उसका विरोध करना आवश्यक है।

अब हमें यह भी मान लेना है कि बिन्होंने बसानेके लिए प्रयासपत्र नहीं दिये वे संघर्षमें शामिल नहीं होंगे। इसलिये संघर्ष २३ भारतीयोंपर आधारित रहा। यह भी मान लेना चाहिए कि इसमें से कुछ बूट बावेंगे। इसी तरह यह भी मान लेना चाहिए कि बिन्हें प्रयासपत्र नहीं मिले हैं वे संघर्षमें भाग लेंगे। इस प्रकार हम अनुमान कर सकते हैं कि दो हजार भारतीय ब्रूमेंगे। उनमें से बीस भाग तो केवल उमिद खोनेका ही है। उन्होंने कमान कर दिया है। इस संख्यासे निराश होनेकी आवश्यकता नहीं है। यदि वे ही तो भारतमें २ भारतीय अबरदस्त काम कर सकते हैं किन्तु ये २ ब्रूमें यीजा हैं ऐसा मानना कठिन है। प्रयासपत्रोंका बसानेका संख्या अर्थ यह है कि उन्हें बसानेवाले भारतीय

१. बीरबद्रा शास्त्रि अर्ध है "उपकरण"। वे कति हर बने इतिहास कोपिनिबनने "हमारे ओहानिसबर्ग संघर्षका हाथ प्रेक्षित" क्यो क्यकिट किने बने वे। अथा कतिता मार्च ३ १९ ६ को क्य २३ केवल क्य ५, १४ २१५-१६।

२. रजिस्ट्रेशन कानून संशोधन अधिनियम (रजिस्ट्रेशन ऑफ नोटेरीयल देय), को इंग्लिश एडिशन पंजीयन अधिनियम (इंग्लिश एडिशन रजिस्ट्रेशन देय)के नामसे भी प्रसिद्ध ना। रेडिय क्य ७, १४ १९-२५; क्य ४ ०-४०५ और एडिशन १।

३. इंग्लिश एडिशन पंजीयन संशोधन अधिनियम १९८ (इंग्लिश एडिशन रजिस्ट्रेशन नोटेरीयल देय, १९०८); एडिशन कि रेडिय, एडिशन १।

प्रमाणपत्रोंकी परवाह नहीं करते। वे प्रमाणपत्रोंसे मिलनेवाला लाभ छोड़ देंगे वे न परवाना बढावेंगे न सेंगे और न सरकारके कानूनको किसी प्रकार मानेंगे तथा महासम्भव प्रयत्न करके ब्रेक पावेंगे।

बच में यह जानता हूँ कि ये २ राष्ट्रीय ऐसे साहसी नहीं हैं। उनमें से कुछ तो परवाने (काइसेंस) लेकर बैठे हैं। वे परवानेका उपयोग करते हैं और जब कोई अधिकारी पूछता है तो उसे परवाना दिखाते हैं। इस कौटिके बिन लोगोंने प्रमाणपत्र बनाये हैं उन्हें मैं न बचानेवालोंके बराबर मानता हूँ। अर्थात् २ में से एक हजार और भिकाऊ देनेकी जरूरत मानता हूँ। अब जो एक हजार बच गये वे क्या कर सकते हैं? जवाब यह है कि वे सरकारको हिला सकते हैं और स्वयं प्राप्त कर सकते हैं। उनके संघर्ष करनेसे नतीजा कानून रद्द होगा उच्च शिक्षा-प्राप्त लोगोंके लिए दरवाना मुञ्चा रहेगा और ट्रांसवासरमें होते हुए भी बिनके पास प्रमाणपत्र नहीं है उनमें जो सच्चे हैं उनके अधिकारोंका संरक्षण होगा। किन्तु क्या अस्य लोगोंके पीछे हट जानेपर भी एक हजार व्यक्ति रहेंगे? मेरी मान्यता है कि रहेंगे। अस्तित्व बचनेवाले ता हमेशा बोजे ही होते हैं। यह समझकर कि संघर्ष सच्चा है इसलिए सज्जना चाहिए, वे एक-दूसरेसे बहस नहीं करते। वे दूसरे क्या करेंगे उसका विचार न करके बात हथेड़ीपर रखकर कहते हैं।

इन एक हजार लोगोंको बरकरार रख उठाना पड़ेगा। पैसा चायगा सबा होगी बेश भिकाऊ होगा मार खानी पड़नी किन्तु इस सबसे क्या होता है? सब बला पाये जान नहीं जानी चाहिए। भले ही और सब उन्हें छोड़ दें किन्तु ईश्वर उन्हें नहीं छोड़गा।

जो बुर्जुआ नहीं बैठे उनका माठ बेचकर बसूष करनेकी क्याबती बढ़ती जा रही है। प्रिटोरियामें ऐसा ही हुआ हाइडेलबर्गमें ऐसा ही हुआ और बेरीनिगिममें भी ऐसा ही हुआ है। यदि सारे हुकानदार बिना परवानेके हों तब तो कोई अड़बट न हो और सामान नीकाम किया जायें तो हमें उसकी चिन्ता न करनी पड़े। किन्तु बलग-अलग व्यक्तियोंके माककी नीकामीसे होनेवाली हानिको सहन करनेकी शक्ति अभी भारतीयोंमें नहीं आई है। वैसी शक्ति चीन ही न जाये यह बात समझने जानें-सी है। बहुत-से भारतीयोंके पास पूरे रूपका परवाना है इसलिए बोजे हो लोथेके बारेमें विचार करना बच रहता है। उनके लिए ठीक रास्ता यह है कि वे कानूनक भूतादिक किन्तु नामके लिए, अपनी हुकान गोरोंको बेच दें और व्यापार उनके नामसे करें। श्री पेंडियल बाइबलक ऐसा करनेके लिए तैयार है। ऐसा होनेपर माककी नीकामी बन्द ही सफटी है। कोई कहेगा कि ऐसा करनेके बाद तो भारतीय व्यापारियोंके रहनेकी कोई बात ही नहीं बचती। खुद कुछ सहनेसे बचें और गरीब फेरीवाले मरें — यह कर्णक दूर करनेके लिए पीरोंके नामसे व्यापार करनेवाले हुकानदारोंको स्वयं फेरी सगा कर बेल जाना चाहिए। बिनके पास अपने परवाने हैं वे गौरों अपना अपने जामीयोंको बेल जानके लिए तैयार करें। हुकानदारोंका ऐसा करना जायिमी है। फेरीवालोंको भी ईश्वरच उपयुक्त व्यवहार नहीं करना चाहिए। बेल जानेवाले व्यक्तिके बारेमें यह नहीं सोचना चाहिए कि वह मर गया बल्कि यह मानना चाहिए कि वह बहिक भी रहा है। बेल जानेवाले भारतीयोंको चाहिए कि वे अपने-आपको ताम्पवान मानें। जो बेल नहीं जा सकते

बे बनागे हैं। इसके अतिरिक्त बूकानवार सचरमें पैसेकी मजद कर सकते ह। हमारा ध्येय बंध बन बंधे सरकारको पका डालना है। सरकारको पकाने अर्थात् जेल जानक हो रास्ते हैं। एक तो यह कि फेरीवाले बिना परवानोंके फेरी क्या कर गिरफ्तार हों। उनका मास नीलाम करनेकी बात नहीं है। इसकिए उनपर ठी बुराई ही होगा। दूसरा रास्ता यह है कि सीमापर अंग्रेजोंकी निजामी अंग्रेजियोंकी छाप हस्ताक्षर भावि न देकर गिरफ्तार हों और जेल जायें। बहुत पैसा पास रखकर फिजीको भी फेरी नहीं सगानी चाहिए। सामने बेबर भावि भी नहीं रखन चाहिए। अंग्रेजोंके निधान न देनेवालोंके ऊपर मुकदमे चलाये जाने सये हैं। इसकिए गिरफ्तारी सख्त ही हो सकती है। ट्रान्सवालमें प्रवेश करनेके लिए सब बिडकुल सन्ने अनुमतिपत्रवासे सोग ही चाहिए। जिनके पास जन्को बमानेके पास हैं उन्हें फिजहाल नहीं जाना चाहिए। इसी प्रकार शिक्षित लोगोंको भी फिजहाल नहीं जाना चाहिए।

यदि उपर्युक्त पद्धतिसे सड़ें तो अक्तूबर महीने तक सच्चा रंग निखर सकता है। यदि काशी सक्रिय बटा सके तो युद्धका अन्त उसके पहले भी हो सकता है। किन्तु यदि अभी ऐसा न हुआ तो अक्तूबरमें ही सकता है। उस समय तक बहुत-से भारतीयोंके फेरीके परवाने (पासेज) बराम हो जायेंगे। हम उम्मीद करते हैं कि सैकड़ों भारतीय अपने परवाने फिर नहीं लेंगे। इसकिए सरकारको पकड़े बिना चारा ही न रहेगा। जिनके प्रमाणपत्र बल बुके हैं उन्हें तो परवाने मिचनेवासे हैं ही नहीं। इसकिए मुझे आशा है कि इतने भारतीय तो बिना परवानके रहेंगे ही।

नेटाजके सैठ

श्री बाउद मुहम्मद श्री पारसी स्तमजी तथा श्री जामशिया बहुत परिश्रम कर रहे हैं। उन्हें जोहानिसर्वमं गुरुवार १ ठाटीक २१ को गिरफ्तार नहीं किया गया इसकिए वे तार देकर १२ बजेकी नाड़ीसे प्रिटोरिया गये। उनके साथ श्री रविरी भी थे। वे अंजुमत इस्लामियाके मकानमें प्रमाणपत्र इकट्ठे करनेकी बात कर रहे थे। उसी समय सुपरिंटेंडेंट बेदखने बाबर वारंट दिखाया और उन चारों सज्जनोंको गिरफ्तार कर लिया। उन्हें बमानतपर छात्रनेसे इनकार कर दिया। साथमें यह मामूल हुआ कि उन्हें बेच-निकालेका वारंट दिया गया है। अन्तिम नाड़ीसे श्री गार्डी प्रिटोरिया गये। बकील श्री डेम्केकी मारफन उन्होंने पुलिसको नोटिस दिया कि सरकारका इस प्रकार वारंट निकालकर से जानेका अधिकार नहीं है।^१ इस नोटिसका जहस सर्वोच्च न्यायालयमें जागा नहीं था केवल सरकारका जुम्स दिखाना था। नोटिसका कोई प्रभाव दिखाई नहीं पड़ा। पुलिस उक्त सैठोंको सन्देहकी गाड़ीसे नेटाल से गई। कोई बात सुनाकर नहीं रही गई थी तथा जो मिचन चाहते थे उन्हें मिचने दिया जागा था। स्टेशनपर कुछ भारतीय इन्हें दिखाई देनेके लिए पहुँच गये थे।

रातके १२ बजे अंजुमत इस्लामियाके मकानपर समा हुई और फिर प्रमाणपत्र इकट्ठे करनेकी बात चली। हामी काधियने कहा है कि वे रविवारको विचार कर बतायेंगे कि समय प्रमाणपत्र देने या नहीं। बाकी सोंपाने सुरन्त देनेका निर्णय किया।

१ यही "जुम्स" है। भा. भा. वि. ।

२. देखिए कन्व. ८ पृ. ४८ ।

३. बेच-निकालेके अन्वय-वचके कि देखिए परिच्छेद १ ।

सार्वजनिक समा

शुक्रवारको प्रिटोरियामें सार्वजनिक समा हुई। भी बरस अल्पसय थे। वही काफी सीम उपस्थित थे और उनमें बहुत जोश था। सब अच्छी ठाबावमें प्रमाणपत्र अलाये मये फिर भी मुझे कहना चाहिए कि अितने प्रमाणपत्र आने चाहिए न उतने मही आये। महासिपोंको छोड़कर प्रिटोरियासे केबल १७ प्रमाणपत्र आये जो काफी नहीं कहे जा सकते। समाका विवरण दूसरी बपह दिया जावेगा इसलिये मही नहीं दे रहा हूँ।

मद्रासियोंकी समा

तमिळ भारतीयोंकी समा रविवारको अरुन हुई। उसमें भी मांभी उपस्थित थे। मद्रासियोंने कमाळ कर दिया है। जान पड़ता है, उनमें से बीबाई भीम जेळ हो आये हैं। उनमें बहुत जोश था। सबने कहा कि दूसरे सके अथवा न सके वे अवरय सकेगे। उन्होंने पैसा इकट्ठा करना भी निश्चित किया है।

दो कोंकणी छूटे

पिछल हफ्ते जो दो कोंकणी मांस-बिक्रेता जेळ मये थे वे बूट गय हैं। उनके कहनेके मुताबिक मालूम होता है कि सब जेसके अधिकारी तकसीफ नहीं देते। वे समाचार आये हैं कि दो मूसभी फरेळ तथा दो हरिखाल मांभीकी' तबीयत अच्छी है।

अधेर रबिरी

भी अधेर रबिरी सीलीको जिन्होंने अपने अस्थायी अनुमतिपत्र (परमिट) की अवधि समाप्त होनेपर भी ट्रांसवास नहीं छोड़ा था एक महीनेकी कैदकी सजा हुई है। अपने बयानमें उन्होंने कहा कि मुदती अनुमतिपत्रकी अवधि समाप्त हो जानेपर उनका विचार आनेका और आवमें सिमित्त व्यक्तिकी हूँदियतसे वापस आनेका था किन्तु इसी बीच उन्हें पकड़ लिया गया। भी रबिरीने अपने बयानमें कहा कि यह मरा सीमास्य है।

बापहू व्यक्तिपोंकी हैस-निकरळा

भी सेलठ भी जोसी भी कीलाबाबा भी मेळ भी इबाहीम हुयेन बरीरहू पकड़ मये हैं और उन्हें बेख-निकासका हुनम हुआ है। ये फिर वापस प्रवेश करेंगे। अभी उन्हें समास अथवा कुटुम्बियोंकी ओरसे बुराक नहीं पहुँचाई जा रही है। उन्हें उनकी इच्छासे जेळ ही की बुराक मिलती है। उन्हें रोटी आनू हरपादि दिये गये थे। भाब रातको वे फाक्सरस्ट से आये आयेने।

इबाहीम उस्मान

भी इबाहीम उस्मानके जेस आनेसे यहाँ बड़ी प्रसन्नता हुई है। वे विमत समासके मुखिया कहे जा सकते हैं। उनकी बहादुरी मेमत समासके लिए सोभाकी बात है। उन्होंने ट्रेनमें और चार्वं ऑफिसमें बैठेका निघान देनेसे साफ इतकाण कर दिया। पुलिसके जवानने बयान देते हुए स्वीकार किया कि वह भी इबाहीमको पहचानता है। भी पीसकने बयानमें कहा कि भी इबाहीमको अनुमतिपत्र दिखानेवासे वे ने अत' भी इबाहीमको न पहचाननेका उबाख

नहीं था। बँपूठेका निघान देना ही अपराध माना गया। यह कोई छोटी-मोटी ज्यादती नहीं है। किन्तु मुझे आशा है कि ऐसे मामलोंके बाद कोई भारतीय समझौता होने तक बँपूठेकी छाप नहीं देगा।

नाबिरस्ता कामा

श्री नाबिरस्ता कामाको सरकारने बरखास्त कर दिया है। यदि विचार करें तो यह कोई साधारण बात नहीं है। श्री कामाक मनमें ऐसी अबरहस्त धुन थी कि उन्होंने पिछली सार्वजनिकसभामें नाम लिया। इसपर सरकारने उनसे स्पष्टीकरण माँगा। श्री कामाने नाम तो लिया ही था इसलिए उन्हें बरखास्त कर दिया गया। श्री कामाने इस बरखास्तपत्रको अर्थात् कृपया स्वीकार किया है। इसका मुख्य कारण यहितिके लिए किया जानवाला संघर्ष है। धिसिद्धमें श्री कामाके इस बरिदानके बाद उस गुना जोध बढ़ना चाहिए। समाजने श्री श्री कामाको बरखास्तपत्रके लिए उकसाया इसलिए अब वह भी संघर्षसे पीछे हट नहीं सकता। मैं श्री कामाको बचाई देता हूँ। सरकारकी गुलामीसे उन्हें जो बोझ-बहुत पैसा मिलता था उन्होंने उसकी परवाह नहीं की। यह आदर्श सबको अपनाना चाहिए।

मैटाबवासियोंका सन्देश

श्री दाउद मुहम्मद और उनके साथी निर्वासनके बाद जब चार्सटाउन पहुँचे तब उन्होंने विभिन्न स्वामियोंको नीचे लिखे अनुसार तार भजा

ईश्वरपर पूरा भरोसा रखकर हमने कसकी रात मिटोरियामें कैबिनोंकी कोठरीमें भुजायी बैर-सुबेर हम ट्रान्स्वाल्के जेल-महलमें जा पहुँचेंगे और इस तरह देशके प्रति अपने कर्तव्यको कुछ हद तक भरा करेंगे।^१ हमें आशा है कि प्रत्येक भारतीय कठिन कुस उठाकर भी अपना कर्तव्य पूरा करेगा। जेल पहुँचनेके पहले हम अपने भाइयों तक यह सन्देश पहुँचा रहे हैं।

मुझे आशा है कि प्रत्येक भारतीय इस सन्देशको ध्यानमें रखेगा।

स्मरणीय तार

जब श्री दाउद मुहम्मद और मैटाबके अन्य नेतायण फोर्स्टरस्ट पहुँचे तब श्री उस्मान बहमरने निम्नलिखित तार^१ दिया

मैं आप सबको बचाई देता हूँ। ईश्वरपर भरोसा रखिए। उसकी बन्दगी कीजिए। बिना झुजाने नूहको बाइबल मूषाको फराऊनसे इब्राहीमको आगसे अय्यूबको रोमस पसुतको यजमनीक पेटस यूसुफको कुर्खे और पैम्बर साहबको मुशामें स बचाया नहीं खुदा हमारे साथ है और वह सब इन्साफ करता है।

यह तार बहुत जल्गाहबर्क है। मैं श्री उस्मान मुहम्मदको सलाह देता हूँ कि जैसी हिम्मत उन्होंने मैनोंको बँचाई है, वे स्वयं भी हमेशा वैसी हिम्मत रखेंगे। ऊपर जो उदाहरण

१. मर्दान, जल्हा करता निर्वासनकी जल्हादा कल्पना करके कुछ कल्पितमें श्रवण करने और इस प्रकार केक बनेका था।
२. इस तारक अनेकी दाम्ने लिए देखिए इतिहास बीरपिनियम, ५-९-१९८।

सार्वजनिक सभा

शुक्रवारको प्रिटोरियामें सार्वजनिक सभा हुई। श्री बचस अभ्यस वे। वहाँ काफी लोग उपस्थित थे और उनमें बहुत जोश था। जब लष्ठी शासकमें प्रमाणपत्र बसाये गये फिर भी मुझे कहना चाहिए कि बितने प्रमाणपत्र बाने चाहिए वे उठने नहीं जाये। महासियोंको छोड़कर प्रिटोरियासे केवल १७ प्रमाणपत्र जाये भी काफी नहीं रहे जा सकते। सभाका विवरण दूसरी जगह दिया जायेगा इसलिए यहाँ नहीं दे रहा हूँ।

मद्रासियोंकी सभा

तमिल भाषीयोंकी सभा रविवारको बका हुई। उसमें श्री गांधी उपस्थित थे। महासियोंने कमाव कर दिया है। बात पक्का है, उनमें से पीबाई कोष जेठ हो जाये है। उनमें बहुत जोश था। सबने कहा कि दूसरे सत्रें अपना न सत्रें वे अपना करेंगे। उन्होंने पैसा इकट्ठा करना भी निश्चित किया है।

श्री कोंकणी छूटे

पिछले हफ्ते जो श्री कोंकणी मांस-बिक्रेता जेठ गये वे वे छूट गये हैं। उनके कहनेके मुताबिक यामूम होता है कि अब जेठके अधिकारी तकलीफ नहीं देते। वे समाचार जाये हैं कि श्री मूकजी पटेल तथा श्री हरिकाल गांधीकी' तबीयत अच्छी है।

झरर रौंदरी

श्री झरर रौंदरी सोलीको जिन्होंने अपने अस्वामी अनुमतिपत्र (परमिट) की अवधि समाप्त होनेपर भी ट्रांसवाच नहीं छोड़ा था एक महीनेकी कैदकी सजा हुई है। अपने बयानमें उन्होंने कहा कि मुझी अनुमतिपत्रकी अवधि समाप्त हो जानेपर उनका विचार जानका और बाबमें शिक्षित व्यक्तिकी हैसियतसे बापस जानेका था किन्तु इसी बीच उन्हें पकड़ लिया गया। श्री रौंदरीने अपने बयानमें कहा कि यह मेरा सीमाय्य है।

चारहू व्यक्तिधोंकी इझ-निकरछा

श्री शेखत श्री बोधी श्री कीसानाका श्री मेड श्री इब्राहीम हुसैन वगैरह पकड़े गये हैं और उन्हें देश-निकासका हुकम हुआ है। वे फिर बापस प्रवेश करने। अभी उन्हें समाज बचवा कुटुम्बियोंकी बोरोये सुराक नहीं पहुँचाई जा रही है। उन्हें उनकी इच्छासे जेल ही की सुराक मिली है। उन्हें रोटी, आलू इत्यादि दिये गये थे। आज रातको वे फोक्सरस्ट के बाने जायेंगे।

इब्राहीम उस्मान

श्री इब्राहीम उस्मानके जेल जानेसे यहाँ बड़ी प्रसन्नता हुई है। वे यमन समाजके मुखिया रहे जा सकते हैं। उनकी बहादुरी यमन समाजके लिए सोमाकी बात है। उन्होंने ट्रेनमें और चार्ज ऑफिसमें बैठेका निदान बेनेसे साफ इतकार कर दिया। पुलिसके बचानने बयान देते हुए स्वीकार किया कि वह श्री इब्राहीमको पहचानता है। श्री पीलकने बयानमें कहा कि श्री इब्राहीमकी अनुमतिपत्र दिखानेबाते वे वे अठ श्री इब्राहीमको न पहचाननेका सबाव

नहीं था। बँपूठेका निधान बना ही अपराध गिना गया। यह कोई छोटी-मोटी ज्वादली नहीं है। किन्तु मुझे आशा है कि ऐसे मामलोंके बाद कोई भारतीय समझौता होने तक बँपूठेकी छाप नहीं रहेगा।

भादिरसा कामा

श्री भादिरसा कामाको सरकारले बरखास्त कर दिया है। यदि विचार करें तो यह कोई साधारण बात नहीं है। श्री कामाके मनमें ऐसी जबरदस्त धुन थी कि उन्होंने पिछनी सार्वजनिक समारोह भाग लिया। इसपर सरकारले उनसे स्पष्टीकरण माँगा। श्री कामाने भाग तो लिया ही था इसलिए उन्हें बरखास्त कर दिया गया। श्री कामाने इस बरखास्तगाको जुसी मुर्दा स्वीकार किया है। इसका मुख्य कारण शिक्षकोंके लिए किया जानवाला संचर्ष है। शिक्षकोंमें श्री कामाके इस बहिश्चानके बाव दस गुना जोश बढ़ना चाहिए। समानता श्री कामाको बरखास्तगीके लिए उकसाया इसलिए अब वह भी संघर्षसे पीछे हट नहीं सकता। मैं श्री कामाको बधाई देता हूँ। सरकारकी गुनामीसे उन्हें आ बोज़ा-बहुत पैसा मिलता था उन्होंने उमड़ी परबाह नहीं की। यह आदर्श सबको अपनाना चाहिए।

नेटाजवासिर्षोक सन्देश

श्री दाउद मुहम्मद और उनके साथी निर्वासनके बाद जब चांसर्टाउन पहुँचे तब उन्होंने विभिन्न स्वानोंकी गोथे मिले अनुसार धार भेजा

ईस्वरपर पूरा भरोसा रखकर हमने कसकी रात प्रिठोरियामें कैदियोंकी कोठरीमें बुजापि देर-सबेर हम द्वायबासके जेल-महकमें जा पहुँचेंगे और इस तरह बैठके प्रति अपने फर्षके कुछ हव तक बरा करेये।^१ हमें आशा है कि प्रत्येक भारतीय कठिन दुःख उठाकर भी अपना फर्ष पूरा करेगा। जेल पहुँचनेके पहले हम अपने भाइयों तक यह सन्देश पहुँचा रहे हैं।

मुझे आशा है कि प्रत्येक भारतीय इस सलाहकी ध्यानमें रहेगा।

स्मरणीय धार

जब श्री दाउद मुहम्मद और नेटाजके अन्य नेतागण फोक्सरस्ट पहुँचे तब श्री उस्मान महमरने निम्नलिखित धार दिया

मैं आप सबको बधाई देता हूँ। ईस्वरपर भरोसा रखिए। उगाकी बन्दगी कीजिए। जिन पुराने गृहको बाड़ुठे मुँहाको फटाऊनसे इबाहीमकी जागसे धम्मूबको रंगस बुनूबकी मछनीके पेटस युमुठकी झुँपे और पैगम्बर साहबको मुँकामें स बचाया गही कुरा हमारे साथ है और वह सदा इम्साफ करता है।

यह धार बहुत उत्साहपूर्ण है। मैं श्री उस्मान मुहम्मदका सलाह देता हूँ कि जैसी हिम्मत उन्होंने मठोंको बँधाई है, वे स्वयं भी हमेसा वैसी हिम्मत रखेंगे। ऊपर जा उबाहरण

१. यहाँ उल्लेख ररारा निर्वासनकी जागका उल्लेख करके पुनः बर्तावसे उल्लेख करने और इस धारके उल्लेख करने का।

२. इस तरह बँपूठेकी सन्देशके लिए देखिए इंडियन ओपिनियन, ५-९-१९८।

दिये गये हैं और उदाहरण सभी साक्ष्यों प्राप्त होते हैं। यह जमाना कुछ ऐसा हो गया है कि हम अपने साक्ष्यों के सिद्धे हुए को किताबों में बंकिट चीटियों की तरह समझते हैं और ऐसे साक्ष्यों को केवल मुसलमानी बोलचाल रह जाते हैं। हम ईश्वरको इतना डर मानते हैं कि इन उदाहरणोंका असर हमारे कामोंपर बहुत कम होता है। भारतीयोंके लिए यह अक्षर अक्षरकी अपेक्षा करलेका है। यदि ईश्वरपर सच्चा विश्वास रखकर सारे भारतीय सचें तो २४ घंटोंमें घुटकारा हो जाये।

कीटियोंका संघर्ष

अगस्त १४ को जो मद्रासी इसके लिए जेल गये वे आमतक उनके साथ ही गये। वे नाम अब नीचे दे रहा हूँ

सर्वथी कंभा घामो पिन्ने सावेरी पिन्ने मार पकीटी मूरकी रामु नाबड कुवण्णु नाबड एय पावडे मायडू मुटरामुट्टु पत्तर, एम० नाबेसल कंभासायी मूलसायो धामु, श्री बरबल एय रंगासायी मायडू, बेंकटसायी अण्डु, रंभा पडिमायी मार बमिडल इत केनु पडिमायी एय मुटरामुट्टु पिन्ने श्री नौबिस्वसायी पडिमायी सी० कंभा मूरके मरुण्णु, रंभा पडिमायी नाबला मायडू रामा नागप्पल मायडू।

इतमें से बहुतोंके पास परवाने (पाइसेज) थे फिर भी उन्होंने बिना परवानेके जेली जमाई।

समय से जनकपुर जेलके अधिकारियोंने पुरम क्रिया और उनके इतना घल्ट काम किया कि उनकी पीठपर लगे पत्र पमे किन्तु फिर भी उन्होंने उसकी कोई परवाह नहीं की। वे बुबारा भी जेल जानेके लिए तैयार हैं। जेलके मुख्याधिकारीके नाम इसके बारेमें एक हलकिया बयान लेना गया है और सम्भव है कि अब अधिकारियों इस प्रकार बरताव न करें। यदि करें भी तो क्या होता है। बिल्ली जिनके नीचे कमेथी लतगी बल्दी घुटकारा होगा।

किस्किवायामे

श्री इत्याइक ईशप बेसिमपर बिना परवाना व्यापार करनेके जुर्ममें १५ पीठ जुर्मता और न होनेपर एक महीनेकी जेलकी सजा सुनाई गई। श्री बेसिम जेल गये। यह पर्याप्त नहीं हुआ इसलिए अब उनके नीकर श्री इत्याहीम जावनजी लीमङ्काको भी बिरहारा दिया है। श्री लीमङ्काको सजा हो सकेगी ऐसा नहीं लगता। क्योंकि [सर्वोच्च] न्यायालयका फैसला है कि नीकरपर बिना परवाना व्यापार करनेका अपराध नहीं किया जा सकता।

डे० एम० पटेल

बेटीनिर्दिगमें श्री पटेलका माज नीजाम किया गया है। उनपर १ पीठ ७ सिल्लिन ६ पेंस जुर्मता हुआ था। इतना जुर्मता बसूक करनेके लिए २ पीठका माज देना गया और कुर्क-जमीनकी ६ पीठ ५ सिल्लिन ६ पेंस मेहमताना दिया गया। यह ती बेलेका बीना बिल्लीकी जगामबाकी बात हुई। मैं श्री पटेलको सजाई देता हूँ। अब एक इस तरह पार्टी टारफसे नुकसान बढानेने उनी हमें मुक्ति दिलेयी। अब कौन कह सकता है कि हमदस ताहब लटेरेके लगेके घरदार नहीं है?'

१ गांधीजीने अगस्त १९३१ बेटीनिर्दिगके अरजके अन्तर्गतके माजकी नीजामकी "दाम-समर्थित बला" का ना बेसिम काज ८ एड ४२९, ४२९ और ४२९-४८।

नेटालके अन्य ग्यारह व्यक्ति

नेटालवासियोंकी और भी खबर आई है। कम रातको ११ व्यक्ति जानबाले से उन्हें भी बरताने स गये हैं। उन्हें देननक लिए बितन ही मोग पार्क स्टेसन तक गये थे और कुछ जेकरक गये। उन्होंने बाहरसे लुगाक नहीं मी पकड़ी ही लुगाक मी। वे सबक-सब तकके चार्मटाउनम बसकर फ्रांसगस्ट और चाम अॉफिस गये तथा वहाँ गिरफ्तार हुए। अब मेट और गिअित सब किरसे शाब हो गये हैं। इन सब गजनोंमें जेकमें ही खूनका निरपय किया है। भोजन मी जेकरा ही लेते हैं। मेरी सहाह है कि वे कपड़ भी जेकरा ही सें। मुखमा सब बडेना मो खमी सय नहीं हुआ है। मखारको यह देनना बाकी है कि कौन-सा अमियोय मयाया त्राय। मुन्धी लड़ाई छड़नेबासे जमानतपर नहीं छूठे लुगाक भी बाहरने नहीं मंगाते और मखार जो कष्ट देती है उस सहन करत है। मैं अपन माइमोंको सहाह देता हूँ कि वे कोई छुाकर मीमारी हुई चान मी न सें। बीड़ी आविका ब्यसन हो ता उस भी छोड़ दें। ब्यसन छोड़नेसे शरीर तथा मनको काम होता है। किन्तु यदि उस कुछ न मानें ता भी रोकके लिए ब्यसन छोड़ना अच्छा ही कहा जायगा।

हमीदिया इस्लामिया अंजुमनकी सभा

मसल ३१ को [तुर्की] माननीय मुलतानको महीनलीन हुए ३२ बय हो गये और उसी तारीखका अक महीना हेजाब रेसद खोकी मरी थी इसलिये उसकी यादमें इस अंजुमतने एक मबरकत सभा की। उसमें बहुत-से मुस्लिम भाई उपस्थित थे। गोरे भी आमन्त्रित थे। तुर्कीके हुए या बुम्फोंग करेन तथा उनके मित्र मी पी आर काउन जो तुकिस्तानमें गीफटी कर चुके हैं और जिनको तुर्कीका दूसरे दर्जेका तमना मिला है, उपस्थित थे। मी कैसनक तथा मी बाइबक भी थे। इनके अतिरिक्त मी गोंडके मी ब्यास भी कामा मी मायदू तथा मी गीची भी वहाँ उपस्थित थे।

काबकम बहुत उत्साहपूर्वक और बहुत अच्छे ढंगम सम्पन्न हुआ। छ प्रस्ताव पाम किये गये। हेजाब रेसदेके लिए उसी समय बन्द्या भी पुरक हुआ। मी हाजी हबीबने १ पीड लिखावे। इज्जामोंने १ पीडले अधिक इकट्ठ किये। मी मबाब खान उसी समय १ पीड लिखा। और एक गाइवालेने तालियोंकी मड़गड़ाहटके बीच अपनी दिन मरकी कमाई ५ पिलिय दे दी। कई स्वाननि तार भाय थे। सभा स्वामोंपर मुसकमानोंकी बूकने बन्द कर दी गई थी। तारोंमें मी मगरीका तार जानत माय्य है। मी मगरीने खबर दी थी कि गोरे और जुनु बच्चोंको मिठाई और पारिवोधिक बाने गये। यह बहुत ही अच्छी बात है। इससे भारतीय और पूर्वके मीमांदा औरन प्रकट होता है। गोरे दुस्मनों-बैधा काम करते हैं फिर भी कामबाचने के चारवापस उनके बच्चोंका मिठाई मी। यह बात उम्फननीय और अनुकरणीय है। पत्नी उम्मान मुग्मरन जुनुम निताला था। बच्चोंन तक-करमे भाय लिया और उन्हें इनाम दिय गये। पामको आनिनबाजी हुई। मर्माको सया कि हमीदिया अंजुमतका मबन बहुत छोटा है। म बाया करता हूँ कि मुस्लिम भाई इस मबरनकी कौचा तथा सच्चा-बीड़ा करके तना अच्छा कर सें कि वह हमारी पारनाके अनुसार गुन्दर और पूरी तरह उपांगी मी पन जायगा।

१. खुन्ने मरी " हमीदिया " सभ्य है।

दिये गये हैं जैसे उदाहरण सभी छात्रोंमें प्राप्त होते हैं। यह जमाना कुछ ऐसा हो गया है कि हम अपने छात्रोंके लिये हुएको किताबोंमें अंकित चीटियोंकी टांग समझते हैं और ऐसे छात्रोंको केवल मुँहसे बोलकर रह जाते हैं। हम ईश्वरको इतना दूर मानते हैं कि इन उदाहरणोंका असर हमारे कामोंपर बहुत कम होता है। भारतीयोंके लिए यह बचकर कहनेकी अपेक्षा करनेका है। यदि ईश्वरपर सच्चा विश्वास रखकर सारे भारतीय लड़ें तो २४ घंटोंमें छूटकारा हो जाने।

चीटियोंका संघर्ष

अप्रैल १४ को जो महासी बैठके लिए बोल गये वे आज तक उनके नाम नहीं दे पाया। वे नाम अब नीचे दे रहा हूँ

सर्वथी कंणा सामी पिल्ले छाबेरी पिल्ले थार पकीटी मुख्डी रामू नायड सुब्ररामसू नायडू एस पावडे नायडू मूतयामुतु पत्तार, एम नायेसन कंवासामी मूनसामी नायडू बी बरपन एस रंगासामी नायडू बैकटसामी अण्डु, रंगा पडियाची थार बेमिशन एस बैलू पडियाची एस मूतयामुतु पिल्ले बी गौकिन्ससामी पडियाची धी कंवा मुख्के गरगुमुल्लू, रंगा पडियाची मायना नायडू रामा मायनाम नायडू।

इनमें से बहुतोंके पास परवाने (आइसेंस) थे फिर भी उन्होंने बिना परवानोंके फेरी लगाई।

उनमें से अनेकपर बेसके अधिकारियोंने बुरम किया और उनसे इतना सख्त काम किया कि उनकी पीठपर छांटे पड़ गये किन्तु फिर भी उन्होंने उसकी कोई परवाह नहीं की। वे दुबारा भी बेस जानेके लिए तैयार हैं। बेसके मुख्याधिकारियोंके नाम इसके बारेमें एक हूबकिया बमाल भेजा गया है और सम्भव है कि अब अधिकारियों इस प्रकार बरताने ग करें। यदि करें भी तो क्या होता है। बितनी अधिक चोट अपेसी उठनी बस्ती छूटकारा होना।

किश्किपामामें

श्री इस्माइल ईसप बेकिमपर बिना परवाना ब्यापार करनेके जुर्ममें १५ पाँड जुर्माना और न बनेपर एक महीनेकी बेसकी सजा सुनाई गई। श्री बेकिम बेल बसे गये। यह पर्याप्त नहीं हुआ इसलिए अब उनके लीकर श्री इब्राहीम बाबमबी श्रीमड्डाको भी गिरफ्तार किया है। श्री श्रीमड्डाको सजा हो सकेगी ऐसा नहीं लगता। क्योंकि [सर्वोच्च] न्यायालयका फैसला है कि लीकरपर बिना परवाना ब्यापार करनेका अपराध नहीं लगाया जा सकता।

ई० एम० पटेल

बेटीनिविदमें श्री पटेलका माछ लीकाम किया गया है। उनपर १ पाँड ७ सिक्कि ६ पेंस जुर्माना हुआ था। इतना जुर्माना बसूल करनेके लिए २ पाँडका माल भेजा गया और कुर्क-जमीनकी ६ पाँड ५ सिक्कि ६ पेंस मेहलताना दिया गया। यह तो भेजेका बोड़ा दिन्नीकी अमावसाली बात हुई। मैं श्री पटेलको बचाई देता हूँ। अब हम इस तरह चारों तरफसे नुकसान उठावोंने तभी हमें मुक्ति मिलेगी। अब कौन कह सकता है कि स्मूथ साहब कुट्टेके बच्चे सरदार नहीं हैं?'

१ गंधीजीने बरान्त छाप बेटीनिविदके अरडीन अदालतके बाल्डी लीकामकी "कमून समरिड बन्दा" कहा था, देखिए कन्व ८ एड ४३३, ४४६ और ४४७-४८।

२ साम्राज्य-सरकारके विचार

हमने अपने अंदेबी विभागमें ब्रिटिश संसदमें दिये गये भाषणोंका विवरण छापा है। उनमें उपनिवेश उपमन्त्री कर्नल सौसीका भाषण पठनीय है। उन्होंने कहा है कि ट्रान्सवाल सरकारस बातचीत बल रही है। भाषणमें यह भी बताया गया है कि जिन लोगोंको उपनिवेशोंमें रहनेका अधिकार प्राप्त है, उन्हें गोरोंके समाज तक बिये जाने चाहिए और पूर्ण नागरिक मानता चाहिए। अब इसपर हम यह कह सकते हैं कि जिन लोगोंको यहाँ रहनेका अधिकार प्राप्त है उनके हितकी दृष्टिसे जल्द शिक्षा प्राप्त भारतीयोंको भी उपनिवेशमें प्रवेश करनेकी छूट दी जानी चाहिए। फिर, हम कनक खीकीके भाषणस यह भी बेशक सकते हैं कि यदि हम पूरा उद्योग करें तो साम्राज्य-सरकार हमारी सहायता कर सकती है। कुर्बी हमारे हाथमें है। हमें केवल सत्याग्रही बननेकी आवश्यकता है।

[नूबरानीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-९-१९८

३ रिषकी स्थिति

श्री रिषके जो पत्र आते हैं उनमें बड़ा दुःख होता है। समाज बहुत-कुछ करता है, लेकिन [पत्रकी] कर नहीं करता। श्री रिष जो काम कर रहे हैं उसे बहुत बोझे ही मोरे और भारतीय कर सकते हैं। श्री रिषको बेतककी परवाह नहीं है। ऐसे मनुष्यको सदा पैसेकी रकमों ग्यना हमारे लिए चर्चकी बात है।

श्री रिषको पहले ३ पीठ भेजनेकी बात थी। उसमें से किस १ पीठ भेजे गये है। बाकीके २ पीठ भेजना तो कसग बाज उनके पास घर-बर्तके लिए भी पैसे नहीं भेजे जा रहे हैं। यही नहीं कार्यालयका धर्ष जमाना भी मुश्किल हो रहा है। हमें बीर्बमूषताकी कारण है, और इसमें हम दूसरोंके कर्तव्यका भी त्याग नहीं करते। एषो स्थितिमें समिति अधिक दिनों तक बल सकेगी यह नहीं जान पड़ता। इसलिए प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है कि उसमें जिदनी बने उतनी मरद करे। जो लोग बिलकुल बिना पैसेके ऐसा महान संघर्ष जमानकी आज्ञा करते हैं वे बलवी करते हैं। मुझे उम्मीद है कि समाज श्री रिषके लिए [पैसेका] उत्साह प्रकल्प करेगा अन्यथा समितिको दृष्टे बेर नहीं लगनी और पीछ हमारे लिए केवल हाथ मलना ही रह जायेगा।

[नूबरानीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-९-१९८

दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समिति (साथ आफ्रिका ब्रिटिश इंडियन समिती) कम्पन्ड मन्त्री २३-९-१९१८ दिना. समितिद्वारा स्थापना "दक्षिण आफ्रिकामें गते हुए भारतीयोंकी स्थिति और त्यागपूर्वक व्यवहार प्राप्त करानेके लिए" १९१८ में हुई थी; देखिए कन्व ३ दृष्ट २५३ ४४; कन्व ७, दृष्ट २०९-८; ४१०-१३; कन्व ८ दृष्ट २३ और १ २-०३।

बुधवार [सितम्बर २ १९८]

हरि करे तो होय

श्री वाउर मुहम्मद तथा अन्य साइपोंको निकाल दिया गया था किन्तु बीघा कि होना था बापस के सबके-सब शामिल हो गये हैं। यही नहीं श्री वाउर मुहम्मद श्री पारसी इस्तमजी तथा श्री बागसिया जोहानिसबर्ग आ गये हैं और उन्होंने काम फिरसे शुरू कर दिया है। दूसरे भाई फौजदारस्ट बेल्की हवा खा रहे हैं। इसका अर्थ इतना ही है कि उन्हें जोहा निसबर्ग आगेकी जरूरत नहीं बची। मंगलवारको सबपर मुकरमा बचनेबाधा था किन्तु सरकारने आदामी मंगलवार ठाटीक ७ को मुकरमा चलाना तप किया है। इस अवसरका काम उठाकर तीन सेठ जोहानिसबर्ग आ पहुँचे हैं। सब अपना-अपना फर्म बचा कर रहे हैं। उनकी जोहानिसबर्गमें आवश्यकता है। दूसरे लोग बेकमें रहकर अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं।

सोपबनीक क्या हुआ ?

श्री सोपबनी बापस मानेबासे के फिर भी सबास उठ रहा है कि वे बापस क्यों नहीं आ रहे हैं। मुझे यह कहना है कि श्री सोपबनी तो फिरसे शामिल होनेके लिए बहुत तड़प रहे हैं किन्तु फिलहाल बास्वटाउनमें ही रहना उनका फर्म है। इस प्रकार वे अधिक धेबा कर रहे हैं। संभने उन्हें रोक रखा है। संभने उस विषयमें जो प्रस्ताव किया है, सरकारकी ओरसे अभीतक उस प्रस्तावका उत्तर नहीं आया। इस कारण तथा अन्य कारणोंसे वे अभी पुरान्त नहीं बुझाये गये हैं। जब समय आयेगा तब वे शामिल होंगे। अभी एक ही तरह कर्तव्य पूरा नहीं कर सकते। कर्तव्य करना ही सबका काम है, और श्री सोपबनीका कर्तव्य अपने उत्साहको बचाकर प्रतीक्षा करना है।

मूसा ईसप बाडिया

श्री मूसा ईसप बाडियाको थिटीरियामें एक पीठ जूमांगा हुआ। उनका माक बन्द करते हुए आज फुर्क-अमीनने सारी हुकानपर मुहर लगा दी। यह पीरफालूनी बात है। फुर्क-अमीनको इसका कोई अधिकार नहीं है। इसलिए संभने श्री बाडियाको हुकान छोड़ने और फुर्क-अमीनके नाम पीटिस निकलवानेकी सलाह दी है।

दिल्लवार लो

श्री दिल्लवार लो एक मोरेके यहाँ मौकर थे। मोरेने उन्हें बरखास्त कर दिया है, क्योंकि वे कानूनके विरोधमें हकबल करते हैं और उन्होंने कम हेबाव रेकने [समारोह] के सम्बन्धमें झूठी मीमी की। श्री दिल्लवार लोकी हिम्मतपर मैं उन्हें बचाई देता हूँ।

चन्दा

श्री वाउर मुहम्मद श्री इस्तमजी तथा श्री बागसियाने आते ही काम शुरू कर दिया है। वे चन्दा करने निकले थे; जिन्होंने एकम दी है उनके नाम अपने हस्तों देनेकी बात साँच रहा है।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-९-१९८

२ साम्राज्य-सरकारके विचार

हमने अपने अंग्रेजी विभागमें ब्रिटिश संसदमें दिये गये भाषणोंका विवरण छापा है। उनमें उपनिवेश-उपमन्त्री कर्नल सीसीका भाषण पठनीय है। उन्होंने कहा है कि द्वायचक्र सरकारके बावजूद बल रही है। भाषणमें यह भी बताया गया है कि जिन लोगोंको उपनिवेशोंमें रहनेका अधिकार प्राप्त है, उन्हें पोरोंके समाज तक दिये जाने चाहिए और पूर्ण नागरिक मानता चाहिए। अब इसपर हम यह कह सकते हैं कि जिन लोगोंको यही रहनेका अधिकार प्राप्त है, उनके हितकी दृष्टिसे उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयोंकी भी उपनिवेशमें प्रवेश करनेकी छूट ही जानी चाहिए। फिर, हम कर्नल सीसीके भाषणसे यह भी बेल सकते हैं कि यदि हम पूरा उद्योग करें तो साम्राज्य-सरकार हमारी सहायता कर सकती है। कुंजी हमारे हाथमें है। हमें केवल सत्याग्रही बननेकी आवश्यकता है।

[दूरदर्शीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-९-१९८

३ रिजकी स्थिति

श्री रिजके जो पत्र आते हैं उनका बड़ा दुःख होता है। समाज बहुत-कुछ करता है लेकिन [उनकी] कद्र नहीं करता। श्री रिज जो काम कर रहे हैं उसे बहुत बाड़े ही गोरे और भारतीय कर सकते हैं। श्री रिजको भैतनकी परवाह नहीं है। ऐसे मनुष्यको सदा पैसकी संघीमें रखना हमारे लिए सर्वकी बाध है।

श्री रिजको पहले १ पाँड भेजनेकी बात थी। उसमें से केवल १ पाँड भजे मने है। बाकीके २ पाँड भजना तो वरुण आज उनके पास दर-सर्वके लिए भी पैस नहीं लेने पा रहे हैं। यही नहीं कार्यालयका खर्च जमाग भी मुश्किल हो रहा है। हमें बीबंसुनताकी बाध है, और इसमें हम दूसरोंके कर्णोंका भी खयाल नहीं करते। ऐसी स्थितिमें समिति अधिक दिनों तक चल सकेगी यह नहीं जान पड़ता। इसीलिए प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है कि उससे जितनी बने जतनी मरब करे। जो लोग रिजकुछ बिना पीसेके एका महात्म संघप बनानेको आशा करते हैं वे गलती करते हैं। मुझे जम्मीर है कि समाज श्री रिजके लिए [पैसेका] उन्कारक प्रबन्ध करेगा अथवा समितिको दृष्टे देर नहीं लगेगी और पीछे हमारे लिए केवल हाथ मरना ही रहे जायेगा।

[दूरदर्शीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-९-१९८

१ इंडियन नारिकेल मिडिल भारतीय समिति (साम्प्रदायिक मिडिल इंडियन समिति), कलकत्ता कमी ५४ इन्फू रिज। समितिकी वारम्मा "इंडियन नारिकेलमें पड़े हुए भारतीयोंको अधिक और आकर्षक व्यवस्था करनेके लिए" १९२२में हुई थी। इंडियन कन्व ४, पृष्ठ २४३-२४४। कन्व ७, पृष्ठ २०५-८; ४१०-१११। कन्व ८, पृष्ठ ११ और १२-१३।

४ भारतके राष्ट्रपितामहका जन्मदिन'

हमें समस्त भारत और उपनिवेशोंमें छुनेवाले अपने भाइयोंके साथ भी बाबामाई नीरोजीका जन्मदिवस मनानेका गौरव एक बार फिर प्राप्त हुआ। बाबामाई नीरोजी समकालीन भारतीयोंमें सबसे महान् हैं। कब उन्होंने अपने ८४ वें वर्षमें कवम रखा है। उन्होंने अपना कर्मठ जीवन अपने प्यारे देश और देशवासियोंको सेवामें व्यतीत किया है। जब वे कुछ देसमन्त बनकास ग्रहण कर भारतमें आगितपूर्वक रह रहे हैं। अपनी श्रेष्ठ सेवामेंके कारण उन्हें इस विभामका अधिकार भी है। यह याद करके कि भी बाबामाईने अपना क्यमग सारा जीवन अपन देशवासियोंके अधिकारों और स्वतन्त्रताके लिए लड़नेमें बिताया है दक्षिण आफ्रिकामें भारतीय विद्येवत ट्रान्स्वाखवासी भारतीय अपने संघर्षके लिए साहस प्राप्त कर सकते हैं। इसलिये हम दक्षिण आफ्रिकावासी भारतीय उनको सबसे बड़ा मान मही दे सकते हैं कि उनका अनुसरण करें और सन्नादके प्रत्येक प्रभावको बिच पूर्ण स्वतन्त्रताका अधिकार है उसे बरतक भयन लिए और जानेबासी पीड़ियोंके लिए प्राप्त न कर लें सबतक संघर्षसे कभी विचलित न हों।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-९-१९८

५ बाबामाईकी जयन्ती

कब भारतके पितामह बाबामाई नीरोजीकी जयन्ती थी। उन्होंने ८४ वें वयमें प्रवेश किया है। भारतमें उनकी जयन्ती सर्वत्र सार्वजनिक उत्सवके रूपमें मनाई जाती है। वहाँकी समस्त सार्वजनिक संस्थाएँ अत्यन्त उत्साहपूर्ण समारोह करती हैं और उनको उनके बीर्ष-जीवनके लिए श्रुतकामनाएँ भेजती हैं। दक्षिण आफ्रिका [के भारतीयों] की सार्वजनिक संस्थामेंकी जोरसे जो सम्बोध भेजे गये हैं उनका बिबरण हम अग्यत्र दे रहे हैं। उन्होंने ये सम्बोध भेजकर [मान] अपने कर्तव्यका पालन किया है। हम उनके बीर्ष-जीवनकी कामना करते हैं और संसारके सिरजनहारसे प्रार्थना करते हैं कि वह हमें और इस पत्रसे जिनका सम्बन्ध है उन सबको उनके समान श्रुत हूयम दे। हम अपने पाठकोंको परामस देते हैं कि वे उनके देश प्रेमका अनुकरण करें यही इन सन्धे पितामहका सच्चा स्मरण है। ट्रान्स्वाखके भारतीयोंको यह याद रलना है कि इन अमर पितामहने हमारे लिए बँधी टोक रहीं हैं वही टोक वे स्वयं भी रलें। इस समय दक्षिण आफ्रिकामें हमारी लड़ाई ऐसी है कि उसमें भाग लेनेके लिए

१. देखिए कलम बीके भी।

२. सितम्बर ४ को।

दादाभाई सरदारों से सतत घोर भी जाने आये तो भी कम होमा। और जबतक ऐसे लोग [पर्याप्त संख्यामें] आये नहीं जाते तबतक राजनीतिक और अन्य क्षेत्रोंमें हम प्रगति न कर सकेंगे।

हम अपनी यह वर्ष की गई सूचनाके अनुसार इस संक्रमे दादाभाई गौरीबीना बिना रहे रहे हैं।

[पुनरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-९-१९८

६ बोहानिसर्गकी चिट्ठी

सोमवार [सितम्बर ७ १९०८]

बकनका भाषण

मृतपूर्व उपनिवेश-सचिव श्री डंकन^१ भाषण करते हुए यह विचार व्यक्त किया है कि महाजोगत्वा काक कोयोंको राज-कायम हिस्सा बिये बिना काम नहीं चलेमा। यदि ऐसा न हुआ तो गोरे और काके दोनोंका नुकसान होगा। ऐसे विचार के गोरे व्यक्त करने कने ह जो पहले बड़े-बड़े ओहदोंपर रहे चुके हैं। इससे जाहिर होता है कि कुछ ही वर्षोंमें बहिष्ण कार्यक्रमों बड़े-बड़े परिवर्तन होंगे।

स्टैंडर्डके विचार

श्री स्टैंडर्डकी भिन्ती बहुत होशियार बकीकोंमें की जाती है। उन्हें हम सोमसि विशेष प्रेम नहीं है, फिर भी उन्होंने [अपने एक भाषणमें] यह विचार व्यक्त किया है कि भारतीयोंके साथ संघर्षमें अन्तरक स्मद्द हार हारे हैं। वास्तवमें हुआ भी ऐसा ही है। जब जो सड़ाई बाकी है, उसमें भी यदि हम पूरा धोर लगा दें तो वे फिर हारेंगे।

भाषा रामजी

श्री भाषा रामजी गोटिस मिन्नेपर भी उपनिवेशस न जानेके आरोपमें सभिवारको निरपठार कर बिये गये। उनके मुकदमेकी किसीको कोई खबर नहीं थी इसलिए उन्होंने अपनी पैरकी स्वयं ही की। उन्होंने उपनिवेशसे जानेसे साफ इनकार कर दिया और न्यायाधीस हाथ दिया क्या एक महीनेका सपरियम कारावास स्वीकार किया। वे इस समय अन्तमें विराज रहे हैं। भारतीय इस प्रकार निर्हन्त्र होकर बेच जाना सीस गये हैं यह हमारे लिए पीपायकी बात है।

गोदाखियाका तार

श्री गोदाखियाने जो अन्य भारतीयोंके साथ फोक्सरस्टकी जेसमें हैं तार दिया है कि भारतीय कहीं पुनू [मकईका बहिया] नहीं ला सकते इसलिए वे मुबहूके नास्तेके बिना रह जायें ह। इसके बावजूद भी गोदाखिया तथा अन्य भारतीय जेस नहीं छाड़ते और नहीं पड़ हुए हैं इससे उनकी बेचनक्ति प्रकट होती है। कुराकके बारेमें सरकारके साथ अब भी किता

१ रेडिफ काल ७ वृ १ १ ।

२ रेडिफ काल ७ वृ १९ ३ से १९ १ तक रहे। बाकके बल्के कि रेडिफ परिधि ३ ।

पडो बस रही है। बिनसे कष्ट नहीं सहा बाधा उन्हें भी तिसकला उदाहरण याद रखना चाहिए। वे सारी खूराकपर छ बप तक भैस रहे सकेँये ? उनकी मनस्था भी बुझापेकी है। वे यूरोपीय होते तो आज घासकले पक्षपर बैठे होते। ऐसा कहकर मैं यूरोपीयसि द्वेष नहीं करता। भारतीय उनकी तरह पाप करके राजमुख भोये इससे तो बचना है कि वे पापमुक्त रहकर स्त्री-मुक्षीपर ही मुबारा करें। जो भी हो कहनेका सार यह है कि हमें जो कष्ट भोगन पड़ रहे हैं वे महान भी तिसकले कष्टोंके भाये कुछ नहीं हैं।

मंगलवार [सितम्बर ८, १९८]

नेटाइके सेठोंका काम

थी पाउब मुहम्मद थी पारसी इस्तमजी तथा भी आंगिसिया फोक्सरस्टसे बापस जानेके बाद हाथपर-हाथ भरकर बैठे नहीं रहे। उन्होंने बोहानिसवर्षमें जन्मा उगाहनेका काम शुरू किया और २ पींडसे ऊपर इकठठा नी कर किया। वे हर जगह गये वीर जहाँ भी गये सवने निबिमें पैसे दिने। उनके साथ इमाम साहब बम्बुस काबिर बाबजीर, भी कासलिया थी ब्यास थी कामा खादि भी जाते थे। वे शुरूवारको तमाबके बाद भूगर्सेडॉप गये। उनके साथ थी कामा भी थे। बूपसेवर्षमें ३ बटेके भीतर कममब ६४ पींडकी रकम किसी गई वीर ६ पींड तक्य मिळे। बहसि वे रातको बापस लीटे।

खनिवारको मुखहकी गाड़ीसे वे हाइडेसवर्ष गये। वहाँ भी भायातने प्रारम्भमें ही १६ पींड देकर अत्यन्त उत्साह प्रर्षाधित किया जिसके फलस्वरूप ४५ पींड जमा हुए। हाइडेसवर्षसे उची दिन रातकी गाड़ीसे वे स्टैंडटन गये। भी कासलिया तथा भी भायात उनके साथ थे। बादमें भी कामा भी उची गाड़ीस उनके साथ ही लिये। स्टैंडटनमें बाकी रातक २ बने पहुँचती है फिर भी उनकी अगवाती करनेके लिए बहुत-से नागरिक उपस्थिति हुए थे। भारतीयोंको म नागरिक कह रहा हूँ इसपर किसीको ताज्जुब नहीं होता चाहिए। भारतीय अब पुजाम नहीं नागरिक ही हैं। हमें [उपनिवेशके घासनमें] छासेदारीका अधिकार है और हम उची अधिकारक लिए संघर्ष कर रहे हैं।^१ स्टैंडटनमें ५३ पींडकी रकम इकठ्ठी हुई।

इतने कामके बाद मुकरमा बजने तक इन सेठोंकी आराम करनेका हक ना किन्तु उन्होंने मिटोरियामें मोठा खनातका निश्चय किया। रबिवारको रातकी गाड़ीसे वे मिटोरियामें लिए खाना हुए। वहाँ इन्होंने सोमवारकी प्रात जन्मा उगाहता शुरू कर दिया। [मिटोरियामें] उनकी मैत्रवागी थी ए ए सुभेमाजने की। ताकला करलके बाद वे बस्तीसे सहर पहुँचे और उन्होंने मैमन बिरादरीम जन्मा सेना शुरू किया। भी हापी कासिमत ५ पींड सिलबाय। दो बने थी पाँचो मिटोरिया पहुँच बने और घाम तक उगाही जन्मो रही। साथमें भी हाजी कामिम खादि भी थे।

१ तत्काले वाङ्मय सिद्धमे है; हेडिङ्ग काल ८ पृष्ठ ४१२ १३।

२. भारतीय नागरिक नहीं थे, क्योंकि उन्हें राजनीतिक अधिकार नहीं था। और राजशाहके विषय-मन्त्रको उन्हीं को प्रतिनिधित्व प्राप्त था जन्म लक्षण "उज्जयन्ता" (अधोदिप) का था। भारतीयोंके लक्षे भी बरतार एउ बरतार और दिया था कि भारतीयोंके राजनीतिक अधिकार नहीं बजते (हेडिङ्ग काल ६, पृष्ठ ५२३)। किन्तु उन्हीं नागरिक अधिकारोंकी भीन बरतार की। नागरिक अधिकारोंसे जन्म तत्काले था "पूजासिल, नागरिक तथा ध्यात-कर्मणी अधिकार"। हेडिङ्ग काल ६, पृष्ठ ५२७।

बार बने बस्तीमें समा हुई। धी बगल अम्पल बे। उम्होंने उनका स्वागत किया और बारमें सेठोंम उसका उचित उत्तर दिया। बस्तीमें चन्दा इकट्ठा करनेके लिए समय नहीं रहा किन्तु बस्तीके भाखीयोंने चन्दा इकट्ठा करनेका बचन दिया है। प्रिटोरियामें २६ पाँचसे अधिक रकम उगाही गई।

प्रिटोरियाकी सक्तिको देखते हुए यह रकम बहुत कम है। किन्तु मेमन सज्जनों सहामता कर इतना भी हाथ बँटाया इसके बाहिर होता है कि वे भी समाजके साथ ह और इस कानूनके विरुद्ध हैं। उनकी मबरका अरर सरकारपर भी हीना चाहिए। उसकी समझमें यह बात वा प्रायमी कि पानीमें काठी मारनेसे पानी फलता नहीं और भारतवासी भी एक पानी — एक झरू हैं।

सेठोंने धामको बस्तीसे बनेन जानबानी गाड़ी पकड़ी। उनसे मिलन और उन्हें बिबाई देनेके लिए अमिस्टनमें इमाम साहब की कुशाइया की छेन्वी भी बीबतजी की उमरखी साथे की ब्यास जावि उपस्थित थे। अमिस्टनमें अयभग ४५ मिनट इकना पड़ता है। इसका काम उठाकर उन्हें अमिस्टन [स्टेशन] के होटलम बाधत की गई। होटलका मासिक अम्ला बादवी वा। उसन जानाकानी नहीं की किन्तु होटलके कमरके परसे भिरा दिय ताकि बूधरे सोम न देख पायें। लुधीके मारके बीच फोल्डरस्टकी गाड़ी बज पड़ी और सेठ सोम बीच जानके मिय बिबा हो गये। बिध समाजके नेता ऐसी बहादुरी ऐसी स्वरेय मक्ति और ऐसा उत्साह दिखावे वह समाज कैसे हार सकता है?

फूगर्सडॉर्पकी फहानी

फूगर्सडॉर्पके मारखीके बीच सरकारकी फूट-फाट दिखाई पड़ रही है, और यहाँकी सरकार उसका नाजायज फायदा उठाता चाहती है। यहकि समाधारपत्रोंमें लखर है कि फूमस डॉर्पमें भाखीय व्यापारियोंन और-जूम और मारपीठ कर भारतीय फेटीबालोंसे उनके प्रमाण पर लिये। बिन फेटीबालोंपर ऐसे जूम किने गये उम्होंने बिकावर्त की हैं और अय बिन ब्यागारिबोंने जूम किया वा उनपर मुकरने बलावे प्रायेंगे।

कहते हैं यह बटना ठब हुई थी जब नेटालके सेठ सीमा पार करनेस पहले फूगर्सडॉर्प गये थे। नेटालके सेठोंसे पूछा गया तो उम्होंने कहा कि न किसी भाखीयपर जूम किया गया है और न किसीको मारा-पीटा गया है। वे कहते हैं कि एक बार मामूली कहा-मुनी ही गई थी बस अधिकसे-अधिक इतना ही हुआ। अपर बात ऐसी ही ही तो किसी भी भाखीयको इतनी अदूरदसिता क्यों बिबानी चाहिए कि वह हमें ही मारनेके लिए सरकारके हाथोंमें एक हथियार बन जाये? मूकदमा मूकठ ही जूठा है इसलिए सरकारकी हार हीपी।

बिब भी ऐसी अफवाहोंका अरर यह होता है कि भाखीयोंके कष्टक दिन तकिक और अधिक ही बाते हैं। हएक भाखीयको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिए कि यह अफाई घटीर बसकी नहीं है। हमें बमकी बबबा मार-पीठके काम नहीं केना है, घटीर-बलका उपयोग नहीं करना है। यही नहीं कि उसका उपवीय सरकारके विरुद्ध नहीं करना है अपने भाइयोंके विरुद्ध भी नहीं करना है।

यह अफाई आरमबककी है। इसलिए यह ईश्वरीय है। हम जानते हैं कि घटीरकी अपेक्षा मन अधिक बलवान है, और आरमबक मनीबलके भी बड़कर है। वह सर्वोपरि है। हम इस

विचारको मानते तो है किन्तु उसके अनुसार बचते नहीं हैं। हम उघी हूँ एक ठक हुआ है और हुआ मोपते हैं जिस हूँ एक हमने आरमाको नहीं पहचाना है।

स्टैंडर्टमका परवाना

स्टैंडर्टमके भारतीय स्थापारियंसि परवाना-अधिकारियोंने पूछा है कि उन्होंने अँगूठोंके निष्ठाण बेनेसे क्यों इनकार किया है। समितिने उसका जबाब देते हुए कहा है

(१) अँगूठोंके निष्ठाण कृती कानूनकी रूते मरिये जा रहे हैं इसलिए भारतीय अँगूठोंके निष्ठाण नहीं देते।

(२) कानून कृती है, क्योंकि उससे आत्मिक भावनाको जोट पहुँचती है और वह भारतीयोंकी हीनताकी निष्ठाणी है।

(३) कानूनके बाहर अँगूठोंके निष्ठाण देने हों तो भी जो छोन हस्ताक्षर कर सकते हैं वे परवानेके सम्बन्धमें अँगूठोंके निष्ठाण नहीं देते। यदि हस्ताक्षर करना जाता हो और फिर भी अँगूठोंके निष्ठाण दे तो अँगूठेका निष्ठाण देना कमज़ीका अपमान माना जावेगा। हस्ताक्षरके बरके अँगूठेका निष्ठाण देना और हस्ताक्षर कर सकनेक भावमूह अँगूठेका निष्ठाण देना इन दोनों बातोंमें अन्तर है।

झामको तीन बडी

अमी-अमी फोक्सरस्टस तार मिला है कि [नटाजक] तीन सेठों तथा श्री रबिरियाको तीन-तीन महीनेकी सख्त कैदकी सजा दी गई है। सेप ग्याह्द व्यक्तिपोंको छ-छ सप्ताहकी सख्त दी गई है। इन सबका भी सजा सख्त दी गई है। इस समाचारसे मुझे प्रसन्नता भी होती है और 'स्वार्थ' भी जाती है। प्रसन्नता इसलिए होती है कि भारतीयोंपर बिलना अधिक बुरम होगा वे [अन्तमें] उतग ही सुखी होंगे और मुक्ति उतगी ही जल्दी मिलेगी। स्वार्थ इसलिए जाती है कि ऐसे कष्ट बुबुर्प भारतीयोंको झेलने पड़ रहे हैं।

और कैरी

श्री सुखेमान हुसन नामक एक फेरीवालेको कृगसंडोंपरमें बिना परवानके फेरी लगानेके अपराधमें पाँच सिंठिन जुमानेकी अजबा एक बिलकी कैदकी सजा दी गई है। उन्होंने जेज जाना पसन्द किया है।

श्री जली ईसपजी बिना अनुमतिपत्र (परमिठ) के उपनिवेशमें रहनेके अपराधमें गिरफ्तार किये गये हैं। उनका मुकदमा ११ तारीखको खजेगा।

क्रिश्चियानामें श्री इबाहीम किमबाको कृकान चलानेके अपराधमें १५ पाँड जुमाने अजबा ६ हफ्तेकी कैदकी और श्री कासिम इबाहीमको फेरी लगानेके अपराधमें तीन पाँड जुमाने अजबा ६ सप्ताहकी कैदकी सजा दी गई। दोनों ही नर-रलोंने जेज जाना पसन्द किया। दोनोंकी सजा घाबी कैदकी है।

ब्रिटिश भारतीय संसदी समितिकी बैठक

सौयवारको ब्रिटिश भारतीय संसदी समितिकी एक विशेष बैठक हुई। श्री ईसप गियाँ नेरुवाजिर से इसलिए श्री बुबात्रियाने अध्यक्षता की। श्री फेसी इमान छाहब भी जेट्टिमार,

१. छम्पे, "स्मिन्तरी" है।

२. ब्रिटिश इन्डियन नोटिफिकेशन अधिनी।

धी गानरु, धी बौद्धके धी ब्यास धी उमरकी सांछे धी आरम मूसाजी धी कुतके वीर अय्य एउमन उपस्थित थे। चन्दा इकट्ठा करनेके लिए बीरा करनेका निश्चय किया गया और बहुतसे कोमोके नाम लिख गये। धी रिचको ? पीड भोजनका निश्चय किया गया। धी मांभीने फिजहास अपना बकासतका धन्दा बन्द कर रखा है। इसलिए उन्होंने सबके कार्यालयका किराया चुकाने और धी पोल्कका खर्च देनेकी तथा इंडियन मापिनियन में अधिक छपाईसे जो माटा होता है उसको पूरा करनेके लिए, बचतक संघप पछे छबतक प्रति मास ? पीड ब्यास करनेकी अनुमति मांभी। इस प्रश्नपर सोमवारकी निश्चय नहीं हो सका इसलिए इसपर विचार स्वमित कर दिया गया।

नेतासके सञ्चलनेके जेज जानेका समाचार मिळते ही संमेलनकारको सुरस्य समितिकी बुधरी बैठक हुई। उसमें धी ईसप मियाँ उपस्थित थे। पिछली बैठकमें भाग लेनेवाले बहुतसे सञ्चलन भी उपस्थित थे। नेतासके सञ्चलनेका सम्मान करनेके लिए मुद्दवारको ४ घने सार्वजनिक समा करने तथा छारी चुकाने और कारोबार बन्द रखनेका निर्णय किया गया। विकसित भारत बीबीबाद, मदन हर्यादि स्त्रानोंको छार भोजनेका भी निश्चय किया गया।

धी ईसप मियाँको हज करने जाना है, इसलिए उन्होंने [संघके अध्यक्ष-यबसे] इस्तीफा देनेकी सूचना दी। किन्तु वे फिजहास तो सार्वजनिक समाकी अन्तिम बार अध्यक्षता करेंगे ही।

बैठकमें उनक बाद धी महमद मुहम्मद काछकियाको अध्यक्ष-मद सौपनेका प्रस्ताव पास किया गया।

इस विषयमें अभी अधिक कहनेकी सुजाइत नहीं है। धी ईसप मियाँने समाजकी जो सेवा की है उसका पार नहीं है। बहुतकुछ उनके साहसपर बस रहा है। समाज उन्हें जितना मान दे कम ही माना जायेगा। वे छ छारीसको स्टीमरसे हजक किए रवाना होंगे। बाधा है समाज उसके पहले ही [उनके प्रति] अपना कठम्य पूरा करेगा।

धी काछकियाको जो पर मिना है, वह महान है। निस्सन्देह उन्होंने समाजकी बहुत सेवा की है, वे अंकगिम भी है और जेल भी जा चुके हैं। इसलिए उनमें पूरी योग्यता है। अध्यक्ष-मद स्वीकार करनेका उनका कोई विचार नहीं था किन्तु बहुत आप्रह करनेसे उन्होंने उसको स्वीकार कर लिया। धी इबाहीम कुबाकियाका नाम भी पेश किया गया था किन्तु उन्होंने धी काछकियाको अधिक पसन्द किया और कहा कि धी काछकिया समाजकी अधिक सेवा कर सकेंगे।

धी काछकियाका उत्तरदायित्व बहुत बड़ा है। गीफा मँस्रवारमें है, उसकी पतवार हाथमें लेना कोई मामूली बात नहीं है। किन्तु ईश्वरपर भरोसा रखकर बसमें तो वे स्वीकृत पन्को समाज के नामसे।

धी ईसप मियाँ तथा धी काछकियाके विषयमें जगले सप्ताह विशेष रूपसे किस्तनेकी भाषा करता हूँ।

स्वर्धसैवक

धी गांधीका बकासतका काम अयमय बन्द ही जानेके कारण धी मुहम्मद साँ व्यापारमें बूट मने हैं और धी जेन्स डीरासामीने संघका काम अर्धैतिक रूपसे करनेके लिए कार्यालय जाना आरम्भ कर दिया है। मुझे आशा है कि धी डीरासामीकी तरह अन्य स्वर्ध

सेवक भी सामने जायेंगे और काममें मरब पहुँचायेंगे। यदि समाज नेटाकके बीरोंको हीन ही मुक्त करवानेके लिए इतसंकल्प हो तो बितने कामकर्ता मिलें सबके लिए कार्य है।

नाइस्ट्रूम

श्री मोटी एवा पटेख नाइस्ट्रूममें बिना परवाना (काइसेस) फेरी बनानेके बापरायमें बार बिनकी छस्त कैंदकी सजा पाकर जेठ बने हैं। श्री नमबीके माग समस्त जारी किने जा रहे हैं।

कृगर्षडोंपमें गिरफ्तारी

अपर बिस आरोपकी खबर है चुका हूँ। उसमें कृगर्षडोंपमें श्री इस्माइल काबी श्री पांडोर, श्री बाबा श्री बानिया श्री कुरखेदजी बेसाई, श्री दादमानी श्री मुहम्मद मामूषी बाबू और श्री पारसी इस्तमबीपर चारंट निकाले गये हैं। इनमें श्री इस्तमबीके सिवा बाकी सबको जमानतपर छोड़ दिया गया है। श्री इस्तमबी तो पहलेसे ही जेठ महत्तमें बिराज रहे हैं इसलिए अब देखना यह है कि उनका क्या होता है।

बुधवार [सितम्बर ९, १९८]

छोराबजी

कल [मंगलवारकी] शामका श्री छोराबजी ट्रान्सवाल्समें प्रविष्ट हो गये। उनका मुखमा १५ तारीखको जलेया। श्री छोराबजी श्री कामाके साथ बोहानिसरपको रवाना हो गये हैं।

अब्जुख गनी

खबर मिली है कि श्री अब्जुख गनीने फोक्सरस्टमें बापराय जाते हुए अँनूडेका निधान किया है। यदि यह बात सच हो तो बहुत ही खेदजनक है।

[पुनरातीये]

इंडियन ओपिनियन १२- -१९८

७ प्रार्थनापत्र उपनिवेश-मन्त्रीको^१

बोहानिसबग
सितम्बर ९, १९०८

सेवामें
परममाननीय उपनिवेश-मन्त्री
कन्दन

द्राम्बवालके ब्रिटिश भारतीय संघका प्रार्थनापत्र

अत्र निवेदन है कि

प्रारम्भिक

१ ब्रिटिश भारतीय संघ^१ पिछले दो वर्षोंसे द्राम्बवालमें जामू ब्रिटिश भारतीय संघके सम्बन्धमें विद्यमान तारीख २४ द्राम्बवाल बजट में प्रकाशित एचियाई पंजीयन संशोधन अधिनियमके^२ सम्बन्धमें सन्नादकी सरकारसे प्रार्थना करता है।

२ सब द्राम्बवालमें रहनेवाले ब्रिटिश भारतीयोंका प्रतिनिधित्व करता है।

३ जैसा कि महामहिमकी सरकारको मन्त्री भाँति ज्ञात है, पिछले वर्ष द्राम्बवाल विधान मण्डल द्वारा जो एचियाई कानून संशोधन अधिनियम (एचियाटिक ऑर्डरमेंट एक्ट) पास किया गया है उससे द्राम्बवालके ब्रिटिश भारतीयोंको बहुत कष्ट पहुँचा है और बाधित हानि हुई है तथा ३५ से अधिक भारतीयोंको जिन्होंने अपनी अल्पसंख्यके हेतु आराधना कष्ट सहा है जेल जाना पड़ा है।

कानून बनानेमें उतावली

४ जो कानून अभी बजट में प्रकाशित किया गया है उसका विषयक (बिस) के रूपमें पहला बाधन २ अक्टूबरका हुआ था और २१ अक्टूबरको ही वह विधानमन्त्री और विधान परिषद दोनोंमें समस्त अवस्थाओंसे गुजरकर पार हो गया। विधेयक बजट में अभी प्रकाशित नहीं किया गया और प्रार्थी संघ जिस समाजका प्रतिनिधित्व करता है उसकी तो वह अधिनियमके रूपमें प्रकाशित होनेके बाद ही मिला। विधानसभाके एक सदस्यके सौजन्यसे कुछ भारतीय तो उने सब अवस्थाओंमें गुजरनेके तुरंत बाद पास होते ही रोज मने व परन्तु समाजके अन्य लोगोंको इस माहकी २ तारीख तक द्राम्बवालके समाचारपत्रोंमें प्रकाशित उसके सार्वजनिक ही संशोधन करना पड़ा।

कानून सामान्यता स्वीकारमें

५ प्रार्थी संघ इन निम्नकोष बाधने स्वीकार करता है कि जिस कानूनकी बर्षा यहाँ की जा रही है वह १० ७ के एचियाई कानून निर्माण अधिनियम २ से अधिक अच्छा है यद्यपि

१ सर १९-९-१९ ८ के इंडियन ओपिनियनमें " द्राम्बवालके भारतीयोंका सामान्य सरकारको सर्वमान्य रूप प्राप्त " की ओरसे बधाई दिया गया था।

२ ब्रिटिश इंडियन अधिनियम।

३ एडिनबरो एक्टिविज्म अक्टोबरे १९०४।

वह इस दृष्टिसे बोधपूर्ण है कि उसके अनुसार उन एशियाइयोंको जो ट्रान्स्वालमें है किन्तु जिन्हें अभी तक पंजीयन प्रमाणपत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) नहीं मिले है यह सिद्ध करनेकी आवश्यकता होती है कि वे मुझसे १ वर्ष पहलेसे बर्ही रहते हैं। उनमें से ज्यादातर जोनोंने आयक टरीकेसे देशमें प्रवेश किया है और निहित अधिकार प्राप्त किये हैं। ऐसे एशियाइयोंके उदाहरण भी है जो ट्रान्स्वालमें मुझसे पूर्व एक वर्षसे ज्यादा नहीं रहे वे किन्तु उन्हें पंजीयन प्रमाणपत्र मिल सके हैं। साबर अनुरोध है कि जिन एशियाइयोंको अभी तक पंजीयन प्रमाणपत्र नहीं मिले हैं किन्तु जो ट्रान्स्वालमें है उनके साथ मुझसे पहले तीन वर्षके निवासका उस कठोर और मतमाने अनुरोधके अनुसार व्यवहार नहीं किया जाता चाहिए जो उन एशियाइयोंपर लागू होता है, जो अभी तक ट्रान्स्वालक बाहर हैं।

१ परवाना (लाइसेंस) देनेसे सम्बन्धित धाराका ठीक-ठीक काममें आना अंजूठा निशानी सम्बन्धी घटकों उदाहरणपूर्वक जमलपर ही निर्भर होता।

अंगुष्ठियोंके निष्ठा

७ विवेकको दूसरे बाधनके लिए पैदा करते हुए उपनिवेश-सचिवन कहा था कि अंगुष्ठियों या अंगुठोंके निष्ठा देनेके मामलमें आपत्ति नहीं है। प्रार्थी संघकी तन्त्र सम्मतिमें माननीय मन्त्रीने यह बलवत्त ब्येकर भारतीय समाजके साथ स्वाम नहीं किया क्योंकि वे नहीं मति जानते थे कि पिछली जनवरीके समझौतेके बाद बहुत-से एशियाइयोंने अंगुष्ठियोंके निष्ठाके विषयमें बहुत तीव्र आन्दोलन किया था। यद्यपि यह ठीक है कि भारतीय समाजके मुख्य सदस्योंने अंगुष्ठियोंके निष्ठासे सम्बन्धित आपत्तिको कभी मूलभूत आपत्ति नहीं माना किन्तु बहुत-से एशियाई, विशेषतः पठान जो कश्चित १५ से अधिककी संख्यामें इस उपनिवेशमें रहते हैं इस बातकी निश्चयेह सबसे बड़ी आपत्ति मानते थे और अब भी मानते हैं। समझौतेके अन्तर्गत अंगुष्ठियों या अंगुठोंके निष्ठा स्वेच्छासे केवल इसलिए दे दिये गये थे कि सरकारको समाजका वैज्ञानिक वर्गीकरण करनेमें सुविधा हो और समाजकी मेकनीसमी और सरकारको सहायता देनेकी इच्छा प्रकट हो। समाजको यह स्वेच्छया कार्य बहुत महंगा पड़ा है। सरकारको उक्त सहायता देनेके कारण [सबके] अभ्यस और मन्त्री दोनोंको अपने देशवासियोंके हाथों गहरी पारोडिक छवि उठानी पड़ी है। साधे अनुभवके पश्चात् प्रार्थी संघ महामहिम सम्राट्की सरकारको विश्वास दिखाता है कि केवल एशियाइयोंसे किसी बड़ी संख्यामें अनिचार्य रूपसे अंगुष्ठियोंके निष्ठा देनेसे ऐसा घमड़ा उठ सड़ा होगा। चूंकि ज्यादातर ब्रिटिश भारतीयोंने अधिकारियोंको एक बार ये निष्ठा दे दिये हैं इसलिए अब उनकी कोई खास बकरत भी नहीं है। कुछ भी हो प्रधानत-तन्त्रका वह मान निश्चिन्त रूपसे काम कर सके इसके लिए बहुत अधिक उदाहरण बरतना आवश्यक होता।

१९०७ के कानून २ को रद्द करनेके विषयमें

८ जैसा कि स्थानीय सरकारकी सेवामें निवेशन किया जा चुका है, १९०७ के एशियाई कानूनके मुकाबले वह कानून मके ही स्वीकार हो प्रार्थी संघ निश्च समाजका प्रतिनिधित्व करता है, वह समाज इसके कामको ठबठक स्वीकार नहीं कर सकता जबतक

कानूनकी किताबसे १९७ का अधिनियम २ हटा नहीं दिया जाता और विभिन्न एशियाईयोंकी स्थिति उचित और न्यायसंगत रूपसे स्पष्ट नहीं कर दी जाती। प्रार्थी संघकी मन्त्र समिति सरकारकी प्रतिष्ठाके लिए ही सही कानूनका रद्द किया जाना जरूरी है।

रद्द करनेका वचन

९. आवरपूर्वक निवेदन है कि माननीय उपनिवेश-सचिवने निश्चित रूपसे बारा किया था कि यदि एशियाई जातियाँ समझौतेका अपना हिस्सा पूरा कर दें तो कानून रद्द कर दिया जायेगा। यह मान किया गया है कि एशियाईयोंने समझौतेके अन्तर्गत अपना कर्तव्य अभी माँति पूर्ण कर दिया है।

१०. किन्तु यह दलील पेश की गई है कि स्वेच्छया पंजीयन (वॉलंटरी रेजिस्ट्रेशन) के प्रारंभिक चरणोंकी बापनीकी बरखास्तपर फँसना^१ रोक हुए न्यायाधीश सर्वोच्चकोतने कहा था कि कानूनको रद्द करनेका बचन सिद्ध नहीं हो पाया है, और इसलिए बँसा कोई बचन नहीं दिया गया था। प्रार्थी संघ महासमिति सम्राट्की सरकारका ध्यान इस तथ्यकी ओर आकर्षित करता है कि कानूनको रद्द करनेका प्रश्न अशास्त्रके सामने पेश नहीं था और फँसना उस प्रश्नपर विद्यमान था ही नहीं। अदालतको निश्चय ही यह बताया गया था कि कानूनको रद्द करनेके सम्बन्धमें प्रार्थी संघ जो समुदाय हैं वे सारेके-सारे पेश नहीं किये गये हैं। एक नैतिक आधार देनेके लिए प्रार्थनापत्रके समर्थनमें ब्रिगेड बनें हूकफ्रिमा बयानोंमें^२ इस विषयके सम्बन्धमें ब्रिटेन परीक्षा का उठना कह दिया गया था। प्रार्थीका उद्देश्य यह बताया था कि वह जो अपना स्वेच्छया पंजीयनका प्रार्थनापत्र बापस लेना चाहता है उसका आधार यह नहीं है कि उसका विचार यों ही बदल गया है, बल्कि यह विश्वास है कि स्थानीय सरकारने अपना बचन भंग कर दिया है।

११. उपनिवेश-सचिवकी जिम्मेदारी २९ जनवरीके पत्रमें^३ इत्यादि करनेवालोंका उद्देश्य कानूनको रद्द करवाना ही था यह बात स्वयं पत्रमें समझी जा सकती है। उसका एक संघ यह है

इन परिस्थितियोंमें हम एक बार फिर सरकारके सामने विनम्र गुस्ताव रखेंगे कि सौम्य बर्तते अधिक उम्रके सभी एशियाईयोंको एक निश्चित अवधिके भीतर, उदाहरणार्थ तीन महीनेके भीतर, पंजीयन (रेजिस्ट्रेशन) करा लेनेकी सुविधा दी जाये; इस प्रकार पंजीयन कोर्पोरल कानून लागू न हो।

इत्यादि करनेवालोंके सामने जो मूल समस्या पेश किया गया था उसमें "कानून" शब्दके बाने 'की धाराएं' शब्द भी थे। ये सब इस विचारसे काट दिये गये थे कि जिन्होंने स्वेच्छया पंजीयन कराया है उन सबपर यदि कानून लागू न हुआ और यदि सभी एशियाईयोंने स्वेच्छया पंजीयन करा लिया तो कानूनकी किताबमें इस कानूनकी रचनेका कोई कारण ही नहीं पड़ेगा और अधिकारी एशियाईयोंको अनधिकारी एशियाईयोंसे अलग करनेकी व्यवस्था इसको कानूनी रूप देनेवाले विधेयक (बिल)में जो पास किया जायेगा कर दी जायेगी।

१. रेजिडेंट ऑफ द इस्ट इंडिया कम्पनी २।

२. बिल नं० १०५-००।

३. बिल नं० ३९-४१।

१२ किन्तु बात यही सार नहीं हुई। इस प्रार्थनापत्रके दूसरे हस्ताक्षरकर्ताको जिसने सम्बन्धित पत्रपर भी हस्ताक्षर किये थे मिटोरिया बुझाया गया और माननीय उपनिवेश-सचिवसे उनकी बातचीत हुई। उस बातचीतमें उनसे यह कहा गया था कि यदि एशियाई अपना इकरार ईमानदारीसे पूरा कर देंगे तो अधिनियम रद्द करा दिया जायेगा।^१ यह बात ३० फरवरीकी है। उपनिवेश-सचिवके साथ अपनी इस बातचीतके बाद एशियाई पंजीयक (रजिस्ट्रार ऑफ़ एशियाटिक्स)से चर्चा करनेपर उक्त दूसरे हस्ताक्षरकर्ताके मनमें एशियाई कानूनके रद्द किये जानेके बारेमें सन्देश उत्पन्न हुआ। इसलिये उन्होंने यह १ फरवरीको अपना सन्देश व्यक्त करते हुए उपनिवेश-सचिवको एक पत्र लिखा।^२

फरवरी ३ को उन्हें तारसे सन्देश मिला कि वे उपनिवेश-सचिवसे मिलें। वे उनसे मिले भी और जैसा कि वे सर्वोच्च न्यायालयके सामने अपने हस्तक्षेप बयानमें कह चुके हैं उपनिवेश सचिवने एशियाई पंजीयककी उपस्थितिमें कानूनको रद्द करनेका बचन दिया और इस प्रार्थना पत्रके पहले हस्ताक्षरकर्ताकी जानकारीमें उक्त भेटके बाद कई सभाओंमें ब्रिटिश भारतीयोंके विद्यालय जनसमूहको इस बचनसे अवगत कराया गया।

१३ पिछली ५ फरवरीको रिचमंडमें की गई एक सभामें उपनिवेश-सचिवन यह कहा मनें उनसे कह दिया है कि कानून तबतक रद्द नहीं किया जा सकता जबतक वेदमें एक भी एशियाई ऐसा है जिसने पंजीयन न कराया हो। उन्होंने यह भी कहा कि 'जबतक ऐसका प्रत्येक भारतीय पंजीयन नहीं करा जाता कानून रद्द न किया जायेगा। उक्त उद्देश्य तब ६ फरवरीके स्टार से मिया गया है। यही बात उसी तारीखके ट्रान्सवाल मीडर में भी छपी थी।

१४ तब १ फरवरीको पंजीयन कार्यालय (रजिस्ट्रेशन ऑफिस) जल समय दूसरे हस्ताक्षरकर्तापर बहुत बुरी तरह हमला किया गया क्योंकि वे अँगुलियोंके निशान देनेके लिए जा रहे थे। कुछ समयके लिए पंजीयन तयनव बन्द हो गया। एशियाई डर गये। उन्हें सरकारके इरादोंके बारेमें सन्देश था। और जो प्रार्थनापत्र किये गये वे उनमें से कुछकी रसीदें देनाकर उनका सन्देश पुष्ट हो गया। वे पुराने कामोंपर ही गई थी जिनका सम्बन्ध १९०६ के एशियाई कानून संशोधन अधिनियम २ के^३ था। एसी संकाओंकी निवृत्त करनके उद्देश्यन पंजीयक (रजिस्ट्रार)ने अनेक प्रमुख एशियाइयोंके और ब्रिटिश भारतीय मंडके महायक अर्थनिक मण्डोसे भी जो ट्रान्सवालके सर्वोच्च न्यायालयके बकीन भी हैं यह कहा कि स्वेच्छया पंजीयन (वॉलंटरी रजिस्ट्रेशन) पूरा होनापर कानून रद्द कर दिया जायेगा। अधिक लोग स्वेच्छया पंजीयन करायें इनके लिए एशियाई पंजीयक तबतक में यह सूचना प्रकाशित करनके लिए भी तैयार था कि यदि एशियाइयोंन स्वेच्छया पंजीयन करा लिया तो कानून रद्द कर दिया जायेगा। पंजीयनने यह सूचना इस प्रार्थनापत्रके दूसरे हस्ताक्षरकर्ताके सामने उनी समय वेग की जब वे बिलममें ही पढ़े थे और कुछ मंतीबनोंके बाद दोनोंन भारतमें यह तय किया कि सूचना गजटमें प्रकाशित की जानी चाहिए। एसी

१ हेमिर टाइम ८ दिस ११-१२ ।

२ वही, दिस ११-१२ ।

३ एशियाटिक एंड ओरियन्टल रेव्यू १ ।

४ हेमरी टाइम ११ दिस ११ ।

बीच पंजीयक द्वारा दिये गये मौखिक आदेशोंका बलिष्ठ परिणाम हुआ और पंजीयन बन्धन बलिते होन लगा। इसलिये पंजीयकने दूसरे हस्ताक्षरकर्तव्य द्वारा मित्रनेपर पूछा कि क्या सूचनाको अब भी प्रकाशित करना आवश्यक है और दूसरे हस्ताक्षरकर्तव्यने यह जाननेपर कि पंजीयन बन्धन बलिते हो रहा है निवेदनात्मक उत्तर दे दिया।

१५ फरवरीकी २२ धाराओंको दूसरे हस्ताक्षरकर्तव्यने उपनिवेश-सचिवकी स्वीकृतिके लिए और उनकी अनुमतिसे प्रवासी प्रतिबन्धक अधिनियम (इमिग्रेशन रेस्ट्रिक्शन ऐक्ट)का संशोधन करने और एशियाई कानूनको रद्द करनेके लिए एक विधेयकका मसविदा^१ (ड्राफ्ट बिल)^२ पेश किया। इस पत्रको पत्रक साकायबा मंत्री गई, किन्तु कानूनको रद्द करनेके उद्देश्यका कोई लक्ष्यन नहीं किया गया।

१६ अन्तमें यद्यपि उपनिवेश-सचिवन सर्वोच्च न्यायालयके सामने अपने हस्तक्षेप बयानमें^३ यह कहा है कि उन्होंने कानूनको रद्द करनेका बन्धन कभी नहीं दिया और यद्यपि एशियाई पंजीयकन उद्य बयानका समर्थन किया है^४ फिर भी उपनिवेश-सचिवने इस बन्धनको मन्त्रीरत्ना-पूर्वक अस्वीकार नहीं किया बल्कि कि विधेयकके दूसरे बाणनमें दिये गये उनके भाषणसे प्रकट होता है, और वे कमसे-कम यह तो स्वीकार करते ही हैं कि दूसरे हस्ताक्षरकर्तव्यके साथ कानूनको रद्द करनेके प्रयत्नपर उन्होंने खुसकर बाठर्षित की थी।

१७ बिन ब्रिटिश भारतीयोंको एशियाई पंजीयकने कानूनको रद्द करनेका आश्वासन दिया था उनके कुछ बन्धन^५ इसके साथ संलग्न हैं।

१८ इसके सिवा प्रार्थी उद्य महामहिम सम्राटकी सरकारका ध्यान इस तथ्यकी ओर आकर्षित करता है कि रद्द करनेवासे विधेयककी रूपरेखा बस्तुतः बना की गई थी और उपनिवेश-सचिवने कुछ लोगोंमें इसे निजी तौरपर बुलानेके लिए उसे छापनेका हुक्म भी दे दिया था। यह दूसरे हस्ताक्षरकर्तव्यको विज्ञाया गया था और उसे चिन्ह इसलिये बापस से किया गया था कि दूसरे हस्ताक्षरकर्तव्यने उसमें कुछ संशोधन करनेकी प्रार्थना की थी। वे सब संशोधन कुछ परिवर्तनोंके साथ उद्य कानूनमें शामिल कर लिये गये हैं बिचकी मंत्री बर्षों की था रहो है। उनमें व्यवहार केवल यह संशोधन है जो शिक्षित एशियाईयोंके बर्षोंको प्रभावित करता है।

कानूनको बरकरार रखना अनावश्यक

१९ उपनिवेश-सचिवके बन्धनके अतिरिक्त एक ही विषयसे सम्बन्धित एक ही तरहके दो कानून कायम रखना केवल परेशानी और दुष्प्रयत्नक परिणामोंका ही कारण हो सकता है। यह कहा गया है कि सरकारका द्वारा १९०७ के अधिनियम २ को निश्चल मानकर चलना है। किन्तु प्रार्थी उद्य बिध समझका प्रतिनिधित्व करता है, उसके लिए सम्ये और तीव्र संघर्षक बाद अनिश्चयकी स्थितिमें रहना असम्भव है। इन दोनों कानूनों द्वारा जो अधिकार दिये गये हैं वे अज्ञानी अयोग्य और पुरुषहृद्य प्रकृत अफसरों द्वारा ब्रिटिश भारतीयोंके विरुद्ध काममें आये या सफटे हैं और उनके परिणाम बाधक हो सकते हैं।

१ ऐक्टिंग लॉक ८ दृश १ - २१।

२ और ३ अधि. ब्रिटिश ७।

४ ऐक्टिंग ब्रिटिश ४।

२ प्राचीं संघको यह कहनेकी इजाजत थी बाबे कि दूसरे कानूनसे १९७ के कानून २ का प्रमाण समाप्त नहीं होता। सरकारकी भर्त्सि उन दोनों कानूनोंमें से किसीको भी एशियाई समाजके विरुद्ध काममें लाया जा सका है। इसी प्रकार एशियाईको भी छूट है कि यदि उनसे कोई काम हो तो वे दोनोंमें से किसीसे भी काम उठा सें।

२१ उदाहरणके लिए यद्यपि नये कानूनके अन्तर्गत तुर्कोंके मुसलमान पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) की परेशानी-भरी पद्धतिसे मुक्त है फिर भी ट्रांसवालमें जानेवासे किसी तुर्क मुसलमानके विरुद्ध १९७ के अधिनियम २ के अन्तर्गत कार्रवाई की जा सकती है। इसलिए ब्रिटिश भारतीय समाजकी एक मुख्य आपत्ति अब भी ऐसी रह जाती है जिसका निराकरण नहीं होता। उपनिवेश-अधिकारने इस सम्बन्धमें जो-कुछ कहा वह अयोग्य है। वे कहते हैं

वे (एशियाई) इन कठिनाइयोंकी इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि १९७ के कानून २ के अन्तर्गत पञ्चराज्यकी संघरके १८८५ के कानून ३ में भी एशियाईयोंकी परिभाषा कायम रखी गई थी और उस परिभाषामें तुर्की साम्राज्यके प्रजाजन तुर्क मुसलमान इस देशके निवासी नहीं माने गये। यह कहा गया कि इस व्यवस्थाके द्वारा तुर्कोंको देशमें न जाने देना इच्छित नहीं है किन्तु यह इस्लाम-धर्मपर केवल एक लक्ष्य और कर्मक लगाता है। किसी भी बोरेका या सरकारका बैसा करनेका रजमात्र भी इच्छा नहीं है। यहाँ तुर्क संख्यामें इमेदा कम रहे हैं। और मुझे बताया गया है कि अब यहाँ तुर्क हैं ही नहीं और कमसे-कम तुर्कसे इस देशमें उनके किसी बड़ी संख्यामें आनेका कोई भय नहीं है। तुर्कोंके भी प्रजाजन यहाँ जाते हैं वे केवल ईसाई हैं तथा कुछ धार्मिक व्यवस्थोंके बिनाके विरुद्ध तीव्र आपत्तिकी है वे सीरियाई और अन्य सीधायी हैं। किन्तु वे ईसाई हैं और तुर्की साम्राज्यके मुस्लिम प्रजाजन इस देशमें जर जानेवे ऐसा घतरा कभी पैदा नहीं हुआ और न कभी पैदा होनेकी सम्भावना है। उस आपत्तिको भी बाबुमानसक आचारपर की गई थी और ब्रिटीश निराकरण कियारूपक आचारपर करनेमें कोई आपत्ति न थी हमने दूर कर दिया है। माननीय सदस्य बैठनें कि उनके सामने प्रस्तुत विधेयक (बिल) से यह प्रतिबन्ध हट जाटा है जो किसी व्यक्तिके प्रवेशपर केवल तुर्क साम्राज्यका प्रजाजन होनेसे लपटा था।

२२ इसके अतिरिक्त यद्यपि विचारामौन कानूनसे अवयस्क व्यक्तिगत पंजीयनसे मुक्त हो जाते हैं किन्तु १९७ का कानून २ अनुमानतः अवयस्कके विरुद्ध प्रयुक्त किया जा सकता है और उससे बेहतर तकलीफें पैदा हो सकती हैं।

२३ नये कानूनमें घराब-सम्बन्धी अपमानास्पद बारा कहीं नहीं रखी गई किन्तु पुराने कानूनके अन्तर्गत कोई भी एशियाई छूटके अनुमतिपत्र (परमिट) की भर्त्सि से सकता है। क्याचित यह कहा जावेगा कि यह तो स्पष्ट ही एक सुविधा है। किन्तु प्राचीं संघकी मन्त्र सम्मतिमें यह छिपा हुआ अपमान उपनिवेशकी कानूनकी पुस्तककी अनीतक विकसित कर रखा है।^१

२४ सरकार अपनीकृत एशियाईके विरुद्ध दोनोंमें से किसी भी कानूनके अन्तर्गत कार्रवाई कर सकेगी और इस तरह ऐसे एशियाईकी कदम-कदमपर रज कर सकेगी।

१ पूर्वी मन्त्रालयके टीतो और फ्लोडक देखेंकि लिपटी।

२. देखिए कन्व ३, पृष्ठ १२५।

२५ पुराने कानूनको बरकरार रखनेसे बेईमान एशियाइयोंके लिए बाकसाजीका माम सुलझा है। यद्यपि नये कानूनमें उपनिवेशके बाहर दक्षिण अफ्रिकाके किसी स्वतन्त्र पंजीयन प्रार्थनापत्र देनेकी व्यवस्था है फिर भी उसमें ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जिससे किसी एशियाईको उपनिवेशमें जाने कानूनके अन्तर्गत छठ दिन तक रहनेका दावा करने और उस अवधिमें समाजमें मुकामिस्तकर अनपह्चान हो जानेसे रोका जा सके।

२६ वैसे उदाहरण ऊपर दिया गया है वैसे उदाहरण अनगिनत दिए जा सकते हैं, किन्तु हमारा विश्वास है कि उपर्युक्त उदाहरणसे यह पर्याप्त रूपसे प्रकट हो जायगा कि यदि उपनिवेशको कानूनको किताबमें पुराने कानूनको रहने दिया गया तो ब्रिटिश भारतीयोंकी स्थिति कितनी अनिश्चित हो जायेगी।

२७ यद्यपि अभी नया कानून महामहिमकी सरकारके विचारधीन ही है फिर भी स्वामीय सरकारने उन खेगोंपर मुकदमे खजान शुरू कर दिए हैं जो उस कानूनके शायरेमें जाते हैं और जिन्हें उसके अन्तर्गत सुरक्षा प्राप्त है। इस प्रकार एक ब्रिटिश भारतीय जो सुप्रसिद्ध है और इसलिये जिसकी आसानीसे घिनास्त की जा सकती है जिसने सर्व मिन्नरकी सलाहके अनुसार स्वेच्छया पंजीयन (वॉलेंटरी रेजिस्ट्रेशन) करवाया था और जिसके पास सान्ति-रक्षा अध्यादेश अनुमतिपत्र (पीस प्रिजर्वेशन ऑर्किनेट परमिट) भी है तथा कानून पाठ होनेके बाद गिरफ्तार कर लिया गया और उसपर अप्रतीक्षित (अनरिजिस्टर्ड) एशियाई होनेके अपराधमें पुराने कानूनके अन्तर्गत मुकदमा खसाया गया। यद्यपि व्यायाधीशने इसपर आश्चर्य प्रकट किया किन्तु उसके सम्मुख उसे सात दिनोंके भीतर उपनिवेशसे बसे जानेका नोटिस देनेके सिवा कोई अन्य मार्ग न था। इस प्रकार नये कानूनसे सुरक्षित होनेपर भी पुराने कानूनके अन्तर्गत अनेक एशियाइयोंकी जो उपनिवेशके बीच निवासी हैं मुकदमा खडाकर उपनिवेशसे निकाल बाहर करना सम्भव है।

२८ एक दूसरे भारतीयपत्र जिसे अधिकारी मन्त्री यांति जानते हैं जो पीट रिट्रीफका व्यापारी है और जिसके पास अधिवास प्रमाणपत्र है पुराने कानूनके अन्तर्गत अभी-अभी मुकदमा खसाया गया है और उसे जमानेकी या १४ दिनोंकी सारी कैदकी सजा दी गई है — इसलिये नहीं कि वह उपनिवेशमें रहनेका अधिकारी नहीं है बल्कि इसलिये कि उसने अंगूठेका निशान देनेसे इनकार कर दिया है। उसके मुकदमेके दरमियान सरकारी पक्षके मुख्य पचाहने स्वीकार किया कि वह उस व्यापारीको द्रास्यबादके निवासीक रूपमें जानता है और उस पकड़ाने भी जो अनुमतिपत्र (परमिट) लेनके समय उसके साथ था उसकी गवाही दी और घिनास्त की। यी इबाहीम उस्मान (व्यापारीका यही नाम है) ने जमाना देनेकी अपेक्षा जिस के वीरकानूनी समुची मानते हैं कैद भोगना ज्यादा पसन्द किया और वे अब महामहिमकी फोरेसटर-जेनरल अपनी सजा काट रहे हैं। यी इबाहीम उस्मान अंधेजी पड़ और सिद्ध सकते हैं और रोमन किरियें सुन्दर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

२९ इस परिस्थितिमें प्रार्थी संशका विस्वास है कि महामहिमकी सरकार नये कानूनको स्वीकृत करनेसे पहले पुराने कानूनको रद्द करवायेगी।

१ वे जूरी सर्व स्के वे, रेजिस्टर ऑफ C एड ११५-१९।

२ रेजिस्टर ऑफ D, एड ३२८।

३ रेजिस्टर "नेवासिलराली थियो" एड ४।

द्विधित भारतीयोंका इर्जा

१ कानूनकी किराबसे यदि पुराना कानून हटा दिया जाये तो ऐसा कगता है कि बहूतिक प्रवासका सम्बन्ध है, द्विधित भारतीयोंको सम्मानके अन्य प्रवासकोंके समान इर्जा देनेमें कोई बाधा नहीं रहेगी।

११ सन् १९ ७ के प्रवासी प्रतिबन्धक अधिनियम (इमिग्रेशन रेस्ट्रिक्शन ऐक्ट) १५ में सामान्य वैश्वपिक कर्षणीका विभाग है। और उसके अन्तर्गत जो एशियाई वैश्वपिक कर्षणीमें षट् उतरता है उसके उपनिवेशमें प्रवेश करनेपर अन्यथा कोई रोक नहीं रखी। तब वह एशियाई कानूनके अनुधार पंजीयनका भागी हो जाता है और यदि वह उसकी शर्तें पूरी नहीं करे तो भी वह निषिद्ध प्रवासी नहीं होता अर्पनीकृत (अनरजिस्टर्ड) एशियाई हो जाता है। इस प्रकार श्री छोराबजी सापुरजी प्रवासी प्रतिबन्धक अधिनियमके अन्तर्गत उप-निवेशमें जाये। उनको बिना रोक-टोकके यहाँ जाने दिया गया। सात दिन उपनिवेशमें रहनेके बाद उनपर १९ ७ के कानून २ के अन्तर्गत अर्पनीकृत होनेके आरोपमें मुकदमा चलाया गया।^१ श्री छोराबजीने स्वेच्छया पंजीयन (वॉलन्टरी रजिस्ट्रेशन) के लिए प्रार्थनापत्र दिया था। वह अस्वोकार कर दिया गया था। वे १९ ७ के अधिनियम २ को माननेके लिए तैयार न थे। चार्ल्सटाउनके टाउन क्लर्क तथा उस नगरके अन्य अधिकारियोंके बहुत ही अच्छे प्रमाणपत्र उनके पास थे। फोस्टरस्टेके न्यायाधीशने उनके प्रार्थनापत्रपर सिफारिश की थी। वे सूटके हाई स्कूलमें सातवें दर्जे तक पढ़े हैं और चार्ल्सटाउनकी वधास्तमें उन्होंने अस्तर बुमायियेका काम किया है। एशियाई कानूनके अन्तर्गत अधिपोग चलाये जानेपर उन्हें उपनिवेशमें जानेका नोटिस दिया गया। द्विधित प्रवासकोंकी हैसियतसे उन्होंने उस नोटिसको माननेसे इनकार कर दिया। इसलिए उनपर मुकदमा चलाया गया और उन्हें एक महीनेकी सख्त कैदकी सजा दी गई, जिसके लिए जमानिका विकल्प न था। श्री छोराबजीने अपनी सजा पूरी की और मीयाबके अन्तिम दिन के गोपनीय डबसे निर्वासित कर दिये गये।

१२ प्रार्थी संघ छाबर और नम्रतापूर्वक निवेदन करता है कि किसी भी द्विधित उपनिवेशमें निर्दोष द्विधित प्रवासकोंके साथ इस इर्जाके बरतान किये जानका कोई दूसरा उपाहरण नहीं है।

१३ श्री छोराबजीके मामलेसे यह बाहिर होता है कि प्रवासी प्रतिबन्धक अधिनियम (इमिग्रेशन रेस्ट्रिक्शन ऐक्ट) से रोकके कारण कोई रोक नहीं बनती। ऐसा कगता है कि पिछली २२ जुलाईको ट्रांसवाल्के सर्वोच्च न्यायालयमें ताज बतान सम्झूका भी मुकदमा चला था उससे भी उपर्युक्त दृष्टिकोण सत्य सिद्ध होता है।

१४ वह एशियाई कानून ही है जिसका उद्देश बाहिरमें केवल उनकी शिताफत करना है जिसकी अन्यथा जासानीसे शिताफत नहीं की जा सकती किन्तु भी सिमित भारतीयोंके आड़े जाता है।

१ इंडियन क्लर्क ८ पृष्ठ ३३०-४ ।

२ आई. ए ३४०-५१ ।

३ आई. ए ३००-०१ ।

४ आई. ए ३९१-९९ ।

३५ प्राचीं संघ मात्र यह माँग करता है कि मिश्रित एशियाईयोंको स्वतन्त्र रूपसे प्रवेश करनेका सौदा ही अधिकार होना चाहिए जैसा उन्हें दूसरे उपनिवेशोंमें प्राप्त है। इसमें उनपर केवल एक ऐसी सबसामान्य शैक्षणिक कसौतीकी पाबन्दी हो जो सबपर लागू होनी हो। ऐसे एशियाईयोंके शिक्षाकी ऐसी विधियोंका पालन करने और जिन प्रमाणपत्रों (सर्टिफिकेट्स) की तनिक भी आवश्यकता नहीं है उनको सदा साथ रखनेकी अपेक्षा करना बहुत अनुचित अपमानजनक और पतनकारी है।

३६ प्राचीं संघ महासमिति की सरकारका ध्यान इन सम्बन्धी और आकर्षित करता है कि विदेशी यदि यूरोपीय हों और दक्षिण आफ्रिकाक बननी यदि शैक्षणिक कसौतीमें उत्तीर्ण हो जायें तो ट्रान्सवालमें आ सकते हैं। इसलिये मिश्रित ब्रिटिश भारतीय उपमूलक जातों जाँचने की रीति रूढ़ि गयी है।

३७ यह ठीक है कि मसाली लोगोंपर, जो दक्षिण आफ्रिकाके निवासी हैं ट्रान्सवालमें प्रवेश करनेपर कोई प्रतिबन्ध न हो किन्तु प्राचीं संघ यह नहीं समझ पाता कि दक्षिण आफ्रिकामें उत्पन्न हुए भारतीय भी उहाँ-धर्ममें क्यों न रये जायें। ऐसे बहुत-से भारतीय मूलक हैं जिनके लिये दक्षिण आफ्रिका ही उनका देश है और भारत परदेस।

३८. यह कहा गया है कि मिश्रित भारतीयोंका उपनिवेशमें प्रवेश मुझा रखनेसे उप निवेशमें 'अर्द्ध-मिश्रित भारतीय मूलक' भर जायेंगे और वे उपनिवेशवासी आम यूरोपीयोंके साथ करेंगे। प्राचीं संघने यह तक भी उपस्थित नहीं किया है। शैक्षणिक कसौतीकी कठोरतापर आपत्ति न की जायगी। जिस बातपर तन्त्रतापूर्वक आपत्ति की जाती है वह है कानूनमें निहित बल और रंग-सम्बन्धी भेदभाव जो मिश्रित भारतीयोंके साथ भी किया जाता है। शैक्षणिक कसौतीके अन्तर्गत बहुत कम भारतीय प्रतिबन्ध नटालमें प्रवेश कर पाते हैं।

३९. प्राचीं संघ तो यह चाहता है कि अल्पसंख्यक और मिश्रित भारतीय अर्द्ध-भारतीयोंके लिये और बिस्वविद्यालयोंमें उपाधियाँ-प्राप्त लोग अधिकृत रूपसे उपनिवेशमें प्रवेश कर सकें। ऐसे लोग स्वभावतः अधिकारी समाजकी आवश्यकताओंके लिए पकड़ें हैं।

४० यह भी कहा गया है कि नये कानूनके लच्छ १९ में पुराने कानूनकी तरह ही मिश्रित भारतीयोंको राष्ट्र सेनेकी व्यवस्था उपलब्ध है। किन्तु ऐसी बात नहीं है। उस लच्छमें केवल स्वामी अनुमतिपत्र (परमिट) की गुंजाइश है और उसके आधारपर उसका स्वामी कोई स्वतन्त्र घन्टा नहीं कर सकता। प्राचीं संघके विचारमें उन लच्छका सदा एशियाईयोंको जाँचे के मिश्रित हों या अमिश्रित उपनिवेशमें अस्वायी निवासकी सुविधा देना है और उनमें अस्वायी अनुमतिपत्रों (परमिटों)के अन्तर्गत व्यापारियोंको अपने लिये आवश्यक मनीष और दूसरे लीकर खानेकी सुविधा देनी भी व्यवस्था है।

४१ प्राचीं संघ जो राष्ट्र प्राप्त करना चाहता है वह दूसरी तरहकी है। जो मिश्रित भारतीय परीक्षामें भल ही वह कितनी ही कमी हा उत्तीर्ण हो सकते हैं उन्हें सामान्य प्रवासी कानूनके अन्तर्गत माना जाहिये और उनपर कोई रोक बाँध न लगाई जानी चाहिये।

४२ जो मिश्रित भारतीय उपनिवेशमें हैं यदि उन्हांमें परीक्षण कराया है ता केवल इतना कि वे उदाहरण प्रस्तुत कर सकें सरकारको महासमिति के लिये और जिन पाद-नी सोदीकी उपनिवेशमें प्रवासी अनुमति हा जायें उनकी व्यवस्था स्वतन्त्रताकी अपमानजनक और अनापत्यक प्रतिबन्धोंमें मुक्त कर सकें।

४३ यहाँ यह कहें कि मुझे पहले एशियाइयोंके प्रवासपर कोई रोक न थी। शांति-स्थापनाके बाद प्रवास सामान्यतः शांति-रक्षा अध्यादेश (पीस प्रिवेन्शन ऑर्डनेंस) के अन्तर्गत नियन्त्रित था। एशियाइयोंका प्रवास १९७ के एशियाई कानून द्वारा नियन्त्रित नहीं होता था किन्तु उसमें उपनिवेशमें जो एशियाई बस चुके थे उनके पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) की व्यवस्था थी। तब भी बिल ठरूँ शांति-रक्षा अध्यादेशके अन्तर्गत यूरोपीय अनुमतिपत्र ले सकते थे उसी प्रकार एशियाई भी अनुमतिपत्र ले सकते थे और उनमें से बहुतोंने वस्तुतः ऐसे अनुमतिपत्र किये भी थे। इसके बाद प्रवासी-प्रतिबन्धक अभिनियम^१ नामा उसने शांति-रक्षा अध्यादेशका स्थान लिया और उसमें त्वागत्युक्तके लिए एक सामान्य शिक्षा-परीक्षाकी व्यवस्था की गई।^२ इस ठरूँ एशियाई कानूनके अतिरिक्त उपनिवेशमें शिक्षित एशियाइयोंके प्रवेशमें कमी कोई कानूनी बाधा नहीं रही है। इसलिये यह सही नहीं है जैसा कि स्वामीय अधिकारियोंने कहा है कि ब्रिटिश भारतीय कोई नया विचार उठा रहे हैं। यह प्रश्न पहले-पहल माननीय उपनिवेश-सचिवने उठाया था जब वे पूर्व-उत्कृष्टित निरसन-विशेषकरके^३ द्वारा प्रवासी-प्रतिबन्धक अभिनियमको सब शिक्षित भारतीयोंके प्रवेशपर रोक लगानेकी दृष्टिसे संशोधित करना चाहते थे।

अन्तःक्रमक प्रतिरोध

४४ प्राचीं संघको कुछ है कि महामहिमकी सरकारने संघ और १९६ में कानून मेने गये विष्टमन्त्रकी प्रार्थना नहीं सुनी और १९७ का कानून २ स्वीकार कर लिया।

४५ प्राचीं तब महामहिमकी सरकारका स्थान इस तथ्यकी ओर आकषित करता है कि विष्टमन्त्रने उसके सामने सितम्बर १९६ को एम्पायर माट्रिकरमें हुई ब्रिटिश भारतीयोंकी सार्वजनिक समाका बीबा प्रस्ताव प्रस्तुत किया था।^४ वह प्रस्ताव इस प्रकार है

विधान सभा स्वामीय सरकार और साम्राज्य-अधिकारियों द्वारा मसबिदा-क्य एशियाई अभिनियम संशोधन अध्यादेश (ड्राफ्ट एशियाइय ली ऑर्डनेंस ऑर्डनेंस)के सम्बन्धमें ड्रमन्तबाबके ब्रिटिश भारतीय समाजकी विनीत प्रार्थना अस्वीकृत कर दी जानेकी अवस्थामें ब्रिटिश भारतीयोंकी वहाँ समवेत यह सार्वजनिक समा पन्दीरतापूर्वक और दोषपूर्वक यह निश्चय करती है कि इस मसबिदा-क्य अध्यादेशके अपमानजनक अत्याचारपूर्वक और अविद्विध विधानोंके सामने सुरणकेकी अपेक्षा ड्रमन्तबाबका प्रत्येक ब्रिटिश भारतीय अपने-आपको बंध जानेके लिए पैश करेगा और तबतक ऐसा करना जारी रखेगा जबतक अत्यन्त दयालु महामहिम साम्राज्य कृपा करके राहत नहीं दमे।

४६ महामहिमकी सरकारपर स्पष्ट ही इस प्रस्तावका बहुत कम भय पड़ा। किन्तु उसके बाद जो कुछ हुआ उससे प्रकट हो गया है कि समाकी कार्रवाई संजीवनीय की गई थी।

१ एशियेयन रेजिस्ट्रेशन ऐक्ट ।

२ अभिनियम ६ १९७६ जिए रेजिड, कानून ७ ७४ एपीएच ६ ।

३ रिजिस्ट्रेशन ऐक्ट ।

४ रेजिड कानून ६, एच १९०-१५ ।

५ रेजिड कानून ५, एच ४१४ ।

४७ निम्न बंस स्थानीय सरकारको १९७ में दिये गये सामान्य प्रारंभिककर्ता है जो विषय स्थिति उत्पन्न ही गई है जसका प्रतिकार केवल इस अभिनियमको पूरी तरह रद्द करनेसे ही हो सकता है जससे कम किसी कार्यवाहीसे नहीं। हमारी विनीत सम्मतिसे अभिनियम हमारे आत्मसम्मानको पिराने तथा हमारे बर्गोंपर प्रहार करनेवाला है और इसको अंतरालक मुबारिकोंके सम्मानमें ही लागू करनेका जयाज किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने जो पन्नीर छपय की है उसके कारण हमारे लिए, साभ्राज्यके सच्चे नागरिकों और ईश्वरसे नय करनेवाले लोगोंके रूपमें अभिनियमके विधानके सम्मुख न झुकना आवश्यक ही गया है मले ही हमें इसके परिणाम कुछ भी क्यों न भुगतन पड़ें; और जो हम समझते हैं जेक निर्वासन और हमारी आवाजकी बरबादी या जज्जी पा इनमेंसे कोई भी हो सकता है।

४८ इस सच्यकी प्राप्तिके लिए ३५ वे अधिक भारतीयोंने कैरकी सजा मोगी है। जेके लीमेंने अपना माछ-अवहार नीलाम होने दिया है। कुछ लोगोंने अपनी अन्तरात्माकी बाधाको दूरनेके बजाय सरकारी बजबा निजी लौकरियोंसे बर्खास्तनी मंनूर की है और जगतम सनीने माकी मुकसाल उठया है। कुछ ती सचमुच हरिद हो गये हैं।

४९ प्राचीं संघने अपने प्रति किये गये धोर अत्यामकी और ध्यान आकषित करनेकी यह विधि इसलिए चुनी है कि यह उनके विदित प्रजाजनके बर्बे और मनुष्योचित आत्मसम्मानसे अत्यधिक मेल खाती है।

५० इस आन्दोलनको अनाक्रमक प्रतिरोध (पैसिव रेजिस्टेन्स) का नाम अधिक अच्छे नामके अभावमें दिया गया है। किन्तु यह वास्तवमें उस कानूनका सविनय विरोध है जो विदित भारतीयोंको बहुत लापस्य है और जिसे बनानेमें उनका कोई हाथ नहीं है।

५१ मत्र निवेदन है कि प्रतिरोध सच्यसे सामान्यतः जो अर्ब समझा जाता है, उस अर्बकी कोई कल्पना उस जन-समुदायके प्रतिरोधसे नहीं मिलती जो व्यक्तिगत कष्ट उठा रहा है।

५२ प्राचीं संघने अनुभवसे जाना है कि कमसे-कम विदित साभ्राज्यमें सम्राट्के प्रजा जनोंकी सिकायतें वास्तवमें केवल उनी दूर होती हैं जब वे यह दिखा देते हैं कि वे राहत प्राप्त करनेके उद्देश्यसे कष्ट उठानेके लिए तैयार हैं।

५३ बचपनसे ही विदित भारतीयोंको यह सिखाया गया है कि विदित संविधानमें कानूनकी दृष्टिसे सब प्रजाजन समान हैं किन्तु जब वे इस उपनिषेधमें समानता माँगते हैं तो जननी शिस्ती उड़ाई जाती है या वे जूट माने जाते हैं।

५४ विदित भारतीयोंको मताधिकार प्राप्त नहीं है और वे लोगोंके वर्तमान मनीषाओंको देखते हुए, कोई मताधिकार चाहते भी नहीं। इसलिए उनके सामने केवल यही उपाय रद्द जाता है कि वे सासकोंसे प्रार्थना करें और अपनी सचाई बतानेके उद्देश्यसे अपने विचारोंके लिए कष्ट भोगनेको तैयार रहें।

५५ प्राचीं संघ भारतीय भाषनाको अर्हतक समझ सका है, अधिकतर भारतीय दूढ़ प्रतिज्ञ हैं कि जबतक उनके द्वारा माँगा गया साधारण न्याय प्राप्त नहीं हो जाता तबतक वे

नये कानूनके अन्तर्गत प्राप्त लाभोंको स्वीकार करनेसे इनकार करते रहेंगे और मजदूरीपूर्वक कष्ट सहते रहेंगे।

निष्कर्ष

५६ अन्तमें प्राची संघ विनयपूर्वक निवेदन और प्रार्थना करता है कि यदि महासहिमकी सरकार ब्रिटिश संविधानके सिद्धांतोंके अनुरूप उपनिवेद्यमें रहनेवाले ब्रिटिश भारतीयोंकी १९७ के कानून २ की रद्द करवाकर और शिक्षित भारतीयोंका हर्षा निरिच्छ करवाकर, म्याग नहीं दिना सफवी तो १८५८ की' मीरजपुर्य बोपना बापस से सी बाये और उनके कठ दिया बाये कि 'ब्रिटिश प्रभा' शब्दोंका अर्थ उनके लिए उससे भिन्न होता है जो यूरोपीयोंके लिए होता है। और इस कार्यके लिए हम अनुपहीत होंगे बाकि बाकि।

ईसप इस्माइल मियाँ

अध्यक्ष

ब्रिटिश भारतीय संघ

मो० क० गांधी

मन्त्री

ब्रिटिश भारतीय संघ

[अपेजीसे]

कमोमिदल ऑफिस रेकर्ड २९१/१२८

८ सार व० आ० ब्रि० भा० समितिको^१

बीहानिसबमं

सितम्बर ९ १९८

पत्रह निर्वाहित ब्रिटिश भारतीयोंको पुन प्रवेश करनेपर मारी संभाएँ। बाबर अस्तमशी मीयबिया रदिरियाको तीन महीनेकी अस्त कर या ५ पीड जुमाना। कुसराँको ७ अस्ताहकी अस्त कर या २५ पीड जुमाना। उनका मुय-पूर्व निवासी होने या वैयक्तिक योग्यताके आचारपर ट्रामसवालमें प्रवेशके अधिकारका दावा। कैदियोंमें हालके पूर अभियानके तीन जार्जेट साल मुसलमान को पारमी ७ हिन्दू घामिल। अरवत्त सनसनी। संघर्ष पुन प्रारम्भ होनेके समयसे सब वर्गोंके मीयों]को सब स्वानेसि १०५ बिरपशारिया। इतनी बहुर तकलीफका कारण बिबि-मुस्तक्रमे ऐसा कानून बनाये रखना जो सरकार द्वारा निरन्तर बोधित और पोड़े-ले उच्च प्रिना प्राप्त भारतीयोंके पुन प्रवेशपर प्रतिबन्ध जो सर्वथा

१ कृपे १८५० ई।

२. एउे भारतीयी प्रकृत भारतीय संघ (प्रकृत इतिहास कर्तव्यिक्रम), किन्हे नी रद्द कर वेय बा। इनें एउेकी प्रिरी भी रिने १ सितम्बरकी कर्तव्यिक्रमकीको वेसि कर दी री।

अनासक्त और अविटित। आपा है सॉड एस्टिहिल तथा अन्य राहत प्राप्त करनेके लिए अधिकतम प्रयत्न करेंगे। भारतीयोंको सहज म्यापसे निरास न होने दिया जाय।

[मो० क० गांधी]

[अंग्रेजीमें]

कानोनिकल सॉफिस रेकड्स २९१/१९२

१ भेंट 'स्टार' के प्रतिनिधिको

[जोहानिसबम]

सितम्बर ९, १९८

जोहानिसबके म्यापापीसने एक जन भारतीयोंको जो निर्वासित कर दिये गये थे और उपनिवेशमें फिर प्रविष्ट हुए थे तीन-तीन महीनेकी सक्त करकी सजा थी है। भारतीयोंकी विचार-व्यक्तिके अनुसार इत सजासे उनके पसको बहुत बध मिला है और यह स्पष्ट है कि वे जाता करते हैं तयके दौरान इत प्रकारकी घटनाएँ साम्राज्य-सरकारको उनके पसमें हस्तगत करनेपर विवक्ष कर देंगी। मात्र जब स्टार का एक प्रतिनिधि श्री गांधीसे उनके कार्यालयमें मिला तब वहाँ जासाही एक प्रबल भावना व्याप्त थी। अनाकामक प्रतिरोध आन्दोलनके नेता [श्री गांधी] ने कहा

हालांकि यह सही है कि हम भारतीयोंत जो मांगा था वह हमें मिला गया है, किन्तु इसमें सरकारके लिए बेयकी कोई बात है एसा नहीं सलकता है क्योंकि वह असाध्यमें लिए समय काजमी-सा कर देती है कि वे उन व्यक्तियोंको जो अल्पत सरकारके राजनीतिक विरोधी हैं ऐसी भारी सजाएँ दें में इते सरकारको भी कई शक्तिका एक प्रतिनिधित्वहीन बचके प्रति प्रपूज हुकपयोक समझता हूँ। मेरी रायमें इस सजाओंका महीना होया निष्कासनके हास्यासह नाटकका अन्त। किन्तु यदि यह नाटक जारी रखा गया और यदि न अपने देसवासियोंको मनोदसाको सही-सही जानता हूँ ता वे निश्चित रूपसे बार-बार प्रवेश करना जारी रखेंगे और ब्रिटिश नागरिककी हैसियतसे अपने अधिकार मांगते रहेंगे। जब मैं कानूनकी निवाहमें समागताके व्यवहारकी बात करता हूँ तब मेरे इस विचारकी बिम्बी उड़ाई जाती है किन्तु यह जोय मेरे साथ है क्योंकि स्वयं कनेस चीनीमें भी यही बकीस पैठ की है। मेरी समझमें वही एक चीज है जो सारे साम्राज्यको एक मूकमें बाँधती है। कानूनी असमानताका विचार हासिल करते ही साम्राज्यकी नीब खोलसी हो जाती है। इस विचारसे मेरा अभिप्राय

१ कानोनिकल-अपेली कनेस ऑन एचवें वॉर्डे चीनीमें ११ जुलाई, १९०८ को लिखित जोहानिसबमें कहा था कि (क) यदि जोहानिसबको श्रेष्ठ करने दिया जाने ली उन्हें नागरिक अधिकार बरकरा दिये जाने चाहिये; (ख) यदि किसी मनुष्यको श्रेष्ठ करनेके लिये श्रेष्ठ करने दिया जाने ली उसे सम्मान्य नागरिक होना चाहिये तथा जोहानिसबको श्रेष्ठ-श्रेष्ठ रूप से श्रेष्ठिके कारण ही अधिकार दिये जाने चाहिये; (ग) जो जोहानिसब सम्मान्य रूपसे प्राप्त है, उनके ही सम्मान्य व्यवहार और नागरिक व्यवहार करना चाहिये। देखिए इतिहास, ७-८-१९८।

यह नहीं है कि उपनिवेशोंको अपने यहाँ आकर बसनेवालोंकी संख्या सीमित करनेका अधिकार नहीं होना चाहिए। स्वर्गीय सर हेनरी पार्सेके कथनपर संका नहीं की जा सकती किन्तु जब आप एक बार लोगोंको उपनिवेशमें आबिज्ञ कर लेते हैं तब उनके साथ कानूनकी दृष्टिसे एक-वैसा बरताव होना चाहिए। बल्किया वैसा भी बंकरने अभी हाकमें ही कहा है, आप गुजामीकी स्थिति पैदा करने बिसका परिणाम यह होगा कि स्वामियों वहाँसे सासक-बर्ग की दशा अन्तमें पुनर्मांसि भी बरतर हो जायेगी।^१ इतिहासमें ऐसे एक भी देशका उदाहरण नहीं मिलता जिसमें लोग एक स्वतंत्र राष्ट्र बननेके बाद भी मुजामोंके स्वामी बने रहे हों। यदि हमारे साथ गुजामों वैसा बरताव नहीं किया जाना है तो हमें ऐसे लोग चाहिए जिनकी उपस्थिति हमारे स्वतंत्र विकासमें सहायक हो। ये लोग निस्सन्देह वे ही जो सुसंस्कृत और शिक्षित हैं। हम उन्नीसवींकी एक अत्यल्प संख्याके उपनिवेशमें अबाध प्रवेशकी प्रार्थना कर रहे हैं।

यह पूछनेपर कि यदि उपर्युक्त सिद्धान्त स्वीकार कर लिये मने तो क्या जापतीय कठिन प्रौद्योगिक कर्मीकी शर्त मालनेको तैयार होंगे भी गाँधीने कहा :

यदि वर्तमान प्रवासी-प्रतिबन्धक कानूनमें (इमिग्रेशन रेस्ट्रिक्शन ऑ एक्ट) उल्लिखित परीक्षाके अन्तर्गत एक उचित और कड़ी परीक्षाकी व्यवस्था नहीं है हाकीकि मैं नहीं मानता कि बात ऐसी है, तो उसमें संशोधन किया जा सकता है वैसा आस्ट्रेलियामें भी किया गया है। तब प्रवासी-प्रतिबन्धक अधिनियमके अन्तर्गत कानूनी समानता होगी किन्तु उक्त अधिनियमके प्रस्तावमें अधिकारियोंको छूट होगी कि स्थितिको पर्यन्त देखते हुए परीक्षाकी कड़ाईमें संशोधन कर लें। उदाहरणार्थ आप भेटाकमें यूरोपीयोंको कममग बिना पूछताछ प्रवेश करने दिया जाता है, जबकि भारतीयोंकी कड़ी परीक्षा की जाती है। यह प्रशासनिक मेदमान समतक जैसा ही अबतक होचमाव मौजूद है।

यह बताते जानेपर कि भी गाँधीके वक्तव्यसे स्थितिके सुधार नहीं होता उन्नीसमें कहा कि उनकी इस स्थितिका आधार कोई मिलनरका किन्बलमें दिया गया यह मान्य^१ था कि इन्डो-चीन [यूटोइंडो] को और अधिक तन न किया जाये।

धीर भी गाँधीने आपे कहा :

जब हम यूटोइंडो—अपने ही देशमें परदेसी हैं।

[अप्रेजीचे]

स्टार ९-९-१९८

१ रेस्ट्रिक्शन ऑ एक्ट (सीन ऑफ़ डिमिग्रेशन) की टो-ऑफ़ कानूनी बिलो हुए कहा था: किती ऐसे देशमें भी माला जाता है कि राजनीतिक समानता है, मतभेदिके समे के विपरीतको राजनीतिक अधिकारोंके विकल्प बलिष्ठ रहना एक बड़ा ही बलिष्ठ मान्य है। यह बड़ा गुजामीकी-सी स्थिति है। यह बल्किया कठिन स्थिति कानूनी ही दानिष्ठ है किन्तु हीन स्थिति स्थिति है।

१० भाषण सावजनिक सभामें

[बोहानिसबर्ग
सितम्बर १० १९०८]

श्री पांथीने अपने संक्षिप्त भाषणमें बोस्तरस्टके भारतीयों द्वारा समाजे समझनेमें भेजे गये एक तारका जिफ किया। इस तारमें यह समाचार दिया गया था कि उनके नेता सार्वजनिक सङ्घोंपर शत्रुता छोड़ रहे हैं और बोस्में बोस्तरके सिव् जो कच्चा नास दिया जाता है, उसे खालेसे इनकार कर रहे हैं। श्री पांथीने कहा कि जो काम अपनायजनक प्रतीत होता है यह उनकी समझमें बहुत सम्मानजनक है। (करतल-स्वनि)। जिस कारण ये लोग तकलीफें वह रहे हैं उसके उन्हें अपने देशमाइयोंपर गर्व होता है। लेकिन यह धर्मकी बात है कि हमारी सरकार इस संबंधमें काम करती है। यह स्वामीय सरकार या द्विजित सरकारके लिए कोई श्रेयकी बात नहीं है और न भारत सरकारके लिए ही कोई श्रेयकी बात है कि जो लोग उसकी सीमा छोड़कर जायें हैं उनकी रक्षा करनेमें वह सर्वथा लाचार है। इसके अलावा बोस्तरबर्गसे प्राप्त एक तारमें सूचित किया गया है कि एक खेरीबाकेको बिना परवाना (बाइसेंस) व्यापार करनेपर छः सप्ताहकी सख्त कैदकी सजा दी गई है। जविष्यमें कमसे-कम सजा छ सप्ताहकी कैदकी हुजा करेयी। श्री सीपाबजी ने कहा कि ये बाएह महीनेकी सख्त कैदकी सजा जोपनेको तैयार हैं। किन्तु जो लोग बोस्तरके बाएह हैं, उनके सख्त रबंदेपर ही यह निर्भर करता है कि बोस्तरके अंदर जोय कितने समय तक रहेंगे। (करतल-स्वनि)

[अंश-बीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-९-१९०८

११ प्रस्ताव सार्वजनिक सभामें

[जीहानिसचय
सितम्बर १ १९८]

[प्रस्ताव ३]¹ ब्रिटिश भारतीयोंकी यह सभा श्री ईसप मियाँकी बिनहूँने इस उक्त विवेकके निवासी भारतीयोंके ऊपर भीषणतम संकटके समय ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन असोसिएशन)के अध्यक्ष-पदकी संभाला और अत्र अर्पण। मजह्जा शरीफकी आपोक्ति यात्राके कारण उक्त परदे इस्तीफा दे दिया है। बहुमूर्ख सेवाभाकि लिए हार्दिक आभार व्यक्त करती है और सर्वसम्पन्नमान प्रमुक्त प्रावना करती है कि उनकी प्रस्तावित यात्रा अनुपलब्ध हो और वे मयामम्बर शीघ्र बनने सेवादायियोंकी सेवाके लिए उक्त बीच वापस लीं।

[प्रस्ताव ४]² यह सभा संघकी समिति द्वारा संघके अध्यक्ष-पदपर श्री बहमद मुहम्मद काछकियाकी नियुक्तिका समर्थन करती है और श्री काछकियाको बिय पये इस अपूर्व सम्मानके लिए, और चारों ओर उठते हुए तूफानमें सभासकी नीकाकी खे छे जानेकी उम्मीद समताम व्यक्त किये गये विश्वासके लिए उन्हें बधाई देती है।

[संवेचीले]

इंडियन ओपिनियन १९-९-१९८

१२ रदिरिका मुकबसा³

[जीहानिसचय
सितम्बर १२, १९८के पूर्व]

आज "बी" अवाकतमें श्री एच एच जॉर्डनके सामने रदिरिका नामक एक भारतीयपर अस्वाधी निवासके अनुमतिपत्र (परमिट) की अर्जा सभापत होनेके बाद और अधिकारियों द्वारा जले जानेकी चेतावनी दी जानेके बादबहुरूप अपनिवेशमें बने रहनेके आरोपमें अमियोन बलाया गया।

उन्होंने अपनेको निर्दोष बताया और श्री गांधीने उनकी परधी की।

१ सितम्बर १ की शाम छठमें चौथे प्रकाश दस्त दिने लीं थे। छठमें छे छठरे और नौमें मकानका अनुमतिपत्र पंजीबीने किया था, और अठारह है, अठारह मसखिदा भी कन्होंने ही छेछर किया था। अठारह, दूधरे और बीसमें प्रकाशके लिए रेडिटर परिशिष्ट ५।

२. यह मकान एच बी कैम्पलेने देखा किया था। बी बी बी-१० आठने लका अनुमतिपत्र और लंबी आठने मसखी ५ है। अठारह और पंजीबीने समर्थन किया था।

३. यह मकान अमरीन कुमरिचने देखा किया था। अठारह अनुक कारिद दमबीने लका अनुमतिपत्र और एच बी-१० आठ लका पंजीबीने समर्थन किया था।

४. यह इंडियन ओपिनियनके एक निरपेक्ष भाषणीय है। यह रिपोर्ट आठने अठारह की थी।

मुर्तिदेवेंद्र ने भी० बरनौनने कहा कि मैंने १५ अगस्तको अभियुक्तसे बहु अधिकार-पत्र दिवानेके लिए कहा जिसके बलपर बहु एगिपार्ड पंजीयक (रजिस्ट्रार ऑफ एगिपार्टिन्स) द्वारा बने जानकी खेताबनो बी जानेके बाबजूद द्वागसवालमें उहारा हुआ है। उतने अबाब दिया कि उनके पास कोई अधिकारपत्र नहीं है किन्तु उतने उपनिवेशम रहनेके लिए एक बीर अर्जी हो है। निर्देश विनयपर मैंने अभियुक्तको विरचणार कर लिया।

जिरीरिया स्थित एगिपार्ड पंजीयक कार्यालयके [कर्मचारी] जेम्स कोडीने कहा कि १० मार्चको एगिपार्ड पंजीयक अभियुक्तको तीन महीने तक द्वागसवालमें रहनेका एक अरबायी अनुमतिपत्र दिया था। अभियुक्तने ९ जूनको इतकी अवधि बढ़ाई जानेके लिए अर्जी बी बी ५५ द्वारा २४ जुलाईको अर्जीरत कर बी गई।

श्यावापीयः आपने उसे तबतक उहारेकी इजाजत बी बी ?

मशाहः उतन कुछ कारण बतावे थे कि बहु वर्षों इहत्या चाहता है। हमने उन कारणोंकी जांच की, और तब किया कि अनुमतिपत्र (परमिट) नहीं देना चाहिए।

बी पायी क्या जाणको मान्य है कि अभियुक्तक पिता जम्हानिउबयंम है ?

मशाहः बी निश्चित रूपसे नहीं कह सकता।

[पायी] मुझे पता चला है कि जाणका द्वारा अनुमतिपत्रकी अवधि समाप्त होनेपर गम्पराचन बने जाने और दशाधी प्रतिग्वक अभिविषय (इमिग्रेशन ऐक्टिवजन एक्ट) के अन्वयत फिर प्रयोग करणका था ?

रहिरी मशाहके कटपरेमें बड़े हुए।

[अभियुक्तः] हाँ किन्तु सोमापयय मुझे यही विरचणार कर लिया गया।

अभियुक्तने एक छोटा-सा दबनध्य देनेकी अनुमति मांगी किन्तु श्यावापीयाने बताया कि उसकी बीबी एक आग्रत योग्य बहोत कर रहे हैं।

[पायी] इसने कोई अन्तर नहीं पड़ता।

और अभियुक्त कविदीके कटपरेमें बाबत चला गया।

सरकारी बकीनने कहा कि अभियुक्तकी स्थिति ऐसी है पायी अवालतने उतने नाम दिनेके बीर उरनिबयने जानेके लिए कहा ही और उतने बेता करनेसे इनकार कर दिया ही।

श्यावापीयाने अभियुक्तको एक आलकी सरन खंडकी तजा दे बी।

[अन्तर्गत]

इदियन ओपिदियन १२-१-१९८

१३ नेटालकी सभाएं

नेटालमें सार्वजनिक सभाएं हो रही हैं। उनमें प्रस्ताव भी पास किये जा रहे हैं। सरकारको सविधा भेजी जायेगी। यह सब ठीक हो रहा है। ऐसा करनेकी आवश्यकता है। किन्तु नेटालके भारतीयोंको यह याद रखना है कि उनमें अबतक सविधोंके मुताबिक बचनेकी शक्ति नहीं है तबतक सविधा निरर्थक है। हमें धीरे-धीरे सभी जगह ऐसा ही अनुभव हो रहा है।

हमारी शक्ति क्षत्याग्रह है, और नेटालमें क्षत्याग्रह यह है कि प्रत्येक भारतीय बिना परवाना (पाइसेंस) व्यापार करनेका निषेध करे। यह तो हम जानते हैं कि नये विधायक (बिल) पास नहीं होंगे किन्तु आवश्यक यह है कि पुराना कानून— १८९७ का कानून— रद्द किया जाये। यदि भारतीयोंमें सचमुच ही शक्ति आ गई हो तो उन्हें ऐसी सविधा देनी चाहिए कि अबतक १८९७ के कानूनके अन्तर्गत [प्रशासनिक निर्णयोंके विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालयमें] अपील करनेका अधिकार नहीं दिया जाता पुराने परवानोंकी रखा नहीं की जाती और गिरमिटियोंपर से वीन-मौकी कर^१ नहीं हटाया जाता तबतक हम परवानोंके बिना व्यापार करनेका निषेध करते हैं।

इससे दोनों अर्थ सिद्ध होते हैं— स्वार्थ भी और परमाज भी स्वायत्त इस प्रकार कि परवानेकी परेशानी खत्म ही जायेगी और परमाज इस प्रकार कि मरीब गिरमिटियोंपर से कर हट जायेगा और उनका ह्रास जाधिये देया। यदि भारतीय समाज प्रतिज्ञा कर के कि अबतक गिरमिटियोंके कष्ट दूर नहीं होते तबतक वह भी मुकड़े नहीं बैठेगा और कष्ट उठानेवाला तो इसका अर्थ बहुत गम्भीर होगा। यदि भारतीय समाज सच्चे मनसे ऐसा करे तो यह राज्य मिल जानेके समान होगा। ऐसा करनेका अर्थ स्वराज्य मात्रा जायगा।

और सभी बेल सकते हैं कि ऐसा करनेके सिवा कोई रास्ता भी नहीं है। किन्तु यह पूछा जा सकता है कि सब लोग ऐसा कर करेंगे और कर हमारी भीत होगी। ऐसा पूछना गलत होगा। बड़े काम करनेवाले लोग आरम्भमें पोड़े ही हुआ करते हैं। हजरत मुहम्मद पहले मुटठी-घर व्यक्तिओंको लेकर आये। ईसा मसीहके पक्षमें पहले दो-चार व्यक्ति ही थे। ईसाइयतन अकेले ही बहाज-कर देनेसे इनकार किया था। उसके मनमें यह विचार भी न आया कि लोग ऐसा करेंगे या नहीं। स्वर्गीय भी ईश्वरोंने सारी शोकसमाको हिला दिया था। भारतके पितामह बाबासाहेब पचास साल पहले अकेले ही थे। आरम्भिक कर्षोंमें उन्होंने अथक परिश्रम किया। उनकी आशाओंमें आशा मिथ्याकर यह कहनेवाले बहुत ही पोड़े लोग थे कि ब्रिटिश

१ वेदाङ्क दल-क-विशेषक (वेदाङ्क कन्वेंशन विंग); देखिए कन्वें < १४ २१-२२।

२ सिडेला कलाना कानून, (बीकरी कन्वेंशन वेदा); देखिए कन्वें २, १४ २८४-८५।

३ यह व्यक्तिगत गिरमिटिया भारतीयोंके गिरमिटिया अथवा अन्य देशोंके व्यापारियों का था।

४ संघीयताके अन्तर्गत ईसाइयतन समाज एक भारतीय व्यक्तिगत अधिकारोंके अन्तर्गत दिया है; देखिए कन्वें ५, १४ ४८८-८९।

५ देखिए कन्वें < १४ ८५ की धारा-द्वितीय।

राज्यमें क्या सामियाँ हैं । आज उनके रोपे हुए बुझके फलका रसास्वादन सारी भारतीय जनता कर रही है । और कितने ही लोग उनसे भी आगे जानेको तैयार हैं ।^१

इन उदाहरणोंको ध्यानमें रखते हुए नेताओंके भारतीयोंको अपने मनमें ऐसा कमजोर विचार न आने देना चाहिए कि सभी करेंगे तभी बाठ बनेगी प्रत्युत उन सभी व्यापारियों और फेरीवालोंको जो साहस करें घपस डेनी चाहिए ।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १२-९-१९८

१४ हैसी या रोशन ?

श्री बाउद मुहम्मद भी पारसी इस्लामी और श्री वांगमिया ये तीनों उज्ज्वल वेदकी साठिर तीन-तीन महीनेकी कैद भोग रहे हैं । उनके साथ अन्य भारतीय भी हैं । वे पड़े-भिसे भोग हैं । इसका अर्थ क्या है ? यदि ऐसी भटना घट बनबरी माससे पहले हुई होती तो भारतीय समाजमें रोप फल जाता । उध समय ऐसी भटना होती ही नहीं । अब समय आ गया है इसलिए ऐसी भटना हुई है । फिर भी यह बात बुरा है ।

इन बीर बाँकुरोंके स्वो-बर्षों और सपे-सम्बन्धियोंके विषयमें अबबा स्वयं उनको [अंशमें] बा कष्ट सेकने पड़ रहे हैं उनके बारेमें सोचकर सभी भारतीयोंकी रौना आयेया सभी दुःखी होंगे । हम उनके सपे-सम्बन्धियोंके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं ।

किन्तु ये पत्रक लोग बेसकी साठिर, बेसकी प्रतिष्ठाकी साठिर बोल गये हैं और हँसते-हँसते बने हैं । यह जानकर सब भारतीय जर्मनमें भरकर हँसें । इस साहसपर इन पाखीयोंको इनके सम्बन्धियोंको और भारतीय समाजको बधाई देनी चाहिए ।

हम इसे और रोपे बाठका अन्त हमें इतनेसे ही न मान देना चाहिए । जो भारतीय जोससे बाहर हैं उनका कर्तव्य और भी कठोर होता वा रहा है । उनको जल्दी जोससे मुक्त कपना हमारे हाथमें है । कोई परवाना (लाइसेंस) न से कोई बैनूटेकी या किसी और तरहकी गिधानी न से तथा अपना हीसका बनाये रखे तो ठाज्जुब नहीं कि वे कुछ समयमें ही रिहा कर दिये जायें । यदि वे न झूँ तो इसमें भारतीय आठिकी हीनता है उधसे उधकी नाक कटेगी । हमें आशा है कि भारतीय लोग इन बीरोंके पीछे पूर-पूर और लगानेके लिए तैयार होकर रहेंगे ।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १२-९-१९८

१५ अदालतको सलाम करें

सर हेनरी बेल्ने सलाम करनेको बावत बड़ी सख्त राय बाहिर की है। उनके कानमें मतक पड़ी थी कि उनकी अदालतमें प्रवेश करते समय किसी भारतीयने सलाम नहीं किया। इसलिए उन्होंने कहा कि भारतीयोंको जो हुमेसा सम्म गिने जाते हैं अदालतके इतरेका सवाब करना चाहिए। उन्हें अदालतके सम्मानमें या तो पयड़ो बजवा खूटे उतारने चाहिए या दरबारेस नातर जाते समय सलाम करना चाहिए। यदि बै रॉलोंमें से कुछ नहीं करते हैं तो उन्हें सजा या जायेगी। सर हेनरीने [बंबेनी] माहाका अनुवाद करवाकर समस्त उपस्थित भारतीयोंको सुनवाया। हरएक भारतीयको यह बेताबनी याद रखनी है। हर जगह ग्यामाक्षयम प्रवेश करते हुए [स्वायाधीनको] सलाम करनेकी प्रथाको निमाता अच्छा है। बहुत-से भारतीय प्रभावशाली ऐसा नहीं करते। शिष्टता दिखाना हमारा फर्ज है।

[पुनरापीसे]

इंडियन ओपिनियन १२-९-१९८

१६ हमारा झूठ'

सर हेनरी बेल्ने भारतीय जनके मामलेमें जो माओचना की है वह नजर-अन्दाज करने योग्य नहीं है। सर हेनरीने कहा कि कुछ भारतीय अपने मामलेको मरव पतुँचानके लिए झूठ बोलते हैं।' इसलिए बहुत बार सच्चे मुकदमेको भी बरका पतुँचता है। यह बात कई बार ठीक उठती है। यदि कोई भारतीय ऐसी बात कहकर अपना बचाव करे कि क्या गीरे अपने मामलोंमें ऐसा नहीं करते तो वह बचाव ठीक नहीं माना जायेगा। गीरे बेचक झूठ बोलते हैं किन्तु इसलिए हमें भी सैधी ही बावत बालना आवश्यक नहीं है। जोतेंगे कि नहीं ऐसा विचार करनेके बदले हम उनके सिबाय और कुछ नहीं कहेंगे यही विचार धीमतीय है। सबसे अच्छा रास्ता तो यह है कि हम इस तरह चले कि हमें किसी बकीलका जर बजवा अशामका दरवाजा न देना पड़े। ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि भारतीयोंपर कोई शीबानी या फौजराये मामला अशामतमें हो ही नहीं? हम छायाप्रहमें पड़े हैं। उसमें यह सब किया जा सकता है।

[पुनरापीसे]

इंडियन ओपिनियन १२-९-१९८

१ देखिए काल ४ पृष्ठ ४२०-२४ पी।

२. भारतीयों द्वारा सुनी बरबरी देनेसे अन्दोलन केबाद सिय देखिए काल ७ पृष्ठ ११।

१७ प्रायनापत्र उपनिवेश-मंत्रीको^१

बोडानिसदस्य
सितम्बर १४ १९८

[परममाननीय उपनिवेश-मंत्री
जनरल]

द्वान्सवासनवाची पठानों और पंजाबियोंके निम्न
हस्ताक्षरकर्ता प्रतिनिधियोंका प्रार्थनापत्र

गमन निवेदन है कि

१ एतियाई कानून संशोधन अधिनियम (एडिमाटिक लॉ अमेंडमेंट ऐक्ट) के प्रसंगमें और प्राबियोंको उनके विगत प्रतिबन्धनके अन्तर्गमें २९ मार्च १९८ को दिये गये निम्नलिखित उत्तरके सम्बन्धमें प्राचीं महामहिम सम्राटकी सरकारसे आग्रहपूर्वक निवेदन करते हैं

मुझे जो आदेश दिया गया है उसके अनुसार आपको यह सूचित करनेका सम्मान प्राप्त हुआ है कि उपनिवेश-मंत्रीकी आपके १३ जनवरीके पत्रके साथ एतियाई पंजीयन अधिनियमके अन्तर्गत आपको तथा अन्य लोगोंकी स्थितिसे सम्बन्धित प्रार्थनापत्र प्राप्त हो गया है। लॉर्ड एलघिनने परमघोस्ट लॉर्ड सेक्रेटरीसे आपको यह सूचित करनेका अनुरोध किया है कि उन्हीं आपके प्रार्थनापत्रको ध्यानपूर्वक पढ़ा है; किन्तु विधायक अपने कानूनके अन्तर्गत पंजीयन-सम्बन्धी कठिनाइयोंके ह्रासमें ही हुए निराकरणको देखते हुए, अब उनको उसके सम्बन्धमें कोई कार्रवाई करनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

२ जिस प्रार्थनापत्रका उपर्युक्त उत्तर भेजा गया है उसमें प्राबियोंने इन प्रकार निवेदन किया था

महामहिमके भारतीय सैनिक सैनिक प्रतिष्ठाका अक्षय रखते हुए इत बचते बाधित करते पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) करवाकर अपनेको अयमानित नहीं करा सकते; और यदि महामहिमकी सरकार सम्राटके द्वास्तवास-स्थित भारतीय सैनिकोंकी व्यापोजित व्यवहार दिना सकनेमें अतिसर्ब हो तो वे अनुरोध करते हैं और उन विदित भारतीय सैनिकोंके गाले जिन्हें साम्राज्य-रसाके लिए अपने प्राथोंकी बाजी जगान और युद्धके कष्ट सहनेवाट गई है अनुरोध करते हैं कि उन्हें कारावास या निष्कासनके अयमानसे बचावा जाये और वे यह भी इच्छा करते हैं कि सम्राट् जाया हों कि उन्हें दक्षिण आफ्रिकाके किनी एंसे समर-स्मरणमें अतरल बीबा और अतरल स्मृत्स द्वारा पोषित पढ़ा

१ यह ऐतिहासिक प्रार्थनापत्र छपीकते कला तथा वा और अक्षय है कि उत्तर मन्त्रिणा गंभीरतासे देकर दिया था। रेसिदर कल ७ वृ १८४-८५ भी।

२ एडिमाटिक एडिशन देखें।

दिया जाने बहुत जगहोंमें सम्राट और ब्रिटिश साम्राज्यकी सेवा करते हुए पीतियोंकी बीछार होती है।

३. जैसा कि हालकी घटनाओंने साबित कर दिया है जवाबमें जिस निराकरणका उल्लेख किया गया है, वह अक्षर्य रहा है और जब सम्पूर्ण भारतीय समाज कानूनको रद्द करनेके लिए महामहिम सम्राटकी सरकारके पास प्रतिवेदन भेज रहा है क्योंकि ऐसा सभी भारतीयोंको बताया गया था कि समझौतेमें उसे रद्द करनेकी बात शामिल है।

४. चूंकि पूरे भारतीय समाजको जिसका आपके प्राचीं प्रतिनिधित्व करते हैं समझौते पर अविश्वास था और कानून रद्द होनेकी अनिश्चितताके कारण वह अत्यधिक उद्विग्न था और चूंकि भारतीय समाजके नेताओंने अंग्रेजोंके निघान हैकर पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) करानका सिद्धान्त स्वीकार कर लिया था इनीलिए उस बांके कुछ सीमांने जिसका प्रतिनिधित्व आपके प्राचीं करते हैं घाटीके हिंसाका सहारा लेकर उस बांके प्रति अपना रोप दिखाया था। हालांकि रोप-अवसंनके इस तरीकेका आपके प्राचीं समर्थन नहीं कर सकते किन्तु बाहिर है कि उन लोगोंका मन्देह बहुत उचित था।

५. आपके प्राथियोंकी स्थिति संश्लेषमें इस प्रकार है

(क) आपके प्राथियोंकी रायमें १९७ के एधियाई कानून संश्लेषन अधिनियम २ (एधियाटिक ऑर्गेनमेंट ऐक्ट नं २) की सम्पूर्ण भावना उसके अन्तर्गत जानेवाले किसी भी व्यक्तिके लिए अपमानजनक है, विशेष रूपसे उन सीतिकोंके लिए, जिन्हें महामहिम सम्राटकी बर्षी पहननेका औरत प्राप्त है, और जिन्होंने अपने सम्राटके लिए रक्त बहाया है।

(ख) आपके प्राचीं इस सम्पीर सपनसे बर्षे हुए हैं कि

(१) वे उपर्युक्त कानून स्वीकार नहीं करेंगे और उसे रद्द करवायेंगे

(२) भारतीय समाजके अन्य सचस्य क्या करता पसन्द करेंगे इसका अभाव किन्ने वीर अपनी घिनाकतके लिए अंग्रेजोंके निघान कनी नहीं देंगे।

६. आपके प्राथियोंने तत्कालीन पुलिस कमिश्नर तथा अन्य उच्चाधिकारियोंकी सलाहको मानकर और यह कहे जानेपर कि कानून रद्द कर दिया जानेवाला है, केवल शांतिकी खातिर स्वेच्छया पंजीयन करा किया। इससे जाने जानेमें आपके प्राचीं अक्षमर्ष हैं। उनकी रायमें कोई अनुस्यूचित इस अपमाना और केवल इसकिए कि वे उपनिवेशमें रहे उन्हें अपमान सहन करना सीतिक-बर्षके सर्वथा विरुद्ध आचरण होया।

७. आपके प्राचीं यह निवेदन करनेका साहस करते हैं कि उनकी बर्षी और उनके सेवा-अभावपत्र ब्रिटिश साम्राज्यके किसी भी भागमें या-या सजनेक लिए पर्याप्त पारपत्र समझे जाने चाहिए, और उन्होंने उनकी पूरी घिनाकत होनी चाहिए।

८. आपके प्राचीं कानूनी बाटीकियों और कानूनी ठकींको नहीं समझते। उन्होंने एधियाई कानूनका अध्ययन नहीं किया है। वे सम्राटके नामपर कुछ करनेकी बातको छोड़कर अन्य बाटींमें आचार हैं। वे अंग्रेजी नहीं समझते लेकिन एधियाई कानूनके बारेमें जो-कुछ बोझ-बहुत उन्होंने समझा है, उस कानूनकी अर्थनाके लिए उतना ही काफी है।

९. अत्र आपके प्राचीन विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं कि हिन्दू गण बचनके अनुसार एहिमा^१ कानून रद्द कर दिया जाये और पंजीयन करानेमें या अन्य किसी मामलेमें उन्हें शामिल न किया जाय। किन्तु यदि महामहिम सम्राटकी सरकार उन्हें एसी राहद बिलानेमें अनमर्ष हा वा वे अपनी यह प्रार्थना बुझाते हैं कि उन्हें दक्षिण आफ्रिकाके किसी ऐसे समरन्धकमें अनरुध बोबा और अनरुध स्मटस द्वारा गोर्वासे उड़ा दिया जाये वही उन्हींमें सम्राट और ब्रिटिश साम्राज्यकी सेवा करते हुए गोर्वासेकी बौछार भली है। और आपकी प्राचीन मर्दव संवद-कामना करेंगे आदि आदि।

जमादार नबाव खाँ
मक़्क़ गुल
मुहम्मद दाह
मीर आक़म खाँ
नूर अली

[अध्यास]

इंडियन ओपिनियन १९-९-१९८

१८ वली मु० घास तथा अन्य लोगोंका मुक़ावमा

[प्रिगेरिया
सितम्बर १५, १९०८]

इसी १५ तारीखकी तर्बनी वली मुहम्मद बपस इस्माइल जुमा एस बस्तमबास और इस्माइल ईतनबी आदिवा प्रिगेरियामें मेजर डिवसनकी अवालतमें पैस हुए। उनपर सामान्य पंजारी-परवानेके बिना व्यापार करने और इस तरह नगरके उपनियमोंका उल्लंघन करनेका अनियोग था। प्रिगेरिया नगरपालिकाकी ओरसे भी बर्बादने और तफ़ाई पलकी ओरसे भी पाकी तथा लिफ्टेम्बडाइजल रीरबी की।

सबसे पहले भी इस्माइल जुमाके मामलेकी सुनवाई हुई। भी गाँवने बहुत शुक करनसे पहले सम्बन्धर आपत्ति की क्योंकि उसमें १९ ३ के सम्प्रवेश ५८ के अंतर्गत कोई जुर्म नहीं बनाया गया था और सम्प्रवेशमें सामान्य पंजारी-परवानेके सम्बन्धमें कोई उपनियम बनानेकी व्यवस्था नहीं थी। ग्यावाबीशन उनकी आपत्तिकी अरबीकार कर दिया। अनियुक्तन अपनकी निर्दोष बनाया। परवाना-अधिकारी (लाइसेंसिंग ऑफिसर) भी टॉनसनने औपचारिक पत्राहीमें बनाया कि अनियुक्तन पंजारीका व्यापार किया करता है। भी गाँवने तफ़ाई पलकी ओरसे कोई गवाह नहीं पैस किया। उन्हींने कहा कि नैन जो कानूनी आपत्ति उठाई है उसीपर पैरा नारा जावला आपात्ति है। अनियुक्तकी अपराधी करार दिया गया और ५ शिलिंग जुर्माना या तीन दिन तबन कैदकी सजा भी गई। भी इस्माइल जुमान जेल जाना बसन्ध दिया।

इसके बाद भी बड़ी मुहम्मद बगसका भी ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडिया असोसिएशन) की प्रिटोरिया शाखाके अध्यक्ष हुए मामला पैदा हुआ। भी बगस अपने "निर्दोष" बताया। परबाना-अधिकारी श्री टॉमसकी महाश्रीके बाद भी बगसने इस आक्षेपक बयान दिया कि उनके पास पूरे वर्षका सामान्य बिक्रेता-परबाना' वा और उन्होंने बिक्रेता परबानेका मुल्क भी ले लिया था किन्तु वह इस कारण अस्वीकृत कर दिया गया कि उन्होंने मंडूठेका निघान देनेसे इनकार कर दिया। ग्यायाधीशने उन्हें भी बड़ी सजा दी थी बगसके विषय दो हुकानोंके बिलतित्तमें दो अभियोग थे। प्रत्येक मामलेमें सजा एक ही थी। वे भी जूसी-जूसी बंद होके गये।

सर्वथी इस्माइल आडिवा और एक बस्तनदासपर भी इसी तरह मुकदमे चलाये गये उनको भी सजा दी गई और वे भी बंद होके गये।

एक बीनी व्यापारीकी पुकार हुई किन्तु वह हाजिर नहीं हुआ और चूंकि वह अमानत पर था इतकिए उसकी अमानतमें से एक पौंडकी रकम जप्त कर ली गई।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-९-१९८

१९ ओहानिसबागकी चिटठी

ईसप मियाँ

श्री ईसप मियाँने इस्तीफा ले लिया और सार्वजनिक समामें उनकी सेबाजोंका आभार माना गया।^१ श्री ईसप मियाँकी सेबाजोंकी कह बँध-बँधे समय मुजरेया अधिक होगी। उन्होंने कठिन प्रबंधपर भारतीय समाजके बहावका नेतृत्व हावमें लिया था। उन्होंने अध्यक्षका पद जेस जानेके प्रस्तावको^२ बंजाम देनेके इरादेसे स्वीकार किया था। यह ऐसा समय था जब कोई यह नहीं कह सकता था कि भारतीय समाज क्या करेगा। इसका बहुत-कुछ शरीर-शर अभ्यसके साहसपर ही था। उन्होंने बैसा साहस दिखाया और [संघका] कारोबार चलाया। पिछले वर्ष श्री ईसप मियाँने अपने व्यापारका विस्तार कम कर दिया और वे सरकारके विरोधके लिए कटिबद्ध हो गये। इस वर्ष उनपर हमका हुआ^३ वे जोस जानके लिए उत्तर रहे और उन्होंने सोने या फूँके हारकी तरह दो टीकरियाँ गधेमें लटककर फेरीका बन्ना मुक कर दिया। ऐसा करनेसे समाजकी शक्ति निरुत्थनी बड़ी इसका अनुमान बयाना कठिन है। जानें इस साहससे श्री ईसप मियाँने समाजको बड़ा पहुँचा दिया जहाँ पहुँचनेपर

१ कसरत डीपर्स कल्लेण्ड।

२ वह शरीर शरीरमें १४ डिसेम्बरको लिखना जरूम किया और ११ डिसेम्बरको दूर किया।

३ देखिए "प्रस्ताव सार्वजनिक समामें" पृष्ठ १९।

४ डिसेम्बर, १९१६ के प्रस्तावको; देखिए कल्लेण्ड, पृष्ठ ४३४।

५ १० मईको; देखिए कल्लेण्ड < पृष्ठ २४१, २४२, २४३ और ३०५।

समाजकी प्रतिभा सुरक्षित रह सकती है। जब भी बच रहा है वह बड़ा महत्वपूर्ण है उसे किये बिना समाजका काम बच नहीं सकता और उसके लिए जबरदस्त सचप करना आवश्यक है।

किन्तु ऐसे अवसरपर अहाजका नेतृत्व छोड़नेके लिए भी ईसप मियाँको कोई दोष नहीं दे सकता। मसबिद मबरखा तथा सरकारके बिबद सपर्य इन तीन बड़े कामके लिए उन्होंने तीन बार हजकी यात्रा छोड़ी। अब उन्हें जानेका हक है। जो कुछ भी ईसप मियाँने किया है, वैसा ही यदि अन्य भारतीय अम्पस भी कर दिखायें तो समाजकी जीत निश्चित है।

अहमद मुहम्मद काछलिया

उसी ऐसी भासा समाये हुए हैं कि समाजको जैसे भी ईसप मियाँ मिले वे जैसे ही भी काछलिया मिले ह। भी काछलियाका इरादा अम्पस-यद स्वीकार करनका था नहीं। कहा जा सकता है कि उनको यह पद जबरदस्ती दिया गया है। मने तो देखा कि सबका नही विचार था कि भी काछलिया ही भी ईसप मियाँकी जयह लें।

भी काछलिया जेह हो जाये हैं। जुलाई ११ १९ ७ को कहे गये उनके छब्रोंकी संकार अब जो मेरे कानोंमें गूँथती रहती है। उन्होंने कहा था मैं जेल जाऊँगा मेरा विर नसे उबार बिना जाने केकिन मैं जूती कानूनको स्वीकार नहीं करूँगा। उन्होंने अपने छब्रोंका पालन किया है। वे जेल तो ही ही जाये हैं काम करनेके लिए भी हमेशा तैयार रहते हैं। जोरफिय भी वे बहुत हैं। उन्होंने वैसेकी हानि सहनमें कोई कमी नहीं की। इस प्रकार भी काछलियाके जनक सुभ सकुनोंमें अम्पस-यद पाया है।

किन्तु भारतीय जलमान अब भी मीपय तूफानमें हा है। [तूफानसे] बीच समुद्रमें बितना पठरा हीना है किनारेपर पहुँचते समय उससे हमेशा पथावा होता है। अर्थात् रास्ता यद्यपि थोड़ा ही काटना है फिर भी काम बहुत बाकी है। सम्भव है, हमारे सलाही पक गय हों। वन जोअम्पसके अमरीठा या पहुँचनका बचन आया उसी उसके सलाधियोंन बिरोह कर दिया। किन्तु उसकी हिम्मतके आये वे पुन प्राप्त पक नये और अमरीठा महादीप उसक हाथ बना। ऐसा ही हाथ भारतीय जलमानका है। किनारा पास जा गया है, किन्तु बेटानें बड़ रहो हैं। उनके बीचमें न जलमानको ले जाना किसी धकित-गाकी कप्तानका काम है। मैं आशा करता हूँ कि भी काछलिया वैसी धकित दिखायेंगे।

अम्पसका बर्न होना है समाजका सबसे भेष्ट व्यक्ति। उसके गुणोंसे ही समाजके पुनोंका अन्नाया लगावा जायेगा। फिर यदि वह प्रमूय सरवाग्रहकी लड़ाईमें भाग ले रहा हो तब तो उसमें मरनार्थक सरय मरणपर्यन्त ईश्वरपर विश्वास मरणपर्यन्त धारण समाजके बिद् पैसा माल मिच्छियत और जान हाजिर करने और वे बैनकी उत्तरता अरक्षण मानविकता अत्यन्त निर्मलता अत्यन्त निर्मलता और अत्यन्त विनय तथा मज्जता आदि गुण होन चाहिए। भारतीय समाजके अम्पसमें इतने गुण हों उसी सरवाग्रहका रूप मिलना ही सरवाग्रहकी ऐसी जय हीनी कि सारी बुनिया देलनी।

म तो गुना—ईश्वर—ने माँगता हूँ कि वह भी काछलियाको म ममम् मू७७ / में सारे भारतीय समाजकी ऐसी ही प्रार्थना करनेकी लताह देता हूँ।

कुछ पुरानी सड़कें

अधिक कामके कारण कुछ सड़कें बनेको रह गई हैं। अपने कायज उकटते हुए जो सामने जा रही हैं उन्हें यहाँ से रखा है।

श्री इस्माइल मुसा बीन तथा श्री ईसप आमर कानमवालाको हाइवेकमिशनमें जमाना हुआ और अगर वे जमाना न करें तो उनका मास बेचनेकी बात थी। श्री बीनज जमाना दे दिया है। श्री ईसप आमरने नहीं दिया। उन्होंने सरकारसे कह दिया है कि यदि मास बेचना हो तो बेच दिया जाये। अतएव उनका मास बेचा नहीं गया है।

वेटीनिगिगमें जिस तरह श्री पटेल्का मास बेचा गया उसी तरह श्री इब्राहीम इस्माइलका मास भी बेचा गया है। उनके मासका भी अधिकोश भाग बच दिया गया। ऐसा अन्धेरे है। एक अनह कोई परवाह नहीं करता और दूसरी जगह मास बेच दिया जाता है। अन्धर नगरी बीनट राजा-बीनट बात है।

मूसाईकोंके भारतीय

मूसाईकोंका मुकदमा समाप्त हो गया है। मुकदमा शुरूआती हुआ था। श्री काजी तथा श्री पांडोरका मुकदमा समाप्त होनेके बाद सरकारकी बकौलकी हिम्मत दूसरे मुकदमे खलानकी नहीं हुई इसलिए उसने उन्हें वापस से लिया। श्री काजी तथा श्री पांडोरके मुकदमे दो घंटे चले। उन दोनोंके बयान सुन चुकनेके बाद ग्यायाधीशने कहा कि मुकदमेमें दम नहीं है और श्री काजी तथा श्री पांडोर निरपराध हैं। श्री काजीने अपनी गवाही अंग्रेजीमें दी। मुकदमा समाप्त होनेके बाद श्री छोटाभाईके यहाँ समा की गई। उसमें श्री याशीने संघर्षके विषयमें समझाया। उन्होंने कहा अब सब राष्ट्रीय एकमत हो गये हैं। श्री दादकानीने श्री याशीको धावन की। उस समय अक्टूबर २५ भारतीय पंचममें सम्मिलित हुए।

कोरकय और कजम

गुस्वारको जिस समय सार्वजनिक तथा समाप्त हो रही थी तभी समाचार मिला कि बाहर कुछ टंटा हो रहा है। उसपर श्री पोल्क वहाँ दौड़े गये। श्री जगुल घरी श्री यय। देखते गये हैं कि माठियोंकी भार तथा परधरोंकी बर्षा हो रही है। उन्होंने तथा अन्य माइयोंने बोल-बचाव किया इसलिए लोगोंको ज्यादा चोट नहीं आई। अतएव श्री पोल्क ज्यादा गिर जाते किन्तु श्री मोराबजी तथा श्री गोपादा इन दो पारसी माइयाने चोटोंको भरण ऊपर लेके लिया। श्री सोटाबजीकी अंग बच गई, किन्तु कानकपर गकल बच आई है। दो कोरकी माइयोंकी भी आनी चोट लगी है। दो कानमियोंकी भी चोटों चोट लगी है। श्री पाकके पट्टेपर मामूली चोट आई है। अथवा केवल नौजवानोंके बीच मामूली-सी बात पर हुआ था उसका रूप इतना बढ़ा हो गया।

समझौता

दिले दोनों समाजोंके नेताओंके बीच समझौता हुआ जाये इस उद्देश्यसे रविवारको श्री हानो हबीबके घर नभाओंकी बैठक भी गई। श्री याशीन बैठककी अध्यक्षता की थी।

१. अन्धेरेके इलाकी तस्वीर खोजेकी।

२. देखिए "कोरकियोंनेकी रिपोर्ट" पृष्ठ १६।

३. अतः अन्धेरेकी रिपोर्ट अन्धेरे नहीं है।

श्री हाजी हबीब श्री मोनबो साहब श्री काछनिया श्री अब्दुल गनी श्री भाईबी श्री सहा-
बुरीन इत्यादिके मापक हुए और दानों समारोहोंके प्रतिनिधियान नीचे विने गये इस्ताबेअपर
एतयत क्रिये ।

इस्ताबेअ

हम कौंफ़री तथा कानमिया कौमक नेतागण खुदाको साधी रखकर मिलते हैं कि इन पानों
कौमके नीजवानोंके बीच तकरार होनेका हमें दुःख है और हम एक-दूसरेसे माफी
मांगते हैं और माफी चाहते हैं । हम अपनी-अपनी कौमक नीजवानोंका समझानकी
जिम्मेदारी सजे हैं और उनके [कार्योंके] लिए आपनको उत्तरदायी मानत ह । हम
उन्हें सहाह देते हैं कि यदि उनका कोई अपमान हो जाये तो वे हमें पबर दें किन्तु
एक-दूसरेसे नहीं ।

मे इन इस्ताबेअको बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ । यदि नेतागण इस प्रकार अपने कतम्भको
समसा हैं तो जलमें किसीका मरना होता ही चाहिए । तहनोंकी ओमा इस यातमें है कि वे
नताबोंके कौमका पालन करनेके लिए सड़ाई-सपड़ा बिल्कुल बन्द कर दें । यदि पठान कौंफ़री
और कानमिय आनेको बड़ा बहादुर मानते हैं तो उन्हें अपनी धकितका उपयोग कौमकी
रखा करनेमें करना चाहिए । नेताओंको पार रखना चाहिए कि ऊपरका इस्ताबेअ खुदाको
साधी रखकर लिना गया है और इसलिये उनपर बहुत जबरदस्त जिम्मेदारी है । जवानोंको हमेशा
प्यार राना चाहिए कि वे बिल्कुल न झगड़ें । मैं आशा करता हूँ कि कानमिय कौंफ़रियोंके
मिलते हुए पहले सलाम करेगे और कौंफ़री कानमियोंसे मिलते हुए बैठा ही करेगे । बैठक
समाप्त होनेके बाद श्री हाजी हबीबने सभी सज्जनोंका पाय-बिस्तुटसे सलाम किया तथा
श्री उस्ताज महमदने मुकद्दस सम्बन्धित पीत सुनाये ।

सार्वजनिक समा

साधजनिक समाका अधिक हाल हमारे स्थानपर मिस्सगा तथापि मैं श्री अब्दुल गनीका
फिसा यहाँ कह दे रहा हूँ । यह बात असरिगम रूपसे मित्र हो गई है कि श्री अब्दुल
गनीने सैन्ट्रैको छाग बी है । उन्होंने समासे इनको माफी मांगी और परबालाय प्रकट किया ।
उन्होंने कहा कि उनका इरादा सैन्ट्रैको छाग देनेका बिल्कुल नहीं था किन्तु आनेकी जस्टीमें
करके भार देना ही गया । फिरसे भूल नहीं होगी एसा कहा और स्वयं संघषमें खुल
रखनेका बचन दिया तथा हमरीसे भी खुल रहनेका अनुरोध किया । श्री अब्दुल गनीन एसा
क्रिया इनलिये बर हममें से किसीका उनके कुछ करना नहीं है । मैं आशा करता हूँ कि
उन महोदय बर हमेशा सड़ाईमें आगे बढ़कर हिम्मा लेंगे तथा कौमकी सेवा करें ।

असौ ईसप

श्री अनी ईनापर मात्र सूचना चला । उनपर परबालाय तबिस्तुगाल न करानेका आरोप
लगाया गया था । इन सूचनामें श्री बोकरा शारिर से । श्री अनी ईनाको आज निम्ने देना
पोहनकी हिदायत की गई है ।

१ १३ एतारेबर १२ एकरमे तरो बी बी और एके ८ मरद वे क्रिये एक संघीकी बी वे ।
२ थेबर "बोधोन्मत्तकी विद्वा" पृ १२ ।

मूखनीमाई पटेल

धी पत्थर पुष्करकी छूनेवाले से इतना बहुर-मे व्यक्ति उन्हें लेनेके लिए जेल तक गये। किन्तु तब माकूम हुआ कि धी पत्थरका रोग बाहर निकाला जायगा। उन्हें जेल स्टेनन के जाना गया और वे पतिवारकी चार्जटाउन पहुँचे। कुछ भारतीय उनसे मिलनेके लिए जमिस्तान गए थे। धी पत्थरकी तबायत अच्छी है और उनका साहस बरकरार है। वे पाँच हा अश्विमें जानम प्रदेग करेय तथा बीर जो कष्ट भोगता पहुँचा उसे भायेंगे। उनके साथ पुलिसका बर्ताव ठीक रहा।

सीराबजी घापुरजी

धी गाराबजी घापुरजी यहाँसे बहुत साहसके साथ आज सरेरकी पाड़ीसे जेल भीषणके लिए फोसलए गए हैं। उन्होंने सार्वजनिक मसामें ही बना दिया था कि जादे जितनी धना करो न ही वे जानते कि तैयार हैं। उन्हें कुछ इतना ही रहा कि संपन उन्हें उनका इफ होनार मानना उनके मर्गेय पहुँचे जेक नहीं जान दिया। धी काउलिया धी अस्ताउ धी ब्यास धी पीरक धी जॉवनको धी तापक धी पाँचो जादि उनको बिदाईके समय उपरिपत थे।

धो इब्राहिम उस्मान पुष्करकी यहाँ भा गया। धो काउलिया इत्यादि उन्हें लेने गए थे। वे धी काउलियाके मेहनात हैं।

नटासके कीड़ी

धी दाउर मुहम्मद तथा आ अम्य मेतामय जन्में हू वे हर कर रहे हैं। सरकार उनकी पूछे कबोती करवा पायाँ १ उनम सब मेदतर सेराँ २ उन्हें रातातर परकर ताफनके लिए बाहर निकालना है। वे इन कामका भी उतावग करते हैं। उनका मत भयना है कि जराफ निर्णय नहीं होता तबतक वे जन्में रहना सारे काट उठावय। उन्हें गहन महनतका काम दिया जाता है किन्तु उनम से कुछ नहीं है। यह सब हूय भायेंग तथा हममें बास्तविक पायदा भारेगा। मिताहीका काम सारे कष्ट उठाता है। मन्दापट्टी मिताही के लिए ता यहा पाठ है यहा नर है। नकवा जयन हो ता परकर ताफना भी मुगकर बन जाता है।

उत्तमजीका पत्र

धी बगमबोंने गवा मिलानके बाँ निम्ननिमित्त पत्र भेजा है

आज हम जान आरमियोंको तंजनाय मर्देनेकी गवा हुई है। हमन हम बगम गवा हू। मरकी जिम्मा रँपादे। काई जिनः भी मरत न परगाय। दरि लाग हमारे काँय गजराकी बर करना जात है ता सार्वजनिक मसामें बलिग वि गभी भाई बार्त नीग इकाडा करें।

सठ सली कीस छुटें!

इगदर आनीपद जन्में पर परत बगा हुआ है। जशर काय है

- (१) [परकता (लाइसेंस) हा ठर थी] कोई परकायन परगाय न करे।
- (२) परकता न जिग जाय।
- (३) जबरद बिन्दो ही मुग्ग येन-जाया की करे।

- (४) नटासके बिन भारतीयोंका [इस उपनिवेशमें बसनेका] हक हम भागते हैं वे नटासमें बाकिज हों।
- (५) बाकिज होनेबाछ भारतीयोंके मिथान करापि न वे।
- (६) माछ बेचा जाये तो उसकी परबाह न करें।

मानापमानका सवाल

देखता हूँ जो लोग हमारी सजाईमें घामिक होतके विचारते ट्रांसवालमें प्रवेश करते हैं, उनमें न किंगो किर्वाके मनमें अजल मानापमानका विचार रह जाता है। यह अक्सर मानापमानके विचारका नहीं है। सभी भारतीयोंका बाहिए कि वे मानका ठाकर रक्षकर भारतके सबकको हितियतस जायें। बाबर-सत्कारका समय नहीं है। जो सबा कर रहे हैं उनके पास अककाय नहीं है। जो साराबजा जायें। उन्हें जितना मान दिया जाता कम बा। किन्तु किर्वाको अककाय नहीं बा। हमारे बाँच अब अक जाना एक साधारण बात हो गई है। सभी देखक हैं फिर किसको मान दें? अभी यह ऐसा ही कठिन प्रसंग है और यदि ऐसा ही बना रहा तो भी कोई हर्ज नहीं है।

हम अपने अथवा अरुके आदमीको मान देते हैं। यदि देखा जाये तो बास्तवमें इसमें समानकी बाड़ी-बहुत हीनता हो है, क्योंकि इसका मतलब है हममें अच्छे और अपने आदमी इतने कम हैं कि हम उगका भूम-जायते स्वागत करते हैं। बिन वस्तुओंकी कमी होती है, उनका नाब बढ़ता है। यदि ऐसा अक्सर जाये कि समाजमें सभी अच्छे ही जायें तो फिर नछे ही किस्वी व्यक्तिको मान न दिया जाये वह समाज संसारमें तो मान पायेगा ही। अंग्रज किमी सामर्थ्यवान आदमीपर ल्टूटू हो जाते हैं। इसके दो अर्थ हैं—एक तो यह कि उनमें बास्तविक सामर्थ्यकी कमी हो गई है दूसरा यह कि वे लोग सरीर-बलको बहुत महत्त्व देते हैं।

इसलिए हमारा फर्ज तो यह है कि सभी भारतीयोंके सत्यवादी धर्मवान और स्वरेषा मिथानी देख-देख बनें। यदि ऐसा ही गया तो मानापमानका प्रश्न नहीं बचेगा। मेरी किस्सेने कीमत नहीं की ऐसा विचार भी मनमें नहीं आयागा। कीमत तो इसीमें है कि जिस समय जो-कुछ मिले और जगतके रक्षयिताको जो-कुछ देना बने उसीमें सन्तोप मानकर चलनेमें बिन पुकारे जायें।

मंगलवार [सितम्बर १५ १९८]

गलतफहमी

श्री मुहम्मद बाकि भी गांधीके कार्यालयस जाके कारण कुछ लोग ऐसा समझ रहे हैं कि वे नि-युक्त सार्वजनिक कामसे पीछे हट गए। ऐसा समझना ठीक नहीं है। श्री मुहम्मद योंने अरैतनिक कसे भी रहनेकी बात की थी किन्तु बेसा करलकी जरूरत नहीं थी। उन्हें साधारण रूपसे कमाई करनेकी अच्छी मुविधा मिल रही थी इसलिए श्री गांधीकी समझते वे नये हैं। श्री बोपसामीकी सार्वजनिक मरद स्वीकार कर ली गई है, क्योंकि वे तो जायी बैठे थे। भारतीयोंकी मानसारीसे कमायें और नन-संचय करें, इसकी भी जरूरत है। सभी कमाता छोड़कर स्वसंचयक नहीं बन सकते। श्री बोपसामीको जीविकाकी ब्यय मुविधाएँ हैं इसीलिए वे संघकी मरद कर सकते हैं।

समितिकी बैठक

ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन अपीसिएशन) की समितिकी बैठक बुधवार तारीख ९ को हुई। उसमें श्री ईसप गियांकी वैरहाबिरीमें श्री इब्राहीम कुबाकिवाने अध्यक्षता की। इमाम अब्दुल कादिर बाबजीर, श्री फैजवी श्री करोडिया श्री उमरजी श्री लडीपम श्री बी श्री महाराज खादि हाबिर ने। श्री श्री गीबीने कार्यालयका काम लगभग बन्द कर दिया है और श्री पोल्कफा पुटी तरह सार्वजनिक काममें मुब हुए है, इसलिए अग्रस्तसे उनका [श्री पोल्कफा] सर्व तथा कार्यालयका किराया संभने अपन ऊपर लेनेका निश्चय किया है।^१ ऐसा करनेसे टाइपिस्ट आदिके सर्वके बलाबा फिलहाल संभका सर्व प्रति मास ३५ पीड बढ़ गया है। श्री गीबीका धारा निजी सर्व भी कौन्सेनिक उठाते हैं। वे रहुते भी उन्हीके साथ हैं।

अहमद ईसप डाउड

कुछ महीन पहले श्री अहमद ईसप डाउडपर बिना परवाने (लाइसेंस)के फेरी लगानेका आरोप समया गया था। जब अदालतमें उनका नाम पुकारा गया तब वे कहीं बाहर पने हुए वे इसलिए मजिस्ट्रेटने उनकी जमानत रख कर थी। बादमें श्री अहमद आ पहुँचे किन्तु मजिस्ट्रेटने अधिकार न होनेके कारण जमानतके अपने हुकममें फेरफार नहीं किया। इसलिए अदालती अनरलको दरखास्त भी गई। उन्होंने जमानत वापस करनेका हुकम किया और मुकदमा बचानकी आज्ञा दे दी। सनवार (तारीख १२) को मुकदमा बन्ना किन्तु श्री कौंसने यह कहकर मुकदमा खारिज कर दिया कि श्री अहमद तो बिना परवानेके फेरी करते थे। मुकदमा परवाना न दिलानेके बारेमें वा इसलिए यह जायू नहीं होता। इस मुकदमेमें कोई धार नहीं है। बेलनकी बात इतनी ही है कि श्री मुहम्मद बाजय जेक जाना चाहते थे। उन्होंने जल जानके लिए ऊपरकी कोषिध की किन्तु सजा नहीं मिली।

प्रिटोरियाके मुकदमे

नगरपालिकाने प्रिटोरियाके प्रमुख श्री बली मुहम्मद बजय श्री इस्माइल आदिवा श्री इस्माइल जूमा श्री सासघाह बल्कभदास उर्ष मंगळमाई पटेल तथा एक चीनीपर बिना परवाना पसारी (बोहर) का व्यापार करनेकी बाबत मुकदमा चलाया है। उनके मुकदमे आज हैं। इसका लिए श्री गाबी प्रिटोरिया पने हैं। इनमें से कईके पास पूरे वर्षके लिए सामान्य बिकेना परवाना^२ है, किन्तु नगरपालिका उसके सिवा पसारीके कारीबारका परवाना माँसती है। पिछले छ महीनाके सामान्य बिकेना परवाना तो इनमें से कईके पास वे किन्तु अब वे अँगूठेकी छाप देनेसे इनकार करते हैं और इसीलिए उन्हीं परवाने नहीं मिले। इसमें बचान-दखकी धीरस दलील यह भी जानबाली है कि नगरपालिकाको पसारीका परवाना माँगना हक ही नहीं है। नगरपालिकाको दूसरे प्रकारका परवाना माँगनेका हक है, किन्तु फिलहाल वह उनके

१ पिछली बैठके उस विचार विचार-विषय स्थिति कर दिया गया था; देखिए "बोहर-विषयकी विही" पृष्ठ १४ १५।

२ देखिए फिलहाल धीरस भी।

३ अन्तः भील्ले कासेन।

नियमोंमें नहीं है। यदि यह दलील ठीक हो तो मुकदमा खारिज हो जाना चाहिए। श्री बन्दी मुहम्मद बागसे ऊपर दो सम्मान हैं क्योंकि उनका दो हुकामें हैं।

बुधवार [सितम्बर १९ १९८]

प्रिटोरियाके भारतीयोंका मुकदमा मेजर दिक्सनके सामने हुआ। श्री बांकी तथा श्री ब्रिक्लेस्ट्राइड उपस्थित थे। जिस दलीलका ऊपर जिक्र कर चुका हूँ वह पेश की गई। मजिस्ट्रेट विचारमें पड़ गये किन्तु उन्होंने निर्णय नहीं दिया कि मगरपासिकाको पंसाटीका परवाना (प्रोवर्ष लाइसेंस) माँगना हक है। पहले श्री इस्माइल जुमाका मुकदमा हुआ। चूँकि उपर्युक्त दलील पेश की जा चुकी थी इसलिए मजिस्ट्रेटका मन मरम पड़ गया। मगर पासिकाका बकीस भी बहुत जोरदार नहीं था इसलिए भारतीयोंकी ओरसे यबाही नहीं की गई। परिणामतः न्यायाधीशने पाँच सिद्धिग जुमाना जबका तीन दिनकी छुट्टी केवल सजा दी। श्री इस्माइल जुमा सुरक्षित ही इसे स्वीकार करके जेल गये। उसके बाद श्री बन्दी मुहम्मदके दो मुकदमे हुए। उनका भी यही मतीजा हुआ। तत्पश्चात् श्री आडियाकी बारी आई और उसके बाद साबसाह बन्धमदास उर्फ श्री मंगलदास पटेलकी बारी आई। सभीको यही सजा दी गई और सभी हँसते-हँसते जेल गये गये। सब कहें तो उन्हें केवल एक ही दिनकी जेल हुई। मंगलदासको चार बने गये थे। वह तो कुछ भी नहीं रहा। बुधवार पूरा दिन जेलमें रहकर गुरुवारको सुबह बाहर जा जाना है।

यद्यपि उक्त संजनोंको जेलकी सजा हो गई है, फिर भी जो दलील दी गई थी उसके विषयमें बकीस करनेकी बात बस रही है क्योंकि उधमें से कुछ फायदा निकलनकी सम्भावना है। यदि पंसाटीका परवाना सेना निरिच्छत ही हो तो इस प्रकार कुछ समय तक जोग उस परवानसे मुक्त रह सकते हैं। यदि ऐसा हो सका तो दो काम निकलेंगे। हम जेल भी जा सकेंगे और फिरहाल कानूनका दिया हुआ एक पहाना हमारे हाथ जा पायेगा। श्री बन्दी मुहम्मद प्रिटोरियामें व्यथित हैं। इसलिए यद्यपि उन्हें मामलातकी ही जेलकी सजा मिली है, फिर भी यह साधारण बात नहीं है कि व्यथित जेल भेजे गये। मैं श्री बन्दी मुहम्मद और उसी प्रकार प्रिटोरियाके अन्य भाइयोंको भी मूबारकबादी देता हूँ।

पाठकोंको याद होया कि श्री इस्माइल जुमा जबतक दो बार जेल जा चुके थे। यह दो समी-समीकी बात है कि श्री आडियाको एक पीठका जुमाना हुआ था और उनका मात मौकाम किया गया था।

दुःखकी बात यह है कि उक्त संजमगल तो जेल गये किन्तु सम्मान निकलने ही कुछ अन्य भारतीय डर गये। उन्हें मातकी मौकामीका डर हुआ इसलिए उन्होंने बंमूलेकी विधानी देकर सरकार परवाने ले लिये। कहा जाता है कि ऐसे २ जोग हैं। ऐसी घटनाप्रति ही संघर्ष करना होता जाता है। यदि सभी भारतीय हिम्मत रखें तो हम बाँड़ ही बिनोमें नेताके व्यापारियोंको छुड़वा सकते हैं। फिर प्रिटोरियामें व्यापारियोंके सम्मानके लिए जब हुकामें बन्द करनकी बात बनी तब बहुतायत हुकामें बन्द नहीं कीं। यह भी सदाय बात है इसे स्वाबमुक्त दृष्टि ही कहा जायेगा। जब भारतीयोंके स्तम्भ बड़े जागेवाले लोग जेल

गये तब कुछ भारतीयोंसे एक दिनके लिए भी व्यापार बन्द करते नहीं बना। कहा जा सकता है कि अभी हम लोगोंको बहुत-कुछ सीखना है।

कॉर्पोरेशनोंमें दो मद्रासी थी संयतन और आइकट बोबी बिना परवाना काम करनेके अपराधम पकड़े गये थे। उनपर मुकदमा चला। स्यावासीसने उन्हें एक पीठ जुमाना जबका तीन दिनकी जल्दी समा थी। उन्होंने जेल जागा कबूत किया। उनकी छरफसे पैगर्बी करनेके लिए कोई भी सजा नहीं हुमा था। वे अपनी हज्जासे ही जेल चले गये।

इब्राहीम उस्मान

[श्री इब्राहीम उस्मान] पीट रिटिक पये हैं जहाँ उनकी दूकान है। यदि कोई उन्हें गिरफ्तार करे, तो वे गिरफ्तारीके लिए तैयार हैं।

मेटासके किड्निपोंका सन्देश

श्री पोल्क मंजबदारकी श्री बाउर मुहम्मद आदिसे मिले थे। वे सब मजेमें हैं। श्री बाउर मुहम्मद तथा इन्तमर्जीके बदलपर आज योग्य कपड़े पहनें न होनेके कारण उनके लिए आस कपड़े तैयार किये जा रहे हैं। बाकी लोगोंको काम छीप दिया गया है। सर्मामें बहुत उत्साह और साहस है। वे जाघा करते हैं कि हम बाहरबाके लोग बराबर काम करते रहेंगे।

[मुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-९-१९ ८

२० भेंट रायटरको

जोहानिसबर्न

सितम्बर १९ १९ ८

आज रायटरके एक प्रतिनिधित्व श्री पापीसे भेंट की। श्री पापीने जलसे कहा कि भारत की एक ऐसा प्रजाती कानून स्वीकार करनेके लिए तैयार है जितने किसी यूरोपीय जाताने गिला-परीजाकी व्यवस्था की। यह परीजा कितनी कड़ी ही इसका निर्णय वे जनरल एन्ड्सकी जर्जिनर छोड़ देनेको तैयार हैं। वरन्तु जब एक बार कोई भारतीय उपनिवेशमें जा जाये तब उसे कानूनी समानता मिलनी चाहिए। इसका जर्ब है कि १९ ७ का कानून रद्द किया जाना चाहिए। श्री पापीने कहा कि भारतीय इस बातसे इनकार करते हैं कि वे जिलाके सम्बन्धमें कोई नया मुद्दा चला रहे हैं।

[बंवेजीसे]

इंडियन, २५-९-१९ ८

अेल-निवेदाक

प्रिडोरिया

महोदय

आपका इस महीनेकी १६ तारीखका ह्वा-पत्र संख्या ६६७ मिथा। मेरे संघको इस बातका अत्यन्त खेद है कि उसने जो मुद्दा उठाया है वह अतीतक गलत समझा जा रहा है।

मेरा संघ यह जानता है और स्वीकार करता है कि स्वास्थ्यकी दृष्टिसे मक्कीका दक्षिण पूर्णत पीष्टिक आहार है किन्तु मेरे संघने तो यह मुद्दा उठाया है कि आहार निर्भर बर्षके भारतीयों तक को आहतके अनुकूल मही है। मक्कीका दक्षिण भारतीयोंका राष्ट्रीय भोजन नहीं है; निश्चयेह आपको विरिष्ठ है कि यद्यपि यह स्वास्थ्यकी दृष्टिसे उपयुक्त है तथापि कैरियोंकी उसके साथ हमेशा रोटी भी खाती है। रोटी विरचय ही स्वास्थ्यकी दृष्टिसे यूरोपीयोंके लिए भारतीयोंकी अपेक्षा ज्यादा बरूरी नहीं है। आप यह भी जानत है कि बतनी कैरियोंको मक्की रोपहूरके भोजनमें ही खाती है। यह भी स्वास्थ्यकी दृष्टिसे उपयुक्त है फिर भी समितिने जो जानकारी उसके पास अबबन रही होगी उसके आधारपर, भारतीय बन्धियोंके रोपहूरके भोजनमें मक्कीके स्थानपर आबल रखा। भोजन-शाधिका बनानेवाली समितिने बिध कारणसे प्रेरित होकर भारतीय बन्धियोंके लिए रोपहूरके भोजनमें मक्कीके स्थानपर आबल निर्धारित किया मेरा संघ उसी कारणसे नास्तेम मक्कीके दक्षिणक स्थानपर अन्य आहारकी मांग करता है।

यदि भारतीय बन्धियोंकी भोजन-शाधिकाके खिलाफ अबतक सिकायत नहीं की गई, तो इसका कारण यह है कि यहाँ भारतीय बन्धी बहुत कम रहे हैं। किन्तु इस समय सिकायत करना केवल इसलिए ही उचित नहीं है कि ट्रान्सवालकी जेलों भारतीयोंसे भरी हुई हैं बल्कि इसलिए भी उचित है कि बस्तुतः ये भारतीय अपराधी नहीं हैं और मेरे संघके विचारमें दक्षिण आशिकाके भारतीय समाजकी उच्चतम श्रेणीके लोग हैं।

यदि मेरे संघके बार-बार क्रिये मये निवेदनोपर ध्यान नहीं दिया गया है तो इससे भारतीय समाज केवल यही निष्कर्ष निकाल सकता है कि मेरे संघकी उचित प्रार्थना राजनीतिक कारणोंसे ठुकराई जाती है, और इसका उद्देश्य भारतीय समाजको भ्रूसा रसकर एक एसा कानून स्वीकार करनेके लिए मजबूर करना है जो उसे नापसन्द है।

१. केम-निवेदाक बाहोरकर थोड विरिष्ठ। पर तथा १८ और १५ सितम्बरको केम-निवेदाककी जिने रो क्लब पर २१ और २८ सितम्बरको बाहोरकर-दक्षिणक बाय जिने ही बर्षके उक्त इतिवत ओपिनियनमें प्रकाशित जिने थे वे। शीर्षक पर "का भारतीय मूखों मरकर ह्वाकने मयवे" केकी भीष्म-शाधिकाकी विरिष्ठे बर्षा"।

इसलिए मैं यह आशा करनेकी बुष्टता करता हूँ कि आप रूपया मानी गई राहत देकर इस प्रकारके किसी भी सम्बन्धको दूर कर देंगे।

भायका भात्राकापी सेवक

ख० मु० काछस्मिया

भायस

ब्रिटिश भारतीय संघ

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपियम १-१०-१९८

२२ पत्र 'स्टार' को

[बोझानिसबर्ग]

सितम्बर १७ १९८

सेवाम

सम्पादक

'स्टार'

महीनप

कृपया आप मुझे यह कहनेकी अनुमति देंगे कि आप जो भारतीय बुटिकोपको समाचार पत्रत रूपमें प्रस्तुत करते रहे हैं वह सब ऐसा प्रतीत होता है अतःकालमें होनेकी अपेक्षा आतबुझकर किया गया है। आप कहते हैं कि मैं किसी भी औद्योगिक कर्मिणीको चाहे वह कितनी ही बड़ी क्यों न हो स्वीकार करनेके लिए तैयार हूँ बसतों कि वह यूरोपीयों और एशियाईयोंपर निष्पक्ष भावसे कामू की जाये। मैं अबतक जो-कुछ कहता आया हूँ यह उसके विरुद्ध विपरीत है। मेरा कहना यह है कि कानूनमें एक सामान्य औद्योगिक कर्मिणी ही किन्तु बमालमें वह निष्पक्ष भावसे नहीं बल्कि मेदमानके साथ कामू की जाये। कानूनमें मन्त्रीको अपनी विवेकबुद्धिका प्रयोग जैसे चाहे जैसे करनेका पूरा अधिकार है। यदि उद्ये विवेकबुद्धिके

१ यह पत्र २१-९-१९८ के इंडियन ओपियममें "श्री गंधीका उत्तर" शीर्षको प्रकाशित किया गया था। स्टारने स्टार समाचारकीन स्थितिमें किया था "हम, आज औरके दृष्टांसका जोर आज माधुर्य करते हैं। अपने निदर्न निष्पक्ष है कि प्रयास उन्निवेश तकिके रूपमें है और कर्माल सम्बन्धी यह यह है कि श्री गंधी ऐसी विचारों प्रस्त करना चाहते हैं जो गत कालकीमें समझौता करते समय भी स्वरमक आवासे नहीं थी। (श्री गंधी) किसी भी औद्योगिक कर्मिणीको, चाहे वह कितनी ही बड़ी क्यों न हो, स्वीकार करनेके लिए तैयार है बसतों कि वह यूरोपीयों और एशियाईयोंपर निष्पक्ष भावसे कामू की जाये। किन्तु उनका भाव यह है कि जिन लोगोंको कर्माल कानून या अने काली प्रतिकल्पक अधिनियम (इन्डियन रेगुलेशन देरा) के अन्तर्गत स्थित इन्नि विधा चाहे अन्यके साथ पूर्ण "समन्वय" का बरतना किया जाये। यदि हम औद्योगिक कर्मिणीका बहुत अधिक धना दें तो इन्ने कई यूरोपीयोंके न का सम्बन्ध कल्पना है। यदि बरतान दरको कायम रखें और १९०० के अधिनियम कानूनको दर कर दें तो हम अपने अन्तर्गत अधिनियमोंके लिए अन्निवेशक दर कोन देते हैं। समझौतेकी और पुनरावृत्त नहीं है, इन्काल (इसलिए कि) श्री गंधीको मेरकमक कानूनकी अवलोकनका ही कर्तव्य है।"

प्रयोगका अधिकार न हो तो वह उसे दे दिया जाये।^१ भारतीय इसके लिए बिल्कुल तैयार हैं। मने यह बात जनता और जापके प्रतिनिधिके सम्मुख एक बार नहीं बनेक बार कही है। इसमें कोई बाध होनेका प्रश्न भी नहीं है। बीसा जापने पहले एक टिप्पणीमें कहा है। जबतक ऐसे मोम जो एक ही स्तरके नहीं हैं एक ही संकेके नीचे रखते हैं तबतक प्रशासनिक असमानता सबा रहेगी। मेरी माँग तो केवल यह है कि कानूनमें विशेषतः शिक्षित भारतीयोंके सम्बन्धमें व्यक्तिगतका सिद्धान्त कहीं न किया जाना चाहिए। जाप 'टाइम्स'का प्रमाण देते हैं किन्तु यदि जाप मुझे यह कहनेके लिए क्षमा करे तो 'टाइम्स' सिर्फ उसी बातका डिबोरा पीटा है जिसे जनरल स्मट्स या जनकी ओरसे कोई अन्य व्यक्ति उसको भेष देता है। इस समय 'टाइम्स'के पास इस मामलेके सम्बन्धमें पुरे तथ्य नहीं है।

मैं इस बातका जोरसे खण्डन करता हूँ कि मेरे देशवासी अब एक नया प्रश्न उठा रहे हैं। संघेयमें तथ्य निम्न है। मुझसे पूर्व भारतीयोंका प्रवास बेरोकटोक होता था। सन्धि होनेके बाद प्रवास सामान्यतः शांति-रक्षा अध्यादेश (पीस प्रिजर्वेशन ऐक्ट) के अन्तर्गत नियमित था। इसके अन्तर्गत नये शिक्षित एशियाई देशमें प्रवेश कर सकते थे। सन् १९०७ के एशियाई कानूनमें केवल उन लोगोंके पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) की व्यवस्था की जिन्होंने देशमें रहनेका अधिकार वा किन्तु जनरल स्मट्सकी स्वीकारोक्तिके अनुसार उससे प्रवास नियमित नहीं होता था। शांति-रक्षा अध्यादेशका स्वान प्रवासी प्रतिबन्धक अधिकारियम (इमिग्रेशन रेस्ट्रिक्शन ऐक्ट)ने किया और उसमें एक सामान्य वैश्विक कसौटी रखी गई। जब एशियाई [पंजीयन] अधिकारियम (एशियाटिक एजिस्ट्रेशन ऐक्ट) बनाया गया और उसके क्लॉज २ के उपखण्ड ४ के अन्तर्गत भारतीयोंके उचित अधिकार कोसे छीन लिये गये पद्यपि उसमें इसका उल्लेख नहीं था किन्तु चूँकि भारतीयोंने एशियाई कानूनको कमी स्वीकार नहीं किया है और सबा अकर्मनीय कष्ट सहते हुए अगाधार बड़वापूर्वक उसको रद करनेकी माँग की है इसलिए उनपर एक नया मूला दालिख करनेका आरोप कैसे लगाया जा सकता है?

कानूनको रद करनेका समय जागेपर अपना बचन पूरी तरह धंग करके चार सठोंपर कानूनको रद करनेका प्रस्ताव करनेवाके जनरल स्मट्स ही थे इनमें से तीन सठोंको उन्होंने बनाश्रमक प्रतिरोधके हवावमें बाकर और अपने कानूनके प्रशासनको ठप होते देखकर जापस के किया। चौथी सठको वे जापस नहीं लेते और जबतक यह बात स्वीकार नहीं की जाती तबतक अवस्था ही ब्रिटिश भारतीयों और अन्य एशियाईयोंकी दृष्टिमें वे बेईमानीके आरोपके अपराधी रहेंगे।

मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि जाप और प्रबधिवादी नेता जा कहते हैं कि उन्हें साम्राज्य-हित हृदयस प्रिय है और जो एक प्रबधिपीठ बहका नेतृत्व करणका दावा करते

१. वाग्दे इन्डियनमें छापने किया था। हम सब भारतीयोंको बंदीवार बन्धन करते हैं कि हमने भी नहीं था बल्कि समाजको सुनोपुष्टकर कल्प करने में मत्तुत किया है। कल्पकी शक्ति जनतमें हम सब करी कि कोई भी विवेक वा मन्त्री छरा जाती किया गया जादेश उतरक कल्पुवशी एव चरत्नोंको दक्षिणत र्थी कर सज्जा। कानून बनानेके लोके फिर बनने वाले हैं। यदि छरत्तन, सब मामलेमें देती चरत्नोंके कल्प करनेमें बन्दगी रहती है। वा सब देती कल्पुवशी करती है जो एकदमिदिके कल्पुवशी है।" वाग्देको कल्प जो मत्तुत मेरा मत्तुत सिद्ध है कि "वचः शरत् की" छ ५३-५५।

२. टिडर कल्प ८ पृष्ठ १९०-१९ और पृष्ठ ३ ८-१।

३. शिक्षित भारतीयोंके लोकेके सम्बन्धमें।

हैं बेईमानीका पक्ष के रहे हैं। क्या मैं ऐसा ही एक बन्धु उदाहरण दे सकता हूँ? जनरल बोचाने बेरोनिगिंग (अनिश्चय) की सन्धिके सम्बन्धमें 'बतनी' शब्दकी व्याख्या यह की थी कि उसके अन्तगत एशियाई भी आते हैं। लॉर्ड मिन्नर और सर रिचर्ड सॉलोमनने इसको पकड़ बताया किन्तु जनरल बोचाने जो व्याख्या की थी उसको उन्होंने मान लिया और उस व्याख्याके कारण ही आज एशियाई लोग नगरपालिका-मताधिकारसे वंचित हैं।^१ फिर जनरल बोचाने कहा कि लॉर्ड किचनरने उनके लोगोंको तत्काल स्वशासन प्रदान करनेका वचन दिया है। इस सम्बन्धमें भी अंग्रेजोंकी प्रतिष्ठाको बेहाय रखनेके लिए साम्राज्य-सरकारने उस वचनको उसी धर्ममें स्वीकार कर लिया जिसमें जनरल बोचाने उसे समझा था। क्या एशियाई कानूनको रद्द करनेके सम्बन्धमें और ब्रिटिश भारतीयोंके सम्बन्धमें अंग्रेजोंकी प्रतिष्ठा या उपनिवेशकी प्रतिष्ठा बलव-बलव तरीकोंसे नापी जायेगी?

भाषका बादि
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

स्टार १७-९-१९८

२३ भेंट 'स्टार' को

[बोहानिसबर्न

दिसम्बर १७ १९८]

श्री गांधीने स्टार के प्रतिनिधिको भेदके दौरान कहा कि [अधिकारियोंने] मेरे पुत्रको निर्वासित करके मेरे साथ कठोर बरताव किया है। मैं कहूँ उल्लेख मिलनेके लिए व्यर्थ था और मैंने उसके बारेमें सम्बन्धित अधिकारीको बर्बाद कर चुकताऊ की थी। अधिकारीने उस समय बताया कि अबतक इसे इस विषयमें कोई जानकारी नहीं मिली है और सत्ताधारी उसके सम्बन्धमें क्या कार्रवाई करना चाहते हैं यह समाचार वह अगले दिन प्रस्तुत होगा। आज प्रस्तुत जब मैं बोल गया तब मुझे समाचार मिला कि हरिलालको ७ बजे के मरे।

श्री गांधीने कहा कि यदि सरकारको मुझसे यह वचन लेना था कि किसी प्रकारका प्रदर्शन न किया जायेगा तो मैं उसको ऐसा वचन दूँके दे चुका हूँ। मैं अब भी उसे बँतल वचन देनेके लिए तैयार था। हरिलाल जोपी स्टेशनपर पाड़ीने था। किन्तु पाड़ीकी छिड़कियाँ बन्द थी और वे अनिश्चयमें भी बन्द ही रखी गईं। लीयोंने छिड़कियोंकी दरारेंसे बालें भी और ऐसा बाल पकड़ा था कि समाजसेवियोंको वे बालें बड़ी मजबूत लग रही हैं। श्री गांधीने तार द्वारा अपने पुत्रको सूचित किया है कि वे उपनिवेशमें फिर धीमे ही प्रवेश करें। यह तार उसको सीनापर मिला जायेगा।^१

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-९-१९८

१ देखिए कन्नड ३ पृष्ठ ३५२-५७।

२ इतिहास खी १० दिसम्बर, १९०८को निर्दिष्ट दिने गये थे।

३ इतिहास १९ दिसम्बर १९८को अंग्रेजीमें पुनः प्रकाशित हुए और उसकी २१ दिसम्बर तक के लिए फिर प्रेषण किया गया। २१ दिसम्बरकी कन्नड से अनुवाद का समाप्ति किया गया।

[ओहानिसबर्ग]
सितम्बर १८ १९०८

जेरु-मिदेशक^१
मिडोरिया
महोदय

भारतीय कैदियोंकी भोजन-तालिकाके सम्बन्धमें आपका तार संख्या ४५६ प्राप्त हुआ। यदि आप कृपापूर्वक छोटी और सस्ती सब्जी पाये हुए भारतीय और अन्य कैदियोंके लिए स्वीकृत तालिकाको एक प्रति मेरे पास भेज देंगे तो मेरा संघ आगारो होना।

इसके अतिरिक्त मैं आपका ध्यान इस तथ्यकी ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ कि इस भारतीयके सिलसिलेमें मैं स्वयं मिडोरिया जेलमें था और तब कैदियोंको किमी मास प्रार्थनाके बिना भी मिलता था। मैंने यह भी देखा कि भारतीय कैदियोंकी जो इन्होंने मिडोरिया जेलमें मिले व भी मिलता था। ओहानिसबर्गके कैदियोंका भी कहना है कि उन्हें प्रारम्भसे ही भी मिलता था और सब भारतीय कैदियोंकी जो एथियाई कानूनके अन्तर्गत मुकदमा प्रारम्भ होनेके समय ओहानिसबर्ग जेलमें भी मिलता था। एक कैदीका कहना है कि उसने वास्तवमें यह छोटी हुई तालिका पढ़ी थी जिसमें मक्लीके दसिये और बर्बीकी बराह ४ बीघ भागस और १ बीघ भी दिया जानका उल्लेख था। मेरे संघका यह भी कहना है कि भोजन तालिकाका जो छोटी हुई थी ओहानिसबर्गमें जेलके अधिकारियों द्वारा इतनी कबाईसे पाकन किया जाता था कि भोजी कैदियोंको मक्लीका दसिया और बर्बी ही जाती थी क्योंकि वे बाबूका उस तालिकामें शामिल नहीं किये मग से जो भारतीय कैदियोंके लिए निर्दिष्ट की गई थी।^१ इसलिये यदि आप कृपापूर्वक जांच करके मानस्यक राहुतके लिए आज्ञा जारी करें तो मेरा सब कृतज्ञ होगा।

मैं आपका ध्यान एक बार फिर इन तथ्यको और दिमाता हूँ कि किमी मुमकमान या माकाहारी हिन्दूके प्रति उनके भोजनमें वनूकी बर्बी शामिल करनेसे बड़ा कोई और अपराध नहीं हो सकता। मैं इतना और कहना चाहता हूँ कि हालमें ही ओहानिसबर्ग जेलमें रिहा होकर आपे कैदियोंमें मेरे संघकी बताया है कि उन्हें अपनी बाबूकी पुराकने माप १ बीघ भी मिलता था।

आपका आज्ञाकारी मन्त्र
अ० मु० कास्ट्रिमिया
अध्यक्ष
ब्रिटिश भारतीय संघ

[अवेजोके]

इंडियन ओपिनियन ३-१ -१ ८

१. एप्रिल १९०८ प्रिन्स ।

२. १ अप्रिल १९०८, पृष्ठ १४३, ४९ ।

गधामे
सम्पादक
स्टार
महोदय

मेरे इस कथनका कि धायद भागने मुझे जानबूझकर वसत रूपमें पेश किया है आपन औरसे गण्डन किया है इसमें मुझ प्रथमता हुई है। आपके इस लक्षणसे मुझ जामा होती है कि धायद में आपको अब भी यह विश्वास बिल्ला सकता हूँ कि भारतीयोंकी जीव म्यामपूर्व है। अब मैं मानता हूँ कि उच्च शिक्षा प्राप्त भारतीयोंके लिए हार लुमे रखनेमें आपको कोई एतदाज नहीं है। यदि ऐसा हा तो लवाल ही या ना का न होकर कैसे का है।

आप मेरे हलको यह कहकर अस्वीकार करते हैं कि यह एक एमी बईमानी है जो राजनयिकोंके उपयुक्त नहीं है और फिर भी संसार-भरके राजनयिकोंने उमीका सहाय किया है। धान्ति-रता सम्पादक (वीथ प्रिजर्वेशन ऐक्ट) की रूसे गवर्नरको अनुमतिपत्र (परमिट) जारी करनेके सम्बन्धमें पूर्ण विवेकाधिकार प्राप्त है। बीरे ब्रिटिस प्रजाजनको यह माँगने-भरसे मिल जाता है। हमारे यूरोपीयोंका उतनी भासानीसे तो नहीं किन्तु बहुत कम कठिनाईसे प्राप्त हो जाता है। केकिन ब्रिटिश भारतीयोंका अल्पविक कठिनाईयाँ ब्रेकनके बार दिक्ता है। गवर्नरने भारतीयोंके सम्बन्धमें उस सम्पादकके अमलकी गरजने यहाँतक किया कि एक पुपक विमाग' ही लोक दिया। इसमें बन्धान तो ना किन्तु बईमानी नहीं की क्योंकि ऐसा लुकेजाम किया गया था। गवर्नरकी विवेकाधिकार प्राप्त ना और वैसे कि उन्होंने स्वर्न कहा उन्होंने प्रमुख समाजके हितके लिए उसका इस प्रकार पक्षपातपूर्व उपयोग किया। यदि विमागमें कभी भ्रष्टाचार न रहा होता और वास्तविक धारणाधिकोंके दार्बिक सम्बन्धमें सदा ही अल्पविक इपक्षतास काम न लिया गया होता तो भारतीय पक्षपातपूर्व प्रसासनकी और भोगुनी न उठाते।

आपने बनरक स्मद्मपर सासन-नेवाके रिक्त स्थानोंपर बीकरोंकी निम्नित करनके सम्बन्धमें विवेकाधिकारके अनुचित उपभोगका आरोप लगाया है परन्तु यह राजनयिकोचित है अथवा नहीं यह परिणामोंसे प्रकट होया।

नेटालमें वैजविक कमीटीके सम्बन्धमें प्रवासी अधिकारी (इयिचसन ऑफिसर) को विवेकाधिकार प्राप्त है। मैं उपपपूर्वक कह सकता हूँ कि यूरोपीयोंकी तो पटीसा ली ही नहीं जाती। भारतीयोंकी पटीसा ली जाती है और यह भी कड़ी। कुछ वर्ष पूर्व नेटालमें

१. का २४-९-२९०८ के इतिहास अधिविबलयमें "समाजल सम्भव" दर्ज-से प्रकटित किया गया था।

२. इतिहास अधिविबलय; यह २९ ३ में लय कर दिया गया; देखिए कन्व ४ पृष्ठ २०

बहुमुल्ता बाउन^१ नामक एक बापरिषद्की परीक्षा ली गई थी क्योंकि वह तुर्की टोपी पहने हुए था परन्तु उसके अन्य गोरे छापी बिल्कुल छोड़ दिये गये थे। बादमें स्वर्गीय श्री एस्करम और श्री बाउन इस बातपर खूब हँसे। श्री बाउनको इस हास्यास्पद स्थितिका एहसास तो हुआ किन्तु उन्होंने यह खमास नहीं किया कि परीक्षामें कुछ बेईमानी है।

बाज यहाँ कर्ममें हो रहा है।

तथ्य यह है कि कानूनी अनमानता एक सम्पूर्ण प्रजातिके लिए अपमानजनक होगी। प्रशासनिक वेदभावका मतलब होगा पूर्णप्रहको तरह देना और भारतीयों द्वारा उसकी स्वीकृतिका बर्ब होना इस प्रकारक पूषप्रहको उदारतापूर्वक और में तो कहता हूँ राजनयिकोचित मायगा देना कहलायेगा। साथ ही इसका बर्ब इस तथ्यको मान सना भी होगा कि यदि हम इस देखमें रहता आहोते हैं तो हमें यूरोपीय प्रजातियोंकी प्रभावताके सामने घिर मुकाना पड़ेगा।

कुछ भी हो यदि आप इस बातमें सहमत हैं कि मूढ़ी मर सुविधित एशियाइयोंको बिना बरमानित किये सुरक्षित रूपसे आने दिया जाये तो निश्चय ही सरकार और प्रमतिवादी रनकी सम्मिलित बुद्धिमें कोई ऐसा हल निकले बिना नहीं रहे सकता जो यूरोपीयों और भारतीयों दोनोंको मान्य हो और जिसमें एक ऐसी स्थिति समाप्त हो जाये जिसे साम्राज्यका कोई भी घुमेच्छु उदासीन मानसे नहीं देख सकता।

बापका बादि

मो० क० गांधी

[बंबईसे]

सा० १८-९-१९८

२६ ईसा मियाँ और उनके उत्तराधिकारी

ब्रिटिश भारतीय संघके अध्यक्ष-पदसे श्री ईसा मियाँके त्यागपत्र के देनेके कारण ब्रिटिश-भारतमें हुई १ तारीखकी सार्वजनिक सभा उल्लेखनीय थी।^१ बड़ ही कठिन अवसरपर श्री ईसा मियाँने संघकी पत्रकार अपने हाथमें ली थी। किसी कमबोर व्यक्तिक अध्यक्ष होनेसे भारतीय समाजपर महान संकट और सन्नता का मकता था। श्री ईसा मियाँ पश्चिमासी और बड़ मित्र हुए। स्थानीय सरकार जिन चीतानी ताकतोंकी प्रतिनिधि है, उनसे लड़नेके लिए उन्होंने पिछले बय अपना बारीबारी समझ बन्द कर दिया। उन्होंने अपनी इसकी भाषा नालदी बार मूल्यकी थी। उनकी पत्नीकी मृत्यु हो गई किन्तु उन्होंने पत्रकार हाथसे नहीं छोड़ी। नारा संतार जानता है कि उन्होंने सभाईकी खातिर अपने ही दमनामीक हाथों गहरी गारीयक हाथ उठाई।^२ पिछले जनवरी माहके समझौते और नय बनीयन

१ पत्र १९ ८ में दीर्घी १४ दैनिके सुबह मक-भारतीय और महारौर विभिन्न; रेडिग कम् ४ ए १९३५८; अर बाबल-भारियक अरररररर लिने वेरररररर अधिधारररररर खातर केरर रररररररर उर रररररर रर रेडिग कम् ५।

२ रेडिग "भारतः सर्वभारिय सभामें" एड ३२।

३ रेडिग कम् ८ एड १४४ २५ और २४९।

अभिव्यक्त (रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) के पक्ष किये जानसे उन्होंने यह दिखा दिया है कि अपने उद्देश्यमें वृद्ध निर्यात और साहससे क्या किया जा सकता है। श्री ईशप मिर्जा केवल ट्रान्स बालके ही नहीं बल्कि सारे पश्चिम आशियाके भारतीयोंके बन्धनबाधके पात्र हैं। उनका भार श्री काठकियाके योग्य कर्मोंपर जा पड़ा है। श्री काठकिया भारतीयोंके लिये हुए सैनिक हैं उन्होंने अपने ध्येयके लिए कारावास भोगा है। उन्होंने पूरे मनसे काम किया है और वे सदा श्री ईशप मिर्जाके योग्य सहयोगी रहे हैं। सभी जानते हैं कि श्री ईशप मिर्जाका स्वाम केनेके लिए वे सबसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं। हम आशा करते हैं कि वे समाजकी अपेक्षाओंको पूरा करेंगे। उनका काम बहुत कठिन है। भारतीय नीका जब भी दुष्टानी समुद्रमें फँसी हुई है। और उन्हें अपनी समस्त सक्ति बर्ब और सामर्थ्यकी तथा जनसाधारणसे युक्त सारे सहयोगकी आवश्यकता होती।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-९-१९८

२७ मेटालका मामला

मेटालके भारतीयोंको बहुत सोच विचार कर भजना चाहिए। प्रार्थनापत्रों और समाजोंसे दिन बहसनेवाले नहीं हैं। प्रार्थनापत्रोंके पीछे बल होना चाहिए।

न्यूसपत्रका परवाने (लाइसेंस)का मामला विचार करने योग्य है। उसके अनुसार नगर पालिकाओंको अमुक प्रकारके ही परवाने देनेका हक है। उनमें से निम्न प्रकारके परवाने सन् १८९७ के कानून [१८]के अन्तर्गत मिल सकते हैं। अब ऐसा कहा जा सकता है कि १८९७ का कानून नगरपालिकाओंकी सत्ता बढ़ा नहीं सकता। वाणी नगरपालिकाओंकी सत्ता कम हो गई। इससे हमें कुछ सुविधाएँ मिल सकती हैं।

इस कारण मेटालकी सरकारने एक नया विधेयक (बिल) तैयार किया है जिसका उद्देश्य न्यूसपत्रके इस मुद्देमें [४] प्राप्त लाभ]को भी शामिल है। इसका कड़ा विरोध करनेकी आवश्यकता है। मेटालकी संघर्ष तो [हमारे] प्रार्थनापत्रको रूकी ठोकरीमें फँस रही। बड़ी सरकार भी हमारी कुछ सुनेगी नहीं। वाणी ऐसे दिन आये हैं कि एक तरह कानूनके क्षेत्रमें छापाइमें विजय मिले तो बूझरी तरह संघर्ष हमारी उस विषयपर पानी फेर दे।

इसका एक ही इलाज है कि हमें अपने बकाए मजाना चाहिए। यह बक है उत्पादक। मेटालके व्यापारियोंकी परवाना भिन्ने बिना व्यापार करना चाहिए।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन, १९- -१९८

१ सन् १८५ के अन्तर्गत ३ के अन्तर्गत।

२. विदेशी बलात्कानून (बीक) अन्तर्गत क्षेत्र)।

३. बने कानून बलात्क।

२८ पत्र अखबारोंको^१

बीहानिसभग
सितम्बर १९ १९०८

सेवामें
सम्पादक
महोदय

मने जेल-निर्देशकों^१ एक पत्र लिखा है जिसकी प्रति प्रकाशनायें आपकी सेवामें भज र्हा हैं। ब्रिटिश भारतीय संघने स्वेच्छया कष्ट सहता लय किया है और ब्रिटिश भारतीयोंको भी वैधो हो ससाह बी है। सेकिन में नहीं जानता कि सापके पत्रमें किस बरतावका निरण दिया हुआ है, वह उननिर्देशियोंकी मनुष्यताको धोभा देता है या नहीं। हम नहीं चाहते कि हमारे साथ विषय कैदियों-जसा व्यवहार किया जाने सेकिन इतना तो चाहते ही हैं कि इस प्रबुद्ध बगमें ब्रिटिश भारतीय कैदियोंसे थोड़ी मागवताका मर्याव हो।

आपका आदि
ध० मु० कासलिया
अभ्यस
ब्रिटिश भारतीय संघ

[बंदजीसे]

रेड सेली मेल २१-९-१९ ८

२९ पत्र जेल-निदेशकोंको

[बीहानिसभग]
सितम्बर १९ १९ ८

जेल-निर्देशक
प्रिटोरिया
महोदय

मेरे पत्रको सीबद अपनी नामक एक ब्रिटिश भारतीयका जिन्होंने हालमें बॉक्सवगमें जेलकी धवा भुगतो है, गुबराजीमें लिखा पत्र मिला है। मैं नीचे इस पत्रके महत्वपूर्ण अंशका स्वतन्त्र अनुवाद दे र्हा हूँ। यह पत्र इसी १७ तारीखको रिग्रबसे लिखा गया है।

मैं अपने और आपके बीच ईश्वरको सादी बनाकर यह लिखता हूँ। १९ अगस्त १९०८ को मजिस्ट्रेट परवाने (काइर्वेल)के बिना व्यापार करमके जुममें मुम १ [धि]

१ यह जेल-निर्देशकों नाम किले से पहले साव लघुलिपि किया गया था, देखिए कालम सीके। रेड सेली मेकने से "वेजडा जेलन एक भारतीयकी विचारक कश्चिति भी हुए कठम" सीकेसे २१-९-१९ ८ के अंशमें प्रकाशित किया था। पत्र-आवक २१-९-१९ ८ के इतिहास अधिनियममें भी दया था।

२. बगरेकर अर्थ मिच्छ।

धुमकेकी जगजा सात दिनकी सख्त कैदकी सजा दी। मैंने कैदकी सजा मंजूर की। मैं जब जेलमें शामिल हुआ तब एक काफिर मेरे पास आया और उसने मुझसे रुपये उतारकर नया ही जामके लिए कहा। मैंने वैसा ही किया। उसके बाद मुझे उठी जगजगमें कुछ दूर नये वीर जगजाया गया और काफिरोंके साथ २५ मिनट तक ठंडे पानीमें सड़ा रखा गया। फिर मुझे बाहर निकाला गया और एक हफ्तरमें ले जाया गया। उसके बाद मुझे पहगनेके लिए कुछ रुपये तो दिये गये किन्तु जपल्ले नहीं दी गई। इसलिये मैंने जेलरसे जपल्लेकी माँग की। पहले तो उसने इनकार कर दिया पर बादमें मुझे फनी हुई जपल्ले दे दी गई। मैंने मोजे माँगे तो उसने मुझे पाकिया दी (जो अनुवाद योग्य नहीं है)। मैंने अपनी माँग फिर बुहराई तो उसने कहा "देखो मैं तुम्हें कोई लगाऊँगा।" तब मैं डर गया और यदि मैं बुझारा बोलता तो उसने मुझे बकर पीटा होता।

अगस्त २ को मुझे पाखानेकी बास्तियाँ से जाने और खाली करनेका काम दिया गया। मैंने जेलरसे इस कामके बारेमें शिकायत की ता मुझे ठोकरें और तमाके भिजे। फिर भी मैंने अपनी शिकायत जारी रखी और कहा कि पत्थर तोड़नेका काम सुधीये करेगा लेकिन मुझे इन बास्तियोंको ले जाने और खाली करनेके कामसे मुक्त कर दिया जाये। मुझे फिर ठोकरें मारी गईं। मैं घाघार हो गया और मुझे ले बास्तियाँ ले जानी पड़ीं।

शनिवार, २२ अगस्तको मुझे फिर करीब जाने बंटे तक ठंडे पानीमें रखा गया। पानी बेहद ठंडा था। मैं काँप रहा था। ईश्वर ही जानता है कितना ठंडा था वह। इसके बाद मुझे कुछ खर ही आया। मेरे सीनेमें दर्द होने लगा। २५ घण्टीको मुझे रिहा कर दिया गया। रिहा करते वक्त जेलरने मुझसे कहा "यदि तुम मरना चाहो तो फिर आ सकते हो। मैंने तुरन्त जवाब दिया "बल्की बात है यदि तुम मार सको तो मार जाऊँगा। इसके बाद मैं ११ बजेकी पाड़ीसे ट्रिम्ब घीट मारा। और तभीसे मैं बीमार हूँ मेरी छातीये खून आता है और मैं डॉक्टरकी सलाहके अनुसार चल रहा हूँ।

मेरे साथ काफिर कैदियोंसे भी ज्यादा बुरा व्यवहार किया गया। सीमाप्यसे मैं एक ही हिन्दुस्तानी था। ईश्वरकी कृपावश है कि मैं बच गया। सोर्सेर मेरा जो भी पैसा निकलता था वह सब डूब गया है लेकिन मैं उसकी परवाह नहीं करता। मैं जाता करता हूँ कि समाज अपनी प्रतिष्ठाकी रक्षा कर सकेगा।

मेरा संघ नहीं जानता कि ऊपर दिया गया विवरण कहींतक सही है लेकिन मेरी मज्ज रायमें देखनेसे तो यही लगता है कि बटनाकी पूरी बीज बोझनीय है और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप बीज करायेंगे ही। इस बीज मैं आपके द्वारा सरकारकी यह सूचित कर देनेकी पृष्टता करता हूँ कि उपर्युक्त विवरणको सच मानकर मेरे संघने यही सलाह दी है कि जिसे सब नैतिक सिद्धान्त मानता है उसकी रक्षाके लिए घायी कठिनाइयोंके बावजूद कष्ट सहता जारी रखा जाये।

मैं इतना और कहूँ कि उक्त पत्रका खेचक पैसा कि उसके गामसे प्रकट है वेगम्बरका सीपा बंधन है और जब मुसलमानोंको यह मालूम होगा कि बौध्दधर्म जेलमें ऐसे

व्यक्तित्वे व्यस्त गन्दा काम कराया गया है तब उनके मनमें जो कड़वाहट और नाराजी पैदा होगी उसपर कुछ कहनेकी जरूरत नहीं।

वापका आजाकारी संक

अ० मु० काठिन्या

अध्यक्ष

ब्रिटिश भारतीय संघ

[संघेजीसे]

रैड वेबी वेब २१-९-१९८

३० पत्र डब्ल्यू० हॉस्केनको

बोहामिसबम

सितम्बर १९ १९८

श्री ब्रिटिशम हॉस्केन संसद-सदस्य

बोहामिसबम

प्रिय महोदय

एधियाई इस समय बिस भारी संघर्षमें रत है उसमें आप साम्राज्य-प्रेमी तथा ईसाई संरक्षण होनेके नाते जो कृपापुत्र विरक्तस्वी से रहे हैं उसक लिए हम नीचे इस्ताभरनाके सोय आपके बहुत आभारी हैं।

आपने जान अपने कार्यालयमें बुलाई गई बैठकमें बिसमें श्री कार्टराइट श्री पोल्क तथा हम सोय उपस्थित थे हमें बताया था कि एधियाई कीमें बिसका बिकास भाग ब्रिटिस प्रजापत है जो उत्पीड़न सह रही है उससे अतरल स्मद्सको संजमूच बुल है। हम इस भावनाकी संराइना करते हैं। आपने यह भी कहा था कि अतरल स्मद्सका समाल है उन्हें हमारी सोयको पूरा करनेमें कोई अपरिहार्य कठिनाई न होगी। इसलिये हम निम्न तिबेदन करते हैं

अतरल स्मद्स तथा प्रगतिवादी विरोधी दसके नताजोंको यह बचन देना चाहिए कि संघके आवासी अधिवेसतमें एधियाई कानून रर कर दिया जायेगा और ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन अधीसिपुधत) के द्वारा की गई प्रार्थनाके अनुसार उष्ण सिखा प्राप्त जायीयोका हमें सुरक्षित कर दिया जायेगा।

बहुतक सूदरे प्रश्नकी बात है अपनी प्रामाणिकता सिद्ध करनेके लिए मान लीजिए वर्षमें केवल ३ ही ऐसे भारतीयोंको प्रवेश दिया गया तो भी हमें पूरा संतोष हो जायेगा। इसलिये यह सबका मुद्दा तो यह है कि वे साम्राज्य पैदाबिक कधीटीके अन्तर्गत प्रवेश पानेमें समर्थ हूँ। कितो प्रकारका कानूनी संरक्षण नहीं होना चाहिए। यदि कानूनपर अमल इस तरह किया जाय कि

१. इंडियन नाटिवी आन्तर मन्त्र संघ (अधीसिपुधत बौद्ध कैम्प बौद्ध बोधो बौद्ध संघ नाटिव) के सूदरे मण्ड। इंडियन नाटिवोंके ब्रिटिश नाटिवोंके सम्बन्धे फन्दी आनुपृति भी। इंडियन संघ ०, १३ १०८ और १०३ और संघ ८ सूद २६।

२. इन्फान्त-संघमें यह राजनीतिक दल।

अन्तमें हम गमनापूर्वक कहना चाहते हैं कि सरकारकी अवज्ञा करनेका हमारा कोई इरादा नहीं है, और हम इस बेधमें धान्ति एवं सम्मानके साथ उपनिवेशके आम कानूनोंका पालन करते हुए रहना चाहते हैं। हमें बहुत ही अनिच्छासे किन्तु कर्तव्यकी पुकारपर एधियाई कानूनका तीव्रतम विरोध करना पड़ा है। हमें इस अन्त इतक कारणांकी जानबीन करना ही आवश्यकता नहीं। किन्तु हम निवेदन करते हैं कि कानूनके प्रति हमारे विरोधका अन्तमें न किया जावे।

हम इतना और कहना चाहते हैं कि उन नेताओंने जो इस समय फील्डमार्शल बेल्फोंट में हैं और जो दक्षिण आफ्रिकाके भारतीय समाजके स्पेक्ट सोश्योंका प्रतिनिधित्व करते हैं तथा हमारे वार गुरम्ल हमें सन्देश भेजा था कि वे अधिकते-अधिक कष्ट उठानके लिए तैयार हैं किन्तु हम उनके कष्टोंकी कोई चिन्ता न करें और संघर्षको ठवतक जारी रखें जबतक हमें यह शोक हासिल न हो जाये जिसके हम अपने-आपको समुचित अधिकारी मानते हैं।

आपकी इच्छानुसार हम इस पत्रको अत्यन्त गोपनीय रखेंगे। आप हमें जो सन्देश भेजेंगे उसे भी ऐसा ही समझेंगे।

आपने जो कृपापूर्वक विमर्शनी की है उसके लिए तथा अनरल स्मट्सन जो आस्वासन आपके द्वारा भेजे हैं उनके लिए आपकी पुनः धन्यवाद।

आपके सच्चे

अ० मु० काश्मिर्गिया

ईसप इस्माइल मियाँ

इमाम अ० का० शाबजीर

सिद्दीक विबन

सी० के० टी० नाम्दू

फू किम्सन

मो० क० गांधी

टाइप की हुई मूल अंग्रेजी प्रतिकाँ फाँगे-नकल (एस एन ४८७९) प।

३१ पत्र उपनिवेद-सचिवको

[बोहानिसर्गर्ग]

सितम्बर २१ १९८

माननीय उपनिवेद-सचिव

मिंटोरिया

महोदय

मे आपकी सेवामें इस पत्रके साथ जेल्-निवेदक (डायरेक्टर ऑफ प्रिन्सिपल)को भेजे गये अपने पत्र^१ और उनके उत्तरकी तकरीबें भेज रखा हूँ। यदि आप कृपया निवेदकको प्रेषित पत्रमें की गई प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे तो मेरा संघ अनुगृहीत होगा।

आपका आदि

ब० मु० काष्ठसिन्हा

कम्पन्न

द्विदिस भारतीय संघ

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ३-१०-१९८

३२ बोहानिसर्गर्गकी चिटठी^२

बेडके कष्ट

यह साबित होता जा रहा है कि कष्टोंका प्यासा हमें पुराका-पुरा पीना पड़ेगा। भी सैयब अभी बॉक्सबर्से छाल बिलकी सजा भोगकर जाये हैं। वहाँ उन्हें असीम कष्ट था। उनको सख्त कैदकी सजा दी गई थी। उनसे ट्यूटीकी शक्तियाँ उठवाई गईं, उन्हें बहुत बेर तक ठंडे पानीमें रखा गया ठोकरें मारी गईं। यह कष्ट कैसे सहा जा सकता है? भी काष्ठसिन्हाने उनके बारेमें जेल्-निवेदकको पत्र^१ लिखा है। समय आनेपर सुनवाई होगी। किन्तु सुनवाई ही कबका न हो इस शक्तियाँ भी उठानेमें और ठोकरें भी खायेंगे इसीमें हम अपना नीरब मानेंगे। अब हमें शक्तियाँ उठाते हुए प्रसन्नता होगी वही हमारे बन्धन टूटने वही माना जायेगा कि हमने सत्याग्रहको समझ लिया है। सत्याग्रहका बर्ष है। बिसे हम सत्य समझते हैं उसे मरनपर्यन्त न छोड़ना सत्यके लिए चाहे बिलगी तकलीफें उठानी पड़े सब उठाना। कष्ट किराकी नहीं पहुँचाना चाहिए, क्योंकि कष्ट पहुँचानेसे सत्यका उन्मूलन होता है। इतना

१ देखिए "दस जेल्-निवेदकको" पृष्ठ ४९-५० ।

२. अभीसेने का करीता १ सितम्बरकी सिद्धय पृष्ठ किया और २३ सितम्बरको उपपत्त किया ।

३ देखिए "दस जेल्-निवेदकको" पृष्ठ ४९-५० ।

एक सङ्घनेकी सक्ति वा जाना ही सङ्घी शीत है। यह मेर जान सेनेके बाद सरकार चाहे जितनी बाधाएँ उपस्थित करे हम उनका प्रतिकार कर सकते हैं। इसलिये, मैं आशा करता हूँ कि भारतीय धी सैयब बन्धीके कष्टोंसे बचरानेके बजाम आनस्यकता पङ्घनेपर बेल जानके लिये असुर रहेंगे।

नेटासके केंद्र

बद नेटासके केंद्रियोंको सङ्घोंपर परभर टोङ्घनेके लिये बाहर नहीं के जाया जाता। इससे मुझे तो निराशा हुई है। यदि उन्हें परभर टोङ्घनेका कष्ट [जागे भी] उठाना पड़ता तो मुक्ति बन्ध मिळती। वे सम्बेध भेबते रहते हैं कि उनकी जिस्ता न की जाये। उन्हें चाहे जितनी कैय दी जाये वे भोगनेके लिये तैयार हैं और उससे प्रथम होंगे। इमें उनका समास करके उठानधीमें कोई समसोता नहीं करना चाहिए। उनके लिये यही कहना उचित है किन्तु हमारे लिये उचित यह है कि हम उन्हें बकरूतसे ब्यादा एक मिनट भी बेलमें न रहने दें और उन्हें बन्धी मुक्त करानेके लिये, जैसे बने जैसे बुरसे भोग बभिसन्ध बेल जायें।

अकतूरमें सङ्घा बपसर

बो लोग अपने बहादुर नेटासोंकी मुक्ति चाहते हैं उनका कसब्य सीमा-साधा है। जनसू-बर्में बहुतसे भाष्टीयोंके पानीकी परीसा हो जायेगी। सितम्बरके अन्ततक बनेक फेरीबाळोंके परबानों (काइसेंस)की जशिस समाप्त होगी। फिर क क्या करेंगे? उनका कर्तव्य है कि यदि बँगुठके निसान दिये बिना मानने भरसे ही परबाने भिस जायें तो भी वे उबतक परबाने न बँ बबतक हमारे मायें पुरे नहीं की जाती और बिना परबानोंके बेबङ्क फेरी लगायें। यदि ऐसा किमा जायेना तो यह सरकारकी सङ्घ न होगी। निदान उसे फेरीबाळोंको बेल बेबना ही पड़पा। यदि फेरीबाळोंने इतनी हिम्मत दिबाई तो मुक्ति शीघ्र ही मिलेगी किन्तु मैं तो शबेके साय कहता हूँ कि अकतूरके मध्यतक हम निरिचन्त होकर बीठनेकी स्थितिमें पहुँच जायेंगे और जो लोग हमारे लिये बेल गये हैं उन्हें रिहा करा सकेंगे।

फेरीबाळोंका संघर्ष

यह संघर्ष बास्तबमें ब्यापारियोंके लिये है और ब्यापारियोंमें भी फेरीबाळोंके लिये। फेरीबाळोंकी माफत भीत भी बन्ध हो सकती है। हम इस बेसमें इस तरङ्कका संघर्ष करके यह सिद्ध कर दे सकते हैं कि फेरी लगानेमें अग्रतिष्ठाकी कोई बात नहीं है उसमें मरीधी भले ही हो। किन्तु यह सौबकर कि परीबीमें पौरव है उन्हें अपना सिर ऊँचा रखना चाहिए, सिधा भी प्राप्त करनी चाहिए, अपना रहन-सहन ऊँचा रखना चाहिए, और आपसमें ककह नहीं करना चाहिए। मैं चाहता हूँ वे सङ्घे बचमें घिसित बनें। यह उनके हाबमें है। बधिब आक्रिकामें उन्हें अभी बहुत-बुद्ध करना प्रेय है। मैं उन्हें तथा माष्टीय समाजको समझाना चाहता हूँ कि इस संघर्षसे वे राजबरानोंकी-सी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं।

बरसेङ्घाईकी आवकपकता

फेरीबाळोंने जनबरीमें बीरता दिबाई थी। इस समय भी उन्हेंनी बीरता दिबाई है। फिर भी हम अभी कामर हैं। ह्यपर नबद रखनेकी जरूरत है। इसमें अचरजकी कोई बात नहीं है। अत हरएक गाँवमें बरनेबार नियुक्त किये जाने चाहिए। उन्हें परबाना बपसर

(आइसेसिग बॉक्स) की चौकरी करनी है और यह देखना है कि कोई भी व्यक्ति परवाना (आइसेस) देने न पाये। इसे सम्भव करनेके विचारसे हर जगह कौमी नेताओंको चौकरीके काममें बुट जाना चाहिए। यदि इतना हा जाये तो शायद ही कोई परवाना देने जायेगा।

असहयोगीकरण कर्तव्य

असहयोगीकरणको यह स्वरूप रखना चाहिए कि उन्हें न किसीपर अवरुद्धी करनी है और न किसीको बमकी देनी है। उन्हें अपनी छाठियाँ बरमें ही छोड़कर जाना है। हमारी शक्ति तो हमारी जिह्वामें है। जिह्वाका उपयोग भी उचित हो। गामी-मत्तीय नहीं करना है। समझा-बझाकर मजदूतके साथ प्रत्येक भारतीयको उसका कर्तव्य बताया जाये। अस्वयंभोगीकरण नामका पाद रखें। हमें अपना स्वयंभार ऐसा रखना चाहिए कि कोई हमपर अवरुद्धी करनेका मूठा आरोप भी न लगा सके।

बिनाके पास पूरे बर्दके परवाने हैं वे अपने परवानोंका उपयोग न करे, बल्कि उन्हें संभको छीपें।

श्री जेम्सकी जोखिम नहीं उठा सकत उगके लिए तो अधिक अच्छा यही है कि वे कुछ दिन फेरी न लगायें। किन्तु परवाना देने जाना तो बुरी बात है।

फिर मराठी

श्री जोकसिगम बिना परवाना व्यापार करनेके जुर्ममें बिरफ्तार कर लिये गये थे। वे शनिवारको साठ दिनकी कैदकी सजा भोगने बेल गये। उन्होंने जुर्मना देनेसे इनकार कर दिया था। श्री गौडके उनकी पैरवी करने गये थे।

श्री ईशपजी कामगियापर मया पंजीयन-प्रमाणपत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) न देनेका आरोप था। उन्हें [उपनिवेश छोड़कर बस जानेके लिए] साठ दिनका नोटिस मिला। उनका मुकदमा शनिवारको पेच हुआ। उसमें श्री गौडके भी मौजूब थे।

कैरियोकी सुराफ

कैरियोकी सुराफके बारेमें जिज्ञासकी अभी बस ही रही है। अभी पूरा [मकईके बन्धने] की शिकायत भी बुर नहीं हो पाई है। इसी बीच जेम्स-मिसेसक (डापरेक्टर बॉक्स प्रिन्सिपल) लिखता है कि अजबतौ महीनेमें भारतीय कैरियोको जो भी दिया जाता था वह एक साठ रियायत थी। बारामें भीकी इजाजत नहीं है। बोहानिसबर्न [जेम्स] में सब भी भी दिया जाता है किन्तु फोल्डरस्टमें नहीं दिया जाता। इसीलिए यह सवाल उठा। श्री काष्ठकियात इस विषयमें एक कड़ा पत्र लिखा है और इन्तेजको तार भी भेजे गये हैं। देखें क्या होता है। सुराफ अच्छी मिलती है अजबतौ नहीं इससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। हममें ऐसा संभन्ध होना चाहिए कि यदि सरकार यह जुम्भ भी डालेगी तो हम इस भी बरबास्त करेंगे।

ईसा हाजी मुमार

स्वीडनके पुराने व्यापारी श्री ईसा हाजी मुमार बिलायत भ्रमण करके वापस जा बने हैं। मुझे आता है कि वे लक्ष्यमें पूरा आय लेकर मरर पहुँचानगे।

१. देखिए "बोहानिसबर्न की" पृष्ठ १११४।

२. देखिए "एन. जेम्स-मिसेसकी" पृष्ठ ५१।

नया विधेयक

नये विधेयकपर^१ सम्प्रादके इस्ताखर हो गये हैं। यह कानून कामयाब है। परन्तु, जबतक वो सबसोंका^२ फैसला नहीं हो जाता तबतक बिध प्रकार हमने काम कानूनके अपमान नहीं सहे, उसी प्रकार हम नये कानूनका काम भी नहीं उठायेगे। [इसके अतिरिक्त] जिन्हें हमने बेल सेवा है, वे जबतक छूट नहीं जाते तबतक हमें नये कानूनका काम बचस्य ही नहीं उठाना है।

झाही मेहमान

बोझानिसभके श्री मगत जीवन श्री मुस्ताशन श्री पैटी पराग—ये तीन भारतीय साठ दिनोंकी कैदकी सजा भोगनेके लिए आज बेल गये। वे परवानों (बाइसेंस) के बिना व्यापार कर रहे थे। इन सबको पैरवी श्री जॉर्ज यॉङ्कने की। रुडीपूरसे समितिने छार दिया है कि श्री झाहा रबाको भी बिना परवाना छोटी सगातके शुभंमें साठ दिनकी सजा दी गई है।

दुखकी बात

मुझे दुखके साथ सूचित करना पड़ रहा है कि सरकारने श्री मूकजीमाई पठेज तथा श्री हरिकाल गांधीपर से मुकदमा^३ उठा लिया है। इन दोनों ठरुनोंका दुर्भाग्य है कि ये नेताकके बहादुर अहिंसोंकी सेवामें उपस्थित नहीं हो सके।

विज्ञेय दुखकी बात

मुझे सभाचार मित्रा है कि श्री हसन मियाँन बर्नसे जाते समय फोक्सरस्टमें अपने बँपूठेकी निघानी लपवाई।

आइस मुहम्मद गुल

[केपकी] ब्रिटिश भारतीय जीयके अग्र्यस भी आदर मुहम्मद गुल यहाँ बाये हैं। उन्होंने अपना प्रमाणपत्र बखानेके लिए सबको धीप दिया है। फोक्सरस्ट पहुँचनेपर पुलिसने जगते बँपूठेका निघान नहीं मीपा और यदि मीपा भी होता तो वे बैठे नहीं।

वैदिक

श्री वैदिक अहिंसमानामें एक महीनेकी सख्त कैदकी सजा भोगनेके बाद १९ तारीखको छूट गये। उन्हें बचाइके छार मिले हैं। पाठकोंको याद होया कि श्री वैदिकके साझेदारको भी एक महीनेकी सजा हुई थी इसलिए उन्होंने बूकान [का स्वाधित्व] एक पोरेके नाम करके उसे बलाया किन्तु बन्ध नहीं किया।

१. एडिशन^१ पंजील एंडोफन विवेक (अहिंसानिज रसिदुखन अनेकमेर सिध)।

२. (क) एडिशन^१ पंजील कानूनको, जो १९००के कानून २के भागसे विधित है एर व करवा और (ख) उनी प्रवाडिनेर क्यू फिट्ठी एक सामान्य कानूके कलरड "एक विद्या-भक्त अहिंसानों" के निरुधर श्रेष्ठ और अनाउकी बसला करवा।

३. वैदिक "से" एर जो एर ५२५ और कन्व ८ एर ४ १-२ और ४९९-३ थी।

४. इल सिन्धि कुन।

कानूनके कठोरि पीड़ित एक नरीन भारतीय नामसे एक भारतीय लिखता है

अब यदि किसी तरह इस कानूनसम्बन्धी समस्याका हल निकल जाये तो हम धेरे-धीरे भारत पहुँच जायें अथवा मृतप्राय ही हैं। वर्तमान स्थितिमें अधिक कष्ट सम्भवबर्षियोंको है। बड़े-बड़े व्यापारियोंको जो पूर्वीबाध है उधार मिलना अभी बन्द नहीं हुआ है किन्तु [सम्भवबर्षिकोंके व्यापारियोंको] जो गीरे पहले दो-बार सौका माफ़ मँगा देते थे वे अब पाँच शिर्षिका माफ़ देनेसे भी इनकार कर देते हैं। वे कहते हैं कि अबतक कानूनके सम्बन्धमें समझौता नहीं हो जाता तबतक वे हमारे साथ व्यापार बन्द रखेंगे। ऐसी हालतमें यदि हम गरीबोंके हितके खयालसे किसी प्रकारका समझौता हो जाये तो हमें भीवित्त रखनेका अवसर मिले। कृपया कुछ ऐसा उपाय करें जिससे हमें और अधिक कष्ट सहन न करने पड़ें।

इस पत्र प्रेषकसे सहानुभूति हुए बिना नहीं रह सकती। फिर भी हमें कहना चाहिए कि ऐसा लिखना मूक है। यह मानना बिल्कुल बल्लत है कि पूर्वीबाधकी कोई हानि नहीं है। बर्षिकोंकी बड़ी हानि हुई है और छोटीकी छोटी। इसी प्रकार [इस संदर्भके] हर भारतीय सैनिकको हानि उठानी पड़ी है। यदि गीरे माफ़ नहीं देते तो [जो उनके पास न जायें] उनके कोई सुबाँधके पर तो लगे नहीं हैं। हमें गीरोंके द्वारा बड़े किये गये अर्थिक मुकाबलेके लिए तैयार रहना ही चाहिए। इसके लिए पैसा निकालना उठानेमें कुछ नहीं मानना चाहिए। किन्तु इतना कहनेके बाद मैं स्वीकार करता हूँ कि ऊपरके पत्रमें जो विचार व्यक्त किया गया है वह बहुत-से भारतीयोंका विचार है। संभव इसी बातको ध्यानमें रखकर बताया जा रहा है। समाज चिंतना बोम उठा सकता है नेता उधर उठता ही बोम डालनेकी तयारी करके हैं। ऐसा सोचकर किसी भी भारतीयको हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

सूचार्थार्थ

सूचार्थार्थके फेरीबाँधके विषयमें समाचारपत्रोंमें यह खबर प्रकाशित हुई है कि वे फेरी समाजके लिए नहीं निकलते। इसपर भी सुरसेवकी देसाई सूचित करते हैं कि यह खबर बिल्कुल गूठी है। वहकि भारतीय फेरीबाँधे बिना परवाना (लाइसेंस) अपना व्यापार कर रहे हैं।

नये कानूनके विषयमें

आजसे नया कानून लागू हो गया है। अब उसके अनुसार पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) करानेके बारेमें मोटिस निकाला जायेगा। कहा जाता है कि मोटिसमें ३ नवम्बर तक की मीयार दी जायेगी। तबतक ट्रान्जिक्शनमें रहनेवाले भारतीयोंको अनुमतिपत्र (परमिट) से लेने चाहिए। इस विषयमें [ध्यान देने योग्य बात यह है कि] जो लोग अभी उपनिवेशसे बाहर हैं और उनके पास पीमा अनुमतिपत्र नहीं है उन्हें एक बर्षके भीतर प्रार्थनापत्र देना है। परन्तु, स्मरनीय है कि इन लोगों तरहके लोगोंको किन्हाल कुछ नहीं करना है। उठावलीकी परकत नहीं है। अबतक समझौता नहीं हो जाता तबतक इस कानूनका साम देना बिल्कुल मनासिद्ध नहीं है। इसके लिए अभीसे अनुमतिपत्र कार्यालयपर करना देनेकी जरूरत होगी। यदि ऐसा किया जाये और परवाने न किये जायें तो समाधान तुरन्त हो जायेगा।

उत्तर

द्वानुवादक सीडर में प्रकाशित हुआ है कि यदि प्रतिबन्ध केवल ६ सिविल भारतीय का रहे तो भारतीय गुप्त हो जायेंगे।' इसपर बहुत पूछताछ की जा रही है। कोई कहता है कि संघर्ष [प्रतिबन्ध] केवल ६ भारतीयोंके प्रवेशके लिए किया जा रहा है। कोई कहता है कि यह तो विस्फुट नहीं बात है। किन्तु यह यथ्यक्तहमी है। हमारी मान्य यह है कि कमसे-कम कानूनमें तो सभी सिविल कोर्षोंको एक-सा हक हासिल होना चाहिए। हम कह चुके हैं कि [सब प्रशासिकोंके लिए] कानून एक ही हो सके ही [अधिकारियोंकी इच्छानुसार] परीक्षा इतनी कठिन की जाये कि एक भी भारतीय न जा सके। कहनेका अर्थ यह हुआ कि कानूनके मुठाविक सिविलोंकी जो परीक्षा की जायेगी उसमें यदि वे उत्तीर्ण हो जायेंगे तो प्रविष्ट हो सकेंगे। फिर गोरोंकी तरह परीक्षा से अथवा एकदम से ही नहीं और भारतीयोंकी कठिन परीक्षा से — उसका विरोध नहीं किया जा सकता। यदि ऐसा हो तो हमें कोई आपत्ति नहीं होगी। तब सवाल उठता है कि इसमें फायदा क्या है? इसके उत्तरमें हम कह सकते हैं कि यदि एक सीमित संख्यामें भारतीयोंके प्रवेशकी अनुमति हो तो भी कानूनमें प्रतिबन्धका कर्कश हमारे लिए सोमनीय नहीं है। किन्तु यदि हमने इसी इतने सोचा तब तो सम्भव है एक भी भारतीय न जा पाये इसके बरके उसका अना तो निश्चित हो ही जाता है। हमारा संघर्ष कानूनके अनुसार दरवाजा बन्द किया जानके विरुद्ध है। यदि दरवाजा कानूनके अनुसार बन्द हो गया तब तो उसे खोलना मुश्किल होगा। किन्तु यदि अधिकारी [एशियाइयोंको] मात्र परीक्षामें अनुत्तीर्ण करके दरवाजा बन्द रखें तो उसका उपाय किया जा सकता है। नेटाज और केपमें कानून ऐसा ही है। वहाँ गोरोंकी परीक्षा नहीं की जाती किन्तु भारतीयोंकी परीक्षा प्रतिबन्ध कठिन होती जाती है। आस्ट्रेलियामें ऐसा कानून अब भी है फिर भी वहाँ सैकड़ों गोरों प्रविष्ट होते हैं। किन्तु भारतीयोंकी परीक्षा इतनी कठिन की जाती है कि वहाँ अबतक एक भी भारतीय प्रवेश नहीं पा सका है। किन्तु जब आस्ट्रेलियाके लोगोंका भ्रम मिट जायेगा जबदा अधिकारी बन्द होंगे तब वे भारतीयोंको उचित परीक्षा लेकर प्रविष्ट होने देंगे। इसलिए जो ६ भारतीयोंके प्रवेशकी बात कही गई है वह उपनिवेशके लोगोंको संतोष देने और भारतीय समाजके स्वका बोधित्व बतानेके लिए कही गई है। कानून एक पर उसका प्रकाशन अलग-अलग — यह हुआ उपर्युक्त मानका अर्थ। इस प्रकार इस माँगमें और जो माँग सार्वजनिक समामें की गई थी तथा बिसे की स्पेसने अस्ट्रियेडम [अन्तिम बैठानगी] कहा जा उसमें कोई अन्तर नहीं है।

१. लिम्बर २२ के इन्तुवादक पीकडी इन्सुदेडमें प्रकाशित हुआ था कि " भी वहींसे क्या है, यदि उत्तर प्रतिबन्ध ६ सिविल भारतीयोंकी — अधिकारी नहीं — प्रवेश करनेकी अनुमति दे देगी ही, क्योंकि कानूनके सब विरोधा सम्भव है, तब वे और कदाय उपाय लानेके लिए बलवत्क ही रहेंगे। यदि प्रतिबन्ध पूरे अन्तर्गत अधिकारी की जायें तो भी जब कदाय कानूनके अनुसरण करार ही जायेगा तब ही लगे है। अधिकारी कोर्षोंके प्रवेशमें दरबन्दि लत सिविलकी छात्रावक प्राप्ति लनी उत्तर मानने है।" देखिए "सः टॉलेनकी" पृष्ठ ५९-६२ भी।

२. देखिए कन्व ८ पृष्ठ ११९-११९।

चीनियोंकी बीरसे मद्दह

श्री विभवने चीनी संघकी बीरसे कम्पनकी [र जा हि मा] समितिका^१ मेबरनेके किए ५ पौंड दिये हैं। पाठकोंको याद होया कि पहले भी चीनी-संघकी बीरसे इतनी ही रकम श्री रिचको भेट की गई थी। श्री बस्तातकी बीरसे को मामला^२ सर्वोच्च न्यायालयमें बजाया गया था उसके सर्जमें श्री चीनी-संघने सहायता दी थी।

कांग्रेसकी बीरसे मद्दह

[भारतीय राष्ट्रीय] कांग्रेसका धार जाया है कि उसने सन् १९०१ [र जा हि मा] समितिको धारसे १ पौंड भेजे हैं। यह पहले ही हो जाना था। अब भी ठीक समयपर ही हुआ है।

बुधवार [सितम्बर २३ १९०८]

फौजदारके बीड़ी

हरिदास यात्री फौजदारके जेबसे छूटकर जा पये हैं। वे [जेबमें] नेटालवाधियोंके साथ तीन रात रहे। वे खबर लाये हैं कि कैदियोंका स्वास्थ्य अच्छा है। उन्हें जो भी काम सौंपा जाता है उसे वे बड़ी श्रुष्टीसे करते हैं। अब वे [छक्कपर पत्थर तोड़नेके लिए] बाहर नहीं भेजे जाते बल्कि उन्हें जेबके नीतर ही बपीचा आदि साध करनेका काम दिया जाता है। वे बिक्रम जैसी पर-मु-बर्जमन स्तम्भ एक मयो हैं^३ यह भीच भाते हुए मस्त रहते हैं।

नये कानूनके अन्तर्गत विनियम

नये कानूनके अन्तर्गत विनियम (रेगुलेशन्स) प्रकाशित किये जा चुके हैं। इनका विवेचन बनके हफ्ते किया जायेगा। फिजहाल ठी इतना ही कहता हूँ कि पहले विनियमोंके मुकाबले ये विनियम बहुत अच्छे हैं। फिर भी उनमें कुछ खामियाँ हैं। इनका निराकरण जब समाप्त होता तभी किया जा सकेगा। किन्तु मैं आशा करता हूँ कि प्रत्येक भारतीय बीरसे रखेगा। किसीकी भी उदावकीमें खर्ची देनेकी जरूरत नहीं है।

समितीका काम

समाधियोंका काम अत्यन्त अच्छा है। इतना ही नहीं कि वे जेब भाते रहते हैं, बल्कि वे पैसे इकट्ठ करनेमें भी नहीं चूकते। उन्होंने संघको ८९ पौंड १ सिक्किका भेक दिया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जो जेब भाते हैं वे उदारतासे पैसे भी देते हैं। जो एक विद्यामें सक्ति जभाते हैं वे सभी विद्याओंमें सक्ति जभा सकते हैं।

ईसप इत्याइड बेकिंग

श्री बेकिंग त्रिविधयातासे लिखते हैं कि जेबमें पहले हफ्ते उन्हें मौजल बनानेका काय दिया गया दूसरे हफ्ते फुटकर काम दिया गया और अन्तिम हफ्तेमें बाहर छक्कपर काममें

१ दक्षिण आशिया त्रिविध भारतीय समिति (सम्बन्ध आशिया त्रिविध इन्डियन कमिटी)।

२ रोचकना संघीय (पॉलीटी रिलिग्युल) के अन्तर्गत बीरसेके सम्बन्धमें।

३ बृहत् गुजराती श्रम कण्ठ है।

बिक्रम जैसी पर-मु-बर्जमन स्तम्भ का मतलब "।

वही "स्तम्भ" काय लच्छा: भारतीय अन्तर्गतके लिए प्रयुक्त हुआ है।

४ वे सितम्बर १९०८ को जेब दिये गये थे। बेकिंग एच ६५।

कगया गया। मोहन दूसरी जगहों जैसा ही था। तकसीक उन्हें सिर्फ इस बातसे हुई कि साना साते समय टोपी उतरना भी जाती थी। वे लिखते हैं कि मने स्वदेशके लिए कष्ट उठाकर मात्र अपना कर्तव्य ही निभाया है यदि फिर कष्ट उठाना पड़ेगा तो उसके लिए भी तयार हूँ।

समझीता ?

समझीताकी बात भी श्री हॉस्केनेने बसाई थी। उनके साथ श्री स्मट्सकी बातचीत हुई। इसके बाद उन्होंने काछकिया भी इमाम अब्दुल कादिर बाबजीर, श्री किवन भी किम्सन भी नाथू और श्री गोपीकी [बिबाचाय] बुलाया। उन्होंने श्री कार्टराइट तथा श्री बबिड पोचरकी भी बुलाया। अन्तमें इन सबने श्री हॉस्केनेके नाम एक पत्र लिखकर सामाजिक चर्चामें की गई मूल माँगोंको फिर बहुराया। श्री हॉस्केनेने यह पत्र श्री स्मट्सको भेज दिया। मात्र श्री स्मट्सका बकाब आया है। उसमें वे लिखते हैं कि माँगें तो पहले-जैसी ही हैं और इसलिये स्वीकृत नहीं की जा सकतीं। इसमें विराय होनको कोई बात नहीं है। जनरल स्मट्सको ठीक-बजाकर यह देय केनका बहिष्कार है कि हम मने कानूनको मानते हैं या नहीं। समझीता समी होना जब हम इस परीक्षामें उतीर्ण होंगे और भगवा पहनकर छडीर बननेके लिए तैयार हो जायेंगे।

विधायकके समाचारपत्र

विधायकके समाचारपत्र हमें सलाह दिया करते हैं कि अब हमें चुप बैठ जाना चाहिए, बारात नहीं करनी चाहिए और कानूनको स्वीकार कर लेना चाहिए। यह चीज तो बड़ी समझदारोकी है, किन्तु मान्य करने योग्य नहीं है। इसको मान्य करनेकी आवश्यकता भी नहीं है। इस तरहकी बातें पहले भी कही जा चुकी हैं। हमारा कर्तव्य एक ही है हवाती माँग उचित है इसलिये अबतक वह स्वीकार नहीं की जाती तबतक हमें जूझते रहना है, मने कानूनका काम नहीं उठाना है और जेलोंको भर देना है।

पत्नी मुहम्मद

श्री बकी मुहम्मद रिटोरियाकी जेलमें पाँच दिन गुजारकर बूम-बामते बाहर आ गये हैं। उन्होंने बताया है कि जेलमें पूरा [मकईका दलिया] दिया गया किन्तु उसे खर्ची मिला हुआ होनेके बगैरे किमीन नहीं पाया। घारे कदियोंको एक बठारमें खड़ा कर दिया गया। श्री इमामाइन जूना उसमें शामिल न हुए इसलिये उन्हें ठोकरें मारी गईं। जब दरबारेके सामने यह विवादान करनेका बकाब आया तब मुख्य बार्डरने विधायक नहीं करने दी। अखलाफमें जमीन खेत कचरेको बालियाँ उगाने और कपड़ा बानका काम कराया जाता था। ऐसे कष्ट होनेपर भी प्रत्येक भारतीयको जेल जानके लिए तयार रहना है। रिटोरियाके भारतीय कैदियोंके हेतुके लिए एक माफर दुग उठाये इसके लिए मैं उन्हें बसाई देना हूँ।

[दुबराचीठ]

इंडियन ओपिनियन २९-९-१९८

[बोहानिसर्ग]
सितम्बर २४ १९८८

सेल-निवेशक

प्रिटोरिया

महोदय

मेरे इसी २१ तारीखके पत्रके उत्तरमें आपका २३ तारीखका पत्र संख्या १ ७७/८/८३५, मिला। उसकी प्राप्ति साबर स्वीकार करता हूँ। शिकायतके सम्बन्धमें आपने जो पत्र भी है उसके लिए ब्यवहार स्वीकार करें।

अब मैं शिकायत करनेवाले व्यक्तिका हस्तक्षेप बयान^१ पत्रके साथ भेज रहा हूँ। जैसा कि आप देखेंगे वह अपने बयानपर कायम है। उसके लिए यथासंभव पैसा करना निस्सन्देह बरामत कठिन है किन्तु वह सबसे निम्ना किया गया है उससे निमोनियासे पीड़ित है। इतने प्रकट होता है कि उसको यह बीमारी बरस ही जेलमें हुई होगी। मेरा और कई ब्रिटिश भारतीयोंका भी जो अभी हाल ही में मुगलकर आये हैं यह अनुभव है कि गवर्नरसे शिकायत करना आसान बात नहीं है क्योंकि एक तो कड़ी बहुत समयीत रहते हैं और दूसरे, उनकी अंग्रेजी या तो आती नहीं या काफी नहीं आती। शिकायत करनेवाले व्यक्तिका कहना है कि यदि कोई सरकारी या सार्वजनिक पत्र भी आये तो वह उसमें पैसा होने और यथाही देनेके लिए विस्तृत तैयार है।

आपका आभाकारी सेवक

अ० मु बाउसिया

सम्बल

ब्रिटिश भारतीय संघ

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ३-१-१९८८

१ सेल-निवेशक (बयानपत्र पत्रिका) के नाम लिखा वह पत्र
अंकमें "दुःखसहकारी : अंग्रेजी भाषण" की ओरसे आया है
२. सेल पत्रिका सम्बन्धित, जो पुरानी नहीं दिना या रहा है; देखिए पत्र

जेल्-निदेशक

प्रिटोरिया

महोरम

द्रास्वशास्त्रको जेलोंमें भारतीय कैदियोंके लिए ओ मोजन-शास्त्रिका छापा है, उससे सम्बन्धित प्रश्नके बारेमें आपका इसी २५ तारीखका पत्र मिला।

यह बात मुझे प्रथम बार मालूम हुई कि छारे द्रास्वशास्त्रमें बजाय एक मोजन-शास्त्रिका होनेके बजाय कि मेरे संघका अनुमान था बनेक मोजन-शास्त्रिकार्यें छापी हैं ओ विभिन्न जेलोंमें एक-दूसरेसे भिन्न हैं। मेरे संघकी राय है कि मेरे संघके इस सिद्धांतसे उन लोगोंपर बड़े कष्ट आते हैं जिनके विरुद्ध मेरे संघ किया जाता है और यदि आप मेरे संघको यह बतायेंगे तो प्रसन्नता होगी कि क्या छारे द्रास्वशास्त्रमें भारतीय कैदियोंके लिए एक नियत मोजन-शास्त्रिका विरिषत करनेका सरकारका इरादा है। और यह प्रश्न खुदाककी स्वस्वताके प्रश्नसे बिसका उदाहरण बोहानिसर्वर्गमें मिलता है और बिसकी ओर मेरा संघ बार-बार ध्यान आकर्षित कर चुका है, बिसकुल अलग है।

इस कथनके विरुद्ध कि बीका दिया जाता एक कृपाका कार्य है और खुदाक-सम्बन्धी निषमका विषय नहीं मैं फिर आपति प्रकट करता हूँ क्योंकि मैं इस तथ्यको जानता हूँ कि यह जनसरोमें बोहानिसर्वर्गकी जेलमें लगी हुई मोजन-शास्त्रिकामें भी सम्मिलित था। भारतीय कैदियोंके सम्बन्धमें जहाँ नियमोंमें चर्ची देनेकी व्यवस्था है वही चर्ची जानेमें भारतीयोंकी शानिक आपतिको देखते हुए, क्या अधिकारियोंका इरादा चर्ची बजाय अन्तर्गत भी देनेका है, यह सूचित करें तो मेरे संघकी प्रसन्नता होगी।

आपके बिस पत्रका उत्तर दे रहा हूँ उससे हम छानेहोकी पुष्टि होती है कि सरकार भारतीयोंको एक ऐसा मोजन बिसके वे जीवनमें बिसकुल सम्मस्त नहीं रहे स्वीकार करनेके लिए बाध्य करके उन्हें भूखों मारकर उनसे आत्मसमर्पण कराना चाहती है। मेरे संघको यह देखकर दुःख होता है।

आपका आज्ञाकारी शेरक

ब० मु० काछरिया

अध्यक्ष

ब्रिटिश भारतीय संघ

[अंग्रेजीसे]

बेल्ज-निवेशक

मिंटोरिया

महोदय

मेरे इसी २१ तारीखके पत्रके उत्तरमें आपका २३ तारीखका पत्र संख्या १ ७७/८/८३५, मिला। उत्तरी प्राप्ति साबर स्वीकार करता हूँ। शिकायतके सम्बन्धमें आपने जो बात की है उसके लिए ब्यवहार स्वीकार करें।

अब मैं शिकायत करनेवाले व्यक्तिका हलफिया बयान^१ पत्रके साथ भेज रहा हूँ। बंसा कि आप देखेंगे वह अपने बयानपर कायम है। उसके लिए गवाह पेश करना निश्चयसे व्यर्थ कठिन है किन्तु वह सबसे रिहा किया गया है तबसे निमोनियासे पीड़ित है। इससे प्रकट होता है कि उसको यह बीमारी अवश्य ही बेकमें हुई होगी। मेरा और कई चिट्ठि भारतीयोंका भी जो अभी हाल ही और मुनतकर आये है वह अनुभव है कि पक्करसे शिकायत करना बाधान बात नहीं है क्योंकि एक ठो कंबी बहुत समयीत रहते हैं और बूझते, उनको कंबेबी या ठो जाती नहीं या काफ़ी नहीं जाती। शिकायत करनेवाले व्यक्तिका कहना है कि यदि कोई सरकारी या सार्वजनिक बात की जाये तो वह उसमें पेश होने और गवाही देनेके लिए विस्तृत तैयार है।

आपका आशाकारी शुक्र

स० मु० कालकिया

बय्यस

ब्रिटिश भारतीय संघ

[अंशबोधे]

इंडियन ओपिनियन ३-१-१९८

१. बेल्ज-निवेशक (डॉक्टर डॉ. ड. मिन्स) के बयान किया वह इन इंडियन ओपिनियनके ३-१-१९८ के अंकमें "इ-कमलस भारतीय : बीबी की बयानबयाना" शीर्षके प्रकाशित किया गया था।

२. १९९ मनीका इन्डियनमा जो कहीं नहीं मिला था उदा है; देखिए पत्र 'बेल्ज-निवेशकों' पृष्ठ ५०-५१।

जेस-निवेशक

प्रिटोरिया

महोदय

ट्रान्सवालको जेसोंमें भारतीय कर्मियोंके लिए जो भोजन-शाक्तिका भागू है, उससे सम्बन्धित प्रस्तुत बारेमें आपका इसी २४ तारीखका पत्र मिला।

यह बात मुझे प्रथम बार मालूम हुई कि सारे ट्रान्सवालमें बजाय एक भोजन-शाक्तिका होनेके बीसा कि मेरे संघका अनुमान था अनेक भोजन-शाक्तिकाएँ कामू हैं जो विभिन्न जेसोंमें एक-दूसरीसे भिन्न हैं। मेरे संघकी राय है कि मेरेभाबके इस सिद्धान्तसे उन जेसोंपर बड़े कष्ट बाते हैं जिनके विरुद्ध मेरेभाब किया जाता है और यदि आप मेरे संघको यह बतानेमें तो प्रसन्नता होगी कि क्या सारे ट्रान्सवालमें भारतीय कर्मियोंके लिए एक निश्चित भोजन-शाक्तिका निश्चित करनेका सरकारका इरादा है। और यह प्रश्न खुदको स्वल्पताके प्रस्तुतसे जिसका उदाहरण जोहानिसर्वर्णमें मिलता है और जिसकी वार मेरा संघ बार-बार ध्यान आकर्षित कर चुका है, बिलकुल अलग है।

इस कथनके विरुद्ध कि बीका किया जाना एक कृपाका कार्य है और खुदको-सम्बन्धा नियमका विषय नहीं है फिर आपति प्रकट करता हूँ क्योंकि मैं इस तथ्यको जानता हूँ कि यह जनशरीरमें जोहानिसर्वर्णकी जेसमें छठी हुई भोजन-शाक्तिकामें भी सम्मिलित था। भारतीय कर्मियोंके सम्बन्धमें जहाँ नियमोंमें चर्ची देनेकी व्यवस्था है वहाँ चर्ची जानेमें भारतीयोंकी सामिक भागितको देखते हुए, क्या अधिकारियोंका इरादा चर्चीके बजाय अन्तः पी देनेका है, यह सूचित करें तो मेरे संघको प्रसन्नता होगी।

आपके जिस पत्रका उत्तर दे रहा हूँ उससे इन सन्देशोंकी पुष्टि होती है कि सरकार भारतीयोंको एक ऐसा भोजन जिसके में जीवधर्म विस्तृत सम्पन्न नहीं रहे स्वीकार करनेके लिए बाध्य करके उन्हें भूखों मारकर उनसे आत्मसमर्पण कयना चाहती है। मेरे संघको यह देखकर दुःख होता है।

आपका आत्माकारी सेवक

अ० मु० वाईलिया

अध्यक्ष

ब्रिटिश भारतीय संघ

[अधेनीमे]

इंडियन ओपिनियन १-१०-१९०८

३३ पत्र 'बेल-निवेशकको'

[बोहागिसभाग]
सितम्बर २४ १९८

बेल-निवेशक
प्रिटोरिया
महोदय

मेरे इसी २१ तारीखके पत्रके उत्तरमें आपका २३ तारीखका पत्र संख्या १ ७७/ ८/ ८१५, मिला। उसकी प्राप्ति सादर स्वीकार करता हूँ। सिकायतके सम्बन्धमें आपने जो बातें कही हैं उसके लिए धन्यवाद स्वीकार करें।

आप में सिकायत करनेवाले व्यक्तिका हकफिया बयान^१ पत्रके साथ भेज रहा हूँ। पता कि आप देखेंगे वह अपने बयानपर काममें है। उसके लिए घब्राहू घेस करना निश्चयसे ही ज़रूरत नहीं है। किन्तु वह सबसे रिहा किया गया है सबसे निमोनिमासे पीड़ित है। इससे प्रकट होता है कि उसको यह बीमारी अबतक ही बेलमें हुई होगी। मेरा और कई ब्रिटिश भारतीयोंका भी जो बनी हाज ही केब भुगतकर आये हैं यह अनुभव है कि यबनरसे सिकायत करना आसान बात नहीं है क्योंकि एक तो केबी बहुत मजबूत रहते हैं और दूसरे, उनको बंधेबी या तो जाती नहीं या काफ़ी नहीं जाती। सिकायत करनेवाले व्यक्तिका कहना है कि यदि कोई सरकारों या सार्वजनिक बांध की आये तो वह उसमें घेस होने और यथाही बेनेके लिए बिस्तुतः तैयार है।

आपका आस्थाकारी संरक्षक
अ० मु० काछिसिया
अध्यक्ष
ब्रिटिश भारतीय संघ

[अधेबीसे]

इंडियन ओपिनियन ३-२०-१८

१. बेल-निवेशक (बालबाल बंधक बिक्रम) के नाम मिला वह २३ इंडियन ओपिनियनके ३-२०-१९ ८ के अंकमें "दुःखमय आरोग्य : अंधी आनरबला" अर्थात्के अंककित किया गया था।

२. टी१६ अनीका हकफिया बयान की वही वही रिहा आ रहा है; देखिए "३-२०-१९" इ० ५०-५१।

[बोहानिसवण]
सितम्बर २५, १९८

बेल-निवेदाक
प्रिटोरिया
महोदय

ट्रान्सवालको जेलोंमें भारतीय कैदियोंके लिए जो भोजन-तालिका जागू है, उससे सम्बन्धित प्रश्नके बारेमें आपका इसी २४ तारीखका पत्र मिला।

यह बात मुझे प्रथम बार मासूम हुई कि सारे ट्रान्सवालमें बजाय एक भोजन-तालिका होनेके जैसा कि मेरे संघका अनुमान था अनेक भोजन-तालिकाएँ जागू है जो विभिन्न जेलोंमें एक-दूसरेसे भिन्न हैं। मेरे संघकी राय है कि भोजनाके इस सिद्धान्तसे उन भोगोंपर बड़े फट आते हैं जिनके बिना भोजनाक किया जाता है और यदि आप मेरे संघको यह बतायेंगे तो प्रसन्नता हीनी कि क्या सारे ट्रान्सवालमें भारतीय कैदियोंके लिए एक नियत भोजन-तालिका निश्चित करनेका सरकारका इरादा है। और यह प्रश्न खुराककी स्वस्थताके प्रश्नस जिसका उदाहरण बोहानिसवणमें मिला है और जिसकी ओर मेरा संघ बार-बार ध्यान आकर्षित कर चुका है बिनाकुल बल्लग है।

इस कबलके बिना कि बीका दिया जाना एक कृपाका कार्य है और खुराक-सम्बन्धी नियमका विषय नहीं में फिर आपत्ति प्रकट करता हूँ क्योंकि मैं इस तथ्यकी जानता हूँ कि यह बलबरीमें बोहानिसवणकी जेलमें छपी हुई भोजन-तालिकामें भी सम्मिलित था। भारतीय कैदियोंके सम्बन्धमें वहाँ नियमोंमें बर्बाद देनेकी व्यवस्था है वहाँ बर्बाद जानेमें भारतीयोंकी बाधिका आपत्तिको देखते हुए, क्या अधिकारियोंका इरादा बर्बाद बजाय मरत भी देनेका है, यह सुचित करें तो मेरे संघको प्रसन्नता हीनी।

आपके बिना पत्रका उत्तर दे रहा हूँ उससे इन सन्देशोंकी पुष्टि होती है कि सरकार भारतीयोंकी एक ऐसा भोजन बिनाके दे जीवनमें बिनाकुल बल्लग नहीं रहे स्वीकार करनेके लिए बाध्य करके उन्हें मुक्तों मारकर उनसे आत्मसमर्पण कराना चाहती है। मेरे संघको यह देखकर दुःख होता है।

आपका आज्ञाकारी सेवक
अ० मु० फाउलरिया
अध्यक्ष
ब्रिटिश भारतीय संघ

[अंशेजीसे]

इंडियन ओपिनियन १-१०-१९८

३५ मेटाल कैसे सहायता कर सकता है

द्राग्वशासकी कड़ाईमें मेटालके घत बर्षे मारी सहायता की थी।^१ इस बार तो हर कर दी है। मेटालके प्रमुख और विशिष्ट मात्तीय खेसमें जा बडे है।

किन्तु ऐसा होनेसे मेटालका इस खान्दोखनसे गहरा सम्बन्ध हो गया है। अब इसपर भी द्राग्वशासके समान ही बोझा जा पडा है। मेटालके बन्धियोंका^२ धीम्रतासे बचन-मुक्त करवाना जितना द्राग्वशासका कर्तव्य है उतना ही मेटालका भी ही मया है। द्राग्वशासका जो कर्तव्य है वह हमारी ओद्यानिसधर्मकी जिद्दीमें^३ बतयाया गया है। इसकिए अब मेटालका विचार करें।

मेटालका एक कर्तव्य तो यह है कि वह सम्बन्धी [इ था वि ना] समितिका^४ सच बकानेके लिए नियमित रूपसे पैसे भेजता रहे। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए धीम्रतासे बन्धा इकट्ठा किया जाना चाहिए। यह सन्तोषकी बात है कि यह कार्य बारम्भ कर दिया गया है।^५

बहुत कर्तव्य यह है कि बुरे नेता जो द्राग्वशासके अधिकारी रहे चुके हैं और बेरिस्टर, डॉक्टर आदि उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीय द्राग्वशासमें प्रवेश करें और भी राज्ज गृहम्भरका साथ दें। फिर, जिनके पास ३ पीवी पंजीयन प्रमाणपत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) वा अनुमतिपत्र (परमिट) हैं उनको द्राग्वशास सेवा जाये। इनमें से कोई भी सीमापर अपने बँपूठेकी जाय न दें और इस प्रकार वे [मात्तीयोंके] उचित अधिकारोंकी प्राप्तिके लिए खेसोंको भर दें। यदि इस उपायका बचसम्भन किया जाये तो कुछ ही दिनोंमें संवसका बन्ध हो जावेगा और बहुत-से मात्तीय अपने समाजमें बाई हुई नई धनिकी पटीला कर सकेंगे।

ऐसा करनेसे निस्सन्देह मेटालका बहुत काम होना। उसे अभी बहुत मोर्षे देने हैं। उसे व्यापारिक कानूनको रर कराना है, निरमितियेके बुन्नोंका बन्ध कराना है और बत्पाचारपूर्व ३ पीवी करको समाप्त कराना है। यदि इस सब कार्यमें बहुत-से नेता अपनी नई धनिकी जानमाइय करेते तो वह अधिकमें बहुत काम जायेगी। अब योरे वह देख लें कि हममें ऐसी समित जा गई है तो वे हमसे छेड़खानी करनेसे पूर्व चौखे बचस्य।

मेटालके बन्धरगाहमें बकरी ही बन्धरिसे एक बहाव जायेगा। उसमें बहुत-से भारतीय द्राग्वशासके हैं। उन्हें समझाना साथ स्थितिके बाकिड कराना और ऐसा इत्तनाम करना कि वे द्राग्वशासमें प्रवेश करके समय बँपूठेकी जिसानी कठई लें—यह एक मेटालके मात्तीयोंका

१ देखिए कान्न ७, एड १४४ और २११-२२।

२. राज्ज गृहम्भर, वारसी कसमबी और बन्धिया।

३ देखिए 'बोद्यानिसधर्मकी जिद्दी' एड ६२-६४।

४ इन्डियन बाकिड मिडिल मरटीन समिति (राज्ज बाकिड मिडिल इन्डियन कमिटी)।

५. देखिए भारतीय संघके समितिकी १ वीं बने वे; देखिए 'बोद्यानिसधर्मकी जिद्दी' एड १५।

संभव है। इस कामके लिए सुरक्षित रखरखेक निपुण कर दिने जाने चाहिए। हम इन पुरावोंको धोर प्रत्येक भारतीयका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

[मुद्रापीठे]

इंडियन ओपिनियन २६-९-१९०८

३६ पत्र उपनिवेश-सचिवको

[बोहानिसर्ग]

सितम्बर २८ १९०८

माननीय उपनिवेश-सचिव

प्रिटोरिया

महोदय

आपका ता २४ का पत्र संख्या ९/६/४४६७ मिला जिसमें आपने मेरे संघको सूचित किया है कि आप ट्रांसवालकी जेम्सकी भोजन-तासिकासे सम्बन्धित नियमोंके प्रकाशनमें अधिकारियोंके काममें हस्तक्षेप करनेमें असमर्थ हैं।

मेरे संघके २१ तारीखके पत्रके भाव मुझे जेस-निवेशक (डायरेक्टर ऑफ प्रिजम्स) का एक और पत्र मिला है, जिसमें मेरे संघको सूचित किया गया है कि अनेक भोजन-तासिकाएँ काबू हैं जो विभिन्न जेम्सोंमें मिश्र मिश्र हैं। मैं बहुत कृतज्ञ होऊँगा यदि आप कृपापूर्वक मेरे संघको सूचित करें कि आपके उस पत्रमें किसका यह उत्तर है उल्लिखित वह विधिष्ठ भोजन-तासिका कौन-सी है।

आपका आज्ञाकारी सेवक,

ए० मु० काछरिया

अध्यक्ष

विधिष्ठ भारतीय संघ

[संपत्तीसे]

इंडियन ओपिनियन १-१०-१९०८

३७. पत्र 'सेस-निवेशकको'

[बोधानुसर्प]

दिसम्बर ३ १९८

सेस-निवेशक

प्रिठोरिया

महाराष्ट्र

श्री बाबल रणजीने मुझे सूचित किया है कि वे धमी-अमी अमिस्टन बोलते कूटे हैं। वहाँ उन्होंने ३ दिनकी सस्त कैंचकी सजा काटी। वे मेरे संबन्धों सूचित करते हैं कि उस अवधिमें उन्हें जो मात्रा दिया गया उसमें नास्तेके समय मकईका बहिया रोपहरके भोजनमें चर्बीमें पकाई हुई या चर्बी मिखाई हुई मरुई और शामके भोजनमें मकईका बहिया होता था। इस भोजनका कोई विकल्प नहीं था।

यदि ये आरोप सही पाये जायें तो मेरे संबन्धों आपसे तत्काज यह आश्वासन पाकर हर्ष होगा कि वहाँ-कहीं चर्बीका उपयोग किया जाता है वहाँ उद्योगी अपह जो का उपयोग किया जायेगा। मुझे आपकी यह स्मरण दिखानेकी आवश्यकता नहीं है कि कट्टर मुसलमान या हिन्दूके लिए चर्बीका साथ पकाया हुआ भोजन धार्मिक दृष्टिसे अपवित्र है। मुसलमान किसी ऐसे पशुकी चर्बी का सकता है जो विधिपूर्वक हलाक किया गया हो और हिन्दू तो ही सकता है चर्बी बिल्कुल चाये ही नहीं।

आपका आभाकारी सेवक

ब० मु काछिमिया

अध्यक्ष

ब्रिटिश भारतीय संघ

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन १०-१०-१९८

१ सेस-निवेशक (बाबल रणजी मिश्र) को लिखा यह पत्र १०-१०-१९८ के इंडियन ओपिनियनमें इस शीर्षके अन्त था — "वहाँ भारतीय सूत्रों परकर हलाकें करने और चर्बीका"।

बोहानिसदय
सितम्बर ३० १९८

सम्पादक
इंडियन ओपिनियन

महोदय

बेल-निदेशक (डायरेक्टर ऑफ प्रिजन्स) की ओरसे मेरे संबन्धों नीचे दिये गये कुछ और तस्वीर प्राप्त हुए हैं

इसी २४ तारीखके आपके उस पत्रके सम्बन्धमें जितके साथ आपने संघर्ष अलीका बॉरसवर्ग बेलमें उसके साथ हुए व्यवहारसे सम्बन्धित हलफनामा भेजा है मुझे यह कहना है कि ईस्ट रैंजके बेलोंके परिवर्तन मामलेकी जाँच कर ली है और मुझे जगसे उचित विवरण मिल गया है।

मुझे इस बातकी प्रतीति हो गई है कि संघर्ष अलीके साथ बेलके विषयमें अनुसार व्यवहार किया गया या और वर्तमान स्थितियोंमें मामलेकी और क्या जाँच करनेका मेरा इरादा नहीं है।

ड्राम्सबालकी बेलोंमें केवल ब्रिटिश नाट्योपयोगी लिए ड्राम्सबालमें लापु भोजन तालिकाके विषयमें लिखे हुए आपके इसी २५ तारीखके दूसरे पत्रके सम्बन्धमें मुझे आपको यह सुचना देनी है कि फिलहाल मिली हुई सलाहके अनुसार मैं मौजूदा भोजन-तालिकामें परिवर्तन करानेकी दृष्टिसे कोई लिखा-पढ़ी करनेको तैयार नहीं हूँ।

दिखाई देता है कि संघर्ष अलीने अपनी शिक्षापत्रोंकी लुकी भराभरी जाँचकी जो आपना की है वह अस्वीकृत कर दी जायेगी। भारतीय कैदियोंके लिए ड्राम्सबालकी बेलोंमें लापु भोजन-तालिकाके सम्बन्धमें मेरे संबन्धों सब यह निश्चय हो जाना चाहिए कि भारतीय कैदियोंको भूखों मारकर मरनेके लिए बाध्य करना और इस तरह ब्रिटिश भारतीय समाजपर बुरा बानसका प्रयत्न करना ड्राम्सबाल सरकारकी निश्चित नीति है।

आपका आभारगारी सेवक
अ० मु० काछलिया
अध्यक्ष
ब्रिष्म भारतीय सभ

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ३-१०-१९८

१ वर "दि राउन्डेबले बर्रोस ऑफ्टी नावरबछा" पृ० ३३३ अर्थात् ३३३।

२ डेजि "११ वेन मिडवको" पृ० ००।

३ डेजि "११: अन्-निरेडको" पृ० ०१।

४ डेजि "११: वेन-निरेडको" पृ० ५०-५१।

[बौहानिसंघर्ष]
सितम्बर १० १९८

बेच-निर्णयक
प्रिटोरिया
महोदय

मी वासन एनडोइने मुझे सूचित किया है कि वे अभी-अभी बर्मिंस्टन जेज्जे छूटे हैं। वहाँ उन्होंने ३ दिनकी सक्त कैंसको सबा काटी। वे मेरे संघको सूचित करते हैं कि उस बर्षमें उन्हें जो मान्य दिया गया उसमें नास्टेके समय मकईका बजिया होसहरके भोजनमें बर्षोंमें पकाई हुई या बर्षी मिठाई हुई मकई और धानके भोजनमें मकईका बजिया होता था। इस भोजनका कोई विकल्प नहीं था।

यदि वे आरोप सही पाने पायें तो मेरे संघको आपसे तत्काज बहु आश्वासन पत्कर हर्ष होया कि वहाँ-कहीं बर्षोंका उपयोग किया जाता है वहाँ उसकी जगह भी का उपयोग किया जायेगा। मुझे आपको यह स्मरण दिखानेकी आवश्यकता नहीं है कि कष्टर मुसकमान या हिन्दूके लिए बर्षोंके साथ पकाया हुआ भोजन बार्मिक दृष्टिसे अपवित्र है। मुसकमान किसी ऐसे पदुकी बर्षी था सकता है जो विविपूर्वक हजाज किया गया हो और हिन्दू वो ही सकता है बर्षी विस्तुज खाये ही नहीं।

आपका आज्ञाकारी सेवक
अ० मु० कार्मसिया
बम्बय
ब्रिटिश भारतीय संघ

[अज्ञेयोंसे]

इंडियन ओपिनियन १०-१-१९८

बोहानिचर्चा
विद्यमान ३० १९०८

सम्पादक
इंडियन ओपिनियन
महोदय

जेड-निदेशक (हायरकटर ऑफ प्रिन्सिपल) को मोरस मेरे संघको नीच दिये गये कुछ और सम्येस प्राप्त हुए हैं

इसी २४ तारीखके आपके उस पत्रके सम्बन्धमें जितके साथ आपने सैयद अलीका बाँसबर्ष जेलमें उसके साथ हुए व्यवहारसे सम्बन्धित हलफनामा भेजा है मुझे यह कहना है कि ईस रैडके जेलोंके यवर्नरने मामलेकी जाँच कर ली है और मुझे इनसे उसका विवरण मिल गया है।

मुझे इस बातकी प्रतीति ही यई है कि सैयद अलीके साथ जेलके नियमोंके अनुसार व्यवहार किया गया था और वर्तमान स्थितियोंमें मामलेकी और ज्यादा जाँच करनेका भेदा इरादा नहीं है।

ट्रान्सवालकी जेलोंमें और ब्रिटिश भारतीयोंके लिए ट्रान्सवालमें लायू भोजन-तामिकके विषयमें किछे हुए आपके इसी २५ तारीखके दूसरे पत्रके सम्बन्धमें मुझे आपको यह सूचना देनी है कि किस्महाल मिली हुई तलाहके अनुसार मैं मौजूदा भोजन-तामिकामें परिवर्तन करानेकी बुद्धिसे कोई लिखा-वड़ी करनेको सैयद नहीं हूँ।

दिखाई देता है कि सैयद अलीने अपनी शिकायतोंकी खुली बरामती जाँचकी जो प्राचना की है वह मस्वीकृत कर ली जायेगी। माखीय कैदियोंके लिए ट्रान्सवालकी जेलोंमें लायू भोजन-तामिकके सम्बन्धमें मेरे संघको अब यह निश्चय हो जाना चाहिए कि भारतीय कैदियोंकी सुखों माकर झुकनेके लिए बाध्य करना और इत लख ब्रिटिश माखीय समाजपर रबाव डालना प्रयत्न करना ट्रान्सवाल सरकारकी निश्चित नीति है।

आपका आभारकारी सेवक

अ० मु० काछळिया

मध्यम

ब्रिटिश भारतीय संघ

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ३-१०-१९०८

- १ यह "दि एरररनेयके बरीनः सैयदी भारतवर्षका" जेलोंके बरकत डूना ४ ।
- २ डेजिर "४३ जेल निरीक्षणको" पृष्ठ ४० ।
- ३ डेजिर "४१ जेल निरीक्षणको" पृष्ठ ४१ ।
- ४ डेजिर "४२ जेल निरीक्षणको" पृष्ठ १०५१ ।

३९ तार ब० आ० त्रि० भा० समितिको^१

बोहानियुक्त

सितम्बर ३ १९८

कल एक भारतीयको उपनिवेश म स्थापनेपर एक महीनेकी कड़ी बंधन
 सुदरेको साथ दिनमें उपनिवेश-स्थापकी आशा मना बेबीकरण कानून^२ इन्कीस
 सितम्बरसे लागू और अक्टूबरमें पञ्जीयनकी^३ एकांति देने और पञ्जीयकके निर्णयके
 विरुद्ध अपीलका अधिकार फिर मो दोनों एधियाई कानूनके अन्तर्गत बन्धित।
 साथ एक विधित भारतीय एधियाई कानूनके अन्तर्गत एक महीनेकी बंधन
 भुगतकर रिहा। एधियाई कानूनके अन्तर्गत बन्धके दरवाजेपर फिर मिरफार।
 समाप्त बंध। साथ हुआ पुराना कानून प्रशासनिक दृष्टिये प्रभावहीन।
 अधिष्ठाते बेबीकरण कानून लागू होनेवाला। समाप्तका पुराने कानूनको रद्द
 करनेका आदेश।

[मो० क० पांभी०]

[अंग्रेजीसे]

कमिश्नर ऑफिस रेकर्ड २९१/१३२

४० सेंट 'नेटाल भव्युरी' को

[अर्बन]

सितम्बर ३० १९८]

द्वारासत्वात्वात् भारतीयोंके हितके औरदार समर्थक भी मो क वांभी आदेशक अर्बन
 भावे हुए हैं। कल उनसे इत पत्रके एक प्रतिनिधिने बंध की।

यह हुआ जानेपर कि इस समय वे अर्बन किस उद्देश्यसे आये हैं उन्होंने बताया कि
 मैं यहाँ उन भारतीयोंके प्रश्नके सिद्धांतमें आया हूँ जिन्हें मुझसे पहले द्वारासत्वात्के निवासी
 होनेके कारण द्वारासत्वात्में वापस जानेका अधिकार है। मैं विशेषकर उन भारतीयोंके हितमें
 आया हूँ जो अर्बन अहाह गवर्नर से जानेवाले हैं। यह अहाह अगली संख्यामें द्वारासत्वात्के
 विषय भारतीय भाषी ला रहा है।

द्वारासत्वात्में भारतीयोंकी वर्तमान स्थितिके सम्बन्धमें किये गये एक प्रश्नके उत्तरमें भी
 पांभीने कहा कि अहाहकी सफल अब यह यह है कि जिन्हें द्वारासत्वात्में रहनेका अधिकार है,

१ दक्षिण अफ्रीका स्थित भारतीय समिति वा साइड अफ्रीका स्थित दक्षिण अफ्रीका समिति कल्पन।

२ न्यू डेक्लिज्जेशन सेक।

३ एमिरेटजम।

उन्हें अनिच्छेपूर्वक प्रवेश करनेकी अनुमति होगी; किन्तु वे सरकारकी सिनास्तके सम्बन्धमें तबतक कोई सहायता न देने अबतक वो मुख्य प्रश्न तय नहीं हो जाते।

मैंने कहा कि "ब्रिटिश भारतीयोंके कानून-पालक स्वभावसे इस बातकी संगति कैसे बँटती है?" श्री गोपीने उत्तर दिया कि मेरे मतसे भारतीयोंके बचने कोई भी बिडोह नहीं है। याद यह रखना चाहिए कि ड्राम्सबालकी संसदमें ब्रिटिश भारतीयोंका कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। और अपनी भाषा सुनानका उनके पास एकमात्र कारण तरीका उन कानूनोंके माननेसे इनकार करना है बिनके पास करनेमें उनका कोई हाथ नहीं है और जो उनकी अक्षरालया मयबा आत्म-सम्मानपर जोर करता है। उन्होंने कहा भारतीयोंकी भावना यह है कि अगर एक स्मट्स एशियाई कानूनकी रद करनेके लिए बचनबद्ध हूँ किन्तु वे कहते हैं कि वे उसे "प्रभावहीन कानून" मानकर बचेंगे। भारतीय कहते हैं कि यह काफ़ी नहीं है और वे देखता हूँ कि अब भी पुराना कानून कितनी भी प्रकार प्रभावहीन नहीं है। इन विधियोंमें भारतीयोंने अगर एक स्मट्ससे मीय की है कि कानूनकी रद करके अपने बचनका पालन करें और अबतक यह नहीं हो जाता तबतक उन्हें [भारतीयोंको] नये कानूनसे प्राप्त सामोंको स्वीकार न करनेकी सलाह दी गई है। श्री गोपीके विचारमें यह भारतीय समाजका एक त्याग है जिसकी सराहना समस्त बलिष्ठ आक्रिकाके उपनिवेशियोंकी करनी चाहिए।

इसके बाद प्रश्न यह किया गया: परन्तु शिक्षा-सम्बन्धी प्रश्नके विषयमें आप क्या कहते हैं?" श्री गोपीने कहा कि इसका उत्तर बहुत सीधा-सादा है। यदि कानून रद कर दिया जाता है तो ड्राम्सबालका प्रवासी कानून तयमम बनीं होया जो नडासका है। ब्रिटिश भारतीय कहते हैं कि साम्राज्य-सरकार और वे लोग जो साम्राज्यसे प्रेम करते हैं ड्राम्सबालको केवल जाति और रंगके आधारपर पुषकरककी गई नीति स्थापित करनेकी अनुमति न दें। ड्राम्सबालका वर्तमान प्रवासी कानून पुराने एशियाई कानूनकी सहायतासे, ऐसा ही विधान प्रस्तुत करता है। इसलिये भारतीयोंका विचार है कि ऐसी बात न होनी चाहिए।

उन्होंने कहा ड्राम्सबालके लीग नेडालके अर्ध-शिक्षित युवकोंके आक्रमणके जपालसे डर गये हैं; किन्तु इसका कारण केवल मजान है। भारतीय अपने अर्ध शिक्षित श्रेण्यन्तुओंके अधिकारोंके लिए नहीं लड़ रहे हैं। वे भारतकी प्रतिष्ठाके लिए और एक सिद्धांतके लिए लड़ रहे हैं — उती सिद्धांतके लिए जिसकी स्थापना श्री बेंम्बरलेनने उपनिवेशीय मयाल मन्त्री-सम्मेलनमें की थी और वह यह था कि प्रतिबन्ध कितनी उचित आचारपर लगाया जाना चाहिए, रंग या प्रजातिके आधारपर नहीं। श्री गोपीने कहा कि एक बार कानूनको निपाहमें शिक्षित भारतीयोंका बर्बातमानके आधारपर स्थापित हो जाये तो स्वयं मेरा धैर्यबिध कठीनीकी कठीयताके सम्बन्धमें कोई प्रयत्न नहीं रह जाता। मुझे मुख्य अन्तर यह प्रतीत होता है: ड्राम्सबालके लीय बलिष्ठ तारे बलिष्ठ आक्रिकाके लोग ब्रिटिश भारतीयोंको बरार्डके कर्णमें सहन करते हैं। इसके विपरीत भारतीयोंका दावा यह है कि जो लीय बलिष्ठ आक्रिकाके अधिकारी ही गये हैं वे उस भाषी बानिके मंग बन जायें जिसका निर्माण हो रहा है और उनको सिप्यता और संरक्षितके

मार्गपर जाने बङ्गनेमें हर प्रकारसे प्रोत्साहित भी किया जाये। जब मैं यह बात कहता हूँ तो मैं केवल कुछ दिन पहलेके ही वैदिक ङकनके इस कथनको ही गुरुराता हूँ कि स्वतन्त्र और स्वसाक्षित बहिष् आक्रिकामें किसी ऐसे जनसमुदायकी कल्पना करना अतन्मय न होना जो वास्तवकी व्यवस्थामें प्युता हो या जिसकी स्थिति निम्न और कानूनकी दृष्टिसे हीन हो।

श्री पांडीने बिश्वातनुर्बक कहा कि ऐसे किसी व्ययमानके विरुद्ध यह कदम उठानेमें मेरे वैद्यवासिर्मोंको जन सबकी सहायानुमति और सहायता मिलनी चाहिये, जो बहिष् आक्रिकामें अपनी मातानुमिके रूपमें प्रेम करते हैं और जो उसका हित चाहते हैं। मैं यह एक बात बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि भारतीय जन बहिष् आक्रिकामें किसी भी मतमें एसियाइयोंका बराब प्रभाव नहीं चाहते और जनकी इच्छा यह भी नहीं है कि बिना सम्झे-बुझे माम तौरसे ध्यापारिक परवाने (ट्रेड कार्टेल) दिये जानेके सम्बन्धमें कोई विनियम (रेगुलेशन) ही न हों। किन्तु इन दो मायवतानोंकी स्वायतताके बाद कोई येवमायकारी कानून न बनाया जाना चाहिये, अन्यथा मैं केवल उती बातको फिर कर्षुया बिसे इतनी बार कह चुका हूँ—यानी बहिष् आक्रिकामें साम्राज्य-विषयकके बीच जो कार्यये। यह नहीं हो सकता कि वे भारतकी विद्वित ताकके सम्बन्धतम रत्नके रूपमें भी रथें और उस रत्नको हर तरफसे प्रहारका लक्ष्य भी बनयें।

इसके बाद श्री पांडीने इस प्रश्नका कि सामान्यतः भारतीयोंपर संघीकरणका क्या प्रभाव होया निम्न उत्तर दिया यह बही प्रश्न है किन्तु उत्तर में जोहानिसमर्जनमें बनाई धनिष्ठतर ऐवय संघकी' बैठक में वे चुका हूँ। मैंने वहाँ कहा था कि संघीकृत बहिष् आक्रिकाका अर्थ अबतक केवल मोदी बातियोंका ही नहीं बल्कि जन सब रंपवार और दैवत विद्वित प्रवातानोंका एकीकरण नहीं होता किन्तु बहिष् आक्रिकाको अपना वैध बना किया है, तबतक विद्वित भारतीयोंके लिए संघीकृत बहिष् आक्रिकाका अर्थ उनकी स्वतन्त्रतापर और भी अधिक प्रतिबन्ध कपाना होगा। ऐसे संघीकरणमें सभी यह अपेक्षा करते हैं कि भारतीयोंके सम्बन्धित कानूनके निर्माणमें पचार सिद्धांतोंकी सम्मुख रखा जाये किन्तु वहाँ तो प्रायः रूपमें भारतीयोंकी मताधिकारसे बन्धित करनेकी और नेडासमें जनपर और अधिक विधोप्यताएँ लगानेकी चर्चा सुनाई देती है। जहाँतक एशियाई कानूनका सम्बन्ध है ऑरेंच रिबर काकोनी संघीकरणके रूपके अधिकसे-अधिक समीप पहुँची मालूम होता है। उस उपनिवेशमें एशियाई केवल प्रारंभ नीकरके रूपमें हैं। वहाँ जनका अन्य कोई आचार बिलकुल नहीं है। प्रत्येक स्थितिको यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि बिना भारतीयोंके विहित स्वार्थ हूँ किन्तु अपने बाल-बन्धके पढ़ाने हूँ और परिवारोंका बरख-पीपब करना है वे ऐसी स्थितिसे बँती मैंने बताया है कभी सलुष्य न होंगे और उसको वे तबतक स्वीकार न करेंगे जबतक एक बोरवार लड़कई न लड़ लेंगे। मेरे बचानमें नहीं जाता कि साम्राज्य-सरकार ऐसी संघीकरण नीकनाको केंसे बतान कर सकती है किन्तु अर्थ एसियाइयों और बतनियोंकी कल्पन वास्तवकी स्थितिमें पहुँचा देना होगा।

१. कबीर बुकिल लोतायी ।

२. देशिर कब ८ " मारन बन्धिर लेन संके १७ १९१-२१ ।

इसके बाद जिस दूसरी बातकी चर्चा हुई वह इस प्रश्नके अन्तर्गत आ जाती है: 'ड्राम्बासमें स्थानीय नेता बने भवे पये हूँ, इस सम्बन्धमें ब्रिटिश भारतीयोंकी भावना कौसी है?

श्री गांधीने उत्तर दिया कि जो-कुछ मैं बोल सकता हूँ उससे तो भावना बहुत कम प्रतीत होती है। मेरे देशवासी यह समझनेमें असमर्थ हैं कि एक ब्रिटिश उपनिवेशमें ब्रिटिश भारतीयोंको ड्राम्बासमें प्रवेश करनेका साहस करनेके कारण कारावासक कष्ट क्यों भोगने पड़ते हैं। तीनों नेता ड्राम्बासकी लड़ाईमें पूर्णके अधिकारी हैं। इससे स्थिति और अधिक दुःखदायी लगती है। उनके साथ तीन ब्रिटिश भारतीय भी कारावास भोग रहे हैं। ये जूनू बिबीहूके समय बीबीबाहूक के और लार्डसेठके परवर नियुक्त थे। यह स्मरणीय है कि इनकी सेवाएँ इतनी मूल्यवान मानी गई थी कि सर हेनरी मेकडॉल्डने इनकी विशेष रूपसे सराहना की थी। और वे मृतपूर्व सार्वभौम अपने परकीके अधिकारी तो हैं ही जिन्हें वे रिहा होनेपर प्राप्त करेंगे। यह हर किसीको अजीब लगेगा कि ऐसे लोगोंको केवल ड्राम्बासमें प्रवेशका साहस करनेपर कड़ी कंठकी सजा दी जाये। जेलमें भेजे पये नेताओंमें से एक—श्री बाउर मुहम्मद—की प्रत्येक प्रमुख उर्बन-निवासी जानता है और वे महान भारतीय कांग्रेसके अध्यक्ष हैं। इससे भी भारतीय इस्लामी भी उतने ही प्रतिष्ठ हैं। और, तीसरे श्री एन० सी आनिकिया एक प्रमुख व्यापारी और कांग्रेसके मंत्री हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने मंजरी और षेचमें बहुत अच्छी शिक्षा प्राप्त की है। इसलिए उर्बनके भारतीय यह अनुभव करते हैं कि उन्हें इसलिये कष्ट सहन करने हे कि वे नेता अपनी अवधिकी समाप्तिसे पूर्व मुक्त करायें जा सकें। इसलिए वे ड्राम्बासमें प्रवेश करनेके लिये ऐसे और अधिक भारतीय भेजनेकी उपयुक्ततापर विचार कर रहे हैं जिन्हें बर्हा जानेका अधिकार है ताकि वे उन कम्पोंमें हिस्सा बँटा सकें जो उनके नेताओंकी सहन करने पड़ रहे हैं। यह विशुद्ध स्पष्ट है कि जनरल स्मटसन दक्षिण आफ्रिका-भरमें ब्रिटिश भारतीयोंकी एक अत्यन्त सेवाकी है। वे एक-दूसरेके इतने करीब कर विषे पये हैं जितने करीब वे पहले कभी नहीं थे; और वे अपनी स्थितिकी समझने एवं यह अनुभव करने सये हैं कि यदि उन्हें अपने-आपको दक्षिण आफ्रिकामें आत्म-सम्माननी लोगोंके रूपमें मान्य कराया है तो उन्हें कम्बोसे-कम्बा निडाकर काम करना और बहुत कष्ट सहन करना होगा।

श्री गांधीने कहा कि जो बर्मी मुक्त हुए हैं; उनकी मार्केत इन नेताओंसे इस आशयकी खबर मिली है कि वे बिलकुल क्षुद्र हैं यद्यपि सरकार उन्हें ऐसा जीवन देकर जो भारतीयोंकी भारतके अनुकूल नहीं है बिलकुल भूखों मार रही है। नेता कहते हैं कि वे तबतक जेलमें रहेंगे जबतक आन्धोलन समाप्त नहीं हो जाता और ड्राम्बासवासी भारतीयोंके उचित अधिकारोंको मान्यता नहीं दी जाती। उनमें से अधिकतर सार्वजनिक सड़कोंपर परवर तोड़नेके लिये भेजे गये पये हैं। श्री गांधीने आगे कहा कि क्यावातर नेता बहुत कमजोर हैं और श्री बाउर मुहम्मद बुझे हैं एवं बुद्धिगतसे कोई बोझ उठा सकते हैं; किन्तु उन्हें अपने बैगसे इतना प्रेम है कि, बात हुमा है उन्हें जो भी काम दिया जाता है उसे वे अत्यन्त प्रतप्तपूर्वक करते हैं।

भेदकर्मणि फिर प्रश्न किया : क्या आपका अर्थ है कि यहाँको इसबलका भारतमें भी कोई असर होता है? श्री गाँधीने उत्तर दिया बसक मेरा अर्थ है कि असर होता है। पिछली जनवरीमें बम्बईमें सर आनासाके समापतित्वमें जो समा हुई वो उसमें जोय बहुत बड़ी सभ्यामें उपस्थित हुए थे। इस प्रश्नपर अंग्ल-भारतीय और भारतीय पुरुषतः एक ही और इसी प्रकार मुसलमान हिन्दू, ईसाई और पारसी भी एक ह। बम्बईको इस समाने जो विरोध-अर्थमन किया गया वह जोरदार और सर्वसम्मत था। अभी हालमें जो सूचना मिली है उससे प्रकट होता है कि द्वाग्तवाजमें नाट्यीयोंके प्रति व्यवहार और सम्बन्धित कष्टसे विभिन्न पारतपर बहुरा प्रभाव पड़ा है। जो ही जे० जेनेटने जो भारतके एक प्रमुख समाचारपत्रके मासिक हैं कुछ दिन पहले सन्धन डाइज्स्ट को एक पत्रमें लिखा था कि उन्होंने अभी हाककी अपनी भारत-यात्रामें यह देखा है कि अमीर और परीक महाराजा और मायूमी जीव इस व्यवहारपर घोर टीप प्रकट करते हैं और सब आश्चर्य करती हैं कि साम्राज्य-सरकार इसकी पूर देकर आक्षिप्त कर क्या रही है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस प्रश्नके सम्बन्धमें छोड़ें मार्सेयर भारतके कई भाषेति बहाव डाला जा रहा है। भारतके जो जोय साम्राज्यके अत्यन्त पहरे मित्र हैं वे द्वाग्तवाजमें और बलिष्ठ आक्षिप्तमों भी नाट्यीयोंको उचित व्यवहार प्राप्त करनेके उद्देश्यसे आकाश-वास्ताक एक कर रहे हैं।

अब नाट्यीयोंको प्रभावित करनेवाले स्थानीय प्रश्नोंपर आते हुए हमारे प्रतिनिधिनें श्री गाँधीसे पूछा कि पिछले अविरोधममें स्वीकृत नाट्यीयोंके सम्बन्धित विधेयकोके बारेमें आपका अर्थ क्या है।

इस प्रश्नके उत्तरमें उन्होंने कहा कि यदि नाट्यीयोंके सम्बन्धित इन विधेयोंपर साम्राज्यकी स्वीकृति मिल जाये तो बहुत आश्चर्य होगा। उनमें एक सिद्धान्तकी स्थापना की गई है जो मुजाबजेका नहीं बल्कि अस्थीका सिद्धान्त है। विधेयके अराब परवाना-कानून (सिद्ध लाइसेंसिंग सेमिस्तेशन) और व्यापारिक परवाना कानूनकी समान बताया गया है। निश्चय ही दोनोंकी कोई तुलना नहीं की जानी चाहिए। सराजके परवानोंको एक बुराई और राष्ट्रीय बलका कारण माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि सराब-अर परिहितकुल समाप्त न किये जायें तो सीमित कर विधेय जायें। इसलिये स्वाभाविक है कि इन परवानोंके सम्बन्धमें कानून बनाया जायेगा या बनाया ही जाना चाहिए। बहुत-से अराब वर्तकी अर्थ कर दिया जाये इस सम्बन्धमें सभी बल एकमत हैं; किन्तु व्यापारिक-परवानों (ट्रेड लाइसेंस) के सम्बन्धमें स्थानीय पुरुषपह जो भी हों कोई भी नन्दीरतापुरुषक यह नहीं कह सकता कि इनकी सराब परवानोंके समान मानना चाहिए। मेरे विचारमें अबतक भारतसे पिरमिडिया मजदूरोंको प्रलोभन देकर मुलानेकी प्रचाली जारी है। तबतक, जहाँतक भारतीयोंका सम्बन्ध है, निश्चय ही नडात्ममें कोई धान्ति न होगी। परवाना कानून केवल एक बेकार ऊपरी उपचार है। यदि पिरमिडियोंका प्रभाव रोक दिया जाये तो हम देखेंगे कि भारतीयोंकी समस्या स्वतः हल हो जायेगी। नैडालमें वर्तमान आबादीके लिये काकी मुजाइम है और यूरोपीयोंकी आबादी स्वतन्त्र भारतीय आबादीके मुँहकी रोटी छीने बिना निश्चित करते जाँयें। किन्तु यदि पिरमिडकी प्रथा जारी रखी गई तो अबतक ही भारतीय

जवाबीमें बबरारस्ती बढ़ि होगी और कमस्वरूप मान्योसन होगा। निःसन्देह नेटालके कुछ उद्योगोंको पिरमित-प्रथा बन्द होनेसे प्रारम्भमें कुछ क्षति पहुँचेगी; किन्तु मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकता कि उपनिवेशमें एक स्थायी बुद्धि बृहत् मोजूद रहे। इसकी अपेक्षा ती जग उद्योगोंकी क्षति पहुँचने देना अधिक बर्छा है। उन बिना उद्योगोंकी मुभाबजा दे दिया जाये यह भी एक तरीका हो सकता है। किन्तु पिरमितिया मजदूरोंकी क्षाना क्षितनी बरबी हो सके बन्द करना चाहिये।

अन्तमें श्री गांधीने कहा कि इस मामलेमें भारतीयोंपर सर्वेस मरोसा किया जा सकता है, वे इस प्रथाको बन्द करनेके लिए उतने ही व्यग्र हैं जितना कोई उपनिवेशी हो सकता है। मैं केवल यही जानता करता हूँ कि श्री ईवान्स जिर्हूनि इस प्रथाके विरुद्ध अपना विहार मान्य किया है तबतक सम्मुष्ट होकर न बेंगे जबतक यह प्रथा समाप्त नहीं कर दी जाती।

[अप्रीलसे]

नेटाल मजदूरी, १-१०-१९८

४१ सार उपनिवेश-सचिवको^१

[अर्बन]

अक्तूबर, २, १९८

माननीय उपनिवेश-सचिव
श्री एम बर्से

नेटाल भारतीय कांग्रेसको आज हुआ है कि कुछ ब्रिटिश भारतीय यवर्नर^२ से बने हैं। उनके पास ट्रान्सवाल विवाहके प्रमाण हैं। प्रवासी अधिकारी बहाजपर बर्सेके अनुमतिपत्र नहीं देता। यात्रियोंमें कुछ मादाक्षिण बर्से हैं जिनके मादा-पिता ट्रान्सवालमें से उन्हें बने भाये हैं। अधिकारी कानूनी सहायकारोंको यात्रियोंके मिलनेकी अनुमति नहीं देता। कांग्रेस इस क्रूरता और अत्याय मानती है। प्रार्थना है, यात्रियोंके मिलनेकी अनुमति दें और अधिकारीको आदेश दें कि बहाजपर बर्सेके अनुमतिपत्र दे। कांग्रेस आश्वासन देती है ये लोग ट्रान्सवाल जा रहे हैं।

माइसकी^३

पार्थीवीके स्वाक्षरोंमें मूक अंग्रेजी मसबिरेकी फोटो-नकल (एच एन ४८८९) से।

१ सार "नेटालके बाले" करके पार्थीवीके हस्ताक्षर से। कभी एक प्रति ए०० बम्बू रिफ्लेक्स मजदूरको उपनिवेश-सचिवकी प्रेषित कर दी थी।

२ श्रीजनेरिल्लनी।

३ आकाश बज

४ नेटाल भारतीय कांग्रेसका सार्वत्रिक पत्र।

आजादीमें बबरदस्ती बृद्धि होगी और, कमस्वल्प, आशोकन होगा। नि-सन्धेह नेटालक कुछ उद्योगोंकी गिरमिट-प्रथा बन्द होनेसे प्रारम्भमें कुछ क्षति पहुँचेगी; किन्तु मैं यह सोचने बिना नहीं रह सकता कि उपनिवेशमें एक स्वामी बुद्धि बृद्धि मौजूब रहे इसकी अपेक्षा तो उन उद्योगोंकी क्षति पहुँचने देना अधिक बख्शा है। उन विशेष उद्योगोंकी मुआवजा से दिया जाये यह भी एक तरीका हो सकता है। किन्तु गिरमिटिया मजदूरोंको कमा बितनी बख्शी ही सके बन्द करना चाहिए।

अन्तमें श्री गांधीने कहा कि इस मामलेमें भारतीयोंपर सबैब भरोसा किया जा सकता है वे इस प्रयासो बन्द करनेके लिए उतने ही व्यर्थ हैं जितना कोई उपनिवेशी हो सकता है। मैं केवल यही आशा करता हूँ कि श्री ईबास मिहोंने इस प्रयासके बिच्छ भयना बिहार प्रारम्भ किया है तबतक सन्तुष्ट होकर न बँडेये जबतक यह प्रथा समाप्त नहीं कर दी जाती।

[संज्ञिकीसे]

नेटाल मर्चुरी १-१०-१९८

४१ तार उपनिवेश-सचिवको*

[उपेन]

दक्कन, २, १९८

मालनीय उपनिवेश-सचिव

पी० एम० बर्षे

नेटाल भारतीय कांग्रेसको बात हुआ है कि कुछ विदित भारतीय सरकार से बाने हैं। उनके पास ट्रान्सवाल विवासके प्रमाण हैं। प्रवासी अधिकारी बहाजपर अपनेके अनुमतिपत्र नहीं देता। भारतीयोंमें कुछ मावाकिन बन्दे हैं जिनके माता-पिता ट्रान्सवालमें से उन्हें लेने बाने हैं। अधिकारी कानूनी सहाहकारोंको भारतीयोंसे मिच्छनेकी अनुमति नहीं देता। कांग्रेस इसे कूरता और अन्याय मानती है। प्रार्थना है, भारतीयोंसे मिच्छनेकी अनुमति से और अधिकारीको आदेश दें कि बहाजपर अपनेके अनुमतिपत्र दे। कांग्रेस आरवाशन देती है ये तीन ट्रान्सवाल जा रहे हैं।

माइसकी*

गांधीजीके स्वाखरोंमें मूख बँडेयी मसबिरेकी फोटो-जक (एच एन ४८८९) से।

१ एररर "मेकके बाले" करके गांधीजीके बरवाखर से। इसकी एक मति ए०० बन्धू रिफ्ले

२ बरवाखरकी उपनिवेश-सचिवकी मेकि कर दी थी।

३ पी० एम० रिफ्ले

४ बरवाखर नाम

५ मेकके भारतीय कांग्रेसका एररर फटा।

४२ तार व० आ० बि० भा० समितिको'

उपन

बन्गुर २, १९८

दक्षिण आस्ट्रिया ब्रिटिश भारतीय समिति

सम्बन्ध

कांग्रेस स्वयम्। कोमान्डोसुटमें ८ से अधिक विरतदार। नाबाकिंग बन्गुरो सहित बम्बईसे आये द्वायबाळ प्रमाणपत्र-बारी देख् भारतीयोंको द्वायबाळके निकासी पास (ट्रायडि पास) देनेसे इनकार। कारण वे नया कानून न मानेये। द्वायबाळ अधिकारी उन्हे बमका रहा है। नेटाळ अधिकारी उसको सहायता कर रहे हैं। कानूनी सजाहकारको उससे मिलनेकी अनुमति नहीं दी गई।' कांग्रेस इसे नाबामय बबाब मानती है। नतीजा होया अोग द्वायबाळकी अबाअरोंमें अधिकारके लिए अङ्गनेके अबाअरसे बचित हो आवेगे।

नेटाळ भारतीय कांग्रेस

पांशीबीके स्वाअरोंमें अंग्रेजी मसबिरेकी फोटो-नकल (एस एन ४९१३) और ककोनियळ ऑफिस रेकर्ड २९१/१३२ से।

१ दक्षिण आस्ट्रिया ब्रिटिश भारतीय समिति (राज्य आस्ट्रिया ब्रिटिश इण्डियन असेसिमेन्स) को मेरे इस तारका पांशीबीके स्वाअरोंमें लिखित एक अंग्रेजी मसबिरेका अद्य-अद्य है और अन्धा केवल पत्रक पूरा अकल्प है। इस अन्धके अन्तिम अङ्क है "कीक केवबालर (कानूनी सजाहकार)। किन्तु पूरा तार ककोनियळ ऑफिस रेकर्डमें अकल्प है। इस तारकी एक प्रति भी एक अकल्प दिखे ३ अकल्पकी ककोनियळ-अकल्पोंको मेरे दी थी।

२. अङ्गनेके एक अखिल बडीक रोमर टॉन्सअन्के २ अकल्प, १९०८ के अन्धे अन्धे भारतीय अगली-अकल्पके अधिकारी (इंडियन एसिमेन्स टिरेकुलन ऑफिसर)की लिखा था "मुझे यह भी पता था क्या था कि इस भारतीयके कानूनी सजाहकारकी हैसियतसे मुझे अन्धे मिलनेकी अनुमति देनेसे अकल्प कर दिया था है; और इस अङ्क अङ्क वह दुबिया एक अङ्क ही था है, जो अन्धे अकल्पकी भी अङ्क होती है। क्या वह अकल्पमें ऐसी है? बरि अङ्क ही अकल्प मुझे अन्धे मिलनेकी लिखित अनुमति अकल्प करे।"

४३ पाश्चिम्योक्ति लिए मसबिवा

[अक्टूबर २, १९८१]

बेसामोबा-बेदे कोमोटीपूर्वके रास्ते ट्रान्सवाल्डमें अपने बरोंके लिए बाते हुए बहुत-से भारतीय भाषियोंके साथ किये गये कथित दुर्घटनाकारसे जुगुब होकर हम जोहानिसबुगभासी पादरी बम और मानवताके मामपर, ट्रान्सवाल्ड सरकारसे अनुरोध करते हैं कि वह इन आरोपोंकी तत्काल साबधानीपूर्वक जाँच करवये और मान्य प्रमाणोंके आकारपर ऐसी कार्रवाई करे जिससे न्यायकी रक्षा हो।

हम यह प्रार्थना भी करते हैं कि बेकडे मौतकी कुछ पीत्रोंके सम्बन्धमें एशियाईयोंकी बार्मिक आपत्तियोंका समाधान रखा जाये तथा वर्तमान कठिनाइयोंके एन्टीपजनक समाधानके लिए एक बार फिर प्रयास किया जाये।

डोक
फिरिप्स
हॉवर्ड
टिंकम्ब
कॅनन बेरो
डॉ० हंटर
बेरो
लेंडर ब्लॉप

पेंथवडे जिसे मूल बंपेजी मसबिदे (एच एन० ४८८५) से।

४४ नेटालके गिरमिटिया

जर्मनका नेटाल ऐक्टवाइजर नामक समाचारपत्र निश्चित रूपसे भारतीय समाजका पत्र है, किन्तु उसके सम्पादकसे भी भारतीय गिरमिटियोंका कुछ सहज करते नहीं बनता। उसने एक बड़ी टिप्पणीमें यह सिद्ध किया है कि गिरमिट प्रवाहके कारण भारतीय विश्व स्थितिमें एसे है, उसमें और बाधगामें बहुत अन्तर नहीं है। इन गिरमिटियोंका कारोबार प्रवासी-न्यास (इमिग्रेशन ट्रस्ट) नामका मण्डल चलाता है। इस मण्डलके सदस्योंका चुनाव गिरमिटियोंको गीकर रखनेवाले कोरे करते हैं। उनके हाथमें गिरमिटियोंके लिए आनसक चिकित्सकोंका भी चुनाव है। डॉक्टरोंपर गिरमिटियोंका कुछ बहुत हद तक निर्भर रखा गया है। अब यदि डॉक्टरोंकी टोत्री गिरमिटियोंके मालिकोंपर आचारित हो टी साधारण ठौरपर वे डॉक्टर

१ यह मसबिवा अक्टूबर १९८१ में प्रकाशित किया गया था जो भारतीय गिरमिटियोंके सम्बन्धमें प्रकाशित किया गया था।

२. इलाहाबादके नम्र पत्रोंकी सिद्धांतों हैं।

स्वतन्त्र विचार प्रकट नहीं कर सकते। उदाहरणके लिए, यदि कोई डॉक्टर ऐसा कहे कि अमुक भारतीय काम करनेके योग्य नहीं है, तो उस गिरमिटियाके मासिकको न केवल बीमारीकी उस अवधिमें उसके भयके साथसे बंधित रहना पड़ेगा बल्कि उसकी दवा-बास्का खर्च भी उठाना पड़ेगा। इस तरह यदि कोई डॉक्टर अपने कर्तव्यका पालन करता है, तो उसपर मासिकके नाशुच हो जानेकी सम्भावना है और जब अपने कर्तव्यके साथ अपने स्वाभका सजाव लड़ा हो जाता है, तब बहुत-से आदमी कर्तव्यको तिर्नाजति देकर स्वार्थ साधने लगते हैं। इसलिये ऐम्बर्टाइडर का कहना है कि डॉक्टरोंको गिरमिटियोंके मासिकके बंधुधरे बाहर रखना चाहिए। जो भारतीयोंका संरक्षक (प्रोटेक्टर) कहलाता है उसकी स्थिति भी लगभग वैसी ही विषम है जैसी कि डॉक्टरोंकी। यह संरक्षक ग्यासी-संघस (ट्रस्ट बॉर्ड) का सदस्य होता है और चूंकि उसके अधिकतर सदस्य गिरमिटियोंके मासिक हैं इसलिये संरक्षककी आवाज मन्दाकारनामें सुरीकी आवाज-वैसी ही जाती है। इसके अतिरिक्त ऐम्बर्टाइडर कहता है कि यदि गिरमिटिये काम छोड़ बैठें तो उन्हें जेल भोगनी पड़ती है। साधारण नीकर नौकरी छोड़ता है तो उसका मासिक उसपर फकत बीबानी बाबा बायर कर सकता है किन्तु गिरमिटियेके मामलेमें जो कैदखाना ही है। ऐम्बर्टाइडर कहता है कि इस स्थितिका नाम बाधता है। और फिर उसके सम्बन्ध उपनिवेशके मोर्चोंको छाहा देते हुए कहते हैं कि भारतीयोंकी गिरमिटिके अमान माना बन्द किया जाये और गिरमिटिके कानूनमें फेरफार किया जाये। गिरमिटियोंकी स्थितिकी सुधारकेका यह बहुत उपयुक्त अवसर है। किन्तु हम मानते हैं कि गिरमिटियोंकी स्थितिमें वास्तविक सुधार अवम्भव-ही बात है। गिरमिटि [की प्रथा] बन्द करना ही उसका वास्तविक उपाय है। मॉरिछसके एक भारतीयकी गिरमिटिकीका अनुभव हिन्दुस्तानके किसी समाचारपत्रमें प्रकाशित हुआ है। हम उस संक्षेपमें इसरी बगइ दे रहे हैं।^१ सम्भव है कि उस लेखमें कुछ अतिशयोक्ति हो फिर भी इतना तो निश्चित है कि गिरमिटि बहुत अमानक बन्दु है और सत्कारके किरी भी मानमें गिरमिटिया भारतीयोंकी हास्य बन्धी नहीं पाई जाती। सत्कारका इतिहास देखनेसे मालूम होता है कि पहले गुलामोंको सामान्यतः पशुओंकी बगइ और पशुओंकी तरह रखा जाता था और ज्यों ही बड़े-बड़े पतलके प्रचलते कानूनबन्धत गुलामो बन्द हुई, त्यों ही वह दूसरे रूपमें बाधित हो गईं। किन्तुहाव जहाँ-जहाँ भारतीय अवका इसरी क्रमके गिरमिटिये देखे जाते हैं वहाँ-वहाँ अवका उसके साथसाथ पहले गुलाम रने जाते हैं। सन्निवृत्तामी व्यक्तिकी प्रकृति दूसरे व्यक्तिज्योंको जबरदस्ती दबाकर रखनेकी होती है। इसलिये इस प्रकृतिये उत्पन्न दुर्गोंको दूर करनेका एक ही इलाज है कि कानून उनके अधिकारोंकी दूर बाँध दे यानी गिरमिटिके द्वारा लोगोंकी मजदूरीस साथ उठानेका सत्ता कानूनके बन्द कर दिया जाये। इसलिये नेताके भारतीयोंका इस विषयमें मुख्य कर्तव्य तो यह है कि बड़े आन्दोलन द्वारा — सरयाप्रहका भी प्रयोग करते — गिरमिटिका विनाश करायें करें।

[सूत्रपत्तीधे]

इंडियन ओपिनियन ३-१ -१९८

सोच हमें कितनी ही बार कह बीर लिख चुके हैं कि द्वांसवाक्यों सत्याग्रहका जो संघर्ष चल रहा है, जिसे हम प्रोत्साहित के रहे है तथा जिसके लिए हम अपनी कुर्बानियाँ कर रहे हैं उसकी धारीकी-धारी मेहनत बेकार है। हमारे ये सत्याग्रहकार हमसे यह भी कहते हैं कि दक्षिण आफ्रिकामें मुट्ठी-भर भारतीयों का विचार करने हैं उनके लिए ऐसा प्रयास करना ठीक नहीं लगता। और फिर किसी-न-किसी दिन भारतीयोंको यह वेद छोड़ना ही पड़ेगा। इसलिये यह सब चुनावी बाबूज पामेपर की गई चुनावी-बैसी मानी बामेयी।

ऐसे विचारोंसे हमारे अनेक पाठकोंके मनमें संका उत्पन्न हो गई है। अब इसके बारेमें थोड़ा विचार करें।

अगरका सर्व मितास्य भ्रामक है ऐसा हम निश्चय कह सकते हैं। इस प्रकारकी दलील देस करनेवाले सत्याग्रहके सम्भार अर्थात् उसकी बुद्धीको नहीं समझते। यह विचार कि अन्ततोगत्वा दक्षिण आफ्रिकासे भारतीयोंको निकलना ही पड़ेगा कोई मितासाका है। ऐसा होनेकी हमें कोई सम्भावना दिखाई नहीं देती। भारतीय समाजमें थोड़ा बहुत भी सत्याग्रह हो तो यह माननेका कोई कारण नहीं है कि हमें यह वेद छोड़ना ही पड़ेगा।

यदि वेद छोड़ना पड़े तो भी सत्याग्रहका काम तो मिला ही चुका होगा। सत्याग्रह इसलिये नहीं किया जाता कि उससे अधिकार मिलते हैं। हकका प्राप्त होना तो परिणाम है सत्याग्रह परिणामपर दृष्टि रखे बिना किया जा सकता है। अन्य प्रयासोंके अन्तमें बाँधित एक न मिले तो प्रयास अर्थ न माना जाता है। उदाहरणार्थ कोई व्यक्ति किसीको मारकर उसकी धारदार चीज लेनेका इरादा करता है और फिर उसे मार नहीं पाता जबवा धारदार प्राप्त नहीं कर पाता तो हाथ मस्कर रह जाता है और सम्भवतः उसे अपने जीवनसे हाथ धोना पड़ता है। सत्याग्रहमें एक प्राप्त होता है या नहीं इसकी परवाह नहीं की जाती क्योंकि एक न मिलनेपर भी अन्तमें हाथ मस्करनेको बात नहीं रहती। मले ही द्वांसवाक्यों संघर्षके अन्तमें कौनो कानून काममें रहे जाता किन्तु जो सत्याग्रही हैं वे तो विजयी ही रहते। उनके प्रयाससे समाजका मुकसान नहीं होता। यही बात दूसरे स्थानोंमें जहाँ तो कहा जा सकता है कि सत्याग्रह सच्ची शिक्षा है। हम शिक्षा अमुक उद्देश्य — मान लीजिए कि औद्योगिक कामानेके उद्देश्यसे — लते हैं फिर भी सम्भव है औद्योगिक न मिले। शिक्षा तब भी व्यर्थ नहीं जाती। इसी प्रकार सत्याग्रह प्राप्त किया ही उसके लिये बुद्धि उठाया ही और इससे हमारा मनोबल बढ़ा हो तो यह अमूल्य शिक्षा — काम — कभी व्यर्थ नहीं जाती। जो सत्याग्रही हुए और रहे हैं वे संघर्षके किसी भी भागमें जाकर अपने सत्याग्रहका काम उठा सकते हैं।

इसके सिवाय यदि सत्याग्रहके लक्ष्यकी जाँच करें, तो यह हमेशा एक ही होता है — बानो बचता। अब इसका कोई परिणाम न मिले तो समझना चाहिए कि ऐसा सत्याग्रहकी कमजोरीके कारण नहीं बल्कि हम सत्याग्रहमें जुस्त नहीं रहते इसलिये हुआ है।

[पुनरावृत्ति]

इंडियन ओपिनियन ३-१०-१९८

४६ हमारा काम

जो लोग इस समाचारपत्रके प्रकाशनमें सचे हुए हैं वे जोरे हों चाहे माछीन उनका उद्देश्य मनुष्यमात्रकी सेवा करना है। भारतीय समाजकी सेवा करना योरी और फीनिक्समें रहनेवाले भारतीयों कोरोंका पहला काम हो गया है। उसका कारण स्पष्ट है। भारतीयोंके लिए तो भारतीयकी सेवा उचित ही है यदि वे उसे न करें और मनुष्य मात्रकी सेवाका बॉय करें तो वह बॉय ही होया सेवा नहीं होयी। उसे सेवा नहीं कहा जा सकेया। जो जोरे हमारे साथ हो गये हैं वे पहले अपना बन्धा करते थे। उनके सामने योरे समाजकी सेवा करनेकी कोई बात नहीं थी। उनका हउरा स्वाबमय जीवन छोड़कर परमार्थमय जीवन व्यतीत करनेका या इसलिये उन्होंने इस समाचारपत्रमें सहयोग देना निश्चित किया। हमारी ऐसी ही चारबा है।

किन्तु हमारा काम केवल बसबाद निकासकर बैठ रहनेका नहीं है। जो लोग फीनिक्सम विचारपुर्क रह रहे हैं उनका हेतु अपनेको शिक्षित करना तथा उस शिक्षाका काम भारतीय जनताको देना है। इस कारण समाचारपत्रका काम करनेवाकोंमें जो लोग पढ़ानेका काम कर सकते हैं वे अपना समुक्त समय उन बच्चोंकी शिक्षामें लगाते हैं जिनका कालन-याकन फीनिक्समें हो रहा है। इस प्रकारका प्रबन्ध कुछ महीनोके चक रहा है। यह शिक्षा देनेके लिए उन्हें कोई वेतन नहीं मिलता वे वेतनकी आशा भी नहीं रखते।

फीनिक्समें फिलहाल इतने योड़े बच्चे हैं कि उनके लिए महरसेकी निजी हमारत बनाना आवश्यक नहीं है। श्री कोरिबने^१ इस कामके लिए अपना मकान दे रखा है।

शिक्षा यूनानी तथा अंग्रेजी दोनों माध्यमोंसे दी जाती है। और साठैरिक विकासकी और ध्यान दिया जाता है। बच्चोंमें नीतिकी माननाका पोषण हो इस बातपर विशेष ध्यान दिया जाता है।

हमारा उद्देश्य यह है कि ऐसी शिक्षा सभी भारतीय बच्चोंको दी जा सके। जनी विशेषतः उन्हीको शिक्षा देनेका विचार है जो फीनिक्समें रहते हैं क्योंकि बच्चोंका व्यवहार पाठशालामें एक प्रकारका और घरमें दूसरी प्रकारका रहे, तो उसके उनका द्वि-सावन नहीं होता।

इस पाठशालाकी बात जिन लोगोंमें सुनी है, उनमें से कुछ लोग अपने बच्चोंको फीनिक्समें रखनेकी माँग कर रहे हैं। किन्तु हमारे पास कालाबास अथवा पाठशालाकी हमारतकी सुविधा न होनेके कारण हम उनकी माँगको स्वीकार नहीं कर पाये हैं।

ऐसे मकान बनानेकी सुविधा हमें विचार नहीं देती। उन हमारतोंको बनानेके लिए पैसेकी बरूरत है। इसलिये हमारे पाठकोंमें से जो उक्त पदतिके अनुसार पाठशालाकी स्थापनाकी आवश्यकता मानते हों उन्हें चाहिए कि वे हमें अपने विचार लिख भेजें और यदि

१. यह कार्य निरंतरिकर ही चलैतिके प्रति मेध-माल रखते थे और कुछ समय तक फीनिक्स क्लबके अध्यक्षक रहे थे। उनकी मृत्यु १९१९ में देवाग्राममें हुई।

हमें उनसे पैसैकी मदद मिले तो हम पाठ्याला और छात्रावास बनानेके लिए तैयार हैं। उसमें होनेवाले कार्बके लिए म्यासी (ट्रस्टी) नियुक्त किये जा सकते हैं और इमारतके कार्बका धारा विवाह प्रकाशित किया जा सकता है। यह काम बड़ा है, इसलिए हम बहुत सोच विचारके बाद अपने पाठक-वर्गके सामने इसे रख रहे हैं।

[युवराजसिंघे]

इंडियन ओपिनियन, ३-१ - १९८

४७ 'बोहानिसर्गकी घिठठी'

इस्तमशीका सन्देश

कैदियोंकी तरफसे भी इस्तमशीने कहनामा है। समझौतेके विषयमें उतावली न कीजिएगा। सबकी सही से सँभलें। ये उन्हींके धर्म हैं। इनसे बेछासियोंकी हिम्मत प्रकट होती है और यह भी बाहिर होता है कि भारतीयोंका अपना कर्तव्य क्या है।

पेतापत्नी

ज्ञात हुआ है कि चर्चर नामक बहाज भारतीय मुसाफिरोकी सेकर इर्बन धानबासा है, तथा श्री चैमने उन मुसाफिरोसे बहाजपर ही बर्जी लगे। इसपर बेछासियोंके मुसाफिरोको पेतापत्नी देनेके लिए श्री इस्माइल मंगा श्री इस्माइल हुसीमभाई, श्री होरमश्री एवम्श्री श्री मानवी बुजमदास तथा श्री बुजबास लासचन्दके नाम औरन तार दिये गये कि वे मुसाफिरोको धारवान कर दें कि वे सरकारी जालमें न पड़ें वे सब उतरें और बहूँसे संपन्न करनेके लिए दान्यबास जायें। इसीबारे एक दिनका फर्क पड़ गया इसलिए किसी व्यक्तिको विषय रूपसे भेजना सम्भव नहीं हुआ। श्री कामा तथा श्री नागी जानेके लिए तैयार हो चुके थे।

बेछियोंकी सुराक

बिटिस भारतीय सब और सरकारके बीच कैदियोंकी सुराकके सम्बन्धमें लड़प होती रहती है। एकके बारेमें जो तकलीफें जा पड़ी हैं। मुबह पूरा दिया जाता है। तसम्बन्धी लड़ाई भी काठकिया कर रहे हैं। अब जेलके अधिकारी कहते हैं कि भिन्न-भिन्न जेलोंमें बोहनकी व्यवस्था बहुत-बहुत है। इस विषयपर सरकारसे विभिन्न नियमावतियोंकी मर्कसे मानी गई है।

'बेसी मेस'में टीका-टिप्पणी

उक्त विषयपर गत सप्ताहके 'बेसी मेस' में टिप्पणी दी है कि कारावासमें भारतीयोंकी भी जानेवाली सुराकके बारेमें सारे उपनिवेशमें कोई एक भिन्न पद्धति नहीं है। यह बहुत आवश्यकता बाट है। एक जेलमें भारतीयोंकी उनकी अपनी सुराक भी जाती है और दूसरे स्थानपर उन्हें यकीनका भाटा और चर्ची भी जाती है और यदि वे इस म से तो उन्हें भूला

१. कभीकी इस तब बर्बने ने इन्डियन क्लबमें बहूँ करने के लिये भी बर्बने के पार कलियाई हैं, कभी किन्हीं नहीं मानी थे उन्हीं। नदुपारने किन्हींके उन बर्बनोंको भेज दिया गया है।

एह जाणा पड़ना है। बेबी मेल् कहता है, हमें जगता है कि जो सिकायत की गई है वह यथार्थमें प्याग रेल योग्य है। एक सच्चा हिन्दू वर्षाको छूनेके बदले अपनी मीठ पसन्द करेगा। इस देशमें हम जिस बेतरी सजा देते हैं उसे वहाँ मूबा रखनेकी सजा नहीं देते। जेजमें यदि कोई पीटा धाकाहारी हो और उसे हम भांसाहार करनेके लिए बाध्य करें तब वह न चाये तो उस मूबा रखनेको कहे बचवा किसी यहूदीसे ऐसा कहे कि तुम्हें वर्षा बाणी हो तो लामो और कुछ नहीं मिलेगा तब तो बबरबस्त फोछाइस उठ सड़ा होया। बचवा जो सोझ-झिस्की न पीटा हो उससे कहे कि तुम्हें पीनेके लिए सोझा या झिस्की मिलेगी और बबर नहीं पिबेगे तो प्यासे एह्मा पड़ेगा तो बड़ा घोरपुत्र मच चायेगा। भारतीय चाहे जिस बेजमें हों उन्हें उनका चाबक और भी तो दिया ही जाना चाहिए।

बैमले नाकाबिध!

श्री बैमले अपने परके^१ लिए बिल्कुल अयोग्य हैं ऐसा श्री गांधी बबरस स्मट्सको कई बार बता चुके हैं। श्री मार्वीको^२ एक महीनेकी बेरकी सजा हुई, यह तो ठीक हुआ। मैं इसके लिए श्री मार्वीको बचार्द देता हूँ। किन्तु जब श्री मूखरी पटेक तथा श्री हरिबाब मार्वीको छोड़ दिया गया तब श्री मार्वीको सजा किस जमाखसे दी गई है? श्री मार्वीके पास भी अनुमतिपत्र (परमिट) और पंजीमन प्रमाणपत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) हैं। जिसप्रकार अगरेके दोनों व्यक्तियोंको मने कानूनके अन्तर्गत जर्जी देनेका अधिकार है उसी प्रकार श्री मार्वीको भी है। श्री मार्वी जर्जी देनेवाले नहीं हैं यह इसरी बात है। किन्तु छद्मी कहा जाये तो सरकारको दो महीने तक उन्हें पकड़नेका कोई हक नहीं था। श्री पोखरने इस मामलेकी बहुत ही कड़ी आलोचना की है। और यह मुकदमा होनेसे हमारा फायदा ही हुआ है। किन्तु यह सब लिखनेमें येरा उद्देश्य यह है कि श्री बैमलेको हुटानेके लिए इस बार ब्रिटिश भारतीय सचको जर्जी देना जरूरी हो चायेगा। मैं श्री बैमलेके पेटपर सात नहीं मारना चाहता किन्तु जो अधिकारी अपने कामको बिल्कुल ही न समझे उससे समझका कोई काम होनेवाला नहीं है।

इसरी और बेजों तो ऐसा जान पड़ता है कि श्री बैमलेकी बेबकूपीके कारण भारतीय समाजको डाय हुआ है। यदि उन्होंने यन्भीर भूलें न की होतीं तो हमारा हुटकारा ब्रिटनी पीछवासे हुआ है उतनी पीछताये क्वापि न होता। और जो-कुछ बाकी एह पया है, उससे भी श्री बैमलेकी भूलोंके कारण हमको जस्वी ही हुटकारा मिलेगा।

हिम्मतसे भर पत्र

कानूनके हुकमे पीड़ित एक मरीच भारतीय ने जिसका पत्र मैं पहले ही चुका हूँ^३ इस बार अपना काम कर्णोंकी परवाह न करके सत्याग्रहमें बूठ जानेवाला रखकर लिखा है कि उक्त पत्र उमने हारकर नहीं लिखा। उमने बहुत-से कोपोंके पिचारोंको सित प्रकट किया है। यह लिखता है कि मनके साथ हम तन और बनकर नाता नहीं बोजते। जो करम बाप

१. दैजिड अन्व २, एड ४२८-२९ अन्व ७ एड ३५९-६ और ४६६।

२. एड अन्व ३।

३. दैजिड अन्व ३५९-६ एड ३६६।

उद्योगों में वह समीचे किए हैं। ऐसा मानकर आनेवाली आशंका का स्वागत करते हुए मैं उन्हें स्वीकार करूँगा। जो हिम्मतके साथ सत्यपर विश्वास रखकर सत्याग्रहका व्यवस्था किया रहता है वह विजयी होता है।

मैं इस सत्याग्रहकी बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वह अन्ततक अपने आप पर बड़ा रहेगा।

[मुजरावीसे]

इंडियन ओपिनियन ३-१ -१९८

४८ तार व० आ० वि० भा० समिति

जोहानिसबाग

बम्बुर ३ १९८

दक्षिण अफ्रीका रिटिड माखीय समिति

[अखत]

अठ्ठावन भारतीयोंपर जोमाटीपुर्टमें मुकदमा चलाया गया है। उपनिवेशके बाहरसे नये कानूनके अन्तर्गत अर्जी दिये बिना उपनिवेशमें आनेके कारण नये कानूनके साथ मिश्रकर प्रवासी कानून भी लागू। सभके पास शान्ति-रक्षा अनुमतिपत्र^१ मिलकर पंजीयनपत्र (मिखतर एडिस्ट्रिबल) या अन्य प्रवेश अधिकारपत्र मौजूद। सभी सभके अर्से ट्रान्सवाल्के अधिकारी। भारत यात्रासे अभी-अभी आये। दो मासके कारावास या २५ पीड जुमानिकी सजा। असाबा नामसुख एडियाई कानूनमें प्रवेशके बाद आठ दिनोंके भीतर पंजीयनकी अर्जी देनेका अधिकार होतपर भी निर्वासन-आदेश। अथवा नावासिय बीसत उम्र ग्याह् वर्ष उपरुक्तके अन्धे रोक दिये गये। समाज सुख। पुराने अधिकारियों उनके अर्से धाय निपिड प्रवासियों सैसा व्यवहार। बहुत बड़े द्विद सतरेनें। कोमोका निर्वासन न होता चाहिए। समाज पुराने कानूनकी रर कटने और कठिनतम प्रवासनिक परेलाके अन्तर्गत सुवचकृत भारतीयोंके प्रवेशकी व्यवस्था करवानेपर बूढ़। अत्यधिक कष्टकी आवश्यकता।

मो० क० गांधी

[अर्सेजीसे]

कलोनियल ऑफिस देरहईस २९१/१३२ नवंबरकी दफ्तरी फाइल १८/१/१९०८-भाग ३ और १०-१०-१९८के इंडियन ओपिनियन से।

१ साम्म अफ्रीका रिटिड इंडियन समिती।

२ पीड विमोक्षण एडिसि।

४९ तार ३० भा० प्रि० भा० समितिको

बोहानिसवर्ष
जन्तुदर ५, १९८

दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समिति^१
कन्दा

भाण्ड-माशासे डेन्नागोत्रा-बैके रास्ते उपरिबार ट्राण्डबाळ मीटले भारतीयोंमें संघके मुठपूर्व धम्मसाके माई, पत्नी बच्चे ८ वर्षको बच्चेसे बीमार बूझी मां शामिल। बीमाटीपुटमें १७ नाबालिग रेकगाड़ीसे उतारे गये। बहू ८ स्त्री पुत्रप बच्चे एक छोटे गन्ने कमरेमें ठूँस दिये गये थे। स्त्री-बच्चे छारी रात छारे दिन कुत्तेमें रखे गये। छत्र ही दिन बिना भोजन। भूखे स्त्री-बच्चोंको रोनाके कारण जाने जानेकी अनुमति। छेप फाकिरोंके मोटर ठेकोंमें कारबटन भेजे गये। पुनिसने बहूके भारतीयोंको उठूँ जाणा बेनेसे रोका। बलीक करला पड़ा। नाबालिग अब भी कैद। हो रास्ते—स्वानोद लोपोंसे खैरात या बेज। साम्राज्य-सरकारसे बर्बर, अमानुषिक व्यवहार रोकनेके लिए तुल्ल इस्त्रोपकी प्रार्थना। कुछ बेकोंमें शामिल दृष्टिसे बसूड भोजन प्रदान। फलतः आधिक मुक्तमरी।

मो० क० गांधी

[बंधीजीसे]

कन्नोनिमल बॉफिस रिकॉर्ड्स २९१/११२ तथा बर्नरकी बपटरी फाइल १४१/१९ ८-
माय ३ से।

५० पत्र खे० जे० डोकको

किंग एडवर्ड्स होटल
कोलकाता

गुरुवार, [अक्टूबर ८ १९८]

मिय श्री डोक

मुझे आपका पत्र^१ फीनिक्समें मिला। जिसकी वाधा भी नहीं हुआ। मेरे विचारमें यह बच्छा ही है। मैं ठीक समयपर ही आया हूँ। यहाँ भी वहाँमें गम्भीर मतभेद था। वह अपनी निश्चय ही समाप्त नहीं हुआ है। आप कहेंगे कि मने आयोजन पूरा होना पहले ही आविश्य स्वीकार कर लिया। मेरे विचारमें ऐसा करना आयोजन की आविश्य आवश्यकता स्वीकार करनेकी अपेक्षा अधिक बच्छा था। और आखिर मैंने कुछ किया भी तो नहीं है।

मैं एक दिन एक पत्र-स्यवहार कर सकता हूँ। यदि आप सोचें कि मुझे किन्हीं प्रश्नोंका उत्तर देना चाहिए, तो लिखें।

अब यह पत्र समाप्त करना होगा क्योंकि मुझे अबकुम्भीके निष्ठाग देनेके लिए बुलाया गया है।

गौडिको^२ मैंने पत्र नहीं लिखा इसलिए आपका उत्तर देती औरसे जमा-याचना करूँ।

आपका हृदयसं

मो० क० गांधी

गांधीजीके स्वागतमें मूल संदेशी प्रति (पी एन ४ १३) से।

वीरगंज ही एम डोक

१ गांधीजी द्वारा कोलकाता केन्द्रों द्वारा गंगा काम) के अक्टूबर ७ १९८ को डोककी उपाय मीनेके लिए की वेकमें भिजे गये थे।

२ डोकका ३ डिसेम्बरका पत्र। देखिए परिशिष्ट ३।

३ डोककी क्वार्टी, की वक्तमें अपनी रीतिरिवाजमें मिथानी ही थीं। उनसे ३ डिसेम्बरको गांधीजीको उनके कल-विषय (१ अक्टूबर)के अक्टूबरका यह पत्र-स्यवहार करते हुए पत्र लिखा था कि "यह पत्र दिन बर-बर आते"।

५१ सेठ शीघ्र क्यों नहीं झूटते ?

बहुत-से भारतीय उपर्युक्त प्रश्न कर रहे हैं। उत्तर यह है कि हमारे सत्याग्रहमें कष्ट है। सत्याग्रहका संघर्ष वैचारिक-बला है। गाड़ी बिलगी मजबूत हो उठना ही बोल हम उसपर काद सकते हैं। अधिक बोल आदनेसे गाड़ी टूट भी जा सकती है। सत्याग्रहकी गाड़ीके विषयमें भी बसा ही समझना चाहिए। सेठ लोग समाजके द्विप बेल बने हैं। उनके बुद्धोंकी गाड़ी अन्य भारतीयोंका मुकलीकी बीसा उठा सकती है, इसमें सन्देह नहीं है। किन्तु यदि उस गाड़ीको आगे बढ़ानेके लिए दूसरे उसकी बुद्धीमें हाथ धरार्ये तो वह टैनीसे बक सकती है। यदि बुद्धीमें हाथ लगानेबासे लोग न मिले तो वह रास्तेमें पड़ी रहेगी। गाड़ी टूट जायेगी तो बाध तो नहीं है किन्तु मजिस्तर पर पहुँचनेमें बकत जोगेगा। इसमें सत्याग्रहका कोई रोग नहीं है। जो समय बीगठा बका जा रहा है उससे बाहिर होता है कि सत्याग्रह बिलना चाहिए उससे कम है। इसलिये गाड़ीकी बाल बीनी है। यदि सत्याग्रहमें भाग लेनेबासे लोग अधिक हो आये तो गुरल झूटकारा हो सकता है। यह धमकना बिलकुल बासान है।

नेटालमें सेठोंकी बिदा देनेके लिए संकड़ों भारतीय गये। उनके पीछे जानेके लिए उनमें से बहुत-स तयार थे। किन्तु अब बक समय जा पहुँचा है। अब नेटालसे बिलक ठेरु भारतीय सामने आये हैं। काम करनेके लिए बहुत जोग तैयार थे किन्तु समय जानेपर वे नजर नहीं आये। हरएक ऐसा सवाल करता मानूस होता है कि मुझे इससे क्या फायदा? किन्तु वे यह बात मूल बाते हैं कि सत्याग्रह दूसरोंके ही कामके लिए बक सकता है। उसमें अपना नाम भी सामिक है यह ध्यान रखनेकी जरूरत नहीं है। नेटालने ऐसा नहीं किया। इसमें नेटालका रोग नहीं है। इससे केबल इतना ही बाहिर होता है कि हमें अभी पूरा अनुभव नहीं है, सहनशक्ति नहीं है, ज्ञान नहीं है। ये सब बाते हमें समय पाकर आयेगी। सबक बाधित परिणाम होनेमें समय कने तो हमें मधीर नहीं होना चाहिए।

इस बीच जो लोग सत्याग्रहको समजते हैं उन्हें उसमें जुस्त रहना चाहिए। मकेमा मनुष्य भी सत्याग्रही रह सकता है। और यदि वह ऐसा करे तो कहा जायेगा कि उसने अपने कर्तव्यका पूरा पानन कर लिया। इससे अधिक करनेकी बाध ही नहीं है।

[बुनराठीसे]

इंडियन बीपिनियन १०-१-१९८

५२ नेटालके कुछ प्रश्न

नेटालके माखीयोंकी स्थिति हम निर्नोदिन विनइती देख रहे हैं। यहाँकी वर्तमान सरकार एकदम खराब बिना पेंडोको बीर माखीयोंके सम्बन्धमें आपरबाह है।

व्यापारियोंको परवानों (लाइसेंस) की तकलीफ़ शुरू होगी।

मुक्त गिरमिटियोंको कर देना पड़ता है, इससे वे पिछे जा रहे हैं।

जो गिरमिटियोंमें गुलामी भोग रहे हैं उनके मासिक उनका बुरा हाक कर रहे हैं।

नये प्रुस्मी कानून बनते जा रहे हैं।

पाठशाळाओंको जो धन दिया जाता करता था उससे कम दिया जाने लगा है।

बीरह बर्से अधिक उम्रवाले बच्चोंको प्रवेश नहीं दिया जाता।

इस सबके लिए क्या उपाय किया जाये? अर्जी बें मा नहीं? जबसि फायदा होगा? बनर न हुमा तब क्या किया जाये? सत्याग्रहकी सजाई खेड़नेकी बात की जाने ती सब बन्ध-मन्धन सड़ें मा साम-साध?

इन तमाम सवालोंने अबाब हमें बेर्मपूबक सोच निकालने चाहिए। अर्जी तो वेनी ही चाहिए, किन्तु उसके पीछे बळ चाहिए। बह बल सत्याग्रहसे प्राप्त होता है।

किन्तु सत्याग्रह ती बही व्यक्ति कर सकता है, बिचने सत्यको जान किया है। यदि हम सत्यको जानकर उसके मुताबिक आचरण करते हों तो उपर्युक्त कुछ हो ही नहीं सकता। तो प्रश्न यह है कि सत्याग्रहकी सजाई कैसे करी जावे। उत्तर यह है कि सत्याग्रहकी सजाई खेड़नेका अर्थ यह है कि हम बीरे-बीरे सत्य ग्रहण करते रहें। जिस इर तक हम उसे ग्रहण करेगे उस हक तक [इसारे] दुःखका नास होगा।

प्रत्येक विषयपर सत्याग्रह किस प्रकार किया जा सकता है, इसपर बादमें विचार करेंगे।

[बुजरतीसे]

इंडियन ओपिनियन १०-१०-१९८

५१ सेठ शीघ्र क्यों नहीं छूटते ?

बहुत-से भारतीय उपर्युक्त प्रयत्न कर रहे हैं। उत्तर यह है कि हमारे उत्पादकों में कसर है। उत्पादकों का संघर्ष बेतुच्छ-बैसा है। पाड़ी जितनी मजबूत हो उतना ही बोझ हथ उधर पर साद सकते हैं। अधिक बोझ धारणनेवाली पाड़ी टूट सी जा सकती है। उत्पादकों की पाड़ीके विषयमें भी वैसा ही समझना चाहिए। सेठ लोग समाजके लिए बंध बने हैं। उनके बुद्धिजीवी गाड़ी अन्य भारतीयोंका मुखरूपी बोझा उठा सकते हैं, इसमें सन्देह नहीं है। किन्तु यदि उस गाड़ीको बाने बझानेके लिए दूसरे उसकी बुरीमें हाथ लगाने तो वह तेजीसे चक छूटती है। यदि बुरीमें हाथ सदानेवाले लोग न मिलें तो वह रास्तेमें पड़ी रहेगी। पाड़ी टूट जानेकी ही बात तो नहीं है किन्तु मजिदपर पहुँचनेमें कसर करनेवा। इसमें उत्पादकोंका कोई भीय नहीं है। जो समय बीतता चका जा रहा है उससे बाहिर होता है कि उत्पादक जितना चाहिए उससे कम है। इसलिये गाड़ीकी चाल धीमी है। यदि उत्पादकोंमें आम धिनेवाले लोग अधिक हो जायें तो तुरन्त छूटकारा ही सकता है। यह समझना बिल्कुल बासान है।

नेटालमें सेटोंकी बिदा देनेके लिए संकड़ों भारतीय चये। उनके पीछे जानेके लिए उनमें से बहुत-से तैयार थे। किन्तु अब जब समय जा पहुँचा है तब नेटालस केवल तरह भारतीय सामने जाये हैं। काम करनेके लिए बहुत लोग तैयार थे किन्तु समय आनेपर वे तब नही आते। हरएक ऐसा सवाल करता माकूम होता है कि मुझे इससे क्या फायदा ? किन्तु वे यह बात भूल जाते हैं कि उत्पादक दूसरेके ही कामके लिए चल सकता है। उसमें अपना काम तो शामिल है यह ध्यान रखनेकी जरूरत नहीं है। नेटालने ऐसा नहीं किया। इसमें नेटालका दोष नहीं है। इससे केवल इतना ही बाहिर होता है कि हमें अभी पूरा अनुभव नहीं है सहनसक्ति नहीं है जान नहीं है। वे सब बातें हमें समय पक्कर जायेंगी। तबतक बाकिष्ठ परिवाम होनेमें समय करने तो हमें जपीर नहीं होना चाहिए।

इस बीच जो लोग उत्पादकोंकी समझते हैं उन्हें उसमें चुस्त रहना चाहिए। अकेला मनुष्य भी उत्पादक ही रह सकता है। और यदि वह ऐसा करे तो कड़ा बावेगा कि उसने अपने कर्तव्यका पूरा पालन कर लिया। इससे अधिक करनेकी बात ही नहीं है।

[बुधरातीचे]

इंडियन बीविलियन १ -१ -१९८

५३ कवियोंकी स्थिति'

सन्निवार, [अक्टूबर १ १९८]

बिच तरह जनवरीमें बाइगलिचबर्ब जेज भारतीयोंसे भर मयी भी उयी तरह इस समय फोक्सरस्ट जेज भी भर गई है। भारतीय उसमें बाइते ही जा रहे हैं। इस समय जेजमें २७ भारतीय हैं। इनमें से निम्नलिखित १७ लोग सजा काट रहे हैं

सर्वभो राज्ज मुहम्मद पारसी बस्तमबी एम सी बायलिया सापुरजी रबेरिया सीराबजी सापुरजी बाबम सेहू फेज — इनमेंसे हरएककी तीन-तीन महीनेकी सजा हुई है। सर्वभी काबी काजामिया बाशामिया उमर उस्थान मूजबी उका मायाबसी इबाहोम हुसेन इस्माइल ईसप बकी मामदबी रबिरबाजा मोहमज्जाज परमानम्यबास कीजाबाजा हरिचंकर ईस्वर बोयी मोहमज्जाज गरमेउम जोसलिया सुरेन्द्रराज बापुमाई मेड और जमियाचंकर मंजराय खेजत — इनमेंसे हरएक छ छ इस्तेफी सजा काट रहे हैं।

भीषेके १९ जोनोंपर मुकदमे चलनेको हैं। जमानतपर छूट जानेके बजाय वे इवाकातमें पड़े [बहीकी] हुआ जा रहे हैं।

सर्वभी माबजी करसनजी कोठारी रतनजी मूजबी सीका बाबी रामोवर बुज्ज गणदेवी बाबी बाइया नरसी बीबाभाई बल्लभभाई उयी सीबाभाई कल्याणजी उयी बाजनाई नबुमाई, बसनजी बाजनाई, मूजसामी इजेटी मूजबी रतनजी हीरा मूजबी राधवजी रजुनाब मेहुता रबिज्ज्ज ठाकेवंतसिंह राजकी बहमद करसन बोयी लक्ष्मज कर्तापल्लग मोरार मज्ज पकीरी नामडू और मो क बाबी।

इनमेंसे भी माबजी करसनजी कोठारी बाज ही जमानतपर छूटकर सजाकी अनुमतिसे सहर गये हैं। उद्देश्य यह है कि जर्मनसे जानेबाकी गाड़ीपर ध्यान रखा जाये। ऐसा समझा है कि पार्लमेटाउनमें तीन मन्त्राधियोंने कानूनकी धरजमें जानेका प्रार्थनापत्र दिया है। ऐसे जोनोंकी ठीक-ठीक जानकारी देनेकी आवश्यकता होनेके कारण भी माबजीसे जमानत बिलाना निरिच्छत हुआ। उनके जेज जानेके बाद कीई छुसर प्रबन्ध करना पड़ेगा।

रमजान झारीफ

सनी मुसलमान कैरी बिबिपूर्वक रजवान रखते हैं। उनके लिये भी काबी विशेष रूपसे मोज्जत बनाकर जाते हैं। गजनरने यह मोज्जत जानेकी जाज इजाजत दे बी है। इसके सिवाय उन्हें कमरेमें बड़ी रखने और लाउटेन जजानेकी इजाजत भी मिठी हुई है। सब निश्चित रूपसे गमाज पकते हैं और जैनसे रहते हैं।

१ यह कोसुरज्ज जेजसे लिखा गया बाल पढ़ता है। गर्बीकी ७ जज्जुरको गिरलगर होनेके बाद वही जज्जा मुजरवा जज्जेकी मदीजा कर रहे थे। यह कीलरक-लिख "विदेन संजदरता धरा प्रेक्षित" जज्जे जज्जिध हुआ था।

जेसमें काम

रोजा रखनेवालों और उसी तरह अन्य भारतीय कर्दियोंको फिमहास बहुत बड़ा काम दिया जाता है। यी सेहत तथा यी मेड रसोईमें ब्यास्त रहत हैं। बाकी सोप कमरे साफ करनेका बबबा ऐसा ही कोई फुफ्फर काम करते हैं। इन कामोंमें किसी प्रकारकी मेहनत बबबा तरु-कीच महपूष नहीं होती। यदि कोई बीमार बीब पड़ता है, तो उस कामसे बिबकुल मुक्त कर दिया जाता है। जेसर बादि सभी अधिकारी ठीक बर्याब करते ह। टोपी उतारनेके बदले सफाम करामे काम बल जाता है। बंस यह तुच्छ बात है। अंग्रेजी बंपकी टोपी सगानेवाले टोपी उतारनेको ज्वारा मुविभाजनक मानते हैं। फिर भी इस विषयमें अधिकारी परधान नहीं करते यह बतानके लिए उक्त खबर से र्हा हैं। पारसियोंको अपना विद्यप फुर्या और जनेऊ (मरवा और कस्ती) पहनने और अग ही बंपकी टोपी सगानेकी इजाजत मिल गई है।

जेसमें खुराक

खुराकमें सदेरे पूष, बीपहरको पर्याप्त बाबल और हरी सब्जी (जंस करमकस्ता आदि) और घामको काची बाबल और सेम मिलते हैं। मोजन अपने ही हाथका बना होनेके कारण पाने पोष्य हीना है। पूषमे होनेवाली मुक्कसका बिक छाड़ से तो मोजनमें केवल पी-सम्बन्धी कमा ही कही जा सकटी है। यहाँकी जेसके नियमोंके अनुसार यी बबबा जहीं कुछ भी भारतीय फेरीका नहीं मिल सकता। इसलिये डॉक्टरस चिकायत की गई है और डॉक्टरने इस विषयमें बाब करनेके लिए कहा है। अब बाबा की जा सकटी है कि यी दिने जानेका हुकम हो जायेगा। बोड़ा-बहुत पूष प्राय सभी फेरी खा सेते हैं।

उपवास

केवल यी रतनगी साडा कुछ भी नहीं खाते ह। वे और उनके साथी भारतीय बुपवारकी दालिक हुए से। बुबवारका उन्होंने रेकनाड़ीमें खाया जा उसके बाद कुछ भी नहीं खाया है। उन्होंने केवल बोड़ी मूंगकी एक दिन खाई यी। ब यह उपवास अपनी इच्छास कर रहे हैं। फिमहास इस कुछ और समय तक बजाते रहनेका इरादा रखते हैं। ब इसका कारण यह नहीं करते कि उन्हें यहाँकी खुराक नापसन्द है बकि उपवास बबबक किया जा सकता है इसे जाननेके लिए प्रयोग कर रहे हैं।

जेसकी बनावट

जेसमें भारतीय ऐग बारासम रहते हैं कि उमे पड़ल ही माता जा सकता है। जेसकी बनावट भी बहुत मज्ठी है। इमारत परवरकी बनी हुई है। काठरिया बड़ी-बड़ी हैं। हवा और प्रकाशकी ठीक मुविधा है। बीबमें बौर है जिनमें कास परवरला फर्ज है। महानक लिए तीन कपारे हैं जिनमें न पानी गूब निकलता है। उनके नीचे बनेका स्नान किया जा सकता है। जिनके मुफ्दम बने नहीं हैं उन्हें टोपी और जूनी भी मिलनी है। चौकर बनिवार घाँसेली बाकी है। बर्रोबस्त होने हुए भी दो हज्जी [एक बार] टाँसना छपर टाँकर बाय गये। इसलिए अब लोहेकी मजबूत छत बना बी गई है।

देश-निकाशका हुआ

श्री श्रीजामाई बस्करमसाई, श्री श्रीबा कल्याण तथा मुहम्मद हुसेनको देश-निकाशका हुनम हुआ है। कस धुम्कारको उन्हें निष्कासित किया गया। इससे पहले उन्हें ठेरू दिन तक बेसमें बंध्य ही रखा गया। इनमें से श्री श्रीजामाई तथा श्री श्रीबासाई सीमाके उस पार पहुँचाने जानेके तुल्य बाव बापस भा मने। कम्पनी रात उन्होंने फोक्सरस्टमें पुब्लिस स्टेशनपर बिठाई। बाव वहाँ उनका स्वागत किया गया। श्री मुहम्मद हुसेन कोंकणी डर मने और आर्स्टाउनमें ही रह गये।

सोराबजी तथा आजम

उक्त दोनों सज्जन सम्बी कैर भोगकर तप मने है। उन्हें बाव तीन बने सीमासे निष्कासित किया गया। इसका हेतु बरा भी समझमें नहीं आता। जो ही वे जाते ही तुल्य बापस भा बायेंने इसलिये ऐसा होकर रह जानेका मानो सरकारने विस्वसी की है।

रविवार [अक्तूबर ११ १९८]

भारतके उक्त दोनों बहादुर सिपाही जो अनेक संघर्षोंमें पूरा चुके हैं सीमाके उस पार जानेके तुल्य बाव बापस भा मने। सीमाके उस पार हीनेके बाव तुल्य ही एक पक्ष सोये बिना वे ट्रान्सवालकी सीमामें चूब पड़ और जो भाई साहब सीमा पार करानेके लिये गये वे उन्हींके हाथ गिरफ्तार हो गये तथा फिर किन एजन्स होटलमें बालिख हो गये। आर्स्टाउनके घाटे भारतीय उनसे मिलनेके लिये निकल पड़े वे। उन्हें निराख होना पड़ा। उन्हें उनकी मेहुमानी करनेका अवसर तक प्राप्त न हो सका। जो बेचार भीती श्री सोराबजी तथा श्री आजमजीके साथ सीमाके पार कर दिया गया वा उसे आर्स्टाउनका अधिकारी बीचकर के पया। इससे जाहिर होता है कि भारतीयोंका सम्मान बढ़ गया है। मोरीको उनसे कुछ घय मनने जगा है। महाजत उक्त भीतीला कुछ नहीं कर सकती और प्रवासी अधिकारी (इमिग्रेशन ऑफिसर) भी उस रीक नहीं सकते।

[चूजरतीछे]

इंडियन ओपिनियन १७-१०-१९८

५४ प्रार्थनापत्र रेजिडेंट मजिस्ट्रेटको^१

फोक्सरस्ट वेज
अक्टूबर ११ १९८

बाबाजी मजिस्ट्रेट^१
फोक्सरस्ट

नीचे हस्ताक्षर करनेवाले फोक्सरस्ट वेजके
बन्धियोंका प्रार्थनापत्र

सभिनय निवेदन है कि

आपके प्राचीं सम्राट्की फोक्सरस्ट-स्थित वेजके बन्धी हैं और या ही सजा काट रहे हैं
या इनपर मूकधमा चढ़नेवाला है।

आपके प्राचीं शिटिया भारतीय हैं।

शिटिया भारतीयोंके लिए निरिपथ आहार-शास्त्रिकाका बदनकोरन करनेपर आपके प्राणियोंको
मारुम हुआ कि उन्हें खानेके साथ पिक्नाई दिक्कुस नहीं दी जाती।

सजायास्ता शंदिपोंकी आहार-शास्त्रिकामें केवल मकरिका दक्षिया सम्भिया तथा चामल
होता है। मूकधमेकी प्रतीला करनेवाले बन्धियोंके आहारमें रोटी और जोड़ दी जाती है।

आपके प्राचीं देखते हैं कि बन्धियोंको नियमित करस नहीं दी जाती है और यूरोपीयोंको
मांस दिया जाता है, जिसमें नहीं पर्याप्त मात्रामें होती है।^१

आपके प्राणियोंके तम्र विचारके अनुसार जो आहार शिटिया भारतीयोंको दिया
जाता है वह स्वास्थ्यकी दृष्टिसे अनुपम है, क्योंकि भारतीय आहारमें पिक्नाईका अभाव रहा
करता है।

इसके अभावा आपके प्राचीं वार्षिक कार्रवाई सामिप योजना अथवा मांससे प्राप्त स्निग्ध
पदार्थ खानमें अद्यपर्यं हैं इसलिये जिस दिन मांसकी भारी होती है उक्त दिन के मांस या
उमकी बहुत सेने योग्य आहारके बिना ही रह पाते हैं।^१

१. यदि वेने नरकमें वह प्रभेदात्त बने इतने सिखा और फिर, ऐसा कि लख है कुछ सुपर करने हुए
पिक्ना बा जो बानमें लीकन दिया पना। फलु वह लुसा मन्किरा भी मेन्नेके पूर्व संश्लेषित दिग्ग पना बा।

२. रेजिडेंट मजिस्ट्रेट।

३. पदके मन्किरिमे वही के कल्प के। "आपके प्राचीं देखते हैं कि यूरोपियों और कन्किरिमेंकी नियमित
करस नहीं दी जाती है।"

४. पदके मन्किरिमे "अथवा मांससे प्राप्त स्निग्ध पदार्थ" — के कल्प वही के।

५. पदके दो मन्किरिमे वही केन्नेके अनुपमर के किन्तु बन्धिये मन्किरिमे कन्ने छोड़ दिया गया बा:

"आपके सुकन्नाय कन्किरिमेंकी, रमन्कन्या महीला इमेके कल्प का कुछ दिमेंसे पदार्थे अथवा अथवा
हवापुंके अनुपमि है ही वही है।

"कन् अनुपमिके परिचयल्लका वही तथा कन्किरि कन्ना के मन्नेपने मन्नेके मन्नेके कन्ना कन्किरि
वही-न ल्नेके एक ही लीमि रह वही है।

"किन्तु वह मन् कन्नेके कन्किरिमें बा कन्नेके कन्किरिमें वही वही है।"

आपके प्राथमिक उपर्युक्त कर्मों के बारे में कई वा-
 ज्य प्राप्तियों के वा जानके कारण कठिनाई बढ़
 इसलिए आपके प्राथी निवेदन करते हैं कि
 (१) सामान्य भारतीय आहार-साधिका में भी
 (२) जिन जिनों मांसही बारी होती है उन १५
 घण्ट या हरी सभियाँ — बेनेका मावेण
 आपके प्राथी एक और प्राबन्ता करते हैं कि यदि
 की अनुमति आवश्यक मानी जाये तो माँगी घई
 तार या टेलीफोन द्वारा भेज दिया जाये ।

इस स्यायके लिए



हस्तलिखित मूल दस्तावे बंधी

५५ सम्देश :

बेकमी सजा होनेके बाद सजाकी
 काम नहीं मिलेवा इसलिए सत्याग्रहियों
 चाहता हूँ ।

बेकम रहनेवालोंकी अपेक्षा यादर १९५१ १०

उम्हें उठाना है जो बाहर रहकर सजाही सेवा
 अधिकारण एक भ्रम है । यहाँ तो मैं सब कोर्नोंको ि
 कमी-कमी बुरे अधिकारी कष्ट देते हैं किन्तु उसका ।
 भासा करता हूँ कि इससे लिए जेल जानेमें कोई भारतीय
 सत्याग्रह सरख भी है और कठिन भी । सरखका ही अण
 है अब यह बात सबकी समझमें आसानोसे जा जानी चाहिए

१ यह अनुप्रेम सबे मतभेदमें नहीं वा; उभेनन करते कम

२. इसप्रकार करनेवाले ३० अक्टोबरेमें से ११ मे बंधीभी, १ ।
 दिने वे; नगरी टीको अंग्रेजोंके विचार करने वे ।

३ यह उभेनन बंधीभीने १३ अक्टोबरकी नगरी दृष्टरनेकी सुनवाई

आपके प्राबियोंने उपर्युक्त कमोके बारेमें कई बार चिन्तायत की है किन्तु बड़ी संख्यामें अन्य भारतीयोंके वा आतके कारण कठिनाई बढ़ गई है।^१

इसलिए आपके प्राबियोंने निवेदन करते हैं कि

(१) सामान्य भारतीय आहार-ताकिकामें भी सामिल किया जाये।

(२) जिन दिनों मांसरो बारी होती है उन दिनों मांसकी बगह कोई साकाहार — जैसे चाक या हरी सब्जियाँ — बेनेका आरेश दिया जाये।

आपके प्राबियों एक और प्रापना करते हैं कि यदि बेक-निवेशक (डापरेक्टर बॉक मिश्रण) की अनुमति आवश्यक मानी जाये तो मांगी गई राहतके लिए इस पत्रका विवरण [उन्हीं] तार या टेलीफोन द्वारा भेज दिया जाये।

इस त्पापके लिए आदि आदि

वाचव मुहम्मद

पारसी रुस्तमजी

एम० सी० आंगस्मिया

मो० क० गांधी

बीर ३३ बाय^१

हस्तलिखित मूक बफरी बंपेजी प्रति की फोटो-ककल (एस एन ४८९३) से।

५५ सन्देश सत्याग्रहियों और दूसरे भारतीयोंको

[फोक्सरस्ट बेक

नवम्बर ११ १९८]

बेककी सजा होनेके बाद सबाकी अवबिधक मुझे इंडियन ओपिनियन में लिखनेका आन नहीं मिलेगा इसलिए सत्याग्रहियों और अन्य भारतीयोंके दो सन्देश कहनेकी अनुमति पाहता हूँ।

बेकमें रहनेवालोंकी अपेसा बाहर रहनेवालोंकी जिम्मेदारियाँ अधिक हैं। सच्चा कष्ट तो उन्हें उठाना है जो बाहर रहकर सच्ची सेवा करना चाहते हैं। बेकमें कष्ट है वह बात बिकसत एक भ्रम है। यहाँ तो मैं सब कोनोंकी दिल-भर आमीद-प्रतीक करते देखता हूँ। कमी-कमी बुरे अधिकारी कष्ट देते हैं किन्तु उसका उपाय तुल्य ही सकता है। इसलिए मैं आसा करता हूँ कि इसके लिए बेक जानेमें कोई भारतीय पीछे नहीं हटेगा।

सत्याग्रह सरल भी है और कठिन भी। सत्यका ही आग्रह रखनेसे सारे दुःख दूर हो सकते हैं अब यह बात सबको समझमें आसानीसे आ जानी चाहिए। सत्यका पासन — दुःख दूर करने

१ वह अनुपेय परके मसिरेमें नहीं था; उन्हीक करके सत्य दृष्टिमें बीबा क्या था।

२. इसाग्रह करनेवाले ३० व्यक्तिमेंसे २१ ने बंपेजीमें, १ ने गुजरातीमें, और कले लीकमें इसाग्रह किये थे; बाकी बीकने नगुर्मेक सिजल किये थे।

३ वह उच्च गांधीजीमें १३ नवम्बरको कले हुकरनेकी तुल्यकिक एक दिन कले कीतरकले मेम था।

सिद्ध हुआ सङ्गता—कठिन सङ्गता है। फिर भी ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ त्यों-त्यों सिद्धा सत्याग्रहके कोई दूसरा उपाय अपने अजबा किमी दूसरेके दुर्घटके [निवारणके] लिए गुम नहीं पड़ता। मुझे तो ऐसा भी सङ्गता है कि उसके सिवाय कोई सच्चा इलाज दुनियामें है ही नहीं। ऐसा हो या न हो किन्तु हम तो अब यह समझने लगे हैं कि सत्याग्रहम विजय पाता [ज्यादा] ठीक रास्ता है। यदि बात ऐसी हो तो मैं आपा करता हूँ कि जो-कुछ शुरू किया है उन सारे भारतीय सङ्गतके साथ पूरा करेंगे और हम फिरसे 'भारतमगूर' की उपाधि पा जायेंगे।

जो-जो राष्ट्र जैसे उठे हैं उन्होंने पहले कष्ट सहन किये हैं यह बार-बार स्मरण रखना चाहिए। यदि हम जैसे उठना चाहते हों तो हमारे लिए भी यही उपाय है।

हमें सोचना चाहिए कि नेताम उद्योगपतियोंको जेल भजकर हम अपने अपने सिरपर कितनी बड़ी जिम्मेदारी ले ली है। उनका अनुसरण करते हुए अपना अस्वर्ग्य अर्पित कर देना बहुत बड़ी बात नहीं है। वे जब अपने स्वार्थके लिए नहीं मरे हैं।

जो भारतीय जेल जाते हैं उन्हें समझना चाहिए कि इससे उन्हें कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं साधना है। यह ध्यानमें रखना चाहिए कि जेल जानपर भी सायद वे दाम्भवासमें न रह सकें। अपनी कुछ बलिदान करके समाजके लाभ सम्मान और नामकी रक्षा करनी है।

इस संदर्भमें हिन्दू, मुसलमान पारसी ईसाई, बंगाली मराठी गुजराती पंजाबी—इस प्रकारके सब नहीं हैं। हम सभी भारतीय हैं और भारतके लिए लड़ रहे हैं। जो ऐसा नहीं समझता वह बेसका सेवक नहीं पगू है?

मेरे हैं सत्याग्रही

मोहनदास करमचन्द गांधी

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १७-१०-१९०८

५६ सुलसीकृत 'रामायण' का सार

[अक्टूबर १४ १९०८के पूर्व]

आजकल भारतीय प्रजाके पुत्र विदेश जात्रा बहुत करते हैं। विदेशमें अपने धर्मका पालन रगता सबके लिए कठिन होता है। परन्तु, हिन्दुओंके लिए तो और भी कठिन है। केवलका मन है कि साधारण हिन्दू धर्मका रहस्य जानना केवल सब हिन्दुओंका ही नहीं सार भारतीयोंका काम है।

साधारण हिन्दू धर्म सबको मान्य होने लायक है। उनका रहस्य नीतिमें समाया हुआ है। इस बुद्धिसे कहा जा सकता है कि सभी धर्म सच्चे और समान हैं क्योंकि नीतिम अन्तम कोई धर्म हो ही नहीं सकता।

१. धर्म पढ़ना है मूल्ये नहीं बल्कि प्रेमकी मूल्ये पर क्या है किन्तु सिद्धा अत्यन्त उन्मत्त मनमें वही ठीक नहीं देखा।

२. यह इंडियन ओपिनियनके विज्ञान-संस्थानमें प्रकाशित हुआ था। उसका अनुवाद एंग्लो-हिन्दू टैलर किया जान सकता है। एतद्द्वारा यह और जगहोंके ही केवल एंग्लो-हिन्दू १४ अक्टूबरके पहले ही सिद्ध किन्ते इन्से पत्रोंके जड़ी तब बसत सुझाया सकता था और उन्हें ही अतिशय उमा दी थी।

बात जो भी हो साधारण हिन्दू धर्मका रूप रामायणमें हबहब बेला जा सकता है। मूल रामायण संस्कृतमें है। उसे जोड़े ही भोग पड़ते हैं। उसका अनुवाद बुनियादी बहुत-सी भाषाओंमें हुआ है। यह रचना भारतकी सभी प्राकृत भाषाओंमें भी उपलब्ध है। इन सभी अनुवादोंको परखें तो तुलसीदासजीकृत हिन्दी रामायण के सामने कोई अनुवाद टिकने योग्य नहीं है। जब पूजा जाये तो तुलसीदासजीकी भक्ति ऐसी अनन्य की कि उन्होंने अनुवाद करनेके बदले उसमें अपने ही भावोंको बाधा है मद्रासके मन्नाबा भारतका ऐसा एक भी हिस्सा नहीं है, जहाँ तुलसीदासजी की रामायण से कोई हिन्दू धर्मका अनजान निकले। ऐसी रामायण भी बिदेसोंमें और स्वदेशमें भी सभी लोग पुरी नहीं पढ़ते। पढ़नेका अवकाश नहीं मिलता। ऐसी पुस्तकें संक्षिप्त रूपमें प्रकाशित की जायें तो भारतीयोंके लिए बड़ी फायदाकारी हों। इसी उद्देश्यसे हमने पुस्तकको संक्षेपमें प्रकाशित करनेका इरादा किया। उसका पहला काण्ड हम तुलसीदासजीके सेवामें पेश कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि यह संस्करण मूल रामायण के बदलेमें काम जाये। हम चाहते हैं कि धार पढ़नेपर, जिन्हें अवकाश हो और जो भक्ति रसमें भीने हो पने हों वे मूल भी पढ़ें। इस धाराधर्ममें कथाका मुख्य भाग ठोका नहीं गया है। लेकिन शेषक अन्धे धर्म और पेटेकी कुछ बातें छोड़ दी गई हैं।

हम चाहते हैं कि जो धाराधर्म जनताकी सेवामें पेश किया जा रहा है, उसे हर भारतीय पढ़े उसका मनन करे और जिस नैतिकताका विषय इसमें समीकृत है किया गया है, उसे ग्रहण करे। यदि रातको ठना अवकाश की बूझी बड़ियोंमें भारतीय घर-घरमें रामायण का पाठ करें तो हम अपना प्रयत्न सफल मानेंगे।

बूझरे काण्ड जैसे-जैसे छपते जायेंगे जैसे-जैसे हम प्रकाशित करते जायेंगे। अन्तमें उन सभीका एक साथ बँधवाया जा सकता है। मुख्य धीन-विचार कर जहाँतक ही सफा है कम रखा गया है, ताकि पुस्तक सभी भारतीय खरीद सकें।

हिन्दी लिपि और भाषा जानना हर भारतीयका फर्ज है। यह भाषाका स्वरूप जाननेके लिए रामायण -जैसी बूझरी पुस्तक साधर ही मिलेगी।

मूल्य १ सिक्किम। आकषण १ पेनी।

इंटरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस पीपिकस नेटाज

[सुबपठनीय]

इंडियन ओपिनियन १७-१ -१९८

५७ सघष

[अक्तूबर १४ १९८ के पूर्व]

जान पड़ता है, संघर्ष अब किनारे खड़ा जा रहा है क्योंकि सरकारने अधिक मुस्म डाना शुरू कर दिया है। श्री छोटाबजी तथा श्री आबमका बाहर निकाला जाना जगका तुरन्त वापस जाना उनको तुरन्त ही खबा होना बारबर्दनके ५८ भारतीयोंका जेल भेजा जाना उन्हें देश-निकास्य देना — इस सबसे मालूम होता है कि सरकारको जो और जानमाना है उसका अन्त जाया जा रहा है। उसका खजाना खुलनपर जा गया है। वह अपना सारा मोसा-बास्ट खच किये डाक रखी है। परन्तु यह माद रखना चाहिए कि अन्तका समय बड़ा कठिन होता है। सब कष्ट धेसे जा सकते हैं परन्तु अन्तके कष्ट [संघर्षपूर्वक] धेस्तनेवाले बिरसे ही होते हैं। इसलिये हम माधा करते हैं कि भारतीय अन्तके कष्टसे नहीं डरेंगे।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १७-१-१९०८

५८ कुछ भारतीयोंको

[अक्तूबर १४ १९०८ के पूर्व]

द्राम्पबाल नेटाक तथा दक्षिण आफ्रिकाके कुछ अन्य भारतीयों भी कुछ भारतीयोंको घराबकी गहरी छत बन गई है। यह बर्न-विषय तो है ही सरीर और मनको भी कमजोर करती है। जिन्हें यह कुटेब लग गई है उनके लिए घरमायह संघर्षमें भाग लेना मुश्किल है। इमारत जेहेस्य घराबसे होनेवाली हानिके विषयमें लिखना नहीं है। वह तो बहुत लिखा जा चुका है। हम इतना ही कहना चाहते हैं कि जिन्हें यह कुटेब हो उन्हें कोधिस करके इसे छोड़ देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो यह ब्यर्थ कष्ट होगा और अनेक बार चाहकर भी वे अपने कामोंमें हाथ नहीं बँटा सकेंगे।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १७-१-१९०८

५९ पत्र जे० जे० डोकको

[फोक्सरस्ट]

बुधवार, [नवम्बर १४ १९८]

प्रिय श्री डोक

मैं आपको यह पत्र बजावतसे लिख रहा हूँ। मुझे आशा थी कि आपका फैसला होनेसे पहले मैं आपको कुछ मंत्र चर्चूँगा। किन्तु मैं दूसरे कामोंमें बहुत व्यस्त रहा हूँ। धूम-नामनाओंके लिए आपको बहुत-बहुत बन्धबाद। मेरा विरवात केवल हीरवरपर है। इसलिए मैं बिस्तुक्त प्रसन्न हूँ।

आपका सच्चा

मो० क० गांधी

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूस बंगेजी प्रति (जी० एन ४ ९२) से।

श्रीजय्य श्री एम डोक ।

६० सम्बोध : भारतीय सवर्णोंके नाम^१

[फोक्सरस्ट]

बुधवार १४ १९८]

मैं नहीं जानता कि चिनते मेरा व्यक्तिगत सम्पर्क कभी नहीं हुआ उम कोशोंके माग सम्बोध भेजनेका मुझे कोई अधिकार है या नहीं। लेकिन लौकोंकी रही इच्छा थी और मैंने उसे मान लिया है। तो मेरे विचार ये हैं

१ श्री डोक पुस्तक-श्री क० गांधी : दक्षिण अफ्रिकामें एक भारतीय देसमस्त (एम के गांधी : देस इंडियन पेडिगन्ड इन साउथ अफ्रिका)के लिए सामग्री एकत्र कर रहे थे। अफ्रिक जर्मनी एक ही गर्भीनीके ८ शरीरोंके एक क्लरमें उन्हें ९ नवम्बरको लिखा था "यदि आप मुझे लिखन कोशके मुद्रते आगेकी सामग्री व तो मैं बालका नामही हूँ। कभी सम्भवत से बन्नी लगे कलमें बात प्रकृत करें और आपकी को-मुक्त वार वा ऐसे ऐसे कलमें लिखेंगे। यदि बात उन कोशोंसे मीडिकल क्लरमेंसे भी कर कर एक ही बहुत बड़ा काम होगा।" देखिए परिशिष्ट ९।

२. कभी पुस्तक (एक १५) में कोशने क्लरमेंसे दो नाम बहुत मिले हैं और क्या है कि वे नाम १४ नवम्बर १९०८ को गांधीजीके मुद्रतेमें ही देखते हुए कलमें लिखे गये थे।

३. श्री डोकने कभी पुस्तक-श्री क० गांधी : दक्षिण अफ्रिकामें एक भारतीय देसमस्त (एम के गांधी : देस इंडियन पेडिगन्ड इन साउथ अफ्रिका)के ९ वें कलमेंसे ऐसे बहुत कलमें हुए लिखा है कि मैंने कोशोंके एक पुस्तकके लिए क्लरमेंसे ऐसेको क्लरमेंके नाम एक सम्बोध लिख केनेके क्लरमेंसे लिखा था और वह मुझे लिख भी गया।

४. श्री डोककी पुस्तकमें एक सम्बोधकी लिपि "नवम्बर, १९०८" रखी गई है। दो उलटा है कि वह १४ नवम्बरको, किंतु दिन गर्भीनीको उमा सुनाई गई थी, लिखा गया ही।

द्राम्मशास्त्रमें खदानबान्धन तथापि भारतको कोई मतलब ही न हा ऐसी बात नहीं है। इस एक व्यक्तिपर्यंति निर्माणमें लगे हैं जो मन्तारके प्रत्येक भागमें खान भागको सुयोग्य सिद्ध कर सकें। हम खान तथापि यह मानकर बात रहे हैं कि

(१) गारोखिल प्रतिरोधक मुकाबल बनाकरमात्र प्रतिरोधक हर हाथमें बेहतर अच्छा है।

(२) यूरोपीयों और भारतीयोंके बीच कहीं कोई प्राकृतिक गैरबारी नहीं है।

(३) ब्रिटिश साम्राज्यका भारतमें कुछ भी मतलब नहीं था जो यहाँ हा ब्रिटेनकी साम जनता नहीं चाहती है कि उनके साथ क्या किया जाये। ब्रिटेन और भारतकी जनताका सम्बन्धीयता तोड़ना अनिच्छाकारी होगा। यदि हमें भारतमें या कहीं और स्वतंत्रता प्राप्त करनी है तो केवल ब्रिटेन और भारतकी जनता ही सम्बन्धीयता सम्बन्धीय नहीं बनने बल्कि उनमें सम्बन्धीयता भी प्राप्त और इन्हींके सामाजिक तथा राजनीतिक रूप भी बढ़ा भला होगा। भरी भारतीय यह है कि सभी राष्ट्र एक-दूसरेके पूरक हीन है।

द्राम्मशास्त्रमें खदानबान्धन तथापि प्रतिरोधक गारोखिल मतलब न इनमें ही प्रत्येक बिचारके आधारपर उचित मानता हैं। सुमनित है यह भीविधि देने के साथ कर्मा हा पर में इन उन सूचीरहितके कि हा नहीं ब्रिटेन हा हमें द्राम्मशास्त्रमें सामना करना पड़ रहा है बल्कि भारतीय जनताका वैदिक खानबाँधन राजनीतिक और सभी प्रकारकी अन्य सामाजिकोंके लिए भी सम्बन्धीय मानता हैं।

[अध्याय १५]

एक के साथी ऐन इतिहास केन्द्रित इन घाउब भाकिता

६१ शावजी आमीर और दूसरोंका मुफ्तमा

[संस्करण

मार्च १९१८]

एक बंधनकारी महात्मा आशानी ब्रिजगुट (इंग्लैंड के ब्रिजगुट) की ही विचारोंकी आधारभूत शावजी आमीरका भाषना केन हुआ। तत्पश्चात् ही तत्पक्षों में मुफ्तदेवी बीरवा की सेवा कर रहे थे। आरोंक यह था कि शावजी आमीर निरपेक्ष प्रकृति है और उन्होंने लगे बंधीयन (संश्लेषण) वास्तु (१९०८ में ३६) के अनुसार उपनिवेशोंके रूपमें जाने अर्थात् विवेक प्रवेश किया है। की माँकीय अधिभूतकी तत्पक्षों के साथ जाने हुए रहा कि वह निरपेक्ष है। अधिभूत उपनिवेशोंमें जाने आया था। उनके नाम अनुसंधान (परिचित) और बंधीयन प्रकाशना भी था। फिर भी उन निरपेक्षता कर दिया गया। इसके बाद उनमें उपनिवेश छोड़ देना और यह वास्तुके अनुसार बंधीयनके लिए महात्मा अर्थात् देना जाता किया था परन्तु यह बंधीयन के अनुसार उन्हें

१. यह कि १९१८ के बाद के निरपेक्ष रूप में ही संस्करण में आशानीका नाम ही नहीं है ब्रिटेन के निर्दिष्टकरण के लिए किया जाने वाला है। १९१८ के बाद के निरपेक्ष रूप में ही नहीं है।

अर्थात् नमूना बताया तब उसने उपनिवेशके बाहर जानेसे इनकार कर दिया और इसपर यह पुनः विरक्तार कर लिया गया।

ब्रिटेनके बीच कॉरपोरल कैमरॉनने स्वीकार किया कि अभियुक्तपर प्रवासी कानूनके खण्ड २ के उपखण्ड ३, ५, ६, ७ और ८ लागू नहीं होते और न उसको उपनिवेशके बाहर निकाल देनेके विषयमें कोई हुरत है। यह माननेके लिए भी कोई कारण नहीं है कि अभियुक्तने जो इस्ताबैज देना किये हैं वे कानूनके अनुसार उसके नहीं हैं।

श्री पांवीने कहा कि अभियुक्तको अधिकार है कि वह १९७ के एसियाई कानून २के अनुसार भी रह नहीं किया गया है उपनिवेशमें या सकता है। और चूंकि उसने अपना अनुमतितपत्र (परमिट) बता दिया है इसलिये वह निश्चिन्त प्रवासी भी नहीं माना जा सकता। प्रवासी कानूनके खण्ड ४ के उपखण्डके मातहत ही उसने कोई अपराध नहीं किया है।

मजिस्ट्रेटने अभियुक्तको बोली करार दिया किन्तु कहा कि इसपर उपनिवेश छोड़कर न जानेके लिए प्रयास डाला गया है। उसे १५ पीड जुमाने जबवा एक महीना कठोर कारावासकी सजा सुना दी गई।

करसन बोली और अन्य आठ व्यक्तिपर भी जिनमें दो नस्वात्मिक ये यही आरोप लगाया गया और हीरजी मूलवीको छोड़कर उन्हें भी यही सजा दी गई। हीरजी मूलवी एक बारह वर्षका लड़का है। उसे पांच पीड जुमाने या चौदह दिनकी सजा करकी सजा सुनाई गई।

एतनजी लोका मास्की करसनजी रविहम्ब तमेवंतसिंह और एतनजी रजुनाचर भी निविद्ध प्रवासी होनेका अभियोग लगाया गया। अभियुक्तोंने अपनेकी निरपराध बताया। पहले एतनने कहा कि उन्हें धार्मिक कर्तव्यके अनुसार उपनिवेशमें प्रवेशका अधिकार है। और पहले ही तथा एतनजी रजुनाचरने कहा कि वे लड़कसि पहले इन्तबात्मने रहते थे। मादवी करसनजीने कहा कि वे सभ्यकी स्वपसिधक सेनाके नृतपूर्व सदस्य हैं और उन्होंने पत बोजर युद्धमें भी सेवा की उनसे लिए उन्हें एक पत्र भी दिया गया था, तथा इस हिसाबसे ही उन्हें प्रवेशका अधिकार है। रविहम्बका जन्म ही रविजिज आधिकारमें हुआ था।

अभियुक्तोंकी तरफसे बचाही देते हुए श्री पांवीने कहा कि अभियुक्तोंको उपनिवेशमें जानेकी लजाइ देनेकी सारी जिम्मेवारी उनकी है। अधिकारमें अभियुक्त उन्हींकी सलाहसे प्रभावित हुए हैं मद्यति उन्हींने मित्रासैह अपनी स्वतन्त्र बुद्धिसे ही काय किया है। [श्री पांवीने यह भी कहा कि] उन्हींने अभियुक्तोंकी भी यह लजाइ दी उसने राम्यके लखे बड़े शिर्तीका बुरी सलाहसे विचार कर लिया था।

ब्रिटेनमें श्री पांवीने स्वीकार किया कि उन्हींने अभियुक्तोंकी एक सार्वजनिक सभामें और अलग-अलग भी [उपनिवेशमें] प्रवेश करनेके लिए कहा था। उस समय सिवा अन्य अभियुक्तोंके मनमें उपनिवेशमें प्रवेश करनेकी उ
उन्हींने यह भी स्वीकार किया कि उन्हींने अभियुक्तोंकी प्रवे

प्रवेश करनेके लिए उन्हें प्रोत्साहित किया और सहायता भी दी। और हमेशाकी भाँति इस बार भी वे अपने इस कार्यके परिणामोंकी भोजनके लिए तैयार हैं।

अभिमुखत होती पाये गये और उन्हें बीत पीठ बुझाने या छ हुस्नेकी कठिन कारा-बासकी सजा सुना दी गई।

इनके बाद बड़ा बरतीका मामला पेग हुआ। उनपर गये पंजीयन अभिविषय (रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) के मातहत अंतर्गत छाप देनेसे इनकार करनेका आरोप या यद्यपि उन्होंने अपना अनुमतिपत्र (परमिट) देना कर दिया था। उन्होंने (अच्छे नियमोंसे अनुसार) अपनी अंतर्गतोंकी छाप अंतर्गतों के ही परी अर्थात् कि वह अपने मामलेकी सुनवाईकी यह एक हजेरी देना रहे थे। उन्हें इस पीठ बुझाने अथवा एक पहीना सपरिषद काराबासकी सजा सुना दी गई। मृततापी एन्फ्रीयर भी यही अभिविषय था। उन्हें भी यही सजा सुनाई गई।

भीताभाई और भीताभाईपर, जिन्हें बैंगने बाहर निकाल दिया गया था किन्तु जो जहाँ तक किर लीट माने वे विविध प्रजाती होनेका अभिविषय लगाया गया। उन्हें बीत पीठ बुझाने या छ हुस्ने कठोर काराबासकी सजा सुनाई गई।

[अपराध]

इंडियन ओपिनियन १३-१०-१९०८

६२ फोबसरस्टमें मुकदमा।

[काण्डार]

मन्थूर १४ १९०८]

इनके बाद इनकी भी गंभीर गये कानूनके अंतर्गत यह आरोप लगाया गया कि उन्होंने अविचारपूर्वकें मतानुसार भी अपने अंतर्गतों और अंतर्गतोंकी छाप नहीं दी। उन्होंने यह अविचार गंभीर कर लिया और कोई कायम-बन्ध देना नहीं किया। और जब उनके विषय ९ (रेगुलेशन ९) के मातहत निमादन देना करनेके लिए कहा गया तो उन्होंने इनकार कर दिया।

पी नार्थन कानून के हुए कदा

ये मन्थूर हैं कि इस स्थितिका एक अविचारों हुआ जो कुछ पंजीयन प्रमाणपत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) देना करने और अपने अंतर्गतों या अंतर्गतोंकी छाप देनेसे इनकार करनेके आरोप जारी कुछ कदा कदा देना जाता। १९ ३ के अंतर्गत कानून २ को केवल सुधार और विविध कारणाधिकी बीच कुछ मातहत रहे हैं। विविध भारतीय मन्थूर अंतर्गत कानून के विविध कारणाधिकी अंतर्गतिय कानून हैं। और उन। आसन्न कानून

१. इनकी मन्थूर और अन्य अंतर्गतोंके सुधारके एक अंतर्गतिय कानून अंतर्गतोंके छाप देना था।
२. ये मन्थूर अंतर्गतोंके ।

३. ये मन्थूर अंतर्गतोंके इन्हीं हैं ।

मन्त्रीका तमूना बताया तब उसने उपनिवेशके बाहर जानेसे इनकार कर दिया और इसपर यह पुनः विरफ्तार कर दिया गया।

ब्रिटेनके बीच कॅरिबीयन कैमरूनने स्वीकार किया कि अभियुक्तपर प्रवासी कानूनके खण्ड २ के उपखण्ड ३, ५, ६, ७ और ८ लागू नहीं होते और न उसकी उपनिवेशके बाहर निकाल देनेके विषयमें कोई हुकम है। यह माननेके लिए भी कोई कारण नहीं है कि अभियुक्तने जो दस्तावेज देस किये हैं वे कानूनके अनुसार उसके नहीं हैं।

श्री पांडीने कहा कि अभियुक्तकी अधिकार है कि वह १९७ के एधियाई कानून २के अनुसार, जो रव नहीं किया गया है उपनिवेशमें जा सकता है। और चूंकि उसने अपना अनुमतिपत्र (परमिट) बता दिया है इसलिये वह निषिद्ध प्रवासी भी नहीं माना जा सकता। प्रवासी कानूनके खण्ड ४ के उपखण्डके अंतर्गत भी उसने कोई अपराध नहीं किया है।

मजिस्ट्रेटने अभियुक्तको बोली करार दिया किन्तु कहा कि उसपर उपनिवेश छोड़कर न जानेके लिए प्रभाव डाला गया है। उसे १५ पीड जुमाने मजबूत एक महीना कठोर कारावासकी सजा सुना दी गई।

करसन बोली और अन्य आठ व्यक्तियोंपर भी, जिनमें दो नावाकिम वे यही आरोप लगाया गया और हीरबी मूलकीको छोड़कर उन्हें भी यही सजाएँ दी गईं। हीरबी मूलकी एक बाबू वर्कका लड़का है। उसे पांच पीड जुमाने या चौबह दिनकी सखी संबकी सजा सुनाई गई।

रतनबी सोडा भाबकी करसनकी रबिडुम्ब तर्कवर्तिसह और रतनबी रघुनाथपर भी निषिद्ध प्रवासी होनेका अभियोग लगाया गया। अभियुक्तोंके अपनेको विरपराम बताया। पहले तीनोंने कहा कि उन्हें औद्योगिक कर्मीके अनुसार उपनिवेशमें प्रवेशका अधिकार है। और पहले दो तथा रतनबी रघुनाथने कहा कि वे लड़ाईसे पहले ट्रान्सवालमें रहते थे। भाबकी करसनकीने कहा कि वे सभ्यकी स्वयंसेवक सेनाके मूलभूत सदस्य हैं और उन्होंने मत बीजर युद्धमें भी सेवाएँ कीं उनके लिए उन्हें एक बरक भी दिया गया था, तथा इस हीतिपत्ते भी उन्हें प्रवेशका अधिकार है। रबिडुम्बका जन्म ही रबिडुम्ब माकिडामें हुआ था।

अभियुक्तोंकी तरफसे बचाही बैठे हुए श्री पांडीने कहा कि अभियुक्तोंको उपनिवेशमें जानेकी सलाह देनेकी सारी जिम्मेवारी उनकी है। अधिकारियों अभियुक्त जगहोंकी सजाहूत प्रभावित हुए हैं अथवा उन्होंने निरन्तरैव अपनी स्वतन्त्र बुद्धिसे भी काम किया है। [श्री पांडीने यह भी कहा कि] उन्होंने अभियुक्तोंको जो यह सलाह दी, कथने राज्यके सबसे बड़े हितोंका नुरी तरफसे विचार कर दिया था।

ब्रिटेनमें श्री पांडीने स्वीकार किया कि उन्होंने अभियुक्तोंको एक सार्वजनिक सभामें और सभ्य-असभ्य भी [उपनिवेशमें] प्रवेश करनेके लिए कहा था। उस समय साम्य एकके सिवा अन्य अभियुक्तोंके मध्यमें उपनिवेशमें प्रवेश करनेकी बात नहीं आई थी। निरन्तरैव उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने अभियुक्तोंकी प्रवेश करनेमें मदद दी, ट्रान्सवालमें

मसखिरा करनेके बाद अपने देशवासियोंको यह सज्जाह देनेकी जिम्मेदारी मैंने अपने ऊपर डे ली है कि वे इस कानून द्वारा बोले गये बुनियादी बन्दनोंको ठो स्वीकार न करें पर कानून मानकर बचनेवाली प्रजाकी तरह इसके उल्लंघनके फलस्वरूप मिसनेवाली सजाको स्वीकार कर लें। बात यही हो या मजबूत पर अग्य एशियाइयोंकी नाति मेरा भी यही विचार है कि और बातेंकि धाम-धाम यह कानून हमारे अन्तःकरणको चोट पहुँचाता है। और मुझे क्या — आज भी मुझे ऐसा ही लगता है — कि इस कानूनके बारेमें अपनी भावना प्रकट करनेका एशियाइयोंके सामने केवल एक यही मार्ग रह गया है कि वे इसके अन्तर्गत भी गई सजाको स्वीकार करते जैसे और न मानता हूँ कि मैंने उस नीतिके अनुषार इससे पहले जानेवाले अभियुक्तोंको इस कानूनके आगे फिर झुकानेसे इनकार करनेकी सज्जाह दी थी। मैंने उनको १९८ के कानून ३६ के बारेमें भी यही सज्जाह दी थी। सो इसलिए कि ब्रिटिश मारतीयोंकी रायमें सरकारने अतिनी राहत देनेका बचन दिया था उतनी ही नहीं गई। जब न स्वायाअपके हाथमें हूँ और वह जो सजा है मुझे स्वीकार्य होगी। अभियुक्तों और जनता सभीने मेरे साथ जो सिप्टाचार करता है, उसके लिए मैं उनको अग्यवाद देता हूँ।

श्री मॅन्नेने कहा कि इस मामलेको दूसरे मामलोंसे भिन्न मानना चाहिए। उन्होंने कहा कि श्री गांधीने स्वयं स्वीकार किया है कि उनका अपराध अग्य अभियुक्तोंसे अधिक है इसलिए उनको अधिकतम दण्ड (१० पींड जुर्माना या तीन महीनेका तपरिभ्रम कारावास) दिया जाना चाहिए।

मजिस्ट्रेटने श्री गांधीको बोली करार दिया। उन्होंने अपना निर्णय देते हुए कहा कि जर्मके आचारपर उठाई गई आपत्तियोंके प्रत्यक्ष विचार करना मेरा काम नहीं है। मेरा काम तो केवल कानूनके मुताबिक काम करना है। कानूनका काम तीरपर उल्लंघन किया गया है। श्री गांधीको उस कर्मसे दखनेका मजिस्ट्रेटने आज बड़ा दुःख माना और कहा कि फिर भी उनमें और अग्य अभियुक्तोंमें अंतर किया जाता जरूरी है। मजिस्ट्रेटने श्री गांधीको २५ पींड जुर्माने या दो महीनेकी तपरिभ्रम कारावासकी सजा दी।

बेदाक कितनी भी जुर्मानेकी राशि बचा नहीं थी और सभी मुसकराते हुए बोल पड़े गये। श्री गांधी विज्ञेय प्रसन्न थे।

[अपेजीसे]

इंडियन मीपिनियन १७-१०-१९८

६३ सन्देश भारतीयोंको*

[फोल्डर]

नवम्बर १४ १९०८]

मन्तव्य वृत्त यै। मन्तव्य मेवना ही हमारा उगाय है। और इतना करने का हम
 यीत हुए ही है।

[संवेदीय]

इंडियन ओपिनियन २४-१०-१९०८

६४ तार उपनिवेश-मन्त्रीको*

फोल्डर

नवम्बर ७ १९०८

केसारे

उपनिवेश-मन्त्री

[फोल्डर]

फोल्डरके पत्रद्वारा ब्रिटिश भारतीय सैनी जिनमें गठान भारतीय संविधानके
 अन्तर्गत उपाय और मन्त्री एपीरिया इत्यादिवा अनुमतिके अन्तर्गत [और] ब्रिटिश
 शासन मन्त्रीके द्वारा सामिल है परन्तु इनके मन्त्रीके राजगणतन्त्रके
 निष्ठापूर्वक बचावकी योजना है और वे जिन हानियों को नष्ट करते हैं उनकी और
 गमावपूर्वक प्यार आवर्तित करते हैं।

फोल्डरके ब्रिटिश भारतीय सैनी

[संवेदीय]

कानूनिक ऑपिनियन २९/११/०८

१. १। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।
 २। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।
 ३। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।
 ४। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।
 ५। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।
 ६। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।
 ७। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।
 ८। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।
 ९। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।
 १०। एपीरिया "कोल्डरके पत्रके अनुसार" के नाम से है।

६५ पत्र ए० एच० वेस्टको

बीबीका नाम मो क पापी

[फोनरस्ट बेंच]

ट्रायबाल

नवम्बर ९, १९८

प्रिय वेस्ट

आपका पत्र मिला। इसके मुझे कुछ तो हुआ किन्तु आश्चर्य नहीं हुआ। मैं बिना बुर्जाग रिये यहाँसे नहीं निकल सकता और बीसा मैं करूँगा नहीं। जब मैंने संपर्क शुरू किया था तब यह समझ लिया था कि इसकी क्या कोमल बेनी पड़ेगी। यदि यही होता है कि बीमारी पापी मुझे छोड़कर जहाँ जायें और स्नेहपूर्ण पति उन्हें सान्त्वना देनेके लिए भी न पहुँच सके तो फिर ऐसा सही।^१

आप सब उनके लिए जो-कुछ कर सकते हैं अवश्य करें। मैं हरिकामको वहाँ जानेके लिए तार^२ कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप या कोई और रोज एक बुलेटिन निकालें—इसका यह वर्ष नहीं है कि तब मैं कुछ मदद कर सकूँगा। कृपया मुझे तारसे खबर दें कि बीमारी ठीक-ठीक क्या है। मैं उन्हें भी लिख रहा हूँ।^३ मैं आशा करने हूँ कि वे यह पत्र मिलने तक बीमित होंगे और इतने होघर्म होंगे कि पत्रको समझ सकें। अधिकारीपन मेरे पत्र मुझे रोज-के-रोज देते रहेंगे। बीमारी बीबीका नाम पत्र मरपी है। अधिकार यह पत्र उन्हें पढ़कर सुना दे।

हरपसे आपका

मो क० पापी

भी ए एच वेस्ट

मेनेजर

इंडियन ओपिनियन

फौनिक्स मेटल

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूल बंदोबी प्रतिका फोटो-मकज (सी डब्ल्यू ४४ ९) से।

धीरग्य ए एच वेस्ट

१ बीमारी कष्टरूपी बीबीका एकत्रालसे पीकित थी और कभी-कभी दारुण किन्तु अल्प थी। वेसा कि १९-१-१९ ९ के इंडियन ओपिनियनके साथ होता है, काली १ १९ ९ को कभी-कभी देखा था।
२. वेसा कि १९ ९ के इंडियन ओपिनियनके साथ होता है, काली १ १९ ९ को कभी-कभी देखा था।
३. वेसा कि १९ ९ के इंडियन ओपिनियनके साथ होता है, काली १ १९ ९ को कभी-कभी देखा था।

२. यह तार काली है।

३. वेसा कि १९ ९ के इंडियन ओपिनियनके साथ होता है, काली १ १९ ९ को कभी-कभी देखा था।

प्यारी कस्तूर,

तुम्हारी शरीरपत्रके बारेमें आज भी बेस्टका धार निक्का। मेरा हृष्य फटा जा रहा है मैं रो रहा हूँ। लेकिन तुम्हारी धुंधला करने आठों एसा स्थिति नहीं है। सत्याग्रह संघर्षको मने मतना सब कुछ अहित कर दिया है। इसलिए मुझसे आना ही ही नहीं सकता। जर्मना ई तमी आ सकता हूँ और जर्मना मुझसे दिया नहीं जायेगा। तुम जब हिम्मत रखो और निरतुबक सामो-पिको तो अच्छी ही जाओगी। फिर भी मेरी बदनमीरीस कहीं एसा हो कि तुम जब बघो तो मैं इतना हूँ कहूँगा कि मेरे जीते-जी तुम मरे वियोगमें भी मर जाओ तो इसमें कुछ बुरा नहीं है। तुमपर मेरा इतना स्नह है कि तुम मरकर भी मेरे मनमें जीवित रहोगी। तुम्हारी आत्मा तो अमर है। मैं तुमसे विष्णामूर्ख कहता हूँ कि यदि तुम बली ही जाओगी तो मैं तुम्हारे पीछे दूसरी धारी नहीं करूँगा। ऐसा मैं कई बार कह भी चुका हूँ। तुम ई-बतमें आस्था लाकर प्राण त्यागना। तुम मर जाओ तो बह भी सत्याग्रहके सिद्ध ही होगा। हजारों लपटें आज राजनीतिक नहीं है। यह संघर्ष धार्मिक है इसलिए अत्यन्त धुंध है। उसमें मर जायें तो क्या और जीवित रहें तो क्या? भाषा है तुम भी ऐसा ही मौखिक ठनिक भी निम्न नहीं होनी। इतना मैं तुमसे माँगे किता हूँ।

मोहनदास

[पुत्रराजीव]

बापूना नाम पत्रा इटलैण्डक इण्डियन प्रेस ऑफिस १९४८

६७ जलसे सन्देश'

हम तो एक ही उम्मीद करण हैं कि हरएक भारतीय इस लड़ाईमें पूरी तरह मुस्तद रहेगा और आ प्रब सिद्धा है उधे कमी नहीं छोड़ना — फिर चाहे लड़ाई आठ दिन बने चाहे आठ घण्टीना चाहे आठ बरं और चाहे उमते भी गया। आ सीध हारकर लड़ाईको छोड़ दें उनतर किनी तरहका जून करना ह्यारा नाम नहीं है। जो जून करेगा वह इस लड़ाईका मन्थना नहीं एसा मैं मानता हूँ। लड़ाई दली सभ्य ही गई है इसके कारण भी एम ही है। इन विचार करके इन कारणोंको दूर कर दें तो बह आज ही गाम हो जाये।

[जुजगानीस]

इण्डियन ओरिएण्टल ५-१२-१९८

१ वा बोर-जिन्सो १९८ के इण्डियन इण्डियन इण्डियन (इण्डियन इण्डियन इण्डियन) के पुनरिद इण्डियन इण्डियन का हीमे एके इण्डियन वी बालीकेकी इण्डियन इण्डियन का गमा बा।

६८ भेंट जमिस्टन स्टेशनपर'

[जमिस्टन
दिसम्बर १२ १९८]

[श्री मांषीने कहा] मैंने सब आरोंपोंके सम्बन्धमें सुना है किन्तु मुझे जो बीड़ी-सी बात कहनी है वह बादमें कहूँगा। जेसमें एक-एक मिनट मैंने मुझसे बिताया है।

[डूधरे सवालके जबाबमें उन्होंने कहा] जेसमें मेरे साथ अच्छा बरताव किया गया। मेरी विक्रामत जेसके नियमोंके बिबद्ध है। अधिकारियोंका तो नियमोंके अनुसार चलना कर्तव्य है।

[बुजराठीसे]

इन्डियन ओपिनियन १९-१२-१९८

६९ भाषण जोहामिसबर्गके स्वागत-समारोहमें

[जोहामिसबर्ग
दिसम्बर १२ १९८]

अभ्यक्त महीदय नेटाजके प्रतिनिधियों तमिळ तथा अन्य भाषियों

भाष में आपसे जो महीने बस दिन बाद मिल रहा हूँ। मैं तो समझता हूँ मैं जेसमें नहीं बाहर ही था और आज अपनेको जेसमें आया मानता हूँ। बाहरवाकें लोगोंको जेस-बालोंसे ज्यादा बिन्नेदारियाँ मिलानी हैं। जबतक बाहरवाके पूरा और नहीं लगाते तबतक बीड़ियाँ दूटनेकी नहीं। फोक्सरस्टके स्टेशन मास्टरने जब मुझे जेसमें फूटनेके छिए मूबारकवादी की तो उसे भी मैंने यही बताया कि जेसमें तो मैं आज ही प्रवेश कर रहा हूँ जब मेरे मरने जेसकी बनिस्वत बहुत ज्यादा सफल काम आ पड़े हैं।

जिस बेसमें सोमोंपर अभ्यास और जुर्म बरपा ही उन्हें अपने बाजिब हक भी न मिलें [वहाँ] लोगोंका सच्चा कर्तव्य जेसमें रहना ही है। और मैं मानता हूँ जबतक प्रतिबन्ध रूपी बीड़ी नहीं दूटी तबतक जेसमें ही रहकर बिबस बिताना सच्चे और खुदापर भरोसा करनेवाके लोगोंका असली धर्म है।

आज स्टेशनपर जो बुद्ध बैठा उसके बारेमें जो शब्द कहना चाहता हूँ। मैंने भारतीयोंकी जो सेवा की वह कामको पसन्द आई। मैंने एक दिन पत्थर छोड़नेका काम किया जेसमें रहा तथा और भी जो-कुछ किया उसकी आप कर करते हैं और इसीलिए यहाँ इतनी बड़ी तादादमें इबट्टे हुए हैं। जहाँ खुदा है, वहाँ सत्य है और वहाँ सत्य है वहाँ खुदा। मैं खुदासे डरकर ही चलनेवाला आरमी हूँ। मैं सत्यको ही चाहता हूँ इसीलिए खुदा मेरे पास है।

१ गंधीजी बरती रिहसिके बस नम १२ दिसम्बरकी फीजुररफते बीदानित्तर्षे न्य ठे ने ठर उम्मे केधे दिने न्ने दुर्नैवदरके ठरन्धने बर म्ये की प्ये बी ।

मर्यादा राह बसता कौमका पमर न भी हो सकिन खुदाको पमर है। इसलिए, कौम विरुद्ध हो तो भी मैं बही कर्मोया जी खुदाकी पमर है। भाषण उसाह ठीक था। उससे बाहिर हाता है कि हमने सत्याग्रहकी आ सफाई गुरु की है उसमें आप सब और जा पही नहीं आ पाव है व भी मानिस है। मैं तो स्टार्टिंग हाइडरबय भादि जमहूमि करता आया हूँ कि सबीब स्वयापाकममें हार हो या जीत उमार हमारी सफाई निर्भर नहीं करती। हमें तो मर्यादे लिए सबीबके मान-निष्कपठ — सबका त्याग करना पड़े तो हम सब भी करेंगे। चाहे आ भी तर्कीक आप हम भावोंमे और मर्यादी आबाज खुदाक दरबार तक पहुँचायेंगे। उन आबाजकी वृत्त जब अनरस स्मृदके कानामें पहुँचिमी तो उनके दिलमें गुदा उतरगा और बहेगा कि य मोग इफवार है हक प्राप्त करनेके लिए गुग सहने है और अब तो बहुत हो चुका। सब जोकर हमारी माँगें पूरी होंगी। आपर हक बढ़ा सरकार नहीं देगी दक्षिण आठिका इण्डिया भारतीय ममिति भी नहीं देगी। किन्तु गुनाक दरबारमें और उन बीपमें एकर यदि आप सबाईक रास्तेमे सफाई सफ़ेये तो अघ्यस महादयका कहना है आपके बपन काठ दिनमें टूट जायेंगे लेकिन म तो कहता हूँ उसमें २४ घंटे भी नहीं लगेंगे। गुदा सब जगह है वह सब कुछ बेगता है, सब कुछ मुनता है। मैं तो कहता हूँ कि ज्यों ही वह गुदा उनर दिलमें उतरयो हमारा छुटारा हो जायगा। जिनकी तर्कीक उठानी चाहिए, उनकी हम नहीं उठाये उठावेंगे ता तुम्हें बेइयाँ टूट जायेंगी। कल और बहूना इसलिए आज अब प्यारा नहीं कहता। आज मनी भाई एकत्र हुए हैं इसके लिए मैं आभार मानता हूँ और चाहता हूँ कि मेरे दाशोंको आन मनने अधिक कर सब पुरास माँके कि जा मेरे दिलमें है, बही सबके दिलमें हो।^१

[बुखारीमे]

इंडियन ओपिनियन १९-१२-१९८

७० भाषण हमीशिया इस्लामिया अजुमनकी स्वागत समामे^१

[जोहाशिमकय

दिगम्बर ११ १९८]

मन बज कहा था कि हमें जीत मिली है। हमारी जीत हमारी तर्कीकोंकी बदीमत्र मिली है। समाजक पत्रहू तो आज उस ही मान है यह बात जीतक बगबर है। आज हमामें न बरुद तो मान अब बात आवे इसे म जीत ही मानता हूँ। सरकारमें हमने जा माँगा बर नहीं मिला इसलिए बुनियादी इष्टिकामने तो पही बात जायेगा कि जीत नहीं मिली। अघ्यस महादयक बता है कि म समाजका नगा हूँ इसलिए म जो बहूँ जाय बही करें। लेकिन म गौक नहीं है। म मानता हूँ मरा पत्र मर है कि म जा गुर्नु म्या जैगा गुने भाग सब कर हूँ और [किर] भाव जगा बने बना बने। मेरे बटनक मुनाबिक बनना-न-बनना आती

१ एक बर लंबाया बडेमेमे की। बडेमे बरान्दी दिनेरे बरान्ण ग्नी है।

२. लंबीकी और एकल बरान्ण बाहिर बर लेक केने दुस्लेस बरक लंबाये ११ दिगम्बर, १९८ की बर १९८ बरान्ण ११ लंबा की लंबी की।

मर्जीपर है। हम आज भी हर एक बातमें डीले हूँ और इतीले निमनित नहीं हूँ। निमनित हा
 आय ता हर काम जल्दी कर सकेंगे। मैं जो बातें बर्न करणा हूँ एक तो यह कि हमने
 पढ़नी सफ़ाई रामगुन्दरस गरू की और दूसरी सोपबर्बास।' भी सोपबर्बासो जैसा बिना
 बसा मैं दूसरोंको भी बिधा। उत्तरमें सबसे पहला पत्र सोपबर्बासो थाया। म सोपबर्बासो
 उतना नहीं जानता या जितना कि रामगुन्दरको, और इस बारेमें सन्दिग्ध था कि वे बल
 तक कैसा निभावेगे। मैं तो भावनी जैसा कहता हूँ जैसा मान लेता हूँ। सोपबर्बासो का
 किया तो समाजत गया। फासलरस्ट जेसमें मेरे पास ७५ कैंवी था। मैंने पाया कि सोपबर्बासो
 उनमें सबसे अधिक गरम पालत प्रकृति और दुर्बल्यि हूँ। कोई चाहे उनसे कुछ कहे कुछ
 बोल ब उगकी परबाह म करक छू लेत वे। उनके साथ रहकर मन उनकी कीमत बहुत
 भङ्गी लट्ट भौक की है।

दूमरे, इमाम साहब मूसानी तथा उन बी मशासियोंमें से जिन्हें छ-स छपाहकी तथा
 हुई थी मैं इमाम साहबके साथ कार्का रहा हूँ। मैं विस्मिन्न था कि [एनी] छूह और परीर
 लेकर वे [मय-नुछ] कैंठे बर्बास कर पावेंगे। लेकिन मन देता कि जो मैं कट्ट थाया जहूँमें
 उठाया जा भी बाब थाया जहूँने किया। हमीदिया इस्तामिया मंजूम और कीमकी भी
 पारीर बूगा है कि मंजूमको ऐसे मध्यत मिले है। एक पार पर जेसमें [दी-नोंको]
 पाया कादनक लिए चलनेका हुकम दिया ता का नहीं उठा। इमाम साहबको छया कि यह
 हमारा कर है। जब वे गुरु जे तो दूमरे भोग करने लगे कि ये इमाम है इसलिये इहूँ म छ
 पावने बलिक उय छपर वे लीन पाव्या बये। हमारी एसी हूँ आ-नों हमारे मंपर्वको लया
 कया है। दूगरीके छूट जानेपर हम बोझ ही भोग रह गय। मूगा इमामजीने भोजन
 बनानेका नाम भजन मारके दिया। इमाम साहबने साब देना मंजूर दिया। साबके तीन बने
 साहब के भजन पाने जाते थे। समाजमें गेग भागीप हूँ तो म नीत दिन ली हूँ। भावता
 हूँ। जेक भानवाओंको मेरी साम गभाह है कि वे जलत बानुम-बाप-क मुताबिक बनेवे। गभाको
 सामन रखकर नाम करेक तो बेड़ी दूरी देर नहीं लया। गीने अनुभूतिपबर्बासके लिए तो
 एके विन्मुख लड़ना ही नहीं है। बहानी लड़ाई गभात ही चुकी है। अब तो पर लड़ाई
 भागमें गभत। कौनों मारभोवाकी बाब रखक लिए है। सामान्य-भारदार तो भारीपोंको
 लिये बाकिहामे निराक बाहर कलेका साम कर रहा है। कत बाहरी है कि हम नहीं
 रहे जनीकी बाकी-का भङ्गी नहीं है। इमामिय गभारको जानी मर्जनीका बाज देना मैं जकी
 गभतता हूँ। एम अब मूड भोगके लिए नहीं लड़ता है लकिन गभत इम गितातबाके बर्गे-निय
 भोग भाव तो हम इतनाके रह पावेंगे है। जो जनाक हम इतना भी नहीं जानके गभत की
 नहीं है। गभती। देना हूँ कुछ भोग भावक बूजे है। गभी बाज उनके दिलमें बनी हूँ। गभी
 वा ल-नेका कया बाहो है मूसार बरीगा गभा है नहूँ साब कि-नी बरा और म दिले
 तो बरा? कने गभा-दीको गभी कबल नहीं होती। कत तो कत बाब कया गभा है।
 गभतके गभतीके मूत गभाके कभार साब भेदा कबल दिया है और नहीं कया
 कभर गभा गभाके मं फिर मीना हूँ। उन गभतीकी बरी कभरगण गभती की और [वे

बित्तके पास भी ममे उन] सभी भाइयोंने उतका मान रखा यह देखकर मुझे सन्तोष हुआ है। पिछली आम समामें चार प्रस्ताव पास हुए थे। उनमें से दूसरा प्रस्ताव भी कामाने सभीको समझा दिया था और आज फिर मैं समझाता हूँ। [प्रस्ताव यह था] कि जबतक सरकार इस्पाफ नहीं वेटी तबतक हम खुदाको बीचमें रखकर रहेंगे। अगर आपने कसम खीब-समझकर ली हो तो सब हाथ उठावें। यह मस्विबकी पाक इमादा है। यह रखिए कि ऐसी बातें आपने खुदाके नामपर हाथ उठाया है। सेठ इस्लामोंने मुझे बेलमें पढ़नेके लिए बर्म-सम्बन्धी एक पुस्तक भेजी थी। उसमें लिखा है कि अच्छे काम करनेवालेको खुदा प्यार करता है। आपने खुदाकी कसम लेकर जो इत्कार किया है, वह अच्छी तरह खीब-समझकर ही किया होगा तब फिर आप बीतमें क्यों नहीं? हर बर्म-सम्बन्धमें लिखा है कि जो मेरे साथ हैं उसको मृत्यु मैं पूरी करता हूँ। सरकार हीमत और शरीर से या सफ्तो है लेकिन रुह — आत्मा — नहीं। मैं जो कुछ कहा है उसे आप अच्छी तरह समझ कर करेंगे तो आपने जो दो चीजें माँगी हैं वे ही क्यों — आप जो भी चाहेंगे सब मिलेगा। इस लड़ाईकी पूँज हिम्मुत्तान और शारी दुनियामें पहुँच चुकी है। उसे और भी जोरदार बनाइये।

[इसके बाद हमीरिया इस्लामिया अंजुमनकी ओरसे पाँचीजीकी माला पहनाई गई। उन्होंने बग्यबाह देते हुए कहा:]

इस हारको मैं हीरेका हार मानता हूँ। मैं समझता हूँ आपने यह हार मुझे मान देनेके लिए नहीं बल्कि बिलखे पहनाया है और यही समझकर मैं महबान मानता हूँ। राजब सेऊना छोटा लड़का बिजायतसे लिखता है कि हममें एकता क्यों नहीं है? हमीरिया इस्लामिया अंजुमन मूसलमानोंका है। उसकी ओरसे मुझे हार पहनाया गया है, इसे मैं अपना सम्मान समझता हूँ। हिन्दू और मूसलमान ये दोनों जीसँ सलामत रहेंगी तो आप सुखी रहेंगे। अगर तरह हवार भारतीय खुदापर शरीफा रखकर रहेंगे और दोनों जीमें एक होकर रहेंगी तो हम हिम्मुत्तानपर भी काबू रख सकेंगे। यहाँ [की बातों] का बखर खबरेपर भी पढ़ेना और सनी एक ही आवेंगे।

[गुलशरीसे]

इंडियन ओपिनियन, १९-१२-१९८

१ यह १९ जनवरकी हुई थी।

२. समीले दल लम्बा।

७१ भाषण तमिल स्वागत-सभामें^१

[बोहानिसवर्ग]

दिसम्बर १४ १९८

यह हार^१ तमिल कौमको जितने अच्छा काम किया है, घोषा देता है। इसलिए मैं इस हारको जो मुझे पहनाया गया है, आपके व्ययको पहनाता हूँ। मुझे ज्यादा कुछ नहीं कहना है। यदि आपको ऐसा लगता हो कि तमिल कौमने बहुत अच्छा काम किया है तो आप भी उसके जैसा कर दिखायें। यदि आप पीछे रहेंगे तो आपके विरुद्ध जितना कहा जाय कम होगा।

[पुनरावृत्ति]

इंडियन ओपिनियन १९-१२-१९८

७२ नायडू-सज्जनों और दूसरोंका मुकवमा^१

[बोहानिसवर्ग]

दिसम्बर १८, १९०८

द्रागलबाल लीडर ने लिखा है कि प्राप्त समाचारोंके अनुसार कम कुछ (तारीख १८ को) जब बहुत-से भारतीय सन् १९०८ के कानून संख्या ३६ के पारनाम बॉन प्रेजिड एग्जेक्टिवोंके विरुद्ध पंजीयन कार्यालय (एजिस्ट्रेशन ऑफिस) की ओर जा रहे थे तब "अनाकालक" प्रतिरोधियों [उनका प्रयोग करते हुए] सुरक्षा नहीं करना दे दिया। पुलिसको बुलाया गया जितने नहीं पहुँचते ही करनेवालोंकी डोलीमें से चारको गिरफ्तार कर लिया। इनमें सी० के टी० नायडू भी थे। उनी समय इन चारको जबहुपर दूसरे चार भाकर चले हो गये किन्तु वे भी गिरफ्तार कर लिये गये। तब वहाँ भारतीयोंकी भीड़ एकत्र हो गई। फिर और भी गिरफ्तारियाँ हुई और अन्तमें कोई २७ आश्रितियोंका उपपर पंजीयन-प्रमाणपत्र (एजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) बजायते और भेजते तथा जर्मनियोंकी छात्र देनेसे इनकार करनेका अभियोग लगाकर बालान कर दिया गया।

१. मदीय न यह भाषण एक सभ्य-सभ्यकेमे रिला बा भी कलर तथा समाज अन्तुध क्षतिरि बलवित, और कुछ केडक अन्तर्गतके सभ्यकेमे अन्तर्गत दिया गया था।

२. अन्तर्गत बने मदीयकी। इत परकथा गता था।

३. वी के टी नायडू एक मद्र नायडू एक ही नायडू और व की केडि दुरनेय विरुद्ध इंडियन ओपिनियनके "अन्तर्गत विरुद्ध — देता अन्तर्गत" बोहाना अन्तर्गत हुआ था।

उसी दिन बाबूने गिरफ्तार भारतीयोंको मदनमंद स्वदेशमें मुकदमेकी सुनवाईके लिये ले जाया गया। इनकी गिरफ्तारीकी खबर बाहर फैल गई थी और अब भी गांधी जनकी तरफसे पंरबी करनेके लिये बहुत तब उनके साथ कोई २० भारतीय थे।

पहले चार अभियुक्तोंमें सी० के डी [नायडू] एस० आर० [नायडू] और एस० डी नायडू तथा ए० बी० बेह्री थे। अभियुक्तोंने कहा कि वे गिरफ्तार हैं।

सरकारकी तरफसे पंरबी करते हुए भी संस्युएकने कहा कि यह अनियोग रबिरियाके मामले-बैसा है। सारी परिस्थितियाँ बैसी ही हैं। और सवाल यह है कि जबतक रबिरियाकी अपीलका फैसला नहीं हो जाता तबतक सरकार इस मामलेकी भांने बड़ाये या नहीं।

श्री जॉर्डन : इन्हें गिरफ्तार क्यों किया गया है ?

श्री संस्युएक : इन्हें तो अवरसे मिली हिंसायतोंके अनुसार गिरफ्तार किया गया है। यह भी आरोप है कि ये करना वे रहे थे और जो एजियाई कोय कानूनका पालन करना चाहते थे उन्हें बाधा पहुंचा रहे थे। मैं ऐसा केवल एक पक्षकी तरफसे ही कह रहा हूँ और समझ है कि यह सही न हो।

श्री जॉर्डनने कहा कि जो सबमें मिली हैं वे अपर सही हैं तो [अभियुक्तोंका] यह व्यवहार अत्यंत अिभ्य है। इस कबलसे जान पड़ता है कि "मेरे सामने भारतीयोंने अपबपूर्वक इस आशयके जो बयान दिये हैं कि इन मरनेदारोंके कारण पंजीयन (रबिस्ट्रेशन) करानेमें उन्हें डर लगता है वे सत्य हैं। मेरे सामने जिन अभियुक्तोंके मुकदमे पैसा हुए हैं उनमें से कईने मुझसे कहा है कि उन्हें डर बिखाया गया है और अब उनकी कहानियाँ मुझे सच्ची लगने लगी हैं।"

श्री गांधी : अगर कानूनका पालन करनेके लिये उल्लूक भारतीयोंको वे कठोरमें लड़े कोय डराते रहे हैं तो निश्चय ही कानूनमें ऐसी कोई बारा अरर मिक बाधनी जिसे संय करनेका बाधित इनपर लगाया जा सके। परन्तु इनपर सन् १९८ के कानून ३६ की बारा ९ के अन्तर्गत अनियोग क्यों लगाया जा रहा है ? जबतक अडार्स चल रही है तबतक चौकशी ही होती ही रहेगी। हाँ अगर ये दूसरे लोगोंकी डर बिखाते रहे हैं तो इन्हें अवरय सजा दी जाये। परन्तु मेरे बिज्ञान मिन भी संस्युएक तो कहते हैं कि उन्हें इस बातपर बिश्वास ही नहीं होता।

श्री जॉर्डन : मेरे सामने लोयोंने आकर अपबपूर्वक कहा है कि उन्हें उनके स्वदेश बासियोंने डराया है।

श्री गांधी : कुछ लोग तो ऐसे रहे हैं जो कुछ भी कहेंगे।

श्री जॉर्डन : और मुझे अब है कि जिसे आप बिना लोके-सामने चौकशी करते हैं (हूँती) वह जबतक आपके मित्रोंको करने दी जायेगी तबतक मैं ऐसा कहना जारी रखेगा।

श्री गांधी : जो भी हो इन चार भारतीयोंपर तो इस धारके मातहत कोई अनियोग नहीं लगाया जा सकता क्योंकि कानूनमें एजियाई पंजीयन (रबिस्ट्रेशन ऑफ एजियाटिक्स) जैसे किसी अपिराईका उल्लेख ही नहीं है।

श्री जॉर्डन : अच्छा ! अगर भारतीय पंजीयन करा ही नहीं सकते तो आपने यह धरना क्यों लगाया गया है ?

श्री गांधी हम तो उन लोगोंको जो अपनी मनुष्यताको मूस खाते हैं केवल यह याद दिलाना चाहते हैं कि संसारमें सामाजिक बहिष्कार नामकी भी कोई चीज है।

श्री जॉर्डन : मैं नहीं मानता कि यह सामाजिक बहिष्कार है। मेरा तो खयाल है कि लोगोंको इस बातका जामिन डर है कि कहीं उनके हाथ-पांव न लोड़ दिये जायें।

श्री गांधी अगर ऐसा होता तो पाँच वी बारमी अपना पंजीवन (रजिस्ट्रेशन) नहीं करना सकते वे और सब समाजके साथ वे इतनी अच्छी तरह हिंस-मिसकर नहीं रह सकते वे और न लड़ाईके लिए जाया ही वेते रह सकते वे।

श्री जॉर्डन ठीक है; तो अनियुक्तोंको अनिश्चित कालके लिए ह्वातासतमें बापस भेजा जाता है।

श्री गांधी अगर कहीं वी भारतके काम किया जा रहा हो और उनके अधिकारियोंका ध्यान उबर दिया गया जाये तो वे अपनी सकल-भर सरकारकी मदद करेंगे।

इसी प्रकार हुदरे मिरकतार भारतीयोंको भी बापस ह्वातासत भेज दिया गया।

[अप्रेजीते]

इंडियन ओपिनियन २९-१२-१९८

७३ भारी संघर्ष

द्रासबाजमें वी संघर्ष बाकू है वह जैसा भारी है यह बात दिन-मति-दिन प्रकट होती जाती है। कानूनको रज होना ही है यह भाव महात्मापुर्ब है इसमें संदेह नहीं। फिर वी क्यों-क्यों बक्त मुजरदा है त्यो-र्यों संघर्षका सक्ता स्वल्प बेचनेका काम निकला जाता है। हम पहले बता चुके हैं कि द्रासबाजके भारतीय केवल द्रासबाज-सरकारके विरुद्ध ही नहीं लड़ रहे हैं बल्कि वे साम्राज्य-सरकारके विरुद्ध भी लड़ रहे हैं। इसके अलावा हम कह चुके हैं कि द्रासबाजके भारतीय विरुद्ध अपने ही लिए नहीं लड़ रहे हैं, बल्कि बक्षिण जातिकके घारे भारतीयोंके लिए, विरुद्ध बाहर रहनेवाले सभी भारतीयोंके लिए और ठीक चीन वी समस्त भारतके लिए लड़ रहे हैं। हालांकि वी इस विचारको इन्हींसे समर्थन मिला है। कर्नल सीजीन वी मापन दिया उसका सार और वी रिज हाथ दिया गया उसका उत्तर हम कुछरी बयान दे रहे हैं। उस भाषणमें कर्नल सीजीने जो-कुछ कहा है वह विचारणीय है। भारतीयोंको अच्छी पसनाबुके देखमें बसनेके लिए न जाना चाहिए। घारे और काके नहीं निक सकते। उनके मिलापसे दोनोंका मुकदान है। भारतीय भात जानेवाले हैं और उनसे स्वर्ण कर गौरीका निवाह नहीं हो सकता। इन बातोंसे साम्राज्य-सरकारका विचार प्रकट होता है। इनका अर्थ यह हुआ कि वे भारतीयोंकी इतना हीन मानते हैं जतनी वे गौरीकी गुजामी करनेके ही योग्य हों। कर्नल सीजी इतने भाषणमें कहते हैं कि जो भारतीय इस समय द्रासबाज और अन्य उपनिवेशोंमें रहते हैं उनको वी इज्जतके साथ रहने देना चाहिए। साथ वे यह भी कहते हैं कि जनरल बीजा जो-कुछ कर रहे हैं वह ठीक है। बर्नार्ड कर्नल सीजीका हमें इज्जतके साथ रहनेका विचार केवल डोंन है। कर्नल सीजीके भाषणका यह अर्थ भी हुआ कि वहाँ घारे अपना घर बना

रहे हैं उस मुस्कमों आबाब भारतीयोंको बीरे-बीरे निकाल देना चाहिए। इसलिए ट्रान्सवालके भारतीयोंको समस्त भारतके भारतीयोंका भार उठाना है। इसको उठाना सहज काम है और ट्रान्सवालके भारतीय इसे उठायेंगे यह हम बाहमें बतायेंगे। कर्नल सीलीके विचार ब्रिटिश नीतिमें परिवर्तनके सूत्रक है। इनसे ब्रिटिश राजनीति कर्तविक्र होमी और यदि ये विचार बहुत फैलेंगे और उनको व्यवहारमें लाना चायेगा तो ये ब्रिटिश साम्राज्यकी अवनतिके लक्षण हैं। इसलिए भारतीय जो टक्कर के रहे हैं उनमें ब्रिटिश साम्राज्यका हित भी आ जाता है। जो ब्रिटिश साम्राज्यका भाग हुआ देखना चाहते हैं वे ही कर्नल सीलीके विचारका समर्थन करेंगे। सब उपनिवेश ऐसे ही हैं। इसलिए वे ब्रिटिश साम्राज्यके भाग हैं। भारतीय सत्याग्रही इसी विचारके विरुद्ध झड़ते हैं और उन्हें इसलिए वे ब्रिटिश साम्राज्यके मित्र माने जा सकते हैं।

इस तरह विचार करनेपर हमारे पाठक सहज ही समझ सकते हैं कि ट्रान्सवालका संघर्ष कुछ अनुमतिपत्रों (परमिट)के लिए नहीं है बौद्धे-से भारतीय आ सके इसके लिए नहीं है बल्कि यह तो महान झड़ई है। यह झड़ई शाही है। भारतीयोंने बसीसे टक्कर ली है फिर भी हम कह सकते हैं कि इमारी बीत हो सकती है। किसीको यह न चीजना चाहिए कि यह तो ऐसी ही बात है जैसे बीटा राजकी मटकी उठाने। ऐसा कहनेवाला सत्याग्रहका — सत्यका — बल नहीं समझ सकता। जो काम करीइसि नहीं हो सकता उसे मूठठी-भर खोग कर सकते हैं ऐसे उदाहरण हम हमेशा आँसुसि देखते रहते हैं। ऐसी ही बात ट्रान्सवालके भारतीयोंकी है। नई भारतीय बौद्धे हैं इसीलिए ठीक तरह संघर्ष कर सकते हैं। बहुत-से भारतीयोंको समझाने उनको सत्याग्रहकी विशेषता एकाएक बताने और उनका विशेष मिटानेमें समय लग सकता है। किन्तु यदि बौद्धे ही से लोगोंमें सत्यका बीज पड़कर फूट निकले तो बाहमें उस पीरेकी आसियोंको धुरे स्वार्थोंमें रोपकर उनसे अग्रहित पीरे पैदा किये जा सकते हैं। यह न समझना चाहिए कि राईका पहाड़ नहीं बनेगा। यह भी होता रहता है। यही सबकके आत्मिककी कूदी है। पर्वत राजकनसि ही बना है। कैसे बना है यह चीजें तो हम पायल ही जानेंगे। किन्तु यह बना है यह हम देख सकते हैं। जैसे हम यह मानते हैं कि बौद्धे-से भारतीयोंसि ही यह काम पूरा पड़ चायेगा जैसे ही यह काम सरक है हम यह भी कह चुके हैं। यह सरक है, अब हम यह कहनेके कारणपर विचार करें। सत्याग्रहकी लड़ाई जैसे-जैसे जमती जाती है जैसे-जैसे हम देखते जाते हैं कि यह लड़ाई ऐसी है जिसे परीक भी लड़ सकते हैं। पर्वतके पर्वतका बीसा उठाते-उठाते बक जाते हैं इसलिए उनसे सत्यका बीसा उठाया नहीं जाता। इसलिए ट्रान्सवालके भारतीयोंको गरीबी इक्षितभार करनी है। यह कैसे हो सकता है यह चीजें तो हार बैठने। इसमें क्या है? पैसा बाब है कल नहीं है। यह तो जारी भी चला जाता है, इसलिए उसे हम ही छोड़ दें और उसके बरक सत्यकी लक्ष्यार हाबमें ले लेंगे। इस तरह चीजनेकी शक्ति और उसके अनुसार बसनेकी शक्ति कराबिप् ही मिळती है। फिर, हम कह चुके हैं कि लड़ाई जानू खेपी ही। क्यों न जानू खेपी? कीममें कुछ मिलाकर एकता दिखाई देती है। सक्नों भारतीय जेलमें बककी लगाकर पबिष ही चुके हैं। उन्होंने जेल-जीवनकी मुन्दरता देवी है इसलिए उनका पीछे हटना सम्भव नहीं है। और ट्रान्सवालके बहुत-से भारतीय गरीब ही हैं इसलिए उनके पीछे हटनेकी बात खेती ही नहीं। ऐसे भारतीयोंके सम्मुख हम कर्नल सीलीके आचनको रखते हैं और उनसे प्रायंता करते हैं कि जान इस माटी

संघर्षके यज्ञको मृत्यु-नर्पण्य हाथसे न जाने दें और अपना नाम और भारतका नाम सारौ दुनियामें बमर कर दें।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-१२-१९८

७४ नेलसनको पुस्तक मॅट वो शब्द'

[बोहानिसचर्च]

दिसम्बर २१ १९८

वी जी नेलसनकी

फोक्सरस्टमें मेरी कैदके दौरान कानूनकी छीमाओंमें खूबे हुए की गई उनकी अनेक रुपामेंके लिए।

मो० क० गांधी

पॉलीजीके स्वासरोमें मूख बघेजीसे।

धीनस्थ गांधी स्मारक संग्रहालय गई दिल्ली

७५ वयका लेखा-बोखा

बंनेजी बर्ष अब समाप्त हो रहा है। हमारी स्थिति ऐसी है कि हम अपना संघत् बंनेजी संघत्के बराबर महत्त्वपूर्ण नहीं मानते। हमारे काम-काज बंनेजी बचका यूरोपीय बर्षपर आधारित होते हैं। हम यह आशा बना नहीं चाहते कि यह स्थिति खेदजनक है। किन्तु अपनी तो इससे हमारी पठितावस्था ही प्रकट होती है। यदि हम अपने बर्षोंमें स्वतंत्र होते तो यह बात बसाधारण न मानी जाती। हम संघारके सब मार्गोंसे अपनी-आँति मिलानुष्ठ कर रहना चाहते हैं इसलिये पारस्परिक सुविधाकी दृष्टिसे यूरोपीय बर्षका उपवीय करें तो यह युक्त न माना जायेगा। किन्तु यह सब एक बलग विषय है। इस लेखाका उद्देश्य बर्षका लेखा-बोखा पेश करना है।

नेटालकी स्थितिको बाँधे तो हम देखते हैं कि नेटाल-सरकार हमारे विरुद्ध बहुत-से कानून बनाया जाहूती थी किन्तु साम्राज्य-सरकारने उनकी मंजूरी नहीं की। विरुद्धिया मजबूर अब जाने जाने जाये या नहीं इसपर विचार करनेके लिए एक कमीशन मुकूरर किया गया है। सम्भव है इसका परिणाम कुछ ठीक निकले किन्तु विवेकयक नामजूर कर दिये गये हैं यह कोई विशेष प्रसन्नताकी बात नहीं है। अपनी आन्तरिक स्थितिकी दृष्टिसे [नेटाल भारतीय] काविसने बख्शा काम किया है। किन्तु कावेसका आर्थिक संकट बना ही रहता है, वह स्थिति लक्षके कर्षकारोंके लिए विचारनीय है। लोयोंमें काकी बोध नहीं है। व्यापार गट हो गया है। जमीनका दाम घट जानेसे बहुत-थ भारतीय परीब हो गये हैं। गीकटोंको भी कष्ट सहने पड़ते हैं। भारतीयोंमें

१. पंजीजीके फोक्सरस्ट केलेके (आँ क्वेले अपनी कैदकी एक कमी थी) बाँधरको उल्लेखकी दृष्टि—
किंगडम कीक गाड हड विविध पू की एक मल्ले मंडे की थी। अउर क्वेले क्वरुण क्वरुण क्वरुण
दिये थे।

हल्पाई बढ़ गई है। पुस्तक कुछ कर नहीं सकती और भाष्टीयोंमें अपना बचाव करनेकी ताकत है ऐसा जान नहीं पड़ता। इन तथ्योंसे प्रकट होता है कि भारतीय स्वतन्त्र नहीं है— उनमें स्वतन्त्र होनेकी योग्यता भी नहीं है। कारण है अपने जान-भाऊकी रक्षाके लिये बूझोपर निर्भर रहते हैं। उनमें शिक्षाकी कमी है। एक तरह सरकार शिक्षाके सामन छीगती जा रही है। हमारे पंच स्कूलोंकी हालत खराब है। दूसरी तरह हम स्वयं अपनी शिक्षाकी कोई व्यवस्था नहीं करते और पुस्तकालय-जैसी संस्था बन्द हो जाती है वो भी परवाह नहीं करते। सन्तोषकी बात इतनी ही है कि कुछ युवकोंको उनके माँ-बापने शिक्षाके लिये इम्बेड मेज दिया है। इसमें माँ-बापने वो अपना कर्तव्य पूरा कर दिया किन्तु यह कोई भी नहीं कह सकता कि उनका क्या बनेगा— पढ़ा या पारना अभी तो मिट्टीका खोसा बाकपर पड़ा है।

कर्ममें सब मामला ठप्पा दिखाई देता है। वही भारतीयोंकी जो मीमांसा है उस के लो रहें हैं। वही जो विरोधी बल है वे आपसमें झगड़ते रहते हैं। इस स्थितिसे हीसरा पला वा बोलोंका समूह है काम उठा सकता है। वहीका व्यापारिक कानून और प्रवासी कानून बहुत हानिकर हैं। वही भी आन्तरिक स्थिति बननीय है।

रोडेशियामें ट्रान्सवाल-जैसा कानून बननेका खतरा जा। वह खतरा बिल्कुल मिटा ही नहीं है, किन्तु उसपर साम्राज्य-सरकारकी मंजूरी मिलनेकी बहुत कम सम्भावना है।

जेलानीज-जैसी हालत बँधी ही खराब है, जैसी वहीकी हुआ। भारतीय समाज ही रहा है। वही जो कानून बनाया जाता है वह फँसा है, यह कोई पूछनेवाला दिखाई नहीं देता। वही लोगोंका विचार यह दिखाई देता है कि अपना व्यापार ठीक चलता रहे और हमें पैसा मिलता रहे इतना काफी है।

ऐसा जान पड़ता है कि अरिज रिबर काओनीमें भारतीय महीके बराबर है। वहीकी स्थितिमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। फेरफार कम होना यह भारतीयोंके हाथमें है।

ऐसा जान पड़ता है कि सबकी बानी ट्रान्सवालके हाथमें है। नेताज और ट्रान्सवालमें कानून बननेसे रूका इसका मुख्य कारण ट्रान्सवालका संघर्ष ही भागा जा सकता है। इस संघर्षमें अब ऐसा रूप लिया है कि उसकी प्रवृत्ति सारे संसारमें ही रही है। भारतीय समाजकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई है। भारतके नगर-नगरमें ट्रान्सवाल [के भारतीयोंकी स्थिति] के सम्बन्धमें समारोह की जा रही है। इम्बेडमें भी बर्बाद बच रही है। बार महीनेमें लगनम बी हजारा मौन बेल जा चुके हैं। लोग तकसीफें बर्बाद करनेमें बहादुरी दिखा रहे हैं। और आरों मोरते उनको संघर्षके लिये साबाही मिल रही है। लोगोंकी तथा हथियारों मिळा है। उनमें गया बल माया है। इमें इस बलकी विशेषता अभी दिखाई नहीं दी है। अजरक समुद्रने दया की है, लेकिन बूँक भारतीय धरत्यामही है इसलिए उनकी यह दया भी फायदेमन्द हो गई है। यह सत्यकी निश्चितता है। उसके सम्मुख बसतय झुकता है क्योंकि वह सत्यके मुकाबले टिक नहीं सकता। इसके अलावा जहाँ ज्यों-ज्यों कम्पी होती जाती है त्यों-त्यों मौन ज्यादा होर पकड़ते जाते हैं। जहाँके बूझते तरीकोंसे जीव हमेशा अजीबमें कमबोर हो जाते हैं। इसका कारण यही है कि सत्यका खेव करनेसे कमबोरी वा ही कैसे सकती है। वे उसका खेव जितना करेंगे उनका बल उतना ही बढ़ेगा।

[मुबारकीसे]

इंडियन मोनिनिंग २६-१२-१ ८

सोमवारकी रात [दिसम्बर २८ १९८१]

वि मगनलाल

तुम्हारे पत्र मिले। जगतसिंहका मामला दुःख है। मेरे विचारसे इसमें विधेय शीघ्र हिन्दुबोका है। कारण उसका कठम्य विधेय वा और वे उसमें बूढ़ मने हैं।

जगतसिंहके बहुराज्यपर मोहित नहीं होता है। अस्मत्तया इन्द्रजीत दोनों बहुराज्य और निशाजीत वे। इसीलिए दोनों पराक्रमी भी वे। किन्तु एकका पराक्रम वासुदेव वा और दूसरेका हेमोचित। मतलब यह कि बहुराज्यवादी बत आत्मार्यहों उसी के पतिव और सुखकर होते हैं। असुरीके हाथमें पड़कर ती के दुःखकी ही बूढ़ि करते हैं। यह बात बहुत गम्भीर है, फिर भी इसमें तनिक भी समझ नहीं कि यह है अर्थार्थ। मगनलाल पराक्रमिने अपने बोगबसन में यह बहुत अच्छी तरह समझाया है। हमारे बर्मकी सीख भी तो यही है। मगनलाल पराक्रम कर लेने कायक है। यदि इसमें कुछ समझमें न आये अथवा कोई र्कका ही तो पूछना।

तुम्हें आवेश वा जाटा है इसमें मुझे आश्चर्य नहीं होता। बीसे-बीसे गहरे उत्तरोमे और अनुभव प्राप्त करोये बीसे-बीसे तुम्हारा मन शांत होता जायेगा और तुम्हारे मनोवेगके घमित हो जानेपर तुम्हारा आत्मबल निखरेगा। हर पय उठाते समय हर काम करते समय विचारपूर्वक उसका विवेचन करो और सोचो कि क्या यह आत्मोचितके लिए है? और यह प्रश्न कि उससे हिन्दू बर्म जेवा उठेना या नहीं देव उत्पति करेगा या नहीं पहले प्रश्नके भीतर ही जा जाता है। जो कथम उठानेसे आत्मोचित नहीं होती हो उससे न देव बड़ सकता है न बर्म बड़ सकता है।

यह स्वामीजीकी उतावली प्रकृतिका परिणाम जान पड़ता है। बात बड़े खेरकी है। ऐसे ही परिणामोंकी दृष्टिपत करके कविभी मुझसे बार-बार कहा करते थे कि इस युगमें धर्मबुद्धिसे डरकर बकना चाहिए। अनुभव भी ऐसा ही हो रहा है। सभी अपने-अपने मतको बड़ करनेका आपस रखते हैं। यही आपस यदि आत्मवर्चनके लिए रखें तो अपना भी कल्याण ही और अन्तमें बूढ़ीका भी। अथवा दोनों अन्धकारको प्राप्त होंगे।

भीमती पोच्छक कळ अर्धेनी। यह पत्र भी उची दिन मिल जायेगा। शुभ मरिस्त्रय गने होने तो बेरसे भी मिल सकता है।

श्रेय बूढ़ी मने।

मोहनदासके आशीर्वाद

गांधीजीके स्वामियोंमें मूल पत्रवाली प्रतिकी फोटो-मकळ (एस एन ४०८१) से।

१ यह पत्र सन् १९०८ के अन्तिम दिनोंमें लिखा गया था।

२. स्वामी बंकरलाल।

३. मोक्ष एवम्, धर्मिक कळ १ पृ ११-१२

७७ मया वर्ष

पिछले वर्षका जेसा-जोसा हम से बूके हैं।^१ अपनी जाँच-पड़ताल हमने बिदेसी सम्बन्धके अनुसार की इससे हमें कुछ हुआ। हर बिदेसी चीजकी जगह हम स्वदेशी बाविल कर सके तो दुःखका कारण न रहे। मये वर्षमें हम ऐसा करनेकी कोशिश करें, तो सहुन ही सुखी हो सकेते ह। स्वदेशीमें बड़ा और गम्भीर अर्थ समायो हुआ है। स्वदेशीका अर्थ धिर्घ इतना ही नहीं है कि स्वदेशीके वस्तुओंका उपयोग किया जाये। उसका समावेश तो स्वदेशीमें ही होना है, किन्तु उसके सिवा और जिस चीजका समावेश उसमें होता है वह ज्यादा मकी और ज्यादा महत्वपूर्ण है। हम अपने बलपर जूझें यह स्वदेशी है। अपने बलपर जूझने" का अर्थ भी जानना चाहिए। अपने बल में हमारे घाटीरिक मामलिक और आर्थिक टीनों परहूके बलका समावेश होना है। तब फिर हमें [इनमें से] किस बलके सहाने जूझना है? इस प्रस्नका उत्तर छोटा-सा है। मारना सबसे बढ़कर है। मनुष्य जाति उसीकी नीबपर खड़ी है। और उसी रास्ते चढ़नेमें अनाक्रमक प्रतिरोध या सत्याग्रह है। इसलिये भारतीयोंके लिये [सकलताकी] सही कुंजी यही है।

इस वर्ष द्वायबास और नेटालपर बहुत-कुछ निर्मर होया। द्वायबासकी सड़ाई बल रही है। नेटालमें परवाने (आइर्वेस)का खाल सड़ा होनेवाला है। यदि द्वायबासमें भारतीय सड़ाईसे हट जाते हैं तो नेटालपर उसका तुरन्त ही खराब खतर होया क्योंकि सम्भावना ऐसी है कि नेटालमें इस रूप बहुत-कुछ इसी सड़ाईपर निर्मर रहेगा। नेटालमें सरकारके पास भरियाद करनेसे कुछ मिलनेवाला नहीं है। तब फिर कैसे मिलेगा? इस प्रस्नका उत्तर द्वायबास देता है। यानी इस वर्ष क्या होगा इस प्रस्नका उत्तर इस बातपर आधारित है कि द्वायबासके भारतीय अन्ततः सड़ेंगे या नहीं।

यह आशा की जा सकती है कि जिस कीमके लगभग बी हजार लीय बेल हो जाये हैं यह लीय इरिनी हरगिज नहीं मले ही उजमें कुछ देजरीही भी क्यों न मीमूब हों। इन तरह विचार करनेपर प्रत्येक भारतीय बेल सफता है कि यह वर्ष कैसा निकलेगा वह बात उसीके हाथमें है।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २-१-१९१९

७८ फीमिक्सकी पाठशाला

इस पाठशाालामें [बच्चोंके] प्रवेशके लिए हमारे पास कितने ही माता-पिताओंके पत्र आये हैं। पढ़ानेके लिए हम तैयार हैं। परन्तु बच्चोंको रखनेमें कुछ आर्थिक कठिनाइयाँ आती हैं। उन्हें पूरा करनेकी हम कोशिश कर रहे हैं। इस सम्बन्धमें खासा है, हम अगले बँकमें विशेष बातकाटी दे सकेंगे।

इस बीच जो लीप बच्चोंको पाठशाालामें भेजना चाहते हैं वे हमें उसकी लिखित सूचना दें। इसी तरह यदि वे यह भी सूचित करेंगे कि वे आर्थिक सहायता कितनी दे सकते हैं तो निर्णय तुरन्त किया जा सकेगा।

[नूजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २-१-१९९

७९ नेटाल मानेवाले भारतीय यात्री

नेटाल मानेवाले भारतीय यात्रियोंकी बसुनिर्माण बढ़ती जा रही है। इसमें शोध अधिकारीगत हमारा ही दिवाई देता है। कुछ यात्री [उपनिवेशमें] प्रविष्ट होनेके लिए अमीर हो जाते हैं। यदि उन्हें प्रवेशका अधिकार नहीं है तो वे उसकी परवाह नहीं करते। फलतः उनके कारण अन्य लोगोंको कष्ट उठाने पड़ते हैं। यदि इस सम्बन्धमें शोध हमारा है तो उसका उपाय भी हमारे हाथमें होता चाहिए। हमसे जब और जैसे-जैसे श्याम-बुद्धि बढ़ेगी तब और जैसे-जैसे हमारे कष्टोंका अन्त होगा। अन्य सब उपाय झूठे हैं और उनको वादकमें बिपत्ती बनाने बीसा समझना चाहिए।

[नूजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २-१-१९९

८० सत्याग्रहसे सबक

मेरिलेखबर्गमें श्रीन नामके एक नौरे सम्मन हैं। उन्होंने व्यक्ति-कर देनेसे इनकार कर दिया। इसपर वे श्यामाभीसके सामने पेश किये गये। उन्होंने साफ-साफ बयान दिया कि यह कर अन्यायपूर्ण है इसलिए वे यह देना नहीं चाहते। श्यामाभीसने उन्हें कैदकी सजा दी है और वे इस समय यह सजा भोग रहे हैं। यह उदाहरण अनोखा है। श्री श्रीन बूसरोंको नहीं उकसाते। वे व्यक्ति-करकी अन्यायपूर्ण मानते हैं। उन्हें बड़े-बड़े मानव देना नहीं आता इसलिए उन्होंने अपने मनमें ही निश्चय किया कि वे स्वयं यह कर न देंगे। फलस्वरूप उन्हें कैदकी सजा दी गई और वे उसे पसन्द करते हैं। इसीको कहते हैं सत्याग्रह। किन्तु सत्य प्रिय होता है वे बूसरोंका अन्यायकारण नहीं करते। वे सत्यकी खातिर स्वयं ही कष्ट सहन करते रहते हैं।

[नूजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २-१-१९९

८१ मेरा जेलका दूसरा अनुभव [१]

प्रस्तावना

मैंने सन् १९८ की जनवरीमें जेलका जो अनुभव हुआ था उसकी तुलनामें मैं इस बारके अनुभवको ज्यादा अच्छा समझता हूँ। इसमें मुझे बहुत-कुछ सीखनेकी मिला है और मैं मानता हूँ कि इससे हमारे भारतीयोंकी भी काम होगा।

सरवाप्रहरी लड़ाई कई तरफ़ने लड़ी जा सकती है। लेकिन राजनीतिक बुद्धियोंको टालनेका मुख्य उपाय जेल जाना ही दिखाई पड़ता है। मैं मानता हूँ कि हमें समय-समयपर जेल जाना पड़गा और जो केवल वर्तमान लड़ाईके लिए ही नहीं बल्कि बाने हमार ऊपर जो हमारे ऊपर आयेगा उनके लिए भी यही उपाय है। इसलिये जेलके विषयमें जानने देना जो भी हो वह सब जान लेना हम भारतीयोंका कर्तव्य है।

मैं पकड़ा गया

जिन समय जो सोराबजी जेल गये उस समय मैंने जाहा या कि मैं भी उनके पीछे ही रेव पहुँचूँ तो अच्छा नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि उनके छूटनेके पहलू ही कीमती छड़ाई पूरी हो जाये। मरौ यह इच्छा पूरी नहीं हुई। बहू इच्छा बारमें जब नेटालके बहादुर मठा जेल गये तब प्रबल हा उठी और [इस बार] पूरी भा हुई। मुझे इतनेसे बापस भाठे हुए ७ अक्टूबर [१९८] को कोल्लरस्ट स्टेपनरर पकड़ा गया क्योंकि मेरे पास स्वेच्छया पंजीयन प्रमाणपत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) नहीं था और मैंने बनने अर्थुक्तियोंकी छाव देनेसे इनकार कर दिया था।

बर्तन जानेमें मेरा बहुत नेटालन पड़े-लिये भारतीयोंकी और ट्राम्पबालके पुरान भारतीय निवासियोंको से माना था। ऐसी उम्मीद जो कि नेटालके नेटालके पीछे भारतीयोंकी काफ़ी बड़ी संख्या नेटालने जानके लिए तयार हो जायेगी। सरकारका भी यही प्रयास था। इसलिये कोल्लरस्ट जेलके जेलरको बड़ी सीने भी ज्यादा भारतीयोंके लिए व्यवस्था कर रखना हुषम मिला था। और प्रिन्सिपलने तम्बू कम्बल बर्तन बाणि घेने गये थे। जिन समय कुछ भारतीयोंके साथ मैं कोल्लरस्ट स्टेपनरर उतरा उस समय बड़ी पुष्पि भी काफ़ी थी। लेकिन यह साथ प्रयास व्यर्थ गया। जहर और पुष्पि दोनोंकी निराशा होना पड़ा क्योंकि इनतम मेरे साथ बहुत ही थोड़े भारतीय जाये थे। उन पाँचोंमें तो सिर्फ छ ही थे। बाण प्रविण और उनी जिनकी हमरा पाँचोंमें इतनेम थये। इस तरह कुछ मिलानर और बहुत भारतीय जाये। हम सबको पकड़कर जेल से जाना गया। हमरेदिन मजिस्ट्रेटके सामन पेश किया गया लेकिन मुररमा साथ जिनके लिए मुल्की कर दिया गया। हम जौपोंने जमाननरर छुटनेसे इनकार कर दिया। भी मावजी करघनजी कोणारीकी जो बाणी बीमापीने पीड़ित होते हुए भी

जैसे जैसे वे बीमारी बढ़ जानेके कारण और फौजदारस्तमें बरनेबारोंकी वस्तुतः होनेके कारण दो दिन बाद जमानतपर चूड़ा ठिंका गया।

बीछकी स्थिति

हम जेसमें पहुँचे उस समय श्री राजब मुहम्मद श्री इस्तमजी श्री बांगशिया — जिनसे लड़ाईका वृत्त हीर भूक हुआ था — श्री सोराबजी बजाबमिया तथा वृत्तरे भारतीय कठीर पन्थीसकी संख्यामें वहाँ थे। उस समय रमजानका महीना चल रहा था इसलिए मुसलमान भाई रोना रहते थे। उनके लिए शामके समय श्री ईश्वर मुसलमान काबीकी मोरले खाता जाता था। इस सुविधाके लिए जेस-अधिकारियोंसे विशेष अनुमति प्राप्त कर ली गई थी। इसलिए वे रोना ठीकसे रह सकते थे। यद्यपि बाहरकी जेसोंमें बत्तीकी सुविधा नहीं होती फिर भी रमजानके कारण बत्ती तथा बड़ी रसनेका हुजम से दिया गया था। सब कोय श्री बांगशियाके नेतृत्वमें नमाज पढ़ते थे। रोना रसनवालोंको शुरूके दिनोंमें तो छल्ल काम दिया गया था लेकिन बादमें उन्हें ऐसा काम नहीं दिया गया।

बाकी भारतीय कैदियोंके लिए हमारे ही लोगोंको रसोई बनानेकी इजाजत थी। यह काम श्री उमिदाएँकर खेसत और श्री सुरेश्रराम मेहने सम्भाला था और बादमें जब कैदियोंकी संख्या बढ़ी तब श्री जोशी भी उनके साथ लय गये थे। जब इन नाइयोंको रेश-निकासा हो गया तब रसोईका काम श्री एतली सोडा श्री राजबजी तथा श्री मानजी कोठारीपर आया। उसका बाद फिर जब आदमी बहुत ब्याधा हो गये तब उसमें श्री फालभाई और उमर उस्मान भी शामिल हो गये। इन रसोई बनानेवालोंको मुबद्द हो या तीन बजे उठना पड़ता था और शामके पाँचसे छ बजेतक उसीमें रुके रहना पड़ता था। जब बहुत-से कैदियोंको छोड़ दिया गया तब रसोईका काम श्री मूछा ईसाकजी और इमाम साहब बाबजीरने लिया। इस तरह जिन भारतीयोंने हथीरिया इस्कामिया अनुमन (हथीरिया इस्कामिक सोसाइटी) के अध्यक्ष और एक व्यापारीके — जिनमें से किसीने भी रसोईका काम सब पूछिए तो कभी किया ही नहीं था — हाथकी रसोई बत्ती उनको ने बहुत नाम्यवान मानता है। जब इमाम साहब और उनके साथके लोग झूटे तब रसोईके कामका यह उत्तराधिकार मुझे मिला। मुझे उसका कुछ अनुभव था इसलिए बिल्कुल अनुविधा नहीं हुई। मुझे यह काम कुछ खार ही दिन करना पड़ा। जब (यानी जब यह लेल ठिंका जा रहा है) इस कामको श्री हरिकल पायी करते हैं। हम जेसमें बाकिल हुए उस समय रसोई बोन करता था यह बात ऊपर दिये गये उपधीपकके अन्तर जाती नहीं है तो भी पाठकोंकी जानकारीके लिए यहाँ दे दी है।

हमारे जेसमें बाकिल होनेके समय सोनेकी तीन कोठरियाँ थी। भारतीय कैदियोंका समावेश जेसमें किया गया था। इस जेसमें भारतीयों और बतनियोंको अलग-अलग ही रखा जाता था।

बीछकी व्यवस्था

पुखोंकी जेलके दो विभाग हैं एक यूरोपीयोंके लिए और दूसरा बतनियोंके लिए, जिनमें गोरीसे मित्र बाकी कैदियोंको जमद ही जाती है। इसलिए यद्यपि भारतीयोंको बतनियोंके विभागमें रखा जा सकता था तो भी जेलरने उनके रहनेकी व्यवस्था गोरीके विभागमें कर दी थी।

कैदियोंके लिए छोटे-छोटी कोठरियाँ होती हैं और हरएक कोठरीमें बस-यात्राह अबबा प्यावा की रत्नकेको व्यवस्था होती है। कदलामा पूरा परवरका बना हुआ है। कोठरियाँ ऊँची हैं। दीवारोंपर पल्लर हैं और फर्श हमेशा घोसा जाता है इसलिए नून साठ रहता है। दीवारोंपर भी अकसर नूना पीठा जाता है इसलिए हमेशा नई जैसी दिखती हैं। आँगन काबे परवरका है और हमेशा घोसा जाता है। उसमें तीन आरमी एक घाघ नहा सके ऐसे फुहारे पार मरुकी व्यवस्था है। दो पाखाने हैं और बैठनेके लिए बेंचे हैं। ऊपर कँटीके छारोंकी बनी हुई जाँची लड़ी है। जाँची इसलिए लमाई गई है कि कभी दीवारपर चढ़कर माय न जाये। हरएक कोठरीमें सुबा और प्रकाशकी अच्छी व्यवस्था है। उसमें कैदियोंको घामके ल वने बन्द कर देता है और सुबेरे ल वने खोलते हैं। रातके समय कोठरियोंमें बाहरसे ठाका लगा दिया जाता है। यदि किसीका रातके समय कुच्छणी हाजत हो तो वह कोठरीके बाहर नहीं जा सकता इसलिए कोठरीमें ही हाजत रखा करनेके लिए कौटानु-भासक पानीसे भर हुआ बर्तन हमेशा रखा रहता है।

सुपक

जै जिस समय फोक्सरस्ट जकमें पहुँचा उस समय वहाँ भारतीय कैदियोंको मुबइके समय पूषु [मकरिका बलिया] और दोपहर तथा घामको खानक और कुछ साक दिया जाता था। शाकमें प्यावातर आसू होते थे। जो बिबकुल नहीं मिलता था। जो कच्ची जेकमें थे उन्हे उस कुराकके सिवा मुबइ पूषुके साथ एक और चीनी और दोपहरको खाया पीड डक-रोपी मिलती थी। कच्ची जेकबाके कुछ लोग अपनी डक-रोपी और चीनीमें से बोझा हिस्ता पककी जेकबाकोंको दे देते थे। कैदियोंको हफ्तेमें दो दिन मांस पानेका हक था। किन्तु हिन्दुओं अबबा मुसलमानोंकी मांस न मिलनेके कारण उसकी एवजमें कोई दूसरी चीज मिलनी चाहिए थी। इसलिए हम कोर्नेने बनी ची और उसका परिणाम यह हुआ कि हमें एक और ची और मांसके दिन उसकी एवजमें भावा पीड सेमकी दाक देनेका हुनम हुआ। इसके सिवा जेककी बाड़ीमें चौलाईकी जो माजी अपने-आप उमठी थी उसे ठोड़ने देते थे और अब-तब बाड़ीमें से प्याज से बानेकी अनुमति भी थी। इसलिए जो और सेमको दासका हुनम मिलनेके बाद सुपकके विषयमें कहनेके लिए प्यावा नहीं रह जाता। चौहानिसबकेकी जेकमें सुपक कुछ बकग है। वहाँ खानकके साथ सिर्फ ची मिलता है, शाक नहीं मिलता। घामके समय दो दिन हरी माजी और पूषु मिलता है, तीन दिन सेमकी दाक मिलती है और एक दिन आनू और पूषु मिलता है।

यह सुपक हमारी आरठके अनुसार तो पकीन्त नहीं कही जा सकती फिर भी सामान्यतः पूरी नहीं कही जायेगी। बहुतेरे भारतीयोंकी पूषुसे नकल है इसलिए वे उसे जान-बूझकर नहीं खाते। किन्तु मैं तो इसे बड़ी मूल मानता हूँ। पूषु मीठा बगता है और पक्तिप्रब है। इस सेसमें यह नेहूँकी बगह से सकता है। यदि उसमें सक्कर मिलाई जाये तो वह बहुत स्वादिल्ल मगता है। डेकिन सक्कर न मिलाई नई हो तो भी मूब कपनेपर बाया जाये तो मीठा मालम होता है। पूषु खानेकी आरत ही जाये तो बही नहीं कि ऊपर बताई हुई सुपकमें मनुष्य भूषा न मरेगा उससे उसका घटोर मजबूत भी बनेगा। उसमें कुछ फेरफार किया जाये तो वह पूरी

१ इकावती अबबा दिवालयीन देरी ।

२ डेकिर " मर्न-वापल : रेभिडेय पकिडेयही " पृ १०-१८ ।

उस सम्पूर्ण बुराकका काम दे सकता है। लेकिन दुःखकी बात यह है कि हम ऐसे स्वाह-सोक्ष्म हो गये हैं और हमने अपनी आरतियोंको ऐसा बियाड़ा है कि हमें अपनी आरतके मुताबिक बुराक न मिले तो हम भापा भी बैठते हैं। ऐसा अनुभव हुआ मुझे फौजदारस्टमें और उससे मैं बहुत दुःखी हुआ। बुराककी विक्रयत होनेवा होती रहती थी और ऐसी चीज-पुकार मकदर मधी रहती थी मानो बुराक ही हमारा जीवन हो या हम जानके लिए ही जीते हैं। ऐसा आचरण सत्याग्रहीको घोसा नहीं देता। बुराकमें फेरफार करनेकी कोशिश करना हमारा कर्तव्य है। लेकिन हमारा कर्तव्य यह भी है कि यदि फेरफार न हो तो जो मिश्रता ही उसीमें सन्तोष मानकर हम सरकारको बता दें कि हम उससे हार्नेवाके नहीं हैं। कुछ भारतीय केवल बुराककी मसुबिबाके कारण बेचसे बचते हैं। उन्हें बिचारपूर्वक बुराकके विषयमें अपनी छात्राओंको जोड़ना है।

एकपरी सेठ मिछी

बीता में ऊपर कह चुका हूँ हम एक बीनोंका मुकदमा सात दिन तक मुस्तबी रहा इसलिए १४ अक्टूबरको मुकदमा खत्म। उसमें कुछ भारतीयोंको एक माहकी और कुछको छ सप्ताहकी छुट्टी केरकी सजा मिली। एक बाककको जो म्यारुड बर्नका था १४ दिनकी सजा दीर मिली। मैं इस धयसे चिन्तित था कि सरकार मेरे ऊपरसे कहीं मुकदमा उठाने के। दूसरेके मामले खत्म होनेके बाद मजिस्ट्रेटने मुकदमा कुछ समयके लिए मुस्तबी रखा इसलिए मैं जवादा बचड़ाया। पहले तो बात ऐसी चल रही थी कि मेरे ऊपर स्वेच्छया पंजीयन प्रभावपत्र न बनाने और सैन्यविद्यार्थी छात्र न देनेका जुर्म ही नहीं बल्कि दूसरे अनधिकारी भारतीयोंको ट्रांसबाकमें दाखिल करनेका जुर्म भी लगाया जायेगा। मैं इसी घोष-बिचारमें पड़ा हुआ था उसी मजिस्ट्रेट कचहरीमें बापस जाये और मेरे मामलेकी पुकार हुई। मुझे २५ रुपये दण्ड मपना भी माहकी छुट्टी केरकी सजा मिली। इससे मैं बहुत खुश हुआ और यह चीजकर अपनेको साम्यवाग समझने लया कि मुझे दूसरे माहकी सजा सेवमें रहनेका अवसर मिळा।

सेठके कपड़े

जेठने पहुँचनेपर हमे सेठीके कपड़े दिये गये। एक छोटा परणु मखबूत पाजामा मोटे कपड़ेकी कमीज उसके ऊपर पहननेका एक डीजा बानेट एक टोपी एक टीकिया मोजे और सैन्डल — इतनी चीजें मिली। मुझे खनता है कि ये कपड़े काम करनेके लिए बहुत अनुकूल हैं टिकाऊ और सारे हैं। ऐसे कपड़ोंके खिजाफ तमें कोई विक्रयत नहीं हो सकती। ऐसे कपड़े होनेवा पहनने परें तो भी इसमें बचड़ानेकी कोई बात नहीं है। मोरोंको कुछ ध्यान किरमके कपड़े मिलते हैं। उन्हें पंजीवार टोपी मिलती है और बुरतो तक पहुँचनवाके सीजे तथा ही टीकियेकि अलावा क्माक भी मिलता है। क्माक भारतीय सैनिकोंकी भी देनेकी जरूरत जान पड़ती है।

(कम्यब)

[पुनरापीठे]

इंडियन ओपिनियन २-१-१९१९

नटालवासी भारतीयोंके सुप्रसिद्ध नेता श्री गांधी जिन्होंने पिछले वर्ष द्वांसत्तवालवासी भारतीयोंके आन्दोलनमें प्रमुख भाग लिया है इस समय उर्बन आये हुए हैं और कस उनसे नेटाल मर्क्युरी के प्रतिनिधिते भेंट की थी।

उतने श्री गांधीसे द्वांसत्तवालकी वर्तमान स्थितिकी क्परेखा बताने और विशेषत यह बतानेकी प्रार्थना की कि आन्दोलनका कृतरा चरण जिसे अनाक्रामक प्रतिरोध आन्दोलन " कहा जाता है, किन कारणोंसे आरम्भ हुआ। श्री गांधीने कहा

मैंने मर्क्युरी की अदी हाछकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ पढ़ी हैं जिनमें कहा गया है कि हम इस आन्दोलनको उसी सिष्टता और शाहीनता मही बचा रहे हे जिससे हमने इसे आरम्भ किया था। मैं कहना चाहता हूँ कि जब मने यह बात पढ़ी मूसे बहुत दुःख हुआ क्योंकि मने ही सवा यही समझा है कि मर्क्युरी भारतीयोंसे उनके संघर्षके सम्बन्धमें अतभव रखता हो या मरुस्य हमें उसने उचित तरीकोंसे कड़ने और मेरुनीयती रखनेका मय सवा ही किया है। मैं निस्संकोच कह सकता हूँ कि हमने अपने संघर्षमें सिष्टता और शाहीनताको भी नहीं छोड़ा। हमने बर यह संघर्ष आरम्भ किया था चीज-विचारकर किया था। हमारी इच्छा यथासम्भव पूरसे-पूर धरुन कायमें केनेकी थी और उस समय हमने जो सिद्धान्त स्थिर किये थे उनका हमने त्याग नहीं किया है।

इस सिद्धान्तोंकी संक्षेपमें परिभाषा पुछी जानेपर श्री गांधीने कहा :

हम सब प्रकारकी हिंसाके अन्वयनसे दूर रहे हैं और स्वयं कष्ट सहकर सरकारको केवल यह बतानेका प्रयत्न कर रहे हैं कि हम उध कानूनको न मानेंगे जो हमारे कयाससे हमारी अखण्डताको उध पहुँचाता है और अन्धबा आपत्तिजनक है। इसे अधिक अच्छा धरुन न सिबनेके कारण अनाक्रामक प्रतिरोध कहा गया है। चीची-साही भाषामें कहेँ तो यह बस्तुतः कुराईका उत्तर कुराईसे न केरु मेरुपूर्वक कुराईसे कड़ना है। इसलिये इस संघर्षमें हिंसा करन या कपने-अपकानेका कोई प्रश्न नहीं हो सकता। साथ ही मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि भारतीय समाजके कुछ घरुन इस उद्देश्यके लिए अपने उरुसाइके अतिरेकमें उन कीबोंके विरुद्ध अमिर्कियोका प्रयोग करनेमें नहीं हिचकिचति हैं जिन्होंने साथ छोड़ दिया है और कानूनको माननेका [निर्णय किया है] किन्तु अब कधी ऐसे कार्य नेताजीकी गजरमें आये हैं उनका उपाय तत्काल किया गया है और ऐसे कार्यसे अपने-आपको बिरुध कर केनेका पूरा उद्योग किया गया है। हमपर यह आरोप भी अनाया गया है कि हमने नेटाकके भारतीयोंकी संघर्षमें साथ केनेके लिए कुराया है। यह सब नहीं है। नेटाकके जो भारतीय द्वांसत्तवाल गये हैं उन्हें द्वांसत्तवालमें निवास करनेका अधिकार है। वे बहाँ इसलिये गये हैं कि उन्हें अगा मरि के मूलतः द्वांसत्तवालके निवासी होनेके नाते हमारे उपमें भाग न लेँ ताँ उसके फलको मीबनेके

अधिकारी भी नहीं हो सकते। उनको वहाँ जानका अधिकार है क्योंकि नये कानूनके अन्तर्गत जो भारतीय न्यायपालिका पहले तोन सांख्यिक दायित्वोंमें रखा है वह वहाँ वापस जानेका अधिकारी है। मैं बोलता हूँ यह भी कहा गया है कि हम सर्वप्रथम इस दूसरे दौरमें ऐसा काम उठानेका प्रयत्न भी कर रहे हैं जिसका अधिकार बनाकामक प्रतिरोध आरम्भ करनेके या गत जनवरीका समझौता किया जानेके समय हमें प्राप्त नहीं था। यह भी गलत है। समझौतेके समय स्थिति पूर्णतः स्पष्ट थी। भारतीय १९७७ के अध्याय १ कानूनको रद्द करानेके लिए तय रहे थे। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें देशमें रहनेके अधिकारी प्रत्येक एशियाईकी पूरी शिफारसपर एतराज था। हमने जिस बातपर एतराज किया था वह थी १९७७ के कानूनमें निहित माबना और उसके कुछ आपत्तिजनक अंश। हमने बरअसल तरीकोंपर एतराज किया था। उदाहरणके लिए बौद्धिक संपत्ति के प्रश्नपर— जिसके लिए मुझे बहुत धार्मिक चर्चे सहनी पड़ीं— मैंने सर्वप्रथम ही बात कही यह नहीं कहा कि बौद्धिक संपत्ति निश्चित रीति में आपत्तिजनक है। सर्वप्रथम वस्तुतः इसलिए छोड़ा गया था कि भारतीयोंके प्रत्येक आवेदन निवेदनकी और उनकी प्रत्येक पोषित माबनाकी पूरी अवहेलना की गई थी।

इसके बाद भी पानीने जो समझौता किया गया था उसका उल्लेख किया और कहा: बर्हातक समझौतेका सम्बन्ध है यद्यपि यह सच है कि उसमें १९७७ के अध्याय १ कानूनको रद्द करनेके सम्बन्धमें स्पष्ट शब्दोंमें कुछ नहीं कहा गया है फिर भी उसकी किञ्चित् शर्तोंके अन्तर्गत सर्वप्रथम कोई भी यह निष्कर्ष निकाल सकता है। किन्तु मैंने प्राप्त कहा है और अब फिर कहता हूँ जनरल स्मट्सने विचारपूर्वक किन्तु मौखिक रूपसे यह बचन दिया था कि यदि विहित भारतीय समझौतेका अन्तर्गत भाग पूरा कर देंगे अर्थात् स्वेच्छया पंजीयन (वाकंटी रजिस्ट्रेशन) करा लेंगे तो वे कानूनको रद्द कर देंगे। समस्त दक्षिण अफ्रीका मानता है हमने ऐसा कर दिया है। मैं यह भी कहूँ कि जनरल स्मट्सने समझौता होनेके तीन दिन बाद अपना यह बचन रिचर्समें माबन देते हुए दोहराया था। और यद्यपि उस माबनकी और उनका ध्यान आकर्षित किया गया है फिर भी उन्होंने उसका अन्तर्गत कमी नहीं किया और न उसमें कोई किन्तु-परन्तु ही जोड़ी है। यदि यह कानून रद्द कर दिया गया होता तो निश्चय ही किसी तरहका आन्दोलन न होता और न विहित भारतीयोंके अर्थोंका प्रश्न ही उठता क्योंकि ऐसा दायित्वोंके सर्वोच्च न्यायालयके हाथके फेसिलेस सिद्ध ही गया है विहित भारतीय दायित्वोंके प्रवासी-कानूनके अन्तर्गत विहित प्रवासी नहीं हैं। उनका प्रत्येक अधिकार केवल १९७७ के अध्याय १ कानूनके द्वारा प्रभावित हुआ है और छीना गया है। इसलिये १९७७ के अध्याय १ कानूनको रद्द करनेसे विहित अध्यायोंको फिर अधिकार प्राप्त ही जाता।

लेखकः: आपका अन्तर्गत तो बरअसल नये आगेवाले कोर्सेसि है?

श्री पाणी हाँ और यह याद रहे कि वे विहित भारतीय न्यायपालिका पहले या उसके बाद स्थानित रखा अन्वयेय (पीछे मिश्रित न्यायपालिका) से प्रभावित नहीं हुए थे इसलिये विहित अध्यायोंका प्रश्न किसी भी अर्थमें गया प्रश्न नहीं है। इसका उल्लेख अब प्रमुख रूपसे और पूर्वक रूपसे उस विचारके कारण किया गया है जो कानूनको रद्द करनेके सम्बन्धमें और उसको रद्द करनेके लिए किसे बने जनरल स्मट्सके प्रस्तावके सम्बन्धमें तथा ऐसी कुछ

पूरा ही घटोत्तरी पूरा करने के सम्बन्धमें उठाया गया है। चिनका जनवरीके समझौतेके बन्ध कोई ब्याज नहीं था। इन घटोत्तरीमें एक सर्त यह थी कि हम सिद्धि मास्ट्रीयोंके अधिकारोंको छोड़ दें और ट्रांसवाल प्रवासी कानूनके अन्तगत उनका निषिद्ध प्रवासी माना जाता मंजूर कर लें। मैं दावा करता हूँ कि इस प्रकारका सीधा कोई भी स्वाभिमानी मास्ट्रीय स्वीकार नहीं कर सकता। बर्हातक इस मामलेकी खूबियों और बाधियोंका सम्बन्ध है। इस समय इस विवादका स्वरूप विपुल वैधानिक हो गया है। सभी स्वीकार करते हैं कि १९७ का कानून उपनिवेशीय दृष्टिकोणसे भी यदि प्रत्यक्ष हानिकर नहीं तो ब्यर्थ बरबस है। सर्वोच्च न्यायालयने अपने जमी हाजमें बिये नये दोनों फलकोंमें ऐसा ही कहा है। मास्ट्रीयोंकी क्षिणाक्त या उनके पंजीयन (रजिस्ट्रेशन)के लिए इसकी आवश्यकता नहीं है। यह बात पिछले सालके नये कानूनसे सर्वोपचमक रूपमें पूरी हो जाती है। इन गिनित मास्ट्रीयोंके सम्बन्धमें यह मान किया गया है कि यदि हमें इस देशमें एक प्रमत्तिका संभावके रूपमें रहना है तो हमें अपनी आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिए कुछ बरबस उच्च शिक्षा-मात्र मास्ट्रीयोंको सनेका अधिकार है। सिद्धि मास्ट्रीयोंके सम्बन्धमें एकमात्र कठिनाई यह है कि वहाँ बतरस स्मट्स कहते हैं वे केवल रियायतके तीरपर और बम्बानी अनुमतिपर (परमिट) सेकर ही आ सकते हैं वहाँ हम यह मानते हैं कि उनकी आवश्यक अधिकार ही होता चाहिए, बसों कि वे प्रवासी अधिकारी (इमिग्रेशन ऑफिसर) द्वारा जागू की गई शिक्षा-परीक्षा पास कर लें। हमने यह भी कहा है कि यह परीक्षा इन्हीं की हो सकती है कि उससे किसी भी बरमें ऐसे केवल छ व्यक्ति ही ट्रांसवाल आ सकें। यह आसानीसे किया जा सकता है, यह बात नेटाज केप और मास्ट्रीयों का ब्यवस्थासे छिड़ ही जाती है। आस्ट्रेलियामें बर्हातक में जागता हूँ विद्या-पत्रन एक ही एधियाई नहीं जाने दिया गया है।

भी पौधोंने जाले कहा :

जब अनाक्रमक प्रतिरोधियोंसे कहा गया है कि यद्यपि ये लोगों बहुत ही अल्प हैं अनाक्रमक प्रतिरोध आरम्भ किये जानेसे पहले स्वीकार की जा सकती थी जब अनाक्रमक की जा सकती क्योंकि अनाक्रमक प्रतिरोधके सम्मुख झुकनेका बरगी सोपोंके प्रमाण पड़ सकता है। व्यक्तिगत रूपसे मेरा विचार यह है कि यह नये विचार है। पहले तो यदि हमारी भाँमें उचित है तो हम अनाक्रमक प्रतिरोधी बने हैं कि अनाक्रम की जागी चाहिए और दूसरे, यदि बरनी लोग हमारे तरीकोंको अपना लें तो हमारे विचारके स्थानपर अनाक्रमक प्रतिरोधीके काम लें तो इससे इतिवत् बाधित हो सकता होगा। अनाक्रमक प्रतिरोधी अनुचित करते हैं तो वे उससे अपने बरने ही नहीं कर सकते हैं। जब वे उचित करते हैं तब उन्हें हर कठिनाईके बावजूद सफलता मिलेगी और आसानीसे देखा जा सकता है। जब बम्बानाको लमा कि व्यक्ति-का बरने ही नहीं कर सकते इन्सेक्टर हटकी हत्या कर ली। अगर इसके बजाय वे केवल बरबस ही रहना रजजगत न होता और बहुत-सा समय बरब जाता। बरनी लोगोंकी व्यक्ति-कर बतरता न होता तो बम्बाना बरबस ही रहता। इसके विपरीत यदि बरनी लोग कर लगातेपर बरने ही नहीं कर सकते सरकार चाहे बिना बरब-मयोप करती वह सम्भव है।

काफी न होना वे किसी प्रकारके उपद्रवका माध्यम किये बिना चुपचाप बैठे रहते और कर बेनेस इनकार करते रहते। इसलिए मेरी सम्मतिमें ब्रिजिण आफ्रिकाके उपनिवेशियोंकी बल-प्रयोगके स्थानमें अनाक्रमक प्रतिरोधका तो स्वागत करना चाहिए। और आखिर, क्या यह मुझसे बातके बदले बातके कानूनकी जगह ईसाके बुराईका प्रतिनाश बुराईसे न करनेके कानूनकी स्थापना नहीं है?

मेंढकता : सार-रूपमें कहें तो मेरा जवाब है कि यदि बादा किया गया था तो आप उस बारेपर और वे रहे हैं; या बादा किया गया हो या न किया गया हो आप १९७ के एक्टियाई कानूनको रद्द करनेका आग्रह कर रहे हैं क्योंकि आप केवल यह चाहते हैं कि ट्रान्सवालमें शिशित भारतीयोंके आनेके अबाध अधिकारकी स्थापना कर दें। यही बात है न?

श्री गांधी : निश्चय ही यदि वे परीक्षा पास कर सकें।

मेंढकता : लेकिन साम्राज्य-सरकारने यह बय इस्तिमार किया है कि एक स्वशासित उपनिवेशकी सरकार जिसे चाहे प्रवेश करनेसे रोक सकती है; कमसे-कम मोझे तौरपर यही स्थिति पहल की गई है। दूसरी ओर आप एक ऐसे हकका दावा करते हैं जिसे साम्राज्य-सरकार स्वशासित उपनिवेशका हक बताती है; और कहते हैं कि यह एक बर्ष-विशेषको आनेसे नहीं रोक सकती।

श्री गांधी : मेरे जवाबसे साम्राज्य-सरकारने किसी भी अवस्थामें यह बय इस्तिमार नहीं किया है कि स्वशासित उपनिवेशको जिसे चाहे आनेसे रोकनेका पूरा अधिकार है। लेकिन अगर ऐसी बात कही गई है, तो यह अबतक काममें लाई गई उपनिवेशीय नीतिका त्याग है। मेरा यह जवाब नहीं है कि साम्राज्य-सरकार किसी ऐसे कानूनको पास कर देगी। साम्राज्य-सरकारने ट्रान्सवालके प्रवासी-कानूनके सम्बन्धमें मूल की—अर्थात् उसके किसी भी अर्थमें एक्टियाई-इयोंका उल्लेख नहीं या शिष्ट अल्पसंख्यकके सम्बन्धमें उल्लेख या लेकिन ट्रान्सवाल सरकारने एक अच्छी ऐसी व्याख्या की है, जिसका यह परिणाम होता है। साम्राज्य सरकारको उसे स्वीकार करनेके बाद अब प्रभावकारी हस्तक्षेप करनेमें बहुत कठिनाई ही रही है। अगर साम्राज्य सरकार अब यह कहे कि स्वशासित उपनिवेशोंको चाहे जिसे आनेसे रोकनेका पूरा अधिकार है तो इसके अबतक काममें लाई गई उपनिवेशीय नीतिमें एक नई बात चुड़ती है। आप जानते हैं कि १८९७ में स्वर्गीय श्री एस्कमन्ने एक्टियाई-इयोंको इस उपनिवेशमें आनेसे रोकनेके सम्बन्धमें श्री वेम्बरजेनेके सामने कानूनका एक मसविदा पेश किया था। श्री वेम्बरजेनेने तब कहा था कि वे उसे पास न करेंगे। उन्होंने मुझसे किया था कि श्री भी प्रवेश-निषेध कानून बने यह बाध-विशेषपर नहीं बल्कि सबपर लागू होना चाहिए। उस मुझसेको मान लिया गया और तबसे तैदाके कानूनका अनुकरण सभी उपनिवेशोंमें किया था चुका है। लेकिन मेरा जवाब है कि साम्राज्य-सरकारके मन्त्रियोंने चाहे जिसे आनेसे रोकनेके उपनिवेशोंके अधिकारके सम्बन्धमें जो-कुछ कहा है उस बारेमें आपको कोई निश्चित बोधना नहीं मिलेगी।

यह पूछा जानेपर कि ट्रान्सवालमें इस समय स्थिति क्या है श्री गांधीने कहा :

आज स्थिति यह है कि भारतीय पिछले दो वर्षोंके अवधि कर रहे हैं और २, से अधिक लोग ट्रान्सवालको बेतोंमें पड़े हैं — अर्थात् ट्रान्सवालकी वास्तविक भारतीय आबादीका एक-तिहाई भाग और ट्रान्सवालकी सम्भावित भारतीय आबादीका छठा भाग। इसके कुछ प्रतिनिधि

यूरोपीयोंका भी विश्वास प्राप्त हो गया है और फलस्वरूप एक छोटी समिति बनाई गई है जिसके अध्यक्ष भी इन्स्यु होस्केन हैं। इस समितिने ब्रिटिश भारतीयोंको बचत दिया है कि वह उनके सर्चमें आनयकता पड़ी तो फेदका सामना करनी हव तक भी तबतक सहामता देनी बचतक उनकी माँगें जिन्हें वे मिन उचित मानते हैं मान नहीं भी जाती। सरकारका खयाल है कि वह हमें मुर्खों मारकर झुका सकेनी। यह बिलकुल सच है कि शायद कुछ सीम तक चायें और घुटने टेक दें लेकिन मेरा विश्वास है कि हममें ऐसे लोगोंकी संख्या बहुत बड़ी और पर्याप्त है जो सब कठिनाइयोंके बावजूद संघर्ष जारी रखेंगे। कुछ सीम ऐसे हैं, जिन्होंने अपना कारोबार बंद दिया है हर चीज छोड़ दी है और केवल संघर्ष बना रहे हैं क्योंकि उनका खयाल है कि यह एक बड़े सिद्धान्तका संचाल है। और यदि मेरा अनुमान सत्य है तो मैं नहीं कह सकता हूँ कि एक केवल एक ही हो सकता है जबकि यह कि हमारी माँगें मान की जाएंगी। यह काम कितनी जल्दी या देरसे होगा यह हमारी अपनी शक्तिपर निर्भर होगा। फिर इन्सुइमें हमारी ब्रिटिश भारतीय समिति है। इसके अध्यक्ष सॉर्टे एन्टहिल भी इसी उद्देश्यक काम कर रहे हैं। वे कभी भारतके कायबाहुक नाइसराय वे। इस समितिमें कई प्रभावशाली आत्म-भारतीय हैं जिनका अनुभव बहुत व्यापक है और मेरा खयाल है कि यदि हममें पर्याप्त संघर्ष हा तो हमें समीचीन सहाय्यमूर्ति मिल सकेनी। इस बीच ट्रान्सवाल सरकारने फिर सक्रिय कारवाई शुरू कर दी है। मुझे एक ठार मिला है जिसमें कहा गया है कि लगभग ३ भारतीय निर्वासित कर नेताक भजे या चुके हैं वे ट्रान्सवालमें फिर प्रविष्ट हो गये हैं और अब मुकदमे चलाये जानेकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मुझे मासूम हुआ है कि इस बार उनपर एक बलम भारतके अन्तर्गत मुकदमे चलाये जायेंगे इसलिए वे फेदकी सजा सुगतेंगे। नेताकके नेता और ३३ दूसरे व्यक्ति न्यायाधीशके सम्मुख शायद एक घाये जायेंगे। उनका भी यही हाल होगा। इस तरह ट्रान्सवालकी जेलोंकी भरनेकी प्रक्रिया आरम्भ हो गई है। देखना यह है कि वे इस कार्यको पूरा करते हैं या नहीं। बाहिर है, सरकार यह सोचती है कि इन कड़ी कारवाइयोंसे और न्यायाधीशों द्वारा कानूनमें निर्हित पुरे सजायें दी जानसे भारतीय मुक जायेंगे तथा कानूनको मान लेंगे। लेकिन मेरा खयाल ऐसा नहीं है।

संस्कर्ता : क्या ट्रान्सवालके संघ-निवासी, कानूनपालक भारतीयोंकी मौजूदा कानूनोंके विरुद्ध कोई ठोस सिद्धांत है ?

श्री माथी अवस्थ : मर्घाप हम इस समय कितनी ऐसी सिद्धांतोंके आचारपर नहीं झड़ रहे हैं फिर भी सिद्धांतों तो हैं ही। उदाहरणके लिए, कानूनको सबसे ज्यादा माननेवाले भारतीयोंको भूमिके स्वामित्वसे वंचित कर दिया गया है और वह खास बस्तियोंको छोड़कर देशमें घुसरी बसत भीमकता कोई टुकड़ा नहीं खरीद सकता। यह एक अरपण्ट ठोस सिद्धांत कही जा सकती है। लेकिन हम जिस चीजके लिए झड़ रहे हैं यह उससे अलग है। इस संघर्षके पीछे जो सिद्धान्त है या कभी वा वह पारिदिक है, जहाँ १९७ के कानूनसे लोगोंकी आत्मिक भावनाओंको ठेक जपती है। लेकिन अब मुख्य उद्देश्यके मूळमें भारतीय जातिकी प्रतिष्ठा है, क्योंकि अब हमारे साथ या तो इस उद्देश्यके अन्वहार किया जायेगा कि हम साम्राज्यके अविभक्त संघ हैं या इससे कि हम उसके अविभक्त संघ नहीं हैं।

संस्कर्ता : यह एक बहुत व्यापक सिद्धान्त है। लेकिन बीसा में समझता हूँ इस सब मामलेमें ट्रान्सवालमें तिलित भारतीयोंके प्रवेशके अधिकारका सवाल धारपूत है। अपर

प्रेसा है तो साम्राज्य-सरकारका यह बलतत्त्व मौजूद है जिसका उल्लेख किया जा चुका है। अर्थात् साम्राज्य-सरकार उस स्वशासित उपनिवेशसे सम्बन्धना नहीं चाहती जो प्रवेशका उचित अधिकार देनेसे इनकार करता है।

श्री गांधी तो उस अवस्थामें हम स्थानीय सरकार और साम्राज्य-सरकार दोनोंसे चर्चेंगे। लेकिन मेरा अब भी विश्वास है कि साम्राज्य-सरकार हमारे साथ है।

भेंटकर्ता : इस समय एक प्रकारका बहिरोप है। आप केवल इसलिए अड़ रहे हैं कि निश्चित इतनी अज्ञात ही आपके जिससे साम्राज्य-सरकारको कोई कार्रवाई करनी पड़े।

श्री गांधी देखिए, मुझे इस संघर्षकी भावनामें इतना अधिक विश्वास है कि मैं अनुभव करता हूँ कि साम्राज्य सरकारके हस्तक्षेप करनेसे पहले दक्षिण आफ्रिकाके सब उपनिवेश चर्चेंगे नहीं हमें ये उचित माँगें बखरम पूरी कर देनी चाहिए। द्वाय्स्वाकमें इसके लक्षण दिखाई दे रहे हैं और कुछ प्रमुख यूरोपीय बिम्होंने सुझावें हमारे संघर्षका बुरा और प्रारम्भ करनेकी दिशा की भी अब जोरसे हमारा समर्थन कर रहे हैं।

[अंग्रेजीसे]

नेहरू मन्थर्वरी १-१-१९१९

८३ बूकानवार बनाम फेरीवाले

पेठ बनाम जय्य मंग

एक बार पेठ और घरीरके मध्य संबंधोंके बीच भारी झगडा हो गया। हाथोंने कहा हम कोई काम नहीं करने काम करते-करते बक बसे सवा मुझमें भोजन प्लुंवाते है किन्तु पेठ बाता है और बिनाकता है। हमें जससे कोई सहमता तो मिलती ही नहीं।" परेने कहा हम किन्तुच चर्चेंगे ही नहीं। पेठकी बेमार ब्यर्ष ही की। मन्वा करता है केवल पेठ राजा भी नहीं कहा जाता है। हुनारे हाथ तो टडक करना ही रहा। इसी तरह अन्य बंध भी बड़बड़ाने लगे। पेठने उनको बहुत समझाया और कहा कि तुम मेरा काम नहीं देख सकते। हाथ तो मुँहमें जोबन रखकर निबूत हो जाते हैं। पर भोजन-सामग्री लाकर आराम करते हैं। किन्तु मुझे भीनीसीं बंटे काम करना पड़ता है मजे ही तुम मेरे कामको न देखो। यदि मैं एक मिनट भी आराम करूँ तो तुम सबका काम बन्द हो जाये। तुम काम न करोये तो सबसे पहले तुम्हींकी हानि उठानी पड़ेगी। मैं तो कुछ समय तक काम बना सक्तीगा यद्यपि तुम्हारे [सहयोगके] बिना अन्तमें मरना मुझे भी हीना। किन्तु तुम सब काम न करोगे तो मुझसे पहले तुम मर जाओगे यह निश्चित समझ लो। संबंधोंने यह बात नहीं मानी। उन्होंने काम बन्द रखा। भीनीय बंटेके भीतर ही हाथ-वीर और दूसरे अवयव डींधे पड़ गये। उन्हें परचात्ताप हुआ। पेठको कुछ भोजन न मिला वा इससे वे बहुत चिन्तित हुए। अन्तमें उनके सामने पेठके कथनकी सच्चाई सिद्ध हो गई। उन्होंने देखा कि पेठका काम कुछ कम नहीं है। चूँकि यह बहुत-से संबंधोंके लिए काम करता है, इसलिए उसका काम बिचार जाता है और किसी एक बंगको अधिक दिखाई नहीं देता।

किन्तु जब उन्होंने काम बन्द किया तब उन्हें सुरन्द ही माझूम हो गया कि पहली कठिनाई तो उन्हींको हुई।

यह कहानी मुझे उन कतिपय पत्रोंसे याद आई जो मुझे मिले हैं। इन पत्र-केलकोंने व्यापारियोंपर बहुत-से आरोप लगाये हैं। कुछने उनके लिए अपसन्द्य भी कहे हैं। कुछने उन्हें बमकी भी बी है। जेब जानेसे बचनेके लिए कुछ लोग बीरे-बीरे बामिक बहाने भी बताने लग गये हैं। य सब व्यापारियोंसे उची प्रकार होय करने लगे हैं जिस प्रकार बंगोंने पेटसे किया था। ये कहते हैं कि ट्रान्सबाकके व्यापारियोंन डेरीबाकोंसे दगा की है। उन्हींने उनको मार डाला है। उनको तो जेब भोज दिया और स्वयं ऐस-बाचम करते हैं। एक पत्र लेखक वहाँ एक मोर डेरीबाकोंका उल्लेख व्यत्यन्त आदरपूर्वक करता है, वहाँ बूधरी मोर कहता है कि वे समझोंमें बुरकर बोज नहीं सकते क्योंकि व्यापारियोंसे दबते हैं। हमने इन पत्रोंको छापा नहीं है क्योंकि इनसे समाजकी प्रतिष्ठा बङ्गनेकी नहीं है। इन सब आरोपोंका कारण यह है कि कुछ व्यापारियोंने अपना व्यापार अपनी पल्लियों या गोरोंके नाम बड़ा दिया है। व्यापारियोंका क्यब्य है कि वे पेटकी माँसि अपना हृदय उधार रखें और डेरीबाकोंको मिठाससे समझायें। हमारा समाज बीर्ष कालसे दासता मीगता या रक्षा है उसने स्वतन्त्रता बैची नहीं है। इसलिये आज जब सत्बाग्रहकी तमवारकी बवौलत स्वतन्त्रता देखनेका समय आया है और नुसामीधे कुटकारा मिल रहा है तब इसको पचाना छोटे और बड़े सभीको मुक्तिस माझूम ही रहा है। कोई किसी बूधरेको अपनेसे बड़ता देखता है तो सहन नहीं कर सकता। इसमें आश्चर्य कुछ नहीं है। बितने राष्ट्र स्वतन्त्र हुए हैं उन सभीको ऐसी मन्तरकी पीड़ा हुई ही है। बन्नेके अगमसे पूर्व माँको मृत्यु-वसी पीड़ा होती है तब कहीं बच्चा जनमता है। इसी प्रकार हमें स्वतन्त्रता-रूपी बन्नेको देखनेसे पहले सरकार द्वारा बी गई पीड़ा ही नहीं भोगनी होगी बल्कि बापसी ब्यबहारकी पीड़ा भी सहनी होगी। व्यापारियोंपर ऊपर बताया गये आरोप बिना सोचे लनाये गये हैं। बिन व्यापारियोंने अन्तिम समयमें अपना व्यापार गोरोंके नाम बड़ा दिया है, उन्हींने न तो पैसका जोम किया है और न वे बेलसे ही डरे हैं। उनमें से बहुत-से जेब जानेके लिए तैयार ही हैं। व्यापारको बूधरेके नाम बेलका हेतु यही है कि हम जानबूझकर सरकारके हाथमें योजना-बाल्य न छोप दें जिसका उपयोग वह हमारे ही बिकर करे। हमें डेरीबाकोंको याद दिखाना चाहिए कि जब जनवरी [१९८]में भारतीयोंपर हाथ डाला गया तब मुख्य प्रहार नेताओंपर ही हुआ था। स्टीडर्टनके अग्रमम सभी व्यापारी जेब भोज चुके हैं। संभके बन्धन भी कालभिया बेल हो आये हैं। बी अस्वात और बी मगदी प्रयत्न पूर्वक बेल नये और सजा काटकर आये। इसी प्रकार इस समय भी इन्डो-हिम काजी बेल काट रहे हैं। जब उन्हींने अपना व्यापार गोरोंको छोपा तभी उन्हें जेब जानेका अवसर मिला। मिडेलबर्गमें भी मामाने बेल भोगी और किरिचमानामें भी बकिम बेल गये। बी मुहम्मद मियाँ इस समय भी कैर भोग रहे हैं। इस प्रकार बहुत-से व्यापारी बेल जा चुके हैं। जो सोच नेतासमे बिलेय रूपमें सहामता करनेके लिए आये हैं वे भी नेतासके प्रमुख दुकानदार हैं। इसलिये दुकानदारोंपर आरोप लगाता उचित नहीं है। डेरीबाकोंको यह समझ लेना है कि वे दुकानदारोंसे ईर्ष्या नहीं करते। दुकानदार जेब आये तो इनसे वे सन्तोष मारें। उनको दुकानदारोंने बर्बर कर दिया यह कहनेसे प्रकट होता है कि वे जेब जाना बन्ती मानते हैं। अन्तमें हमें यह मानना चाहिए कि अिन्होंने हमें जेब मेबा है उन्हींने हमें क्यपदा पहुँचाया है।

जो बोल गया है, उसने कहा है जो नहीं गया उसने गँबाया है। बिम्होंन बेराकी बाविर पैसा गँबाया है उन्होंने ही भयङ्गमें पसा कमाया है। जो अपने पैसेसे बिलके रहे और अपने इस प्रतिष्ठा और प्रतिज्ञा बाविरको तिसाङ्ग-बलि दे बैठे वे पसा होनेपर भी कंभास हूँ। इसलिये हम माछा करते हैं कि हमारे पत्र-लेखक और उनके मतसे सहमत अन्य भारतीय हमारे कर्मगपर बिपार करके संघर्षका त्याग नहीं करेंगे बल्कि उसमें जाने रहेंगे और गफ़लतमें पढ़कर बीपी बासीको हार न बटेंगे।

यदि फेरीवालोंके लिए इस प्रकार सोचना उचित है तो ब्यापारी भी यों ही नहीं बूट सकते। यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी ओर बँगुची उठाने-बैसी कोई बात ही नहीं है। निःसन्देह उनमें से कुछ लोग डरपीक हैं और कुछने पैसेको ही परनेपर मान रखा है। वे संघर्षके संघासनमें घबिस्त नहीं लपाते। कुछ लोग केवल लम्बे-लम्बे मापब देनेवाले ही हैं। सब ब्यापारियोंको पेटके उबाहरबसे दिशा देनी चाहिए। पेटको स्वयं बिलना मिळता है उसकी अपेक्षा वह बँगोंको अधिक देता है। जहाँ बँग एक निश्चित समय तक ही काम करते हैं वहाँ पेट — अपने लिए नहीं बरगु बँगोंके लिए — बीबीसी बँटे काम करता है। इसी प्रकार ब्यापारियोंको फेरीवालोंके और अपने ऊपर बाधित अन्य लोगोंके हितोंकी रक्षा करनी चाहिए, उन्हें बड़ा होनेपर भी छोड़ा और सेठ होनेपर भी बाकर बनना है। काम न चले तभी ब्यापार बूसरोंके नाम बड़ाया जा सकता है। किन्तु यह अन्तिम उपाय है और आगे डरपीक कोपोंके लिए है। हम यह जाना करते हैं कि जो लोग बोर बनकर बैठे हैं जो और उत्पादही हैं वे तो किसी बूसरे-सीसरेके नामसे परबाना (बाइसेंस) न लेंगे और अपने बन्धुको समेटकर फिजहाक मरीची इक्तिपार करके समाजकी सेवा करेंगे। इसीमें बड़प्पन है, यही सभ्यी सेठारी है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि फेरीवालोंको किसीने सिकायतका पीका दिया ही नहीं है। किन्तु यदि सब ब्यापारी अपने-अपने कर्तव्यका पाळन करें और स्वार्थ त्यागकर परमाणु करें तो किसीके लिए कुछ सिकायत करनेकी बात रहेगी ही नहीं। बलिय बाधिकाके भारतीयोंकी बृष्टि अब ट्रान्स्वाल्डके ब्यापारियोंपर लगी है। फेरीवालोंको स्वतन्त्र रहकर लड़ाई लड़नी है किन्तु यदि वे हार मान बैठें तो इसमें जोड़ा-बहुत बोध ब्यापारियोंका भी माना जायेगा। बिल प्रति-बिल ट्रान्स्वाल्डका कर्तव्य कठिन होता जाता है। हम खुशसे प्राबना करते हैं कि यह ब्यापारियों फेरीवालों और उसी प्रकार अन्य सब भारतीयोंको भी सुबुद्धि दे बूढ़ रहे और इस महान् कार्यमें जनपर जो कष्ट जायें उनको सहन करनेका साहस प्रदान करे।

[गृहपत्नीस]

इंस्टिपल ओपिनियन, ९-१-१९ ९

८४ नेतालके शेष नेता

सभी भारतीय यह जानना चाहें कि नेतालके या नेता ट्राम्सवाल जाकर देरकी खातिर जाने सबस्वकी आजुति दे चुके हैं उनके अतिरिक्त गण नेताकी मता क्या कर रहे हैं। हमारा जोहानिगबयका सवालवादा नेतालके सम्बन्धमें या प्रश्न उठता है वह समयमें और सोचने योग्य है। दक्षिण आफ्रिकाका प्रत्येक भारतीय ट्राम्सवालक संघर्षमें सहायता देनेके लिए बेधा है। नेतालका कर्तव्य दोहरा है। किन्तु हमें जरूरी साधन कहना पड़ता है कि जो मता पीछे रह गये हैं वे अपना कर्तव्य पर्याप्त रूपसे पूरा नहीं कर रहे हैं। इससे हम सबको अपना धिर मोषा कर लेना चाहिए। इन नेताओंका पहला कर्तव्य तो यह है कि वे कांग्रेस-कोषमें धन-संग्रहकी तैयारी करें। कांग्रेसका खजाना लुट गया है। उसपर कर्ज है। श्री रॉबिन्सनका विधेयक हमारे ऊपर झुक रहा है। नेतालके और जेल बायेंगे तो तार बना कांग्रेसका कर्तव्य हो आया उनके लिए क्या होगा? वह क्या कहेंगे कांग्रेस? ट्राम्सवालमें जेल जानेवाले भारतीयोंके बाध-बन्धे भूखों मरेंगे तो क्या कांग्रेस सहायता न करेगी? यदि करेगी तो कहेंगे करेगी?

उमाहोका काम बहुत बार आरम्भ किया गया और वह बहुत बार बन्द हुआ। बड़ी संघर्षोंका काम ऐसे नहीं चलता।

मेनकाइनका स्पर्कका समय चल ही रहा है। इस सम्बन्धमें मेनकाइनके नेताओंकी कार्यक्षमता मुहम्मद इब्नाहीम और श्री नरमानी फोक्सरस्ट जेसमें श्री राजद मुहम्मदसे मिल जाये वे। समझौता सम्भव हो गया था किन्तु पीछे सब पसट गया भाग्य हीटा है। मेनकाइनके भारतीय नेताओंका यह स्पष्ट कर्तव्य है कि वे इस समय समयका उठानके बजाय आर्थिक सहायता दें। यदि वे समय सके तो सीधी बात तो यह है कि उनकी माँग स्वीकार करने योग्य है बल्कि वह स्वीकार हुई गयी ही है। उनकी माँग यह है कि समितिमें मेनकाइनके पर्याप्त सदस्योंको आनेका अधिकार दिया जाये। यह अधिकार तो सदास दिया हुआ ही है। फिर भी वे करने इस अधिकारकी समुचित रक्षाका आश्वासन प्राप्त कर सकते हैं। जगड़ेकी दुपटी बात यह है कि २५ पीछे अधिकार कम खच करनेके लिए उनकी स्वीकृति ली जाय। यह मामला छोटा है फिर भी कांग्रेस इस आशयका प्रस्ताव स्वीकार कर सकती है। मेनकाइनके लोगोंको समझना चाहिए कि वे इन अधिकारोंको प्राप्त कर सकें वह व्यवस्था करना हमसर्वोंका काम नहीं है बल्कि उनका अपना काम है। कांग्रेस इस सम्बन्धमें ना कह ही नहीं सकती। किन्तु इती कारण उमाहोका तारा नाम अटककाय रसमा कर्तव्य पीनवीय नहीं है। हमें आज्ञा है कि मेनकाइनके लोग अपना कर्तव्य पूरा करने न चूकें।

[पुनरावृत्ति]

इतिथय औपनिथय १-१-१० १

८५ हिन्दू-मुस्लिम बंग

कमरुद्दामों हिन्दू और मुसलमान सब पड़े यह खबर सारसे समझने की है। कहा जाता है कि इसमें कुछ लोग मारे भी गये हैं। कुछ हिन्दुओंने मसजिदपर आक्रमण किया था इससे मुसलमान भड़क उठे। उन्होंने विरोधमें आक्रमण किया। सरकारी सेना बीचमें आई। सबरसे पता पड़ता है कि बंग बनी बनी नहीं है। सबरमें क्या सब है और क्या सूठ यह कोई नहीं जान सकता। किन्तु यह तो प्रतीत होता ही है कि इस झड़केका कारण कोई पौरा अधिकायी है। ऐसी कोई बात दिखाई नहीं देती जिसके कारण हिन्दुओं और मुसलमानोंको आपसमें झड़ना पड़े। अधिकायी अबुरखिताबस समझते हैं कि दोनों कौमोंमें एकतर होनेमें उनका मान है। इस समय भारतमें स्थिति ऐसी गम्भीर है कि यदि दोनों कौमोंमें लड़ मरें तो बहुरसे अधिकायियोंका खयाल है सरकार निश्चिन्त होकर बैठ सकती है। यह विचार करना चाहिए कि इस समय बिदेसोंमें रहनेवाले भारतीयोंका क्या कर्तव्य है। हमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि हम चाहे हिन्दू हों वा मुसलमान हमें किसी भी पक्षका समर्थन न करना चाहिए। एक चीघरे पक्षने हममें झनका करवाया है, यह समझकर हमें अपने देशमें अपने लोगोंके बीच विरोध होनेपर दुखी होना चाहिए और खुदा वा परम्परासे मसजिदों और मस्जिदोंमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे देशमें हम लोगोंके बीच बार-बार जो झड़ें हो जाते हैं वे समाप्त हो जायें। इसीमें भारतका कल्याण है। हमें विश्वास है, प्रत्येक देशमन्त्र भारतीय ऐसा मानेगा।

हम जिस उत्पासहकी लड़ाई लड़ रहे हैं वह अनमय सभी मामलोंमें जानू किया जा सकता है। हमें यह समझकर निश्चिन्त रहना चाहिए कि यदि कौमोंके बीच झड़ें हों तो उनकी सान्त करनेके लिए भी इस सत्त्वका उपयोग किया जा सकता है।

[मुसलमानोंके]

इंडियन ओपिनियन १-१-१९१९

८६ बकूबरके भारतीय

भारतमें बकूबरके भारतीय पर्याप्त दुइताका परिचय देते मामूम हो रहे हैं। बर्हकी सरकार जगहें [बर्हके] निष्कास कर अठेरियावाके प्रदेशमें बसानेका आक रखा था किन्तु वे उसमें जाते नहीं। और अब वे ब्रिटिश हींइरास जाके अजाय बकूबरमें ही रहनेवाले हैं। उनकी औरसे हींइरास प्रदेशका निरीक्षण करनेके लिए जो दो भारतीय पये वे उन्होंने बताया है कि हींइरासमें भारतीय रह ही नहीं सकते। उनका कहना है कि जगहें रिश्तका आकण किया गया था ताकि वे सूठी रिपोर्ट दें किन्तु उन्होंने रिश्तकी परवाह नहीं की। उन्होंने अपनी दृष्टि अपने माइयोंके हितपर ही रखी। वे दोनों भारतीय बचाके पाव है।

बकूबरके भारतीय ऐसे-वैसे नहीं हैं। हालमें इसका कुछ उदाहरण भी हमारे सामने आया है। बर्हके अजबार्तोंमें एक समाचार प्रकाशित हुआ है कि प्रोडेर ठेकमास सिहने

जो वहाँ रहते हैं और जिन्होंने एम ए की परीक्षा पास की है, हज़ारों सिद्धों और दूसरे भारतीयोंके समक्ष भाषण करते हुए कहा

आजकल भारतमें जो लड़ाई चल रही है उसमें तो देश कानूनके अनुसार लड़गा किन्तु यदि उससे ब्याप नहीं मिला तो वहाँ कोई ऐसा भारतीय जाग उठेगा जो लोगोंको हुंभियारोंसे सुसज्जित होकर बीना-बाक्यकी लड़ाई लड़नेकी प्रेरणा देगा। भारतमें गोरे अधिकारियोंको असीम शक्ता दे दी जाती है जिससे कई मोर्चोंका विमान ऐसा पड़ गया है कि वे लोगोंको कुछ समझते ही नहीं। सिद्धोंकी आँखें खुलती जा रही हैं। वे समझने लगे हैं। भारत ब्यापकी माँग कर रहा है। श्री कनिंघम कुछ वर्ष पहले इतिहासमें लिख गये हैं कि यदि ईम्पीर ब्याप नहीं देगा तो भारतमें कोई ऐसा योद्धा पैदा होगा जो सब-कुछ जीत लेगा। कोई भी राज्य अधिकारियोंकी नीबपर निभ नहीं सकता।

[मुबरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ९-१-१९ *

८७ फीनिक्सकी पाठशाला

इस पाठशालाके बारेमें लिखनेका हमने पिछड़े सप्ताह संकेत किया था।^१ अब हम नीचे लिखे अनुसार जानकारी दे सकते हैं।

जीवनकी व्यवस्था

फीनिक्समें काम करनेवालोंमें जो कुछ लोग परिवार-सहित रहते हैं वे अपने घरमें भोजन करानेके लिए आठ बच्चे तक ले सकते हैं। विचार यह है कि जो बच्चे किये जायें उगई अपने ही बच्चोंकी भाँति रखा जाये। ऐसी प्रथा भारतमें पढ़ेकी थी। उसे जैसे सम्भव हो सके फिर प्रारम्भ किया जाये। बच्चोंको कौनकी शर्तें इतनी ही हैं कि उसकी तन्दुरुस्ती बख्शी हो। किसी भी जाठिका भारतीय बाळक किया जा सकेगा। जाने-बिनेमें किसी तरहका वेद नहीं किया जावेगा। बच्चोंको वही भोजन कुछ फेरफारके साथ दिया जायेगा जो घरवाले करते हैं। बर्बात् नीचे लिखे अनुसार दिया जावेगा

बायीं ओरछ घूब बी औंस बी आटा मकईका दलिया बास चावल तामे फल हरे शाक बीनी टोटी कबकी मेवे (सुख्यतः मूँगफली)।

ऊपर लिखे अनुसार भोजन नियमसे दिया जावेगा और जैसा बच्चोंके लिए अनुकूल पाल पड़ेगा उस हिसाबसे दिनमें कमसे-कम तीन बार और उपाहारके-ब्यादा बार बार दिया जायेगा। इसमें से कौन-सी खानेकी चीज किस समयके भोजनमें देनी है यह बात हमारे अपने साधारण नियमके अनुसार, बचवा अनुभवसे जैसा अधिक उपयुक्त जान पड़ेगा उससे मुताबिक निश्चित की जायेगी।

१ देखिए "फीनिक्सकी पाठशाला" पृष्ठ १२२।

८५ हिन्दू-मुस्लिम धंगा

कमकमतामें हिन्दू और मुसलमान लड़ पड़े यह सबर तारसे खबरने की है। कहा जाता है कि इसमें कुछ लोग मारे भी गये हैं। कुछ हिन्दुओंने मसजिदपर आक्रमण किया था इससे मुसलमान भड़क उठे। उन्होंने विरोधमें आक्रमण किया। सरकारी सेना बीचमें आई। सबरसे जान पड़ता है कि क्या कभी खा नहीं है। सबरमें क्या घब है और क्या सूठ यह कोई नहीं जान सकता। किन्तु यह तो प्रतीत होता ही है कि इस लयड़ेका कारण कोई गोरु बधिकारी है। ऐसी कोई बात दिखाई नहीं देती जिसके कारण हिन्दुओं और मुसलमानोंको आपसमें लड़ना पड़े। बधिकारी अहुरबलिताबध समझते हैं कि दोनों कौमोंमें लकरार होनेमें उनका काम है। इस समय भारतमें स्थिति ऐसी गम्भीर है कि यदि दोनों कौमों लड़ मरें तो बहुत-से बधिकारियोंका खमास है सरकार निश्चिन्त होकर बैठ सकती है। यह विचार करना चाहिए कि इस समय विदेशोंमें रहनेवाले भारतीयोंका क्या कर्तव्य है। हमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि हम चाहे हिन्दू हों या मुसलमान हमें किसी भी पक्षका समर्थन न करना चाहिए। एक तीसरे पक्षने हममें शकड़ा करवाया है यह समझकर हमें अपने देशमें अपने लोगोंके बीच विरोध होनेपर दुखी होना चाहिए और खुदा या परमात्मासे मसजिदों और मन्दिरोंमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे देशमें हम जोयेंकि बीच बार-बार जो लयड़े हो जाते हैं वे समाप्त हो जायें। इसीमें भारतका कल्याण है। हमें विश्वास है प्रत्येक देशभक्त भारतीय ऐसा मानेगा।

इस बिध सत्याग्रहकी लड़ाई लड़ रहे हैं यह लयमय सभी मामलोंमें जापू किया जा सकता है। हमें यह समझकर निश्चिन्त रहना चाहिए कि यदि कौमोंके बीच लयड़े हों तो उनको शास्य करनेके लिए भी इस सत्यका उपयोग किया जा सकता है।

[पूबरतीधे]

इंडियन ओपिनियन ९-१-१९१९

८६ बँकूरके भारतीय

कैमडामें बँकूरके भारतीय पनाप्ट बुड़ठाका परिचय देते माकूम हो रहे हैं। वहाँकी सरकारम उन्हें [बहुधे] निकाल कर मसेरियावाके प्रदेशमें बसानेका बास रखा था किन्तु वे उसमें फँसे नहीं। और अब वे बित्थि होंकरास जानेके बजाय बँकूरमें ही रहनेवासे हैं। उनको खोरसे होंकरास प्रदेशका निर्माण करनेके लिए जो दो भारतीय गये वे उन्होंने बताया है कि होंकरासमें भारतीय रह ही नहीं सकते। उनका कहना है कि उन्हें रिस्मतका आलम दिया गया था ताकि वे सूची रिपोर्टें दें किन्तु उन्होंने रिस्मतकी परवाह नहीं की। उन्होंने अपनी दृष्टि अपने भाइयोंके हितपर ही रखी। ये दोनों भारतीय बजाइके पाव है।

बँकूरके भारतीय ऐसे-वैसे नहीं हैं। हममें इसका दूसरा उदाहरण भी हमारे सामने आया है। बड़ाके बसदारोंमें एक समाचार प्रकाशित हुआ है कि प्रोफेसर टैन्माथ सिंहने

इस मौक़ानमें चाय काठी मा कोको सामिल नहीं है। अपने ज्ञान तथा अनुभवके आधारपर हमारी यह धारणा है कि चाय-बैसी चीज़ें बड़े लौबिकि सिर्फ़ भी मुक़दानवेद हैं परन्तु बच्चोंके सिर्फ़ तो विशेष रूपसे। कुछ डॉक्टर यह मानते हैं कि चाय आदि चीज़ोंके बसनेसे बच्चोंमें रोबोंकी वृद्धि हुई है।

फिर, चाय कोको और काफी सामान्यतः पुष्पामीकी हाज़तमें काम करनेवाले मजदूरों द्वारा पीया भी जाती है। उदाहरणार्थ नेटालमें गिरमिटिया सौय काम करते हैं और चाय तथा काफी उपाते हैं। कोको फ़ाबोंमें होता है और वहाँ तो गिरमिटिया काफ़िरोंपर काम केते समय जो ज़रूम किया जाता है उसकी हद नहीं है। हम मानते हैं कि ज्यादातर चीनी भी पुष्पामीकी मजदूरोंसे ही पीया होती है। इस सबकी बीच बातचीतसे करना सम्भव नहीं है। फिर भी हमारा साध लयाह है कि ऊपरकी तीनों चीज़ोंका इस्तेमाल बिलतना कम किया जाये उतना अच्छा।

इसके अलावा भारतमें जब हम स्वदेशीकी भावना अपना रहे हैं तब इन तीनों वस्तुओंको बहुत हद तक छोड़ देना ही ज्यादा ठीक मानना चाहिए। इन चीज़ोंको जास चाय-बैसी चीज़ोंके सिवाक यहाँ देनेकी जरूरत नहीं है। इतना ही कहना काफी है कि बच्चोंको इनकी जरूरत नहीं है।

खानेका खर्च

हम देखते हैं कि खानेका खर्च हर महीने कमसे-कम एक गिन्नी जाता है। इसमें हजामत आदिका खर्च भी आ जाता है। केवल मोहन-सामग्री ही एक पीछकी होती है। कपड़े बुझवानेका खर्च एक सिमिय अलग लयाया है। हजामत बनेरहना खर्च हमने लक्षपसे नहीं लयाया क्योंकि फ़ोनिकसमें हजामत ज्यादातर बापघमें ही कर ली जाती है। इसलिये उसपर खर्च नहीं करना पड़ता।

रहनेकी व्यवस्था

जैसे खानेका इस्तजाम ऊपर सिधे अनुसार ही जायेगा वैसे रहनेका सम्भव नहीं होता। उतने मक़ान नहीं हैं और परिवारोंमें बच्चोंको ज़ीने चाहिए वैसे रखनकी गुंजाइश नहीं है। इसलिये बच्चोंके एक ही बग़ाइ सीनेके सिर्फ़ मक़ान बग़ानेकी जरूरत होती। इसके बतलके पहले हमें बच्चोंको बाबिल करनेकी सुख दिखलाई नहीं देती। बाबिल होनेवाले बच्चोंमें और जिन परिवारोंमें वे जाना लायेंगे उनमें इस समय रहनेवाले बच्चोंमें कोई धेद नहीं है यह बतानेके लिए ही हमने इस समय रहनेवाले बच्चोंको भी बाबिल होनेवाले बच्चोंके साथ मुक़ानेका इरादा किया है। इस प्रकार जगजग बीच बच्चोंके सीने लयाक मक़ान बतानेकी जरूरत है। अनुमान है कि इस मक़ानकी बताने और बच्चोंके नहाने-बोलेकी सुविधाके लिए टंकीका प्रबन्ध करनेमें २ पाँच लम लायेंगे। जो सौय अपन बच्चोंको मेवना चाहते हैं वे यदि इस समय इतना खर्च उठा लें तो बच्चोंकी व्यवस्था ही सफ़टी है। इस खर्चका लक्षमीना हमने वास्तुकार (आर्किटेक्ट) श्री फ़ैकेनरीक और बैची मिस्त्रीकी सलाहसे तैयार किया है। यह मक़ान उतकी मिश्रियत होपी जो उसके लिए लयाया रहे। इसमें धरत इतनी होगी कि जबतक पाठशाळा बनेपी तबतक उनका कोई भी हक़ नहीं होगा। यदि पाठशाळा बन हो जाये तो लयाया लयानेवाले मक़ानको उठा ले जा सकते हैं। यह लयाक भी लौन अपने बच्चे मेवनेके लिए तैयार है वे या ही स्वयं अपने पाससे मेवें या बूटोंसे

बन्दा कान्हे मित्रबानों। जो लोग इसलिये बपया बेंने के धार्मिक कामके लिए बपया बें रहे हैं एसा समझना चाहिए। श्रीमिच्छावासी इस समय काममें इतने गुंने हुए हैं कि उनस बन्दा इच्छा करनेका प्रयास नहीं हो सकता।

पोषाक

बच्चोंकी पोसाक हमेंसा एक-सी रकनमें बहुत सुविधा रहती है। हमारे लयाकमें नीचे लिखे अनुसार कपड़ोंकी जरूरत है

	दि वे
१ बार्मीका शर्ट	१-१
१ आधे पायजाम	१-
१ कुर्ते	१-०
४ बहियाँ	४-०
२ जोड़ी बप्पे या जूते	१-०
१ बूफकी टोपी	२-
२ रातकी पोसाकें	४-
२ लीकिये	२-
२ हाथ पोछनेके बेंबोले	१-
४ कमास	१-

पीठ १-११-६

हर बच्चा टोपी नहीं पहने जो उसकी जातिमें प्रचलित हो। अगर जिस बूफ-टोपीका जिक्र किया है वह केवल बूफमें काम करते बच्चा पहननाही है। यह पोसाक पहनानी है या नहीं यह माँ-बापकी मर्जीपर है। यदि उनका विचार इतना दूर्ब न करनेका बपया बच्चोंकी इतनी गारपी न सिखातका हो तो वे ऊपर बटाई गई पोसाकका ध्यान रकनकर बच्चोंके साथ एक छीपी पेटा या बप्पडमें सामान भज दें। हमारी सलाह यो यह है कि वे बच्चोंके साथ कुछ न भेजें और हनें १ पीठ १३ डिगिंग १ पेंस भेज दें तथा अगर कहे अनुसार बीनाक बगवान और पहनानकी इजाजत दे दें। अगर कही गई पोसाक एक बरतके लिए है।

श्रीमिच्छा की व्यवस्था

हमारा इरादा श्रीमिच्छाके लिए चारपाहयाँ देनेका नहीं है बल्कि जैसे लक जेकोंमें इस्तीमाक क्रिय गते हैं वैसे लक्योंकी व्यवस्था करनेका है। ऐसा लगता है कि यह लक्युस्कीके बिना ज्यादा बच्चा होगा। हम बच्चोंकी नई बनेके बजाय कम्बलके ऊपर गुमाता अधिक धारोप्यत्र भातते हैं। किन्तु इस सम्बन्धमें माँ-बापोंकी मर्जीसे मुताबिक फेरफार कर देंगे। हमारे विचारमें बच्चोंकी नीचे लिखे अनुसार लक्योंकी जरूरत होगी

	दि वे
१ कम्बल	१-०
१ लकिया	१-
४ चादरें	४-०
२ लकियेके गिलाफ	१-०
	<hr/> १६-०

माँ-बाप इस हिमायते सामान मत्र सञ्चते ह् अथवा हम नदीर वेनके किये तैयार है। कपड़ों और कम्बलों बर्षेच्छका तर्षे माँ-बापकी मर्जीपर छाड़ते हुए हिमाय यह लयाया बना है कि माँ-बापकी ह्दर नहींने एक गिरीता तर्षे उठाना पड़ेगा। प्रवेण-गुस्फ प्रति बाळक एक पीठ रग्य आवेगा। यह गुस्फ बच्चक बाते बरूटी निटाबे सनक किये है। उनतकी निटाबे सो ही जायेगी यठ भावपरक नहीं है। किन्तु पाठ्यात्मामे भी बच्चोंपर डुमरे फुटकर तर्षे हाडे ह् और वे इसी रकममें मे बसान हैं। जाने बड़ हुए बच्चोंके किये जी किताबे बरूटी जान पड़े वे माँ-बापकी सनां होगा।

शिक्षक

अगर जो-कुछ सिखा है उससे स्पष्ट हो जायना कि हमन कोई मानित गुल्फ नहीं रखा है। ऐसा करनेका कारण केवल यह है कि गिटाकोंकी जीविका सानेताने [इंटेलजन्स प्रिन्सिप प्रेश] से जो-कुछ मिलता है, उससे बल पाती है। और छापेगानकी मजदूरीने हरएक पिछक एक निश्चित समपपर पढ़ाने जाता है। ह्दरमें पाठ्यात्मके किये एक समिति बनानकी योजना भी की गई है। उस समितिमें शिक्षा-पद्धति बनीरहके सम्बन्धमें विचार हुआ करेगा।

शिक्षकोंमें भी पुस्तकसमसाध देवाई (प्रिन्सिपल) भी वेस्ट भी कॉन्टिन पुमाठी वेस्ट बादि है।

पढ़ाई

इस पाठ्यात्मका मुख्य उद्देश्य बच्चोंके चरित्रका विकास करना है। कहा जाता है कि चरत्री शिक्षा बहु है जिसमें बालक स्वयं पढ़ना सीखे अर्थात् उनमें ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छा उत्पन्न हो। अब ज्ञान तो बहुत तरहका होता है। कुछ ज्ञान हानिकर भी होता है। तब परि बालकोंके चरित्रका निर्माण न हो तो वे भीबा ज्ञान सीखने सपते हैं। हम देखते हैं कि शिक्षा मनमान ढंगसे भी पानेके कारण ही कुछ लीय नास्तिक हो जाते हैं और कुछ बहुत पढ़-लिख जानेपर भी बुराइयोंमें फँस जाते हैं। इसलिये बालकोंके चरित्रको बुद्ध करनमें सहायता देना इस पाठ्यात्मका मुख्य हेतु है। इस हेतुकी परिणति भी हसन मियाँ और भी रबिडुल्जम दिखाई देती है। श्री हसन मियाँ इन्डेडमें जाकर जो-कुछ कर रहे हैं हम उसकी कुछ कल्पना कर सकते हैं। श्री रबिडुल्जम आज बेचठी छातिर जेल भोग रहे हैं। ये दोनों फीनिक्सकी पाठ्यात्मके गये हैं।

बालकोंको उनकी अपनी भाषा अर्थात् मुबराठी या हिन्दी और सम्मत्र ही तो समिक और अंग्रेजी अंकनमित इतिहास भूगोल मनस्पति-विज्ञान और प्रकृति-विज्ञान भी पढ़ाने जायेगे। अंग्रेजी कथाओंमें बालकोंको बीज-गणित और रेखागणित भी पढ़ाना जायना। अनुमान है कि इस तरह वैदिकयुकेछम तक की तैयारी हो सफती है।

बर्म-शिक्षाके किये माँ-बाप चाहे जिस धन-गुस्फो भेज सकते हैं। हिन्दू बालकोंको हिन्दू माँ-बापोंकी मर्जीके मुताबिक हिन्दू-धर्मके मूल तत्त्वोंकी शिक्षा भी जायेगी। भारतीय ईसाई बालकोंको ईसाई धर्मके तत्त्वोंकी शिक्षा भी वेस्ट और श्री कॉन्टिन देने। यह शिक्षा निर्वा-सफतीकी शिक्षाओंपर आधारित होगी। इस्लाम माननेवासे बालकोंके किये यदि किसी मौलवीकी व्यवस्था हो सके तो हम करना चाहते हैं। मुसलमान बालकोंको सूफ्नारको उर्बत बालोंकी कूट ही जायेगी। हमारा लयाल है कि किसी भी समाजकी शिक्षा सधसे बर्मोंकी शिक्षाके बिना निकम्मी है अतः धार्मिक दृष्टिके माता-पिताओंका कर्तव्य है कि वे अपने बालकोंको बर्मोंकी

शिक्षा और मौकिक शिक्षा दोनों साथ-साथ हों। यद्यपिसे तो सोचें तो मामूम होना कि हम जिसको मौकिक शिक्षा कहते हैं वह भी बर्गको दृढ़ करनेवाली तासीम ही है। हमारे विचारमें इस उद्देश्यसे हीन शिक्षा प्रायः हानिकर होती है।

बालकोंके मनमें भारतके प्रति प्रेम उत्पन्न करने और उनको बेसमयत बगनेमें सहायता देनेके लिए भारतका प्राचीन और बर्गीयन इतिहास पढ़ाया जायेगा।

इसके बाद बताने लायक कुछ नहीं रहता। हम आशा है कि जो अपने बालकोंको पाठशाळामें भेजना चाहते हों वे उन्हें भेजेंगे। मकानकी दिक्कत है उसको दूर करना तब-पिशाका कर्तव्य है। यह बतानेकी जरूरत नहीं कि पाठशाळाके विवरण सर्व जाति नेमपूर्वक प्रकाशित किये जायेंगे।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १-१-१९१९

८८ उच्चतर विद्यालय

सरकारका इरादा स्पष्टतः यह है कि भारतीय बच्चोंको उच्चतर विद्यालयों (हायर ग्रेड स्कूलों) और अन्य सरकारी स्कूलोंसे धीरे-धीरे निकाल दिया जाये। इसका उपाय अपनी बुरकी पाठशाळाएँ खोलना है। यह तो हम बता ही चुके हैं और चीनिकसकी पाठशाळाके सम्बन्धमें भी यह बात कह चुके हैं। फिर भी सरकारका विरोध करना तो जरूरी है। सरकारका विरोध करने और न्याय प्राप्त करनेके दो मार्ग हैं—एक तो न्यायालयके द्वारा और दूसरा प्रार्थनापत्र जादिके द्वारा। न्यायालयके द्वारा हमारे लिए रास्ता है या नहीं यह नहीं भीति विचार किये बिना नहीं कहा जा सकता। एक बार जनीं भी गईं भी उसे सर्वोच्च न्यायालयने खारिज कर दिया इस बातसे कोई विधेय अनुमान बांधा नहीं जा सकता। इसलिए किसी अच्छे बकीलसे मामलेको समझकर उसकी सलाह हो सभी कानूनके अनुसार कड़ना उचित है। यदि ऐसा करना सम्भव न हो तो प्रार्थनापत्र देना चाहिए, और बड़ी सरकार एक जाना चाहिए। अगर यह सब करनेके पीछे जोर तो चाहिए ही। वह जोर सत्याग्रहके द्वारा जाननाया जा सकता है। यह कैसे ही सकता है इसका विचार यहाँ करनेकी आवश्यकता नहीं है। यह विवेचन बादमें किया जा सकेगा। इस बीच नेताओंको ऊपर बताये उपाय विजनी जरूरी सम्यक ही करने चाहिए।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १-१-१९१९

८९ मेरा जेलका बूसरा अमुमव [२]

काम

सस्त सवा पामे हुए कैदियोंके संस्कारको हर रोज़ नी बंटे काम सेनेका अधिकार है। कैदियोंको हमेशा घामके छ बने कोठरियोंमें बन्द कर दिया जाता है। सुबह साढ़े पाँच बजे उठनेकी बंदी बबली है और छ बजे कोठरीका दरवाजा खोला जाता है। कोठरीमें बन्द करते समय और कोठरीके निकालते समय कैदियोंकी पिनती की जाती है। पिनती विधिपूर्वक और बस्ती हो सके इसलिए कैदियोंको अपने-अपने बिस्तरके पास धाबधानीसे बड़े खनेका हुकम होता है। हरएक कैदीको अपना बिस्तर लपेटकर उचित स्वागपर रखकर तथा हाथ-मुँह धोकर छ बजेके पहले तैयार हो जाना पड़ता है और साठ बजे अपने काममें लग जाना होता है। काम कई प्रकारके करने होते हैं। पहले दिन हमें काम रास्तेके पास बो खुली जमीन है उसे खोरनेके लिए छे बाया गया था ताकि उसमें बुवाई की जा सके। लगनम वीस भारतीय कैदियोंको छे गये थे। जिनकी हालत काम करते आसक नहीं थी सनका जाना जरूरी नहीं था। हमें काफ़िरोंके साथ छे गये थे। जमीन बहुत कड़ी थी और उसे कुदाकीसे खोरना था इसलिए काम सस्त था। बूप ठेज पड़ रही थी। काम करनेकी बपह जेजये करीब डेढ़ मीज दूर रही होयी। हम सब भारतीय कैदी काममें उत्साहसे बूट गये। लेकिन कामकी आहत बहुत कम सौपोंको थी। इसलिए सगी बहुत ब्यावा बक बये। काम करनेवालोंमें बाबू ठाकेबन्तसिंहका लड़का रबिकृष्ण भी था। उसे काम करते देखकर मुझे बहुत परेबानी हो रही थी। लेकिन उसकी मेहनत देखकर मैं बूध हो रहा था। दिन अर्ध-धर्मों कड़ता गया स्यों-स्यों कामका बोझ ब्यावा भारी होता गया। सन्तरी बहुत ठेज स्वभाव का था। बसाबो लकाबो की पुकार छवाठा रहता था। उसकी यह पुकार सुनकर भारतीय कैदी बबड़ा बस्त थे। कुच्छको मैंने रोते हुए भी देखा। एक आदमीका पाँव सूजा हुआ देखा। यह सब देखकर मेरा दिल रोता था। फिर भी मैं सबसे कहता था कि सन्तरी क्या कहता है उसकी परबाह किये बिना सबको अपना काम सन्ने दिखसे करते जाना चाहिए। मैं खुद भी बक गया। हाथमें बड़े-बड़े लोके उठ जाने। ससे पानी सरने लगा। कमर झुकाना मुश्किल मालूम होता था और कुदाकीका बजल मन-मर बैसा लपटा था। मैं वी ईश्वरसे यही प्रार्थना करता रहता था कि मेरी लाज रख मुझे बसकत न बना और मुझे इतनी ताकत दे कि मैं अपना काम बराबर करूँ। इस तरह ईश्वरपर मरोसा रखकर मैं अपना काम करता जाता था। लेकिन मैं मुस्तानके लिए बरा रका वी सन्तरी मुझे डौटने फटकाले लगा। मैंने उससे कहा डौट-फटकारकी बकरत नहीं है, मुससे जितनी कड़ी मेहनत हो सकेगी मैं करूँगा। इसी समय वी लीनामाई देसाईकी मैंने मुच्छित होते देखा। अपनी बागहते मैं हट नहीं सकता था इसलिए कुछ वेर तक मैं रका रहा। सन्तरी नहीं गया। मैंने देखा कि मुझे जाना ही चाहिए, इसलिए मैं बीड़ा। बूधरे बो भारतीय छापी भी

जा गये। हम कोर्पोरेट शीशामार्कि [मूख और सिर] पर पानी छिड़का। उन्हें होश आया। दारोगाने दूसरोंको वो काम पर बापस भेज दिया लेकिन मुझे उनके पास बंझे दिया। शीशामार्कि सिरपर काफ़ी ठण्डा पानी डाला तब कहीं उन्हें आराम महसूस हुआ। अन्तरीक्ष में कहा कि वे वीरल फलकुर नहीं जा सकेंगे। इसपर उसने माफ़ी मँगवा ली और मुझे हुकम दिया कि मैं उन्हें पाड़ामें ले जाऊँ। शीशामार्कि माथपर पानी डालते हुए मैं सोचने लगा मेरे दारोगोंपर बिबबाध एगकर कितना ही मात्तीय जेध आये हैं। यदि मैंने उन्हें गलत मन्नाह ली हो तो मुझे कितना पाप लगेगा? मेरे कारण मेरे इन माइयोको कितना दुःख उठाना पड़ता है? ऐसा सोचकर मने पहरी चौंस ली। ईश्वरको सखी मानकर मैं फिर सोचने लगा और धरते बिषाखमें डूब गया। बानमें मैं हँस पड़ा। मुझे प्रतीति हुई कि मैंने जो एन्नाह ली है वह ठीक ही है। यदि दुःख मीगनेमें ही मुस है तो फिर दुःखसे भबड़ानेका कोई कारण नहीं है। यह तो मूर्छाकी ही बात थी। अन्तर मृत्युका प्रसंग उपस्थित हो तो भी मैं डूबती सन्नाह नहीं दे सकता। मैंने सोचा कि जन्म भरके बन्धनकी अपेक्षा इस तरह दुःख भोगकर बहिर्पति मूक्त हो जाना ही हमारा कर्तव्य है और तब निरिच्छ होकर मैं शीशामार्कि हिम्मत रखनेकी सन्नाह देने लगा।

माफ़ीके बाते ही शीशामार्कि उसमें मुसाकर मे ले गया। मैंने बड़ दारोगामें शिकायत की। उसकी जाँच हुई और अन्तरीक्षी फलकार मिली। शीशामार्किको फिर शोषणमें काम पर नहीं ले आया गया। उसी तरह चार अन्य भारतीय कैदी भी अलग दिखे। बाकी सब फिर काममें लगे। शोषणमें बाह्य बरते एक बने तक काम करना पड़ता है। इस समय हमारी देन-देन बोरे अन्तरीक्षे बरते एक काफिर अन्तरीक्षी खीपी गई थी। यह काफिर अन्तरीक्षी बोरे अन्तरीक्षी बोला अन्ना वा। वह बहुत नहीं टोकता था। कभी-कभी ही बोझता था। इसके सिवा इस समय काफिरों और भाखोयोंको उसी जगह लेकिन अलग-अलग हिस्सामें काम दिया गया था। हम कोर्पोरेट उनको तुलनामें कुछ तमं जमीन जोदनको भी गई थी।

शिव बरकितने यह ठेका किया था उसके साथ मेरी बात हुई। उसने कहा कि भारतीय बहिर्पति कामन उसे मूकसान होनेकी सम्भावना है। मेरी यह बात उसने स्वीकार की कि भारतीय एकाएक काफिरों-शिवनी मेहनत नहीं कर सकते। इसके सिवा मैंने उसने कहा कि मात्तीय लोच अन्तरीक्षे बरस काम करनेबाते नहीं हैं वे ली सिर्फ लुबाका डर एगकर उनसे शिवता बनेगा अन्ना काम करेंगे। लेकिन जानता यह बिचार मुझे बारमें काफ़ी हद तक बरकता पड़ा। ऐसा क्यों करना पड़ा यह हम आपे देखेंगे।

दूसरे दिन हमें फिर बाह्य निकाला गया लेकिन मोर अन्तरीक्षे माप न भेजकर एक काफिर अन्तरीक्षे साथ भेजा गया। यह अन्तरीक्षी पिछले दिनवाला काफिर नहीं था। उससे कह दिया गया था कि वह हमें बिरहुस न टोके।

(कमरा)

[मूखरानीने]

हिन्दियन कोर्पोरियन १-१-१९०९

सम्पादक

रैंड डेली मेल

[बीडानिचबर्ग]

महोदय

मेरे बेलगवा हूँ इस सम्बन्धमें अब भी कुछ शक्येह मौजूब है कि ट्रान्सवाळमें रहनेवाले मेरे बेलगवाली जो पिछले दो सालोंसे धर्मकर कठिनाइयोंके बाबजूब सड़ रहे हैं क्या चाहते हैं। इसलिये मैं आपकी अनुमतिसे भारतीयोंका मामला पचासम्बर संश्लेषमें बतानेका प्रयत्न करूँगा।

इस ओ-कुछ चाहते हैं यह निम्नलिखित है

- | | |
|--|----------|
| (१) १९७ के कानून २ को रद्द कराना | |
| (२) उच्च शिक्षा प्राप्त माखीयोंके ट्रान्सवाळमें हुएरे अधिकारको उस शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षाके अन्तर्गत कानूनमें विधान है कानूनी यह इतनी प्रसासतिक कठीणतासे कि एक शिक्षा-प्राप्त माखीय उपनिवेश पुराने कानूनका रद्द किया जाना इन | प्रवेशके |
| (१) यह बेलगवे सम्मानका प्रस्त है | । कि |
| स्मद्दने कानूनको रद्द | । |
| (२) १९७ का हुएरा कानून १९ | । |
| न्यायालयके अभी हालके एक | है |
| जिनका एक ही उद्देश्य हो सकते हैं। | । |
| (३) अभी हालकी घटनाओंसे प्रकट जैसा कभी* पतरक स्मद्दने | १ |
| (४) कानून अभीतक उपनिवेशकी।। पहुँचाता* है और इसलिये | २ |
| अब भी ठेक समती है। | । |
| (५) यदि सरकार ब्रिटिश भारतीयोंको आपतितजनक बाराओंको कानू | २ |

१. १९९९

लिखा गया

हुर है और कभी कन्

() बने हुए लानेरे की

निश्चित ब्रिटिश भारतीयोंके सम्बन्धमें जनरल स्मट्सन* का या कि एग लीग यदि एगियाई पंजीयन अधिनियम (एग्निपाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट)के अन्तर्गत प्रारंभात्त रेंग ता उनके* प्रवेशपर कोई आपत्ति न की जायेगी। यह अल्पसंख्यकोंपर जनरल है क्योंकि

- (१) एगियाई कानूनके अन्तर्गत दिय गये अधिकाओंमें केवल अस्वाधी अनुमतिपत्रों (टेणररी परमिट्स)का उल्लेख है
- (२) ऐम अस्वाधी अनुमतिपत्र लम्बे अर्सेके हों तो भी उनसे उनका मासिक निधि प्रवासी ही पायेंगे
- (३) इन अनुमतिपत्रोंके आपाएर इसन्नि ए उनके मासिक अपना धरपा न कर गइंगे
- (४) अस्वाधी अनुमतिपत्रोंके उनके मासिक सरकारकी दवापर निभर ही पायेंगे।

एगी अनिश्चित अस्वाधिके बन्धाय भारतीय या जाहूँ है कि उष्ण मित्रा प्राप्त भारतीयोंका स्वतंत्र प्रवासियोंके रूपमें द्वान्द्वशासनमें प्रबलता अस्तित्त्व अधिकाय कायम रखा जाय बज्जों कि अधिकाओंके द्वारा रखा गयी किसी भी शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षामें के पाठ हा पायें।

यदि यह आपत्ति की जाये कि कानूनमें एसा कोई अधिकार सुरक्षित नहीं है जिसके अन्तर्गत मन्त्री कठिन वा मेदमाबधुर्ण परीक्षाएँ रण सइं—म यह नहीं मानता कि वर्तमान कानून इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए पर्याप्त नहीं है—तो मेरे देववागी जान बिबुध प्रशासनिक सम्बन्धोंके सम्बन्धमें कोई आपत्ति न करेये। इस प्रकार मन्त्रीकी कोई भी शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षा रणतका विभिन्न वर्गोंके लिए विभिन्न परीक्षाएँ रणतका भी अधिकार दिया जा सकता है। ऐसे मामलोंमें मन्त्रीका निर्णय अन्तिम ही और उसके बिबुध सर्वोच्च न्यायालयमें अपील न की जा सके। ऐसी कठोर परीक्षाके अन्तर्गत सरकारकी किसी भी शासक उष्ण मित्रा-प्राप्त भारतीयोंका प्रवेश छ तद्र गीमित करनेका अधिकार होना।

मेरे देववागी शिक्षित भारतीयोंके सम्बन्धमें प्रभावीय (रेगिस्टर) प्रतिक्षण कमानेपर रीण प्रकट करते हैं क्योंकि वे इसे राष्ट्रीय आमान समते हैं। इसलिये यद्यपि यह जनरल स्मट्सकी दृष्टिमें बहुत कुछ आश्चर्याका प्रस्त है किन्तु भारतीयोंकी दृष्टिमें यह महत्त्वपूर्ण विद्वान्ता प्रस्त है।

म जादे मौन करे या न करे, १९७ के कानून २ का ए किया जाना आवश्यक है। प्रवासी-कानूनमें भी संशोधन आवश्यक है क्योंकि उनकी कई भाषाओंकी सर्वोच्च न्यायालयन करी मित्रा की है। तर इसके संशोधनके समय ही इसकी एगियाई कानूनकी मरुचीने मुक्त रण कर उसकी इन प्रकार बर्षी न बदन रें जिसमें मन्त्रीकी शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षा कानून के सम्बन्धमें अनिश्चित अधिकार मिल जायें? अतः शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षाके अन्तर्गत किसी एक बर्षमें छ उष्ण मित्रा प्राप्त भारतीय जाने दिय जायेंगे तबतक भारतीय करनी माय्य हग करीनाके प्रशासनके सम्बन्धमें अनाकामक प्रतिरीण न करनेका बचन देते ह।

आपका धादि
मो० ब० गाँधी

हादर की हुई लारी बदेवी प्रतिकी कोश-मन्त्र (एग एन० ४०१४) मे।

सम्पादक

रेड डेजी मेस

[जोहानिघरप]]

महोदय

मैं बेलता हूँ इस सम्बन्धमें अब भी कुछ सस्पेह मौजूब है कि ट्रान्सनाममें रहनेवासे मेरे देशवासी जो पिछले दो सालोंसे भयंकर कठिनाइयोंके बावजूब छूट रहे हैं क्या चाहेते हैं। इसलिए मैं आपकी अनुमतिसे भारतीयोंका मायणा यथासम्भव संक्षेपमें बतानेका प्रयत्न करूँगा।

इस जो-कुछ चाहते हैं वह निम्नलिखित है

- (१) १९७७ के कानून २ को रद्द कराना
- (२) उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयोंके ट्रान्सनाममें हुये प्रवासियोंके समान प्रवेशके अधिकारको उस शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षाके अन्तर्गत जिसका उपनिवेशके प्रवासी कानूनमें विधान है कानूनी मायणा विधाना। यह शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षा अपनी प्रशासनिक कठोरतासे छात्रों की जाये कि एक वर्षमें छां ठे ब्यादा उच्च शिक्षा प्राप्त भारतीय उपनिवेशमें न आ सकें।

पुछने कानूनका रद्द किया जाना इन कारणोंसे आवश्यक है

- (१) यह बेलने सम्मानका प्रथम है क्योंकि यह बाबा किया जाता है कि जनरल स्मद्घने कानूनको रद्द करनेका बचन दिया है।
- (२) १९७७ का हुयरा कानून १९८८ के मये कानूनके विरुद्ध है और बेसा सर्वोच्च न्यायालयके सभी हालके एक निर्णयसे सिद्ध हो गया है, जो बसमान प्रगुनोंको जिसका एक ही उद्देश्य हो छाव-छाव अमलमें रहनेसे अर्बंकर परिचाय हो सकते है।
- (३) सभी हालकी घटनाओंसे प्रकट हो गया है कि १९७७ के कानून २ को बेसा कमी जनरल स्मद्घने कहा बा अमलसे बाहर रखनेका इरादा गही है।
- (४) कानून बसीतक उपनिवेशकी विधान-संहितामें मौजूब रहकर तुर्क मुसलमानोंको डेस पहुँचाता है और इसलिए उससे भारतीय मुसलमानोंकी धार्मिक भावनाओंकी अब भी डेस लपटी है।
- (५) यदि सरकार द्वितीय भारतीयोंको रंग करना चाहे तो वह कानूनकी अल्पत आपत्तजनक बाउनोंको कानू करनेके लिए स्वतन्त्र है।

१. इस पत्रकी जो रेड डेजी मेसकी लिखा गया प्रतीत होता है। दूसरी मध्यमें हीरेके सम्बन्ध में हुए हैं और कभी कब "जो कार्यप्रत्येक लिए प्रत्येक" सम्बन्ध लिख दिने गये हैं। मूळ प्रति उदरिच्छा विव () को हुए स्वान्तर इनी हुई है। कृपिक पर कनुपक उन्मर्धित प्रतिये किया गया है।

विशाल विधिया भारतीयोंके सम्बन्धमें जनरल स्मट्सन* कहा था कि ऐसे लोग यदि एशियाई पंजीयन अधिनियम (एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट)के अन्तर्गत प्रार्थनापत्र होंगे तो उनके* प्रवेशपर का* आपत्ति न की जायेगी। यह अत्यन्त अगतोपजनक है क्योंकि

- (१) एशियाई कानूनके अन्तर्गत दिय गये अधिकारोंमें केवल अस्थायी अनुमतिपत्रों (टेम्पररी परमिट्स)का उल्लेख है
- (२) ऐसे अस्थायी अनुमतिपत्र सम्बन्धमें अर्सेके हों तो भी उनसे उनके मासिक निषिद्ध प्रवासी हो जायेंगे
- (३) इन अनुमतिपत्रोंके आधारपर इसविषय उनके मासिक भ्रमना घटना न कर सकेंगे
- (४) अस्थायी अनुमतिपत्रोंमें उनके मासिक सरकारकी हयापर निर्भर हों जायेंगे।

ऐसा अनिश्चित अवस्थाके बजाय भारतीय यह चाहते हैं कि उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयोंका स्वतन्त्र प्रवासियोंके काममें द्वास्तानाममें प्रवेशका असन्दिग्ध अधिकार काममें रखा जाये। यद्यपि कि अधिकारियों द्वारा रधी गयी किसी भी शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षामें के पास हो जायें।

यदि यह आपत्ति की जाये कि कानूनमें एसा कोई अधिकार सुचिह्न नहीं है जिनके अन्तर्गत मन्त्री कंसिग या मेन्-भाबून्स परीक्षाएँ रख सकें—यै यह नहीं जानता कि वर्तमान कानून इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए पर्याप्त नहीं है—तो मेरे वैयक्तिक अपने विचार प्रसारणिक मेरवाबके सम्बन्धमें कोई आपत्ति न करेयै। इस प्रकार मन्त्रीको कोई भी शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षा रखना किमिन्न क्योंकि किन्तु किमिन्न परीक्षाएँ रखना भी अधिकार दिया जा सकता है। ऐसे मामलोंमें मन्त्रीका निर्णय अन्तिम हो और उनके विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालयमें अपील न की जा सके। ऐसी कठोर परीक्षाके अन्तर्गत सरकारको किसी भी साध उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयोंका प्रवेश छ* तक सीमित करनेका अधिकार होया।

मेरे वैयक्तिक विशिष्ट भारतीयोंके सम्बन्धमें प्रजातीय (रेसियस) प्रतिबन्ध लगातेपर रीय प्रस्ता करने है क्योंकि के इसे राष्ट्रीय अपमान समजते हैं। इसविषय यद्यपि यह जनरल स्मट्सनकी दृष्टिमें बहुत कुछ आश्चर्याका प्रसंग है किन्तु भारतीयोंकी दृष्टिमें यह महत्त्वपूर्ण विद्यान्तका प्रसंग है।

हम चाहे मीग करें या न करें, १९०७ के कानून २ का रद्द किया जाना आवश्यक है। प्रवासी-कानूनमें भी संशोधन आवश्यक है क्योंकि उसकी कई बाराओंकी सर्वोच्च न्यायालयमें कई निर्यात की है। तब इसके संशोधनके समय ही इनको एशियाई कानूनकी प्रयोजिते मूल्य रण कर उगाकी इस प्रकार क्यों न बदल दें किमिन्न मन्त्रीको शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षा कानू करलेके सम्बन्धमें अतिरिक्त अधिकार मिल जायें? जबतक शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षाके अन्तर्गत किसी एक वर्गमें छ* उच्च शिक्षा प्राप्त भारतीयोंका दिन जायेंगे तबतक भारतीय जानी बाराये इस परीक्षाके प्रयायनके सम्बन्धमें अनायासक प्रतिरोध न करनेका बन्धन देते हैं।

आपका आदि
मो० क० गांधी

हाल की हुई वपारी संवेदी प्रतिकी फोटो-नकल (एम एन ४९१४) में।

११ नेतासमें भारतीयोंकी शिक्षा

उच्चतर भारतीय विद्यालयों (हायर ग्रेड इंडियन स्कूलों) में सरकार अब १४ वर्षसे ज्यादा उमरके लड़कोंको नहीं जाने देगी इस विषयपर हम यत सन्ताह लिख चुके हैं।^१ इस सम्बन्धमें जो उपाय करने हों फौरन किये जाने चाहिए। ज्यादा जानकीय करनेपर ऐसा माध्यम होता है कि मुकदमा दो तरहसे बढ़ा जा सकता है। एक तो जबकि उमरके लड़कोंको शालिख न करनेके निर्णयके सिखाए और दूसरे, भारतीय लड़कोंको अंग्रेजी स्कूलोंमें शालिख करानेके लिए। दूसरे प्रकारके मुकदमेमें घामर भीत हो सकती है। पहले मुकदमेमें भीतकी सम्भावना कम है। फिर भी यह बढ़ने कायक है। उसमें सरकारकी पीछ खुलेगी। दूसरा मुकदमा बजाकर लड़कोंको अंग्रेजी स्कूलोंमें भेजनेकी जरूरत नहीं है किन्तु यदि उसमें हमारी भीत हो तो उन्हें उच्चतर विद्यालयोंमें ज्यादा मुविबाएँ मिल सकेंगी।

ये दोनों ही प्रकारके मुकदमे लड़नेके लिए पैसेकी जरूरत है। भारतीय माँ-बाप पैसा निकालें तो कुछ बन सकता है।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-१-१९ ९

१२ प्रवासी-आयोग

नेतासके प्रवासी-आयोग (इमिग्रेशन कमिशन) की बैठक मंगलवारसे उर्वनमें आरम्भ हुई है। इसमें जिसको प्रवाही बेनी हो वह वे सकता है। काबिलका कर्तव्य है कि वह इस सम्बन्धमें प्रवाही वे। इसके बजावा लीव निजी हैसियतसे भी प्रवाहियाँ वे सकते हैं। हमारे विचारस भारतीय तो एक ही प्रकारकी प्रवाही वे सकते हैं और वह है — गिरमितकी प्रवा बन्ध करनेके पक्षमें। गिरमित और बुलासीमें बहुत फर्क नहीं है। इस जोब मान केते है कि गिरमितमें जानेवाले भारतीयोंको कुछ काम हुआ है। किन्तु जबकि फायदा उठाकर वे गुलाम बने यह तो मुकदमा ही माना जानेवा। जो जोब इस तरहकी गुलामी भोगते है वे तो बेचके लिए मने-बुन्दरे ही हैं। उनकी बुझानीसे बेचको कोई काम नहीं होता। जबतक मनुष्य स्वतन्त्र होकर काम न कर सके तबतक उसके कामका साम जातिको मिलता ही नहीं। दूसरे कार्योंपर विचार करें तो भी गिरमित प्रवाको बन्ध करना ही जचित है। इसलिए, इस तरहकी प्रवाही आयोगके सामने वेध की जानी चाहिए।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-१-१९ ९

१३ मेरा जेलका दूसरा अनुभव [३]

हमें जितना बने उतना काम ईमानदारीके साथ करनेको कहा गया था। जो काम हमें सीपा गया था वह भी हमने किस्मका था। मगरपालिकाकी जमीनमें आम रास्तेके पास ही गड्ढे खारने और भरने थे। इसमें विधाम मिश्र सकता था। लेकिन मुझे अनुभव हुआ कि यदि केवल ईस्बल ही हमारे कामका साकी हा तो हम कामचोर सिद्ध होते हैं क्योंकि छोकोंके काममें मुझे दिखाई नजर आई।

मेरा यह निदिधन मत है कि ऐसी कामचोरी हमारे लिए कर्मकरी बात है। और हमारी ज़रूरतें जो सिबिलिजटा आई है उसका कारण भी यही है। सरप्रायइका रास्ता जितना आसान है उतना ही कठिन भी है। हमारी नीयत सच्ची होनी चाहिए। हमें सरकारसे बैर नहीं है। हम सरकारको बनना दुश्मन नहीं मानते। हम सरकारसे झूठे हैं उसका कारण यह है कि हम उसकी मूल सुधारना चाहते हैं और उसकी बुरी आदत छुड़ाना चाहते हैं। हम उसका बुरा नहीं चाहते। उसके विघात करनेमें भी हमारा ज्येष्ठ उसकी भलाई ही है। इस पृथ्विज तो हमें जेडमें अपनी शक्तिके अनुसार काम करना ही चाहिए। और यदि हम यह मानते हों कि हमें नीतिके अनुसार काम करनेकी जरूरत नहीं है तो सन्तरीकी जमिनीमें जो पूरा काम करते हैं वह नहीं करना चाहिए। यदि काम करना उचित नहीं है, तो हमें सन्तरीकी परवाह न करके उसकी मुलाक़ात करनी चाहिए, और उसके फलस्वरूप यदि हमारी सजा बढ़ती हो तो उसे भोग लेना चाहिए। लेकिन ऐसा तो कोई भारतीय मानता नहीं। जो काम नहीं करते वे मात्र आत्मस्य और कामचोरीके कारण ही ऐसा करते हैं। ऐसा आत्मस्य और ऐसी चोरी हमें घौमा नहीं देती। सरप्रायइके नाते हमें जो काम मिले करना ही चाहिए। और यदि हम सन्तरीका डर रखे बिना काम करें, तो हमें तकरीब न उगरी पड़े। अपनी शक्तिके बाहर काम करनेकी तो बात ही नहीं रखी। कामचोरीकी इस देवके कारण जेडमें लोगोंको कुछ कष्ट भोगना पड़ा था।

इतना कहनेके बाद जब मैं फिर कामकी बातपर आता हूँ। इस तरह दिन-प्रति-दिन हमारा काम हल्का होता गया। मैं जिस टोलीमें गया था उस टोलीको बाबमें जेडका बपीया साध करने और उसमें बुझाई आदि करनेका काम मिला। इसमें मुख्यतः मकई बोने आककी क्यारियाँ साध करने और उनके पीसोंपर मिट्टी बढ़ानेका काम था।

फिर दो दिन हमें मगरपालिकाका ठामाब खोवनेके लिए ले गये। उसमें खोवने मिट्टीका डर लगाने और फिर उसे ठेसायाड़ीमें भरकर ले जानेका काम था। यह काम सज्ज था। इसका अनुभव सिर्फ दो दिन मिला। मेरा पहुँचा पूरा गया जो मिट्टीके उपचारके बच्चा हुआ।

यह जगह बार-बार भील बुर भी इसलिए हमें ठेसे (ट्रॉली) में ले जाते थे। अपनी रमोई हमें वहीं ठामाबपर पकानी पड़ती थी। इसलिए जानेका कच्चा सामान और लकड़ी भी साथमें ले जाते थे। इससे भी ठेकेदारको शन्तीय नहीं हुआ। हम काफिरोंकी बराबरी न कर सके। दो दिन ठामाबपर काम करनेके बाद हमें दूसरा काम सीपा गया। बाबतक

अधिकतर काम करने योग्य भारतीयोंको ही साथ ले जाते थे। अब ऐसा करनेके बरके हमें वा हिम्मानें बांट दिया गया। कुछको संशिक्षणकी कक्षाके आसपास उनी हुई बास खोरकर निकालनेके लिए भेजा और कुछको कविस्तान साथ करनेके लिए भेजा। कुछ दिन तक इस तरह पठा। इसी बीच बारबर्तनके मुकरनेके बाद लगभग पचास भारतीय छूट गये।

उसके बाद हमें हमेशा बपीबेमें काम मिलता रहा। उसमें खोरना लुना गीरना आदि काम करने पड़ते थे। इस कामकी मारी नहीं कहा जा सकता और मानना हाया कि यह बहुत सम्पुष्णी देनेवाला था। लघुता नौ पंटे तक ऐसा काम करनेके कारण पहल ही की ऊबता है पर आदन ही जानेपर ऐसा नहीं होता।

इस कामके सिवा हरएक कोठरीमें पेसाब आदिकी जो बास्ती होती है उसे उसी कोठरीके आदमीको उठाकर ले जाना पड़ता है। मैंने देखा कि ऐसा काम करनेमें हमारे सोनोंकी बहुत हिचक होती है। सब पूछिए तो इसमें हिचक का कोई कारण नहीं है। काम करनेमें अग्रविष्ठा या दोष मानना गलत है। इसके सिवा ब्रेक जानेवालेकी ऐसी कृति निम नहीं सकती। कई बार यह सवाल उठता था कि कोठरीसे पेसाबकी बास्ती कौन ले जायेगा। अगर हम सत्यापहकी कड़ाईका तत्व पूरी तरह समझ लें तो यह सवाल उठना ही नहीं चाहिए, बल्कि ऐसा काम करनेके लिए हमारे बीच स्वर्ण होती चाहिए और जिसके हिस्सेमें भाए उसे वह काम करनेमें अपना सम्मान समझना चाहिए। कहनेका मतलब यह कि मान इसमें नहीं है कि सरकार बीसा काम हमें सँपे लेकिन जब हमें यह काम करना ही है तो फिर करनेवालोंमें से जो पहले उसके लिए तैयार होना वह विद्येय मानका पात्र होगा।

अब हम कष्ट उठानेके लिए तैयार हुए हैं तो फिर एक-दूसरेसे क्या कष्ट उठानेके लिए भी हमें तैयार रहना चाहिए और जिसे क्या कष्ट उठाना पड़े उसे उसमें अधिक सम्मानका अनुभव करना चाहिए। ऐसा उदाहरण भी इसत मित्रोंने देना किया था। भी इसत मित्रों फेडरुकि बहुत बुरे रोगसे पीड़ित हैं और उनका स्वास्थ्य बड़ा मालुम है। फिर भी उन्होंने अपने हिस्सेमें भी भी काम आया उसे लुसीसे किया। इतना ही नहीं उन्होंने इस बातकी भी परवाह नहीं की कि इसका उनको ठीकीयपर क्या असर होगा। एक बार एक काफिर सन्तरीने उन्हें बड़े बारीकाका पाखाना साफ करनेका काम सँपा। उन्होंने तुलत उसे स्वीकार कर लिया। ऐसा काम उन्होंने कभी नहीं किया था इसलिये उन्हें उलटी हो गई। लेकिन इसकी उन्होंने परवाह नहीं की। वे बुरा पाखाना साफ कर रहे थे इतनेमें मैं नहीं था पहुँचा और मैंने उन्हें यह काम करते हुए आश्चर्यके साथ देखा। उनके प्रति मेरा प्रेम उमड़ आया। पूछनाच करनेपर पहलेवाले पाखानेकी बटनाका पता लगा। एक बार उसी काफिर सन्तरीको घायर बने अफसरने आज्ञा दी कि भारतीयोंके लिए बास ठीरसे रखे नये पाखाने साफ करनेके लिए दो भारतीयोंको बुलाया जाये। सन्तरी मेरे पास आया और उसने दो आदमियोंकी माँग की। मुझे लगा कि इस कामके लिए तो मैं ही क्यावा बोध्य माना जा सकता हूँ इसलिये मैं ही गया।

मुझे तो ऐसे कामसे कोई मजबूत है ही नहीं। मैं ऐसा मानता हूँ कि इस किसका काम करनेकी हमें आरत डाकनी चाहिए। ऐसे कामके प्रति हम मकरत रखते हैं उसीका यह जतीजा है कि हमारे जीवन और पाखाने क्याकारण बने बिनाई पड़ते हैं। इतना ही नहीं

इसो कारणसे हम महामारियाँ पैदा करते हैं या फैलते हैं। हम ऐसा मान बैठे हैं कि पाखाने ठो हमेसा गन्दे हो होते हैं। इसोलिए हमपर बार-बार गन्धगीका आरोप लगाया जाता है। ऐसा काम न करनेके कारण हो एक भारतीय कंपनी को सॉखीटरी सेल यानी फ़ाल्कोटरीमें बन्द होनेकी सजा भोगनी पड़ी थी। सजा भोगनेमें मैं बोध नहीं मानता। केकिन यह सजा भोगनेकी जरूरत नहीं थी। इसके सिवा हम ऐसे काममें जानाकारी करके पीछे हटें यह उचित नहीं है। जब मैं इस कामके लिए जान गया तब संसदीयें दूधरोंको उसाहना देते हुए उन्हें भी उस कामके लिए बचनेकी कहा। इस तरह इस हुकमकी बात फैल गई और सुरस्त ही भी उमर उस्मान तथा श्री रस्तमबी मेरी मददके लिए बौड़ पड़े यद्यपि काम बहुत कम था। इस बातको बिचानेका हेतु यह दिखाना है कि जब सरकारने उनसे ऐसा काम कराया तो उसे करनेमें उन्होंने भी अपना सम्मान माना। यदि हम जेसमें भी काम हमें मिलता है उसके प्रति बुयाका मान रखें तो हम खरी कड़ाईमें हिस्सा नहीं ले सकते।

बोहानिसबर्ग से गयी

फोक्सरस्ट जेसमें हमें कैसा काम करना पड़ता था उसका बिबरन मैंने ऊपर दे दिया है। केकिन मेरे पूरे दो माह उठी जेसमें नहीं बीते। मुझे कुछ दिनोंके लिए अखानक बोहानिसबर्ग में भेज दिया गया था। वहाँ जो-कुछ हुआ वह जानने सायक है। अक्टूबर २५ को मुझे वहाँ ले जाया गया। इसका कारण यह था कि मुझे खरीं जाहानाईके मुकदमेमें यमाही देनी थी। इसके सिवा दूसरे कारणोंकी सम्भावनाके बारेमें भी काफी चर्क दिवर्क हुआ। बहुत-से जीय ऐसी भी आसा करते थे कि सायब भी स्पष्टसे मुजाफात होयी। पीछे माजूम हुआ कि ऐसी कोई बात नहीं थी। मुझे से जानके लिए बोहानिसबर्गसे एक खास दारोयाको भेजा गया था। इस दारोयाको और मुझे रैजका एक डिब्बा भिजा था। टिकट दूसरे रजेंका था उसका कारण तो यह था कि उस यात्रीमें तीसरे दर्जेके बिस्बे से ही नहीं। ऐसा माजूम होता है कि कैरियोको तीसरे दर्जेमें ही ले जाते हैं। रास्तेमें भी मेरी पोछाक कैरोकी ही थी। मेरा सामान मुझसे ही ठठवाया गया। जेसके स्टेशन तक बसकर जाना था। बोहानिसबर्ग पहुँचनेके बाद वहाँसे जेस तक सामान उठाकर पैदल जाना पड़ा। इस बातकी अखबारोंमें बहुत टोका हुई। बिजामतकी संसदमें भी इस प्रसंगकी छेकर सबाक पूछे गये। कई लोगोंकी बहुत कुछ हुआ। सबको ऐसा लगा कि मुम-जैसे राजनीतिक कंपनीको जेसकी पोछाकमें पैदल बोझा उठवाकर नहीं ले जाना चाहिए था।

जोगोंका मत इस बटनासे कुछे मह बात समझमें जाने-जैती है। जब भी जायसियाने गुना कि मुझे इस तरह जाना है तब उनकी जाँचोंमें जाँच भर जाये। श्री नायडू तथा श्री पीलकको इसकी खबर मिल गई थी इसलिए वे मुझसे स्टेशनपर मिले। वे भी मेरी स्विचि रैजकर बचि हो यमें लेकिन इसमें कुछ माननेका कोई कारण नहीं है। इस रैजमें राजनीतिक और दूसरे कैरियोंके बीच सरकार कोई चर्क रखे यह सम्भव नहीं है। वह हमें जितना प्यादा हुआ वे और हम उसे जितना प्यादा करें उतनी ही बस्ती हमारा सुखकारा होना। इसके सिवा बिचार करनेसे माजूम होना कि कैरीकी पोछाक पहनना पैदल बसकर जाना और अपने सामानका बोस उठाना — इस सबमें कुछकी कोई बात नहीं है। केकिन दुनिया

तो ऐसी बातको बुझक्य ही मानेनी और इसीलिए विधायकमें इस बातकी लेकर इतना हल्का मचा।

रास्तीमें सन्तरीकी बोरेसे कोई तकलीफ नहीं हुई। सन्तरी खुद खुशी अनुमति न दे तो बेजकी सुराफके सिवा कोई दूसरी सुराफ न जानेका मेरा निश्चय था। इसीलिए आज तक मैं बेजकी ही सुराफपर निमतता आया था। रेलमें मेरे साथ जाना रखा नहीं गया था। सन्तरीने मुझे जो कुछ सागा चार्ज सो जानेकी कूट दे थी। स्टेशन मास्टरने मुझे पीसे देनेकी इच्छा प्रकट की। उसके मनमें भी मेरे लिए बहुत सहानुभूति उमड़ आई थी। मैंने उसका उपकार माना पर पीसे सेनेसे इनकार कर दिया। यी काजी स्टेजानपर हाजिर थे। उनसे मैं वच शिक्तिग किये। उससे मैंने सन्तरीके लिए और अपने लिए ट्रेनसे जानकी चीजें खरीदी।

हम बोहानिसबर्न पहुँचे उस समय शाम हो गई थी। इसीलिए मुझे दूसरे भारतीय कैदियोंके पास नहीं ले जाया गया। बेजमें मूक्यत जहाँ भीमार काफिर कैदी थे उनको कोठरीमें मुझे विस्तर दिया गया। इस कोठरीमें मेरी रात बहुत दुःख तथा भयमें बीती। मुझे इस बातका पता नहीं था कि दूसरे ही दिन मुझे अपने फोनिके बीचमें ले जावेंगे। मैं सोचता था मुझे इसी बचह रखेंगे। इससे मैं नयका अनुमन करता रहा। मैं बहुत बकराया। फिर भी मनमें वह निश्चय किया कि मेरा कतम्य तो यही है कि जो भी दुःख या पड़े उसे मैं सहन करता रहूँ। भगवद्गीता मेरे साथ थी। उसे मैंने पढ़ा। समयोचित दमोक पढ़कर उनका मनन किया और बीरव रखा।

विमित्त होनेका कारण यह था कि काफिर और भीनी कैदी बंपली खुनी और अनैतिक आचरणवासे मासूम हुए। उनकी भाया मैं जानता न था। एक काफिरने मुझसे सवाल पूछना शुरू किया। उसमें भी मुझे गन्दा हँसी-मजाक मासूम हुआ। मैं उसे समझ नहीं सका और मैंने कोई जबाब नहीं दिया। एक उतने मुझसे टूटी-फूटी अंग्रेजीमें पूछा तुम्हें यहाँ इस तरह क्यों लाये हैं? मैंने छोटा-सा उत्तर दिया और फिर चुप हो गया। बादमें भीनीने सवाल पूछना शुरू किया। वह जबाबा बुरा आदमी मासूम हुआ। मेरे विस्तरके पास जाकर वह मुझे देखने लगा। मैं चुप रहा। बादमें वह काफिर कैदीके विस्तरके पास पहुँचा। वहाँ दोनोंने एक-दूसरेसे पन्था हँसी-मजाक करना शुरू किया और एक-दूसरेके दोष बताने लगे। मैं दोनों कैदी बून बचवा बड़ी चोरीके अपराधमें पकड़े गये थे। यह सब देखकर मुझे नीच तो कैसे आती? दूसरे दिन पबर्नरको यह सब बतानेका ऐसा घोषकर बहुत रात पये मैं बीड़ा छोया।

वास्तविक दुःख तो इसे कहना चाहिए। सामान होना आदि तो कुछ नहीं है। जो अनुभव मुझे हुआ वह दूसरे भारतीयोंकी भी होता होगा वे भी उठते हूँगे ऐसा घोषकर इस विचारसे मैं चुप हुआ कि ऐसे दुःखका अनुभव मैंने भी किया। मैं निश्चय किया कि इस अनुभवके बाद मैं सरकारके साथ इस सम्बन्धमें अधिक सझाई जमाऊँगा और जरूर ही होनाही ऐसी बातोंमें मुबार करवाऊँगा। यह सब सरनाइकी सझाईका अप्रत्यक्ष लाभ है।

दूसरे दिन उठते ही मुझे दूसरे भारतीय कैदियोंके पास ले जाया गया इसीलिए ऊपरकी बात पबर्नरसे कहनेका प्रसंग नहीं आया। लेकिन सरकारसे इस बातपर सझाई करनका विचार मेरे मनमें अब भी है कि भारतीयोंकी काफिर बचवा दूसरे कैदियोंके साथ न रखा जाय। अब मैं पहुँचा उस समय भारतीय कैदियोंकी संख्या कमसे कम पन्द्रह थी। उनमें तीनके सिवा

बाकी सब सत्याग्रही थे। तीन आशमी बूंदों में पकड़े गए थे। इन कदियोंको काफिरोंके साथ रखा जाता था। मेरे पहुँचनेपर बड़े धारणाने आमा दी कि हम सबको बसम कोठरी दी जाये। मुझे यह बलकर बहुत खद हुआ कि कुछ भारतीय कैदों काफिरोंके साथ उनकी कोठरीमें सोनेमें लुप्त रहते हैं। उसका कारण यह था कि वहाँ खोरीसे तम्बाकू बाहर निकल सकती है। यह बात हमारे लिए अस्वाभाविक है। काफिरोंके प्रति या बूंदोंके प्रति हमें तिरस्कार मान नहीं होना चाहिए। लेकिन यह भी नहीं मूखना चाहिए कि उनके खीर हमारे बीच साधारण व्यवहारमें एकता नहीं है। इसके सिवा जो खीर उनके साथ उनी कोठरीमें सोनेकी माँव करते हैं उनका हेतु निम्न रहता है। इसलिए यदि हमें आने बढ़ना हो तो अपने मनम ऐसे मान निकाल देना जरूरी है।

(कमप)

[मुंबराजीस]

इंडियन ओपिनियन १९-१-१९०९

९४ पत्र श्रीमती चंचलदेव गांधीकी

फोक्सरस्ट

घनिवार [जनवरी १६, १९०९]

वि चंचल

मेँ पकड़ा गया निर्वासित किया गया फिर पकड़ा गया और एक जमानतपर छूटा। अब बाह्यातिशय बाईया। यह विशेष समाचार तुम मजिस्ट्राटसे जान केना।

तुम्हारे साथ मेरी बहुत बन्धु कुछ भी बात नहीं हुई, इससे मेरा मन दुखी है किन्तु मेरी स्थिति ही ऐसी बेदुखी है।

तुमसे मेने उस दिन जानबूझ कर ही लिखाया था। तुम्हें ऐसे काममें कुछ बनाना चाहता हूँ। रामी बड़ी हो जाये तब तो तुम्हें अपने पास भी रख लूँगा। यह निश्चित समझ केना कि अगर फिजहाक जैसे ही जैसे हरिआतके साथ रहनेका विचार छोड़ दोनी तो तुम बानोंका सम्पन्न होना। हरिआत बकेला रख कर बतगा और अपने बूंदों के सम्य पूरे करेगा। तुम्हारे प्रति उसका प्रेम केवल तुम्हारे साथ रहनेमें ही नहीं है। बहुत बार प्रेमकी बातिर ही अलग रहना पड़ता है। तुम्हारे बारेमें भी यही बात है। मैं हर तरहसे शकता हूँ कि तुम्हारा विमोग ही तुम्हारे लिए मुनकर है। अगर वह मुनकर एक ही तरहसे रह सकता है कि तुम विबामसे अकुलाओ नहीं। कड़ाई पूरी होने तक हरिआतको बाह्यातिशयमें रहना पड़ेगा एसा मुझे प्रतीत होता है।

१. गांधीजी इस पत्रको खोलकर अपने निकलकर किने गये थे। जो तबक के कल्पनाके जो कीलिसमें उल्लेख नहीं, देखकर जोरफिसलनी या रहे थे।

२. गांधीजीके कुछ पुत्र हरिआतकी सती।

३. चंचलदेवकी पुत्री।

तुम्हारी स्थितिको देखते हुए मैं तुमको वासक मानना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ
 बरका कार्य भार तुम और मन्दिनाथ उठाओ। बरकी हरएक वस्तुको संभालना रामाँ और
 देबाको ठीक तरह रखना उनके सामान की धार-संभाल करना उन्हें स्वयं भी ऐसा ही
 सिखाना उनको साफ-सुवरा रखना और उनके नाबूतोंकी सफ़ाईका ध्यान रखना — यह सब
 तुम दोनोंको करना है। बाँ लो जब स्वस्थ होनी ठक होगी। स्वस्थ होनेपर भी कोई कर्त
 वो पढ़ना नहीं है। तुमको बरकी माकनिकी तरह ही व्यवहार करना है। हम बहुत ही
 नटीब हैं, यह न भूलना।

मोहनदासके मासीबाँद

गांधीजीके स्वाअरोंमें मूक पुष्पराजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन० १५२६) से।

१५ पत्र 'इंडियन ओपिनियन' को

बोहानिययन

जनवरी १९, १९१९

सेवामें

सम्पादक

इंडियन ओपिनियन

महोदय

इंडियन ओपिनियन का इस सप्ताहका अंक जबतक प्रकाशित होगा तबतक मैं शायद
 बेच-महलमें बैठा होऊँगा। इसलिए मैं वर्तमान स्थितिके सम्बन्धमें भारतीय समाजसे दो खबर
 कहना जरूरी समझता हूँ।

कुछ भारतीय बीजे पढ़ बसे हैं इसमें एक नहीं। कईने लड़ाई छोड़ दी है और
 कई दूसरे अब छोड़ी अब छोड़ीकी स्थितिमें दिखाई देते हैं।

कुछ पठानके वस्तुवर्षि स्टार में एक बिट्ठी प्रकाशित हुई है जिसमें वे इस-
 प्रकार लिखते हैं

हम पठान आपके अखबारके जरिये सरकारको और आमजनताको खबर देते
 हैं कि ब्रिटिश भारतीय संघने एशियाई-अफ़्गर और परबाना-अफ़्गरकी गिरावटकी लिए
 बरनेवारोंका एक स्वसिबक-बक बनाया है। बरनेवार चाकी बरियाँ पढ़ते हैं और
 सिपाहियोंके-बैसे पट्टे बाँधते हैं। इनमें से कुछकी हमने सड़कोंपर फसक-
 काटते देखा है। पठान सरकारकी मरद करना चाहते हैं। ये बरनेवार
 और बकावार भारतीयोंको सरकारके विरुद्ध उड़ा करनेके लिए नियु-

१. गांधीजीके दुबई पुत्र रामराज ।

२. गांधीजीके कथित पुत्र केसरज ।

३. बख्शला गंधी ।

४. जनवरी १८ १९१९को लिखे गये लखनऊ बीबीके बा. "कलेक्टरेड विवर"

इसलिए हम पठान बिगड़ोने स्वर्गिना महापनी निकोरियाका और अर्धमास साम्राज्य और साम्राज्यीका — खुवा उनकी समाप्त रखे—नमक खाना है गांधी और पालकके इन स्वयं धरकोंको समझी देनाबाधा कहते हैं। हम सरकारसे निवेदन करते हैं कि वह हमारे इस काममें बिबद्ध पक्ष न ले। गांधी हमसा हमारे समझी टीडीम करते हैं और हमारे पैगम्बरका अपमान करते हैं। इतना ही नहीं वे हमेशा देशके समझ-भैतमें लच्छल झालत रहते हैं। यदि सरकार उनकी और उनकी स्वयंसेवकोंकी टुकड़ीको उपनिवेद्यत बाहर न निकाल सकती हो तो हम सरकारकी खातिर यह काम खस्ती कर सकेंगे। आप यह पत्र प्रकाशित कर देंगे तो हम आपके आभारी होंगे।

मैंने कहा है कि इस पत्रपर पठानोंके दस्तखत हैं किन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि यह उनका लिखा हुआ है। एक दिन वह या जब पठानोंने सरकारको दस्ताख्त देकर कहा था कि आपके कानूनको हम मानें इससे तो यही बख्शा है कि आप हमें आपके गोलेसे उड़ा दें।' आप पठान उसी कानूनकी मान लेंगे बख्शा दूसरोंसे इसके मतबानेमें सब करेगे यह सम्भव नहीं बिलकुल। यदि यह सम्भव हो जाये तो यह उनके लिए और हमारे लिए खम्बाकी बात होनी।

तब यह पत्र कैसे लिखा गया? मुझे विश्वास है कि इसके पीछे एक प्रसिद्ध भारतीयका हाथ है। कुछ घंटे भी अपनी स्वार्थसिद्धिके लिए भारतीय समाजके विरुद्ध प्रपंच रख रहे हैं। बहुत-से भारतीय खुर बजे हुए हैं और इसलिए वे दूसरोंको बसानेके द्वारासे सारी कीमती दुबाना चाहते हैं। वे बोलों तरहक सोच अपने इस लक्षमें पठानोंका उपयोग करना चाहते हैं। पठान खुर लिखाना-पढ़ना जानते नहीं इसलिए सरकारसे बहुकामेमें आकर दस्तखत कर देते हैं। उनको ऐसा करनेसे पहले विचार करना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि कोई भारतीय उन्हें [पठानोंको] खुर बुझिये यह पत्र पढ़ा देगा। यदि वे चाहे बिना कापबन्ध विचार किये बिना दस्तखत करेंगे तो उनकी तलवारको बड़ा लनेगा। तलवारका प्रयोग जब दुरे प्रयोजनके लिए होता है तब उसको मैं तो लोहेके धंन खाने टुकड़के समान मानता हूँ।

बिना व्यक्तिने यह पत्र लिखा है या लिखाया है उसने भरनेदारोंको समझी ही है। किन्तु पठानोंको समझ लेना चाहिए कि उनका हाथ किसी भारतीयपर न उठेगा।

उसमें जो-कुछ मेरे विरुद्ध लिखा गया है उसके सम्बन्धमें मुझे जवाब कहना नहीं है। लेखक हिन्दुओं और मुसलमानोंमें बड़ाई कराना चाहता है। मैं मुसलमानोंके पैगम्बरोंका अपमान करता हूँ वह आरोप जमाना बिल्कुल बलात्की बात है। मुझे तो ऐसा बयाल सपनेमें भी नहीं आता। सच्चा हिन्दु-धर्म दूसरोंके धर्मका अपमान करनेमें है ही नहीं। मैं मानता हूँ कि मैं उसी धर्मका पावन करनेवाला हूँ। मेरा जीवन हिन्दुओं और मुसलमानोंमें एकता कैसे हो यह जीवनमें ही लगा हुआ है। तो फिर मुझे मुसलमानोंके पैगम्बरोंका अपमान कैसे हो सकता है? किन्तु जो कीमते हुएमन हैं वे सगगा कपानेके लिए चाहे जैसी बातें करके संघटन ठोड़ना चाहते हैं और उनका इच्छा उसमें पठानोंको बसीलनेका है।

ऐसे समयमें समाजके जो लोग समझदार और आतीन दिवसे आकाशी हैं उन्हें धारधान घटना चाहिए। पड़की बात तो यही है कि उन्हें हर व्यक्तिकी समझीसे करना नहीं है। भारतीय समाज सरकारसे खत्याबहके द्वारा बड़ता है। पीछे ही वह उन भारतीयोंसे भी कड़ेना जो भारतीय समाजके धनु हों। हर एक खुराका — ईश्वरका रखना है। जो समाजका

तुम्हारी स्थितिको देखते हुए मैं तुमको बास्कर मागना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ
 बरका कार्य-भार तुम और मन्त्रिमन्त्र जटाओ। बरकी हरएक बस्तुको संभालना उमा' और
 शिवाको' ठीक तरह रखना उनके सामान की सार-संभाल करना उन्हें स्वयं भी ऐसा ही
 दिखाना उनको साफ-सुथरा रखना और उनके नाकूनोकी सफाईका ध्यान रखना— यह सब
 तुम दोनोंको करना है। वा' तो सब स्वस्थ होनी ठब होनी। स्वस्थ होनेपर भी कोई फर्क
 तो पड़ना नहीं है। तुमको बरकी माकफिककी तरह ही व्यवहार करना है। हम बहुत ही
 पटीब है यह न भूझना।

मोहनदासके आशीर्वाद

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूल पुनरावृत्ति प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन १५२१) से।

१५ पत्र 'इंडियन ओपिनियन' को

गोदानिसर्ष

बनारसी १९ १९ ९

सेवामें

सम्पादक

इंडियन ओपिनियन

महोदय

इंडियन ओपिनियन का इस सप्ताहका अंक बहुतक प्रकाशित होया तबतक मैं घायब
 बेज-महजमें बैठा होऊंगा। इसलिये मैं वर्तमान स्थितिके सम्बन्धमें भारतीय समाजसे दो शब्द
 कहना जरूरी समझता हूँ।

कुछ भारतीय बीछे पड़ गये हैं, इसमें शक नहीं। कईमे क्यारी छोड़ दी है और
 कई दूसरे सब छोड़ी सब छोड़ीकी स्थितिमें दिखाई देते हैं।

कुछ पठानोंके बस्तबतोंसे स्टा. में एक बिद्दी' प्रकाशित हुई है जिसमें वे इस
 प्रकार लिखते हैं

हम पठान आपके बस्तबतोंके जरिये सरकारको और आमजनताकी खबर देते
 हैं कि ब्रिटिश भारतीय संघने एशियाई-बस्तबत और परबामा-बस्तबतकी नियमानीके किये
 बरनेदारोंका एक स्वबिचक-रक बनाया है। बरनेदार आकी बरिया पढ़नते हैं और
 सिपाहिमेंसे-बैसे पढ़े बाँधते हैं। हममें से कुछको हमने सड़कोंपर फलकड़पनसे बस्कर
 काटते देखा है। पठान सरकारकी मदद करना चाहते हैं। ये बरनेदार उनको रोकने
 और बकादार भारतीयोंको सरकारके बिरुद्ध खड़ा करनेके किये निवृत्त किये बने हैं।

१ गांधीजीके सुदीन पुन सम्बन्ध।

२ गांधीजीके कथित पुन देखास।

३ कश्मिरा गांधी।

४ बनारसी १८ १९ ९ को लिखे गये इस पत्रका अंशिक वा. "बनारसीके किये बिदेह"।

इसलिए हम पठान जिन्होंने स्वर्णीय मद्धारगामी बिकटोरियाका और वर्तमान सम्राट् और सम्राज्ञीका — खुदा उनको सलामत रहे— नामक बापा है गांधी और पोलकके इस स्वर्ण सेबकोंको बमकी देनेबाका कहते हैं। इस सरकारसे निवेदन करते हैं कि यह हमारे इस काममें बिकर पस न क। गांधी हमेशा हमारे बमकी तौहीन करते हैं और हमारे पैमन्बरका अपमान करते हैं। इतना ही नहीं वे हमेशा देशके धर्मन-धर्ममें लच्छ डालते रहते हैं। यदि सरकार उनको और उनकी स्वयंसेबकोंकी टुकड़ीको उपनिवेशस बाहर न निकाल सकती हो तो हम सरकारकी खातिर यह काम जल्दी कर सकेंगे। आप यह पत्र प्रकाशित कर देंगे तो हम आपके आभारी होंगे।

मैंने कहा है कि इस पत्रपर पठानोंके इत्तखत हैं किन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि यह उनका खिन्ना हुआ है। एक दिन यह वा जब पठानोंने सरकारको दखीस्त देकर कहा था कि आपके कानूनको हम मानें इसके तो यही जल्जला है कि आप हमें छोपके मोलेख उड़ा दें।" आज पठान उसी कानूनको मान लेंगे जबवा दूसरोंसे उनके मनबानेमें मदद करेंगे यह सम्भव नहीं दिखता। यदि यह सम्भव हो जाये तो यह उनके लिए और हमारे लिए खज्बाकी बात होगी।

तब यह पत्र कैसे लिखा गया? मुझे विश्वास है कि इसके पीछे एक प्रसिद्ध भारतीयका हाथ है। कुछ बोरे भी अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए भारतीय समाजके बिकर प्रपंच रख रहे हैं। बहुतसे भारतीय बुर बसे हुए हैं और इसलिए वे दूसरोंको बकानके इरासेसे घाटी कीमकी हुवाना चाहते हैं। ये चीनी तरहके जोप अपने इस जल्जलेमें पठानोंका उपयोग करना चाहते हैं। पठान बुर बिलगत-पड़ना जानते नहीं इसलिए सरकारसे बहुकामेमें धाकर इत्तखत कर देते हैं। उनको ऐसा करनेसे पहले विचार करना चाहिए। मैं जासा करता हूँ कि कोई भारतीय उन्हें [पठानोंको] घुड़ बुधिये यह पत्र पड़ा होगा। यदि वे चाहे बिस कामकपर विचार किये बिना इत्तखत करेंगे तो उनकी उम्बदारको बढ़ा लयेगा। उम्बदारका प्रयोग जब बुरे प्रयाजमके लिए होता है तब उसको मैं तो कौहेके अंग बाये टुकड़ेके समान मानता हूँ।

बिस ब्यक्तिने यह पत्र लिखा है या लिखाया है उसने बरनेदारोंको बमकी दी है। किन्तु पठानोंको समझ देना चाहिए कि उनका हाथ किसी भारतीयपर न उठया।

उसमें जो-कुछ मेरे बिकर लिखा गया है उसके सम्बन्धमें मुझे क्याका कहना नहीं है। डेबक हिन्दुओं और मुसलमानोंमें कड़ाई कराना चाहता है। मैं मुसलमानोंके पैमन्बरोंका अपमान करता हूँ यह आरोप बनाना बिकरुज बज्जानकी बात है। मुझे तो ऐसा समाल उपनमें भी नहीं आता। खज्बा हिन्दु-धर्म दूसरोंके धर्मका अपमान करनेमें है ही नहीं। मैं मानता हूँ कि मैं उसी धर्मका पावन करनेबाका हूँ। मेरा जीवन हिन्दुओं और मुसलमानोंमें एकता जैसे हो यह खोजनेमें ही लगा हुआ है। तो फिर मुसल मुसलमानोंके पैमन्बरोंका अपमान कैसे हो सकता है? किन्तु जो कीमके दुस्मन है वे धाड़ा करानक लिए चाहे जसी बात करके संकडन तौड़ना चाहते हैं और उनका इरादा उसमें पठानोंको भगीदनेका है।

ऐसे समयमें समाजके जो जोप समझदार और जातीय हितके आरांजी हैं उन्हें साबबान रहना चाहिए। पहली बात तो यही है कि उन्हें हर ब्यक्तिकी बमकीसे डरना नहीं है। भारतीय समाज सरकारस सत्याबहके द्वारा कड़ता है। जैसे ही वह उन भारतीयोंसे भी खड़ेगा जो भारतीय समाजके धनु होंगे। हर एक खूबका — ईश्वरका रचना है। जो समाजका

बुरा करना चाहते हैं वे अज्ञानी हैं। ऐसा समझकर उनपर हमें ठरस खाना चाहिए। किन्तु हमें उनसे बचना नहीं है। यह कड़ाई कम्बो हो गई है—अमी और कम्बो होनी। सभी लोग समझ सकते हैं कि कड़ाई कम्बो हुई है इसके कारण हम ही हैं। अब इसे छोटा करना भी हमारे ही हाथमें है। इसका उपाय यही है कि जो लोग कड़ाईको समझते हैं उन्हें पूरा उत्साह दिखाना चाहिए। उनको रायमें आना या बबराना नहीं है। फिर, क्यों-क्यों हमारे विरुद्ध जोर किया जाये क्यों-क्यों हमें ज्यादा जोर लगाना चाहिए। जो लोग कड़ाईको इस रूपमें समझते हैं उनको ज्यादा मुकसान उठाना और ज्यादा कष्ट सहना है। कड़ाईका सच्चा मुद्दा यह है कि हमें अपनी जान छोड़कर अपना मास बेबाकर भी कुछ रहना है और वह सब निर्भीक भावसे करना है। इसीमें अपना भी और अपनी कीमतका भी काम समझना है। ऐसा होगा तभी कड़ाई जीती जायेगी।

श्री पीलकरपर जो शोट की गई है वह हम सबको खबरनेवाली है। श्री पीलकरने भारतीय समाजकी जो सेवा की है उसका मूल्य जानकरा मेरे लिए तो सम्मन नहीं है। मैं उनके पुनर्जात बर्णन नहीं कर सकता। वे हमारी कड़ाईके उत्पन्नको चिंतना समझते हैं। चतना साबर ही कोई भारतीय समझता हो। ऐसे व्यक्तिके विरुद्ध ऊपर बताने मये पत्रमें बात-कुछ लिखा गया है, वह बताता है कि हमारी यह-बधा कठिन है।

मैं उस पत्रको खबरनेवाले और लिखनेवालेको नहीं जानता। मैं तो ईश्वरसे यही प्रार्थना करता हूँ कि वह उसको पठानोंको और समस्त भारतीयोंको सद्बुद्धि से और भारतीय समाजने अपने सिरपर जो बड़ा काम लिया है उसमें वह अत्यंतक मजबूत रहे।

प्रातिका सेवक और सत्याग्रही,
मोहनदास करमचन्द्र गांधी

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २३-१-१९ ९

१६ पत्र 'असहयोग'को

जोहानिसबरम
जनवरी २ १९ ९

[महोदय]

भारतीय समाज पिछले बार्ह मासके पत्रकी जा रही अपनी कड़ाईके तीसरे और धायद अन्तिम दौरमें प्रवेश कर रहा है। अभीतक इस बातकी जरूरत महसूस नहीं हुई थी कि ब्रिटिश भारतीय व्यापारी अपना मान-सत्ता पूरी तरहसे हीम दें और अपनेको बंगाल बना डालें। कड़ाईमें 'माय सैनेके लिए' अपनेको मुक्त करानकी दृष्टिमें उन्होंने अपना व्यापार काफ़ी दृढ़ तक फन तो किया है किन्तु उसे पूरी तरहसे छोड़ा नहीं है। यह कथन कि किमी अन्त्यामी सरकारके अर्थात देशसे वे लीज ही बनना चाहते या उसकी रक्षा कर सकते हैं जो उसके अन्त्यायका

१ वर २३-१-१९ ९ के इंडियन ओपिनियनमें प्रकाशित हुआ था। गांधीजी के अन्तिमके सद्बुद्धिके २२ जनवरीको ही समाज दालि से और अनुमान है कि वरदा मठपिठ कर्मि ही देवर दिया था। इंडियन "२३: १६ डेजी मेक बी" इ १५९-२ बी।

समर्पण करते और उसमें हिस्सा लेते हैं प्रस्तुत मामलेमें सही सिद्ध होनाका है। हमें अपन बाबमें केंद्रानेके उद्देश्यसे और यह देखकर कि हमें बेचका कोई जर नहीं रह गया है फौजदारी कानूनके अन्तर्गत कुछ नियम बनाये गये हैं जिनमें उन लोगोंका माह बेचनकी पद्धति निर्धारित की गई है जिन्हें मरिस्ट्रेट केबकी सजाका विकल्प दिय बिना जुर्रानकी सजा दिये। बाहिर है कि इस नई बाकका सख्य भारतीय व्यापारी हैं। इसलिये उन्हें स्वेच्छामूलक कर्माभी बदरबस्ती काही गई कंगानी या अपमसका सामना करनेकी जरूरत आ पड़ी है। वे अपने साहूकारको या अपनेको हानि पहुँचाकर एक जम्मायी सरकारको बन प्राप्त करानेकी इच्छा नहीं कर सकते हैं। वे अपमसके भागी भी नहीं होता चाहते। इसलिये एक व्यापारिको नाते और ब्रिटिश भारतीय संघके अध्यक्षकी हैसियतसे अपने स्वबेस-बाइयोको मेरी तो यही सलाह है कि वे फ्रिडहास व्यापार करना छोड़ दें और साहूकारोंका जो भी माह उनके पास हो उसे साहूकारोंको वापिस कर दें या अपनी बूकानें बन्द कर दें। [इस विषयमें उपाहारय पेस करनेके लिए मैंने कुछ ही पहला कथम उठानेका निश्चय किया है और मैं ऐसा खुब सोच-विचारकर कर रहा हूँ हालाँकि यममें कुछ दिक्कियाहट जरूर है। इस महत्त्वपू्ण कथमके सम्बन्धमें संघकी राय जाननेके लिए विधिपूर्वक मत-संग्रह न तो किया जायगा और न किया जा सकता है। उन घारे भारतीय बूकानदारोंसे भी अनौत्क हमारी सझाईके प्रति बधाहार रहे हैं यह आशा करना बड़ा कठिन है कि वे अपना साथ माह बेच दें और हममें से कुछने जो कुमम रास्ता चुना है उसका अनुगमन करेंगे। वे इस अवसरके अनुकूल उँचे न उठ सकते हैं तो भी मैं मानता हूँ कि वे यदि उपनिवेशियोंकी नहीं तो अपन स्वबेस-बासियोंकी शिवाभनाके हकदार हैं कारण उन्होंने पिछले तीस महीनोंमें संकटों और कठिनाइयोंका मुकाबला किया है। फिर तो यदि हम पैसेको चुकानामें अपन शिवात्तका क्याया मूल्य करते हैं तो मैं अपने स्वबेसबासियोंको एक यही सलाह दे सकता हूँ कि वे अवसरके तकावके अनुधार ऊपर उठें और यह अन्तिम कथम उगायें। तमी उपनिवेशी यदि समझना चाहिये तो यह समझें कि जहाँतक भारतीयोंका वास्तवक है हमारी इस सझाईका उद्देश्य व्यापारपर हमारा मीठ्ठा निरन्धय बनाये रखना अनुचित प्रतिस्पर्धा करना या जिन लोगोंको इस बेसमें रहनेका अधिकार नहीं है उन्हें यहाँ का बसाना नहीं है। जहाँतक हमारा सम्बन्ध है, सबास सिर्फ राष्ट्रीय सम्मान और अपने ईमानकी रक्षाका है। बुरी घबर्णोंमें हम यह दिखानेकी कोशिस कर रहे हैं कि हम बसिन आठिकाके नागरिक होनेके योग्य हैं। यह सम्भव

१. वे नियम १९ ३ के अन्तर्गत १ की धारा २८ के अन्तर्गत दूनतकके सर्वोच्च आवाकके आवायियों द्वारा कथने गये थे। इन नियमोंमें दिलायी मामलोंकी ही तरह सुनिकी क्यूकी वारंटकी तामीक करनेकी, वास्तविक साहूकारकी बन्द केनेकी, किन्तु माह वारंटकी तामीकीका कर्ब और जने वसिद्धित कालधिका मरताकि नियम काही ही, कुर्द-नयीके सजा माह बन्द कर उठनेकी और बहक हुए सुनिकी एठिक अनुगतमें देरकी मोखर कथनेकी अस्तवा की थी थी। देखिए इंडियन ओपिनियन ९-१-१९ १।

२. यूरोपीय आचारविमि देवा काँ उमठा कनकी प्रतिष्ठिता विर म्कारकी थी। जनरी ११ के देवतक मसुँसिमें प्रकाशित एक विवेक उरने करा पना ५८, "यह बर रखण बाधिय कि एठिकारै उरकर उरकरका कथने करनेमे आतारी उमाह नयीक कथना एकमत रहा है। एठिक विभिन्न मरटीव लेके बसन्धने की सब कथिकर किया है उठका यह कर्ब उठना पना है कि जो यँयी और कने छापी आठिकनकारी कर्ब उठनेकी बाधिक कर रहे हैं।

है कि कड़ाईकी इस अतिम मंथिकमें बहुत-से भारतीय लड़कड़ा जायें। हम यह भी देखते हैं कि कड़ाई उन्नीसवीं सत्रमें। हमारे ही अन्तर मीनूह देपी अन्तियोंके द्वारा और ऐसे यूरोपीयोंके द्वारा जिनका इस बातमें स्वार्थ है, हमारे संघमें फूटके बीज बोनेकी कोशिश की जा रही है। हमें इन घाटी बातोंकी कल्पना भी किन्तु वे हमें अपन अपनाने हुए रास्तेसे विचलित नहीं कर सकतीं। और बहुतोंके पिछड़ जानेके बाद हमारी संस्था बड़ी रहे जायेगी हम सबके कष्ट सहै रहेगी सबके हनारे साम साम नहीं किया जाता।

आपका आदि

छ० मु० काठिया

अध्यक्ष

ब्रिटिश भारतीय संघ

[बंबईसे]

इंडियन ओपिनियन २१-१-१९१९

१७. पत्र 'सेनबारीको'

[बीहानिपत्र]

जनवरी २ १९१९

[सम्बन्धो]

मुझे आपको यह खबर देते हुए दुःख होता है कि मेरे सेनबारीकी एक बैठक रिजिस्ट्रार स्ट्रीट और ऐडवोकेट स्ट्रीटके माकेपर ब्रिटिश भारतीय संघके कार्यालय २१ २४ कोर्ट चम्बरमें बुधवार २२ तारीखकी सायंकाल ३ बजे बुलाई जायेगी। इस बैठकको बुलानेका कारण मेरी माजीहाजत नहीं है। परन्तु मैं ब्रिटिश भारतीय संघके अध्यक्षकी हैसियतसे अब अपना व्यापार अपने सेनबारी या अपने-आपको कोशिससे बाहर रखकर नहीं जाना सकता क्योंकि मैं देखता हूँ कि सरकारने उन ब्रिटिश भारतीय व्यापारियोंको बर्बाद करनेका इरादा कर लिया है। जिन्होंने सबके एडिवाइर रजिस्ट्रेशन कानूनको माननेसे इनकार कर दिया है सबके अन्तरस सम्बन्धका बाधा घुटा नहीं किया जाता और शिक्षित भारतीयोंका बर्बाद पनकी नीकेपर नहीं रखा जाता। मैं कहूँ कि स्पष्ट कानून-विषयकी विचारवर्षा, रजिस्ट्रेशन बिना परबारीके व्यापार करनेवाके व्यापारियोंपर भारी जुमाने कर रहे हैं और उन्हें सबकेमें करकी कूट भी नहीं है। सबके में नियम जाप दिये गये हैं जिनमें इन जुमानोंकी बसुकीके लिए माऊकी बेचनेका तरीका बताया गया है।

यह कहकर मैं कड़े जुमाने करनेवाके रजिस्ट्रेशनकी या इन नियमोंको बनानेवाकी सरकारकी सिकायत नहीं करता। अपनी समझके अनुसार उन्हें अपने कानूनोंको सबकेवली समझानेका हक है। मेरा बाधा केवल यह है कि ब्रिटिश भारतीयोंको भी अपने कष्ट-सहनस उन

२ सम्भव है कि ब्रिटिश भारतीय संघके अध्यक्ष न हूँ क्योंकिने इच्छाकरते हुए सब सब और रिजिस्ट्रार बारीक दोनों एक साथ किसे करे हों।

कानूनोंका विरोध करनेका अधिकार है जिन्हें वे अपने राष्ट्रीय सम्मान और अपनी अन्तरात्माके प्रतिकूल समझते हैं। इस स्थितिमें जबतक संघर्ष चलता है, मेरे सामने इसके सिवा और कोई रास्ता नुमा नहीं रहा है कि मेरे पास जो-कुछ है उसको बिकने देनेके बजाय मैं अपने सेनबारोंको छीपूँ क्योंकि बाहिर में उनकी औरसे इसका म्यासी (ट्रस्टी) हूँ। मैं जानता हूँ कि मुझे अपने-आपको इस मासको रकममें बचाने और अपने सेनबारोंका पावना लकड़में बुझानेके लिए जिम्मेदार समझना चाहिए। परन्तु सार्वजनिक हित मेरे किसी हितसे ज्यादा जरूरी है। इसलिए यह देखते हुए कि मैं अपने मासको इस तरह नीचाम नहीं कर सकता बिचसे मेरे सेनबारोंको काम हो मैंने यही तय किया है कि मैं उनको इकट्ठा करके उनके सामने अपनी हाकत रखूँ और उनसे कहूँ कि वे मेरे मास और बूझरी मिश्रितपत्रका लें। अगर संघर्ष सीमाप्यसे निकट सन्धिमें समाप्त हो जाये — या जब भी समाप्त हो — तो मैं इस मासको खुशीसे ज्योंका-त्यों ले लूँगा और अपने सेनबारोंके कामके लिए बेचूँगा। परन्तु अपने मासकी बिक्रीके बारेमें मैं जायामी बैठकमें अपना-आपको पूरी तरह अपने सेनबारोंके हाथोंमें छीपूँगा।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन २३-१-१९१९

९८ भेद 'नेटाल मन्सुरी' के प्रतिनिधिको

[बोहानिसबन]

जानवरी २१ १९०९]

मुझकागतमें श्री बाबाजीने कहा: इस कदमके कारण^१ भारतीय कौमकी इतना अधिक अल्प-स्वाग करना पड़ेगा कि सब भारतीय व्यापारी इस बिचारको — जो मुझे नेटालमें रहते सुना था — अपनातेके लिए तैयार होंगे या नहीं यह अपनी शूककी हाकतमें बतला मुश्किल है। भारतीयोंके सेनबारोंमें समुद्र-वारीय बिक्रीका वैद्विया स्थानीय बोक और बूझरा व्यापार करनेवाली वैद्विया बोक हुकानदार और भारतकी वैद्विया हैं। अथर भारतीय एकमत ही सबे तो इनका मुकसान कई हजार पौंड तक पहुँच जायेगा। इंग्लैंडकी बोक व्यापारी वैद्वियोंने यहाँ भारतीय व्यापारियोंको बहुत मास दिया है। अगर यहाँके भारतीय अपनी सामबावें और हुकानों उनको छीपें तो यहाँके बोक व्यापारियोंको या तो इस मुकसानके व्यापारको बन्द करनेके लिए मजबूर होता पड़ेगा या एजियाई हुकानदारोंको मनेबरीं या मुनीजोंके कबमें रखना पड़ेगा ताकि वे एजिसुअन-कानूनोंके बाबजूद व्यापार कर सकें। अथर किसी भी तरहके सेनबारोंने भारतीयोंके मासको छरेबाजार बिकवानेका संकल्प किया तो भारतीय व्यापारी तो बिल्कुल बर्बाद हो ही जायेंगे परन्तु उन सेनबारोंको भी भारी मुकसान हीया। श्री बाबाजीने कहा कि

१ यह उद्यम बिना कस या कि समुझारोंका जो भी मास भारतीयोंके पास हो वे उसे बन्द कर दें या अपनी रुचमें बन्द कर दें। शेरिन "पत्र: मन्सुरीकी" पृष्ठ १५४-५५।

भारतीयोंकी सङ्गठना उनके एकमत रहनेपर निर्भर है। इसलिये द्वास्तवासके किम-किम भारतीयोंपर इसका असर होना उन सबको चुनना भोज भी जायेगी।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन २१-१-१९ ९

१९ काछलियाके सेनबारोंकी बैठकमें पेरवी'

[बोद्धानुसन्ध]

जनवरी २२, १९०९]

श्री गांधीने जो काछलियाकी ओरसे बोले कहा कि सेनबार जो भी कार्यवाई उचित समझे करनेके लिए स्वतन्त्र हैं। व्यापारियोंने मेरे मुबनिकसमें जो विश्वास किया है उसका अभाव है उनमें अपना विश्वास प्रकट करके देना चाहते हैं। अगर वे चाहें तो उनकी भाविसतका उपयोग व्यापारको बाध रखकर व्यावासे-व्यावा कामके अयाससे कर सकते हैं या उनका पूरा माल बेच सकते हैं। श्री काछलिया व्यापारको जारी नहीं रख सकते।

अप्यजने यह कहकर बैठक समाप्त कर दी कि वे सेनबारोंके बहुमतके प्रतिनिधिभी हुतियससे कोई फैसला करनेके लिए तैयार नहीं हैं; लेकिन वे श्री काछलियाको उनका पूरा-पूरा पावना चुकानेके लिए अगले सोमवारकी दोपहर तक की मुहलत देते हैं।

श्री गांधीने कहा कि उनके मुबनिकस मुहलत नहीं चाहते।'

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ३०-१-१९ ९

१. सेनबारों और अन्धकारोंकी जिम्मे को सर्वोच्च मुद्राधिक (रेजिस्टर नं० १५४-५०) श्री म. ह. काछलियासे सेनबारोंकी एक बैठक मित्रित भारतीय उनके कार्यक्रममें हुई थी। भारतीय-मन्त्र (अंग्रेज नृप) के श्री डॉ०के सम्पुष्टा थी। श्री काछलियासे मन्त्र विद्यमान किन्ना देश किन्ना जिम्मे मंत्रि सौर ७,५. श्रीकाँडी मन्त्रिमन्त्र और ३,८. श्री सेनबारी विद्यार्थी थी। अन्तमें कहा कि वे अपने सेनबारोंको मन्त्र मुद्राधिक नहीं कर सकते अन्दि जो डॉ०के पूरे मुद्राधिककी मीग थी। जनवरी २३ १९ ९ के रैड सेली मेकने बैठकका पूरा विवरण प्रकाशित हुआ था।

उसी दिन कछे सबके बोधामित्तकी व्याख्यान (सेनार चौक कोमल) की कार्यकारिणीने अपने बलाधिक बोध व्याख्यान विद्यार्थी के प्रकाशनोंका सम्मोहन किया था कि अन्त कोरे पत्रिकाएँ "अन्धी मास्किन्ड अपने सेनबारोंके सुधुर करनेके कारणसे अन्धी कोरे भेद" मुझसे और अन्धी पर कार्यवाई मतभ्रमस्य प्रतिरोध बन्तोरुम्भका ही एक विस्था हो तो ऐसे सेनबारोंकी बहिष्कार कि वे सिधा क्त हाकलके पर सेनबार बहिष्कारने अपनी दूरी सेनबारोंका मुद्राधिक कर दिया हो, व्याख्यानकी बन्तोरुम्भ सिध बर्दी रें।"

२. श्री सेनबारोंने श्री डॉ०के बैठकके विरोध नहीं किया और बैठक समाप्त कर दी थी।

सिबामें
सम्पादक
महीष्य

सायब आप मुझे अपने सम्पादकीय लेखकों और बिसे आप ब्रिटिश भारतीय समाजका सबसे मया कथम कहते हैं उसपर भी यदि अपनी टिप्पणियोंकी जोड़ी टीका करनेकी अनुमति देंगे। आपकी टिप्पणियोंसे जो बहुत-से गौण प्रश्न उठते हैं, उनपर मैं बिचार नहीं करूँगा। परन्तु मैं कहना चाहता हूँ कि जिस संचर्षको मेरे देशवासी बसा रहे हैं, आप या तो उसकी भावनाको नहीं समझते या उस समझनेकी परवाह नहीं करते। सबसे नये कथमका संघा यूरोपीय व्यापारियोंको कार्टवाई करनेके लिए बढाना नहीं है। आपके संवावशाताको उन्हीं प्रान्तोंके उत्तर विषे गये न जो उसने पूछे न।^१ इसलिये बहुत-सी बातें बतानेके लिए यह मई है। यह मुझसे प्रश्नकी केवल एकपक्षीय धानकारी से मया ना।

भारतीय व्यापारी यह नहीं चाहते कि उनके इस सबसे नये कथमसे एक भी यूरोपीय व्यापारीको नुकसान पहुँचे। इसके विपरीत उन्होंने अपनी मर्जीसे अपने सेनदारोंका भी नुकसान उठाना मंजूर किया है। अपने सेनदारोंको मोटिस देकर भी काष्ठकियाने उन्हें केवल यह सुचित किया है कि जो मास उन्हें घीया मया या उसको सरकारकी कार्टवाईसे — सायब आप इसमें यह जोड़ेंगे कि ब्रिटिश भारतीयोंकी कार्टवाईसे भी — बतप हो मया है। जो काष्ठकियाने करने सेनदारोंके सामने अपना जो हिस्साका बिट्ठा पेश किया^२ उसपर कोई भी वेतनार बर्ष कर सकता है और उन्होंने अपने सेनदारोंके सामने जो बयान दिया है उसे मैं पूरी तरह सम्मानजनक मानता हूँ। उन्होंने कागजपर ही पूरा और सही-सही हिस्सा नहीं दिखाया है बल्कि यह भी कहा है कि वे सेनदारोंको अपना मास घीयकर ही उनसे भरपाईकी रसीद लेना नहीं चाहते बल्कि उन्हें उस मासपर कोई बाटा हो तो वे उस अपनी मतिप्यकी कमाईसे पूरा करनेके लिए तैयार हैं बशर्ते कि जिस बेलकी उन्होंने अपना किया है उसकी सरकार उन्हें कमाई करने दे।

हमारे इस सबसे नये कथमका यह अर्थ कदापि नहीं है कि ब्रिटिश भारतीय व्यापारी यों ही अपने सेनदारोंकी बैठक बुलायें और स्थितियोंके बजावसे उन्हें कुछ ह्य तक अपनी हानिमें घामिल करें। सब ब्रिटिश भारतीय केवल यूरोपीयोंके ही वेतनार नहीं हैं। सायब भी काष्ठकियाके ५ प्रतिशत सेनदार भारतीय हैं। कुछ भी ही ब्रिटिश भारतीय व्यापारी

१ पत्र १०-१-१९९ के हॉरिजन अप्रिपिबिसनने "भी पत्रिका पत्र" छीरके जना ना।

२ देखिए पृष्ठ ९।

३ यह मेट्रो रिपोरे जनकम नहीं है।

४ देखिए पृष्ठ १०।

निम्न श्रेणियोंमें विनियत किये जा सकते हैं (क) बिनके सेनदार मूरोपीय और भारतीय दोनों हैं (ख) बिनके सेनदार केवल मूरोपीय हैं (ग) बिनके कोई सेनदार नहीं है।

इस तीनों श्रेणियोंके व्यापारियोंको उल्लाह ही पर्य है कि वे अपने कारोबार बन्द कर दें और अपनी सम्पत्तिको बेच दें। इस तरह आप देखेंगे कि ब्रिटिश भारतीयोंको बेच बोजी इस तक मूरोपीय सेनदारोंको कष्ट देना पड़ेगा। इसलिये सबसे नये कदममें दबाव आनेकी बात कतई नहीं है। मगर आपका मतलब यह हो कि मूरोपीय सेनदारोंको अब इस मापकेय अधिक दिखानेकी जेनी पड़ेगी तो मैं इस आरोपको मन्सूर करता हूँ। परन्तु इसका केवल इतना ही अर्थ है कि मेरे बेशवासियोंके कष्ट-सहनका प्रभाव फिर पड़ा है। अनाक्रमक प्रतिरोध इसमें है कि प्रतिरोधी केवल सब प्रकारके कष्टोंको सहन करें। इसे कानूनकी अपेक्षा कहना आपका व्यभिचार है। और ब्रिटिश भारतीयोंका मुनाफके साथ अपने सब मासकी सौंप देना बिनका नतीजा आर्थिक हानि होता है और अपनी मर्जी परीबीको स्वीकार करना पठन कहे कहा जा सकता है।

आपने करना बेनेके सम्बन्धमें आशेष किया है और उसे बगकी देना कहा है। अब मुक्ति-सेना (सास्नेहन आर्मी) और ऐसी ही दूसरी जीन्द-हिंदी संस्थाओंके संघ-समलोंको कानूनकी लुकी अबका दबाव और बगकी कहा आपेना तनी भारतीयोंके मामकेमें करनेको पसन्दी कहा ठीक होगा।

आपका आदि

मो० क० गांधी

[अपेनीसे]

रैड डेकी मेक २३-१-१९१९

१०१ सजाईका अर्थ क्या है ?

अब माना जा सकता है कि ट्रान्सवालकी सजाईका तीसरा और सुरु हो गया है। हमारी संवादकी शिष्टियोंके जाना जा सकता है कि कुछ भारतीय बूटने टेकने जये हैं। जगमें कुछ फूट भी है ऐसा जान पड़ता है। इससे दुःखी होनेकी कीर्त बात नहीं है। ऐसा तो हमेशा हरएक सजाईमें हुआ करता है। आशियी चीनी बगना बहुत कठिन होता है। बहुत कम चीने चीनेमें आसिल होते हैं परन्तु सब अन्ततक नहीं चीनेते — चीने सकते नहीं। कुछ मुस्त होनेके कारण नहीं चीनेते। कुछ पककर चीनेता चीने देते हैं। कुछ चीनेते-चीनेते जान चीने देते हैं और चीने ही सही-सजामत अन्ततक पहुँच पाते हैं। ऐसा ही हर आशिके इतिहासमें होता है। इसलिये ऊपर किसी अनुसार बटगाएँ होती हैं तो जगमें निराश होनेकी कोई भी बात नहीं है। वो बर्ष तक ह्वारों भारतीय जोर-जोरसे बड़ते रहे। इस सजाईमें असीर तक धुँचनेबाके मनुष्य होंगे ही।

हमें अभी यह लुकी कानून रख करवाना है और पढ़े-लिखे लोगोंके हकोंकी रक्षा करनी है। परन्तु हमारी सजाईका अर्थ इतना ही नहीं है।

हमें संघर्ष करते हुए सिखा प्राप्त करनी है अतुर बनना है और दिखा देना है कि हुए नामर्द नहीं मर्द हैं। यह भी सजाईका एक अर्थ है। मगर इसमें पूटी सजाई नहीं जा पाती।

इस लड़ाईका मुख्य हेतु तो यह है कि हम मरने एक बात बनना चाहें बाब जो हम बन्दे बन हुए है इस स्थितिसे निकलकर घेर बने और हुनियाको दिखा दें कि हम एक है हम भारतके सपूत हैं और उसके लिए घिटेको तैयार हैं।

महान पोरो कह गये हैं कि एक बारा आदमी एक साब छोटे सोरोसे बड़कर है। हममें से कितन करे हूँ यह हम जानना चाहते हैं। यह बात इस लड़ाईमें मालूम हो जायेगी। खप होना हीच सेना कामूनको चीङनसे नहीं ब्यावा महत्त्वपूर्ण है। घुसरोको मुक्ये देखकर कृप भी हिम्मत हार बेचना बुरा है। यही भावर्षी है।

पोरी बाठिया हमपर यह आरोप करती हैं कि हम आरम्भमें तो बहादुरी दिखाते ह लेकिन समय जानेपर बीजे पड़ जाते हैं। हम यह सिद्ध कर देना चाहते हैं कि ऐसी कोई बात नहीं है। हमें द्वास्तबाबकी धकितगामी सरकार मोम नहीं बटा सकती।

यही सीबना सच्चा बर्णन है और इसीलिए हम इस धम-मुठमें अपने प्राय अपभ करनेको तैयार हैं। यह बात बटा देना इस लड़ाईका एक अंग है। और यही मुख्य अंग है। घेप तो उसके बरिये खुद ही हमारे हाथ आ जायेगा।

ऐसी महान विजय प्राप्त करनेके लिए महान पराक्रमकी आवश्यकता है। तो किस प्रकार जाये? द्वास्तबाबमें हुकमतवार बड़े-बड़े भारतीय हैं। उन्हें अपनी योग्यताका परिचय देना है, और इसके लिए उन्हें मिजारी बनना है। मिजारी बननेमें ही उनका तथा जातिका हित है। जिस राज्यमें राजा अत्याचारी होता है उस राज्यमें अत्याचारमें माग सेनेबाकी राजा ही खुली या पेटेबाकी हो सकती है। जेदेरे राज्यमें अच्छे आदमी पैसा इकट्ठा नहीं कर सकते। ऐसे राज्यमें चीजे सोम तो केवल कुछ सह कर ही रह सकते हैं। बाब द्वास्तबाबके भारतीयोंकी वधा ऐसी ही है। द्वास्तबाबकी सरकार भारतीयोंकी माग-मर्वादा और सम्पत्ति कूट लेना चाहती है। उसे भारतीय कैसे लट जाने देंगे? पुराने जमानमें कोय बन्द-कमी अत्याचारी सरकारके निकट जाते थे तब वे अपनी स्त्रियोंकी मान-मर्वादा बचानेके लिए पहले उन्हें मार डालते थे। द्वास्तबाबके भारतीय बाब उत्पादहकी लड़ाई सड़ रहे हैं। उन्हें अपने बन्को जहाँ स्त्रियोंकी तरह कुर्बान करना होगा। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो उनकी साज जायेगी और उनका बग तो कड़वा विष बन जायेगा। किसी भी धर्ममें परमेश्वर और पैसा दोनोंकी पूजा एक साथ [सम्भव] नहीं मानी गई। सभी धर्म सिखाते हैं कि यदि ईश्वरकी उपासना करनी है तो बन्को तिलांजलि देनी पड़ेगी। यदि हमने यह लड़ाई ईश्वरका स्मरण करके और उसपर विश्वास रखकर लड़ी है तो फिर बन्का त्याग करना ही होगा। अब हमें बन्की आवश्यकता पड़ेगी तब वही ईश्वर हमारे पास धन भेज देगा।

इन्हींमें अपनी सम्पत्ति-महित बचकर तीन लाख व्यक्ति मर गये यह ईश्वरकी कीला है। इसे ध्यानमें रखकर हमें सदा अपनी मान-मर्वादाकी रक्षा करनी चाहिए। मान रक्षा करने हाथकी बात है बन्की रक्षा अपने हाथमें नहीं है। आधा है भारतीय बन्का त्याग करके मानकी रक्षा करेंगे।

[पूजरातीसे]

इन्दियन ओपिनियन २३-१-१९९

(४)

पोहानिसर्वर्गकी खेलमें एक दूसरा दुःख अनुभव भी हुआ। इस खेलमें अल्प-वयन प्रकारके दो विभाग हैं। एक विभागमें सक्त सजा पाये हुए काफिर तथा भारतीय कड़ी रहते हैं। दूसरे विभागमें यथाही देनेबाब और ऐसे कड़ी रहते हैं जिन्हें बीवानी खेल मिला होती है। उसमें सक्त सजा पाये हुए कैदियोंको जानेका हक नहीं होता। हम दूसरे विभागमें होते थे। लेकिन विभाजनक पालाने आदिका उपयोग हम अधिकारपूर्वक नहीं कर सकते थे। पहले विभाजनके पालानामें जानेवाले कैदियोंकी संख्या इतनी ज्यादा होती है कि पालाना घन्टा एक बड़ी समस्या हो जाती है। कुछ भारतीयोंको यह कष्ट बहुत लगता है। उनमें एक म भी था। मुझे सन्देहमें कहा था कि दूसरे विभागके पालानोंका उपयोग करनेमें आपत्ति नहीं है। इसलिए मैं नहीं गया। उन पालानोंमें भी भीड़ तो होती ही है। इससे विभा ने खुले रहते हैं। उनमें दरवाजे नहीं होते। मैं ज्यों ही बैठता त्यों ही एक मोटा-ठाका मजबूत और विकराल काफिर आया। उसने मुझे उठ जानेके लिए कहा और पाठियाँ देने लगा। मैंने कहा कि अभी उठता हूँ। तबतक तो उसने मुझे दोनों हाथोंसे दबोककर उठा लिया और बाहर फेंक दिया। सीमापसे मैंने छिड़कीकी चौकट पकड़ ली जिससे मैं बिरा नहीं। इससे म बचता नहीं। मैं तो बहुत डरकर पल दिया लेकिन बिन एक-दो भारतीय कैदियोंके यह बटना बेबी ने बहुत दुःखी हुए और रो पड़े। खेलमें मे कोई मरद तो कर नहीं सकते थे इसलिए अपनी आचारीपर उन्हें खेद हुआ। इस प्रकारका कष्ट दूसरे भारतीयोंको भी भोगना पड़ा है, यह मैंने बादमें सुना। इस बटनाकी बर्षा मैंने गवर्नरसे की और कहा कि भारतीय कैदियोंके लिए एक स्वतन्त्र पालानकी साज बकरत है और यह भी बताना कि काफिर कैदियोंके साथ भारतीय कैदियोंको बिस्तुक नहीं रहना चाहिए। गवर्नरन तुल्य हुकम दिया कि बड़ी खेलमें से एक पालाना भारतीय कैदियोंके लिए खोला जाये और दूसरे दिनसे पालानेकी एकलौक दूर हो गई। उपर्युक्त परिस्थितियोंमें मुझे चार दिन तक एक पालाना नहीं हुआ इसलिए मरी सेहतको भी नुकसान पहुँचा।

जब मैं पोहानिसर्वर्गमें था उस बीच मुझे तीन-चार बार अशास्त्रमें जाना पड़ा था। मुझे बड़ी भी पीडाक और अपने कड़केसे मिलनेकी अनुमति मिली थी। दूसरे तीन मी कभी कभी मिल जाते थे। बरालतमें मुझे बरकी खुराक मँवानेकी छूट भी इसलिए दी कैडिनरैक मरे किए रोगी पनीर आदि वस्तुएं जाते थे।

जब मैं इस खेलमें था उस समय सत्याग्रही कैदियोंकी संख्या बहुत बढ़ गई थी। एक बार तो पचासमें भी ज्यादा हो गई थी। अधिकारको एक पत्रपर बैठकर छीटी हूँहीसे बाठीक कंठकी फौजनका काम सीपा जाता था। एक-एक आबमियोंकी फटे हुए कपड़े सीनेका काम दिया गया था। मुझे सीनेकी मतीनपर टोपियाँ सीनेका काम सीपा गया था। सीनेकी

मौन चलानेका काम पहल-पहल मैने यहीं सीखा। यह काम मुद्रिच्छ नहीं था इसलिए सीखनेमें विशेष समय नहीं लगा।

अधिकतर भारतीय कैंरी कंफ़ड़ी फाड़नेका काम ही करते थे। इसलिए मैने भी उस कामकी याँव ली। लेकिन सप्टरीने कहा कि बड़े बारीकाका उसे ऐसा हुकम है कि मुझे बाहर न निकाला जाये। इसलिए उसने मुझे कंफ़ड़ी फोड़नेके लिए जानेकी अनुमति नहीं दी। एक दिन ऐसा हुआ कि मेरे पास मचीनपर अपना बिना मचीनके सीनेका काम नहीं था। इसलिए मैने पुस्तकें पढ़ना शुरू किया। रिवाज यह है कि हरएक कैंरीको जेम्मा दुष्ट-न दुष्ट काम करना ही चाहिए। इसलिए सप्टरीने मुझे बुलाकर पूछा क्या क्या तुम बीपार हो?

मैने जवान दिया भी नहीं।

प्र तो तुम कोई काम क्यों नहीं कर रहे हो?

उ मेरे पास जो काम था वह पूरा ही चुका है। मैं कामका बीम नहीं करना चाहता। मुझे काम से तो मैं करनेके लिए तैयार हूँ। बल्कवा खाली समयमें बैठा-बैठा पढ़ता हूँ तो उसमें क्या आपत्ति है?

प्र यह तो ठीक है, लेकिन जिस समय बड़ा बरोगा या गबनर आये उस समय तुम स्टोरमें रहो तो अच्छा।

उ मैं ऐसा करनेके लिए तैयार नहीं हूँ। मैं गबनरसे भी कहनेवाला हूँ कि स्टोरमें काकी काम नहीं है। इसलिए मुझे कंफ़ड़ी फोड़नेके लिए भेजा जाये।

प्र ठक ठीक है। पर मैं अनुमतिके बिना तुम्हें कंफ़ड़ी फोड़नेके लिए नहीं भेज सकता। इस घटनाके कुछ ही बेर बाद गबनर आया। मैने उसके सामने साठी हकीकत रख दी। उसने कंफ़ड़ी फोड़नेके लिए जानेकी अनुमति तो नहीं दी लेकिन यह कहा कि तुम्हें बैठा करनेकी जरूरत नहीं है क्योंकि तुम कब ही फोक्सरस्ट बापस येने जा रहे हो।

डाक्टरजी जाँच — कैदियोंका नया किया जाला

फोक्सरस्टकी जेल छोटी थी। इसलिए कुछ मुबियाएँ जो बड़ी मिल जाती थी वे पोद्दानिधर्वकी बड़ी जेलमें नहीं मिल सकती थी। उदाहरणके लिए फोक्सरस्ट जेलमें थी दास्ट मुहम्मदको छिरपर बीमनके लिए छाख दिया जाता था और पाजामा तो दूसरे लोगोंकी भी दिया जाता था। यी क्लमबी थी सीपबनी और यी धापुरजीकी अपनी-अपनी टीपी पहननकी अनुमति थी। पोद्दानिधर्व जेलमें ऐसा होता मुद्रिच्छ था। इसी तरह पोद्दानिधर्व जेलमें जब कैंरी पहली बार बापिछ होते हैं, तब डॉक्टर उनकी जाँच करता है। इस जाँचना हेतु यह है कि कैदियोंकी कोई संक्रमक रोम हो तो उसकी पत्रा की जाये और उन्हें दूसरे कबिर्से बचम रखा जाये। इस कारण कैदियोंकी पूरी जाँच की जाती है। कुछ कैदियोंकी उपरस बापि रोम होते हैं इसलिए उनके मुहल जबरनकी जाँच की जाती है। अतएव कैदियोंकी विष्कूच नया करके उनकी जाँच की जाती है। काफ़िरोंको तो कगमय पन्द्रह मिनट तक नया पड़ा रखा जाता है जिनका डॉक्टरका समय बचे। भारतीय कैदियोंको पीड़ी मुबिया है उनमें उनका पाजामा जब डॉक्टर आता है तभी उतरवाया जाता है। बाकी लोगोंके कपड़ पहनेय ही उतरवा दिए जाते हैं। समय सबी भारतीय कैंरी पाजामा उतरवानके हम रिवाजके गिलाह है फिर भी अधिकतर लोग सपासहकी सड़ाईका विचार करके आताकानी नहीं

(४)

जोहानिसबर्गकी जेलमें एक दूसरा दुःखर अनुभव भी हुआ। इस जेलमें बरग-बजन प्रकारके दो बिनाम हैं। एक बिनाममें सख्त सजा पाये हुए काफिर तथा भारतीय कैदी रहते हैं। दूसरे बिनाममें पचाही बनेबाके और ऐसे कैदी रहते हैं जिन्हें बीबानी जेल मिला होती है। उसमें सख्त सजा पाये हुए कैदियोंको जानेका हक नहीं होता। हम दूसरे बिनाममें सोते थे। लेकिन बिनामके पाखाने आदिका उपयोग हम अधिकारपूर्वक नहीं कर सकते थे। पहले बिनामके पाखानोंमें जानेवाले कैदियोंकी संख्या इतनी ज्यादा होती है कि पाखाना जाना एक बड़ी समस्या हो जाती है। कुछ भारतीयोंको यह कष्ट बहुत लगता है। उनमें एक मैं भी था। मुझे सख्त होने कहा था कि दूसरे बिनामके पाखानोंका उपयोग करनेमें आपत्ति नहीं है। इसलिए मैं नहीं गया। उन पाखानोंमें भी मीड पो होती ही है। इसके सिवा वे खुले रहते हैं। उनमें दरवाजे नहीं होते। मैं वहीं ही बैठे ल्यों ही एक मोटा-ताना मजदूर और बिकरास काफिर आया। उसने मुझे उठ जानेके लिए कहा और पाखाना बने गया। मने कहा कि अभी उठता हूँ। तबतक वो उसने मुझे दोनों हाथोंसे बसोबकर उठा लिया और बाहर फेंक दिया। सीमान्तके मने बिड़कीकी चौकट पकड़ ली जिससे मैं बिरा नहीं। इससे मैं बरामा नहीं। मैं तो बहोते हँसकर बल दिया लेकिन जिन एक-दो भारतीय कैदियोंने यह बटना देखी वे बहुत खुशी हुए और रो पड़े। जेलमें वे कोई मजदूरी कर नहीं सकते थे इसलिए अपनी लाचारीपर उन्हें खेद हुआ। इस प्रकारका कष्ट दूसरे भारतीयोंको भी मानना पड़ा है, यह मने बादमें सुना। इस बटनाकी चर्चा मने गवर्नरसे की और कहा कि भारतीय कैदियोंके लिए एक स्वतन्त्र पाखानेकी आवश्यकता है, और यह भी बताया कि काफिर कैदियोंके साथ भारतीय कैदियोंकी बिस्तुक्त नहीं रखना चाहिए। गवर्नरने तुरन्त हुकम दिया कि बड़ी जेलमें से एक पाखाना भारतीय कैदियोंके लिये खोल दिया जाये और दूसरे दिनसे पाखानेकी तकलीफ दूर हो गई।^१ उपर्युक्त परिस्थितिमें मुझे चार दिन तक साफ पाखाना नहीं हुआ इसलिए मेरी सेहतकी भी नुकसान पहुँचा।

जब मैं जोहानिसबर्गमें था उस बीच मुझे तीन-चार बार अदालतमें जाना पड़ा था। मुझे बड़ा भी पीछक और अपने कड़केले मिस्त्रनेकी अनुमति मिली थी। दूसरे छोट भी कभी कभी मिल जाते थे। अदालतमें मुझे बरकी खुपक मेंबानेकी सूट भी इसलिए दी कैसेनबैक मेरे सिप रैटनी पनीर जाकि बस्तुएँ माते थे।

जब मैं इस जेलमें था उस समय सत्याग्रही कैदियोंकी संख्या बहुत बढ़ गई थी। एक बार तो पचाससे भी ज्यादा हो गई थी। अधिकारको एक परवरपर बैठकर छोटी हवाईसे नारीक कंक्रड़ी फोड़नेका काम सौंपा जाता था। इस-एक अधिकारियोंको क्रे हुए कपड़े सीनेका काम दिया गया था। मुझे सीनेकी मशीनपर टोपियाँ सीनेका काम सौंपा गया था। सीनेकी

मशीन चलानेका काम पहले-पहल मने यहीं सीखा। यह काम मुश्किल नहीं था इसलिए सीखनेमें बिशेष समय नहीं लगा।

अधिकतर भारतीय कैंडी कंकड़ी फोड़नेका काम ही करते थे। इसलिए मने भी उस कामकी सीख ली। लेकिन सन्तरीने कहा कि बड़े दारोगाका उस एसा हुक्म है कि मुझे बाहर न निकाला जाय। इसलिए उसने मुझे कंकड़ी फोड़नेके लिए जानकी अनुमति नहीं दी। एक दिन ऐसा हुआ कि मेरे पास मशीनपर बबबा बिना मशीनके सीनेका काम नहीं था। इसलिए मने पुस्तकें पढ़ना शुरू किया। रिवाज यह है कि हरएक कैंडीको जेसका कुछ-न-कुछ काम करना ही चाहिए। इसलिए सन्तरीने मुझे बुलाकर पूछा जाब क्या तुम बीमार हो?

मने जवाब दिया जी नहीं।

प्र तो तुम कोई काम क्यों नहीं कर रहे हो?

उ मेरे पास जो काम था वह पूरा हो चुका है। मैं कामका ढोंग नहीं करना चाहता। मुझे काम से तो मैं करनेके लिए तयार हूँ। जम्पवा लाली समयमें बैठा-बैठा पढ़ता हूँ तो उसमें क्या आपत्ति है?

प्र यह तो ठीक है लेकिन जिस समय बड़ा दारोगा या गवर्नर आये उस समय तुम स्टोरमें रहो तो अच्छा।

उ मैं ऐसा करनेके लिए तयार नहीं हूँ। मैं गवर्नरसे भी कहनेवाला हूँ कि स्टोरमें काफ़ी काम नहीं है, इसलिए मुझे कंकड़ी फोड़नेके लिए भेजा जाये।

प्र ठक ठीक है। पर मैं अनुमतिके बिना तुम्हें कंकड़ी फोड़नेके लिए नहीं भेज सकता। इस बटमाके कुछ ही देर बाद गवर्नर आया। मने उसके सामने छापि हकीकत रख दी। उसने कंकड़ी फोड़नेके लिए जानेकी अनुमति तो नहीं दी लेकिन यह कहा कि तुम्हें बैठा करनेकी जरूरत नहीं है क्योंकि तुम रुक ही फोक्सरस्ट वापस मने जा रहे हो।

डाक्टरों जॉय — कैडिपोंका जगा किया जाना

फोक्सरस्टकी जेल जोगी थी। इसलिए कुछ सुविचारों की बहुत मिला जाती थी जे जोहानिसबर्गकी बड़ी जेलमें नहीं मिल सकती थीं। जवाहरलालके लिए, फोक्सरस्ट जेलमें भी बाउर मुहम्मदको छिरपर बंमनके लिए घास दिया जाता था और पाजामा तो दूसरे कैदियोंकी भी दिया जाता था। श्री स्वतन्त्री श्री सीराबत्री और श्री प्रायुर्वीकी अपनी-अपनी टोपी पहननकी अनुमति थी। जोहानिसबर्ग जेलमें ऐसा होना मुश्किल था। इसी तरह जोहानिसबर्ग जेलमें जब कैंडी पहली बार शाकिब होते हैं तब डॉक्टर उनको जाँच करता है। इस जाँचका हेतु यह है कि कैदियोंको कोई संक्रामक रोग हो तो उसकी दवा की जाये और उन्हें दूसरे कैदियोंसे अलग रखा जाये। इस कारण कैदियोंकी पूरी जाँच की जाती है। कुछ कैदियोंको उपरोक्त आदि रोग होते हैं इसलिए उनके मुँह बबबर्गकी जाँच की जाती है। मएएब कैदियोंको बिल्कुल मंगा करके उनको जाँच की जाती है। काफ़िरीकी तो समयम पन्द्रह मिनट तक गया पड़ा रखा जाता है, जिससे डॉक्टरका समय बचे। भारतीय कैदियोंको बोड़ी सुविधा है उनमें उनका पाजामा जब डॉक्टर माता है तभी उतरवाया जाता है। बाकी जॉयके कपड़े पहनेने ही उतरवा दिए जाते हैं। समयम सभी भारतीय कैंडी पाजामा उतरवानके इस रिवाजके पिताऊ हैं फिर भी अधिकतर जॉय सत्याग्रहकी लड़ाईका विचार करके जानाफानी नहीं

कहते मघपि मनमें तो बुझी हाते ही हैं। इस सम्बन्धमें मने डॉक्टरसे बात की। उसने कुछ कैंडिडोंकी जाँच उन्हें स्टोरमें से आकर की लेकिन हमेशा बेसा करनेके लिए वह सहमत नहीं हुआ। इस सम्बन्धमें संघने सिद्धा-पट्टी की है।^१ सिद्धा-पट्टी अब भी चल रही है। इस बारेमें सरकारसे लड़ना उचित है। लेकिन यह बहुत पुराना रिवाज है इसलिए उसे एकाएक तो वे नहीं बदलेंगे। तब भी उसके बारेमें विचार किया जाना चाहिए।

पुस्तकें बीच हों फिर, अपने अवयव छिपानेकी जरूरत नहीं है। इसके सिवा दूसरा वादभी हमारे गृह अवयवोंकी ओर देखना ही ऐसा माननेका कोई कारण नहीं है। हमारा मन निर्बोध हो तो प्रकृतिके नियम हुए में अवयव छिपानेकी हमें क्या आवश्यकता है? मैं जानता हूँ कि मेरे में विचार सभी मात्सीयोंको विचित्र मानूम होंगे। फिर भी मुझे जगता है कि इस सम्बन्धमें हमें गहरा विचार करना चाहिए और देखना चाहिए कि सब बात क्या है। इस तरहकी अड़भनें सड़ी करनेसे हमें अन्तमें अपनी छद्माईमें गुरुघात होता है। पहले मात्सीय कैंडिडोंकी जाँच डॉक्टर विरक्तुल नहीं करता था। पर एक बार बो-टींग मात्सीयोंसे उसने कुछ सवाल पूछे जिनके जवाबमें उन्होंने कहा कि उन्हें कोई रोग नहीं है। डॉक्टरको कुछ सन्देह हो गया इसलिए उसने ऐसा जवाब पानेपर भी उन कैंडिडोंकी जाँच की और वे झूठे निकले। तबसे डॉक्टरने मात्सीय कैंडिडोंकी भी पूरी जाँच करनेका निर्णय किया। इससे हम बेश लफ्ते हैं कि जब हमारी राहमें कोई अड़भन आती है तब उसका कारण क्याबात हम खूब ही होते हैं।

जीहाविसर्गसे वापस आया

जैसा कि ऊपर कहा गया है मुझे ४ नवम्बरको फोनघरस्ट वापस ले गये। उस समय भी मेरे साथ एक सन्तरी था। मेरी पोसाक कँदीकी ही थी लेकिन उस बार मुझे पैरब नहीं चढाया गया गाड़ीमें स्टेसन ले जाया गया। असमता टिकट घुसरे दर्जेका नहीं तीघरे दर्जेका था। रास्तेके लिए मुझे माथा पीठ उबल-रोटी और चिम्बेबाजा मोमांघ दिया गया। मांघ सेनेसे मेने इनकार कर दिया और नहीं किया। रास्तेमें सन्तरीने दूसरा धाहार केनेकी अनुमति दी। स्टेसनपर पहुँचा तो वहाँ कुछ मात्सीय दर्जी लड़े थे। उन्होंने मुझे देखा। बात तो ही नहीं सफ़टी थी। मेरी पोसाक आदि देखकर उनमेंसे एक भाई रौने कहा। मुझे पोसाक आदिका कोई कुछ नहीं है इतना कहनेका भी अधिकार नहीं था। इसलिए मैं यह सब बेचता रहा। हम रौनोंको एक अलग डिब्बा दिया गया था। उसके पासके डिब्बेमें एक दर्जी बांधी था। उसने अपने सानेमें से बोका साना मुझे दिया। हाइड्रेजर्जमें भी सोमामाई पटेल निभे। उन्होंने सानेके लिए स्टेसनसे लीटरकर कुछ पीनें मुझे दीं। पिछ बहनसे उन्होंने यह सब कहीया था उसने पहले तो हमारी कड़ाईके प्रति अपनी सहानुभूति दिखानेके लिए मुख्य केनेसे इनकार कर दिया लेकिन बादमें जब भी सोमामाईने बहुत जाग्रह किया तब उसने नामके लिए धिर्क

१ नवम्बर २४ और दिसम्बर १ १९०८ की जिले अपने ही वरुमें निम्नित भारतीय संघने दम्भराक केनेके गर्भरसे लठ वाक्ये विरक्त वापसि अन्त की थी कि कैंडिडोंकी बीघरी बीघके लिए बने-बने भी जगता समर तब सुनेमें गंध उठा जाता है। इन गर्भरानेका जल देते हुए केक-विरेकने लठ वाक्ये अन्त कर दिया कि कैंडिडोंको बीघके लिए अवेक्षित समरसे अवेक शेरतब अन्त लिखिमें उठा जाता है। यह दम्भराक १९-१९-१९ ८के इतिहास अवेपिनिबनमें प्रकटित हुआ था। दम्भराकके अन्तमें भी जगती है १९ ९ की यह लिपनीमें लठ वाक्ये अन्त किया था।

छा पेली सेना स्वीकार किया। श्री सोमानाईने स्टीवर्टनको तार कर दिया था इसलिए वहाँ भी कुछ मात्सोय माई स्टेचनपर भाये ये और खानेकी चीजें लाये वे। इस प्रकार रास्तेमें मैंने और सल्टरीने मरपेट खाना खाया।

फोक्सरस्ट पहुँचा तो स्टेचनपर मुझे श्री नगरी और श्री काजी मिले। वे दोनों रास्तेमें कुछ दूरतक साथ-साथ भाये। उन्हें बोझी दूर रखकर साथ चलनेकी अनुमति सल्टरीने दे दी थी। स्टेचनसे अपना सामान उठाकर मुझे फिर पैदल चलना पड़ा। समाचारपत्रोंमें इस बातकी भी काफ़ी खर्चा हुई थी।

मैं फिर फोक्सरस्ट पहुँच गया इसलिए सब भारतीय बहुत खुश हुए। मुझे श्री राजद मुहम्मदनासी कोठरीमें रखा गया था इसलिए हम रातको बेरतक एक-दूसरेके अनुभवोंकी बातें करते रहे।

भारतीय कैदियोंकी स्थिति

मैं जब फोक्सरस्ट पहुँचा तब भारतीय कैदियोंकी स्थितिमें ठरक आ गया था। ३ की बगल कैदियोंकी संख्या ७५ हो गई थी। जेलमें इतने कीर्तिके रहने सायक प्रगल् नहीं थी। इसलिए आठ-एक तम्बू लगाये गये थे। रवोईके लिए मिटोरियासे खास पूछा जाया था। इसके सिवा जेलके पास जो नदी बहती थी उसमें कड़ी अक्षर नहानेके लिए जा सकते थे। इस तरह वे कीर्तिके बचाव लड़नेमें माकूम होते थे और फेरबाला फेरबाला जैसा नहीं बस्कि सत्याग्रही कैदियोंकी खानगी-जैसा माकूम होता था। फिर सल्टरी अच्छा व्यवहार करें या कुछ इसकी क्या परवाह थी? छत्र ता यह है कि अधिकतर सल्टरी सब मिठाकर अच्छे ही थे। श्री राजद मुहम्मदने हरएक सल्टरीका कोई-न-कोई नाम रख दिया था। एकका नाम उन्होंने 'ठरकी' रखा था दूसरेका मजूटी। इस तरह अजन-अजन नाम रखे थे।

मुलाकातों

फोक्सरस्ट जेलमें मुलाकातके लिए भारतीय काफ़ी संख्यामें जाते थे। श्री काजी तो हमेशा जाते ही रहते थे। कैदियोंकी बाहरकी व्यवस्था से भी लगाकर करते थे और मुलाकातके लिए जितने मौके मिलते सबका काम उठाते थे। श्री पौलक कायबस अग्रमय हर सप्ताह जाते थे। नंदाससे श्री मुहम्मद इबाहीम तथा श्री सरखानी कायेसके मेम साइनके बन्देकी बसुलीके थिअरिसेमें खास ठौरसे भाये थे। इसके दिन तो नंदासके लगभग ही भारतीय सेठ आकर मिल गये थे। उस दिन तारोंकी तो मात्रा खर्चा ही हो गई थी।

विविध विचार

जेलमें साप्ताहिक बहुत छकाई रखी जाती है। ऐसा न हो तो बीमारीके फूट निकलनेमें देर न लगे। पर कुछ बातोंमें यत्नी भी रहती है। एक-दूसरेका मोड़नका कम्बल हमेशा बरत जाता है। चाहे जैसे मैके-कुपेसे काफिरका मोड़ा हुआ कम्बल कमी-कमी किसी भारतीय कैदीके हिलियेमें भी आ सकता है। उसमें अक्षर जुड़े पड़ गई होती है। उसमें से बचपू जाती है। नियम तो यह है कि प्रतिदिन उधे रूपमें जाने घंटे सुगनेके लिए डालना चाहिए। लेकिन ऐसा धायद ही होता है। जिसे छकाई की आरत हो ऐसे व्यक्तिके लिए कम्बलकी यह अनुविधा कोई छोटी चीज नहीं है।

ऐसा ही बहुत बार पहलनेके कपडोंके बारेमें भी होता है। जो कपड़े एक कंबीने पहने हों वे उस कंबीके छूटनेपर हमेशा बोये नहीं जाते। उन्हें बिना बोये ही बूझते कंबियोंको पहलनेके लिए वे दिया जाता है। यह बहुत परेशान करनेवाली बात है।

कंबियोंको जगहकी कमीका विचार न करते हुए बहुत भारी संख्यामें भर दिया जाता है। जोड़ानिसर्वांगकी खेसमें केवल २ कंबियोंकी जगह भी नहीं खननय ४० कंबी रख जाते थे। इसलिये एक कोठरीमें कानूनके अनुसार बितने कंबी रखने चाहिए, कई बार उससे बूने कंबी रखे जाते हैं और कमी-कमी उनके लिए पूरे कमरा भी नहीं मिलते। यह तकलीफ मामूली नहीं है। लेकिन कुख्यातका कानून है कि मनुष्य अपने किसी विशेष बोधके बिना जिस स्थितिमें था पढ़ता है उससे अनुकूल सीमा ही बन जाता है। भारतीय कंबियोंका भी ऐसा ही हुआ। अगर बतायाई हुई बटकनेवाली कठिनाइयोंमें भी भारतीय कंबी मजेमें रहे। यी बातब मुहम्मद न सिर्फ स्वयं घारे दिन हँसते रहते थे बल्कि अपने हास्य-विगीतसे सब भारतीय कंबियोंकी भी हँसाते रहते थे।

जेलकी एक दुःखद घटनाका जस्सेब करता हूँ। एक बार कुछ भारतीय कंबी एक जयह बैठे थे। इतनेमें एक काफिर सल्टी बह्राँ जाया। जसने कुछ बात काटने जानेके लिए बी भारतीयोंकी नाम की। जब कुछ देर तक कोई न बोला तब भी इमाम बख़ूब काफिर तबार हो गये। ऐसा होनेपर भी कोई उनके साथ जानेको न ठठा। सबके-सब शारोनासे कहते लये कि वे हमारे इमाम हैं उनको न से जाओ। ऐसा कहनेसे बुरही मूछाई हुई। एक ठो इएककी बात काटने जानेके लिए तैयार होना चाहिए था वह नहीं किया। और जब कमीका नाम रखनेके लिए इमाम साहब तैयार हुए, तब उनका पर प्रकट कर दिया। वे बात काटनेके लिए तैयार हुए, तब भी कोई बूझता तैयार नहीं हुआ ऐसा करके हमने अपनी निर्दयताका ही परिचय दिया।

(कमरा)

[मुबराकीसे]

इंडियन ओपिनियन, २१-१-१९९

१०३ पत्र सेमवारके नाम'

जोड़ानिसर्वांग

जनवरी २१ १९९

सज्जनों

मैंने जोड़ानिसर्वांगके व्यापारी श्री डू काउन्सिल्याके सेमवारके बैठकका विवरण' पढ़ा है। मैं बता दूँ कि मेरी हासल बहुत-कुछ भी काउन्सिल्याके-सी है। सरकारने जो कारवाई की है और जिसका हवाला भी काउन्सिल्या दिया है उसके कारण मेरा नाम धतरेमें पड़ गया

१. धतर भी काउन्सिल्या बनकी तरह है वह अस्तित्वके लक्षण धतरविश भी संघीयने ही तैयार किया था। २. वह अस्तित्वके लक्षण अस्तित्वके लक्षण धतरविश भी संघीयने ही तैयार किया था। ३. वह अस्तित्वके लक्षण अस्तित्वके लक्षण धतरविश भी संघीयने ही तैयार किया था।

३. देखिए - काउन्सिल्याके सेमवारके बैठकमें २१वीं २५८।

है। परबाना सेना मेरे लिए मुमकिन नहीं। अब सवाच यह है कि मेरे पास जो माछ है उसका मैं क्या करूँ? मेरी सेनदारी सम्भवा २, ०० पाँडरी है और मालियत ४ ००० पाँडरी। श्री काछलियाकः सेनदारोंने अपनी बैठकमें जो फसला किया है और श्री काछलियाके-जैसे मामलोंमें यूरोपीय ब्यापारियोंकी सम्मिलित रूपसे की गई कार्रवाईकी जो सबर मिली है उसको देखते हुए मैं जानें सेनदारोंकी बैठक नहीं बुला रहा हूँ बल्कि आपको सिर्फ अपनी स्थितिके बारेमें सूचना देता हूँ। अगर आप चाहें तो मुझे बैठक बुलानेमें या आपकी बुलाई बैठकमें शरीक होकर भगत सेनदारंति सामने अपनी स्थिति रखनेमें सुधी होगी। आप इस सम्बन्धमें और जो भी जानकारी सेना चाहें वह रिपिक व ऐंजर्सन स्ट्रीटके मुकदमपर स्थित २१-२४ कोर्त् बैम्बतमें ब्रिटिश भारतीय संघके कार्यालयके संपत्ते हैं और अगर आप इसी पतेपर पत्र-व्यवहार करें तो मैं आपका जामार मानूँगा।

ई० एम० अस्वात

[अंग्रेजीसे]

ईडिपल मोपिनियत १०-१-१९१९

१०४ पत्र अक्षारोंको'

जोहानिसबाग

जनवरी २३ १९०९

[महोदय]

श्री अ नू काछलियाने भारतस्वातका जो बहुत बड़ा कदम उठाया है उसके लिए मैं भारतीय संघके एक समयके मन्त्री और एक ब्यापारीकी हैसियतसे उन्हें बधाई देता हूँ। मेरे ज्ञानसे वे ब्रिटिश भारतीय समाजके और पास ठीरसे ब्रिटिश भारतीय ब्यापारियोंके अधिकतम सम्बन्धके पात्र हैं क्योंकि उन्होंने उनको रास्ता दिखाया है। श्री काछलियाके कार्यपर जानी पसन्दगी जाहिर करना सबसे अच्छा तरीका मुझे यही लगता है कि मैं उनका पोछे चरूँ। इसलिये मैंने अपने सेनदारंसि लिखा-पत्रों शुरू की है।

मैं देखता हूँ कि श्री काछलियाके इस कदमके नीतिमुक्त होनेके बारेमें सका प्रकट की गई है और उसका यह अर्थ लगाया गया है कि ब्रिटिश भारतीय ब्यापारी यूरोपीय शोक पैडियोंपर दबाव डालना चाहते हैं। उनका यह कदम नीतिमुक्त है या अनितिमुक्त—यह तो बहुत-कुछ अपने-अपनी रायकी बात है। मेरे अर्थकी शिखाके अनुसार अगर कोई ब्यापारी अपने सेनदारोंका पूरा कामा बुकानेको ब्यावासे-ज्यादा कोशिस करता है और अपने मामलपर जा सकनेवाले सतरेके बारेमें उनको जामाह पी कर देता है तो उसका यह काम ठीरसे

१ अनुमान है कि इस पत्रका मसुदा पांडीको देना किया था और जो है उस जगहके दस्तावेजसे लेना पता था।

२. जोहानिसबाग भारत-संघ (जोहानिसबाग बैम्बत कोर्त् कोर्ट) की कार्य-समितिके जनवरी १९ के मसलसे।

३. देखिए "पत्र: रैड डेकी मेक की" पृष्ठ १५९-६।

सायक माता जाता है। इसे उसका समाज जिससे उसका माता है बहुत पसन्द करता है। वहीतक बरबानकी बात है मुझे विश्वास है कि जिन्होंने इस शब्दका प्रयोग किया है उन्होंने ऐसा अस्पृश्यामीमें किया है। यह बिल्कुल छात्र है कि अगर ब्रिटिश भारतीय व्यापारी व्यापारिक परवाने (लाइसेंस) नहीं लेते तो परवानोंके बिना व्यापार करनेके पूर्वमें उनपर मुकदमे चलाया जाता बहुत उचित होया। सरकार मानती है कि उसका पक्ष ठीक है। इसलिये उसे परवाना-बान्धनकी अड़भेकना करनेवाके व्यापारियोंके साथ हर तरहकी कड़ाई करनेका पूरा अधिकार है। तब वह भारतीय सेनदार क्या करे जिसके पास बहुत-सा माछ मौजूद है और जिसे अपनी अन्तरात्माका खयाल रहना है? उसके पास इतना मकर क्या तो है नहीं कि वह उसके अपने सभी सेनदारोंका पालना भुका दे। वह अपने सेनदारोंका खयाल किये बिना और उनको अनुमति दिये बिना अपना माछ नोलास भी नहीं कर सकता। वह यह भी देखता है कि उसके पास बितनी माछियत है वह उसके सेनदारोंका पालना भुकानेके लिए काफ़ी है। राजनीतिक कारणोंको छोड़ दें तो ऊपर बताई गई स्थितिमें मेरे खयालमें एक सेनदारके लिए इसके बलाका दूसरा कोई सम्मानजनक मार्ग नहीं हो सकता कि वह अपने सेनदारोंको अपनी सारी हाकल बचा दे अपने-आपको उनके हाथोंमें सीप दे और कह दे कि वह उनके कहनेके मूलाधिक ऐसा हर काम करनेके लिए तैयार है जिसे वे अपने जानकी दृष्टिसे वाञ्छनीय समझें। वह सिर्फ अपनी अन्तरात्माके विपरीत न बामेया। मेरे इस कामका एक राजनीतिक अर्थ जगाया जायेगा परन्तु वह अनिर्धार्य है। इसका सीधा साधा कारण यह है कि वह काम सरकार द्वारा पेशा को गई स्थितिपर आधारित है। परन्तु मैं अपनी ओरसे जनताको विश्वास दिला सकता हूँ कि वहीतक इस कामके राजनीतिक पहलूका सम्बन्ध है मने इस यूरोपीय बोज़ पेड़िका क्या कारंबाई कर सकती है उसका खयाल किये बिना उठाना है। मैं इतना ही चाहता हूँ कि मेरे सेनदारोंका बचान हो जाये और मुझे और मेरे देखवाचियोंको अपनी इच्छाके सामने भुकानेके लिए सरकारकी मुहसे बाधिक सहायता देनेकी शक है—जिसे मैं अत्यापपूर्वक अनीतिमुक्त और अनुचित मानता हूँ—भी बेकाम हो जाये।

[अधेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ३ -१-१९९

१०५ भेंट : 'रैंड डेली मेल' के प्रतिनिधिकों^१

[बौद्धानिचवंग
जनवरी २५, १९९१]

उनका [बी पापीका] कहना है कि उन्हें उपनिवेशियोंकी व्याप-आवनापर पर्याप्त परोसा है और उनका विश्वास है कि ज्यों ही उपनिवेशियोंको सब तत्त्व पूरी तरह बात ही बायेंसे के एसियाइयोंको "उनके अधिकार" दे देंगे।

उन्होंने एक बातचीतमें कहा कि भारतीय कारिदोंके साथ यूरोपीयोंकी अपेक्षा अधिक अच्छा और मित्रताका बरताव करते हैं; बहुत-बहुत इसी बजहसे उन्हें इनका व्यापार मिला है। उन्होंने इस बातको पक्का बताया कि भारतीय यूरोपीय बूकानबारांसि माल सस्ता बेचते हैं लेकिन यह स्वीकार किया कि वे अपने कर्मचारियोंको यूरोपीय बूकानबारांसि की अपेक्षा कम वेतन देते हैं।

सोम को यह शोष देते हैं कि भारतीयोंने सेबीस्मिथ और पॉक्सट्रमको यूरोपीय व्यापारियोंके सिद्ध व्यापारके अयोग्य बना दिया है इसका उत्तर देते हुए बी पापीने कहा कि वेचस्मकी तरह सेबीस्मिथका बहुत-बहुत कारोबार मिरमिडिया भारतीयोंसे चलता है। इससिद्ध बड़ा भारतीयोंकी बूकानोंका कुलना स्वाभाविक ही है।

उन्होंने कहा कि यदि यूरोपीय व्यापारियोंने ऐसा कड़ा और अड़ियल बह अस्तियार किया जैसा कहा गया है कि वे अधिकार करेंगे और यदि उन्होंने भारतीयोंको इससे निकलवाने के बजायके उनकी जायदादोंकी बस्तियोंकी अर्बा ही तो हरएक भारतीय सौदकर भारत चका जायेगा और अनाकामक प्रतिरोधी बन जायेगा।

अन्तमें उन्होंने कहा : मैं स्वयं भारत सरकारके सिद्ध सरकार बननेका प्रयत्न करूँगा। और जबतक अनुष्ठान हुआ जबतक बहिष आधिकारमें एसियाई व्यापारियोंको उनके अधिकार नहीं मिल जाते या जबतक यह नोपिठ नहीं कर दिया जाता कि बहिष आधिका सब ब्रिटिश उपनिवेश नहीं है।

[अयेजीमे]

इंडियन ओपिनियन, ३०-१-१९९१

१ मसुदा मेरका दिवस १९-१-१९९१ के रैंड डेली मेलमें एक बरतानके साथ प्रकाशित हुआ था कि ४ मसुदा भारतीय व्यापारियोंके अन्तर्गत कम दरके एककमें बी बरतानके बरतानका बहुतकर बरतान विरुद्ध किया है; देखिए "१४ : बरतानके केनरोंको" पृष्ठ १५३-५७। रिपोर्टमें यह भी उल्लिखित किया गया था कि अन्तर्गत और बरतानके अन्तर्गत हरिद्वारके अन्तर्गत विचार दरके सिद्ध कुछ अन्तर्गत होनेके हैं। "एक शीघ्र, बी पापी अन्तर्गतके अन्तर्गत अन्तर्गत दे रहे हैं और अन्तर्गतके अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत दिखाने परता है।"

१०६ पत्र सर चार्ल्स ब्रूसको

[बोहानिसवर्ष]

जमशरी २७ १९ ९

प्रिय महोदय

आप द्वारा वाचने विटिष भारतीयोंके सामनेको ब्यावहार जो बकासत करते रहे हैं उधके किए में विटिष भारतीय संघ (विटिष इंडियन असोसिएशन) की ओरसे आपको नम्रतापूर्वक सम्यबाद देता हूँ। साम्राज्यके विविष्ट घरखोंकी सहायानुमृतिसे मेरे संघ-निरत देशवासीयोंकी बहुत प्रोत्साहन मिळता है और वह सहायानुमृति उध सजाईके लिए, जो कमी-कमी अल्पत प्रवृत्त होती है, उधें बल देती है। हम सब यह अनुभव करते हैं कि हम केवल अपने उद्देश्यके लिए नहीं बड़ रहे हैं बल्कि साम्राज्यकी नेकनामीके लिए भी लड़ रहे हैं।

आपका बारी

अ० मु० काछरिया

अध्यक्ष

विटिष भारतीय संघ

सर चार्ल्स ब्रूस की सी एम की
अज्ञात

[बंदेजीसे]

इंडियन ओपिनियन, १-२-१९ ९

१ (१८३१-१९१) ४; बोरिउसके फार्बर्ट, १८९०-१९ ४; साम्राज्य और साम्राज्यीय नीति-विचारक केनेड
उत्तरके केबल; १९ ८ में ब्रुसावर रिन्डू में ऊने केनेडके भाषणके दृष्टान्तको विटिष भारतीयोंकी अज्ञात
एक पुस्तिका प्रकाशित की; नन्तर एक समालोचक बहारातीमें भी लिखा करते थे। ४ नवम्बर, १९ ८के
सर्बिया पीसके एक वन मेकवर ऊपरी इस दलीलको कलत करता। कि भारतीय निवेशियोंकी १८९८ की
बोधनाको कर्तव्ये ग्युल्लडी सीमानसे बहारके विटिष भारतीयोंके अधिकार थीं करते। ऊनेमें बोधना की
अरबी भाषाके समर्थनमें ऊनेसे सेलीबेके १८९० में दिने गने अज्ञात इत्यादि को हुए करा कि कलत बोधनामें
हमें कि "कलेक्टोरा बरिस" सीमा गया है ऊने मरुके बहार रहनेवाले भारतीयोंकी अधिक राज्या
"साम्राज्यके अधिकारको सीमा बाम्युद करता है।"

१०७. पद्म सौंड कर्जनको

[बोडानिचवर्ग]
बतवरी २७ १९९१

सेवामें

परममागनीय सौंड कर्जन

बोडानिचवर्ग

महानुभाव

मैं आपके इसी २६ तारीखके उस पत्रकी पूर्ण सादर स्वीकार करता हूँ जो मेरे संघके कारके बराबरमें भेजा गया है। वारमें आपसे प्रार्थना की गई थी कि सरकार और जिस समाजका मेरा संघ प्रतिनिधित्व करता है उसके बीच इस समय पुर्नान्वयसे जो संघर्ष चल रहा है उसके सम्बन्धमें आप एक विद्वत्पत्रके मित्रता मंजूर करें।

द्वाराबाबबाबो ब्रिटिश भारतीयोंके मामलेमें इतनी विद्वत्स्वी केनेके लिए मेरा संघ महानुभावका बहुत महत्त्वमान्य है। संघकी पुस्तक है कि आप यहाँ बहुत कम ठहरेंगे इस पत्रके उलझे आपके प्रति सम्मान प्रकट करनेके लिए आपकी सेवामें विद्वत्पत्रके भेजनेका मौका न मिल सकेगा।

मैं जब इस पत्रके साथ इस वक्त बीबी हाउस है उसका बहुत संक्षिप्त विवरण सर चार्ल्स ब्रूस द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका जिसमें स्थितिका काफी बख्शा सार दे दिया गया है और महामहिमको सरकारको उपनिवेश-मन्त्रीकी मार्फत दी गई जर्नी [की मकस] भेज रहा हूँ।

द्वाराबाबबमें इस साध मामलेमें संघकी सहायता करनेके लिए प्रभावशाली यूरोपीयोंकी एक समिति बना दी गई है इसलिये मैंने महानुभावका पत्र उस समितिके अध्यक्ष की हस्तलिखितोंके दिखा दिया है। मुझे मासूम हुआ है कि मैं भी आपकी एक पत्र लिख रहे हूँ।

जब महानुभाव और जमावा जानकारी चाहें तो मेरा संघ खुशीसे भेजेगा।

१ (१८९९-१९९५) भारतके वास्तव्य और जर्नल काल १८९९-१९०५; विदेशके विदेश-मन्त्री १९९९-१९९५

२. सौंड कर्जनके विषय में "मैं बोडानिचवर्गमें जमी जाता हूँ और मैं वहाँ बहुत कम बस हूँ। मैं वहीं एक ठोस मिल काल खोजूँ पूरा पुस्तक सार बरिण और दुबाराकी काल कम बरिण। स्थिति मेरा खयाल है कि मैं विद्वत्पत्रके नहीं मिल सकेगा। लेकिन अगर आपका पूरा पुस्तककी काम वह अपने मामलेका परछा पूरा विवरण देकर दे देना तो मैं राखीमें जमावा बरिण।"

३. वह बरिण नहीं है।

४. वह प्रत्य नहीं है ससे परके वरिणकी वर-विणकी भी देवें।

५. विषय "परममागनीय: उपनिवेश-मन्त्रीको" वर १०-२८।

६. जर्नल यूरोपीय समितिके प्रभावकी वरिणके ६ जनवरीकी कालके उलझेकी पत्र पत्र लिखा था, जिसकी वर मकस ५०० बरिण विषय उपनिवेश-मन्त्रीकी भी मेरा बी बी। विषय वरिण ११।

महानुभावकी इच्छाके अनुसार महानुभाव जीर संकेत बीषका सारा पत्र-व्यवहार सूत रखा जायेगा।

मैं इस पत्रको इस भाषाके साथ समाप्त करता हूँ कि महानुभावके हस्तलेखसे इस संबंधका सुखद अन्त होगा।

महानुभावका भावाभावाती पैरक,

[संलग्न काम]

भारतीय स्थितिका विवरण

परम मामनोय लार्ड कउनकी सेवामें मेजनेके लिए

भारतीयोंकी भाँति

ग्योरेकी बातके बजाया स्वामीय सरकार और ब्रिटिश भारतीयोंके बीच नीचे लिखे दो बातें सनाए हैं।

१ १९७ के एशियाई कानून २ का एव किया जाना।

२ पड़े-लिखे भारतीयोंका रमी।

भाँतोंके बारेमें इच्छा

पहले सनासके बारेमें भारतीयोंकी इच्छा यह है कि जनरल स्मट्सने एशियाई कानूनको एव करनेका वादा किया था। यह वादा सिद्धा नहीं गया लेकिन जनवरी १९८ का समझौता होनेके तीन दिन बाद जनरल स्मट्सने अपने रिचमंडके भाषणमें^१ जिसका उद्धरण कमी नहीं किया गया है यह कहा था मैंने उनसे यह कहा है कि जबतक बेधमें एक भी एसा एशियाई है जिसने पंजीयन न कराया हो तबतक यह कानून एव न किया जायेगा और फिर यह कहा कि जबतक बेधमें हरएक भारतीय पंजीयन न करा के तबतक कानून एव न किया जायेगा।

लेकिन इस बारेके बकाबा उपर्युक्त कानून अभ्यावहारिक बताया गया है। सर्वोच्च न्यायालयके नतीजे हाइकोर्टके फैसलोंसे इस रायका समर्थन होता है और १९८ के कानूनसे जो उक्त वादेको बोझ-बहुत पूरा करनेके लिए पास किया गया था १९७ का एशियाई कानून २ परिणाम-रूपमें निष्प्रभाव हो गया।

अब इस बारेमें कोई शक नहीं किया जा सकता कि भारतीय पही समझते थे कि स्वैच्छया पंजीयन (वॉलंटरी रेजिस्ट्रेशन) करके लेनेकी शर्तपर कानूनको एव करनेका वादा किया गया। ब्रिटिश भारतीयोंने इस विश्वासके साथ ही स्वैच्छया पंजीयन कराया था। प्रमुख भारतीयोंने भारतीयोंके सम्बन्ध रखनेवाले समझौतेके हिस्सेको पूरा करनेकी उत्सुकतामें अपनेतरई बहुत बहादुर उठाकर बैठा किया क्योंकि अपनी मर्जीसे औपचारिकता का पालन ही बहुत-से भारतीयोंने भारतीयोंके बाहर को को। उनके मन्त्रीपर पंजीयन कायदाके अन्तर्गत जाते समय पाषाणिक हमला किया गया था और उसके बाद उनके उत्कामीय सम्बन्धपर उसी बहादुरी हमला किया गया था।

१. देखिए कानून ८ पृष्ठ ४२-४४।

२. देखिए कानून ८, परिशिष्ट ८।

निर्णय अंतर्गतियोंकी छाप देनकी बात कभी मूल आपत्ति नहीं बनाई गई। आपत्ति कानूनकी माननापर की गई थी क्योंकि कानून इस झूठे आरोपपर आधारित था कि अनधिकारी ब्रिटिश सरकारों ने बड़े पैमानपर संघटित रूपसे द्राग्धबाणों का रहे हैं।

पढ़ें छिन्ने भारतीयोंके दर्जेके बारेमें हमारी आपत्ति यह है कि जगरल स्मट्स द्राग्धबाणोंके प्रवाहो प्रतिबन्धक अधिनियम (इन्डिपेंडेंट रिस्ट्रिक्शन ऐक्ट)की व्याख्या ऐसी करते हैं जिससे अपेक्षित शिक्षा-प्राप्त ब्रिटिश भारतीय निपिष्ठ प्रवासी ही जाते हैं और उनपर वह नियम १९ ७ के एचियाई कानूनसे लगाया गया है।

ब्रिटिश भारतीयोंका कहना यह है कि ऐसा नियम जातीयताकी नींवपर आधारित होनेसे साम्राज्यीय नीतिके खिलाफ जाता है जब प्रवाहो-प्रतिबन्धक अधिनियमपर मंजूरी दी गई तो उस साम्राज्यीय नीतिके खिलाफ जानेका कोई इरादा नहीं था और किसी भी हाकतमें ब्रिटिश भारतीय मानते हैं कि वे ऐसी जातीय नियोग्यताकी मंजूर नहीं कर सकते जिससे यी वेम्बरसेनके^१ घरोंमें महामहिम सम्राट्के करोड़ों प्रजाजनोका अपमान होता है।

ब्रिटिश भारतीयोंका कहना है कि शिक्षा-सम्बन्धी योग्यता-प्राप्त भारतीयोंको कानूनमें समान अधिकार दिया जावे। उसके बाद अगर कानूनपर इस तरह अमल किया जाये कि शिक्षा-प्राप्ता वेतपर उंची शिक्षा पाने हुए छ से ज्यादा भारतीयों [एक वर्षके अन्दर] उपनिवेशमें न आ सकें तो उनको इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी। कानूनके अमलमें ऐसी असमानता इस समय केर नेताक और आस्ट्रेलियामें मिलती है। ब्रिटिश भारतीय इस पूर्वग्रहको मंजूर करके इसके आगे झुक गये हैं लेकिन उनका कहना है कि प्रवासके मामलमें जातीय भेदभाव बाधित करना असह्य होना।

अवाक्यमक परिचय

इस उद्देशको पूरा करनेके लिए ब्रिटिश भारतीयोंने प्राथेनापनों और चिन्तनमण्डलोंके द्वारा अपना पूरा और लया दिया है। उन्होंने अपनी एक धार्मिक समामें यह मन्त्री प्रतिज्ञा की थी कि वे १९ ७ के एचियाई कानूनके आगे न झुकेंगे और १९ ८ के कानूनके काम जबतक न उठावेंगे जबतक अगर बतारी गई चिकावत दूर नहीं की जावी। इसलिए बहुत-से भारतीयोंने इस प्रतिज्ञाके मुताबिक तैय भोयी है। यह संभव अबतक दो धाससे ज्यादा अर्धतक बल चुका है और २, से ज्यादा भारतीयोंकी उबा भुगत चुके हैं। इनमें से ज्यादातरकी उबा उलट थी। चौकड़ों लोप बेशेसे निकाले गये हैं और वे उची तक लौट आये हैं। बहुत-से परिवार माली वीरर बर्बाद हो चुके हैं। बहुत-से भारतीय व्यापारियोंने मारी नुकसान उठावा है। कुछने तो अपना कारोबार भी बन्द कर दिया है। संघके अध्यक्षने अपनी माछमलाका कम्पा [अने केनहारोंको] देना मंजूर किया है,^१ ताकि सरकार उसे बिना परवाने व्यापार करनेके शुर्में किये गये शर्तोंकी बसुलीमें जल न कर से। कई भारतीय व्यापारी उनके उबाहलका अनुसरण करनेके लिए तैयार हैं। बेचक कुछ भारतीयोंने अपनी कमबोटीकी बजहसे एचियाई कानूनको मंजूर कर लिया है और अभी कुछ औरोंके भी हार मान लेनेकी सम्भावना है।

१. बोर्ड केनारके, (१८११-१९१४); इन्डिपेंडन्सी १८९५-१९ १।

२. एचियर कानून ७, क्लक ८-२ ।

३. एचियर "१५: केनारोंकी" पृष्ठ १५९-५०

लेकिन बहुत सावधानीसे जांच करनेपर [कहा या सफटा है कि] विद्विष भारतीय संघकी पूरी कार्यकारिणी एक रहकर, सत्याग्रहपर तबतक काममें रहेगी जबतक म्याम नहीं किया जाता।^१

द्वारा की हुई बरतटी बंदेगी प्रतिकी फोटो-नकल (एच० एम ४९१९-१७) से।

१०८ पत्र : हरिलाल गांधीको

बुधवार [जनवरी २७ १९१९]

वि हरिलाल

तुम्हारा पत्र मिला। देखता हूँ कि तुम डुची हो। तुम्हें बियोगसे^२ मुक्त मिलेगा या नहीं इस सम्बन्धमें मुझे तुम्हारा मत स्वीकार करना ही चाहिए। फिर भी मैं इतना ठीक देख ही सकता हूँ कि तुम्हें अपने अंततक जेल भोगनी पड़ेगी। इस विषयमें तुम्हारा विचार जानना चाहता हूँ। साफ-साफ किज भेजो। जान पड़ता है कड़ाई समी मिलेगी। इसके अन्त खत्म होनेके भी कुछ आसार दिखाई पड़ते हैं। सम्भव है सॉर्ट कर्रन हस्तक्षेप करें। तुम्हारी वैयक्तिकीमें संबंधी बात नया हस्तक्षेप करना चाहिए, यह भी लिखना। विशेष समय मिलनेपर लिखूंगा।

तुमने "पाई देकर पत्थर फेंके" की जो बात कही है, वह मैं समझ नहीं सका। वह तुमने किस सिक्किमें लिखी है?

बाबर तुम्हारे ५ तारीखके पत्रके यहाँ जानेकी जरूरत न होनी।

मोहनदासके आधीर्षाद

[पुनरा] मामलत का पाठ हुआ या नहीं?

बाबीबीके स्टावरोंमें मुक्त बुधवारकी प्रतिकी फोटो-नकल (एच एम १५२१) से।

१. सॉर्ट कर्रनके ५ जनवरी १९१९ को ज्ञान देते हुए लिखा था कि अन्तक बीना और लखनौ को बरतटी हूँ जसमें मुझे विद्विष भारतीय संघके अन्तक और अन्तक मजाल करेका विचार मिलना पड़ा है। मुझे ज्ञाना है कि इस मामलतक बजने एक बने लखनौ जसमें सत्याग्र-संघके और उन संघके बीच लिख-की होनी। देखिए परिशिष्ट १२।

२. तारीखका विषय सॉर्ट कर्रनके सम्बन्धित हस्तक्षेपके अन्तकके आधारपर किया गया है; देखिए "पत्र : सॉर्ट कर्रनकी" पृष्ठ १०१-१०२। सॉर्ट कर्रनके अन्तक और बीनके हाल जसमें बरतटीके परिष्कारके बाबीबीको बजने २ जनवरीके एक द्वारा बरतटी करता था।

३. देखिए "पत्र : लीनटी संबंधी बाबीबीको," पृष्ठ १५१-५२।

गुरुवार [जनवरी २८ १९१९]

वि संकल,

बहुत दिन बाद तुम्हारा पत्र मिला। मैं ईशता हूँ तुम्हारा मन व्यथित है। इससे मुझे दुःख होता है। फिर भी तुम्हारी आन्तरिक भावनाओंका ही हमेंसा जानना चाहता हूँ। मैं तुम्हें हूँमा इस सबाबसे तुम्हें अपनी भावनाएँ कभी छुपानी न चाहिए।

तुम पीहरके बाहर हो मर मानती हो सो ठीक नहीं है। मैं तुम्हें बह नहीं पुत्री ही समझता हूँ। यदि बह समझता तो तुम्हें बन्धी मानता। पुत्री समझता हूँ इसलिए तुम्हें बन्धी मानना नहीं चाहता। तुम्हारे लिए मेरे मनमें कितना स्नेह है यह तुम नहीं समझ सकी। नहीं समझ सकती यह मैं समझता हूँ। मैं जैसे भविष्यवाणी बाबूक मानता नहीं चाहता वैसा ही तुम्हें अपने बारेमें भी समझना चाहिए। यदि मैंने तुमसे दबनुर-बहुका सम्बन्ध रखा होता बर्बाद मरि अन्तर रखा होता तो मैं अपने स्वभावके अनुसार पहल तो तुम्हारे मनको पीठनेका प्रयत्न करता और जब तुम्हारे मनमें अनेद-बुद्धि पैदा होती तभी मैं तुमसे लुबकर काम लेता। किन्तु मैंने मात किया था कि जब तुम्हारा सम्बन्ध हरिछात्रके साम हुआ उससे पहलेसे मैंने तुम्हें लड़की समझकर बीबमें लिखामा है, इसलिए तुम दबनुर-बहुका सम्बन्ध भूख पाओगी। उस तुमने नहीं भुकाया। जब प्रयत्न करता।

मैं ऐसा बयान कर ही नहीं सकता जिससे तुम्हारा अकस्मात ही मरना तुम्हें कोई कष्ट हो। भारतमें विधोयकी अवस्थामें कस्याव माननेवाली रिजमा बहुत हुई है। दमपती नाम विपुल होकर अमर हो गई। तारापती हरिचन्द्रसे अलग हुई तो उससे दोनोंका कस्याव हुआ। श्रीपरीका विधोय पाण्डवोंको सुखर हुआ और श्रीपरीकी बुढ़नाकी धरहला तो समस्त दिव्य जाति कपटी है। तुम्हें यह न समझना चाहिए कि मैं पटनाएँ हुई ही नहीं। बुढ़वेव परतीका रमानकर अमर हो गये और उनकी पत्नी भी अमर हुई। ये उदाहरण औरक — आर्यायिक — हैं। इनमें मैं तुम्हें इतना ही बताना चाहता हूँ कि तुम्हारे विधोयसे तुम्हारा अकस्मात न होमा। विधोयसे तुम्हारे चित्तको दुःख होता है यह स्वाभाविक है। यह प्रेमका लक्षण है। परन्तु उससे तुम्हारा अकस्मात ही होमा ऐसी बात नहीं है। कस्याव मा अकस्मात विधोयके हेतुपर निर्भर होता है। बाका और मेरा विधोय सबसम भविष्य या अर्बाद् उसे मैंने नहीं बुना था फिर भी यह हम दोनोंके लिए कस्यावकर सिद्ध हुआ। यह उदाहरण देकर मैं तुम्हारे मनमें यह जमाना नहीं चाहता कि तुम्हें विधोय सदा चहता है। लड़किके रितीका विधोय तुम्हें कष्ट न दे इन कारण मैं यह लिख रहा हूँ। लड़कई नरम होनेके बाद मैं तुम्हारे विधोयका कारण कम ही हूँमा। फिर भी यह तुम्हारे मनको बृति बरननेका प्रयत्न है। जब तुम समझ लोपी और तुम्हें इसकी आशय पड़ जायेगी तो यह बात भी ही जायगी।

१. यह पत्र दिनांक २०-१-१९१९ को हरिछात्र गांधीसे प्राप्त किन्तु वन्दे भारतका किताब नाम करता है। जब पत्रमें गांधीजीके लक्ष्मण जी हरिछात्र गांधीसे संकलनेके लक्षण एतद्विषयी बात लिखी थी।

२. संकलनेक किताबी हरिछात्र बीरत और गांधीजीमें लिखित किताब थी।

इस पत्रको सम्हालकर रखना। इसे बार-बार पढ़ना। जो बात समझमें न आवे वह मुझसे पूछना। तुम बोलो ही इसे पढ़ना। इसे सिखनेका हेतु तुम्हारा कर्मणा है जिसके लिए मैं बराबर तत्पर हूँ। किन्तु मेरे विचारोंको तुम्हें मानना ही चाहिए, यह बाइबल नहीं है। मेरी इच्छा यह है कि तुम बोलो अपने स्वतन्त्र बलसे बड़ो।

मोहनदासके आशीर्वाद

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूळ गुणवत्ता प्रतिकी फोटो-नकल (एच एन १५२७) से।

११० पत्र मंगलसाल गांधीको

[फीमसस्ट]

जमशेरी २९ १९ ९

वि मंगलसाल

तुम्हारा पत्र मिला। तुम मुझे जो-कुछ विशेष बातें लिखनेवाले हो मेरे जेल पहुँचनेसे पहले ही लिख भेजो। मेरी जमानतकी अवधि चौबीस घण्टोंको खत्म हो जानेकी^१ वह ध्यानमें रखना।

जगन्दीन सठसे मिलते रहना। इसमें काम ही है। रसरी बात-बातमें सिद्धपर परत निदान। मेरा उत्साह ऐसा है कि जो शकता है, मुझे बलिष्ठ भाविकामें अपने ही माइनोंके हाथों मीठ भोपनी पड़े। ऐसा ही तो तुम्हें हर्षित होना चाहिए। इससे हिन्दू और मुसलमान एक ही बननेसे। इस जगद्दीमें जो प्रकारके आत्यरिक संघर्ष भी चल रहे हैं। इनमें से एक है हिन्दुओं और मुसलमानोंको संगठित करनेका। उसके विरुद्ध जातिके शत्रु प्रयत्न करते ही रहते हैं। ऐसे महान् प्रयत्नमें किसीको ठो शारीरिक बलिदान देना ही पड़गा। वह बलिदान मैं ही हूँ तो मेरी मायता है, मैं श्रीमान्बघाजी हूँमा और मेरे छापी तथा तुम सब भी श्रीमान्बघाजी होओगे।

मेने तुम्हें भी मुझइन्पमसे सेंट करनेके लिए लिखा था। वे पावरी हैं। वे मुझे कुछ मिठाकर ठीक आबनी जान पड़े हैं।

मेरे लिए जो प्रयत्न हो रहा है, वह कौन कर रहा है? पता क्ये तक स्थितता। मैं इस सम्बन्धमें किञ्चिद्दाल तो किसीको नहीं लिखूँपा।

मोहनदासके आशीर्वाद

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूळ गुणवत्ता प्रतिकी फोटो-नकल (एच एन ४९१८) से।

१. गांधीजी १३ अक्टूरी, १९ ९ को बीजपुरकमें निरालात सिने कमे वे और लर्न जमनी जमानतपर डीमे गये थे। उनके छुटनेकी छुलतमें ४ अक्टूरीके बगान २५ अक्टूरी १९ ९ को डूँ बी और जूँ डीम स्थितिनी बना ही गई थी।

२. श्रीमन् रज्जि केसिन्वत इन्विन्त लर्न लर्नके पावरी।

१११ श्री काष्ठलियाका आत्मत्याग

द्राम्बवासके [ब्रिटिश भारतीय] संघका हरएक अंगस अपने पूर्वगामीसे क्यावा योग्य घोषित हुवा है इससे प्रकट होता है कि भारतीय समाज अपने बड़ रहा है। श्री काष्ठलिया जेल जा चुके हैं। अब उन्होंने स्वेच्छापूर्वक नौसेना अपनाकर इरादा जाहिर किया है। श्री काष्ठलियाकी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी है कि कोई ऐसा नहीं कह सकता कि उनके पास वा ही क्या खोर उन्होंने दिया ही क्या। उन्हें [अपने व्यापारमें] साधा मुनाफा है, तो भी वे उसे छोड़नेके लिए तैयार हो गये हैं। उनके सेनदार उन्हें दिवाकिया घोषित करा देंगे इसकी उन्हें परवाह नहीं है। वे इसमें अपना मात समझते हैं। इसीको हम बड़ी कमाई कह सकते हैं। यह सब श्री काष्ठलिया बेचके लिए कर रहे हैं। वे अपनी टोक रकना चाहते हैं। यह सच्चा आत्मत्याग—सच्चा आत्मत्याग— है। हम श्री काष्ठलियाको बधाई देते हैं।

इस सत्कारकी सूत अगली धुक ही गई है। श्री अस्तातने श्री काष्ठलियाकी बीरताका अनुकरण किया है। उन्हें भी हम बधाई देते हैं।

यह बुकानवारोंकी कसौटीका अक्षर आमा है। बुकानवारोंके पसमें बधाव हम कई बार लिख चुके हैं। उन्होंने नुकसान घहा है। उनमें से कई जेल भी गये हैं। हम इस सबका उत्सख समझ-समझपर करते रहे हैं। किन्तु सभी बुकानवारोंकी खरी कसौटीका समझ आना है। उन्होंने फेरिवालोंकी तरह खरी तकलीफें एक साथ नहीं उठाईं अब उसका समय आया है। श्री काष्ठलिया और श्री अस्तातने करके दिवा दिया है। बेसना है, दुधरे बुकानवार क्या करते हैं। अगमन बीवालीस बुकानवारोंने अपनी सही देखर यह कहा है कि वे परवाने (आइसेस) नहीं लेने और अपनी बुकाने बन्द रखेंगे। जो ऐसा करनेके लिए तैयार हैं उनका कर्तव्य है कि वे सामने जायें और श्री काष्ठलियाके कामको बन्द पहुँचायें। हमारी खेप सजाईका धारणहार बुकानवारोंपर है। यदि सजाई क्यावा लम्बी बनी तो उसकी जोखिम बुकानवारोंके फिर पड़ेगी।

सभी जानते हैं कि अपने दिवाकिया होनेसे श्री काष्ठलियाकी इज्जत गई नहीं बस्कि बड़ी है। सेनदार जी यह जानते हैं कि दोष श्री काष्ठलियाका नहीं है। श्री काष्ठलियाने अपने परकी धोमा बजाई है। अब फिर दुधरे बुकानवार बरेंगे किसलिए? उन्हें जरूरी तो पीव पीछे हटानेसे चाहिए। सजाईके समय जाने बड़नेमें जरूरी ही नहीं।

[बुकानवारोंसे]

इंडियन ओपिनियन, १ -१-१९९

११२ अंग्रेजी हवा

आजकल जब स्वदेशीकी भावना प्रबल हो रही है कुछ छापारण बस्तियोंका यात्र रक्षनेकी पसरत है। हम देखते हैं कि बहुत-से भारतीय पुस्तक बोझी-बहुत अंग्रेजी पढ़नेके बाद भागी अपनी मायाको भूल मरे हों या भागी अंग्रेजी कोई बड़ी धामधार भाषा है यह बतानेके लिए, जबका जन्म कारनामि बहूँ बरूणत नहीं है बहूँ भी अंग्रेजी भाषाका उपयोग करते हैं। वे एक-दूसरेके साथ बातचीत करते समय अच्छी युक्तयुती हिन्दी या उर्दू छोड़कर टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलते हैं। एक-दूसरेसे पत्र-व्यवहार भी अंग्रेजीमें करते हैं। ऐसा करनेवाके मुक्त अपनी स्वदेशीकी भावनाको विरोधी भावामें ऐसे कठिन सर्वाँका चिन्हें वे खुद भी नहीं समझ सकते प्रयोग करके प्रकट करते हैं और फिर बेसा करके बर्ष अनुभव करते हैं। यह बहुत सामान्य किन्तु बड़ा बोध है। जो वाति अपने आतीय भाषाकी रसा करमा चाहती है उसमें अपनी भाषाके प्रति प्रेम और ममत्व ही होना ही चाहिए।

हम बीजरीका ही उदाहरण ले लें। उनकी अनीतिते हमें धरीकार नहीं है। उनमें वेदनाभित तो भरपूर है। हमें उसीका अनुकरण करना है। क्योंकि बाककोके लिए अंग्रेजी भाषाकी बहुत बरूणत है, फिर भी वे अपने बच्चोंको स्वानिक उच विसे वे टाक कहते हैं पढ़ाते हैं। इस टाक भाषाकी पुस्तकें बोझी ही हैं। फिर भी वे मानते हैं कि वे जन्ममें उस भाषाकी शक्तिशाही बगा लेंगे। यह सम्भव है। उनमें इतना उत्साह है इसीलिए वे राज्यका नियन्त्रण अपने हाथोंमें ले सके हैं।

यहूरी लोग अपनी भाषा पीडितसे बीजरी-चितता तो नहीं फिर भी बहुत प्रेम रखते हैं। यह भाषा बोड़े दिन पहले बिल्कुल प्रामीन थी। बड़े-बड़े यहूरी मानते हैं कि जब यहूरीकोंकी पीडितसे चम्पा प्रेम होगा तभी वे राष्ट्र बत सकेंगे।

फिर, हमारी अपनी भाषाको हमें मान बना चाहिए। उसको समृद्ध करना और उसमें बहुत-सी पुस्तकें पढ़ना-लिखना हमारा कर्तव्य है।

इस लेखका बर्ष यह नहीं है कि हमें अंग्रेजी नहीं सीखनी है जबका उसकी परवाह कम करनी है। वह भाषा सासकोंकी और बैसे ही अमत्रण विस्वकी भाषा बत गई है, इसीलिए उसे हरएकके लिए सीखना बरूती है। काम पढ़नेपर उसका उचित उपयोग करना जाना चाहिए। उसको अच्छी तरहसे लिखना और पढ़ना सीखनेकी बरूणत है। परन्तु बिना तरह कुछ पुस्तक करते हैं उस तरह करनेसे कोई बर्ष-सिद्धि नहीं होती। कोई कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति अपने जैसे ही कम पढ़े-लिखे व्यक्तिको अंग्रेजीमें पत्र लिखे तो उसमें किसीका कोई काम नहीं। उससे पूरी-पूरी पलतफ़हमी होगी और बरबाद लिखनेकी आदत बढ़ेगी। अच्छा नियम तो यह जान पड़ता है कि बिनाके पत्र लिखें यदि वह व्यक्ति हमारी मातृभाषा न जानता हो तो बहूँ अंग्रेजीका उपयोग किया जाये। हम अंग्रेजी तो सीखें मगर अपनी भाषा न भूलें। अपनी भाषा सीखनेके बाद अंग्रेजी सीखें जबका दोनों पापाएँ साथ-साथ सीखें और ऊपरका नियम यात्र रखें। बिनकी अपनी भाषाका अभिमान नहीं है और जो उसे पूरी तरह नहीं जानते उनमें स्वदेशीका चम्पा उत्साह नहीं हो सकता है। युक्तयुती भाषा मातृकी वृष्टी भाषाओंकी तुलनामें बहुत

दरिद्र ब्रह्मचारी है, और हम बंगते हैं कि स्वयंसेवकों के उत्साहमें भी मृत्युसुख सबसे पीछे है। मृत्युसुखी मायाकी उपरि कृष्णा मृत्युसुखियोंका कर्त्तव्य है। बड़ा करनेसे हम सब अपने भाग्यपर बन सकेंगे।

[मृत्युसुखी]

इदिवचन श्रोतुं श्रुत्वा १०-१-१० ९

११३ दुर्गाका उवाहरण

दुर्गामें मृत्युकी स्थापना हुई कि अंग्रेज सुरम्ह शुक मये। ब्रिटिश लोकसभानके तीन सीते पदादा सम्मेलने [दुर्गाकी] संसदके प्रति अपनी मृत्युसुखियोंमें भरी है। उसपर प्रधान-मन्त्री श्री एम्बेडकरके भी हस्ताक्षर हैं। कहा जाता है कि जो सदस्य हाजिर थे उन सभीने हस्ताक्षर किये। जो लोग दुर्गामें संसदकी स्थापनाका विचार प्राप्त कर सके वे कौन थे सब इसका विवरण अगला अध्यायमें आ रहा है। आस्ट्रिया दुर्गामें मित्रा तो दुर्गामें तसवार म्यानने निकाले बिना और बन्दूकने गोली बामे बिना उसे जोरोंका पण्ड माया। पाठकोंकी याद दायता कि दुर्गामें आग्निबाके मासका बहिष्कार किया जा। यह बहिष्कार आस्ट्रियाके कुछ शक जानपर भी अभी तक समाप्त नहीं हुआ है। अलबारी बन्दोंके अनुसार आस्ट्रियाके अनुमानने यह घोषित-से समयमें आस्ट्रियाकी १००००० पौंडकी राशि हुई है। दुर्गामें अनुमानसे यह राशि ३००००० पौंडकी हुई है। जब मास-बहाज आस्ट्रियासे मास लेकर दुर्गामें बन्दरगाहोंमें पहुँचें तब आस्ट्रियाके राजदूतन मास उतरवानके लिए बहुत शीत-पुष की किन्तु दुर्गामें अधिकारियोंसे उसको कोई मुनबाई नहीं की। बीजा डोनेबामोंतकने अपनी मजदूरी की परबाह नहीं की। बन्दरगाहमें आस्ट्रियाके मासको उतरानबाधा एक भी दुर्गामें नहीं मिला। इसपर आस्ट्रियाकी सरकारने मुफ्तानको कड़ा विरोधपत्र किया। इससे दुर्गामें मंग समय मने कि आस्ट्रियाकी मसह्र बाबात लगा है और बहिष्कारका कार हुन्ना ही गया। पहल तो आस्ट्रियासे जानकारी के (दुर्गामें) टोरी और विवाहसाईका बहिष्कार किया गया। पीछे पत्नी ग्यों लोकोकी यह पता चलता गया कि आस्ट्रियासे क्या-क्या मास जाता है त्यों-त्यों के हुसर मासका भी बहिष्कार करने मने। पेरिसमें मुबक दुर्गा दल (यंग टर्क पार्टी) के प्रसिद्ध नेता महुसद रजा पागामे किमीन पुषा तो उन्होंने कहा हमने बेतक आस्ट्रियाका बहिष्कार किया है और वह बनी जात रहेगा। आस्ट्रियाको मुकसान हीना है, यह देगना हमारा काम नहीं है। यह तो हमने हाथ बाड़ा देकर करना बचाव कर किया है। पहला बार आस्ट्रियासे किया या सब वह उसका स्वार पने। अगला अध्याय बहता है कि इस मारी बहिष्कारने ही इन्कारन और किन्नाके बीच शक्ति की बाजशीन शुरू हुई।

यह कड़ा राष्ट्रीय सम्मानके लिए लड़ी गई है और इस सम्मानकी रक्षा करनेमें परीश और अमीर किमीने भी जाने मुकसानकी परबाह नहीं की। इन्तिला आस्ट्रियाको चुपचाप सब जाना गया। यह उदाहरण ट्रान्स्वानके भारतीयोंके लिए अच्छी तरह से बहसपत्र कर देने योग्य है।

[मृत्युसुखी]

इदिवचन श्रोतुं श्रुत्वा १-१-११ ९

११४ मेरा जेलका बूसरा अनुभव [५]

धर्म-संकट

मैंने अभी बाबो छत्रा ही काटी थी कि फौजिस्तले तार जाया कि भीमती गाँधी बहुत बीमार है हाज़रत बिल्ताबनक है, बाप मुझे वहाँ पहुँचना चाहिए।' इस खबरको सुनकर सब कोम बहुत खुसी हुए। मेरा फर्न क्या है, इस विषयमें मुझे कोई धम्मेह नहीं हुआ। जेजरने पूछा अब बाप ज़ुमाना भरकर जागा जाहँने या नहीं? मैंने तुरन्त उत्तर दिया कि मैं कबो ज़ुमाना भर हो नहीं सकता। धर्म-सम्बन्धियोंके विच्छेद होना भी हमारी ज़रूरतका एक हिस्सा है। जेजर सुनकर हँसा। उसे खेर भी हुआ। मेरा यह विषय पहली तबरीमें कठोर-जैसा भाव्य होमा लेकिन मुझे विश्वास है कि ऐसी स्थितिमें सच्चा निर्धन नहीं बा। मैं वेध-मेमको अपने धर्मका ही एक हिस्सा समझता हूँ। उसमें छारा धर्म नहीं बाता यह बात छही है। लेकिन वेध-धर्मके बिना धर्मका पावन पूरा हुआ नहीं कहा जा सकता। धर्मके पावनमें धर्म-पुत्रादिका विनोय सहन करना पड़े तो वह भी करना चाहिए। [प्रसंग जानेपर] उन्हें जो देनेके लिए भी तैयार रहना चाहिए। यही नहीं कि इसमें निश्चयकी कोई बात नहीं है बल्कि वही हमारा कर्तव्य है। जब इसी तरह हमें मरम-धर्मस्थ सङ्गना है, तो फिर कुछरा विचार हा ही नहीं सकता। जॉर्ज रॉबर्ट्सने हमारे कामसे क्या धर्मके काममें अपना एकमात्र पुत्र जो दिया और बूँकि बुर ज़रूरतमें उसे हुए वे इसलिए वे उसे बचन करनेके लिए थी नहीं बा सके।' ऐसे उदाहरणोंके दुनियाका इतिहास भरत हुआ है।

क्राफिटोंका कामका

जेजरमें कुछ क्राफिट कैंडी बहुत बुर प्रकृतिवाले होते हैं। उनमें ज़रूरत-कामका तो हीवा ही रहता है। कौठरीमें बन्द किने जानेके बाद वे बापसमें बन्दे रहते हैं और कभी-कभी छन्दरीसे भी सङ्गनेके लिए तैयार ही बाते हैं। इस कैंडियोंके छन्दरीको जो बार पीटा भी बा। ऐसे कैंडियोंके छाप भारतीय कैंडियोंको बन्द करनेमें जोखिम है, यह तो स्पष्ट ही है। यद्यपि भारतीय कैंडियोंको लिए ऐसा प्रसंग नहीं जाया लेकिन सरकारी कानून बरतक बहु कहा है कि भारतीय कैंडियोंको क्राफिटोंके छाप गिना जाने तबतक स्थिति बरतनाक ही कही जायेगी।

जेजरमें बीमारी

जेजरमें बहुत-से कैंडियोंको कोई बाध बीमारी नहीं हुई। भी भावनीके विषयमें मैं कह चुका हूँ। भी राजू नामके एक ठमिड माई वे। उन्हें जोरोंकी वैधिस हो गई थी। उनकी छबीयत बहुत कमबोर हो गई थी। उसका कारण ज़न्होंने यह बताया कि उन्हें हर रोज़ तीस प्यासा जाम पीनेकी बावत थी जेजरमें जाय न पिछनेके ही ऐसा हुआ। ज़न्होंने बाब मानी थी लेकिन बाब तो मिड नहीं सङ्गती थी। पर उन्हें क्या ही गई और जेजरके डॉक्टरने

१. देखिए "११४ व ११५ पृष्ठों" पृष्ठ १०८।

२. देखिए आत्मकथा, भाग ३, पृष्ठ १।

को पीछ हूँ और उबक-रोटी बेनेका भी हुनम दिया। उनकी तबीयत इससे फिर ठीक हो गई। श्री रमिहण्य ताबेनेतसिहकी तबीयत अत्यन्त खराब ही रही। इसी तरह काजी और श्री बामजीर अत्यन्त बीमार रहे। श्री खलसी सोबा चतुर्मास करते थे और इसविष्ट एक ही बार साठे थे। बूढ़क जैसी चाहिए बची न मिछनेके कारण वे भूख यह तो केते थे लेकिन अन्तमें उनके घरीएर सूजन वा गई थी। इसके सिवा और भी कुछ छोनोको मामूली बीमारियाँ हुईं।

लेकिन सब मिछाकर अनुभव यह रहा कि बीमार भारतीयोंमें भी हार नहीं मानी। देखके लिए वे यह सारा कष्ट उठानेके लिए तैयार थे।

कुछ अक्षरों

अनुभव यह हुआ कि बाहरके कर्षोंकी अपेक्षा भीतरी कारबसि होनेवाले कष्ट ब्यादा दुःखदायी थे। हिन्दू-मुसलमान तथा डॉब-नीचके मेरका आभास कमी-कमी जेसमें भी मिछ जाता था। जेसमें सभी बपों और सभी बपोंके हिन्दू एक घाम रहते थे। इससे यह बात स्पष्ट हो गई कि हम स्वराज्य बनानेके कितने अनोप्य हैं यद्यपि यह भी समयमें आ गया कि स्वराज्य हम बना ही नहीं सकते छो भी नहीं है क्योंकि जंतमें इस तरहकी सभी अक्षरों समाप्त हो गईं।

कुछ हिन्दू यह कहते थे कि हम मुसलमानोंके हाथका बनाया हुआ सागा नहीं खा सकते। मैं अमुक आदमीके हाथका बनाया हुआ खाता नहीं खा सकता—ऐसा कहनवाक मनुष्यको हिन्दुस्तानके बाहर कबम ही नहीं रखना चाहिए। मैंने यह भी देखा कि काफिर या योरे हमारे अक्षरका छुलें तो उसमें हम सौरीको कोई आपत्ति नहीं होती थी। एक बार एक मारोंने ऐसा सबाक उठामा कि अमुक आदमी तो बेड़ है, उसके पास मैं नहीं छी सकता। यह प्रसंग भी हमारे लिए सज्जाबनक था। इस सबाककी गहराईमें जानेपर मासूम हुआ कि ऐसी आपत्तिका कारण यह नहीं था कि आपत्ति उठानेवाले मारोंको स्वयं इसमें कोई बाधा थी। इसके पीछ कारण यह था कि यदि इस घटनाकी खबर देसमें पहुँची तो उनके आविवाके लोग आपत्ति करेंगे। मैं तो ऐसा मानता हूँ कि इस तरह डॉब-नीचके डॉमते और आविवाके अत्याचारके जरते हम सबको छोड़कर अत्याचका पीपण कर रहे हैं। यदि हम जानते हैं कि बेड़का तिरस्कार करना ठीक नहीं है और सब भी आविवाके या बूधरे कित्तोंके पक्ष जरते अत्याचका त्याग करते हैं तो हम अत्याचकी कैसे करे जा सकते हैं? मैं तो चाहता हूँ कि इस सझाईमें भाग लेनेवाले भारतीय आविवाके शिक्षाक, कुटुम्बके शिक्षाक और बड़ी अजमें बेलें बड़ी उसके शिक्षाक अत्याचकी बनकर बड़ें। मेरा निरिचत मत है कि वे ऐसा नहीं करते इसीविष्ट सझाईमें इतना डीजापण है। हम सब भारतीय हैं। तो फिर एक और आपसमें निरबेक मेर रखकर लड़ना और बूधरी और (अरकारते) एक मानना इन दोनों बातोंका मेर नहीं बँठता। अजना देसमें हमारा क्या होगा इस जरते यदि हम भी सही है वह नहीं करते तो फिर अपनी सझाईयोंमें हम कैसे जीवेंगे? जरकर कोई काम छोड़ देना तो कायल्लाका अजण है। और अरकारके शिक्षाक हमारा भी महामुद अज रहा है, उसमें कायर भारतीय आविवाक टिक नहीं सकते।

बेज जेन का सफाई है।

ऊपर दिये गये उदाहरणोंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्यसनी बात-माँवके मजबूत मेव माननेवाला भगवान्, हिन्दू-मुसलमानमें फर्क करनेवाला और रोमी — ये सब जेन जानके लिए उपयोग माने जाने चाहिए। ऐसे सोच नहीं जायेगे तो क्या समय तक नहीं टिक सकेंगे। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि देश-हितके लिए, सम्मान समझकर जेन जानेवाले लोगोंको धार्मिक मानसिक तथा आत्मिक तीनों दृष्टियोंसे स्वस्थ होना चाहिए। रोमी आरामी आशिरमें बस जायेगा। हिन्दू-मुसलमानमें मेव करनेवाला में ऊँचा और दूधरा गोधा — ऐसा विचार रखनेवाला ब्यसनमें उँचा हुआ तथा चाम बीड़ी या दूधरी किसी वस्तुके पीछे पागल बना हुआ आरामी बन्दूक नहीं मड़ सकता।

जेनमें मीने क्या पड़ा।

यद्यपि छारे दिन कीहीको जेनमें काम रहता है तो भी मुबह-नाम और एविवारके दिन कुछ पढ़नेका समय मिल सकता है। और जेनमें कोई दूधरी संभट नहीं होती इसलिये पढ़नेका काम प्राप्त मनसे किया जा सकता है। समय बहुत कम मिलता था फिर भी मने महान लेखक रस्किनकी दो पुस्तकें महान बोरोके निबन्ध बाइबल का कुछ हिस्सा वैरिवास्कीका जीवन-चरित्र (गुजरातीमें) लॉर्ड बेकनके निबन्ध (गुजरातीमें) तथा हिन्दुस्तानसे सम्बन्धित दूधरी दो पुस्तकें पढ़ीं। रस्किन और बोरोकी पुस्तकोंमें दूँड़नेपर सत्याग्रहके तत्त्व भी मिल सकते हैं। उपर्युक्त गुजराती पुस्तकें सबके पढ़नेके लिए भी बीजानने मेची थीं। इसके सिवा भयवर्गीता तो छमभय हुमेदा ही में पढ़ता था। इस अध्ययन और मननका परिणाम यह हुआ कि सत्याग्रहके विषयमें मेरा मन अधिक दृढ़ हो गया है और आज मैं कह सकता हूँ कि जेनसे बोड़ा भी पढ़ाने या ऊन छठनेका कोई कारण नहीं है।

दो प्रकारके विचार

ऊपर जो-कुछ लिखा गया है उसे पढ़कर हमारे मनमें दो प्रकारके विचार उठ सकते हैं।

एक तो यह कि जेनमें जाकर बन्दन भोगना मीठी लुरदरी और खराब पोशाक पहनना पैसा-पैसा खाना छन्दोकी लाने रहता काफिरोंके बीचमें रहना जो काम किया जाये वह बने या न बने फिर भी करना अपने नाँवर होने कामक सलतीकी हुमेदा ताबेदारी करना अपने छने-सम्बन्धियों या दोस्तोंसे न मिल सकता किसीको पत्र न लिख सकता मानसिक वस्तुओंका न मिथना लुटेरों और चोरों आदिके साथ एक-बपह रहना और चीना — यह सब कष्ट किसलिए उठाया जाये? इसमें तो मरना जसा। जूराना बेकर छूटना अच्छा लेकिन जेन जाना अच्छा नहीं। मयवान करे, जेन किसीको न हो। यदि कोई इस तरह सोचे तो वह निर्बल ही जायेगा जेनसे डरेगा और नहीं जो बमकाय करना है तो नहीं करेगा।

दूसरा विचार जो हमारे मनमें उठ सकता है, यह है कि मैं देखके हितके लिए अपनी प्रमिष्ठाकी रखाके लिए, बम-नाशनके लिए जेन जाता हूँ। यह तो मेरे धार्मिकता चिह्न है। इसके सिवा जेनमें मुझे कोई कष्ट तो है नहीं। बाहर मुझे अनेक लोगोंका हुनम बजाना पड़ता है लेकिन जेनमें मुझे किसी बातकी चिन्ता नहीं रहती। नहीं न मुझे कमानेकी चिन्ता है और न खानेकी। खाना तो नियमपूर्वक दूधरे सोच पराये है। मेरे धार्मिकी

हिकमत सरकार करती है। इस सबके लिए मुझे कुछ देना नहीं पड़ता। और कसरत खूब ही जाये इतना काम मिश्रता है। मेरे घारे ब्यसन वहाँ जगामास ही घूट जाते हैं। मेरा मन मुक्त रहता है। मुझे इतर-मजग करनेका सहज ही बबघर मिल जाता है। मेरा घरीर बूखरोंके बपीन होता है, लेकिन मेरी आरमा अधिक मुक्त हो जाती है। मैं नियमके अनुसार रहता और बैठता हूँ। मेरे घरीरकी धार-सँभास भी ये ही करते हैं जो उधे नियमनमें रहते हैं। इस तरह किसी भी बृष्टिसे बसें वहाँ मैं मुक्त हूँ। कनी-कनी मेरे ऊपर कष्ट ना पड़ता है कोई बृष्ट घन्टरी मुझे मारता-पीटता है लेकिन उससे मैं बीरज रहना सीखता हूँ और यह समझकर बस रहता हूँ कि यह अनुभव मुझे बेसमें ऐसी बटनाओंको रोकनेका प्रयत्न करनेका बबघर बैठा है। ऐसा सीखकर बेसको पबिज और मुक्तपयक मानना और बनाना हमारे हाथमें है। बोड़ेमें कहे तो कुछ और कुछ तो मतकी वो विविध स्थितियाँ-मर है।

मैं जाया करता हूँ कि बेस-बीजनका मेरा यह बूखरा अनुभव पढ़कर पाठक इसी निरुत्सवपर जायेंगे कि देखके लिए सबका बर्मके लिए बेस जानेमें बेस-बीजनकी तकमीस उजानेमें बबना बूखरी तख्खे मुसोबत सेकनेमें ही हमें कुछ मानना है।

[गुलपतीसे]

इकियत ओपिनियन, ३०-१-१९ ९

(समाप्त)

११५ ट्रांसवासकी सड़ाई

ट्रांसवासकी सड़ाई अब पूरा और पकड़ चुकी है। [किटिय माखीय] सबके सम्पदा बेस गये। मशासिर्वोंके सममग घारे नेता बेसमें विराजमान हैं। बूखरे ब्यापाटी भी बेसमें है। इस प्रकार बोरोका यह कबन सच्चा सिद्ध होगा कि जो लोग अत्यामी राज्यमें अत्यायके जाये विर मुकाना नहीं चाहते उनका निवास बेसमें होगा चाहिए।

इन बारकी सजा कोई धान विगकी या हफ्ते-दो-हफ्तेकी नहीं है। हमारे औद्धानिसबर्षके संवाचवादाने बबर भी है कि बोड़े ही दिनोंमें बाकी नेता भी विरपतार कर सिने जायेंगे। हम इस सबकी सत्योयजनक मागते हैं। जैसे-जैसे कुछ ओपनेका बोंब करके बोड़े ही दिन बेसमें रहनेपर हम जो-कुछ मीसते हैं वह मिल जाता तो हम प्राप्त बलुकी निना या पचा न सकते। संसारका ऐसा नियम है कि जो बलु जिस उपायम मिश्रती है उसकी उसी उपायसे रखा या सकना है। इसका अत्यन्त साधारण उदाहरण यह दिया जाता है कि सन्निसे प्राप्त राज्य पक्षिसे ही निमाया ना सकता है। इसी नियमके अनुसार कुछ बहूकारी स्नेच्छाकारी और मावमम बरेज यह मानते हैं कि लकवारके बकडे लिया हुआ भारत लकवारके बकडे ही रखा या सकता है। वह माम्यता भूक-मटी है, वह सड़न ही लिवाई पड़ जाता है। यहाँ तो हमने ऊपर जो नियम बताया उसको स्पष्ट करनेके लिए ही यह उदाहरण दिया है। इसलिए इस सन्बन्धमें ज्यादा कहनेके बजाय हम इतना ही कहेंगे कि

भारतको उन्नतारके बचसे नहीं बल्कि हमारी आपसी फूटके कारण हमारी ही सभितका काम उठाकर नीता गया है। इसकिए ऊपरके नियमके अनुसार तो हमारी फूटकी कायम रखकर और हमारी ही सभितका उपयोग हमारे विरुद्ध करके भारतको कम्बमें रखा जा सकता है। इस दृष्टिसे जाने सोचनेपर हम यह भी देखते हैं कि यदि हम भारतीय हिन्दू और मुसलमान संबन्धित हो जायें और अपने देशवासियोंको ही कुचकनेसे इनकार कर दें तो भारत परतन्त्र रक्षामें न रहे। ऐसा होते हुए भी अंग्रेजी ब्रह्म भारतके ऊपर रह सकता है—किन्तु वह इसकी नीतिसे और लोगोंकी स्वतन्त्र सम्मतिसे। हालमें भी लोगोंकी सम्मति तो है परन्तु उसके पीछे एक प्रकारकी छायाही है। हम भारतकी बात नहीं बरन करते हैं। हम इसमें से केवल दान्यवालयकी अङ्गाङ्गि किए सार निकाल लेना चाहते हैं।

तो हमने देखा कि हम बिना उपायसे अपनी मान्य सरकारसे मंजूर करणत हैं उसी उपायसे जस माँगकी मंजूरीका काम भी उठा सकते हैं। यह बात ठीक हो तो यह निश्चित हो गया कि सत्साधकके उपायका बचकम्बन सचार्थिसे करना चाहिए। उसके ऊपर कोई कांछन नहीं होना चाहिए। इस बिचारके अनुसार यदि हमारा पूरा और मान्यतावा बात है तो इसमें हमारा काम है। आज यदि हम नाटकीय नहीं सन्ना बर विचारमें तो वह बर सभिसमें पूरी तरहसे काम जायेगा।

अब अङ्गाई हुकानदारोंके ऊपर आ टिको है। यही ठीक भी है। व्यक्तिगत स्वार्थ तो हुकानदारोंका ही बड़ा है। उनको इन्कत ध्याता है। इसकिए कानूनसे होनेवाला क्यमान भी उनकी ध्याता बरकरता है। अरु अब हुकानदारोंकी बहुत संभलना है। हमारा संभल-बाता सबर बेठा है कि बहुतसे हुकानदार हिम्मत हार बैठे हैं। उन हुकानदारोंमें बर भी धर्म हो तो वे [फिर हिम्मत करके] अङ्गाईमें माय ले सकते हैं। वे फेटी कपाकर बेक जा सकते हैं। उनमें खरी ईमानदारी होगी तो सरकार उनको बेकमें भेजे बिना रह ही नहीं सकती। श्री काङ्गिया और श्री बस्तात तो बुनियामें बोड़े ही होते हैं। इससे मार तीय हुकानदार उनके मुकाबले जाबा भी और क्पायें तो अङ्गाई बयक सकती है। वे ऐसा करें या न करें, जो बेकमें पहुँच गये हैं और बितमें खरी बेक-महजमें जानेका उत्साह है उनका कर्तव्य स्पष्ट है। उनको ठबतक बार-बार बेक जाना है। बरतक म्याम नहीं मिल जाता। उनका माय जाता है तो भेके ही जाये। उनको तो प्राय जाने तक अङ्गना है। इसमें सब आ गया। हम कामना करते हैं कि ईश्वर भारतीयोंको धुनुरि दे। श्री हॉल्केन जाहि गोरीकी चिट्ठी' इंग्लैंड पहुँचनेके बाद भारतीय सरकार बैठ जायें तो यह हमारी कोई कम बरनधीवी नहीं कही जायेगी। यह तो हमारी बरनानीकी हर मानी जायेगी। हमें विश्वास है कि जो भारतीय जो बरथि अङ्ग रहे हैं वे ऐसी बरनानीके पाय हर्षिब नहीं बनें।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ६-२-१९९

११६ श्री काष्ठस्त्रियाका विशेष आत्मत्याग

हम देख चुके हैं श्री काष्ठस्त्रियाने समाजके लिए मान-मयी गरीबी स्वीकार की है।^१ यह वे बौद्धानिचवर्न जेजमें तीन माहका कड़ा कारावास भुगत रहे हैं। उनके साथ व्यापारियोंमें से श्री कामर मृषाजी तथा श्री मैत्री भी हैं। श्री काष्ठस्त्रियाने जो काम किया है उसपर धारे भारतीय समाजको और लासकर मुसलमान भाइयोंको गर्ब होना चाहिए। श्री काष्ठस्त्रियाको यह और कुछ वास करनेकी नहीं रहा। वे दूसरी बार हँसते-हँसते बेलक पये हैं। जिस समाजमें ऐसे लोग मौजूद हैं वह कभी पीछे नहीं हट सकता। ऐसे लोग दो-चार ही हों तो भी वे धारे समाजका बेड़ा पार लगा सकते हैं।

हमें वाधा है कि दूसरे संकड़ों भारतीय श्री काष्ठस्त्रियाके उज्ज्वल उदाहरणका अनुसरण करें। ऐसे भारतीय जैसे-जैसे दुःख उठाते जाते हैं जैसे-जैसे समाजके कर्तव्यका बोझ बढ़ता जाता है। यह बात हरएक भारतीयको ध्यानमें रखनी है। श्री काष्ठस्त्रिया तथा उनके साथी जेजमें र्हे और दूसरे भारतीय पीछे हट जायें तो इससे श्री काष्ठस्त्रियाकी तिन्हा नहीं होगी समाजकी मानहानि होगी।

तमिस लोगोंने तो हर ही कर दी है। उनके धारे मुख्य व्यक्ति इस समय जेजमें था बैठे हैं। इस बारका कारावास सिर्फ साठ दिनका नहीं तीन माहका है यह धारा नहीं सकत है। ऐसे कारावासका भय रहे बिना जो भारतीय जेज पये हैं उनकी बहादुरीका पार नहीं है। जेजकी मियाद पूरी होनेके पहले उन्हें झुका लेना बाहर रखनेवाले भारतीयोंके हानमें है। यह कैसे किया जा सकता है सो हम अपनी बौद्धानिचवमकी बिट्ठीमें अच्छी तरह बता चुके हैं।

[बुधरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ६-२-१९ ९

११७ सम्मेलन

धारे दक्षिण आफ्रिकाका एक राज्य बनानेके उद्देश्यसे आवेचित सम्मेलनकी रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है। उसमें दस भाग और १५३ पारएण्ड हैं। यह रिपोर्ट ३ मार्चको दक्षिण आफ्रिकाकी बायें संसदमें पेश की जायेगी। यदि उसे मंजूर कर लिया गया तो सम्मेलन फिर नई महीनेमें शुरूमफ़ौटीनमें एक और अधिवेशन करेगा और जूनमें अपनी अन्तिम रिपोर्ट पेश कर देगा। उसे दक्षिण आफ्रिकाकी संसदें पास करेगी। फिर कुछ प्रतिनिधि इस रिपोर्टको लेकर इंग्लैंड जायेंगे और उसके बाद एक वर्षके अन्दर दक्षिण आफ्रिकाकी नई संसदकी बैठक होगी। ये बायें ऐसी हैं जिनपर गौरे एक हफ्ता वर्ष कर सकते हैं। उन्होंने अपने काममें एकठा दिखाई और अपने निजी स्वार्थोंका त्याग किया इस बातपर हम उन्हें बधाई देते हैं। जो जीए ऐसा कर सकते हैं उन्हें विजय मिले इसमें कोई आश्चर्यकी बात

गहीं है। असबता उनके इस कार्यके फलस्वरूप दूसरे मौनोंपर अग्याय तो नहीं होता यह वाक्य सवाल है। इस सम्मेलनने तो इतना ही सिद्ध किया है कि जोन यदि बुरे कामके लिए भी दबदूठे होकर आम्बोछन करें, तो उन्हें कुछ सफलता मिल ही जाती है।

इस सम्मेलनके फलस्वरूप [समूर्ण] दक्षिण आफ्रिकाके लिए एक संघर्ष और एक उच्च न्यायालयकी स्थापना होगी। संघर्षके मातहत मौजूदा उपनिवेशोंमें से प्रत्येक उपनिवेशके लिए एक परिषद होगी। यह परिषद साधारण कानूनोंकी रचना कर सकेगी। चुंगी और रेकमेका महकमा [घारे बेघके लिए] एक ही होगा। पिटोरिया इस संघ-सम्बन्धी राजधानी होगी। डेक्कन संघर्षका अधिकेशन केप टाउनमें होगा। नया उच्च न्यायालय ब्लूफोण्टीनमें रहेगा। दक्षिण आफ्रिकाका एक गवर्नर जनरल होगा। संघर्षके दो खतब होंगे। सीनेट और असेम्बली। सीनेटमें ५ सदस्य होंगे। उनमें से आठको सरकार नामजब करेगी। बाकी छहस्य प्रान्तों द्वारा चुने जायेंगे। असेम्बलीमें १२१ सदस्य होंगे। इनमें कैपके ५१ मैटाके १७ ट्रान्सवालके ३९ और ऑरेंज की स्टेटके १७ होंगे।

इस संघका परिचाम भारतीयों और दूसरे काले लोगोंके लिए बर्यकर होगा। काले लोगोंको कहीं भी मताधिकार नहीं होगा और इस रिपोर्टमें यह सिफारिश की गई है कि केप प्रान्तमें उन्हें जो भी मताधिकार प्राप्त है वह उनसे छीन लिया जाये। किन्तु मताधिकार तो एक मामूली-सी बात है। जहाँ हमें बड़े होनेकी भी जरूरत नहीं है वहाँ भी मताधिकारका कोई उपयोग हो ही नहीं सकता। जहाँ मुकाम और गुणामोंके भासिक दोनों हों वहाँ मुकामों और उनके मासिकोंको अपने ऊपरी अधिकारी नियुक्त करनेके लिए समान मताधिकार दिया जाये तो भी गुणामको मिला हुआ मताधिकार किसी कामका नहीं होगा। यह मताधिकार लड़के लिए ठीकी उपयोगी हो सकता है जब उसे पहले स्वतन्त्रता दी जाये और स्वतन्त्रताकी भीमल समझनेके लिए आवश्यक ताकीम दी जाये। अन्यथा लड़का मताधिकार मताधिकार ही नहीं है। इस देशमें हमारी स्थिति मुकामोंकी है। स्वतन्त्रताका मुख्य समझनेके लिए आवश्यक ताकीम भी हमारे पास नहीं है। वे दोनों बस्तुएँ हमें एक साथ मिलनी चाहिए। यह तो हो नहीं सकता कि जो हमारे मासिक कड़े जाते हैं वे हमारी बेड़ियाँ खूब ढीङें। इसलिये हमें खूब ही अपनेको ताकीम देनी होगी और अपने प्रयत्नोंसे ही स्वतन्त्रता प्राप्त करनी होगी। जबतक हमने ऐसा नहीं किया है तबतक मताधिकारका हमारी रजमें कोई मुख्य नहीं है। तो अब हम इस सम्मेलनकी दूसरी बेड़ियोंपर विचार करें।

विभिन्न प्रान्तोंमें जो भी कानून आज हैं वे सब कायम रहेंगे। यांनी ऑरेंज रिबर काकोनी ट्रान्सवाल आदिमें हमारे सिक्काठ बितने भी कानून हैं वे सब ज्यों-के-त्यों रहेंगे। हमें एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तमें जानेका अधिकार नहीं होगा। इसके सिवा कई संघर्षको दूसरे कानून बनानेकी सत्ता भी होगी। इसका फतीजा यह होना कि विभिन्न उपनिवेशों या प्रान्तोंमें आज जो कठोरसे-कठोर कानून हैं दूसरी जगहोंमें भी जैसे ही कानून बनाने जायेंगे।

सम्मेलनकी रिपोर्टसे यह स्पष्ट हो जाता है कि लड़के ट्रान्सवालमें भारतीयोंका प्रश्न हक नहीं हुआ है। और यदि भारतीय हाथपर-हाथ बरकर बैठे रहे तो घारे दक्षिण आफ्रिकामें भारतीयोंकी हालत खराब हो जायेगी। हुएक राष्ट्रीय को जो दक्षिण आफ्रिकामें मुकामकी तरह नहीं रहना चाहता वह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए और यदि वह ट्रान्सवालका हो तो उसे अपना घिर हजेबीपर रखकर कड़ाईमें भासिक हो जाना चाहिए।

यदि वह द्रास्यवास्ते बाहरका हो तो उसे द्रास्यवास्ते भारतीयोंको ज्यादासे-ज्यादा प्रोत्साहन और सहायता देनी चाहिए।

[पुनरावृत्ति]

इंडियन ओपिनियन ११-२-१९०९

११८. हारे हुए लोगोंके लिए

पॉपिस्ट्रूम और क्लार्कडॉयें हार गये। दूसरे सहस्रोंमें भी भारतीय हारे हुए जान सकते हैं। फिर, पॉपिस्ट्रूमसे तो जलवारोंमें तार भेजा गया है कि जो पॉपिस्ट्रूम बहुत मजबूत या वह मुक गया इसलिए दूसरे सहस्र तो मुझे ही और अब सत्याग्रह नहीं चलेगा।

जो हार गये हैं उनका कुछ कर्तव्य है। हम उनको उसका ध्यान दिखाना चाहते हैं। वे जानते हैं कि लड़ाई तो लड़ने योग्य ही है। उनसे कष्ट सहन नहीं हुए, इसलिए वे मुक गये। इस प्रकार जो मिरे हैं उनके मनमें दूसरोंको गिरानेका क्यास न जाना चाहिए। जो हार गये हैं वे भी सरकारको बडा सकते हैं कि "हम जो हारे हैं, उसका कारण हमारी कमजोरी है किन्तु जो हारे नहीं हैं हम उनकी भीत चाहते हैं। हम उनको जितना सम्भव होगा उतना बल देंगे।" वे इतना तो कर ही सकते हैं। ऐसा न करेंगे तो मुक जानेका कारण उनकी निर्बलता माननेके बजाय यह माना जायेगा कि वे जान-बूझकर शेषके दुःखमग्न बन गये हैं। हारे हुए लोग क्लार्कडॉयें मिल सकते हैं कि हम हार गये मगर यह नहीं चाहते कि दूसरे भी हार जायें।

वे ऐसा न करेंगे तो इससे लड़ाई कुछ बन्द नहीं हो जायेगी। सड़ाई चलेगी। किन्तु वे [हमारा] विरोध करेंगे तो वह लम्बी लियेगी। वे अपने हार जानेको कमजोरी मान लेंगे तो जर्म यह होगा कि उन्होंने उतनी मरव की। उस हार तक सड़ाईकी जगमि भी कम हो जायेगी।

इन्के बताया यदि उनका जेल जानेका विचार हो तो वे जा सकते हैं। इटलीमें अब देश प्रेमकी भावना लोगोंकी मन-नसमें दौड़ रही थी तब जो सड़ाईमें भाग नहीं लेते वे भी उसका विरोध नहीं करते थे। वे अपनी दुर्बलता स्वीकार करके उससे बलव रहते थे किन्तु दूसरी तरफसे बहुत सहायता दिया करते थे। बीसा ही हारे हुए भारतीय भी कर सकते हैं। इन विचारोंपर उन्हें ध्यान देना चाहिए। उनका कर्तव्य तो यह था कि वे भी बाउथ मुहम्मद आदिके नाम स्मरण करके मजबूत बने रहते। बीसा नहीं हुआ है तो अब हमने इस दरारमें कि उन्हें और ज्यादा कष्ट न हों ऊपर जो बातें बताई हैं, उनके अनुसार वे काम कर सकते हैं।

[पुनरावृत्ति]

इंडियन ओपिनियन ११-२-१९०९

११९ श्री रबिरियाकी अपील

हम श्री रबिरियाकी अपील में हार गये।^१ इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं। श्री तान्दुके मुकदमेमें भी स्यामाजीशेठका जो क्लम था उससे बाहिर हो गया था कि हम यह अपील भी हारेंगे। वे दोनों अपीलें सत्याग्रहियोंको संकेत देती हैं कि उन्हें अपील सिर्फं बुरासे करनी है। दुनियाकी स्यामात्म उतके लिए नहीं हैं। हो भी कैसे सकते हैं? जन्मे राजाके स्यामात्म भी जन्मे ही होते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि स्यामात्मको अधिकारी — स्यामाजीशेठ — जन्मे हैं बल्कि अर्थ यह है कि अधिकारी यदि स्यामायुक्त कानूनपर अमल करते हैं तो उसका बुराया क्या परिणाम हो सकता है? इसलिए ठीक तो यह है कि सत्याग्रही अपील अपनी दकिये करे ईश्वरमें ससजी जो आस्था है और बुराये उसे जो बस दिया है, उससे करे। उसकी यह अपील कभी अर्थ न चायेगी।

कुछ भारतीय तो इस अपीलसे हारे हुए-से दिखाई देते हैं। उनके मनको मारी बफस समा जान पड़ता है। इन भारतीयोंको इरपोक समझना चाहिए। [वे छोचते हैं] हम सब तो बेचसे निर्वासित होना ही पड़ेगा। "किन्तु" निर्वासन का अर्थ क्या है? निर्वासित किसे जानेपर जापस तो जाना ही है। निर्वासित होने या जेक जाने — दोनों से चुनाव करना पड़े तो एक हक तक तो निर्वासित ही होना चाहिए, क्योंकि निर्वासित किया गया व्यक्ति फिर और कड़ सकता है। अपील हारनेसे हक नहीं मारे जाते। मारे तो हम सब चाहेये जब हक छोड़ देंगे। जो दाम्पबाळको अपना देस माने बैठे हैं वे घरकारके निकालनेसे बोड़े ही बके पायेंगे। वे तो अपनी मर्जीसे ही चारेंगे। इसलिए हमें कहना चाहिए कि रबिरियाकी अपीलका खदान किस्तीको करता ही नहीं है।

[गुनछीये]

इंडियन ओपिनियन १३-२-१९१९

१२० डंकनके विचार

श्री पैट्रिक डंकन स्वसाधन मिलनेसे पहले दाम्पबाळके उपनिवेदा-सचिव थे। उन्होंने अभी हालके सम्मेलनमें साठ हिस्सा किया था। स्टेट बलिब आधिकारी एक महत्वपूर्ण मासिक पत्रिका है। उसमें बहुत बड़े लोग ही लिखते हैं। उसके संरक्षक करोडपति होते हैं।

इस मासिक पत्रिकामें श्री डंकनने एसियाई प्रान्तके सम्बन्धमें एक लेख लिखा है। वह बहुत गम्भीर और पढ़ने लायक है। इसके अतिरिक्त उसका लेखक स्वयं इतना प्रभावशाली व्यक्ति है कि उसमें भारतीयोंकी माँगोंकी स्वीकृत करनेकी सामर्थ्य है।

जो लोग अंग्रेजी जानते हैं वे इस लेखको अंग्रेजीमें पढ़ लें। हमारे पत्रमें उसका उर्दूमा छापने मायक जगह नहीं है। उसे छापनेकी जरूरत भी नहीं है। उसका एक बड़ा हिस्सा ऐतिहासिक है, बिसे सब भारतीय जानते हैं।

सेखने ध्यान देने योग्य बात यह है कि उसमें हमारी माँगको उचित माना गया है। यह भी बताया गया है कि जनरल स्मट्सने कानूनको रद्द करनेका विचार किया था। सरकारपर सत्याग्रहका बचाव बहुत अधिक पड़ा है इस बातका भी उल्लेख है। संक्षेपमें उस लेखसे यह बात निरिक्त रूपसे सिद्ध हो जाती है कि सरकारको सत्याग्रहकी पकितके सम्मुख झुकना ही पड़ेगा। यह सब महत्वपूर्ण है। किन्तु सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह बताई गई है कि अबतक सरकारके न झुकनेका कारण क्या है। फिर, श्री बंजन साफ-साफ बताते हैं कि विहित भारतीयों [के प्रदेय] का प्रत्न बहुत गम्भीर है। मुख्य प्रश्न यह है कि उनको कानूनमें मोरोके समान प्रवेशकी छूट दी जाने या नहीं। यह कैसे दी जा सकती है? श्री बंजन कहते हैं कि यदि दक्षिण आफ्रिकामें मुख्यतः योरोंको ही जावार करता है तो वह छूट नहीं दी जा सकती। इसके सिवा श्री बंजन कहते हैं कि यह प्रत्न ट्रान्सवालका ही नहीं बल्कि पूरे दक्षिण आफ्रिकाका है। यह समझकर ही साम्राज्य-सरकारने प्रवासी कानूनको मजूर किया है। इसी ब्याजसे सब मोरे कहते हैं और अभीतक कह रहे हैं। यदि ट्रान्सवालके भारतीय कड़ाई छोड़ दें तो केप नेटास और रोडेसियामें भी कानून बन जायेगा। यदि ट्रान्सवालके भारतीय कड़ाई बहाले रखें तो पूरे आफ्रिकामें बिसा कानून नहीं बन सकेगा। श्री बंजनने इन विचारोंको बहुत विस्तारसे व्यक्त किया है। इससे यह अनुमान होता है कि सम्मेलनका निर्णय होनेपर ही भारतीय प्रत्नका समाधान होगा।

किन्तु इससे पहले तो यह आवाज सुनाई देती है कि सत्याग्रहका खान्दोजन विचार गया है। यदि सत्याग्रह ही नहीं बसता तो फिर हमें सम्मेलनसे क्या? सम्मेलन कुछ भी क्यों न करे, किन्तु कड़ाई बन्द न होगी। सब भारतीय दो बर्ष तक फड़े। उन्होंने कड़ाईका स्वाद चखा। उसकी कुछ विशेषता उन्होंने देखी। सम्भव है, अब वे कड़ाईको छोड़ दें किन्तु बहुत-से भारतीयोंके कड़ाई छोड़ देनेसे भी कड़ाई बन्द नहीं हो सकती। वह तो अबतक बकती रहेगी जबतक एक भी कड़नेवाला होगा। किन्तु जो भारतीय अभीतक झुके नहीं हैं, उनका ध्यान श्री बंजनके इस लेखकी ओर खींचना हमारा कर्तव्य है और उन्हें श्री बंजनके सच्योंको ध्यानमें रखते हुए कड़ाई जारी रखनी है।

[मुजपतीसे]

इंडियन ओपिनियन, ११-२-१९१९

१२१ श्री बाउव मुहम्मदकी बेदासेवा

श्री बाउव मुहम्मद जयमन पकी उन्नमें कीमकी बगोबी सेवा कर रहे हैं। वे बेछके मयको जीत चुके हैं। उन्हें निर्वासित किया जाता है तो उसका भी मय नहीं मानते। बहुत-से खोमोसे उन्होंने हँसते-हँसते यह कहा है "घरकार मुझे सीमान्तपर बर्हा पाहे बर्हा छोड़े।" दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयोंके लिए अब बार-बार बेछ जाना और पीटे-टकेकी परवाह न करना कोई बगोबी बात नहीं है। श्री साउथवीकी जिनसे घल्पाग्रहका दुसरा और धूरु तुवा मूस्यवान सेबाओंके सम्बन्धमें हम पहले ही भिन्न चुके हैं। क्या बेछमें और क्या बाहर, वे चुपचाप अपना काम करते ही जाते हैं। परन्तु इस बार हमें श्री बाउव मुहम्मदकी सेबाओंके सम्बन्धमें विद्यत रूपसे चिन्तना है। मनुष्यके कामका मूस्य दो प्रकारसे जाँका जा सकता है। एक तो उस कामके मूक महत्त्वकी दृष्टिये और दूसरे उसके परिणामकी दृष्टिये—अर्थात् दूसरे मनुष्यपर उस कामका क्या असर होना उसकी तुलना करके। इस परिणामी मूस्यकी दृष्टिये श्री बाउव मुहम्मदकी सेबाओंको कोई नहीं पा सकता। बात इतनी ही नहीं है कि श्री बाउव मुहम्मद नेठाऊ भारतीय कांग्रेसके अध्यक्ष हैं। वे दक्षिण आफ्रिकाके बहुत ही पुराने निवासी भी हैं। उनकी समसकारीका मुकामका कर सके ऐसे बहुत कम भारतीय दक्षिण आफ्रिकामें होंगे। वे ऐसे होसियार हैं कि यदि वे अंग्रेजी पढ़े-लिखे होते तो जाह किसी बड़े पदका उपभोग करते होते। उनकी व्यंग्य-शक्ति इतनी बलवी है कि उससे बहुत-से खोम सहज ही प्रभावित हो जाते हैं। उन्होंने बहुत अनुभव प्राप्त किया है। उन्होंने एकड़ी रुपये खोमोंमें भयामे हैं। अपनी बाबी अबका बगसे उन्होंने अनेक लोगोंका उपकार किया है। वे खुद पक्के मुसलमान हैं और सूखी खोमोंमें उनकी प्रतिष्ठा बहुत अधिक है। इन कारणोंसे उनके कामका परिणामी मूस्य बहुत बढ़ा हो गया है। हम नहीं मानते कि दक्षिण आफ्रिकाका कोई भी भारतीय श्री बाउव मुहम्मदको बेछमें रहने देकर अपने-आपको सुखी मान सकता है। उनके बेछमें रहनेसे कड़ाईको कमाठार बाटी रहना भारतीय समाजका कर्तव्य हो गया है। इससे पाठक समझ सकते हैं कि श्री बाउव मुहम्मदका काम बहुत बढ़ा है, और हम जाना करते हैं कि प्रत्येक भारतीय ऐसा ही समझकर महाशक्ति प्रयत्न करेगा और कड़ाईमें मरब सेवा। यदि ऐसा किया जाये तो हम समझते हैं कि श्री बाउव मुहम्मद और उनके साथियोंको बेछमें कदाचित्त छ मास भी नहीं बिठाने पड़ेंगे। और यदि बिठाने भी पड़ें और उसके बाद फिरसे जेल जाना पड़े तो उससे भी क्या होता है? उससे उनकी कीर्ति और अधिक स्वामी होनी और हम खोमोंकी जो बेछके बाहर हैं, अपनीर्ति होनी। कीम भारतीय बेछके बाहर रहकर अपनीर्तिका पात्र होना चाहता है?

[मुसलमानीसे]

इंडियन ओपिनियन १३-२-१९१९

१२२ रोडेसियाकी जीत

हम इस संकल्पमें यह खबर दे रहे हैं कि रोडेसियामें ट्रान्सवालके ढंगका जो कानून बनाया गया था उसे स्वीकृति नहीं दी गई है। इस कानूनका अस्वीकृत होना कोई छोटी बात नहीं है। हमें पाठकोंको स्मरण करा देना चाहिए कि इस विषयके विरुद्ध जो बर्बाद हो गई थी उसमें कानून पास कर दिये जानेपर भारतीय उसे स्वीकार न करेंगे इस माध्यमका प्रस्ताव था। सभी समझ सकते हैं कि इस कानूनके अस्वीकृत होनेका मुख्य कारण ट्रान्सवालकी लड़ाई है। भारतीयोंकी गई धर्मितासे ब्रिटिश सरकारको बहुत सबेत् होकर काम करना पड़ता है। हम माथा करते हैं कि भारतीय इस प्रकार प्राप्त की हुई सक्तिकी एकत्रम जो नहीं देंगे।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियम १३-२-१९०९

१२३ ट्रान्सवालसे बाहरके भारतीयोंका कर्तव्य

जान पड़ता है ट्रान्सवालकी लड़ाई सन्धी चलेगी। उसी प्रकार यह भी जगता है कि जब उस लड़ाईमें भाग लेनेवाले भारतीय बहुत कम रहेंगे। उनकी मदद करना ट्रान्सवालसे बाहरके भारतीयोंका बोहप कर्तव्य हो गया है। वे सार्वजनिक समारं करके उनमें प्रस्ताव पासकरके मदद कर सकते हैं। इससे दो अर्थस्य सिद्ध होंगे— एक तो यह कि जो पिये नहीं है उनको प्रोत्साहन मिलेगा और जो बिर मये है वे क्षम्य फिर उठेंगे। दूसरे यह कि उनकी समारं और उनके प्रस्तावोंसे आसक्त-वर्ग यह समझेगा कि लड़ाईको जाल रखनेमें सब भारतीयोंकी सहमति है। प्रस्ताव पास करनेके बजाया अपना इच्छुय करनेकी बकरत है। यह नहीं कहा जा सकता कि ट्रान्सवालमें इस समयकी कितनी बकरत होनी। केवल इंग्लैंडमें भी रिचको पैसा खेदना तो बहुत बकरत है। समिति यदियमें बकानी है या नहीं इसपर हम महां विचार नहीं करते केवल समितिका काम समेटनेमें कुछ नहीं तो ल महीने का चारोंगे। तबतक समितिको बकानेके बकाना कोई चारा नहीं है। इसमें ट्रान्सवालकी ओरसे भी रिचको अपना भा चुका है, इसलिये [पिचवाल] ट्रान्सवालमें और अपना बकाना मुक्ति है। अतः यह बोला अब दूसरे उपनिवेशोंके भारतीयोंको उठाना चाहिए। हमारी बृष्टि मुख्यतः नेटाकके ऊपर जाती है। नेटाक अबतक इस समितिको बकानेमें भाग लेता आया है। इसलिये हम माथा करते हैं कि वह इसबार भी अपना कर्तव्य पूरा करेगा।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियम १३-२-१९०९

इस पत्रके पाठक हमारे इस सप्ताहके स्वाम्मोधि बेलमें कि सरकारने अब उन सप्ता प्रहियोंको एक-एक करके पकड़ना शुरू कर दिया है जो अहितकारी विरवस्त और सच्चे सिद्ध हो चुके हैं। इस सम्बन्धमें हमारा खयाल है कि सरकार सभी वर्गोंकी मोरसे बर्बादकी पात्र है। जिस पक्षसे सरकार बढ़ रही है उससे हम खल्दी ही यदि सबको नहीं तो अधिकतर, सरवाप्रहियोंको बेलमें पायेंगे। हम झूठेसे सच्चाको बलम कर सकेंगे और सरकार स्वयं बेल केनी और उपनिवेशको भी दिखा देयौ कि सच्चे सत्याप्रहियोंका उपनिवेशमें एशियाईयोंकी बाइसे कोई सम्बन्ध नहीं है। वे बोखानड़ीको बढ़ाना सेतेसे कोई सरोकार नहीं रखते। जिस बातकी वे परवाह करते हैं और जिसके लिए वे रुझ रहे हैं, वह है उस समाजकी नेकनामी जिसके वे सदस्य हैं और यदि सरकारको ऐसे लोगोंको उनके जीवन-सर बेलमें रखना अनुकूल पड़ता है तो वह सत्याप्रहियोंको भी बहुत अनुकूल पड़ेगा। बेलमें रहनेपर भी उनके हार्पोंमें समाजका सम्मान सुपक्षित रहेगा। उनकी पवित्र सपनका पासन हो जानेगा। वे जिस धर्मको मानते हैं उसका पासन कर सकेंगे। इससे अधिकनी मनुष्यसे बाधा नहीं की जा सकती। फिर, सरकार चाहे तो इस बातके लिए अपने-आपको साबायी बें सकती है कि उसने सत्याप्रहियोंको ऐसी स्थितिमें ला रखा है कि वे कोई हानि पहुँचा ही नहीं सकते। लेकिन अब सवार मान्योपमकी बामिक्रताको देख सकेवा तो भी उस रूपमें जिस रूपमें खम्बया नहीं देखा जा सकता।

सत्याप्रहियोंके सम्बन्धमें पराजय-बैसा खम्ब है ही नहीं। इसका सीना-साधा कारण वह है कि सत्याप्रहमें पाठविक बलकी परीक्षा नहीं होती। पाठविक बलकी परीक्षामें एकको तो बलस्य हार माननी पड़ती है।

[अधेबीसे]

इंडियन ओपिनियन २०-२-१९१९

१२५ संविधान

संघ-अधिनियमके मसविदेको^१ हम बितनी अधिक बायीसे देखते हैं वह हमें उतना ही कम खँचता है। वह दस्तावेज प्रजातीय पूर्वग्रह प्रतिक्रियावाक और कमबोर मोड़-तोड़की गंभसे भर हुआ मामूम होता है। हम उसे बितना पढ़ते हैं उतना ही कपटा है कि उसमें कोई सिद्धान्त नहीं है। उससे प्रकट होता है कि केपमें रंगवार मसबताओंके मताधिकार चीनकेकी बहुत बड़ी कोदिल की गई थी। और आज संविधानका जो रूप है वास्तवमें उसमें भी उनके मताधिकारसे बंधित किमे जानेकी — चाहे बोड़ी ही हो — सम्भावना है। हमें मामूम हुआ है कि साम्राज्य-सरकारने खम्ब ३५ को पढ़के ही मंजूर कर किया है। दूनसबाकमें हमने जो सबक सीखा है उसे देखते हुए इसपर हमें कोई खचम्मा नहीं होता। नेताओंके मायी रंगवार मसबताओंका मताधिकार सचमुच चीन किया गया है। संघ-अधिनियमके मसविदेसे उनके मायी विधेयाधिकार साफ छिन पने हैं और वे विस्तुत विपत्तियें पड़ गये हैं। फिर,

हालांकि कुछ समयमें केपका प्रतिनिधित्व बढ़ जायेगा परन्तु वह केवल यूरोपीय आबादीकी बृद्धि आधारपर ही बढ़ेगा। रमदार झींझोंकी उल्लाह फिर की गई है और केपके प्रतिनिधियोंकी जो संख्या बढ़ेगी वह कुछ समय बाद इसी आधारपर वह अन्य उपनिवेशीय सदस्योंकी संख्या बढ़नेसे अनुमित ही जायगी। इस तरह केपका साम साम न रह जायेगा। श्री विटिसटन संविधानकी टीका करते हुए जब यह आपह किया था कि उसपर विचार करते वकन ट्रान्सवालके ब्रिटिश भारतीयोंकी स्थितिपर सावधानी और सहानुभूतिसे विचार किया जाये तब वे बहुत अच्छी तरह जानते थे कि उनके आग्रहका मतलब क्या है। जगता है कि उनकी बात समीपर लागू होगी है। स्पष्ट कहें ता अपिक-संसदित-सपरी योजना स्वतः चाह किन्ती ही सहायनीय हा हम ता यही चाहेंगे कि साम्राज्यकी इलाका मुकयान पहुँचाकर उसे पूरा करनेके बजाम अनिश्चित बकत तक टाल दिया जाये। वह बालकी भीतसे भी ज्यादा कमजोर बीज होगी।

[अधेजीमे]

इंडियन ओपिनियन २०-२-१९१९

१२६ पारसियोंकी बहादुरी

इस तमिल समाजकी बहादुरीके सम्बन्धमें लिख चुके हैं। श्री बट्टियाण जब पहुँच गये। इस समय बहुत-से तमिल जेकमें हैं, जहाँ तमिल समाजने अपना तैत्र असीतक मन्त्र नहीं होने दिया है। प्रिटोरिया [नमिदि] के अन्धता थी लिम्बेको भी छ महीनेकी मजा मिली है। जैसी बहादुरी तमिल लोगोंने दिखाई है वैसी ही बहादुरी पारसियोंने भी दिखाई है। यह तो ईश्वरकी अद्भुत महिमा है कि पारसियोंकी आबादी संसार भरमें एक सातने ज्यादा नहीं है फिर भी यह समाज अपने कुछ उज्ज्वल सुबोकि कारण संसारमें प्रतिष्ठित है। यह कहा जा सकता है कि सभ्य जर्मोंने भारतमें यही समाज सम्य चलाया है। बम्बई भारतकी सांस्कृतिक राजधानी है और बहोली साधन-सौकर्य सुख्यत पारसियोंकी बसोबास है। उनकी हालतीफता सब जगह जाहिर है। वे राजनीतिक मामलोंमें अग्रणी हैं और भारतक राष्ट्रनिर्मात्रह कामाई भी पारसी ही हैं। ऐम समाजके लोगोंता दक्षिण आफ्रिकामें भिन्न प्रकारसे व्यवहार करना सम्भव नहीं था। जैसे यह कहा जा सकता है कि समस्त तमिल समाज नष्ट पड़ा है वैसे ही यह भी माना जायेगा कि समस्त पारसी समाज इना हुआ है। पारसियोंकी संख्या दक्षिण आफ्रिकामें बहुत कम है लेकिन जबर दीवाने है ता हमें दाम्बबालमें कोई पागमी ऐसा दिखाई नहीं देता जिसन सरकारके इस बेडम कानूनका माना हो। नदालमें कम पाँच या सात पारसियोंने वे तीन तो दाम्बबालकी जेलमें बिराजमान है। श्री नादिरशाह काफाने अपनी मोहरी छात्र की। वे अब बिराजान हो गये हैं और हमें आता है कि बाड़े हो दिनामें जेलमें या बिराजेंगे। उनक भाई भी अदालत कावा भी बिराजान हो गय है। दूसरी ओर श्री मुल्ता बागु चीरोर भी बन्दे जा चुके हैं। यह दूसरे सब दिन गिला जेल योग्य भारतीयोंके है। इस कागमी समाजको बर्पाई बने है। उनकी चीन्हा नारे भारतीयोंकी सोमा है बसोकि वे भी भारतीय हैं। तमिल और पारसी लोगोंके सामने दूसरे भारतीयों—मुसलमानों और

मुबराती हिन्दुओं—को अपना सिर झुका केना चाहिए और समित्वा होना चाहिए। इस को समाजिक उदाहरण जब हमारे घरमें ही मौजूद हैं, तब हम भारतीयोंको दूसरे उदाहरण देकर क्या बोस दिखायें? तमिळ और पारसी तो जीत गये और जब कड़ाईका मन्त होया तब साठ भारतीय समाज उसका काम उठायेगा लेकिन जीतका यद्य तो उन्हीको देना ठीक होना। वे ही राजा हूँगे और राज्यपर उन्हीको शोभा देया। इस दूसरे लोग प्रजा माने जायेंगे।

[मुबरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २०-२-१९१९

१२७. क्या भारतीय झुक जायेंगे ?

इस बखबार उठाते ही देखते हैं कि मैसिकोमें नाटक देखने गये हुए ५ लोग नाट्य सामाने आम लज जानेसे बच मरे। ईसमेंमें इरखमकी खानमें बिस्कोट होनेके कारण २ मजदूर बच मरे। अभी कुछ ही दिन पहले यह भी देखा था कि भारी बर्फके कारण बोहानिसबर्नके पाषाणी खानोंमें पानी भर जानेसे बहुत-से लोग मर गये।

ऐसी ही बीबी बेताबनियाँ हम लोगोंको समय-समयपर मिलती ही रहती हैं फिर भी हम अपने निश्चित कर्तव्योंको करनेसे पीछे हट जाते हैं। या तो बच जानेके मयसे या सारीरिक बोझिमसे या ऐसी ही दूसरी बाबाबोकिके कारण हम अपने द्वारा निश्चित कार्योंको पूरा नहीं करते। बिच खरीरका बड़ी-मरका भी भरौसा नहीं है उसकी सार-सोभाकमें हम बिन-रात तल्लीन रहते हैं। ऐसे ही कारणसे ट्रान्सवालके भारतीय भी आम बर्फके बहुत-कुछ किनारे करनेका बखबर ना मया है पीछे झूटने लगे हैं। यह ऐसी बात है जो भारतीयोंको शोभा नहीं देती फजती नहीं। हमारे बिच्छ सबसे बड़ा आरोप यह लगाया जाता है कि हममें पीरप—बस—नहीं है। हम कुछ दिनों बहुत मेहनत करते हैं और फिर बैठ जाते हैं बचना यदि कुछ करते भी हैं तो मनमें बोरी रखकर करते हैं। अब इस आरोपको मुठा कर दिखाना भी ट्रान्सवालकी सड़ाईका एक बंध माया वा सफटा है। यह कड़ाई ऐसी है जिसमें भारतीयोंके बहुत-से गुणों या दोषोंकी कसौटी हो जावनी। इसकिण सामान्यत इसमें बहुत-सी बातें ना जाती हैं।

भारतीयोंको यह समझ देना है कि इस कड़ाईमें न एक-दूसरेकी ओर देखना है और न एक-दूसरेकी ओर अँगुली दिखाना है। प्रत्येकको अपनी-अपनी हिम्मतको कसौटीपर कसना है। हमें बाध रखना है कि हम दिन जोयंकि बिच्छ लड़ रहे हैं वे खुब भी कठिन कष्टोंमें से गुजर चुके हैं। अभी सिक ३ साल पहले इस बातके नीर पुष्य बच मरते थे लेकिन अपनी टेक नहीं छोड़ते थे। जॉन बनिमन नामके एक बर्गमना ही मये हैं। बाब उर्हूँ गोरे पूजते हैं। लेकिन उन्हीने अपने जीवनमें महान दुःख सहकर बारह वर्षका कठिन कारवाज मोया था। उन दिनोंकी जेल बिल्कुल अन्धकूप ही होती थी। जॉन बनिमनने जो कष्ट सहन किये वे केवल अपनी टेक रखनेके किए ही। उन दिनों लोग किसी बाध निरखेमें नहीं जाते थे तो उनको कैद कर दिया जाता था। जॉन बनिमनने कहा कि उर्हूँ बड़े-बड़े पिरजेमें भी कोई अबररहती नहीं से वा सफटा। इसीसे कर्हूँ बेजकी सजा मोदनी पड़ी। वे जेलको

महत्त्व समझकर रहे। वहाँ उन्होंने जो पुस्तक लिखी आज उसको छात्रों मोरे अत्यन्त धन्य पूर्वक पढ़ते हैं। ऐसा भाग्य जाता है कि वैसे पुस्तकें दूसरी भाषाओंमें बहुत कम हैं। जॉन बनियमने इसकी परवाह नहीं की कि दूसरे लोग क्या करेंगे। उन्हें तो अपनी टेक रखनी थी जो उन्होंने रखी और बेसमें रहे। फिर भी वे बीठे। उन्हें बेधमें रखनेवाले लोगोंको काज भी बुनियाद बिल्कवाली है। इसके अतिरिक्त जॉन बनियम-वैसे मनुष्यके जेस जानेसे अन्य लोगोंको छुटकारा मिला। ऐसे व्यक्तिकी जातिके साथ हमारा पाला पड़ा है। हम तो मानते हैं कि यह हमारे लिए बड़े भाग्यकी बात है। हमें अपनेसे मोझी टेकवाठे जोयोंसे टेककी सीख नहीं लेनी है। गीबड़से भाईचारा बाढ़कर हम पीबड़ ही रहने और सिहकी संघठिमें हमें मा तो मर मिटना है या सिहकी तरह ही गर्जन करना है। हमारा पाला सिह जैसे मोरसे पड़ा है। वे हमपर बहुत कुस्म बाते हैं। अगर हम सीधा घोषे और उनसे टककर सें तो हमें बाधता नहीं भोगनी पड़ेगी और हम द्वान्द्वबासमें मुक्त रहकर उनकी बचवरीके बनें। इस लड़ाईमें इतनी बीरवाकी गुबाहस है, जिससे हम उनकी बचवरीके बन सकते हैं। इस छाहसकी छफकटाके लिए आनन्दपकटा है सच्चे ज्ञान और सच्ची जिज्ञा की। यह ज्ञान अक्षर ज्ञान नहीं है और न यह जिज्ञा बड़ी-बड़ी किताबोंको पढ़नेमें है। यह ज्ञान और जिज्ञा इस बातमें है कि हम कौन हैं यह समझें यह जानें और इसे समझकर उसके अनुसार बनें और रहें।

हमारी ओहानिधकरीकी बिठडीस प्रकट होना कि अब सरकारने जोरसे धर-पकड़ शुरू कर दी है। जो भी आदमी कुछ माना जाता है उसे यह पकड़ लेटी है। हम विरस्तार किसे गये ज्योंको बधाई देते हैं। हम ईश्वर, कुबासे प्रार्थना करते हैं कि उनमें अन्त उठ लड़नेकी हिम्मत बनी रहे। उनके छाहससे द्वान्द्वबासके भाषीयोंका दक्षिण भाषिकाके भाषीयोंका — सब देखा जाय जो समस्त भारतके ज्योंका — मजिप्य उज्ज्वल होगा। यदि वे बोड़े हैं तो इतने उन्हें डरना नहीं है। फिकहसस यह बात स्पष्ट है कि जो लोग विरस्तार नहीं हुए हैं वे हार ही गये हैं। और सामान्यतः यह समझा जा सकता है कि उन्होंने सरकारसे समझौता कर लिया है। यह सच है कि अभीतक कुछ जोरदार भाषीय भी नहीं पकड़े गये हैं। उनको भी बीरे-बीरे पकड़ लिया जायेगा। किन्तु समय ऐसा आ रहा है कि अब प्रायः सभी सच्चे सत्याग्रही बेधमें निरासें। इसलिये हमारी आस सकाह है कि जो पूरा जोर लगाता चाहते हैं वे निर्भय होकर बाहर निकल पड़ें। उनको यह चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं है कि उनके पीछे काम करनेवाला कौन रहेगा। आगे-पीछे अयल-बयल ऊपर-नीचे सब स्थानोंमें परलेखर तो है ही। उचीका नरोसा है। वही व्यवस्था करेगा। फिर मानवीम सार-संभारकी क्या जरूरत है? हमारी जिज्ञा ही क्या है? बहापुर भी अस्नात कुछ समयमें बेध पहुँच जायेगा। और हमें आशा है कि उनके बाद एकके पीछे एक अन्धकोंका ताँटा बँध जायेगा। हम फिर याद दिलाते हैं कि जो भाषीय गिर गये हैं वे दुबारा गर्जन करके उठ सकते हैं। वे अपने परवाने फड़ बाँधें अपने प्रभावपत्रोंकी होखी जका दें। बध वे स्वतन्त्र ही जायेंगे।

लड़ाई लड़नेकी वैसे सुविधा इम्सबासमें है वैसे हमने कहीं दूसरी जगह नहीं देखी। भाषीय ऐसे सुन्दर अक्षरको क्यों न पहचाने और पहचानकर छोड़ क्यों दें यह हम समझ ही नहीं सकते।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २ - २ - १९ ९

१२८. हुवा घन्टी

अखबारोंसे लखर मिली है कि जो काम नेतासक भारतीय कर सकते वे उसे सब ए-ए-सलामक भारतीय करना चाहते हैं। बार-ए-सलामके भारतीय जर्मन पूर्वी आस्ट्रिया साइनके जर्मोंका बहिष्कार करना चाहते हैं^१ क्योंकि यह कम्पनी पहले बर्सेमें भारतीय यात्रियोंको फेटी और लोपोंका सामान आदि जो काम तो मुनबाई नहीं करती। एमटरका एक टार बर्लिनसे आया है। व्यापारियोंने अपना मान इस कम्पनीके बहुराजोंमें न ममानेका बार किया है और यहाँतक कहा है कि कम्पनीके कर्मचारी सम्मानपूर्वक बरखाव न करेंगे व कामसे न बर्लिन तो वे अपने काम नहान रखकर उनसे काम लेंगे। इस प्रकार हम ले है कि चारों ओर आत्मसम्मानकी — स्वरोपमन्तिकी — हुवा बह रही है। सबको ऐसा रखा है कि दुनियामें एक देशके लोग दूसरे देशके लोगोंसे स्वर्ण कर रहे हैं। उसमें यदि लीय अपना छिर डँबा न करेंगे और साबधान न रहेंगे तो निस्सुधी तरह कुछसे कामने व ऐसा हाक हो जायेगा कि उन्हें कोई कौड़ीके मोक भी नहीं पूछेगा।

[मुनरापीसे]

इंडियन ओपिनिपन २०-२-१९ ९

१२९. फोक्सरस्टमें मुकदमा^२

फोक्सरस्ट

गुववार [फरवरी २५, १९ ९]

आज सर्बमी मो क गांधी सोमामाई पटेल और छः दूसरे लोगोंको बंजीयन प्रभावपत्र^३ करने और अंबुक्तियोंकी छाप देने या तिलास्तके दूसरे ताबन प्रस्तुत करनेसे इनकार करनेपर नपमोंके अनुसार पचास पीड जुर्मनेकी या तीन नहीनेकी कड़ी बंदकी सजा दी गई।^४ जेल बने पये।

धी गांधीने अदास्तमें अपना डैते हुए कहा

यह मेरी बदनसीबी है कि मुझे एक ही आरणमें डूमरी बार अबास्तमें वेग होना पड़ा मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैंने इच्छतन और जान-बूझकर यह अपराध किया है। रिमानदाटीसे जाहा है कि पिछके अनुभवको देखते हुए आने आबरमको जाँचूँ और मैं ने इस नतीजेपर कामन हूँ कि मेरे देशवासी चाहे जो करें या सोचें मुझे तो राज्यके एक रिक्तके कामें और अपनी अन्तरात्माको सबसे ऊपर माननेवाले व्यक्तिके कामें तरनक व सजाएँ भोग्य रहना चाहिए जबनक राज्य आने नागरिकोंके एक बर्सेके साथ स्वापरी

१. देखिए एम ७ एड ११३ और १२४-२५।

२. हुवामेडा पर विस्तार "हमारे निजी संसारदाता इत बर्लिन" कामें एम ७ एड वा। एम ७ वा: "धी गांधी जेल बने; इतक और रिक्त होनेसे इनकार करनेपर तीन बर्लिनकी सजा देर।"

३. एन्ड्रोयस एडिपिडेट।

४. एडे हुवामेके विर देखिए एड १०५-६।

मेरी अपनी धारणाके अनुसार, न्याय नहीं करता। यदि मेरा यह आचरण निन्दनीय समझा जाये तो इस एविमार्ड संघर्षमें मैं अपने-आपको सबसे बड़ा अपराधी मानता हूँ। इसलिये मुझे प्येह है कि मुझपर एक ऐसी धारणाके अनुसार मुकदमा चलाया जा रहा है जिसमें मैं अपने लिये नहीं घना नहीं माँग सकता जो मेरे कुछ साथी आपत्तिकर्ताओंको भी गई है। फिर भी मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे ज्यादासे-ज्यादा सजा दें। अराकल और सरकारी बकीलने मेरी पत्नीकी बीमारीकी मजहसे मुझे अपनी देर करलेकी मजरी देकर जो शिष्टता दिखाई है, उसके लिये मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

मदिलेदने सजा देते हुए कहा : मैंने पहले भी कहा है कि यह अपनी-अपनी रायकी बात है। आपकी अपनी राय है। मैं तो कानूनके मुताबिक ही कार्रवाई कर सकता हूँ। चूंकि आप नहीं चाहते कि आपके साथ दूसरी तरहका बरताव किया जाये इसलिये मैं आपसे बड़ी बरताव करेगा जो मैंने इस स्थितिमें पड़े दूसरे लोगोंके साथ किया है।

[अभिनीते]

इंडियन ओपिनियन, २७-२-१९९

१३० सन्देश दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयोंको'

[बोहानिसबर्ग

फरवरी २५, १९९]

मैं फिर जेल जा रहा हूँ इससे मुझे बड़ी खुशी हुई है। कुछ इतना ही है कि मुझ केमक टीम ही महीनेकी सजा मिछी है जब कि दूसरे साथीसही बैचसेबकोंको छ-छ महीनेकी मिछी है।

जब जब मैं जेल जा रहा हूँ तब देलता हूँ कि बहुत-से भारतीय परत हो गये हैं। अब जोड़े ही भारतीयोंको केकर सजाई चलायी है। इससे मैं निबर हूँ। अब सजाई कुछ इस तक ज्यादा जोर पकड़ सकती है।

जो लोग परत हो गये हैं वे फिर उठ सकते हैं और जेल जा सकते हैं। वे उठने ऐसी आसा रखता हूँ।

यदि फिर नहीं उठ सकते तो भी वे पैसोंकी मदद से सकते हैं और जेलबारोंमें लिख सकते हैं कि डार जानेपर भी वे सजाईमें साथ हैं और उसकी सफरवा चाहते हैं।

द्रामबासके बाहरके पड़े-खिखे लोग यहाँ आकर जेल जा सकते हैं। यदि वे ऐसा न करें तो वे बहाँ हों बहाँ रहकर समाजमें स्वयंसेबकोंका काम कर सकते हैं। दक्षिण आफ्रिकाके सब भारतीयोंका कर्तव्य है कि वे समार्य करें, तार दें और प्रस्ताव पास करें।

यह सजाई बीनकी है, बर्मकी है, बर्बाद जो बर्म सब बर्मोंमें व्याप्त है, यह उस बर्मकी सजाई है। यदि मेरी मायता ऐसी न होती तो मैं समाजको इस महा दुःखमें पड़नेकी सहाह न देता। मैं मानता हूँ कि इस सजाईमें अपने सर्वस्वकी आहुति देना भी कठिन नहीं होगा।

१ द्द २५ फरवरीको, विज दिव तंवीकी जेल गये वे लिखा गया मजह होता है। देखिये बाजब कीर्तक भी।

बाहिए। इसमें अपने सगे-सम्बन्धियोंकी पीछे-टकेकी और अपनी जानकी कुर्बानी करना प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है। मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि इस कर्तव्यको सब भारतीय पुरा करें, और भारतीयोंसे भी मैं यही मानता हूँ।

कड़ाईको बन्धी खत्म करना भी हमारे ही हाथमें है।

समाजका सेवक और सत्याग्रही
मोहनदास करमचन्द गांधी

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १-३-१९ ९

१३१ संबोधन तमिल भाइयोंको

[कोयंबटूर
फरवरी २५, १९ ९]

अपने तमिल भाइयोंसे

संघर्षके दौरान तीसरी बार
लेख जानेके पूर्व

मैंने अपने संबोधनोंको गुजरातीमें एक पत्र लिखा है। किन्तु सुन्दर तमिल भाषाका पर्याप्त ज्ञान न होनेके कारण आपको मैं अंग्रेजीमें लिख रहा हूँ। जाया करता हूँ कि मेरी बात आपमें से कुछ लोगों तक तो पहुँच ही जायेगी। संघर्ष अब अत्यन्त नाजुक स्थितिमें पहुँच गया है। भारतीय समाजके बुरे बगोंके अधिकतर जोय बहुत कमबोर होनेके कारण हार गये हैं परन्तु तमिल और पारसी समाजोंके अधिकतर जोय मजबूतीसे बड़े हुए हैं। इसलिये कड़ाईका मुस्ब धार उनके ही कर्बोंपर पड़नेवासा है। मैं प्रभुसे प्रार्थना करता हूँ कि यह आपको यह मार उठानेका पर्याप्त बल दे। आपने अपना कर्तव्य ध्यानसे निभाया है। यह उचित कि हम प्रह्लाद और सुबन्धाकी सन्तानें हैं। वे दोनों ही मूर्खतम इनके सत्याग्रही थे। जब उनसे कहा गया कि वे ईश्वरको न मारें उन्होंने अपने माता-पिताओंकी आज्ञा भी नहीं मानी। उन्होंने अपने उत्पीड़कोंको कष्ट देनेके बजाय स्वयं भोर कष्ट सहे। द्रासबाळवासी भारतीयोंसे बहूतक अपने पुंसलका परिचयान करने अपनी प्रतिज्ञासे पीछे हटने और अपने राष्ट्रका अपमान मंजूर करनेके लिये कहा जाता है, बहूतक ईश्वरकी माननेसे इनकार करनेके लिए ही कहा जा रहा है। क्या हम वर्तमान संकटमें अपने पूर्वजोंसे कम उठरेंगे ?

मो० क गांधी

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन १-३-१९ ९

१. यह उत्तर १ मार्च १९ ९ के इंडियन ओपिनियनमें "मराठीको संबोधन : श्री गांधीका तमिल भाष्य" शीर्षकसे छपा था। आन्ध्रप्रदेश आदिप्रदेशमें कड़ा तमिल बतुनाए दूखलकक विधिक मराठीक संरक्षी बार्डर सुलन केवलके कि एरिडिडके कने मराठीक विना था।

२. इंडियन ओपिनियन १-३-१९ ९

१३२ पत्र श्रीमती चचलबेन गांधीको

फोर्स्टरस्ट जेल
ट्राम्बवाल
फरवरी २६ १९ ९

पि चंचल

तुम्हाण पत्र बिस्तुळ ही नहीं है, इससे मैं विन्न हूँ। देखता हूँ बाकी तबीयत ठीक होती जा रही है। उसको अच्छे-अच्छे सेल और अच्छे-अच्छे काम्य पढ़कर सुनाना। बासे पूछकर मुझे बराबर पत्र लिखा करो। उसमें तुम और मणिबाल सही किया करो। बाके विचार पूछकर वे जो कई यह भी लिखा करो।

तुम अपनी तबीयतकी खबर देना और अपने बाहिने काम पैर तथा बासीकी हालत बताना।

जानेमें मैंने जो फेरफार किया है, उसे आज्ञा रूप समझकर उसका पालन करना। दूध और सागुधानेकी और नियमसे खाना। रामीको अभी थोड़े दिन बूच पिनायी रहना। बूच पिनाया बन्द करनेके बाद भी ठीक कुछ केती रहना। जबतक खुसी हवा नहीं मिलेगी जबतक तबीयत बिस्तुळ ठीक नहीं होगी। अधिक कुछ लिखनेको नहीं है।

बिभीसे' कहता कि उपद्रव बिस्तुळ न करे। रामबासका मजा खराब हो तो मिट्टीकी पट्टी बांधना।

मोहनदासके आशीर्वाद

[पुनश्च]

हरिकाल और मैं दोनों मरेमें हैं। तुमसे हम यहाँ ज्यादा मुसी हैं ऐसा मानना। यह पत्र बाको पढ़ा देना।

गांधीजीके स्वाधरोंमें मूल नुसखती प्रतिकी फोटो-कॉपी (एच एन १५२५) से।

१३३ एम० ए० की परीक्षा

ट्रान्सबाळकी लड़ाईपर बहुत-कुछ निर्भर है इसलिये उसके सम्बन्धमें हम बहुत और बार-बार लिख रहे हैं। यही टीक बनना है। हम सब भारतीयोंसे निवेदन करते हैं कि ऐसी लड़ाई भारतीय समाजके हाथ फिर नहीं आवेगी। लड़ाई यहाँतक पहुँची है, यह मामूली बात नहीं है।

लेकिन कुछ भारतीय सोचते हैं कि हमें भारतीय हार नये हैं। अब क्या करें? ऐसे हम नासमझी मानते हैं। जैसे कुछ भारतीय हारे हैं वैसे ही दूसरे ऐनिक बलोंने भी कुछ कोन हारते आये हैं। इसमें कोई नई बात नहीं है।

इस बारकी लड़ाई एक तरहसे हमारी परीक्षा है। हम पढ़ रहे हैं। सब पढ़नेके लिए तैयार हुए। पहली पोषी हजारोंने पढ़ी। दूसरी पोषी पढ़ते-पढ़ते कुछ कोन डीके पढ़ गये। वे रूढ़ गये। इस तरह करते-करते हम सातवीं पोषी तक पहुँचे। अब तो कठिन समय आ गया। बहुत-से लोगोंने पढ़ाई छोड़ दी। फिर भी बासे लोग मैट्रिक तक पहुँच गये। लेकिन इससे आये बहनेकी हिम्मत कुछ ही लोगोंको हुई। इसके बावजूद अच्छी संख्यामें कोन जाने बढ़।

अब यह बाकिरी सीड़ी है। इसमें तो एम ए की उपाधि लेनी है। यह तो शैकड़ों लोग नहीं लेते। कुछ ही ले सकते हैं। तो क्या दूसरे लोग परीक्षा नहीं लेते इसलिये परीक्षा देनेबासे हारे हुए कहलायेंगे? यह तो कमी नहीं हो सकता। जो एम ए हो गये वे तो जिते ही लेकिन इतना ही नहीं उनके पीछे जो दूसरे लोग रहे, वे भी बमक कर निकसेंगे।

इस प्रकार हम इस समय बसे सत्वाइहियोंको एम ए के परीक्षाधिकारोंका क्य लेते हैं। उनको निराश नहीं होना चाहिए बल्कि बबतक बने रहनेपर बर्न करना चाहिए। समाजमें बहुत पढे-लिखे लोग कम ही होते हैं। लेकिन कम होनेपर भी उनसे सहायता अधिकसे-अधिक मिलती है। ट्रान्सबाळमें ऐसी ही स्थिति है। फिर चाहे जो भारतीय इस समय कम रहे हैं वे कम ही रहे गये हों लेकिन उनकी सहायताको बहुत समझना है।

[मुबलपरीषदे]

इंडियन ओपिनियन, २७-२-१९०९

प्रिय वेस्ट

मैं अभी तक बायें हाथसे काम करता हूँ। बायाँ हाथ मुझसे ही काममें ला सकता हूँ।

अधिकारी मुझे भीमती गांधीको गुजरतीमें पत्र लिखनेकी अनुमति न दें। मुझे उनके लिए और हरिदासकी पत्नीके लिए खेद है। मैं नहीं जानता कि [मेरी] पत्नी मेघ अंग्रेजीमें पत्र लिखना पसन्द करेगी या नहीं। मैं जानता हूँ कि मैं कोई नई बात नहीं लिख सकता। वे मेरे हाथके लिखेकी ही पढ़ना चाहती हैं। मुझे लगता है कि अनिच्छापूर्वक बिदे गये अधिकारका काम न उठना अधिक गौरवास्पद है। मुझे आप या मधिसाध अंग्रेजीमें लिख सकते हैं कि उनकी दैनिक प्रवृत्ति कैसी है। हरिदासकी पत्नीके सम्बन्धमें भी लिख सकते हैं। यदि अधिकारी चाहें तो मुझे वे पत्र वे देंगे और मुझे रोगीके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें कुछ मालूम हो जायेगा।

कृपया भीमती गांधीसे कह दें कि मैं बिल्कुल अच्छा हूँ। मैं जानती हूँ कि मेरा सुखी होना बाहरी बातावरणकी अपेक्षा मेरी मानसिक स्थितिपर अधिक निर्भर है। वे इस बातका ध्यान रखें और मेरे सम्बन्धमें चिन्ता न करें। क्योंकि हिसके लिए वे अपनी उद्योग सुधारनेका प्रयत्न करें। वे पट्टियाँ नियमित रूपसे रखें और आवश्यक हो तो कटि-स्नान भी करें। मैं उन्हें जो कुरान देता था उसपर कायम रहें। उन्हें [कृपया] तब तक धूक न करना चाहिए जब तक बिल्कुल अच्छी न हो जायें।

हरिदासकी पत्नीको सब हिदायतें दे दी हैं। वह उनका मुलाहिक बलती है यह जानकर मुझे खुशी होती। उसे सुबह सानूबाना और दूध लेना कभी न भूलना चाहिए। वह इनकी अवस्था के उसका ध्यान मधिसाध रखें। रामीको कभी एक महीने और माँका दूध पीने दें। उसका स्नान-पान धीरे-धीरे ही कृपया ला सकता हूँ।

मुझे बतावा गया है कि यदि गुजरतीमें लिखी पिट्टी मंजूर कर दी जाये तो भी वह मुझे इस विनये पहले न दी जा सकेगी।

सबको नमस्कार!

हरबसे आपका

मो० क० गांधी

[पुनरावृत्ति]

कृपया [मेरी] पत्नीके सिध भविष्यके इसका अनुवाद कर दें।
मुझे भरोसा है, श्रीमती बेस्ट ठीक होंगी।

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें पंदिच्छे लिखे मूस बंदेबी पत्र (पी डब्ल्यू ४१७५) से।
श्रीजगन्नाथ श्रीमती सुधीजननेग मांभी।

१३६ महाविद्यालय के लिये गवर्नरको लिखे प्रार्थनापत्रका

[प्रिटोरिया

मार्च ११ १९०९ के बाब]

प्रार्थी एक विविध भारतीय है, जो तीन महीनेकी लम्बी कैदकी सजा भोग रहा है।
प्रार्थीको बत सप्ताह ब्याकूमें हर रोज भातके साथ एक बॉस भी मिलता था। मामूम
हुवा है कि यह पत्नीसे दिया जाता था। प्रार्थी बेसमें इसी मासकी तीसरी तारीखको
किया गया था।

पिछले रविवारके ब्याकूमें ऊपर लिखे अनुसार जो भी दिया जाता था वह दान्य कर
दिया गया है। प्रार्थीने रविवारको भीके बिना भात खानेका प्रयत्न किया लेकिन खाना
मुस्किन्न हो गया।

पिछले सोमवारके प्रार्थीको जो भात मिलता है उसे वह खापायीसे वापस कर देता
है इसलिए उसके पसने ब्याकूमें बिन्मुक्त नहीं किया है।

प्रार्थीने मुख्य बार्डरसे भी न मिलनेकी शिकायत की थी। उसने प्रार्थीको नियम बताने
और सुझाव दिया कि प्रार्थी चाहे तो निरिस्ता-अधिकारीसे मिल सकता है।

इसी मासकी ११ तारीखको प्रार्थी निरिस्ता-अधिकारीसे मिला। वह सास दियावतके
दौरपर ब्याकूमें रोटी देनेका हुक्म जारी करनेको तैयार था।

प्रार्थी इस दियावतकी कद्र करता है। परन्तु वह इसका काम नहीं उठा सका क्योंकि
वह ऐसे भोजनकी कोई सुविधा लेना नहीं चाहता जो उसकी ही स्थितिके अन्व भारतीय
साथी-कैदियोंको न मिलता हो।

प्रार्थीको लगी हुई भोजन-ताकिका रिहाई नहीं थी जिसमें भारतीय कैदियोंके लिए
ब्याकूमें कपमें भातके साथ एक बॉस बर्नी देनेकी व्यवस्था है। टाकिकामें भारतीयोंको
भोजनमें प्रति सप्ताह दो बार मांस देनेकी भी व्यवस्था है।

प्रार्थीको सूचना दी गई है कि यह टाकिका बरत ही गई है और अब भारतीय
कैदियोंको ब्याकूमें बिना बर्निके एक [बॉस] भात दिया जाता है और मांसकी बारीपर
दोपहरके भोजनमें मांसके बजाय एक बॉस भीके साथ भात दिया जाता है।

प्रार्थीके लिए, और अधिकतर भारतीयोंके लिए, वार्षिक दृष्टिके मांस या भोजनकी
बर्नी या ऐसी ही अन्य बर्नी खाना बजित है। भारतीय मूलकमान बिना बर्निके हुए

प्रिय वेस्ट

मैं अभी तक बायें हाथसे काम करता हूँ। बायाँ हाथ मुझसे ही काममें ला सकता हूँ।
 अधिकारी मुझे भीमती यात्रीको गुजरौलीमें पत्र लिखनेकी अनुमति न देंगे। मुझे
 उनके लिए और हरिकलाकी पत्नीके लिए खेद है। मैं नहीं जानता कि [मेरी] पत्नी मेरा
 अंग्रेजीमें पत्र लिखना पसन्द करेगी या नहीं। मैं जानता हूँ कि मैं कोई गई बात नहीं किब
 सकता। वे मेरे हाथके किबेकी ही पढ़ना चाहती हैं। मुझे लगता है कि अनिच्छापूर्वक रिये
 गये अधिकारका काम न उठता अधिक पीरदास्पद है। मुझे आप या महिलाक अंग्रेजीमें
 लिख सकते हैं कि उनकी दैनिक प्रगति कैसी है। हरिकलाकी पत्नीके सम्बन्धमें भी लिख
 सकते हैं। यदि अधिकारी चाहें तो मुझे वे पत्र दे देंगे और मुझे रोबीके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें
 कुछ मालूम हो जायेगा।

रूपया भीमती यात्रीसे कहें कि मैं विस्तृत अच्छा हूँ। वे जानती हैं कि मेरा
 सुखी होना बाहरी बातावरणकी अपेक्षा मेरी मानसिक स्थितिपर अधिक निर्भर है। वे इस
 बातका समाक रखें और मेरे सम्बन्धमें चिन्ता न करें। क्योंकि हितके लिए वे अपनी तबीयत
 सुधारनेका प्रयत्न करें। वे पट्टिवाँ नियमित रूपसे रखें और आवश्यक हो तो कटि-स्तान भी करें।
 मैं उन्हें जो सुझाव देता था उसपर कायम रहें। उन्हें [बुमना]¹ ठबठक बूक न करना
 चाहिए जबतक विस्तृत अच्छी न हो जायें।

हरिकलाकी पत्नीको सब हिदायतें दे दी हैं। यह उनके मुताबिक चलती है यह बातकर
 मुझे खुशी होयी। उसे सुबह सागूदाना और बूक लेना कभी न भूलना चाहिए। यह इनको
 अवश्य है उसका प्यान महिलाक रखें। रामीको अभी एक महीने और मरका बूक पीने दें।
 उसका स्तन-पान भीरे-भीरे ही सुझाया जा सकता है।

मुझे बताया गया है कि यदि गुजरौलीमें किसी बिट्टी मंजूर कर दी जाये तो भी
 यह मुझे इस विनये पहले न दी जा सकेगी।

सबको नमस्कार।

हरबसे आपका
 मो क० गांधी

[पुनराच*]

इपया [मेरी] पत्नीके सिप मभिसारसे इसका अनुवाद करत हँ।
मूसे भरोसा है, श्रीमती वेस्ट ठीक होंगी।

नाचीजीके स्वाकारोंमें वेंसिबसे लिखे मूस अधिमी पत्र (पी डब्ल्यू० ४९७५) से।
सौजन्य श्रीमती मुछीअनन मांभी।

१६६ ससविवा जेलके गवर्नरको लिखे प्रार्थनापत्रका*

[प्रिटोरिया

मार्च ११ १९१९ के बार]

प्रार्थी एक ब्रिटिश भारतीय है, जो तीन महीनेकी कड़ी कैदकी सजा भोग रहा है।
प्रार्थीको गत सप्ताह ब्याडूमें हार रोज मातके साथ एक बीस भी मिलता था। माडूम
हुमा है कि यह गलतीसे दिया जाता था। प्रार्थी जेलमें इही मासकी सीपरी टापीकको
काया गया था।

पिछले रविवारसे ब्याडूमें ऊपर लिखे अनुसार जो भी दिया जाता था वह बन्द कर
दिया गया है। प्रार्थीने रविवारको भीके बिना भाठ जानेका प्रयत्न किया लेकिन जगाम
मुश्किल हो गया।

पिछले सोमवारसे प्रार्थीको जो भाठ मिलता है उसे वह साधारण वापस कर देता
है इसलिए उसके उसने ब्याडू बिस्तुल नहीं किया है।

प्रार्थीने मुख्य कार्दरसे भी न मिलनेकी धिक्कामत की थी। उसने प्रार्थीको नियम बतान
बीर सुझाव दिया कि प्रार्थी चाह तो बिकित्वा-बधिकारीसे मिल सकता है।

इही मासकी ११ तारीखको प्रार्थी बिकित्वा-बधिकारीसे मिला। वह चाप रियायतके
ठीकर ब्याडूमें रोटी देनेका हुकम जारी करनेको तैयार था।

प्रार्थी इस रियायतकी कर करता है। परन्तु वह इसका काम नहीं उठा सका क्योंकि
वह ऐसे भोजनकी कोई सुविधा केना नहीं चाहता जो उसकी ही स्थितिके अन्य भारतीय
साथी-कैदियोंको न मिलता हो।

प्रार्थीको छपी हुई भोजन-तालिका बितार्द परी की जगमें भारतीय कैदियोंके सिप
ब्याडूके रूपमें मातके साथ एक बीस बर्षों देनेकी व्यवस्था है। तालिकामें भारतीयोंको
भोजनमें प्रति सप्ताह दो बार मांस देनेकी भी व्यवस्था है।

प्रार्थीको सूचना दी गई है कि यह तालिका बदल दी गई है और अब भारतीय
कैदियोंको ब्याडूमें बिना बर्षोंके एक [बीस] भाग दिया जाता है और मांसकी वारीपर
दोपहरके भोजनमें मातके बजाय एक बीस पीस साथ भाठ दिया जाता है।

प्रार्थीके सिप, और अधिकतर भारतीयोंके सिप, बर्षिक बुष्टिमें मांस या भेड़-बकरीकी
बर्षों या ऐसी ही अन्य बर्षों खाना बर्षिक है। भारतीय मुतसमान बिना बन्द लिखे हुए

१ यह ससविवा कल उबर ठेकर दिया गया था जो प्रार्थीकी प्रिटोरिया केन्द्रे से।

पशुका मांस या उसकी चर्बी नहीं खा सकते। कुछ अपवादोंको छोड़कर भारतीय हिन्दू मांस या चर्बी कटई नहीं खा सकते।

प्राचीनी विनीत सम्प्रतिमें ऊपर बताया गया परिवर्तन और भी बुरा है। कुछ मित्राये बिना मांस खाना बहुत कठिन है। इसके अतिरिक्त भोजन-तामिका पोषणकी दृष्टिसे अपर्याप्त है, क्योंकि उसमें प्रति सप्ताह केवल दो बीस बी सेनेकी तकबीज है।

प्राचीने देखा है कि पशुनिर्वाको सप्ताहमें दो बार या कमसे-कम एक बार मांसके अतिरिक्त प्रतिदिन एक बीस चर्बी दी जाती है।

प्राचीनी विनीत सम्प्रतिमें पुरानी तामिका जिसमें चर्बीकी जगह बी रखा गया है और मांसकी बारीपर मांसके बजाय खाक रखा गया है, फिर छाया करनेसे म्याम हो जाता है।

यदि यह प्रार्थना अनुचित मानी जाये तो प्राचीनको भय है उसके स्वास्थ्यको पर्याप्त पोषणकी कमीसे हानि पहुँचेगी।

प्राचीन मापका ध्यान इस तथ्यकी ओर भी बाकपित करता है कि जिस परिवर्तनकी प्रार्थना की गई है वह ओहानिसवर्ग जेककी भोजन-तामिकासे मिलता है।

यदि गवर्नरको यह प्रार्थना मंजूर करनेका आनूतन अधिकार (ग)^१ हो तो प्राचीन निवेदन करता है कि यह प्रार्थनापत्र जेक-निवेशकको^२ विचारके लिए भेज दिया जाये।

इसके लिए अनुग्रहीत हूँ।

मो० क० गांधी

टाइप की हुई अंग्रेजी प्रतिसे।

सीजन्य एच एच एच पोष्क।

१९७ पत्र मणिसाल गांधीको

कैरीका नाम मो क गांधी

नम्बर (नामके आबाखरके साथ) ७७७

प्रिटोरिया जेक

ट्रान्सवाल

मार्च २५ १९१९

पि मणिसाल

मुझे महीनेमें एक पत्र लिखने और एक ही पत्र पानेका अधिकार है। मेरे लिए यह एक समस्या हो गई थी कि किसको लिखूँ। मैंने बी रिचका भी पोष्कका और तुम्हारा जवाब किया। मैंने तुमको ही चुना क्योंकि मैं जो-कुछ इन विनों पढ़ता रहा हूँ उस सबमें तुम्हारा जवाब सबसे ज्यादा जाता रहा है।

आपने सम्बन्धमें मुझे अधिक नहीं कहना चाहिए। कहनेकी मुझे अनुमति नहीं है। मैं बिल्कुल आन्तर्हित हूँ और किसीको मेरे सम्बन्धमें विनिष्ठ न होना चाहिए।

१. यह मत होता है कि एकमे कोऊ गन्दीसे परे था है।

२. आन्तरेपर जेक विनिष्ठ।

मुझे आशा है कि जब बिल्कुल अच्छी होगी। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे कई पत्र आये हैं लेकिन वे मुझे दिये नहीं गये हैं। फिर भी डिप्टी मन्जरले यह बतानेकी कृपा की है कि वे [बा] अच्छी हो रही हैं। क्या वे अब जायससे चलती-फिरती हैं? मैं आशा करता हूँ कि वे और तुम सब सबेरे सामाना और पूर भरे रहोगे।

और 'बची' कैसी है? उससे कहो कि मैं उसे रोज़ याद करता हूँ। मुझे आशा है कि उसके सब बाब अच्छे हो पय होंगे और वह और चमी बिल्कुल ठीक होगी। नायूरामजीने उपनिषद्की जो मूमिका लिखी है उसके एक प्रकरणका मुझपर बहुत प्रभाव पड़ा है। वे कहते हैं कि ब्रह्मचर्य आश्रम अर्थात् पहला आश्रम अश्विन अर्थात् संयासाश्रमकी भाँति है। यह सत्य है। खेठ-कूर केवल भोजेपनकी वायु तक अर्थात् बाह्य शास तक रहता है। ज्यों ही किसी बड़केकी समझबारीकी वायु जाती है, उसे अपने बायित्वाका अनुभव करना सिखाया जाता है। प्रत्येक लड़केको इस वायुके पश्चात् विचार और कर्मसे ब्रह्मचर्यका उसी प्रकार सत्य और बहिष्वाका पालन करना चाहिए। उसके लिए इस ज्ञानको प्राप्त करना उसपर आचरण करना कष्टप्रद न होना चाहिए, बल्कि बिल्कुल स्वाभाविक होना चाहिए। उसे उसमें मुक्त अनुभव करना चाहिए। मुझे स्मरण है कि राजकोटमें ऐसे कई लड़के थे। मैं तुम्हें बताना हूँ कि जब मैं तुमसे छोटा था तब मुझे अपने पिताकी सेवा करनेमें सबसे अधिक प्रयत्नता होती थी। बाह्य बर्णकी वायुके बाद मेरा खेठ-कूर बन्द हो गया था। यदि तुम इन तीन ममा पर आचरण करो और यदि वे तुम्हारे जीवनका अंग बन जायें तो बहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, तुम्हारी मिसा और तुम्हारी बीसा पूरी हो जायेगी। मेरी बातपर विश्वास करो उनसे सख्खित होकर तुम संसारके किसी भी भागमें अपनी आजीविका कमा सकोगे और सबसे तुम्हारा आत्मज्ञान—आत्मा और परमात्मा-सम्बन्धी ज्ञान—प्राप्त करनेका मार्ग प्रयत्न हो जायेगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम्हें पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त न करना चाहिए। उसे तो तुम्हें प्राप्त करना ही चाहिए, और तुम प्राप्त कर रहे हो। लेकिन यह एक ऐसी बात है जिसके बारेमें तुम्हें परेषान न होना चाहिए। इसके लिए तुम्हारे पास बहुत समय है और बाकिर तुम्हें ऐसी चिन्ता मिळनी ही है, चाकि तुम्हारा प्रथिमम दूसरोंके लिए उपयोगी हो सके।

माद रजो कि सबसे हमारे भाष्यमें गरीबी बरी है। इसका मिठना जपाक करता हूँ छतना ही मैं यह अनुभव करता हूँ कि अमीर होनेसे गरीब होना ज्यादा बड़ी नियामत है। खेठके फयवसि गरीबीके फयदे ज्यादा मीठे होते हैं।

तुमने बन्धोपवीत से किया है। मैं चाहता हूँ कि तुम उसके अनुरूप आचरण करो। ऐसा लगता है कि सुधोरयसे पूर्व जयना विधिबत् सभ्या करनेके लिए ज्ञानमन अनिश्चय है। इसलिये निश्चित समयपर कार्य करनेका प्रयत्न बरबस करो। मैंने इन सम्बन्धमें बहुत विचार किया है और कुछ पड़ा भी है। मैं स्वामीजीके प्रचारसे सम्मानपूर्वक अवहमति प्रकट करता हूँ। मेरे

१ बंकरमन गर्भी ।

२ धैरायुक्त शक्ति बल्लुप्य सनी; बामिक हृदिष बह सपन और दिग्-सत्त्वज्ञानके अन्वेषण; ज्ञानेन प्रयत्नमें अविश्रान्त अनुभव किया था ।

३ रेडिअर जालमकना, पन्ना २, जन्माल ९ ।

४ खल, बहिष्वा और गदबन्धी ।

५- दिग्-कर्माक बचतक सत्यी संश्रान्त, जिन्होंने १९८-९ में शक्ति बाधिकाका शोध किया था ।

ब्यापकते विस्तृतोत्तरे युगोत्तरे यज्ञोपवीत छोड़ दिया है उनका यज्ञोपवीत ग्रहण करना मूल है। इस समय भी सूत्रों और अन्य बर्णनों के लिए अतिरिक्त मेव है। इसलिए यज्ञोपवीत आज सहायक होनेकी अपेक्षा बाधक अधिक है। मैं इस विचारपर अधिक विस्तृत बर्णन करना पसन्द करता हूँ किन्तु इस समय नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि मैं इन विचारोंको ऐसे व्यक्तिके सामने प्रकट कर रहा हूँ जिसने इस विषयके अध्ययनमें सारा जीवन लगा दिया है। फिर भी मैंने सोचा कि मैं जो-कुछ सोचता रहा हूँ वह स्वामीजी तक पहुँचा हूँ। मैंने गायत्री-मन्त्रका अध्ययन किया है। मैं उसके धर्मोंको पसन्द करता हूँ। मुझे स्वामीजीने जो पुस्तक दी थी वह भी मैंने पढ़ी है। इसके अध्ययनसे मैंने बहुत काम उठवाया है। उसने मुझे स्वामी दयानन्दके जीवनके सम्बन्धमें अधिक विज्ञानु बना दिया है। मैं बोलता हूँ कि उनका पायत्री और बाधसनेन उपनिषद् के कई मन्त्रोंका बर्णन सनातनधर्मों विद्वानोंके किये हुए बर्णनसे विस्तृत भिन्न है। अब कौन-सा बर्णन सही है? मैं नहीं जानता। मैं स्वामी दयानन्दकी सुझाई भाष्यकी अन्तिकारी पद्धतिको सुरक्षित स्वीकार करनेमें हिचकिचाता हूँ। मैं स्वामीजीके ही मुँहसे जानना अधिक पसन्द करूँगा। यादा है मेरे जानेसे पहले वे नहीं जानें किन्तु यदि वे जैसे ही पायें तो क्या वे जितना हो सके उतना साहित्य यहाँ छोड़ जाने या भारतसे भेज देनेकी कृपा करेंगे? मैं यह भी जानना चाहूँगा कि सनातनधर्मके विद्वानोंने स्वामी दयानन्दकी शिक्षाके सम्बन्धमें क्या कहा है। स्वामीजीने मुझे जो हाथसे बने मोजे और बस्ताने भेजे हैं उनके लिए उन्हें ब्ययभाव देना और उनका भारतका पता ले लेना। स्वामीजीको यह पत्र पुरा दिया देना और वे जो-कुछ कहें, मुझे लिखना।

मट्ट केसवरायने मुझे जो उपनिषद् भेंट किये हैं उनके लिए मैंने उन्हें अभी ब्ययभाव नहीं दिया है। वह पुस्तक सचमुच अमूल्य सिद्ध हुई है। उससे मुझे बहुत खान्ति मिळी है। उन्हें भेटी औरते ब्ययभावका पत्र लिख देना और मैंने जो-कुछ ऊपर कहा है वह सूचित कर देना।

पाठशाळाकी प्रवृत्ति कैसी है? कोई दूसरे लड़के जाये है? इशाहीम^१ और मजिदम^२ कैसे हैं? यदि इमारत बन रही हो तो जननमाई^३ उसके चारों कोनोंपर चार टंकियाँ रखवानेका ध्यान रखें। इस सम्बन्धमें श्री इस्माइल कोणसे मिक हें।

श्री कार्बिज कैसे है? उनसे कहना कि मेरे फोक्सरस्ट रवाना होनेके दिन श्री कैमिनीके घर जा ठामाधा हुआ वा उसे मैं नहीं भूला हूँ। मुझे अक्सर उतका ब्यापक जाया है और फिर मैं अपने मनसे सोचता हूँ आखिर हम सब कैसे अहंकारी हैं!

श्रीमती वेस्ट इस समय तक आठरेसे बाहर ही गई होंगी। उनकी श्रीमती पायवेककी और बेबीवेनकी^४ तबीयत कैसी रहती है, मुझे सूचित करना। मेरा विश्वास है कि श्रीमती पायवेक अब भी आपनमें स्नेहसे सबकी देखभाल कर रही होंगी।

१ उभयलिंग ।

२ इत्यादि बीजके संज्ञाने उभयलिंग का नाम ।

३ वह तमिल नाम ।

४ पांथीजीके पत्नीके अन्तर्गत पांथी ।

५. २ एक देवकी लता ।

६. कुमारी देव, २० एक देवकी लता ।

क्या टाकरा' वा मया है? यदि वा गवा है तो कहाँ रख रहा है? कैसा है? उसकी पत्नी कैसी है?

मुझे आता है कि काबामाईका' पुन विस्तृत अच्छा होया और घोरीमाई' तथा मामर' अब कामपर लय गय होंगे।

श्री पोस्कर दफ्तरके काम-मयपर मिनाह रतें। बाबा अणुस्का एंड कम्पनीसे बात करनी चाहिए और जो काम उसपर है उसका कुछ हिस्सा बुकानेके लिए कहना चाहिए। आया है, श्री मीकलटापर दफ्तरके कामके व्यावहारिक भागको देख रहे होंगे। कुमायी स्केपिनकी बीजेके सम्बन्धमें क्या हुआ? मुझे महीनेमें एक मुलाकातीसे मिलनेका अधिकार है। श्री पोस्कर का पायें। मैंने जो पुस्तकें भेजाई थी वे उम्हें मुझे अब तक नहीं भेजी है।

मुझे पुस्तकोपमवाचका' वन मिला है किन्तु मैं उसका उत्तर नहीं दे सका हूँ। उम्हें बचामनेमें कठपरा लमबा देना चाहिए। मेरा लयाल है कि फिज्हास दूसरे नये हिस्से बनवानेका काम अगर वह विस्तृत ही करनी न हो तो रोक रकना चाहिए। उनसे कहना मुझे आया है, उनसे मेरी जो बातचीत हुई थी वह उम्हेंने अच्छी तरह समझ ली होगी। उम्हेंने मेरे मनमें भारी आशाएँ उत्पन्न कर ली हैं उम्हेंने इनको पूरा करना है। बेकारी मनी कैसी' है? वह तो कामच सरी होगी।

मुझे स्थिता कि घाम बिहारी मूल, राजकुमार, राम और मीनरिंग' कैसे रह रहे हैं? उम्हें मेरी याद रिकाना। मुझ आया है कि श्री मीनरिंग पंयसके जीवनसे फिर न ऊन नये होंगे।

श्री वेस्टस मर सलाम कहना। उनसे कहना कि श्रीनिषससे रवाना होनेके बिना उनसे मेरी वा भेंट हुई थी उसे याद करें।

अब फिर तुम्हारी बात। बाबुशानीमें — अपने हाथसे लुवाई और निवाई करने आदिमें काफ़ी मेहनत करना। हमें अधिकमें इसीसे निर्बाह करना है। और तुम्हें परिवारका हीछियार बागवान होना चाहिए। अपने बीमारोंको यथास्थान और पूरी तरह छाक रकना। मुझे आया है रामबास और बैबबास स्वस्थ होंगे अपने पाठ याद करते होंगे और कोई परेशानी पैदा न कर रहे होंगे। क्या रामबासकी लाली ठीक हो गई?

मेरा विस्वास है कि तुम सबने किसीसे जब वह हमारे यहाँ पा अच्छा व्यवहार किया होगा। श्री कॉन्ट्रिबकी जो सानेकी बीजे बची होंगी। मेरा लयाल है कि तुमने उम्हें लौटा ली होगी।

और अब तुम्हारे अपने बारेमें। तुम कैसे हो? मेरा लयाल है, मैंने तुम्हारे कर्पोपर जो भार डाला है उस सबको तुम अच्छी तरह उठा सकते हो और वह सब कार्य विस्तृत प्रवृत्ततापूर्वक कर रहे हो। फिर भी मैंने यह प्रार्थना अनुभव किया है कि मैं तुम्हारा विचारा व्यक्तियोग मार्गदर्शन कर पाऊँ हूँ तुम्हें उससे अधिककी आवश्यकता है। मैं यह भी चाहता हूँ कि तुमने कभी-कभी अनुभव किया है तुम्हारी छिछाकी उपेक्षा हो रही है। अब मैंने जेसमें बहुत-बहुत पढ़ लिया है। इधर मैं हमसँग रस्किन और मैथिलीकी पुस्तकें पढ़ता रहा

१. श्रीनिषसे यह तरल श्री हरिनाथ बालकी टाकर।
२. १ और ४ श्रीनिष छापेयामेके कम्पेडियर।
३. मन्त्रीके मुँदी।
४. श्रीनिषकी कालके लंबक पुस्तोपकरण देखें।
५. पुस्तोपकरण देखेंकी कपी।
६. कापामेके कर्पोपराल।

हैं। मैं सपनिपद् भी पढ़ता रहा हूँ। इन सबसे इसी विचारकी पुष्टि होती है कि विद्याका वर्ष बहार मान नहीं है, बल्कि उसका वर्ष खरिज-निर्माण है। उसका वर्ष कर्तव्यका ब्रत है। हमारे अपने समयका टीक वर्ष है "तालीम"। यदि यह बुटिकोच ठीक हो— और मेरे विचारसे केवल यही बुटिकोच ठीक है— तो तुम्हें जिसकी सम्मद है उतनी अच्छी विद्या—तालीम—मिल रही है। यदि तुम्हें अपनी माँकी धूम्रुपा करने और उसके चिड़चिड़े पनको प्रसन्नतापूर्वक सहनेका या यंत्राकी देखभाल करने और उसकी आवश्यकताओंको जान लेने तथा उससे इस तरहका व्यवहार करनेका जिससे उसे हरिहासका समाव न बटके या फिर उमदास और देवदासके संरक्षक बननेका अवसर मिले तो इससे अच्छा क्या हो सकता है? यदि तुम यह काम अच्छी तरह करनेमें सफल हो जाओ तो तुम्हें आधीसे ज्यादा विद्या मिल गई।

पढ़ाईमें तुमको मगित और संस्कृतकी ओर बहुत ध्यान देना चाहिए। संस्कृत तुम्हारे लिए बिल्कुल जरूरी है। क्याया उन्नतमें इन दोनों विषयोंका अध्ययन कठिन है। संकीर्तकी भी उपेक्षा न करना। तुमको अंग्रेजी मुबपटी या हिन्दी जिसमें भी हो पुस्तकें सब अच्छे स्थलों मन्नों और कविताओंको छांट लेना चाहिए। और उनको एक कापीमें अच्छेसे-अच्छे सफाईमें लिख लेना चाहिए। यह संघर्ष वर्षके अन्तमें अत्यन्त मूम्यवान् बन जायेगा। यदि ठीकसे करोगे तो ये सब काम तुम सुपमतासे कर सकते हो। कभी उद्विग्न होकर यह न सोचना कि तुम्हें बेहद काम करना है और न फिर इस बातसे परेशान होना कि पहले क्या करूँ। यदि तुम बर्ब रखोगे और अपने बोड़े-बोड़े समयका भी सुदुपयोग करोगे तो तुमको व्यवहारमें इसका ज्ञान ही जायेगा। जाधा है, तुम बरके लिए वर्ष की गई एक-एक पेनीका हिसाब ठीक-ठीक रख रहे होगे। यह अवश्य रखा जाना चाहिए।

मानवजातको पाव बिला देना कि उसने प्रतिज्ञा की थी वह इस बार अपनी पढ़ाई बन्द न करेगा। मुझे इस बातकी अधिक चिन्ता है कि वह विद्ययाको उचित शिक्षण दे। क्या उसने यकीना से किया है?

मनवजातसे कहना कि मैं उसको इससंनके निबन्ध पढ़नेकी सलाह देता हूँ। वे डबनमें भी पेशमें मिल सकते हैं। उनका एक सस्ता संस्करण भी है। ये निबन्ध पठनीय है। उसे इनको पढ़ना चाहिए; और इनके महत्त्वपूर्ण स्थलोंको चिह्नित करना चाहिए अन्तमें उनकी एक नाट्यकमें लक्ष्य कर लेनी चाहिए। मेरे विचारसे इन निबन्धोंमें पाठशाला जामा पहनाकर भारतीय ज्ञानकी शिक्षा भी गई है। कभी-कभी अपनी बीजको इस प्रकार मित्र रूपमें देखकर स्फूर्ति मिलती है। उसको टॉस्टोवकी किण्वम बौद्ध गौड इस विधि नू (ईश्वरका साम्राज्य तुम्हारे ही भीतर है) पढ़नेका प्रयत्न भी करना चाहिए। यह अत्यन्त ठक सम्मत्-पुस्तक है। अनुवादकी अंग्रेजी भी बहुत सरल है। इसके बजाया टॉस्टोव को सिखाते हैं उसपर आचरण भी करते हैं।

मुझे जाधा है कि सांस्कृतिक प्रार्थना जमी बकटी होपी और तुम तथा दूसरे सब जोर विचारकी प्रार्थनामें बैठके यहाँ जाते होगे।

१. उन्नतकी कल्प "केन्द्रीय" विद्या की कल्प देता है विद्या द्वारा कल्पके धार्मिक और मानसिक—उन पुस्तिका लिखना करना।

२. वाक्यवाक्यी पुत्री।

My dear son,

I have a right to write one letter per month and receive also one letter per month. It lies a question with me as to who I should write to. I thought of Mrs. Fitch but she is and you I choose you, as you have been near my thoughts on all my reading.

As for myself I must not, I am not allowed to say much. I am quite at peace & none need worry about me.

I hope mother is now quite well. I know several letters for you have been received but they have not been given to me. The deputy governor however was good enough to tell me that she was getting on well. Does she now walk about freely? I hope she and all of you would continue to take soap-walks on the morning.

And how is Chamberlain? I tell her I think of her everyday. I hope

तुम्हें इस पत्रकी गणना कर लेनी चाहिए। इसमें दूसरोंकी सहायता भी ले लेना। और इसकी एक गणना पोलककी एक कैबेनटकी और एक स्वामीजीको भेज देना। तुम्हें मेरा पत्र ध्यानसे पढ़ लेना चाहिए और मुझे धोरेवार उत्तर देना चाहिए। मैं पोलकके उत्तरकी प्रतीक्षा कर लेना जिससे उन्हें जो-कुछ कहना है वह मुझे लिख सकूँ। जैसे ही तुम मेरा पत्र पढ़कर समझ लो उत्तर लिखना शुरू कर सकते हो। उत्तर स्याहीसे साफ लिखा हो। तुम उसे बिलगता जाहो उठना सम्भवा हो जाने हो। उतमें हमारी कड़ाईके सम्बन्धमें कोई प्रानकाटी न हो। तब उसे प्राप्त करनेमें मुझे कोई कठिनाई न होगी। उत्तर चाह अवलोक ले सकते हो। ध्यान रह पत्र तुम्हें अपसवारको भिज जायेगा। मैं उस दिनसे एक सप्ताह तक प्रतीक्षा करूँगा। यदि जाहो तो इससे भी अधिक समय ले सकते हो। तुम अपना पत्र बन्द करनेसे पहले स्वामीजी और कैबेनटकी प्रतीक्षा कर लेना। उन्हें जो कुछ कहना है तुम मुझे लिख भेजना। तुम जोड़ा-जोड़ा हर चीज लिख सकते हो। जिस बातको तुम अंग्रेजीमें व्यक्त न कर सको उसका अनुबाद पुस्त्योतमवाससे कर लेना। यदि इस पत्रका कोई अर्थ तुम्हारी समझमें न जाये तो तुम्हें उसका अनुबाद कर लेना चाहिए।

मुझे बीजपलितकी एक प्रति भेज देना। कोई भी संस्करण काम देगा।

अब मैं इस पत्रको बन्द करता हूँ। सबको प्यार और रामबाण बेबवास तथा रामीकी शुभन।

बापू

रांचीकी स्वाकारोंमें मूल अंग्रेजी प्रतिका फोटो-गणना (वी बम्बू ४९७९) से।
सीबन्ध कई फिटार

१३८ तार द० आ० मि० भा० समितिको^१

बीजपलितसर्व
अप्रैल ७ १९१९

सेवार्थ
दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समिति
५ पम्प कोर्ट टेम्पल
[कम्बल]

हाइड्रेलसर्वके कैबिनेटका बकरी पत्र प्राप्त जिसमें कहा गया है मुझों मरनेकी स्थिति—अनुपयुक्त भोजन चारों तरफ पन्धरी सफाईका बिल्कुल प्रबन्ध नहीं महाने-कोनेकी कोई सुविधा नहीं न रुपये बरकलेकी। भारतीय सत्याग्रहियोंके साथ काठिर कैबिनेटि बरतर बरदान। अस्पतालमें कई—पेचिस बुखार, मिरवीसे

१. जिस दिन ताजम बाकिरा बिलिड ईबिबन अमिटीकी वह तार भेजा गया उस दिन रांचीकी थियोरीका जेम्स ने। कम्बल है, वह कम्बली बिरुल्लोके मुताबिक बीजपलितसे भेजा गया हो।

पीड़ित। जेल अधिकारी कर। सरकार जल्दीकृत करके आन्दोलनको बंद करनेकी कोसिस कर रही है।

मो० क० गांधी

[बचेबीचे]

कलोनियल ऑफिस रेकर्ड्स २९१/१४१।

१३९ भारतीय और शराब^१

[प्रिटोरिया जेल

ब्रैक १ १९९ के पूर्व]

महोदय

मेरे आपका यह पत्र देखा है जो आपने आयोपक सम्मुख बचाही देनेके सम्बन्धमें ब्रिटिश भारतीय सचको भेजा है। अपनी गतिविधि अनिश्चित होनेसे मैं अपना बक्तव्य इससे पहले नहीं भेज सका हूँ और न मही सम्भव हो सका है कि संघकी बैठक बुझाकर इस सम्बन्धमें विचार किया जाय कि किस तरहकी पचाही देनी है। संघके अध्यक्ष^१ और कार्यवाहक अध्यक्ष^२ दोनों में है। इसलिये यह बक्तव्य जिसे मैं पेश करनेवाला हूँ मेरे निजी विचारोंको ही व्यक्त करता है।

मैं बक्षिण अधिकारमें पिछले पन्नाह वर्षसे रह रहा हूँ। और उनमें इस पूरी अवधिमें पदाधिकारीके रूपमें भारतीय सार्वजनिक संस्थाओंसे सम्बन्ध रखनेके कारण सभी बनेकि भारतीयोंके सम्पर्कमें आया हूँ। १९१३ में जोहानिसबर्गमें अटर्नीके तौरपर बकास्य कर रहा हूँ और मैं ब्रिटिश भारतीय सचके अवैतनिक मन्त्री भी रहा हूँ।

ट्रान्सवालमें १३ से अधिक बयस्क भारतीय पुरुष नहीं है। कड़ाके दिनेसे जो भारतीय बस्तुत उपनिवेशमें रहे हों उनकी संख्या क्वाचित् १ से अधिक कभी नहीं रही है। इस समय एशियाई आन्दोलनके कारण उपनिवेशमें शायद ५० से अधिक भारतीय नहीं हैं। ये मुख्यतः मुसलमान और हिन्दू हैं। यहाँ जो बात उद्दिष्ट है उसके कबालसे ईसाइयों और पारसियोंका विचार नहीं करता क्योंकि वे यद्यपि भारतीय समाजके महत्वपूर्ण बंध हैं फिर भी संख्यामें कम हैं।

मुसलमान और हिन्दू, दोनोंके लिये उनके धर्मोंमें मद्य-पान करना निषिद्ध है। मुस्लिम बर्ग मद्य-निषेधपर बहुत-कुछ कायम रहा है। मुझे बुजकके साथ कहना पड़ता है कि हिन्दू वर्गमें ऐसे लोगोंकी संख्या बाली है जिन्होंने इस उपनिवेशमें इस वार्षिक निषेधकी अवहेलना की है।

जो भारतीय मद्य-पान करते हैं उन्होंने आम तौरपर कुछ अधिकारी गोरोंकी सहायता प्राप्त करनेका तरीका अपनाया है। बुरसे तरीके भी हैं जिनका मैं उल्लेख करना नहीं चाहता।

१ यह बक्तव्य गांधीजीने प्रिटोरिया जेलआफिसर-जिन्हा ट्रान्सवाल मद्य-पानमें (ट्रान्सवाल लिबर कमिटी) को लिखित सचकी के रूपमें भेजा था। यह " श्री गांधीके विचार " नामके " इंडियन ओपिनियन " के " सिटिंग " नामके अन्धाकृत किया गया था।

२ अध्यक्ष सुम्भर राजकीया।

३ ई. बर्ग बरतण।

मेरी राय यह है कि कानूनन मद्य-नियेय जारी रहे। किन्तु मेरा खयाल है कि मद्य-नियेयसे उन भारतीयोंको जो धराय प्राप्त करना चाहते हैं अड़चन नहीं हुई है। मेरी दृष्टिमें मद्य-नियेय जारी रखनेका एकमात्र लाभ यह है कि मेरे धराय पीनेवाले देशवासी धराय पीनेमें जो धर्म महसूस करते हैं वह कायम रहे। वे जानते हैं कि उनके लिए धर्म और कानून दोनोंकी दृष्टिसे धराय प्राप्त करना और पीना अनुचित है। इससे मद्य-नियेयके प्रचारक उनकी कानून पालन करनेकी भावनाको जागृत कर सकते हैं। कानूनको दोषपूर्ण तर्कोंसे भंग करनेमें और अन्तरात्माकी पुकारपर एक अधिक ऊंचे कानूनका पालन करनेकी दृष्टिसे मानव-वृद्ध कानूनको तोड़नेमें मैं एक बुनियादी अन्तर मानता हूँ। सीमाय्यसे जो भारतीय मद्य-सम्बन्धी कानूनको तोड़ते हैं वे जानते हैं कि उनका ऐसा करना गलत है।

मैं जानता हूँ कि मेरे कुछ देशवासियोंको जो स्वयं मद्य-नियेयके पक्षमें हैं, मद्य-सम्बन्धी कानूनमें रंगके आचारपर समझ नहीं है एक और नियोज्यता दिखाई देती है। सामान्यतः उनका कहना ठीक होता है किन्तु मेरा खिरबास है कि इस कानूनका रंगसे कोई सम्बन्ध नहीं है। मेरी रायमें यह प्रमुख जातिकी ओरसे इस बातकी मांग्यता है कि मद्यपानकी सख एक ऐसी बुराई है जिसे वह स्वयं ही छोड़नेमें असमर्थ है किन्तु यह नहीं चाहती कि उसे बुराई जातियाँ अपना लें। स्थितिको इस प्रकार देखते हुए, मेरा खयाल है कि एशियाइयों और रमदार जातियोंके लिए मद्य-नियेय ब्यापक मद्य-नियेयकी ओर संकेत करता है।

किन्तु ब्यापक मद्य-नियेय हो या न हो जबतक प्रमुख जाति धराय पीना जारी रखती है, चाहे वह बहुत संयमित रंगसे ही क्यों न हो तबतक अधिक मद्य-नियेय वह जिस रूपमें जागू है उस रूपमें ब्यावहारिक दृष्टिसे अधिक उपयोगी नहीं हो सकता। निवेदन है कि यह यूरोपीय और अन्य जातियोंके सम्पर्कसे उत्पन्न नूरे प्रभावोंका एक बड़ा प्रभाव है। और जबतक धरायस बचनेका प्रचार करनेवाले लोग स्वयं ही उसपर अमल करनेके लिए तैयार न हों तबतक सभी मद्य-सम्बन्धी कानून बहुत-कुछ अस्वायी उपाय सिद्ध होंगे। मैं चाहता हूँ आयोग द्वायम्बालके मद्यसत्ताओंको किसी तरह यह बता दे कि उनके कर्णोपर कितनी बड़ी जिम्मेदारी है। वे अपने प्रतिनिधियोंके लिए इतना बाँझनीय कानून बनाता असम्भव कर बैठे हैं। उनको ही बहुत-से परिवारोंके छिन्न दिल करनेकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी होती। मैं अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह समझकर सिखा रहा हूँ। मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि कितने भारतीय नवयुवक जिन्होंने कभी धराय चली तक न की बसिब आक्रिका या द्वायम्बालमें जाकर उसके चिकार हो गये हैं।

यदि आयोग मुझसे कुछ प्रश्न पूछना चाहे तो मैं प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दूंगा।

[अधेजीसे]

इंडियन ओपिनियन १०-४-१९१९

प्रिटोरिया [बेच]
मार्च २६, १९९१

प्रेषक

श्री गांधी (श्री संख्या ७७७)

प्रिय हेनरी

मुझे आर्थिक प्रसंगों में बिल्ली बिल्ला हुई है। उसकी अन्य किसी बातों में नहीं हुई है। मुझे फीनिक्स पर नज़र होने के बिना ही श्रमा है और कार्यालय पर नज़र का बर्ष नहीं है। ऐसी हाज़र में बेवरो के बलाबा कुछ कानूनी फ़िराबों की बर्षा उन फ़िराबों की जो मैंने इन्फ़ॉर्मेशन में पाई थीं और कानूनी रिपोर्टों की तथा कार्यालय में रखी बड़ी तिजोरी की और बुझने वाली बलमापी में रखे बिस्व-कोष (एनसाइक्लोपीडिया) की भी बाह्यता से भी जाने। कानूनी फ़िराबों को प्लेजेंट बेस्वत या यदि उनकी स्थिति अच्छी हो तो पॉइन्ट से लेने के लिए कहा जा सकता है। यदि इनमें से कोई कुछ भी न ले सके तो आप एक सूची बना सकते हैं। वे खरीदके बामोसि १ प्रतिशत कम में बिकनी चाहिए। तिजोरी का कमसे-कम १५ पींड बाम जाना चाहिए। बॉइलर को (कॉटिंग) बिरब-कोष के ३ पींड देन है। आप जानते हैं कि कॉटिंगने ३ पींड मुझसे ले लिये ने। यह रकम बहिषों में नहीं है जब बसूक की जा सकती है।

मुझे मजिस्ट्रेट का एक सम्बा पत्र मिला है। वह ठीक ही लिखा गया है। मैं देखता हूँ कि श्रीमती पात्रबेलको अपनी पीपीपर पर्व है। वे उसको सबसे सुन्दर समझती हैं। एनबाल रॉ। बास्को जो फीनिक्स का सम्बाधित बंटेवासी माना जा सकता है ऐसा मनुना है जिसे पढ़ना है। यह कठिन कार्य है। मैं जानना चाहता हूँ कि कॉटिंग का मापन कैसा रखा और वह कहाँ हुआ था। क्या ठाकर बम्बई से कुछ फ़िराबों और टाइप काया है? मैं देखता हूँ कि ठाकर-परिवार कमनकास के साथ ठहरा है। मिनीकी तरह कमनकास का स्वभाव भी बुपचाप कष्ट सहने का है। लेकिन बोनोपर इसका मुठ बसर होता है। इसलिए वे मित्रों की स्थिति उन्नत-अपी बना देते हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि कमनकास अपने सामर्थ्य से अधिक मार न उठाये। बीसा कि उसकी माँ कहती है वह ऐसा व्यक्ति है जो पलांसि करे पड़के लीके भी सूख जा सकता है। [जबसे] वह बड़ा हुआ है तभीसे उसके स्वभाव में मैंने यह बिद्येयता देखी है। मुझे अपने इस मत में [परिवर्तन का कोई कारण] नहीं बिल्ला दिया है। इसलिए इपमा उठे कई कि वह अपने ऊपर ज्यादा

१. सूक बलि कड़ी-कड़ी है। स्टडीय कड़ी कर्बोस कता नहीं बन पाता है वही कमनास करे अनुमनास कोकोर कोकोसि देख कर बर्षों की दृष्टि बना गया है।

२. वही दृष्टि कुछ कम प्यार है।

३. विल्लय उर।

४. बोल्लयी कनी मिनी मन्न बोल्ल।

मार न डाले। मे नहीं जानता कि यीमटी गांधीका इरादा क्या है। [ठाकर-परिवारको] उनके साथ ठहरना चाहिए था। अब पुस्तोत्तमवास और कॉडिब [बोनोंके पास] एक-एक छान है। कॉडिब [छान रखने] हैं यह अच्छा है। यह त्रिस्तुत उनके अनुकूल ही है। परन्तु [पुस्तोत्तमवास] ने किसी छानको रखा यह सायब ठीक नहीं हुआ। उसके पास काफी अपह नहीं है। अनीको चार बच्चोंकी बेलमात्र करनी होती है। यही उसके सिद्ध बहुत है। [पुस्तोत्तमवास] चाहता है कि अनीने पहले जो अपना कर्तव्य नहीं निमाया उसकी कमी पूरी करे। इस विषयमें उसने मुझसे बात अच्छी नहीं की है। इसलिए मैं यह जाननेको बहुत इच्छुक हूँ कि उसने अपनी गरीब पत्नीका मार हलका करनेके लिए क्या किया है। उसने मुझे बहुत प्रिय संदेश भेजा है, इससे अधिक मैं इस समय न कहूँगा। मैं चाहता हूँ कि फीनिक्सके सब लोग टॉस्टॉयकी जीवनी और मेरा परचात्ताप (माई कन्सेन्स) पढ़ें। दोनों किताब बहुत प्रेरणाप्रद हैं। वे आसानीसे दो दिनमें पढ़ी जा सकती हैं। पुस्तकालियोंको कविश्रीकी दोनों पुस्तकें भी जो मेरे पास हैं, पढ़नी चाहिए। सायब ठाकर वे पुस्तकें ले जाया होगा। वे सायबका लकी प्रार्थनाके साथ बंदेमें से १ मिनट और रविवारको मुझपरी लोन जो अलग प्रार्थना करते हैं उसके एक बंदेमें से भाषा भंडा इस वाचनमें क्या सकते हैं। मैं कविश्रीके जीवन और उनकी रचनाओंके सम्बन्धमें विरला विचार करता हूँ उतना ही मुझे लगता है कि वे अपने युगके सर्वश्रेष्ठ भारतीय थे। वस्तुतः मैं उनको सामिक बोधकी दृष्टिसे टॉस्टॉयसे ऊँचा मानता हूँ। मैंने उनकी ये पुस्तकें पढ़ी हैं। उनसे मुझे बहुत अधिक शान्ति मिली है। इनको बार-बार पढ़ना चाहिए। बहोतक अंग्रेजीकी पुस्तकोंका सम्बन्ध है मेरे मतसे टॉस्टॉयकी कृतियाँ विचारोंकी मुडतामें बेबोड़ हैं। उनकी जीवनके उद्देश्यकी व्याख्या अनुपम और सुबोध है। कवि और टॉस्टॉय दोनोंने दिन रातोंका प्रचार किया उनको जीवनमें उठाया है। कविने अधिक पहले अनुभवसे लिखा है। आप छानकाकसे देवाकर जगजीवन ऐंड क को यह सिद्धनके लिए कहें कि मुझे उनको क्या देना है और वे मेरी बहनको साधिक किटना भेजते हैं यह मुझे बतायें। मणिमात्र अपने अध्ययनसे कुछ असंतुष्ट है। यह स्वाभाविक ही है। किन्तु यह अनिर्वास है। हम प्रयोगकी अवस्थामें हैं और पहले छात्रोंपर इतना असर पड़ेगा ही। फिर भी उसे जो-कुछ पढ़ाया जाये उसकी वह सभी भाँति लीये। मुझे आशा है कि मैं किसी दिन उसकी परीक्षा लेंगा। उसको अपने देवाबधिकके पाठोंपर भरोसा ना लेकिन उनमें वह कच्चा निकला। वह निबन्ध-यात्रन और अध्ययनकी ज्ञापन वाले और अध्ययनमें अपने ऊपर निर्भर रहना लीये। सम्भव है किमी दिन मैं स्वयं उसको बोझ पढ़ानेकी जिम्मेवारी से छूँ। आपानीके सम्बन्धमें भी उसकी चिन्ता [मैं] लभजता हूँ। उसका धैर्य रचना चाहिए। उसे अपनी पूरी धक्ति [लगा देनी चाहिए] और फिर चिन्ता और परेजानो [से मुक्त रहकर] सबका प्रसन्न रहना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि लफके [मणि]क्रमसे तमिकमें भाग किया करें। मुझे लुपी है कि किचिन एक दिनके लिए फीनिक्स जाये वे। मणिमात्रने यह नहीं लिखा कि बहाँ ठहरनेसे उनको कष्टा लगा या नहीं। आशा है बहाँ उनके आचमका पूरा प्रदन्ध किया गया होया। मगनकाकको मेरी सलाह है कि अपने अंग्रेजीके इतने वाच्य तो बंदन कर ही लिये हैं अब उसे तमिकने भी कुछ वाच्य यात्र करन चाहिए। खँची प्रसन्न तो है? या हरिनाकके विषयमें चिन्तित रहती है? यीमटी [गांधी] अब नरके कामकाजमें हाथ

बैठाती है? कृपया डॉ. नातजीको^१ प्लैमिक्सवाशिंगटनका ध्यान रखनेके लिए बय्यबाद दें। वे मुझपर अपना ध्यान घटा बढ़ाते ही रहते हैं। पाठसाक्षात्के सभनकी प्रयति कैसी है? मेरा खयाल है कि छम्बूनेसाह मेरी ओरसे भी गोरासे कहे कि वे छात्रोंके बोर्डिंगका खर्च बढ़ाना मजूर कर लें जिससे छोटी-मोटी रकमोंके सम्बन्धमें संरक्षक सरकारी विस्थासे मुक्त हो जायें। मुझे प्रयत्नता है कि स्वामीजी अधिक ठहर रहे हैं। भाषा है कि [उनसे] मिळकर मजदूरबीतके सम्बन्धमें विशेष ध्यान चर्चुंगा। मैंने बाड़ीसे पीटरपीरिस्सबर्गके पतेपर उन्हें जो पत्र भेजा था वह उनको मिल गया होगा। मेरी यह तीव्र इच्छा है कि वे हिल्गुर्वों और मुसलमानोंके बीच सद्भाव बढ़ानेके लिए उनसे जो-कुछ हो सके सब करें। मैं खानखानासे यह अपेक्षा करता हूँ कि वह अपना अध्ययन बन्द न करे और भागको हुरा-मरा खानेका बचन पूरा करेगा। कृपया बेस्टसे कहें कि वे रबिबासरीय प्रार्थनाको यदि उसमें कोई कठिनाई हो तो भी चाटी रहें। बीमती बेस्टकी बीमारीमें वह कहीं और भी जा सकती है, किन्तु यहाँ एक सम्भव हो बन्ध न की जाये। कृपया [इस पत्रके] प्लैमिक्स-सम्बन्धी भागकी पकड़ करवाकर बेस्टको भिजवा दें। तब इसे सब पढ़ सकेंगे। और छानखाना मुझे एक ब्योरेवार उत्तर लिखे जिसमें जो योजना चाहें उन सभीके उन्देश हों। मैं ७ मई तक छानखानाका पत्र मिलनेकी आशा करूँगा। इससे उसको काफी बत मिल जायेगा।^२

टाइप की हुई बंगेची प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ४९२५) से।

१४१ भाषण प्रिटोरियाकी सभामें^३

[प्रिटोरिया

मई २४ १९११]

छम्बा भाषण देनेके लिए समय नहीं है। मैं माफ़ा करने चला गया था जिसमें कुछ समय निकल गया। फिर भी वो बन्ध कड़ा है। इनपर आप ध्यान दें। अपने जेम्सके अनुसन्धके आमारपर मैं कह सकता हूँ कि बन्ध-बीबनकी हाकत बीसी होनी चाहिए वैसी ही है। हम जो मान रहे हैं वह हमें बन्धस्य मिथेना। कूटनेपर मैं देखता हूँ कि जो बुर है वे बुर ही रहेंगे। बन्धजाने कहा है कि आपसी फूटके कारण संघर्ष छम्बा जिस रहा है केकिन मेरी समझसे बात ऐसी नहीं है। हमारे माई बरते हैं इसी कारण जेम्स मरती नहीं है। जो निडर है वे बेल वा रहे हैं और चामेस। और होना भी यही चाहिए। भाग पढ़ता है कि जेम्समें कुछ कष्ट होनेपर भी कूटनेके बाद वे फिर बेल जानेके लिए तैयार

१ जेम्सके पद मिळिखत तथा मेयज्जेके भारतीय समाजके नेता; श्रीमिखत पलीमें बीमार रहनेवालोंकी शिक्षिता मकर के ही कहे थे, और बीमती गांधीका सन्धन भी कहेसि ही किता था।

२. वह बन्धन नहीं है।

३. वह क्यूरा बन्ध पढ़ता है और वह बन्धन का बन्ध है जो बेखोको मेय गया था।

४. सभकी समाधिपर १४ मई १९११की गांधीजी मिकत समझे देव की पत्रके, एक सभे सभ मने ही छेब दिने जे वे सभके भारतीय शिक्षा मकरका मकरन न कर सके। फिर भी जेम्स ही भारतीय समाज सन्धन करनेके लिए कष्ट हो जे वे। गांधीजी उनके सभ सन्धनमा मकरिज जे और बरने कहेसि नहीं वह भाषण दिया। समाजी बन्धनता कभी छुटानेकी थी।

हैं। जो बेचके उसको उस मानकर बचते हैं वे कदापि पीछे नहीं हटेंगे बल्कि बार-बार बेच जायेंगे।

मेरे छूटते समय मुख्य कार्बनने मुझसे कहा कि "आपको फिरसे जेल न जानेकी सलाह देना निरर्थक है क्योंकि आप उसे माननेवाले तो हैं नहीं।" इसके बाहिर होता है कि उसके मनपर सत्याग्रहकी कैसी छाप पड़ी है। मुझे बाहर सुब मिलता नहीं। मैं जेलमें नियमसे ईस्वरकी प्रार्थना कर सकता था। बाहर मुझे उसके लिए समय ही नहीं मिलता। जेलमें कैदी उठकर बिस्तर समेट कर तैयार हो जायें इसलिए सबेरे चाड़े पाँच बजे बत्ती बला भी जाती थी और फिर आधे बंटे बाद बुझा भी जाती थी। बत्तीके बुझनेपर बेंचेरेमें कुछ कैदी एक दूसरेकी बुवाई करते। मुझे तो उस समय ईस्वरकी प्रार्थना करनेका अच्छा अवकाश मिलता था। कलसे मुझे ऐसी फुरसत और सुविधा नहीं मिलेगी। आपके ब्याजसे मुझं सुख होना। लेकिन मैं तो मानता ही नहीं कि जेलमें सुख और बाहर सुख है। जो बेच जानेसे डरते हैं उन्हेंनि पंजीयन कर लिया और फरा रहे हैं। फिर भी उनका भी एक कर्तव्य है, जिसे वे पूरा कर सकते हैं। हमारे चल्ने पातेसे तो किसीको कोई विरोध नहीं होगा और यदि हो तो वह भारतीय नहीं कहका सकता बल्कि भारतकी बड़ कोबनेवाला कहलायेगा। मुझे भी हाथी कासिमसे बात करनेका समय मिल गया यह अच्छा हुआ। हमें क्या करना चाहिए, यह आप उनसे पूछेंगे तो वे बतायेंगे। और यदि आप उपनुसार करेंगे तो वह मरप करने बैसा ही होगा। जेलसे छूटनेका मुझे मुझ नहीं है बल्कि दुःख है। आज भी ब्याजके यहाँ नास्तेमें मुझे बन्दरके कड़ू दिने बने। परन्तु वे मुझे बाहर-बैचे बने क्योंकि भी राजद मुहम्मद भी बस्तमबी भी बाधी और दूसरे कोय तथा स्वामी बनकर कहें तो मेरा बड़ा लड़का हरिखान बनी जेलमें है। उन्हें बनी बाई महीनेसे क्याबा बस्त जेलमें फाटना है। मुझे अच्छा तो तभी लयेगा जब मैं फिर जेल जाऊँ और उनके बाद छोड़ा जाऊँ। अभी समझमें नहीं जाता कि यह कैसे सम्भव होना। मेरा तो राज रंग और सुख—सब-कुछ जेलमें ही है। अपनी प्रतिभाके ब्याजसे मुझे जेल ही बन्धी बनती है। मैं अपनी सक्रिय-मर तो जेल जाने और कोर्णिके बाब छूटनेकी ही कोशिस करता हूँ परन्तु जेलमें रहना सम्भव नहीं हो रहा है। आपसे मुझे यही कहना है अबका कहिए, मही निकती करनी है कि छाहरी कोर्णिका जेल जाना ही उत्तम है। जिनसे ऐसा न हो वे मीने श्री हाथी कासिमसे जो कहा है वह करें। ब्रिटिश भारतीय संघ और जोग सिखायी बल बने हैं। यह मुझे जेलमें भी पीलकके पत्रसे मालूम हुआ है। तो अब जो ब्यापार कर रहे हैं उन्हें अपनी कैकियोंमें हाथ डालना चाहिए। मीने सुना तो है कि यह बुरक हो गया है मगर मैं इसे पचाँच नहीं मानता। आप अधिक उदात्ताते हैं। उससे ईस्वर भी प्रसन्न होगा और आपकी उदात्ता बचित मानी जायेगी। आप जोग इतनी अच्छी संस्थामें दकदूटे हुए, इसके लिए आपका आबार मानते हुए मैं फिर अनुरोध करता हूँ कि मीयें पूरी होनेतक आप जेलं मरते रहें और जब मीयें मंजूर हो जायें तभी चालत हों। इसके सिवा दूसरी कोई सलाह या राह है भी नहीं। आप भी यह देखते और मानते हूयि।'

[बृजपाटीसे]

ईडियम जोपिनियन २९-५-१९०९

१ लखे नर बाँधीनी उमिक कोयेंके ब्याजसे कोयेंकी बंभि, सक्रिय नान्य शीर्षक ।

बैठाती हैं? कृपया डॉ. गानबीको' फीनिक्सवाधियोंका ध्यान रखनेके लिए बन्धन रहें। वे मुख्यपर अपना ध्यान सदा बढ़ाते ही रहते हैं। पाठशाळाके भवनकी प्रगति कैसी है? मेरा खयाल है कि छात्रशाळा मेरी मोरचे भी गोराये कहे कि वे छात्रके बोर्डिंगका सार्थ बढ़ाया मजूर कर लें जिससे छोटी-मोटी रकमोंके सम्बन्धमें संरक्षक सदाकी विन्तासे मुक्त हो जायें। मुझे प्रसन्नता है कि स्वामीजी अधिक ठहर रहे हैं। माझा है कि [उनसे] मिसकर यज्ञोपवीतके सम्बन्धमें विशेष जान सक्या। मैंने माझीसे पीटरमेरिक्सबर्गके पतेपर उन्हें जो पत्र भेजा था वह उनको मिक गया होगा। मेरी यह तीव्र इच्छा है कि वे हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच सद्भाव बढ़ानेके लिए उनसे जो-कुछ हो सके सब करें। मैं मान्यशाळासे यह अपेक्षा करता हूँ कि वह अपना सम्पन्न बन्धन न करने और भागको हटा-मरा खानेका बन्धन पूरा करेगा। कृपया वेस्टके कहें कि वे रजिवासरीय प्रार्थनाको यदि उसमें कोई कठिनाई हो ती भी जारी रखें। बीमारी वेस्टकी बीमारीमें वह कहीं और जा सकती है, किन्तु वहाँ तक सम्भव हो सम्भ न की जाये। कृपया [इस पत्रके] फीनिक्स-सम्बन्धी भागकी तदक करवाकर वेस्टकी मिसबा दें। तब इसे सब पढ़ सकेंगे। और छात्रशाळा मुझे एक स्पेरेवार उत्तर लिखे जिसमें जो भेजना चाहें उन सभीके सम्बन्ध हों। मैं ७ मई तक छात्रशाळाका पत्र मिकनेकी आशा करूँगा। इससे उसको काफी बन्धन मिक जायेगा।'

टाइप की हुई अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (एच एन ४९२५) से।

१४१ भावण प्रिटोरियाकी सभामें

[प्रिटोरिया

मई २४ १९१९]

कम्मा भावण देनेके लिए समय नहीं है। मैं मात्ता करने बच्चा गया था जिसमें कुछ समय निकल गया। फिर भी दो घण्टा कइटा हूँ। इसपर आप ध्यान रहें। अपने बेलके अनुभवके आधारेपर मैं कह सकता हूँ कि बच्च-जीवनकी हाकट बैसी होनी चाहिए बैसी ही है। हम जो माँग रहे हैं वह हमें अवश्य मिलेगा। झूटनेपर मैं बोलता हूँ कि जो धूर हैं वे धूर ही रहेंगे। सम्भवने कहा है कि आपकी फूटके कारण संघर्ष कम्मा लिख रहा है लेकिन मेरी समझसे बात ऐसी नहीं है। हमारे माई करते हैं इसी कारण बेलें भरती नहीं हैं। जो निबर हैं वे बेल जा रहे हैं और जायेंगे। और होगा भी यही चाहिए। मान पकटा है कि बेलमें कुछ कष्ट होनेपर भी झूटनेके बाव दे फिर बेल जानेके लिए ठीकर

१. सर्वेके एक विज्ञापन तथा वेस्टके मात्तीय सम्बन्धके वेदा; बीमिल्ल कमीमें बीमार पदनेवालोंकी विधिशा मत्तर वे ही करते थे, और बीमारी संशोधन स्थान भी बनाने ही किता था।

२. वह सम्भव नहीं है।

३. वह मरूटा माल पकटा है और वह मत्तर वह बंध है जो बेलको भेजा जा था।

४. समाधी समर्थित २४ मई १९१९की गार्गीली मित्त समरसे वेद भी कहे, इससे तबे सत बने ही छोड़ दिने नने वे ताकि मात्तीय किसी मत्तरका मत्तरण न कर सकें। फिर भी कोई ती मात्तीय कम्मा सम्भव करनेके लिए पकट हो गये थे। गरीबीके कारण सम्भवित मत्तरिक नने और मत्तरने कमी नहीं कर सम्भव रिता। समाधी सम्भवता कभी सम्भवने की।

हैं। जो जेलके रखको उस मानकर बचते हैं वे कदापि पीछे नहीं हटते बल्कि बार-बार जेल जायेंगे।

धरे झूठे समय मुख्य बार्बरने मुझे कहा कि "आपको फिरसे जेल न जानेकी सलाह देना निरर्थक है क्योंकि आप उसे माननेवाले तो हैं नहीं। इससे बाहिर होता है कि उसके मगपर सत्याग्रहकी कैदी छाप पड़ी है। मुझे बाहर मुझ मित्रता नहीं। मैं जेलमें नियमसे ईश्वरकी प्रार्थना कर सकता था। बाहर मुझे उसके लिए समय ही नहीं मिलता। जेलमें कैदी उठकर बिस्तर समेट कर तैयार हो जायें इसलिए सबरे साढ़े पाँच बजे बत्ती जला दी जाती थी और फिर जाके बंटे बाह्र बुझा दी जाती थीं। बत्तीके बुझनेपर जैसेमें कुछ कैदी एक दूसरेकी बुराई करते। मुझे तो उस समय ईश्वरकी प्रार्थना करना अच्छा लक्षकाम मिलता था। कससे मुझे ऐसी पुरस्त और सुविधा नहीं मिलनी। आपके पयासने मुझे सुल होगा। सिंघिन मैं तो मानता ही नहीं कि जेलमें दुःख और बाहर सुख है। जो जेल जानेसे डरते हैं, उन्हें नि बंजीयत कर दिया और कर रहे हैं। फिर भी उनका भी एक कर्तव्य है जिसे वे पूरा कर सकते हैं। हमारे सबेरे रास्तेसे तो किसीको कोई विरोध नहीं होया और यदि हो तो वह भारतीय नहीं कहना सकता बल्कि भारतीयों का बड़ कोरनेवाला कहनामेगा। मुझे भी हाजी कासिमसे बात करनेका समय मिल गया यह अच्छा हुआ। हमें क्या करना चाहिए, यह आप उनसे पूछेंगे तो वे बतायेंगे। और यदि आप ठानुसार करेंगे तो वह मरब करने जैसा ही होगा। जेलसे छूटनेका मुझे सुल नहीं है बल्कि दुःख है। आज भी म्यासके यहाँ नास्तेमें मुझे एककरके लड्डू बिये गये। परन्तु वे मुझे जहर-जैसे लने क्योंकि भी राजब मुहम्मद भी इस्तमदी भी जोड़ी और दूसरे लोग तथा स्वामी बनकर कर्तुं तो मेरा बड़ा कड़का हरिवाल अभी जेलमें है। उन्हें अभी धरि महीनेसे ज्वाला बन्द जेलमें फाटना है। मुझे अच्छा तो सभी सबेरा जब मैं फिर जेल जाऊँ और उनके बाह छोड़ा जाऊँ। अभी समयमें नहीं आता कि यह कैसे सम्भव होगा। मेरा तो राम-रंग और मुझ — सब-नुस्र जेलमें ही है। अपनी प्रतिभाके बचावसे मुझे जेल ही अच्छी लगती है। मैं अपनी पकित-नर तो जेल जाने और लोपंकि बाद छूटनेकी ही कोपिस करता हूँ परन्तु उसमें रहना सम्भव नहीं ही रहा है। आपसे मुझे यही कहना है बचवा नहिए, यही विनती करनी है कि साहसी लोगोंका जेल जाना ही उत्तम है। जिनसे ऐसा न हो वे मीने भी हाजी कासिमसे जो कहा है, वह करें। सिंघिन भारतीय संघ और जोध मित्रादी बन गये हैं। यह मुझे जेलमें भी पीसकके बनने मामूम हुआ है। तो जब जो म्यास कर रहे हैं उन्हें अपनी बर्तिकर्षीयें हाथ डालना चाहिए। मीने मुता तो है कि यह शुरू हो गया है मगर मैं इसे पर्याप्त नहीं मानता। आप अधिक उशासते हैं। जन्मे ईश्वर भी प्रगभ होना और भारतकी उगाएरा उचिद मानी जायेगी। आप लोग इतनी अच्छी संस्थामें इकट्ठे हुए, इसके लिए भारतका आभार मानते हुए मैं फिर अनुरोध करना हूँ कि माँग पूरी होनेतक आप जेल भरने रहें और जब माँग मंजूर हो जायें सभी मान्य हों। इसके विना हमारी कोई सलाह या यह है भी नहीं। आप भी यह देखते और मानने हूँगे।'

[पुनरावृत्ति]

इंडियन ओपिनियन २९-५-१९१९

१. लोके बाह १८५५ की उचित कोटिङ्ग बचपन मयेमि १०; सेन्ट्रल जन्म संदीह ।

[प्रिटोरिया

नई २५ १९१९]

जहाँने कहा में बोलसे बूढ़ गया हूँ किन्तु मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मेरे अनेक बीर वेशमाइयोंको अभी अपनी सजाएँ काटनी हैं और मेरे बेटेको भी छः महीनेकी सजा भुगतनी है। किन्तु इस सबके बावजूद आम्बोक्न तबतक जारी रखेगा जबतक सरकार हमें राहत नहीं दे देती, जिसके हम हक्कार हैं। जबतक न्याय नहीं किया जाता तबतक हमें कष्ट सहना ही होना। श्री भारतीय बोलकी तरफकी नहीं लह सकते थे दूसरी तरफ जो श्री मन्त्र दे सकते हैं वे; क्योंकि मैं मानता हूँ कि सरकारके इन कड़े कानूनोंको सम्भवतः एक श्री भारतीय पठम्ब नहीं करता और न जालू आम्बोक्नके साथ वह किसी-न-किसी तरफकी हमदर्दी रखे बिना ही रह सकता है। संघर्षका मत एक ही हो सकता है और वह अन्त ब्रिटिश भारतीय समाज द्वारा दिखाई गई शक्तिके अनुसार ज़म्बी या बैरले आवेगा। हम इस समय उपरतम लड़ाईके बीचमें हैं और यह सम्भव है कि हमारे सब वेशमाइती हमारा साथ न दे सकें। किन्तु इसका अर्थ केवल यही है कि लड़ाईका सस्ते ब्यादा ब्रोस बोर्डे-से लीपोंके लम्बीतर पड़ेगा। अन्तमें श्री गांधीज कहाः हमारे छात्रियोंकी संख्या चाहे बड़ी हो या छोटी मैं अपने विषये भगवानसे प्रार्थना करता हूँ कि वह हमें इस बोधको तबतक बहून करनेकी शक्ति दे जबतक हम अपना ध्येय प्राप्त नहीं कर लेते।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन २९-५-१९१९

१४३ भेंट 'प्रिटोरिया न्यून'के प्रतिनिधिको'

[प्रिटोरिया

मई २४ १९१९]

श्री गांधीजी कहा कि मैं बेल्टमें अपने साथ किये गये व्यवहारके सम्बन्धमें इस समय कोई वक्तव्य नहीं देना चाहता। मैं जबतक तीन बारमें पाँच मास तीन सप्ताहकी जोड़ काट चुका हूँ।

निर्वासनकी नीतिके सम्बन्धमें श्री गांधीजी कहा मुझे इस मामलेमें सावधानीसे विचार करना होगा। मैं नहीं समझ सकता कि ट्रान्सवालकी सरकार ब्रिटिश भारतीयोंपर अपनी सत्ता इस हद तक कैसे बनाये रख सकती है कि वह जगहें निर्वासित करके भारत पहुँचा दे। कुछ भी हो निर्वासनकी नीति बहुत ही मूर्खता-भरी है। वह अनासक्तकल्पसे कूटापूर्ण है और उसका बर्ताना केवल यह होगा कि संघर्ष एक ऐसे देशमें जहाँ कामेया जहाँ सम्भव है उसका स्वल्प और भी अधिक घम्भीर हो जाये। श्री गांधीजी कहा

मुझे यह सुनकर प्यारी ठेस लगी है कि सोवह साठका एक लड़का भारत निर्वासित किया जा रहा है और उसका बाप फोक्सरस्टकी बेल्टमें है। यदि सरकारका यह अनुमान हो कि वह ऐसे कूटापूर्ण तरीकोंको काममें लाकर भारतीयोंकी हिम्मत तोड़ सकेगी तो वह बहुत भूल करती है।'

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन, २९-५-१९१९

१ गांधीजी यह भेंट २४ मईको प्रिटोरियाकी मजलिसमें श्री पर्व समर्थके कप्ताने हो थी; देखिए लिपिका अधिका ।

२. उसके अन्तमें गांधीजीकी दो-तीन ही भारतीय मित्रोंके अलावा एक कर्तबगरे गये और वे रेलगाड़ीमें बोधप्रदानके लिए रवाना हो गये ।

[जोहानिसवर्ग
मई २४ १९१९]

जाज कई महीने बाद आपको देखने और आपसे मिलनेका जबसर आया है। इससे मुझे खुशी होती है। परन्तु जेससे रिहा होनेमें मैं प्रसन्न नहीं हूँ क्योंकि हमारे नेता — और वे भी बयोबुद्ध — जेसमें हैं। अभी उन्हें अपनी सजा पूरी करनेमें दो महीनेसे ज्यादा समय है। सैदा आप जानते हैं इनमें भी बाउब सेठ भी पारसी इस्लामजी और भी सोराबजी जाकि है। और यदि स्वार्थी बनकर कर्नू तो मेरा कड़का हरिकार भी उनमें है। तब मुझे मुझसे बैठना-खाना कैसे बण्डा लगे? जबतक हमें वह चीज नहीं मिलती जिसे हम मांगते हैं तबतक हम प्रसन्न नहीं हो सकते। हम जो-कुछ मांगते हैं खुदा हमें देना। लेकिन वह सरकारकी माफ़त मिलेगा। हमें वह क्यों नहीं मिलता इसका कारण हमें भी काबुलिया बता चुके हैं। कहा जाता है कि जो काम एक हजार कोष कर सकते हैं वह बचते नहीं हो सकते। कर्दार इसलिये समी खिन्न रही है कि उसमें काफी खोग हिस्सा नहीं देते। हम इस समय खुदाके घरमें हैं जहाँ हमने आपकी भी भी हाब पठया था और वह ऐशान किया था कि जबतक कालूत रद नहीं किया जायेगा और सिविलीका अधिकार न दिया जायेगा तबतक हम कर्नूते रहेंगे और प्रमाणपत्रका [पंजीवन] अपभोग न करेंगे। हमें इस प्रतिज्ञाका पालन करनेके लिए बेकमें जाकर रहना चाहिए। मेरी तो इच्छा है कि जस्टी ही नेताक बाई और बहुसि आपस जाकर विरपठार होई। ऐसा कर्नू तो बाउब सेठ और हरिकार जाकिसे मिल सकता है। मेरा कर्नूय तो समाजकी और समाजके इतिहासकी सेवा करना ही है। मैं बाउब सेठके साथ बेक बाई तो माना जायेगा कि मैं ठीक सेवा करता हूँ। जाज यह तारा समया क्या कि "हिन्दुओं और मुसलमानोंके राजाको सजामी दो।" यह उचित नहीं था। मैं समाजका सेवक हूँ राजा नहीं हूँ। मैं खुदा दानी ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे सदा समाजकी सेवा करनेकी शक्ति और बुद्धि दे। मेरी मुराद सभी पूरी होगी जब समाजकी सेवा करते-करते ही मेरी मृत्यु हो। मेरा कर्नूय बही है। जिसके मनमें भारत और भारतीयोंका क्याक हो उसे समाजका सेवक ही बनना चाहिए। मैं बंगीके सम्मानके कामक नहीं था और न हूँ। जितनी सेवा करनी थी उतनी सेवा मुझसे नहीं हो सकी है क्योंकि दूसरे लोग सेवक बनकर अब भी बेकमें हैं। वे छूट जानेपर भी बार-बार

१ थियोसोफे दार्ड लेखन सुईकेसर पंजीबिता वीरेवित सानत विद्य दना। कर्मक नक इकर पारलीक, बीबी और कर्नूय कर्नूी और उनके तास्विकी कर्नूली करते सेकन बने वे उनमें सेवक वे के-बीक भी वे। पंजीबिता दानार्द कर्नूी वर और कर्नूी वेकनर पारविके कर्नूयमें के नाता था। कर्नूी कर्नूय सुकन कर्नूीबिताकी कर्नूयदामे पक सया हूँ, कर्नूयमें पंजीबी पके सुकनली और बरने कर्नूीमें दो। हेकिर कर्नूी वीरेवित।

१ थियोसोफे दार्ड लेखन सुईकेसर।

२ थियोसोफे दार्ड लेखन सुईकेसर।

बोल जाते हैं। अन्धश्रद्धे अपना सर्वस्व समर्पित करके सेवा की है और जब भी कर रहे हैं। बुद्धोंकी भाँति ही मुझे भी जेब मिले और मैं उनके बाव झूठे तभी मेरा मन मानेगा। एक जोहानिसबर्गकी जेबसे हमीविया बंजुमनके अन्धश्रद्धा थी उमरजी साधे झूठेंगे। बीपकसूठ जेबसे भी ब्यास तथा थी डेविड जर्नेस्ट भी रिहा किये जायेंगे। भारतीयोंको उन्हें सेनेके लिए जाना चाहिए। बामा है कि कानमिया सोय इस बार अपना पूरा उखाह दिखायेंगे और थी उमरजी साधेकी बांधी बीबकर सायेंगे। मुझे विश्वास है कि वे बुद्ध महानुभाव जब भी समाजके लिए जेब जाना ही अच्छा समझेंगे। मैं बुबा मिया हूँ कि बुबा पाक उनकी बुद्ध व्यवस्था होमेपर भी उन्हें प्रकृत है। बूसरोंका कर्तव्य भी उन्हींका अनुकरण करना है। लोगोंको बांधी केकर बीपकसूठ भी जाना चाहिए, और [थी ब्यास तथा थी जर्नेस्टकी भी] माझीमें ही से जाना चाहिए। इस समय मैं इससे अधिक कहना नहीं चाहता। यदि कोई भारतीय यह कहे कि हम हार गये हैं तो यह स्वयं ही हार गया है। आ जेब जाने बाबा मजबूत है वह तो जीठा हुआ ही है। लुमी कानून जब रब किया जावेगा और सिधितोंका हक जब मिलेगा यह तो बुबाके हाथमें है। फिर भी यह इसपर निर्भर है कि हमारा उसमें विश्वास कितना है और हम किस मार्गको अपनाते हैं। बुबा सच्चेके साथ है। हम सच्चे हैं तो हमें जीव मिलेगी ही। दो महीनेकी जेबकी सजा भोयकर जब मैं फोक्सरस्टसे आया था तब भी इतने ही सोय उपस्थित थे। मैं आपसे पूछना चाहूँगा कि आप माई "बी हूँ बी हूँ" करने जाते हैं या बोसा उठानेमें साथ देना चाहते हैं? आपको समझना चाहिए कि आपका कर्तव्य जेबके कष्ट रहना है। जेबमें और जेबके बाहर एक-सा ही है। फोक्सरस्ट जेबमें मेरे साथ कुछ ठमिऊ भाई थे। थी नामडू किचते हैं कि वे अभी तक बुद्ध हैं और जेब जानेके लिए एक पैर उठाये तैयार हैं। हमारे लिए तो बखबार है, इसलिए हम समझ-समझा सकते हैं। तमिलोंकी मापामें बखबार नहीं है, फिर भी वे बीसी बहावुधि दिखा रहे हैं और किस तरह अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं! उन्हें सुवापर मरोछा है। उनका उखाहरण केकर हमें उनके पद-चिह्नोपर चलना चाहिए। यदि हम ऐसा करें तो जीव हमारे साथमें है और समीप ही है। आप सबने और बीनी लोगोंने आज माई मेरे स्वागतके लिए जानेका कष्ट किया है मैं इसके लिए आपका आभार मानता हूँ। अभी बीमडे रबको हमसे बिना मैं कुछ विशेष नहीं कह सकता हूँ फिर भी आप जो-कुछ पूछेंगे उसका जवाबा दफतरमें करूँगा। सपन सेना और हाथ उठाना बहुत ही मुका। जब मैं बीसा नहीं चाहता। लेकिन हम यदि जेब जानेके लिए सच्चे विद्येके तैयार हों तो सारे रास्ते पुरे हैं। और उसके लिए ही मैं आपको मरछक सहाह दूँगा। यदि आप बीसा करेंगे तो आपकी जय बखस्य होनी। जब भी समय गया नहीं है। आप इतना करें तो काफी होगा।

[सूत्रपटीसे]

इंडियन ओपिनियन २९-५-१९९

[जोहानिसघर्ग

मई २४ १९९]

जहाँने [गांधीजीने] कहा कि मुझे बेतसे बाहर जानेमें बरा भी खुशी नहीं है। इसका कारण स्पष्ट है। भारतीय समाजके कुछ अच्छेसे-अच्छे लोग अब भी इन्सुबाबकी विभिन्न श्रेणियोंमें हैं। उनमेंसे कुछ तो बूढ़ हैं। मेरा सबसे बड़ा सड़का भी अभी ब्रेकमें है। कुछ कोर्पोको तो अभी दोसे डार्ड मास तक की सजा और काठनी है। उनमेंसे कुछमें मेरे साथ निश्चिन्ता काम किया है और कुछ मेरे प्रति प्रेम और सम्मानका भाव रखनेके कारण ही ब्रेक गये हैं। जबकि इन सभीकी आजादीपर प्रतिबन्ध लगा हुआ है मनुष्य होनेसे हुए क्या मुझे अपनी रिहाईपर किसी तरहकी प्रतीक्षा हो सकती है? इस प्रकारकी परिस्थितियोंमें मैं खुशी नहीं हो सकता। जबतक हमारे प्रति ध्याय नहीं किया जाता जो कि हमारा हक है तबतक हम न जा सकते हैं और न माराम कर सकते हैं। हमारे प्रति यह ध्याय कम होया यह गणबान ही जानता है किन्तु इतना तो हम जानते हैं कि यह हीया अक्षय्य। पिछले तीन स्मरणीय भातोंमें मैंने स्थितिपर बार-बार विचार किया है और यह डार्ड बर्षोंपर नजर डीढ़ानेके बाद मैं अब भी कह सकता हूँ कि मैंने अपने श्रेण्यश्रेणियोंकी जो सफाई की जो उत्तमों से कुछ भी वापस नहीं देता। (हर्ष ध्वनि।) मैंने १९७ के कानूनकी जो निम्ना की है उसका एक शब्द भी मैं वापस नहीं ले सकता और मैं अब भी अपने इस कर्तव्यपर दृढ़ हूँ कि जनरल स्वदस जस्त कानूनको रख करकेके लिए बचनबद्ध हूँ। हम पूर्व और झूठ ध्याय चाहते हैं। सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्रका जो अचमान किया गया है, उसके सामने कोई भी भारतीय खुप नहीं बैठ सकता। जबतक वर्तमान स्थिति कायम है तबतक इन्सुबाबमें सुरक्षित स्थान केवल शून्य है। मैं जेतने अपने साथ किये गये व्यवहार या तपर्वके बारेमें अधिक कुछ नहीं कहना चाहता। संभवके बारेमें अधिक कुछ न कहनेका कारण यह है कि हालमें क्या होता रहा है मैं नहीं जानता। मैं जिन श्रेण्यश्रेणियोंकी तीनी श्रेण्यश्रेणियों का उनके विरुद्ध मुझे कुछ भी नहीं कहना है। मेरे हस्तके तन्तरी मेरे साथ हर तरहसे शिष्टता और सौजन्यका व्यवहार करते थे। यही बात दूसरे अधिकारियोंके बारेमें भी है। मैं शीघ्र ही बहुत-कुछ और लिखूंगा, जो मुझे अपने श्रेण्यश्रेणियोंसे कहना है। उन्हें बहुत-सा काम करना है और उन्हें अपने कर्तव्यका बोध होना चाहिए। मैं उन्हें बाघोंमें सड़कोंपर घुमाये जानेकी अपेक्षा अपने लक्ष्यके लिए काम करते देखना अधिक पसन्द करता हूँ। मैंने पिछले तीन गद्दोंमें आधिकारिक 'मैं' तन्त डैनियलसे सम्बन्धित अंश पढ़कर बहुत साम्बलना पाई है। जबतक जितने भी सत्याग्रही हुए हैं उनमें डैनियल महानतम थे और हमें उनका अनुसरण करना चाहिए। यदि जनरल बोबा और स्वदसके कानून हमारी अन्तरात्माके विरुद्ध हैं तो वे हमारे लिए नहीं हैं। हमें विद्रोह-बाधते रहना चाहिए और

उन सख्ततासे कहना चाहिए कि वे जो भी कामून पास करते हैं यदि वे ईश्वरीय कामून नहीं हैं तो हमारे लिए नहीं हैं। हम कमर कट लें और काम करें। बालोंमें या अन्यथा अपनी शक्ति गंवा न करें। मझे डुकल है कि हममें कुछ लोगोंने कामून स्वीकार करके अपनी सम्भार प्रतिष्ठा ठोड़ दी है। किन्तु हम जब भी अपना कदम बापत लेकर सही काम कर सकतें हैं। गांधीजीने आपे कहा कि कल अनेक प्रमुख भारतीय रिहा किये जायेंगे। आप उनका उचित स्वागत करें। उन्होंने लोगोंको समाने मजदूरीके लिए बन्दबाद दिया और ईश्वरसे प्रार्थना की कि वह उन्हें उनके सामने मोझूह असली कामको करनेकी शक्ति दे।'

[अंग्रेजीमें]

इंडियन ओपिनियन २९-५-१९०९

१४६ पय अक्षारोंको*

बोहानिसबर्ग

मई २६, १९०९

महोदय

मेरे पिछले अक्षारोंके दिनोंमें मेरे साथ किय गये व्यवहारके सम्बन्धमें बहुत बर्षा हुई है। इतकिए यदि आप निम्न बक्षस्य प्रकाशित कर दें तो मैं आपका कृतज्ञ होऊँगा। जब मुझे फोक्सवार्ट्में ठीक महीनेकी कड़ी कैदकी सजा दी गई और मैं वहाँकी जेलमें ले जाया गया तो मैंने देखा कि वहाँ मेरे पुत्रको भिलाकर, मेरे पचासठे अक्षारों साथी-कार्यकर्ता मौजूद हैं। यह अपने-आपमें ही मेरे लिए बड़ी सुख्य बात थी। जो जाना दिया जाता था वह अच्छा और साफ़ होता था। उसमें प्रतिदिन एक बीस भी होता था। जाना भारतीय रसीदने पकाते थे। जब भारतीय कैदी बतनियोंसे विरक्त अक्षय रखे जाते थे और उनके पाखाने और स्नानागार आदि भी बरक्य होते थे। जो कोठरियोंमें रहते थे उनके पास मामूली टीरपर जो कन्वकत गैरखूद बिये जाने हैं उनके बलाया उक्त होते थे और हरएकको एक ठकिया दिया जाता था। काम बाहर खुसेमें करना होता था और हममें से ठीकके समयय सड़ककी सम्मत या स्त्रुके मीथानमें बासपाठकी सफ़ाई करते थे। जहाँतक मेरा सम्बन्ध था य दोनों ही कार्य बहुत अनुकूल और स्वात्म्यप्रद थे। मुझे मठ २५ फरवरीको सजा दी गई थी।

* सभामें कले वार रेकॉर्ड थे वे बोध और ठमिक अक्षय सय (ठमिक बेनीसिड संभार्यी)के सम्बन्ध में वैदिकरण प्राप्त किया।

२. वर वर, जो इन्डियनसे ठमी अक्षारोंके लिए किया गया था इंडियन ओपिनियनमें "मिडोरीया केसे में गांधीके अनुभव" धर्मको उदाहरित हुआ था।

“तनहाई”

मार्च २ को मुझे प्रिटोरिया के जानेकी आज्ञा दी गई। मुझे तीसरे बजेके डिब्बेमें बाधा करनी पड़ी थी और चूँकि यात्रा अधिकतर रातको की गई, इसलिए स्वभाव ही सर्ती थी। स्पष्ट ही कैदियोंको [रातके लिए] कमजल नहीं बिये जाते। इस कारण और भी सर्ती लगी। १ मार्चको प्रिटोरिया पहुँचनेपर मामूली रस्मी कारबाइयाँ पूरी होनेके बाद मुझे एक कोठरीमें बन्द कर दिया गया। मेरा खयाल है, पाँच बिलतक सिवा जस बस्तके जब मुझे पहले और ऐसे ही दूसरे कार्याके लिए बाहर जाने दिया जाता था मुझे सारा बस्त कोठरीमें या गच्छियारेमें ही बिताना पड़ा। मेरी कोठरीके किबाड़ोंपर लिखा था “तनहाई” (बाइसोस्टेड) और मैंने देखा भी कि मुझे और दूसरे चार कैदियोंको तनहाईमें रखा जाता है। इनमें से एकको हत्याका प्रयत्न करनेपर, दोको अपराधतिक व्यभिचार करनेपर और एकको बस्तीक व्यवहार करनेपर सजाएँ दी गई थीं। यहाँ कोई तकिया या तख्त नहीं दिया गया और खानेके लिए बुखार और खिबारको छोड़कर दूसरे दिन भी बिस्तुक्त नहीं दिया जाता था। मुझे अपनी कोठरीके फर्शकी और जिस हिस्सेमें मुझे तथा बतनी कैदियोंको रखा गया था उसके बच्चियोंके कोठरियोंके किबाड़ोंकी पालिश करनेका काम दिया गया था। इन्हीं दिनों की किन्टनस्टाइलन^१ मुझसे मिले और मैंने उनसे कहा कि मैं इस व्यवहारको पाबंदिक मानता हूँ और स्पष्ट जनरल स्मट्सका इरादा मुझे सुकानेका है, लेकिन मैं सुकानेवाला नहीं हूँ। बावनें मुझे दिनमें दो बार बाब-बाब बंटा म्यायाम कराया जाने लगा और अपने पहले कार्याके बड़े कमजल खीनेका और ऐसा ही दबींभीरीका बूझा काम मिलने लगा।

दिनमें एक बार मौजान

मैं लयबध बलपानके बिना ही रहता था क्योंकि मर्कईका बच्चिया मेरी कपिके कारक काफी पकाया नहीं जाता था। मैंने इसके सम्बन्धमें कोई शिकायत नहीं की क्योंकि मैं देखता था कि दूसरे सब कैदी बलिमा स्वायसे खाते थे। मैं खामको कुछ नहीं खाता था क्योंकि जो खानक दिया जाता था उसमें भी नहीं होता था। मैंने बीके अभावकी शिकायत मुख्य बाइंरते की किन्तु उसने असमर्थता बताई, क्योंकि नियमोमे भारतीय कैदियोंको भी देनेकी व्यवस्था नहीं थी। यहाँ मैं इतना कह हूँ कि सब बतनी कैदियोंको प्रतिदिन एक-एक बींस चर्बी दी जाती है। बावनें मैं शिक्रिया-बधिकारीके पास गया और अनुरोध किया कि भारतीयोंकी मौजान तास्किराम प्रतिदिन एक बींस भी होना चाहिए। यह परिवर्तन करता नहीं चाहता था किन्तु उसने मेरे लिए खास तौरपर खानकके साथ ८ बींस गेटी देनेकी आज्ञा दे दी। मैंने उससे कहा कि मैं इसके लिए जामाटी हूँ फिर भी मैं इस विषय अधिकारको ठबतक स्वीकार नहीं कर सकता जबतक सब भारतीय कैदियोंको भी नहीं दिया जाता क्योंकि मैं इसको अपने स्वास्थ्यके लिए गिटाप्ट बाबस्वक समझता हूँ। इसके बाद मैंने यह मागला वेस-निदेसकके सामने पैस किया। पन्द्रह दिन बाद आज्ञा दे दी गई कि मुझे खानकके साथ एक बींस दी दिया जाय। यह खयाल करते हुए कि यह आज्ञा सबके लिए है, मैंने भी एक दिन लिखा। किन्तु जब मैंने देखा कि यह तो केवल मेरे लिए दियायत है, तब मैं विवध होकर पहली ही

१ बडीक और गाँधीके ल-मकतली।

२. बजरेकर थोक मिण्ड।

३. डेविय “मदरिग केके कर्नको मिने मर्भकनका” ल १. २४।

स्वित्तिपर बापस आ गया अपदि फिर दिनमें एक बार भोजन करने लगा। मैंने बेल-निदेधकका ध्यान एक बार फिर इस तथ्यकी ओर आकर्षित किया कि मैं जंघत भूखा रहा या रहा हूँ और जब मैं डेढ़ बहीनेकी सजा मुमठ चुका तब उत्तर मिला कि जबतक भारतीय भोजन शाब्दिकामें परिवर्तन नहीं होता तबतक जहाँ भी भारतीय कैदियोंका प्रभाव है वही दिया जायेगा। मैंने इसके लिए इतमता अनुभव की और उसके बाद मुझे अपना सार्वकालिक भोजन करनेमें कोई हिवक नहीं हुई। इसका बाद प्रसंग न करनेसे मुझे कोई हानि नहीं हुई।

स्वास्थ्यमें बिगाड़

बेल-निदेधक निरीक्षणक लिए जाये और उम्होंने मुझेसे मेरे सम्बन्धमें सीमन्वपूर्ण पूछ-ताछ की। जब उम्होंने पूछा कि तुम्हें कोई सिद्धांत ठी नहीं है मैंने उन्हें कुछ बातें बतलाई, जिसकी मैं बर्बा कर चुका हूँ। फलतः एक ठरुत नन्देकी पट्टी यतमें पहुँचनेके लिए कमीज और क्माक मुझे दे दिये गये वसिष्ठ और मोटबुकके उपयोगकी अनुमति भी मिल गई। अनीतक मुझे ये चीजें नहीं थीं मरि थीं। मैं यही यह भी इतमतापूर्वक कहूँ कि मुझे किताबाका सबेष्ट उपयोग करने दिया गया। उन किताबोंसे मुझे बहुत सम्बन्धना मिली। मुझे कोटरीमें बर्बाबीरीका जो काम करना पड़ता था उसमें लगभग ७ मंटे रोम हुके रहनेकी जरूरत होती थी। मेरे स्वास्थ्यपर उसका बुरा असर पड़ने लगा। इसलिए मैंने अनुरोध किया कि मुझे ज्यादा मेहनतका काम दिया जाये या कम-कम सुतेमें सिखाई करने दी जाये। ये दोनों अनुरोध पहले अस्वीकृत कर दिये गये। मरु लयास है कि कोटरीमें बिस्कुल बन्ध रहनेसे ही लगभग इस दिनक मेरे चिरकी गठोंमें जोरोंका दर्द रहा और छातीकी बीमारीके लक्षण भी उत्पन्न हो गये। दुबाध निषेध करनेपर मुझ खुशी हवामें सिखाईका काम करनेकी अनुमति दी गई।

केवल सरकार डीपी

मैंने जगरम स्मटसके सम्बन्धमें श्री सिद्धार्थस्टाइलके सामने जो राय जाहिर की थी वह जागे और देखने-आकनेके बाद बदल गई और मैंने अनुभव किया कि ऊपर बताये गये व्यवहारसे उनका कुछ सीधा सम्बन्ध नहीं था। दरमसल उम्होंन मेरे पढ़नेके लिए भी अच्छी पुस्तकें भेजी थी मैं यही इस बातका इतमतापूर्वक स्मरण करता हूँ। मैंने उनके इस कामको इन बातका प्रमाण माना है कि उनके मनमें मेरे प्रति कोई व्यक्तिगत दुर्भाव नहीं था और उम्होंने मुझे यह खेब दिया कि मैंने जो टीक समझा है वह किया है। और जो-कुछ मुझे सहना पड़ा उनके लिए मैं किसी कमचारीको भी दोष नहीं देना। वे सब सिष्ट और कुपाल थे। मैं बिनापके बाइरोंको विजता भी पण्यबाहर्तु कम है। समझा था कि वे मेरी विस्मिष्ट स्वित्तिको अनुभव करते हैं और हर तरह मरु जमान रखते हैं। फिर भी मुझे अपनी इस रायपर कायम रहना पड़ता है कि व्यवहार स्वतः पाठ्यिक था। मेरी सजा कड़ी कैदकी सजा थी किन्तु वह अधिकारगत लगभग तनहाईकी कैद रही। बेल-बिनापके अधिकारी बन्धवा नहीं कर सकते वे क्योंकि भारतीयोंके बतनी कैदियोंके साथ बर्बाईय होनेसे मैं केवल बतनी कैदियोंके बिनापमें ही रहा जा सकता था। किन्तु यही बात सरकारके सम्बन्धमें नहीं कही जा सकती जिसने इतने भारतीय कैदी होनेपर भी इस मामलमें कुछ नहीं बोला। जब मुझे

फोक्सरस्टके साथी-कैदिवसि निर्बंधतापूर्वक चलना किया गया तब सरकारको बबरस्य मामूम रखा होया कि प्रिटोरियामें मुझे ऐसी मुसीबतें संहनी पड़ेंगी जो मुझको बी मई सजाके अनुसार बनीष्ट नहीं ह। मैं यह नहीं कहता कि भारतीय कैदी यूरोपीय कैदियोंकी सेबीमें रखे जायें। तब उनकी बबरसा कदाचित् सबसे बहुत ज्यादा बुरी होगी। किन्तु मैं यह बबरस्य कहता हूँ कि उनको पृथक सेबी और पृथक स्वागतमें रखा जाना चाहिए। मुझसे कहा जा सकता है कि अपनी मर्जीसे कैदमें जानेके बाद मेरे लिए जेज-बबरसाकी शिकायत करना उचित नहीं हो सकता। यह ठाना ठीक नहीं है क्योंकि मेरा निवेदन यह है कि मुझे ऐसे कष्ट दिये गये जिन्हें टासा जा सकता था। और कुछ भी हो जिन लीपोंके नामपर सरकार शासन करनी मानी जाती है, उनके लिए यह जानना अच्छा है कि भारतीय उत्पादकोंके साथ कैसा बरताव किया जा रहा है।

इसरे कैदी

अपनी रिहाईके बाद मुझे मामूम हुआ कि बरि मुझे कुछ कष्ट उठाना पड़ा तो बरि उत्पादकोंमें से ज्यादातरकी बबरसा इससे बुरी नहीं तो अच्छी भी नहीं रही क्योंकि जोहानिसबर फोर्टमें जो भारतीय उत्पादकी से उनमें से ज्यादातर डीपकसुफकी कैदी बस्तीमें और फोक्सरस्टमें जो वे उनमें से ज्यादातर हाइडेम्बर [भी जेज] में भेज दिये गये थे। इन दोनों स्वागतोंमें प्रारम्भिक बबरसाओंमें उनको ऐसे कष्ट सहने पड़े जो बिल्कुल बांझनीय नहीं थे। भारतीय कैदियोंको जो काम दिया जाता है सम्भव है वह उसकी शिकायत तबतक न करे जबतक वह उसे सहन कर सके मगर मेरा स्याज है कि उसे अनुचित अनुपयुक्त मा अपर्याप्त आहारके सम्बन्धमें शिकायत करनेका पूरा अधिकार है। उपनिवेशके एक व्यवसायी और अपने भारतीयसे जो ब्रिटिश भारतीय संघके कार्यवाहक सम्बन्धके परपर जाती रहा है और एक प्रसिद्ध व्यापारी है, मज-मूलके डीज उठवाये गये हैं—यह उपनिवेशके लिए कोई बोरवकी बात नहीं है।

जो जोय पिछले कुछ महीनोंमें इन कठिनाइयोंसे गुजर चुके हैं वे कितने ही परेशान किये जानेपर भी अपने उद्देश्यसे विचलित न होंगे। कुछ जोय फिर जेज गये हैं। उनमें एक जमीन सामका युवक पाँचवी बार गया है। वगैरहको यह मामूम नहीं है कि वैरीटिडिमें की बस्तीकी जो स्वयं डीपकसुफमें कैद हैं हुकानकी व्यवस्था करनेकी बजहसे करीब-करीब हर रोज एक आवमी गिरफ्तार होता है और तीन महीनेकी सख्त कैदकी सख्त सजा पाता है। ऐसे आठ भारतीयोंकी बकि बी जा चुकी है और स्वयंसेवक जमीनक इत हुकानका काम सम्भालनेके लिए जा रहे हैं। जब ऐसी हालत है तब उत्पादक मर नहीं हैं। वह मर नहीं सकता क्योंकि वह उत्पादका प्रतीक है।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-९-१९९

१४७ सत्याग्रही कौन हो सकता है ?

द्राम्बवालमें सत्याग्रहीकी सड़ाई इतनी सखी बसी है, और ऐसे ढंगसे बसी है कि इमें उससे बहुत-कुछ देखने-सीखनेको मिथा है। बहुत-से लोगोंने स्वयं अनुभव प्राप्त किया है। और इतना तो गभीर जान गये हैं कि इस सड़ाईमें हारनेकी बात है ही नहीं। जमक वस्तु न मिले तो हम देख सकते हैं कि जयमें सत्याग्रहीकी कमजोरी है, सत्याग्रहीकी कमजोरी नहीं। यह बात बहुत ध्यानपूर्वक समझने योग्य है। घटीर-बलकी सड़ाईमें एसा नियम लागू नहीं होता। जयमें दो सेनाएं लड़ती हैं तो [फिरी पलकी] हार करके सैनिकोंकी कमजोरीसे ही हो जाये ऐसा नहीं होता। लड़नेवालोंके बहुत बहादुर होनेपर भी दूसरे सामन करके ही तो हार हो जाती है। उदाहरणके लिए, अगर उनके मुकाबल विरोधी पक्षके पास इधियार बच्चे हों या उसको जगह अच्छी मिली हो या उसकी युद्ध-कला बड़ी-बड़ी हो तो उनकी हार हो सकती है और ऐसे ही बहुत-से बाहरी कारणोंसे घटीर-बलकी सड़ाईमें लड़नेवाले सैनिकोंकी हार भी होती है। परन्तु सत्याग्रहीकी विधिसे लड़नेवालोंको बाहरी कारणोंसे विस्तृत बड़बान नहीं हो सकती। उनके लिए छा केवल उनकी अपनी कमजोरी ही बाधक होती है। इसके अलावा साधारण सड़ाईमें जो पक्ष हारता है उसके सभी साग हारे हुए माने जाते हैं, और वे हारते भी हैं। सत्याग्रहमें एककी जीतसे दूसरे भले ही बिजयी समझे जायें किन्तु सबके हार जानेपर भी जो क्षुब्ध न हाउ हो वह दूसरोंकी हारसे नहीं हारता। उदाहरणके लिए, द्राम्बवालकी सड़ाईमें बहुत-से भारतीय इन मंदकर कानूनके अधीन हो जायें फिर भी जो उसके अधीन नहीं होना वह तो अधीन नहीं ही हुआ और इसलिए बिजयी ही हुआ।

एक एसी लक्ष्मी — बिना हारकी — एक ही परिणामवासी सड़ाई कौन लड़ सकता है यह विचार करना जरूरी है। इसके हम द्राम्बवालकी सड़ाईके कुछ परिणामोंको समझ सकेंगे और यह भी देख पायेंगे कि दूसरे स्थानोंमें तथा दूसरे अवसरोंपर यह सड़ाई कैसे लड़ी जाये और इसमें कौन कड़े।

सत्याग्रहके अर्थपर विचार करते हुए हम देखते हैं कि पहली सर्त यह है कि लड़नेवालोंमें सत्याग्रह भाव — सत्याग्रह बल — होना चाहिए, अर्थात् जब व्यक्तिको केवल सत्यके ऊपर निर्भर रहना चाहिए। एक पक्ष बड़ीमें और एक पक्ष बूबमें रखन [अर्थात् दो भावोंपर धर रखने]से काम न चलेगा। ऐसा करनेवाला व्यक्ति [घटीर-बल और नैतिक बलके दो पाठसाक] बीचमें कुचल जायेगा। सत्याग्रह कोई साजरही पीपनी नहीं है कि वह बनेगी तो अजायब और नहीं तो ला जायेंगे। ऐसा माननेवाला व्यक्ति मटक-मटककर परेगा ही होगा रहेगा। यह बात किन्तु बंधक है कि सत्याग्रहकी सड़ाई बड़ी व्यक्ति लड़ता है, जिसमें घटीर बलकी कमी हो अपना जो यह मानना हो कि घटीर-बल काम नहीं देना इसलिए मजबूरन सत्याग्रही बनना पड़ता है। जिनकी सभी माय्यता है वे सत्याग्रहकी सड़ाईको नहीं जानते ऐसा कहा जा सकता है। सत्याग्रह घटीर-बलके अधिक उजसवी है और उनके सामने घटीर बल उनके अज्ञान है। घटीर-बलमें मुख्य बात यह है कि घटितगामी पुरुष अपने घटीरकी परवाह न करके लक्ष्यमें जुगता है अर्थात् वह इरपीक नहीं होता। सत्याग्रही छा अपने घटीरको कुछ भी नहीं धिनता। जयमें हर तो पैठ ही नहीं लड़ता। इसीलिए वह बाहरी

हृदियार नहीं बाँधता और मौतका डर रखे बिना अन्ततक सड़ता है। अतएव सत्याग्रहीमें घटीर-बलपर निर्भर व्यक्तिके मुकाबले हिम्मत क्याही होनी चाहिए। इस प्रकार सत्याग्रहीके लिए सबसे पहले सत्यका सेवन करना सत्यके ऊपर आस्था रखना आवश्यक है।

उसमें पैसके प्रति अनासक्ति होगी चाहिए। सम्पत्ति और सत्यमें सदा अनबन रही है और अन्ततक रहेगी। जो सम्पत्तिसे चिपकटा है वह सत्यकी रक्षा नहीं कर सकता। यह हमने ट्रान्स्वाल्डमें बहुत-से भारतीयोंके मामलोंमें देखा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि सत्याग्रहीके पास सम्पत्ति हो ही नहीं सकती। हो सकती है किन्तु पैसा उसका परमेस्वर नहीं बन सकता। सत्यका सेवन करते हुए पैसा रहे तो ठीक है अन्यथा उसको हाथका पैसा समझकर त्यागनेमें एक पसके लिए भी मिस्रक न हो। जिसने अपना मन ऐसा न बनाया हो उससे सत्याग्रह हो ही नहीं सकता। इसके अतिरिक्त जिस देशमें राजाके विरुद्ध सत्याग्रह करना पड़ता है उस देशमें सत्याग्रहीके पास सम्पत्ति होना मुश्किल बात है। राजाका बल मनुष्य पर नहीं उसकी सम्पत्तिपर बलवा उसके भयपर बसता है। राजा प्रवासे जो-कुछ करना चाहता है वह उसका सजाना मटने या उसके घटीरको मुकदान पहुँचानेका डर दिखाकर करता है। इसलिये अत्याचारी राजाके राज्यमें प्रायः अत्याचारमें मान लेनेवाले छोप ही पैसा रख भा जोड़ सकते हैं। सत्याग्रही अत्याचारमें तो भाग ले नहीं सकता इसलिये घटीरमें ही अमीरी मान लना उसके लिए उचित होता है। उसके पास सम्पत्ति हो तो उसे दूसरे देशमें रखना चाहिए।

सत्याग्रहीको कुटुम्बका मोह छोड़ना पड़ता है। यह बहुत मुश्किल बात है। किन्तु सत्याग्रह पैसा उसका नाम है तलवारकी धार है। अन्तमें इससे भी कुटुम्बका काम होता है क्योंकि कुटुम्बियोंको भी सत्याग्रहकी लयन लगानेका अवसर आता है और यह लयन जिसको मगधी है उसको फिर दूसरी इच्छा नहीं रहती। कोई चास बुझ सकते हुए — बन पैसते हुए वा पेरु बाते हुए — यह संका वा चिन्ता नहीं होनी चाहिए कि कुटुम्बका क्या होना। जिसने बौन दिये है वह चरना भी देना। जो सौप विरुद्ध बाप और भेड़िया आदि भयानक जीव पशुओं या प्राणियोंको भोजन दे रहा है वह मानवजातिको मूलनेवाला नहीं है। हम जो इतनी ह्याय-ह्याय करते हैं वह सेर-भर बाजरे या मुट्ठी-भर अन्नके लिए नहीं बल्कि बट्टे-मीठे स्वादके लिए टंड बूर करनेके लायक मामूली कपड़ेके लिए नहीं बल्कि देयम और कीमत्ताबकं लिए। यदि हम इन लालमाओंको छोड़ दें तो सिर्फ कुटुम्बके मरण-शोषणको भेकर चिन्ता कम ही रह जायेगी।

इस सम्बन्धमें यह विचार करने योग्य है कि घटीर-बल आजमानेमें भी इतमें से बहुत कुछ छोड़ देना पड़ना है। मूल-व्यास सर्वा-यमी सहन करनी पड़ती है कुटुम्बका मोह छोड़ना पड़ता है और पैसका त्याग करना हाता है। बीभर्तोंने घटीर-बलकी आजमाइस करते हुए यह सब किया। उनके घटीरी भाइय और अपने सत्याग्रहमें बड़ा अन्तर यह है कि उनकी बायीं नुकी बायीं थी। इसके अतिरिक्त उनको अपने घटीर-बलका अभिवाग हो गया। वे आधा जीवनभर अपनी पहली रक्षा भूल गये। वे अत्याचारीके विरुद्ध अत्याचारके हृदियारगे लड़े इसलिए वे अब हमारे ऊपर अत्याचार करने लगे हैं। जब सत्याग्रही लड़कर जीतता है तब उसकी जीतना परिणाम उसके लिए भी और दूसरोंके लिए भी अच्छा ही होता है। सत्याग्रही सत्यपर बटा रहना वह कभी अत्याचारी बन ही नहीं सकता।

इस प्रकार, सत्याग्रही कौन हो सकता है, इसका विचार करते हुए यह परिणाम निकलता है कि जिसकी बर्तमें—दीर्घमें—सच्ची भावना है वही सत्याग्रही हो सकता है। मुझमें राम बगलमें सूटी^१—बैसी भावनावाला नहीं। बीनका नाम लेकर दीनके लिखाऊ काम करना बीन नहीं है। जो धर्म बीन और ईमानकी रखा उचित प्रकारमें करता है वही सत्याग्रही हो सकता है। इसका अर्थ यह है कि जो मनुष्य सब-कुछ सुना या ईश्वरपर ही छोड़ देता है, उसको संसारमें कमी हारना ही नहीं पड़ता। जोम हाथ हुआ कहें उससे वह हारा हुआ नहीं माना जायगा। जोम उसे पीठा हुआ मारें तो उसमें उसकी बीन भी नहीं है। इसको जो जानता है वही जानता है।

यह सत्याग्रहका सच्चा रूप है। इसको एक हरे लक ड्रान्सवालेके मास्तीयोंने जाना है। उन्होंने इसको जानकर इसका कुछ फायदा भी किया है। इतनेसे ही हम इसके अनुस्यू एवका भावनावन कर सके हैं। जिसने सत्याग्रहकी खातिर अपने सबस्वका त्याग किया है उसने सब-कुछ पा लिया है क्योंकि वह सन्तोष मानता है, और सन्तोष सुख है। इसके सिवा दूसरा सुख किसने जाना है? दूसरा सुख तो भृगुजलके समान है। ज्यों-ज्यों हम उसकी ओर बढ़ते हैं त्यों-त्यों वह दूर होता जाता है।

हम चाहते हैं कि ऐसा घोषकर हरएक भारतीय सत्याग्रही बने। यह हथियार हम सब जायेगा तो अत्याय-जनित सभी दुर्बोका दूर करनेमें काम जायगा। यह यहाँ ही नहीं बल्कि अपने देशमें भी बहुत उपयोगी है। कबल इसका ठीक स्वरूप समझ लेना चाहिए। उसको समझना बीबा घुमन है, बीबा ही कठिन भी है। घण्टीरके बसी भी घोड़े होते हैं फिर सत्यके बही तो उनसे भी कम होते हैं।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २९-५-१९१९

१४८. मेरा जेलका तीसरा अनुभव [१]

फाकसरस्ट

बब २५ फरवरीको मुझे तीन माहकी सज़ा कैदकी सज़ा हुई और मैं फाकसरस्टकी जेलमें अपने कैदी भाइयों और सड़केसे मिला तब मैं यह नहीं सोचा था कि इस तीसरी जेलवालाके विषयमें मेरे पास कुछ बहिस कहने या लिखने-बीबा होगा। केवल मेरी यह धारणा मनुष्यकी बनेक अन्य धारणाओंकी तरह ही झूटी सिद्ध हुई है। इस बार मुझे जो अनुभव मिला है वह कुछ बुरे ही प्रकारका है। उससे मैंने जितना सीखा है उनका क्योंकि अन्त्यासे भी नहीं सीप सजना था। इस तीन माहोंको मैं अनुस्यू गिनता हूँ। इस समय अबधिम सत्याग्रहके बनेक जीवन्त उदाहरण मेरे सामने आये और मैं मानता हूँ तीन

१. कांटीने ने कुछ गुजराती कैदने इस दिग्दी धारणा ही जल्पेन किया है।

हृदयार नहीं बौधता और मौतका डर रहे बिना अन्ततक लड़ता है। अतएव सत्याग्रहीमें शरीर-बलपर निर्भर व्यक्तिके मुकाबले हिम्मत ज्यादा होनी चाहिए। इस प्रकार सत्याग्रहीके लिए सबसे पहले सत्यका सेवन करना सत्यके ऊपर आस्था रखना आवश्यक है।

उसमें पैसके प्रति अनासक्ति होनी चाहिए। सम्पत्ति और सत्यमें सदा अन्तर्गत रही है और अन्ततक रहेगी। जो सम्पत्तिसे विपक्वता है वह सत्यकी रक्षा नहीं कर सकता। यह हमने ट्रान्सवालमें बहुत-से भारतीयोंके मामलोंमें देखा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि सत्याग्रहीके पास सम्पत्ति हो ही नहीं सकती। हो सकती है किन्तु पैसा उसका परमेश्वर नहीं बन सकता। सत्यका सेवन करते हुए पैसा रहे तो ठीक है अथवा उसको हाथका मूक धमकाकर त्यागनेमें एक पलके लिए भी क्षिप्त न हो। जिसने अपना मन ऐसा न बनाया हो उससे सत्याग्रह ही नहीं सकता। इसके अतिरिक्त जिस देशमें राजाके विक्रम सत्याग्रह करना पड़ता है उस देशमें सत्याग्रहीके पास सम्पत्ति होना मुश्किल बात है। राजाका बल मनुष्य पर नहीं उसकी सम्पत्तिपर बलवा उसके भयपर चम्पटा है। राजा प्रजासे जो-कुछ कृपा चाहता है वह उसका खजाना कूटने या उसके शरीरको मुकसान पहुँचानेका डर दिखाकर करता है। इसलिये अत्याचारी राजाके राज्यमें प्रायः अत्याचारमें भाग लेनेवाले लोग ही पैसा रख या जोड़ सकते हैं। सत्याग्रही अत्याचारमें तो भाग ले नहीं सकता इसलिये गरीबीमें ही अमीरी मान लेना उसके लिए उचित होता है। उसके पास सम्पत्ति हो तो उसे दूसरे देशमें रखना चाहिए।

सत्याग्रहीको कुटुम्बका मोह छोड़ना पड़ता है। यह बहुत मुश्किल बात है। किन्तु सत्याग्रह, पैसा उसका नाम है, उल्टाचालकी बार है। अन्तमें इससे भी कुटुम्बका काम होता है क्योंकि कुटुम्बियोंको भी सत्याग्रहकी समय समालोका व्यवहार आता है और यह लज जिसकी लक्ष्मी है उसको फिर दूसरी इच्छा नहीं रहती। कोई खास पुत्र चाहते हुए—बन पेंचते हुए या बेल खाते हुए—यह सदा या चिन्ता नहीं होनी चाहिए कि कुटुम्बका क्या होगा। जिसने शीठ रिसे है वह चरेना भी देगा। जो सौंप विष्णु, बाब और भेड़िया आदि भयानक जीव अन्तुमो या प्राणियोंको भोजन से रखा है वह मानवजातिको भूखनेवाला नहीं है। हम जो इतनी ह्याम-ह्याम करते हैं वह सेर-सर बाजरे या मुट्ठी-सर अन्नके लिए नहीं बल्कि अट्टे-मीठे स्वादके लिए ठंड दूर करनेके कामका मामूली कपड़ेके लिए नहीं बल्कि रेशम और कीमतवाले किये। यदि हम इन आकाशवाणीको छोड़ दें तो सिर्फ कुटुम्बके भरण-पोषणको लेकर चिन्ता कम ही रह जायेगी।

इस सम्बन्धमें यह विचार करने योग्य है कि शरीर-बल आजमानेमें भी इसमें से बहुत-कुछ छोड़ देना पड़ता है। मूल-व्याय शरीर-बली सहन करनी पड़ती है, कुटुम्बका मोह छोड़ना पड़ता है और पैसका त्याग करना होता है। बोखराने शरीर-बलकी आजमाइश करते हुए यह सब किया। उनके शरीरों आजग्रह और अपने सत्याग्रहमें बड़ा अन्तर यह है कि उसकी बाजी चुपकी बाजी थी। इसके अतिरिक्त उनको अपने शरीर-बलका अभिमान हो गया। वे आज्ञा जीतनेपर अपनी पहली रक्षा मूल गये। वे अत्याचारीके विक्रम अत्याचारके हृदयारसे बड़े इसलिये वे अब हमारे ऊपर अत्याचार करने लगे हैं। अब सत्याग्रही लड़कर जीतता है जब उसकी जीतका परिणाम उसके लिए भी और दूसरोंके लिए भी अच्छा ही होता है। सत्याग्रही सत्यपर बटा रहेगा वह कभी अत्याचारी बन ही नहीं सकता।

इस प्रकार, सत्याग्रही कौन हो सकता है इसका विचार करते हुए यह परिणाम निकलता है कि जिसकी धर्ममें—श्रीनमें—सच्ची आस्था है वही सत्याग्रही हो सकता है। मुसलमानी धर्म में सही आस्था नहीं है। श्रीनका नाम लेकर श्रीनके लिये काम करना नहीं है। जो धर्म श्रीन और श्रीनकी रक्षा उचित प्रकारसे करता है वही सत्याग्रही हो सकता है। इसका अर्थ यह है कि जो मनुष्य सब-कुछ खुदा या ईश्वरपर ही छोड़ देता है, उसको धर्ममें कमी श्रावण ही नहीं पड़ता। छोड़ दिया हुआ कर्तव्य, उससे वह हाथ धुआ नहीं जाना आवेगा। लोग उसे जीवा हुआ मानें तो उसमें उसकी जीव भी नहीं है। इसको जो जानता है वही जानता है।

यह सत्याग्रहका सच्चा रूप है। इसको एक हृदय तक दान्तवाकके भारतीयोंने जाना है। उन्होंने इसको जानकर इसका कुछ फायदा भी लिया है। इनमेंसे ही हम इसके समुदाय रक्षा आस्थाके कर सकते हैं। जिसने सत्याग्रहकी खातिर अपने सर्वस्वका त्याग किया है उसने सब-कुछ पा लिया है क्योंकि वह सन्तोष मानता है और सन्तोष सुख है। इसका विना दूसरा सुख किसने जाना है? दूसरा सुख तो मृगजलके समान है। ज्यों-ज्यों हम उसकी पार करते हैं त्यों-त्यों वह दूर होता जाता है।

हम चाहते हैं कि ऐसा सोचकर हर एक भारतीय सत्याग्रही बने। यह इतिहास हाथ में लायेगा तो अत्याय प्रकृति सभी दुर्गोंको दूर करने में काम आवेगा। यह यही ही नहीं बल्कि अपने धर्ममें भी बहुत उपयोगी है। कंच इसका ही स्वरूप समान बना चाहिए। उसको समझना जैसा सहज है वैसे ही कठिन भी है। घटकर बली भी छोड़े होते हैं फिर सत्यके बली तो उनसे भी कम होते हैं।

[गुजरातीसे]

इंडियन मीपिनियन २९-५-१९१९

१४८ मेरा जेलका तीसरा अनुभव [१]

फ्रीकसरस्ट

जब २५ फरवरीको मुझे तीन माहकी सख्त कैदकी सजा हुई और मैं फ्रीकसरस्टकी जेलमें अपने कैदी भाइयों और बहनोंके साथ एक कमरे में रहने लगा था कि इस तीसरी सत्याग्रहके विषयमें मेरे पास कुछ अधिक कहने या लिखने जैसा हुआ। कैदमें मेरी वह धारणा मनुष्यकी अनेक अन्य धारणाओंकी तरह ही भूटी गिर गई है। इस बार मैंने जो अनुभव लिखा है वह कुछ दूसरे ही प्रकारका है। उन्हीं में से लिखना हीना है इसलिए अत्याय भी नहीं सीग सकता था। इन तीन माहोंको मैं अनुभव लिखता हूँ। मैं अपने अर्थमें सत्याग्रहके अनेक अर्थपूर्ण उदाहरण मेरे सामने आते और मैं उन्हें लिखता हूँ।

१. कैदीके एक गुजराती केने एक दिनी अत्याय ही कारण लिखे हैं।

माह पहले मैं जितना बकवान सरयाग्रही का उसकी अपेक्षा आज अधिक बकवान हो गया हूँ। इस सारे कामके लिए मुझे यहाँकी (ट्रांसवाल्मी) सरकारका उपकार मानना चाहिए।

कुछ अधिकारियोंने यह ठान ली थी कि इस बार मुझे छ-माससे कमकी सजा न मिले। मेरे साथी—जिनमें अनेक बुजुर्ग और प्रसिद्ध भारतीय हैं—और मेरा झुंका ने सब छ-छ माहकी सजा भोग रहे थे। इसलिये मैं यह चाहता था कि अधिकारियोंकी यह बाधा पूरी हो ली बग़ैर। लेकिन मेरे ऊपर जो आरोप लगाया गया था वह कानूनकी बाध विशेषके अनुसार लगाया गया था। इसलिये मुझे डर था कि ज्यादासे-ज्यादा मुझे तीन माहकी ही सजा होगी। और हुआ भी ऐसा ही।

जेल पहुँचकर श्री राउप मुहम्मद भी स्तमजी भी सीराबजी भी पिल्ले भी हजूर सिंह, श्री काकनहापुर सिंह आदि सरयाग्रही योद्धाजिसमें अत्यन्त हृदयपूर्वक मित्र। इस-एक लोगोंको छोड़कर बाकी सबके सोनेकी व्यवस्था जेलके मैदानमें करके दिये गये तम्बुओंमें की गई थी। इसलिये सायं बुझ जेलके बचाव स्क्वार्डकी लावनी-बीजा सनता था। तम्बुमें सोना सबको पसन्द था। खाने-पीनेका सुख था। रसोई पहलेकी तरह हमारे ही हाथमें थी। उसमें मनचाहे ढंगसे खाना बनता था। सब मिसकर ७७ (सरयाग्रही) कैंपी थे।

जिन कैदियोंको काम करनेके लिए बाहर ले जाते थे उनका काम बोझा कटित था। उन्हें मजिस्ट्रेटकी कचहरीके सामनेकी सड़क तैयार करनी थी। उसके लिए पत्थर खोदते पड़ते थे उनके छोटे-छोटे टुकड़े करने पड़ते थे और बादमें उन्हें वहाँ सड़क बन रही थी वहाँ तक ले जाना पड़ता था। यह काम खत्म होनेके बाद स्कूअके मैदानमें बाघ खोदनी पड़ती थी। लेकिन अधिकारियों यह काम सब कोप मनेसे करते थे।

इस तरह तीन-एक दिन मैं भी इन टुकड़ियोंके साथ गया। इस बीच (सरकारका) ठार आया कि मुझे काम करनेके लिए बाहर न भेजा जाये। मैं निराश हुआ क्योंकि मुझे बाहर जाना पसन्द था। उसमें मेरी तबीयत सुधरती थी और शरीर कसता था। साधारणतः मैं हमेशा जिनमें दो बार ही खाता हूँ। फेब्रुअरी केसमें इस कसरतके कारण शरीर बोझी बसह तीन बार खाना मँदता था। जब मुझे साहू खानेका काम मिला। ऐसा माकूम पड़ा कि इसमें दिन बटेगा नहीं। और इसमें ही यह काम भी हाथसे चले जानेका प्रसंग आ गया।

मुझे फीब्रुअरिस्टसे जखम क्यों किया गया ?

मार्चकी दूधरी शारीरको खबर मिली कि मझे प्रिटोरिया भेज देनेका हुक्म हुआ है। उसी दिन मुझे तैयार किया गया। बर्षा हो रही थी रास्ता कसब था ऐसे समय अपना पट्टर उठाकर मुझे और मेरे सन्तरीको जाना पड़ा। सामकी ही बाड़ीमें तीसरे दरजेके डिब्बेमें मुझे ले जाया गया।

इसपर कुछ लोगोंने अनुमान लगाया कि खबर सरकारके साथ समझौता होनेवाला है। कुछने ऐसा सोचा कि मुझे दूधरे बेलवासिमोंसि बखग करके ज्यादा तकलीफ देनेका इरज्जा होगा। और कुछको ऐसा क्या कि ब्रिटेनकी लोकसभामें चर्चा न हो इसलिये सरकार मुझे प्रिटोरियामें रखकर घायब ज्यादा जावारी और ज्यादा सुविधाएँ देना चाहती है।

१. नवीनीकृत श्री यह आरोप लगाया गया था कि उन्होंने देवीकन-अमलन (रिजिस्ट्रार ऑफिसियल) रिजिस्ट्रार बनाकर किया और अंतर्निहित किया था किनसेके बन्धन अमान्तों दिने। लेकिन यह १९६-९०.

फोक्सरस्ट छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगा। वहाँ जिस तरह हम अपना दिन आनन्दमें बिताते थे उसी तरह रातमें भी अच्छी बातें करके सुप्त हुआ करते थे। श्री हनुमच्छिह्न तथा श्री बोसी ये दो खासकर बहुत सबाह-सबाव करते थे और उगक प्रत्य निरर्थक नहीं होते थे बल्कि ज्ञानवाणीकी कोटिके होते थे। वहाँ ऐसी स्थिति थी और वहाँ भारतीय कैंबी बहुत बड़ी संख्यामें रह रहे थे बहसि जाना किन्तु सत्याग्रहीको अच्छा लगता।

लेकिन मनुष्य जो सोच नहीं हो जाये तो वह मनुष्य न रहे। इसलिए मैंने बहसि जाना ही पड़ा। रातमें श्री काजीस सलाम-बाचपी हुई। एक दिवसमें सन्तरी और मैं दोनों बैठे। ठंड पड़ रही थी। बर्षा रात-भर होती रही। मेरा हास 'मेरे हाथ का सन्तरीने उसे पहननेकी अनुमति दे दी। उससे कुछ ठीक हुआ। मेरे हाथके लिए सापमें डबलरोटी तथा पनीर बाँध दिया गया था। लेकिन मैं तो जाकर निकला था इसलिए मैंने उसे नहीं छुआ। उसका उपयोग सन्तरीने किया।

मिटोरिया खेडमें

टीसरी सारीसको मैं मिटोरिया पहुँचा। सब-कुछ गया मामूम हुआ। वह खेड भी नहीं बनाई गई है। बाबजी सब मये थे। मैंने ज्ञानके छिप कहा गया पर जानेकी इच्छा नहीं थी। मुझे मकईकी लपसी (मीसीमील पॉरिज) भी गई। उसका एक चम्मच चलाकर मैंने छोड़ दिया। सन्तरीको बाधन्य हुआ। मैंने कहा मुझे मूल नहीं है। वह हँसा। फिर मैं एक बूंदसे सन्तरीके हाथमें गया। वह बोला 'गांधी टोपी उतारो। मैंने टोपी उतारी। बादमें उसने मुझसे कहा 'क्या तुम गांधीके लड़के हो?' मैंने कहा 'नहीं मेरा लड़का तो फोक्सरस्टमें छ' माहूकी कैंबी सबा भोग रहा है।' बादमें मुझे एक कोठरीमें बन्द कर दिया गया। मैंने उसमें भूमना शुरू किया। कुछ ही देरमें कैंबियोंको देखनेके लिए बरबाजमें जो सूरज होता है, उसमें से सन्तरीने मुझे बछते बैसा और वह बोल उठ 'गांधी भूमना बन्द करो उससे मेरा कर्ष खराब होता है।' मैंने भूमना बन्द कर दिया और एक कानेमें बड़ा हो गया। मेरे पास पढ़नेके लिए भी कुछ नहीं था। अभी मेरी पुस्तकें मुझे मिली नहीं थीं। मुझे जाठ बजे बन्द किया गया होगा। इस बज डॉक्टरकें पास के जाया गया। डॉक्टरने मुझसे पूछा कि मुझे कोई छूतका रोग तो नहीं है और छुट्टी दे दी। बादमें मैं फिर बन्द कर दिया गया। प्यारू बजे मुझे एक बूंदरी छोटी कोठरीमें के जाया गया। उसीमें मैंने अपना साध समव बिताया। ऐसी कोठरीवाँ एक-एक कैंबीको रखनेके लिए बनाई गई है। मेरा खयाल है कि उसकी लम्बाई-चौड़ाई १ x ० फुट रही होगी। छत काँडे डामरका है। सन्तरी जोय उसे दमकटा हुआ रखनेकी कोसिममें लग रहते हैं। उसमें हवा और उजालेके लिए कैंब और कोठरीके छतोंकी एक बहुत ही मोटी लिङ्की हाँपी है। कैंबियोंको रातके समय देखनेके लिए बिजलीकी बत्ती होती है। वह बत्ती कैंबियोंकी मुखाके लिए नहीं होती क्योंकि उसका उबाला इतना नहीं होता कि उसमें पड़ा जा सक। बत्तीके पास जाकर जाड़े होनेपर भी मैं माने बसरोबाकी किताब ही पढ़ सकता था। बत्ती बराबर जाठ बजे बुझा दी जाती है। लेकिन रातके समय पाँच या छ बार फिर जाकर सन्तरी कैंबियोंको उत सूरजसे देख जाते हैं।

प्यारह बचके बाब किपुटी गबर्नर आया। उसके सामने मैंने तीन माँमें रखीं—किताबोंकी अपनी स्त्रीकी बीमारीके कारण उसके पास पत्र लिखनेकी अनुमति देनेकी और बैठनेके लिए एक बेंचकी। पहली माँके बारेमें जबाब मिखा “बिचार करेगे बुसरीके बारेमें कहा पत्र लिख सकते हो और तीसरीका उत्तर नहीं में मिखा। लेकिन जब मैंने बुसरीमें पत्र लिखकर दिया तो उसपर यह टिप्पणी लिखी गई कि मुझे पत्र अंग्रेजीमें लिखना चाहिए। मैंने कहा कि मेरी स्त्री अंग्रेजी नहीं जानती है मेरे पत्र उसके लिए बचा-बैसे सिद्ध होंगे उनमें कुछ मया या विशेष नहीं लिखा जाता। फिर भी मुझे अनुमति नहीं मिली। अंग्रेजीमें लिखनेकी अनुमतिका काम उठानेसे मैंने इनकार कर दिया। मेरी किताबें मुझे उठी बिग धामको दे दी गईं।

बोपहरका सागा आया वह भी बन्द दरबाजेबाकी उसी कोठरीमें लड़े-लड़े खाना पड़ा। तीन बजेके करीब मैंने महामेकी अनुमति माँगी। महामेकी जगह मेरी कोठरीसे सजा ही पुट दूर रखी होनी। सन्तरी बोसा ठीक है तो कपड़े उतारकर (मंगे होकर) बाबो। मैंने कहा ऐसा करना जरूरी है क्या? मैं अपने कपड़े परंपर टांग हुआ। उसमें बैसा करनेकी इजाजत दे दी। पर साब ही यह भी कहा कि क्याया समय गत अगला। कमी मेरा शरीर पोंछना बाकी ही था कि मारि साहब बिस्का पके “गांभी तैयार हो मये ना नहीं? मैंने कहा अभी तैयार होता हूँ।” किसी भारतीयका मुँह भी मुश्किलसे देखनेको मिलता था। शाम हुई तो कम्बल और मारियलके रेकोसे बनी हुई बटाई सोनेके लिए मिली। सिखाने रखनेको तकिया वा पटिया नहीं था। पाखाने जाता तक भी एक सन्तरी पहन बैठा हुआ सड़ा खड़ा था। और यदि वह मुझे जानता न होया तो बिस्काता “साम” अब निकलो। यहाँ “साम” को तो पाखानेमें पूरा समय देनेकी बुटी जागत भी इसलिये ‘साम’ पुकारते ही बैसे उठ सकता था? और छठ जाता तो उसकी हाजत कैसे पूरी होती? इसी तरह कमी सन्तरी और कमी काफिर कभी या तो ससक-उसककर पाखानेके भीतर शकिते वा ‘उठ’ “उठ” की पट रना देते थे।

मुझे काम बूसरे दिन मिखा। वह फर्ज और दरबाजे साफ करनेका था। साफ करनेका मतलब था उन्हें बण्डी तरह चमकाना। दरबाजे कोड़ेके से बिलपर रोगन कमा हुआ था। उन्हें हमेशा पाकिस्त करनेसे उनपर क्या असर पड़ता? मैंने एक-एक दरबाजा बिसनेमें तीन-तीन बंटे कपाये। लेकिन उनमें कोई फर्ज मैंने तो नहीं देखा। फर्जमें जरूर कुछ फर्ज पड़ता था। मेरे साथ बूसरे कुछ काफिर कभी काम करते थे। वे अपनी सजाकी कहानी दूरी-दूरी अंग्रेजीमें सुनाते थे और मेरी सजाके बारेमें पूछते थे। कोई पूछता कि क्या तुमने बोरी की है तो कोई पूछता क्या तुम सतब बेचते पकड़े मये। जब मैंने बोड़े समझदार काफिरको अपनी बात समझाई, तो वह बोसा क्वाइल राइट” (“ठीक किया”) “अमरुंगु ईव (‘बोरे सतब है’) “बोरेट पे काइल (“जुमाना मत देना”)। मेरी कोठरीपर लिखा गइसोसेटैड (‘उमहाई’)। मेरी कोठरीके पास बूसरी पाँच नौ बँसी पड़ोसी एक काफिर था जो कूनका प्रयास करनेके बय नौ गाय खाँ जो तीन कभी थे उनपर समाजके व्यवहारके बिबड़ बनिमोग पड़ोसी जो सगतिमें और ऐसी स्थितिमें मैंने प्रिटोरियाकी थे

सुराक

सुराकका भी यही हाल था। सबेरे पूरा [मकईका बकिमा] दिया जाता था। दोपहरको तीन दिन पूरा और बानू जबका नाजर, तीन दिन सेमकी बाल और घामको बाबक जिसमें भी नहीं दिया जाता था। बुधवारको दोपहरमें सेम तथा बाबक और भी और रविवारको पूराके साम बाबक तथा भी मिलता था। बीके बिना बाबक जानेमें कठिनाई होती थी। जबतक भी न मिले तबतक बाबक न जानेका मैंने निश्चय किया। सबेरेका और उसी तरह दोपहरका पूरा कमी कच्चा तो कमी छपटा-बैसा होता था। सेमकी बाबक कमी-कमी कच्ची होती थी। सामारगत सेम ठीक पकाई जाती थी। जिस दिन बाबक मिलता उस दिन छोटे-छोटे चार आठ दिये जाते थे उनका बज्रन आठ बीस मागा जाता था। और जिस दिन गाजर देना होता उस दिन गिनी-पिनाई तीन पाजरों मिलती थी भी छोटी होती थी। किमी-किमी दिन सुबह चार-पाँच बम्मच पूरा मैं के सेता था। लेकिन सामान्यत मैंने बड़े माह सिर्फ दोपहरकी सेमपर काटा। इसमें फोस्फरस्टेके हमारे बेकामासी माइपॉके जानने योग्य एक बात यह है कि हम अपने रसोइयोंपर कुछ कच्चा या कम रह जानेपर जो मायाज होते थे वह ठीक नहीं था। हमारे ही कोई भाई रसोई करते हों उस समय तो हमारी मायाजी काम दे सकती थी। लेकिन उपर्युक्त स्थितिमें क्या हो सकता था? बेधाक यहाँ भी मायाजी प्रकट थी या सकती है लेकिन इस सम्बन्धमें शिकायत करना हमें शोभा नहीं देता। वहाँ सैकड़ों कैदी सन्तोष मानकर बैठे हों वहाँ शिकायत कैदी? शिकायतका हेतु एक ही हुाना चाहिए। उससे दूसरे कैदियोंको भी राहत मिलनी चाहिए। मैं कमी-कमी सन्तरीसे कहता कि आज बोड़े हैं तब वह मेरे लिए और ला देता था। लेकिन इससे क्या फायदा होनेवाला था? एक बार मैंने देखा कि वह तो मुझे दूसरेके कटोरेमें से जानूँ छाकर देता है। इसलिये मैंने यह बात कहना ही छोड़ दिया।

सामको बाबकमें भी नहीं मिलता यह बात मुझे पहलेसे ही माकूम थी और मैंने इसका इलाज करनेका भी निश्चय कर लिया था। यह बात मैंने बड़े बारोमासे कही। उसने कहा कि भी तो सिर्फ बुधवार तथा रविवारको दोपहरके बन्धेमें मिलेगा। यदि मैं ज्यादा बार भी लेना चाहूँ तो डॉक्टरसे मिलूँ। दूसरे दिन मैंने डॉक्टरसे मिलनेकी प्रार्थना की। मुझे उसके पास के आया गया।

डॉक्टरके सामने मैंने सब भारतीय कैदियोंके लिए चरबीकी बगल भी देनेकी माँग की। बड़ा बारोमा वहाँ हुआ। उसने कहा बाधीकी माँग उचित नहीं है। आजतक लगभग सब भारतीय कैदियोंने चरबी खाई है और दोस्त भी खाया है। जो लोग चरबी नहीं लेते उन्हें अब सुधा बाबक मिलता है और वे सब लुपुसे खाते हैं। अब वहाँ सत्याग्रही कैदी थे तब वे भी खाते थे। जेरूम के शक्तिर हुए, उस समय उनका बज्रन किया गया था और अब उन्हें छोड़ा गया तब भी किया गया था। उन सबका बज्रन उस समय बड़ा हुआ पाया गया था। डॉक्टरने पूछा "बोसो अब तुम्हें क्या कहना है?" मैंने कहा यह बात मेरे काने नहीं उतरती। अपने विषयमें तो मैं कह सकता हूँ कि यदि मुझे बिस्कुट बीके बिना रहना पड़ा तो मेरी तबीयत बकर बिपड़ेगी। डॉक्टर बोला तो तुम्हारे लिए मैं रोटीका हुकम करता हूँ। मैंने कहा "मैं आपका उपकार मानता हूँ। लेकिन यह प्रार्थना मैंने सास अपने लिए नहीं की है। जबतक सब लोगोंके लिए पीका हुकम नहीं मिलता तबतक मैं रोटी नहीं के सकता। इसपर डॉक्टरने कहा "अब तुम मुझे दोष न देना।"

प्यारू बचके बाद डिप्टी पवनर आया। उसके सामने मैंने तीन माँसे रखीं—फिठाबोंकी अपनी रबीकी बीमारीके कारण उसके पास पत्र सिखानेकी अनुमति देनेकी और बैठनेके लिए एक बेंचकी। पहली माँसके बारेमें बबाब मिसा बिचार करेंगे। दूसरीके बारेमें कहा "पत्र सिखा सकते हो" और तीसरीका उत्तर "नहीं" में मिला। लेकिन जब मैंने मुबारकीमें पत्र भिजकर दिया तो उसपर यह टिप्पणी लिखी गई कि मुझे पत्र अंग्रेजीमें लिखना चाहिए। मैंने कहा कि मेरी रबी अंग्रेजी नहीं जानती है। मेरे पत्र उसके लिए बनावैसे सिद्ध होये। उनमें कुछ गया या बिछेप नहीं मिला जाता। फिर भी मुझे अनुमति नहीं मिली। अंग्रेजीमें लिखनेकी अनुमतिवा काम उठानेसे मैंने हलकार कर दिया। मेरी फिठाबें मुझे उठी बिना सामको ले भी गईं।

बोपहरका खाना आया वह भी बन्द बरबाजेवाली उसी कोठरीमें खड़े-खड़े खाना पड़ा। तीन बजेके करीब मैंने नहानेकी अनुमति माँगी। नहानेकी बगहू मेरी कोठरीसे सबा सी फुट दूर रखी होनी। सन्तरी बोला "ठीक है तो कपड़े उतारकर (नये होकर) बांधो। मैंने कहा "ऐसा करना जरूरी है क्या? मैं अपने कपड़े परंपर टाँब चुँगा। उसने बैसा करनेकी इजाजत दे दी। पर साथ ही यह भी कहा कि ब्यादा समय मत कयाला। अभी मेरा शरीर पौछना बाकी ही था कि माई साहब चिल्ला पड़े "माँधी तैयार हो मये या नहीं?" मैंने कहा "अभी तैयार होता हूँ।" किसी भारतीयका मुँह भी मुश्किलसे देखनेको मिलता था। साम हुई तो फम्बस और गारिबलके रेशमि बनी हुई चटाई छोलेके लिए मिली। सिरहाने रखनेको ठकिया या पटिया नहीं था। पाखाने जाता तब भी एक सन्तरी पहर देता हुआ खड़ा रहता था। और यदि वह मुझे जानता न होता तो बिस्माता 'साम' अब निकळो। यहाँ साम को तो पाखानेमें पूरा समय लेनेकी बुरी आदत थी इसलिए "साम पुकारते ही कैसे उठ सकता था? और उठ जाता तो उसकी इजाजत कैसे पूरी होती? इसी तरह कभी सन्तरी और कभी काफिर कभी या तो उलझ-उलझकर पाखानेके भीतर झाँकते या "उठ" "उठ" की रट लगा देते थे।

मुझे काम दूसरे दिन पिका। वह फर्क और बरबाजे साफ करनेका था। साफ करनेका मतलब था उन्हें अच्छी तरह चमकाना। बरबाजे कोड़ेके से जिनपर रोगन सभा हुआ था। उन्हें हमेशा पालिस करनेसे उनपर क्या बसर पड़ता? मैंने एक-एक बरबाजा बिसलेमें तीन तीन बंटे कयाये। लेकिन उनमें कोई फर्क मैंने तो नहीं देखा। फर्कमें जरूर कुछ फर्क पड़ता था। मेरे साथ दूसरे कुछ काफिर कभी काम करते थे। वे अपनी सजाकी कड़ानी टूटी-फूटी अंग्रेजीमें चुनते थे और मेरी सजाके बारेमें पूछते थे। कोई पूछता कि क्या तुमने बोरी की है तो कोई पूछता क्या तुम सजाब सेचते पढ़ते गये। जब मैंने बोड़े समझदार काफिरको अपनी बात समझाई तो वह बोला बसाइट राइट ("ठीक किया") नमकनु बैड ("घोरे सराब है") बोस्ट पे फाइन ("अनुमति मत देना")। मेरी कोठरीपर लिखा था बाइसोलेट (उपहार)। मेरी कोठरीके पास दूसरी पाँच कोठरियाँ भी बैठी ही थीं। मेरा पड़ोसी एक काफिर था जो बूनका प्रयत्न करनेके अपराधमें सजा भोग रहा था। इसके बाद जो तीन कभी वे सनपर समाजके व्यवहारके विरुद्ध आभिचारका अभिचार था। ऐसे लोगोंकी समयमें और ऐसी स्थितिमें मैंने प्रिटोरियाकी बेचका अनुभव चुक किया।

साम—सामी। इतिव काफिरांमे गेरे जीव सिन्दुवादिनोंको रिखावते "सामी" करते थे।

सुपक

सुपकका भी यही हाल था। सबेरे पूरा [मकईका बकिया] बिया जाता था। सोपहरकी तीन दिन पूरा और बाकू बचका मात्र, तीन दिन सेमकी दाक और घामकी बाबल जिसमें भी नहीं बिया जाता था। बुधवारको सोपहरमें सेम तथा बाबल और भी और रविवारको पूरके साथ बाबल तथा भी मिलता था। बीके बिना बाबल खानेमें कठिनाई होती थी। बसतक भी न मिले तबतक बाबल न खानेका मने निश्चय किया। सबेरेका और उसी तरह सोपहरका पूरा कमी कच्चा तो कमी कपटा-बीसा होता था। सेमकी दाक कमी-कमी कच्ची होती थी। साधारणतः सेम ठीक पकाई जाती थी। जिस दिन दाक मिलता उस दिन छोटे-छोटे बार बाकू बिये जाते थे उनका बजन आठ बीस माना जाता था। और जिस दिन गाजर बना होता उस दिन गिनी-मिनाई तीन पाजर मिलतीं वे भी छोटी होती थीं। क्रिमी-किसी दिन सुबह बार-पांच बम्मब पूरा न ले लेता था। लेकिन सामान्यतः मने बड़े माह सिर्फ सोपहरकी सेमपर काटा। इसमें फोक्सरस्टके हमारे बेसबासी माइयोके खानेकी योग्य एक बाठ यह है कि हम अपने रसोइयोपर कुछ कच्चा मा कम रू जानेपर जो नाराज होते थे वह ठीक नहीं था। हमारे ही कोई भाई रसोई करते हैं उस समय तो हमारी नाराजी काम से सफ़ाई थी। लेकिन उपर्युक्त स्थितिमें क्या हो सकता था? बेचक यहाँ भी नाराजी प्रकट की जा सकती है लेकिन इस सम्बन्धमें सिकायतें करना हमें क्षोभा नहीं देता। जहाँ सैकड़ों कैदी घन्टोप मानकर बैठे हैं वहाँ सिकायत कैसी? सिकायतका हेतु एक ही होना चाहिए, उससे दूसरे कैदियोंको भी राहत मिलनी चाहिए। मैं कमी-कमी घन्टोपसे कहता कि बाकू थोड़े हैं, तब वह मेरे लिए और का देता था। लेकिन इससे क्या फायदा होनेवाला था? एक बार मने देखा कि वह तो मुझे दूसरेके कटोरेमें से बाकू साकर देता है। इसलिये मने यह बात कहना ही छोड़ दिया।

घामकी बाबलमें भी नहीं मिलता यह बात मुझे पहलेसे ही मालूम थी और मने इसका इजाजत करनेका भी निश्चय कर लिया था। यह बात मने बड़े बारोपासे कही। उसने कहा कि भी तो सिर्फ बुधवार तथा रविवारको थोस्तके बचसेमें मिलेगा। यदि मैं क्या-बाद भी लेना चाहूँ तो डॉक्टरसे मिलूँ। दूसरे दिन मने डॉक्टरसे मिलनेकी प्रार्थना की। मुझे उसके पास ले जाया गया।

डॉक्टरके सामने मने सब भारतीय कैदियोंके लिए जरूरीकी बगल भी देनेकी माँग की। बड़ा बारोपा वहाँ हाजिर था। उसने कहा "गांधीकी माँग उचित नहीं है। आजतक जगभंग सब भारतीय कैदियोंके जरूरी बाई है और गोस्त भी लाया है। जो लोग जरूरी नहीं लेते उन्हें जब सूवा बाबल मिलता है और वे सब लुकीसे खाते हैं। जब यहाँ सरयापही कैदी थे तब वे भी खाते थे। जेकमें वे बाकिल हुए, उस समय उनका बजन लिया गया था और जब उन्हें छोड़ा गया तब भी लिया गया था। जब सबका बजन उस समय बड़ा हुआ पाया गया था। डॉक्टरने पूछा "बोली जब तुम्हें क्या कहना है?" मने कहा यह बात मेरे पके नहीं उतरती। अपने विषयमें तो मैं कह सकता हूँ कि यदि मुझे विस्तार भीके बिना खाना पका तो मेरी तबीयत जरूर बिगड़ेगी। डॉक्टर बोला "तो तुम्हारे लिए मैं रोटीका हुकम करता हूँ।" मने कहा मैं आपका उपकार मानता हूँ। लेकिन यह प्रार्थना मने साठ अपने लिए नहीं की है। जबतक सब कोपोंके लिए भीका हुकम नहीं मिलता तबतक मैं रोटी नहीं ले सकता। इसपर डॉक्टरने कहा "जब तुम मुझे सोप न देना।"

अब क्या किया जाये? बड़ा बारीया जाड़े न जाता तो पीका हुषम हो जाता। उमी बिन मेरे सामने रोटी और चावल रखा गया। मैं भूखा था। लेकिन सत्यापही इस तरह रोटी कैसे खा सकता था? इसलिए मैंने ये दोनों ही बस्तुएँ नहीं खाईं। दूसरे दिन जेल निवेद्यक (डायरेक्टर) को^१ मर्जी देनेका हुषम माँगा और वह मिल भी गया। अर्जीमें मैंने जोहानिसबर्न और फोक्सरल्लके उदाहरण देकर सब कैदियोंके लिए भीरी माँग की। इस मर्जीका जवाब पन्द्रह दिनमें मिला। जवाब यह था कि जबतक भारतीय कैदियोंके लिए दूसरे प्रकारकी सुपकका निर्णय न हो जाये तबतक मुझे हर रोज़ चावलके साथ भी दिया जाये। मुझे इसका पता नहीं था कि यह हुषम सिर्फ़ मेरे ही लिए हुआ है इसलिए पहले दिन मैंने चावल भी तथा रोटी खून होकर खाई। परन्तु मैंने कहा कि मुझे रोटीकी जरूरत नहीं है। लेकिन मुझे जवाब दिया गया कि डॉक्टरका हुषम है, इसलिए वह तो मिलेगी ही। इसलिए रोटी भी मैंने पन्द्रह दिन तक खाई।^२ लेकिन मेरी खूबी एक ही दिन टिकी। दूसरे दिन मुझे मामूम हुआ कि हुषम तो ऊपर लिखे अनुसार है। इसलिए मैंने फिर चावल भी और रोटी केनेसे इनकार कर दिया। बड़े बारीयासे मैंने कहा कि जबतक सब भारतीयोंको मेरी तरह भी नहीं मिलता तबतक मैं भी नहीं खे सकता। डिप्टी गवर्नरने जो साथमें ही था कहा "यह तो तुम्हारी मर्जीपर निर्भर है।

मैंने निवेद्यकको फिर लिखा। मुझे बताया गया था कि सुपक अन्तमें नेटाकको जेजों-बीठी कर दी जायगी। मैंने इस बातकी आशोचना की और स्वयं भी न सेनेके कारण बताया। अन्तमें सब मिलाकर डेढ़ माहसे ज्यादा समय बीतनेपर मुझे सूचित किया गया कि बहाँ-बहाँ भारतीय कैदी अधिक संख्यामें होने बहाँ-बहाँ उम्हें भी बिना पायेगा। इस तरह यह कड़ाई शुरू करनेके डेढ़ माह बाद मेरा उपवास (रोमा) टूटा ऐसा कहूँ तो यकत नहीं होगा। मैंने अपमय अन्तिम एक मास चावल भी और रोटीबाकी सुपक ली लेकिन सुबहका खाना बन्द कर दिया। इसी तरह चावल और रोटी सेना शुरू करनेके बाद बोगहरको जब पूरा जाता तब बड़ जी मैं मुझिज्जसे उस भग्नाच केडा था क्योंकि वह हमेशा बख्त-अजय अंगठे पकाया हुआ होता था। फिर भी रोटी और पीका सहाय पर्याप्त था इसलिए मेरी तबीयत सुधर गई।

मैंने ऊपर कहा है कि मेरी तबीयत सुधर गई। बाप यह हुई कि जब मैंने एक ही खून खाना शुरू किया था तब मेरी तबीयत काफी बिगड़ गई थी। मेरी चर्चित जली गई थी और कोई बस दिनों तक मुझे एकल अन्नकपारी रही। मेरी छातीमें भी मड़बड़ी होनेके चिह्न मामूम होने लगे थे।

काममें परिवर्तन

छातीमें तकलीफ़ होनेका कारण दूसरा था। मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि मुझे फर्द और दरवाजे साफ़ करनेका काम सँपना गया था। यह काम करीब दस दिन करनेके बाद हो-बो फटे हुए कम्बलोंको धीकर जोड़नेका काम मुझे दिया गया। यह काम बारीकी और सावधानीसे करना पड़ता था। सारे दिन पीठ झुकाकर फर्दपर बैठे-बैठे सँपना पड़ता था सो भी कोठरीमें

१. देखिए "गवर्नर-अररके नाम लिखे मार्सेलसका लक्षिक" पृष्ठ २३४।

२. यह बचकवादा टप्पे लम्बे बालपी कटी गई बालसे मेक जर्सी छटा; देखिए पत्र अन्तर्गतको पृष्ठ २१२-२३ भी।

बैठकर। इससे घाम होते-होते मेरी कमर दुगने सजवी भी और मेरी बाँधोंको भी कुछ मुकसान पहुँचा। कोठरीकी हवा खराब होती है, ऐसा तो मैंने हमेशा माना है। बड़े बायोमार्से मैंने एक-दो बार कहा कि मुझे माहुर खोदने आदिका काम दिया जाये और बीमा न हो सके तो मुझे कम्बल सीनेका काम लुनी हवामें बैठकर करने दिया जाये। पर उसने दोनों बातें बस्तीकार कर दीं। मैंने इसकी जानकारी भी निदेशकको दी। बन्तमें डॉक्टरका हुबम हुआ और मुझे कम्बल सीनेका काम लुनी हवामें बैठकर करनेकी इजाजत मिल गई। यदि लुनी हवामें काम करनेकी इजाजत न मिलती तो मेरा ल्यास है कि मेरी तबीयत ज्यादा बिगड़ती। यह हुबम मिलनेमें कुछ भाइयों भी खाई, किन्तु उनका उत्सर्ग करनेकी जरूरत नहीं है। तो हुआ यह कि मेरी गुराक बहसनेके साथ ही मुझे लुनी हवामें काम करनेका मौका भी मिल गया। इससे दुःख समाप्त हुआ। जिस समय कम्बल सीनेका काम मुझे दिया गया था उस समय मेरा ऐसा ल्यास था कि एकको सीनेमें एक हस्ता बन्ना जायेगा और उसीमें मेरी पेलकी अवधि पूरी हो जायेगी। लेकिन बीसा नहीं हुआ और मैं पहला कम्बल सीनेके बाद एक जोड़ी कम्बल दो ही दिनमें सीने लगा। इसलिये उस जोगीने मेरे लिए दूसरा काम रूँडा — जैसे बनियाइनोंमें जल भरनेका टिकट रखनेकी भीमियाँ सीनेका आदि।

मैंने जनेक सत्याग्रहियोंके कहा था कि यदि वे तबीयत बिगाड़कर पससे निकलते हैं, तो उनके सत्याग्रहमें कमी मानी जानी चाहिए क्योंकि हम पर्याप्त भीरव रखें तो [जेलकी घापी मुसीबतोंका] इनाम कर सकते हैं। इसके सिवा जिंदा करनेसे भी तबीयत बिगड़ती है। सत्याग्रही तो जेलको महसूस मानता। मुझे इस विचारसे दुःख होता था कि कहीं मुझे घुर ही बिगड़ी तबीयत फेरार बाहर न निकलना पड़े। पाठकोंको याद रखना चाहिए कि मेरे लिए पीका जो हुबम हुआ था उसे मैं स्वीकार नहीं कर सकता था इसीलिए मेरी तबीयत सत्याग्रहमें बिगड़ी। किन्तु दुमर्गपर वह नियम लागू नहीं था। हरएक कैदी जब वह जेलमें बकता हो अपनी अमुबिघाएँ दूर करानेकी माँग कर सकता है। प्रिटोरियामें बीसा न करनेके लिए मेरे पास बाग कारण था इसीलिए केवल अपने लिए पीका हुबम मैं स्वीकार नहीं कर सकता था।

(कमल)

[पञ्चराशीते]

इन्दियन ओपिनियन २०-५-१९९

१४९ भाषण अस्वात और विवमकी स्वागत-सभामें

बोहानिसवर्ग

पृष्ठ २ १९ ९

आज भारतीयों और चीनियोंकी इस सम्मिलित सभासे मेरे आनन्दका पार नहीं है और मैं उसका वर्णन भी नहीं कर सकता। मैंने कब ही ब्रिटिश भारतीय संघके अध्यक्षसे बात करके तय किया था कि श्री अस्वातको लेकर यहाँ जायें और यहाँसे भी काछकियाके घर नास्ते और चाय-पानीके लिए चलें। मैंने यह सोचा भी नहीं था कि मेरे भारतीय भाई और चीनी लोग इतनी बड़ी संख्यामें इकट्ठे हो जायेंगे। संघर्षमें भाग लेनेवाले दो एक—चीनी और भारतीय—इस तरह इकट्ठे हुए, इसमें मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई है। श्री विवम और अस्वात सहीसे हीरोँका ऐसा स्वागत किया जाना कम सराहनीय नहीं है। ये दोनों हीरे अपने-अपने समाजके सच्चे सुमन्वितक और नेता हैं। मैं बैठे-बैठे संघर्षके सम्बन्धमें विचार करता हूँ बैठे-बैठे यह विश्वास होता जाता है कि सबाचार और सव्युपपत्ते संघर्ष करनेमें अत्यन्त भीत ही होगी। सन्नेबाकोंकी संख्या चाहे जितनी हो या रहे किन्तु हमने जो जो भावों की हैं वे तो मानी ही जायेंगी। इस सम्बन्धमें हमें जो दूसरी चीजें मिली हैं यदि हम उनपर विचार करें तो हम देखेंगे कि हम आत्मत्याग और पारस्परिक सहयोगसे एक-दूसरेके प्यारा पास आ गये हैं और ऐसा सहयोग बढ़ानेके लिए उत्सुक हैं। हमने अब अपने सम्मानकी रक्षा करना तथा दूसरोंको सम्मान देना सीख लिया है। मुझे तो लगता है कि यदि अब अन्य कुछ न मिले तो भी निराश होनेकी कोई बात नहीं है क्योंकि जो मिला है वह कम नहीं है और अभी बहुत-कुछ मिलेगा। सत्याग्रहियोंकी सेना छोटी है, किन्तु इसकी कोई निश्ठा नहीं। आप इतिहासमें देखेंगे कि सच्चे सन्नेबाके हनेवा कम ही होते हैं। ईंग्लैंड और रूसकी सजाईमें जस्टिफिकेशन में छोड़े ही लोग ने फिर भी उनका नाम आनन्दक अमर है। इसी प्रकार यदि सब जगह नहीं तो कमसे-कम दक्षिण अफ्रिकामें तो सत्याग्रहियोंका नाम अमर ही रहेगा। मैं नम्रतापूर्वक सलाह देता हूँ कि आप लोग श्री विवम और अस्वातका अनुसरण करें और अत्यन्त वैसा करते हुए सुसकी प्राप्ति करें।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-६-१९ ९

[जोहानिसबर्ग
 जून २, १९१९]

श्री अस्वात और श्री स्विनके बेझटे छूटकर जानेसे इस सबसरपर यदि मैं यबरातीमें न बोर्म् तो ठीक न होया। श्री अस्वातके छूटनेपर हम कोय इतना ही करें यह बहुत कम है। यह बात मैं श्री उमरजी साहेके छूटनेपर कह चुका हूँ अब दुबारा अधिक नहीं कहूँगा। सोड़े लोग भी जो संकल्प कर लें उसे पूरा कर सकते हैं। हजारों कोय टाडिमा बजाते और बेस जानेकी बात कहते थे लेकिन अब बहुत कम है। मुझे इससे असन्तोष नहीं है। भाब भी अस्वातकी उबीपतका हाल पूछते हैं तो वे अच्छा बताते हैं। लेकिन श्री ध्याधके कहनेके मुताबिक ऐसा नहीं है। वे बहादुर [जर्म] दूसरे लोगोंकी तरह व्यक्तिगत मेहरवानीका काम उठाकर टम्बाकू खाते नहीं केते थे। इसपर मुझे अभिमान होता है। वे जो कहते थे सो उन्होंने करके भी बिसाया और उसी प्रकार खन्तक करे। यधकी इच्छा रखे बिना एघा करनेबासे काम कम ही है। बूसरोंको माग देना अपनेको माग देनेके समान है, क्योंकि उससे अपनी सज्जनता प्रकट होती है। कल सबंधी मगबी फकीर माह और कुछ बूसरे लोग भी जिनके नाम मजे याद नहीं आते [छूट कर] जाये। हम लोग उन्हें सेनेके लिए नहीं जा सके। वे भी मागके भूखे नहीं थे और न है। किन्तु हमने जिन्हें बडा माना है उन्हें मान देना तो हमारा कर्तव्य है। श्री स्विन भी हमारे दोनों नेताओंके समान ही है और उनकी स्थिति भी उन्हीकी-सीही हो गई है। जेकमें उन्हें पूरा और मक्की मिळती थी। जब गवर्नरने उन्हें जाबक देनेको कहा तब उन्होंने सूचित किया कि "जब चीनियोंको मिके तमी मैं लूँगा। सरकारने ऐसा नहीं किया तो उन्होंने जाबक नहीं लिया। उनका यह काम छोटा न था। सचमुच श्री स्विन सरवाग्रहके स्तम्भ है। जब उनके सबके कार्यकारी सम्पल बेस जानेके लिए बचीर हो रहे हैं। इन सबके साथ ममबान म्याय तो करेगी ही। हमारे संबर्षका अनुभव देनेबाके ऐसे लोपोके कारण मुझे अभिमान होता है। जो हार गये हैं, उनसे मैं गिरस नहीं होता। यह निश्चित समझ लें कि बीठ हमारी ही होगी।

[पुनरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-६-१९१९

१५१ जेल कौन जा सकता है ?

सत्याग्रही कौन हो सकता है, इसपर हम पिछले हफ्ते मसौपमें विचार कर चुके हैं।^१ द्वांसवाकके आन्दोलनमें सत्याग्रह बहुत-बहुत जेल जानेमें ही निहित रहा है। किन्तु सत्याग्रह कोई जेल जाकर समाप्त नहीं हो जाता। सत्याग्रहियोंको तो मूखीपर चढ़ना पड़ा है^२ तब तौह म्दभमका आश्रित करना पड़ा है, पर्वतपर से लड़कना पड़ा है, लीकते ठेके कड़ाहमें ठहरना पड़ा है^३ अस्तौ अयकमें बसना पड़ा है। राज-गाट छोड़ कर नीचके घर बिकना पड़ा है और सिहकी^४ नुकामें रहना पड़ा है। इस प्रकार सत्याग्रहीकी परीक्षा संसारके मित्र-मित्र मामोंमें मित्र-मित्र इंपोसि हुई है।

द्वांसवाकमें सत्याग्रहियोंकी कसौटी केवल जेल जानेमें ही रही है। इसलिये जेल कौन जा सकता है यह प्रश्न बहुत उपयोगी है। कुछ भारतीय जेल जानेके लिये तैयार होनेपर भी कुछ कारकोसि नहीं गये या नहीं जा सके। ऐसे क्या कारण हुंयि? इस प्रश्नका उत्तर यह संवास पूछने और उसका जबाब जान केनेसे मिक जाता है कि जेल कौन जा सकता है।

सत्याग्रहीमें जो गुण होने चाहिए और जितपर हम विचार कर चुके हैं वे सब थोड़ी-बहुत मात्रामें जेल जानेवाले लोगोंमें होने चाहिए। किन्तु उनके अतिरिक्त उनमें भीचे सिन्धी सन्धितियोंकी आवश्यकता है

- (१) ब्यसतसि दूर रहना।
- (२) शरीर कसा हुआ रखना।
- (३) सोने और बैठनेमें आरामतक्य न होना।
- (४) खानेमें अत्यन्त सादगी।
- (५) सूटी प्रतिष्ठाका त्याग।
- (६) बीरज।

ये छ गुण (जिन्हें हम जेलकी पर-सम्पति कहेंगे) सास ठीरसे जेल जानेवाले नाइको लिये आवश्यक हैं। अब हम इनकी जांच कर लें। अनुभव यह हुआ है कि बीड़ी घराब सुपाठी या चाय-पानके ब्यसतको कारण जेल जानेवाले लोग ऊज गये हैं। ऐसा होनेके कारण या तो उम्होंने खुद जेलमें थोड़ी की है, अर्थात् सत्याका त्याग किया है या वे दूधरी बार जेल जानेका नाम लेना तक मूक बये हैं। इसलिये ब्यसत-भाजसे दूर रहना आवश्यक है। एक ही ब्यसतकी सू होनी चाहिए और वह है प्रमुके नामकी रट।

नामर्क ब्यक्ति सत्याग्रही नहीं बन सकता। बीसे ही दुर्बल शरीरवाका मनुष्य बहुत हद तक जेलके कष्ट बर्बासि नहीं कर सकता। शरीरकी सक्ति न होनेपर भी मनोबससे बहुतसे बीरोंने कष्ट सहन किया है। ये उदाहरण बसाचारण हैं। सामारण नियम तो यह है कि

१ देखिए "सत्याग्रही कौन हो सकता है?" पृष्ठ २२५-२७०।

२, ३, ४, ५ और ६, कथक: शैल, म्दक, सुक्ता, लक-सकली और हरिश्चन्द्रकी पत्रालिका द्वारा लिखा गया है।

घरिद नीरोन और ठीक होना चाहिए। ऐसा न होनेसे कुछ शोच पकरा गये हैं। यत्नाप्रही समझता है कि उसको अपना घरिद किरायपर मिठा है। उनको चाहिए कि वह उसे अच्छी तरह साफ-सुधरा और सफकर रखकर अपनेको अच्छा किरायेशर साबित करे।

यह बात कोई भी समझ सकता है कि जिसको सोनेके लिए टिखनहार पलंग और नर्म पहा चाहिए वह एकाएक जमीनपर नहीं सो सकता। ऐसी स्थितिमें इस प्रकारकी बाउप तकनी भी छोड़ देनी चाहिए।

यह देखा गया है कि बेकमें खानेका सबास सबसे बड़ा सबास बन गया है। यह भी कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। जिसने अपनी जीभको मापन और स्वारके सम्बन्धमें जीठ किया उसने बहुत-कुछ जीठ किया। ऐसे शोच बहुत कम देखनेमें आते हैं जिनको स्वादिष्ट भोजन नहीं चाहिए। गरीब काफिर भी खानेके लिए मरते हैं। यह कोई छोटा-मोटा सबास नहीं है। फिर भी जो परमार्यकी दृष्टिसे बेस जाना जाहता है उसका कुत्कारा तो स्वाशेन्द्रिकको जीठनेमें ही है। ठीक यह है कि जो-कुछ भी मिठा है उसके लिए ईश्वरका बन्धवार किया जाये। प्रत्येक भारतीयको विचार करना है कि मागतमें तीस करोड़ कोषोंमें तीन करोड़को दिनमें एक ही बार खाना मिलता है और वह भी एक टुकड़ा रोटी और नमकके सिवा और कुछ नहीं। एव बेकमें तीन-तीन बार जपकटा-बककटा खाना मिले उससे गुजारा कर केला कोई बड़ी बात नहीं। मूलमें सब अच्छा समझा है। हो सकता है कुछ दिन बेसका खाना अच्छा न सने लेकिन पीछे वह सब जाता है। जो भारतीय सत्याप्रही बेक जाना पाहता है उसको सारा खानेकी बाउत पत्नी दास देनी चाहिए।

भूटी प्रतिष्ठा रखनेवाका बेस नहीं जा सकता। बहूँ बेसके सन्धारियोंकी शासकारी करनी होखी है और ऐसा काम करना पड़ता है जो नीचा मागा जाता है। उसको करनेसे इज्जत आती है ऐसा तो किसी दिन किया नहीं—यह समझकर बेकमें उस कामको न किया जाये तो परिणाम बुरा होता है। यह शबेदायी है यह जवास मनके कारण है। जिसका मन स्वतन्त्र है वह [मिसेकी] बास्ती उठानेपर ही राजाकी प्रति स्वतन्त्र है। वह उस जगह बास्ती उठानेमें शासकारिके बजाव अपनी इज्जत समझता है।

अन्तमें खे बीरज महाराज। एव शोग बेस पाठे ही दिन गिनने कम पाठे हैं। इससे दिन सन्ने कबने लगते हैं। बाहर बरस बीठ गये और वे हमने नैबा दिये फिर भी वे हमें माटी नहीं मासूम पड़े। बेसके तीन दिन तीन बरस-जैसे अने। इसका कारण क्या है ? इसका जबाब यह है कि बेस जाना मनको अच्छा नहीं कमा। सबाई यह है कि बेस जानेमें सुप मानना है। माँ जैसे बन्नेके लिए दुःख सहकर सुख मानती है जैसे ही हमें देखके लिए—सत्यके लिए—दुःख सहते हुए सुख मानता है। दिन जैसे बेसमें बीठेये बीने बाहर नहीं बीठते हमेसा यह मानकर और बीरज रखकर जिसकी बेस मिठी हो उठनी शोग सेगी चाहिए और बहूँ समझका सकुपयोग करना चाहिए, अर्थात् प्रभु-मननमें अच्छे विचारोंमें और अपने शोप खोमनेमें दिन गुजारने चाहिए। यह एक र्थ हो कायके सजान होगा।

इस प्रकार छ पुन तो बेसयात्रीमें बबबब होने चाहिए। बूधरे बूब अपने जाप सूश वावेमे। किन्तु, प्रत्येक पाठकको हमारी सलाह है कि वह हमारे इन विचारोंपर मनन करे।

[सुत्रपरीमे]

इंडियन ओपिनियन ५-९-१९१९

१५१ जेल कौन जा सकता है ?

सत्याग्रही कौन हो सकता है इसपर हम पिछले हफ्ते संक्षेपमें विचार कर चुके हैं। ट्रान्सवालके आन्दोलनमें सत्याग्रह बहुत-कुछ जेल जानेमें ही निहित रहा है। किन्तु सत्याग्रह कोई जेल जाकर समाप्त नहीं हो जाता। सत्याग्रहियोंको तो सूचीपर चढ़ना पड़ा है। तब कोई स्पष्टता आश्रित करना पड़ा है। पर्वतपर से लड़ना पड़ा है, लौहके तेलके कड़ाहमें ठेरा पड़ा है। जलमें जंगलमें जलना पड़ा है। राज-पाट छोड़ कर मीचके घर बिलना पड़ा है और सिहकी गुफामें रहना पड़ा है। इस प्रकार सत्याग्रहीकी परीक्षा संसारके विद्वान्-विप्र भागोंमें विद्वान्-विप्र बर्गोंसे हुई है।

ट्रान्सवालमें सत्याग्रहियोंकी कर्तौटी केवल जेल जानेमें ही रही है। इसलिए जेल जाना या सकता है यह प्रश्न बहुत उपयोगी है। कुछ भारतीय जेल जानेके लिए तैयार होनेपर भी कुछ कारणोंसे नहीं जये या नहीं जा सके। ऐसे क्या कारण होंगे? इस प्रश्नका उत्तर यह सवाल पूछने और उसका जवाब जान लेनेसे निकल जाता है कि जेल कौन जा सकता है।

सत्याग्रहीमें जो गुण होने चाहिए और जिनपर हम विचार कर चुके हैं वे सब बोझ-बहुत मात्रामें जेल जानेवाले लोगोंमें होने चाहिए। किन्तु उनके अतिरिक्त जतमें नीचे किन्हीं धर्मियोंकी आवश्यकता है।

- (१) व्यसनसे दूर रहना।
- (२) शरीर कसा हुआ रहना।
- (३) सोने और बैठनेमें आरामतक न होना।
- (४) खानेमें अत्यन्त सावगी।
- (५) झूठी प्रतिपत्तिका त्याग।
- (६) औरज।

ये छ गुण (जिनमें हम जेलकी पह-सम्पत्ति कहेंगे) जास ठीरसे जेल जानेवाले नाइयोंके लिए आवश्यक है। जब हम इनकी जांच कर ले। अनुभव यह हुआ है कि बीड़ी सरास दुपारी या चाय-पानके व्यसनके कारण जेल जानेवाले लोग उच्च गये हैं। ऐसा होनेके कारण या तो उन्होंने खुद जेलमें घोंसी की है अर्थात् सत्यका त्याग किया है, या वे दूसरी बार जेल जानेका नाम लेना तक भूक गये हैं। इसलिए व्यसन-नाशसे दूर रहना आवश्यक है। एक ही व्यसनकी कूट होनी चाहिए और वह है प्रभुके नामकी रट।

नामके अस्तित्व सत्याग्रही नहीं बन सकता। बीसे ही दुर्बल शरीरवाला मनुष्य बहुत हद तक जेलके कष्ट बर्दाश्त नहीं कर सकता। शरीरकी अस्तित्व न होनेपर भी मनोबल बहुतसे बीरोंने कष्ट सहन किया है। ये उदाहरण असाधारण है। साधारण नियम तो यह है कि

१. देखिए - सत्याग्रही कौन हो सकता है।" पृष्ठ १२५-२७।

२. १, ४, ५ और ६ अन्तर्गत इसी प्रकार, दुर्बल, लज्ज-रक्तकी और हरितकण्ठी नामावली इत्यादि लिखा गया है।

घटीर नीरोम और ठीक होना चाहिए। ऐसा न होनेसे कुछ लोग चबरा मये है। सत्पापही समझता है कि उसको अपना घटीर किरायेपर मिला है। उसको चाहिए कि वह उसे अच्छी तरह साफ-सुधरा और सशक्त रखकर अपनेको अच्छा किरायेदार साबित करे।

यह बात कोई भी समझ सकता है कि जिसको सोनेके लिए त्रिमहार परम और नर्म गद्दा चाहिए वह एकाएक बमीनपर नहीं सो सकता। ऐसी स्थितिमें इस प्रकारकी आपम तकभी भी छोड़ देनी चाहिए।

यह देखा गया है कि जेलमें जानेका सजाक सबसे बड़ा सवाल बन गया है। यह भी कोई धानधर्मकी बात नहीं है। जिसने अपनी बीमको भापन और स्वारके सम्बन्धमें जीत किया उसने बहुत-कुछ जीत लिया। ऐसे लोग बहुत कम देखनेमें आते हैं जिनको स्वादिष्ट भोजन नहीं चाहिए। परीच काफिर भी जानेके लिए मरते हैं। यह कोई छोटा-मोटा सवाल नहीं है। किन्तु भी जो परमात्मकी दृष्टिसे बेस जाना चाहता है उसका कुत्कार तो स्वादेन्द्रियको जीतनेमें ही है। ठीक यह है कि जो-कुछ भी मिला है उसके लिए ईस्वरका धन्यवाद किया जाये। प्रत्येक भारतीयको विचार करना है कि भारतमें तीस करोड़ लोगोंमें तीन करोड़को जिनमें एक ही बार खाना मिलता है और वह भी एक टुकड़ा रोटी और नमकके सिवा और कुछ नहीं। एक जेलमें तीन-तीन बार खाना-बरकता खाना मिले उससे धुजारा कर लेना कोई बड़ी बात नहीं। भूखमें सब अच्छा बनता है। हो सकता है कुछ दिन जेलका जाना अच्छा न लगे सेफिन पीछे वह रुक जाता है। जो भारतीय सत्पापही जेल जाना चाहता है उसको छाया जानेकी आशत जल्दी डाक लेनी चाहिए।

भूठी प्रतिष्ठा रखनेवाला जेल नहीं जा सकता। वहाँ जेलके सन्तरियोंकी ठाकवारी करनी होती है और ऐसा काम करना पड़ता है जो नीचा माना जाता है। उसको करनेसे इज्जत जाती है। ऐसा तो किसी दिन किया नहीं—यह समझकर जेलमें उस कामको न किया जाये तो परिणाम बुरा होता है। यह ठाकवारी है वह जयाक मनके कारण है। जिसका मन स्वतन्त्र है वह [मैकेकी] बास्ती उठानेपर भी राजाकी भाँति स्वतन्त्र है। वह उस जगह बास्ती उठानेमें ठाकवारीके बजाय अपनी इज्जत समझता है।

जेलमें रहे बीरब महापुत्र। एक लोग जेल जाते ही दिन गिनने लय जाते हैं। इससे दिन लम्बे लगने लगते हैं। बाहर बरस बीत पये और वे हमने जेबा बिये फिर भी वे हमें पापी नहीं मानूम पड़े। जेलके तीन दिन तीन बरस-जैसे लगे। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि जेल जाना मनको अच्छा नहीं लगा। छपाई यह है कि जेल जानेमें कुछ मानना है। मैं जैसे जेलके लिए कुछ सहकर कुछ मानती है जैसे ही हमें बेलके लिए—सत्यके लिए—दुःख सहते हुए कुछ मानना है। दिन जैसे जेलमें बीतने जैसे बाहर नहीं बीतते हमेशा यह मानकर और बीरब रखकर जितनी जेल मिछी हो उतनी भोग लेनी चाहिए और वहाँ समयका अनुपयोग करना चाहिए, बर्बाद प्रभु भजनमें अच्छे विचारोंमें और अपने दोष खोजनेमें दिन गुजारने चाहिए। यह एक पंथ को कात्रके समान होना।

इस प्रकार के गूय तो जेलपानीमें बबलन होने चाहिए। दूसरे मुक अपने आप सूख जायेंगे। किन्तु, प्रत्येक पाठकको हमारी सलाह है कि वह हमारे इन विचारोंपर मनन करे।

[मुजरातीसे]

इंदिबन ओपिनियन ५-६-१९११

१५२ मेरा जेलका तीसरा अनुभव [२]

दूधरे परिवर्तन

मे ऊपर बता चुका हूँ कि मेरे मुख्य बार्डरका व्यवहार कुछ मजबूत था। लेकिन यह स्थिति क्या-या दिन नहीं रही। जब उसने देखा कि मैं कुछक बारिके बारेमें सरकारसे तो बड़ता हूँ लेकिन उसके सारे हुकम बराबर मानता हूँ तब उसने अपना व्यवहार बदल दिया और मुझे बीसा अनुकूल हो बीसा करनेकी छूट दे दी। यानी पास्ताना जाने गहाने आरिफी मेरी अड़बनें दूर हो गईं। इसके सिवा अब वह मुझे घायब ही ऐसा एहसास होने देता था कि उसका हुकम मेरे ऊपर चल सकता है। उस बार्डरकी बरतीके बाब जो नया बार्डर आया वह तो बारघाह था। वह मुझे सब योग्य सुविधाएँ देनेका ख्याल रखता था। वह कहता था कि "जो मनुष्य अपनी कामके हितके लिए लड़ता है उसे मैं चाहता हूँ। मैं बुर समझेबासा हूँ। मैं तुम्हें कैदी नहीं मानता। इस तरह वह सान्त्वना और हमदर्दीकी बनेक बातें करता था।

फिर, बोड़े दिन बाब मुझे आधा बंट्टा सुबह और उठने ही समयके लिए धामको बेलके मीदानमें ब्रूनेके लिए बाहर निकाला जाता था। मेरा यह ख्यालाम जब बाहर बैठकर काम करनेकी व्यवस्था शुरू हुई तब भी जारी था। यह नियम उत सब कैदियोंपर लागू होता है जो अपना काम बैठकर करते हैं।

इसके सिवा किस बेंचके बारेमें पहले मुझे माह्री कर दी गई थी वह बेंच भी बोड़े दिन बाब बीफ बार्डरने मुझे अपनी ही ओरसे भिजवा दी। बीचमें जलरक स्मट्सकी तरफसे मुझे जो धार्मिक पुस्तकें पढ़नेके लिए मिली थीं। इससे मैंने अनुमान लगाया कि मुझे जो कष्ट सहना पड़ा वह उनकी आज्ञासे नहीं बल्कि उनकी और ब्रूयोंकी आपरबाहीके कारण तथा मास्ट्रीयोंको काफिरोंके साथ मिलनेकी वजहसे। इतना तो साफ समझमें आ गया कि मुझे यहाँ बकेका रखनेमें हेतु यह था कि किसीके साथ मेरी बातचीत न हो सके। माँग करने और उसक लिए कुछ प्रयत्न करनेके बाब मुझे पेसिब और नोटबुक रखनेकी इजाजत भी मिल गई।

विहीनकरी मुकाफात

मेरे प्रिटोरिया पहुँचनेके कुछ दिन बाब साध इजाजत लेकर भी किचटैन्स्टाइन मुझसे मिलने आये। वे बाये तो वे विरि ऑफिसके कामके लिए, लेकिन उन्होंने मुझसे कहे ही आदि सबाक भी किये। इन सबाकोंका जबाब देनेकी मेरी इच्छा नहीं थी लेकिन उन्होंने आज्ञासे पूजा इसलिए मैंने कहा मैं सब बातें तो नहीं कहता लेकिन इतना कहता हूँ कि मेरे साथ कूरताका व्यवहार किया जा रहा है। ऐसा करते जलरक स्मट्स मुझे पीछे हटाना चाहते हैं लेकिन वह तो कभी हो ही नहीं सकता। मुझे जो तकलीफ दी जायेगी उसे सहनेके लिए मैं तैयार हूँ। मेरा मन शांत है। इस बातको आप प्रकाशित न कीजिए। बाहर निकलनेके बाब मैं बुर साठी बीच दुनियाके जाने रूखा।" भी किचटैन्स्टाइनने यह बात

एक बार और मुझे अदामतमें से जाया गया था। हृषिकेश उस बार भी पहचान गई थी। बाते-आते दोनों बार सटारे [गाड़ी] का इंतजाम था।

सत्याग्रहकी सजिहायी

ऊपर मैंने जिन बातोंकी चर्चा की है, उनमें से कुछ समझ्य कही जा सकती है। किन्तु उन सबको विस्तारसे देनेका हेतु यह है कि छोटी-बड़ी सब बातोंमें सत्याग्रहका उपयोग हो सकता है। छोटे बार्डरने मुझे जो भी आरीरिक तकलीफ दी मैंने स्वीकार की। उसका परिणाम यह हुआ कि मेरा मन शान्त रहा। इतना ही नहीं उन तकलीफोंको फिर उन्हीं कोषोंमें दूर भी किया। यदि मैंने विरोध किया होता तो मेरा मनोबल बेकार सार्थ हो जाता और मुझे जो बड़े काम करने से न हो सकते तथा बार्डर मेरे धनु बन जाते।

कुछकने बारमें अपनी टेकपर कायम रहनेसे और प्रारम्भमें कुछ सहनेसे वह असुविधा भी दूर हो गई। ऐसा ही दूसरी छोटी-छोटी बातोंमें समझा जा सकता है।

सबसे बड़ा काम तो यह हुआ कि शरीरका कुछ सहन करनेसे मैं वह साफ देख सकता हूँ कि मेरा मनोबल बहुत बड़ा है। मैं मानता हूँ कि यह तीन महीनोंके अनुभवसे मुझे बहुत काम हुआ है और जब मैं क्यावा कष्ट आसानीसे उठानेके लिए तैयार हूँ। मुझे ऐसा विश्वास है कि सत्याग्रहको हमेशा ईस्वरकी सहायता प्राप्त होती है और सत्याग्रहीकी कसौटी कष्टे हुए भी जगतका स्वामी उसपर उतना ही बोझा डालता है, जितना वह आसानीसे उठा सकता है।

मैंने क्या पढ़ा !

मेरे बुझकी मजबूत मुझकी या सुख और बुझ दोनोंकी कसौती अब पूरी हो गई कभी जा सकती है। किन्तु इन तीन महीनोंमें मुझे अनेक काम हुए। उनमें से एक यह भी है कि इस अवधिमें मुझे पुस्तकें पढ़नेका अवसर मिला। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मुझके दिनोंमें मैं कुछ चिन्तामें पड़ जाता था बुझसे ऊब उठता था। बार-बार मैं अपने मनपर अंकुश लगाता था और वह बार-बार बन्दरकी तरह बँचस हो जाता था। ऐसी स्थितिमें आधमी बन्दर पायज-बैसे हो जाते हैं। मेरी पुस्तकोंने मेरी बड़ी रखा की। भारतीय माध्यमिक समागमकी कमी बहुत अंशमें पुस्तकोंने पूरी की। मझे पढ़नेके लिए प्रतिबिन्ध लगभग तीन बंटे मिल जाते थे। एक बंटा सुबह मिलता था। मैं उस समय जाता नहीं था इसलिए वह बच जाता था। शामको भी ऐसा ही होता था। दोपहरको जाते समय मैं पढ़नेका काम भी करता था। शामको मैं पका न होता तो बत्ती जलनेके बाद भी पढ़ता था। धनिवार और रविवारको तो बहुत समय मिलता था। इस कालमें मैंने लगभग तीससे पचास पुस्तकें पढ़ीं और उनमें से कुछपर विचार भी किया। ये पुस्तकें अंग्रेजी हिन्दी गुजराती संस्कृत और तमिल भाषाओंकी थीं। अंग्रेजी पुस्तकोंमें जर्मेनीय टॉस्टॉर इमर्शन और कालीइसकी थीं। पढ़ी ही बर्म-सम्बन्धी थीं। इनके साथ मैंने बाइबिल भी पढ़ी वह जेससे ही की थी। टॉस्टॉरकी रचनाएँ बहुत सरल और सरल हैं और किसी भी धर्मको माननेवाला उन्हें पढ़कर उनसे काम उठा सकता है। इसके सिवा वे उन व्यक्तियोंमें से हैं जो जैसा कहते हैं वैसा ही करते भी हैं इसलिए वे जो-कुछ लिखते या करते हैं उसपर हम साधारणतः क्यावा मरोसा कर सकते हैं।

प्राचीनी अग्निपर मिथी हुई कार्नाइलकी रचना बहुत प्रभावोत्पादक है। उसे पढ़कर मुझे विश्वास हो गया कि हिन्दुस्तानकी दुरवस्था दूर करनेका उपाय हमें योरी जातिपसि नहीं मिलेगा। मेरी मान्यता है कि प्राचीनी जनताको अग्निसे सास प्राप्त नहीं हुआ। मैथिलीका भी यही जन्म था। इस बारेमें बहुत मतभेद है। लेकिन उसपर यहाँ विचार करना उपयुक्त नहीं होया। उस जातिके इतिहासमें भी कुछ सत्याग्रहियोंके उदाहरण देखनेमें आते हैं।

गुजराती हिन्दी और संस्कृत पुस्तकोंमें मैंने स्वामीजीकी ओरसे मेरी गई पुस्तक वेद-सम्भ-संज्ञा केसबपम मट्टके भेजे हुए उपनिषद् की मोठीसाज बीबानकी मेरी हुई मनुस्मृति^१ कीनिकसमें छपी हुई रामायण पाठ्यस्य योगवर्जन मयूरमजीकी मिथी हुई आधिक्रम प्रकाश प्रोफेसर परमानन्दकी भी हुई सम्प्राणी गुटिका^२ और मीता तथा स्वर्गीय कविधी रामचन्द्रकी रचनाएँ पढ़ीं। इन पुस्तकोंको पढ़नेसे मुझे विचार करनेके लिए बहुत-कुछ मिला। उपनिषदोंके वाचनसे मुझे बहुत प्राप्ति मिली। एक वाक्य तो मेरे मनपर अंकित हो गया है। उसका सार यह है कि तू जो भी कर, वह आत्माके कल्याणके लिए ही कर। यह बात जिन सबोंमें कही गई है वे बहुत ही सुन्दर हैं। उनमें और भी बहुत-सी बातें विचारणीय हैं।

परन्तु सबसे ज्यादा सन्तोष मुझे कविधी रामचन्द्रकी रचनाओंसे मिला। उनकी रचनाएँ मेरी रायमें तो ऐसी हैं जो सबको मान्य हो सकती हैं। उनकी जीवन-वर्षों टैस्टामेण्टी ही तरह उष्ण कोटिकी थी। उनकी रचनाओंमें से और सम्प्राणी पुस्तकमें से कुछ हिस्सा मैंने कंठस्थ कर लिया था। रातको मैं जब भी जनता उसे सोहायता था और मुबहका आवा मंदा हमेशा जन्ही विचारोंके मतलमें विचारा था। जो हिस्सा याद था उसमेंसे बहिकांश मैं मुँहसे बोल जाता और इसके मत रातदिन जानबूझकर रहता था। किसी समय लिपिवा था भेटी तो अपनी पढ़ी हुई बातोंका विचार करते ही मन सुरस्य प्रसन्न हो जाता और मैं ईश्वरका उपकार मानता। इस सम्बन्धमें मैं अनेक विचार पाठकोंके भागे रखने कायक है। लेकिन यहाँ उसका प्रयोग नहीं है। सिर्फ इतना ही कहूँगा कि इस युगमें अच्छी पुस्तकें कुछ हर तक प्राप्तकी कमी पूरी करनी हैं। इसीलिए जो भारतीय जेम्में कुछ मोगतेकी इच्छा रखते हैं उन्हें अच्छी पुस्तकें पढ़नेकी आरत बाधनी चाहिए।

तमिळका सम्प्रास

इस लड़ाईमें तमिळ माइयोंने जितना किया जतना दूसरे भारतीयोंने नहीं किया। इसीलिए विचार आया कि किसी और कारणसे नहीं तो अपने मतमें उनका सामार माननेके लिए ही मुझे तमिळ भाषा प्यारसे पढ़नी चाहिए। अठ बाबका एक महीना मैंने तमिळका सम्प्रास करनेमें ही बिताया। मैं ज्यों-ज्यों तमिळ पढ़ता जाता हूँ ज्यों-ज्यों उस भाषाकी व्याख्या सुनियीं देखाई पटी है। वह बहुत सुन्दर और मधुर भाषा है और उसकी रचनासे तथा जो-कुछ मैंने पढ़ा उससे ऐसा मान्य होता है कि तमिळ लोगोंमें अनेक होमियाद, विचारवान और सयाने पुरुष हो गये हैं और हो रहे हैं। इसके सिवा यदि भारतको एक होना है तो यथात प्राप्तके बाहरके कुछ भारतीयोंका भी तमिळ भाषा जाननी चाहिए।

१. तमिळकी गुटिका।

२. प्राचीनीय टीका उपसक्तः वाक्यस्य-मैनेनी उभायने जन्मा-सम्प्राणी इतिवर्ती और हैः जन्मा वा जो इच्छा मोगनी कल्पनी निर्दिष्टातिष्ठतः । ऐकिय मुहहाराण्यकोविपद्, मद्रास ५ ।

उपसहस्र

में चाहता हूँ जो पाठक यह नहीं जानते कि देश-प्रेम क्या है वे इस अनुभवको पढ़कर उसकी जानकारी प्राप्त करें और सत्याग्रही बनें और जो देश-प्रेमको जानते हैं वे उसमें बुद्ध बनें। मेरा यह विश्वास अधिकाधिक बढ़ता जाता है कि जिसने अपने धर्मको नहीं जाना है वह सच्ची देशभक्तिको भी नहीं जान सकता।

वैसे तो—

अक्षय	नाम	बुनि	सपी	गमनमें
मनन	मया	मन	मेरा	जी
जासन	भार	गुण	बुद्ध	भारी
दिया	अमम	धर	देरा	जी।

और—

करना फकीरी क्या बिकीरी^१
सदा मगन मन रहेगा^१ जी।

बुनियामें रहते हुए भी फकीरका जीवन बिताया जा सकता है। अन्तमें बुराको—
ईश्वरको कैसे जाना जाये इस प्रश्नके उत्तरमें भक्त कवि कहते हैं—

हसता-रमता प्रगट करी रेखु रे
माके बीम्बु सफल तब लेखु रे
एतु स्वप्ने जे वर्णन पामे रे
तेनु मन न बडे बीजे मामे^२ रे।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ५-५-१९१९

१५३ भाषण " जमिस्टममें "

[जमिस्टम

पृष्ठ ७ १९१९]

जब भी गांधी बोलनेको लड़े हुए तो बोलतामैंने उनका उल्लाहपूर्ण स्वागत किया। उन्होंने कहा यद्यपि मैंने आज समाजात्मक प्रतिरोध (पैसिव रेजिस्टेन्स) को अपना विषय चुना है फिर भी मैं नहीं चाहता कि मैं भारतीय प्रश्नपर कुछ कहूँ। मैं उसकी केवल नहीं एक बर्षा कर्षण काहीतक वह मेरे कथनपर प्रकाश डालनेके लिए आवश्यक हीया।

१ सूत्रमें गांधीजीने मज मेराही के अन्तर्गत स्थितमें राणी पाठ दिया है।

२. गुण । ३. रखा । ४. हिले-केन्दे । ५. मेरा । ६. बीम्ब । ७. बलका । ८. पने । ९. बलका

१. काह, और ।

११ जमिस्टम साहित्यिक और वाच-विवाह समिति (जमिस्टम सिरोरी बंड विवेचिण सौदासी)के वामपन्थार गांधीजीने कौटिलिक केन्द्रमें बनायाजका प्रतिरोधही वैशिकता" पर नाम दिया वा। जगत समितिके बलबु भी क्लिप्त अंगुलीके सहायकका नामक प्रदान किया वा। अंतर्गतमें जमिस्टमके जुने हुए मनुष्य काहीरके ने। " हमारे संसारका हाट प्रेक्षा " कर्ने यह रिपोर्ट इंडियन ओपिनियनमें प्रकाशित हुई थी।

अनात्मिक प्रतिरोध प्राप्त नामकरण है। किन्तु इस नामको इसलिये स्वीकार कर लिया गया है कि यह चाकी चोकर-प्रिय है और जिन लोगोंने इस शब्द-समुच्चय द्वारा व्यक्त विचारको कार्यरूप दिया है वे बहुत समयसे इसका प्रयोग करते आये हैं। किन्तु उक्त विचार "आत्मबल" शब्द द्वारा अधिक पूर्णतासे और अधिक अच्छी तरह व्यक्त होता है। इस प्रकार यह उतना ही पुराना है जितना पुराना इत्सल। आत्मिक प्रतिरोध "शरीर बल" शब्दसे अधिक अच्छी तरह व्यक्त होता है। ईसा मसीह डेनिश और पुष्पातने अनात्मिक प्रतिरोध या आत्मबलको सुदृढतम रूपमें प्रदर्शित किया था। ये सभी गुरु अपनी आत्माको तुलनामें अपने शरीरको तुच्छ समझते थे। टॉस्टॉय इस सिद्धान्तके सबसे स्पष्ट और प्रतिष्ठित व्याख्याकार थे। उन्होंने न केवल इसकी व्याख्या की बल्कि तदनुसार अपना जीवन भी डाला था। यह सिद्धान्त यूरोपमें प्रचलित होनेसे कहीं पहले भारतमें जान लिया गया था और अक्षर व्यवहारमें लामा जाता था। यह आत्मासे सम्बन्ध था सम्बन्ध है कि आत्मबल शरीरबलसे बहुत ही ऊँचा है। यदि लोग अन्यायके प्रतिकारके लिये आत्मबलका सहारा लें तो वर्तमान कष्टोंसे एक बड़ी हल तक बचा जा सकता है। कुछ ही हों इसके प्रयोगसे दुष्टोंको कभी कष्ट नहीं पहुँचता। इसलिये जब-कही इसका एकत उपयोग किया जाता है तब इससे उपयोग करने वालेको ही कष्ट होता है न कि उन लोगोंको जिनके विरुद्ध इसका उपयोग किया जाता है। सद्गुरुके सनाम यह अपना पुरस्कार आप ही है। इस प्रकारके बलके उपयोगमें असफलता-बन्धी कोई वस्तु हींसी ही नहीं। "बुर्खाका प्रतिरोध न करो का अर्थ है, बुर्खाको बुर्खासे नहीं बल्कि भलाइसे दूर करो। इससे शब्दोंमें शरीरबलका शरीरबलसे नहीं बल्कि आत्मबलसे प्रतिरोध करो। इसी विचारको भारतीय दर्शनमें अहिंसा शब्दसे व्यक्त किया गया है। इस सिद्धान्तको कार्यरूप देनेका अर्थ है उन लोगों द्वारा शारीरिक कष्ट उठाना जो इसका अनुसरण करते हैं। किन्तु यह बल सब जानते हैं कि संसारमें इस प्रकारका कष्ट कुछ निकालकर कम नहीं बहुत क्या है। ऐसा होनेपर उन लोगोंके लिये, जो आत्मबलकी अनुसू बलितकी पृष्ठानते हैं इतना ही आवश्यक है कि वे तब हीकर और समझ-बुझकर शारीरिक कष्टको अपना प्राण्य समझें। जब कष्ट उठानेवाले ऐसा समझ लेते हैं तब उनके लिये यही कष्ट जानम्बका जोत बन जाता है। यह विस्तृत साध है कि अनात्मिक प्रतिरोधको इस प्रकार समझ लें तो वह शरीरबलसे बंधू ऊँचा ही जाता है; और इसमें शरीरबलसे अधिक साहसकी भी जरूरत होती है। इस कारण अनात्मिक प्रतिरोधसे आत्मिक प्रतिरोध अथवा शारीरिक प्रतिरोधपर जाना सम्भव नहीं है। इसलिये उपनिषेदीय वेदोंके कि मात्स्यों द्वारा अपनी शिखापत्तोंकी दूर करानेके लिये इस अस्तिका उपनीय किया जानेपर आपत्ति नहीं की जा सकती। यदि बतनी भी इस विचारका उपयोग करें तो इससे बरा भी हाकि नहीं हो सकती। ऊँचे यदि बतनी इतने ऊँचे उठ सकें कि वे इस अस्तिको समझें और इसका उपयोग करें तो सम्भवता कोई भी बतनी-मन हल हुए बिना नहीं रहेगा। इस अस्तिके सफल प्रयोगके लिये एक धर्म है शरीरसे जिन आत्माकी सता और उतकी निरपेक्षा स्वीकार करना तथा वेदताकी जानना। यह स्वीहृति जीवन विद्याके रूपमें होनी चाहिए, न कि केवल

बुद्धिसे समस लेनेके रूपमें। बचताने बनने मायबको मनेक माधुनिक उदाहरणोसे स्पष्ट किया।'

[बाँधीबाँधे]

इंडियन ओरिएन्टल १२-९-१९९

१५४ पत्र 'ट्रान्सवाल सीडर' को'

[ओरिएन्टल]

बुन ८ १९९ के बाद]

[सम्पादक

ट्रान्सवाल सीडर

ओरिएन्टल]

महोदय

उपनिवेश-सचिवने ब्रिटिश भारतीय समाजपर श्री मणिकके आरोपोंका तुरन्त बंद निर्ममालक उत्तर देकर भारतीय समाजको अनुबुद्धि कर दिया है। माननीय श्री मणिक कहते हैं कि समग्र १२ सालकी आयुके पश्चात् बालक बिनके माता-पिता कभी इस देशमें नहीं रहे यहाँ जा रहे हैं और कानूनकी अवहेलना कर रहे हैं। यदि छ मासमें केवल ५९ पश्चात् ही यहाँ आये हैं और ये स्पष्ट-बहिष्कृत प्रवेशकर्ता हैं तो यह साफ है कि श्री मणिकका समस्त समाजपर बोधोपेक्ष निराधार है और जबतक माननीय महानुभावके पास आरोपके समर्पणमें कोई बुराई बात न हो और जबतक वह जनताके सम्मुख नहीं रह ही जाती तबतक मेरी सम्मतिमें समाजके प्रति माननीय महानुभावका कृतम्य है कि उन्होंने जो आरोप सनाया है उसे वे वापस ले लें।

आपका भावि

मो० क० गाँधी

[बाँधीबाँधे]

ट्रान्सवाल सीडर, १२-९-१९९

१. कस्तूर मय्य समाज कार्यालय बाँधीबाँधे बज्ज-से प्रेषित उत्तर दिया। बालको दण्ड कर्मों की मेरे द्वारा देना किन्तु क्या कानूनका प्रचलन सर्वप्रथमिसे प्राप्त नष्ट किया गया।

२. बाँधीबाँधे का भी श्री मणिक द्वारा ट्रान्सवाल-उपदेशमें ८ बालको कल्पे कले का आरोपको कल्प करके किया था कि किन्हे मासमें किसी अन्य मासकी बोलिया दुःखी भारतीय [अभियुक्तों] वाले हैं कल्पी काय का देशमें ऐसे कल्पोंको कल्पेकी है किन्हे मास-किता कल्प अभियुक्तों की खरी रहे। "अभियुक्त-उपदेशमें उत्तर दिया " कल्प वर देशमें कुल ५९ पश्चात् वाले हैं, श्री वेदकले एते और तथास मोक्षप्रियके एते। " पर इंडियन ओरिएन्टलमें १२-९-१९९ को "वापस ले।" बर्निकले क्या था।

१५५ कुछ विचार

सत्याग्रहका अन्त जब होगा होगा तब होगा। लेकिन इस बीच भारतीय समाजको जो साम झुपे हैं और उसने जो रस चखा है उसके उदाहरण हम यहाँ बिना किसी बलीसके दे रहे हैं। इनपर हर भारतीयको मनन करना चाहिए।

- (१) रोडेसियाका कानून खत्म हो गया।
- (२) सर्वोच्च न्यायालय उस कानूनको रद्द करनेका स्पष्ट कारण द्वायबाबमें जारी सत्याग्रह-संघर्षको बताये है।
- (३) उसी सेशनमें सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि साम्राज्य-सरकारको द्वायबाब विधेयक-पर मंजूरी देते हुए चुप्पी नहीं हुई।
- (४) हाइकोर्ट प्रकाशित नीकी किताब (भन्वु-बुक) में सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीयोंकी शोनों माँगें स्वीकार करनेकी सिफारिश की है।
- (५) उत्तरमें द्वायबाब सरकारने यह नहीं कहा कि माँगें स्वीकार नहीं की जायेंगी लेकिन यह जरूर कहा है कि सत्याग्रह बहुत-कुछ खत्म हो गया है तथा यदि सर्वोच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय तो शेष भारतीय भी घटने टुक होंगे। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यदि ज्यादा भारतीयोंने सत्याग्रह जारी रखा होता तो हमारी माँगें कम-की स्वीकृत हो गई होतीं।
- (६) ऐसे अनेक मोरे, जो भारतीयोंको नहीं जानते वे आज उन्हें जानने लगे हैं। इतना ही नहीं वे हमारे हितमें काम भी करने लगे हैं।

इसमें से प्रत्येक उदाहरण से अनेक विचार उत्पन्न हो सकते हैं। इस आगे कभी अपने पाठकोंके सामने इनपर विवेक विचार प्रस्तुत करेंगे। किन्तु हम मानते हैं कि इस बीच बहुत-से भारतीय इनपर विचार करेंगे और इनसे नई धमिल प्राप्त करेंगे। यह तो साफ़ बात बड़वा है कि जीत हमारे हाथमें है। फिर समाजमें नहीं जाता कि बहुत-से भारतीय क्यों काबू बन गये।

[मुजबतलीसे]

इतिहास सोवियतियन १९-१-१९ ९

१५६ केपके भारतीय

केपके भारतीय यो रहे हैं। प्रवासी अधिकारी जाय रहा है। केपका प्रवासियोंसे सम्बन्धित विवरण प्रत्येक भारतीयके पढ़ने और विचार करने योग्य है। हम यहाँ उसमें से केवल दो बातोंपर जोर देना चाहते हैं। श्री कजिम्स (प्रधान प्रवासी-अधिकारी) का कहना है कि अनेक भारतीय दूसरेके बर्षोंको अपने कहकर से जाते हैं और उनकी सूटी उन्नत बताते हैं। इस कारण श्री कजिम्सका सुझाव है कि कानूनमें ऐसा संशोधन कर देना चाहिए जिससे प्रत्येक भारतीय भारतसे ही बर्षोंकी उन्नत और इस आशयका (सरकारी) प्रमाणपत्र कामे कि वह बच्चा उसीका है। इन दोनों बातोंमें परस्पर कार्य-कारण सम्बन्ध है। कुछ भारतीय उन्नत इनकी बोलावड़ी करते हैं, इसीलिए श्री कजिम्सने यह नया सुझाव दिया है। अबतक हम मिथ्या आचरण करते हैं तबतक हमें परेसागियाँ उठनी ही पड़ेंगी। थोटी-छोटे कानून तोड़ना मया हानिकारक होगा है। यदि हममें हिम्मत हो तो कोई कानून पद्यन्त न जानेपर उसे कस्समकुस्सा तोड़ना चाहिए यह कामबायक है। ऐसा कुछा कानून मंज कर किया जामे हमें इसका [भी] ख्यास रखना चाहिए। केपके भारतीयोंका बहुत धारणाती रहती है। एक तो यह कि यदि हममें बेईमानी है तो उसे दूर करें और दूसरे, उल्काक सरकारको किसे कि श्री कजिम्सका सुझाव अनुचित है। हम इस विवरणकी दूसरी बातें अन्यत्र देंगे।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन, १२-१-१९१९

१५७ ओहामिसबर्गकी चिटठी

हाउटपुर्टके कैडियोंसे मुजाकत

हाइडेलबर्गके पास हाउटपुर्टकी जेलमें भारतीय कैदियोंसे मुजाकत करनेके लिए श्री बांभी श्री व्यास श्रीमती व्यास और श्री सेक्यट मये थे। सभी कैदियोंकी तबीयत बहुत बच्छी जान पड़ी। अब कुछ समयसे वहकि अधिकारियोंका बरताव बच्छा दिखाई देता है।

श्री नानासाह साह इसी जेलमें हैं। उन्होंने अपने पंजीयत प्रमाणपत्रका उपयोग नहीं किया इसलिए उनको छ महीनेकी कैदकी सजा दी गई है। इससे उनकी हिम्मत प्रकट होती है। जेलमें भी उनका काम बच्छा है। वे हरएकके प्यारे बन गये हैं। उनको खानेकी जो चीजें मिलनी हैं उनमें से वे सभीको हिस्सा देते हैं। यह जेलसे छूटे हुए लोगोंमें बताया है। सभी हालमें ही छूटे हुए श्री मनजी लखूमई श्री भीमचन्द साह और श्री प्रमू बुदैन एक स्वरसे श्री नानासाह साहकी प्रशंसा करते हैं।

श्री भाभातके जेलमें होनेपर भी उनकी बूकानसे कैदियोंको मदद मिलती रहती है। जो बेटी छूटे हैं उनको देनेके लिए प्राय गाड़ी जाती है। मैं "प्राय" शब्दका प्रयोग इसलिए

करता हूँ कि जब भी मनजी धी सीमन्त और धी प्रभु झूठे ठक उनको केनेके लिए माड़ी नहीं गई। धी मनजीका घत वा और धी सीमन्तकी तकीमत लखन धी। इससे उनको तकलीफ हुई। इसके अतिरिक्त उनको जोहानिसबर्ग जानेका तार समयपर न मिलनेसे कोई उनको स्टेसनपर केनेके लिए भी नहीं जा सका। ऐसी तकलीफोंमें किसी सत्याग्रहीको मबरानेकी जरूरत नहीं है। इन्हें भी सहन कर लेना चाहिए। भूखभूक तो हावी ही रहती है।

अस्वातथी सूची

धी अस्वातथी कीपत्ररूप जेलमें बहुत तकलीफ उत्पन्न है। उनका बजत लगभग ३ पीड बट गया है। माकूम जोठा है उन्होंने सत्याग्रहका पूरा पालन किया है। वे जेलके खानेके सिवा दूसरा खाना छूते भी नहीं हैं। उनको बीड़ी पीनेका ब्यसन बहुत था किन्तु उन्होंने तीन महीनेमें एक दिन भी बीड़ी नहीं पी। वे अपनी हूकालकी परवाह न करके फिर जेल जानेके लिए तैयार हो रहे हैं। धी अस्वातथी सम्बन्धमें यह निश्चय हो चुके हैं कि धी बन्दी नायबूने बीड़ी खाय और नॉन्सी हुमेभाके लिए छोड़ दी है। यद्यपि जेल खानसे पहले वे इन चीजों कीबिना एक बड़ी भी नहीं रह सकते थे। इसके अलावा उन्होंने अबतक कड़ाई खाय नहीं हो पायी अबतक मूठें न रखनेका प्रयत्न किया है। ऐसे बीर अबतक भारतीय समाजमें हैं अबतक यह कड़ाई पकती ही रहेगी और अन्तमें जीत हमारी होगी।

इससे सिद्धा

मुझे माकूम हुआ है कि कुछ सत्याग्रही कभी जेलमें जाकर खोरी करना सीख गये हैं। पहले वे जो पीड चुके ठौरपर न मिलती ही बचवा दूसरे लोगोंको नहीं भी पायी हो। अब जाने कब हैं। जिनको कभी तम्बाकू खाने या पीनेका ब्यसन न था वे अब तम्बाकू खाना और पीना सीख गये हैं। ऐसे कर्मियोंको दण्डित होना चाहिए और भी अस्वातथी तथा धी नायबूने सीख लेनी चाहिए। यह सीखा हिसाब है कि समाजका सत्याग्रह बितना बढ़ेगा अन्त उठनी है। अन्दी होगी और बितना बढ़ेगा अन्त उठनी ही बरेसे होगा।

इङ्ग-पार

जिन भारतीयोंको निर्वासित करके भारत भेजा जाता है उनके सम्बन्धमें उचित उपाय तुरन्त आरम्भ कर दिये गये हैं। इस सम्बन्धमें धी आइजक बेलागोवा-ब भेजे गये हैं। मुझे बताया है कि बेलागोवा-बके भारतीय उनकी राहतना करने। दूसरी ओर सरकारके साथ किना-पकी पायी है। धी नचेलम काशीराज जिनको देश-निकासका हुक्म दिया गया था छोड़ दिये गये हैं और वे जोहानिसबर्गमें आनन्द कर रहे हैं। फिर भी अगर वे देशसे निकाल दिये जायें तो उसमें भी बदलेका कोई कारण नहीं है। अपने देशमें भेजे जायें तो हिम्मतवर लोग वहाँ भी आन्दोलन कर सकते हैं। सत्याग्रही होनेपर भी जिनको देश-निकासका हुक्म है या होगा उनकी धार-संभाके सम्बन्धमें देशको तार से दिया गया है। इसके अलावा धी मोनामार्द पटेलने जो हालमें ही जेलसे निकले हैं और अब कार्यबस रीच गये हैं इस सम्बन्धमें बम्बईमें पूरा प्रयत्न करनेका निश्चय किया है।

मिटोरियाके भारतीय बोबी

मिटोरिया नगर-परिवर्धकी स्वास्थ्य-समितिकी सकाहसे नगरपालिकाने नीचेके प्रस्ताव पास किये हैं

- (१) सन् १९७ के बजटमें जो यह निश्चय किया गया था कि भारतीय बोबियोंको नगरपालिकाके बोबी चार्टोंका उपयोग नहीं करने दिया जायेगा। और उन्हें अपने बोबीचार्टोंमें पानीकी निजी व्यवस्था करनी चाहिए, उसको रद्द कर दिया जाये।
- (२) १९८ के बजट में निश्चय किया गया था कि सब बोबियोंको नगरपालिकाके बोबीचार्टोंमें कपड़े धोनेसे रोका जाये। यह रद्द किया जाये।
- (३) अबसे सब रंगरार फोबोंको जातिभेदके बिना नगरपालिकाके बोबीचार्टोंका उपयोग करने दिया जाये।
- (४) बोबीचार्टोंकी बेस-लेस करनेवालोंको ताकीव भी जाये कि वे निरबन्ध पानी न बहने देनेका कड़ाईसे ध्यान रखें।

बीमारीके कारण मुक्ति

शहर मिली है कि श्री मायातकी हुकामके कर्मचारी श्री मुहम्मद मनुबी पटेलको जो फोक्सरस्टकी जेलमें थे सरकारने बीमारीके कारण जेलसे छोड़ दिया है।

मुहम्मद बहमद मामा

स्टैडर्टनवासी श्री मुहम्मद बहमद मामा जो हाउटपुर्टकी जेलमें थे गठ शनिवारको रिहा कर दिये गये। उनको लेनेके लिए श्री मायातकी गाड़ी गई थी और श्री मायातके मकानपर उनकी बाबमगत की गई। मैं आशा करता हूँ कि श्री मामा फिर जेल जानेके लिए तैयार रहेंगे।

मायात

श्री मायात शूर यह बंधक प्रकाशित होनेके दिन—१२ तारीखको रिहा किये जायेंगे। ऐसा अनुमान किया जाता है कि श्री मायातकी रिहाईके बाद हाइड्रेडरमके बन्ध कई भारतीय जेल जानेको तैयार ही जायेंगे।

इर्बी कुमबी आदि

कुछ इर्बी कुमबी आदि निरपत्तार किये गये हैं। वे सब सत्याग्रही नहीं दिखाई देते। कुछने नये कानूनके मुताबिक [पंजीयनके किये] इर्बी भी हैं। जान पड़ता है कि इनमें से बहुत-से तो देश-निकाशके लालक हैं। यदि ऐसे भारतीय सत्याग्रहका बबसम्बन्ध करें तो उनको भी और कौमको भी लाभ पहुँच सकता है। ऐसा करनेसे उनके देशसे निकाले जानेका अबसर भी नहीं जायेगा। जेल जाना चाहें तो बहुत-से भारतीय जा सकते हैं। श्री अस्वातकी हुकामसे तो रोम ही एक भारतीय अपना बसिबात देता है। इसलिए उत नदीकी सम्मालकर बहुत-से भारतीय जेल जा सकते हैं। बायतक प्रायः तमिळ और ही जेल गये हैं। कुछने भारतीयोंके लिए यह धर्मकी बात है। इसलिए यदि इर्बी कुमबी आदि बिना भारतीयोंपर

संकट है वे जेल चले जायें तो उनके एक पन्ना वा काब सिद्ध होते हैं। इसमें भी एक बात याद रखनी ही चाहिए कि वे भारतीय ऐसे होने चाहिए जिन्हें द्वाभ्यन्तकर्म खूबका हक हो। मुझे आशा है कि पाठक इन विचारोंपर ध्यान देंगे।

इमाम साहब

इमाम अब्दुल कादिर शम्सीर, जो तीसरी बार जेल काट रहे हैं १५ तारीखको रिहा होंगे। मुझे आशा है कि उनके पन्ना उनकी इनामतका और उनकी संवार्ताका विचार करनेवाले सभी भारतीय उनको सम्मान देनेके लिए उस दिन जेलके दरवाजेपर पहुँचेंगे।

गुस्वारकी रिहा होंगे

सर्वेम्बी ई० एच कुषाहिया एम पी० फँसी अहमद हसीम रबाक नूरसाई मुसेमान कासमत बस्समयम छानासाई, नाउपनसामी नामरू और नायना फ़सिस बागामी गुस्वारको रिहा होंगे। उनका जचित स्वागत करनेकी व्यवस्था भी जा रही है। मुझे आशा है कि उनको देनेके लिए सब भाई गुस्वारको सुबह जेलके द्वारपर उपस्थित होंगे।

ब्रिटिश भारतीय समझौता-समिति^१

ब्रिटिश भारतीय समझौता समितिकी बैठक इमीदिया इम्कामिया अंजुमनके भवनमें यत रविवारको हुई थी। बहुत-से भारतीय उपस्थित थे। स्टैंडर्टनसे श्री हाजी इस्माइल आमर मिटोरियासे श्री समीधा बीरस्टसे श्री हाजी कासिम और फ़ग़रुद्दीनसे श्री मुहम्मद काबी जाये थे। ओहासिसबर्नके सज्जनोंमें श्री अब्दुल पनी भी भाऊ^२ श्री डॉन मॉडरे श्री बाबामाई और श्री अहाबुद्दीन आदि थे। यह समिति सरप्रासहियोंकी सहायताके लिए बनाई गई है। इसमें वे लोग शामिल हो सकते हैं जो जेल जाने याकिसमें जाग नहीं के सने हैं। श्री हाजी हबीब अब्दुस है और श्री डॉन मॉडरे अवैतनिक मन्त्री। श्री गांधी बैठकमें विशेष कामगारपदे उपस्थित थे। श्री हाजी हबीबने बैठकका कार्य शुरू करते हुए बहुत विवेचन किया। उन्होंने कहा कि श्री गांधीने लड़ाईके सम्बन्धमें समझौता करते समय बहुत उतावली की।^३ यदि वे ऐसा न करते और जगदल स्पर्धसे सब बातें लिखवा सते तो भारतीय समाजको इतने कष्ट सहन न करने पड़ते। ऐसा होनेपर भी अब तो हमें लड़ाई खत्म करनेकी ही फिक्र करनी है। जो भारतीय भाई जेल जाते हैं उनके कृतकारेमें मदद देना सब भारतीयोंका कर्तव्य है। जो जेल नहीं जाते उनको नहार कहना ठीक नहीं है। हमें मिछजुलकर बचना है। यह समिति जगदल स्पर्धको बर्बाद करेगी। अधिनियम ३६ में बहुत-सी बातें रख गई हैं। उससे बहुत-से लोगोंके अधिकार मारे जाते हैं। बन्धनोंको परेशानी होती है। द्वाभ्यन्तकर्म बाहर नहीं की जा सकती। सभीसे अन्याय-निघानी माँपी जाती है। इन सब बातोंके सम्बन्धमें

१ ब्रिटिश इंडियन कॉन्सिस्टेंसियल कॉमिटी।

२. जामैकी मूक नाम पकड़ी है। इकीम सुहम्पद होना चाहिए।

३. उत्तर जगदल १९८ में द्वाभ्यन्तक उरदर और पकिस्तान उरदरको बीच हुए समझौते है; देखिये कल्प ८ पृष्ठ ४३-४४।

४. १९८ के पकिस्तान इंडियन एंडोपन कॉन्सिस्टेंसियल (इंडियन कॉन्सिस्टेंसियल एंडोपन कॉन्सिस्टेंसियल) के अनुसार वा भारतीय एव कानूनोंके अन्तर्गत उनमें द्वाभ्यन्तक उरदर से अतिम किन्हीं अवेकडा अधिदर वा है १२ डिसेम्बर, १९८६ के अन्तर्गत पकिस्तानके विद मन्त्रों में रखे हैं अतिम माँपवान दे सते है।

म्यायकी माँग करनी है। सच्चा सत्याग्रह तो भीर आत्मका ही माना जायेगा। उन्होंने अपना अनुभवविषय विधानसे इनकार किया और भाव के निर्वासित हो चुके हैं। इंडियन ओपिनियन में बहुत बार लेख और समाचार इकट्ठरफा आते हैं यह ठीक नहीं कहा जा सकता। श्री लंडेरिया जैसे लोग दूसरोंको हिम्मत भेषावर खुब जेक जानेसे डरकर चुनना दे जाये। फिर भी इंडियन ओपिनियन में उनकी कोई आलोचना नहीं आई, यह स्पष्टतः अगुचित है। मैं यह भी मानता हूँ कि यूरोपको सिष्टमण्डक भेजनेकी जरूरत है।

समिति बनानेके सम्बन्धमें प्रस्ताव श्री हाजी बजीर मनीने पेश किया। उन्होंने उसे पेश करते हुए कहा कि जो लोग जेस नहीं गये जचना जाता नहीं चाहते वे भी आठिकी सहायता कर सकते हैं। श्री पांशीने ऐसी सलाह दी इसीसे यह सभा बुलाई गई है। श्री हकीम मुहम्मदने प्रस्तावका समर्थन किया और वह सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हो गया। उपनिवेश-सचिवको सत्याग्रहियोंकी माँगें मंजूर करनेके सम्बन्धमें जर्जी बेनेका दूसरा प्रस्ताव श्री ईसप काउन्सिलाने पेश किया। पेश करते हुए उन्होंने कहा मैंने अपना पंजीयन प्रत्यापन' जमाया है और फिर उसकी नकल नहीं की है इसलिये मैं ऐसा मानता हूँ कि मैं तो पूरा सत्याग्रही माना जाऊँगा। फिर भी यह प्रस्ताव अल्पकालकी स्वीकृतिसे पेश करता हूँ। यदि यह माँग मंजूर न की जाये तो सब भारतीय फिरसे जेस जानेके लिए तैयार हो जायेंगे।

इस प्रस्तावका समर्थन श्री अब्दुल गनीने किया। श्री हाजी बजीर जसी और श्री अब्दुल गनीने कहा कि यदि सरकार माँग मंजूर न करेगी तो लोगोंके जेस नहीं जानेका सवाल ही नहीं उठता। हमारा काम तो जेस जानवाके लोगोंकी जवाबदारी सहायता करना है। इसके बाद श्री हकीम मोटनने सन्ना भाषण दिया। उन्होंने श्री पांशीकी कई मुल्लें बतलाई और कुछ सवाल पूछे। श्री काउन्सिलके मकानपर श्री उमरजी साकेको जो चाय पार्टी की गई थी उसमें हिन्दू और मुसलमान साथ-साथ बैठे थे। श्री मोटनने उसके बारेमें अपनी खूबी बाहिर की और यह कामना की कि भारतमें भी ऐसा ही हो। फिर स्टैंडर्टनके श्री इस्माइल आमदने जोटा-सा भाषण दिया और उसके बाद श्री खमीसा और श्री इस्माइल पटेक भी बोले।

श्री जॉर्ज गॉडफ्रेने बंपेजीमें भाषण दिया। श्री पांशीने संक्षेपमें उत्तर दिया और कहा कि यदि यह समिति सच्चे दिलसे देखीसे और उत्साहसे काम करेगी उससे तो निःसन्देह सत्याग्रहमें मदद मिलेगी होगी।

[मुबरातीने]

इंडियन ओपिनियन १२-९-१९१९

१५८. नायडू और अन्य लोगोंका मुकदमा^१

[जोड़ानिसर्ग
 जून १९, १९०९]

इसके बाद^२ कुली अवास्तमं श्री बम्बो नायडूपर विनिर्णयके अर्थ ९ के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया। उनकी ओरने श्री गांधीन पंरधी की। श्री नायडूने अपना अपराध स्वीकार किया और बैसा कि आज तौरपर होता वा, उन्हें ५ पीठ जूमानेकी या उसके बदले तीन मासके अरिच्यम कारावासकी सजा दी गई। तदुपरान्त सर्वेभी एन ए कामा ओर सी पी प्यात अवास्तमं साथे गये और उनपर भी बैसा ही आरोप लगाया गया। उनकी ओरसे श्री गांधीन कहा कि उनके मुबकिकत अपना अपराध स्वीकार करना चाहते हैं; किन्तु वे १४ दिनकी मोहकतकी प्रार्थना करते हैं क्योंकि बोनीपर अपने एक-एक निष्ठ सम्बन्धीकी, जो अतरनाक बीमारीकी हालतमें हैं मुक-मुबिबाकी जिम्मेवारी है। इस्तागसेकी ओरसे कोई आपत्ति नहीं की गई और उनको मोहकत दे दी गई।

इस बीच अवास्तमके बाहर ब्रिटिश भारतीय संघके अध्यक्ष थ मु काउलिया और तमिल कम्पाय रुमा (तमिल बेनिफिट कोलाइटी)के अध्यक्ष श्री बी ए० वेदियार इसी आरोपमें गिरफ्तार कर लिये गये थे। श्री काउलियाने शिक्षायत की कि गिरफ्तारीके बाद पुलिसने और अवास्तमके अहातेमें उनको हिरासतमें लेनेवासे अधिकारीने उनसे कठोरताका बरताव किया।

श्री गांधीने इस बरतावका ओरवार विरोध किया और कहा कि ऐसा बरताव सरया पहियोंको भी जानेवाली सजाका कोई हिसा नहीं हो सकता।

ग्यामाचीन श्री घूरमनन कहा कि यह बात वास्तवमें पुलिस कबिरनरसे तरोकार रखती है मुसले नहीं क्योंकि मैं तो अपने सामने प्रस्तुत बिनाछ आरोपपर ही बिचार कर सकता हूँ।

श्री डम्पु० जे० मेकडनटावरने अवास्तमकी अनुमति लेकर कहा कि मुझे समता है यहाँ जो अपान दिया गया है अवास्तमके एक अधिकारीके रूपमें उसकी पुष्टि करना मेरा कर्तव्य है क्योंकि मैं इन बातोंको अपनी भाँखेंति बैसा हूँ। उन्होंने कहा कि

१ कभी वास्तु, श्री सी ग्राथ, वन ४० कामा और दू वन देका १५ वन १९ ९ को गिरफ्तार दिने गये थे। इन्में से पहले तीनक जाने बंदीनक अवास्तम (रिभरुपन सर्चिन्ड) रिगले और अपने हाथका तथा अंगुलिबन्दी देनेने इनकर कनेछा बरतेन वा। देकास १९ ८के अरिच्यम ३५ क एच ० के अन्तर्गत जामिनेयमें बंदीनक अवास्तमके रिवा अवास्तम आरोप लगाया गया वा। वर गिरफ्तार "इचिचन अरिचिचयके सिर दिने वन" कड सर्चिन्ड छा वा "पीछ, प्रतिनिधि गिरफ्तार और दिकित।

२. कठी दिन कने पहले अधिकारके सिरी कार्यालयमें श्री देकादी कामा अरुपन लीइत कने और अन्तकी बरनेने अन्तर कनेक अरिच्यम को बरनेकी बात दी गई।

ऐसे निरीह लोगोंके प्रति इस तरहका व्यवहार करना बड़ी सम्भाव्यताका बात है। मेने स्वयं अनेक बार ग्यायाबीसकी मौजूदगीमें भी, भारतवाय सत्त्वाधिकारियोंके साथ ऐसा व्यवहार होते देखा है और इसके बिनाकी नियमपूर्वक सिकायत है।

ग्यायाबीसने कहा कि मेने ऐसा व्यवहार कभी नहीं देखा। यदि देखा होता तो मैं कभी ऐसा होने नहीं देता। किन्तु मेरा खयाल है कि यह मामला मेरे तय करनका नहीं है। मन्त्रालयोंको अन्त-अपना अन्तःकार हरीकार करनेपर तीन-तीन मासको सकत कबकी सजा दे बी गई।

श्री पांडीत श्री बेदियारकी ओरसे बताया कि उनका मुबकिकत सम्भाग ५ वर्षकी आयुका है और मन्मैहसे पीड़ित है।

[अंश-अंशसे]

इंडियन ओपिनियन, १९-९-१९ ९

१५९ भाषण सार्वजनिक सभामें

[बोहानिसबसे
जून १९, १९ ९]

समापिका मद्रिकाको सम्बन्धों और मित्रों

इस दोपहरको हम यहाँ कुछ बयाधारक स्थितियोंमें एकत्र हुए हैं परन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि इन स्थितियोंकी आसका न थी। आप जानते हैं कि बनरक बोबा और बनरक स्मट्स उपनिवेशोंका एक संघराज्य बनानेके विद्युत्सिद्धेमें शीघ्र ही इम्मीड का रहे है। इसकिए कुछ इच्छित भारतीय समाजके साथ-साथ लोग इस विषयपर आपसमें विचार-विमर्श कर रहे हैं कि हमें अपना धिष्टमण्डल यहाँ भेजना चाहिए। द्वाण्डवारुमें हमारे प्रति सहायुमुक्ति प्रकट करने और हममें उचित हर तरह हमारी सहायता करनेके किए यूरोपीयोंकी जो एक समिति बनी हुई है उसमें मैं समझ ही है कि एक ऐसा धिष्टमण्डल इम्मीड जाना चाहिए। आपकी पता है कि मठ विचारको समितिकी एक बहुत बड़ी बैठक हुई थी और उसमें बहुत समी कबकि बार भारी बहुमतसे यह प्रस्ताव मंजूर किया गया था कि सबसे सोमवारको सत्त्वाधिकारियोंका एक मिष्टमण्डल इम्मीड भेजा जाये। समितिके विद्युत् भारतीय संघके अध्यक्ष श्री काठसिन्हाको समित्त समाजके प्रतिनिधि और समित्त कस्याब समा (समित्त बेनिफिट सोसाइटी)के अध्यक्ष श्री बेदियारको भी हाजी हबीरको जो

१ कोहसर्कि इमीरिका कल्याणके निरन्तर १२ बरको कर्म देव-बी हवार भारतीयोंकी एक मिष्टिण कार्यकर्मिक एक है। यह समा द्वाण्डवारकी स्थिति बरनेके लिए इम्मीड और भारतकी मेने कालेकले विद्युत् अध्यक्षके प्रतिनिधि कुलनेक करेकसे की गई थी। इसमें द्वाण्डवारक प्रतिनिधि कल्पित थे। विद्युत् भारतीय संघके कार्यकर्मिक कल्पित भी है। पत्र कुनादिवाने सत्त्वाधिकार किए था। वे भारतमें कुछ देर प्रकटकी गीं। कल्पित बार भारतीयोंके कारण रिषा।

२. भारतकी इच्छित कल्पितके बार कल्पितके कल्पित कल्पितों है।

३. देवद्वी कार्यकारीकी रिषिके लिए देवद्वी परिधि ११।

अब तक हमसे पूरी तरह सहमत नहीं थे किन्तु जिन्होंने अब अपने-आपको सत्याग्रही घोषित कर दिया है और मुझ सिष्टमण्डलके लिए मनीषित किया है। समितिमें एक सुझाव यह भी दिया गया कि इंग्लैंड तो एक सिष्टमण्डल जाये ही परन्तु भारतकी जनताका दर्शन स्थितिकी सही-सही जानकारी हेतु एक सिष्टमण्डल भारत भी भेजा जाय। एक सिष्ट वं नाम सुभाष चन्द्र बोस— ब्रिटिश भारतीय संघके सहायक अध्यक्ष मन्त्री भी एक भी एन गोपाल नामक, श्री एन ए कामा और एक चौथा नाम जो उक्त दस्तावेजों में दिया गया था लेकिन उसे अब हम समामें रखते हैं। यह नाम है श्री कृष्णामाता। अब हम देखते हैं कि सरकारने भी काश्चिन्मापर अपना हाथ डाल दिया है और व दायित्वमण्डलके अन्तर्में पड़े है। उन्हें पचास पीठ बुद्धिकी सजा हुई है और अगर व स न देवे न ही महीनेका कठोर कारावास भोगे। इस लड़ाईमें वे चौबीस बार जेल गए हैं। श्री कृष्णामाता भी विरफ्तार हो गये हैं और वे भी तीन महीनेकी सजा काट रहे हैं। श्री कृष्णामाता भी जेलमें ही हैं। श्री व्यास कम ही विरफ्तार हुए हैं। उन्हें अपराध नामि— श्री कृष्णामाता की मार है और धायव मरणासन्न है— मरनेके लिए अमानतपर डाढ़ दिया गया है। उक्त मामला पत्रह दिनके लिए स्थगित कर दिया गया है। श्री नाथमीर कामा अपराध गतमें उचित रूपसे चुन सिमे जाते तो भारत रवाना हो जानवासे व। परन्तु व भी विरफ्तार हो गये हैं और उनके मामलेकी सुनवाईकी तारीख ऐस ही काश्चिन्मा भाग बढ़ा दी गई है। भारत जानेवाले सिष्टमण्डलमें हमारे सुभाष चन्द्रामाता भी नाम है। उन्हें सजा देने के लिए विरफ्तार कर लिया गया था लेकिन अपने कार्यवाहका समर्थनके लिए उन्हें सजा मोहकत से भी गई है। निश्चय ही उन्हें भी तीन महीनेका सजा काटनी पड़ेगी प्रकार ब्रिटिश भारतीय संघके उपाध्यक्ष श्री उमरजी शाकेजा और श्री कृष्णामाता भी विरफ्तार कर लिया गया है। उन्हें अमानतपर अभी डाढ़ दिया गया है। उन्हें सजा भी पावेगी। ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें आज हम सत्य के लिए जानता कि सरकार मुझसे क्यों नापसन्द है जो उक्त मुझ अर्थिक विरफ्तार परन्तु मैं इस समामें बोधया करता हूँ कि अगर समामें इच्छित सिष्टमण्डल प्रस्ताव मजूर हो जायेगा तो मैं निश्चित रूपसे अपने मामलाके लिए सजा भी पाऊँगा। ही उससे पूर्व अगर पहलेकी मीटिंग दायित्वमण्डलकी सजा काटनी पड़ेगी बना के तो बात सुचयी है। मित्रो जो मारि यह कर है व सजा काटनी पड़ेगी छोड़ गये हैं। दुर्भाग्यवश मैंने कब कामको एक बुद्धी मन्त्री का नाम सुना है जाकिरी घण्टे में वे— मैं चाहूँ रोऊँ या कुछ न करूँ— मैं सत्य के लिए सजा काटनी पड़ेगी बहादुरीके साथ अपने अर्थिकका पालन करेगा और सजा काटनी पड़ेगी विद्वाना इस समाका काम है कि शीघ्र मार्गदर्शक सजा काटनी पड़ेगी है। मैं बूढ़ जानता हूँ कि हमारे समाजक हर अर्थिक विरफ्तार सजा काटनी पड़ेगी अगर आप बेक नहीं जा सकते तो मैं सत्य के लिए सजा काटनी पड़ेगी कर सकते हैं। इसी तरह अन्य अनेक प्रकारके सजा काटनी पड़ेगी कर सकते हैं। मुझे आशा है कि यह सजा काटनी पड़ेगी

[अंग्रेजीसे]

१६० प्रस्ताव सार्वजनिक सभामें

[पोहानिसबमें
जून १९, १९९]

[प्रस्ताव १] इस प्रस्तावके द्वारा द्वायवसालके द्विदिश भारतीयोंकी यह सभा द्वायवसालके द्विदिश भारतीय संघकी समिति द्वारा की गई सर्वभूमि व मु काछलिया हाजी हुबीब वी ए बेट्टियार और मो क माबीकी उय छिष्टमण्डल [के सरस्वों] के रूपमें नियुक्तको पुष्ट करती है जो इग्लैंड जायेगा और अधिकारियों और द्विदिश जनताके सम्मुख एशियाइयोंके वर्तमान संघर्षके सम्बन्धमें सच्ची स्थिति तथा बसिज आक्राणके माबी संघके सम्बन्धमें द्विदिश भारतीयोंका दृष्टिकोण पेश करेगा।

[प्रस्ताव २] द्विदिश भारतीयोंकी यह सभा इस प्रस्तावके द्वारा सर्वभूमि एन ए कामा एन योपाल मावडू, ई एच कुवाडिया और एच एच एच पोकरको भारत जाने और अधिकारियों तथा भारतीय जनताके सम्मुख द्वायवसालके वर्तमान एशियाई संघर्षके सम्बन्धमें सच्ची स्थिति प्रस्तुत करनेके लिए छिष्टमण्डलका सदस्य निर्वाचित करती है।

[प्रस्ताव ३] सरकार अच्छी तरह ध्यानही वी कि सर्वभूमि काछलिया कुवाडिया कामा और बेट्टियार पूर्व प्रस्तावोंमें बताये गये छिष्टमण्डलके प्रतिनिधि चुने गये हैं या चुने जानेवाले हैं। यह सभा उनको आकस्मिक और अबाछनीय विरपत्तायीका साधर विरोध करती है और सरकारसे अनुरोध करती है लौट जानेपर वह उनको अबाछत द्वारा दी गई सजाको मुयतनेकी धरतपर उचित अमानत लेकर छोड़ वे जिससे वे अपना काम पूरा कर जायें।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-९-१९९

१. वे प्रस्ताव इनीशिया एकरिया अङ्गुमके लण्ड स्माय बन्दुन कादिर वलवीरवे पैर किने और वी विन्दार वीने स्त्रा सपरन किना । अङ्गुम है, प्रस्तावोंका मसकिरा गरीबीने ठेकर किना । स्त्रार मस किने को वीर वे लीहल हो गये । अङ्गुम विरीन अः अङ्गुमने किना । अङ्गुमी मुञ्ज नाति अ वी कि विद्यमण्डल समावध कत वसे अङ्गुम अतिनिमित्त वरी कटा जो उलवपरी वरी है; और अने वीकपदी, जो वूरीन है, वामिक वरी मिय बाग कादिर ।

सेवामें
सम्पादक
स्टार
बोहानिसर्व
महोदय

मझे ही आपके विचार पत्रसेवाको विचारते न निकले हों आपन हमेसा ही अपने समाचारपत्रके स्तम्भमें सार्वजनिक प्रश्नोंकी जचकि लिए स्थान देनेकी उदारता दिखाई है। मैं जानता हूँ कि ऐसी ही उदारता आप एशियाई सभामें कने हुए व्यक्तियोंके प्रति समतक दिखाते रहेंगे जबतक समय जानेपर, संघर्ष खत्म न हो जाये। परन्तु मुझे नरोया है कि आप इस संघर्षके मये हीरपर अपनी राय देनेकी कृपा करेंगे।

गत बुधवारको ब्रिटिश भारतीयोंकी आम सभाके^१ समापतिने माननीय उपनिवेश-सचिवको जब सभामें पास किये गये प्रस्तावोंका सार तार डाघ भेजा और उगसे प्रार्थना की कि जो लोप इन्वीड और भारत जानेवाले सिष्टमन्त्रको प्रतिनिधि चुने या चुक है उनको भी गई सबाई और उनके मुस्तकी मुकदमे रोक दिये जायें। उपनिवेश-सचिवने यह उत्तर दिया है

आपके आद बुधवारके तारके सम्बन्धमें उपनिवेश-सचिवने मुझे आपको यह सुचित करनेके लिए कहा है कि अब इन लोगोंकी जिनके नामोंका आपके तारमें लिख है कानूनकी पंजीयन-सम्बन्धी बातोंकी जचकाके कारण गिरफ्तार करनेका निर्देश दिया गया तब यह मामल ही न था कि उनके सिष्टमन्त्रके सदस्य चुने जानेकी सम्भावना है। हालांकि उपनिवेश-सचिवकी बहुत इच्छा है कि सिष्टमन्त्रके सदस्योंकी आजादीमें किसी प्रकारका बलक न दिया जाये फिर भी उन्हें खेद है कि वे आपकी प्रार्थनाकी मानने और कानूनी कार्रवाईमें बलक देनेमें असमर्थ है।

जानताको इस बातका पता नहीं है कि सरकारने उपनिवेशमें जायूस फैला रले है जो इस संघर्षमें सक्षम नाग लेनेवाले व्यक्तियोंकी पतिविधियोंपर निगाह रखते है। उन्होंने सरकारके पास ब्रिटिश भारतीयोंकी हरएक सभाका चाहे वह सार्वजनिक हो या असार्वजनिक विवरण भेजा है। जिन सदस्योंका चुनाव गत बुधवारको किया गया था उनके नाम सरकारके पास कुछ असेंसे मौजूद है। सिष्टमन्त्रके सदस्योंके नाम समिति की एक बैठकमें गत रविवारको अन्तिम रूपसे तब किये गये थे। इस बैठकमें अयमय तीन ही भारतीय जाये थे। अजबवारोंको नाम तब किये जानका पता चल गया था और सोमवारको संघके

१. न. २६-६-१९०९ के इंडियन ओपिनियनमें "स्टीमिन्ट्रोंकी दर, सरकारका जचकी दिखाई देकर हीरपते मन्त्रालय किया गया था।
२. देखिये "भारत सार्वजनिक समिति" २५२-५४ और सिद्धा बोर्ड की।

(एसोसिएशनके) बरतमें पूछताछ की गई थी। ये नाम मंगलवारको स्थानीय अखबारोंमें प्रकाशित किये गये। चार प्रतिनिधि सर्वथी काउन्सिलिया कुवाड़िया कामा वीर चेट्टियार बुनको गिरफ्तार करलिये गये। इसलिये यह विश्वास करना असम्भव है कि सरकारको इनके बुने जानेका पता नहीं था। उपनिवेश-सचिवके तारका पाठ इन दिने हुए तथ्यके प्रकाशमें बिल्कुल स्पष्ट है। जब वे यह कहते हैं कि "यह बिल्कुल मामूल न था कि उनके शिष्टमण्डलके सदस्य बुने जानेकी सम्भावना है" तब उनका आशय केवल यही है कि उनको सार्वजनिक सभामें मंजूर नहीं किया गया था और वे नहीं जानते थे कि सभा कमर बतार्द गई समितिकी मामूलागियोंको मंजूर करेगी या नहीं। किसीका यह मानना ठीक ही होया कि यह बात सरकार नहीं जानती थी कि ये नाम सार्वजनिक सभामें पेश किये जायेंगे। यह खयाल करना भी ठीक ही होगा कि तीन सौ भारतीयों द्वारा की गई नामसूची सार्वजनिक सभामें नामंजूर कर दी जानेकी सम्भावना नहीं थी। सरकारने सार्वजनिक सभाका निर्भव होनेतक कार्रवाई क्यों नहीं रोकी या प्रतीक्षा क्यों नहीं की? हर भारतीयका विश्वास है कि सम्बन्धमें दक्षिण आशिकी अधिनियमके मसविशेषपर विचारके समय कोई भारतीय शिष्टमण्डल न होना चाहिए, यह सरकारका इरादा था यह शिष्टिभ भारतीयोंमें जातक पैदा करके सार्वजनिक सभाको बिल्कुल अफसक करना चाहती थी। उसने शिष्टमण्डलके शेष सदस्योंको केवल इसलिये स्वतन्त्र छोड़ दिया था कि वह खुद अपनी कार्रवाईसे डर गई थी। उसने साठमें से चार भारतीय प्रतिनिधियोंको ही गिरफ्तार नहीं किया है, बल्कि कुछ अच्छे कार्यकर्ताओं वीर भारतीय समाजके पुङ्गवस्यमी लोगोंको भी गिरफ्तार कर लिया है। ये कुछ मिछाकर सबह होते हैं। इनमें से कुछ उपनिवेशकी जेलोंमें चारसे ज्यादा बार जा चुके हैं। वे जेल विवाहित हैं और अपने पीछे रोते हुए स्त्री-बच्चे छोड़ गये हैं। प्रतिनिधियोंकी सजाओंको या मुकदमोंको मुस्तबी करनेसे इनकार करना उतना ही हृदयहीन कार्य है जितनी ये कार्रवाइयाँ जो बिल्कुल आकस्मिक हैं और न्याय और शिष्टताके सामान्य नियम भंग करके की गई हैं।

मेरे हेतुसामिका खयाल है कि सर जोर्ज फेरार, सर परी फिट्चपैट्रिक और प्रमतिवादी दलके अन्य सदस्य इस बर्बरतापूर्ण कार्रवाईके लिए उतने ही उत्तरवादी हैं जितने अनरल बोवा और अनरल स्मट्स। किन्तु वे निर्विचकके नामपर कार्य करते हैं। मैं उनसे और पत्र प्रतिनिधि एवं निर्वाचकके रूपमें आपसे भी पूछता हूँ। आपको एक व्यापक अधिकारयुक्त संविधान प्राप्त होनेवाला है। क्या आप जल्दी ही मिछनेवाली सत्ताका उपयोग अपने सङ्घसभाजनोंपर, जिनकी बमझी उपयोगसे नेहूँबा है, बरथाचार करनेमें करेंगे? इस मामलेकी अच्छाई-बुराईके सबाहकी छोड़िए किन्तु क्या अनरलका सरकारसे उचित अनुरोध लेकर भारतीय लोगोंके निर्वाचित नेताओंकी रिहाईकी माँग करना बेजा है?

आपका बाधि
मो क गांधी

[अंशेबीसे]

स्वार १९-१-१९१९

१६२ शिष्टमण्डल

दान्तराजके भारतीयों द्वारा शिष्टमण्डल मेजनेका निर्णय एक बहुत महत्वपूर्ण कदम है। इसकी विवेचना यह है कि उक्त शिष्टमण्डल सत्याग्रहियोंका होना। यह बात मामूली तौरपर कुछ बजीब-सी समझी है कि कानून तोड़नेवासे कोय न्याय पानेके लिए बिलायत जायें। इसलिये इसको लेकर मतभेद हो तो बात समझमें आ सकती है।

इस शिष्टमण्डलका समर्थन सत्याग्रहके सिद्धान्तके अनुसार नहीं किया जा सकता। सत्याग्रहीको तो केवल कष्ट-शूल करना है। उसका अबलम्ब केवल खुदा है। उसकी विजय तो सत्याग्रहमें ही निहित है। किन्तु मनी सत्याग्रही एक-से उत्साहवासे खपवा समाप्त विस्थापनाके नहीं है। फिर अनेक भारतीय सत्याग्रह नहीं कर सके तथापि वे सत्याग्रहियोंके साथ हैं। उनकी इच्छा है कि संघर्ष धीमा ही समाप्त हो जायें। जबतक श्री वाउव मुहम्मद की इस्तमजी जावि जेकमें पड़े है तबतक उन्हें रीज नहीं मिल सकता। जो सत्याग्रही जेकसे घूटकर आ गये हैं उनकी भी कुछ करना जरूरी है। सरकार उन्हें फिर तुरन्त ही ठो गिरफ्तार नहीं करती। इसलिए वे क्या करें? इन सब बातोंको देखते हुए शिष्टमण्डल मेजनेका इरादा ठीक बात पड़ता है।

दोनों देशोंमें शिष्टमण्डल मेजनेसे आसानी ही सम्भावना है। ईरान और भारत दोनों ही देशोंमें लोग हमारे संघर्षको पूरी तरह नहीं समझते। इसलिये यदि दोनों देशोंके सामने संघर्षका वास्तविक स्वरूप रखा जा सके तो इसमें सन्देह नहीं कि यह भी बहुत है। इससे दोनों जगहोंसे अधिक सहायता मिलेगी और उस हद तक संघर्षका जल्दी समाप्त हो जाना सम्भव होगा।

इनके सिवा यह संघर्ष एक आदर्शके रूपमें पेश किया जाता है। इसलिये भारतक कायोंको इसकी पूरी जानकारी देना हमारा कर्तव्य है। इस दृष्टिसे भी शिष्टमण्डल मेजनेका विचार ठीक माना जायेगा।

भारत जानेवाला शिष्टमण्डल बिलायत जानेवासे शिष्टमण्डलके लिए बहुत सहायक होगा। उसके कारण डॉर्ड्स के भी सोचना पड़ेगा और डॉर्ड्स मॉर्लेको अपन कठम्यका ध्यान जायेगा।

हमारा खयाल है शिष्टमण्डलमें प्रतिनिधियोंका चुनाव बहुत ठीक हुआ है। श्री हाजी हबीबने मज्याग्रह करनेका बचन दिया यह बड़ी बात है। उनके पीछे इतनेसे कुछ भारतीय शक्ति पड़ गये थे। उन्होंने फिर जोर मजानेका निरखप किया है। इससे अन्य भारतीयोंमें भी शक्ति जानेकी सम्भावना है। ऐसा हो अथवा न हो लेकिन श्री हाजी हबीबने अनेक बयों तक समाजकी सेवा की है। इसलिए उनके पीछे इतनेका बहुत-से भारतीयोंको बड़ा दुःख था। अब श्री हाजी हबीब फिर पूरे जोरमें आ गये हैं। हमने कौमको लम्बोप हुआ है। हम ईश्वरको प्रार्थना करते हैं कि श्री हाजी हबीबमें अत्यन्तक निभा से जागती शक्ति आवे और यदि जेक जानेका मौका आवे तो वे जमानके साथ जेक जायें। श्री काछिमिया शिष्टमण्डलमें है। हम

१ ईरान और भारत ।

विषयमें तो कुछ कहना ही नहीं है। यह समाजके लिए गौरवकी बात है कि दोनों शिष्ट मण्डलोंमें तमिल सरस्य है। तमिल भाइयोंने इतना अच्छा काम किया है कि उनके बिना शिष्टमण्डल था ही नहीं सकता।

श्री कामाक्षी कीमती सेबाजोसि समाज बनजान नहीं है। भारतमें उन्हें बहुत काम करना है। इसमें सन्देह नहीं कि वे बहुत अच्छा काम कर सकेंगे। समाजने श्री पोलकको भारत भेजनेका विचार किया यह उसके लिए गौरवकी बात है। अभीतक समाज श्री पोलककी सेबाजोको काफ़ी समझ नहीं सका। वे समय जानेपर समझमें आयेगी। श्री पोलकको भारत भेजनेसे वहकिं लोगोंकी आँखें कुछ ह्व तक खुलेंगी। फिर उन्हें भेजकर ह्य स्पष्ट रूपसे यह सिद्ध कर देते हैं कि बोरो और काके मिलकर काम कर सकते हैं और भारत किन्नहास गोरोंकी सहायता प्राप्त करके काफ़ी आगे बढ़ सकता है। उस सहायताका काम किस तरह बढावें यह जानना बकरी है।

इस प्रकार शिष्टमण्डलके विषयमें विवेचन करनेके बाद समाजको यह बताना भी हमारा फर्ज है कि वह शिष्टमण्डलपर बहुत अधिक निर्भर न करे। उल्की भाषा तो निर्मल सरयाग्रहमें ही रखनी है। शिष्टमण्डल जानेसे सरयाग्रह बन्द नहीं होता। उसे तो जारी ही रखना चाहिए। हम आशा करते हैं कि शिष्टमण्डलके वहाँ पहुँचनेतक बहुत-से भारतीय केरलानेमें आ पहुँचेंगे। शिष्टमण्डलका काम कठिन है। वह लोकी हाथ छोटे तो हमें वही मानकर सन्तोष करना पड़ेगा कि इतना प्रयत्न करना उचित था इसलिये हमने वह कर लिया।

शिष्टमण्डलके वहाँ रहते समाज अपना कर्तव्य निभायेगा तभी शिष्टमण्डलको पर्याप्त बल मिल सकेगा। बहिष्प आधिकारके हर स्थानपर उसके समर्थनमें समार्य होनी चाहिए। उनमें पास किसे मये प्रस्ताव बालाबाभा लॉर्ड कूको भेजने चाहिए।

इस लेखके लिखे जा चुकनेके बाद सरकारने कुछ प्रमुख भारतीय नेताओंको मिरपतार कर लिया है। उनमें शिष्टमण्डलके सरस्य भी है। अतएव सम्भावना यह है कि संघर्षको फिर यही पूरे उत्साहसे बढाना होगा।

[पुनरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-९-१९१९

द्रान्सवालके समस्त भारतीयोंकी सेवामें

जो सिष्टमण्डल इम्पैड आ रहा है उसमें मैं भी आ रहा हूँ। भारतमें स दो प्रतिनिधि ता गिरफ्तार हा मये हूँ और जेलमें जा बैठे हैं। हमारे भारतीय भी जो बहुत बार फोट आ चुके हैं फिर पकड़ लिये गये हैं। ऐसे समयमें मुझे इंग्लैंड जामा तनिक भी अच्छा नहीं लगता। फिर भी हमारे सभी यूरोपीय मित्रोंकी राय है कि मुझे इंग्लैंड जाना चाहिए भारतीय समाज यही चाहता है और हमारी इंग्लैंडकी समितिकी राय भी ऐसी ही है। इसलिए मैं भी जामी हबीसके साम आ रहा हूँ। किन्तु हमने जो माँग की है और जिनके मंजूर न होनेसे एकड़ों भारतीय जेल जा चुके हैं वे इंग्लैंड जानेस पूरी होगी यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता। यह भी सम्भव है कि लॉर्ड कू सिष्टमण्डलसे मिलनेस इनकार कर दें और कहें कि जो लोग कामूतके बिन्दु हैं, उनसे वे नहीं मिल सकते। सिष्टमण्डल भेजनेबासे सोमोंकी यह सम्भव केना चाहिए कि इतिहा आधिकारिक सब बधिकारी इंग्लैंडमें इकट्ठ होंगे। ऐसे समयमें सिष्टमण्डल भेजकर इन केवल आजमाइय कर रहे हैं, ताकि पीछे पछताना न रहे। सिष्टमण्डलके ऊपर निर्भर रहना ध्यर्ष है।

बकरीर दबा तो केवल बैल जाना ही है। बोड़े-से भारतीय भी समय-समयपर जेल जाते रहने तो अन्तमें हम जो माँग रहे हैं वह बबराय मिलेगा। ऐसा एक भारतीय भी यदि अन्ततक सड़ता रहा तो भी मिलेगा।

यह लड़ाई सच और झूठी है। सच भारतीय समाजके पक्षमें है इसलिए सड़की खप होनी ही चाहिए। सिष्टमण्डलको मरदर देना प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है। भारतीय समाजमें पूट आकनेवाले लोग मौजूद हैं। सरकारके पास भारतीय गुप्तचर हैं। उनके परिवे भारतीय समाजको गळत रास्तेपर से जानेसे जयाय किये ही जाते रहते हैं। सिष्टमण्डल इंग्लैंडमें इम्मा ठव और भी प्रयत्न किये जायेंगे। इन सबका मुकाबला करना प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है। जो जेसके कष्ट सहन नहीं कर सन्ने उनको बुचबाप घर बैठना चाहिए। कोई व्यक्ति किसी भी कायमपर दस्तखत करानके लिए जाये ता यह बकरी है कि अच्छी तरह पूछनाछ किये बिना दस्तखत कर्तई न किये जायें।

सिष्टमण्डलकी मरदर करनेके लिए स्वातन्त्रतापर सभाएँ करना जरूरी है। ये सभाएँ केवल द्रान्सवालमें ही नहीं बल्कि पूरे इतिहा आधिकारिक भी जानी चाहिए। यह भी याद रखना चाहिए कि यह सिष्टमण्डल सरवाइवियोंकी छातिर नहीं आ रहा है। सरवाइवियोंका बिरवास तो केवल तयपर है। वे सयफा आचरण करें यही उनकी जीत है। किन्तु जो

१. यह है, पर और सल्ल बगळे टोन टॉरिड २१ जूले पूर्व क्रिप को वे, लॉर्ड कधीये लय लयीपकी हाथी इतिहा टाल देरड एम्ने इम्पैडको रवता ही गले से।

२. कृष्णें लय के लानतर लय लय ग्या है।

विषयमें तो कुछ कहना ही नहीं है। यह समाजके लिए गौरवकी बात है कि दोनों सिष्ट मण्डलोंमें तमिल सरस्य है। तमिल भाइयोंने इतना अच्छा काम किया है कि उनके बिना सिष्टमण्डल जा ही नहीं सकता।

श्री कामाकी कौमती सेबाओसे समाज बनवाना नहीं है। भारतमें उन्हें बहुत काम करना है। इसमें सन्देह नहीं कि वे बहुत अच्छा काम कर सकेंगे। समाजने श्री पोलकको भारत भेजनेका विचार किया यह उरुके लिए गौरवकी बात है। अभीतक समाज श्री पोलककी सेबाओको काफी समझ नहीं सका। वे समय जानेपर समझमें आयेगी। श्री पोलकको भारत भजनेसे बहकि कोयोंकी आँसू कुछ हद तक झुलेंगी। फिर उन्हें भेजकर हम स्पष्ट रूपसे यह सिद्ध कर देते हैं कि गौरे और कासे मिलकर काम कर सकते हैं और भारत फिलहाल गोरोंकी सहायता प्राप्त करके काफी आगे बढ़ सकता है। उस सहायताका काम किस तरह उठायें यह जानना जरूरी है।

इस प्रकार सिष्टमण्डलके विषयमें विवेचन करनेके बाद समाजको यह बताना भी हमारा फर्ज है कि वह सिष्टमण्डलपर बहुत अधिक निर्भर न करे। सुखी आशा तो निर्मल सरयावहमें ही रखनी है। सिष्टमण्डल जानेसे उत्पादक बन नहीं होता। उससे तो बारी ही रखना चाहिए। हम आशा करते हैं कि सिष्टमण्डलके वहाँ पहुँचनेतक बहुत-से भारतीय कैदखानेमें जा पहुँचेंगे। सिष्टमण्डलका काम कठिन है। वह लाली हाथ छोटे तो हमें यही मानकर सम्योप करना पड़ेगा कि इतना प्रयत्न करना उचित या इसलिए हमने वह कर लिया।

सिष्टमण्डलके वहाँ रहते समाज अपना कर्तव्य निभायेगा तभी सिष्टमण्डलको पर्याप्त बस मिल सकेगा। ब्रिज आशिकाके हर स्वागपर उनके समर्चनमें समाएँ होगी चाहिए। उनमें पास किये गये प्रस्ताव बाबाबाला लॉर्ड कूको भेजने चाहिए।

इस लेखके लिखे या चुकनेके बाद सरकारने कुछ प्रमुख भारतीय नेताओंको गिरफ्तार कर लिया है। उनमें सिष्टमण्डलके सदस्य भी हैं। अतएव सम्भावना यह है कि संघर्षको फिर यहीं पूरे उत्साहसे चलाया होगा।

[पुनराठीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-१-१९१९

ट्रान्सवालके समस्त भारतीयोंकी सेवामें

जो सिप्टम्बर १९१६ का रहा है, उसमें मैं भी जा रहा हूँ। जारमें वही प्रतिनिधि का गिरफ्तार हो गये हैं और जेलमें जा बैठे हैं। दूसरे भारतीय भी जो बहुत बार बोट का चुके हैं फिर पकड़ लिये गये हैं। ऐसे समयमें मुझे इंग्लैंड जाना तनिक भी अच्छा नहीं लगता। फिर भी हमारे सभी यूरोपीय मित्रोंकी राय है कि मुझे इंग्लैंड जाना चाहिए भारतीय समाज यही चाहता है और हमारी इंग्लैंडकी समितिकी राय भी ऐसी ही है। इसलिए मैं भी हाजीर हवीशके साथ जा रहा हूँ। किन्तु हमने जो मामों की हैं और जिनके मंजूर न होनेसे सैकड़ों भारतीय बंद जा चुके हैं, वे इंग्लैंड जानसे पूरी होंगी यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता। यह भी सम्भव है कि सॉर्टेड कृ सिप्टम्बर १९१६से मित्रोंसे इनकार कर दें और कहें कि जो लोग कानूनके विरुद्ध हैं, उनसे वे नहीं मिल सकते। सिप्टम्बर १९१६ में जेजेबाले कोयोंको यह समझ सेना चाहिए कि बलिया आधिकारके सब अधिकारी इंग्लैंडमें इकट्ठे होंगे। ऐसे समयमें सिप्टम्बर १९१६ में हम केवल जावमाइस कर रहे हैं ताकि पीछे पछतावा न रहे। सिप्टम्बर १९१६के ऊपर निर्भर रहना व्यर्थ है।

अबकीर दबा तो केवल जेल जाना ही है। जोड़ेसे भारतीय भी समय-समयपर जेल जाते रहेंगे तो बलामें हम जो मांग रहे हैं वह अवश्य मिलेगा। ऐसा एक भारतीय भी यदि वास्तविक सड़ता रहा तो भी मिलेगा।

यह कड़ाई सब और झूठी है। सब भारतीय समाजके पक्षमें है, इसलिए उसकी पय होनी ही चाहिए। सिप्टम्बर १९१६की मदद देना प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है। भारतीय समाजमें फूट डालनेवाले लोग मौजूद हैं। सरकारके पास भारतीय गुप्तचर हैं। उनके परिप भारतीय समाजकी गलत रास्तेपर से जानके उपाय दिये ही जाते रहते हैं। सिप्टम्बर १९१६में होना सब और भी प्रयत्न किये जायेंगे। इन सबका मुकाबला करना प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है। जो जेलके कष्ट सहन नहीं कर सकते उनको चुपचाप घर बैठना चाहिए। कोई व्यक्ति किसी भी कायमपर इतकबत करानेके लिए जाये ता वह करती है कि अच्छी तरह पुछताछ किये बिना वास्तविक कर्तव्य न किये जायें।

सिप्टम्बर १९१६की मदद करनेके लिए स्थान-स्थानपर सभाएँ करना जरूरी है। ये सभाएँ केवल ट्रान्सवालमें ही नहीं बल्कि पूरे बलिया आधिकार की जानी चाहिए। यह भी याद रखना चाहिए कि यह सिप्टम्बर १९१६ सत्याग्रहियोंकी छात्रिण नहीं जा रहा है। सत्याग्रहियोंका बिबाध तो केवल सत्याग्रह है। वे सत्याग्रह आचरण करें, यही उनकी जीव है। किन्तु जो

१. यह है, सब और सजे जेलके ठीक ठीक २१ जून पूर्व जिसे जेजे कोर्टोंकी सभोंके सब केसके सजे इंग्लैंडकी रवाना हो गये हैं।

२. जेलमें सब के सत्याग्रह सब जा रहा है।

इसपर अन्ततक नहीं टिक सके हैं उनकी भावनाका अभाव करके और, हो सके तो सत्याग्रहियोंके ऊपर पड़ा हुआ बोझ हलका करनेके लिए यह सिष्टमण्डल जा रहा है। इसलिये सत्याग्रहियोंको तो सिष्टमण्डलकी ओर तनिक भी नजर नहीं रखनी है। अब उनके सत्याग्रह की ओर द्वांसबासकी सरकारके असत्यके मुकाबले ब्यादा हो जायेगा तब सत्याग्रहियोंकी तकलीफें अपने-आप दूर हो जायेंगी। इस बातको ध्यानमें रखकर सत्याग्रहियोंको जेठ जानेके मीकेकी ताकमें रहना चाहिए।

मोहनदास करमचन्द गांधी

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २६-९-१९ ९

१६४ स्वर्गीय श्रीमती गुलबार्ई

[जून २१ १९ ९ के पूर्व]

भारतसे आई लम्बी डाकसे यह बुखब समाचार मिला है कि भारतके बपोबुद्ध बाबाभाई गौरोजीकी भर्मपत्नी श्रीमती गुलबार्ईका बस्ती बर्बकी बबस्तामें बरसोबामें बेहाबदान हो गया। माननीय बाबाभाईने अपने सारे जीवनकी सहयोगिनी और सखीको जो किया है इसपर संसारके प्रत्येक भागमें बसे भारतीयोंको उनसे सहानुभूति हुए बर्बर न रहेगी। हम स्वर्गीय आत्माकी धान्तिकी कामना करते हैं और ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि वह करोड़ों भारतीयोंके सच्चे दादा माने जानेवाले बाबाभाईको बुझाबस्तामें यह मया बुख सहनेकी सक्ति और बर्ब दे।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २६-९-१९ ९

१६५ ज्योहानिसबर्गकी घिटठी

[जून २१ १९ ९ के पूर्व]

ब्रिटिश भारतीय समझौता-समिति^१

इस समितिका सिष्टमण्डल बनरल स्मट्ससे मनिबार्को रोपहरके बाण्ड बने मिला। उसमें श्री बन्बुल गनी श्री ह्यारी बजीर बकी श्री हबीब मोटल श्री एस बी टॉमस श्री अली खमीसा श्री जूलब इबाहीम बार्बी और श्री बॉर्ब पॉण्डे ने। बनरल स्मट्सने समितिको बनमग बाबा घटा दिवा। समितिने जो मॉर्ब की उनमें से कुछ नीचे लिखे अनुसार की

काला कानून रह किया जाये लिखित [भारतीयों] को उपनिवेद्यमें प्रवेशका बन्नि कार गोरुके बराबर ही किया जाये [पैसीमें] कई सासेबार हों तो परबागा (बाइसेंस)

केनेके लिए उन समीची मंजूरी मंजूरी न हो विशिष्ट क्रमोंको अंगुल-निधानी म देनी पड़े पंजीयन प्रमाणपत्रकी' अर्थात् द्राष्टबासमें आकर देनेकी मंजूरी ही जाये मीमात्री अनुमतिपत्र (परमिट) कापी दिये जायें जिनके पास अनुमतिपत्र न हों उनको तीन वर्षका अधिवास सिद्ध करनेकी जरूरत नहीं होगी चाहिए, म्यायापीसके निर्णयके विच्छेद सर्वोच्च म्यायासममें अपीलका अधिकार होता चाहिए, आदि।'

मैने सुना है कि इन मामलोंका जबाब जनरल स्मट्सने इस प्रकार दिया है

वे काम कानूनको रद न करेंगे किन्तु उसे कमजोर न करेंगे। जिन विशिष्ट धारणीयोंको माय्य समझेंगे उनको प्रवेशकी अनुमति देंगे जैसे की बेम्ह रॉडफेको दी गई है किन्तु कानूनमें फेरफार नहीं करेंगे। अनुमतिपत्र मिलनेमें विद्यमान होना तो ठारसे मंजूरी देनेमें और सब सासेबारोंको परजाने (आइसेंस) सेनेके लिए बाजिर नहीं होगा पड़ेगा आदि।

उन्होंने किच्छिद जबाब' सेजनेका बादा किया है। उनका कहना है कि तीन वर्ष [के अधिवासकी शर्त]के सम्बन्धमें उन्नीची नहीं की जायेगी क्योंकि वह शर्त तो कानूनमें भी बांधी और भी बिनाके मंजूर करनेपर सामिक की गई है।

मुझे कहना चाहिए कि यदि इतना ही जबाब हो तो वह किसी भी कामका नहीं है। यह तो बीसा ही हुआ बीसा धनु १९ ७ में हुआ था। स्मट्स जकरी चीजें देनेसे इनकार करते हैं और जिन चीजोंकी डिप्टमन्टको परकार नहीं है ऐसी छोटी चीजें देना मंजूर करते हैं। ऐसा करनेके लिए विशेष नियमोंकी जाबर ही जरूरत है।

समझीला-समिति एक ही कामके लिए बनाई गई थी। वह काम था जो भारतीय कैपमें है उनके छुनकारेका प्रयत्न करना। वह सूटकारा तो काके कानूनके रद होनेसे ही होया। उसको रद करनेसे भी स्मट्स इनकार करते हैं। समझीलाका वर्क सुलह या शान्ति है। यह शान्ति तो स्थापित हुई नहीं इतकिय मेरी तो यह सच्चाई है कि यह समिति जब तोड़ दी जाये। इत समितिका काम खत्म हो गया इसकिय जब इसकी जरूरत नहीं रही। जो लोग चाहते हैं कि सड़ाई खत्म हो जाये लेकिन जेधमें नहीं आ सकने उनका कर्तव्य बेध जानेवालोंकी कैप और समझसे मदद करना है। यह मदद पैसेसे और समारण करके आन्धोछनको उत्तेजन देनेसे हो सकती है। जो व्यक्ति कामके मसेके जवाबसे समितिमें शामिल हुए हैं उनको यह ध्यान रखना चाहिए कि उससे नहीं हानि न हो जाये।

बहुत-से लोगोंका जयाल यह बिचार है कि [१९ ८ के] मये कानूनमें जो तीन साककी जबाबि रती गई है उससे [१९ ७ के] काके कानूनके मुकाबले ज्यादा मुश्किल हुआ है। यह बकतबद्धी है। काके कानूनके मुसाबिक तो जिनके पास अनुमतिपत्र वे वे ही पंजीयन

१ रजिस्ट्रेशन सर्पिजिस्ट ।

२ वे मोंय वल १९ को कानूनीक-सचिवको मेने मने मार्गदर्शमें की गई थी ।

३ यह वल २३ वलको मिया । २५ वलको सही माथि-रचना मेने हुए कानूनीक ल वलक लेर मल किया कि " मालीक कानूनीक-सचिवको रन किलजनोंको दूर करनेका कोई उपाय नहीं हुआ ।" १७ कानूनीक कानूनी २४ वलकी कानूनी ली माउकका रन मलक वल कर कानूनीक कानूनीकको भी मेका । यह वल-वलक ३-०-१९ ९ के इंडियन बीपिनिशनमें प्रकाशित हुआ था ।

करा सकते थे। दूसरे जोनोंका पंजीयन करना या न करना तो केवल पंजीयकके अस्तिमारकी बात थी। नये कानूनके अनुसार तीन बरसके निवासियोंका अधिकार बढ़ा है। यह असम समाप्त है कि तीनके बजाय दो बरसकी अवधि क्यों न रखी गई जबवा अवधि रखी ही क्यों गई। यह सवाल संसदी बर्जमें उठया गया था।^१ लेकिन याद रखनेकी बात यह है कि काले कानूनसे सड़ाईसे पहले ट्रान्सवालमें रहनेवाले भारतीयोंके अधिकार विस्तृत मारे जाने थे। उसके बजाय नये कानूनमें तीन सालके निवासियोंको अधिकार प्राप्त हुए हैं। फिर भी प्रिताने अधिकार मिलें उतने माँगना हमारा कर्तव्य है। किन्तु ये अधिकार तबतक नहीं मिलेंगे जबतक मूल माँग पूरी नहीं की जाती। दो माँगें मंजूर कर ली जायें तो बाकीको मंजूर कराना आसान बात है। इसके अतिरिक्त यह मांग रखना चाहिए कि यदि काले कानूनके अन्तर्गत सड़ाईसे पहले रहनेवाले भारतीयोंको अधिकार प्राप्त थे तो वह कानून मौजूद है। उसकी रसे ऐसे भारतीय क्यों नहीं आ सकते? वह कानून जबतक लागू है तबतक वैसा अधिकार, यदि उसमें हो तो कड़कर भी लिया जा सकता है। किन्तु उस कानूनको पढ़नेवाला कोई भी आदमी देख सकता है कि वह अधिकार उसमें दिया ही नहीं गया है।

फुटकर अधिकार माँगनेवालोंको तो मेरी साथ समझ यह है कि तना कटेया तो हाकिमों अपने-आप सुरक्षा चाहेगी यह सोचकर वे तनेको काटनेका उद्योग करें।

धर-पकड़

मैं देखता हूँ कि भारतीय समाजका भाव्य उचित हो रहा है। सिष्टमण्डलके जानेके समय जेलें भर रही हैं यह सुधीकी बात है। नुस्वार ता १७ को निम्नलिखित तमिल और गिरफ्तार किये गये हैं

पी एन के पीटर, रोम जॉन मोरेज एन्वनी डेविड एन्वनी पैबिएस एन्वनी पीटर एन्वनी हेरी तमिजम एडवर्ड बरमसे एस चेट्टी छना भीजा कसन वीरडु, जे एम एस कुक राजा फ्रंसिस के सुबिया नायडू पना पडियाची देकम्मस नायडू बी कृष्णसामी नायडू, बी मन्नासामी पडियाची बी एन पीटर, सामीनाथन सहाका पडियाची बी नायडू पी चेट्टी एम पी पडियाची बी मुटिया नायडू एन घोपाल आर के पडियाची एन चेट्टी एच चेट्टी जी पडियाची एम पी नायडू और अणु चेट्टी।

इसमें भी घोपाल भी आ जाते हैं। गुजबाराको दूसरे इकताबीस लोग पकड़े गये थे भी तमिल ही है। जब इक्कीस लोग गिरफ्तार किये गये तब बाकी तमिलोंने पुलिसको पत्र लिखा कि वे भी तैयार हैं। अब प्रिटोरियाकी बस्तीमें घायब ही कोई तमिल रहा हो। इन सबके मुकदमे वेद होनेवाले थे तभी उनको मुक्तकी करनेकी बात बसाई गई। उनको मुक्तकी करते हुए जब नरदारी बकीकने जमानत तय करनेकी माँग की तो न्यायाधीश मैजर दिवसनने कहा कि न्यायाधीशोंकी जमानत नहीं होती क्योंकि सरकार तो चाहती ही है कि वे लोग भाग जायें। इससे प्रकट होता है कि जहाँ बहुत भारतीय गिरफ्तार होने हैं वहाँ सरकार गुर पलाहिम्मत हो जाती है।

सरकारका झूठ

बुधवारकी सार्वजनिक सभाके प्रस्तावके अनुसार बम्बलके नामसे सरकारको तार दिया गया कि विद्यमण्डलके गिरफ्तार किये गये सदस्योंको विद्यमण्डलमें जाने देनेके उद्देश्यसे छोड़ देना चाहिए और भारतीय समाज यह जमानत देनेके लिए तैयार है कि वे वापस आ जायेंगे। जनरल स्मट्सने तुरन्त इस तारका बचाव भेजा कि जब इनकी गिरफ्तारीकी आज्ञा ही गई तब सरकारको यह माफूम नहीं था कि वे प्रतिनिधि चुने जायेंगे। यह बात बिल्कुल झूठी है। सरकारको सत्याग्रहियोंकी हकबर्ती और भारतीयोंकी समाजोंकी पूरी जालफारी प्यारी है। सरकारका हेतु स्पष्ट ही यह है कि किसी तरह विद्यमण्डलके सदस्य न जायें। श्री वाधीको विगफ्तार नहीं किया सो केवल मयके कारण और श्री हाजी हबीबको गया सत्याग्रही समझकर गिरफ्तार नहीं किया।

किन्तु जब झूठा सच्चेको बुझ देने भगता है तब उसके हाथसे सच्चेका हित ही होता है। ममी कहते हैं कि विद्यमण्डलके सदस्योंको गिरफ्तार करना जनरल स्मट्सकी बड़ी भूल है। भारतीय समाजने दूसरे सदस्य चुननेसे इनकार कर दिया है। इसलिए हमारी विद्यमणे तो बिन लोनोंका चुनाव हुआ है उनका जेल जाना विद्यमण्डलमें जानेके बचकर ही है। [विद्यमण्डलके सदस्योंके स्थानमें] उनका स्थान छाती रहेगा लेकिन उसकी प्रति किसी दूसरे भारतीयसे नहीं की जायेगी। मैं तो चाहता हूँ कि सरकार भी वाधीको पकड़े तो बहुत अच्छा हो उससे तुरन्त ही सरकारकी पोक खुल जायेगी।

बैल जागीवालीकी मजदूरी

जो समिल पकड़े मये हैं उनमें से कितने ही लोयोंके बाल-बच्चोंके पास जानेको भी नहीं रहा। ऐसे लोयोंके लिए बर्बोवस्त किया गया है। इनका बोझ उठाना मिगोरियाके सेटोंका कर्तव्य है और मुझे ज्ञात है कि इनका बोझ संभके ऊपर नहीं पड़ेगा। पिछली बार जेल मये हुए समिलोंके बाल-बच्चोंका भरण-पोषण करनेमें बापू पीछसे ज्यारा लार्ड हुआ है। वह संभको देना पड़ा है। ऐसा लार्ड होता ही रहता है। इसलिए यह बकरी है कि जिनसे बल पड़े वे पीछेकी मजदूरी बकर हैं।

इस सम्बन्धमें लिखने हुए मुझे याद आता है कि मरीच हाते हुए भी रेबर्टेड श्री होबर्टने संभको एक पीछ दिया है। पिछके मण्डाह एक भारतीय युवक संभके कार्यालयमें जाकर तीन पीछ दे गया। जमसे नाम पूछा गया ता जमन बहुत मुश्किलसे बताया और सो भी इन सर्वपर कि उसका नाम चाहिए न दिया जाये। इसलिए उस युवकका नाम नहीं दे रहा हूँ। यह उदाहरण अनुकरणीय है।

१ वा बकल्य मरी है; किन्तु २५ जून १९१६ के इतिहासे अनुसार १६ जूनको बौद्धिकतासे उभरके मये बर लार्ड करा गया था कि "श्री लार्डने जेलमें मजदूरी और इन्डियन लोयोंके विद्यमण्डलके तीन लार्डोंको बाल बनेर बन्नी लार्ड लुन्नेको कर्तार दिया करने की कर्तव्यी है। कर्तव्य-सन्धिसे बज दिया है कि इनकी गिरफ्तारीके बल लार्ड जमके विद्यमण्डलके कारण इन्डियन लार्डोंकी न थी, किन्तु वे बालके इन्डियन लार्ड पर लगे और जमके लार्डने बालका लार्डकी लार्डकी बर दिया।" इतिहास "१९१६" पृ. १०१

द्विचतुष्टय मुकुटमा

भी रोस्त गिरफ्तार हो गये यह भिन्ना जा चुका है।^१ उनका मुकुटमा मजिस्ट्रेटके निजी दफ्तरमें पेश किया गया था। पहले मजिस्ट्रेटने उनके कार्टमें कोरे पसेपर हुस्ताकर किये जर्बात् किस मार्गसे निर्वासित किया जाये यह उसमें नहीं था। पीछे भी गांधी म्यामापीसके पास गये और उनको सूचित किया कि उन्हें कार्टमें कोरे पसेपर हस्तगत करनेका हक नहीं है। इसके बाद भी रोस्तको नेटालकी सीमापर छोड़नेकी आज्ञा दी गई। फिर उनको प्रिटोरिया से आया गया। वहाँ उनको भी समझाया कि उन्हें पंजीयन प्रमाणपत्रकी (एजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेटकी) जरूरी हैनी चाहिए। भी रोस्तने इससे साफ इनकार कर दिया और ब्रह्म हिम्मत बिखारी।

जेम्स गॉडफ्रे

मैं भी जेम्स गॉडफ्रेको अनुमतिपत्र सेवा खानेकी बात ऊपर लिख चुका हूँ। मुझे दुःख है कि उन्होंने ऐसी जमी लड़ाईमें जरूरी देकर अनुमतिपत्र मँगाया और कानूनके अधीन होनेका श्रापवा किया। मैं आशा करता हूँ कि वे कानूनके अधीन नहीं होंगे।

[बुधरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २६-६-१९१९

१६६ पत्र हबीब मोटनको

[ओहानिसबर्ग

पृष्ठ २१ १९१९ से पूर्व]

सेठभी हबीब मोटन

आपके १७ पृष्ठके पत्रका^१ मेरा उत्तर निम्न प्रकार है

मुस्लिम लीगकी माँग क्या भी यह मुझे ठीक पठा नहीं है क्योंकि मैं तब जेसमें था और इस बीचकी घटनाओंपर मैंने अभी गजर नहीं डाली है। मैं बाइसरायकी परिपत्रमें किसी मुसलमानकी सम्मिश्रित करना उचित मानता हूँ। उस परिपत्रमें मुसलमान सरकारकी नियुक्तिकी आज्ञा लॉर्ड मॉन्टेने दी है तो मैं उसको बाजब समझता हूँ। मैं हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच फर्क नहीं मानता। मेरी दृष्टिमें दोनों एक भारतवासीकी सन्तानें हैं। मेरा अपना विचार तो यह है कि हिन्दुओंका संख्या-बल अपेक्षाकृत बहुत ज्यादा है। हिन्दू खुद मानते हैं कि उनमें विद्या-बल भी ज्यादा है। इस दृष्टिसे हिन्दुओंको अपने मुसलमान भाइयोंको पीछे भी छोड़े देना बेकर प्रसन्न होना चाहिए। सरयायहीके रूपमें मैं तो आठ दौरस मानता हूँ कि जो

१. देखिए "वाल्ड और अन्य ओपेन्हा सुकरवा" पृष्ठ २५१।

२. इरीद बंधकने लकने जन्मे गांधीजीसे बंधे तीरपर वे लाल दूधे वे मुस्लिम लीगके विद्वानबन्धने रूपमें लोर्ड मॉन्टेने विचार इकोपी की माँग की है, पर वाजिब है वा नहीं; वास्तवतया कीर्तिलेने एक मुसलमान सरल जिने खलेका अनुशील कथित है वा नहीं; लोर्ड मॉन्टेने द्वारा एक अनुशीलकी लीगके वरतेमें कनडा (गांधीजीका) का कथन है; और हिन्दु-मुस्लिम दफ्ता बीसे अरबीत ही लकरी है।

बीज मुसलमान भाँसे हिन्दुओंको चाहिए कि वे उन्हें से लेने दें और खुद जो त्याग करना पड़े उससे समुद्रुष्ट रहे। आपसमें ऐसी उदारता दिखाई जामे तभी एकता होगी। जो सिद्धान्त दो सगे भाइयोंके बीच लागू होता है उसी सिद्धान्तके अनुसार हिन्दू और मुसलमान व्यवहार करें तो दोनोंमें हमेशा एकता रहेगी और तभी भारतीय उन्नति होगी।

मोहनदास करमचन्द गांधी

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २६-६-१९१९

१६७ पत्र मणिलाल गांधीको

जोहानिसबर

जून २६ १९१९

पि० मणिलाल

भाऊ मुझे तुमको गुजरातीमें पत्र लिखनेकी पूर्वज नहीं है। मैं दादा उस्मानका हिस्सा भेज रहा हूँ। तुम इसे पढ़ना और अपना उत्तर भेज देना। इसे वा को भी दिखा देना। यह याद रखना कि ईस्ट इंडिया ट्रेडिंग कम्पनीसे जो भी चीजें खेते हो उससे कर्ब बढ़ता है। तुम अपना अबाब सीधे मेरे फ्लेपर इन्स्टैंड न भेजना बल्कि कुमारी स्वेडिनको भेजना। अगर मैं आज रवाना हो गया तो वे मेरे पास भेज देंगी। पुण्योत्सववासके सम्बन्धमें — मुझे आशा है तुम उनकी आज्ञा सुपचार मानोगे और अपने विभाषसे यह धमाल निकाल दामे कि तुम बर्हा नहीं पड़ सन्ते। तुम्हें धनित मर ब्रवल करना चाहिए।

मोहनदासके आशीर्वाद

गांधीजीके इस्तासुरपत्र टाइट की हुई मूल अंग्रेजी प्रति (सी डब्ल्यू ८१) से।
धीरम्य मुण्डीकावेत गांधी।

१६८ पत्र डी० ई० वाछाको

भुन २३ १९९

प्रिय श्री वाछा

पत्रवाहक भी लू लू गांधी मेरे मतीचे हैं। इन्होंने अपनेको सार्वजनिक कार्योंमें अर्पित कर दिया है। आपसे अनुरोध है कि इनकी सहायता करें और इन्हें 'पीरोजसाह' तथा अन्य नेताओंसे मिला दें।

हृदयसे आपका
मो० क० गांधी

गांधीजीके स्वासत्रोंमें मूक बंबेजी प्रति (सी डब्ल्यू ४९५) से।
सौजन्य छगनदास गांधी

१६९ भेंट 'केप टाइम्स' को

[केप टाइम्स

भुन २३ १९९]

[गांधीजी] हम इंग्लैंड जात वीरसे ट्रांसवालमें बच रहे एंधिवाई संघर्षके सम्मन्धमें जा रहे हैं। हम इसे साम्राज्य-सरकार और ब्रिटिश जनताके सम्मुख सारी स्थिति रखनेका उत्पन्न उपयुक्त अवसर मानते हैं। हम यह भी अनुभव करते हैं कि यह मामला वास्तवमें ऐसा है जिसमें आपसी व्यक्तिगत बातचीतसे बहुत-कुछ हो सकता है।

१ श्री छगनदास गांधीसे एक परिचय-पत्रका जमेल मिला।

२. सिलखा लुन्धी पत्रिका; १९११ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके सम्मेलन; देखिए पृष्ठ १ पृष्ठ ४२१।

३. सर पीरोजसाह मेहता; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके संस्थापकमेंसे एक; देखिए पृष्ठ १ पृष्ठ ३९५।

४. केप टाइम्सके मालिकोंने गांधीजी और दायी हकीमके विद्वान्त्वके लिये इन्हींकी भलाय करके पूर्व केबिडजार्ज कैपिटल क्लबमें एकटा जगह दिया गया था। गांधीजीके केप टाइम्स और केप जार्जसे प्रतिनिधित्वमें मंत्र भी थी। वे मंत्र को वारमें ३-०-१९११ के इंडियन ओपिनियनमें जारी कई लेखों तक-सी थी। किन्तु केप जार्जसे इसे निकलनेके लुन्धी का बहुत-कुछ था "एचमलीसे डीक वारेजार्जसे प्रतिनिधित्वमें मंत्र करके श्री गांधीसे उचित मिला कि उन्हें दूल्हन-वर्णिकारियों द्वारा निरकारा कि वे जर्मनी बहुत-कुछ वाचका थी। किन्तु कल्पे मार्गमें कोई एकतर नहीं बरती थी। कल्पे का भी क्या कि मैं और मेरे साथी प्रतिनिधि भी दायी हकीम कल्पेमें दक्षिण नात्रिका प्रिंसिपलियल उभारते काम करते। हम सदा ही चाहते हैं कि हमें हमारे बर्णिकारोंकी दुःखान्त भावनासे दे दिया कल्पे। ऐसे कल्पे कल्पे सज्जता मिलेकी पूरी वाचा है।"

[संसारबन्धता] बतली और रंगदार सिन्दमन्त्रक भी इन्फेक सा रहे हैं क्या आप किसी क्षयमें उनके साथ मिल-बुलकर भी काम करेंगे ?

[याधीजी] यह सब खबरपर निर्भर है और इस सम्बन्धमें छन्दमें हम स्वभावत बहुत हद तक कोई एन्टिहिक्की समितिसे सहाह लेंगे।

‘संघ अधिनियम (यूनिवर्सल ऐक्ट) के विरुद्ध आपकी मुख्य आपत्ति क्या है ?

अगर दक्षिण आफ्रिकाके अधिवासी ब्रिटिश भारतीय प्रजाजनोकी पूर्ण स्वतन्त्रता मुनिश्चित कर दी जाती है तो स्पष्टिगत् मुझे सविधानमें कोई दोष दिखाई नहीं देता। मेरी राय यह है कि संघको केवल गोरे ब्रिटिश प्रजाजनोका सब नहीं होना चाहिए, बल्कि यहाँके सभी अधिवासी ब्रिटिश प्रजाजनोका संघ होना चाहिए। ब्रिटिश भारतीयोंको बहुत भय है कि संविधानके अन्तर्गत यह संघ ब्रिटिश भारतीयों और रंगवार प्रजातियोंके विरुद्ध गोरी प्रजातियोंका संघ होगा' और यदि ऐसा हुआ तो मेरा क्याल है कि यह हर तरहसे बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी। ऐसे किसी साम्राज्यीय संकटकके विरुद्ध रक्षाका उपाय करनेमें कोई कसर न रहना ब्रिटिश भारतीय सिन्दमन्त्रकका कर्तव्य होगा।

द्वान्सावासके मताधिकार प्रतिबन्धके सम्बन्धमें आपके क्या विचार हैं ?

मैं तो मताधिकारके मामलेपर प्यारा धोर नहीं देता। बात यह है कि आज ऐसी स्थिति उत्पन्न हो रही है जो नि-सन्देह आफ्रिकाकी रंगवार प्रजातियोंके विरुद्ध है मैं उसीके बारेमें सोच रहा हूँ। इस सम्बन्धमें जो-कुछ कहा गया है, मैंने उस सबका अध्ययन किया है मैंने संघदीय वाद-विवादोंपर भी विचार किया है। इन सबसे नि-सन्देह यह प्रकट होता है कि अगर साम्राज्य सरकारने इन मामलोंके सम्बन्धमें सब तरहसे आन्सासन प्राप्त न किया तो सामय संघकी रंगवार जातियां मुख्यत एगियाई जातियां बर्बाद हो जायेंगी।

संघके अन्तर्गत जनकी अवस्था किस तरह बाराह होगी ?

यह बात किसकुल साफ है कि संघ-संसदकी आवाज ममस्त दक्षिण आफ्रिकाकी आवाज होगी और साम्राज्य-सरकार संघ-संसद द्वारा स्वीकृत किसी भी कानूनपर आपत्ति करनेमें

१. आर्थर ओल्मिडर विक्टोरियो एलेन एन्टिहिक्के सेड्व वेल (१८९९-१९१९); एडाउडके फर्नट, १८९९ (१९०६) फन् १९ x में एडाउडके फर्नब्रड वामउए और एम्बर एन्डरु-दक्षिण आफ्रिकाके भारतीय जनताके दक्षिण एगले तथा केने के और दक्षिण आफ्रिका विविध भारतीय समितिके सम्बन्ध भी ने। फर्नले वीर-कृष कोशीजीकी वीरवी की मलात्मना छिपी थी।

२. आर्थर ओल्मिडर विक्टोरियो एलेन एन्टिहिक्के सेड्व वेल (१८९९-१९१९) के इन्डियन अधिनियमकी एक सम्पादनक सिन्दगीने कहा गया था "संघ संविधानके अन्तर्गतके अधीन प्रथिव्य मौजूर है। भारतीयोंके आचलमस्त सम्पत्तिके वार्तमान कानून कोका लो कालन एवा गया है और यह लो कालने तरह-तरीब बलक सम्बन्धर काले एएन एडर कोरे कविअडेन—आरे यह बलक एिए लो वा मुकि सिन्—करना गरी बारे। एडन विम बोर डोगा, क सम्बन्धमे इमे कोरे एलेर गरी है। दक्षिण आफ्रिकाके सिन्डे एल कौरी की कालनी एक गरी गू है। संघमे केरके मनेगुएट एडरमना एडर एम्बलक अधिवासी और डेवाके अन्तर्वि विरिनी एरलेके बरे हलगे इव कनेके। सिन्डोर असाज-विद कालीन कानूनकरकी कालना कालकेके मौजूर है और कालीनों द्वारा एडरएल दक्षिण आफ्रिकाकी कालकेके विरिनीक कालने एड काल विरिल है कि वे एलेर काल एन्डियनके एक-एक विरिनी कालीकेके सिन्ड जी काल केरिनी कालने काला कालेण सिन्डे कनुअर कृष कालके कोरेके कालम कुरक कनेउरी वा कालनेके कीमि डर रिवा काला वा।"

बहुत सिद्धकेनी। इस समय भी प्रत्येक उपनिवेश ब्रिटिश सरकारपर इतना अधिक दबाव डालता है कि ब्रिटिश सरकार रंगवार आतियोंको प्रभावित करनेवाले कानूनोके सम्बन्धमें अपने नियोजनकारका प्रयोग बहुत कम करती है और जब वे कानून दक्षिण अफ्रिकाकी सब-संघ द्वारा मंजूर होकर आर्योके ठक ठो वह ऐसा करनेकी और भी कम इच्छा करेयी।

श्री गांधीजी, जो लगभग तीन मास तक बाहर रहनेकी आज्ञा करते हैं इंग्लैण्डमें भारतीयोंकी विरक्तारियोंका भी जस्केस किया और कहा यह आज्ञा नहीं की कि मुझे विरक्तार न करके सीमा पार करने दिया जायेगा; किन्तु मेरे रास्तेमें कोई रुकावट नहीं आती गई। वे यहाँ बहाने छूटनेसे लगभग दो घंटे पहले डाकगाड़ीसे आये थे।

[अंग्रेजीसे]

केप टाउन २४-६-१९१९

१७० सिष्टमण्डलकी यात्रा—१

[जून २१ १९१९ के बार]

तुलना

जब जून १९१६ के अक्तूबरमें भारतीय समाजने इंग्लैण्डको सिष्टमण्डल सेवा का यह समय चुना था इस सिष्टमण्डलकी यात्राका समय उससे भिन्न है।

१९१६ में भारतीय समाज जेल जानेके लिए प्रतिज्ञा-बद्ध था। किन्तु कोई निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकता था कि यदि सरकारने जुनबाई नहीं की तो कौन जेल जायेगा। इस बार हम जेल जानेवाले सत्याग्रहियोंको जानते हैं। १९१६ में भारतीय समाज खुद नहीं जानता था कि उसमें कितनी ताकत है। अब तो उसकी इस ताकतका सारी दुनिया जान गई है।

फिर भी तुलनामें १९१६ के सिष्टमण्डलका काम आसान था। इस बार यह मुश्किल है। हमें मंजूर किये हुए कानूनको रद्द करना है। १९१६ में ब्रिटिश सरकारका मत क्या है यह हम नहीं जानते थे। इस बार सरकारने अपना मत बता दिया है। फिर भी सिष्टमण्डल निर्भय होकर जाता है, क्योंकि हमें अब इस बारेमें बहुत-कुछ भेदिकी है कि इंग्लैण्डमें क्या होगा। हमें अपनी सजाई सत्याग्रहकी परखी हुई ताकतारसे लड़नी है।

तैयारी

सिष्टमण्डलकी तैयारी कुछ दिन पहलेसे जारी थी। मगर भारतीय समाज ऐसे मामलोंमें सज्जा है कि सिष्टमण्डलके रवाना होनेके दिन तक यह निश्चित नहीं था कि सिष्टमण्डल जायेगा या नहीं। स्वभा भी पूरा इकट्ठा नहीं हुआ था। बहानेके टिकट भी रवाना होनेके दिन (सोमवार २१ जूनको) प्रातः प्याऊ बने लीये गये। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता था कि सिष्टमण्डल निश्चय रूपसे जायेगा। दोष घबस्तीको विरक्तार करना सरकारके हाथकी बात

थी। और कुछ लोगका खयाल था कि गाड़ीमें सवार होते बस्त भी पकड़ा-पकड़ी होगी। फिर भी सिप्टमण्डल चल पड़ा। किन्तु वह अंगड़ा-गुसा है। उसका एक पैर टूट गया है। श्री काष्ठिकिया और श्री भेट्टियार जो सिप्टमण्डलके वाहिने पैरक समान हैं वे योगा ही जेलमें हैं। हाजी हबीब तथा मै यात्रामें हैं। यह हममें से किसीका भी अच्छा नहीं लगता। परन्तु मेरा खयाल है कि श्री काष्ठिकिया और श्री भेट्टियार जेलमें से जैसी पुकार करेंगे वैसी ईर्मीयमें पाकर नहीं कर सकते थे। वे जेलमें जो कुछ भावमें वह हमको पहेल हममें बहाजकी यात्रा करते हुए नहीं मिलता है। सरपामरीका बुरा खयाल भी नहीं आता। भेरे अनुभवसे तो यही सिद्ध होता है। किन्तु यह मैं विस्तारसे भविष्यत बतानेगा।

स्टेशनपर

पार्क स्थान भारतीयोंसे खयालच भरा था। करीब पाँच सौ भारतीय रहे होंगे। श्री अस्ताथ और श्री नयबी भी जा खया इकट्ठा करानेके लिए क्रमसङ्गों गये थे स्टेशन जा गये थे। पुलिसने सास इन्तजाम किया था। कोई धक्का-मुक्की करते दिखाई नहीं दिया। बहुतसे भारतीय पीछेकी ओर सड़ कर दिये गये थे। अनेक लोग गजरे जादि जाये थे। यह तो दिखाई देता था कि सभीके बेहुरोंपर सिप्टमण्डलकी यात्रा सफल होनेकी आशा झलकती थी। श्री कैमिनबैक उनके साथी श्री कनेडी श्री मैकडगटायर, कुमारी बॉलिव डोक कुमारी इलेसिम और श्री पोल्क भी स्टेशनपर मौजूद थे। बहोते ठीक ६-१५ पर गाड़ी रवाना हुई।

मार्गमें

जब हम बैटीभियनमें पहुँचे तब बहोके सारेक-मारे भारतीय स्टेशनपर जाये थे। कह सकते हैं उन्होंने सिप्टमण्डलका स्वागत किया। वे टोकरी भरकर फल जाये थे जो बचतक चल रहे हैं। हाकेमी देवी हमकी पीनी जाये थे।

बोस्टेर स्थानपर रॉबर्टसनस बहुतसे भारतीय जाये थे। वे भी फूल और फल जाये थे। रॉबर्टसनमें मुख्यतः तमिळ लोगोंकी बस्ती है, इसलिये बोस्टेरमें अधिकतर तमिळ भाई ही थे।

भारतमें श्री हाजी हबीबकी साथी जातमें रूँ था। यह ओहानिखरयमें ही हो रहा था। जोय मुलें श्री और उनके पानी बहुत बहता था। उसको गर्म पानीमें घोड़ा नमक डालकर बोया। उनके कुछ आराम रहा किन्तु नहीं के बराबर। जहाजमें बॉलिवको भीय दिगानी पड़ी है। यह बिबरण लिखने समय भी रूँ बिस्तुल नहीं गया है कि श्री आराम ही रहा है। हर दोर जागमें दो-तीन बार दबाकी रूँ डालता हूँ। इसके अतिरिक्त बरुँके पानीकी पट्टी भी रखी जाती है। बोस्टेर भी अच्छी बतवाल करता है।

केप टाउनमें

गाड़ी केप टाउनमें आया रंठा देरम पहुँची। स्टेशनपर कुछ भारतीय जाये थे बाकी सब जहाजपर गये। श्री काष्ठिकिया अभी दिन दर्शन जानबाउ से इसलिए उनकी बचत थी। उनमें बहुतसे भारतीय एक गये थे। यहाँ भी भारतीयोंने हमें पून-रुज जादि देकर दिया किया।

बधिण खासिकाकी प्रस्ताव महिष्ठा भीमती जोखिब भाइतर और भीमती सुई बहानमें हमसे हाथ मिसानके लिए बाध ठौरसे बाई थीं। हमारे प्रति उन दोनों महिष्ठाओंका बहुत सम्मान दिखाई देता था। मैंने देखा कि उनको सत्याग्रहकी जड़ार्थ बहुत पसन्द है।

साहाय्यपर प्राप्त तार

श्री काञ्चिम्याका तार सिष्टमण्डलको बेठावनी तथा स्फूर्ति देनेवाला है और उसमें हमारा नरुण्य बताया गया है। वह इस प्रकार है

आप दोनों स्थिति जा रहे हैं। इससे मुझे खुशी हुई है। आपके साथ जाने के बचान में जेलमें रहकर अपने देशकी खातिर दुःख भोगना पसन्द करता हूँ। आपकी सफलता चाहता हूँ।

श्री इबाहीम कुवाडियाका जेल जाते बसत दिया गया तार नीचे लिखे अनुसार है जेल जाते हुए मैं सिष्टमण्डलकी सफलता चाहता हूँ। दूसरी बगहकी अपेक्षा मैं जेलमें जातिकी सेवा ज्यादा अच्छी कर सकता हूँ।

इन दोनों तारोंका उत्तुमा करते हुए हृदय फटा है। हम वहाँ जा रहे हैं वहाँ तो सिर्फ पानीके बुझबुझ ही होने। किन्तु जो जेलमें जाकर बैठे हैं वे तो भारतीय समाजकी सेवा कर ही रहे हैं। मेरा निश्चित मत है कि यह सिष्टमण्डल जाह जो कर जाने किन्तु उसकी सेवाके मूखकी तुलनामें वह कुछ नहीं होगा। श्री काञ्चिम्या और श्री कुवाडिया जादि जेल-यात्री भारतीय समाजके नये उत्साहक बोधक हैं। सिष्टमण्डल उसकी पुर्वकता बताता है। जेल-यात्री संसारके सामने सिद्ध करते हैं कि भारतीय लोगोंमें मर्दानगी बाई है। सिष्टमण्डल सिद्ध करता है कि जमी उनमें पूरी मर्दानगी नहीं है। जमी वे बालक हैं और इसलिये उन्हें सिष्टमण्डल जमी जेल-यात्रीके सहारेकी जरूरत होती है। सत्याग्रही भारतीय समाजके बलगाही बंध हैं। जेल जानेवालेके लिए निराश होनेकी कोई बात नहीं है। सिष्टमण्डल इन्स्ट्रुक्शन खानी हाथ लीटना तो जो खोप उसके ऊपर मजबूत बनाने बैठे होंगे वे ही निराश होंगे। इसलिये मेरी सलाह है कि कोई सिष्टमण्डलपर भाषा न लनाये। आप सिष्टमण्डलकी सहायता करें—जेल जाकर, एक रहकर, तार भेजकर और वहाँ अपनी ताकत बटाकर। आप सिष्टमण्डलको मापका इंसान समझें। किन्तु माप पैदा करनेवाला कोपका तो यहूति जायेगा जमी माप पैदा होगी और इंसान बनेगा। ताकत तो यहाँ है। पसन्द बलता है, यह [सक्तिदा] केवल दिखावा है। यह बात भूलनेकी नहीं है। इस प्रकार दूसरे तार भी जो हमें मिला है उत्साहबर्धक बन गये हैं।

हमीरिया इस्लामिया बंजमनका तार निम्नलिखित है

दीनशाहीकी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। हमें भरोसा है कि आप दीन मान और मर्दानगीकी रक्षा करेंगे। इन शकालिकि प्रकल करने कि भारतको मुक्ति और भारतके ताकत मिले।

इसाम साहबने अपना तार इस तरह बलग भेजा है

हम सत्याग्रहका संघा चल्ता हुआ रखेंगे। सफलताकी कामना करता हूँ।

पश्चिमदुमकी समितिवाँ औरसे निम्न तार मिला है

आपका कार्यवा समर्थन करते हैं। आपकी सफलताकी कामना करते हैं।

रौबर्टसनके भारतीयोंका छार निम्न प्रकार है
कामना है आपकी भाषा सुखमय हो। ईस्वर आपको आपके कार्यमें सफलता दे
ऐसी उससे प्रार्थना करते हैं।

इन शुभकामनाओंको साथ लेकर हम केप टाउनसे विदा हुए।

‘सबके सम्बन्धमें कुछ कमीबिया’

बहुत-से भारतीय भाइयोंने सिष्टमण्डलको ससाह बी है कि यह सब (यूनिफन) के प्रयत्नको
मुसा न दे। मुझे कहना चाहिए कि यह सहाह सबका छार घमसे बिना बी गई है इसलिये
इस सम्बन्धमें दो शब्द कहना हैं। बहाजमें इस प्रयत्नपर मैं अधिक विचार और बल कर
सका हूँ। सबके विरोधक (बिल)में हमारे सम्बन्धमें कुछ भी बात नहीं है। उसके अन्तर्गत सब
उपनिवेश इकट्ठे हो जायेंगे। इसके बावजूब सम्बन्धित उपनिवेशोंके कानून कायम रहने हैं। इसके
विरोधमें क्या कहा जा सकता है? उपनिवेश सबबद्ध हों इसके विरोधमें हम कुछ कह
या कर नहीं सकते। सब बननेके बाब यदि कोई कानून बनानेका प्रयत्न किया जाये ता
उसके बारेमें हम कह सकते हैं। सब बनने-मानसे कोई हमारा हक नहीं मारा जाता।
संघीकरणका असर ऐसा होगा इसमें कोई शक्येह नहीं। किन्तु हम सबका विरोध यह कहकर
तो नहीं कर सकते कि सब हमारा मूलोच्छेद कर देगा। मूक बात यह है कि उपनिवेशके
घोरे सोग भी समुदाका बरखाब करते हैं। ये समु एकत्र हो जायेंगे इसलिये प्यादा बवान
जायेंगे ही। इसका उपाय क्या है? हम उनको एक होनेसे तो नहीं रोक सकते।

कोई यह नहीं कहता कि समु संकठित होते हैं तो हम सब भारतीय संगठित हों। यह
वास्तविक उपाय है। भारतीय यह न कहकर कहते हैं कि इंग्लैंडसे कुछ काम। इससे
हमारी लाचारी बाहिर होती है। उपनिवेशी यूरोपीय बख्शान हैं और साम्राज्यके काइले
बन्ने हैं। हम बुर्जल और उपेक्षित बेटे हैं। काइले बन्नेके मुकाबले मति उपेक्षित बेटोंको क्या
कैसे निसे? जर्मी देकर? यह तो कमी सम्भव नहीं। जर्मीमें जब आजाकी सक्ति होती है
तभी यह काम देवी है। जब हम और लगा सकते हैं तब जर्मी बाया-रूनी मानी जाती है। यह
समझना चाहिए कि जर्मी सविनय आत्रा है। बल से प्रकारका होता है— एक शरीरबल और
दूसरा आत्मबल या सत्प्राप्त। शरीरबल सत्यबलके सम्मुख कुछ भी नहीं है। इसलिये हम
सत्यबल सीखें तो ‘सबके सम्बन्धमें कुछ कमीबिया’ ऐसी बात कहना भूख जायें।

यह ठीक है कि डॉक्टर बखुल रहमान’ संप (यूनिफन) के सम्बन्धमें ही [इंग्लैंड] जा रहे
हैं, क्योंकि सभ-कानूनमें काले लोगोंके कुछ हक अभीसे ही रर हो जाते हैं। बात ऐसी हो तो
कोविध करनी चाहिए। ऐसा हमारे मामकेमें नहीं है। फिर भी किसीको यह न मानना चाहिए
कि सिष्टमण्डल संपके प्रयत्नको उखावेना ही नहीं। उसको उखावे बिना मुजारा नहीं। सभकी
बाब उठ रही है, तभी तो यह सिष्टमण्डल जा रहा है। इसके अलावा यह सभकी तरफसे
कहना कि ट्राम्बवाइके कष्ट कायम रहें तो सब नहीं बनाया जाना चाहिए। इसके जाये
मैं यह कहता हूँ कि यदि भारतीय पूरा बल लगायें तो सिष्टमण्डलकी बात मंजूर हुए बिना
कराया न रही। इसके अतिरिक्त सिष्टमण्डल समस्त दक्षिण आफ्रिकाके छिप बने हुए कानूनोंकी

१ आफ्रिकी एन्सेलिफ संघटन (नारिकल संकितिक संघटन)के अध्यक्ष और केप टाउन केर
राजिदा (यूनिफन)के अध्यक्ष, रैपिड कन्व ५, १४ १९११ और १९१२।

बात भी उठवेना। इसका अर्थ यह नहीं है कि ये कानून रद्द हो जायेंगे। इनको रद्द करानेके लिए वो सत्याग्रह ही करना होगा। किन्तु हम यह मानते हैं कि बातचीत करनेसे ब्रिटिश सरकार उपनिवेशोंके साथ कोई समझौता कर सकती है। मुझ काफ़ी है कि इस स्पष्टीकरणको भारतीय समझ सकेंगे। इस प्रश्नपर सब लोग ज्यों-ज्यों सोचेंगे त्यों-त्यों स्पष्ट होता जायेगा कि सबके सम्बन्धमें जितना जोर लगाया जा सकता है उतना तो सिष्टमण्डलमे लगाया ही है। यह कानूनकी बाटीकीकी बात है। यह कानूनकी जानकारिके बिना पूरी तरह कैस समझमें आये ?

हमारे साथी चात्री

हमारे साथ केपके प्रबन्धनमंत्री श्री मेरीमैन' और उनके साथ श्री चॉबर' हैं। नेटाज्जे श्री स्माइल और श्री ब्रीन हैं। अरिब रिबर काकोनीके श्री बोबा हैं। इनके सिवा दूसरे अग्रज मुसाफ़िरोंके नाम देनेकी जरूरत नहीं है।

रंगरार लोगों (कलंड पीपुल) का सिष्टमण्डल भी इसी बहारामें है। इसमें डॉ अम्बुल रहमान श्री फ्रेड्रिक श्री लॉर्ड और श्री मीरेसा हैं। मुझे कुछ है कि डॉक्टर अम्बुल रहमान और उनके दो अन्य साथी दूसरे वर्गमें हैं और श्री मीरेसा तीसरे वर्गमें। इससे उध सिष्टमण्डलकी इज्जतमें बड़ा लफटा है। ये कासे लोगोंके प्रतिनिधियोंकी हैसियतसे इस स्थितिमें आ रहे हैं यह ठीक नहीं जान पड़ा। मैं देखता हूँ कि अब बहुत हीन स्थितिके कुछ यूरोपीय पहले वर्गमें हैं तब जबत रंगरार प्रतिनिधि दूसरे और तीसरे वर्गमें हैं। पुछताछ करनेसे माझूम पड़ा है कि इस सिष्टमण्डलको जयेंकी बड़ी दिक्कत हुई इस कारण इसके सबस्य इस तरह माना कर रहे हैं। इस सिष्टमण्डलके दो अन्य सबस्य जमी पिलके बहारामें जानेवाले हैं। डॉ अम्बुल रहमानने श्री भाइररके सम्बन्धमें जो उन लोगोंकी बोरखे पहले ही चले पये हैं मुझे कुछ बहुत ही जानगे योग्य बातें बताई हैं। इतना ही नहीं कि उन्होंने स्वामीय संसदमें कासे लोगोंका मामला बहुत बोरबार इंपसे पेस किया है बल्कि अब उनकी हिमायत करनेके इरादेसे ही नूर इम्बैड बये हैं। उनको कोई दूसरा काम नहीं था फिर भी वे वहाँ अपने खर्चसे बये हैं। उन्होंने कासे लोगोंसे अपने खर्चके लिए फूटी कौड़ी भी नहीं ली है। उनका बकायतका पन्ना बहुत अच्छा बछता है। फिर भी वे भाळदार नहीं हैं, क्योंकि वे अपने निवास कुटुम्बपर, और परोपकारके कामोंमें बहुत बत खर्च करते हैं। वे डीनीयूजके मुकदमेमें समयभर दो महीने तक व्यस्त रहे फिर भी उनकी खीस बनीतक नहीं गिबी है और वे नूर इस सम्बन्धमें सहायीन हैं। इसका नाम है बकीत। [पहले] उन्हे बकीलोंका ऐसा ही पीबन होता था। वे बकायत परोपकारके लिए करते वे पैसा कमानेके लिए नहीं। परोपकार करते हुए जो पैसा मिळता उसको वे कैते वे और उसे गजबना या लुचीसे वी गई खीस कदा जाता था। उस गजबनेका शक नहीं हो सकता था। इसके अलावा श्री भाइरर पचास कापी बमझीवाले सोलंकि लिए ऐसा करते हैं। इससे हमें समझना चाहिए कि यूरोपीयोंमें भी ऐसे महान परोपकारी लोग मौजूद हैं जो अपने परोपकारके शकरीमें

१. डॉ. वैरिक मेरीमैन (१८८१-१९२२); केन काकोनीज प्रबन्धन-मन्त्री १९८१ ।

२. वे. अम्बुल डॉक्टर, निजल-समाके उरल पत्र "कोकोनोरी एरंड निवारण" सिद्धिने काय्युक्तका उपाय केन बकीतर कर दिया ।

सूची आशियोंके सामोका भी शामिल रखते हैं। मस ता सगता है कि हमें किसी भी जातिवा
मूल्यांकन करते समय उसके अच्छे सोमोंके उदाहरणोंका केना चाहिए। ऐसा करनेसे ही पुनः-
पुनः जातिवा साप-नाश रू सचरी है।

[सुबराठीसे]

इतिवत बोधितिवत ३१-७-१९ ९

१७१ श्री पोलक और उनका काम

भारतमें जनमत तैयार करने और भारतको अपने कर्तव्यक प्रति जगानेके उद्देश्य
द्राम्बावाक विविध भारतीयोंके प्रतिनिधियोंके इतिवतल श्री एच एच एक पोलक द्वारा भारतके
सिए प्रस्तात करनेके अवसरपर हमारे पाठकोंका श्री पोलककी संश्लित जीवनी पढ़कर खुशी
होगी। श्री हेनरी सांभोमन लिखत पोपकका जन्म जागसे ठीक २७ वर्ष पूर्व डोवर, इंग्लैंडमें
हुवा था। वे श्री वे एच पोलक वे पी क पुत्र हैं। श्री वे एच पोलक लन्दनकी दक्षिण
आफ्रिका विविध भारतीय समितिके सदस्य हैं। श्री पोलक लन्दन विद्वत्विद्यालयके अहद
प्रेमुण हैं, और उनके पास लन्दन बैनर ऑड कॉमर्स (व्यापार सभ) तथा अन्य विज्ञा-
त-साधक साहित्यिक तथा आर्थिक विषयोंके अनेक प्रमाणपत्र हैं। उन्होंने अपनी विद्या
इकोल ३ कॉमर्स स्कुलके स्विट्जरलैंडमें पूरी की। इसका बाद वे लन्दनकी सोसाइटी ऑड
केमिकल इंजनी (रसायन उद्योग समिति) के सहायक सचिव नियुक्त हुए। स्वास्थ्य-सम्बन्धी
कार्योंमें श्री पोलक सन् १९ ३ के आरम्भमें दक्षिण आफ्रिका गये। भारतीयोंका पत्र बनाने
और इस पत्रिकाका सम्पादन-पत्र जो परमार्थका कार्य था और अब भी है, स्वीकार करनेसे पहले
वे पत्रकारिता कर रहे थे। अपने कुछ आरगोंको व्यावहारिक रूप देनेकी इच्छामें उन्होंने एक
एना पत्र छोड़ दिया जिसे पैसक विहाजने बहुत अच्छा कहा था सफ़टा था तथा जिसमें
और भी आर्थिक तरकीबोंकी उम्मीद थी और सन् १९ ४ में कीर्तिकृत योजनामें शामिल हो
गये। इसमें उसके सदस्योंको कबल इतना ही पैसा मिलता है जितना सादेसे-सादे इपने
रखनेक लिए पर्याप्त है। जैसा कि इन पत्रके पाठकोंको ज्ञात है, इस योजनाका ध्येय टर्मिन्टॉय
और रस्किनकी मूलभूत विज्ञाको कार्यात्मिक रूपत और अपनी बाह्य गतिविधियों द्वारा
दक्षिण आफ्रिकाने विविध भारतीयोंकी विकासमें दूर कठनमें सहायता देना है। भारतीयोंके
सार्वजनिक कार्योंकी आवश्यकताओंको ध्यानमें रखते हुए और इन पत्रके सम्बन्धित अपने
कर्तव्योंका अधिक सुचारु रूपसे निर्वह करनेकी बुद्धिमें श्री पोलकने सन् १९ ९ में श्री वांकीने
अपीन बकासतका प्रतिपन्न केना प्रारम्भ किया और सन् १९ ८ में उन्हें द्राम्बावाकके सर्वोच्च
व्यापारिकमे अटर्नीकी सनर मिल गई।

सन् १९ ९ में श्री पोलक द्राम्बावाक विविध भारतीयोंके अर्द्धतकिक सहायक मन्त्रीके
कार्ये काम कर रहे हैं। वह काल दक्षिण आफ्रिकामें विविध भारतीयोंके इतिहासका सबसे
मशहूरका मन्त्र रहा है। इसमें सत्याग्रह आन्दोलनमें दक्षिण रूपसे सम्बन्धित श्री पोलक सरीने
सोमोंके अचक उठाह और मिच्छाकी परीक्षा हुई है। पिछके तीन वर्षोंमें श्री पोलकन आरम्भ
नहीं जाना है। उन्होंने अपनी पौम लेखनीका निरन्तर उपचार करनेके अलावा दक्षिण
आफ्रिका-भरमें प्रवच भी किया है। वे जगारें उन्होंने सत्याग्रह सचयके लिए कथा पना
९-१८

१७२ पत्र: रामदास गांधीको

[भार० एग० एग० केगिसवर्षे ५दिन]
जुलाई ७ १९०९

दाद

इस समय जहाजमें हूँ।

बापूके आशीर्वाद

मांषी

ओपिनिमन

नेटाल

। उपरीरकाय वीरलकाकेन्दर गांधीजीके एकाशरीमें गुरु गुजराती (श्री बन्धु०८४) से।
गुणीसाबेन गांधी

१७३ शिष्टमण्डलकी यात्रा [-२]

[जुलाई ० १९०९ के पूर्व]

अहमदाबाद कीर अंसकर मुकदमा

गुना हूँ कि पहले बर्सेकी जहाजकी यात्राकी अपेक्षा वीर बहुत अच्छी
०५। महिला तीखे बर्सेमें हैं। उगते गिल्लेके लिए हम दोनों भाई हर
हमें तीखे बर्सेका अनुभव गिला है। मेरी मायका ऐसी है कि तीखे
रचनागता है—वह पहले बर्सेमें नहीं है। और बेकारों को गुन और
बर्सेमें [भी] नहीं है। अहमदाबाद का गुन—बदि गाने तो—मौकरीके।
है। औरर बालकोंकी तरह पहले बर्सेके मापियोंको बहलाने-गुनासाते
कुल-म-कुल यात्रा-गीता ज्ञाना रहता है। एक विचार पानी भी जगने
०५। यात्रेकी मेरपर बीते ही तो कुछ दूर पहा जगमच पगता
०५। एक एलकेके लिए हाथ समाम बिल पाते रहते हैं। हाथके
०५। इगमित के बिहकुल मायुके और कमजोर हो जाते हैं। ये
०५। अपने खेलके हाथोंके करती कनका हूँ तो मेरे मनमें
काम करते बेवता हूँ तो मुझे उनके ईर्ष्या होती है। मैं जिया
का वह नहीं है। जो रचनागता खेलों भी वह भी
०५। रहता पकता है। मैं खेलमें खिलती मन्गीगता भीरता
या जगनी मन्गीगता भीरता और एकाग्रता नहीं

करनेके लिए, अथवा सार्वजनिक सभाओंमें भाषणों द्वारा उप-महाद्वीपके विभिन्न भागोंमें रहनेवाले भारतीयोंको संपर्कके स्वरूपसे परिचित करानेके लिए थीं। दक्षिण आफ्रिकामें ब्रिटिश भारतीय प्रवासियों और एशियाई कानूनसि सम्बन्धित विभिन्न प्रयोगके विषयमें श्री पोलककी जानकारी करीब-करीब बेजोड़ है। विस्तृत सही जानकारी रखनेकी अपनी उत्कंठामें उन्होंने मामूलीसे मामूली बीजका अध्ययन किया है और पूरी स्थितिका सही स्वरूप समझनेकी गरजसे जो-कुछ अथकाश मिल सका उसमें उन्होंने आधुनिक भारतीय इतिहासका अध्ययन भी किया है। भारतके अनेक प्रमुख समाचारपत्रों और पत्रिकाओंमें लेख आदि लिखते रहकर श्री पोलकने सामयिक भारतीय विचारधारासे सदा सम्पर्क रखा है। इतकिए वे राष्ट्रीय जनताके लिए कोई अपरिचित व्यक्ति नहीं हैं। भारतके लोगोंको यह जानकर निश्चयेह सुखी होगी कि भारतीय जीवन और चरित्रके अन्तरंग पहलूसे परिचित होनेके लिए श्री पोलक दक्षिण आफ्रिकामें अपनी यात्राओंके दौरान सदा भारतीय घरोंमें भारतीयोंकी भाँति ही रहे हैं। भारतीयोंके मनपर उनका इतना अधिकार हो गया है कि जब भारतीय नेता जेठोंमें वे उस समय वे श्री पोलककी सलाह देनेको उत्सुक रहते थे और उन सलाहोंका अमनसे पालन करते थे।

श्री पोलकका विवाह एम् १९०५ में हुआ था। अपने पतिके समाप्त ही आत्म-रत्याय तथा सेवा-भाषना रखनेवाली श्रीमती पोलकके प्रति दक्षिण आफ्रिकाके राष्ट्रीय समाजका रूप कुछ कम नहीं है। पिछले कुछ समयसे उन्होंने भारतीय महिलाओंकी समार्ष आयोजित करनेका काम स्वयं उठ्य किया है और उन-मनसे अपने काममें लग गई हैं। दक्षिण आफ्रिकामें उनके दो सन्तानें हुई हैं। श्री पोलक एक प्राचीन यहुदी घरानेके हैं और एक ऐसी जातिके सदस्य होनेके नाते जिसे बहुत अत्याचारसि मुजरमा पड़ा है वे दक्षिण आफ्रिकामें ब्रिटिश भारतीयोंके कष्टोंको कम करनेमें सहायक होना अपना सौभाग्य मानते हैं। मुंबाइस्थासे ही नीतिशास्त्रके प्रति उनकी गहुरा बखान था। श्री पोलकके लिए धर्म और नीतिशास्त्र एक दूसरेके पर्याय हैं। अब उन्होंने स्वाभाविक रूपसे सम्बन्धकी सादर प्रेस अधिकतम सोसाइटी [नैतिकता समिति] से सम्बन्ध स्थापित कर लिया था और आज भी वे उसके सदस्य हैं। यह उनका नैतिक दृष्टिकोण ही था कि उन्होंने भारतीयोंका काम हाथमें लेनेकी आवश्यकता अनुभव की।

[अपेजीसे]

दक्षिण ओपिनियन १-७-१९९

[बार एम एस केनिनबर्म कैसिल]
जुलाई ७ १९०९

बि रामबास

मैं इस समय बहाजमें हूँ।

बापूके आशीर्वाद

रामबास गांधी
इंडियन ओपिनियन
पीनिक्स गेटाल

बहाजकी तस्वीरवाले पास्टकार्डपर गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूख बुजरायी (सी डब्ल्यू ८४)से।
छाया मुसीबाबेन गांधी

१७३ दिाष्टमण्डलकी यात्रा [-२]

[जुलाई ९, १९०९के पूर्व]

बहाज और लोकस मुकामला

मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि पहले बर्सेकी बहाजकी यात्राकी अपेक्षा फिर बहुत अच्छी है। श्री मीरुसाई बमाकजी मलिया तीसरे बर्सेमें हैं। उनसे मिलनेके लिए हम दोनों भाई हर रोज जाते हैं। इससे हमें तीसरे बर्सेका अनुभव मिला है। मेरी भावना ऐसी है कि तीसरे बर्सेमें जो सुख है — स्वतन्त्रता है — वह पहले बर्सेमें नहीं है। और बेसमें जो सुख और स्वतन्त्रता है वह तीसरे बर्सेमें [भी] नहीं है। बहाजमें जो सुख — भवि मानें तो — मौकरोको है वह यात्रियोंको नहीं है। मौकर बाकरोकी तरह पहले बर्सेके यात्रियोंको बहुकाले-फुससावे रहते हैं। हर दो घंटे बाद कुछ-न-कुछ खाना-पीना होता रहता है। एक मिलास पानी भी अपने हाथसे नहीं लिया जा सकता। खानेकी मेजपर बैठे हों तो कुछ दूर पड़ा चम्मच उठाना बड़प्पनमें बाधक माना जाता है। चाफ रखनेके लिए हाथ ठामम दिन बोलने पड़ते हैं। हालांकि लिए कुछ काम तो रहा नहीं इसलिए वे विस्तृत तामुक और कमबोर हो जाते हैं। मैं जब अपने मीरुसा हाथोंका मुकामला अपने बेसके हाथसे करने समता हूँ तो मेरे मनमें चिड़ पैदा होती है। मौकरोको काम करते देखता हूँ तो मुझे उनसे ईर्ष्या होती है। मैं जिस यात्रिका उपयोग बेसमें करता ना वह यहाँ नहीं है। जो स्वतन्त्रता बेसमें भी वह भी नहीं है। यहाँ तो हर तरह संकोचमें रहना पड़ता है। मैं बेसमें बिलनी चम्पीरता पीरता और एकाग्रतासे ईश्वर-भजन करता ना बिलनी चम्पीरता पीरता और एकाग्रता यहाँ ईश्वर-भजनमें नहीं रहती।

यह सब मैं यों ही नहीं मिलाता बरन् विचारपूर्वक किन्तु रहा हूँ। ऐसे विचार हर पेश करते रहते हैं। मैंने जितना पढ़ा है या मैं जितना पढ़ता हूँ उसका अनुभव भी करता हूँ। मैंने यह सीखा है कि जो ईश्वर-भजन करना चाहता है, उसको मिस्याबार या राग रंग अनुकूल नहीं पड़ता। वहाँ मोन-बिनास है वहाँ सुबाका नाम ठीक तरहसे नहीं सिमा या सकता। यदि हम ऐसे मोन-बिनासमें भाग न लें तो भी उसका स्वाभाविक प्रभाव होता ही है। उसके निवारणमें जितनी शक्ति समानी पड़ती है उतनी ही ईश्वर-भजनमें कमी रह जाती है। मैं यह प्रत्यक्ष अनुभव करता हूँ। यह किन्तनेसे मेरा अभिप्राय यह बताना नहीं है कि मैं अपने किए या किसी दूसरेके लिए सदा काटाबासकी ही इच्छा करता हूँ या पहले बर्जेकी यात्रा सदा तथा सब परिस्थितियोंमें पसन्द है और बेल्का साबापन और एकांत हम सभीके लिए बहरी है। किन्तु मैं बहिष्कृत आधिकारों बहुत-से कारणोंसे भारतीय लोगोंके लिए पहले और दूसरे बर्जेमें यात्रा करना आवश्यक मानता हूँ। हमारे ऊपर कंबुसीका जो आरोप है वह हटना चाहिए। इसके अतिरिक्त हमारी तबीयत ऐसी बातोंमें बहुत साबनी पसन्द है। इसलिए पहले और दूसरे बर्जेकी यात्रा ऐसी नहीं है कि हम उससे बहक जायें। किन्तु मैं बहिष्कृत आधिकारों बहुत-से कारणोंसे भारतीय लोगोंके लिए पहले और दूसरे बर्जेमें यात्रा करना आवश्यक मानता हूँ। हमारे ऊपर कंबुसीका जो आरोप है वह हटना चाहिए। इसके अतिरिक्त हमारी तबीयत ऐसी बातोंमें बहुत साबनी पसन्द है। इसलिए पहले और दूसरे बर्जेकी यात्रा ऐसी नहीं है कि हम उससे बहक जायें। किन्तु मैं बहिष्कृत आधिकारों बहुत-से कारणोंसे भारतीय लोगोंके लिए पहले और दूसरे बर्जेमें यात्रा करना आवश्यक मानता हूँ। अपनी महान कड़ाईकी इस बर्जेमें तो मैं बेबड़क होकर किन्तु सकता हूँ कि पहले बर्जेमें भी बड़े बर्जेकी यात्राके मुकामके बीच-यात्रा हर भारतीयके लिए बहरी है ऐसा प्रत्यक्ष भारतीयको मानना चाहिए।

हम कैसे रहते हैं

मैं हाजी हबीबका अनुभव मुझे आज पन्द्रह बरसे है। फिर भी उनके साथ रहनेका जैसा व्यवहार सब मिला है वैसा तो कमी मिला ही नहीं था। हाजी साहब बर्जेमें निवृत्त व्यक्ति हैं। वे अपनी सभी गमावें नियमपूर्वक पढ़ते हैं। वे जाने-पीनेके धार्मिक नियमोंका पालन ठीक तरहसे करते हैं। उन्होंने मुझसे बहुत बार कहा है कि इस यात्रामें उनको धार्मिक नियमोंके पालनमें तनिक भी अक्षय माझूम नहीं हुई है। वे अपना भोजन सदा मुझे पसन्द करते बैठे हैं। उन्हें क्या बरकार है, यह मैं जानता हूँ। वे सुबह बत्तिया बंटे और चाय दोपहरको सवाले हुए आठू कभी-कभी मछली सवाब केटिस नामका मूली-जैसा चाक कुछ पुदिन मेवे और काफ़ी और उतको कुछ चाक-सम्मी पुदिन मेवे और काफ़ी लेते हैं। वे बराबर यह सोचते रहते हैं कि शिष्टमण्डल सफल कैसे होगा और इस सम्बन्धमें हम बहुत बार सवाह-मसबिरा किया करते हैं। उनके साथ जो भी और बचार-मुरब्बा बाँध दिया गया था वह उन्होंने भी भीखुमारिको दे दिया है। मैं पहाबके बाबियोंपर यह छाप पड़ी देखता हूँ कि हम दोनों माई-माई हैं।

मैं अपने नियमके अनुसार जो समय भोजन करता हूँ। मैं पुदिन छोड़ देता हूँ क्योंकि उतमें बंदा होता है। मैं चाय और काफ़ीको भी बुझानीके धमसे पीना होनेके कारण सदा सम्भव नहीं करता। मेरा खेप भोजन मछलीके सिवा कयमग ऊपरके मुताबिक है। ज्यों-ज्यों खरीर कसता जाता है त्यों-त्यों मैं देखता हूँ कि अधिक तापे भोजनसे काम बकाया था सकता है। पिछली यात्रामें खरीर जो स्वादिष्ट भोजन मानता था सो इस यात्रामें नहीं मानता।

दिन प्रायः पढ़नेमें आता है। इन्हींमें जो निररन^१ पेश करना है वह सिखा या चुका है। उसको भी हाजी हवीबने पसन्द किया है। उन्होंने कुछ सुझाव दिये हैं वे मैंने उसमें धार्मिक कर किये हैं।

श्री मेरीमैनसे भेंट

बहानमें कुछ प्रमुख यूरोपीय लोग हैं। उनमें कश्चि घेंट हो चुकी है। ऐसे लोगोंमें श्री मेरीमैन आ जाते हैं। उनके साथ बहुत बातचीत हुई। उनके विचारोंसे मुझे लगत है कि सबके सम्बन्धमें जो-कुछ जोर ज्ञायया जायेगा वह निष्पन्न जायेगा। जब मैंने उनको यह बताया कि ट्रान्सवालके सवालका सबसे बहुत सम्बन्ध नहीं है तो श्री मेरीमैन और भी महारजमें उठरे और उन्होंने इस प्रश्नके सम्बन्धमें पूरी सहायता देनेका बचन दिया। सरयाप्रही कैदियोंके प्रति उनके मनमें मैंने बहुत सहानुभूति बेसी। श्री जैरसे भी भेंट हुई। उनका विचार भी श्री मेरीमैनसे मिलता-जुलता दिखाई दिया। सब तो बनना ही है किन्तु यदि उसमें झकासट डाले बिना ट्रान्सवालका प्रश्न हल हो सके तो ये महानुभाव भी सहायता देनेके लिए तैयार हैं। जब मैंने उनसे श्री कासकिया और श्री बस्तातके त्यागकी चर्चा की तो वे बड़ उत्साहित हुए और उन्होंने जो-कुछ कहा उसका माथार्थ यह था कि यदि हुसरे भारतीय व्यापारियोंमें ऐसा ही किया होता तो आज हमका तब हो गया होता। मैंने जब उनको यह बताया कि उनकी ही पेड़ोंने श्री कासकियाका विरोध किया था तब उन्होंने इसपर कुछ और आश्चर्य प्रकट किया।

मैंने श्री हाउस मुहम्मद और श्री पारसी इस्तमबीकी बात उनत दोनों सम्बन्धोंको बताई तो वे बहुत प्रभावित हुए जाग पड़े। उनको कुछ हुआ और उन्होंने यह भासा प्रकट की कि जैसे श्री हो समझीया हो जायेगा। हमने उनको अपनी माँमें बताई तो उन्होंने मंजूर किया कि वे बहुत जाजिब हैं।

मैंने श्री जैरसे केपके प्रवासी-अधिनियम (इमिग्रेशन ऐक्ट) के सम्बन्धमें बातचीत की। उनको यह जागकर आश्चर्य हुआ कि केपके भारतीयोंको केपसे बाहर आनेके लिए मीपादी अनुमतिपत्र (परमिट) देने पड़ते हैं। यदि केपके भारतीयोंने पूरा प्रयत्न किया होता तो ऐसी बात कानूनमें कभी न रही होती। किन्तु जब भी उनका कर्तव्य है कि वे इस सम्बन्धमें कोई उपाय करें। मुझे विश्वास है कि केपके बहुत-से सवत्सोंको इस बेइंगी बापकी कोई जागकाटी नहीं है।

श्री डॉक्टरसे भी जो केपके मालिमन्त्रके एक सदस्य हैं भेंट हुई है। उन्होंने बहुत सहानुभूति प्रकट की है और यथासम्भव सहायता देनेका बचन दिया है। श्री डॉक्टरने स्वीकार किया कि जो पाठि हमारा ठरह कुछ उठाती है उसकी माँगोंका अनुचित होना सम्भव नहीं है। उस जातिकी सहायता करना उवार मनके प्रत्येक व्यक्तिका कर्तव्य है। मैं इसको भी सरयाप्रहूका ही एक प्रभाव मानता हूँ। हम जेक न गये होते तो ऐसे लोग कुछ सुनते भी नहीं। इसके अतिरिक्त एक अन्य यूरोपीय है, जिनके साथ बहुत बार बातचीत हुई है। वे जूव जनाक्रमक प्रतिरोधी (पैथिज रेजिस्टर) हैं। वे एक संस्थाके मन्त्री हैं। उनका कहना है कि अंग्रेज जनाक्रमक प्रतिरोधियोंकी अपेक्षा हम कष्ट सहनेमें बहुत जाने बड़ गये हैं। उन्होंने एक विचारणीय विद्ठी देने और हुसरे प्रकारसे भी सहायता करनेका बचन दिया है।

ये सब बटगाएँ सत्बापहकी भीठ बटाती हैं। सरयाबहके कप्टोंकी कहानी सभीमें सहायानुति पैदा करती है। इसको सुनकर सब शीतों तकें अँमुकी बकाकर रह जाते हैं और ताज्जुब करते हैं कि हमारे साथ अभीतक म्याम क्यों नहीं किया गया है।

इन लोयोंकी इस सहायानुतिकी आचार इनकी यह आनकाठी है कि हम लोग सच्चे हैं और दिखावा नहीं करते। मैं श्री हाजी हुबीबकी सहायतासे कस्तसुख अम्बिया " मामकी पुस्तक पढ़ रहा हूँ। मैंने उसमें आबाजीतके सम्बन्धमें यह फरमान देखा कि अगर वह आमास बरस तक आकिककी इबायत करे, किन्तु एक बार शिजवा करनेसे इनकार कर दे तो उसकी छ कास सालकी इबायतपर पानी फिर आयेगा। इसका एक मतलब यह है कि हमारे साथ और झूठकी कसौटी हम जखीर बकतमें जो-कुछ करेंगे उससे होती। दूसरा मतलब यह है कि हम ईस्वरसे कोई शर्त नहीं कर सकते। वह जैसे रहे वैसे रहें। इस बार जेल जाने और म्यादखीं बार जेल न आवें तो इस बारका जेल जाना बेकार हो जायेगा और हमारी हँसी होगी।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ७-८-१९१९

१७४ पत्र मगतलाल गांधीको

मुमिन कैथिक लाइन

बार एम एड केनिकवर्थ कैथिक

जुलाई ९, १९१९

वि मगतलाल

मरीचसे पत्र लिखा है। यह पत्र आज रातको आकमें आला जायेगा। कब अम्बन पहुँचने इसकिए वहाँका हाल जाने बिना यह किन्ना रहा हूँ।

वहाँ बयस्कोंके लिए संस्कृत-बर्ष आरम्भ किया जाये तो अच्छा हो। मैं ज्यों-ज्यों पढ़ता हूँ त्यों-त्यों मुझे लगता है कि इस भाषाके ज्ञानकी प्रत्येक हिन्तुकी आवश्यकता है। मेरी शिष्यायतें एकके-बाद एक मोस बढ़ानेवाली हैं, यह अवाक बना रहता है लेकिन मैं मजबूर हूँ। हमने अतीतमें इतना बोसा है कि उसे फिर पानेमें और नियमित करनेमें कष्ट होगा और समय भी लगेगा पर अब हो सके तक इसे किसे ही झूटकारा है— इस जम्ममें नहीं तो दूसरेमें सही। अबतक कामगाएँ रहती हैं अबतक कैबल परमार्थकी कामगाएँ रखें तो ठीक है। इन शिष्यायतोंमें से जिनपर जमक हो सके उनपर जमक करना और बाकीको पार रखना।

१. यह मई पुस्तक, जिनमें सत्बापके बरियों और कहीतोंके जीवन-चरित हैं। देखिए " एन इन्वेस्टिगेशन इन इन्डियन सोशल इतिहास " पृष्ठ १०३ ।

२. यह पत्र अरम्भ नहीं है ।

यात्राके विवरण में यह जोड़ देना^१

श्री चौबरेले भी जो केपके मन्त्रिमण्डलके एक सदस्य हैं भेंट हुई है। उन्होंने बहुत सहानुभूति प्रकट की है और यथा सम्भव सहायता देनेका बचन दिया है। श्री चौबरेले स्वीकार किया कि जो जाति हमारी तरह कुछ उठाती है उसकी माँगोंका अनुचित होना सम्भव नहीं है। उक्त जातिकी सहायता करना प्रत्येक उदार व्यक्तिका कर्तव्य है। मैं इसको भी सत्याग्रहका ही प्रभाव मानता हूँ। हम जेब न पये होते तो ऐसे लोग कुछ मुनठे भी नहीं।

मोहनदासके आशीर्वाद

[पुनश्च]

सकलके बर्गकी बात सबसे करना।

वांशीजीके स्वाक्षरोंमें मूक गुजरगौरी प्रतिकी फोटो-नकल (एच एन ४९४०) से।

१७५ भेंट रायटरके प्रतिमिषिको^२

[साठईसठ

पुकार १ !]

हमारे विष्टमण्डलमें बार बारभी सामिल होनेवाले से सेफिन सब से वेकमें है। हमारी प्रतिमिषि बहुत हद तक छोड़े ऐन्टिहिक और उनकी समितिकी सहायपर निर्भर करती है। हम महसूस करते हैं कि हमें इस अवसरका सब दक्षिण मासिकके अपने राजनसिद इस वेकमें है काम उठाना चाहिए और देखना चाहिए कि द्वालयबासमें ब्रिटिश भार्गव्य विष्टे बाई बरससे जो बहुत बड़ी तकलीफें उठा रहे हैं क्या उन्हें दूर करने लिए कुछ भी किया जा सकता। सब बनानेके सवालसे हमारे कामका कोई बहुत सम्बन्ध नहीं है। हाँ यह कि हर भारतीय महसूस करता है कि ब्रिटिश सरकारको उसके अल्पमत दक्षिण ब्रिटिश भारतीयोंके उचित बर्गके सम्बन्धमें पूरा आश्वासन दे देना चाहिए। हमें सिद्ध है कि द्वालयबास सरकार और भारतीय समाजके बीच जो गान गान है कि यह है। इन सवालकोंका निचोड़ निकालें तो अंतमें एक ही सवाल यह बन जाता है कि द्वालयबासमें सुसंस्कृत भारतीयोंका बर्ग क्या हो और प्रशासिकी सम्बन्धमें क्या सम्बन्ध प्रचलित हो उसके अन्तगत उन्हें द्वालयबासमें आनाका हक हो या न हो। हमें यह है कि श्रीमूसा कानून पूरे भारतके लिए अवमानजनक है, क्योंकि इस कानून-निर्माथके इतिहासमें पहली बार प्रजातीय (रेसियस) प्रतिकार का ही प्र प्रतिबन्धको हटानेके लिए संकड़ी ब्रिटिश भारतीयोंने जेब छोड़ी है। इससे कुछ भेद भारतीय अन्तकरणकी पुकारपर जागृत करनेवाली है।

[प्रियजीमे]

ईदियन ओपिनियन ७-८-१९१९

१. देखिए पिछा कॉलेज।

२. वांशीजी १. सुकर्मको दानी इतिहास का जो कि एक दूरा न का रायटर प्रतिमिषिको भेंट की थी।

१७६ भेंट प्रेस एजेंसीके प्रतिनिधिको^१

[सम्बन्ध

बुलाई १ १९९]

श्री पाबीने आज इम्पेंड पहुँचनेपर एक भेंटमें कहा कि मेरे यहाँ आनेका उद्देश्य यह मुनिविद्यत करता है कि संघ बननेपर ट्रान्सवाल्में एशियाइयोंकी शिकायतें दूर कर दी जायेंगी और बहिष्कृत आशिकामें रहनेवाले सभ्राह्मके भारतीय प्रजाजनके हर्षोंकी ध्यात्म्य कर दी जायेगी, और यह संघीय संविधानमें शामिल कर ली जायेगी।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन १७-७-१९९

१७७ शिष्टमण्डलकी यात्रा [-३]^२

[बुलाई १ १९९केबाव]

इंग्लैंड पहुँचे

मैं अपनी मरीच तक श्री यात्राका विवरण बता चुका हूँ। हम इस [बुलाई] को साठ दैनिक पहुँच गये। यहाँ हमें रायटरका संभारदाता मिला। उसकी हमने संक्षेपमें स्थिति बताई और वह बहुत-से अच्छाचारोंमें छप गई है। हम कन्वन्त लगभग प्रातः १०-१ बजे पहुँचे। किन्तु स्टेशनपर कोई नहीं था। इच्छे बड़ा अचम्भा हुआ। हम होटल सैसिङ्गमें सामान रखकर श्री रिचसे मिलने गये। उनके पास श्री बम्बुछ कारिद^३ बैठे थे। उन दोनोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। श्री रिचने कोई ठार न मिलनेसे शिष्टमण्डलके रवाना होनेकी बाधा छोड़ दी थी। बात यह हुई कि बोहानिसबसे रायटरने [शिष्टमण्डलके बारेमें] ठार भेजा था। वह अच्छाचारोंमें छप ही जायेगा यह ब्यापक करके श्री रिचको आस ठार नहीं भेजा गया था। यहाँके अच्छाचारोंमें रायटरके ट्रान्सवाल्-सम्बन्धी समाचार इन दिनों बहुत कम लपते हैं। हमारी रवानगीका ठार नहीं छपा। प्रतिनिधियोंकी विरफ्ताहीका ठार छपा था। इससे श्री रिचने अनुमान किया कि शिष्टमण्डल भेजनेका विचार मुस्तभी कर दिया गया होगा। इसकिए किसीकी हमारे जानेकी खबर नहीं थी।

१ यह भेंट साम्ब बाकिन्ड अटीसिप्टेड प्रेस एजेंसीकी ही थी। इसका संक्षिप्त विवरण इंडियन ओपिनियनके प्रजासी विभागमें भी प्रकाशित किया गया था।

२. गंधीजी १ जुलाई १९९ को कन्वन्त पहुँच गये थे और वे कठिने कठिने स्थिति लिये। इंडियन ओपिनियनके मूल धर्मिक "शिष्टमण्डलकी यात्रा" से ही कथे रहे।

३. देखिए "मह रान्दरेके प्रतिनिधिको" पृष्ठ १०९।

४. नेटक भारतीयनैतिक शिष्टमण्डलके उत्तर। यह शिष्टमण्डल भी यहाँ दिनों-दिन विस्थापित कन्वन्त नेटक भारतीयनैतिक शिष्टमण्डल करने दृष्टिके गया था।

कार्य भारम्भ

किन्तु श्री रिचसे मिशनेके बाद जाता साकर हमने तुरन्त कार्य भारम्भ कर विवा । हम दोनों आई, श्री अणुल कारिड, श्री रिच और श्री हुसन राठव या श्री रिचके इफतर वा गये वे सर मंचरवी भावनपरीके पास गये । वहाँ सभाह-मघविठ करनेके बाद श्री रिचने सॉर्टे एंस्ट्रिक्को पत्र लिखा । मुसाकारें धूक हुई । साय दिन मिशने-बुकने और पिडिट्याँ डिबनेमें जाता है, और रातको नी काम करता पड़ता है । कुमारी पोसक' सासी थीं इसकिए उनको टाइप करनेका काम दिया है । वे बूब मेहुत करती है । रात या दिनका बिचार नहीं करती । उनका स्वभाव भी अच्छा दिखाई देता है ।

हम सॉर्टे एंस्ट्रिक् सर रिचर्ड सॉलोमन' कुमारी बिटरवॉटम' श्री सुरेन्द्रनाथ बगर्बी थी कॉटन' प्याममूर्ति श्री अमीर अली' बॉन्टर अणुल मनीर और श्री भाबाब बाबिसे मिले हैं । हमारी मुसाकात भारत कार्यालय (इंडिया ऑफिस) के सदस्य सर विलियम श्री-बार्नेर' और श्री मॉरिसनसे' भी हुई है । मैं अभी ज्यादा खबर नहीं दे सकता । परामर्श खानगी तौरसे होता है । उससे बोड़ी-बहुत जाता बँचती है । यदि इसमें सफल न हुए तो किसी दूसरी तरहसे काम बननेकी सम्भावना कम ही है । सॉर्टे एंस्ट्रिक् सोच रहे हैं कि डिप्टमन्टल के पार्से या नहीं और सेजानेसे क्या फायदा होगा ।

मैं इतना तो बेल सफा हूँ कि बेल जानेकी बातको सब महरब देते हैं और यदि कुछ बनन पड़ता है तो इसी बातका कि बहुत-से भारतीय बेल वा चुके हैं और अब भी वा रहे हैं ।

हम सोच-समझकर तुरन्त कोई समाचार अखबारोंमें नहीं दे रहे हैं । सॉर्टे एंस्ट्रिक्की सफाह है कि न दिया जाये ।

बोरे-नेताबोंसे मिलनेके लिए यहाँ यह समय अनुकूल नहीं है । सभी लोग इस समय धर-सपाटेके लिए सहृदसे बाहर चके पाते हैं इसकिए ब्याबा लोगोंकी सहायता मिलनी मुश्किल है । फिर, अंग्रेज लोग अपने ही मामलोंमें बहुत ब्यादा उछसे हुए हैं । संसदमें नये बजटपर बहुत हो रही है । इसके अलावा बलिन बाफिकके जो अधिकारी कामे हुए हैं वे भी [जोगोंका] बकत से लेते हैं । इन सब बातोंपर बिचार करते हुए और चारों ओर देखते हुए मुसे लगता है कि खानगी तौरपर जो कार्रबाइयाँ हो रही हैं वे असफल हो गईं तो कुछ होता सम्भव नहीं है ।

१ एच एल एल० बोल्डवी राब, कुमारी मोंड पोल्ड ।

२. टुलमन्त्रालये केविजेंट कर्नेर ।

३ कर्नेरिड मिन्टरोय, कन्टले तैकिटा लमिठि-सं (गुमिन मोंड ऐकिडल सोसलीड) की एन-बन्धन लमि ।

४ एच ई० ए डॉरन, इंडियाके एमन्डक ।

५. (१८९१-१९१८); मल्लिख खानगीबक राबमें मिली कॅडिन्के एरल एलमम और एलमनी कन्जुलक ऑ इण्डिये केल्ड; रेकिर कन्ड ३, एड १२ ।

६ (१८९४-१९१४); एल बॉल्ड-मरठीड म्पलक, बास्तुकाकी बरिक्के मलिरिल लमम, मरठीपर कई इण्डियेके एक्किड ।

७. मिन्डोट मॉरिलक; किसी समय कर्नेरिड टुलमन्डन कानेकेके मिन्डिल-रेकिर कन्ड ३, एड १६५ ।

पहली जाहूति

बलिम बाकिनामें हुई समायोकी बहुत-सी सबरें यहाँ आई हैं। वे सन्तोपजनक हैं। मेटाबसे एक भी सबर नहीं है। श्री नामप्यलके^१ बलिदानसे भी हाजी हबीबको भीर मुझे बहुत थोक हुआ है। वह समय हमारे लिए थोकरा तो था ही उस थोकमें नृति हुई है। फिर भी समाजके दृष्टिकोणसे विचार करें तो बुझी होनेका कोई कारण नहीं है। वह जान हमें घरा रहा है कि इस कड़ाईमें हमें प्राणों तक की जाहूति देनी पड़ सकती है और यदि ऐसा हो तो हमें वह जाहूति सुधी-सुधी देनी है। हमें इस कड़ाईमें यही चीजना है कि समाजके हितके लिए हमें सभी तरहके दुःख उठाने हैं और ऐसा करना ही हमारे दुःखोंका इलाज है। मुझे यहाँ बीरे-बीरे, अनुभवके साथ वह समयमें आता था रहा है कि हमने जो सिष्टमण्डक भेषा है वह हमारी कमजोरी है। बितभी मेहनत कोयसि मिलने तथा उन्हें मनानेमें सयती है और उसमें जो बल आता है, यदि केवल स्वयं कष्ट उठानेमें उतनी मेहनत की जाये और उतना बल लयाया जाये तो यह संघर्ष तुरन्त समाप्त हो जाये। मैं परिणाम नहीं जानता। किन्तु इस कड़ाईसे हम उमर कहे अनुसार सीखें तो काफी है।

बाबर मित्री है कि श्री बाउब मुहम्मद बीमारीके कारण बेलसे छोड़ दिये गये हैं। उनके लिए मुझे दुःख होता है। लेकिन कौमकी खातिर मैं श्री बाउब मुहम्मदको बचाई देता हूँ। हम बलि-भोजन विषय-भोग और स्वार्थ-भयके कारण बहुत बार बीमार हो जाते हैं। इसमें बाबरचर्यकी कोई बात नहीं है। फिर उस बीमारीके लिए बोपी भी हम खुब ही होते हैं। तब समाजके काममें कोई बीमार हो तो उसको तो नि-सम्बेह बचाई देना उचित है। ऐसा हमेशा होता आया है और होता रहेगा। जैसा श्री बाउब मुहम्मद कर रहे हैं वैसा ही उनके बेटे श्री हुसेन गिया यहाँ कर रहे हैं। उनका स्वभाव बेलकर सन्तोप होता है। समाजके प्रति उनकी सहानुभूति बहुत अच्छी है।

[बुधपत्नीसे]

ईडियन ओपिडियन १४-८-१९९

१७८. पत्र एच० एस० एल० पोल्कको

वेस्टमिस्टर पैकड होटल

४ विक्टोरिया स्ट्रीट

लन्दन एच डब्ल्यू

बुकार्ड १४ १९९

प्रिय हेनरी

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा और अच्छा लगेगा कि मॉड मेरी सहायता कर रही है और वह पत्र पत्नीसे लिखाया था रहा है। वह बाबर पिछले कुछ दिनोंसे बेकार है और आप आसानीसे सोच सकते हैं कि जब पिताजीने मुझसे कहा कि मैं उससे सहायता ले

१ उक्तमें एक दुःख उलझावते हैं, किन्तु एक दिनमें बलिदानसेके दुर्भवाक और हीलके कारण कष्ट ही नहीं है; देखिए "दुःखसाजनाही सारतीयेके नामकेका विवरण" पृष्ठ १९८।

२. श्री पोल्कके पत्र।

सकता हूँ तब मुझे कितना आश्चर्य हुआ होगा। बैसक मैं उसकी सहायता प्राप्त करके स्वभावतः ही बहुत प्रयत्न हुआ। साथ ही मुझे यह पुश्त भी हुआ कि वह बेकार है। उसका जयाज है और मैं सहमत हूँ कि इस कापारीके आरामसे साथव उसको कुछ काम हुआ है। उसे जो समय मिला उसका उचित उपयोग करनेकी समता उसमें होती तो उसको अधिक काम हो सकता था। किन्तु बैसा उसने मुझे बताया वह एकान्त पसन्द नहीं करती और इससे बड़ा अन्तर पड़ जाता है। माताजी^१ और सैकी^२ बेस्वियममें है। मासूम हुआ है कि ये अपने रविवारको कौटेंगी। मिसी^३ २५ तारीखको आ चायेगी। उनकी रवानगीकी खबर तारसे मिसी है। मैंने थी रिश्के नाम भेजा आपका तार देखा है किन्तु जिसका मैं जिक्र कर रहा हूँ वह कैमेलीकका है और कल मिला था। इसमें भी आपकी भारत रवानगीकी सूचना भी गई है।

अर्थात् यह आपके कामका पहलेसे जानना बाधना होगा केदित मैं जितना अधिक सोचता हूँ उतना ही अनुभव करता और देखता हूँ कि वहाँ [भारत] आपका काम हमारे यहाँके कामसे बहुत अधिक कठिन है। वहाँ भी सर कर्बन बाइकी और डॉ साइकाकासे सम्बन्धित भयंकर और पुश्त बटनासे स्थिति बटिक हो गई है किन्तु वहाँ जो उलझने उत्पन्न होंगी उनकी तुलनामें यह पठिकता कुछ भी नहीं है। तो भी अगर आपको अपना हावमें लिया हुआ कार्य सफल होता दिखाई न दे तो छपया चिन्ता न कीजिए। सम्भव है आप कोई समार्पे न कर सकें और वहकि प्रभावशाली पत्र आपका बहिष्कार भी करें। मैं अभीसे यह नहीं सोचता कि इतना भयंकर परिणाम होगा ही परन्तु मैं उसके लिए बिल्कुल तैयार हूँ और समयपर उसे सहन कर लूँगा। मुझे चिन्ता सिर्फ इस बातकी है कि आप जगमग सभी प्रमुख आंक-भारतीयों और भारतीयोंसे मिलें। यह आप कर सकेंगे मैं जानता हूँ किन्तु नेताओंसे एकान्त बातों करनेमें भी आपको जो कठिनाइयाँ भेकनी है उनसे मैं पूर्णतः परिचित हूँ। आपको अपने सारे बैर्य और व्यवहार-कुशलताकी आवश्यकता होगी। फिर भी मुझे चिन्ता तनिक भी नहीं है। मैं यह पत्र जो इस तर्जमें लिख रहा हूँ उसका उद्देश्य आपको सिर्फ यह बताना है कि मैं आपकी कठिनाइयोंको समझता हूँ और इधरिए, यदि भारतीय सिस्टमइस अधिक फलप्रद नहीं होगा तो भी मैं किसी तरह निरास बिल्कुल न होऊँगा। आप अपना प्यान फिलहाल उन लोगोंतक ही सीमित रखें जिनके नाम मैंने आपको वास तारसे दिये हैं—अर्थात् टाइम्स ऑफ इंडिया के सम्पादक प्रोफेसर गोखले और श्री मसबारी^४।

- १. पोल्डरी मी।
- २. पोल्डरी सुदी बदन।
- ३. पोल्डरी कली।

४. पोल्ड * सुकरीको इतिहास आदिनी भारतीय समाजके इतिहासिकी ईतिहासे आत्मसे भारतको रक्षा कर दे।

५. सर विजयन कर्बेय बाइकी भारत-भारतीय राजनीतिक आत्मक मे। उन्हें इतिहास केन्द्रिककी इतिहासिक इतिहासमें राष्ट्रीय भारतीय संघ (नेशनल इंडियन एन्टीऑपरेशन) द्वारा सम्बन्धित एक लागत-सम्बन्धमें मरककाक रचित आत्मक एक भारतीय समाजके बीबीसे कर दिया था। उनकी आशा करना करते हुए संघर्षके एक भारतीय संघर्ष आत्मकी अन्तर्गत एक हो गये वे अपने कन्नी की सुपु हो गई।

६. परामनी मेरठकी पन्नाही (१८५४-१९१९); इति पत्रकार और समाज-सुधारक।

पहली आहुति

बसिन्धु आधिकारमें हुई समाजोंकी बहुत-सी सभरें यहाँ आई हैं। वे सन्तोषजनक हैं। नेटालसे एक भी सभर नहीं है। श्री मासपत्रके^१ बसिन्धुवाले श्री हानी हबीबको और मुझे बहुत धोक हुआ है। यह समय हमारे लिए धोकका तो पा ही उध धोकमें बुद्धि हुई है। फिर भी समाजके दृष्टिकोणसे विचार करें तो बुद्धि होनेका कोई कारण नहीं है। यह जान हमें सबा रहा है कि इस सभरमें हमें प्राणों तक की आहुति देनी पड़ सकती है और यदि ऐसा हो तो हमें यह आहुति खुशी-खुशी देनी है। हमें इस सभरमें यही धीसना है कि समाजके हितने लिए हमें अभी तरहके दुःख उठाने हैं और ऐसा करना ही हमारे दुःखोंका इलाज है। मुझे यहाँ बीरे-बीरे, अनुभवके साथ यह धमसमें आता जा रहा है कि हमने जो धिष्टमण्डल भेजा है वह हमारी कमजोरी है। जितनी मेहनत कोमोधि मिलने तथा उन्हें मनानेमें सफल है और उधमें जो बल आता है यदि केवल स्वयं कष्ट उठानेमें उतनी मेहनत की जाये और उतना बल जनाया जाये तो यह संघर्ष तुरन्त समाप्त हो जाये। मैं परिणाम नहीं जानता। किन्तु इस सभरमें हम उमर कहे अनुसार सीख लें तो काफी है।

सबर मिली है कि श्री बाउर मुहम्मद बीमारीके कारण बेकसे छोड़ दिये गये हैं। उनके लिए मुझे दुःख होता है। केवल कामकी सातिर मैं श्री बाउर मुहम्मदको बचाई देता हूँ। हम अति-भीषण विषय-भोज और स्वार्थ-भ्रमके कारण बहुत बार बीमार हो जाते हैं। इसमें आपसर्पकी कोई बात नहीं है। फिर उध बीमारीके लिए बोयी थी हम खुद ही होते हैं। तब समाजके काममें कोई बीमार हो तो उधको तो निश्चयेह बचाई देना उचित है। ऐसा हमेशा होता आया है और होता रहेगा। वैसे श्री बाउर मुहम्मद कर रहे हैं वैसे ही उनके बेटे श्री हुसेन मियाँ यहाँ कर रहे हैं। उनका स्वभाव बेचकर सन्तोष होता है। समाजके प्रति उनकी सहाय्युक्ति बहुत अच्छी है।

[बुधरातीसे]

इतिमग ओपिनियन १४-८-१९१९

१७८ पत्र एच० एस० एस० पोसकको

वेस्टमिन्स्टर पैकेज होटल

४ मिन्टोरिया स्ट्रीट

कम्पन एड इन्फु

पुनवाई १४ १९१९

प्रिय हैनरी

आपको यह जानकर आश्चर्य होया और अच्छा लगेना कि मॉड मैरी सहायता कर रही है और यह पत्र उठीसे लिखाया जा रहा है। यह सबर पिछले कुछ दिनोंसे बेकार है और आप आसानीसे सोच सकते हैं कि जब पिछलीने मुझसे कहा कि मैं उससे सहायता ले

१. उत्तरमें यह धुकक सहायताही है, किन्तु केवल इतिहासे बसिन्धुवालेके दुर्बलता और धीमे धरन कलु ही नहीं थी, बसिन्धु "सुन्दरलगादी पाठ्यविधि नामकेय विवरण" पृष्ठ २२८।

२. श्री पोसकक पत्र।

करीब-करीब संभव हो गया है। जग घटनाका सुधार इतना अधिक प्रभाव पड़ा है कि मैं उस भुका नहीं गया। फिर भी हमारे स्तरमें परिवर्तन न होना चाहिए और हमें जागोका यही उदाहरण फिर देनी चाहिए कि वे मृत्युका और बरि उगल भी भयंकर कुछ ही था, उगला भी घामना करें। मैं आपको उस छात्रकी एक नकल भेज रहा हूँ ताकि यदि आपका उसमें भी गर्द बहर न मिली हो या इस मित्र जाय।

पारंगी स्तनमयी जमी प्रकमें ही है इमरिण बेचारे शतरु मुहम्मदका आनी रिहाई बहुत आगरी हागी। फिर भी वे जाहानिसुबान की नसे हैं और इस प्रकार समागत मुसक बीचमें है।

श्री अमूल्य कारिब यही है। वे प्राय हंल्ल आते हैं किन्तु हमारा साथ रहते नहीं हैं। जब विष्णुमहम्मद बाकी मरस्य इर्वनते आ जावेते तब मेरा प्रयास है, तब इस हीरुसमें ही रहेंगे।

श्री हानी हबीब बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। वे मरा मुझे उतर बनाव राते हैं और जागो बिष्णु मूलने नहीं बने। हममें पूरी सहमति है। मैंने आगो उनकी आंगक बा। उममे उन्हें गागी भाषामें कल रहा किन्तु अब पहुँचो बहुत आघम कुछ सूजन बाकी है।

तीमरा

श्री और बहू इस बाग एक बहुत बड़ विमपत्र ही मज्जनाका परिचय दिया। मैं भीमयी है कि वे कुछ निर्दिष्ट पूरी तरह अच्छी विष्णुम विर गय है। पारंगी-बकिगामें वे मे जागई। रिषका लयास है कि उर्हीन गब । हिम्मन नहीं दिनाई। मैं रिग व्यक्तिकी ११ हुए मेरा विर कुगना है किन्तु हम कबक रिषकी अनुमतिकी प्रतीक्षा कर रहा कर नहीं। किन्तु भीमयी रिष पूर्ण स्तर

रहें हैं। श्री पाइरर विरुदास युवा है। वे दोने आगा विष्णुम नहीं छापी है। अविष किग टाउतते मेरे रधाना होने बचन सुगतो है कि श्री मोंवरन उन्हें रोधा या किन्तु १ बड़ दिवा कि वे सुगतो कबक हाव नमुदापके सम्भूत अयल गद्भावने । नहीं। मरा कल्पना कीरिण, शीमन मपर ही अष्टुर्हमागो मूम आ-कुछ माकूम विष्णुम आगाचारण बीतना है।

आयाता सन्तानमें हैं। मीने मिस्त्रनेका समय मीणा है। हम न्यायमूर्ति अमीर अलीसे मिल चुके हैं। हमारा काम जहाजमें ही शुरू हो गया था। मीने भी मेरीमन और भी सागरसे सम्बन्धी बातचीत भी थी। दोनोंने बहुत सहायनमूर्ति दिखाई उनमें से कोई भी स्थितिमें ठीक-ठीक नहीं जानता था। दोनोंने आश्चर्य प्रकट किया कि हमारी मीने जिनमें वे बहुत उचित समझते थे मंजूर नहीं की गई। इसलिए हम इतनी आत्मिकी राजनयिकोंको इच्छा करने और यह देखनेकी बुद्धिसे बीड़-पुप कर रहे हैं कि वे जबरन समझको उचित विद्यामें प्रभावित कर सकते हैं या नहीं। मेरे ऊपर छिद्रहास कामका पुहुरा बनाव है। आमतक पतके एक बजेसे पहले सो नहीं सका हूँ और आप जानते हैं कि मेरे लिए इसके क्या मानी हैं। टॉप सूजनेकी विपत्त को मुझे प्रिटोरिया जेकसे मिली थी अभीतक मेरे पास है किन्तु यह तो यों ही कह दिया।

हम सर रिचर्ड सॉलोमनसे मिलनेवासे हैं। उन्होंने हमारे पत्रके जवाबमें आज मिस्त्रनेका समय दिया है। लॉर्ड एंडरहिलसे भी आज मेट कर रहे हैं। आपको विस्तृत जानकारी देनेके उद्देश्यसे मैं यह पत्र पहलेसे ही लिखा रहा हूँ किन्तु इसमें कब (बुधवारको) घाम तक पूरा विवरण दे सकूँगा पसी जाया है। न्यायमूर्ति अमीर अलीका सर रिचर्डसे व्यक्तिगत परिचय है और उन्होंने भी जगसे मिलने और इस मामलेपर बातचीत करनेका बचन दिया है। उन्होंने एक विवरण मीना था। मीने भेज दिया है। उसकी एक लफ्फ आपको जो कामज भेजे वामेंसे जगमें रख देना।

कुमारी विटरबॉटमके मनमें भारतीय प्रश्न भरा हुआ है। उन्होंने उसका बहुत सही रूपमें अभ्ययन किया है। वे अब भी इंडियन ओपिनियन को बहुत नियमपूर्वक पढ़ती हैं और उसके सम्बन्धमें अपना जामास पहलेकी तरह ही उँबा है। उन्होंने हमको फिर कमी नहीं लिखा। मेरे जामासे इसका कारण यह था कि ट्रान्सवालकी स्थितिसे वे बहुत इच्छा हो गई थी और उनको सुषपर भरोसा नहीं रहा था कि वे राज्य विरुद्ध किश संकेती। हाथी ह्रीन और मैं दोनों उनके साथ एक बँटा रहे। उनको अपने संकेत कुछ अन्य सदस्योंको हमसे मिळाना था। उनमें एक महिला पत्रकार भी जो बहुत प्रतिभाशाली दिखाई पड़ी। उसने एक उचसे विवाह किया है जो लुब भी पत्रकार है। उसने मुझसे कहा मैं जबरन बोबासे बहुत बार मिली हूँ और इस बार जगसे भारतीय प्रश्नपर बर्षा करनेका साध ज्ञान रखूँगी। कुमारी विटरबॉटमने जकराम् बरसनेके लिए कॉर्नवाल जानेका कार्यक्रम बनाया था। उन्हें इसकी बहुत आश्चर्यकथा है। किन्तु छिद्रहास उनकी इच्छा अपनी इस यात्राको करीब-करीब छोड़ देनेकी ही हो गई है। मीने जगसे अनुरोध किया है कि अपने कार्यक्रमको रद्द न करें, और बचन दिया है कि यदि मैं जगमें उनकी उपस्थिति आवश्यक समझूँगा तो मैं उनकी बुला सकूँगा। परन्तु वे बहुत ही उच्च विचारोंकी महिला हैं और मीने कब देखा कि वे कॉर्नवाल जायें या न जायें पर इसको वे आर्थिक बुद्धिसे विचार करनेकी बात मानती हैं। आज उनके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण विचार यह है कि वे इस संदर्भमें सहमता कैसे दे सकती हैं। अब मीने उनको बेचारे नावप्यनकी मृत्युकी खबर भी तो वे कोचसे साक हो गई। सबसे तार मिला है सबसे नावप्यनका चित्र सदा मेरी आँखोंके सामने रहता है और जगसे मेरा काम भी

करीब-करीब यंत्रबत् हो गया है। उस बटमाका मूसपर इतना अधिक प्रभाव पड़ा है कि मैं उस मुसा नहीं पाता। फिर भी हमारे रुखमें परिवर्तन न होना चाहिए और हमें कोयोंको यही पलाह फिर देनी चाहिए कि वे मृत्युका और यदि उससे भी भयंकर कुछ हो तो उसका भी सामना करें। मैं आपको उस शरकी एक नक़्क भेज रहा हूँ ताकि यदि आपको उसमें की गई सबर न मिली हो तो इससे मिला जाये।

पारसी इस्लामी सभी बेस्में ही है इसलिए बेचारे शरत मुहम्मदको अपनी रिहार्ड बहुत खबरी होगी। फिर भी वे जोड़ानिसबर्ग बौट मये हैं और इस प्रकार समाधान मुदके बीचमें है।

श्री अन्सुस फारिर यही है। वे प्रायः होटल आते हैं किन्तु हमारे साथ रहते नहीं हैं। जब शिष्टमण्डलके बाकी सदस्य बर्बनसे आ जायेंगे तब मेरा खयाल है सब इस होटलमें ही रहेंगे।

श्री हामी हबीब बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। वे छटा मुहां तत्पर बनाय रहते हैं और किसी बातको बिल्कुल भूलने नहीं देते। हममें पूरी सहमति है। मैंने आपको उनकी बातके सम्बन्धमें लिखा था।^१ उससे उन्हें सारी यात्रामें रुष्ट रहा किन्तु अब पहलेसे बहुत आराम है मरुपि अब भी कुछ सुजन बाकी है।

दीमती रिचका तीसरा ऑपरेशन हुआ है और वह इस बार एक बहुत बड़े विद्येपत्र पर हृदय ऑपरेशन किया है। घर हृदयने बहुत ही सज्जनताका परिचय दिया। मैं दीमती रिचसे रबिबारको मिला था और सारे आसार ऐसे हैं कि वे कुछ दिनोंमें पूरी तरह अच्छी हो जायेंगी। डॉ. ओल्डफील्ड^२ [मेरी मिताहते] बिल्कुल गिर गये हैं। सस्य-चिकित्सामें वे कुछस माने जाते हैं किन्तु अब वह मास्यता भी खत्म होगई। रिचका खयाल है कि उन्होंने सब मामला बियाह किया और इसे स्वीकार करने तककी हिम्मत नहीं दिखाई। मैं जिस व्यक्तिको इतना ऊँचा मानता था उसके सम्बन्धमें यह भिन्नते हुए मेरा रिक्त बुद्धता है लेकिन हमें बनेक बार अपनी बारबाई बरकनी पड़नी है। मैं केवल रिचकी अनुमतिकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिससे मैं उनको सीधा लिख सकूँ या उनसे बात कर सकूँ। किन्तु दीमती रिच पूर्ण स्वस्थ हो जाने तक कोई करम उठानेके विच्छ हैं।

डॉ. अन्सुसमान पूरी सफ़ितसे काम कर रहे हैं। श्री साइगर बिलसाब पुस्त्य है। वे डॉक्टरको बहुत बड़ी सहायता दे रहे हैं और उन्होंने आधा बिल्कुल नहीं छोड़ी है। ऑलिव थाइगर और उनकी बहुत दीमती सेविस दोनों केप टाउनसे मेरे खाना होते बरत मुससे मिलने जाये हैं। डॉ. अन्सुसमानने मुझे बताया है कि श्री साँवरने उन्हें रोका था किन्तु उन्होंने अपने सुन्दर और संस्कारी बंघसे श्री सावरसे कह दिया कि वे मुससे केवल हाथ मिलाता चाहती है। उन्होंने यह विधि एक बिसाळ समुदायके सम्मुख आत्मता सम्भावसे सम्पन्न की और दोनों बहनें कई मिनट हमारे पास रहीं। बरा कस्यता कीजिए क्रीम पुस्तककी लेखिकाका सहायहकी सहायता करना। मगर डॉ. अन्सुसमानसे मुझे जो-कुछ मासूम हुआ है उसके अनुसार पूरा साइगर-परिवार ही बिल्कुल बचावाराज शीवता है।

१. यह खण्डन नहीं है।

२. ऑपेरीटिव एन्ड टुडे विथ और शरकाली लंके उदल यी सेविका ओल्डफील्ड, रेसिपि कब्ब २, पृ. २५।

सिष्टमण्डलके समर्पणके तार' इस स्वागति मिले है

केप टाउन
किम्बर्ले
पीटर्हर्बर्स
रस्टेनबर्ग

जर्मिस्टन
सोरेन्सो मार्क्विज
पोर्ट एलिजाबेथ
स्टैंडर्टन

पैहम्सटाउन
किस्तनबर्ग
पेपिपस्ट्रूम

पुस्कार

सर रिचर्ड सॉलोमनसे भी हाजी हुजीबकी बीर मेरी बहुत कम्बी बीर सन्तोषजनक मुझकाठ हुई। उन्होंने सारे कानूनी पहलुको समझा और जयता या उनकी सद्दानुमति बहुत है। वे बोलना नहीं चाहते थे किन्तु उन्होंने बचन दिया है कि वे भी स्मट्ससे मिलेंगे और जो-कुछ कर सकते हैं वह करेंगे। फिर डॉर्बर्ट पेंड्रिहमसे कम्बी मुझकाठ हुई। उनकी मुझाकृति पर खरी ईमानवादी सिष्टता और सच्ची लग्नता अंकित थी। वे मृतपूर्व बाइसपब हैं। उनका बिचार ऐसा एक भी कदम उठानेका नहीं है जिससे हम सहमत न हों। उनका उद्देश्य समितिसे अपने सम्मानके ह्राप किसी भी तरह अपना विज्ञापन करना नहीं बल्कि बित्त कार्रका समर्पण कर रहे हैं उसमें उपयोगी होना है। वे यह नहीं समझ पाये कि किस अधिकारसे भी मेरीमन और भी सॉलरको मिलनेके लिए बुझाया जा सकता है। वे भारतमें जन्मगत परोंपर रहे हैं, और यहाँ भी सार्वजनिक कार्योंमें उनकी खाली अन्धी स्थिति है यह सब उनको बिलकुल महसूसपूर्व नहीं कथा। इस कार्यमें सहायता मिले इसलिये वे डॉर्बर्ट कर्षनसे मिलेंगे और उन्होंने मामलेको बहिन जाकिडामें बाईं छोड़ा था बहिति माने बहभायेंगे।' इस प्रकार आप देखेंगे कि हमारा काम फिक्कहाइ परदेके पीछे ही होया।

सर विस्मय डॉ-बार्नर हमसे मिलनेके लिए कळ होतम आ रहे हैं। भी जमीर बखीने सर रिचर्ड सॉलोमनसे मिलनेका विस्मा किया है। मैंने कळ इंडिया के भी कौटनसे सन्धी बातचीत की और उन्होंने आयामी अंजन भारतमें आप जो करनेवाले हैं उसकी बर्षा करनेका निश्चित बचन दिया है। मैंने सोचा कि ऐसा करना जरूरी है ताकि इंडिया के पाठक स्थितिको समझ सकें।

मेरा जयाल है कि आपने डॉ मेहुताका' पत्र देखा था जिसमें उन्होंने निकट भविष्यमें यूरोपको रवाना होने और अपने पुत्रको सिखाके लिए ले जानेका उद्देश्य किया था। वे अब यहाँ जा पये हैं और एसी होतकमें छूरे हुए हैं।

मैं आपको भी बाकिबाके नाम पत्र देना सायब भूल गया। आपको याद होना कि वे इस प्रकृतके सम्बन्धमें बम्बईमें एक समिति बनानेवाले थे। उनसे जबसर मिलते ही बखीउ-बखी मिलना न भूलिए।

१ वे बहिन जाकिडा विविध भारतीय समितिसे बन्ध वे किले इरा
कानूनी मेरी गई थी।

२. 'दिवर - जन डॉर्बर्ट कर्षनको' पृष्ठ १०१-१०४।

३. 'दोनों विद्वान्मण्डलके सम्बन्धमें इंडियाके १९-७-१९ के बंधने

४. 'दोनों विद्वान्मण्डलके सम्बन्धमें इंडियाके १९-७-१९ के बंधने

यदि उगलसाक बहूँ हो तो रूपमा उसको पत्र दिखा हें क्योंकि मुने उसको विस्तृत पत्र लिखनेका बचकाय नहीं है।

मैने कई मूखपत्रियोंको पत्र लिखे है, जिनमें श्री उमर हाजी मामद, श्री ईसा हाजी सुमार, श्री पीरन मुहम्मद और श्री एम एस० कुवाड़िया भी हैं।

टाइप की हुई दफ्तरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉक (एच एन ४९४२) से।

१७९ दूनसवालवासी भारतीयोंके मामलेका विवरण*

भारतीय सिविलसर्विस द्वारा पेश (जुलाई, १९०९)

सन्दर्भ

जुलाई १९, १९०९

प्रतिनिधियोंकी नियुक्ति

१ दूनसवालके ब्रिटिश भारतीयोंकी एक समिति १६ जूनको जोहानिसबर्गमें हुमायिया मसजिदके अहातेमें हुई थी। समा ब्रिटिश भारतीय संघ द्वारा जुलाई १९ की और उसमें लगभग १५ भारतीय आये थे। पाहरी कैमल बरी पाहरी पेरी श्री कैनेनरैक बॉगल-बम्पठि श्री ईको और अन्य यूरोपीय मित्र उपस्थित थे। वे विषय निर्माणसक आये थे। दूनसवालके अधिकांस भागीने भारतीय समितियोंमें समामें पेश किये जानेवाले प्रस्तावोंके समर्थनमें उार भेजे थे।

२ इस सार्वजनिक समाज दो दिन पहले ३ से ज्यादा ब्रिटिश भारतीयोंकी एक समा संघके अध्यक्षके मकानपर हुई थी। उसमें [इम्बैड जानेवाले] भारतीय सिविलसर्विसके लिए प्रतिनिधियोंकी अंतिम नामजदगी की गई। उसी समय भारत जानेवाले दूसरे सिविल सर्विसके प्रतिनिधियोंके नामोंपर समामें चर्चा हुई।

१ वे सब वाक्य सही हैं।

२. वहाँ एक विवरण एक सभिय (जिसे एक अज्ञात ब्रिटिश दुकानदार माना जाता है, का नाम पर ही उधार कर लिया गया था (देखिए सिविलसर्विसकी वृत्ता [-२]) किन्तु वाशीरने अपने पत्रमें एक छोटे परिचयमें सही दिवा, क्योंकि वे इसे उल्टा बयान करवाया था। वाशरी ने कहा कि वह न मालूम ही जाने कि इतनी बुराई ही थी है। उन्होंने उल्टा बयान देकर सभिय के उद्योग और परिचय दिए पर वे। उन्होंने बंद देकर सभिय ३ अज्ञात वरने सभिय को उद्योगोंके अज्ञात उद्योग करने और उद्योग उद्योग; देखिए परिचय १४। वाशरीने एक विवरण एक सभिय को ही उधार दिया था। सिविलसर्विस एक वरनेका कर्तव्य सभिय की वाक्य है। दोनों विवरण और उद्योग को ही उद्योग उद्योग सभिय अज्ञात सभिय को ही उद्योग सभिय का दूनसवालवासी ब्रिटिश भारतीयोंके मामलेका एक सभिय विवरण (६ अज्ञात सभिय और ६ ब्रिटिश इंडियन कैस हल ६ दूनसवाल) और सिविलसर्विसके ब्रिटिश अधिकारोंके उद्योगोंके उद्योग एक उद्योग ५ अज्ञातको सभिय अज्ञातके नाम सभिय को ही उद्योग सभिय दिया गया था।

३ देखिए "वाक्य: सार्वजनिक सभिय" पृष्ठ २५२-५३।

४ वह सभिय सभियके सभिय तीन दिन पूर्व १३ अज्ञातको हुई थी।

५ देखिए परिचय १३।

१. हममें हुई भारतीयोंकी व्यावहारिक समझमें सरकारी गुप्तचर मीमूद रहे हैं।

४. सार्वजनिक समझमें प्रतिनिधियोंके जो नाम पेश किये जानेवाले थे वे १५ नूनने ट्रान्सवाल्ड कीडर में प्रकाशित किये गये थे।

५. इनमेंसे संघके अध्यक्ष श्री अहमद मुहम्मद काछलिया संघके कार्यवाहक अध्यक्ष श्री इब्राहीम सलेमी जुबाइया तमिळ बेनिफिट सोसाइटीके अध्यक्ष श्री एस एस बेट्टिया और श्री नाबिरसा कामा अन्य प्रमुख भारतीयोंके सहित एशियाई पंजीयन अधिनियम (एशियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) का पासना न करनेपर १५ और १६ नूनको विरुद्धार का किये गये।

६. सर्वश्री काछलिया और बेट्टियारको समा होनेके दिन और समाके बोधित समयमें पहले ही ५ पीड नूनना न देनेपर तीन मासका सपरिभ्रम कारावाह दे दिया गया।

७. सार्वजनिक समा फिर भी हुई। उसमें तीन प्रस्ताव पेश किये गये जो स्वीकारा हो गये। समझमें अपरिष्कृत १५ लोगोंमें से ६ ने मतभेद प्रकट किया। प्रस्ताव थे हैं ।

[एक] ट्रान्सवाल्ड ब्रिटिश भारतीय संघकी समितिने श्री अ मु काछलिया श्री हाजी हबीब भी बी ए बेट्टियार तथा श्री मो क नाबीको इन्वीट जाकर अधिकारियों तथा ब्रिटिश जनताके सामने वर्तमान एशियाई संघर्ष-सम्बन्धी सखी स्थितिके रहस्य और भावी दक्षिण आफ्रिका संघके सम्बन्धमें ब्रिटिश भारतीयोंका बृटिष्कोष पेश करनेके लिए सिष्टमन्त्रालयके रूपमें नियुक्त किया है। ट्रान्सवाल्डवासी ब्रिटिश भारतीयोंकी यह समा इस प्रस्ताव द्वारा इन नियुक्तियोंकी पुष्टि करती है।

[दो] ब्रिटिश भारतीयोंकी यह सार्वजनिक समा इस प्रस्ताव द्वारा सर्वश्री ए कामा एन सोपाळ नामडू ई एम जुबाइया और एस एस एन सोळकको भारत जाने और भारतीय अधिकारियों तथा जनताके सामने ट्रान्सवाल्डके वर्तमान एशियाई संघर्षकी सखी स्थिति पेश करनेके लिए एक सिष्टमन्त्रालयके रूपमें चुनती है।

[तीन] यह समा सर्वश्री काछलिया जुबाइया कामा और बेट्टियारकी आत्मिक और अबाधनीय विरुद्धारीपर सम्मानपूर्वक विरोध प्रकट करती है। सरकार अच्छी तरह जानती थी कि इससे पहलेके प्रस्तावोंमें उल्लिखित सिष्टमन्त्रालयके सदस्य नियुक्त किये गये थे या किये जानेवाले थे। यह समा सरकारसे अनुरोध करती है कि यह जनको बापसीकी ऐसी अमानत देकर जो उसे नजर हो इस संघर्षपर विज्ञा कर वे कि वे अपना काम पूरा करनेपर अबाधत द्वारा भी नई समा भोग लेंगे।

८. प्रस्तावोंका सापेक्ष तारसे सरकारको पेश किया गया था। उत्तरमें सरकारने कहा उसने जब ऊपर बताई गई विरुद्धारियोंकी विज्ञापित जारी कीं तब उसे यह जानकारी न थी कि विरुद्धार किये जानेवाले भारतीयोंकी सूचीमें आधिक्य प्रतिनिधि नाम समा द्वारा चुन किये जावेंगे।

९. किन्तु सार्वजनिक समा द्वारा रस्नी चुनावके बाद भी और पिछले १७ नूनको भारत जानेवाले एक प्रतिनिधि श्री सोपाळ नामडू कई अन्य तमिळ भारतीयोंके साथ विरुद्धार कर किये गये। इस प्रकार सात भारतीय प्रतिनिधियोंमें से (आठमें भी पोलक ठो अंधे हैं)

A CONCISE STATEMENT
OF THE
**BRITISH INDIAN CASE IN
THE TRANSVAAL**

Presented by
THE INDIAN DEPUTATION

JULY 1900

पौष अधिकारियों द्वारा विरफ्तार कर लिये गये और नीचे हस्ताक्षर करनेवाले केन्द्र को अपने कामपर जानेके लिए स्वतन्त्र छोड़े गये।

प्रतिनिधि कौन हैं ?

१ श्री जहानुद मुहम्मद काछिया एक ब्रिटिश भारतीय व्यापारी हैं जो दाम्बालकमें १८ वर्षोंसे हैं। वे विवाहित हैं और अपनी पत्नी और बच्चोंके साथ ओहानिसबर्गमें रहते हैं। वे प्रिटोरियाकी मसजिदके एक म्यासी (ट्रस्टी) हैं। वे ओहानिसबर्गकी हमीदिया मसजिदके और हमेश मबरसा न्यासके भी म्यासी हैं। पिछले तीस माससे वे ब्रिटिश भारतीय संघके अध्यक्ष हैं और अपने अन्तःकरणके आवेद्यपर तीसरी बार बेलकी सजा भुगत रहे हैं। उन्होंने सब यह देखा कि सरकार एशियाई पंजीयन अधिनियमके अन्तर्गत क्रिये गये जुमनि बमूस करनेके लिए भारतीय व्यापारियोंका मास बेच रही हैं तब उन्होंने अपना मास जिन व्यापारियोंसे उधार लिया था जन्हींको छीप देनेकी बकूछ माहमूस की। किन्तु उनके सेनदाराने उनकी इस कार्यवाईको राजनीति [बाक] समझा और यद्यपि उनके माससे पूरी रकमकी बसूफी हो सक्ती थी फिर भी उसे जप्त करवा दिया। श्री काछियामाने इस कार्यवाईका कोई विरोध नहीं किया और उनकी आशयसे उनके सेनदारोंका पूरा भुगतान हो चुका है हाकिमि बबरखस्ती बसूफी होनेके कारण वे सगमग कंगाल हो गये हैं।

११ श्री वेदियार पचास सालके उमरा उमके एक बड़े आदमी हैं और अपने परिवारके साथ इस वर्षसे ओहानिसबर्गमें बसे हुए हैं। वे ठमिळोंके नेता हैं और भारतीय संघके सिक्किसेमें अब दूसरी बार जेस गये हैं। उनका उम्रीस वर्षीय पुत्र भी दाम्बालककी एक जेसमें इसी उद्देश्यके लिए पाँचवीं बार कैद भुगत रहा है।

१२ श्री हाजी हबीब खलीफ बर्ष पहले दक्षिण आफ्रिका जाये वे और तबसे कतिपय महत्त्वपूर्ण भारतीय व्यवसायोंसे उनका सम्बन्ध रहा है। उनका विवाह दाम्बालकमें हुआ था और वे अपने बच्चोंके साथ ओहानिसबर्गमें रहते हैं। वे प्रिटोरियाकी स्थानीय भारतीय समितिके सर्वोपनिष्ठ मन्त्रीका पद पिछले पन्ध्र सालसे संभाल रहे हैं और इस घारे समयमें दाम्बालकके भारतीय जन-आन्दोलनोंसे उनका बलिष्ठ सम्बन्ध रहा है। वे प्रिटोरियाकी मसजिदके स्थायी सर्वोपनिष्ठ मन्त्री और प्रिटोरिया अजुमन इस्लामके अध्यक्ष हैं। वे भारतीय समाजके उस भागके सदस्य हैं जिन्होंने सरकारसे राहत पानेकी व्यवस्था कोसिधों करनेके बाद बसूसे ही एशियाई पंजीयन अधिनियम (एशियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) को माना है। लेकिन इसको माननेका कारण बहुत-कुछ यह था कि समाज इसे न माननेसे होनेवाली भारी आर्थिक हानि सहनेमें असमर्थ था या सहना नहीं चाहता था। फिर भी अन्य भारतीयोंके समान उनके समाजने राहत पानेके प्रयत्न कभी सिधिस नहीं किये हैं। किन्तु श्री हाजी हबीब सब सब कि उनके सँकड़ों पैसावाली सामूहिक हितके लिए अकबनीय कष्ट भोग रहे हैं अपनी जान और मासकी सुरक्षाका उपयोग करनेमें असमर्थ हैं। इसलिए उन्होंने प्रथम कर लिया है कि यदि सिष्टमण्डलके राहत पानेके प्रयत्न असफल हुए तो वे कष्ट भोगनेवाले अन्य लोगोंके साथ मिश्र जायेंगे और अपने पंजीयन प्रमाणपत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) का उपयोग न करेंगे। वे उस ब्रिटिश भारतीय समझौता समितिके संस्थापक और अध्यक्ष हैं जो पून मासमें सरकार तथा अत्यायका विरोध

१ एशियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट।

२. ब्रिटिश इंडियन रजिस्ट्रेशन ऐक्ट।

करके कष्ट भोगनासे लोगोंमें बीच-बचाव करनेके लिए बतवाई गई थी। समितिका उद्देश्य सरकारको भारतीय समाजकी बहुत ही उचित भाँति क्षोभनीय रूपसे स्वीकार करनेका जबरन देना और इस तरह समझौता करना था। सरकारको एक प्रार्थनापत्र दिया गया था और पिछले १९ जूनको जनरल स्मट्घसे एक सिष्टमण्डल मिळा था किन्तु जनरल स्मट्घने कहा कि वे उन दो मुख्य मुद्दोंके सम्बन्धमें जिनका उल्लेख आगे किया गया है भारतीयोंकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकते।

१३ बीजे प्रतिनिधि श्री गांधी पिछले सोलह साठसे दक्षिण आफ्रिकामें बसे हुए हैं। वे इनर टेम्पलके बैरिस्टर, नेटाल सर्वोच्च न्यायालयके बकीक और ट्रान्सवाल सर्वोच्च न्यायालयके वटर्नी हैं। वे ट्रान्सवालमें १९ ३ से रहते और बकाकत करते आ रहे हैं। वे ट्रान्सवालके ब्रिटिश भारतीय संघके बसैठलिक मंत्री हैं और सन् १८९३ से दक्षिण आफ्रिकी भारतीयोंके सार्वजनिक कार्यसे उनका प्रसिद्ध सम्बन्ध रहा है। उन्होंने पिछली अगस्तमें भारतीय स्वयंसेवक आहूत-सहायक दल (इंडियन वॉलंटियर एम्बुलेस कोर) के सहायक अधीक्षक (सुपरिस्टेन्डेंट) के रूपमें सेवा की थी और जनरल बटसरके खरीदोंमें उनका उल्लेख किया गया था। पिछले कुछ दिनोंके दिनोंमें भारतीय समाजने जो डोली-बाहक दल (स्ट्रिकर बियरर कोर) संगठित किया था उसमें भी उन्होंने काम किया था और उनको सार्जेंट-मेजरका पद दिया गया था। वे सन् १९ ६ में ट्रान्सवालके भारतीयोंके संघर्षके सम्बन्धमें अन्त में वे सिष्टमण्डलमें भी हामी बजीर बसीके सह-प्रतिनिधि थे। वे इस मामलेमें तीन बार जेल भोग चुके हैं। उनका पुत्र छ महीनेकी बच्ची सजा भुगत रहा है, यद्यपि उसके पास कोई मिळनर ड्राप जारी किया गया प्रमाणपत्र है और वह ट्रान्सवालका अधिवासी है। छोटे गांधीकी यह तीसरी जेल-यात्रा है। जनवरी १९ ८ के समझौतेके बाद जिसका उल्लेख इस वक्तव्यमें आगे किया गया है जब श्री गांधी सरकार और भारतीय समाजके बीच हुए समझौतेके सम्बन्धमें अपना कार्य पूरा करनेके लिए पंजीयन कार्यालय (रजिस्ट्रेशन ऑफिस) जा रहे थे जन-पर उनके कुछ देखभालियोंने बुरी तरह हमला किया क्योंकि उन्हें समझौतेपर मरोछा नहीं था और वे भी गांधीके कार्यसे भाग्य थे।

१४ यह ध्यान देने योग्य बात है कि सिष्टमण्डल योजनाका आग्रह व्यापार उन्हीं ब्रिटिश भारतीयोंने किया है जो अबतक इतने कमजोर रहे हैं कि जापिक हालि और काप बासका खतरा नहीं उठा सके और हमीलिए एशियाई कानूनको माननेके लिए मजबूर हो गये हैं। किन्तु, उन्होंने प्रतिनिधियोंका पूरा धर्म अपनी इच्छासे देना स्वीकार किया है। इससे प्रकट होता है कि उनकी राहूत पानेकी इच्छा कितनी तीव्र है।

संघर्षके संक्षिप्त इतिहास

१५ यह काम तीव्र मंजूर किया जाता है कि अगस्तसे पहले ब्रिटिश भारतीयोंकी स्थिति कितनी बखी थी उसके बाद उतनी बखी कमी नहीं रही। टिपनी क' से यह व्यापार बखी तरह प्रकट हो जायेगा। ट्रान्सवालमें ब्रिटिश संघा फहरानेके बाद उस स्थितिमें लगातार बिबाद होता रहा है। १८८५ का कानून ३ (जिसके अन्तर्गत ट्रान्सवालमें प्रवेश करनेवाले

१ देखिए कन्व ३ एड १५०-१ ।

२. देखिए कन्व ५, एड १७८-८३ ।

३ देखिए एड २९८-९९, एड ऑर्ड एक्टिवले इतानके अनुसार बीजा एवा था; देखिए ब्रिटिश १४ ।

प्रत्येक एशियाईको ३ पाँच कर देना और उसकी रसीव सेना आवश्यक होता है, एशियाई लोग बस्तिनोंके बिना सबन नू-स्वामित्वके अधिकारसे वंचित हो जाते हैं उनका निवास ऐसी बस्तिनोंमें सीमित हो जाता है, और वे नागरिक बननेके अधिकारी नहीं रहते) जिसे साम्राज्य-सरकारने यत्नपूर्वकीक कारण और उस वकत मंजूर कर लिया था जब वहाँ केवल हीसके सगभग भारतीय निवासी वे विगत बौद्ध सरकार द्वारा कमी पूरी तरह लागू नहीं किया गया था। भारतीय व्यापारियोंके व्यापारमें कमी हस्तलेप नहीं किया गया था और बस्ती-सम्बन्धी नियम कमी समयमें नहीं जाये गये थे। बस्तिनोंमें जानेके लिए निकाली गई सूचनाओंकी ब्रिटिश प्रतिनिधिकी सलाहसे उपेक्षा या अन्याय की जाती थी और उसीकी सलाहसे भारतीय व्यापारी परबानों (लाइसेन्सों) के बिना व्यापार करते थे। ऐसा करनेपर वे विरूपण भी किये जाते थे किन्तु ब्रिटिश प्रतिनिधिके हस्तलेप करनेपर बरि कर दिये जाते थे। भारतीयोंका प्रवेश बरोकर-टोक होता था। हाँ उन भारतीयोंको जो व्यापारके लिए राज्यमें बस गये थे एक बार ३ पाँच कर देना पड़ता था और इस प्रकार अपने नाम दर्ज कराने पड़ते थे। इसका मंदा सिमावसी कार्रवाई करना हयिज नहीं था।

१६ ब्रिटिश कम्पना होनेके बाद यह सब बदल दिया गया। १९२ में धान्ति-रक्षा अध्यादेश (पीस मिडवेंचन ऑर्डिनेन्स) नामका एक कानून उपनिवेशकी धान्ति और सुभ्यत्वाके लिए अठरनाक कोमोंका प्रवेश रोकनेके उद्देशसे पास किया गया। इस अध्यादेशमें यूरोपीय और एशियाईका कोई भेद न था। यह समीपर लागू था। किन्तु व्यवहारमें यह भारतीय प्रवासी-अधिकारक कानून (इमिग्रेशन रिक्रिप्टन ऐक्ट) के रूपमें काममें लाया जाता था। एक बार १८८५ के कानून ३ की कठोरतासे लागू करनेका प्रयत्न किया गया। जब लॉर्ड रॉबर्ट्सके राष्ट्र केनेकी प्रार्थना की गई, तो उन्होंने कहा कि पूरी तरह अर्थात्क शासन स्थापित होनेके बाद भारतीयोंकी स्थिति सुधर जायेगी।^१ जब अर्थात्क शासन शुरू हुआ तब लॉर्ड मिन्नरसे निवेदन किया गया। स्थानीय सरकारने कई बार स्थितिमें सुधार करनेके प्रयत्न किये किन्तु उन्हें सफल बनानेके लिए पर्याप्त बुद्धिका अभाव था। उपनिवेशपर नये ब्रिटिश कम्पसे कितने ही अर्थात्क कानूनोंको — जिनमें उनसे ही अर्थात्क एशियाई-विरोधी कानून भी हैं — बतल करनेका सुझाव मीका मिला था लेकिन उसकी उपेक्षा कर दी गई या उसे निरूपण जाने दिया गया। उसके बाद सुधारके जो भी प्रयत्न किये गये सब असफल होते गये और परिणामतः ब्रिटिश भारतीयोंकी स्थिति अधिकारिक विपरीत बनी गई।

१७ लॉर्ड मिन्नरने (१९४ में) १८८५ के कानून ३ की एक बाउका उपयोग (ब्रिटिश भारतीयोंकी सलाहसे) उपनिवेशके प्रत्येक एशियाईकी घिनावके लिए किया और इस तरह कानूनके भेद और उद्देशमें परिवर्तन कर दिया। इस व्यवस्थाके अन्तर्गत और इस लिखित बारीके अनुसार कि यह सिमाकन बाबिरी होनी उपनिवेशमें रहनेवाले समयम प्रत्येक ब्रिटिश भारतीयने प्रमाणन के लिया जिसमें उसका पूरा हुकिया और बँडूके निवास था। फिर भी उत्तरवासी शासन मिन्नरने टीक पहले तत्कालीन उपनिवेश-अधिकारी इकनने (१९१ में) एक विधेयक (बिल)^२ पास किया जिसमें लॉर्ड मिन्नरके बारीकी उपेक्षा की

१ रेडिफ एक्ट ३ एड १२१ ।

२ एडि. एड १२४-१२१ ।

३ रेडिफ एक्ट ५, एड १२१-१२१ ।

गई थी। उससे उक्त प्रमाणपत्र रद्द हो गये और प्रत्येक भारतीय और एशियाईको एक दूसरा सिनाल्टी टिकट देना अनिवार्य हो गया। उस कानूनमें दूसरी भी कई अत्यन्त आपत्तिजनक धाराएँ थीं जिनको यहाँ बतानेकी जरूरत नहीं है। भारतीय बहुत दुःख हुए। उन्होंने निश्चय किया कि यदि यह कानून मंजूर किया गया तो वे इसका पाबन नहीं करेगे।

१८ (१९१६ के उत्तरार्धमें) एक सिविल डिस्कॉन्टेन्ड आया सर्वोच्च एक्जिक्यूटिव मित्र और विधेयक (विध) मंजूर कर दिया गया।

१९. इसके बाद (१९१७ के शुरूमें) उत्तरवासी सरकार बनी। नई संघपदा करीब-करीब सबसे पहला काम उक्त कानूनको केवल एक निरर्थक आधिकारिक परिवर्तनके साथ बहाल करना था। इस परिवर्तनसे कानूनकी आपत्तिजनक धाराएँ किसी भी तरह प्रभावित नहीं हुईं थीं। भारतीयोंकी आपत्तियोंके बावजूद यह जल्दीसे संघमें पास कर दिया गया और इसपर २ मार्च १९१७ को सम्प्राप्तकी स्वीकृति मिल गई। जब यह कानून भी बंफन द्वारा पेश किया गया था तब यह कहा गया था कि यह अस्थायी होगा और इसकी जगह एक प्रवासी कानून बनाया जायेगा।

२. किन्तु जब एक प्रवासी विधेयक (इमिग्रेशन बिल) भी पास कर दिया गया और उरी अविधेयनमें पास कर दिया गया तब यह पता चला कि उससे एशियाई-विधेयक (जब कानून) रद्द नहीं होता बल्कि उसे इस विधेयकसे जोड़कर बेकनेपर मटीका यह निकलता है कि सुमा-फिराकर भारतीयोंके प्रवासका पूरा निषेध हो गया है। इसलिए इन दोनों कानूनोंके मिलनेसे औपनिवेशिक कानूनोंके इतिहासमें पहली बार प्रवासक सम्बन्धमें रद्द या वास्तविक धाधारपर प्रतिबन्ध लगाया है। (दोनों कानूनोंको जोड़कर पढ़नेसे भारतीय प्रवासका पूरा निषेध कहे होता है इसके लिए देखिए टिप्पणी नं. १)।

२१. जनवरी १९१८ में एशियाई कानून (१९१७ के कानून २) की धाराओंको कायम करनेके लिए सक्रिय कदम उठाये गये। भारतीयोंने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार उसको माननेसे इनकार कर दिया और उनके नेताओंपर मुख्यतः चलाये गये तथा उनको कैदकी धाराएँ भी पई।

२२. द्वायबाल लीबर के सम्पादक श्री अल्बर्ट कार्टरइटके हस्तक्षेपसे एक समझौता हुआ। यह संघत किञ्चित और असंतुष्टी भरी था। भारतीयोंका कहना है कि जनरल स्मट्सने अपनी सर्वोच्च सिनाल्ट कर केनेपर, एशियाई कानून वापस के देने और उनकी स्वेच्छया कारवाई गई सिनाल्टको एक दूसरे कानूनसे कानूनी रूप से देनेका बचन दिया था। उनके विचारसे अच्छा यह होगा कि इसके लिए प्रवासी विधेयकमें जो अब कानून बन गया है संशोधन कर दिया जावे। (समझौतेके विस्तृत व्योरेके लिए टिप्पणी नं. देखें)।^१ भारतीयोंने अक्षय ही समझौतेका अपना वास्तविक पूरा कर दिया है और तब अविधेयकको रद्द करनेकी माँग की है।

२३. सरकारकी ओरसे जनरल स्मट्सका कहना है कि उन्होंने कानूनको रद्द करनेका कोई बचन नहीं दिया था हालांकि वे यह मंजूर करते हैं कि उनके और भी गांधीके बीच उसको रद्द करनेके सम्बन्धपर बातचीत हुई थी। उनका कहना है कि समय भी गांधीको मकतफहमी हो गई है।

२४ वा सभ्य मित्र हो चुक है और मान लिये पये है व ये है

(क) श्री गांधीने श्री स्मट्सको उनकी अनुमतिसे (२२ फरवरी १९०८ को) एक विधेयकका मसविदा बना वा जिसकी एक बारासे कानून रू हाता वा। इसकी प्राप्ति स्वीकार की गई थी और एव करनेके प्रस्तावका कमी उच्यत नहीं किया गया।

(ख) समझौता होनेके दो दिन बाद जनरल स्मट्सने एक सार्वजनिक समामे (१ फरवरी १९०८ को) कहा वा कि "मैने उनसे कह दिया है कि जबतक देसामे एक भी एगिपाई ऐसा है जिसका पंजीयन न हुआ हो तबतक कानून वापस नहीं किया जायेगा" और यह भी कि "जबतक देसका प्रत्यक भारतीय पंजीयन नहीं गया तबतक कानून वापस नहीं किया जायेगा।

(ग) जबतक जनरल स्मट्सने (१३ जून १९०८ का) प्रभासी कानूनमें संशोधनका एक मसविदा तैयार और प्रचारित भी किया वा। उससे एगिपाई-कानून एव तो हाता वा परन्तु उसमें उन्हीं नई शर्तें एव थी थीं। उनमें से एक यह भी कि ब्रिटिश भारतीय बाह् उनका दर्जा कुछ भी हो भिषिख प्रभासी समसे जायें। उन्हींने यह शर्त मगा की कि इन नई शर्तोंको भारतीय मंजूर कर लें तभी एगिपाई कानूनको एव करनेका संशोधन पास किया जायेगा। भारतीय नई शर्तोंको मंजूर नहीं करना चाहते।

२५ संशोधनमें भारतीयोंने नई शर्तें नहीं मानी इसलिये कानून एव नहीं किया गया। ये नई शर्तें उनको मान्य नहीं थी क्योंकि पहली तीन शर्तें उन भारतीयोंका जो इन समय दाम्भवासके अधिकासी है उपनिवेशमें रहनेका अधिकार छिनता वा और चौथी शर्तमे पैसा ऊपर कहा गया है, राष्ट्रीय अपमान हाता वा क्याकि उससे ब्रिटिश भारतीयोंका बाह् के छिनने ही मुत्सकृत क्यों न हूँ प्रवेश प्रजातीय बाजारपर भिषिख हो जाता वा। इन प्रकार यह माफ है कि कानून एव नहीं किया गया और इसमें भारतीयोंका कोई कसूर नहीं वा। जनरल स्मट्सने समझौतेकी भिषिख और स्पष्ट शर्तें भी तोड़ थीं क्योंकि यद्यपि लिखित समझौतेके अनुसार (हेलियु लिपिची प) १९०८ का कानून २ स्पष्टत उन शर्तोंपर छावू नहीं किया जाता वा उन्हींने स्वेच्छया अपनी जिमान्त कर ली थी और यद्यपि उनकी जिमान्तकी एक बहस अधिनियम द्वारा कानूनी रूप दे दिया जाता वा फिर भी ऐस भारतीयोंको १९०८ के कानून २ के अन्तर्गत जानेके उद्देश्यसे (११ अप्रैल १०८ का) एक विधेयक प्रकाशित किया गया।

२६ जनरल स्मट्स द्वारा समझौतेके इन दुन्दे शर्तोंके परिणामस्वरूप भारतीयाने (१९ अप्रैल १९०८ को) एक सार्वजनिक समामे बुलाई। उनमें उन्हींने स्वेच्छया लिये गये २५० प्रमाणपत्र जमाये और इन प्रकार ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी कि उनपर मुकरर जमाये जा सकें। इनके पत्रस्वरूप छात्रक-बाग प्रगतिवादी मतार्थ और श्री शर्मा तथा श्री विजय (बीनी मिता) वा एक सम्मेलन (१० अप्रैल १०८ का) हुआ। बहुत बड़ मतबरी गूबनाके कारण सभक अध्यास श्री ईश्वर मिश्रा इनमें शामिल नहीं हो सक।

१ हेलियु एक्ट ८ एव १०-११।

२ सूची - ० अगस्त १९११ ई।

३ हेलियु एक्ट ८ एव १०-११ और ११८-१९। का अनुच्छेद और हेरिफिलेस एजन्डर अनुच्छेद छिद लिख गया वा; हेलियु एक्टिख १४।

४ सूची - १९ - दिख गया है जो सार्वजनिक सूच है। हेलियु एक्ट ८ एव १०-११।

२७ इस सम्मेलनके फलस्वरूप एक नया विधेयक पेश किया गया जिसमें स्पेसिया पञ्जीयन (रजिस्ट्रेशन) करानेवाले शोध एक अलग कानूनके अन्तर्गत रखे गये। कानूनको रख करनेके प्रस्ताव भी विचार किया गया किन्तु सरकार इस प्रस्तावको सुननेके लिए तैयार नहीं थी वह कहती थी कि कानून अमलसे बाहर समझा जायेगा। जैसी सिद्धा पाये हुए भारतीयोंके प्रवेशके प्रस्ताव भी विचार किया गया किन्तु प्रवासी कानूनके अन्तर्गत किसी तरहकी राहत देनेका बचन नहीं दिया गया। अनरल स्मट्सने यह इतना कहनेकी सहायता दिखाई कि ऐसे लोगोंको अस्थायी अनुमतिपत्र (परमिट) दे दिये जायेंगे।

२८. इसलिए इस सम्मेलनके परिणामपर विचार करनेके लिए (२ अप्रैल १९८६) एक बुरी सार्वजनिक सभा बुलाई गई, और उसमें यह तय किया गया कि नये विधेयक (बिल) को ठवतक स्वीकार न किया जाये जबतक १९७७ का कानून २ रख नहीं किया जाता और उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयोंको शिक्षा-सम्बन्धी और अन्य परीक्षाएँ—चाहे वे कितनी ही कड़ी क्यों न हों—पास करनेके बाद सामान्य प्रवासी कानूनके अन्तर्गत अधिकृत तौरपर प्रवेश करनेका हक नहीं दिया जाता।^१

२९. किन्तु सरकारने भारतीयोंकी आपत्तिके बावजूद नये विधेयकको पास कर दिया। नये विधेयकमें कुछ शोध हैं, जिसको यहाँ बतानेकी जरूरत नहीं है। वे सामान्य-सरकारको दिये गये एक अन्य प्रार्थनापत्रमें^२ विनाय नये थे। उनके अलावा यह विधेयक सामान्यतः स्वीकार्य है।

प्रमुख प्रश्न

१ नये विधेयक (बिल) से उत्पन्न कुछ छोटे-मोटे मुद्देके अलावा ट्रान्सवाल सरकार और ब्रिटिश भारतीयोंके बीच प्रमुख प्रश्न ये हैं

- (१) सन् १९७७ के कानून २ को रख करना और
- (२) उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयोंका रखा।

११ ट्रान्सवाल सरकारका कहना है कि ये दो मुद्दे स्वीकृत-जैसे ही हैं क्योंकि—

- (१) सन् १९७७ का कानून २ अमलसे बाहर समझा जायेगा और
- (२) उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीय नये एशियाई विधेयककी एक बारके अन्तर्गत अस्थायी अनुमतिपत्र (परमिट) प्राप्त कर सकते हैं और इन अनुमतिपत्रोंको अनिश्चित समयतक बहाल रखा जा सकेगा।

१२ भारतीयोंका कहना है कि

- (१) यदि १९७७ का कानून २ अमलसे बाहर समझा जायेगा तो उसको रूप निवेशकी विधान-संहिता (स्टैच्यूट बुक) में बनाने रखनेसे कोई उपयोगी उद्देश्य सिद्ध नहीं हो सकता। भारतीय (बाबा-विकासियोंके कारण) संकाल हो गये हैं और एक कानूनके अमल-बाहर होने और फिर भी देशके कानूनोंका भाग बने रहनेका मतलब समझ समझमें नहीं आता। यदि कानून केवल मतवालोंको समुष्ट रखनेके लिए कायम रखा जा रहा है तो वे नृकिक अलावा अकमल्य हैं इसलिए उन्हें यह समझ

१ रेडियर क्लब < एड ४७२-५९।

२ रेडियर "प्रार्थनापत्र कांशिक-सम्बन्धी" एड १७-२८।

सकता चाहिए कि एक कानूनको अमल-बाहर उपनिवेशकी विधान-संहितामें जगह बेरनेकी कोई जरूरत नहीं है। और अन्तिम बात यह है कि सरकारने कानूनको अमल-बाहर घोषित तो कर दिया है, फिर भी जग-जमी सरकारके अनुकूल पड़ा है तब वह भारतीयोंके विरुद्ध अमलमें लाया जाता था है और अधिकमें भी जमी उसके अमलमें लाये जानेमें कोई रज्जबद नहीं है।

(२) यदि ट्रान्सवाल सरकार उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयोंको जाने देनेके लिए राजामन्द है तो वह उनको प्रवासी कानूनके अन्तर्गत भी जाने दे सकती है। यदि सरकारका मंशा सब भारतीयोंको अपमानित करनेका नहीं है तो सरकारके लिए इसका कोई महत्त्व नहीं है कि शिक्षित भारतीय एशियाई-कानूनके अन्तर्गत लाये हैं या प्रवासी-कानूनके अन्तर्गत। भारतीयोंके लिए यह एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। प्रवेशका तरीका ही उनके लिए सब-कुछ है। बीस या बीससे ज्यादा भारतीय ट्रान्सवालमें रियासतके खोर दरवाजेके आये और सतपर रिहा कैंडीकी तरह सरकार बरतक चाहे तबतक उपनिवेशमें रहनेके अधिकारी हों इसकी अपेक्षा उनको ज्यादा बिन्ता यह है कि एक ही शिक्षित भारतीय जो उपनिवेशमें प्रवेश करे, सामान्य प्रवासी कानूनके अन्तर्गत और अधिकारके सिद्धान्तके प्रवेश करे।

३३ शिक्षित भारतीयोंका यह प्रश्न सबसे पेशीबा है। ब्रिटिश भारतीयोंको ट्रान्सवालमें मर देनेकी कोई इच्छा है ही नहीं। भारतीय मानते हैं कि ब्रिज आधिकारमें ब्रिटिश और बोअर आबादीकी प्रधानता रहनी चाहिए। किन्तु उनका कहना यह है कि उस नीतिपर अमल करके ट्रान्सवाल उपनिवेशको हमारा राष्ट्रीय अपमान न करने दिया जाये।

३४ इसके अलावा जो भारतीय ट्रान्सवालके अधिवासी हैं, उन्हें यदि अपना सामाजिक और नैतिक स्तर उँचा करना है तो अपने उच्च धिवा प्राप्त साइमोंकी सहायताकी जरूरत उन्हें पड़ेगी ही। अपनी नेकनीयती साबित करनेके लिए वे घोषित करते हैं कि यदि प्रवासी कानूनपर ऐसा अमल भी किया जाये कि किसी वर्ग-विशेषमें कमसे-कम (जैसे छ) भारतीय जा पायें तो भी उनको आपत्ति न होगी। जहाँ वे कानूनी असमानता और कानूनी सेवमात्र पर आपत्ति करते हैं जहाँ वे प्रशासनिक सेवमात्रको सहन करनेके लिए तैयार हैं। यही बात आम आस्ट्रेलियामें की जा रही है। ट्रान्सवालमें यह उपर्युक्त घास्ति-रक्षा अध्यादेश (पीस प्रिबिडिशन ऑर्डिनंस) के अन्तर्गत किया गया था। उनका यह भी निवेदन है कि यदि वर्तमान कानूनसे पर्याप्त प्रशासनिक अधिकार नहीं मिलता है तो कानूनमें अभीष्ट विधामें संशोधन किया जा सकता है किन्तु इस तरह नहीं कि जिससे प्रवासी सेवमान स्थायी बन जायें।

नये संविधानमें

३५ यदि ब्रिटिश भारतीयोंको अन्तर्-दक्षिण आधिकारसे निकाल बाहर नहीं करना है या वहसे उनका अस्तित्व मिटा नहीं देना है तो नये संविधानके अन्तर्गत उनकी स्थिति सावधानीसे सुरक्षित करनेकी जरूरत है। उनका कथमग कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। केप और नेटालमें उन्हें जो बड़ा-बहुत प्रतिनिधित्व प्राप्त रहा है उसका नये संविधानके अन्तर्गत कोई प्रमाद नहीं रहेगा। यदि साम्राज्यीय सत्ता समुचित रूपसे कामम न रही यदि तो दक्षिण आधिकारका यूरोपीय संघ भारतीयोंके निहित हितोंको नष्ट कर देगा। अरिज रिबर कालोनीमें भारतीयोंको

भीकर चाकरोंके अज्ञाना किसी अन्य रूपमें प्रविष्ट नहीं होने दिया जाता। ट्रान्सवालमें उपर्युक्त कानून तो लागू है ही उनका अपने लिए विशेष रूपसे निर्धारित बस्तियोंके अज्ञाना कहीं दूसरी जगह जमीन खरीदनेका अधिकार भी छीन लिया गया है और बस्तियोंमें जमीन खरीदनेके इस अधिकारपर भी रोक लगा दी गई है। नेटालमें उपनिवेशके परवाना कानूनके एकदम ही और अत्याचारपूर्ण प्रशासनके द्वारा भारतीय व्यापारियोंको भूखों मार बा रखा है। छोटी-मोटी शिकायतों को दक्षिण आफ्रिका-भरमें इतनी ज़्यादा है कि उन्हें विस्तारसे दिया नहीं जा सकता। वे भारतीयोंके दैनिक जीवनको प्रभावित करती है और उन्हें लगातार यह याद दिलाकर कि इस उपमहाद्वीपमें जमड़ेका रंग भूरा होना गुनाह है उनका जीना प्रायः दुभर कर देती है। दक्षिण आफ्रिकामें कानून बनानेके पीछे साफ-साफ यह मन्ना होता है कि जिस अनुपातमें यूरोपीय जातियोंकी स्वतन्त्रतामें बढ़ि की जाये उही अनुपातमें भारतीयोंकी स्वतन्त्रतापर प्रतिबन्ध लगाये जायें।

११. इसलिए, साम्राज्यके समाजसे भी और भारतीय दृष्टिकोणसे भी यह बात सर्वोपरि महत्त्वकी है कि ट्रान्सवालवासी भारतीयोंके प्रश्नको सन्तोषजनक रूपसे हल किया जाये। इस बातमें कोई शक नहीं कि ट्रान्सवाल दक्षिण आफ्रिकाना प्रमुख राज्य है। वह मेलुन करता है अन्य राज्य उसका अनुसरण करते हैं। इसलिए यदि ट्रान्सवालके भारतीयोंसे सम्बन्ध रखनेवाले कानूनोंको कुछ और स्वायत्त आचारपर पहुँचे ही स्थित नहीं किया जाता तो उनके अन्तर्गत निरक्षय ही ट्रान्सवालके कानूनोंका अनुसरण किया जायेगा और तब साम्राज्य सरकार राहत देनेमें असमर्थ होगी।

भारतीयोंकी प्रतिज्ञा

१७. इसके अतिरिक्त भारतीय उपर्युक्त राहत प्राप्त करनेके लिए एक बन्धीर प्रतिज्ञासे बँधे हुए हैं—मल ही इसके लिए उन्हें अनिश्चित काल तक बेक जोपनी पड़े या और भी ज़्यादा कष्ट उठाना पड़े। इसके फलस्वरूप पिछले डेढ़ वर्षके संघर्षमें २,५ से अधिक लोगोंको कारावास मिला और उनमें से अधिकांशका कारावास सपरिभ्रम था। जेलका जीवन सर्वथा असह्य रहा है। भारतीय कैदियोंको और दक्षिण आफ्रिकी बतनियोंको एक वर्गमें और एक साथ रखा जाता है। भारतीयोंका दो तिहाई भोजन भी नहीं होता है जो बतनियोंका है। ट्रान्सवालमें राजनीतिक अपराध-वैधी कोई चीज ही नहीं है। भारतीय कैदियोंको बिना स्वयं बनरक स्मट्सने अन्तःपरमाकी आवाजके आचारपर आपत्ति करनेवाले बताया है, बुरेसे-बुरे अपराधियोंके साथ जेलमें रखा जाता है। उनसे जैसे क्षमकी अपेक्षा की जाती है वह सामान्यतः कठोर प्रकारका होता है। जिस भारतीयोंने कमी भारी बोझा नहीं उठवाया या कठोर परिभ्रम नहीं किया उनसे बुरेसे-बुरे काफिर कैदियोंके साथ-साथ भारी सामानसे ऊँचे टैले खींचने बड़े खारने और सड़कोकी मरम्मत करने-वैध काम किये जाते हैं।

१८. जनेक भारतीय परिवार फँसाए जा चुके हैं। कई परिवार छिन्न-भिन्न हो गये हैं। और बहुत-से परिवार, जिनके कमाऊ सखस्य ट्रान्सवालकी जेलोंमें पड़े हैं अब अपने दैनिक निर्वाहके लिए सार्वजनिक बाजार निर्भर हैं।

१९. कुछ समयसे सरकारने पुर्वजाकी अधिकारियोंके साथ एक गुप्त समझौता करके उन लोगोंको जो एथियाई कानूनकी बाध्यताका पालन नहीं करते और जिनके विरुद्ध कानूनकी निर्वासन-सम्बन्धी बाध्यताके अन्तर्गत कार्रवाई की जा सकती है, भारतको निर्वासित करना आरम्भ

वस्तुस्थिति पाइ-टिप्पणी

उपर्युक्त विवरण तैयार करनेके बाद प्रतिनिधियोंको एक तार भिजा है, जिससे बात होता है कि नागपन नामक एक भारतीय युवक जिसे यत २१ जूनको संपर्कके सिलसिलेमें इस दिनका उपरिभ्रम कायबास दिया गया था ३ जूनको मरणासन्न अवस्थामें बेडसे उठा किया गया और वह ६ जुलाईको मर चुका। उसके अनुसार आरोप ये है कि कजाकेकी सर्वा पड़ रही थी जो कम्बल दिये गये थे वे अपर्याप्त थे बतमी बाईरोंने पाश्चिक व्यवहार किया और चिकित्सा-सम्बन्धी सुविधा उपलब्ध नहीं हुई। उठी तारमें जाने कहा गया है कि दक्षिण आशियाके एक प्रमुख भारतीय—श्री दाउद मुहम्मदको जिनकी उम्र पचास वर्षसे अधिक है और जो छ मासका कायबास मोग रहे थे बीमारीके कारण छोड़ दिया गया। तारकी टाटीस १२ जुलाई है और अगर उम्हें नागपनकी मृत्युके बाद छोड़ा गया हो तो वे पाँच महीनेकी सजा पूरी कर चुके थे।

टिप्पणी 'क'

बोम्बे शासनके अधीन

एशियाई स्वतन्त्रतापूर्वक वनराज्यमें प्रवेश कर सकते थे और १८८५ के बाद ३ पीड बेकर वहाँ निवास और व्यापार कर सकते थे।

(१८८९में संशोधित) १८८५ के कानून ३ द्वारा अयोजित "पंजीयन" (रजिस्ट्रेशन) में हुकिया बैना शामिल नहीं था। उसमें ३ पीडी शुल्कका भुगतान करने और भुगतानकी रसीद रखनेकी ही बात थी।

ब्रिटिश साम्राज्यमें मिलाने जानेके बाद

केवल उम्हें एशियाईको फिर प्रवेश करने दिया गया है जो यह सिद्ध कर सके हैं कि वे मुझसे पहले वहाँ रहते थे।

हाँमें मिलनरकी सलाहके अनुसार एशियाई योने १९ ३में जो "पंजीयन" स्वेच्छासे स्वीकार किया था उसमें पूरा हुकिया रना शामिल था।

१९ ७ के कानूनके अन्तर्गत पुन—पंजीयन कानून अनिवार्य और तफ्तीकके सिद्धान्तसे व्यापक अपमानजनक है। यह बाठ बरस और इससे अधिक आयुके सब वर्गों-पर लागू होता है। पुन-पंजीयन न कानून पर निर्माण कर और रोक-निकासा हो सकता है। (१९ ८ के कानून ३९ के अन्तर्में अब इसमें परिवर्तन किया जा चुका है।)

एशियाईको नागरिक (बर्बर) के अधिकार नहीं दिये गये थे।

एशियाईको जिनमें ब्रिटिश भारतीय भी शामिल हैं नगरपालिकाके अधिकारों और राजनीतिक अधिकारों दोनोंसे वंचित रखा गया है।

एशियाई बस्तियोंको छोड़कर अन्यत्र एशियाई अबल सम्पत्ति नहीं रख सकते थे।

यह स्थिति आज भी कायम है।

एशियाईओंको उनके लिए विशेष रूपसे नियत गतिधर्मों मुहूर्तों और बस्तिधर्मों हटाया जा सकता था।

उपर्युक्त नियमोंवाले जोपनेवाला कानून ३ यद्यपि सगमम अनिर्वाण था फिर भी ब्रिटिश भारतीयोंको महासमझौते के अन्तर्गत सरकारी संरक्षण प्राप्त था।

ब्रिटेनके विम्मेवार मन्त्री ब्रिटिश भारतीयोंके लिए साम्प्रदायिकी सम्म प्रवाही बराबरीके अधिकार दिये जानेकी मांग करते थे। ब्रिटेनकी सरकारने द्वान्द्वबासके ब्रिटिश भारतीयोंको उनके उचित अधिकार प्राप्त बिसानेका बचन दिया था।

बोअर कानूनके विरुद्ध भारतीयोंकी आपत्ति योंका साम्प्रदायिकी-सरकारने समर्थन किया था और बोअर पणतन्त्रका यह आग्रह कि उसे अपने राज्यकी सीमाओंमें रहनेवाले एशियाईओंके विरुद्ध मनमाने ढंगसे कानून बनानेका अधिकार है, युद्धका मुख्य एक कारण था।

आम धौरपर, यद्यपि सिद्धान्तपर ब्रिटिश भारतीयोंपर उपर्युक्त नियमोंवाले सामू थीं फिर भी अमलमें कानूनको सख्तीसे लागू नहीं किया जाता था।

एशियाई, जिनमें ब्रिटिश भारतीय भी शामिल हैं आज भी ऐसे प्रतिबन्धके भायी हैं और उनके अन्त किये जानका सतत मौजूदगी भी है।

उपनिवेशको साम्प्रदायिकी दिसानेके बाद और विशेषतः उत्तरदायी सासन देनेके बाद ब्रिटिश भारतीय साम्प्रदायिकी-सरकारका संरक्षण प्राप्त करनेमें असमर्थ रहे हैं।

ब्रिटिश सरकारने इस उपनिवेशके साम्प्रदायिकी दिसानेके बादसे पहले यहाँ रहनेवाले उन्हीं भारतीयोंको अब प्रत्यक्षतः व्यापारी प्रतिस्पर्धि योंके और उस सरकारके व्यापारियोंके लिए छोड़ दिया है जिसके अधिकारस विधायक के लोग हैं जो १८८५ के कानून ३ की रचनाके लिए विम्मेवार थे।

अब साम्प्रदायिकी-सरकारके कारण संरक्षणके अभावमें ब्रिटिश भारतीय उत्पादकोंका सहारा देनेको विवश हो गये हैं जिसके फलस्वरूप उनमेंसे २५ कोषोंको खैरकी उम्मीद हुई है और अन्य कष्ट उठाने पड़े हैं।

ब्रिटिश भारतीयोंकी स्वतन्त्रतापर बहुत कड़ाईसे प्रतिबन्ध लागू किये गये हैं, और १८८५ के कानून ३ में दम्ब-सम्बन्धी धाराकी अनुपस्थितिसे ही उस कानूनके अन्तर्गत बुरे परिणामोंसे भारतीयोंकी रक्षा हुई है।

टिप्पणी "क"

एशियाई विधेयक (एशियाटिक बिल) के अनुसार उपनिवेशके हर एशियाईका निम्नलिखित टिकट लेना चाहिए, और इसमें ऐसे एशियाईकी परिभाषा भी दी गई है, जिसका अर्थ यह है कि वह एक एशियाई हो सकता है। परिभाषामें कहा गया है कि यदि एशियाई इसका पात्र है तो वह एक एशियाई पात्र होनेसे पहलेसे द्वान्द्वबासका अधिकारी हो। विधेयकमें जाये विधान किया गया है कि ऐसे हर एशियाईपर, जो इसके अन्तर्गत आता जाये निम्नलिखितका आगमन करेगा।

प्रवासी विधेयकसे जय्य बातोंके साथ ऐसा कोई भी व्यक्ति जिसपर निष्कासनकी आज्ञा लागू होती है निविद्य प्रवासी हो जाता है। तब एक सिद्धित भारतीय भी जो एशियाई विधेयकके पास होनेसे पहले उपनिवेशका अधिवासी नहीं रहा सिनास्ती टिकट प्राप्त करनेका अधिकारी नहीं है और इसलिये उसपर निष्कासनकी आज्ञा लागू होती है और इस प्रकार यह प्रवासी विधेयकके अन्तर्गत निविद्य प्रवासी है।

टिप्पणी "ग"

सिद्धित समझीता इस प्रकार वा

१ ब्रिटिश भारतीयोंको स्वेच्छासे अपनी सिनास्ती करना केनी चाहिए।

२ १९७ का कानून २ ऐसे ब्रिटिश भारतीयोंपर लागू नहीं होता चाहिए, और स्वेच्छासे कदाई भी सिनास्तीको एक अलग कानून द्वारा बंध रूप से देना चाहिए।

घरों २८ जनवरी १९८ को ट्रांसवाल उपनिवेश-सचिवके नाम लिखे गये सर्वश्री गांधी किशन तथा नायडूके पत्रमें भी नहीं है। पत्रकी प्राप्तिके दो दिन बाद श्री गांधीको जो तब एक कड़ी से समझौतेपर उपनिवेश-सचिव (श्री स्मट्स) के साथ बातचीत करनेके लिए मिटोरिया के आया गया और उसके बाद आगे और विचार किया गया। श्री गांधीके बलुअध्यके अनुसार इन मुकामकाठमें श्री स्मट्सने वादा किया कि जब एशियाई समझौतेके सम्बन्धमें अपना बालित्व पूरा कर देने अर्थात् स्वेच्छासे अपनी सिनास्ती करना लेंगे तब (१९७ का धुधरा) एशियाई कानून रद्द कर दिया जायेगा।^१

छपी हुई मूक अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५१८) से।

१८० सम्बन्ध

[जुलाई १९, १९९ के बाद]

सर कर्नल वाइलीकी हत्या

शिष्टमण्डलकी यात्रा" शीर्षकक अन्तर्गत शिष्टमण्डलके कार्यके सम्बन्धमें बितने समाचार दिये जा सकते थे जतने दिये जा चुके हैं। इस शीर्षकके अन्तर्गत अब धुधरी जानने कायक लवरे से रहा है।

सर कर्नल वाइली और डॉक्टर जालकाकाकी हत्या हुई यह एक भयंकर काम हुआ है। सर कर्नल वाइली भारतके विभिन्न स्थानोंमें अधिकारी रहे थे। यहाँ से लॉर्ड मॉन्टेगे नेमरहाक से। डॉक्टर जालकाका एक भारतीय डॉक्टर थे और चीनके संभाई नगरमें अपना बन्धा करते थे। वे यहाँ कुछ दिनोंके लिए ही जाये थे।

१ मूके "५४ जनवरी १९८" से जो कर्नलकी मूक है; देखिए कन्व ८ पृष्ठ १९५१।

२ यह टिप्पणी ग और भी किन्तु यह जारी नहीं गई थी; देखिए "५५ ऑटो-रिपोर्टकी" पृष्ठ ११४।

जुलाई २ को इम्पीरियल इन्स्टिट्यूटक बर्लिनमें राष्ट्रीय भारतीय संघ (नेशनल इंडियन एसोसिएशन) की ओरसे मास्ता-पानीका आयोजन किया गया था। यह समारोह ब्रिटेनमें पड़नेवाले भारतीय छात्रोंका अंग्रेजोंसे सम्पर्क करनेके उद्देश्यसे किया जाता है, इसलिये इसमें जो भी अंग्रेज भाते हैं वे भारतीयोंके मेहमान ही कहे जायेंगे। इस दृष्टिसे श्री कर्जन बाइली हत्यारेके मेहमान थे। इस प्रकार श्री मदनमाल भीयराने अपने ही घरमें अपने मेहमानकी हत्या की और बीचमें आनेवासे डॉक्टर सासकाका का भी मृत किया।

सर कर्जन बाइलीकी हत्याके समर्थनमें यह ठक बिया जाता है कि अंग्रेजोंके कारण ही भारत बर्बाद हुआ है। यदि जर्मनी इंग्लैंडपर चढ़ाई करे तो जैसे अंग्रेज जर्मनोंको मार डालेंगे वैसे ही प्रत्येक भारतीयको अंग्रेजोंको मारनेका अधिकार है।

इस हत्याके सम्बन्धमें प्रत्येक भारतीयको ठंडे विद्येसे विचार करना है। इससे भारतकी बहुत हानि हुई है। शिष्टमण्डलके कामको भी बहुत-कुछ बचना पहुँचा है। किन्तु इस दृष्टिसे विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है। विचार अन्तिम स्थितिपर करना है। श्री भीयरानकी छात्राई निकम्मी है। यह काम हमारे विचारसे काबरताका है। फिर भी उनके ऊपर तो दया ही जाती है। उन्होंने निकम्मा छात्रिये ऊपर-ऊपर पढ़कर यह काम किया है। उन्होंने अपने बचानका बयान भी रट रना वा ऐसा जान पड़ता है। बख तो उनको सिखानेवालेको देना चाहिए। मैं उनको निर्दोष मानता हूँ। हत्या मनेमें किया गया कार्य है। तथा केवल घराब या भाँगका ही नहीं होता किसी पाण्डपन-भरे विचारका भी हो सकता है। श्री भीयरानका मना ऐसा ही था। जर्मनों और अंग्रेजोंका उदाहरण प्रकृत है। जर्मन चढ़ाई करे तो अंग्रेज चढ़ाई करनेवालोंको ही मारेंगे। वे ऐसा तो नहीं करेंगे कि किसी भी जर्मनको चढ़ाई देसैं वहाँ मार डालें। इसके अलावा वे जर्मनोंको मृत्युकर नहीं मारेंगे। यदि जर्मन किसीका मेहमान होगा तो उसको नहीं मारेंगे। यदि मैं बिना चेतावनी दिये अपने ही घरमें उस व्यक्तिको मार डालूँ जिसने मेरा कोई अपराध नहीं किया है तो मैं कायर ही माना जाऊँगा। अरब कोषोंमें यह एक अच्छी प्रथा है कि वे अपने घरमें दुस्मन भी हो तो उसको नहीं मारते। वे अपने घरको तभी मारेंगे जब वह उनके घरसे बाहर निकल जाने और वे उसको हथियार उठानेकी चेतावनी दे दें। जो लोग यह मानते हैं कि मार-काटसे मलाई होती है वे उस नियमकी रक्षा करके मार-काट करयें तो भीर माने जायेंगे। बाकी तो डरपीठ ही माने जायेंगे। कुछ लोग कहेंगे कि श्री भीयराने जो यह काम किया वह लुम्समलुम्सा और यह समझ कर किया है कि उनको तो जान देनी ही पड़ेगी इसलिये यह कोई मामूली बहादुरी नहीं मानी जा सकती। किन्तु मैं पहले बता चुका हूँ कि मनेमें मनुष्य ऐसा काम कर सकता है और मृत्युका मय भी छोड़ सकता है। इसमें बहादुरी तो मनेकी हुई मनुष्यकी नहीं। मनुष्यकी बहादुरी तो दीप काल तक बहुत दुःख सहन करनेमें है। जो काम विवेकपूर्वक किया जाता है वही बहादुरीका काम माना जाता है।

मुझ कहना चाहिए कि जो लोग ऐसी हत्याओंको भारतके लिए लाभकर मानते हैं वे नासमझ हैं। बोलाचढ़ीके कायेति लोकोको लाभ नहीं होता। ऐसी हत्याओंसे क्याचित, अंग्रेज भारतसे चले जायेंगे। लेकिन इसके बाद राज्य कौन करेगा? इसका उत्तर नहीं होता है कि हत्यारे ही राज्य करेंगे। तब मुझ कौन भोलेने? क्या अंग्रेज केवल इनीभिय बुरे हैं कि वे अंग्रेज हैं? क्या जिनकी चमड़ी भारतीयोंकी-वैसी है, वे सब अच्छे ही हैं? बात ऐसी हो तो

दक्षिण आफ्रिकामें हमारा कोई अधिकार ही नहीं है। ऐसा हो तो बेसी राजाओंके उत्पापारोंके विरुद्ध इतना घोर होना ही नहीं चाहिए। हत्यारे—बाहे के कासे हों या मोरे—भारतमें राज्य करेंगे तो उससे कोई काम नहीं होगा। ऐसे राज्यमें भारत बीरान और गण्ट भ्रष्ट हो जायेगा। इससे बहुत-से विचार उत्पन्न होते हैं। किन्तु मुझे उनको यहाँ लिखनेका समय नहीं है। मुझे डर है कि कुछ भारतीय इन हत्याओंकी सराहना करेये। मेरे विचारसे वे महापाप करेंगे। ऐसी समझ छोड़ देनी चाहिए। विद्येय बाबुने।

“समोविस्ट”

इन्डो-इकी महिलाओंके मताधिकारके लिए लड़नेवाली स्त्रियाँ पंजब कर रही हैं। वे किसी तरहके दुःखसे नहीं डरती हैं। उनमें से कितनी ही स्त्रियाँ बीमार पड़ गई हैं फिर भी लड़ना नहीं छोड़तीं। कितनी ही स्त्रियाँ श्री एस्किन्सको अपना जावेदमपत्र देनेके विचारसे रोज रात-रात-भर संसद-मकानके द्वारपर खड़ी रहती हैं। यह कुछ कम बीरता नहीं है। कितना प्रबल होना उनका विश्वास? बहुत-सी स्त्रियाँ इस आन्दोलनमें बर्बाद हो गई हैं और होती या रही हैं। किन्तु वे अपनी लड़ाई बन्द नहीं करती। यह लड़ाई हमारी लड़ाईसे पुष्पनी है। हम इससे बहुत-कुछ गचीहूत और हिम्मत ले सकते हैं।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १४-८-१९१९

१८१ पत्र लॉर्ड क्रू के निजी सचिवको

लण्डन एस डब्ल्यू
जुलाई २ १९१९

निजी सचिव
उपनिवेश-मंत्री
महोदय

दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समिति (साउथ आफ्रिका ब्रिटिश इंडियन कमिटी) के मंत्री श्री रिच परम माननीय उपनिवेश-मंत्रीको द्वाण्डवाकके ब्रिटिश भारतीयोंकी ओरसे एक विष्टमण्डकके जानेकी सूचना दे चुके हैं।

इसमें प्रिटोरियाके व्यापारी और वहाँकी अंजुमन इस्लामियाके अध्यक्ष श्री हानी हनीब और मैं—हो प्रतिनिधि हैं। अन्य प्रतिनिधि खामा होनेसे पहले एसियाई पंजीयन अधिनियम (एसियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) के अन्तर्गत विरस्तार कर लिये गये थे और अब वेकमें हैं।

मेरे साथीने और मैंने आनवृत्त कर लॉर्ड महोदयसे मुकाफात नहीं माँगी है क्योंकि हम इस वकत साम्राज्य-सरकारको कष्ट दिये बगैर उस कठिन समस्याका समाधान प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहे हैं, बिचको लेकर हम यहाँ आये हैं। लेकिन भूँक दक्षिण आफ्रिकी अधिनियमके

१ इन्डो-इकी महिलाओंके मताधिकारके लिए लड़नेवाली स्त्रियाँ।

२. न. ड. अन्वयिका और श्री. व. वेदिया, देखिए पृ. १८९।

मसजिदे (साउथ आफ्रिका ड्राफ्ट ऐक्ट) के सम्बन्धमें बुझाया गया सम्मेलन आज शुरू हो रहा है इसलिए हम सॉर्ड महोदयका ध्यान इस तथ्यकी ओर खीचना बांछनीय समझते हैं कि ट्रान्सवालके भारतीयोंके प्रत्यक्ष उक्त उपनिवेशमें बसे ब्रिटिश भारतीयोंको अर्बन्धीय कष्ट हुआ है और ब्रिटिश भारतीय नेताओंको उसके कारण अब भी गहरी चिन्ता है।

यदि हम इस प्रश्नपर सार्वजनिक विचारसे बचना चाहते हैं, ताकि गैर-सरकारी रूपसे समझौता करनेमें सामानी हो। इसलिए यदि सॉर्ड महोदय हम लोगोंको इस परामर्शसे कि हम उनके सामने अबतककी पूरी स्थिति रख सकें व्यक्तिगत मुझाफातके लिए समय देनेका अनुग्रह करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे।

आपका आदि
मो० क० गांधी

कलोनियल ऑफिस रेकॉर्ड्स २९१/१४२ तथा टाइप की हुई बस्तरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एस एन ४९५१) से।

१८२ पत्र सॉर्ड वॉशिंग्टनको

[अन्वय]

जुलाई २१ १९१९

जॉर्ज महोदय

मैं आपके इसी २ शायदके पत्रके लिए आपका बहुत ही आभारी हूँ। मुझे बहुत दुःख है कि मेरे पत्रपर टीका पता न था। बात यह है कि मेरे पास पत्रोंकी एक विशेष सूची है जो ट्रान्सवालके पिछली बार यहाँ आनेके समय तैयार की गई थी। कुमाठी पोस्टके जिनके लिए यह काम अभीतक गया है सूची-मुस्तिकाको देना और आपके नामके सामने जो तीन पत्र दिने से उनमें से पहला पत्र लिख दिया। यह एक निश्चिन्तामें से लिखा गया था। बेइन्फोर्टका पत्र सूचीमें तीसरे स्थानपर था मगर शून्य काम कुछ व्यस्तताकी बदलनामें किया गया है, इसलिए उन्होंने बस्ववाजीमें पहला पत्र दे दिया और इसी बजहसे यह पकटी हो गई।

मैं आपसे सहमत हूँ कि श्री मेठीयनका पत्र उत्साह भंग करनेवाला है। साथ ही मैं समझता हूँ कि यदि आप किसी प्रकार दक्षिण आफ्रिकी राजनीतिकी व्यक्तिगत सम्पर्कमें जा सकें तो यह बात दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समिति (साउथ आफ्रिका ब्रिटिश इंडियन कमिटी) के अध्यक्षके रूपमें आप सामान्यके शिष्टाचार को कार्य कर रहे हैं उसके सम्बन्धमें आप कार्यवाई करनेकी इच्छासे लाभप्रद होगी।

१ जॉर्ज महोदय १४ जुलाईको जॉर्ज वॉशिंग्टन से की थी। पत्र पता है वह पत्र कलकत्ता पत्र लिखा गया था, जो अज्ञान नहीं है।

२ देखिए "मन मन पत्र" पृष्ठ ३०५-०६।

इसमें कोई शंका नहीं कि संघके अधीन ब्रिटिश भारतीयोंको समस्त दक्षिण अफ्रिकामें भारी सफ़्टका सामना करना पड़ेगा।

मैंने माननीय सॉवरको भी पत्र लिखा था^१ उन्होंने उसका कोई उत्तर नहीं दिया है। इससे मैं खयाल करता हूँ कि उनका हस्त-अक्ष भी नहीं है जो बहाजमें था।

आपने सर डब्ल्यू सी-वानरसे निम्ना स्वीकार किया है इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। आपके मूख्यवाक्य समयपर फिटना भार है इसको मैं मजबूत भाँति समझ सकता हूँ। इसलिए जो लोग आपको जानते हैं कि उन सबके लिए और भरे छापी तथा मेरे लिए यह कठोरतामय शब्दोंकी बात है कि आप अपने अनेक कर्तव्योंका पालन करते हुए भी ट्रान्सवाल और दक्षिण अफ्रिकाके अन्य भागोंके ब्रिटिश भारतीयोंके प्रश्नपर इतना ध्यान देनेका समय निकाल सके हैं।

मैंने जॉर्ज डॉनर के निजी सचिवको एक पत्र लिखा दिया है, जिसमें उनसे व्यक्तिगत संकेतोंके लिए समय माँगा है। ऐसा ही एक निवेदनपत्र जॉर्ज डॉनरके निजी सचिवको भी भेजा है।^२

जॉर्ज महोदयका आज्ञाकारी सेक

जॉर्ज एंस्ट्रिख सी-सी एस-आई जी सी आई ई

कबल हौटल

कबल स्ट्रीट डब्ल्यू

दाइप की हुई बस्तरी अंशेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ४९५९) से।

१८३ पत्र 'साउथ अफ्रिका' को

[सम्बन्ध]

जुलाई २२, १९१९

महोदय

आपके अपने सम्पादकीयमें आप कहते हैं

की बाँकी बिनकी शोहरत दूरे लेटल और ट्रान्सवालमें है, स्वीकार करते हैं कि उनका और उनके साधियोंका आन्दोलन इंग्लैंडमें [उनके प्रति] सद्गामुक्ति रक्षणवालोंकी मजबूत शक्तियाँ जायेगा। प्रत्यक्ष कहना पड़ता है कि इन सद्गामुक्ति रक्षणवालोंके नाम बुर्जुआसि भारतके उच्च भयंकर आन्दोलनसे सम्बन्ध हैं जो पिछले कुछ दिनोंमें जगत्बहु रूपसे सामने आया है।

मैं उत्तरमें निवेदन करना चाहता हूँ कि मैंने रायटरके प्रतिनिधिसे जो कहा था^३ सो तो यह है कि हमारा आन्दोलन जॉर्ज एंस्ट्रिख और उनकी समितिकी सहायके अनुसार चलेगा।

१ पत्र पत्र सम्बन्ध नहीं है।

२ देखिए पत्र जॉर्ज डॉनरके निजी सचिवको" पृष्ठ ३ २-०३।

३ पत्र सम्बन्ध नहीं है।

४ देखिए "वेदः राष्ट्रके प्रतिनिधियों" पृष्ठ २०९।

लॉर्ड एंन्टहिल्ल और उनके सहयोगियोंके उस आश्वोसनसे सम्बन्ध होनेकी राबर मुझे नहीं है जिसकाप 'भारतका संपंकर आश्वोसन' कहते हैं। इसके सिवा अनाक्रमक प्रतिरोधियों-पर अपने अन्त-करणके अतिरिक्त किसी औरकी मर्जी नहीं बसती। वे स्वायत्त जिस बातके बहिष्कारी हैं उसे हस्तगत करनेके लिए शपथ-बन्ध है और उसे पानेके लिए व्यक्तिगत कर्षोंको किसी भी सीमा तक सहन करनेके लिए तैयार है—मृत्यु भी इस सीमाके बाहर नहीं है। सच्चे सारवाग्रहकी कसौटी अपना बहिष्काम है, दूसरोंका नहीं।

[आपका आदि
मो० क० गांधी]

[अंग्रेजीसे]

इंडियन ओपिनियन २१-८-१९०९

१८४ पत्र एच० एस० एस० पोलकको

[अन्त]

बुधवार २२ १९ ९

प्रिय हेनरी

मुझे कोई बहुत अचरजका समाचार नहीं देना है। श्री अमीरखानी जो घर रिचर्डसे निके वे कल होटल आये वे और कुछ आसान्वित बिसाई देते थे। घर विस्मयम भी-बार्नर और श्री मॉरिसन भी होटल आये थे परन्तु वे केवल सच्ची स्थिति समझना चाहते थे।

मैं इसके साथ लॉर्ड एंन्टहिल्लके एक पत्रकी नकल भेज रहा हूँ। पत्र काफी स्पष्ट है। मैंने उपनिवेश-अंग्रेजीसे और भारत-अंग्रेजीसे भी व्यक्तिगत भेंटकी प्रार्थना की है। आजके मॉनिंग पोस्ट में इस आशयका एक बहत्त्व्य प्रकाशित हुआ है कि मेरभाबपुर्ष एधियाई कानूनका नियन्त्रण गवर्नर जनरल और परिषदके हाथोंमें होना प्रांतीय परिषदके हाथोंमें नहीं। मैं नहीं जानता कि इसका अर्थ क्या है इसका अर्थ बहुत-कुछ भी हो सकता है और कुछ भी नहीं हो सकता।

श्री मेरीमैन जिनके पत्रका उल्लेख लॉर्ड एंन्टहिल्लने किया है कहते हैं कि वे इस दृष्टाको प्रकट कर देनेके अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकेंगे कि बहिष्क आत्मिकी राजनयिक विन उधार सिद्धान्तोंको माननेका दावा करते हैं उनके विपरीत कोई कानून न बनाया जाना चाहिए। हम स्टैंडर्ड मिल चुके हैं। जहाँने भी जनरल स्मट्ससे मिलनेका दावा किया है। हम दूसरे जिन कोयसि निके हैं उनके नाम देकर आपको परेषाग करनेकी जरूरत नहीं है। जब यह पत्र आपके पास पहुँचिया तबतक व्यक्तिगत बातचीतका परिणाम प्रकट हो चुकेगा। इसलिए मैं उसका पूर्वाभास देना नहीं चाहता।

१ एच ही बहिष्कय मरणमें नरतककारी कार्यवाहीसे है।

विशेषकर मॉरिसन को श्री अमीरखानीके दुरिष्णय कोकेअके प्रिंसिपल थे; वेकिल एच ए एच १८५।

२ एच एच एच (१८९९-१९१२) अतिरिक्त एच एच और रिन्गु आदि रिन्गुपुत्रके उपासक।

मुझे भरोसा है कि आप अपने भारत पहुँचनेका तार दे देंगे। खेद है कि आप जिस जहाजसे भारत जानेवाले हैं उसका नाम मुझे मालूम नहीं है। किन्तु मैं बफ़्टरीको एक तार भेज रहा हूँ ताकि वह पहलेसे कुछ इन्तजाम कर लें।

मिस्त्री वहाँ परसों वा चायेगी। माताजीने तो मकान भी किरायेपर ले लिया है। उसमें दो सोनेके कमरे और एक बैठक है। किराया एक पाँच प्रति सप्ताह है। उनको वही ठहराया जायेगा लेकिन वे सोम ज्ञाना माताजीके साथ सामेंगे। यह व्यवस्था मुझे बहुत उपयोगी मालूम होती है। इससे मिस्त्रीको पूरा आराम मिल जायेगा। अजी मौसम बहुत अच्छा है और अच्छीकिए बहुत ही अनुकूल सिद्ध होना चाहिये।

मेरा ख्याल है कि मैं आपको प्रो. भास्कारकरका नाम बताना भूल गया। आप जानते ही हैं वे आजके एक सबसे बड़े संस्कृत-पंडित हैं। मुझे विश्वास है कि आप पूना जायेंगे तब आपको उनसे अवश्य मिलना चाहिये। आप उनको इस प्रश्नपर उनके एकांत-वाससे विरत भी कर सकते हैं। कुछ भी हो आपका उत्सव सम्पर्क स्थापित करना अच्छा ही होगा। आप भी तानकरके लड़केंसे भी मिलें। उसका ठिकाना गिरगाँव है।

मैं आपको उन लोगोंके नामोंकी सूची भेज रहा हूँ जो बॉटोमन संसदीय सिष्टमम्बरकी श्रावणमें शामिल हुए थे। समारोह घानवार वा लेकिन मैं उससे बहुत दुःखी होकर बचा बामा। श्रावणके कमरेमें बहुत भीड़ थी। श्रावणमें तीन बटे लगे। श्रावणके गिलासोंमें से उठनेवाली भाप और लगभग ३ व्यक्तिमेंके सिगारों या सिगरेटोंके बुएँका मतपर बहुत बुल बघर पड़ा। मेरे मुँहसे आप ही आप निकल पड़ा — सम्म बर्बरता। और उससे मेरे सामने कविर्षों द्वारा बर्णित राखसी भोजोंका बुद्ध्य उपस्थित हो गया।

पत सप्ताह मामकेका जो विवरण आपको भेजा गया था वह अजी प्रकाशित नहीं हुआ है। सखिप्त विवरणका संशोधन कर दिया गया है। मैं इसके साथ उसकी एक लच्छ भेजता हूँ और प्रो. मोसलेको किले अपने पत्रकी लच्छ भी।

टाइप की हुई बफ़्टरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-लच्छ (एस एन ४९५६)से।

१. यह लच्छ नहीं है।

२. डॉ. रामकृष्ण गोपाल नागरकर (१८३०-१९२५); महान् मान्य विद्यावाचपी मंडळके विद्वान् उपाध और सर्वेके सुपरक, परमिड और वेदिकविद्वान् विस्वोत्तर कलेक पुस्तकालयके अध्यक्ष।

३. मनमोहन लाल (१८३०-१९२५); इंडियन ओरिएण्टल कलेज के अध्यक्ष और संजीवनीके उपाध्यक्ष। उनकी मृत्यु १९०२ में हुई। देखिए कलेज ५, पृष्ठ १८०-१।

४. देखिए "महाराष्ट्रवासी मराठीमेंके सामकेका विवरण" पृष्ठ १८०-१।

५. देखिए "एन. नागरकर" पृष्ठ ५२२-२४।

६. एका मासक होता है कि यह लच्छें दित भेजा गया था और उक्त लच्छें भी उही दिनांक की गई थी। देखिए बंगल खीमेक।

सम्बत एस २०५५
बुधवार २१ १९ ९

प्रिय प्रोफेसर पोखरे

जबतक यह पत्र आपके पास पहुँचिगा वही पोलक भारतमें होंगे। यहाँ हमारा काम बहुत कठिन है किन्तु यह आपके लिए नहीं बर न होगी। मैं इसका उम्मेद केवल मुमिकाके रूपमें करता हूँ ताकि मैं आपसे इस ओर विशेष ध्यान देनेका समय निकालनेकी प्रार्थना कर सकूँ।

मैंने इसकी बहुत चिन्ता है कि हमारे नेता इस संदर्भके राष्ट्रीय महत्त्वको समझें। वही पोलक यह कार्य करनेके लिए एक निश्चयी कार्यकर्ताके रूपमें भेजे गये है। हम ट्रान्सवाकमें जबतक कष्ट मोक्त रहेंगे जबतक श्वाभ नहीं मिश्रता किन्तु हम मातृभूमिसे जबतक वितना प्राप्त कर चुके है उसकी अपेक्षा बहुत अधिककी उम्मीद करनेके हकदार है।

वही पोलकका काम बहुत कठिन है। मैंने उनसे कहा है कि वे पूर्वत आपके निर्देशानुसार चले और मैं जानता हूँ कि आप उनके कार्यको मत्सहित हलका करनेमें कोई कोर-कसर न रहेंगे। हम व्यक्तिगत बातचीतके द्वारा समझौता करनेका प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु मैं वही स्वदृष्टको हतनी अच्छी तरह जानता हूँ कि मैंने इस बातचीतमें अधिक विश्वास नहीं है। हम धायव एक सप्ताहमें सुली कार्रवाई करनेके लिए वाप्य हो जायेंगे और यदि हमें कोई काम करना हो तो उस अवस्थामें यह विच्छिन्न बकरी हो जायेगा कि मातृ हमारि प्रार्थनाका समर्थन करे। क्या मैं आपसे माघा कर सकता हूँ कि आप बी-जुड बावदमक समर्थने वह करेंगे?'

मैं इसके धान एक अधिक कम्मे विवरणका संलीप जो हमने तैयार किया है, भेज रहा हूँ। यदि बातचीत असफल होती है तो उसका परिणाम प्रकट होवे ही यह संक्षिप्त विवरण प्रकाशित कर दिया जायेगा।

बुधवार आपका

मो० क० गोषो

माननीय प्रोफेसर गोखले एम एल सी
पूना

टाइप की हुई मूक अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (बी एन ४११) से।

१ श्री गोखले प्रसिद्ध मोडरेते कापी कार्य की वी और उनके २४ जनरले वरम मंगीजीको सिद्धा या —“वे (प्रसिद्ध गोखले) कोई वही व्यक्ति नहीं रहते केकिम ज्योले जल्दी घारी घटि और उल्ला कम्मे जेबोमे वे ही है। समझी जामककला वे कौदार करते है। कम्मे उर कीरोककल मिठार वी और कम्मेका वाद किा है, वी कत वदाम कल रहे है। कम्मे मंठ वावमय माने वी कथा है — कम्मे, पूना बरत, वहीश बरमरगत, म्दाम कम्मेका वू पी० नादि। वे ज्मिकमे घारी कवला करेगे। कत कम्मे कम्मे है। कम्मे उम्मे और एक सुयोका वहा कती हाल है। जम्मे वरं म्दाम है। जम्मेक वरं किता और म्मेरिमे वे कत कील ही गे है।”

१८६ पत्र श्रीमती बाँगलको

कम्पन एच डब्ल्यू

जुलाई २१, १९१९

प्रिय श्रीमती बाँगल^१

कुमारी स्लेसिन^१ मुझे बताया कि आप भारतीय महिलाओंकी एक समामें शामिल हुई थीं। इस समाचारसे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं जानता हूँ कि आप अपने उत्साहसे उन्हें प्रेरित कर सकती हैं और मैं यह भी जानता हूँ कि वे अपनी यूरोपीय बहनोंकी सहानुभूतिकी कितनी काज करती हैं।

कुमारी स्लेसिन आपको यह कि कामके बारेमें सारी जानकारी दे रेंगी। इसलिए मैं आपके कामके लिए आपको धन्यवाद देकर और आप तथा श्री बाँगल दोनोंके प्रति अपना सम्मान प्रकट करके ही यह पत्र समाप्त करता हूँ।

आब कभी आपकी इविमन मीपिनियन की और अधिक प्रतियोंकी जरूरत हो आप कार्यालयमें जाकर माँगें।

हृदयसे आपका

मो क० गांधी

[पुनश्च]

श्रीमती पोलक आज वा रही हैं।

बाँबीजीके हस्ताक्षरसे मुक्त टाइप की हुई मूल संदेशी प्रति (सी डब्ल्यू ४४ ८)से।
सीकल्प मद्रम माँगी।

१८७ सम्बन्ध

[जुलाई २३ १९१९]

डॉ० अब्दुल मजीद

कानूनके डॉक्टर सैयद अब्दुल मजीद जल्दी ही भारतको रवाना हो रहे हैं। उनके सम्मानमें एक अवस्था किया गया था। उसमें श्री हबीबु हबीब और मैं नियोजन पाकर गये थे। वहाँ प्रसन्नवश ट्रान्स्जार्नके भारतीयोंके सवालपर बातचीत बली थी। डॉ० सैयद अब्दुल मजीदने बाधा किया कि वे भारतमें इस सम्बन्धमें प्रयत्न करेंगे। बकसेमें कुछ यूरोपीय भी थे। श्री रिच भी मौजूद थे।

१ श्रीमती बाँगल बीहामिल्लनेमें भारतीय महिलाओंकी क्लार्व क्लरवी और "महिला दायर" शामिल करती थीं। वे और उनके सति श्री वसन्तीका काम करते थे भारतीयोंके बसनेमें सारी सिकलनी लेते थे।

२ क्लरवली थी।

बॉटीमनका' समारोह

तुर्कीकी संसदके कुछ सदस्य अंग्रेजोंके बड़े नेताजॉर्जि मॅट करनेके लिए यहाँ आये हैं। उनके सम्मानमें होटल वेस्टिनमें एक भोजन विवाह यथा था। सबस्योमें माननीय तस्काठ बे प्रमुख थे। दूसरे सदस्य थे—मुस्तफ़ा अरीफ बे बोबाद बे डॉ रिजा तौफीक बे मेहुमेन अली बे कुबेरबारे महमूद पाशा भीबाद बे सुलेमान कुशतानी मधीम मजकिमी अर्सेवी सासून अर्सेवी और फ़जल अरीफ अर्सेवी आदि।

इस समारोहमें सम्भव तीन सौ खोप होंगे। इसकी अध्यक्षता जर्ज ऑफ ऑस्कोने की। इसमें लॉर्ड कर्ज़न भी मौजूद थे। कोई पचास भाषीय होंगे। इनमें न्यायमूर्ति श्री अमीर अली मनाब इन्सुक मुस्क सैयद हुसैन बेकशामी मेबर सैयद हुसन घर मंचरजी भावनगरी आदि थे।

मुख्य भाषण लॉर्ड कर्ज़नका था। तुर्क सदस्योंकी ओरसे उत्तर देनेवाके श्री सुलेमान कुशतानी ईयाई थे। उन्होंने कहा कि तुर्कीके राज्यमें सभीको एक बराबर हक हासिल है।

बीमरका मुकदमा

श्री मदनलाल बीमरका मुकदमा आज (२३ तारीखको) पेच हुआ। मरामतमें हमें जानेकी मनाही थी। श्री बीमरने अपना बचाव नहीं किया इसलिए मुकदमा बहुत धीरी देर चला। उन्होंने यही जवाब दिया था कि मैंने देशकी मर्यादाके लिए हत्या की है और उसमें मैं कोई अपराध नहीं समझता। बड़े जजने उनको फाँसीकी सजा दी है। इस हत्याके सम्बन्धमें मैं अपना विचार बता चुका हूँ।^१ श्री बीमरका जवाब तो मैं सिर्फ बचपन-मरत या पागलोंका-सा समझता हूँ। जिन लोगोंने उनको यह अपराध करनेके लिए सिखाया होना वे ईश्वरके सम्मुख उत्तरदायी हैं और इस दुनियामें भी मूढहमार हैं।

बीमरके मुकदमेकी प्रतिक्रिया

श्री बीमरके मुकदमेसे सरकारकी निगाह इंडियन सोशियोजॉर्जिस्ट की ओर गई है। उस अवसरमें साफ़ बिना गया था कि वैधहितके लिए हत्या करना हत्या नहीं है। ऐसे बड़े केसको छापनेपर बेचारे मुद्दको चार महीनेकी कैदकी सजा दी गई है। जिसको सजा दी गई है वह निर्दोष और गरीब अंग्रेज है। उसको कुछ ज्ञान नहीं था। छपानेवाले पत्रिसमें बैठे हैं इसलिए उनको सरकार गिरफ्तार नहीं कर सकती। ऐसा करनेसे कुछ बेसुका उद्धार होनेवाला नहीं है। अबतक लोगोंमें कुछ भारी कष्ट-महन करनवाले पैदा नहीं होंगे अबतक भारतका उद्धार कदापि नहीं होगा है।

नेटाइका विष्टमण्डक

नेटाइका विष्टमण्डक अपने हलने पहुँचनेवाला है। अबतक संघ अधिनियम (यूनिफ़ एक्ट) लगाने स्वीकृत हो चुका होया। संघ अधिनियम सम्बन्धी बागचीत अभी चल रही

१ यह शब्द पूर्ण उच्चारणके संस्कार "कल्पान" शब्दके नामसे प्रचलित हुआ है। "कल्पान" की अंग्रेजीमें "कल्पान" लिखा जाता है और इसीसे अंग्रेजोंके शब्द निष्पन्न और कल्पक इत्यादि अर्थके उच्चारण अंग्रेजोंके उच्चारणके समान ही प्रचलित हुआ।

२. देखिए "कल्प" पृष्ठ ३-४२।

है। उसमें कोई बड़ा फेरफार होनेवाला नहीं है। ऐसा जान पड़ता है कि काबे लोपोत्ति सम्बन्धित कामुर्गोंमें फेरफार करना संभव-संभवके हाथोंमें रहेगा। इसमें कोई सार नहीं है। यही कहा जायेगा कि मरु नहीं गुजर गया माग-नाथ नहीं तो साप-नाथ सही। मुझे मय है कि नेतालका सिष्टमम्बस बहुत बिलम्बसे जाया जाता जायेगा। मैं यह नहीं मानता कि ऐसा न होता तो भी कोई जान हो सकता था।

डॉक्टर वस्तुर्हमाग

डॉक्टर वस्तुर्हमाग बहुत उद्योग कर रहे हैं। उन्होंने लॉर्ड जू से भी मेट की है। किन्तु उससे कोई काम होया ऐसा सम्भव नहीं जान पड़ता। श्री भाइतर बहुत प्रयास कर रहे हैं। उनके सम्मानमें एक समारोह २७ तारीखको इसी होटलमें किया जाता है, जिसमें बैठकर मैं यह पत्र लिख रहा हूँ।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २१-८-१९ ९

१८८. पत्र उप-उपनिवेश-मन्त्रीको

डम्परी एस डम्परी

जुलाई २४ १९ ९

सेवामें

उप-उपनिवेश-मन्त्री

उपनिवेश कार्यालय

ब्लाइट हाँस एस डम्परी

महोदय

आपके इसी तारीखकी २३वीं तारीखके पत्र सं २४३१९/१९ ९के सम्बन्धमें निवेदन है कि यदि लॉर्ड महोदयने मुझाकाठ से तो मेरे साथी और मैं दक्षिण आफ्रिकाके संजीकरवको जो जन्मी ही हो रहा है ध्यानमें रखते हुए, उनके सामने ट्रान्स्वाल्के ब्रिटिश भारतीयोंमें स्वेच्छया जो कष्ट-सहल किया है और अब भी कर रहे हैं उससे घलपल और प्रभावित स्थिति पैदा करेंगे। जिन ब्रिटिश भारतीयोंमें सार्वीक कष्ट या आर्थिक हानि सहनेमें अवसर होनेके कारण एशियाई पंजीयत अधिनिबम (एशियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) को पसन्द न करने-पर भी मान किया है, उनमें से ज्यादातरकी यह इच्छा थी कि हम लोग डम्परी जार्ज और बर्हा ट्रान्स्वाल् सरकारके मुख्य अधिकारियोंकी उपस्थितिसे आम उठाकर लॉर्ड महोदयके सामने भारतीयोंकी स्थिति इस आधाते पैदा करें कि वे इस मामलेमें मैत्रीपूर्ण हस्तक्षेप करेंगे और इन तरह यदि सम्भव हो तो उक्त स्थितिका अन्त कर देने जिससे संकड़ों निर्दोष ब्रिटिश भारतीयोंको अकल्पनीय कष्ट पहुँचा है।

ट्रान्सवालकं ब्रिटिश भारतीय हाई कौंसिल ट्रान्सवाल सरकारसे प्रार्थना कर रहे हैं कि वह १९०७ के एधियाई पञ्जीमन अधिनियम (एधियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) को रद्द कर दे और इस प्रकार उधसे उनका जो अपमान होता है उसको समाप्त कर दे तथा उन जन्म पिढा-माप्य भारतीयोंके बर्जेका खनास रखे जो ब्रिटिश परम्पराके अनुसार और केप बॉट फुड होय तथा अन्य ब्रिटिश उपनिवेशोंमें बालू छरीकेसे ट्रान्सवालमें प्रवेश पानेके इच्छुक हैं।

मै नम्रतापूर्वक आशा करता हूँ कि लॉर्ड महोरबय हमें ऐसा मौका देनेकी कृपा करेंगे जिससे हम स्वयं उनके सामने मामलेको रख सकें और इस प्रकार उध उद्देश्यको पूरा कर सकें जिसके लिए ट्रान्सवालके भारतीय समाजने इन्हें यहाँ विशेष रूपसे भेजा है।

जापका जावि
मो० क० गांधी

टाइप की हुई मूल अंग्रेजी प्रतिका फोटो-मकड कालोनियल मॉडिस् रेकर्ड्स सी बी० ५३६३ और दफ्तरी अंग्रेजी प्रति (एच एन ४९५८) से।

१८९ 'सिद्धमन्त्रकी यात्रा' [-४]

[जुलाई २४ १९११]

मरा सवाल है कि मैं यह सप्ताह घर ब्रिस्बियन की-बार्नर और श्री मॉरिसनसे जिस होठलमें हम ठहरे हैं उसमें अपनी बैठकी बात किस चुका हूँ। उन्होंने सहानुभूति प्रकट की। उसके बाद हम मेजर रीयर हुयेन बेकशामीसे मिले। उन्होंने मजूर किया है कि बिलता उनसे हो सकेगा सतना प्रयत्न करेंगे। कुमारी बिलरबॉटमकी मार्शंट श्रीमती टीडमैन नामक एक महिलासे भी मिले। इस महिलाने एक डचसे ब्याह किया है। श्री टीडमैन बहूके एक डच बखबारमें काम करते हैं और बगरर बोबा जातिको जानते हैं। उन्होंने बताया है कि वे बगरर बोबासे मिलेंगे। हम एक पत्रकार श्री ब्राउनसे भी मिले। इन्होंने पिछली बार (१९११) हमारी सहायता की थी।

श्री घेदबार नामके एक पारसी है। उनके सम्मानमें पारसी अनुयतने एक भोज दिया था उसके सम्पन्न घर मचरबी से। उस समारोहमें हम भी नियमित थे। उसमें भारतीयोंने हमें सहायता देनेके सम्बन्धमें भाषण दिया। हम लोगोंको और भी रिश्को इस विषयमें जो धन्य कहनेका समय दिया गया था।

हमने रिष्क ऑफ रिष्कूब के सम्पादक श्री स्टेडसे भेंट की। उनका भी स्मद्घसे अच्छा सम्पर्क है। उन्होंने कहा है कि वे भी स्मद्घसे मिलेंगे।

हम भारत-कार्यालय (इंडिया ऑफिस) के सहाय्य श्री मुण्टसे और गवाब इमबुड मुख् रीयर हुयेन बेकशामीसे मिले। हमने उनको सारी स्थिति समझाई है।

१ इंडियन ओपिनियनमें लख और अनेके अंग्रेजोंके अंग्रेज कर "इन्डियन कमेन्सले सिद्धमन्त्रकी यात्रा" का विषय था, क्योंकि लॉर्ड रिने "भारत कमेन्सले सिद्धमन्त्रकी यात्रा" की-छठे का दृष्टी निरव-मार्ग थी प्रकटित होने लगी थी। कैपिन का मार्ग हम से रहे है, स्थिर की-गंभीरी दृष्टि दिया था अंग्रेजोंका मूल अंग्रेज ही रहा था है।

इतके अतिरिक्त दूसरे सोपोंसे भी मुझाकाठ हुई है किन्तु वह महत्वहीन है, इसीलिए उसका हाक नहीं है रहा है।

हमने कौंटे एन्टिहिस्की घसाहसे कौंटे कू भीर कौंटे मॉसेसि भेटका समय मोंना है। कौंटे कू ने बनाव दिया है उसमें मेटका कारण पूछा गया है। हमने उसका बनाव नेत्र दिया है।' वे मिस्सेये या नहीं यह खबर अगले हल्ले मालूम होगी।

मैं ज्यों-ज्यों अनुभव प्राप्त करता जाता हूँ ज्यों-ज्यों तथ्यांकित बड़े लोबोंसे और जो सबभूष बड़े हैं उनसे मिसकर ऊबता जाता हूँ। ऐसा लगता है कि इतनी मेहनत फिजूल की। सभी अपने-अपने विचारोंमें व्यस्त दिखाई देते हैं। सत्ताधारियोंके मनमें सच्चा स्वाम्य करनेका विचार कम ही दिखाई देता है। उनकी अपने परको कायम रखनेकी चिन्ता सभी है। एक या दो लोबोंसे भेंट करनेके प्रयत्नमें तमाम बिन चला जाता है। उन्हें पत्र लिखना होता है उसका जवाब देना होता है उसकी पहुँच देनी होती है और तब उनके घर जाना होता है। एक उत्तरमें है तो दूसरा बलिण में। यह सब करनेके बाव भी कुछ मिस्सेयेकी भासा कम होती है। स्वापकी दृष्टिसे मिच्छना होता तो कबका मिल जाता। बात केवल मयसे देनेकी रही है। ऐसी स्थितिमें काम करना सरयाग्रहीको अच्छा नहीं लगता।

इतनी मेहनत करने और इसमें बहुत-सा रूपया नष्ट करनेकी अपेक्षा क्या कष्ट भोगना मैं बहुत हब तक अच्छा मानता हूँ। अड़चनें होनेपर भी माँष मंजूर हो जाये तो मैं समझूँगा कि हमने राहत पानेके लिए चिठना कष्ट सहन किया छठीसे यह मिठा है। यदि हमारी भाँग मजूर न होती तो मैं समझूँगा कि सभी अधिक कष्ट सहन करनेकी जरूरत है। कष्ट-सहन बीसा रसायन मुझे दूसरा दिखाई नहीं देता। किसी अवसंस्त दस्ताकी आवाज भी कष्ट-सहनकी पुकारकी बराबरी नहीं कर सकती। कष्ट-सहनकी पुकारकी सुनवाई हुए बिना न रहेगी। जिन्हें कष्ट भोगना है उन्हें वह कहकर बतानेकी जरूरत नहीं है। मैं मानता हूँ कि कुछ तो अपने-आप बोधता है। और मैं प्रत्येक भारतीयको सजाह देता हूँ कि उसको कुछसे गाथा बोड़ना है। बाकी तो पानीका बूझनुका है। शिष्टमण्डलपर आसा कम बनानी चाहिए। यह बात याद कर लेनी चाहिए कि अपने बलके समान दूसरा कोई बल नहीं है और जेल जानेको तैयार रहना चाहिए। जीव बस इसीमें मिलेगी।

दूसरे सहर्से जो तार मिले है वे उपनिवेश-कार्यालय और भारत-कार्यालयको सेव दिने मये है।

कुसमथ

उसी ऐसा मानते हैं कि शिष्टमण्डल कुसमथमें आना है। कुछ दिनोंमें कल्पसे सब बड़े बड़े लोग बसे जावेगे। वे अबस्त महीनेमें सीरके लिए निकल जाते हैं। इसलिए कोई शार्वजिक काम करना ही तो उसको करना मुश्किल है। ऐसी विषम स्थिति होनेपर भी शिष्टमण्डल किसी दूसरे समयमें नहीं जा सकता था। जब बलिष आधिकारके दूसरे लोग आये वे तनी हमारे जानेकी जरूरत थी। इसलिए मठीबा यह निकला कि यदि जाननी हलचलसे कुछ न बन पड़ा तो बूली हमबलका मठीबा बहुत ही कम निकलनेकी सम्भावना है।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन, २१-८-१९१९

लॉर्ड महोदय

मैं आपके इसी २४ तारीखके पत्रके लिए आभारी हूँ।

मैं श्री साबरसे उत्तर न मिलनेका यह बर्ष नहीं लगाता जो आपने बताया है क्योंकि मैंने उनको यह सूचना-मात्र ही दी कि आप उनको सम्भवतः पत्र लिखेंगे। इसलिए मुझे लगता है कि वे अब भी सुनने-समझनेको जैसे ही तैयार हैं वैसे ही मैंने उन्हें जहाजमें पाया था। मैंने आपको बताया था कि श्री साबर श्री मरीमनसे अधिक उत्साहमें हैं।

श्री हामी हबीब और मैं लॉर्ड मॉर्रसे जामगी मेट करके अभी-अभी लौटे हैं। लॉर्ड महोदयने हमारी बातपर एहानामुविषे विचार किया और कहा कि वे लॉर्ड कू को लिखेंगे और मेरे कहनेपर उन्होंने श्री स्मट्ससे इस प्रश्नपर बातचीत करना स्वीकार कर लिया। लॉर्ड कू ने अभी भेजका समय नहीं दिया है किन्तु उन्होंने हमसे कहा है कि भेजनें हमें जिन मुद्दोंपर बर्बाद करनी हैं उनको हम लिखकर भेज दें। जिस पत्रमें ये बातें ही पर्य ही वह अनिवारको बचा गया।

सर रिचर्ड डॉलोमनने एक घोषणीय पत्र भेजा है। इसमें उन्होंने कहा है कि वे सारे प्रश्नपर श्री स्मट्ससे बातचीत कर चुके हैं, किन्तु श्री स्मट्स सम्बन्धमे कार्यमें बहुत व्यस्त रहेंगे इसलिए उनको निर्णय करनेमें कुछ समय लग सकता है। मैं श्री स्मट्सको बहुत अच्छी तरह जानता हूँ इसलिए यह निश्चय कुछ असंभव है, क्योंकि जिन विषयों विचलित एकत्र मामलोंमें उनसे प्रार्थना की है उनको उन्होंने अनेक बार टाका है। लॉर्ड मॉर्र और, अगर लॉर्ड कू ने मंजूर कर लिया तो उनसे भी मेटके बलाबा हम कोई निश्चित विवरण पेश करना ठीक समझें ता एक छोटा विवरण बिलकुल तैयार है। मैं उनसे प्रचारित करनेके लिए ज्ञापना नहीं है क्योंकि बातचीत चल रही है। किन्तु बातचीत चलनेसे हमारे ऊपर

१ लॉर्ड एंस्ट्रिलको सोच था कि वह रिशमे काम करनेसे उन्हें काम नहीं ही लगता।

२. रेविय "पत्र जन जम्विसेस मर्यादो" पृष्ठ ३१०-२११।

३. लॉर्डमैने मान्यवक एक विवरण देवार कर दी जिना है, वह यह ज्ञान लॉर्ड एंस्ट्रिलको मन्त्रम न ही लौटिके कहेंगे करने २४ सुबहके कने वह लगान दिना था कि लॉर्डमैने "राज्य-उत्तरात् और कर्मिणी उत्तरात्के अधिकारियोंके" हेतुके जिन् लया सम्पत्त कलत्की बालकरके क सिन् कने सम्पत्त एक बहुत संक्षिप्त और एक विवरण देवार कर के। वह उत्तरात्के कने ही लख संक्षिप्त ही और बरि में एकत्र हूँ तो मैं कहूँगा कि बस जसनी लोक सम्पत्तमे था काल ६ कने अधिक और वह उत्तरात् हो कि एत ज्ञानके सिन् लको केर है और कर्मिन् संज्ञा कने करवा कर्तः है लया वह भी लौटिके है कि उत्तरात्के परलौक द्दिन बाकिउक संकीरकधी नाम सुर्विमे विरुद्ध के एक फिर बस एक कलत्कका ज्ञानविम उत्तरात्की उत्तरात्के परिनिर्देश, एत वेदमें जाने हुए जम्विसेस प्रतिनिधियोंके और कलत्कको भेज लखे हैं।" रेविय "राज्य-उत्तरात्की उत्तरात्के मन्त्रिका विवरण" पृष्ठ ३८०-३।

बनावबन्दी मरने ही लागू होती हो इस कार्यमें जो हमारे मित्र हैं उनपर तो यह लागू नहीं हो सकती। यदि आप या बनेक छोकर-नेता मित्रकर लॉर्ड कू को मिलें और उनसे ट्रान्स्वाखके मन्त्रियोंपर अपना उत्प्रभाव डालनेका अनुरोध करें तो क्या हमारा उद्देश्य सिद्ध न हो जायेगा? लॉर्ड कू ट्रान्स्वाखके मन्त्रियोंसे कहें कि जिन ब्रिटिश भारतीयोंने आपके देशके लिए इतने मारी और इतने भीषण कष्ट छोड़े हैं उन्हें छोटी-मोटी रियायतें देकर अपने संघ-निर्माणको गौरव प्रदान कीजिए।^१

धीमानने घामर ध्यान दिया होया कि मूक मित्रापी-संरक्षण संघ [रेबॉरिजिनुड प्रोटेक्शन सोसाइटी] की ओरसे एक डिप्टमन्टस इन्डिअन आफिरी प्रबानमंत्री और अन्य छोकर-नेताओंसे मिलनेवाला या मीर यह केवल इसलिये नहीं मिला कि सर चार्ल्स डिल्ड' जो डिप्टमन्टस प्रोटेक्शन करनेवाले थे उन लोगों द्वारा नियत समयको स्वीकार नहीं कर सके।

मुझे निश्चित लगता है कि यदि आप जब भी वी मेरीमैन और भी साबरसे या उनसे न हो सके तो भी बोधा मीर स्मट्ससे बातचीत करनेका प्रयत्न करें, तो इससे हित ही हो सकता है। मैं यह भी कहूँ कि समझौता करना बहुत-बहुत सर जॉर्ज फेयर' और सर पर्सी फिट्च पैट्रिकके हाथमें है और यदि आप उनसे मिल भी सके तो मुझे विश्वास है कि समस्याके उत्तोपजनक हलका कोई मार्ग निकल जायेगा।

मैं इंडियन ओपिमिजन के नये बंकरकी ओर आपका ध्यान विशेष रूपसे आकर्षित करता हूँ। इसमें तीन सम्बन्धनीय प्रार्थनापत्र^२ और भारतीय डिप्टमन्टस-सम्बन्धी तथ्य विने पये हैं। बाह्य है भीमान अपना इतना समय देनेके लिए मुझे क्षमा करें।

आपका भारि

टाइप की हुई बपवटी बंधेकी प्रतिकी फोटो-नकल (एच एन ४९९) से।

१. एल. २८ सुझाविके तममें लखर कठर हेते हुए लॉर्ड डेविलिजने लिखा था "मैंने कबतमें मेरा यह कहला डीज है कि दक्षिण आफिरी-विषयक (मिड) को सम्बन्धित करनें उपाय करी है। इस उत्तरदायक निम्नलिखित प्रयत्न करी करता। कबलत करनी ही है कि ट्रान्स्वाख-संरक्षण समितिके विविध कार्यके तममें का अधिनाईका जन्म करने और भारतीयोंकी शिकायत दूर करनेका इरादा बोधित करने उत्तरमें विषयसम्बन्धी लीकुरिजको गौरवामित करे।"

२. सर चार्ल्स डेविलिजके लिख (१८४९-१९११); राजनीतिक, केवल, उत्तर-तरल और उप-विषय-सम्बन्धी, १८८०-२।

३. (१८५९-१९१५); आत्म-साक्षिक और सुझावसम्बन्धे विषयसम्बन्धी; दक्षिण आफिरीकी सुद(१८५९-१९) में देना की।

४. (१८५९ १९११); यह आत्म-साक्षिकी और दक्षिण आफिरी-सम्बन्धी कई उत्तराधिक केवल; सर लॉर्ड फेयर और वे ट्रान्स्वाखक सम्पत्तिवादी समितिके सुझाव करल थे।

५. वे ट्रान्स्वाखकानी बसतीमें द्वारा सञ्चाली, बसतवारी सैरोमी तथा बसत वेन्डर लोड बॉमलिके सम्बन्धको लेने पये थे। दक्षिण अफिरिक १५।

१९१ पत्र सॉड मॉर्सेके निजी सचिवको

कन्दन एच डब्ल्यू
जुलाई २६, १९९

निजी सचिव

परममाननीय भारत-मंत्री

व्हाइट हाउस एच डब्ल्यू

महोदय

महि आप नीचेका [पचास] डॉर्ड मॉर्सेकी सेवामें पेश कर दें तो मैं आभायी होऊँगा। डॉर्ड महोदयने श्री झाजी इबीबको और मुझे जो खानगी मुखाकाठ^१ देनेकी कृपा की थी उसमें समयाभावके कारण मैं जो कहना चाहता था वह अब नहीं कह सका। इसमिए मैं अपने साथीकी तथा अपनी ओरसे कहना चाहता हूँ कि भारतीय समाज और ट्रान्सवाल सरकारके बीच जो दो प्रश्न — अर्थात् एचिवाई कानूनका रद्द किया जाना और शिक्षित ब्रिटिश भारतीयोंके हर्षका जो आचार अन्व उपनिवेशोंमें है उसी आचारपर उसे कायम रखना — अभीतक अनिर्णीत हैं वे भारतीय समाजकी पबित्र प्रतिभाके कारण सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। परन्तु इसका वह अर्थ नहीं है कि ब्रिटिश भारतीय ट्रान्सवालमें अन्व नियोज्यताओं — जैसे बनीतकी निष्क्रियता रखने और दूरमार्गमें सवार होनेपर कभी रोक बाधि — के बारेमें अपने आपको पीड़ित अनुभव नहीं करे।

किर भी हमारा अवाक है कि भारतीय समाजने जेलखानोंमें जो सजा काटी या अन्व व्यक्तितगत कठिनाइयाँ सही हैं वो इन सबकोंको तय करानेके लिए जतनी नहीं मिलनी कि उपर्युक्त दोनों शिकायतोंको दूर करानेके लिए। लेकिन ब्रिटिश भारतीय अन्व नियोज्यताओंको दूर करानेके लिए कहीं साबतोंको काममें छाटे रह्ये बिन्हे उन्होंने अबतक अपनाया है। परन्तु उपर्युक्त दोनों शिकायतें अन्व शिकायतोंसे अलग कर ही गई हैं क्योंकि इनसे उन्हें मर्याद करण हुआ है और अबतक कोई ठीक समझौता नहीं हो जाता अबतक यह कष्ट होया रहेगा।

मुझे और मेरे साथीको मरौसा है कि डॉर्ड मॉर्से इस मामलेकी ओर विशेष ध्यान देनेका समय निकाल सकें और जित जोयंकि शिष्ट उनके मुपुर्द हैं उनकी ओरसे अपना मैत्रीपूर्ण प्रभाव काममें लाकर सम्माननीय समझौता करा सकें।

आपका आदि,
मो० क० पाँचे

टाइप की हुई मूक बंधेकी प्रतिकी फोटी-नकल कम्पोजिबल ऑफिस रेकर्ड (सी जी ५१९१)से टाइपकी हुई बफ्टरी प्रिंट (एच एन ४९९१)से भी।

[जुलाई २९ १९०९ के बाद]

इस हफ्तेमें मुसाकातें बहुत कम हुई हैं। ब्यारावर समय बिड़ियाँ लिखनेमें और फूँकर डोपेसि मिलनेमें गया है।

मुख्य मुसाकत

मुख्य मुसाकातें कई मॉडसे हुई। हम दोनोंको उन्होंने निजी रूपमें मुसाकात दी। यह कहना मुश्किल है कि उनका उत्तर सन्तोषजनक मानना चाहिए या नहीं। मैं तो इतना ही किस सकता हूँ कि उन्होंने सहायता करनेका बचन दिया है।

कई ऐंस्टहिल सला मेहतत कर रहे हैं। उनका कार्य खानपी है इसलिए मैं कुछ बताता नहीं। उनका पूरी आसा है कि समझीठा होया। उनके साथ हमेशा पत्र-आबहार चलता रहता है। जब क्या होता है यह बखना रहा है। उनके पत्रको पढ़नेसे मालूम होता है कि जगने हल्ले कुछ खबर मिल जायेगी। यदि ऐसा हुआ तो तारसे खबर जायेगी इसलिए इस सेबक अपनेसे पहले परिणाम धायब मालूम हो जायेगा।

यदि परिणाम बख्त निकले तो किसीको यह न समझना चाहिए कि यह हंकीडमें खोर सगालेका ही परिणाम है। इसका कारण तो केवल बेल जाना ही समझना चाहिए। जो लोग यहाँ रहते हैं वे यह बात सहज ही बेल सकते हैं। बेलकी बात सुननेवाका अत्येक पीरा तान्बुब करता है। सहज किमे हुए कष्टोंका पन्मीरतम प्रभाव हुए बिना रह ही नहीं सकता। मुझे तो बार-बार यह अनुभव होया रह्या है।

श्री हानी हबीब श्री अब्दुस कादिर और मैं निमन्त्रण पाकर कुमारी स्मिथके पास गये थे। वहाँ सभी एक ही बात कर रहे थे बर्बात् बेल जानेकी। और बेल जानेकी बात सुननेका ही असर हाता था। मैं दिन-प्रतिदिन ऐसा बला आता देखता हूँ जब मनुष्यको फिर वह चाहे काका हो या पीरा अजियेसि न्याय नहीं मिल सकेगा। यदि यह बात ठीक हो तो आत्मबक बर्बात् सत्याग्रहके बलको पहुँचनेवाका दूसरा बक संसारमें है ही नहीं। इसलिए मेरी इच्छा है कि यदि यह पत्र अपने तक फैसला न हुआ तो भारतीय बेकोकी मर दें।

श्री अमस्तकी बहुत-से भारतीय भाई छूटे होंने। उन सबसे मेरी प्रार्थना है कि वे निर्भय होकर फिर बेल जायें। उन्होंने जो प्रब किया है उसे न छोड़ें। संसारमें जब ऐसी ही हवा चल रही है। छोटे और बड़े सबमें देशभक्तिकी भावना प्रबक हो रही है। इस भावनाके कारण बहुत-से बुरे काम किमे जाते हैं। जो सत्याग्रहका आभय डिये वे ही अपनी देशभक्ति दिखा सकते हैं।

[मुजरातीस]

इंडियन ओपिनियन २८-८-१९०९

[सन्देश]

जुलाई २८, १९९

लॉर्ड महोदय

सर मन्बरजीने जनरल स्मट्सको व्यक्तिगत पत्र लिखकर उनसे भेंटकी प्रार्थना की थी। जनरल स्मट्सका व्यस्तता कम होनपर उनको समय देनेकी रजामन्दी दिखाई है। इसका अर्थ बहुत-कुछ हो सकता है या कुछ भी नहीं हो सकता किन्तु श्रुति उसका अर्थ यह भी हो सकता है कि जनरल स्मट्स मामलेमें बिलम्ब करके हमारे कार्यकी सार्वजनिक चर्चाको रोकना चाहते हैं। इसविषय मुझे सम्यता है कि समय आ गया है जब हमें अपने विवरणको प्रकाशित करना चाहिए और अधिकारियों एवं विधिजनताको भी अपने कार्यसे अवगत कराना चाहिए। सर मन्बरजी इसके सहमत ही नहीं हैं बल्कि इसका आग्रह करते हैं। किन्तु जैसा मैंने अपने २६ तारीखके पत्रमें लिखा है मैंने इसका विरुद्ध मत प्रकट किया है। मैं आपके सम्मुख नई स्थितिको रचना और विवरणको प्रकाशित करनेकी बाध्यताके सम्बन्धमें आपकी सलाह मांगना अपना कर्तव्य समझता हूँ। क्या मैं आपको यह कष्ट दे सकता हूँ कि आप मुझे उत्तर दें।'

मैंने समितिकी बैठक बुलानेके सम्बन्धमें भी रिश्का पत्र देखा है। मेरा यद्यत्न है कि समितिकी बैठक अब आवश्यक है।'

आपका आदि,

[सो० फ० गांधी]

टाइप की हुई दफ्तरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-मकत (एस एन ४९९६) से।

१. लॉर्ड ऐंम्टहिलके द्वारा दिन पत्रकी प्रतिका तार दिया, जिसमें कहा था: "आजके कालके पहले कालमें विस्तृत पत्र लिखा है।" अपने पत्रमें उन्होंने कालके प्रकाशनेके प्रति अनिच्छा व्यक्त की थी। दैनिक एरिफिश १०।

२. लॉर्ड ऐंम्टहिलका उत्तर था कि इस समय समितिकी बैठकको कोई अतीवनी काम सिद्ध न होगी। अपने २८ जुलाईके पत्रमें मन्बरजी लिखते हैं कि कालमें लॉर्ड ऐंम्टहिलके लिखा था: "मैं इस मामले पर रीज वरीय रह दे रहा हूँ। अगर बैठकको कल तक होगी तो मैं आपको सूचित करा दूंगा।" लॉर्ड ऐंम्टहिलको इस दृष्टिकोण की दृष्टी और लॉर्ड गांधी और लॉर्ड क ने अनुभवगत होने वाले कलरात्री अनिच्छा यह मानना कम अने है कि इस सम्बन्धमें विचार दिया ही व्यक्त चाहिए। उन्होंने उत्तर लिखकर अपने लिखे हुए हैं और वे उत्तर लिखकर पर रहे हैं। एरिफिश पर यह लॉर्ड की सार्वजनिक दस्तावेजों का प्रकाशित या प्रकाशितपूर्व न होगा। मैं उत्तर देनासे पहले अपने निश्चयवाक्य हूँ और जबकि काल उपयुक्त निर्धार है। काल ही, जब समिति और मन्बरजीको लिखेंगे तो उनके लिखे हुए ही रहेंगे।" उन्होंने पर भी कहा था: "मैंने भी लॉर्डको भी पर लॉर्डको लिखा है और जिसे मैंने आगे दिया देनेके लिखे हुए है, उनसे पर यह उक्त हो जानेकी कि समितिकी को नवीं रूप में करवा है।"

लॉर्ड महोदय

द्रासबाबूके भारतीयोंके मामलेमें जिसे आपने अपना ही मामला बना लिया है आप बहुत कष्ट उठा रहे हैं। इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। मैंने आपका पत्र^१ पढ़ते ही यह धार^२ ले लिया था कि आपसे सच्चाहू किये बिना कुछ न किया जायेगा। मैंने उसमें यह भी कह दिया था कि मैं यह पत्र लिख रहा हूँ और विवरण भेज रहा हूँ।^३

शायद मुझे यह बात साफ़ कर देनी चाहिए कि मैं ज्यादातर पत्र जिम्हें ब्यथया मैं अपने हावसे सिखना पसन्द करता बौझकर लिखाता हूँ। इसका कारण यह है कि मेरी सिखावट बहुत सराब है और पढ़नेमें नहीं आती। मैं यह बात खेदके साथ स्वीकार करता हूँ।

मेरे साथीको और मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि जिन विधिष्ट व्यक्तियोंका उल्लेख आपने अपने पत्रमें किया है उनसे आप मित्र सिधे है।

मैं इसके साथ प्रूफ-स्वमें विवरण भेज रहा हूँ क्योंकि वह कल यह समझकर मुझको भेज दिया गया था कि आप उसे संजूर तो कर ही ज्ये। लेकिन वह आपकी सच्चाहू लिए बिना न तो छापा जायेगा और न किसीको भेजा जायेगा।

अब १९७ का कानून रद्द कर दिया जाने और मेरे सुझावे पये तरीकेसे द्रासबाबूमें हर साल ७ भारतीयोंको जाने देनेका बाधा कर दिया जाये तो मुझे निश्चय ही संतोष हो जायेगा। मुझसे ऐसा ही प्रश्न लॉर्ड मॉन्टेग्नी भी किया था। क्या मैं [जासा करूँ कि] द्रासबाबूकी संघर्षमें या प्रांतीय कौंसिलमें जहाँ भी हो [इस मामलेपर फिर विचार किया जायेगा] और प्रवासी कानूनमें ऐसा सुधार कर दिया जायेगा बिधसे सामान्य शिक्षा परीक्षाके अनुसार जैसी शिक्षा पाये हुए भारतीय द्रासबाबूमें जा सकें? ऐसे जोय ज्यादासे ज्यादा छ' जा सकें। लेकिन उनकी संख्या कानूनसे सीमित या नियमित न की जायेगी बल्कि प्रशासनिक कार्रवाईसे भी जायेगी। इसका अर्थ यह है कि प्रवासी-अधिकारी परीक्षा करी केकर साबूमें केवल ७ ही भारतीयोंको पाठ करेगा। जहाँतक प्रवासका सम्बन्ध है इस तरह जाये हुए भारतीय प्रवासी रजिस्ट्रेशन (पंजीयन) का सिनाल्टकी सभी कार्रवाईमेंसे बरी हूँगे। उनका रजिस्ट्रेशन उच परीक्षासे ही हो जायेगा जो सीमापर भी जायेगी और

१ लॉर्ड एंस्टहिलके २८ जुलाईके ७४ पत्रके लिए, जिनमें भारतीयोंकी बालोंका विवरण और लॉर्ड एंस्टहिल^४ अपने पत्रमें जो सुरे कल्पे हैं उनका उल्लेख मिलता है, देखिए परिशिष्ट १७।

२ वह धार कल्पन नहीं है।

३ देखिए "द्रासबाबूकी भारतीयोंके मामलेका विवरण" पृष्ठ १८०-१।

४ ५० वर्षों पहले कुछ समय का पत्र है, लेकिन कल्पनी पूर्ति नहीं करूँ
नहीं है।

जिन उन्हें प्राप्त करता होगा। मेरा खयाल है कि मैंने यह सारी स्थिति धर रिचर्ड डॉनोमनको छाक-छाक समझा दी है और यह भी सोचता हूँ कि वे इसे समझ गये हैं।

इसमें एक नहीं कि द्वाय्वाकालमें दूसरी सिकायतें भी हैं। मिस्त्रालके ठीरपर जमीन जायदाद रखनेपर रोक्के बारेंमें द्वाय्वाकालमें बँडनेके बारेंमें यादि। इस सम्बन्धमें हमें स्वाामी अधिकारियोंको और जापको भी सहायताके लिए कष्ट देना होगा। लेकिन जिन दो सिकायतोंको लेकर पिन्मण्डक करण जाया है उनमें और दूसरी सिकायतोंमें यह फर्क है कि इन दो सिकायतोंको लेकर बलाकर्मक प्रतिरोध किया गया है, जिसमें हमें अवर्धनीय कष्ट हुए हैं और अबतक वे सिकायतें दूर नहीं कर दी जाती या उन्हें दूर करनेके प्रयत्नमें एक-एक भारतीय मर नहीं जाता अबतक जहाँतक मेरे बसकी बात है, वह जारी रहेगा और हम कष्ट सहते रहेंगे। दूसरी सिकायतें बहुत पुठनी हैं उन्हें दूर करनेके लिए हमने कष्ट सहनेकी कोई सम्भार प्रतिज्ञा भी नहीं की है। इसलिए हम उसके लिए अबतक रुक सकते हैं अबतक इस मामलेंमें कोकमत तैयार नहीं हो जाता और लोगोंमें जो विरोध है वह मिट नहीं जाता। इसके लिए न हम कंगाल बनें और न द्वाय्वाकालकी जेबोंको भरें।

मेरे लिए तो यह बलाकर्मक प्रतिरोधमें जापकी बहुत बड़ी हिसबस्वीकी ' और—यै कहनेकी इजाजत चाहता हूँ—जापके उदात्त विचारों की भी कसौटी है। जाप मुझे यह कहनेके लिए समझा करते कि मैं यहाँ दक्षिण जाफिकामें या भारतमें ऐसे एक भी भारतीयको नहीं जानता जिसने राजद्रोहका—उसको मैं बिच स्ममें समझता हूँ—मेरी जैसी बड़ता बलिष्क करके सार विरोध किया हो। राजद्रोहसे दूर रहना मेरे भयका अंग है। मेरी जान बची बाबे तो भी मेरा इच्छे कोई सम्बन्ध न होगा। बहुत-से लोग अबतक बहुत-से भारतीय और बाल्मि-भारतीय बमबाबी और हिंसाके विरुद्ध अपनी तीब्र गुना चन्द-स्ममें या किसी बेजा कार्रवाईके स्ममें प्रकट करते हैं। लेकिन द्वाय्वाकालमें बिच बाल्मोसन्से मेरा ताबाल्म है वह बाल्मोसन् तो स्वतः ऐसे तरीकोंके बिनाक सबसे जोरदार और स्वाामी आपत्ति है। बलाकर्मक प्रतिरोधकी कसौटी स्वयं कष्ट सहता है, दूसरोंको कष्ट देना नहीं। इसीलिए हमने भारतके या किसी दूसरी जगहके किसी भी "राजद्रोही" तक से एक पैसा भी नहीं लिया है और अगर हम अपने सिद्धांतोंके प्रति सच्चे हैं तो हमें ऐसी सहायता निम्नली तो भी हम उसे स्वीकार करनेसे इनकार कर देते। हमने अबतक भारतीय जनतासे स्वयं-सेवकी सहायता न मांगनेका वास खयाल रखा है। बिदिध भारतीय संघका हिंसाब सभी देख सकते हैं। उसका जाप और ब्ययका बिबरण समय समयपर प्रकाशित और इंडियन ओपिनियन में बिजापित किया जाता है। भी जोक भी स्थिति और द्वाय्वाकालमें हमारे सार काम करनेवाले दूसरे प्रभुल ब्यक्ति इस बातको बहुत बखी तरह जानते हैं। मैं यह कहनेकी अनुमति चाहता हूँ कि बलाकर्मक प्रतिरोधकी कसौटाका अंग दक्षिण जाफिकामें हुआ है और उसका भारतके किसी बाल्मोसन्से कोई

१. यहाँ कुछ अन्ध मित्र गले हैं।
२. यहाँ एक बंधि मित्र पत्नी है।
३. देखिए अन्ध ७ परिशिष्ट ७।
४. जार्ज बिबिन्ड, द्वाय्वाकाल करनेके उत्तरी।

सम्बन्ध नहीं है। इसका अभाव हमपर, कभी-कभी विगुड़ अनाशामक प्रतिरोधमें विरक्त रणनेक कारण हमारे कुछ भारतीय मित्रों तीव्र आक्षेप भी किये हैं।

भाषा है, भाष मुझे इतनी निजी बातें कइने और इस पत्रका कसेवर बड़ानेके लिए क्षमा करेंगे क्योंकि यह अनिर्वाय था।

अगर इससे ज्यादा खुलासेकी या जानकारीकी जरूरत हो तो आप मुझ उसके लिए आयेगा हैं। मैं [बहु बेकर] आपके प्रति और भी ज्यादा आभारी हूँगा।

भी रिब बताते हैं कि इन स्पष्टीकरणमें आपकी समझमें सब बातें धाक-धाक न आवेंगी। व इतना और जोड़नेका मुझाब हैते हैं।

प्रवासी कानूनमें कासे या मोरे सभी प्रवेश करनेवाले लोगके लिए पिछा-परीक्षा रणी गई है। परीक्षा कितनी कड़ी हो यह बात प्रवासी-अधिकारीकी मर्जीपर छोड़ दी गई है। उसके लिए एक परीक्षा न कमी रही है और न अब ही है। इसलिए प्रवासी अधिकारी यूरोपीयोंके लिए एक परीक्षा रणता है और भारतीयके लिए दूसरी। यह धारण कभी-कभी यूरोपीयोंकी कोई परीक्षा ही नहीं किता बीसा कि नेटालमें प्राय होता है। इन तरह अग्न विवेकाधिकारण काम सेनेमें अदालतों कोई बल्लम्पानी नहीं करती। अतएव स्मट्मने कहा है कि मीत्रता प्रवासी-कानूनमें प्रवासी-अधिकारीकी मर्जीपर इतनी ज्यादा बातें नहीं छोड़ी गई हैं। अगर नहीं छोड़ी गई हों तो कानून आसानीसे बदला जा सकता है और उल्टे विवेकार त्रिठनी बातें छोड़ना आवश्यक हो छोड़ी या छुली है। मैंने भी दैलीकी मार्क एसा एक गुपार दे भी दिया है। मेरी पक्षमें उगने यह उद्देश्य सम्योप अतएव क्यसे गूरा हा जायेगा। भी स्मट्मने मेरा गुपार नार्मबूर नहीं दिया लेकिन उन्होंने कहा था कि वे उस अधिवेशनमें (पिछले जूनके अधिवेशनमें) कानूनमें फेरफार करना बाञ्छनीब नहीं समझते। प्रवासी अधिकारीको आबयक अधिकार निकनेपर पिछा-परीक्षाके अनुगार केवल छ ज्ञानीयोंकी ही देखने जाने देना है। अगर पात्रता भारतीय अर्जी दे तो वह उसे उगनी ऐसी पिछा-परीक्षा कैदर रर कर सकता है त्रिगमें परीक्षार्थी पात ही न ही छटे। आस्पेक्षियामें ऐसा ही दिया जाता है।

टाटा जी हुई इकाउि अंधजी प्रनिषी खोग-अफल (एम० एन ४१९८) ने।

१. अर्जी की कमी इतना ही नहीं था है।

२. एसा ही देना अनिर्वाय

प्रिय हेनरी

पिछले हफ्ते ज्यादा सोचोति नहीं मिल गया फिर भी काम बहुत हो गया है। लॉर्ड ऐंस्टहिल बहुत अच्छा काम कर रहे हैं उनका सम्पर्क एक मोर सर जॉर्ज फरार पत्ररफ स्मट्स और लॉर्ड सेस्बोरोसि रहा और डूचरी मोर लॉर्ड कू लॉर्ड मॉर्से लॉर्ड सैन्सडाउन और लॉर्ड कर्जनसे। वे स्वयं बहुत आशावान मालूम होते हैं। मैं आपको उनके नाम प्रेषित अपने सभ्ये पत्रकी' तक़्त भेजता हूँ।

सर मन्बरीन भी स्मट्सको भेटके लिए पत्र लिखा था और स्मट्सने बचन दिया है कि वे अपने ऊपर कामका बोझ कम होते ही उनको भेटका समय देगे। यह भेट एक माँगी गई थी जब यह मालूम नहीं था कि लॉर्ड ऐंस्टहिल क्या निश्चित कार्रवाई कर रहे हैं। बड़े पैमानेपर सार्वजनिक आन्दोलन आरम्भ करनेकी व्यवस्था भी की गई थी। मैंने उसकी सुरेखा अपने मस्तिष्कमें बना ली है किन्तु लॉर्ड ऐंस्टहिलक कामकी दकते हुए सब बातें रुकी हुई हैं।'

हमने लॉर्ड मॉर्सेसे सीमवारको भेट की थी। उन्होंने हमें लगभग आधे घंटेका समय दिया। नर चार्ल्स लायल' भेटके समय मौजूद थे। यह भेट व्यक्तिगत और अनौपचारिक थी। वे यह जानना चाहते थे कि क्या इस मामलेमें भारतमें बहुत आयेघ है। मने जवाब दिया कि बहुत है। मैंने यह भी कहा कि बम्बईमें समा नहीं हुई, इसका कारण यह है कि सर पीरोजसाहको हिनात्मक कार्रवाईका मय था। पिछोकी भी समामें जाने और कड़े भावना देनेसे रोका नहीं जा सकता था। मरी समयमें इस प्रानसे प्रकट हाता है कि भारतमें बहुत आयेघ है इसके बारेमें वे जगमुट्ट है या वे चाहते हैं कि समस्त भारतमें लोकमतकी आरधार अभिव्यक्ति हो। फिर भी उन्होंने बचन दिया है कि वे इन भेटका नार लॉर्ड कू को बना देये और स्मट्ससे भी मिलेंगे। आपको यह जानकर आश्चर्य होया कि सन्तानमें अतरफ स्मट्सकी उपस्थितिकी भी जानकारी उनको न थी और वे एंगियाई बनिधियन्तार की गई आपत्तियाके बारेमें सब-कुछ मूठ गये थे।

उपर, यदि कोप प्रभार' कुलार्ण ठो जाव सजाए करे यदि एता न हो तो विभिन्न संस्थाओकी आरसे प्रार्थनापत्र भिजवाये और यदि आरको समीप स्वयंसेबक मिल सकें ठा जाव एक संक्रिय प्रार्थनापत्रकर हज़ारों लोकिके हस्ताक्षर करवें। जाता है आपने आशाभाई

१ डेविड रिज्जो सीईए ।

२ डेविड रिज्जो १९ ।

३ (१८८५-१९९) ; लॉन्ग-मन्बरीन प्रकाशक ।

सम्बन्ध नहीं है। इनके अलावा हमपर, कमी-कमी विद्युत् अनाभ्रमक प्रतिरोधमें विस्फोट करनेके कारण हमपर कुछ भारतीय मित्रों तीव्र आक्षेप भी किये हैं।

भाषा है, आप मुझे इतनी निची बातें कहने और इस पत्रका कलेवर बढ़ानेके लिए काम करेंगे क्याकि यह अनिर्वाय वा।

अगर इससे ज्यादा कुसांघडी या जानकारीकी जरूरत हो तो आप मुझे उसके लिए आदेश दें। मैं [बहु देकर]^१ आपके प्रति और भी ज्यादा जानाटी हूंगा।

श्री रिच बताते हैं कि इस स्पष्टीकरणसे आपकी समझमें सब बातें साफ-साफ न आयेंगी। वे इतना और जोड़नेका सुझाव देते हैं।

प्रवासी कानूनमें कामे वा जाने सभी प्रवेश करनेवाले लोगोंके लिए शिक्षा-परीक्षा रखी गई है। परीक्षा कितनी कड़ी हो यह बात प्रवासी-अधिकारीकी मर्जीपर छोड़ दी गई है। सबके लिए एक परीक्षा न कभी रखी है और न अब ही है। इसलिए प्रवासी अधिकारी यूरोपीयोंके लिए एक परीक्षा रखता है और भारतीयोंके लिए दूसरी। वह चाकर कमी-कमी यूरोपीयोंकी कोई परीक्षा ही नहीं लेता बल्कि नेटालमें प्राम होता है। इस तरह अपने विवेकाधिकारसे काम लेनेमें अराजकें कोई हस्तग्राही नहीं करतीं। अंतरक स्मृतिने कहा है कि मौजूदा प्रवासी-कानूनमें प्रवासी-अधिकारीकी मर्जीपर इतनी ज्यादा बातें नहीं छोड़ी गई हैं। अगर नहीं छोड़ी गई हों तो कानून आसानीसे बदला जा सकता है और उसके विवेकपर जितनी बातें छोड़ना आवश्यक हो छोड़ी जा सकती है। मैंने श्री डैविसकी माफ़्ट ऐसा एक सुधार दे भी दिया है। मेरी रायमें सबसे बह उद्देश्य सन्तोष जनक रूपसे पूरा हो जायेगा। श्री स्मृतिने मेरा सुधार नामंजूर नहीं किया लेकिन उन्होंने कहा वा कि वे उस अधिवेशनमें (पिछले जूनके अधिवेशनमें) कानूनमें फेरफार करना सम्भव नहीं समझते। प्रवासी अधिकारीको आवश्यक अधिकार मिलनेपर शिक्षा-परीक्षाके अनुष्ठान केवल ७ भारतीयोंको ही देखमें माने देना है। अगर सातवाँ भारतीय नहीं दे तो वह उसे उसकी ऐसी शिक्षा-परीक्षा लेकर रख कर सकता है, जिसमें परीक्षाकी पाठ ही न हो सके। आस्ट्रेलियामें ऐसा ही किया जाता है।

टाइप की हुई बहूतरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एच एन ४९६८) से।

१. श्री पी. एम्. वाक्य ४३-४४ वा. है।

२. अर्थात् डैविसी भारतीयोंके मामलोंमें अल्पसंख्यक वर्गोंके एक प्रमुख प्रतिनिधि।

मिय हेनरी

पिछले हफ्ते क्यासा छोपोंसे नहीं मिल पाया फिर भी काम बहुत हो गया है। डॉर्ड एंस्ट्रिच बहुत अच्छा काम कर रहे हैं उनका सम्पर्क एक और सर डॉर्ड फेयर, बनरक स्मट्स और डॉर्ड सेल्बोर्नेसे रहा और डूधरी और डॉर्ड जू, डॉर्ड मॉर्से डॉर्ड सैम्पबालन और डॉर्ड कर्नसे। वे स्वयं बहुत आस्तावान मासूम होते हैं। मैं आपको उनके नाम प्रेषित अपने कम्बे पत्रकी' तफ़्फ़ मेबठा हूँ।

सर मंजरबीने भी स्मट्सको भेंटके लिए पत्र लिखा था और स्मट्सने बचन दिया है कि वे अपने ऊपर कामका बोझ कम होते ही उनको भेंटका समय देंगे। यह भेंट तक मांगी गई थी जब यह मासूम नहीं था कि डॉर्ड एंस्ट्रिच क्या निदिष्ट कार्रवाई कर रहे हैं। बड़े पैमानेपर सार्वजनिक आन्दोलन आरम्भ करनेकी व्यवस्था भी की गई थी। मैंने उसकी कम्प्रेसा अपने मस्तिष्कमें बना ली है किन्तु डॉर्ड एंस्ट्रिचके कामको देखते हुए सब बावें रुकी हुई हैं।'

हमने डॉर्ड मॉर्सेसे सोमवारको भेंट की थी। उन्होंने हमें आगमन आगे बढेका समय दिया। सर चार्ल्स कामल' भेंटके समय मीसूब थे। यह भेंट व्यक्तिगत और बनीपचारिक थी। वे यह जानना चाहते थे कि क्या इस मामलेमें भारतमें बहुत आदेश है। मैंने बताया कि बहुत है। मैंने यह भी कहा कि कम्बईमें घना नहीं हुई इसका कारण यह है कि सर फीरोजशाहको हिंसालक कार्रवाईका भय था। किसीका भी समामें जाने और कड़े भाषण देनेसे रोका नहीं जा सकता था। मेरी रायमें इस प्रश्नसे प्रकट होता है कि भारतमें बहुत आदेश है इसके बारेमें व अत्यल्प है या वे चाहते हैं कि समस्त भारतमें भोकरमतकी औरबार अभिव्यक्ति हो। फिर भी उन्होंने बचन दिया है कि वे इस भेंटका सर डॉर्ड जू को बता देंगे और स्मट्ससे भी मिलेंगे। आपको यह जानकर आश्चर्य होना कि कम्बतमें बनरक स्मट्सकी उपस्थितिकी भी जानकारी उनको न थी और वे एचिपाई अभिनियमपर की गई आपत्तियोंके बारेमें सब-कुछ भूक नय थे।

उम्बर, यदि लोग समार्यें बुलाई तो आप समार्यें करें यदि ऐसा न हो तो विभिन्न सस्वामोंकी औरसे प्रार्थनापत्र मित्रवार्यें और यदि आपको पर्याप्त स्वयंसेवक मिल सकें तो आप एक संक्षिप्त प्रार्थनापत्रपर हजारों लोगोंके इत्वाकर करवें। जाता है, आपने शरारमाई

१ इतिर पिछले छोलेक ।

२ इतिर पत्रिक १६ ।

३ (१८९५-१९९) X आंग्ल-भारतीय मन्त्रालय ।

मीरोबी और बंगाल व्यापार-सद (बैंगल बेम्बर ऑफ कॉमर्स) के अध्यक्षों की मित्रि बने प्रारंभता पत्रोंका' अनुवाद मुख्य-मुख्य भाषाओंमें करा किया होना और उसको दूर-दूर तक बँटवा दिया होगा। यदि आपकी उचित समर्पण प्राप्त हो तो हर जगह स्वयंसेवक आपकी मित्रि बने रहिए। वे इन प्रतिपत्तियों से बार्ने और बाँटें। उनको मस्त्रिओं मस्त्रिओं नाटककारों और ऐसे ही अन्य स्थानोंके पास ठीकाण किया जा सकता है।

मुझे आज आपके धारकी प्रतीक्षा है। उसके बाद आया है मैं आपको एक संक्षिप्त धार पूंगा। किन्तु यदि मुझे आज आपका धार न मिला तो मैं कल या सोमवारको स्वतन्त्र रूपसे धार है सकता हूँ। श्री आनन्धिया और अन्य दो व्यक्ति कल जा रहे हैं। श्री बन्धुब कारिब अब भी हमारे साथ इसी होटलमें ठहरे हुए हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप भारतीय निर्देशिकाएँ (डायरेक्टरीज) एक उपयुक्त अंग्रेजी-मुजराती और मुजराती-अंग्रेजी कोप और सम्बन्धी या पत्रनेकी दूधरी पुस्तकें जो बसिण आफिकामें नहीं मिलती के लिये। श्री गोससेसे हमारी शिक्षा-योजनाके सम्बन्धमें भी बातचीत करें। वे बहुत बड़े शिक्षाशास्त्री हैं इसलिये उपयोगी मुशावरे से सकते हैं। मेरा खयाल है आप 'जगतलासके' सहयोगसे बम्बईमें एक एजेंसी खुलवा सकते हैं और चाहे तो आप नटेश्वरसे' कोई निश्चित करार भी कर सकते हैं। इससे हमारे विचारों और मठकि प्रचारमें भी सहायता मिलेगी।

मिठी धनिवारको जा नहीं। पिताजी साउथैस्टन घरे से किन्तु वे मिठी आरिंके साथ नहीं जाँटे। उनको माताजी साँड हानी हवीब हुयेन और मैं आकर के बार्ने। सीकी नहीं आ सकी क्योंकि उनको अपना काम देखना था। मिठी और चिन्मिया दोनों तथा बास्को और बेबी भी बहुत अच्छे बिसाई है रहे। मेरा खयाल है वे यात्राके कारण और भी अच्छे बपते हैं। वे जहाजमें मजेमें रहे हैं। चिन्मिया ऐमीको ईँडने परी और फिर सीबे कमरोंमें चली गई। मिठी बेबीके साथ होटलमें जा नहीं। ब्यवस्था तो यह थी कि चिन्मिया ऐमीक साथ होटलमें बार्ने किन्तु उसने अपनी आत्पत्तामें एक होटलका नाम नहीं पूछा था जिसमें मैं ठहरा हुआ हूँ और होटल सेसिलमें चली गई, और पीछे सीबे कमरोंमें पहुँच गई। बास्कोको कुछ बुकाम हो गया है किन्तु ख्याल नहीं है।

जुमारी सिमके नहीं बाकत थी। मिठी और साँड नहीं गई थीं। मेरा खयाल है वहाँ दोनोंको अच्छा लगा। बाबत अच्छी ही थी और मच्छली भी अच्छी थी। उसमें कुछ भारतीय महिलाएँ भी थीं। मिठी उनमें से एक श्रीमती दुबेकी सहेली बन गई है। वे उत्तर भारतीय हैं यद्यपि उनका कुछ पालन-पोषण बम्बईमें भी हुआ है। वे अंग्रेजी बहुत अच्छी बोलती हैं। मिठीकी उनके साथ और बनिष्ठता हो बार्नेगी।

बहु दिन कमरोंमें है उनको परम्ब नहीं करती और धावव किन्तुबन्धुब या क्यूमें एक ऐसा छोटा घर के केनी जिसमें बोड़ी छात्र-सज्जा हो। मैंने उसको सुसाव दिया है कि वह अपने साथ हुसेनको रखें। यह दोनोंके लिये उत्तमोत्तम होना। हुसेन बहुत अच्छा बस रहा है।

१ देखिए परिशिष्ट २५।

२ जगतलास शंकी श्व समन मारणको रवाना ही गने से क्वॉरि के वैरिधर बन्नेके सिव इन्वैड बन्नेवाले से किन्तु श्री ए एन केवली बीमारकि कारण कुछ मात्र कल गने से।

३ श्री ए ओटेल (१८०३ १९०९); एक्सीपिड और मन्दाकन तथा इंडियन सिन्धुके उत्पत्तक और उत्पत्तक।

उससे अच्छा मुबक मिलना मुश्किल होगा। किन्तु वह कुछ खोपा-खोया-सा है। उसमें वह उमंग नहीं है जिसकी हम आमुक मुबकसे मुले जासा करती चाहिए और वह पर्याप्त परिधम नहीं करता। शूँकि वह जिही नहीं है, इसलिये मिळीका सीम्य मार्पदसंग आसानीसे ग्रहण कर सकता है। मैंने मिळीसे बात कर ली है कि उसके लिये क्या किया जाना चाहिए। ऐसी भी मिळीक साब रह रही है। मुझे मामूम हुआ है कि ऐसी बहुत बड़ी हो गई है। किन्तु वह स्विच स्वभावकी लड़की नहीं है और मिळीको उसके कारण कुछ चिन्ता हो जाती है। मैंने सोमवारको 'एस्तरी मरिफिटी' और 'प्रेसीडेन्सी एथोसिएसनको' आपके सम्बन्धमें धार' दिये थे। मैं यह जाननेको उत्सुक हूँ कि उनपर कुछ जमल हुआ या नहीं।

मैं दस रातको स्त्रियोंके महाधिकारके सम्बन्धमें जान्योक्तन करनेवाली महिलाओं (एफे-जेट)की एक विराट समामें गया था। श्रीमती 'वैकहल्टसे' भी मिळा बा। मैं आपको उनका साप्ताहिक पत्र 'बोटस फॉर बीमन' भेज रहा हूँ। हमें इन महिलाओंसे और इनके सम्बन्ध-जनसे बहुत-कुछ सीखना है। मेरे पास इधरी पुस्तिकाएँ भी हैं, जिन्हें मैंने आपको भेजनेका विचार किया था किन्तु पीछे सोच-विचार कर लय किया कि उनको 'बोहानिसबर्म' या 'फीनिक्स' भेज हूँ। मैं आपके लिये कुछ 'सैट कार्डें' और वह आपको जपते छप्ताह मिलेगा।

श्रीमती रिचका स्वास्थ्य बराबर सुधर रहा है। मेरा खयाल है, इस बार वे फिर बीमार नहीं होंगी।

हरपसे आपका

दरप की हुई बरतरी अंग्रेजी प्रिण्टी फोने-गकक (एच एन ४९७) से।

१९६ सम्बन्ध

बुकार, बुलाई ३ १९०९

मैटलके प्रतिनिधि

मैटलके प्रतिनिधि यहाँ कब पहुँचेंगे। हममें से कुछने उनको लेने जानेकी तैयारी कर ली है।

लन्डन

श्री अशुल कादिर, श्री हाजी हबीब और मैं महाधिकार प्राप्त करनेके लिये सड़नेवाली स्त्रियोंकी समामें गये थे। सेम्ट जेन्स मवन इन स्त्रियोंसे ठाठाठस भरा था। श्री हाजी हबीबकी विमतीके अनुसार स्त्रियाँ और पुरुष मिळकर १५ होने चाहिए।

ऐसी समा छत्रमम हर हवते होती है। इस समामें हर बार पत्र-निबन्ध किया जाता है और कमसे-कम ५ पौंड आते हैं। कलकी समामें १ पौंड इकट्ठे हुए थे। यह समा जेकसे दिखा ली गई स्त्रियोंके सम्मानके लिये बुलाई गई थी। ऐसी स्त्रियाँ १४ थीं उनको

१. रियासत लोरी रोड ६ कम्पेका दरवाजा पता।

२. कम्पेदा।

३. वह सम्बन्ध नहीं है।

४. श्रीमती क्लॉडिया देवराई (१८५८-१९९८) के लिए धन ० रा ३५।

बाँधीके समये दिये गये। इन स्थियोंके लिए एक मोचकी व्यवस्था की गई है जिसमें एक-एक सिद्धिपत्र टिकट जारी किये गये हैं।

इस समाजी व्यवस्था श्रीमती कॅरिंस नामकी महिष्याने की थी। यापन सब स्थियों ही दिये। साथी व्यवस्था भी वे ही करती हैं।

जेल जानेवाली स्थियोंमें दो-बार तो बीस-बाईस बरसकी छड़कियाँ थीं। ये सभी मठाधिकारकी सजाईमें गिरफ्तार की गई थीं। यहाँकी प्रथाके अनुसार कॅरियोंने कई बर्ग हैं। इन स्थियोंको बूझच बर्ग दिया गया था। ये कहती हैं कि हमें पहले बर्गका कौरी माना जाता था। ऐसा सरकारने नहीं किया इसलिए उन्होंने संकठित होकर बल्के निजमोंको बंद करनेका निर्णय किया। उन्होंने जेलकी कोठरियोंकी सिद्धकियाँ तोड़ी और बूझरे नियमोंको माननेसे भी इनकार कर दिया। इससे उनको कास-कोठरियोंमें बन्द कर दिया गया। वहाँ भी उन्होंने जेलरोंकी आज्ञाओका अनाबर किया। बन्तमें सभी स्थियोंने खाना बन्द कर दिया। एक स्त्रीने छ दिन तक बिछकुक मोचन नहीं किया और कुछ बूझरे स्थियोंने पाँच दिन तक। इस प्रकार सबने खाना छोड़ दिया। इससे बन्तमें सरकारने हार मानकर उनको रिहा कर दिया। स्थियाँ इससे निराश हुई हैं और कहती हैं कि जबतक ऐसी स्थियोंको पहसा बर्ग नहीं दिया जायेगा तबतक वे जेल जाती रहेंगी। बन्तसे रिहा स्थियोंमें से दोपर जेलमें मारपीट करनेके जुर्ममें पुछिसने सभाम समन्व तामीक किये। जब उनको समन्व दिये गये तब सारा सभामभन ताकियों और हर्ष-स्वनिसे पूँब उठा। उन स्थियोंके ऐसे कष्ट सहन और उनको ऐसी हिम्मतके आगे भारतीय सत्याग्रही किंच विनतीमें हैं?

यह सब अपना बलबार प्रति सत्याग्र प्रकाशित करता है और उसकी ५ प्रतिवाँ छपती है। उसका मूख्य एक पेनी है। उसमें कार्यकर्मी मुख्यतः स्थियाँ हैं। बचनेके लिए स्वयंसेविकाएँ हर हफ्ते निकलती हैं। इनको कोई मजदूरी नहीं मिलती। ये सभी स्थियाँ बड़े-बड़े बरानोंकी हैं फिर भी इस काममें सरकारके बजाय सर्व मानती हैं। वे सभी अपनी बाँहोंपर स्थियोंके लिए मठाधिकार (बोट फॉर बीमन) के छप्ते बिल्ले लगाकर निकल पड़ती हैं।

इसके अलावा जन्मि बहुत-सी शीपठियाँ भाँचि छापी हैं। किलती ही स्थियाँ इस काममें अपना सर्वस्व देकर लूट भी काम करने लग गई हैं। इनमें से कुछ बहुत पढ़ी-लिखी हैं। ये एक छात्रमें बन्तसे ३ पीठ इकट्ठा कर लेती हैं। उन्होंने २ पीठ इकट्ठा करनेका निश्चय किया है।

उनकी सजाईको पाँच बरस होने आये। सजाईकी नीच तो बहुत थी। किन्तु जेल जाकर पूरा और पाँच साबुले लगाया जा रहा है। स्थियाँ जेल हो आई हैं। इनमें से किलती ही एकठ ब्यादा बार जेल जा सनी पदाधिकारी की ब भुगत आई हैं। वे प्रथमपूरुषक जेल जाती हैं। इतने बरस ही गये पर वे हार नहीं मानती। निर्भय-विन ३०० हैं। वे सरकारको ईशान करनेकी गर्द-गर्द मुक्तियाँ खोज लेती हैं। कामके लिए अपने-आपको पूरी तरह समर्पित कर दिया है। किलती तैयार हो गई हैं। जीवना ही है यह जनन प्रथ है। वे मानो यह प्रथ उनकी मृत्युके साथ ही जायेगा।

उनकी काम करनेकी व्यवस्था और अनुपाई अत्यन्त सचानीय है। इस सबको देखकर बहुत शक्ति रह गये हैं।

भारतीयोंके लिए विचारणीय है कि जब इंग्लैंडकी सरकारोंकी स्याम प्राप्त करनेमें इतनी देर होती है और ऐसा कष्ट सहना पड़ता है तो हमको दाम्पत्यत्वमें समय सगे कष्ट मोचना पड़े प्राण तक देने पड़ें जेलमें बीमारी होसनी पड़े और मूका रहना पड़े तो इसमें आश्चर्यकी क्या बात है? बीमारी औरत जिन्होंने इस लड़ाईमें बहुत बन दिया है और जो जेल हो आई है, कहती हैं कि "अबतक कुछ साग सुभार करने या मानव-जातिकी भलाई करनेके लिए अपने कोहमें सने सजायेसे खुदाई न करें तबतक सुधारोंके सबनका निर्माण होना सम्भव नहीं है।"

इस धार्योपर प्रत्येक भारत-हितैषीको विचार करना चाहिए। हम स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें दूसरोंको मारकर या हुक बंधकर (अर्थात् घाटीर-बन्धसे) नहीं बल्कि स्वयं मरकर या हुक सहकर (अर्थात् आत्मबन्धसे) स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाहिए। दाम्पत्यत्वकी लड़ाई आत्म-सम्मानकी रक्षाकी अर्थात् स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी लड़ाई है। उस स्वतन्त्रताको प्राप्त करनेमें मृत्यु जा जाने तो बह भीविध रहनेके बराबर है। उसको न प्राप्त करके हम भीविध रहें तो यह मरणके समान है। महिला-सहायिकारके लिए अड़नेवासी इन स्थितियोंमें बहुत-कुछ सीखना है। उनमें कुछ कमियाँ भी दिखाई देती हैं जिनके सम्बन्धमें अनी पहाँ विचार करना आवश्यक नहीं है।

[पुनरावृत्ति]

इंडियन ओपिनियन २८-८-१९१९

१९७ पत्र लॉर्ड ऐंस्ट्रिस्को

[सन्तन]

अगस्त ३ १९१९

लॉर्ड महोदय

आपके २९ सप्टीम्बरके पत्रके उत्तरमें देने एक ठान^१ भेजा था। वास्तव में, यह आपकी मर्यादा पर निक गया होगा।

मैं यह पत्र इस सप्ताहके इंडियन ओपिनियन^२ की ओर आपका ध्यान आकर्षित करनेके लिए लिख रहा हूँ। उसमें साम्राज्य-समर्थक के नाम माण्यनकी मृत्युके सम्बन्धमें महाम अह्मतेसे धार्ये हुए भारतीयोंका प्रार्थनापत्र और इच्छानामे^३ प्रकाशित हुए हैं। आपको याद होगा कुछ समय पूर्व इसी माण्यनके बारेमें एक ठान भेजा था।

आपका आदि

दासन की हुई बरतरी अंग्रेजी प्रविष्टी फोटो-जबक (एन एन ४७७४) ने।

१ वर आत्म नहीं है।

२. सुनार १ १९१९ के अंकमें।

३. इनमें बीरा सुपु और २ २ अड़ने वन हाज्जीरा और वेकके वेरामी-अरे बलातप अलेख दिया है जिसे बालक तापज्जरी ठानी अणनवरी सुपु हो गई। देखा "गण्यनकनारी भारतीयोंके आपकेदा विवरण" पृष्ठ २९८।

बाँधीके समने दिये गये। इन स्थितियोंके लिए एक भोजकी व्यवस्था की गई है जिसमें एक-एक स्थितियोंके टिकट जारी किये गये हैं।

इस समाधी अभ्यसता भीमती कॉरिस नामकी महिलान की थी। भाषण सब स्थितियों ही दिये। जारी व्यवस्था भी वे ही करती हैं।

जेठ जानेवाली स्थितियोंमें दो-चार तो बीस-बाईस बरसकी सड़कियाँ थीं। ये सभी मठा-बिकारकी सड़कियोंमें गिरफ्तार की गई थीं। यहाँकी प्रवाके अनुसार कैदियोंके कई बर्ग हैं। इन स्थितियोंको पूरा बर्ग दिया गया था। ये कहती हैं कि हमें पहले बर्गका कैदी माना जाय चाहिए। ऐसा सरकारने नहीं किया इसलिए उन्होंने संगठित होकर जेलके नियमोंको रद्द करलेका निर्णय किया। उन्होंने जेलकी कोठरियोंकी सड़कियाँ तोड़ीं और बूचरे नियमोंको माननेसे भी इनकार कर दिया। इससे उनको कास-कोठरियोंमें बन्द कर दिया गया। वहाँ भी उन्होंने जेलरोंकी आज्ञाओंका अनादर किया। अन्तमें सभी स्थितियोंने जाना बन्द कर दिया। एक स्त्रीने छ दिन तक बिसकुस भोजन नहीं किया और कुछ बूचरी स्थितियोंमें पाँच दिन तक। इस प्रकार सबने जाना छोड़ दिया। इससे अन्तमें सरकारने हार मानकर उनको रिहा कर दिया। स्थियाँ इससे निराश हुई हैं और कहती हैं कि जबतक ऐसी स्थितियोंको पहला बर्ग नहीं दिया जायेगा तबतक वे जेल जाती रहेंगी। जेलसे रिहा स्थितियोंमें वे शीघ्र जेलमें मारपीट करनेके जुर्ममें पुसिधने समाने समस्त शान्ति किये। जब उनको समस्त दिये गये तब सारा समाजजन टालियों और हर्ष-स्मित्त बूँद डठा। उन स्थितियोंके ऐसे कष्ट सहन और उनको ऐसी हिम्मतके आगे भारतीय सरप्राइजी किय गिनतीमें है?

यह सब अपना अस्वभाव प्रति सत्याह प्रकाशित करता है और उसकी ५ प्रतिमाँ जल्दी है। उसका मुख्य एक वेनी है। उसमें कार्यकर्मी मुख्यतः स्थियाँ हैं। जेलनेके लिए स्वयंसेविकाएँ हर हस्ते निकलती हैं। इनको कोई मजबूती नहीं मिलती। ये सभी स्थियाँ बड़े-बड़े बरानोंकी हैं फिर भी इस काममें अमानेके बजाय बर्ग मानती हैं। ये सभी अपनी बाँहोंपर स्थितियोंके लिए मठाबिकार (नोट फॉर बीमन) के छोटे बिल्ले लगाकर निकल पकती हैं।

इसके अलावा उन्होंने बहुत-सी शीतियाँ जारी लायी हैं। कितनी ही स्थियाँ इस काममें अपना सर्वस्व बेकर खूब भी काम करने लग गई हैं। इनमें से कुछ बहुत पकी-किसी हैं। ये एक साक्ष्यमें जन्मेसे ३ पाँच इकट्ठा कर लेती हैं। उन्होंने २ पाँच इकट्ठा करलेका निरन्धम किया है।

उनकी सड़कियोंकी पाँच बरस होने जाये। सड़कियोंकी नीच तो बहुत बरस पहले पड़ चुकी थी। किन्तु जेल जाकर पूरा और पाँच साक्ष्ये अलावा था रहा है। इस अर्थमें कममन ५ स्थियाँ जेल हो गई हैं। इनमें से कितनी ही एकसे ज्यादा बार जेल जा चुकी हैं। [इस मध्यकाली] सभी पराबिकारोंके कैद भूगत आई है। वे प्रत्यक्षपूर्वक जेल जाती हैं।

इतने बरस हो गये पर वे हार नहीं मानती। दिनों-दिन उनका धोर बढ़ता ही जाता है। वे सरकारको हारन करनेकी गई-गई मुक्तियाँ खोज लेती हैं और बहुत-सी स्थितियोंने इस कामके लिए अपने-आपको पूरी तरह समर्पित कर दिया है। कितनी ही जानतक देनेके लिए तैयार हो गई हैं। शीतना ही है वह उनका प्रण है। वे ऐसी दृढ़ता बटा रही हैं मानो वह प्रण उनकी मृत्युके ताक ही जानेवा।

उनकी काम करनेकी व्यवस्था और अनुष्ठान अत्यन्त सराहनीय है। उनमें अत्याह खूब है। इस सबको देखकर बहुत-से पुरुष अकित रह गये हैं।

भारतीयोंके लिए विचारणीय है कि जब इंग्लैंडकी बबलाओंकी म्याम प्राप्त करनेमें इतनी देर होती है और ऐसा कष्ट सहना पड़ता है, तब हमको दाम्बवासमें समय लगे कष्ट भोगना पड़े प्रायः तक बने पड़ें जेकमें बीमारी छेकनी पड़े और मूला रहना पड़े तो इसमें आश्चर्यकी क्या बात है? बीमारी करिस जिन्होंने इस सफ़ाईमें बहुत बल दिया है और जो जेक हो बार्ड है कहती हैं कि जबतक कुछ काम सुधार करने या मानव जातिकी भलाई करनेके लिए अपने लोहमें सने मचास्ये जुलाई न करें तबतक सुधारोंके भवनका निर्माण होना सम्भव नहीं है।

एन चर्चोंपर प्रत्येक भारत-हितैषीको विचार करना चाहिए। हम स्वतन्त्रता प्राप्त करता चाहते हैं तो हमें दूसरोंको मारकर या दुःख देकर (अर्थात् घरीर-बसते) नहीं बल्कि स्वयं मरकर या दुःख सहकर (अर्थात् आत्मबसते) स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाहिए। दाम्बवासकी सफ़ाई आत्म-सम्मानकी रक्षाकी अर्थात् स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी सफ़ाई है। उस स्वतन्त्रताको प्राप्त करनेमें मृत्यु आ पाने तो बह भीषित रहनेके बराबर है। उसको न प्राप्त करके हम भीषित रहें तो यह मरनेके समान है। महिला-अठाधिकारके लिए लड़नेवासी इन सित्रयोंसे हमें बहुत-कुछ सीपना है। उनमें कुछ कमियाँ भी बिछाई देती हैं जिनके सम्बन्धमें अभी यहाँ विचार करना आवश्यक नहीं है।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २८-८-१९१९

१९७ पत्र लार्ड ऐन्स्टहिलको

[सम्बन्ध]

अगस्त ३ १९१९

लार्ड महोदय

आपके २९ तारीखके पत्रके उत्तरमें मैंने एक चार्ज भेजा था। जाया है वह आपको समयपर मिल गया होगा।

यै यह पत्र इस सप्ताहके इंडियन ओपिनियन "की ओर आपका ध्यान आकषित करनेके लिए लिखा रहा है। उनमें माध्वाय-मन्दर के नाम नामपनकी मृत्युके सम्बन्धमें महान बहसोंसे भाव हुए भारतीयोंका प्रार्थनापत्र और हल्कनामे' प्रकाशित हुए हैं। आपकी वार्द होगा कुछ समय पूरा इसी नामपनके बारेमें एक चार्ज जाया था।

आपका आदि

दास्य की हुई शराही बंबेरी प्रतिकी फोटो-नकल (एम एन १७७४) से।

१ वह सम्बन्ध नहीं है।

२. कुनार १ १९१९के अंकमें।

३. इसमें बीरा कुनु और १०९ सूखले वन हाकोंका और केन्द्र वेरवी-जे वजातका सम्बन्ध दिया है जिनके कारण उत्तमयी लानी बगलकी कुनु हो गई। हेजि "दाम्बवासकी भारतीयोंके नामकेय विवरण" पृष्ठ ३९८।

सम्पादक

इंग्लिशमन

[कलकत्ता]

आपके पत्र-लेखक साठव आधिक्य में आपके पत्र २१ पारीसके अंशमें प्रकाशित अपने पत्रमें इतनी गम्भिर बातें लिखी हैं कि उसको अपना नाम भी छिपाना पड़ा। क्या मैं उसकी कुछ कलकत्तावासिनी बुझता कर सकता हूँ?

धी एक डब्ल्यू रिच यद्यपि वे मुझे अपना मित्र और साथी कहते हैं भारतीय नहीं हैं, वैसे आपके पत्र-लेखकने मान लिया है। वे इन्हींके बहुरी हैं और इस समय बैरिस्टरी कर रहे हैं।

भारतीयोंका पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) एक सिपाखी कार्रवाई है और यह बर्नपट कमें भारतीयोंकी ईमानदारीपर सन्देहका सूचक है। काकिरकि सम्बन्धमें पासकी प्रथा कुछ इतक कर जमानेकी कार्रवाई है और किसी भी प्रकार उस बर्नमें जिसमें १९७ का एशियाई पंजीयन कानून है अपमानजनक नहीं है। एशियाई पंजीयन कानून (एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट) और महाद्वीपकी पारपत्र (पासपोर्ट) प्रणालीमें सतना ही अन्तर है जिसका अर्थ और पनीयमें होता है। महाद्वीपकी पारपत्र (कॉन्टिनेन्टल पासपोर्ट) जिसके पास होता है उसकी रखा कट्टा है, और यदि पासमें पारपत्र न हो तो इससे वह अपराधी नहीं माना जाता और उसे छ मास तककी कड़ी कैद नहीं भी जा सकती जबकि एशियाई कानूनके अन्तर्गत पंजीयनका प्रभावपत्र न होनेपर जबतक ट्रांसबासमें २५ ब्रिटिश भारतीय बेल नये वा नुके हैं। ट्रांसबासमें भारतीय कुछी नहीं है।

आपके पत्र-लेखकके विरोधी कथनके बावजूद नेटाल उपनिवेशमें विरगिटिया भारतीय सबद्वारेके प्रवेश-सम्बन्धी कानून बनानेमें बहकि भारतीय व्यापारी-समाजका कोई हान नहीं था।

आपके पत्र-लेखकने यह मतमण्डल बात कही है कि नेटालमें प्रत्येक भारतीय १ डिग्निस माहवार बर्नपट निर्वाह करता है और सन्तुकोके अस्तरेकी पुपानी टीनके मोपके बनाकर रहता है। इसके विपरीत बर्नन नगरपालिकाके मूल्यांकनके अनुसार सचार् यह है कि वही भारतीयोंके पके मकान करीब-करीब इस छात्र पीठके हैं और इस तथ्यका उनके यूरोपीय व्यापारी प्रतिस्पर्धियोंने उनके विरुद्ध उपयोग किया है।

केकिन भारतीय एक बाघमें आपके पत्र-लेखकके सहमत हो सकते हैं और यह है नेटालमें या बहिष्कृत आधिक्यके किसी भी धाममें विरगिटिया सबद्वारेके अस्तित्वकी निम्ना। ब्रिटिश भारतीय पिछले पन्द्रह सालके इस प्रकारकी सबद्वारेकी प्रथाको बन्द करानेके लिए आन्दोलन

कर रहे हैं। स्वर्गिय सर बिस्मियम बिस्मन इंटरने' इस प्रकाशो बहतरनाक रूपमें गुळामीसे मिळता-बुलता बताया बा।

बापका बादि
मो० क० गांधी

[बंगेजीस]

इंडियन ओपिनियन, ४-९-१९ ९

१९९ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको

[सम्मन]

बापका ४ १९ ९

लॉर्ड महोदय

मै बापको इसी ३ ठाणिके पत्रके लिए और उन कीमती सुझावके लिए बन्धबाब बता हूँ जो आपने विवरण (स्टेटमेंट)' के सम्बन्धमें दिये हैं।

मै जानता हूँ कि अधिकारियोंपर कामका कितना भार है और वह जानते हुए कि आप उनको यह प्रश्न समझानेका कोई अबसर हाथसे नहीं जाने देते भी हाजी हूँ और मैं दोनों सत्यापपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं।

बापका प्रश्न यह था कि क्या बनाकामक प्रतिरोध (पैसिव रेजिस्टेन्स) के लिए भारतसे वन या उद्योग मिळता है। उद्योग मिळने के सम्बन्धमें मैंने बिस्तारसे कुछ नहीं कहा बा। पत्र कम्बा और ऊबानेबासा हो जानेके भयसे मैं क्लिंता-सिद्धता तक गया बा। परन्तु, अब थूँकि आपने कृपा करके मुझे अपने विचार अधिक बिस्तारसे प्रकट करानेके लिए कहा है, इसलिए मैं प्रसक्तपूर्वक इस अबसरका लाभ उठाता हूँ। मैं मनी भाँति जानता हूँ कि हमपर यह आरोप लगाया जा रहा है कि हम भारतके गरमदरसे मिलकर काम कर रहे हैं।' लेकिन मैं बापको पूरा-पूरा बिस्वास दिखता हूँ कि यह आरोप बिलकुल गिराधार है। द्वांसबाकमें भारतीयोंका बनाकामक प्रतिरोध उस उपभिवेधमें ही पैदा हुवा है और भारतमें जो-कुछ कहा या किया जा रहा है उस सबसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। कमी-कमी सब बात तो यह रही है कि भारतमें या अन्यत्र जो विरोधी बातें कही या लिखी गईं, उनके बाबजूद हमने अपना बाबोस्मन जारी रखा है। हमारे बाबोस्मनका भारतके किसी भी उद्यमसे बिलकुल बास्ता नहीं है। मैं तुम उपभिवेधोंको नहीं जानता। मुस्लिम सीगके हैं और किसी समय अधिक इस्लामी सब (पैन इस्लामिक सोसाइटी)के कन्वन्-सिबत यन्त्री रहे हैं और यह पत्र-व्याहार

१ (१८४ १९) भारतीय प्रकाशक और भारतीय एन्टीमि विविध कमेटीके अध्यक्ष; रेडिफ कन्व १, एड १९२ और कन्व २, एड १९२ ।

२. रेडिफ " इन्डियन एन्टीमि विविध बाबोस्मन विवरण " एड २८०-१ ; तथा लॉर्ड ऐंस्ट्रिन्कीके उत्तरके लिए परिधि १४ पी ।

३. रेडिफ परिधि १४ ।

४. विन्डुमोड लाकर मुझे कुछ धन बाबत है ।

५. लॉर्ड एंस्ट्रिन्कीके एक प्रति भेज दी है ।

सम्पादक

इंग्लिशमन

[कसकता]

आपके पत्र-लेखक घाउष आधिकार ने आपके मत २१ सार्वजनिक संक्रमें प्रकाशित अपने पत्रमें इतनी उल्लेख बाते लिखी है कि उसको अपना नाम भी छिपाना पड़ा। क्या मैं उसकी कुछ पत्रव्यवहारीयों बुझता कर सकता हूँ ?

श्री एक उक्तम् रिश यद्यपि वे मुझे अपना मित्र और साथी कहते हैं भारतीय नहीं हैं, वैसे आपके पत्र-लेखकने मान लिया है। वे इन्कीबके सहूरी हैं और इस समय बैरिस्टरी कर रहे हैं।

भारतीयोंका पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) एक चिन्ताकी कार्रवाई है और वह वर्तमान रूपमें भारतीयोंकी ईमानदारीपर सन्बेहका सूचक है। काफिरोंके सम्बन्धमें पाछकी प्रथा कुछ हद तक कर उगानेकी कार्रवाई है और किसी भी प्रकार उस अर्थमें विसमें १९७ का एशियाई पंजीयन कानून है अपमानजनक नहीं है। एशियाई पंजीयन कानून (एशियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) और महाद्वीपकी पारपत्र (पासपोर्ट) प्रभासीमें उतना ही अन्तर है जितना अशिया और पनीरमें होता है। महाद्वीपी पारपत्र (कॉन्टिनेन्टल पासपोर्ट) विसके पास होता है उसकी रखा करता है, और यदि पासमें पारपत्र न हो तो इससे वह अपराधी नहीं माना जाता और उसे छ मास तककी कड़ी कैद नहीं भी जा सकती जबकि एशियाई कानूनके अन्तर्गत पंजीयनका प्रमापत्र न होनेपर अवतक ट्रांसबासमें २५ ब्रिटिश भारतीय जेज मने जा चुके हैं। ट्रांसबासमें भारतीय कुली नहीं ह।

आपके पत्र-लेखकके विरोधी कथनके बावजूद नेटाक उपनिवेशमें पिरिमिटिया भारतीय मजदूरोंके प्रवेश-सम्बन्धी कानून बनानेमें वहूँके भारतीय व्यापारी-समाजका कोई हाथ नहीं था।

आपके पत्र-लेखकने यह मनगढन्त बात कही है कि नेटाकमें प्रत्येक भारतीय १ दिवसिय माहवार कर्षपर निर्बाह करता है और सन्सूकोंके अन्तरकी पुरानी टीनके शोपके बनाकर रखता है। इसके विपरीत डब्लिन मशरपाकिनाके मूल्यांकनके अनुसार सबाई यह है कि वहाँ भारतीयोंके पदके मकान करीब-करीब इस जाल पीडके हैं और इस उष्यका उनके यूरोपीय व्यापारी प्रतिस्पर्धियोंने उनके विरुद्ध उपवीग किया है।

केकिन भारतीय एक बातमें आपके पत्र-लेखकके सहमत हो सकते हैं और वह है नेटाकमें या बकिन आधिकारके किसी भी भावमें पिरिमिटिया मजदूरोंके अस्तित्वकी भिन्ना। ब्रिटिश भारतीय पिछले पन्ध्र सालके इस प्रकारकी मजदूरीकी प्रथाको बन्द करानेके लिए आन्दोलन

कर रहे हैं। स्वर्गीय सर बिस्मिथ बिस्मिथ इंटरने' इस प्रयागो बचरमाण रूपमें मुझामीसे
मिस्सा-मुस्सा बताया था।

बापका भादि
मो० क० गांधी

[बंदेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ४-९-१९ ९

१९९ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको

[लम्बन]

भास्त ४ १९ ९

लॉर्ड महोदय

मैं आपकी इसी ३ ठारीके पत्रके लिए और उन कीमती मुझामेकि लिए धन्यवाद
देता हूँ जो आपने बिबरन (स्टेटमेंट) के सम्बन्धमें दिये हैं।

मैं जानता हूँ कि अधिकारियोंपर कामका फिटना भार है और यह जानते हुए कि
आप उनको यह प्रश्न समझानेका कोई बबसर हाथसे नहीं जाने देते भी हज़मी हबीब और
मैं दोनों सन्तोपपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं।

आपका प्रश्न यह था कि क्या अनाक्रमक प्रतिरोध (पैसिव रेबिस्टेन्स) के लिए भारतसे
बन या उत्तेजन मिलता है। उत्तेजन मिलने" के सम्बन्धमें मैंने बिस्तारसे कुछ नहीं कहा
था। पत्र लम्बा और उम्मानेवाला हो जानेके भयसे मैं क्लिष्टता-क्लिष्टता रूक गया था। परन्तु,
जब चूँकि आपने कृपा करके मुझे अपने विचार अधिक बिस्तारसे प्रकट करनेके लिए कहा
है इसलिये मैं प्रयत्नापूर्वक इस बबसरका काम उठाता हूँ। मैं अभी भांति जानता हूँ कि
हमपर यह आरोप लगाया जा रहा है कि हम भारतके परम्बरसे मिलकर काम कर रहे हैं।^१
मेडिन मैं आपको पूछ-सूच बिबसाध बिबाधा हूँ कि यह आरोप बिलकुल गिटाभार है। ट्राम्पबाकमें
मास्तीयोका अनाक्रमक प्रतिरोध जय सपनिबेधमें ही पैदा हुआ है और भारतमें जो-कुछ कहा
या किया जा रहा है उस सबसे सचका कोई सम्बन्ध नहीं है। कभी-कभी सच बात तो यह रही
है कि भारतमें या अन्यत्र जो बिरोधी बाटें कही या सिखी गईं, उनके बाबजूब होने अपना
बान्बोलन जारी रखा है। हमारे बान्बोलनका भारतके किसी भी उग्ररस्मे बिलकुल बास्ता नहीं
है। मैं तुह उग्ररस्मियोंको नहीं जानता। मुन्किम कीमक हूँ और किसी समय बबिल
इस्लामी संघ (पैग इस्लामिक सोसाइटी)के बनन-स्वित्त भन्नी रहे हैं और यह पत्र-ब्यवहार

१ (१८४ १९) नरतील प्रशासक और नरतील उन्नील बांभेकी रिबिडि कुरेरीके स्वरन; रेकिड
बाक १ १४ १९९ और कन्ट २, १४ १९ ।

२. रेकिड "इन्डियन ओपिनियन" मास्तीयोके बांभेका बिबरन" १४ १८०-१ ; तथा बॉर्डे रॉन्ट्रिबुके
उन्नीयोके बिब परिबिडि १४ जी ।

३. रेकिड परिबिडि १४ ।

४. सिन्धुयोके लम्बन मुझे कुछ धन्य मान है ।

५. जो मुझे कभी यह रिबिडि बाक न्ये है ।

इस दृष्टिसे किया गया है कि हमारे मामलेमें भारतीय लोकमतकी दिग्दर्शनी बड़े और जनतामें पशुानुभूति उत्पन्न हो। हमारा टाइम्स ऑफ इंडिया के सम्पादकसे निकट-सम्पर्क है और इन्डिपेंडेंट के सम्पादक स्वर्गीय भी साइडसे' भी मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध था। मैं यह कहूँ कि जब मैंने पहले-पहल दक्षिण आफ्रिकामें सार्वजनिक कार्य हाथमें लिया तब उन्होंने [भी साइडसे] मुझे बहुत उपयोगी सहायता और सहाह भी दी। हमारी सिकायत तथा यह रही है कि भारतमें हमारे बेशासियोंने वैसे सायब अभी कुछ पहले तक सगता था इस प्रसंगके साम्राज्यीय महत्त्वकी करीब-करीब जाण-बूझकर उपेक्षा की है। फिर जनरल स्मट्सने निर्दोष भारतीयोंको जिनमें से अधिकतरके पास एक पैसा भी न था पुर्वगाभी प्रवेशके दास्त द्वांसबाससे भारतका निर्वासित कर दिया। उनके इस आत्मघातकारी कार्यने इस घासको सबसे ज्यादा प्रकाशमें ला दिया है। इससे इस प्रसंगका निजापन इतना हो गया जितना सामर बूखी किसी बातसे न हुआ होता। अब भी हेनरी एस एच पोलक भारतीय जनताके सम्मुख इस स्थितिको रखनेके लिए द्वांसबाससे भारत घसे हैं। वे कहसि यह निश्चित निर्दोष करार घसे है कि वे उपबससे सम्पर्क न करें और ब्याबातर टाइम्स ऑफ इंडिया के सम्पादक थोसेसर पोखे तथा बागालाकी सहाहसे बसैं।

अनाक्रमक प्रतिरोधसे मेरा मतलब क्या है यह साबकी कतरसे' कुछ ब्याबा स्पष्ट रूपमें प्रकट हो जायेगा। इसमें अमिस्टनके साहित्य व बाद-विबाध संघ (अमिस्टन सिटरेरी ऐंड डिबेटिंग सोसायटी) में दिये मेरे भाषणका सार दिया गया है।^१ मैं यह कहूँ कि अमिस्टन भारतीय विरोधी भावनासे बोलप्रोठ है। फिर भी संघके सदस्योंने जिनमें अमिस्टनके मेयर भी हैं कृपा करके यह स्वीकार किया कि हम जो कड़ाई बका रहे हैं वह पूर्णतः निर्दोष है।

यदि मैं यह न कहूँ कि भारतमें जो-कुछ हो रहा है उसको मैं अत्यन्त गहरी बिरुधसीसे और राष्ट्रीय आत्मोन्नतके कुछ पहलुओंको गम्भीरतम बिन्तासे देखता हूँ तो यह अनुचित होना। पशुानुभूति और 'उसमें लोगों और मेरे बेशासियोंने—दोनोंका और संसारका भी काम है। मेरा यह भी विरबाध है कि राष्ट्रीय भावनाके पूर्णतम विकासमें और भारतमें ब्रिटिश राज्यकी स्वरतामें बिलकुल विरोध नहीं है। इसके अलावा मैं यह भी सोचता हूँ कि भारतमें हमें जो कष्ट है उनका इजाज भीतरी प्रयत्नोंसे सम्भव है। मैं यह जानता हूँ कि ब्रिटिश संविधानके अन्तर्गत ब्रिटिश प्रजाबतोंको चाहे वे किसी जातिके हों सबतक अपने अधिकार कमी नहीं मिळे हैं और न कमी मिळ सकते हैं जबतक वे उनसे सम्बन्धित अपने कर्तव्य पूरे न करें और जबतक वे उनके निमित्त लड़नेके लिए तैयार न हों। वह लड़ाई या तो धारिदिक हिंसाका रूप ले लेती है, वैसे भारतके उपबसी लोगोंके मामलेमें है या लड़नेबाधे लोगोंके व्यक्तिगत कष्ट-सहनका रूप ले लेती है वैसे द्वांसबासमें हमारे अनाक्रमक प्रतिरोधियोंके मामलेमें है। मेरी सम्मतिमें सिकायतें बुर करानेका पहला तरीका बहुत-कुछ बर्बरतापूर्ण है और भारतीयोंके स्वभावके बिकर है—घी इसलिये नहीं कि वे धारिदिक दृष्टिसे इतने दुर्बल हैं कि इस

१ देखिए कन्व २, पृष्ठ २४०-४८।

२. यह सम्भव नहीं है।

३. देखिए "मानव अधिकारोंमें" पृष्ठ २४१-४४।

४. नहीं कुछ कम यह को है।

५. नहीं कम दूरी रमित बनता है।

पेस करनेका विचार है उसका मजमूत भी इसके साथ है।' मैं यह अच्छी तरह महसूस करता हूँ कि कठिनाई अधिकारक प्रश्नपर होगी। अधिकार "पर जोर दिये बिना इसका कोई हल निकालनेका प्रयासमें मेरी कई रातों बिस्वामें निकली हैं। लेकिन मुझे सफलता नहीं मिली है, क्योंकि इससे कम किसी भी बातका जर्ब मेरी विनीत सम्मतिमें उपनिवेशकी कानूनकी किताबमें हमारी प्रजातीय हीनताको अंकित करना होगा। आपके प्रश्नका यह उत्तर आपके इस सुझावका भी उत्तर है कि माँयोकी गिनतीमें सिद्धि भारतीयोंके बर्बके बनाय कमी-कमी कुछ ऊँची घिसा पाये हुए भारतीयोंका प्रवेश बाकि कर दिया जावे। ऐसा कोई उमट-फेर सम्भव नहीं है क्योंकि कड़ाई बोड़े-से शिक्षित भारतीयोंको प्रविष्ट करानेका किए नहीं है, बल्कि सहज-स्वाभाविक या सिद्धान्तिक अधिकारको मान्य करनेके लिए है। यह अधिकार "न देनेके जो निश्चित परिणाम होते हैं उनपर जोर देनेके सर्वप्रथम इस प्रश्नके सम्बन्धमें विचारसक, बकीक बाकिा उसकेह किया गया है, और यह भी कार्टेराइटके मित्रोंको सन्तुष्ट करनेके सर्वप्रथम आशयक हो गया था 'स्पष्ट रूपमें यह समझनेके लिए कि हमारी माँका अमिप्राय उपनिवेशमें ऐसे क से अधिक भारतीयोंका प्रवेश नहीं है उन्हें साम्राज्यीय दृष्टिकोण अपनानेकी जरूरत है। सब तो यह है कि ऐसे प्रवेशके लिए प्रतिभर्ष धायब जो व्यक्ति भी आवश्यक न हों और मैं अपनेतरई तो स्वामीय सरकारसे यह आश्वासन भी नहीं माँगूंगा कि वह क या क से कम भारतीयोंको प्रवेश दे ही। सिद्धान्त मान लेनेपर, केवल प्रवेश एक छोटी बात है और मैं साफ-साफ स्वीकार करता हूँ कि बकि यह सिर्फ बोड़े-से भारतीयोंके प्रवेशका ही प्रदत्त होता तो मैंने अपने ट्रान्सवाल्डवासी भाइयोंको भयंकर कष्ट उठानेकी सलाह कमी न भी होती।

आपने विवरणमें सुधारके सम्बन्धमें जो नये और मूसवान सुझाव दिये हैं उनके लिए मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। श्री रिचके साथ मिलकर मैं उसपर तुरन्त काम शुरू कर रहा हूँ। इन सुझावोंको धामिल करनेके बाद मैं कुछ प्रतिवां छया लूया और आपको भेज रूया। लेकिन उनके आपनका अन्तिम निर्देश जबतक न रूंगा जबतक आपकी मंजूरी और प्रचारकी अनुमति न मिल जावे।

आपका आज्ञाकारी सेवक

[सहपत्र]

इस आरोपके सम्बन्धमें कि शिक्षित भारतीयोंका

प्रश्न एक नया प्रश्न है

यह स्मरण रखना आवश्यक है कि जो सम्मेलन हुए वे एक जनवरी १९८ में हुआ था जब श्री गांधी जेलमें ही थे। उस समय शिक्षित भारतीयोंके प्रश्नकी चर्चा नहीं की गई

१ यह उत्तर अलग नहीं है; लेकिन भारतीयोंके अंग्रेजोंका जो अस्विकार करना था उसे सर्वे सर्वेदिकके अन्ते केकर १ अक्टूबरको कम्प्लैट स्मरुहो भेज दिया था। यह उत्तर ९ में दिया हुआ है। सर्वे सर्वेदिकके भारतीयोंका अन्त ९ अक्टूबरके पहले हुआ है। वरतको धामिक कर किया था; लेकिन यह नहीं बताया था कि यह भारतीयोंकी उत्तर है। देखिए "एन: सर्वे सर्वेदिककी" एड ३४१ ४२।

२ सूत्र प्रतिमें नहीं कुछ अन्त पाल है।

३ देखिए "मूसलमानली भारतीयोंके सम्बन्धमें विवरण" एड ९८०-१।

४ भारतीयोंकी १ जनवरी १९०८की दो भारतीयोंकी अन्त की सर्वे सर्वेदिकके ३ जनवरीको दिया कर दिया गया था। देखिए अन्त ८ एड ३६-३७ और एड ४१ ४४।

की क्योंकि ऐसी चर्चाकी आवश्यकता नहीं थी। यह इसलिए कि स्वच्छता पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) करनेकी घण्टी पूरी होनेपर १९७ के कानून २ के रद्द हो जानेसे जिसकी मीमांसा-प्राप्त ब्रिटिश भारतीयोंका अधिकार अपने-आप फिर स्थापित हो जाता।

दूसरा सम्मेलन २ अक्टूबर हुआ। उसमें कार्यकारिणी परिषद [के सदस्य] प्रगतिवादी बहने नेता श्री कार्टरहाट्ट श्री गांधी और श्री विनय सम्मिलित थे। यही वह सम्मेलन था जिसके सम्बन्धमें कहा गया है कि उसमें जिन मुद्दोंपर बातचीत हुई उनमें ब्रिटिश भारतीयोंका प्रश्न नहीं था। जनरल बोबाने अपने ५ सितम्बर १९८ के खरीते ५२८ पृष्ठ ४३ सी डी ४३२७ में इस आरोपका स्पष्ट अर्थन किया है। उसमें जनरल बोबा कहते हैं "वहमका नया विषय उन एशियाईयोंको देखमें जाने देनेकी नई माँगका था जो पहलेसे ट्रान्सवालके ब्रिचवासी (ओमिसाइल) होनेका दावा नहीं करते परन्तु जो खिला-सम्बन्धी कसौटीमें उत्तीर्ण हो सकते हैं।" यह इस बातको स्वीकार करता है कि इस विषयपर सम्मेलनमें विचार हुआ था। परन्तु जनरल बोबाका कहना है कि वहाँ जो यह माँग उठाई गई सो नई बात थी। लेकिन ऐसा कि स्मट्स और श्री गांधीके बीच २२ जनवरी १९८ को शुरू होनेवाले पत्र-व्यवहारसे स्पष्ट है यह भी गलत है। दरबसल उक्त यह है कि सम्मेलनका आयोजन ही इसलिए किया गया था कि जनरल स्मट्सके साथ उक्त कानूनको रद्द करनेके बारेमें जो बातचीत चल रही थी वह बिफल हो गई थी क्योंकि जनरल स्मट्सने एक नई सर्त लपवाई थी कि ब्रिटिश भारतीयोंपर प्रतिबन्ध रखनेपर ही वे कानूनको रद्द करेंगे। इसके अतिरिक्त [उक्त उद्धरणमें] ऐसी माँग भी जिसे मन्त्रिमण पहले ही न मानने योग्य ठहरा चुके थे। परन्तु यदि ऐसा न होता तो भी यह बातना कठिन है कि किस उपायसे एशियाईयोंके प्रवासका विधान करनेवाला विधेयक और सम्बन्ध द्वारा इस विषयपर स्वतः उपनिवेशियोंकी समझ सबाध स्थापित नाबनाको ध्यानमें रखते हुए, ट्रान्सवाल-सदरके किसी भी सदन द्वारा पास किये जा सकते हैं।" यह भी कह दिया जावे कि इस सम्मेलनमें कोई समझौता नहीं हुआ था। एशियाई नेता कार्यकारिणी परिषदके सदस्यों और प्रगतिशील नेताओंसे यह स्पष्ट निर्देश पाकर चले जाये थे कि वे अपनी-अपनी समितियोंके सम्मुख वे मुद्दे रखें जिनपर सम्मेलनमें विचार किया गया है और जनरल स्मट्सको समितियोंका फैसला बता दें। तबनुसार मुख्य ही एशियाई समितियोंकी बैठकें हुईं और श्री गांधी तथा श्री विनय बोबाने जनरल स्मट्सको घाटी कार्टबास्ति अवगत कर दिया। जिस सरकारी रिपोर्ट (अन बुक) का ऊपर उद्धरण है उसमें वह पत्र पूरा नहीं दिया गया है जो जनरल स्मट्सके निजी सचिवके विषय अनुरोध करनेपर लिखा गया था। श्री जेन (स्मट्सके निजी सचिव) को घाटी ७ अक्टूबरको लिखे गये पत्रकी प्रारम्भिक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं

श्री कार्टरहाट्टने मुझसे कहा है कि मैंने आजकी सभाके निर्णयके बारेमें उन्हें जो कुछ बताया है तो मैं आपको लिख रहा हूँ और साथ ही तत्सम्बन्धी अपने विचार भी व्यक्त कर रहा हूँ।

१ रेडिग कड ८ एड १८१११।

२. कृष्ण मूर्तिमें वही कुछ अन्तर पाया है।

३ रेडिग कड ८ एड १८१११।

मैंने आज तीसरी बार सभाके सामने दे सकते रखीं जिनके बारेमें मैंने उन्हें बताया कि सरकार उन्हें बेनेपर तैयार है। मैंने उन्हें यह भी बताया कि यदि उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयों तथा तोराबजीकी बहालीके लिए कोई व्यवस्था इनमें कर दी जाये तो ये ही शर्तें स्वीकार्य समझतीका रूप के सेंगी। किन्तु समा एशियाई अभिनियमको रद्द करने तथा प्रवासी-प्रतिबन्धक अभिनियमकी सामान्य चारके अन्तर्गत उच्च शिक्षा प्राप्त भारतीयोंको मायता बेनेते कम किसी भी बातको सुननेके लिए तैयार नहीं थी। मैं लोगोंको अधिकसे-अधिक केवल इसीपर रतनी कर सका कि बंबाणिक अभिकार भंडूर कर लिया जाये तो शिक्षित भारतीयोंके खिलाफ करते जानवाने ऐसे प्रशासनिक व्यवहारपर कोई आपत्ति नहीं होगी, जिसके कारण केवल अत्यन्त उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीय ही प्रवेश पा सकें।'

[सङ्गम २]
संक्षेप

१९७ के प्रवासी-प्रतिबन्धक कानून (इमिग्रेशन रिस्ट्रिक्शन ऐक्ट) १५ के खण्ड २ के उपखण्ड १ का एक हिस्सा इस तरह है

कोई भी व्यक्ति जो उपनिवेशमें या उपनिवेशके बाहर, बाकायदा अभिकार प्राप्त अफसरके कहनेपर अपर्याप्त शिक्षाके कारण इस उपनिवेशमें प्रवेशकी अनुमतिके आवेदनपत्र या ऐसे कागजात जो वह अफसर मयि किसी यूरोपीय भाषाके अक्षरोंमें (बोल्ड कर लिखानेपर या अपने-आप) न लिख सके या उनपर उक्त अक्षरोंमें हस्ताक्षर न कर सके व्यवस्थाकी जाती है कि इस उपखण्डके प्रयोजनोंके लिए यौद्धिक यूरोपीय भाषा मानी जायेगी यह भी व्यवस्था की जाती है कि (इसके बाद जो-कुछ दिया गया है वह महत्वपूर्ण नहीं है।)

उपखण्ड १ का प्रस्तावित संशोधन यह था

"कोई व्यक्ति जो उपनिवेशमें या उपनिवेशके बाहर, किसी बाकायदा अभिकार प्राप्त अफसरके कहनेपर अपर्याप्त शिक्षाके कारण यूरोपीय भाषामें नियत की गई परीक्षा पास न कर सकेया व्यवस्था की जाती है कि इस खण्डके प्रयोजनोंके लिए यौद्धिक यूरोपीय भाषा मानी जायेगी यह भी व्यवस्थाकी जाती है कि यह परीक्षा कैसी हो वह प्रवासी-अधिकारी पूरी तरह अपनी मर्जीसे तय कर सकेगा। वह परीक्षा व्यक्तियों या बर्तके लिए अलग-अलग हो सकती है। इसके सम्बन्धमें सर्वोच्च न्यायालयमें या उपनिवेशकी किसी अदालतमें अपील न की जा सकेगी। यह भी व्यवस्थाकी जाती है कि किसी ऐसे एशियाईपर, जो प्रवासी अधिकारी हाथ की गई इस परीक्षामें पास हो जायेया और दूसरी तरहसे इस कानूनके अन्तर्गत नियत प्रवासी न होया १९८ के कानून ३६ की धाराएँ कानून होंगी वह भी व्यवस्था की जाती है।

१ डॉ. वेन्डरिन्को एच ७ अफसरको यह पकटी प्राप्ति लौडार करते हुए लिखा था कि वह प्रवेश नहीं कर पाया था कि और के अफसरोंको ही काममें लाने के लिये।

इसपर टिप्पणियाँ

१ अगर १९०८ का कानून खर कर दिया गया और अगर १९०८ का कानून ३६ न रहा तो प्रस्तावित संशोधनमें कानून ३६ के उल्काकी बात ही न रहेगी। लेकिन इसका उल्का इसकी आवश्यक हो गया है कि कानून ३६ में बेच-निकासीकी एक बात है और कानून १५ के खण्ड २ के उपखण्ड ४ में यह व्यवस्था है कि जिस व्यक्तिपर बेच-निकासीकी आज्ञा लागू हो सकती है वह व्यक्ति डिप्टी-मैजिस्ट्रेट पास कर सेनेपर भी नियत प्रवासी हो जाता है। उक्त उपखण्ड ४ इस तरह है

कोई भी व्यक्ति जो इस उपनिवेदनमें प्रवेशकी या प्रवेश करानेके प्रयत्नकी तारीखकी किसी ऐसे कानूनकी बाराजके प्रभाव-क्षेत्रमें आता हो या प्रवेश करनेपर जा चाये जो उस तारीखकी लागू हो और जिसके अन्तर्गत उसे यदि यह इस उपनिवेदनमें मिले तो उसी तारीखको या उसके बाद इस उपनिवेदनेके निकाला जा सके, या निकल जानकी आज्ञा दी जा सके चाहे यह निष्कासन या आज्ञा ऐसे किसी कानूनकी तीकनेके अन्तर्गत प्राप्त सजाके कारण दी गई हो चाहे उसकी किसी बाराका पालन न करनेके कारण या उस कानूनकी बाराजके अनुसार अन्य किसी कारणसे। धर्त यह है कि उस व्यक्तिको किसी ऐसे जुर्मके लिए सजा न दी गई हो जो उसने उपनिवेदनेके बाहर किसी अन्य स्थानपर किया हो और जिसके लिए वह माफी पा चुका हो।

२ परीक्षाके सम्बन्धमें प्रस्तावित संशोधन अन्तर्गत स्मट्स द्वारा उठाई गई इस आपत्तिको दूर करनेके लिए दिया गया है कि मौजूदा कानूनमें दाखल प्रवासी अधिकारीको विवेकके प्रयोगका काफी अधिकार नहीं है जिससे वह एक प्रवासीके लिए एक तरहकी परीक्षाकी व्यवस्था कर सके और दूसरेके लिए दूसरी तरहकी।

टाइप की हुई बरतरी नयेजी प्रिंटिङ्ग फ़ोटो-नकस (एस एन ४९८) और ककोनियक कॉम्पिउट रेकर्ड्स २९१/१४२ से।

२०१ पत्र उपनिवेदा-उपमन्त्रीको

[कम्बन]

बनस्त ९ १९९

महोदय

मैं नम्रतापूर्वक आपके इसी बार तारीखके पत्रकी प्राप्ति स्वीकार करता हूँ जिसमें आपने कहा है कि लॉर्ड जे ने मेरे साथीसे और मुझसे संयोजनार १ तारीखको ३-३ बजे ट्रान्सवाळक विधि भारतीयोंकी स्थितिके सम्बन्धमें विनमता संजूर किया है। मेरे साथी और मैं उक्त समयपर लॉर्ड महोदयकी सेवामें उपस्थित हूँने।

आपका आदि

टाइप की हुई बरतरी नयेजी प्रिंटिङ्ग फ़ोटो-नकस (एस एन ४९८) से।

१ कृपे की "एन.ए.के.एन. १०१" है

साठे महोदय

मैं अभी विवरणको^१ बीच प्रतिमां भेज रहा हूँ। आपके दिये गये अधिकतर मुस्ताब इसमें आ गये हैं और मुझे आशा है कि वे जिस बंधसे मिले गये हैं वह आपको पसन्द आवेगा। विवरण बुल्ड (टेकनिकस) न हो जाये इस ख्यालसे आपके आवश्यक समझे हुए कुछ स्पष्टीकरण अन्तमें टिप्पणियाँ किये गये हैं। जैसा कि एक पहले पत्रमें कहा जा चुका है, विवरण अब भी प्रुफके रूपमें है। इसलिए यदि और भी कोई ससोधन आवश्यक हो तो वह किया जा सकता है।

टिप्पणी व वह प्रार्थनापत्र^२ है जिसका उल्लेख अनुच्छेद २९ में किया गया है। वह अभी छापी नहीं गई है। किन्तु आपके अवलोकनके लिए मैं इस पत्रके साथ उसकी नकल भेजता हूँ।

आपके पत्रोंकी नकल भी जा रही है।

मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि यदि माँगोंपर घर जॉर्ज फेयरकी सहमति प्राप्त की जा सके तो भी स्मटसके कोई आपत्ति करनेकी सम्भावना नहीं रहेगी।

सम्भव है श्री स्मट्स कहें कि संघ-निर्माणके कारण धावर अब ट्रान्सवाल संसदका कोई अधिवेशन न होगा इसलिए मैं कुछ नहीं कर सकता। यदि वे यह स्वीकार करें तो भी यह बचन वे सकते हैं कि वे संघके अन्तर्गत बनाई जानेवाली प्रांतीय परिषदके पहले अधिवेशनमें किसी भी प्रकार लोगों माँगोंको मंजूर कर देने और तबतक प्रवासी कानूनपर इस प्रकार अमल किया जायेगा मानो एशियाई कानून है ही नहीं।^३ तब अनाक्रमक

प्रयत्न सफल होनेपर, मैं यह मान लेता हूँ कि इस समय ट्रान्सवालकी भेजोंमें जो अनाक्रमक प्रतिरोधी हैं वे बिना लठ दिखा कर दिये जायेंगे और जो निर्वासित कर दिये गये हैं उनको पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) के लिए जर्जी देनेका अवसर दिया जायेगा।

यदि श्रीमान हमारा आपसमें परामर्श करना आवश्यक मानते हों तो मैं वेधामें हाजिर हूँ।

साठे कू ने अब मेरे छापीसे और मुससे भेटके लिए जगने मंगलका दिन नियत कर दिया है।

आपका आदि

टाइप की हुई पत्तरी अंग्रेजी प्रसिद्धी फोटो-नकल (एच एन ४९८२) से।

१ देखिए "दुर्लभपञ्चमी भारतीयीक सामनेका विवरण" पृष्ठ २८०-१ ।

२ देखिए "प्रार्थनापत्र: कर्तव्येक संग्रह" पृष्ठ १०-२८। इसे विवरणमें शामिल नहीं किया गया था।

३ और ४ किन्तुमि अन्तर्गत दफ्तरी मति कर गई है।

मित्र हेनरी

मैं आज आपको एक तार^१ भेज रहा हूँ। अबतक इसलिए नहीं भेजा गया कि मैं एक-दो शब्दोंको सांकेतिक बनाकर कुछ मिलिभङ्ग बना लेना चाहता हूँ। यद्यपि मिस्त्रीने मुझे बताया कि वे आपका एक तार भेजनेका वादा कर चुकी थीं मैंने विवेकका उपयोग करके पीछे हटार नहीं भेजा और यह आप पर छोड़ दिया कि आप दफ्तरकीका भेजे गये तारसे उनके जानेका अनुमान लगायें। मिस्त्री अपने विषयमें बिस्तारसे आपको लिखगी हूँ इसलिए मैं इस पत्रमें अधिक नहीं लिख रहा हूँ। मैं इसके साथ बिबरन (स्टेटमेंट) भेज रहा हूँ। इसमें कई परिवर्तन और संशोधन हुए हैं। इसे जब भी अन्तिम रूप नहीं दिया है और न वह बाँटनेके लिए ही है। डॉ. एंथोनीक इन चीजोंके बारेमें बहुत ही सतर्क है। अबतक वास्तवीत तक रही है, वे नहीं चाहते कि इस तरह किसी प्रकारकी सार्वजनिक कार्रवाई की जाये। वे अबके सीमाबद्धकी जनरल स्टेटसे मिलेंगे। हमें डॉ. कू से उनके मंत्रसको मिलना है। इसलिए अपने इन्फोमें अबतक यह तय हो जायेगा कि हमें आये यहाँ किस तरह काम करना है। जो भी हो अबतक निश्चित समझौता न हो जाये आपके कामपर यहाँकी कार्रवाईका असर नहीं पड़ना चाहिए और यदि समझौता हो जाये तब भी मेरा खयाल है, आपको यहाँकी यात्राका पूरा काम उठाना चाहिए। सारे भारतमें घूमकर सभी नेताओंसे मिलना चाहिए और उन्हें बस्तुस्थिति बतानी चाहिए। समझौता हो जानेपर यदि आप एक पुस्तिका^२ प्रकाशित करायें जिसमें समस्त दक्षिण भारतीयोंके भाषीयोंके कर्तव्योंका इतिहास हो तो कुछ न होना। यह पुस्तिका मैरी हर्पी पुस्तिका (बीन वेल्फोर्ट^३)की तरहकी हो सकती है। मेरा खयाल है, वह आपके पास है ही। मिस्त्रीसे मुझे मामूम हुआ है कि वे हर हालतमें कठिन एक साथ एक सम्मेलनमें खूबी ही। मैं कुछ भी समझता हूँ कि उन्हें ऐसा ही करना चाहिए। मेरा खयाल है, कि आप कमसे-कम ३ महीने भारतमें रहेंगे। यदि आवश्यक हो तो कॉन्फ्रेंस अधिकतरके लिए भी एक जाएँ। फिर भी सम्भव है कि यहकि कामकी प्रगतिके अनुसार

१ और २ वे सम्मेलन हैं।

२ पोलकने अपने ११ अक्टूबर के पत्र में लिखा था - "मैंने दक्षिण भारतीयोंके कर्तव्योंके बारेमें पुस्तिका तैयार कर ली है। इसे मैं पहले ही ज्ञातकर किताब लिखा था। अबतक समझौता न हो जाने में अपने सम्मेलनकी समयावधि सिद्धा और कुछ वर्षोंलिख रहा हूँ।" यह पुस्तिका अक्टूबर १९१९ में बी. व. कोचन मद्रास द्वारा लॉर्ड्सके प्रकाशित की गई थी दक्षिण भारतीयोंके भारतीयों। सम्मेलनमें शुक्रार्थीकी स्थिति और उनके साथ सम्बन्ध। पोलक दक्षिण भारतीयोंके सम्मेलन एक और पुस्तिका भी लिखी किताब डॉ. कू वा देवरी डॉ. कू पुस्तिका; दक्षिण भारतीयोंके इतिहास इतिहास इन दस्तावेज।

३ लॉर्ड डॉ. कू वा. दक्षिण भारतीयोंके इतिहास भारतीयोंकी शिक्षाओं; भारतीय सम्मेलनसे संबंध। दक्षिण अक्टूबर २, पृष्ठ १-५९।

इसमें खोजवक करना पड़ेगा। यदि कोई समझता न हो तो आप अपनी व्यक्ति केवल द्वांसबाकके प्रत्यपर ही केन्द्रित कीजिए। दूसरे विषय छोड़कर जगताका ध्यान न बँटाए। मैंने आपको सॉर्ट एंस्ट्रिह्मके पर्बोकी तकसे जान-बूझकर नहीं भेजी। फिर भी जो पत्र मैंने उन्हें लिखे हैं उनकी तकसे भेज रहा हूँ। इनसे आपको मामूम होया कि यहाँ क्या हो रहा है और हमपर क्या आरोप लगाये जा रहे हैं।

आपका ठार समयपर मिल गया था। आपका है आप जिन लोगोंसे मिलते हैं वे आपके साथ अच्छा बर्ताव करते हैं और उन्होंने आपके निवासके लिए उपयुक्त स्थान खोज दिया होगा।

आप इम्बई गजट के कार्यालयमें किसी पुस्तकालयमें १३ कुमाईका मजद वेत लीजिए। उसमें हमारे सवर्ष पर एक छम्बा सम्पादकीय प्रकाशित हुआ है। जान पड़ता है कि वह सेन्स किसीके कहनेसे लिखा गया है और उसमें कुछ मुझसे अनुरोध किया गया है कि मैं अपनी कार्रवाई भी कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रखूँ। वह सेन्स बहुत सद्दानुमतिपूर्ण है। आपको उसे पढ़नेकी कोशिश करनी चाहिए। मुझे वह कुमारी स्मिथने दिखाया था। उसकी कतरन में जोहानिसवर्ष भेज रहा हूँ। हाँ अब भी समय मिले आप वहूँके सार्वजनिक पुस्तकालयोंमें जानेकी कोशिश कीजिए और श्री बेस्मिनकरसे^१ परिचय कर लीजिए। वे एक बड़े शिक्षा-शास्त्री हैं। मेरा खयाल है मैंने आपसे उनके बारेमें बात की थी। मैं उनके नाम परिचयकी कोई बिट्ठी आपको नहीं भेज रहा हूँ क्योंकि मेरा खयाल है अब आपको उसकी जरूरत नहीं होगी।

श्री डैलोने मार्कसावर डेवी डॉक्टर को लिखे अपने पत्रमें आपका उल्लेख इस प्रकार किया है “यह देखकर कि स्वामके आचारपर साम्राज्य-सरकारको प्रेरित करके भारतीयोंके कुछ दूर करानेके हमारे धारे प्रयत्न विफल हो गये हैं भारतीय मतानोंने अपने एक भोरे हमदर्दको इस आशासे मारत भेजा है कि इससे भारतीयोंका ध्यान उनके कष्टोंके प्रति आकृष्ट होगा। वे सर्वत्र एक अंग्रेज सहूरी हैं वेघोसे अटर्नी और आचार विचारसे हिन्नु हैं। भारतीय विष्टमण्डलमें निपुक्त किसे जानेबाके ये ही एक व्यक्ति है जिन्हें द्वांसबाक सरकार विरुद्धार नहीं कर सकी। एक दृष्टिसे यह कैसी मानहानि है कि आपको आचार विचारसे हिन्नु समझा जाये। कैसेमबक इसपर क्या कहेंगे? फिर भी कुछी दृष्टिसे यह नि-सम्बेह प्रसंसा है। आप इसे शोर्नीमें से कुछ भी न मानें। मुझे मामूम है कि श्री डैलो इसी लहजेमें जोरसमाके एक सवस्यको लिखते रहते हैं। यह पत्र जिखाते-जिखाते मैं अपना विचार बदल रहा हूँ और अब यह सेन्स कैकेनवीकको सेजनेके बजाय आपको भेजना। आप इसे सारा ही पढ़ना चाहें और जोहानिसवर्षमें तो यह किसी काममें न आयेगा।

१ द्वांसबाकके विष्टि भारतीयोंके माकसेर लिखनी करते हुए अपने गांधीजीकी पर्ना की भी और लिखा था कि ककर वे केर-लिखेसर सिरे हुए लोगों के हानोंमें यह जगै है। तो कले वही अच्छा होता कि वे इक्षिण बाकिछामे ही रहते। एक बात कर्के जन्मोत्सवकी लत कल भिद्येने दूखे हैं और जो कर्को कले कि वे सिवा सय्य-पूजे क्या-क्या प्रचार करते हैं। हम विचार करते हैं कि जो गर्भी कर्के मार्गिक न बजने और क्यारा उम्सवणी विचारने।

२. वे कर्के लिखन कर्केमें श्री दीदज रहे। वे जोखेके मिन वे।

नेटाल सिष्टमम्बल यागी सर्वश्री अब्दुल कादिर, बागसिया मामाठ और बदात यहाँ जा गये हैं। नेटालके प्रतिनिधियोंके लिए तैयार किये गये विबरणका मसविदा' में इसके साथ भेज रखा है। जिस क्रमसे चिकायतें प्रस्तुत होगी चाहिए भी उसमें हेरफेर मने नहीं किया है।

बाजीबारासे ट्रान्सवालके संघर्षका समर्थन करनेवाला एक बड़िया छार छार मंचरजीको भिजा है।' छार मंचरजीने उसकी नफरतें उपनिवेश कार्यालय तथा इंडिया ऑफिस दोनोंको भेजी है।

हृदयसे आपका

टाइप की हुई दफ्तरी बंगेजी प्रतिकी फोगो-नकल (एच एम ४९८१) से।

२०४ सम्बन्ध

शुक्रवार, अमस्त १, १९१९

नेटालका सिष्टमम्बल

श्री आगर मामाठ श्री एच एम बदात और श्री बागसिया पिछले पतिवारको सजुसल यहाँ जा गये हैं। उनका स्वागत करनेके लिए श्री रिच श्री हाजी हबीब कुमायी पीपलक श्री आज़म हाफेजी श्री हुसेन बाबर श्री अब्दुल कादिर और श्री यांभी गये थे। उनके ठहरनेकी व्यवस्था यही होटलमें की गई है जिसमें ट्रान्सवालके सिष्टमम्बलकी। नेटालके सर्वस्वोंने छार मंचरजी नबाब मेजर सैयद हुसेन बेलुबामी सैयद हुसेन और श्री युक्तके साथ मुसाकात की है। उन्होंने कॉर्डू और कॉर्डे मोरसे मिलनेकी प्रार्थना की है। इनमें से कॉर्डे का उत्तर भिजा है कि वे पुस्वार, १२ अमस्तको मिलेंगे। इन फोर्मलि एक विबरण तैयार किया है।' मुझे जगता है कि सिष्टमम्बलकी कोई मुनबाई नहीं होगी। एक दो बरत निकल चुका है और दूसरे यह पुछने मामकेको से कर आया है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि यह महसिस जो अनुभव से जायेगा वह भारतीय समाजके किये कामप्रद होगा। सिष्टमम्बल अग्न प्रमुख लोगसे मिलनेकी कोशिश कर रहा है। यह समझ ऐसा है जब इम्बेडेके बहुत-से प्रमुख लोग छैर करने बसे जाते हैं और सिष्टम्बर ठक बापछ यहाँ जाते। ग्याबमूति बमीर अब्दी भी फिलहाल यहाँ नहीं है। वे दूर गये हुए हैं।

श्रीमती रिच

श्रीमती रिचने बहुत सख्त बीमारी सेबी है। वे भली महिजा पिछले दो सालसे पीड़ित हैं। उनके पावकी बार बार थीरफाड़ की गई है। वे खाटसे उठ गई हैं। श्री रिच उनकी

१. एक कविता अगस्त २०११ है; बेडिन एंग्लोफिन मसविरेके लिए, मिटर विष्टमम्बल उत्तरके दखलत है हेडिग "नेटालकी भारतीयोंके कर्पोडा निकल" पृष्ठ १३३-१९।

२. यह भी पीपलकी बंगीतर बापके सम्बन्धने वा। शब्द अर्थके अर्थमें करते ११ अक्टूबरके पत्रमें भिजा है।

३. शब्द अर्थके अर्थमें बंगीतरने उबर भिजा वा। रेडिय पिछले अर्थके।

बीमारीके लक्षणसे दब गये हैं। कहा नहीं जा सकता कि वे इस बीमारीसे कैसे उबरेंगे। उन्होंने डीरिस्टरी शुरू की है। उसमें उन्होंने कुछ नाम भी कमाया है और कुछ महत्वपूर्ण मुकामे भीते हैं। लेकिन यहाँ नये डीरिस्टरीकी कमाई क्याबा नहीं होती। मेरी सलाह है कि भारतीय उनको छात्रवृत्तिके पत्र लिखें। उनका पता यह है भी एच डब्ल्यू रिच ५, पम्प कोर्ट, टेम्पल ई० सी लन्दन। मुझे आशा है कि बीमारी रिच आसिर साटये उठ सड़ी होंगी।

स्त्रियोंके मताधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली महिलाएँ

मताधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली स्त्रियाँ बहुत परिश्रम कर रही हैं। मैं उनकी परिश्रमशीलता संवठन-पटुता और कष्ट-सहिष्णुता स्त्रियों-स्त्रियों देखता जाता हूँ स्त्रियों-स्त्रियों मुझे अफसोस है कि उनके कामके मुकाबले हमारा काम कुछ भी नहीं है। उनके पास स्वयंसेवक बहुत हैं। वे यहाँ महिलायोंकी समारोहमें अबरवस्ती चुसकर निरफ्तार हो जाती हैं और बेम जाती हैं। वेसमें जाकर जाता बिल्कुल नहीं जातीं। इससे अधिकारी उनको रिहा कर देते हैं। वे अधिकारियोंको तट्ट-तट्टसे परेधान करती हैं और यह प्रतिज्ञा कर चुकी है कि उनको अबतक मताधिकार नहीं दिया जाता तबतक वे बेनसे बिसकुल नहीं बैठेंगी।

इंडियन नातिकी संघ

इंडियन नातिकी संघ विनोदक (यूनिवर्सल बिल) ब्रिटेनकी सर्वोच्च समारोह स्वीकृत हो चुका है। अब यह कुछ दिनोंमें लोकसभामें आ जावगा। श्री द्याहनर अमीतक प्रयत्न कर रहे हैं लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता कि कुछ साम होना। चर्चा सूब हुई है। साम ही या न हो किन्तु श्री द्याहनरकी छावपानी परिश्रमशीलता और परोपकार-भावना सब बहुत प्रशंसनीय है।

श्री श्रीमद

श्री श्रीमदको फौसीकी सजा हुई है। उन्हें १ सालकी फौसी दी जानेवासी है। कुछ अंग्रेज ऐसा प्रयत्न कर रहे हैं कि उनको फौसी न हो। उनका तर्क यह है कि श्री श्रीमदने यह कार्य अज्ञानवश किया है। इसके अलावा वे यह भी कहते हैं कि यह कार्य करनेमें उनका कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं था इसलिए उस हत्याकी सामान्य प्रकारकी हत्या न मानना चाहिए। इंडियन सोशियलिस्ट पत्रके अंग्रेज मुद्रकको उत्सम्भन्धी अंक छापनेपर चार मासकी कैदकी सजा मिली है। यह अंग्रेज बहुत गरीब ब्राह्मण हैं और बहुत नुकसानमें पड़ गया है। उसको तो अपने पत्रमें प्रकाशित लेखोंका कुछ ज्ञान ही नहीं था। लेकिन कानूनमें अज्ञानके लिए अज्ञानकी बखीब स्वीकार नहीं की जाती।

[बुधरातीसे]

[अप्रैल ७ १९९१ के पूर्व]

पिछले हफ्तेकी तरह इस हफ्ते भी मैं आपको कोई खास खबर नहीं दे सकता क्योंकि सारी बातें गोपनीय हैं। कोई ऐंस्ट्रिजल कूर कोषिस कर रहे हैं। मुकह होनेकी कुछ खासा भी आ सकती है। अगर मुकह हो गई तो भी कानूनको रद करने और विभिन्न भारतीयोंके अधिकारकी रक्षाके सिवा किसी अन्य बातका हुना सम्भव नहीं बीसता। विभिन्न भारतीयोंके अधिकारका अर्थ बही समझना चाहिए, जो बहुत बार इंडियन ओपि नियम में बताया जा चुका है। अर्थात् जो बहुत फर-किसने होंगे वे ही आ सकेंगे और उनमें से भी केवल छ। यह बात ठीक है कि कानूनमें छ का विक नहीं होगा और उसी तरह उसमें गोरे और कामेका भी भेद नहीं होगा। कानून एक होना [लेकिन भारतीयोंके मामलेमें] अमल जुदा होगा। कानून एक होया तो अपमान नहीं होगा। कानूनमें भेद रहेया तो अपमान होया। इसके अलावा डूधरी फूटकर बाँटे समझावेमें नहीं आ सकेंगी यह सब भारतीयोंको याद रखना है। मुझे आशा है कि अगले हफ्ते कुछ ज्यादा समाचार दे सकूंगा।

इस विषयमें सर मन्वरी भी बहुत प्रयत्न कर रहे हैं। उन्होंने अन्तरम स्मट्सको मुकाफातके लिए बिट्टी सिधी बी। उस बिट्टीका जबाब यह आया है कि सभ (यूनिअन) से सम्बन्धित कार्यसे छूटकाट निकलनेके बाद मुकाफातका बन्द उप करेंगे।

शिष्टमण्डल ऑर्डर कूसे मंगलवार ९' तारीखको भेंट करेगा। उसी दिन बहुत-से भारतीय जेसले फूटनेवासे हैं।

[जुबपलीसे]

इंडियन ओपिनियन ४-९-१९९१

२०६ पत्र अमीर असीको

[अप्रैल]

अप्रैल ७ १९९१

प्रिय श्री अमीर असी

श्री अशुक्त फारिले मुझे आपका इमी डूनरी तारीखका पत्र बिलगाया है। जहानक इन्सानवाकके प्रसन्नता सम्भव है। बातचीत अभी प्रगति कर रही है। हम निजी तौरपर कोई मोर्से दिस चुके हैं और संसदको निजी तौरपर ही ऑर्डर कूसे भी मिल रहे हैं। अभी यह कहना सम्भव नहीं है कि परिणाम क्या होया। हमने एक विवरण प्रकाशित करने

१ कूसे "९ तारीख" है। मेंट तारीख १ संभवतःको उप दुई भी डेजि "९९: इन्डियन-कमन्स" १४ १३३।

और आश्चर्यक हो तो विचरित करनेके लिए, तैयार कर लिया है। बाटपीतके कारण कोई सार्वजनिक कार्रवाई आरम्भ नहीं की गई है। मेरा खयाल है कि यदि आप इस प्रश्नके सम्बन्धमें सर चार्ल्स रिचर्डको एक व्यक्तिगत पत्र भेज देंगे तो उनके मनमें इस मामलेकी याद ताजी हो जायेगी और उन्हें इस बातका भी एहसास हो जायेगा कि आप इस प्रश्नको अपनी छुट्टियोंमें भी नहीं भूलते। इससे इस विस्वास्तको भी — जो बड़ पकड़ रहा है — बस मिलेगा कि भारत इस प्रश्नके सम्बन्धमें चुप बैठा न रहेगा।

बाधा है इस परिवर्तनसे और सिन्द्वारलैंडकी स्वास्थ्यप्रब पहाड़ी जलवायुसे आपको और आपकी पत्नीको बहुत लाभ हो रहा होगा।

श्री अब्दुस कादिर कहते हैं कि आपके पत्रके लिए मैं आपको ब्यथाबध दे दूँ और यह सिद्ध दूँ कि उन्होंने और भी हाजी हुबीबने दोनों संस्वाबोंके लिए जो-कुछ दिया है वह कर्तव्यके रूपमें दिया है। मैं आपके इस कथनसे सहमत हूँ कि दोनों संस्वाबोंकी कार्रवाइयोंमें सब भारतीयोंको योग देना चाहिए।

आपको यह बात याद होगी कि श्री अब्दुस कादिर नेटाऊके प्रतिनिधि हैं। नेटाऊ सिष्टमण्डलके सदस्योंकी संख्या अब पूरी हो गई है क्योंकि दूसरे तीन सदस्य गवर्नरवारको जा नये हैं। उनको आपसे मिलने आपकी सलाह देने और उससे अनुसार करनेका विशेष आदेश दिया गया है। उन्होंने आपके पत्रके लिए धार भी दिया था और वह उनको भी बहुतसे मिल गया। अब वे टॉमस क्रूक एंड संघके पास यह पता बनानेके लिए गये कि वे आपके पास कैसे पहुँच सकते हैं किन्तु, यह जानकर कि यह कठीन-कठीन तीन दिनका सफर है, उन्हें वहाँ आपसे भेंट करनेका विचार अनिच्छापूर्वक त्याग देना पड़ा। अब नेटाऊके प्रतिनिधियोंकी ओरसे एक विवरण तैयार किया गया है जिसे मैं इसके साथ मन्थी करता हूँ। यदि आपको कोई सुझाव देने हों तो क्या आप कृपा करके धारसे भेज देंगे? नेटासी प्रतिनिधियोंने कॉर्डरू और कॉर्डरू मॉर्से मुलाकात मानी है। कॉर्डरू ने सिष्ट मण्डलसे मिलनेके लिए आदामी बृहस्पतिका दिन नियत किया है। वे अत्यन्त निराश हैं कि उनको उस समय आपकी मौजूदगी और सलाहका काम न मिलेगा। फिर भी यदि आप कॉर्डरू के सम्मुख पढ़नेके लिए एक पत्र लिख सकें तो वह बहुत कीमती होगा। उन्होंने सर चार्ल्स ब्रूससे पूछा था कि क्या वे उनके सिष्टमण्डलका नेतृत्व कर देंगे। सर चार्ल्स ब्रूसने धारसे मुनिष्ठ किया है कि वे ऐसा करनेमें असमर्थ हैं। धार अब सर मंचरजी उसका नेतृत्व करेंगे।

आपका भावि

जस्टिस अमीर अली
इंवाडिन
सिन्द्वारलैंड

धार की हुई दफ्तरी बंयेजी प्रतिका फोटो-नकल (एच एन ४९,८७) से।

लॉर्ड महोदय

श्रीमानने हमारे संदर्भमें भारी विरक्तबन्दी की है अतः जो विषय भरे साथी और मेरे लिए सबसे अधिक महत्वका है उसपर लिखनेसे पहले क्या मैं श्रीमानको उसके लिए एक बार फिर बन्धबाद से छुड़ता हूँ? आखिरी गतीका कुछ भी हो आपने हमारे लिए जो-कुछ किया है उसके लिए मेरे देशवासी और मैं आपके प्रति जितनी कृतज्ञता प्रकट करें, कम होगी।

अगर मैंने आपकी बात ठीक समझी है तो आपकी राय यह है कि यदि कानूनमें ही संस्था सीमित कर दी जाये तो अधिकारके रूपमें प्रवेशकी बाध मजबूर हो जायेगी। अगर ऐसा है तो मुझे लगता है कि इस रियासतके साथ ही कानून भी रद्द किया जाना चाहिए। इसके लिए अनाक्रमक प्रतिरोधियोंको कोई संदिग्धी न भी जाये बल्कि अगर अन्तरक स्मृद्ध सचमुच हमसे समझौता करना चाहते हैं तो उन्हें इस मामलेमें विचार करनेपर भेरे वेद किसे संघोचनको और नीचे ही गई बाधको मजबूर करनेमें कोई एतद्वय न होना चाहिए। इसे १९८"के बाव और यह व्यवस्था भी की जाती है कि से पहले रखा जाना चाहिए।

व्यवस्था की जाती है कि उपनिवेशमें विभिन्न जातियोंके अिन लोगोंको प्रशासिकोंके रूपमें जानेकी अनुमति दी जाये उनकी संस्था गवर्नरकी परिषदके लिए विनियम (रेगुलेशन) से तन करना बावब होना (भले ही ऐसे लोग ऐसी [पोम्पताकी] परीक्षा पास कर चुके हों)।

इस संघोचनसे भारतीयोंकी प्रतिज्ञा-मात्र पूरी होती है। फिर भी इससे ब्रिटिश भारतीय होनेके नाते ब्रिटिश भारतीयोंके विरुद्ध विज्ञान-संहितामें कोई अभाव्यता उत्पन्न नहीं होती। मैरी सम्मतिमें इससे अन्तरक स्मृद्ध द्वारा या उनकी ओरसे उठई गई आपत्तियाँ पूरी तरह दूर हो जाती हैं।

मैं मानता हूँ कि यह संघोचन वेद करते हुए मैं उपनिवेशके कानून-निर्माणके इतिहासमें एक अन्तरक मिताक कायम करनेमें सहयोग से रहा हूँ। लेकिन जो अन्य प्रतिष्ठित सरजन महात्माओंके और हमारे उद्देश्यमें सहायक हैं उनके विचारोंका स्वागत करने में आपने देशवासियोंको इस अतिरिक्त घाघको माननेकी सजाह देनेके लिए तैयार हूँ। अब अगर यह [सरकार द्वारा] स्वीकार नहीं किया जाता तो मुझ विरक्त है आपको यह घाक मान्य हो जायेगा कि दान्धबाक सरकार सम्मानपूर्व समझौता करना नहीं चाहती। अन्तरक स्मृद्धके तरीकोंकी — सही या पकठ — मुझे कुछ जानकारी है। उस जानकारीके

१ देखिए लॉर्ड एंस्टहिसको किसे उनके तान रिच ग्ला लखन २, एड ३३२५ एवा एड ३३ एए वा रि० १ भी।

आपपर मैं यह सुझाव देनेकी श्रुष्ट्या करता हूँ कि अगर आपने उनसे बातचीत बिल्कुल सत्य न कर दी हो तो अनरक स्मट्सके सामने इस संघोषणको मेरे पाससे भाया हुआ बताकर न पेश करें, बल्कि उनसे स्वतन्त्र रूपसे पूछें कि क्या वे प्रवासी कानूनमें ऊपर बताया गया संघोषण करनेके लिए तैयार हैं। मैं इस चाराको पेश कर रहा हूँ इसका कारण यही है कि मैं तत्काल समझौता करने और आपके सम्बन्ध तथा कठिन भ्रमको ध्वंस होनेसे बचानेका सच्चे विम्वर इच्छुक हूँ। लेकिन अगर इसका मतीबा कुछ भी न निकले तो मैं चाहता हूँ आप मान लें कि यह कमी सुझाया ही नहीं गया था। जहाँतक मेरा सम्बन्ध है मेरा पेश किया हुआ पहला संघोषण ऐसा है जिसे मैं अपने लोपोको आन्वोलनके बीच किसी भी बस्त स्वीकार करनेकी सजाह दे सकता हूँ लेकिन जिस चाराको मैं अब पेश कर रहा हूँ वह उस क्षेत्रमें नहीं आती।

कृपया सूचित करें कि मैंने आपको जिस विवरणकी बीस प्रतियाँ भेजी थीं उसके सम्बन्धमें क्या आपको कोई और सुझाव देना है, और क्या अब वह प्रकाशित और वितरित किया जा सकता है?

आपका आदि

टाइप की हुई बख्तरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-कॉप (एच० एन ४९९) से।

२०८ पत्र सॉर्ड ऐंस्टहिलको

[सम्बन्ध]

मयस्त ९, १९९

प्रिय सॉर्ड ऐंस्टहिल

मुझे अब रेक्टर भी डोककी किताबका प्रूफ मिल गया है, हाँकि इसमें कुछ देर हुई है। मैं बहुत उत्सुक हूँ कि यह किताब जितनी जल्दी सम्भव हो छप जाये। मैं यहाँ यह भी बिक कर हूँ कि मेरे पास अनेक खरीदारोंके पेशमी पैसे भी आ गये हैं।

मैं जानता हूँ कि आप बहुत व्यस्त हैं, इसलिए आपपर यह अतिरिक्त भार डालनेमें संकोच ही रहा है। किन्तु आपने यह भावा करनेकी कृपा की थी कि आप प्रूफ पढ़ेंगे और अगर किताब पसन्द आयी तो उसकी मूलिका किस्त देंगे। फिर भी आशा करता हूँ कि आप इस और ध्यान देनेका समय निकालनेकी कृपा करेंगे क्योंकि मुझे विश्वास है आप वह काम करना चाहते हैं।

मैं अल्प शिथिलमें प्रूफ भेज रहा हूँ।

आपका आदि

टाइप की हुई बख्तरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-कॉप (एच एन ४९८९) से।

१ एन के गाँधी। एन इन्डियन रेन्डिड हव साउथ आफ्रिका।

२. सॉर्ड ऐंस्टहिल द्वारा प्रकाशित मूलिकाके लिए धेकर अतिरिक्त १८

२०९. नेटालवासी भारतीयोंके कष्टोंका विवरण^१

[सन्वन]

जनस्त १ १९९

नेटालवासी ब्रिटिश भारतीयोंके कष्टोंका संक्षिप्त विवरण नेटालवासी भारतीयोंके सिष्टमण्डल द्वारा प्रस्तुत

इस सिष्टमण्डलमें ये लोग सामिल हैं जन्तुक कारिग, नेटाल भारतीय कांग्रेसके कार्यवाहक जम्पस पीटरमैरिस्सबर्मके मामोब भायाठ जो पिछले २५ सालसं व्यापार करते जा रहे हैं हुसेन मुहम्मद बहात पीटरमैरिस्सबर्म और रिचमंडके व्यापारी जो पिछले २२ सालसे व्यापार करते जा रहे हैं और बर्मके मुहम्मद कासिम जाफरिया व्यापारी और नेटाल भारतीय कांग्रेसके संयुक्त अबैतनिक मन्त्री।

ये प्रतिनिधि पिछली ७ जुलाईको बचनमें आयोजित एक सभा में चुने गये थे। सभाकी जम्पसता नेटाल भारतीय कांग्रेसके कार्यवाहक जम्पस भी जन्तुस्का हाजी आबमने की और चुनाव सर्व सम्मतिसे हुआ। प्रतिनिधियोंको अपने उद्दिष्ट कार्यके सम्बन्धमें अनेक ठार प्राप्त हुए हैं।

उपनिवेश-कार्यालयको एक प्रार्थनापत्र^१ भेजा गया है जिसकी एक मकसद अब प्रति निधियोंको भी मिल गई है।

नेटालके ब्रिटिश भारतीय कम्बे बरसेसे अनेक पम्मीर नियोग्यताबोसि पीड़ित हैं। ये नियोग्यताएँ कुछ दो उन उपनिवेशके विधान-मण्डल द्वारा बनाये गये कानूनोंके और कुछ नगरपालिकाओं द्वारा निमित्त विधियोंके परिणाम हैं।

समाप्तकी सरकारने १९६ के नगरपालिका कानून (स्पुनिसिपल कॉरपोरेसनस ऐक्ट) और १९८ के नेटाल परबाना कानूनों (नेटाल साइसैसिय ऐक्ट्स)को शाही-मंजूरी नहीं दी इसलिये सिष्टमण्डल उसके प्रति आक्षेपपूर्णक आमार प्रकट करता है। कारण इस सब कानूनोंमें भारतीय समाजपर और व्यावा नियोग्यताएँ लरनेबाकी थीं।

नेटालके ब्रिटिश भारतीयोंको नेटालकी संसदमें व्यवहारत कोई प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं है इसलिये शाही सरकारका ही संरक्षण उनका सबभग एकमात्र आशय है। उनके लिये स्वयामत (सेल्फ-गवर्नमेंट) कोई विशेष या कामप्रद अर्थ नहीं रहता।

१ यह विवरण भारतीयोंने ६ अगस्तको ही देवार कर जिवा वा। देखिये "एन एच० एच एच० बी०एच०" एच ३३७। बी नॉर्थमिने एन ११ अगस्तको कन्वेंसिय कार्यालय भेज दिया वा। कर्पोसि बोर्डे डूके एच डूके १२ अगस्तकी मेट्रिक अफसरपर एच कम्पन्में एक अतिरिक्त कलाम भी दिया वा; देखिये कन्वेंसिय १९।

२. १ जुलाई १ को एक प्रार्थनापत्र नेटाल भारतीय कांग्रेस तथा नेटालके विभिन्न भारतीय लों द्वारा दिया गया था जिसे कन्वेंसियके द्वारा कन्वेंसियर तथा व्यापार अपरि विभिन्न सबों लम्बनी लोंके लिये भेजा गया। देखिये "एन एच०" एच ३५४।

लेकिन पिछले मन्त्रक अपना आवेदन निम्नलिखित तीन कष्टों तक ही सीमित रखना चाहता है। ये तीनों कष्ट अत्यन्त गम्भीर और स्पष्ट हैं।

सन् १८९७ का विज्ञेता परवाना कानून १८ (डीकर्स साइसेन्सेज ऐक्ट १८)
सन् १८९५ का पिपमिटिया प्रवासी कानून (इन्वेन्सर्स इमिग्रेशन ऑ) और
भाष्यीय बाककोनी विज्ञाके बारेमें सरकारकी नीति।

सन् १८९७ का डीकर्स साइसेन्सेज ऐक्ट

सारा भाष्यीय समाज महसूस करता है कि यह कानून अत्यन्त अन्वयपूर्ण और कुर है। इससे सारे भाष्यीय व्यापारी समाजको कष्ट है। इसकी सम्बन्धना तो ऐसी है कि वह सामान्य प्रयोगके लिए बनाया गया जान पड़ता है, लेकिन व्यवहारमें उसका प्रयोग सततोत्तर भाष्यीय व्यापारियोंके उनके परवाने छीननेके लिए ही किया गया है। ऐसा विश्वास है कि १८९७ के विज्ञेता परवाना कानून द्वारा भी नई सत्ताका बुद्धि बुद्धियोग होता रहा है। श्री वेन्वरसेनने तो यहाँतक कहा था कि यदि भारतीय व्यापारियोंके खिलाफ किया जानेवाला उसका इस्तेमाल प्रयोग बन्द नहीं हुआ तो उन्हें सतत कार्रवाई करनी पड़ेगी। जान पड़ता है इसका तात्कालिक परिणाम यह हुआ कि नेताकी सरकारने (श्री वेन्वरसेनके सुझावपर) नवस्थापिकाओंको इस आसयके परिपत्र भेजे कि यद्यपि उन्हें अनिश्चित अधिकार दिया गया है किन्तु उनसे आशा यह की जाती है कि वे उसका प्रयोग व्यापारपूर्वक और निष्पक्ष रीतिसे करें अन्यथा उनसे यह अधिकार छीन लिया जायेगा। और यदि वे इस अधिकारको काममें रखना चाहते हों तो उन्हें निहित स्वार्थोंको कदापि हान नहीं उगाना चाहिए।

उदाहरणके लिए अभी हाकमें ही उचित दो मामले उद्धृत किये जा सकते हैं। श्री एम ए गोगा डेवीस्मिथके एक विटिष भारतीय व्यापारी है। वे अपना बन्धा बहुत समयसे करते आ रहे हैं और उन्हें बुरीपीय विज्ञेताओं और साइकोला व्यापक समर्थन प्राप्त है। पिछले जूनमें वे डेवीस्मिथके एक बूधरे भारतीय व्यापारीका परवाना अपने नाम बदलवाना चाहते थे। उक्त व्यापारीकी स्थिति भी उनकी वीठी ही थी किन्तु परवाना अधिकारीने बिना इस विषयमें निरंकुश सत्ता प्राप्त है, उन्हें ऐसा करनेकी आज्ञा देनेसे इनकार कर दिया। बन्धकी जगहपर भी गोगाकी माँकी माँकी है। श्री गोवाने साइसेन्सेज बोर्ड [परवाना-निकास] में अपनी की डेविन बोर्डने परवाना-अधिकारीका निर्णय उलटनेसे इनकार कर दिया।

पिछले साठ इसी प्रार्थिके एक बूधरे परवानेको नया करनेसे इनकार कर दिया गया था उस समय इस निर्णयके खिलाफ साइसेन्सेज बोर्डके सम्मुख भी नई बुरीपीय गुनबाइके समय श्री वाइली के सी एम ए ए ने कहा था

“आप अन्वय-समितिकी डेविनसे किसी भारतीयके साथ भी अन्वय होते नहीं देख सकते। आप परवाना छील लें तो व्यापार जलम हो गया समझिए। आपने और डेवी स्मिथके भाष्यिकोंने उसे अपना बन्धा बदलने दिया है तो अब मेरा निवेदन है कि, आप उससे उसका परवाना वापिस लीं कि सकते। यदि यह आज आकर आपसे नया परवाना मिले तो आप इनकार कर सकते हैं। जलने आपको बताया है कि उसका ९५ प्रतिशत व्यापार बुरीपीयोंके साथ है; बाहिर है कि उसके व्यापारसे साइकोला बोर्डको बुद्धि

ही है। आपके सामने इससे ज्यादा सबकुछ सामना लेकर आना एकदम असम्भव है। मेरा अनुरोध है कि आप इस कमरेमें आनेसे पहले थोड़ा-कुछ भी हुआ हो उससे प्रभावित हुए बिना इस मामलेपर विचार करें और प्रायिके साथ स्याम करें।”

विक्रम तिवरके आइसैंसिप बोर्ड [परवाना निकाय] के हालके निर्णयोंपर टिप्पणी करते हुए टाइम्स ऑफ़ नेटाल पत्रने लिखा था

धर्मनाक अन्याय

“इससे ज्यादा अन्यायपूर्ण और मनमाना कार्रवाईकी कल्पना नहीं की जा सकती है। और हम निम्नकोष कह सकते हैं कि यदि बीजर पदाधिकारियोंने दक्षिण आफ्रिकी पञ्चराज्यके विनोंमें ऐसा गलत काम किया होता तो राष्ट्री सरकारने उन्हें पुरान्त ही अपना हाथ रोकनेपर बाध्य किया होता। हुआ यह है कि मनुक प्रतिष्ठित भारतीय बुद्धनचारोंको जिन्होंने अपना बच्चा कापी बना लिया है और उसमें भारी पूंजी लगा रखी है अचानक और मनमाने तौरपर कानूनका पावन न करनेका आरोप लगाकर व्यापारिक परवानोंसे भंडित कर दिया गया है। उन्होंने तो कानूनका अपनी अस्तित्वके अनुसार पूरा पालन किया था और जो लोग अपनीमें नहीं लिख सकते थे वे हर हकके अन्तमें अपनी बहियाँ कितनी योग्य मुनीमसे [बड़ेजीमें] लिखवा लेते थे। वे ऐसा बरतते करते आ रहे हैं और अतीतक इस कामके खिलाफ एक धब्ब भी नहीं कहा गया। सेडीस्मिथके परवाना बोर्डके निर्णयको हम धर्मनाक अन्याय और घोर कानूनी भी कहेंगे; और यदि प्राचियोंको कपीका अधिकार होता — जो कि योबूरा कानूनके अन्तर्गत उन्हें नहीं है — तो बोर्डका यह निर्णय सर्वोच्च ग्यायामय द्वारा पुरान्त ही खारिज कर दिया जाता। इस विषयमें हम अपनी स्थिति बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहते हैं। हमें भारतीय व्यापारियोंके कोई सहानुभूति नहीं है और भारतीय व्यापार समाज ही चाये इसमें हमें झुकी ही होगी। हम प्रवेशके बन्दर पाइपर कड़ेसे-कड़े प्रतिबन्ध ल्पामें जानका समर्थन करेंगे; और इतना ही नहीं भारतीय व्यापारियोंको नये परवाने न देने तककी हिमायत करेंगे। लेकिन जिन भार तीर्थोंको इत देवानें बस जाने दिया गया है, जो बरतते हैं पूर्णतया कानूनी ढंगसे अपना कारोबार चलते आ रहे हैं और जिन्होंने अपन व्यापारिक परवानोंके अन्तर्ग व्यापारिक बर्षोंमें अपनी पूंजी लगा रखी है, उन भारतीयोंके परवान नये करनेसे इनकार करना ऐसा कार्य है जो सब राज्य राष्ट्रोंके कानूनोंके और ग्यायकी बिल्कुल प्राथमिक कल्पनाके भी खिलाफ है। हमें आशा है कि इस सम्बन्धमें परवाना-अधिकारियोंको तत्ता हिमायतें भी चायेगी ताकि सेडीस्मिथकी इस अयोग्य घटनाकी पुनरावृत्ति न हो। यदि ऐसा न किया गया तो अहंशिक भारतके लोगोंके साथ साम्राज्यीय सरकारके सम्बन्धका तबाल है नैदान उसे बड़ी परेशानीमें डाल देगा।

मार्च १९८ में एस्टकोर्टक अनेक राष्ट्रीय व्यापारियोंकी परवानोंमें सन्धिबन्धन अटीकोंकी पैनी करते हुए विमान-समाक तदस्य कर्मक दीगने कहा था

अपने संसदीय कर्मकालमें मैंने हुनेगा यह कहा है कि भारतीय व्यापारियोंकी संख्या बढ़ने देना बांछनीय नहीं है। और जब लोग मेरे बात यह अनुरोध लेकर धामे

कि इन अपीलकोंकी पैरवी में कबे, तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन मुझे बताया गया कि सबतमें मंग यह कहा है कि एक समाजके नाते हमें परिस्थितिका मुकाबला सबसेही तरह करना चाहिए, किसी तरहका अग्र्याय नहीं करना चाहिए। हमें ऐसे कबम उठाने चाहिए, जिनसे उन लोपोंके साथ पूरा न्याय हो जिन्हें हमने इस बेजमें अपनेके सिम् प्रोत्साहन दिया है और यहाँ जाकर जामबाब प्राप्त करने और निहित स्वार्थ स्थापित करने दिया है। एक उच्चतर नातिके नाते हमें इस समाजके प्रति अपने कर्तव्यका पालन करना है और यदि कोई बुरा काम करना आवश्यक हो तो वह संसदको संमालना चाहिए और उसे ही सही कबम उठाना चाहिए। कानूनका वह मंजरा कदापि नहीं था कि इस तरहका बुरा काम ऐसे स्वानीय बोर्ड करें और मैं अपनपूर्वक कह सकता हूँ कि यदि आप यह प्रार्थनापत्र नामंजूर करने तो हमें लगेया कि हम बहुत बीन-हीन हैं।

दूसरा मामला इस सिष्टमन्डके ही एक सबस्य पीटरमैरिस्बर्ग और रिचमन्डके भी एच एम बरातका है। पिछले साल रिचमन्डमें उनके मकानोंके सिम् परबाना-अधिकारीका दिया हुआ परबाना कुछ यूरोपीय प्रतिस्थितियोंके उकसानेपर, परबाना-बीर्ड द्वारा छीन लिया गया था। परबाना-अधिकारीने उसे परबाना पुनः दे दिया किन्तु बोर्डने उसका निर्णय फिर मंजूर कर दिया।

सन् १९७ में विजय रिचरके इकाकेमें ११ परबानोंको नया करनेसे इनकार कर दिया गया था

इनाबामें इस परबानोंको नया करनेसे इनकार कर दिया गया

अलेक्जैण्डरियामें दो

”

विक्टोरियामें पाँच

”

”

वीनेममें तीन

”

पिछले साल इनकारीके ऐसे किस्सोंमें और इजाजा हुआ।

इस सिष्टमन्डके सबस्य यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि भारतीय व्यापारियोंके प्रति यह कडा और मनमाना रवैया सामान्य यूरोपीय जनताके कहनेसे नहीं बल्कि यूरोपीय व्यापारिक प्रतिष्ठानियोंके बहावके कारण अपनाया जाता है। परबाना निहाय (साइसेंसिज बोर्ड) जो इस बियममें अपीलकी अन्तिम अराखतें हैं आबातर यूरोपीय बुकानबारीके नरे हुए हैं। सर्वोच्च न्यायालयने निकायोंको भी यहाँ निरुद्ध सत्ताकी टीका कई बार की है और उनके निर्णयोंमें इस्तखेय करनेकी अपनी असमर्थतापर खेद प्रकट किया है। भारतीय व्यापारियोंके परबाना-सम्बन्धी मामलोंका निर्णय सबसे पहले परबाना अधिकारी करते हैं और उनमें से आबातर या तो परबाना निकायों द्वारा नियुक्त किये जाते हैं या उनके मीकर हैं। परबाना देना उसे नया करना या किसीके नाम बदलना — इन बातोंका निर्णय वे अधिकारी ही करते हैं। परबाना-निहाय उनके इन निर्णयोंका अनुमोदन न करे, ऐसा सामय ही कभी होता है। भारतीय व्यापारियोंके कारोबारको कम करना उनकी बोधित नीति है और इस नीतिके परिणाम यह हुआ है कि भारतीय व्यापारियोंको नये परबाने प्राप्त करने पुरानोंको नया करने या दूसरोंके नामपर बदलवानेके मामलोंमें साधारण न्याय भी नहीं मिल सकता। पिछले बारह वर्षोंमें जबसे यह कानून अमलमें है ऐसी अनेक बटगएँ हुई हैं जिनका उदाहरण देकर ऊपर कही हुई

बात सिद्ध की जा सकती है। अगर प्राचीं भारतीय हों तो उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा उनका दायित्वमात्र या उनके निहित स्वार्थोंका कोई ब्यापक नहीं किया गया है। उदाहरणके लिए

सन् १९०७ में इस बस्तावेजके बुजारे हुस्तासूरकठानि नीनेनमें एक (ग्यासी) ट्रस्टीसे एक कारोबार खरीदा था। परबाना-अधिकारीने इस कारोबारको उनके नाम बदलने और परबाना वनेसे इनकार कर दिया। परबाना-निकायमें अपील की गई तो उसने अधिकारीका निर्णय बहास रखा। जब सर्वोच्च न्यायालयमें अपील की गई उसने राहूत देनेमें अपनी अर्ध मर्यादा प्रकट की। सन् १९१६ में इस बस्तावेजके चौथे हुस्तासूरकठानि पास पोर्ट रोपस्तेनमें बदलनेवाले एक कारोबारका परबाना था जो उसके नामपर बदल दिया गया था। परबानेको बदलनेकी बाकायदा इजाजत ही गई थी और एक बार उसे नया भी कर दिया गया था। केफिन बर नया करनेके लिए दूसरी बार अर्जी दी गई तो ब्यापारिक प्रतिस्पर्धिकोंके उकसाने पर उसे नामंजूर कर दिया गया।

बाहिर है कि यदि ब्यापारिक परबाना कानूनमें ऐसा संशोधन नहीं किया जाता जिससे पीड़ित पक्षको सर्वोच्च न्यायालयमें अपील करनेका अधिकार मिल जाये तो किसी भी बिन नेटाकके भारतीय ब्यापारी विरक्तुल मिट जायेंगे और वह दिन बहुत दूर भी नहीं है।

गिरमिटिया प्रवासी कानून संशोधन अधिनियम १८९५

पिछले पचास वर्षोंमें नेटाक मजदूरोंके लिए और अपनी समृद्धिके लिए गिरमिटिया भारतीय प्रवासियोंपर निर्भर रहा है। इस बातको पहलेके भी और आजके भी प्रायः प्रत्येक नेटासी राजनयिकने स्वीकार किया है। नेटाकके मुख्य उद्योगोंका अस्तित्व सम्भव्य पूरी तरहसे इन्हीं मजदूरोंपर निर्भर रहा है। केफिन अपने जीवनके उत्तम वर्षोंकी उत्तम शक्ति उपनिवेशमें लगा देनेके बाद इन्हीं मजदूरोंको उपनिवेशमें प्रतिष्ठित स्वतन्त्र नागरिककी तरह बसने और अपना ध्येय जीवन कितानेका मौका नहीं दिया जाता। उन्हें दुबारा गिरमित स्वीकार करने या उपनिवेशसे बसे जानेके लिए साधारण किया जाता है और इसके लिए दूर तरहकी कोशिश की जाती है। उसपर, उसकी पत्नीपर और उसके बच्चोंपर तीन पीढ़का एक अचल व्यक्ति-कर बोधा गया है। यह कर बापिक है और इसका बोझ इतना ब्याधा है कि उसके कारण कितने ही गिरमित-मुक्त भारतीय बरबाद हो गये हैं। उससे भी ब्याधा भारतीयोंको आपत्तबन्धक कार्य करनेके लिए बाध्य होना पड़ा तथा अनेक भारतीयोंका नैतिक पतन हुआ है। इस करके पक्षमें शिर्क यही एक बात कही गई है कि उससे राजनीतिक मतभेद सघटा है। सम्राटकी सरकारके बड़े रूसिके कारण उपनिवेशकी सरकार भारतीय गिरमितिया मजदूरोंको गिरमितकी अवधिके समाप्त होनेपर भारत वापस भेजनेकी अपनी प्रिय और विराकाभित योजनाको अभीतक कार्यान्वित नहीं कर पाई है। केफिन डिप्टमन्टके सदस्य आदरपूर्वक निवेदन करते हैं कि उही प्रकार ब्याय और औचित्यके साथ सम्राटकी सरकारको यह जन्मायपूर्वक विधेय बापिक-कर भी नामंजूर कर देना चाहिए या क्योंकि इसका भी बड़ी परिणाम होता है।

डिप्टमन्टके सदस्योंको उभता है कि उपनिवेशके स्वतन्त्र भारतीयोंके और गिरमितिया मजदूरोंके हितमें भी गिरमितकी सारी पद्धति ही बरत कर दी जानी चाहिए। उनका ख्याल है कि ये जगते कोद गिरमितकी अवधिमें नेटाकमें भारतकी अपेक्षा कुछ ब्याधा कमा लेते हैं, यह बात बहुत महत्वकी नहीं है। इससे उन्हें जो भीतिक लाभ होता है वह उनके

मनुष्यत्वकी हानिकी और समान उपनिवेशपर इस प्रकाशे उत्पन्न कुपरिणामोंकी तुलनामें कुछ भी नहीं है।

केकिन यदि नेटालके मुख्य उद्योगोंको संकटमें डाले बिना पिपरिमिटिया मजदूरोंका नेजा जाना एकाएक बन्द न किया जा सकता हो तो प्रतिनिधियोंकी मज रायमें पुनर्लोक विशेष कर तो अवश्य ही उठा किया जाना चाहिए।

भारतीय विद्यार्थियोंका शिक्षण

प्रतिनिधि इस बातको बड़ी मन्मीरतासे महसूस करते हैं कि नेटालके ब्रिटिश भारतीयोंको अपने बच्चोंकी शिक्षाके लक्ष्य परिमित छात्रोंके भी संबंध करके जो उन्हें आज तक मिलते रहे हैं जानबूझकर उनके समाजके बौद्धिक विकासको रोकनेका प्रयत्न किया जा रहा है। सरकारसे सहानुभूति प्राप्त भारतीय स्कूल ब्रिटिश भारतीय बालकोंको सिर्फ प्राथमिक श्रेणीकी शिक्षा देते रहे हैं। उपनिवेशके नाम स्कूल तो भारतीय बच्चोंके लिए बिल्कुल बन्द ही हैं। ऊँची श्रेणीके सरकारी स्कूलोंमें भारतीय बालकोंको उरख बर्षकी उम्रके बाद अपने यहाँ विद्यार्थीके रूपमें रखना बन्द कर दिया है। फल यह हुआ है कि यदि इन बालकोंको ऊपरकी कक्षाओं तक पहुँचनेका अवसर दिया जाये तो उन्हें यहाँ जो शिक्षा मिल सकती है, वह सब उनके लिए अपाय्य हो गई है। इस नीतिके परिणामस्वरूप बहुतेरे भारतीय बालकोंको जिनकी शिक्षा शुरू ही हुई थी भारतीय स्कूल छोड़ देने पड़े हैं। शिक्षा प्राप्त करनेके छात्रोंके इस अभावसे भारतीय समाजके विद्यार्थीय छात्रोंको बड़ी कठिनाई होती है और वे बहुत चिन्ता करते हैं। वे अपने बच्चोंके भविष्यके बारेमें बहुत चिन्तित हैं।

प्रतिनिधि सचिवय निवेदन करते हैं कि इस महत्वपूर्ण बातपर यूरोपीय उपनिवेशियोंको भी उतनी ही चिन्ता होनी चाहिए क्योंकि उपनिवेशकी आबादीके एक हिस्सेको यदि निरक्षरतामें पड़े रहनेका दख दे दिया जाये तो इसका साम्यके बौद्धिक और नैतिक जीवनपर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

पुनर्लोक तम्पोंका खयाल करते हुए नेटालके ब्रिटिश भारतीय स्वभावतः बहिष्ण आधिकारी उपनिवेशोंके प्रस्तावित संघको अमानुरूपिसे देखते हैं। वह बात आम टीपर स्वीकार की जाती है कि बहिष्ण आधिकारमें भारतीय-विरोधी अहुर उठ रही है। प्रस्तावित संघके चार सदस्य-राज्योंमें से तीन तो ब्रिटिश भारतीयोंके माने हुए विरोधी हैं। ऐसा लग रहा है कि केव भी इस विरोधी आन्दोलनमें शामिल होनेवाला है। फल यह होगा कि संघ उब साठी विरोधी शक्तिवर्षिक योगका प्रतिनिधित्व करेगा जो अभीतक एक-दूसरेसे अलग रहकर काम कर रही थी। इसलिये ब्रिटिश भारतीयोंको लगता है कि बहिष्ण आधिकारके इस प्रस्तावित संघके बन जानेसे यहाँ रहनेवाली सम्राटकी बख्शार प्रवाके इस वर्गकी बधा और भी खराब हो जायगी। जो नियोग्यताएँ तो उनपर पहलेसे ही लगी हैं एक तो ब्रिटिश भारतीय होनेकी और दूसरी तबाकबित रंगवार जातियों में मिले जानेकी।

निवेदन है कि बहिष्ण आधिकारके दूसरे उपनिवेशोंके बारेमें जाइ जो कहा जाये नि-लभेह् छाही सरकारको तो नेटालके ब्रिटिश भारतीयोंको म्याय विमानकी मुविषा है ही। एसा नहीं हो सकता कि उपनिवेश सब कुछ किता ही रहे और वे कुछ नहीं। वह स्वयं भी स्वीकार करता है कि अथ उद्योगोंको नायम रखने और समझ विदात करनेके लिए वह यहाँ सरकारकी अनुमादनापर निर्भर है। नेटालको जो बचपर पिपरिमिटिया मजदूर भेजकर उतकी

तत्सम्बन्धी आवश्यकता पूरी की जाती रहती है उसके एवजमें उद्योग कमसे-कम इतना करनेके लिए आवश्यक कहा जा सकता है कि जो ब्रिटिश भारतीय वहाँ बस पये हैं और इस प्रकार जिन्होंने वहाँ निहित स्वार्थ स्थापित कर लिये हैं उनके साथ सामान्य म्याग और निष्पक्ष व्यवहार किया जाये।

अब्दुल कादिर

अमोद भायात

एच० एम० बवात

एम० सी० आसिम्मा

[अंग्रेजीसे]

कानूनियल ऑफिस रेकॉर्ड १७९/२५५

२१० पत्र लॉर्ड ऐन्टिक्विको

[सम्बन्ध]

अगस्त १ १९९

लॉर्ड महोदय

जी हानी हबीब और मैं लॉर्ड कू से मिलकर जमी खड़े हैं। उनका रक्त बहुत सहानुभूति पूर्ण था उन्होंने हमारी बात बरिसे सुनी। मैंने उनके सामने उस संसोधनकी एक डून्की-सी कपरेखा रखी जो मैंने कल सायं आपको भेजा था क्योंकि मैंने देखा कि अक्सर इनका भ्रमण है कि उससे चूकना न चाहिए। मैंने उनसे निवेदन कर दिया कि हम इस प्रसन्नता आपके साथ पूरी तरह विचार-विमर्श कर चुके हैं। लॉर्ड कू ने फिर हिलाकर अपना प्रशंसा-भाव व्यक्त किया और कहा कि आपने [लॉर्ड ऐन्टिक्विने] इस प्रसन्नता सम्बन्धमें बहुत परिश्रम किया है। लॉर्ड कू ने जो-कुछ कहा उससे मुझे लगता है कि बातचीत जमी जाती है। मेरा खयाल है, वे स्वीकार करते हैं कि मैंने जो संसोधन सुझाया है वह बहुत उचित है और वे जमरत समूहपर उसे माननेके लिए और चाहेंगे। इन स्थितियोंमें अब क्या किया जाये मेरी समझमें नहीं आ रहा है। मैं आपकी सलाहकी प्रतीक्षामें हूँ।

आपका आदि

टाइम की हुई दफ्तरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एच एन ४९९६) से।

२११ तार एच० एस० एस० पोलकको

[कम्बुत
अगस्त १ १९९१]

पोलक
रायटर
बंबई

सरकार एव करनेको राखी। कानूनमें सीमा बाहिर करना चाहती है। हमने संसोधन मुसामा [बिसे] गवर्नरको फिटी भी बेसके प्रवासियोंकी संस्थाकी सीमा निर्धारित करनेके बिनियमोंकी रचनाका अधिकार मिळे। इससे हमारी टेक रह जाती है। (अच्छा होता आप समाजी' टाटीसका ऐकान कर बेते)।

पांजीजीके स्वाक्षरोंमें अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन० ४९९१/२) से।

२१२ तार ब्रिटिश भारतीय सघको

[कम्बुत
अगस्त १ १९९१केबार]

बि मा सं
बोहानिसबमें

समाजिकी बाठपीठ जाती। सरकार एव करनेका राखी। कानूनमें सीमा बाहिर करना चाहती है। हमने माम सामान्य संघोधन मुसामा गवर्नरको फिटी भी बेसके प्रवासियोंकी सीमा निर्धारित करनेके बिनियमोंकी रचनाका अधिकार मिळे। इससे कानून सबके लिए समान रूपसे लागू होनेवाला बनेगा। इससे हमारी टेक रह जाती है। भासा है, फस्तामयी हरिभास [बौर] इससे ट्रांसबाळमें रहे। बातर कीट पायें।

पांजीजीके स्वाक्षरोंमें अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ४९९८) से।

१. अमितल कम्बुके डेरिक टारत कुर्ई वई समते है। कम्बुकी टाटीस ३१ अगस्त डेरिक कुर्ई भी। डेरिक "एन बीई वू के निजी डकिको" एड ३२५।

२. अगस्त २९, १९९१के इन्डियन ऑफ इंडिया बौर १९-८-१९९१के टिन्सूमें एड टारका फियर परिपिकि टारत बम्बईके एड टारताधिक गुजरातीके १५-८ १९९१के बंदमें कम्बु गुजराती कम्बुत कम्बुकि हुमा वा "गुजरातीके सरकार १९००के एडिबई कानूनको एव करेके फियर एजी है, फियर एव अगली कानूनमें प्रलेख ५५ कम्बुकेबने अगलेवाके बने एडिबई प्रवासियोंकी संस्थाकी सीमा निर्धारण करनेवाकी एव कता बाहिर करना चाहती है। भारतीय विद्यमानके भारतीय आचारक कानूनमें अगलेवा अगलेवा करेके कम्बुत कर रिवा है, बौर नर टारता है कि अगली कानूनमें एव देवी कता बाहिरिक भी बने मिसे गुजरातीके सरकारकी फिटी भी बेसके प्रवासियोंकी संस्थाकी सीमा निर्धारित करनेके बिनियमोंकी रचनाका अधिकार मिळे। एड टारत कानूनमें समाजका विद्यमान कम्बुत देवा बौर एडिबईके अगलेवा करेके कानूनमें भी बीई कम्बुत वई बनेगी।"

३. बाल बरना है किउ टाटीसको फियर टारत देवा कता वा कता टाटीसको एव भी देवा कता वा।

४. इरिक्क पांजी बौर टाटीस कम्बुकी कम्बुत ९ बौर १ अगस्तको रिवा हुप है। कम्बुकीकी कता रिवा फियर फियरकर करके २१ अगस्तको कता है ही वई भी।

५. डेरिक "एन एव एड एड डेरिककी" एड ३२५।

बि मणिसाल

तुम्हारा पत्र मिला गया है। समझीला होनेकी अब कम ही भाषा है इससे यह पत्र संभवतः बारको लिखते सेता हूँ क्योंकि अबतक बिलगा काम या उससे ज्यादा रहनेकी सम्भावना है।

तुम्हारे पत्रोंमें सब कमी-कमी भरपूर होते हैं। इसलिए यदि तुम हमेशा पत्रको बुझा पढ़ लेनेकी आदत बना लो तो ठीक लिखोगे।

मेरी सलाह है कि किसकास तो दूसरी टंकी सिमे बिना ही नाम बका लेना चाहिए। अब बरसातका मौसम आयेगा इसलिए एक टंकीसे ही काम बका आयेगा। भाषा है इस बीच मैं बहूँ का आठेगा। उस बफ्त हम देख लेंगे।

तुमने [बपनी पढ़ाईकी] बिम्बा छोड़ भी यह पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई। मैं पीछे-पीछे यहाँकी बन्तुबिबति देखता जाता हूँ पीछे-पीछे मुझे लगता है कि यहाँ कोई सास पिसा प्याना बन्धी तरह प्रायः की जा सकती है, यह माननेका कोई कारण नहीं है। मैं तो यह भी देखता हूँ कि यहाँ कुछ बिम्बा घबरेल है। फिर भी मनमें होता है कि तुम सब यहाँ आकर कुछ दिन रहो। हम अपना कर्तव्य बन्धी तरह निभाते रहें फिर जो हीला है वह होगा। तुम यहाँ मन लगाकर पढ़ो यह बहूँ आनेकी तैयारी करनेक समान है। बी बेस्टकी मैं सम्भवसे १५ मीक दूर ही है फिर भी कमी लगन नहीं आई। सन्दनसे आउबकी यात्रा छात्रे तीन बटेकी है।

अभीतमें हम बिलने फलके वेङ्गकी देखभास कर सकते हैं उससे अधिक पेड़ हैं। इससे हमारी कुपम्प्याकी कमी प्रकट होती है। बिलनी देखभास लुब तुमसे हो सके जतनी करना।

बनीबहनकी तबीयत कैसे आउब हुई, क्या हुआ और वह कितने बिलके लिए टोंगाट पर है आदि समाचार मुझे देना।

काबामाईके घर पुत्र-मापि हुई, यह तो लुब होने लायक बात है। फिर भी मेरे बिचार तुम जानते हो। उनके अनुधार मुझे दुःख भी होता है। मैं बेच और काबका बिचार करते हुए यह मानता हूँ कि इस समय तो बहुत ही कम भाष्टीयोंको बिबाह करना चाहिए। बिबाहका अर्थ भी बहुत गहन है। बिपय-सेबनके लिए जो व्यक्ति बिबाह करता है वह पशुसे भी हीन है। बिबाहिताका केवल सम्मानोत्पतिके लिए मैमून करना उचित माना जाता है। ऐसा बर्म-वास्तु भी कहते हैं। इस बुष्टिस जो सम्मान इस समय उत्पन्न होती है वह बिपय बृत्तिकी उत्पत्ति है। इसीसे ये सम्मान हीन और नास्तिक हो जाती है और बनी रहती हैं। इस समय मैं तुम्हारे घाब इससे अधिक बर्बा नहीं करता क्योंकि उसके लिए अधिक गहराईमें उतरना पड़ेगा। किन्तु ऊपर जो लिखा है उसका आशय तुम समझो यह मेरी इच्छा है। समझकर इन्ड्रियोपर बिबय पाओ। मेरे ऐसा लिखनेसे तुम यह भय तनिक भी न करना कि बापू २५ बर्षके आने भी बिबाह न करनेके लिए बाधता चाहते हैं। मैं तुम्हारे ऊपर या

क्रिष्ठीके भी ऊपर अनुचित ब्याज डालना नहीं चाहता। केवल सक्काह देना चाहता हूँ। पच्चीस वर्ष तक भी तुम बिबाहका विचार न करो तो मुझे तुम्हारा विशेष कस्याम बिसाई देना है। लेकिन उस समय बिबाह करनेका विचार हो तो भी बिबाहका अर्थ क्या है वह तुमको काबामार्गके भावसंघे समझाता हूँ। तुम वास्तव हो फिर भी तुमको ऐसे ज्ञानपूर्व विषयमें लिखता हूँ। इसका कारण यही है कि तुम्हारे चरित्रक सम्बन्धमें मैं बहुत ऊँचे विचार रखता हूँ। तुम्हारी मामुके दूसरे वास्तवको मैं ऐसे विचार नहीं लिखूँगा क्योंकि वह समझ नहीं सकेगा।

बाके और दूसरे पत्रोंमें अधिक देखोमे। वे पत्र जब फिर लिखूँगा।

बापूके आसीबादि

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूक गुजराती (सी डब्ल्यू ८५) से।

सीजन्य श्रीमती सुशीलादेव गांधी।

२१४ पत्र लॉर्ड जू के मिजी सचिवको

[अन्वय]

बपुस्त ११ १९९

महोदय

लॉर्ड जू ने श्री हजारी हजीबको और मुझे द्वास्वबाकके ब्रिटिश भारतीयोंके संघर्षके सम्बन्धमें एक जो मुसाफात बी बी उसके बारेमें मैं यह जिज्ञा करना चाहता हूँ कि दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समिति (साउथ आफ्रिका ब्रिटिश इंडियन कमिटी) को जोरेंछो माफिबसधे एक 'घार' मिका है। उससे माजूम हुआ है कि सायब सी ब्रिटिश भारतीयोंके—सम्भवतः खनाखमक प्रतिरोधियोंके—उस बन्धरगाहके रास्ते भारतको निर्वासित किये जानेकी सम्भावना है। लॉर्ड महोदयको निश्चयेह् ज्ञात है कि निर्वासनके इस तरीकेसे बहुत कष्ट हुआ है और इसके सम्बन्धमें उपनिवेश कार्यालयसे बार-बार पत्र-व्यवहार किया गया है।

फिर भी इस प्रश्नक निर्णयके सम्बन्धमें जो बातचीत चल रही है उसको ध्यानमें रखते हुए, क्या मैं लॉर्ड जू महोदयसे प्रार्थना कर सकता हूँ कि वे कमसे कम बातचीतके बरमिबात ऐसे निर्वासनोंको स्वगिण करवानेकी दृष्टिसे हस्तक्षेप करें।

बापका बादि

मो० ब० गांधी

कलोनियाल ऑफिस रेकर्ड्स २९१/१४२ तथा टाइप की हुई बपुसठी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (एस एन ५ २) से।

१ ६ भा० मि मा समिति के कर्मांके जती दिन मीठक कार्यालयकी तरफका हवाला देते हुए पत्र लिखा था। उक्त पत्र था: "लॉर्डे वास्तव ही कोरेंछो मिजी बी रिज निर्वासन। एउठेरेके सम्बन्धमें लॉर्डे उक्त मर्दा। लॉर्डेके सलाख-उक्तको १९ सुकलेंको लिखा।" उक्त नामकेही और कोरेंछो पर्सिजत लिख मिठक कोरेंछोके पत्र लिखा था; केवल उक्त मर्दा मिठक था।

नेटालका सिप्टमण्डल

नेटालका सिप्टमण्डल मुम्बईको' कॉर्ड यूसे मिला। उन्होंने सारी हकीकत सुनी। श्री भांगभियाने अपनी बात कही और बाबमें श्री अन्टुक काबिर बोले। कॉर्ड यू ने सहानुभूति प्रकट की लेकिन उन्होंने बताया कि जो कानून बन चुके हैं वे रद्द नहीं होंगे। संघ बननेके बाद संघ-संघके अधीन स्थितिमें मुम्बई होनेकी सम्भावना है। सिप्टमण्डलके आदेशमपत्रमें परवानों विरुद्धिया कानून और पिनाफी बात आई है। अब आदेशमपत्रकी मरुतें सब संघ संघसंघोंमें बँटवानेकी तैयारी हो रही है। बर्नसे मेजी गई बर्नी यहाँक दो बखबारोंमें संघेपमें प्रकाशित हुई है। उसकी मरुत श्री रिच डूवरे स्वानोंमें भेजनेवाले हैं।

स्त्रियोंके मताधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली महिलाएँ

स्त्रियोंके मताधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली महिलाएँ (सफेजेट्स) अब भी बहुत प्रयास कर रही हैं। वे स्वान-स्वानपर समाएँ कर रही हैं। संघके द्वारेके आगे निवृत्त प्रत्येक स्त्री अब भी सारी रात लड़ी रहती है। वे जो कष्ट सहन करती हैं उनमें से कुछ निम्नोक्त, बहुत सचहमीय हैं।

धींगण

श्री धींगणको सच ठापीकको फाँसी देनेकी बात चल रही है। लेकिन यह भी सम्भव है कि फाँसीकी सजा माफ हो जाये।

ब्रिटिश लीकसभा

भोकरामामें अभी हालमें ब्रिट-सम्बन्धी विषयक (बिल) पेश हुआ है। उसकी सरगरी भी चल रही है। सबस्य रात-रात-मर बैठे रहते हैं। फलस्वरूप समयम आगे सबस्य मरी सभामें लम्बे पड़कर सो जाते हैं और जब मर बेनका समय आता है तब जागते हैं और मर बेकर फिर सो जाते हैं। यह हाल दुनियाकी सबसे महान संघरका है। इन परिस्थितियोंमें राष्ट्रका काम कैसे होता हुआ इसका विचार पाठक ही कर लें। जबिकठर लोग स्वामी रिवाइर बैठे हैं। यदि यह कहेँ तो अनुचित न होवा कि लक्ष्म ग्यामका सूर्य बस्त हो गया है। विन्तु अन्य लार्डोंकी मुक्तनामें बंधन लोग कुछ ठीक आचरण करते हैं इधीनिए वे डूवरे राष्ट्रके मुकाबले क्यावा वीरवशाती हैं। लेकिन ऐसा नहीं जान पड़ता कि अब पारचाय संरुति दीर्घकालक टिक सरेगी।

[पूजपठीसे]

इंडियन ओपिनियन ११-९-१९९६

प्रिय हेनरी

आशा है कि आपको बातचीत और नये संघोचनके सम्बन्धमें मेरा तार मिला गया होगा। सम्बन्ध प्रतिसे^१ आपको सप्ताहकी बटमारकी पूरी जानकारी मिला जायेगी।

अब मुझे आपके उस तारके सम्बन्धमें कुछ कहना है जिसमें आपने सुझाव दिया है कि श्री बाउर मुहम्मदको भारत जाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि यह आपकी अपनी राय नहीं है, बल्कि आपने मूरतके मित्रोंकी सम्मति-मात्र तारसे मेरा भी है। आपको याद होगा श्री बाउर मुहम्मदने सार्वजनिक बोधना की थी कि जबतक वह प्रत्य सभापति नहीं होता तबतक वे जानकी जोखिम होनेपर भी ट्रान्सवाल न छोड़ेंगे। इसलिये उनके लिये यह परम आवश्यक है कि अन्य कारणसे न सही तो अपनी प्रतिष्ठाके लयावसे ही सही वे ट्रान्सवाल जायें और फिर अपनी गिरफ्तारीके लिये सरकारको चुनौती दें। लेकिन अन्य दृष्टियोंसे भी यह प्रकट होता है कि उनकी उपस्थिति भारतकी अपेक्षा ट्रान्सवालमें अधिक वांछनीय है। हम वहाँ बिलगी हो सके उतनी सभार्य करना चाहते हैं। इन सब सभार्योका साम केवल तभी है जब अनाक्रमक प्रतिरोधकी आज प्रवृत्ति रही जाये। मैं और आप जानते हैं कि श्री बाउर मुहम्मद इस काममें किठना कारणर योगदान कर सकते हैं। फिर, हम सभार्य करनेके लिये बम्बईमें उनके पहुँचने तक नहीं रुक सकते। वे सभार्य अभी सिष्टमण्डलके सम्बन्धमें रहते हुए, भी जानी चाहिए। वे सिष्टमण्डलके लोकी हाथ रक्षित बाधिका बापस या जानेपर भी हो सकती है। लेकिन इतने लम्बे संघर्षका अनुमान करके हमें श्री बाउर मुहम्मदको भारत भेजनेकी सत्ता नहीं करनी चाहिए। और अन्तमें बातचीत हर क्षण प्रगति कर रही है, और वह सफल होगी ऐसी आशा करनेके सब कारण मौजूद हैं। यदि ऐसी बात है, तो ट्रान्सवालके सम्बन्धमें सभार्य करनेके लिये श्री बाउर मुहम्मदकी भारतमें जरूरत नहीं है। यदि आम प्रियवर्तोंके सम्बन्धमें उनकी आवश्यकता हो तो उन्हें ट्रान्सवालका मामला सभापति होनेपर भेजा जा सकता है। उसके लिये बहुत समय है। इसलिये मैं कब^२ तार दूँगा कि किन्नाहाक बाउर मुहम्मदको ट्रान्सवालमें ही रहना चाहिए।

इससे आपका

टारप की हुई दस्तावेजी संघेकी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५ ७) से।

1)

१ देखिये "दर एच० एस० एस० पोलकको" पृष्ठ १५ ।

२. दर अन्वय नहीं है ।

३. देखा जाता है कि यह तार दस्तावेज १९ अक्टूबरकी भेजा गया था; देखिये "दर १ ५५ एच० एस० पोलकको" पृष्ठ १५० ।

[अगस्त १३ १९९]

जब समझौतेकी बातचीत पकड़ी है तब सार्वजनिक रूपसे बैंक कामकाज सबसे सदा कम होती है। पिछले हफ्ते गेणू लामास या कि इस हफ्ते निश्चित खबर दे सकूंगा। किन्तु अब देखता हूँ कि यह हफ्ता भी निश्चित खबरके बिना बीत गया है। फिर भी बातचीत प्रगति करती जा रही है। लॉर्ड ऐंस्टहिम्से सोमवारको मुलाकात हुई। उनके साथ भी हाजी हबीब भी रिष और मैं लगभग बड़े बंदेतरक बैठे और बहुत बातें हुईं। मंत्रकारको लॉर्ड शू से मेट हुई। मैं ऐसा मानता हूँ कि उन्होंने बहुत अच्छा जवाब दिया है। उन्होंने बनरज स्मृष्टके साथ बातचीत करना स्वीकार कर लिया है।

अभी बातचीत चल रही है जबकि डेकागोन्ना-बेसे तार मिला है कि लयनन सी मारपीयोके सीमा पार करने जानेकी सम्भावना है। इस तारकी खबर लॉर्ड शू को भेज दी है।^१ इस सम्बन्धमें यथासम्भव तजवीज की जा रही है।

यह पत्र लिखते समय भोहानिसर्वसे तार^२ मिला है। उससे सत्याप्रतियोंकी रिहार्ड और एस्टयबीके तुरन्त फिरसे प्रवेश करनेकी खबर प्राप्त हुई है। यह तार भी पढ़ा कि उनको छ महीनेकी सख्त कैदकी सजा दे दी गई है। इसको पढ़कर मुझे प्रसन्नता भी हुई और मैं रोया भी। मुझे भी एस्टयबीके पही भाषा थी। उन्होंने ह्व कर भी है। मुझे प्रसन्नता इससे हुई कि ऐसे भारतीय हममें मीनूर है। मैं रोया इसकिए कि उनको ऐसे दुःख भोगने पड़े है। ऐसे उदाहरण अब अनुभव भारतीय प्रस्तुत करने तभी जनता सभिमें डलेयी। इस उदाहरणका अनुकरण सब लोग करें तो भारतीयोंको कोई दुःख भोगना ही न पड़े। मैं ज्यों-ज्यों अनुभव करता जाता हूँ त्यों-त्यों देखता जाता हूँ कि अभी तो ऐसे बहुत-से भारतीय उलूत मीनूर है जो बेचकी काठिर और कष्ट सहन करनेके लिए तैयार है। समझौता हो तब तो ठीक ही है। किन्तु यदि न हो तो मेरी प्रत्येक भारतीयसे बही प्रार्थना है कि किये हुए प्रसन्नको कभी न छोड़े। अनुचित सुखके मुकाबले पश्चित दुःख बहुत सुखदायक है। हमारी बर्द-मुचरी हालतमें तो मौज-बौकका हमें कोई हक ही नहीं है। थोड़े दिन सहन करनेके बाद हम इस दुःखके बासी हो जायेंगे। इसकिए आप दुःख सहन करनेकी आजत डालें।” इसके सिवा इसत इलाज मैं तो जानता नहीं।

[मूकपठौसे]

इंडियन ओपिनियन ११-९-१९९

१. देखिए "नव लॉर्ड शू के सिवाी इतिहास" पृष्ठ ३५९।

२. यह तारक १९ अक्टूबरकी तारीख है और नर १३ अक्टूबरको जन्म पड़ना।

२१९ पत्र साईं एंस्टहिलको

[अभ्यन्त]

अप्रैल १५ १९१९

साईं महोदय

आपके १२ टापीसके पत्रके लिए धन्यवाद। इससे मुझे प्रोत्साहन मिला है कि भी लिखने साईं नूको वो पत्र' किम्बा वा भीर वो ठार' उसमें संछमन वा उनकी गऊके आपको भेज रूँ। मुझे निश्चय है कि इस ठारको पढ़कर महागुमानको भी बैसा ही पुन होना बैसा कि मुझे हुवा है।'

आपका भावि

टाइप की हुई दफती अंग्रेजी प्रति (एच एम० ५ १) है।

२२० तार एच० एस० एम० पोलकको'

[अभ्यन्त]

अप्रैल १६, १९१९

बाउरका स्वान ट्रान्सवाळमें। संघोचनमें सामान्य शिक्षा-परीक्षा और परबर्तको यह अधिकार देना आगत कि परीक्षा पाठ करनेवाके कोनोंकी संख्या राष्ट्रीयताके आधारपर नियन्त्रित करनेके निमम बना रें।

गांधीजीके स्वादरोंमें अंग्रेजी मसविदेकी फोटो-कफस (एच एम ५ १८) है।

१ इसमें डेरिवोंको दिने करनेवाके मोऊन-मम्मनी कारीसोंकी बीज कटाकेटी मालेबा की गरी की और मम्मनीकी कसुके एकलमें की कई कर्षकईकी और विधेन आग खीना मना वा।

२. दूधपत्रक मिडिल मारठील धन (दूधपत्रक मिडिल इंग्लिश कलेजियल) से मिले इस ठारमें क्या मना वा: "देरी मारी कस वा रहे हैं, नरुल्लत विलखीन मीमन। कस्यकीके विना बीडनिलकके ल डेरिवोंको, वो कसम विरहित कर दिने मने वे और और मने, क-क: मरिनेकी करी केर। कस खासी कण्डी सार्वभिकु सय हूँ। कसल मूठपूर डेरिवोंको पत्रक, नालपत्रक मामनेकी रिपेरेडि कलाम मारुकी; मकडिक ममारसे मारठील मारुकीकी वरी बुधि, विरुमकमेंक लमनेन। सारुमन-कसकसे ल मीकेर कस देनेकी ठार आसवपुन मनी। विरुगारिथी देक-किडकन मारी।"

३ साईं एंस्टहिलके १६ कसलको जिसे पत्रमें कस विषयमें कसने विवर कस दिने वे "कसवि मल्लपारोंका मरी एवम और कस कस कस कस कस और बीज बैसा करनेकस है, पर मुझे कस है कि कस लिखिसे हमारे कसमें कसकस ही लिखेनी।"

४ कसविदेर पत्रकेका नाम मरी मना है। केडिन मल्लिक मल और कोकक नाम गांधीजीक १३ और २ कसकस पत्रके कसकेसे कस कस है कि पत्र कसको किम्बा मना वा; केडिन एच ३५५ और ३६९।

[सम्बन्ध]

अगस्त १९, १९१९

महोदय

मैं लॉर्ड कू का ध्यान श्री मुहम्मद खाँ नामके एक व्यक्तिसे प्राप्त पत्रके आधिक अनुबादकी ओर आकर्षित करता हूँ जो इसके साथ संलग्न है। यह व्यक्ति कुछ समयतक जोहानिसुबर्नमें मेरा मुहम्मद रह चुका था। मैंने पत्रके सम्बन्धित भागका स्वतन्त्र अनुबाद किया है। यह पत्र उन बनेक पत्रों में से है जो मुझे जोहानिसुबर्नमें रखते हुए भिजे थे।

यह सम्भव है कि पत्रके कुछ हिस्सोंमें अनजाने त्रुटि हो गई हो। उदाहरणके लिए शुरुआत हुए भोजनकी ठीक मात्रा या स्नानके स्थानके पूर्ण जमाके सम्बन्धमें। लेकिन मोटे तौरपर बसतम्ब मुझे सही ध्यान पड़ता है।

मैं इस अनुबादको यह दिखानेके लिए भेज रहा हूँ कि ट्रान्सवालकी जेबोंमें व्यापारक विविध भारतीय राजनीतिक कैरियोंको ऐसे कौन-से कष्ट भोगने पड़ रहे हैं जिन्हें टाका जा सकता है। मैं राजनीतिक विशेषज्ञका प्रयोग सीध-समझ कर करता हूँ। मैं यह बात मनी भाँति जानता हूँ कि ट्रान्सवालमें कैरियोंका कोई कानूनी बर्तीकरण नहीं है। साथ ही मि. सन्ट्रैड, सरकार यह तथ्य स्वीकार करती है कि कुछ कैरी ऐसे हैं जो पत्रके अपराधी हैं और कुछ ऐसे हैं जिन्होंने उपनिवेशके कानूनोंका केवल पारिभाषिक रूपमें उल्लंघन किया है। दुर्भाग्यसे यह स्वाभाविक बर्तीकरण भारतीय जनजातके प्रतिरोधियोंके पक्षमें नहीं माना जाता। इतना ही नहीं बल्कि उनके साथ इसकी कुछ जवाब फटोर व्यवहार करनेकी इच्छा माकूम होती है कि वे जनजातके प्रतिरोधी हैं। भोजन अपर्याप्त और अनुपयुक्त होता है और भारतीय कैरी बतनी कैरियोंकी श्रेणीमें रखे जाते हैं। ये दोनों बहुत पन्मीर फठिनाइयाँ हैं जिनसे बहुत व्यापार तकलीफ हो रही है।

मेरे साथीको और मुझे विश्वास है कि लॉर्ड महोदय ज़रा करके इस सम्बन्धमें जाँच करेगे और ट्रान्सवालके कुछ मन्त्रियोंके राजधानीमें रखते हुए, सम्भव हो तो कुछ राहत देना देंगे।'

आपका आदि
मो क० गांधी

[सहपत्र]

१९ जुलाई १९१९ को श्री मुहम्मद खाँ जोहानिसुबर्न द्वारा
गाँधीजीको भेजे गये पत्रका आधिक अनुबाद

मैं पिछली १२ जुलाईको पढ़ा किया गया था। मुझे सिर्फ इस बातका अफसोस रहा कि मैं जेलमें आपसे मिल नहीं सका। जिस दिन मैं बाहिर किया गया था उसी दिन मैंने

१ अतिरिक्त कार्योंके ३ दिवस को इस तरहकी घड़ी खींच करके हुए गाँधीजीको दफ्तरी किया था कि जेल कार्योंकी एक प्रतिरिपि ट्रान्सवाल गवर्नरके पास बहुरिपिठकी बीपत्र किन्तु अभी नहीं है।

बीफ बार्बरसे निवेदन किया था कि मुझे आपसे मिलने दिया जाये लेकिन उसने अनुमति नहीं दी।

मैं "बारिशत सिबिर" (रिजर्व कैम्प) में रखा गया था जो बनी हासमें ही खोला गया है। वहाँ बहुत तकलीफ थी। पानी काफी नहीं मिलता था। नहानेकी कोई सुविधा नहीं थी। मैं दो महीने जेसमें रहा इन दिनों मैं भ्रायव ही कमी महसूस पाया। मैंने अधिकारीसे शिकायत की। उसने कहा क्या तुम बन्धे हो? तुम देखते नहीं कि यहाँ पुससखाना नहीं है? तब मैंने कहा अगर यहाँ एक साबुतक पुससखाना न बने तो कैदी क्या करेंगे? इसपर उसने जवाब दिया उसको उसके बिना ही काम चलाना होगा।

खाना भी काफी नहीं मिलता था। इसके अलावा सनिवारके दिन जब कैदियोंको अपने तौलिये मोने भावि बोलने होते थे २ कागोंके लिए केवल एक टंकी होती थी। मुझको भी बिल्कुल नहीं मिलता था। जेसबाले भातमें चर्बी मिखा देते थे जो मैं नहीं खाता था। मैंने इस बारेमें शिकायत की लेकिन मेरी शिकायतपर कोई ध्यान नहीं दिया गया। मैंने बीफ बार्बरका ध्यान इस बातकी ओर आकर्षित किया कि आपने भी न दिया जानेकी शिकायत की थी। बीफ बार्बरने बताया कि चूंकि आप बीके बिना काफी खाना नहीं खा पाते थे इसलिए आपसे यह कह दिया गया था कि दूसरे भारतीय कैदियोंको भी भी दिया जायेगा ताकि आप खाना खानेके लिए रजामन्व हो जायें। आप जेलके गवर्नर और बीफ बार्बरका स्वभाव जानते हैं। हमें अब शिकायत करनी हो वे इतनी बेर भी नहीं ठहरते कि उसको मुन तो लें। बारमें मुझे कई मोशन-तासिकाने अनुसार खाना मिलने लगा। यह खाना भी काफी नहीं है। बार बीस रोटीकी संकुरी थी लेकिन मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि मुझे दो बीससे ज्यादा रोटी मिलती है। बल्कि केवल मामका दलिया है क्योंकि वह तो निरा पानी होता है और होता भी बहुत कम है। जो रोटी भात साफ बनेरह दिया जाता है उसमें से बहुत-कुछ अहातेमें काम करनेवाले बतनी कैदी चुप सेते हैं। ६ बीस चावल देनेकी आजा थी लेकिन मुझे मुस्लिमसे टीम बीस मिलता था। मेरा विश्वास है कि काफिर समयग पत्रह रकबी खाना चुप सेते हैं और बार्बर कुछ नहीं कहते। इसके अलावा बार्बर पाकिजा देते हैं। मैंने यह सब चुपचाप बर्दास्त किया।

काम कुछ ज्यादा न था। मैं ३२ लोगोंकी एक टुकड़ीके साथ कॉर्ड सेस्बोर्नकी कोठी-पर से आया जाता था। वहाँ हमें चास काटने बेलन चखाने खोरने पत्थर तोड़ने पैड़ काटने जमीन साफ करने और पेड़ोंमें पानी देनेका भी काम करना पड़ता था। इन कामोंमें से सिर्फ पुवाईका काम कुछ कठिन होता था क्योंकि वहाँ छठी पयह पचरीसी थी और पत्थर बहुत कड़ा भी था। बाग एक टेकरीपर था। हमें काफिरोंके साथ बन्ध किया जाता था। एक भी यूरोपीय अधिकारी पैगा न था जो हमको भारतीय कहता हो। हमें "छानी" या "कुली" कहकर पुकारा जाता था। ज्यादातर बार्बर बन्ध थे उनमें से कुछ छोकरे ही थे जिन्हें कामकी कोई जालरायी न थी।

आपिर ७४ मजदारी भारतीय जाये। वे बहुत बड़ी सुवीबतमें हैं। वे बड़ी तकलीफ पा रहे हैं। उनमें से पाँच बहुत ही बड़े छायर माठ साकस ऊपरके हैं। वे बख्शी तरह बल नहीं सजने हैं। इनको भी मुबह बहुत तकले पर-पर कापते हुए काम करनेके लिए बाहर भेज दिया जाता है। और चूंकि उनको बहुत दूर पैदल भिगटना पड़ता है, वे बेचारे

बक पाते हैं और फिर भी वे मुंहसे बिकायतका एक सफ़्तक नहीं निकालते। इसीमें उमकी बहादुरी है।

प्रिटोरियाकी घाटी बस्ती जाती है।'

नकोनियस ऑफिस रेकर्ड २९१/१४२ और टाइट की हुई सफ़्टी बंधेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ४९४९ और ५ १५) से भी।

२२२ पत्र लॉर्ड एंस्टहिलको

[अन्वय]

जपस १९, १९९

लॉर्ड महोरब

मैं आपके देखनेके लिए उस पत्रकी एक प्रतिक्रिया इसके साथ भेज रहा हूँ जो मैंने उपनिवेश-मन्त्रीके निजी सचिवके नाम लिखा है। मुझे आशा है कि पत्र आपके ठीक लगेगा।

मैं आपका ध्यान इस सप्ताहके इंडियन ओपिनियन की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। पापपन नामक भारतीयकी मृत्युके बारेमें की गई जांचसे प्रकट होता है कि दुर्भाग्यवहारके सम्बन्धमें जो आरोप लगाये गये वे वे यथेष्ट रूपसे सिद्ध हो गये हैं। दाम्पत्य सीडर ने जेफ-अधिकारियोंके व्यवहारकी बड़ी कड़ी निन्दा की है। वी रिचने इस कार्रवाईकी ओर लॉर्ड कू का ध्यान आकृष्ट किया है।

आपका आदि

टाइट की हुई सफ़्टी बंधेजी प्रति (एस एन ५ १९) से।

१ दाम्पत्यक मरिचोले ३ सिडमरको सख्त ज्ञान हेतु गवर्नरको ज्ञान कि प्रिटोरिया डेविचोके रिचर्ड कैम्पे वलीकी कमीशन जरीत कियुक्त लिखा है " डेविचोको भावार्थिकी भरपूर समर्थ है और वही अपने कठममें जो अन्य दौलतोंमें मिले है वे मिलकर है। उन्हें कभी सख्तसुख ही अनुभवमें रखा गया है पर उनके साथ मनुष्योक्ति बरतान किता जाता है। केवले मरिचोलेकी कमे साथ बरत करतन करनेकी कोई सलाह नहीं है क्योंकि वे अनाचारक प्रतिरोधी है।

२. डेविच कियुक्त लॉर्डक ।

३ यह इंडियन ओपिनियनका १०-०-१९९४ संक था। इसमें ८-०-१९९४के दाम्पत्यक सीडरके यह रिपोर्ट बरत की गई थी जो कमे प्रिटोरिया-कमिटी संवत्सरमें भेजी थी और जो सामी बगममकी सुरुकी सरकारी बौध्के सम्बन्धमें थी। वीच बोटासिकलक गवर्नर की कैम्पे द्वारा की गई थी। इंडियन ओपिनियनमें १ जुलाई कीडरका यह भावीकतासक सम्बन्धमें ही प्रकटित हुआ था किउमें केवली प्रकटित क्यत्वा और बौध्के लॉर्डकी रीड में थी, और दाम्पत्यक मामलोंकी निष्पन्न बौध्की मोंग की गई थी। इस लॉर्डमें प्रिटोरिया म्यूज और म्यूज कालिकक द्वारा की गई उत्तमकी रीडमें ही बरत की गई थी और जेफ ब्रूनीन पत्रियों द्वारा दाम्पत्यके कवन्तोंको भेजे गये वन में प्रकटित किमे कमे वे। जेफर सरकारको कवन्तोंके सामने सुक्या पत्र था और प्रिटोरियाक लॉर्डके डेविचो मरिचोले केर फल व निष्पन्न क्वकी बौध्के किंर कियुक्त किमे कमे वे। डेविच " वन साख कालिकको " वन ४८१-८४।

४ जो रिचने सरकारी बौध्की रिपोर्टकी एक प्रति कवन्तोंके-दाम्पत्यको ११ बगमको भेज दी थी।

प्रिय हुनरी

आहाजसे उतरलेसे कुछ पहलेका सिला हुआ आपका पत्र पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे पूरी आशा थी कि आप आहाजपर सब काम कर डालेंगे और उन दोनों बन्धुओंको तैयार कर लेंगे। परन्तु मैंने यह भी आशा की थी कि आप यथेष्ट विधाम करेगे और आवश्यकतासे अधिक भ्रम न करेंगे। मैं उन दोनों पुस्तिकाओंकी^१ यह देख रहा हूँ जिन्हें रिचने पुस्तक का नया नाम दिया है।

मुझे आशा है कि मेरे पिछले समुद्री शारके बाह आपको नये संघोषणकी विषयवस्तु समझनेमें कठिनाई न रही होगी। और, मेरे पत्र जिनमें पहला और दूसरा संघोषण दिये गये हैं पीछे ही आपको मिलेंगे और उनसे आपको यहाँकी सामाजिक स्थिति का पता चला जायेगा। मुझे यह कहते हुए दुःख हुआ है कि यह पत्र लिखते समय तक हमारी स्थिति बही है जो पता सप्ताह थी। मैंने सोचा था कि इस सप्ताहके प्रारम्भमें हमें निश्चय ही परिणामका पता छप जायेगा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। लेकिन लॉर्ड गैन्टहिलने अपने पिछले पत्रमें लिखा है कि उन्हें कोई नया बदलाव स्पष्टसे किसी भी बड़ी उतर पानेकी आशा है। हम भी आश्चर्य कस में करेंगे। इस मेटमें हम उस विषयपर जाये चर्चा करेंगे जिसका उल्लेख आपकी इस पत्रके साथ रही गई तफ़्फ़ामें मिलेगा।

नेटासके मिशन^२ आफिकी वैदिक कॉन्फ़ेरेणसके कार्यवाहक मैनेजरकी मार्फ़्त भी बॉटमकी मेट थी है। भी बॉटमकी निश्चय ही बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। उनकी मार्फ़्त से एक कर्नल सीमीसे भी मिले और सम्भवत उनसे डिर मेट करेंगे। इस मामलेकी चर्चा के जॉन बुकमें भी करेंगे। इस प्रकार कुछ हंगामा तो मच जायगा परन्तु

१ वे पुस्तिकाएँ इंग्लिशकी कलाओं और इतिहासके सम्बन्धमें भारतीयोंके सर्वसाधारण कथेके सम्बन्धमें लिखी गई थीं। श्री पोल्सने एक सम्बन्धमें पंजीकीकी २१ अक्टूबरके अपने पत्रमें लिखा था "मैंने इंग्लिशके क्लेसमें एक पुस्तिका देकर की है और उसकी कुछ प्रतिवही आपको जाककी बाक से निकाली छोपी भी कर कर लीं वगैरह। श्री पीकलेम से पत्र है। उनके कला से, यहाँ-यहाँ भारतीयोंके नाम हैं जो इस पी (जो मैंने से कुछ-कुछ काम कर दिया है) का टीका है और जिनके बन्दगी की स्थिति से ही है। पृष्ठी २ हजार प्रतिवही छापाकर प्रकाशित करनेका किन्ना अल्पित करते भी यहाँपर देखिये के लिखा है। पुस्तिका छपाने है। उनमें मेरे बात थीं। हमने एक किन विदेशीय लेखक और दूसरा कोशकय चन्द्रा होना ।"

२ पुस्तिका नाम ए. वेल्ही ऑफ़ एम्पयर : ए इन्ट्रिगेट ऑफ़ इतिहास इतिहास इन ए इन्सप्रायड का ।

३ एडो पुस्तिकाके सिव रेडियर "एन एन एन एन एन एन एन" छ १३२ ।

४ एन एन २२ अक्टूबरके लिखा गया था ।

५ एन अलग नहीं है ।

६ नेटास विषयवस्तुके कारण ।

मुझे इसमें बड़ा सन्देह है कि इन मेंटोंका कोई फायदा होगा। परन्तु यदि हमारे मित्र यह विश्वास लेकर जायें हैं कि वे हमें जोड़नेसे नहीं बल्कि सरपाइहकी संगीतकी नोकपर ध्यान पा सकते हैं तो उनकी यात्रा कुछ सार्थक होगी।

मैं जब यह पत्र लिखता रहा या किसी और वास्तव्य आ गये और लिखाना रुक गया। वे दोनों स्वस्थ हैं। किसी अपने मने और बस्वामी घरमें काफ़ी प्रसन्न बान पड़ती है।

डॉक्टर मेहता होटलमें ठहरे हुए हैं। वे और मैं दोनों मत्त इतबारकी उनके पुत्रकी यी नॉरकके प्रामर स्कूलमें शालिक कराने काठन गये थे। वे संघर्षको बहुत बख्शी तरह समझते हैं और मुझे लगता है कि वे अब यह देखने लगे हैं कि सरपायह जीवनकी बहुत-सी बुद्धियोंकी अचूक दबा है। उन्होंने कल कापके और मिश्रीके लिए उमर सैव्यामकी पुस्तकका एक मध्य संस्करण करीबा। यह पुस्तक क्या है बस्वाम है। पूरी-की-पूरी सिधोपर छी है। बिना भय है और जैसे ही रंग भी है। आप जानते हैं कि अरबीके बसरोसे कौसी बख्शी सबाबट होती है। पुस्तकमें अरबी या फ़ारसी सिबाबट बहुत है। मैंने ऐसी चीज पहले कभी नहीं देखी। यह पुस्तक और दूसरी पुस्तकें जमी-जमी पहुँची है और किसी इसे देख चुकी है। डॉक्टरों यह इतनी पसन्द आ गई है कि वह अपने लिए एक प्रति करीबनेके अपालसे पाई-पाई जोड़नेवाली है। डॉक्टर मेहताके हमारे सम्प्रोगमें जोले गये गरीब सरपायही कोषमें १ पीड विये है। वे २५ पीड दे रहे थे। मैंने उन्हें सलाह दी कि १ पीड इसमें हैं और बाकी एकम फौनिस स्कूलको दे दे। डॉक्टरोंने कुछ पुस्तकें और दूसरी चीजोंके लिए लिखा बा। उसका परिनाम यह हुआ कि डॉक्टर मेहता और मैं कल एक पुस्तक-बिन्दुका यहाँ गये थे और साधकी सूचीके अनुसार पुस्तकें करीब भी साये हैं। ये फौनिस पुस्तकालयमें खोमी और साध ही स्कूलमें भी काम आयेंगी।

आप जानते हैं कि मैंने लगभग १९ पीडकी जीवन-बीमा पालिसी ले रखी है। यह पालिसी भी रैबायंकर मेहताके पास है। मैं चाहता हूँ कि आप इस पालिसीको लेकर कम्पनीके एजेंटसे मिल लें। इस बातसे मैं बहुत बिनोसे परेशान हूँ। मुझे लगता है कि अब मेरे लिए इसका कोई उपयोग नहीं रहा है। अगर कम्पनी जो एकम काटना चाहे वह काटकर जमा किये हुए बाकी प्रीमियम लौटा दे और काटी हुई एकम बेचा न हो तो मैं चाहता हूँ कि पालिसीको छोड़ दूँ और जमा किये हुए प्रीमियमोंका बड़ा हिस्सा वापस ले लूँ।

कस्यानवासके बारेमें आप सारी बातें लिख भेजेंगी मैं सचकी राह देख रहा हूँ।

हृदयसे आपका

टाइप की हुई दृष्टरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-अफ़क (एच एन ५ १९) है।

१ यह कल्पना नहीं है।

२. कालर मालनीय मेहताके यह रैबायंकर वे लकी।

३. गरीबीके बीमा-कम्पनी विचारोंके लिए देखिए कल ६, एच ४४५।

४. कल्याणक कल्याणकाल मेहता; देखिए कल ९, एच ४४५। ५. सिद्धार्थके अपने करने की शक्ति

कलका कल्याण करते हुए लिखा है: कल्याणकालक कल्याण करते मेह है। कल्याण कल की है; कल्पि यह चलेसे मोटा नीली ही ग्या है किन्तु फिर भी वह जमी तक पैदा ही लहरन और कल्याणक कल हुआ है। इसे वह प्यदा कला है।

संघ-विधेयक

संघ-विधेयक (यूनिफन बिल) पास हो गया। श्री आइजर और डॉक्टर अब्दुर्रहमान खादिने [उसे स्फुटानेका] बहुत प्रयत्न किया लेकिन कुछ बचा नहीं। घायब उनके प्रयत्नोंका असर बण्ठा हुआ होया। कई सदस्योंने लम्बे-लम्बे भाषण दिये। कानूनमें काका [बाटीम मेरभावका] पन्ना उनको बण्ठा नहीं बना। उन्होंने इसपर खेब प्रकट किया। किन्तु इससे क्या लाभ? वे अपने पद क्यों नहीं छोड़ देते? खेब प्रकट करनेके बाद भी वे काम तो बही करते हैं। अब काके सोच क्या करें? यह प्रस्न तो उठता ही नहीं। यदि उनमें शक्ति है तो वे रामका नाम लेकर उत्साहपूर्वक बका बजायें बस्यबा वे मुर्बोंकी भांति ही हैं। वे यहाँ आकर बड़े-बड़े भाषण वे मये इससे कोई काम होनेबासा नहीं है। भाषणोंसे ही कुछ प्राप्त कर लेनेके बिल बले मये जान पड़ते हैं।

नेटाककी सिद्धमण्डक

नेटाकके प्रतिनिधि नेटाककी बसाका बिबरन^१ समस्त संसारमें मेकनेके काममें जुटे हुए हैं। उन्होंने यह बिबरन बहुत-सं स्थाणोंमें भेजा है। इसके बसाबा वे संघके सदस्य श्री बाँटमसीसे भी भिजे हैं। श्री बाँटमसी उनकी उचित साठिर कर रहे हैं। उन्होंने उनको चायकी बाबत बी भी और बूसरे निमन्त्रण भी दिये हैं। उनकी मार्फत ही उनकी खोंब फसे भेंट हुई है। अब बूसरी बार भेंट करेंगे। श्री बाँटमसी उनकी बण्ठी सहायता कर रहे हैं। लेकिन नेटाकबासी मारटीयोंकी मुक्ति तो उत्साहपूर्वक रहसे ही सम्भव है यह बात सभीको समझ लेनी चाहिए। बीते रहे तो बेखेने भी।

[मुजपटीये]

इंडियन ओपिनियन १८-९-१९ ९

२२५ शिष्टमण्डककी याघा [-८]

इस हफ्ते मेरे पास देने योग्य खबर बहुत ही कम है। समस्येकी बास्तबीत जारी है। लेकिन परिणाम अभीतक नहीं निकला है। टाइम्स में एक लेख है। उससे प्रतीत होता है कि घायब परिणाम बण्ठा निकलेया। उसका यह लेख किटी जाणकारका किबा बिबाई देता है। वह सिद्धता है कि बाघा है श्री समस्त ऐषा स्पटीकरण कर देंगे जिससे मारटीयोंकी याबताओंको डेस न पहुँचे।

१ देखिए "नेटाककी मारटीयोंके खोंब बिबरन" पृष्ठ १४३-४९।

हम भी आइएँ मिला।' बहुत कम्बी बातचीत हुई। उन महाशयको भी ऐसा लगता है कि रियायतके तौरपर छ व्यक्ति प्रवेश करें तो इसमें कहने योग्य कोई बात नहीं होगी लेकिन वे अधिकारके अर्थात् प्रवेश नहीं कर सकते। वे स्वयं जो विचार मनमें बाँधते हैं सबाइके साथ बाँधते हैं। लेकिन वे बहुत समझदार मह शयाक बनाये बैठे हैं कि हम भारतीय हीन लोग हैं इसलिये वे यह नहीं समझ पाते कि भारतीयोंके लिये रियायतके तौरपर प्रवेश करना अपमानजनक बात है।

[बुजर्गसीसे]

इंडियन ओपिनियन, १८-९-१९१९

२२६ पत्र डॉ० अब्दुर्रहमानको

[कम्बल]

अगस्त २३ १९१९

मिय डॉ० अब्दुर्रहमान

अपने कार्यके सम्बन्धमें कृपया मेरी सहानुभूति और बर्बाई स्वीकार करें। मेरी सहानुभूति इसलिये है कि आपको कोई ठोस चीज नहीं मिली है और बर्बाई इसलिये कि अपने उद्देश्यकी सहज न्याय्यताके कारण और वैसे ही आपके किये हुए ठोस कार्यके कारण आपका सिष्टमन्वक विपना सफ़लताका पात्र है उतना और कोई सिष्टमन्वक नहीं है। भी आइएँ मिला, अपने दिक्से और अति-मानवकी तरह काम किया है।

यह तो मानी हुई बात थी कि बिनेयकके मसबिरे (डाफ़्ट बिल)में कोई संशोधन न किया जायेगा। साम्राज्यकी एक कानूनकी कित्तामें प्रजातीय (रेसिडन्स) प्रतिबन्ध बासिध करनेपर अभाव हरएक अवस्थाने खेद प्रकट किया है, इस बातसे कोई चाहे तो विपना-कुछ सन्तोष प्राप्त हो सकता है, उतना प्राप्त कर ले परन्तु मैं या आप तो खेद प्रकाशकी केन्द्र भी नहीं सकते। आप व्यस्त हैं मैं भी व्यस्त हूँ। अगर मैं व्यस्त न होता तो मैं जो सान्त्वना दे सकता हूँ उसे देने आपके पास निश्चय ही जाता। फिर भी मैं जानता हूँ कि सच्ची सान्त्वना तो अपने भीतरसे ही आती है। अज्ञानमें हमारी जो बात हुई थी मैं आपको सिर्फ़ उधकी याद दिला सकता हूँ। आपको निराशा हुई है (यदि हुई है तो)। आप सचसे या ब्रिटिश जनतासे कुछ आशा करते थे। लेकिन आप अगर अपने आपसे कोई आशा नहीं करते तो आपको उनसे आशा क्यों करनी चाहिए?

मैंने आपको बीरोन्दी सभिय अन्वका कर्तव्य (इन्ट्री ऑफ़ सिविल डिस्ओबिडि एन्ड) पुस्तक भेजनेका वारा किया था। मुझे यह पुस्तक मिली नहीं। मैं उसके लिये आज पत्र लिख रहा हूँ। आशा है आपके जानेसे पहले भेज दूँगा।

इसके अतिरिक्त मैं तो यही प्रार्थना कर सकता हूँ कि ईश्वर आपको दक्षिण आधिकारमें आन्तरिक सुधारके साथ-साथ इस कामको और इसलिये अनाश्रमक प्रतिरोधको जारी रखनेकी शक्ति और सामर्थ्य दे अछे ही आरम्भमें आप सिर्फ़ मुट्ठीमर ही हों।

अगर आप जा सकते तो कृपया अवश्य आये। अगर आपको फुरसत हो तो एक माहिए। हम साय-साय पाकाहारी भोजनालय (रेस्टोरेंट) में बैठेंगे और बातचीत करेंगे। आपका परिचय रंगून के डॉ. मेहतासे भी कराऊंगा। वे इसी होटलमें ठहरे हुए हैं। हम होटलमें आपकी राह १ बजेमें ५ मिनट तक देखेंगे।

हृदयसे आपका

डॉ. अम्बुसुहमान
३८ सागरिका रोड
वर्ल्स कोर्ट एस डब्ल्यू०

टाइप की हुई दफ्तरी अंग्रेजी प्रति की फोटो-नकल (एस एन ५०२४) से।

२२७ पत्र सी. ई. के निजी सचिवको

[अन्वय]

जगत् २४ १९९

महोदय

मैं विनयपूर्वक सी. ई. के ध्यान इस बातकी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि अभी भी पालकका जो फिलहाल भारतमें ट्रान्सबासके ब्रिटिश भारतीयोंका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं एक तार मिला है। उसमें कहा गया है कि इसी मासकी ३१ तारीखको भारतीय उपपर्वके सम्बन्धमें बम्बईमें एक सार्वजनिक सभा की जावेगी। तारमें यह भी कहा गया है कि वो भारतीय ट्रान्सबास सरकार द्वारा निर्वासित क्रिये जानेपर बम्बई पहुँचे हैं। उनमें से एक युवके पहलेसे बर्माका निवासी है और उसने पिछली सत्राईमें चीनके अधिकारियोंकी सेवा की थी। इसका नेटालमें पैदा हुआ था और बादमें अरिज रिबर कालोनीमें बस गया था। इस दूसरे भारतीयके मामलसे स्पष्ट है कि जो भारतीय दक्षिण आफ्रिकाके दूसरे भागोंके निवासी हैं वे भी सी. ई. महोदयके साथ सभामें बिये गये आस्थासन्तके विरुद्ध भारतको निर्वासित क्रिये जा रहे हैं।

आपका आदि

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

कलोनियल ऑफिस रफरेंस २९१/१४२

१. इस पत्रकी प्रतुप को दूर २ सितम्बरको क्विबेरोस कम्प्लेक्स कार्यालयोंको भेजी गयी थी कि जिसका यह प्रति क्विबेरोस। आज प्राप्त करनेके लिए, ट्रान्सबास कम्प्लेक्स द्वारा भेजा गया है। श्री अम्बुसुहमान २९ सितम्बरके पहले सत्राई जमान से हुए देशनिष्ठाता दूर भारत भेजनेकी बातका सम्बन्ध किया और किया कि "जी अंग्रेजी यह कलेक्ट नहीं किया है कि वह व्यक्ति (१) ११ अक्टूबर १८९९ से पूर्व हीन कर्तव्य नहीं रहे पुष्पेय बना गया है, या (२) उनके पास क्विबेरोसमें प्रवेश करनेका अधिकृत अनुमतिपत्र है जल्दा (३) वह ११ मई, १९ को ट्रान्सबास निवासी था और हीन का दिन था यही पौरुष था।" अंग्रेजी यह भी किया था कि यदि क्विबेरोस विरुद्ध सम्बन्धमें सिद्धता कर रहे हैं, उनके नाम ही है रं ही उनके देशनिष्ठाके सम्बन्धी क्विबेरोस क्विबेरोस ही था क्विबेरोस।

साठें महोदय

बम्बईसे अभी प्राप्त एक चारके सम्बन्धमें नीचे साठें नू को पत्र^१ देबा है। उसकी एक नकल गजरातगुरुबक इसके साथ मत्पी कर रहा हूँ।

पत्रसे सब बात विदित हो जायेगी किन्तु मैं इतना और कहना चाहता हूँ कि ये निर्वासन अधिकारिक गम्भीर और अनुचित होते जा रहे हैं। श्री पोरुफने जो चारके प्रेषक है आज प्राप्त हुए पत्रमें खबर दी है कि ये 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के स्थापनापत्र सम्पादक सर फीरोजशाह मेहता और अन्य प्रमुख व्यक्तिपोंकी सलाहसे कार्य कर रहे हैं।^१

आपका आदि
मो० क० गांधी

मांभीजीके हस्ताक्षरयुक्त टाइप की हुई बपटरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (एस एन ५ २९) से।

२२९ तार एच० एस० एल० पोस्करको

-ज

प्रगति जारी है किन्तु अब भी बहुत अनिश्चित। निर्वासितोंको फरें। भारतकी सद्मानुभूतिकी ठोस अभिव्यक्तिके रूपमें सं पैसा-बन्धाके प्रस्तावका सुझाव। बीमनजी जानते हैं।

मांभीजीके स्वाक्षरोंमें अंग्रेजी मसजिदेकी फोटो-नकल (एस एन

१ देखिये रिजला बॉर्डर।

२. साठें दंपतिके २५ बपटरी वृत्त २५

३. साठें ही सुते कनका उजर सिन्धु लों ही मैं
करीबके बर्तमान लट्टी घिननेय सब जाता है वा

प्रिय हेतरी

मुझे आपका सम्बा और मनोरंजक पत्र मिला और कृतज्ञ भी। मुझे हर्ष है कि आपका जो स्वागत हो रहा है उससे आप प्रसन्न हैं। आप जब वहाँ उतरे तब क्या कोई आपको खेनेके लिए आया था ?

क्या आप डॉ. मेहताके भाईसि मिले हैं ? बाबा है आप किसी भी कारण इसमें नुक न करेगे। वे बहुत ही सकोषी स्वभावके व्यक्ति हैं और सम्भव है उन्हें आपको सम्बन्धके सब बड़े-बड़े बनी-भानी लोगसि विरा हुआ देखकर आपसे मिलने जानेमें संकोच हुआ हो।

आपने जो कतरनें भेजी हैं वे पढ़नेमें मनोरंजक हैं और उनसे यह सम्भावना प्रकट होती है कि आप बहुत अच्छा और ठोस काम कर सकेंगे। मुझे आपका तार मिला गया है। मैंने उसका यह उत्तर बिना है।

बम्बेकी बातमें सर मंचरजीको बहुत विश्वासपी है। माकूम होता है कि उनके कहनेसे भी रिचने यह सुझाव पक्ष लिया था। सर मंचरजीका विचार है कि यह बात जन-भावनाकी ठोस अभिव्यक्ति होगी इसलिए इसका प्रभाव बहुत ब्यादा होगा। गंवा यह नहीं है कि हमें आर्थिक सहायता मिले। दरअसल हमें यह कह सकने योग्य होना चाहिए कि हमारा काम इसके बिना भी चल सकता है लेकिन इसके पीछे विचार यह है कि हजारों लोग जब कम्पा इच्छा करके संपर्कमें भाग लेनेकी इच्छा व्यक्त करेंगे तो उसमें महत्त्वकी बात यह होगी कि इतने लोगोंमें अपना-अपना अंशदान किया। मैं इस सम्बन्धमें अधिक न लिखूंगा क्योंकि यह पत्र पढ़नेतक आप इस सुझावपर या तो अग्रक शुरू कर चुके होंगे या इसको रद्द कर चुके होंगे।

स्मट्स इस सप्ताह दक्षिण आफ्रिकाको रवाना हो रहे हैं, और अभी तक कोई समझौता नहीं हुआ है और न उपनिवेश कार्यालयसे कोई उत्तर ही आया है। इसलिए किसी भी दिन प्रतिफल उत्तर पानके लिए तैयार हूँ। डॉ. एंन्ट्रिक्ने डॉ. क को पत्र लिखा है।

डॉ. मेहतासे मेरी और महत्त्वपूर्ण बातचीत हुई है। मेरा खयाल है, अब उनको विश्वास हो गया है कि हमारी योजना ठीक है।

मैं यह मान केता हूँ कि आप भारतके अन्य भागोंके भी प्रमुख व्यक्तियोंसे पत्र-व्यवहार कर रहे हैं। श्री हाजी हबीब बहुत उत्सुक है कि आप उनके भाई श्री हाजी मुहम्मदको

१ श्री पोस्करने ४ डिसेम्बरके पत्रमें काफीजीको व्यक्ति किया था कि १४ डिसेम्बरको सर फीरोजशाह मेहताकी सम्मेलनमें वह डॉ. एंन्ट्रिक्ने तथा डॉ. मिचरजी है। उस समयमें डॉ. एंन्ट्रिक्नेके लिए कन्व करकेके सम्मेलनमें यह प्रस्ताव पेश किया गयेगा। डॉ. एंन्ट्रिक्ने २ डिसेम्बरके पत्रमें पुनः किया था कि श्री पोस्करकी पत्रमें वह प्रस्ताव दर्ज करेगा। डॉ. एंन्ट्रिक्ने यह प्रस्ताव पत्रे ही पत्र कर दिया करने।

२. अब नहीं नहीं दिया था है, पत्रके लिए देखिए किन्ना डॉ. एंन्ट्रिक्ने।

२२८ पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको

[अभ्यन्त]

अपस्त २४ १९ ९

लॉर्ड महोदय

बम्बईसे अभी प्राप्त एक ठारके सम्बन्धमें मैंने लॉर्ड लू को पत्र^१ भेजा है। उसकी एक मकसद नम्रतापूर्वक इसके साथ गत्पी कर रहा हूँ।

पत्रसे सब बात विरहित हो जायेगी किन्तु मैं इतना धीर कहना चाहता हूँ कि ये निर्वासन अधिकारिक सम्मीर और अनुचित होते जा रहे हैं। श्री पोल्डने जो ठारके प्रेपक है साथ प्राप्त हुए पत्रमें खबर दी है कि वे 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के स्वाम्यापन्न सम्पादक सर फीरोजशाह मेहता और अन्य प्रमुख व्यक्तिपोंकी सलाहसे कार्य कर रहे हैं।^१

आपका आदि

मो० क० गांधी

गांधीजीके हस्ताक्षरयुक्त टाइप की हुई अक्षरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (एच एन ५ २९) से।

२२९ तार एच० एस० एल० पोल्डको

[अभ्यन्त]

अपस्त २५ १९ ९

प्रवृत्ति जाती लेकिन अब भी बहुत अनिश्चित। निर्वासितोंको समामें हाजिर करें। भारतकी सद्मानुसृष्टिकी ठोस अभिव्यक्तिके रूपमें संघर्षमें सहामताई पैदा करनाके प्रस्तावका सुझाव। बोमतजी आगत हैं।

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें अंग्रेजी मसविदेकी फोटो-नकल (एच एन ५ २९) से।

१. देखिये लिखा लॉर्ड।

२. लॉर्ड ऐंस्टहिलने इस पत्रकी तारीख २५ अक्टूबर की थी। उन्होंने लिखा था कि मैंने लॉर्ड लू को पत्र लिखा है। लोर्ड ही मुझे अन्ततः उत्तर मिलेगा लॉर्ड ही मैं "यह ज्ञात करनी चाहिये कि हमारे मौन और अतीवसाधक कर्माल लोर्डसेवा पत्र जमा है या नहीं।"

प्रिय बेनरी

मुझे आपका सम्भा और मनोरंजक पत्र मिला और कठोरने भी। मुझ हृदय है कि आपका जो स्वागत हो रहा है उससे आप प्रसन्न हैं। आप जब वहाँ उतरे तब क्या कोई आपको सेनेके लिए आया था ?

क्या आप डॉ. मेहताके भाईसे मिले हैं ? जाता है आप किसी भी कारण इसमें बुरक न करेंगे। वे बहुत ही संकोची स्वभावके व्यक्ति हैं और सम्भव है उन्हें आपको बम्बईके सब बड़े-बड़े पनी-मानी कोमोसे बिरा हुआ बेलकर आपसे मिलने जानमें संकोच हुआ हो।

आपने जो कठोरने मजी है वे पड़नेमें मनोरंजक है और उनसे यह सम्भावना प्रकट होती है कि आप बहुत अच्छा और टोस काम कर सकेंगे। मुझ आपका तार मिल गया है। मैंने उसका यह उत्तर दिया है।

बम्बेकी बातमें सर मंचरजीको बहुत चिन्तनम्पी है। मालूम होता है कि उनक कहनेसे भी रिश्ते यह मुझा पहल दिया था। सर मंचरजीका विचार है कि यह बात जन भावनाकी टोस अभिव्यक्ति होनी इसलिए इसका प्रभाव बहुत बयारा होना। मंया यह नहीं है कि हमें आर्थिक महायता मिले। बरअसल हमें यह कह सकने योग्य होना चाहिए कि हमारा काम इसके बिना भी चल सकता है। लेकिन इसके पीछे विचार यह है कि हमारा जोय जब कम्पा इकट्ठा करके मंयपनें मास केनकी इच्छा व्यक्त करेंगे तो उसमें बहत्बकी बात यह होपी कि इनने सोमनि अपना-अपना जमयान किया। मैं इस सम्बन्धमें अधिक न किर्नुवा क्योंकि यह पत्र पड़नेतक आप इस मुझाबपर या तो जमस शुरू कर चुके होंगे या इसको रद कर चुके होंगे।

समय इस सप्ताह बसिब आर्थिकाको खाना हो रहे हैं और जमी तक कोई समझीता नहीं हुआ है और न उगनिवेद्य कार्यालयमें कोई उत्तर ही आया है। इसलिए किमी भी दिन प्रतिकूल उत्तर पानके लिए तैयार हूँ। कई एंस्ट्रिकने सॉर्टे क को पत्र लिता है।

डॉ. मेहतासे बेरी और महत्त्वपूर्ण बातचीत हुई है। मेरा रायात है, जब उनको बिरवास हो गया है कि हमारी योजना ठीक है।

मैं यह मान लता हूँ कि आप भारतक अन्य भागोंके भी प्रमुत व्यक्तिपनि पत्र-व्यवहार कर रहे हैं। भी हामी एबीब बहुत उत्सुक है कि आप उनके भाई भी हामी मुहम्मदको

१. बी. रोल्डने ४ डिग्रेसके वरने मनीरीकी खिच लिता था कि १४ डिग्रेसको सर कीरिष्यद मेरठकी बम्बेयगने एक टाईबनिद गया होनेवाली है। इस उगने निरिक्तिके लिए कल करकेके सम्बन्धमें यह बलान देल किता बनेथ। कर्नेन १ डिग्रेसके बल वरने पुन लिता था कि बी. पारनेकी उगने दर उगान कर्नेन थी है वरने एक बलान जने ही पत्र कर किता कने।

२. सर वरी वरी दिता गया है, वरनेके लिए देखि लिता ठीक।

आन्वोलनमें भाग लेने और अपनी सहायता करनेके लिए बुझाये। वे पोरबन्धमें हैं। उनका पूरा नाम हाथी मुहम्मद हाथी दादा है।

नेटासके मित्रोंने अपना बक्तव्य यह कि सभी संसद-सदस्यों तथा बख्तारोंको और भारतीय बख्तारों एवं लोक-नेताओंको भी भेज दिया है। आप नेटासके प्रश्नके सम्बन्धमें जो-कुछ जानसक उसमें यह कर सकते हैं।

श्री बमसेवजीने पुस्तिकाकी २ प्रतिवां छम्पानेका बचन देकर बहुत छ्पा भी है। यह छानदार काम होना।

मॉड डॉ मेहता हाथी श्वपी और मैं रविवारको आइएके गये थे। हम रातको एक बजेकी गाड़ीसे एलाहाबाद हुए और स्टेशनमें ३ ४ पर पहुँचे। डॉर्न एसेन स्टेशनपर हमें लेनेके लिए आये थे और हम आइएके एक पैरस गये। पैरस चलता बड़ा आनन्दमय रहा। आपको भी उसमें रस आना होता। प्रवेश बहुत सुन्दर था। डॉर्न एसेन तो मामो स्फूर्तिकी मूर्ति है। वे बहुत-बच्चे व्यक्ति हैं। मेरा खयाल है कि सामान्यतः वे असंस्कृत समझे जायेंगे। वे जो भी काम करते हैं विस्तृत स्वामाधिक उपदेश करते हैं और बहुत मुँह-फट्ट हैं। उनकी पत्नीके विचार उनके नहीं मिलते फिर भी उनके प्रति उनका अनुराग बहुत महुरा है और यह मुझे उनके स्वभावकी सबसे बड़ी अच्छाई जान पड़ी। उनकी पत्नी स्तनके केन्द्रसे पीड़ित है और केवल दिन गिन रही है। उनका चेहरा बड़ा ही मोहक और सरस है। उनके साथ मरी साधी जम्बी बातचीत हुई। एसेनके चार बच्चे हैं। सबसे बड़ी पुत्री है। वह बहुत हूण्ट-गुण्ट और स्वस्थ लड़की है और उत्तम गृह-व्यवस्थापिका है। वहीं अपने छोटे भाइयोंकी और प्रायः चारों बरकी देखभाल करती है। एसेन अपने बच्चोंपर कोई नियन्त्रण रखनेमें विश्वास नहीं करते। मुझे लगता है कि वे इस सम्बन्धमें अति कर जाते हैं। बच्चे जाहे बैठ फर्सपर बैठ जाते थे और जाहे बंधे लाते-सीठे थे। किन्तु यह तो लकड़ीसकी बात है। उनके सब बच्चे पूर्ण स्वस्थ थे। आइएके किसी समय टॉस्टॉयवाधियोंकी बस्ती थी। उसके निवासी उस आदर्शके अनुरूप नहीं रह सके हैं। कुछ भले गये हैं कुछ नहीं रह रहे हैं किन्तु उस आदर्शपर नहीं चल रहे हैं। एसेन ही उस आदर्शके सबसे निकट प्रतीत होते हैं। उनकी जमीनकी ह्रासत बहुत अच्छी है और उनका इस मीठूना हाजतमें वे अकेले और मशीनोंकी मददके बिना कामे हैं। वे केवल सीधे-साधे बीजार काममें लगे हैं। उनका बच्चा पूरे बतानेका था। डॉ मेहताने इस मामामें बहुत रस लिया। वे बाल्यतः अनिच्छापूर्वक कामे थे क्योंकि वे कोई अनावश्यक कष्ट उठानेमें विश्वास नहीं करते। मॉडको भी महीं आना बहुत अच्छा लगा। मैंने सोचा था कि वह पैरस छोड़ सकती है। यह मैरी फ़ोरता थी। किन्तु श्री हाथी श्वपीने इस स्थितिसे मुझे बधा किया।

डॉ मेहताकी भी हुई १५ पीरकी रफममें से काग-जीवन पुस्तकमासा (स्कूल साइकल सीरीज) को टॉस्टॉय और अन्य मैककोंकी किसी कुछ और फिटामें प्रीनिपसक लिए करीब की गई है।

इससे आपका

दाएर की हुई बस्तरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एच एम ५ ३१) से।

[अप्रत २७ १९ ९]

यह इतना भी पिछले हन्तेकी तरह ही बीता है। अभी तक समझीतेका कुछ पता नहीं है। इसके अतिरिक्त यह खबर भी है कि अनरल स्मट्स इस हन्ते ट्रान्सवालको रवाना हो जायेंगे। इसलिये क्या कहा जाये यह नहीं सूझता। बोला होया ऐसा तो नहीं बीतता। सर मंचरजीने मुलाकातके लिए अनरल स्मट्सको शिटडी दिल्ली भी। उसका जवाब अनरल स्मट्सने आज २७ अप्रतको दिया है।

अनरल स्मट्सने जवाबमें कहा है कि समझीतेकी बातचीत खानगी तीरपर चल रही है इसलिये किन्नाहक मुलाकात मुस्तभी कर बी है। इसका यह अर्थ माना जाता है कि शायद समझीता हो जायेगा। फिर दूसरी तरफसे यह भी माना जाता है कि इतनी बील हुई, इससे मालूम होता है कि हमारी नायिके स्वीकृत होनेमें कुछ मड़चन भी आई है। इनमें से क्या ठीक है यह जान नहीं पड़ता। मैं तो यही कह सकता हूँ कि समझीतेकी बातका परिणाम कुछ भी हो उससे हमारा सम्बन्ध कम है। जो दुःख सहन करनेके लिए तैयार है उसको क्या भय या चिन्ता? मुझे इसमें शक भी सन्देह नहीं कि एक-एक दिन हमारी मांग मंजूर हुए बिना रह नहीं सकती। इसमें किसी भी सन्धापहीको सन्देह होना ही नहीं चाहिए। कोई ऐन्टिहिलको भी ऐसी ही खबर मिली है कि समझीतेको बातचीत अभी चल ही रही है।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २५-९-१९ ९

२३२ सम्बन्ध

[अप्रत २७ १९ ९के बाद]

नेटासक शिष्टमण्डल

सर्वस्य शिष्टमण्डलके विवरणको अभी तक बागह-बागह भेज रहे हैं और लोकनेतृकाते मिल रहे हैं। भारतको बहुत-सी प्रतिष्ठा भेजी है। उनके साथ एक पत्र भी लिखा है। पत्रका सर इस प्रकार है

भारतसे प्रार्थना

नेटासके भारतीयोंकी स्थितिके सम्बन्धमें हमने उपनिवेश मन्त्रीके सामने जो विवरण देय किया है उसकी तक्रर हम आपको भेजने हैं।

१ अप्रत २० अप्रतकी तारीख रही है।

सम्बन्धमें हम बड़े-बड़े अधिकारियोंसे मिलने और लोकमतको जागृत करनेके लिए कामे हैं। हम उपनिवेश मन्त्री और अन्य सज्जनोंसे मिले हैं और हमने उनके सामने पेश किये विवरणको चाये और मन्त्री भाँति प्रचारित किया है। जबतक भारतके भारतीय हृदयसे हमारी सहायता न करे तो तबतक यहाँ कोई नू या कोई सॉर्टे कुछ व्यापार कर सकें यह सम्भव नहीं है।

नेटालमें भारतीयोंकी आवाही बहुत है और यहाँ उनकी बड़ी मिलिकमल है। वे भारतके सभी भागोंसे आये हुए हैं। उनकी संख्या एक लाख है। इनमें से कमजोर बड़ हजार जोध व्यापारमें लगे हैं और बाकी गिरमिटिया मजदूर हैं या वे लोग हैं जो गिरमिटियोंसे मुक्त हो चुके हैं। नेटालकी समृद्धि भारतीय मजदूरोंके श्रमपर ही निर्भर है इस बातको सभी संभूर करते हैं। हम भारतकी सहायता करनेमें भी पीछे नहीं हटे हैं। पिछले दो बकासोंमें मरीब और बनीर सभीने अपने-अपने सामर्थ्यके अनुसार पन्ना देकर बकास-सहायता कोषमें धन भेजा है। हमें वनकी सहायता नहीं चाहिए किन्तु भारत [दूसरे तरफ़े] हमारी सहायता करके हमारे कुछ काम कर सकता है, यह तो हमारा निश्चित मत है।

विवरणसे आप देख सकेंगे कि नेटालमें तीन तरफोंसे हमें बर्बाद करनेका प्रस्ताव अस्तित्वार किया गया है। एक तो व्यापारिक साइसेंसों द्वारा अन्याय किया जाता है। साइसेंस देनेवाला अधिकारी और साइसेंस बोर्ड [के सदस्य] जो हमारे प्रतिस्पर्धी हैं मगमाने तीरपर हमारे परवाने रोक लेते हैं और उनके सम्बन्धमें कानूनी बकासोंमें अपनी नहीं की जा सकती। दूसरे, नेटालको समृद्ध बनानेके लिए भारतीय गिरमिटियोंकी पुष्पमोंकी तरह मजदूरी करनी पड़ती है। फिर भी गन्नेके सेतों और चायके बागोंमें या ज़ानोंमें कड़ा काम करके अपनी बर्बाद पूरी करनेके बार तककी और उनके स्त्री-बच्चोंको मारी कर देना पड़ता है। इससे स्वतन्त्रतापूर्वक इस उप निवेशमें रूढ़कर वे अपना युवाय करनेमें असमर्थ रहते हैं। और, तीसरे, हमारे बालकोंको शिक्षा देनेके जो साधारण साधन प्राप्त वे वे भी बन्द कर दिये गये हैं और इस प्रकार हमारी सभी उन्नतिका द्वार बन्द कर दिया गया है।

अब यदि भारतमें समार्यों और प्रार्थनापत्रों आदिसे हमारे कर्षणिक सम्बन्धमें पुकार प्रही की जायेगी तो हमें भूखों मरकर इस उपनिवेशसे भावना पड़ेगा और इसमें बहुत समय भी नहीं लगेगा। भारत सरकारके हाथमें इसका एक कारण उपाय है। यह यह है कि जबतक नेटाल सरकार हमारे अधिकार स्वीकार न करे तबतक भारत नेटालको मजदूर भेजना बन्द रखे। कोई कर्मने ऐसा प्रस्ताव अपनाया था। उन्होंने [नेटाल सरकारको] यह पत्र भी लिखा था कि यदि भारतीय व्यापारियोंकी स्वतन्त्रताकी रक्षा करनेका आस्थापन न किया जायेगा तो मजदूर रोक दिये जायेंगे। इन बातोंका कोई और परिणाम तो बात नहीं हुआ भारतीयोंकी स्वतन्त्रताकी रक्षाके बजाय ऊपर लिखे अनुसार कड़े कानून बन्द बना दिये गये हैं और उनपर न्यूटालके साथ अमल किया जाता है। हमारे पुनर-बसके साधनोंमें विष-मतिरिण कमी होती जाती है और विटिया प्रजाके रूपमें सामान्य बहिष्कारोंके साथ इस उपनिवेशमें रहना भी बदरेमें पड़ गया है।

टाइम्समें लेख

टाइम्समें यह लेख निकला था कि सिष्टमण्डलने अपनी मताधिकारकी मांग छोड़ दी है। उसके अलावा दूसरी भी मसजद बातें थीं। इसलिये श्री आम्बिकादेवें हस्ताक्षरोंसे एक पत्र भेजा गया था। उसका सार नीचे देता हूँ

आपने अपने कसके अक्षरार्थमें लिखा है कि "संसदीय मताधिकारके सम्बन्धमें नेटालके भारतीयोंका कोई सपना नहीं है।" हमारी हासकी छद्मई राजनीतिक मताधिकारके सम्बन्धमें नहीं है। फिर भी यह बात ठी सही है कि हमारी माँगोंमें से एक माँग उसके सम्बन्धमें है। हमारी माँग तो बहुत है। लेकिन फिलहाल जो बहुत ही जरूरी है वे ही माँगें क्रमके सामने पेश की गई हैं ताकि हम उनका ध्यान पूरे मनोयोगसे उनकी ओर ही आकर्षित कर सकें। अगर परबाना-अधिकारी (साइसेन्सिभ्य ऑफिसर) की कसमकी एक हरकतसे हमारी मुजर-बसरके साधन छिन जाते हैं हमारे अधिकार बाहे बिलने पुचने हों तो भी उस अधिकारीके फैसलेके विषय अपीलका अधिकार नहीं मिलता हमारे बालकोंकी सिलाका सार बन्द करके उनकी मानसिक सक्रियता विकास रोक दिया जाता है और सर्वनापी भारी कर लगाकर समस्त भारतीय मजदूरोंको मुक्तारना जाता है तो कोरे राजनीतिक अधिकारसे हमको क्या काम पहुँच सकता है?

हमने अंग्रेज प्रजाके सामने जो तीन माँगें रखी हैं, उनको सभी कोषोंमें उचित माना है। ये हमारी सार्विक और मानसिक उन्नतिसे सम्बन्धित हैं। नेटाल जैसे जनतन्त्री राज्यमें भारतीयोंको मताधिकार नहीं है यह कोई छोटी विकारन नहीं है। बिलु मीजुता हासलको ध्यानमें रखते हुए हम अभी इस सम्बन्धमें जोर नहीं दे रहे हैं। हम अपनी स्वाभाविक मर्यादाओं रखते हैं, इसीसे हमारी राजनीतिक अधिकार प्राप्त करनेकी योग्यता सिद्ध हो जाती है।

इसके अलावा आप लिखते हैं कि "सम्पत्ता और पित्तोंमें भारतीय दक्षिण अफ्रिकाने बडनियोंसे बड़े-बड़े हैं इस बुद्धिमें वे अपने लिए सब अधिकार माँगते हैं। इसके उत्तरमें हम आश्चर्यचकित यह बताना चाहते हैं कि हम इस प्रकारके अधिकार माँगनेसे रुम नहीं हैं। और येही उद्यमोंमें अहासक सम्पत्तियोंमें बुद्धिमान लोगों द्वारा अपने अधिकारोंका उपयोग करनेकी बात है उनके मार्गमें गुरुम भेदोंसे बाधा नहीं पड़नी चाहिए।

वाइसरॉयको सिद्धी

इसके अलावा वाइसरॉयको एक द्वितीय पत्र लिखा गया है। उसमें माँग भी गई है कि यदि हमारे व्यापारिक अधिकारको रखा नहीं की जाती है तो विरुद्धके अपीन जानेवाले मजदूरोंको रोक दिया जाये।

सुझावजतें

ये लोग सर ब्रिटिश सेनीसे^१ भी मिले जो पहले मूलकी तरफ रहे हैं कभी माहकने साथी बातें मुनीं। श्री बॉम्बलीसे और भारतीयरेणन बीके भी क्वारंसे भी मिलने रूने है।

१ सर १९०८-१९ १के इच्छामने अदादिन मुना वा।

२ रेडिक् १९१८ ११।

३ मूलमें सिद्धि १९१४, जो बीकनर राजकी आत्मा करने के रेडिक् १९१४ ११ ७ नॉर ११-१२।

वे कर्मस सीधीसे एक बार निकल चुके हैं। अब फिर मिलनेवाले हैं। कोई मौलाना पहाड़ी सितम्बरको मिलना तय किया है। भी मुफ्त और नबाब साहब बेसपामी आदिसे मुझको फिरे हुई है। इसके अलावा आनासिंह उनका पत्र-व्यवहार बन्द रहा है। सर मंचरजीसे समय-समयपर भेंट होती रहती है। जनकी मरवका पार नहीं है।

पोसकका काम

भी पोसकका काम भारतमें बोरसे बजता दिखाई देता है। उनके पाससे अलवारोंकी कतरने आई हैं जिनसे प्रकट होता है कि उन्होंने एक ही सप्ताहमें बहुत बड़ा काम किया है। गुजराती और बंगालीके सभी अलवारोंमें खबरें दिखाई देती हैं। वे बम्बईमें बहुत-से लोगोंको पत्र लिख चुके हैं। ११ तारीखको हुई सार्वजनिक सभाका भी तार आया है। अब क्या होता है, यह देखना है। उनके पाससे यहाँ निजी तार आते रहते हैं। इसकिए पूरी जानकारी रहती है।

सर मंचरजीकी मान्यता है कि भारतमें जन्मा करके द्राम्बवाकको पैसेकी सहायता दी जानी चाहिए। इस सम्बन्धमें भी पोसकको तार^१ दिया गया है। अब सभामें जो कुछ हो जाने सो ठीक है। जल्दभी इस हलचलका जोगीपर अच्छा मसूर पड़ेगा और इससे भारतकी सच्ची सहानुभूति प्रकट होगी।

‘इंडियन सोसियलॉजिस्ट’

इस मसूरका मूक मुद्रक जेकमें बना गया है। फिर भी यह मसूर छप रहा है। नया मुद्रक भी फिरलतार कर लिखा गया है। नये मुद्रकने पत्र-सम्बन्धी स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिए ही निर्णय होकर यह जोखिम अपने ऊपर ली है। यह कहता है कि उसक और भी क्यामजबूत मसूरमें बिलकुल समानता नहीं है। उसने तो केवल पत्र-सम्बन्धी स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिए यह कार्य अपने हाथमें लिया है। हम इससे इतनी सीख तो ले ही सकते हैं कि जिस व्यक्तिने इस तरह जिम्मेदारी उठाई है वह गोप है। अब उसने खुब नामे बढ़कर यह जोखिम मोक्ष ली है तब यदि द्राम्बवासके भारतीय अपने देशकी इज्जतकी खातिर कड़ाई जल्दमें तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं मानी जायेगी।

जोसेफ राजप्यन

भी जोसेफ राजप्यन जो बहुत दिन पहले बेरिस्तर हो चुके हैं, लपेकी ठगीसे बापस नहीं सीट पा रहे थे। उनके लिए द्राम्बवासमें जन्मा भी जमा किया गया था। अब वे “टीटे बल कैसिक” बहावसे रवाना हो रहे हैं। उनका विचार देशसेवाके लिए गरीबीका जीवन बितानेका है। मेरी कामना है कि उनका वह निश्चय पक्का बना रहे। मुझसे उन्होंने साफ-साफ कहा है कि जापसकता जान पड़ेगी तो वे द्राम्बवासमें जेक भी जायेंगे।

बहादुर औरतें

जनकी आदि किमरपूकमें भी साठ तिजनी मताधिकारके सम्बन्धमें विरपतार हुई, और वहाँ उन्होंने जनसंग किया। उन्होंने जो दिन तक कुछ भी नहीं खाया। इसकिए उनको केरकी सजा पूरी होनेसे पहले छोड़ दिया गया है। मैं यह बतानेके लिए यह नहीं लिख रहा

हैं और हमें ऐसा समझना भी नहीं चाहिए, कि जो स्त्रियाँ ऐसा करती हैं उनका हमें हर मामलेमें अनुकरणीय करना चाहिए। उद्देश्य केवल यह समझाना है कि वे कष्ट-सहनमें कोई कमी नहीं रखती।

[गुणराशिसे]

इंडियन ओपिनियन २५-९-१९ ९

२३३ पत्र श्रीमती काशी गांधीको

कम्बल

बम्बल २८, १९ ९

एक बजे रात

बि काशी'

बेर इतनी हो गई है, फिर भी काम सिद्धे बिना काम नहीं चलेगा। हर हस्ते तुम्हारी और सन्तोषकी' याद कर केता हैं और पत्र नहीं लिखता। काम बहुत नहीं है फिर भी किसी-न-किसी काममें उलझा ही रहा हूँ।

तुम्हारी गोदमें बेटी आई है इसके बारेमें मैं क्या लिखूँ? अगर कहीं बच्चा हुआ कि आई, तो वह झूठ कहलायेगा। अगर बिछनीरी बताने तो वह हिंसा होगी। अपने आमके विचारोंके अनुसार मुझे तटस्थ रहना चाहिए। इसके लिए भीताबीमें जिसे समझिताबस्था कहा है उसकी उकल है। वह तो अत्यन्त दुर्लभ है। फिर भी प्रयास मेरा उसी दिशामें है। इस बीचमें इतना ही कहता हूँ और यही चाहता हूँ कि तुम सच्चे रूपमें इन्धियोंका समन करना सीखो। मुझे बहुत अनुभव हो रहा है। बिना अधिक बेसता हूँ मेरे विचार उठने अधिक पक्के होते जाते हैं। उन्हें बरकनेका कारण दिखाई नहीं देता। संतोषको अन्तमें बिट्ठी नहीं लिखना। यह तुम लोगोंके लिए है।

मैंने तो तुम्हें पत्र नहीं लिखा किन्तु तुमने क्यों नहीं लिखा? यदि मनमें यह सवाल करनेपर कोई कारण न मिले तो परधाताप करना क्योंकि मैं तुम सबके पत्रोंका भूसा हूँ।

मोहनदासके आशीर्वाद

प्रमुखास गांधीकी पुस्तक 'बीचमनु' परीक में प्रकाशित गांधीजीके स्वासरोमें लिखित मूल मुद्रणकी पत्रकी फोटो-नकलसे।

२३४ पत्र लॉर्ड ऐंन्टहिलको

[अन्वय]

जयस्त ३ १९९

लॉर्ड महोदय

आपको बनाबसक परेधानीमें न आसनेके उद्देश्यसे मैंने आपके पिछले दो पत्रोंकी प्राप्ति स्वीकार नहीं की है।^१

क्या मैं आपसे जनरल स्मट्सके उस वक्तव्यपर^१ ध्यान देनेका निवेदन कर सकता हूँ जो उन्होंने भारतीयोंके प्रश्नके सम्बन्धमें एक राबटरके प्रतिनिधिकी दिया है? उस वक्तव्यका अर्थ क्या हो सकता है? क्या उसका अर्थ यह है कि जनरल महोदय प्रिटोरिया पहुँचनेके बाद निर्णय करने और यदि ऐसी बात हो तो हमारा कर्तव्य क्या है?

आपका आदि

टाइप की हुई बफरटी मंगेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन० ५ ३४) से।

२३५ पत्र : अमीर असीको

[अन्वय]

जयस्त ३ १९९

प्रिय श्री अमीर असी

मुझे आपका पोस्टकार्ड मिला। मैंने आपके आशयके अन्वयसे जानबूझ कर आपको पत्र नहीं लिखा। यदि कोई महत्वकी बात होती तो मैं निश्चय ही पत्र लिखता। इसके अतिरिक्त आपने अपने पोस्टकार्डमें पत्र लिखनेका आवाज किया था उसकी भी मैं प्रतीक्षा कर रहा था। आपका पत्र न मिलनेसे मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि आप ज्यादा व्यस्त हैं इसीलिए पत्र लिख नहीं पाये।

१ लॉर्ड ऐंन्टहिलके अपने २४ जनवरीके पत्रमें कहा था कि उनके उद्देश्यसे आपसे मिलना जनरल स्मट्सके अन्वयसे दक्षिण आफ्रिका राज्या ही मंगेजे के अन्तर्गत रह गये हैं। उन्होंने उद्देश्यसे उस अन्वयके भी कि किना किसमें यह "सम्बन्धित किना क्या था कि प्रिटोरिया प्रिटोरियोंके अन्तर्गत कोई सम्बन्धित हो जायेगा।" के लॉर्ड ऐंन्टहिलके पत्र अन्वयसे यह कि "सम्बन्धित नहीं था। अपने २५ जनवरीके पत्रमें उन्होंने लॉर्ड ऐंन्टहिलके अन्वयसे किना था कि "सम्बन्धित नहीं था ही रही है, अन्वयसे यह भी लॉर्ड ऐंन्टहिलके अन्वयसे किना है।" लॉर्ड ऐंन्टहिलके अन्वयसे यह किना लॉर्ड ऐंन्टहिलके अन्वयसे किना था कि "सम्बन्धित नहीं था ही रही है, अन्वयसे यह भी लॉर्ड ऐंन्टहिलके अन्वयसे किना है।" लॉर्ड ऐंन्टहिलके अन्वयसे यह किना लॉर्ड ऐंन्टहिलके अन्वयसे किना था कि "सम्बन्धित नहीं था ही रही है, अन्वयसे यह भी लॉर्ड ऐंन्टहिलके अन्वयसे किना है।"

२. रेडिफ गणना निर्णय।

द्राम्बवालके मामलेपर अब भी बातचीत चक ही रही है। जनरल स्मट्स एनिवारको चके पये। उन्होंने रायटरको यह सन्देश दिया

मे आशा करता हूँ यह प्रश्न द्राम्बवालके राजनीतिक कितिबसे कप्त होनपर जा पया है। द्राम्बवालमें भारतीयोंके कुछ उग्र प्रतिनिधि जिस आन्दोलनको चला रहे हैं उससे भारतीयोंका नारी बहुत बेहतर बन गया है और कानूनके भागो चुपचाप मुठने डेक चुका है। मेने लॉर्ड क्रू से और इस मामलेमें दिल्लीबस्वी रखनेवाके दूसरे विशिष्ट नेताबंसि बार-बार बातचीत की है और मेरा खयाल है कि अब इस ठोड़ी समस्याका ऐसा समाधान निकल सकेगा जिसे सब समझदार लोग ठीक और उचित मानेंगे।

और इस समय मामला यहींपर है। इसीलिए समझौतेकी जाया करनेका कुछ कारण है। लॉर्ड एंस्ट्रिङ्गने इस मामलेमें बहुत ही अच्छा काम किया है किन्तु यदि बातचीत कम्बी होती है तो जनरल स्मट्सकी दक्षिण बाफिकाकी बापसीको देखते हुए इस समय प्रश्न यह उठता है कि श्री हुजवी हुबीब और मैं यहाँ ठहरें या अब हमारे लिए उपयुक्त स्थान दक्षिण बाफिका है और बावस्थकता हो तो द्राम्बवालकी जेठ।

वर्हातक नेताके सिस्टमपरकला सम्बन्ध है, श्री अब्दुल काबिर और उनके मित्र लोग आकाश-माठाक एक कर रहे हैं। वे विवरणको सब बयह मेज रहे हैं। वे लॉर्ड क्रू से मिल चुके हैं और इस सप्ताह लॉर्ड मॉर्ले और कर्नल सीबीसे मिल रहे हैं। मायाबांसि भी जो पेरिसमें अपना इकाब कर रहे हैं, उनका पत्र-व्यवहार चक रहा है। वे सर मंचरजीसे भी लगातार सम्पर्क बनाये हुए हैं। उन्होंने भारतीय जनताके नाम जो पत्र लिखा है उसकी चकलसे प्रकट होता है कि वे अपनी क्षति अब किस उपायपर केन्द्रित कर रहे हैं। उन्होंने आपको विवरण मेबा है। औपचारिक रूपसे बाइसर्टीको भी एक पत्र मेबा गया है, जिसमें उनसे अनुरोध किया गया है कि यदि राहुत न मिले तो वे नेताके भारतीयोंका प्रबास स्वधित करनेका उपाय अपनायें। वे खुद उपस्थित होकर आपके प्रति अपना आभरमाच प्रकट करनेके लिए अत्यन्त उत्सुक हैं विशेषत इसीलिए कि उनको आपसे मिलने और आपकी सलाहपर चकनेकी चास हिदायत भी गई है। इसीलिए यदि मुझे यह आश्वास दे दें कि आप कबतक लौटनेवाके हैं तो मैं आपका इतक हूँगा।

आशा करता हूँ कि आपका जो इकाब चक रहा है उसमें कोई और क्लानट न आई होनी और आप पूरी तरह तन्मुस्त होकर लौटेंगे। मैं यह चिक भी कर हूँ कि कक बम्बईमें द्राम्बवालके कानूनके विरुद्ध आपति प्रकट करनेके लिए एक सार्वजनिक सभा की जायेगी।

हरबसे आपका

म्याबमूति जमीर खलीफो
होटक एवेजखॉक,
बकनेरा टौरस
[सिद्दखरखंड]

टाइप की हुई अंग्रेजी एतरी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५ ३५) से।

राष्ट्रीय अपमान होता हे। यदि हम उसे स्वीकार कर लेंगे तो उसका अपमान केवल इतना ही होगा कि आखिर हम सिद्धान्तके लिए उतना नहीं लड़ रहे थे जितना अपने निजी स्वार्थके लिए कुछ विभिन्न भारतीयोंको द्रान्धवात्ममें लानेकी माँगकी पूर्तिके लिए।

आपने माँगकी तारीखके टाइम्स में सम्बन्धी सार्वजनिक समाको रद्द करनेके सम्बन्धमें ठार पढ़ा होगा। यह समा कुछ प्रभावशाली लोगोंकी भाँपपर डेरिफ्ले बुलाई थी। मुझे बहुत अधिक भय है कि सरकारकी कार्रवाई 'द्रान्धवात्ममें जो स्थिति ब्रह्म की है उसके समर्थनमें'।

आपका आदि,

[पुनरावृत्ति]

श्री हार्जी हबीब और मैं सम्भीरतासे विचार कर रहे हैं कि क्या हमारे लिए वह ठीक न होपा कि हम यही काम खत्म करनेके बाद भारत जायें और वहाँ जनताको और भी अधिक सहानुभूति प्रकट करनेके लिए प्रेरित करें। किन्तु, सर्वोच्च नृ से विश्व मेंटकी जाया है उसके ही जानेके बाद हम इस सम्बन्धमें आपसे सलाह करेंगे।

टाइप की हुई सफरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एच एन ५ ३७) है।

२३९ पत्र मणिसाल गांधीको

सम्बन्ध

सितम्बर १ १९१९

वि० मणिसाल

तुम्हारे पत्र नियमित रूपसे मिलते हैं। श्रीमती क्रीबने मुझे इस सप्ताह फिर अपने पत्र जानेके लिए बुलाया था। वहाँ उन्होंने तुम उसके बारेमें पूछा। उन्होंने तुम सबका और फीनिक्सके चर्चे आदिका विषय भी माँगा है। इनमें से जो चित्र हों उन्हें भेज देना। मैंने वा को भी पत्र लिखा है। श्रीमती क्रीब बड़ी बली महिम्न है। मुझपर बहुत भयमता रखती है।

समझौतेकी अब कम सम्भावना है। ऐसा होपा तो मेरे सड़े बिना काम नहीं चलेगा। तुम सबकी सहायता मुझे चाहिए। और वह सहायता यह है कि तुम सब हिम्मत रखकर जो फलें बचा करना है उसे करते जानो।

१. सर्वे सरकारके विचारमें ताबन् बाकिदा नूस्मिन रिफ वाप होयेके पत्र डेरिफ्ले सिव डेरिफ्ले डेरिफ्ले से उपायों कुम्ना ज्वाडनीय था।

२. सर्वे एक का-न्य न्या है और एक अन्य सर्वे है।

३. सर्वे एक नूरी रक्ति कती है।

४. गांधीजीके सन्ने श्रीमन् काबन् वशीसे था था वे रन्नेके सन्ने थे। डेरिफ्ले सन्ने ८, एच १००।

५. सर्व पत्र ज्वाडनीय नहीं है।

२३७. पत्र मणिलाल गांधीको

[सम्पन्न
अगस्तका मन्त] १९०९

पि मणिलाल

तुम्हारा पत्र पिका ।

तुम्हारा मन बिलकुल शान्त हो गया हो तुम अपने काममें बिलकुल डग घबे हो और बिधाम्यास निरिचल होकर करते हो तो मैं अपने-आपको भाग्यशाही मारूंगा । तुम इस देशमें आनेकी उतावली करो इसकी जरूरत नहीं बाग पड़ती । यहकि भोग बहुत बचम बिबाई देते हैं । मिझे तब क्याशा बार्ते हू पी ।

तुम बासकोंको पढ़ानेका काम करते हो यह सराहनीय है ।

मोहनदासके आसीबाँध

पांडीबीके स्वाकारोंमें मूल पुकराठी प्रति (सी डब्ल्यू ८९) है ।

सोबल्य सुधीकाबेग बांधी ।

२३८ पत्र लॉर्ड ऐंन्टहिलको

[सम्पन्न
सितम्बर १ १९०९

लॉर्ड महोदय

मैं आपके गत मासकी ३१ तारीखके पत्रके^१ लिए आपका अत्यन्त आभारी हूँ ।

यदि जनरल स्मट्सका निर्णय अन्तिम हो तो यह दुर्भाग्यपूर्ण है । लेकिन मुझे नय है कि अविचार के प्रसक्त सम्बन्धमें मैंने जो सब प्रहल किया है उससे पीछे हटना मेरे लिए सम्भव न होगा । मेरी सम्मतिमें यदि यह "अविचार" स्वीकार नहीं किया जाता तो एक सीमित संख्यामें अिहित भारतीय प्रवासियोंका निवास स्थायी बना देनेसे कोई फाय न होना । यदि केवल अंशान्तरिक "अविचार" भी अकुल्य रहे तो किसी भारतीयको ट्रान्स वासमें प्रवेश करनेकी आवश्यकता नहीं है । और छ की संख्याके विपरितका कारण भी की कार्टेराइटकी यह चिन्ता थी कि मैं भारतीय समाजकी इस चोपनाका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण हूँ, कि अिहित भारतीयोंके अनेके प्रसक्त पीछे ट्रान्सवासमें अिहित भारतीयोंको भर देनेका कोई उपाय नहीं है । इसलिए आप देखें कि जनरल स्मट्सके प्रस्तावसे भारतीयोंकी आवश्यकता तनिक भी पूरी नहीं होती । इसके विपरित उद्ये भारतीयोंका और भी घम्भीर

प्रिय स्वामीजी

आपका पत्र मिला। पहले आपका डिपो रोडमें दिया गया "कर्मन बाइबी — सम्बन्धी भाषण पढ़ा था। शिक्षा-सम्बन्धी पत्र भी देखा। उक्त तीनों लेखोंको पढ़कर मुझे कुछ हुआ है। आपने मुझे जो पत्र लिखा है उससे आपके इस्लाम-सम्बन्धी विचार प्रकट होते हैं। दूसरे दोनों लेखोंमें इस्लाम धर्मके अनुयायियोंके प्रति आपका व्यवहार प्रकट होता है। आपके इस्लाम धर्म सम्बन्धी विचारोंके विषयमें मैं कुछ नहीं कहता। लेकिन यह मैं जानता हूँ कि इस्लाम धर्मपर आपका आरोप हिन्दू धर्मके रहस्यके विरुद्ध है। फिर, आरोप किन्ना ठो किन्ना अगर उसे करते हुए आपने नीतिके विरुद्ध अपनी सुविधाके विचारसे ऐसा व्यवहार किन्ना उससे और भी कुछ होता है। आपने हिन्दू धर्मका रक्षक अंग्रेजोंको माना है यह तो आपने अपनी अति हीनता प्रकट की है। यदि मैं स्वयं अपने धर्मकी रक्षाके योग्य न होऊँ तो दूसरे धर्मका अनुयायी उसकी रक्षा कैसे करेगा? आपके शिक्षा-सम्बन्धी विचारोंको मैं हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच सिर्फ विरोध पैदा करनेवाला मानता हूँ। अगर हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच इतना अन्तर रखनेकी आवश्यकता हो तब तो भारत पराधीन रहनेका ही पात्र है। इसमें विवेक्तियोंको बोधी भी कैसे बताया जा सकता है? ऐसा अन्तर रखनेसे तो हिन्दू धर्मका लोप ही हो जायेगा। धीमाव्यसे हिन्दू धर्मकी स्थिति अच्छी है। मेरी अविच्छन्न चिन्ता है कि किस धर्मकी रक्षा हजाराँ वर्षसे होयी जा रही है उसका छेप हमारे धर्मदुश्मनोंके हाथों भी नहीं होगा। आपको क्या किन्तु? आपके ज्ञानके प्रति मेरा आदरभाव है लेकिन आपके व्यवहारसे मुझे कुछ हुआ है।

[पुनरावृत्ति]

प्राचीनीशास्त्र पत्र संख्या १४ सम्पादक बाइबलार्थ पेटेक प्रकाशक सेनक कार्यालय
अहमदाबाद और प्राचीनीशास्त्र साधना सेनक रावजीनाई पेटेक पृष्ठ १७६-७७।

२३७ पत्र मणिलाल गांधीको

[सन् १९०९
अक्टूबर १९]

श्री मणिलाल

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम्हारा मन बिलकुल घाला हो गया हो तुम अपने काममें बिलकुल छप गये हो और बिघाम्बाम निरिचल होकर करते हो तो मैं अपने-आपको भ्राम्यात्मी मानूंगा। तुम इस देनमें आनेकी उतावली करो इसकी जरूरत नहीं जान पड़ती। यहकि लोग बहुत अपम दिखाई देते हैं। मिलेंगे तब प्यारा बातें हूंगी।

तुम बालकोंको पढ़ानेका काम करते हो यह सराहनीय है।

मोहनदासके आशीर्वाद

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूल पुनर्पटी प्रति (सी० डब्ल्यू ८९) से।

श्रीमन् मणिलालसे गांधी।

२३८. पत्र लॉर्ड ऐंस्टहिलको

[सन् १९०९
सितम्बर १]

लॉर्ड महोदय

मैं आपके पत्र मागकी ३१ तारीखके पत्रके लिए आपका अत्यन्त आभारी हूँ।

यदि जनरल स्मट्गका निर्णय अन्तिम हो ता वह दुर्भाग्यपूर्ण है। सिद्धि मुझे भय है कि अफिहार"के प्रश्नके सम्बन्धमें मैंने जो राय ब्रह्म किया है उसमें पीछे हटना मेरे लिए सम्भव न होगा। मेरी सम्मतिमें यदि यह अफिहार" स्वीकार नहीं किया जाय तो एक गीमित संख्यामें निश्चित भारतीय प्रबन्धियोंका विनाश स्वामी बना देनेके बौर साम न होगा। यदि बेहतर सैद्धांतिक अफिहार" भी अनुष्ठान रहे तो किसी आग्नीषोको दाम्ब बानधमें प्रवेश करतकी आवश्यकता नहीं है। और छ की संख्याके निर्धारणा बान्ध भी पी बार्देगाटकी यह चिन्ता थी कि मैं भारतीय समाजकी इन पोषणाका बौर प्रत्यक्ष प्रमाण हूँ कि निश्चित भारतीयोंके हर्षके प्रश्नके पीछे दाम्बबान्धमें सिद्धि आग्नीषोको भर देना बौर इच्छा नहीं है। इतना बान्ध देखेंगे कि जनरल स्मट्गने प्रस्तावना भारतीयोंकी आब स्वरुता तद्विष भी पूरी नहीं होगी। इसके विरुद्ध उनसे भारतीयोंका बौर भी सम्भार

जातीय अपमान होता है। यदि हम उसे स्वीकार कर लेंगे तो उसका अर्थ केवल इतना ही होगा कि आसिर हम सिद्धान्तके लिए उतना नहीं सड़ रहे थे जितना अपने निजी स्वार्थके लिए कुछ शिक्षित भारतीयोंको ट्राम्पवाकमें जानेकी मांगकी पूर्तिके लिए।

आपने आजकी टारीखके टाइम्स में बम्बईकी सार्वजनिक समाजो रर करनेके सम्बन्धमें उार पढ़ा होगा। यह समा कुछ प्रभावशाली क्षेत्रोंकी माँपर डेरिफने बुलाई थी। मुझे बहुत अधिक भय है कि सरकारकी कार्रवाई 'ट्राम्पवाकमें जो स्थिति ग्रहण की है उसके समर्थनमें' ।

आपका आदि

[पुनरुच]

श्री हाजी हबीब और मैं बम्बीरतासे विचार कर रहे हैं कि क्या हमारे लिए वह ठीक न होगा कि हम यहाँ काम करनेके बाव भारत जायें और वहाँ जनताको और भी अधिक सहानुभूति प्रकट करनेके लिए प्रेरित करें। किन्तु, कौटं कू से बिच मेंटकी आशा है उसके हो जानेके बाद हम इस सम्बन्धमें आपसे सलाह करेंगे।

टाइप की हुई दफ्तरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-ककक (एच एन ५ ३७) से।

२३९ पत्र मखिलास गांधीको

अम्बल

सितम्बर १ १९ ९

श्री मखिलास

तुम्हारे पत्र निबन्धित रूपसे मिलते हैं। श्रीमती श्रीमती' मुझे इस सत्याह फिर अपने घर जानेके लिए बुलाया था। वहाँ उन्होंने तुम सबके बारेमें पूछा। उन्होंने तुम सबका और श्रीमन्सके बारे आदिका बिच भी माँषा है। इनमें से जो बिच हों उन्हें मेज बेना। मैंने वा को भी पत्र लिखा है। श्रीमती श्रीमती बड़ी मझी महिषा हैं। मुझपर बहुत भगतता रखती हैं।

समझौतेकी अब कम सम्भावना है। ऐसा हीमा तो मेरे लड़े बिना काम नहीं चलेगा। तुम सबकी सहायता मुझे चाहिए। और यह सहायता यह है कि तुम सब हिम्मत रखकर जो फर्न बसा करना है उसे करते आओ।

१ बम्बई सरकारके निम्नमें सार्व मखिलास बुम्बिय निच दल डीकेके वाय डेरिफने निच डेरिफनी डेरिफनेसे इस सत्याको पुनरुच न्यायनीय था।

२ कौटं कू का-का क्या है और कुछ कक कौटं है।

३ कौटं कक दूरी रमित कमी है।

४ मखीमिषा डके डेरिफन आम्बल डेरिफने वा वा डे डेरिफने कते डे। डेरिफन कक व एड १००।

५. कू पत्र ककक कौटं है।

तुम अपने बीमार साफ रखते होये। पाखानेमें हमेशा बूब मिट्टी डाली जाती होगी। बास-पासकी सब जगह साफ-सुथरी रखनेकी बात बालना जरूरी है। श्री कैम्बेनईकने सिखा है कि वे इस बार हमारे यहाँ रहे थे। उनकी बूब सेवा की गई होगी। उनके लिए गहाने और पाखानेकी क्या व्यवस्था की थी सिखाना। यह तो तुम भी महसूस करते होगे कि श्री किचिनके पाखानेको हमेशा तैयार रखना चाहिए। तुम जरूरी सफाईके निरीक्षक (सेनिटरी इन्स्पेक्टर) हो इसलिये यह सब तुमको सिखा रहा हूँ।

तुम क्या-क्या पढ़ लूके हो यह तुमने मुझे नहीं सिखा है।

मोहनदासके माधीवर्षि

[पुनश्च]

यह पत्र वा को पढ़ाना।

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें क्लिप्त मूक पुस्तकी प्रति (सी डब्ल्यू ८७)से।
सीकम्प्य सुशीलारत्न गांधी।

२४० तार ए० ए० ए० ए० पोलकाको^१

कम्पन

सितम्बर २, १९१९

ऐसा कमरा है, स्मट्स सीमित संख्यामें स्थायी अनुमतिपत्र दे दिये किन्तु अधिकार स्वयं नहीं। बातचीत जारी। सार्वजनिक सभा टेरिफको उद्यममें बसीटे बिना की जानी चाहिए। मेरे तार प्रकाशगार्य नहीं।

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूक अंग्रेजी मसबिरेकी फोटो-नकल (एस एन ५ १९) से।

१ क्लिप्त मूक पुस्तक नाम नहीं दिया गया है लेकिन तारकी शरतोंसे ताक है कि यह कम्पनी केक
गया था।

२४१ पत्र सॉर्डे कू के निजी सचिवको

[सन्धन]

सितम्बर २, १९९

महोदय

मैं अर्से सॉर्डे कू का ध्यान भीगी सभ (बाइनीय असोसिएशन) से प्राप्त निम्न टारकी और आकर्षित करता हूँ

रायटरकी स्मदससे बेंडकी रिपोर्टमें एशियाई प्रश्नके तय होनेका संकेत। ऐसा है तो चीनियोंकी विरक्तारिप्या क्यों जारी? तत्प्राहमें तत्ताईस।

ऊपरके टारमें बताई हुई रायटरकी खबरकी तफ़्त मुझे नहीं मिली है और मैं नहीं जानता कि ट्रान्सवालके कठिन एशियाई प्रश्नपर समझौता होनेका जो संकेत दिया गया है उसमें सबाई क्या है। भी हाजी हबीय और मैं इस मामलेमें सॉर्डे महोदयके पत्रकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मैं यह भी कहूँ कि भारतीयोंकी भी विरक्तारिप्या जारी है।

आपका आदि

मो० क० गांधी

कलोनियल ऑफिस रेकर्ड्स २९१/१४२ से टाइप की हुई बफररी बंनेजी प्रविची फोटो-नकल (एच एन ५ ४१) से भी।

२४२ पत्र सॉर्डे ऐन्टहिलको

[सन्धन]

सितम्बर २, १९९

सॉर्डे महोदय

भीगी संघसे नीचे दिया गया टार प्राप्त हुआ है

रायटरकी स्मदससे बेंडकी रिपोर्टमें एशियाई प्रश्नके तय होनेका संकेत। ऐसा है तो चीनियोंकी विरक्तारिप्या क्यों जारी? तत्प्राहमें तत्ताईस।

मैं इतना और कहना चाहता हूँ कि इसी तरह बहुत-से भारतीय भी विरक्तारिप्ये बने हैं। ट्रान्सवालमें भारतीयों और चीनियोंके बिच्छे किये गये इस जिहादका प्पक्षितवत् रूपसे मैं स्वागत करता हूँ। इससे उनके साहसकी कमीगी होती है और सरकार तथा अनाक्रमक प्रविरोधी शोनोंको अनाक्रमक प्रविरोधी शक्तिको मापनेका अवसर मिलता है। मैंने ओहानिसबर्गके ब्रिटिश भारतीय संघको अनीतक यह खबर नहीं दी है कि रायटरका विवरण भ्रामक हो सकता है और सम्भव है अन्तमें कोई समझौता ही न हो।

धीमातृका जयास था कि घायल कॉर्बे नू कुछ झिंसे परन्तु उन्होंने अभीतक कुछ नहीं लिखा। म उनका ध्यान भीनियोफे टारकी मोर बाइष्ट कर रहा हूँ।^१

घायल मुझे इस बातका भी चस्केच कर देना चाहिए कि मैंने कम वापको बन्दई सरकारकी जिस कार्रवाईके बारेमें लिखा था उसपर संशय-संशयोंकी कुछ प्रश्न पूछनेका सुझाव दिया गया है। मासा है आपको भी यह बात पसन्द आवेगी।^१

आपका कारि

टाइप की हुई दस्तवी बरेली प्रतिका फोगे-मइस (एस एन ५ ४४) से।

२४३ पत्र एच० एस० एस० पोलकको

[अन्वय]

सितम्बर २, १९१९

मिम हेनरी

मैं आपको इस सप्ताह सम्भवतः दो पत्र लिखूंगा। ये पत्र फीनिक्सके सम्बन्धमें ह। आपको पहले ही बता चुका हूँ कि डॉक्टर मेहतासे मेरी काफ़ी बातें हुई थीं और उन्होंने स्क्रिबले लिए १५ पीड रिचे हैं। मैंने इन १५ पीडमें से पुस्तकालयके लिए कुछ पुस्तकें खरीदी हैं मुझे आपके पास है ही। कुछ अन्य पुस्तकें भी खरीदी गई हैं। लगभग १२ पीड फिर भी बचे हैं। कुछ कामकी किताबें वहाँ भी हो सकती हैं जो बाकी रूपमें खरीदी या सखी हैं। आप जयनलाक और हुसरोंसे सहाह कर सकते हैं।

परन्तु डॉक्टर मेहताने और भी अधिक बनेका बचन दिया है। उनका विचार एक कावचुति बनेका है जिससे एक भारतीय सङ्केका फीनिक्समें शिक्षा और भोजनका व्यय पूरा हो जाये। मैंने उनको बताया है कि व्यय प्रतिमास २ विस्व और २५ सिस्विगके बीच कुछ भी हो सकता है। उन्होंने एक फीनिक्सवासीको इन्स्टीट्यूट पढ़नेका व्यय भी मुझे दिया है। यह बात उनके मनमें उनकी इस इच्छासे पैदा हुई है कि वे मेरे एक पुत्रकी पढ़ाईका जिम्मा ले लें। मैंने उनको बताया कि मैं ऐसी कोई बात स्वीकार नहीं कर सकता

१ रेडिकर सिन्हा बीनैड ।

२. लट अन्वयने यह सब केस जो 'मि'मि ० सितम्बरकी कोष्ठामामे रूच ना । लट रेकरमि स्वी विन्मि ९ सितम्बरकी कोष्ठामामे रूचत सब रूच । दोनों लक्स्टोकर विरेक-अन्वयने लट रिवा कि टाउन्स-अन्वयकी लट मामामे कोई वचिष्ट रूचत नहीं मिथी है ।

१ हुबरे रिम ली लकी लुप छे हुप लीडे रोरविक्के लिखा था । थाके रथेंक नालेक मि ली विरर लरर मिना था । वातक विरर लरर येक लरर हुवा है । मि लरर था कि लुन्गलामे प्रतिरोध और बमबके चारी लरररे हुबरी लररबीलमे लरर लिच्छी है । मेरा लरर है कि यदि मिस्वि मरटील एकको लर लुपि लर रं टी लररर हो कि लनी लररकी किरी लररके लररररिरे लररने लुल लररी मररर और लर लरर लुसे लर हुली लर लेवेक लररर लर ररे है । मि लर ररर लररकी एक लरने लिखा है कि लर लररक लररकी लरर लु से लरर लररी लिख ली टी लरर देना ली लरर । लरर लुसे लररने कि लोष्ठामामे लर विरर-लर लुसे लने लरररि लर लरर रिरे लने है । लरर लररकी ली है कि लररर लरर लररी लररने ।"

किन्तु मुझे इस श्रमशैली फीनिक्सके सर्वोत्तम व्यक्तिके लिए काममें जानेंके उद्देशसे स्वीकार करनेमें प्रसन्नता होती और यदि मैंने समझा कि मजिस्ट्रेट इसके लिए सबसे अधिक उपयुक्त है तो मैं उसको भी मेजनेमें हिचकिचाऊँगा नहीं। अब इस सबसे मैं यह सोचता हूँ कि आप भी वहाँ कोई ऐसा काम कर सकते हैं। श्री पेटिट पेशवाके आरमी है। यदि आप यह विश्वास रिक्रा सकें कि हमारा सर्वोत्तम फीनिक्सकी एक ऐसी जगह बना देगा है जितने ठीक किस्मके आरमी और ठीक किस्मके भारतीय ठेकार क्रिये जा सकें तो दूसरे लोग भी मिल जायेंगे। इनमें से कुछ लोगोंको आप ऐसी छात्रवृत्तियाँ देनेके लिए रज्जी कर सकते हैं, जो या तो सामान्यतः उपयोगमें आई जायें या केवल भारतीयोंके लिए सीमित कर दी जायें। हमें उनकी दोनोंमें से किसी भी रूपमें स्वीकार कर लेना चाहिए। वे हमें इस निर्देशके साथ कि अमुक रकम पुस्तकें और शिक्षा-सम्बन्धी अन्य सामान खरीवनेके लिए है, बाब भी दे सकते हैं। आपको मुख्यतः उन्हें यह विश्वास रिक्राना है कि फीनिक्समें जो भी व्यक्ति कमाई खाती है उसका अर्ध भारतसे उतना से केना नहीं बल्कि भारतको उतना देना होता है। और, कुछ बातोंमें फीनिक्स प्रयोग करने और समुचित प्रशिक्षण प्राप्त करनेके लिए अधिक उपयुक्त स्थान है। भारतमें अबांछनीय प्रतिबन्ध हो सकते हैं परन्तु फीनिक्समें ऐसे कोई अबांछनीय प्रतिबन्ध नहीं हैं। उदाहरणके लिए, भारतीय महिलाएँ इतने साहसके साथ कदापि बाहर नहीं जा सकती थीं जितने साहससे वे फीनिक्समें बाहर जा रही हैं। अन्य सामाजिक प्रथाएँ उन्हें सिर ही न उठाने देतीं।

मैंने आपको इतनी पर्याप्त सामग्री दे दी है कि आप इस विचारके आधारपर जाये सोच सकते हैं और जो आवश्यक समझें वह कर सकते हैं। आप आरमनी पीरमाई या उनके पुत्रसे सामान्य भारतीय कड़केंकि या मुसलमान कड़केंकि प्रशिक्षणके लिए छात्रवृत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आप जगसे पुरस्कार भी रिक्रा सकते हैं। भारतकी विभिन्न शिक्षण-संस्थाओंके विवरण पत्र (प्रॉस्पेक्टस) भी देखनेके लिए के केना अच्छा होता। श्री उमरके पास सेंच्युरी डिक्शनरी और अन्यत्र महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं जिनका उनके लिए तनिक भी उपयोग नहीं है। मैंने अपने पत्रमें^१ लिखे मैं इसके साथ भेज रहा हूँ उनसे वह डिक्शनरी और जो अन्य पुस्तकें वे दे सकें देनेको कहा जा। इस सम्बन्धमें आप उनसे बात कर लें।

इससे आपका

टाइप की हुई दफ्तरी संज्ञेनी प्रतिका फोटो-कॉपी (एच एन ५ ४२) से।

प्रिय हेनरी

आपकी बिट्टी और कठरमें मिलीं। आप जो कार्य कर रहे हैं वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। मुझे हर्ष है कि आपको सब ओरसे बहुत अच्छा सहयोग प्राप्त हो रहा है और भी बहुरीतिर पेटिट आपके साथ इतना अच्छा व्यवहार कर रहे हैं।^१

समाचारपत्रसि माकूम हुआ कि आपने उस तारको प्रकाशित कर दिया है जो मीने अभिनियमको रद्द कर देनेके प्रस्तावके सम्बन्धमें आपको भेजा था।^२ मुझे आश्चर्य हुआ। मेरा विषय बा आप यह समझ बायेंगे कि यह बातचीत बिल्कुल खानपी है और इस खानकापीको प्रकाशित नहीं की जा सकती। कोई ऐन्टिहिक इस मामलेमें बहुत सख्त रहे है। सीमायसे इसका कोई इन्फिरिबाम नहीं हुआ। फिर भी सावधानीके लिए मीने अपने विच्छले तारमें आपसे कहा है कि आप बहुरि घेजे जानेवाले किसी भी तारको प्रकाशित न करें।

शेरिफकी समाका स्वर्गित किना जाना एक अस्वाभाविक बात है। इसके सम्बन्धमें टाइम्स में एक तार छपा था। मेरा खयाल है आप इन्धिया पढ़ते ही रहते हैं। आप देखेंगे कि यह तार उसमें उद्धृत किना गया है। सर हेनरी फॉटन और श्री बोप्रीडी इस सम्बन्धमें प्रसन्न पुछनेवाले हैं। प्रेसिडेंसी एसोसिएशन कांग्रेसकी ब्रिटिश समितिको इस बारेमें एक निजी तार भेज देता तो अच्छा होता। हमारे लिए कोई कारण कदम उठाना बरा मुश्किल है। बम्बई सरकारके कार्यका विरोध पहले बम्बईको करना चाहिए, हमें नहीं। फिर भी थो-कुछ सम्भव बा वह किया गया है। अब मैं किसी भी समय इस सम्बन्धमें आपका तार पानेकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि शेरिफके सहयोगके बिना सार्वजनिक धना किस तारीखको की जा रही है।

श्री ह्याबी हबीब चाहते हैं कि आप उनके भाई श्री ह्याबी मुहम्मदसे जो इस समय पोरबन्दरमें हैं अपने काममें सहयोग मंगें। उनका कहना है कि यदि आप उनसे आप्रह करने तो वे सहर्ष आपका हाथ बँटावेंगे। कृपया उनसे पत्र-व्यवहार करें। श्री जमर उन्हें अच्छी तरह जानते हैं। मैं इस मामलेमें सायब तार भी दूँ।

लॉर्ड ऐन्टिहिकके साथ जो पत्र-व्यवहार हुआ है, उसकी प्रतिक्रियासे आप देखेंगे कि अब किसी स्वीकार करने योग्य समझौतेकी सम्भावना नहीं है। साउथैम्पटनसे पहाजमें रवाना होनेसे पहले जनरल स्मट्घने रायटरके संवादवाताको जो बकलम्ब दिया था उसकी कठरल

१ अपने मूल १४ के पत्रमें दोहरेके उन एक मुकदमोंका उल्लेखवार मीना दिया था जो बम्बई मजिस्ट्रेटसि कमेन्सि की भी तथा कम्पनी खालुमूति मजिस्ट्रेट की भी।

२. डेक्लर "तार १९९ पत्र २४०-२४१" पृष्ठ १९।

३. डेक्लर "तार १९९ पत्र २४०-२४१" पृष्ठ १९।

मैं आपको भेज रहा हूँ। लेकिन अब ऐसा जान पड़ता है कि वे इतना ही करना चाहते हैं कि अधिनियमको वापस ले लें और विशिष्ट भारतीयोंको एक सीमित संख्यामें विचारके स्थायी प्रमाणपत्र दे दें। इस तरह वे प्रवेशके "अधिकार"को स्वीकार करना नहीं चाहते। यदि वे ऐसा करे और इसकी सार्वजनिक रूपसे घोषणा कर दें तो मुझे हर्ष ही होगा। विचारका भेज फिर संकुचित हो जायेगा और एकमात्र प्रश्न विशिष्ट भारतीयोंके हर्ष और भारतके मानसम्मानका रहे जायेगा। तब हम इन्हीं और भारतके सामने एक स्पष्ट प्रस्ताव रखेंगे और ट्रान्सवाल्डके भारतीयोंसे भी कहेंगे कि जबतक यह मुद्दा तय न हो जाये तबतक वे संघर्ष जारी रखें। आप कोई ऐंस्ट्रिहलको लिखें मेरे पत्रसे देखेंगे कि इस सम्बन्धमें मेरा दृष्टिकोण क्या है। मुझे तो ऐसा लपटा है कि बहिष्कार आन्दोलनसे पहले हम भारत या यार्प और फिर दुबारा संघन होकर लौटें। मैं जानता हूँ कि यदि जनरल स्मट्स कोई ऐंस्ट्रिहलके पत्रके अनुसार सार्वजनिक घोषणा करेये तो यहाँका संघर्ष अत्यन्त कठिन हो जायेगा। परन्तु इससे मैं निराश नहीं होता यद्यपि मुझे इसमें बड़ा सन्देह है कि जबतक और अधिक कष्ट न उठाया जाये तबतक सार्वजनिक समारोह हो सकें तो उनसे और संघर्ष-सदस्योंका समर्थन माँगनेसे कोई लाभ होना। किसी ऐसे आन्दोलनको बचानेकी अपेक्षा जो व्यर्थ-ता सिद्ध हो मैं बेकर्म रहना अधिक पसन्द करता हूँ। इससे बचनेकी इच्छाके पीछे बड़ा आत्मस्य भी हो सकता है परन्तु मुझे लगता है कि ऐसा है नहीं। वहाँ आवश्यक हो वहाँ मुझे योग्यता विजना पड़े और समाजोंमें भाषण देने पड़ें तो मैं इससे बचना नहीं चाहता। किन्तु अब-कभी मुझे धार्मिकता एक सब विजता है, मैं लगातार अपने मनमें सोचता रहता हूँ कि क्या ओमोंको समझाने-बुझानेके लिए मेरा यहीं बना रहना ठीक होगा।

वहाँ-कहीं आपकी धमा हो मुझे माया है कि आप उसमें भी आम्बेड्गाय और अन्य आत्म-भारतीयोंको बुझानेमें सफल होंगे। मुझे आशा है आप बुजुर्गों और अंग्रेजीकी कठोरने ओम्बेड्गायके भी भेज रहे होंगे। वहाँके लोगोंको निराशासे बचानेके उद्देश्यसे दुर्गरी शासनाधीनके रूपमें मैं आपसे प्राप्त कठोरने उम्हें भेजता जाता हूँ।

मैं आपका उत्तरका उत्तर तुरन्त न हूँ तो आप इसका कोई जवाब न करें। आप मुझसे जितनी जल्दी उत्तरकी आशा करते हैं उतनी जल्दी उत्तर न मिले तो कृपया समझ लें कि मेरे उत्तर न देनेका पर्याप्त कारण है। उदाहरणके लिए, आपने मुझसे पूछा है कि क्या कोई आशा है। मैं इसका उत्तर देनेमें विवश्व कर रहा हूँ क्योंकि मैं कोई कू के बुझानेकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। तब मैं आपको कुछ निश्चित रूपसे बता सकूँगा कि कोई आशा है या नहीं। इस समय तो मुझे कहना चाहिए कि कोई आशा नहीं है।

हृदयसे आपका

टाइप की हुई अंग्रेजी बल्दरी प्रथिमी फोटो-नकल (एस एन ५ ४९) से।

[सितम्बर ३ १९९ के बाद]

सभी समझौतेकी खबर नहीं है सकता यह लिखते-लिखते मैं चक गया हूँ। लेकिन फिर भी यही लिखना पड़ता है। मैं यह भी जानता हूँ कि जो पूरे सत्याग्रही हैं वे तो एसी खबर पढ़कर उकठायेंगे नहीं क्योंकि समझौतेके होने-न-होनेसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं रहा है। वे तो बिजली हैं ही।

फिर भी इस बार तो कुछ ज्यादा खबरें दे सकता हूँ। एसी खबर मिली है कि जनरल स्मट्स कानूनको रद्द कर देंगे। किन्तु जहाँतक निश्चित लोगोंका सवाल है स्मट्स उन्हें रियायतके ठौरपर एक निश्चित सन्धामें स्वामी निबामके परवाने होंगे। उनको बड़ी अधिकार मिलेंगे जो पंजीयन कर देनेवाले (रजिस्टर्ड) भारतीयोंको। लेकिन मुझे इसमें कोई काम दिखाई नहीं देता। "मर गया" के बजाय "परलोक गया" कहा जायेगा किन्तु मरा तो सही। हमें जिनसे टक्कर लेनी है। इसका बर्ष यह है कि हमें सभी करना ही होगा। फिर भी यह खबर निश्चित नहीं है। ठीक क्या है यह बोड़े दिनोंमें पता चल जायेगा। मुझे ऐसा नहीं लगना कि इस बारके समझौतेमें कोई बाकायदा आठपीठ होनी। जो-कुछ हमने माँगा है वह समय पूरा होनेपर मिलकर रहेगा और तभी हम अपने हजियार बीवारपर टाँग सकेंगे।

अब यदि ऊपर लिखे अनुसार कानून रद्द हो जाये और छ भारतीयोंको स्वामी निबामके परवाने मिल जायें तो लड़ाई ज्यादा जमेगी। उसका सच्चा स्वल्प ज्यादा समझमें जायेगा। तब तो सभी समझ जायेंगे कि हमारी लड़ाई [सिद्धि भारतीयोंकी] किसी जास संघर्षके लिए नहीं है बल्कि भारतकी प्रतिष्ठाके लिए है। कानूनके अनुसार हमें यूरोपीयकि बराबर अधिकार हो फिर मले ही व्यवहारमें यही एक ही सिद्धि भारतीय न जाये। हम यह सहन कर सकते हैं। किन्तु यदि कानूनमें [हमारी जातिपर] कानिष्ठ लगा दी जाये और बादमें मले ही पचास भारतीयोंको अनुमतिपत्र (परमिट) दे दिये जायें तो वे हमारे कामके नहीं हैं। लड़ाई सितियोंकी या बहुसिद्धियोंकी नहीं बल्कि भारतकी प्रतिष्ठाकी हमारे सम्मानकी और हमारे प्रतिष्ठा-नाशककी है। उनके लिए जितना दुःख उठायें उतना मुन है। हम लड़ाईमें भाग लेनेवाला सच्चा सत्याग्रही — ध्यात्मधमी — है। मैं एसी मुन्दर और मध्य लड़ाईमें प्रत्येक भारतीयको भाग लेने देजना चाहता हूँ।

पाठक देखते हूँ कि इन शिष्टमण्डलका साध काम परोंके पीछे हुआ है। फिर भी उनको यह समझ लेना चाहिए कि जो-कुछ करना उचित है उसमें कोई कमी नहीं रखनी। ब्रिटिश सरकारके काम करना हमारा लक्ष्य है। अबतक यह काम हो रहा है तबतक यहाँ (इंग्लैंडमें) कामके लिए दूसरा काम नहीं है। इसका कोई काम करना लक्ष्य तो समूची लड़ाईको बरहा पहुँचना।

अब ब्रिटिश सरकार इनकार कर देनी तब हमें सार्वजनिक कार्रवाई करनी पड़नी। आठपीठमें आठ हस्त निकल पये हैं। अब भी कुछ बकत लगना। उनके बाद अस्तरत पढ़नेपर

सार्वजनिक कार्रवाई की जायेगी। इसमें बल कल्पना है। जितना श्याम या उसके प्यारा बल कम जायेगा लेकिन इससे छूटकारा भी दिखाई नहीं देता। इसके अन्धाया जब ब्रिटिश सरकार हमको सहायता देनेका प्रयत्न करनेके बाद अपने हाथ समेट सेबी तब यहाँका काम बहुत मुश्किल हो जायेगा। झड़ाई उग्र ठेक और कठिन हो जायेगी। उसे सहन कर लेनेपर ही हम उसे जिसे भी राज्य मुहम्मदने हाथीका नाम दिया है, मार सकेंगे।

मैं ज्यों-ज्यों देखता हूँ त्यों-त्यों मुझे लगता है कि यदि सिष्टमण्डल या प्रार्थनापत्र बाबिके पीछे सच्चा बल न हो तो वे सब निरर्थक हैं। कोमंसे मेंट करनेकी अपेक्षा बेल्में रूना प्यारा अच्छा है यह अनुभव हो रहा है। भीरुवाही नामा है

मिथी और गन्नेका स्वाद छोड़कर तू कड़वा नीम मत चोक
मूरख और चन्द्रमाका प्रकाश छोड़कर तू जुमनूसे प्रीति मत चोक।^१

यह बहुत गारी कह गई है कि प्रभु-जनितमें — बुवाकी बन्धीमें — जिसका मत लीन हो गया है उसको डूबती नीलें नीमके रसकी तरह कड़वी और जुमनूके प्रकाशकी तरह निस्तेज लगती है। उसी प्रकार जिसने सत्याग्रह — आत्मबल — का प्रयोग किया है और जिसपर उसका पक्का रंग चढ़ा है, उसको सिष्टमण्डल और प्रार्थनापत्र नीरस लगते हैं। इस स्थितिमें पाठकोंको सूचना ही चाहिए कि एक जाप बेधका कुछ छोड़कर सिष्टमण्डलमें क्यों गये? मैं पहले ही अपने पक्षमें कह चुका हूँ कि सिष्टमण्डल भारतीय समाजकी कमजोरीका सूचक है। कमजोर लोगोंकी खातिर कुछ इस तरह इसका जाना कर्तव्य हो गया था। किन्तु मैं जुमनूके आचारपर कहता हूँ कि भारतीय समाज मेरा और बूढ़े बहुतसे भारतीयोंका अनुभव हमको जेबमें रखकर कर सकता है। सत्याग्रही जो बेधकनी आदेशनपत्र देते हैं उससे प्यारा कुरासि सिद्धा आदेशनपत्र सोच नहीं दे सकते जो सिष्टमण्डल के जाते हैं। उस प्रकारके कार्योंपर अब जोरोंका विश्वास उठ गया है। मैं तो निर्भय होकर कह सकता हूँ कि यदि वहाँ हमारी कोई सुनवाई होती है तो इसी कारण कि हम सत्याग्रही हैं और हमने कष्ट सहनको अपना जसकी आचार माना है।

मेरे विचार ता ऐसे हैं फिर भी मेरे मनमें यह श्याम जाता है कि यदि समझौता न हो तो हम भारत जायें और वहाँ जो-कुछ करना उचित है वह करें फिर इन्डिड लीन जायें और वहाँ जो-कुछ विशेष करने योग्य हो उसको निरन्तर दृष्टिकान्त लीन जायें। इस बल तो ये केवल बेधकिल्लीके-से मन्सूबे हैं। अभी तो यही नहीं कहा जा सकता कि समझौता होमा या नहीं। फिर भी ये विचार समाजको आज्ञा हो जायें तो अच्छा है ऐसा आवास करके इनको यहाँ से रखा हूँ।

ऐसा दिखाई देता है कि बी पीके बम्बईमें बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। वे बहुतसे कोमंसे मित्र हैं और सभीने उनको सहायताका वचन दिया है। वे बम्बईके प्रेसीडेन्सी अधी-धिपसन और अनुभव इस्लामकी बैठकोंमें हो जाये हैं। बम्बईके कक्षपति भी जहाँगीर पेटिटने

१ मूक धीमती का अन्तर है

श्याम लेखनीयों का उन्नीसे कड़वी जीमनो नीम का है।

एक अनुभव ठेक तबने का निरन्तर लगेले नीम कोष का है।

२. देखिए "सिष्टमण्डली नामा [१]" पृष्ठ २००।

उनको अपने यहाँ ठहराया है। वे उनकी खूब जातिर कर रहे हैं। और उन्होंने अपने सबसे पुस्तिका छपानेका बचन दिया है। इसी प्रकार बंजुमन इस्लामने भी पोल्डका भाषण अंग्रेजी और अरबमें छपाकर प्रचारित करनेका बचन दिया है।

एक तारसे मालूम हुआ है कि बम्बईके सेरिफने पहली तारीखको एक बड़ी सभा बुलाई थी किन्तु बम्बई सरकारने सेरिफको यह सभा न करनेकी सम्बन्धपूर्ण आज्ञा दी। अब फिर तार आया है कि बम्बई सरकारने अपनी भूमपर सेब प्रकट करके सभा करनेकी स्वीकृति दे दी है। यह सभा ११ सितम्बरको होगी।^१ इस पत्रके छपने तक तो सभाकी खबर मिला भी जायेगी। इसलिए मुझे सूझता नहीं कि क्या किन्तु। सभा न करनेका कारण सरकारने यह बताया था कि चूँकि बक्षिब आधिकारी संघ (यूनियन) तो बन चुका है इसलिए सेरिफ जैसे सरकारी अधिकारीको [विरोध व्यक्त करनेके लिए] सभा न बुलानी चाहिए। इसमें तो बुराई भूख है। एक तो यह है कि संघके साथ ट्रान्सवाल्सकी सड़ाईका कोई सम्बन्ध नहीं है। दूसरा यह है कि यदि सेरिफ सभा करे तो उसके समामें सरकारका भाग केना नहीं माना जायेगा। सेरिफ सभा बुलाता है तो केवल खोर्षोकी मजसि। यह उसमें भाग भी नहीं लेता।

स्मट्स साइब रवाना होनेसे पहले टयटरसे यह कहते मने कि भारतीयोंके लिए सन्तोषप्रद समझौता हो जायेगा। इसके साथ उन्होंने यह भी कहा कि बहुत-से भारतीय झड़ते-झड़ते पस्तहिम्मत हो चुके हैं और संघर्षमें चिर्क कुछ ही समयका लोप रहे मने हैं। इस खबरसे मालूम होता है कि भारतीयोंके प्रश्नपर लॉर्ड क्रू से उनकी खूब जातनीत हुई है। किन्तु उन महानुभावका इतरा बीसा मैं ऊपर बता चुका हूँ हमारे साथ अनुरूप समझौता करनेका है।

मैं तो भारतीय समानका ध्यान उनके एक ही वाक्यकी ओर आकर्षित करता हूँ। वे कहते हैं कि 'बहुत-से भारतीय तो [संघर्षसे] बच गये हैं।' इसमें सब आ जाता है। इससे जाना जा सकता है कि इतनी देर क्यों क्नी और क्यों मना रही है। समझौता होना या न होना हमारी शक्तिपर निर्भर है।

[बुधरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २-१-१९१९

मिटासका डिप्टमण्डल

डिप्टमण्डलने कर्नल सीसी और लॉर्ड मॉरिस मेट की है। दोनों अधिकारियोंने बहुत सहानुभूति प्रकट की है। किन्तु कर्नल सीसीने कहा कि कुछ होना सम्भव नहीं है। लॉर्ड मॉरिसने कहा कि यह उपनिवेश कार्यालयके हाथमें है उनके अधिकारकी बात नहीं है। फिर भी वे विवनी हो सकती है उसनी सहायता करते रहे हैं और करते रहेंगे। उन्होंने डिप्टमण्डलको याद दिलाया कि वे स्वशासित उपनिवेशके शासन-कार्यमें हस्तक्षेप नहीं कर सकते। डिप्टमण्डलके अनुरोधपर कर्नल सीसीने लिखित उत्तर देना स्वीकार किया है। डिप्टमण्डलके आनेरत-पत्रकी गफ्तें अभी भेजी जा रही हैं। सर मंचरजी बाबनगरीसे मेट होती रहती है और उनकी सलाह भी मिलती रहती है।

मन्त्री रवाना

श्री मेरीमन जनरल स्मट्स श्री भूबर आदि बलिब आधिकारी मन्त्री बत सप्ताह यहिसि रवाना हो चुके हैं।

डॉक्टर अशुर्हमान

डॉक्टर अशुर्हमान और उनके साथी उठी डाक-जहाजसे रवाना होने प्रियसे यह पत्र जायेगा। वे लोम अभी छड़ाई जाती ही रहने। उन्होंने अभी यह नहीं बताया है कि उनकी छड़ाईका स्वल्प सत्याग्रह हागा वा कोई दूसरा।

श्री मॉरिस

श्री मॉरिस जो केपटाउनके उपनिवेश कार्यालयमें लौकर वे कुछ काके लोगों द्वारा भेज गये हैं यही भावे हैं।

सम्प्रदाय उन्माद

बाबुमें विमान चलानेवाले श्री ब्लेरिडट और उत्तरी प्रुवतक पहुँचनेका दावा करने वाले डॉ. ब्रुककी बर्चमें कल्प पायाक हो उठा है। मन्चरजीमें उनके कार्मिका ब्लोट बूब छप रहा है। देखते हैं जोग इसमें हजारों पीठ फेंक देते हैं। इसमें उन्होंने कौन-सा बमलकारी काम कर लिया यह मैं तो समझ नहीं सकता। बाबुमें विमान चलनेसे मानव जातिको क्या लाभ होना है यह तो कोई नहीं बताता। कोई मया बोंग करता दिखाई देता है तो लोग उसके पीछे पागलकी तरह भागते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि यदि बहुत-से विमान बाबुमें फिरसे तो हमार उषित बसहा हो जायेगा। नीचे देखें तो रेखाद्विती

१ डॉ. ब्लेरिडट (१८०२-१९३९) प्रसिद्धी बराम्ब) इन्डियन नेशनल कालेजियल एर कलेजियल कालेज में।

बीड़ रही हैं अगर टेम्पिशाफके तार लटक रहे हैं, और रास्तोंमें माड़ियोंकी आबाद कानोंकी बहुर किये दे-रही है। अब काममें विमान बचने लगेमे सब तो कोर्पोको मरा ही समझिए। मैं स्वयं इस देशको देखकर पादशास्य सम्मतासे ऊब गया हूँ। सड़कोंपर जो लोग मिछते हैं वे जात्रे पागल जैसे दिखाई देते हैं। वे अपना दिन राग-रंगोंमें या रोपी कमानेमें बिताते हैं और उसने बाद रातको बकाबटसे चूर होकर सो जाते हैं। मैं नहीं समझ सकता कि ऐसी हास्यमें वे ईश्वरका भजन कब कर सकते हैं। डॉक्टर कुछ उतरी धूमपर हो भी जाये हों तो इससे लाभ क्या हुआ? इससे कोषके कर्णोंमें रत्नी-भरकी कमी नहीं होगी। पादशास्य सम्मता अभी पुणनी नहीं हुई है। इतने दिनोंमें ही उसकी हास्य ऐसी दिखाई देने लगी है कि या तो सम्मताके इन साबनोंको दूर कर देना चाहिए या साग पतंगोंकी भाँति मर मिटेंगे। इस समय भी यह देखा जा सकता है कि भारतमहत्याओंकी संख्या दिन प्रति-दिन बढ़ती जा रही है। कोर्पोका किसी सास कामसे या पढ़नेके लिए इम्मीड भागा कुछ कारपोसि उचित है। किन्तु सामान्यत मेरा निश्चित विचार है कि इस देशमें भागा और उल्टा विमश्रुत ठीक नहीं है। इस सम्बन्धमें अधिक विचार फिर करें।

जीनीफ रायपत्र

मैं यह खबर से खुश हूँ कि श्री बोरोफ रायपत्र यहसि सनिवारको रवाना हो गये हैं।^१ मुझे ऐसे क्लेश दिखाई देते हैं कि उनके सामने जेठ बानेके सिवा कोई रास्ता नहीं है। मुझे आशा है कि वे जायेंगे।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २-१०-१९ ९

२४७ पत्र लॉर्ड भू के निजी सचिवकी

[कम्बन]

सितम्बर ९ १९ ९

महोदय

लॉर्ड ऐंस्ट्रिङ्कने श्री हानी हबीबकी और मुझे सूचित किया है कि लॉर्ड भू सीध ही हमें या तो खुद मँटके लिए बुलायेंगे या किसी व्यक्तिको नियुक्त करेंगे जिसने हम मिळ सके और ट्रान्सवालके भारतीयोंके प्रश्नपर बातचीत कर सकें।^१

मैं जानता हूँ कि लॉर्ड महोदय बनेक राजकीय कार्योंमें बहुत व्यस्त हैं। तथापि मैं आपको स्मरण दिलाता चाहूँगा कि श्री हानी हबीब और मैं राजधानीमें आठ सप्ताहसे अधिक समयसे हैं और दिन कोर्पोने हमें यहाँ भेजा है वे हमारे कार्यका परिणाम जाननेके लिए हमपर आरी रबाब जाऊ रहे हैं। मुझे यह उल्केल करनेकी आवश्यकता नहीं है कि हम जानबूझकर समस्त चार्बत्रनिक कार्रवाइयाँ करनेमे बचते रहे हैं ताकि उस बातचीतको हानि न पहुँचे जो लॉर्ड महोदय संघर्षको समाप्त करनेकी दृष्टिसे ट्रान्सवालके मन्त्रियोंके साथ हवापूर्वक बका रहे हैं।

१ रेडिर "कम्बन" पृष्ठ ३०२।

२. गंधीजीकी लिट को लॉर्ड ऐंस्ट्रिङ्कने ५ सितम्बरके पत्रने पर उत्तर दी थी।

बदि आप इस पत्रको सर्वो महोदयके सामने उपस्थित करेंगे और हमें सूचित करेंगे कि हमारी उपस्थितिकी आवश्यकता कम पड़ेगी तो मैं और मेरे साथी कुतूहल हूँ।

आपका आदि,
मो० क० गांधी

कम्युनिस्ट ऑफिस रेकर्ड २९१/१४२ तथा टाइपकी हुई बरतटी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एच एन ५ ५१) से भी।

२४८ पत्र अमीर अलीको

[कम्युनिस्ट]

सितम्बर ९, १९९

आपने मेरे पत्रका उत्तर तत्काल दिया इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। मुझे हर्ष है कि महाविमल (हिब हार्नेस) आपाजाने भी आंध्रप्रदेशका पत्र आपको भेज दिया है।

हम सब आपके मार्गदर्शन और परामर्शका काम प्राप्त करनेके लिए आपके सौतेली प्रतीक्षा करते रहेंगे। मैं आपसे पूर्वतया सहमत हूँ कि भारतमें मुसलमानों और हिन्दुओंमें बाह्य भी मतभेद हों बशिन आर्थिकी शिकायतके इस मामलेमें कोई मतभेद नहीं हो सकता। वास्तवमें मेरा भीमन यह सिद्ध करनेके लिए अर्पित है कि दोनोंके बीच सहयोग होगा भारतीय स्वतन्त्रताकी अनिवार्य शर्त है।

बम्बई सरकारने एरिफको अपनी सार्वजनिक समा-सम्बन्धी सूचना आपसे लेनेका भी निर्देश दिया था उसके लिए उसने अब समा-भाषना की है। अब यह समा ११ शरीरको करनेकी सूचना फिर निकाली गई है।

ट्रांसवालके नामलोंमें बातचीत प्रयत्न कर रही है यद्यपि बति मन्द है।

हम सबका अभिवादन।

आपका आदि

टाइप की हुई बरतटी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एच एन ५ ५५) से।

१. इस पत्रके अंतमें कम्युनिस्ट पार्टीके ८ सिद्धांतकी कार्यवाहीमें लिखा गया था "कम्युनिस्ट-कर्मियों की पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टीके मित्रों और मित्रों के बीच की सम्बन्धोंके सम्बन्धोंकी आशीर्षक तथा सेवा बरहिए। बदि वे अपनी पार्टीके काम करनेके लिए राजी न हों तो कम्युनिस्ट-सरकार इस वर्ष कम्युनिस्ट अंग्रेज करनेके लिए और भी काम शुरू करेगी। किन्तु बदि कम्युनिस्ट-सरकार सम्बन्धोंकी शीघ्र कर के तो भी पार्टीका काम करने के लिए ही सम्बन्धोंके सम्बन्धोंके लिए बरतना शीघ्र-शुभला होगी।" पार्टीकी और शरीरको ११ सिद्धांतको सर्वो से सम्बन्धोंका समर्थन दिया गया था।

२. इस पत्रके अंतमें ३ की शरीर परी थी। इसलिए "पत्र अमीर अलीको" पर १९४-१९५।

३. अमीर अलीको लिखा था

हम अपने काम के शीघ्र-शुभला के लिए भी बशिन आर्थिकीमें हमें काम है, माल प्राप्त करनेके लिए एक काम कम कर सकते हैं और हमें देना करना भी चाहिए। मैं सर्वो शीघ्रता कि इस बरतकी पूर्णिक कि शीघ्र-शुभला शीघ्र-शुभला करनेमें सर्वो अमीर अलीको।

बादरपीय नृशासकमार्ई,

आपका पत्र मिला।

मुझे इस बातसे बहुत सन्तोष है कि बि. छाननास परमार्थका जो काम कर रहा है उसमें आप आड़े न आवेंगे और उसे आप मुझे ही सौंपा हुआ समझते हैं। मेरा तो पक्का विश्वास है कि दोनों मार्ई और उनकी पत्नियों फीनिक्समें खूबे हुए सच्चा आत्म-कल्याण कर रहे हैं। पश्चिमकी हवा फीनिक्समें कम ही है। पश्चिमकी जो बातें ग्रहण करने योग्य हैं उनको ग्रहण करनेमें हमें तनिक भी शिक्षा नहीं होती। उससे जो-कुछ अच्छा फल निकलेगा उसका काम तो भारतको ही मिलनेवाला है। मैं तो यह मानता हूँ कि फीनिक्समें जो प्रवृत्ति बढ रही है वह धर्मकी प्रवृत्ति है।

बि. नारनशासन अच्छा काम शुरू किया है। उसमें उन प्राप्साहन और आपीबर्बि दीविएवा।

मैं अपने काममें भी मुश्कलोंका आपीबर्बि और प्रोत्साहन चाहता हूँ। सम्भव है मेरी कोई प्रवृत्ति उनकी समझमें न आवे। कैंड्रिन मैं जो-कुछ करता हूँ उसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं है। मैं उसे धर्म मानकर सद्भावसे करता हूँ — उन्हें यह विश्वास तो होगा ही चाहिए। अगर यह विश्वास हो गया हो तो मैं समझता हूँ कि मैं उनका आपीबर्बिके योग्य हूँ।

अभीतक समझौता नहीं हुआ है। शतपीठ बढ रही है। राजनीतिक मामले बहुत विकट होते हैं। मुझे एसा रुपा है कि यहाँ लोगोंका समझाने-बुझानसे जेस जाला अधिक मुमक और कल्याणकारी है। फिर भी स्वभाव यही बनना है। ऐसी ही मुवीबर्बोमें यह माकूप होगा है कि अभीतक मगमें राणडेप फिटना प्रबस है।

मामीको' मेरा दण्डन कहिए और हमरे बर्बोकी भी।

मोहनदासके दण्डन

गांधीजीके स्टाफरोंमें मूल गुजराती प्रति (सी डब्ल्यू ४८९४) से।

गोमय नारनशासन गांधी।

१. छाननास और नारनशासन गांधी।

२. गांधीजीके स्टाफरोंमें मूल गुजराती प्रति (सी डब्ल्यू ४८९४) से।

३. दण्डनकार गांधीजीकी पत्नी।

श्री नारणदास

तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। तुमने भी वहाँ बैठे भारतीय भाइयोंके कष्टोंमें भाग लेनेका विचार किया इसे मैं पुष्पका काम मानता हूँ। अपने साथियोंको भी मेरी ओरसे बधाई दे देना।

यह अच्छा किया कि पश्चिम साहब^१ और सुनल साहबसे^२ जम्मा किया गया।

मैं जानता हूँ कि भारतके बहुत-से पढ़े-लिखे लोग इस सजाईका खर्च नहीं आंते। इससे प्रकट होता है कि आत्मबलका वह ज्ञान जो हमारे पुत्रने पुरखोंको वा जब हब गया है। उसको फिर प्रकाशमें लानेके लिए औरजकी आवश्यकता होगी। इसमें समय लगेगा। लेकिन यह आत्मबल क्यों-क्यों समयमें जाता जायेगा त्यो-त्यो लोग अधिकाधिक इसका प्रयोग सीखते जायेंगे। मैं जिस आत्मबलकी बात लिखता हूँ वह मथिर जाधि स्वानोंमें जाने-जैसे बाहरी उपचारोंमें बिलकुल नहीं है। कई बार यह बाहरी उपचार उस बलके विपरीत होता है। अगर इंडियन ओपिनियन लयातार पढ़ा हो तो उसमें तुमने यह सब कुछ-कुछ देखा होगा। छगनसाईं ज्यारा समझा सकेंगे। वहाँ रहकर भी तुम उस बलका प्रयोग कर सकते हो। सब और समयको विकसित करना उसका पढ़ना पाठ है।

जो पैसा इकट्ठा करो उसे तुम तीनों व्यक्तिबलके हस्ताक्षरसे इंडियन ओपिनियन में भेज देना। इसके अलावा जिन लोगोंने पैसा दिया है उन लोगोंको हिसाब भेजना। मुसलमानोंको इंडियन ओपिनियन में प्रकाशित करनेकी सूचना भी छगनसाईंकी मारफत भेजना। अगर पश्चिम साहब और सुनल साहब स्वयं उस पैसको सहायसूचिसूचक पत्रके साथ भेजेंगे तो अधिक अच्छा होगा। तुम सबको जैसा ठीक लगे वैसे यह सब काम कर लेना।

मोहनदासके आशीर्वाद

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूल पुत्रराती प्रति (सी डब्ल्यू ४८९५) से।

श्रीबन्धु नारणदास गांधी

१. भारतवर्ष गांधीजीके इंडियन ओपिनियनके संपादकियोंके लिए जम्मा किया गया।

२. मीनाशंकर बलिक राजकोशके वैदिक।

३. डी. बी. सुनल राजकोशके वैदिक और गांधीजीके लिए।

यदि वे कठारों नीचेके पास पहुँच जायें तो मैं बख्शी तरह कल्पना कर सकता हूँ कि वे हमें बहुत बड़ी हानि पहुँचा सकते हैं। मुझे आशा है आपका खयाल यह नहीं है कि इस अधिनियमके रद्द करनेके बारेमें कोई समझौता हो गया है। मेरा इरादा अपने तारसे कोई ऐसा खयाल पैदा करनेका नहीं था। सम्भावनाएँ ह कि अनाक्रमक प्रतिरोध बन्द करनेका सीमा किये बिना कुछ भी नहीं किया जायेगा और फिर भी आपके बम्बईके समाचारपत्रोंमें किये गये क्लेशों यह आभास मिलता है कि आपने अधिनियमकी मंजूरी निश्चित मान ली है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि जो समाज अब होगी उसमें आप इस समूचे प्रश्नका विशेषण कैसे करेंगे। मुझे आशा है मेरे पत्रोंसे आपको सारी स्थिति स्पष्ट हो गई होगी। यदि उनसे स्थिति स्पष्ट न हुई हो तो मैं अपने-आपको कमी माफ न कर सकूँगा। अमर तीन वर्ष पहले कोई भीज इस प्रकार असमय प्रकाशित हो जाती और वहाँ भीषण नहीं हुई वहाँ हमारी भीषण बर्ताई जाती तो सायब मैं अपने बाल गोंच डालता क्योंकि तब अनाक्रमक प्रतिरोध तो था नहीं जिसका हम आश्रय लेते। वर्तमान स्थितिमें मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ मैंने इस भीषणके प्रकाशित होनेपर सम्मीरतासे विचार तक नहीं किया है और न मुझे इससे कोई चिन्ता हुई है क्योंकि मैं जानता हूँ कि हम जिस भीजके लिए लड़ रहे हैं वह सब कमी [हमें प्राप्त होगी] तब सत्याग्रहके कारण ही प्राप्त होगी मैं इस तारके प्रकाशनाका सम्बन्ध इसलिये करता हूँ कि आप अधिनियममें सावधान रहें और यह जान लें कि हमारे निज (आप जानते हैं मेरा तात्पर्य किन्तु है) क्या कह रहे हैं।

सार्वजनिक समाजको रोककर बम्बई सरकारने सैरी मूर्खतापूर्ण भूल की है। यह बटना कैसे और क्यों बटित हुई, इस सम्बन्धमें मैं विस्तृत बर्तनकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। यह बड़े दुःखकी बात है कि सर पीरोबघाह अब भी आपकी प्रवृत्तिमें बाधा डाल रहे हैं। फिर भी मैं इस बातकी पूरी आशा कर रहा हूँ कि आप बम्बईके कामकी समाप्तिके साथ-साथ उन्हें रास्तेपर ले जायेंगे।

मैं आपसे विष्णुकुल सहमत हूँ कि जो कठारमें मैंने भेजा है वह बम्बईके लिए विष्णुकुल काम न होगा। वह काम वे सकता है यह मैंने कभी सोचा भी नहीं। भारतके लिए सबसे बहुत अधिक मजे हुए और विस्तृत कठारमेंकी आवश्यकता है।

यदि आप भी पेटिट और दूसरे लोगोंको दोनों सिष्टमण्डलोंका स्वयं देनेके लिए राजी कर सकें तो वह एक बड़ा काम होगा और इससे वह कठिनाई अपने-आप दूर हो जानेकी जिसे दूर करनेका प्रयत्न हम पत्र १२ महीनेसे कर रहे हैं।

वह पत्र लिखवानेके समय तक लॉर्ड क्रू ने पेटिके लिए कोई तारीख नहीं भेजी है। मैं नहीं जानता कि इस बेरका क्या बर्ष है।

१ पत्र-३ बीमे एजिवाटिक डेबल हब ड् कालोनीयके केबल। एम्बल एम्बल इतिवत अधिनियमके अन्तर्गतके एक उक्तिव्य किं कर दिया था।

२. लॉ एक्टमें काम कर-करा गया है। वे बन्द अन्तर्गतके दूरे किने गये हैं।

३. लॉ एक्ट बन्द सिने दूर है।

४. दोस्तोंने अपने २१ अक्टूबरके पत्रमें लिखा था "मैं सार्वजनिक समाज को दे रहा हूँ, कर कर कीटी-काट देना बालक लव रहे हैं। वे देरी करतीके सिवा कुछ नहीं करते।"

५. डेटिल "इन्टरनेशनली मजदूरोंके सम्बन्ध में" पृष्ठ २८०-१।

श्री मोक्षदेवे के स्वास्म्यके समाचारसे मुझे बहुत दुःख हुआ है। उमको क्या तकलीफ है? उमका डॉक्टर मिटाया हो गया है अबका उमका अभिप्राय यह है कि वे जसबायु-परिवर्तनके लिए नहीं बचे जायें?'

मैं यह जानना चाहता हूँ कि बड़े पादसाहके सम्बन्धमें आपका खयाल क्या है और यह बड़े पादसाहकी बात है या छोटेकी। दोनों प्रतिभासामी व्यक्ति हैं किन्तु मैं सबसे सुगता थाया हूँ कि बड़े पादसाह सामुचरित पुस्तक हैं। छोटे पादसाहको मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वे मेरे साथ पढ़ते थे। वे इस खयालको पसन्द नहीं करते था यह कहना क्याथा ठीक होना कि मैं जब बम्बईमें था उन कठई पद्यन्त्र नहीं करते थे कि भारतीय विदेशोंमें जायें और वे 'अगर वे हमारे [संघर्ष]में विस्वस्ती सेनेके लिए'।

डॉक्टरकी बहिष्कृत परीसा देनेके पक्षमें डॉक्टरके कौल-से विचारणी है? इसमें मुझे कुछ विस्वस्ती है, क्योंकि यहाँ मुझसे कहा गया है कि जीवोंको मरू किये बिना डॉक्टरका सम्भवत विस्वस्त असम्भव है। श्री बुलने मुझे बताया है कि उन्होंने अपने सम्भवत-कार्यमें कमसे-कम ५ मॅडक अबस्य मारे होने। वे कहते हैं कि इसके बिना शरीर-विज्ञानकी परीसा सम्भव नहीं है। ऐसी बात है तो [यदि मुझे खूब पढ़नी हो] मैं डॉक्टरी विस्वस्त पढना न चाहूँगा। मैं न तो मॅडकको मारना चाहूँगा और न खास तौरसे बीरफाइके लिए मारे गये मॅडकको बीरफाइके काममें कामा चाहूँगा।

मुझे थाया है आपने बहूँके मिर्षोंको स्पष्ट बता दिया होना कि हमने अपने प्रचारको यदि ट्रान्स्वाल्स-सम्बन्धी वो मानें तक ही सीमित रखा है। तो उमका यह अर्थ नहीं है कि अबसर जानेपर हम अन्य बातके लिए नहीं चढ़ेंगे। इस समय केवल वो बातोंकी विशेष रूपसे चर्चा की जा रही है तो उमका कारण यह है कि अनाक्रमक प्रतिरोधका प्रबाव केवल उन्हीके लिए किया गया है और इसलिये सबसे अधिक ध्यान उन्हीपर दिया जाता है और दिया जाना भी चाहिए। मैं इस प्रपत्तका उल्लेख इसलिये कर रहा हूँ कि इसके सम्बन्धमें डॉर्ड मॉर्ड और डॉर्ड जू से बातचीत हो चुकी है। डॉर्ड जू ने पूछा था कि इसरी बातोंके मामलेमें हम क्या करना चाहते हैं। मैंने उनसे कहा था कि हम ट्रान्स्वाल्समें अभीष्ट सुधार करनेके उद्देशवसे कार्य करेंगे। और मैंने यह संकेत भी दिया था कि सुधारोंके सम्बन्धमें श्री अनाक्रमक प्रतिरोधका आभय किया जा सकता है। सर मन्वरजी यह वक्तव्य देनेपर बहुत जोर देते हैं क्योंकि उनका खयाल है कि अन्यथा बहूँके मोव फायर अबिप्यमें काम न करें और सोचें कि उन्होंने वर्तमान समस्याको सुकमानेमें हमारी सहायता करके अपने कर्तव्यका पालन कर दिया है।

मैं देखता हूँ आपने अपने पत्रमें कहा है कि संघ विधेयके [पाठ होनेसे] हंगारी स्विति कुछ ज्वाबा हो जाती है। लेकिन मेरा खयाल ऐसा नहीं है, क्योंकि खूब संघ

१. श्रीबुलने लिखा था "श्री मोक्षदेवके सम्बन्धमें हमने देवे का रहे हैं। अन्यसे डॉक्टर काली दामोदर बहुत मिटाया है।"

२. और ३. यहाँ बुलने कुछ अन्य गलत है।

४. यहाँ बुलने "बम्बई" अन्य है।

५. यहाँ बुलने अन्य गलत है। श्रीबुलने लिखा था "कै-कामुलक पाठ ही जानेसे आसन्न कम बहुत कठिन हो गया है। उन मानक पत्र एक अन्य और कम हो गया है।

(यूनिवर्सल) बारेमें हमने कभी कोई बात नहीं [उठाई]। वस्तुतः जहाँ तक समझनेकी बातचीतका सम्बन्ध है संघ [बनानेका कानून पास होने] के बारे जो काम हुआ है वह पहलेकी अपेक्षा अधिक ठोस है।

क्योंकि रूपमें आपने भारतकी जो शर्तकी देखी है, उसपर आपने बहुत प्रसन्नता व्यक्त की है। मुझे आपकी यह प्रसन्नता कम करनेकी जरूरत नहीं मालूम होती फिर भी सामर में कम कर दूँ। मैं समझता हूँ आप इस बातको जानते हैं कि आप पाश्चात्य देशों रने भारतको देख रहे हैं वास्तविक भारतको नहीं जिसे मुझे आशा है आप वहाँ रहते देख सकते हैं परन्तु आप देखेंगे इसमें मुझे संदेह है। मैं पिछली रात एडवर्ड कारपेंटरकी एक बहुत ही ज्ञानवर्धक रचना — 'सिबिसिजेसन इन्ट फॉर एंड क्वोर — पढ़ रहा था। मैंने पहला भाग समाप्त कर लिया। परन्तु उसे पढ़ते-पढ़ते मेरे मनमें आया कि मैंने जो चेतावनी दी है, वह दे दूँ। सम्मताको हम जिस रूपमें जानते हैं उसका विश्लेषण उन्होंने बहुत अच्छा किया है। यद्यपि उन्होंने सम्मताकी बहुत कड़ी गिनती की है तथापि मेरी सम्मतिमें वह पूर्णरूपसे उपयुक्त है। उन्होंने जो उपाय सुझाया है वह अच्छा है परन्तु मैं देखता हूँ कि वे स्वयं अपने तर्कमें मगभीत हैं। यह स्वाभाविक है, क्योंकि वे अपने तर्कके आधारके बारेमें निश्चित नहीं हैं। मेरी सम्मतिमें कोई भी मनुष्य जबतक भारतके हृदयका शास्त्रकार न कर के तबतक भविष्यका ठीक अनुमान नहीं दे सकता और न कोई उचित उपाय बता सकता है। अब आपने जान लिया है कि मेरे विचार मुझे कुछ विषयों सिधे वा रहे हैं। यदि आपने यह पुस्तक नहीं पढ़ी है और यदि वह आपकी जाल्मारीमें नहीं है तो वह आपको फ्रीलिब्ररीमें भिन्न जायेगी।

मुझे ओहानिचरमें निम्न तार मिला है:

लबिस्ट्रुडने बरनॉल्डको बराबरसे यह कहनेपर फटकारा कि एशियाईजोंको देखते खदेड़ देना मोरोंका कर्तव्य है। लीडर स्टार में कड़ी बालोचना।

हृदयसे आपका

टाइप की हुई दफ्तरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटी-मकक (एस एन ५ ५६) से।

२५३ पत्र लॉर्ड एंस्टहिलको

[सम्बन्ध]

दिनांक ९ १९०९

लॉर्ड महोरप

श्रीमानके मुताबक मैंने लॉर्ड एंस्टहिलको पत्र लिखा था। उनके उत्तरकी प्रतिकृति संलग्न है।

मैंने लॉर्ड कू को धन्यवादका पत्र लिखा था। अभी कोई जवाब नहीं मिला है। इनको लिखे पत्रकी प्रतिकृति भी साथ भेज रहा हूँ।

भाग्य आदि

दादा जी हुई दस्तखत अंग्रेजी प्रति (एन एन ५०५८) से।

२५४ पत्र मणिलाल गांधीको

[सम्बन्ध]

दिनांक ९, १ ०९

वि० मणिभास

गुम्हास पत्र मिला। श्री केन्दरबैरव राव क्रिया इसमें मुझे दुःख हुआ है। मेरे तब मैं जानता हूँ कि उन्हें रोका नहीं जा सकता। वह ज्यादा बका है कि वे पूरे तो उन्हें अपनी आकांक्षा न बनाई जाये।

मुझे दुःख है कि श्री हरिलाल गुम्हारे पास नहीं है। मेरे तब मैं जानता हूँ कि जिसका उषरा वर्तमान दामाबाकमें ही रहनेका है।

गुम्हासी पत्राईका कई गमाचार नहीं मिला। अगर श्री केन्दरबैरव छोड़े हो गये हैं तो मुझे विश्वास है तुम उनके घर जाओ होगे और उनकी देखभाल करते होगे।

मार्ग गुम्हारेपत्रामने पत्र नहीं भेजा यह भूल ही है।

मोहनदासने आशीर्वाद

१. लॉर्ड एंस्टहिलको जन्मे ३ सितम्बरके जन्मे लॉर्ड एंस्टहिलको लिखा था: "जब लॉर्ड एंस्टहिल क्रियाका अंग्रेजी को है अन्तको अंग्रेजीका अन्त नहीं तो है केवल उन्हें लाल लालके दिग्दर्शी हीनी ही करेगा मुझे यह घर ६ दिनांक मारी एंस्टहिल" का उत्तर लॉर्ड एंस्टहिलको लिख करत करत करते है। फिर श्री मणिभासके पत्र है।"

२. यह वाक्य अर्थहीन है।

३. यह घर लालका अन्तरे ६ दिग्दर्शीको अन्त गांधी का, एंस्टहिल, "यह लॉर्ड कूके मिकी लिखितो" का उत्तर है।

४. हरिलाल लॉर्ड का: अंग्रेजीके अन्त लॉर्ड एंस्टहिलको लिखा दिने लोके के लॉर्ड एंस्टहिलके घर अंग्रेजीका। एंस्टहिलको लोके है; अंग्रेजीका लॉर्ड एंस्टहिलके है। के अन्त के अन्त ही अंग्रेजीका अन्तरे अन्तरे अन्तरे अन्तरे है। एंस्टहिल "यह: मिकीका अन्तरे लॉर्ड" का उत्तर है।

[पुनरुत्थ]]

भासा है, तुम बैबीबहन^१ और श्रीमती पायबेलको^२ देखने भी बग़र बाठे रहते होने।
गांधीजीके स्वाधरोंमें मूस युवराती प्रति (धी डम्पू ८८) छे।
सीबम्प सुधीबाबेन गांधी।

२५५ पत्र लॉर्ड फू के मिन्नी सचिवको

[छम्पू]

सितम्बर १ १९०९

महोदय

मीने दिया गया ठार बोहानिसबर्गसे मिला है

मजिस्ट्रेटने बरनॉनको बवास्तमें एह कतुनपर फरकारा कि एशियाइयोंको बैसते
कदेइ बैना पोरोंका कर्तव्य है। लीडर स्टार में कड़ी आलोचना।

धी बरनॉन बिनका ठारमें एस्तेब है सुपरिस्टेंडेंट बरनॉन हैं। उनको मैं अम्भी एह
बानठा हूँ। एम्हीने मेरी रायमें बोहानिसबर्गमें बनाक्रमक प्रतिरोधियोंको असीम कष्ट
दिया है। अबस्य ही एक्ठ बात कहनेका उनका हंग ऐसा एन्तापजनक रखा होगा कि एउपर
मजिस्ट्रेटको ऊर्हें कष्टकार बेनी पड़ी और ड्राम्बवाक लीडर तथा बोहानिसबर्ग स्टार को
उनकी कड़ी आलोचना करनी पड़ी।

मेरे बैधवासियोंको ड्रान्बवासमें स्वेचजापूर्वक स्वीकार किये कष्ट-सहनमें क्या-क्या बर्भित
करला पड़ता है इस ठारसे एउका संकेत मात्र मिलता है। केकिन मेरे छापीके छिए और
मेरे छिए छिकामत करनेका कोई कारण नहीं हो सकता। साब ही हम अनुभव करते हैं कि
हमें इस ठारकी ओर लॉर्ड फू का ध्यान आकषित करना ही चाहिए। मैं नहीं बानठा कि
लॉर्ड फू ने अनरल स्मट्सका बहू बकतव्य देखा है या नहीं जो उन्होंने बलिय आशिकाके छिए
बहाजमें बैठनेसे पहले एउटरका दिया था। एउमें एम्हीने निम्न बातें कही थीं

ड्रान्बवासके भारतीयोंका बड़ा बहुमत अपने कुछ उग्र प्रतिनिधियों द्वारा सबाकित
आम्बोलनसे बेहूद ऊब गया है और आन्तिपूर्वक कम्पूके असीम ही गया है।

हमने इसको बात कहनेका मुम्बर हंग मात्र भाता है और समाचारपत्रोंमें एउका
उत्तर नहीं दिया है ताकि अनरल स्मट्स अपने बलकी किसी आपतिके बिना भारतीयोंकी
प्रार्थनाको स्वीकार कर सकें। किन्तु, यदि एउका बनिप्रण — जो एम्हीने एउटरने
प्रतिनिधिके बतया था तो क्या मैं यह कह सकूँ

१. ए. ए. बैधकी एरन कुमारी एवा बैधका ए

२. ए. ए. बैधकी एरन ।

विनयीत बाउ निद होती है और यह भी कि ब्रिटिश भारतीयोंके विरोधका बल अभीतक कम नहीं हुआ है।

भाषा आदि
मो० क० गांधी

कानानियत मॉरिंग रेकॉर्ड्स २९१/१४२ और टाउप की हुई दफ्तरी संघेजी प्रति (एम० एन ५ ९०) से।

२५६ पत्र लॉर्ड मॉर्लेके निजी सचिवको

[सम्बन्ध]

मिठाबर १ १९०९

महोदय

आपका ८ तारीखका पत्र मिला। मैं लॉर्ड मॉर्लेकी जानकारीके लिए लॉर्ड कू के निजी सचिवको किन आने पत्रकी प्रतिनिधि इसके साथमें भेज रहा हूँ।

आपका विरहस्त

टाउप की हुई बरारी संघेजी प्रति (एम एन ५ ९९) से।

२५७ पत्र लॉर्ड एंस्टहिलको

[सम्बन्ध]

मिठाबर १ १९०९

लॉर्ड महोदय

कम उम्र प्रौढ़ानिगबर्मे विम्व गार भाषा या

मजिस्ट्रेटके बरतानको अज्ञानमें यह कहकर काकारा कि एगियाइयोको हेमने लड़े देना मोरोंका कर्म्य है। मोरार एदार में कड़ी मानोचना।

पी बरतान विम्वरा आने उम्मेग है मुर्तियेट बरतान है। उन्हें ये बरतन अच्छी तरह जानना है। उम्मेने अनायामक प्रतिरोधके दौरान ब्रिटिश भारतीयोंका अपील बन्द दिया है। मैं जानता हूँ कि मजिस्ट्रेट व्याव-अधिकारीके रूपमें विम्वरी एन दे लकना है। इस उन्हें उम्मेने अधिक एन देना था। लेकिन हाथ है कि यह भी उन्हें एगियाइयोके विरुद्ध लोगोंको अज्ञान रूपमें अज्ञानों एम्मेने नहीं दे लकना। इस आनेमें अज्ञान ही लकनवी रानी होती इसलिए आजकाल मोरार और प्रौढ़ानिगबर्मे एदार को कड़ी मानोचना बरती करी। मैं गारपी लकन अतिविधेय-आरतियको भेज रहा हूँ।

१. देखिए मिठाबर २९१/१४२।

२. देखिए - एन: लीड क डे मिनी रजिस्ट्री" एन १९८।

[पुनरुत्थन]

जासा है, तुम देवीबहन^१ और श्रीमती पायबेडको^२ देखने भी बन्दर जाते रहते होंगे।

गांधीजीके स्वाशयमें मूल मुजराती प्रति (वी डब्ल्यू ८८) से।

सौजन्य सुधीबाबेन गांधी।

२५५ पत्र लॉर्ड फू के निजी सचिवको

[सम्बन्ध]

सितम्बर १ १९१९

महोदय

मीने दिया गया छार जोहानिसवर्यसे मिला है

मजिस्ट्रेटने बरगानको अशाक्तमें यह कहनेपर फटकारा कि एशियाइयोंको देखते जाड़ेक देना योरोंका कर्तव्य है। लीडर स्टार में कड़ी जाओचना।

श्री बरगान जिनका छारमें सम्बन्ध है सुपरिटेण्डेंट बरगान हैं। उनको मैं बन्धी तय जानता हूँ। उन्होंने मेरी रायमें जोहानिसवर्यमें अनाक्रमक प्रतिरोधियोंको असीम कष्ट दिया है। अबस्य ही उक्त बात कहनेका छतका डंभ ऐसा सन्तापजनक रहा होगा कि उसपर मजिस्ट्रेटको उन्हें फटकार देनी पड़ी और ट्रान्सवाक लीडर तथा जोहानिसवर्य स्टार को उनकी कड़ी जाओचना करनी पड़ी।

मेरे देशवासियोंको ट्रान्सवाकमें स्वेच्छापूर्वक स्वीकार किये कष्ट-सहनमें क्या-क्या बर्बाद करना पड़ता है इस छारसे उसका संकेत मात्र मिलता है। लेकिन मेरे साथीके छिए और मेरे छिए सिकायत करनेका कोई कारण नहीं हो सकता। साथ ही हम अनुभव करते हैं कि हमें इस छारकी जोर लॉर्ड फू का ध्यान आकषित करना ही चाहिए। मैं नहीं जानता कि लॉर्ड फू ने जनरल स्मट्सका यह कथन्य देखा है या नहीं जो उन्होंने बक्षिष आधिकारके छिए अहाबमें बैठनेसे पहले रायटरको दिया था। उसमें उन्होंने निम्न बातें कही थीं

ट्रान्सवाकमें भारतीयोंका बड़ा बहुमत अपने कुछ उच्च प्रतिनिधियों द्वारा संघालित आन्दोलनसे बेहद डर गया है और आतियूर्वक कानूनके अन्धी हो गया है।

हमने इसको बात कहनेका सुन्दर डंभ मात्र माना है और समाचारपत्रोंमें उसका उत्तर नहीं दिया है, ताकि जनरल स्मट्स अपने बख्की किसी आपत्तिके बिना भारतीयोंकी प्रार्थनाको स्वीकार कर सकें। किन्तु, यदि छतका अमिप्राय रही है जो उन्होंने रायटरके प्रतिनिधिको बताया था तो क्या मैं यह कह सकता हूँ कि ट्रान्सवाकसे प्राप्त सूचनासे इसके

१. व. देवकी वर कुमारी वर देवकी नाटीन नाम।

२. व. देवकी देवकी छत।

विपरीत बात गिड़ होनी है और यह भी कि ब्रिटिश भारतीयोंके विरोधका वह समीपक रूप नहीं हुआ है।

आपका आदि
मो० ५० गांधी

कमोनियम ऑफिस रेकॉर्ड २९१/१५२ और टाउप की हुई दफ्तरी धंधेकी प्रति (एम एन ५९) से।

२५६ पत्र लॉर्ड मॉल्लेके निजी सचिवको

[सन्तन]

सितम्बर १० १९१९

महोदय

आपका ८ तारीखका पत्र मिला। मैं लॉर्ड मॉल्लेकी जानकारीके लिए लॉर्ड कू के निजी सचिवको लिख जाने पत्रकी प्रतिकृति इसके साथमें भेज रहा हूँ।

आपका विरक्त,

टाउन की हुई दफ्तरी धंधेकी प्रति (एम एन ५०५९) से।

२५७ पत्र लॉर्ड एम्बेडकरको

[सन्तन]

सितम्बर १ १९१९

लॉर्ड महोदय

कम टाउन जोड़ानिबर्तने निम्न तार आपका था

ब्रिजार्सेटन बरतानको अहालमें यह कहनेकर फटकारा कि एगिपाइयोंको बेगाने छोड़ देना मोर्रोला बर्नस्य है। लीडर टार में बड़ी आलोचना।

धी बरतान बिनवा ताममें उभेता है मुर्तिरेवेंट बरतान है। उन्हें ये बहुत अच्छी तरह जानता है। उन्होंने अनाथामक प्रतिरोधके दौरान ब्रिटिश भारतीयोंका समीपक रूप रखा है। मैं जानता हूँ कि ब्रिजार्सेट स्प्राय-ऑफिसरीके ताममें ब्रिजारी तार से गजना है। तब उन्हें उभेते अधिक तार देना था। लेकिन तब है कि वह भी उन्हें एगिपाइयोंके विरुद्ध मोर्राको अबाध करने बहराने नहीं दे गया। इन बातसे अबाध ही समझनी बेजो होती इसलिए दाम्नाम लीडर और जोड़ानिबर्तने टार को बड़ी आलोचना करनी बनी। मैं तारकी तरफ उर्तिरेव-बर्तानको भेज रहा हूँ।

१. एम्बेडकर लिखते हैं:-

२. एम्बेडकर - "लॉर्ड कू के निजी सचिव" पृष्ठ १२८।

मुझे सौंठें नू का उत्तर अभी नहीं मिला है। मेरे मनमें प्रायः यह प्रश्न उठता रहा है कि क्या मेरा कर्तव्य साम्राज्य-सरकारको अपने कर्तव्य-नाशनके लिए तैयार करनेकी आशासे यहाँ व्यर्थ पड़े रहनेकी अपेक्षा ट्रान्स्वाल्डमें जाना और अपने देशवासियोंके कष्टोंमें भाग लेना नहीं है? मैं जानता हूँ कि बर्हिातक संघर्षमें सबल और निर्बल दोनों तरफ़के लोग समान रूपसे शामिल हैं। बर्हिातक चुपचाप सपाटार कष्ट सहना और बातचीत तथा सार्वजनिक आन्दोलन दोनों ही बातें उसके अंग हैं। लेकिन फिर भी बातचीत और सार्वजनिक आन्दोलनकी अपेक्षा चुपचाप सपाटार कष्ट सहनेकी शक्तमें मेरा विश्वास बहुत ज्यादा है। आपको यह विश्वास दिखानेकी आवश्यकता नहीं है कि मैं बपीर नहीं हूँ और जबतक आपकी सम्मतिमें प्रतीक्षा करना आवश्यक हो तबतक प्रतीक्षा करनेके लिए लुत्तीसे तैयार हूँ।^१

आपका भाई

टाइप की हुई दस्तवी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉप (एच एन ५ १२) से।

२५८. सम्बन्ध

[सितम्बर १० १९०९]

नेटाळका सिष्टमण्डळ

नेटाळका सिष्टमण्डळ अभी अपना विवरण विभिन्न स्वार्थोंको भेज ही रहा है। उसने एक पत्र अन्नवारोंको भेजा है। उसकी गलत सीधे लिखे अनुशासन है। यह पत्र आज (१ सितम्बरको) टाइम्स में प्रकाशित हुआ है। सिष्टमण्डळने कर्नेस सीधीसे लिखित उत्तर देनेकी प्रार्थना की है। एक-दो दिनोंमें उत्तर आ जानेकी आशा है।

टाइम्स' में पत्र

हमने नेटाळके लिखित भारतीयोंके सम्बन्धमें विभिन्न स्वार्थोंको जो विवरण भेजा है हम उसकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हैं।

हम अनेक कष्टोंसे पीड़ित हैं। हम इन सब कष्टोंकी ओर आपका ध्यान एक ही बार आकर्षित करें तो हमारी बात व्यर्थ जानेका भय रहता है। इसलिये हमने उन्ही बातोंको दिया है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। दक्षिण आफ्रिकाके उपनिवेशोंमें नेटाळकी स्थिति लिखित है। जब नेटाळमें समूहिका प्रवाह चलता हो पया वा तब भारतीय मजदूरोंको बास छोड़ते भुलाना गया था। अब नेटाळ उसका परिणाम मुमकिनसे दृढ़कार करता है, अर्थात् यह चाहता है कि उपनिवेशको विरमिटिवा मजदूर जो काम पहुँचा उन्हें यह से लिया जाने किन्तु स्वतन्त्र भारतीयोंको न रखा जाये।

१ डॉ. केंडल्लेके लखे अन्तमें ११ सितम्बरके पत्रमें लिखा था "मैं नहीं सोचता कि भारतकी लोई नू के लिये किन्तु अन्त में एक देखायी देनी। अन्त में भारतका धामन एक बार फिर उलझे लखन कर है ही छोड़े लखन मजदूरों और कुछ होना। अन्त में एक दिखने एक भारतकी लखन अन्त में दिखे ही लख किन्तु उन्हीं ही हीना कि अन्त में लख दिखे व और क्या है कि भारतका लख लख लोई है और लख दक्षिण आफ्रिकाको भारत लखेके किन्तु देनी ही ये है।

इसके लिए उसने प्रथम तो भारतीय व्यापारियोंको व्यापारिक परवाने (लाइसंस) देना बन्द करके उनको मुजारेके साधनोंसे बंचित कर दिया है। जो अधिकारी ये परवाने जारी करते हैं या जिन्हें इनको एक स्थानसे दूसरेमें या एक व्यक्तिके नामसे दूसरे व्यक्तिके नाम बदलनेका अधिकार प्राप्त है, वे अधिकारी अपनी मनमानी बल्लू सकते हैं। उनकी इस मनमानीसे बहुत-से भारतीयोंके परवाने छिन गये हैं। इसके लिए सर्वोच्च न्यायालयमें अपील करनेका अधिकार दिया जाना चाहिए। दूसरे भारतीयोंको उपनिवेशसे बल्लू करनेके लिए गिरमिट खरम होते ही भारतीय गिरमिटियों उनकी मित्रियों और बन्धुओंपर भारी बाधिका कर लगा दिया जाता है। तीसरे, भारतीयोंको सहा अज्ञानमें रखनेके लिए उनको जो बोर्डसे सिला-सापन प्राप्त वे वे भी कम कर दिये गये हैं।

ऐसे एक वर्षापत्रमें हमारे कर्पोंका पूरा विवरण कैसे समा सकता है? अधिकारी भारतीय एक लाख आयुसे अधिकके अपने बालकोंको भी नहीं बुला सकते या अपने परिवारकी किसी निरुधित स्त्रीको अपने साथ नहीं ला सकते। इसके साथ हीमें कि भारतीय समाजपर तीन औरसे आक्रमण किया गया है। इसलिए हम न्याय प्राप्त करनेके उद्देश्यसे ब्रिटिश राज्यके इस प्रमाण स्थानमें आये हैं। नेटाल स्वतन्त्र उपनिवेश एक या दसिग बाकिकी संघमें मिला जाये किन्तु [भारतीयोंके] पुत्रने अधिकारकी रक्षा करना ब्रिटिश सरकारका कर्तव्य है। वह अपने इस कर्तव्यको पूरा नहीं करती। नेटालके कानूनोंमें हमारी राय नहीं ली जाती है इसलिए हमारी रक्षाका उपाय ब्रिटिश सरकारके हाथमें है। नेटालके मामलेमें तो ब्रिटिश सरकारके हाथमें प्रभावकारी उपाय है। वह यह है कि नेटाल भारतीय गिरमिटियोंको अपने फायदेके लिए बुलाता है उनको वहाँ भेजना बन्द कर दिया जाये। ऐसा किया जानेपर नेटालको उक्त तीनों प्रकारके कर्पोंसे भारतीयोंको मुक्त करना ही पड़ेगा।

हम आशा करते हैं कि इन्हींके सार्वजनिक बराबार हमारी सहायताके लिए जागे आगेसे और ब्रिटिश सरकारको अपने कठम्यका पालन करनेके लिए बाध्य करेंगे।

अब्दुल कादिर

आमद भायत

एच० एम० वदात

एच० सी० आंगलिया

क्या वे उत्तरी मुज पहुँच गये ?

उत्तरी मुजकी गोर हो गई है या नहीं और ही गई है तो किन्तु भी इस बारेमें अमरिकाके दो गोरोंमें बर्षों पैनी बहुत चल रही है। इनमें से एकका नाम डॉक्टर वेरी है और दूसरेका डॉक्टर बुक। दोनों व्यक्ति कहते हैं कि वे उत्तरी मुजार लड़े हो जाये हैं। डॉक्टर वेरी कहते हैं कि डॉक्टर बुककी बात बनावदी है और डॉक्टर बुक कहते हैं कि डॉक्टर वेरीकी बात बल्लू है। इस विवादको लेकर लाभ पायन हो गये हैं। अगवार इसी विवादसे भरे रहते हैं। उनका गांध स्थापन यह विवाद और कन्वाक-कितोन्गी बहते के लैगी है। उत्तरी मुजके किन्तुने दुनियाको क्या नाम हुआ यह वेरी अबसमे बाहरकी बात

है। किन्तु ये सभी बातें वर्तमान सम्प्रदायी बहुत बड़ी विद्यानिर्मा मानी जाती हैं। इनका महत्त्व क्या है, यह तो जाननेवाले जानें। मुझे तो ये सभी पापकपनकी विद्यानिर्मा दिखाई देती हैं। मनुष्यको योग्य काम न मिले इसलिए वह अपना वस्त्र धँसे-धँसे गुबारे, और बनके अति लोमके कारण धँसे भी सम्भव हो बन कमानेका साधन निकाले ऐसी हालत में तो कहींमा दुस्मनकी भी न हो।

स्त्रियोंके लिए मताधिकारका आन्दोलन करनेवासी महिलाएँ

मताधिकार प्राप्त करनेके लिए आन्दोलन करनेवाली कुछ स्त्रियाँ खबीर हो उठी हैं। वे अन्न खाती हैं यह तो बखूबी बात है। वे स्वयं कष्ट उठावें इसमें तो कोई कुछ कह नहीं सकता। किन्तु मताधिकार तुल्य नहीं मिलता इसलिए अब वे प्रजागमनी भी एस्तिवपकी विद्वक्तियाँ ताड़नके लिए उद्यत हो गई हैं। वे उनके आराधनों लल्लु बाल्मी हैं, और उनके घरपर बाबा बोकली हैं। ऐसा तीन स्त्रियोंने किया। ये स्त्रियाँ पकड़ी गईं, फिर भी उनका क्या किया जा सकता था? उनपर मुकदमा भी नहीं चलाया गया। यह सब बेबंया है स्त्रियाँ होनेके कारण वे अपराध करनेपर भी झूट जाती हैं। अंग्रेज लोग स्त्री-वाठिका आदर करते हैं, इसलिए इन स्त्रियोंपर कोई ह्राय नहीं उठाता। ये स्त्रियाँ इस बातको जानती हैं इसलिए इसका अनुचित काम उठती हैं। इससे कुछ मताधिकार मिलनेवाला नहीं है। यदि अंग्रेज स्त्रियाँ केवल सत्याग्रहकी विधिसे ही लड़ती हों तो वे उक्त आचरण नहीं कर सकतीं थीं। सत्याग्रह और अर्थ्यका मेल नहीं है। पोट्टी-सी स्त्रियाँ ही मताधिकार प्राप्त करना चाहती हैं और जगदा उद्यके विरुद्ध हैं, इसलिए इन बोड़ी-सी स्त्रियोंके सामने बहुत समय तक कष्ट-सहन करना ही एकमात्र मार्ग है। वे कष्टसे हारकर अपनी मर्वादाका त्यागकर मार-पीट करेयीं तो उनको जो सहायुमूर्ति मिल चुकी है उसको जो रेंपी और जोय उनका विरोध करेये। इससे हमें यह सिखा केमी है कि हमें सत्याग्रह रूपी उद्यकारका त्याग करके कभी खबीर नहीं होना चाहिए। ऐसा करनेका अर्थ होगा माथी मविन्न पार करने लौट पड़ना। इसलिए दूसरोंके इस उदाहरणसे हमें खीरजकी शिक्षा लेनेकी बहुत जरूरत है। [हममें से] जो सत्याग्रही नहीं हैं उनक तो खबीर होनकी बात ही नहीं है। जो सत्याग्रही हैं उनके लिए भी यदि उन्हें सत्यके बलपर पुण निस्वास हो तो धर्म त्यागनेका कोई कारण नहीं है। अब जितना चाहिए उतना सत्य-बल इकट्ठा हो आवेया तब असत्य अपने-आप नष्ट हो आवेया।

गाइ एस्केड

गाइ एस्केड इंडियन सोशियलजिस्ट क पिछले अंकके मुखकका नाम है। उनकी आयु २२ बरसकी है। उनका मुखकना अत्म हा चुका है। उफार्डमें तो कुछ कहा ही नहीं गया। पत्रमें हत्वाकी खुबी प्रदर्शनी की गई थी। उनको बाएँ माथकी जेठ मिली है।

[पुनःपरीक्षे]

इंडियन सोशियल ९-१०-१९९

[सितम्बर ११ १९१९ से पूर्व]

हम वहाँ से वहींके वहीं हैं—मुझे इस सप्ताह भी यही कहना पड़ रहा है। लॉर्ड क्रू का निमन्त्रण अभी नहीं आया है। यह नहीं कहा जा सकता कि जायेगा भी या नहीं और जायेगा तो कब जायेगा। उनको कागज-पत्र भेजे गये हैं। ओहानिसबर्गसे यह तार मिला है कि ब्रिटाइनमें बयान देते हुए पुब्लिश सुपरिस्टिटेट बरनौनने कहा कि एशियाइयोंको निकाल बाहर करना प्रत्येक यूरोपीयका कर्तव्य है। खबर है कि इसपर न्यायाधीशने कड़ी आलोचना की और स्टार तथा ट्रांसवाल सीडर ने कड़ी टिप्पणियाँ कियीं। इस सम्बन्धमें लॉर्ड क्रू को तुरन्त पत्र लिख दिया गया है। इस प्रकार जो-जो अभ्यास होता है उससे हमको सहायता मिलनेवाली है। ट्रांसवालका सवाल [साम्राज्य] सरकारके लिए एक बहुत बड़ा सवाल बन गया है। अब वह यह सोच रही है कि क्या करे। ऐसी स्थितिमें हमारे ऊपर ज्यों-ज्यों ब्यादा कष्ट आते जाते हैं त्यों-त्यों [साम्राज्य] सरकारपर ब्यादा बोझ पड़ता जाता है। श्री किबनका तार मिला है कि चीनी अब भी मिरपटार किये जा रहे हैं जबकि बनरस स्मटस कहते हैं कि समझौता हो जानेकी सम्भावना है। श्री किबन सवाल करते हैं कि यह कैसे हो सकता है। बनरस स्मटसके मनमें समझौतेका जो रूप है उसके बारेमें मैं यह सप्ताह कुछ जुरा हूँ। हमारे लिए उठना काफी नहीं है, यह बात स्पष्ट है। इसलिए अभी पकड़ा पकड़ी तों चकती ही रखेगी। यह जरूरी है कि भारतीय और चीनी सभी बुझ रहें। बनरस स्मटस कहते हैं कि भारतीयोंका बल टूट चुका है और बहुराजि कानून मान सिमा है। यह आरोप असत्य है, यह बताना हमारे ऊपर है।

बम्बईकी शार्वरजिक सभा जिस दिन यह पत्र आकरमें आका जायेगा उस दिन होगी।¹ यह ठीक हुआ कि बम्बई सरकारने आशिर माफी माँग ली और फिर सभा करनेकी सूचना निकालने ली। उसकी खबर तो वहाँ मिक ही जायेगी।

श्री पोल्ककी चिट्ठीसे नामूम होता है कि दोनों शिष्टमण्डलोंका लार्ड बम्बईसे देनेकी हलचल चल रही है। पीसेकी जरूरत हमें मके ही न हो किन्तु इस तरहकी हलचल भारतीय संहानुभूतिकी सूचक है और उसका बल तो हमें निरचय ही चाहिए।

अपनी लड़ाईके सम्बन्धमें केपके भूतपूर्व मन्त्री श्री डॉक रॉकोमनकी पत्नी और स्वर्गीय सर जॉन मोस्टेनोकी पुत्रीके साथ हमारी बहुत बातें हुई हैं। अद्यपि ये दोनों महिलाएँ बलिष्ठ आधिकारी हैं, फिर भी हमसे [हमारे संघर्षमें] बहुत ही संहानुभूति रखती हैं और हमारी सहायता करनेकी हिम्मत रखती हैं। इस सम्बन्धमें मैं ब्यादा नहीं सिख सकता। कुमारी मोस्टेनी घायर पत्नी ही बलिष्ठ आधिका पहुँचेंगी।

[बुधपत्तीसे]

इंडियन ओपियियन ९-१ -१९१९

का मसूला ही किया जाता ऊपर बताये गये वैधानिक अधिकारकी रक्षा करने और इस प्रकार भारतकी प्रतिष्ठाको बचानेके लिए काफी होता केवल मात्र १९८ के अधिनियम ३६ के होनेसे विहित भारतीयोंके प्रस्ताव पृथक् उपस्थित करना और ट्रान्स्वाल्के वर्तमान कानूनमें जोड़ा परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है। ऊपर सी. जू महोदयको समय हो तो मैंने उनसे बैठका प्रस्ताव यह बतानेके लिए किया है कि जनरल स्मट्स जो कुछ देनेके लिए तैयार हैं उसमें और ट्रान्स्वाल्के ब्रिटिश भारतीयोंने जो कुछ मांगा है और अब भी मांग रहे हैं, उसमें एक आभारभूत अन्तर है।

मुझे हममें सम्बन्ध नहीं है कि ट्रान्स्वाल्के प्रतिनिधि श्री पोसककी उपस्थितिसे बम्बईके लोगोंमें संघर्षके प्रति जो भारी विमर्शनी पैदा हो गई है, इसका कोई मौर्केको पता होया। मुझे प्रति एप्पाह बल्लारोंकी जो कृपामें मिली है उनसे प्रकट होता है कि सभी प्रकारके विचारोंके प्रतिनिधि-अवधार इस प्रसंगके लिए काफी स्थान दे रहे हैं। श्री पोसकने प्रमुख भारतीयों और ब्रिटीश भारतीयोंसे मेट की है और उन लोगोंसे उन्हें बहुत अधिक प्रोत्साहन मिला है। बम्बईकी इन गतिविधियोंसे प्रकट होता है कि उपनिवेशीय कानूनमें पहली बार भारतीय निर्णयताको स्थान देकर भारतका जो अपमान किया जा रहा है उससे उसे बहुत बड़ी शोच मनी है और यह विडम्बना उचित भी है। और ट्रान्स्वाल्के एक साम्राज्यीय बारसकी प्राप्तिके लिए सीकड़ों ब्रिटिश भारतीय जो कल्प उठा रहे हैं उससे भी भारतको बहुत दुःख हुआ है।

द्वारप की हुई रफ्तारी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एन एन ५ ११-७) से।

२६१ एन. सी. जू के निजी सचिवको

[सम्बन्ध]

सितम्बर १४ १९१९

महोदय

आपके ११ तारीखके पत्रके सम्बन्धमें विवेचन है कि श्री हामी हबीब और मैं इसी ११ तारीखको बोनहुर बाद ३ १५ पर सी. जू महोदयकी सेवामें उपस्थित होंगे।

आपका आशि

द्वारप की हुई रफ्तारी अंग्रेजी प्रति (एन एन ५ ७२) से।

मुझे इसमें सन्देह नहीं है कि ट्रान्सवालके प्रतिनिधि श्री पोल्ककी उपस्थितिसे बम्बईके कोमेमें जो भाटी बिलचस्वी पैदा हो गई है, डॉ. मॉर्लेको उसका पता होगा। मुझे प्रति सप्ताह कसबाचौकी जो कठारने मिलती है, उनसे प्रकट होता है कि सभी प्रकारके विचारोंके प्रतिनिधि बलवार इस प्रश्नको काफी स्थान दे रहे हैं। श्री पोल्कने प्रमुख भारतीयों और आंग्ल भारतीयोंसे मेट की है और उन लोगोंसे उन्हें बहुत अधिक प्रोत्साहन मिला है। बम्बईकी इन गतिविधियोंसे प्रकट होता है कि उपनिवेशीय कानूनमें पहली बार भारतीय नियोग्यताको स्थान देकर भारतका जो अपमान किया जा रहा है उससे उसे बहुत गहरी चोट लगी है और यह बिलकुल उचित भी है। और ट्रान्सवालमें एक साम्राज्यीय आदर्शकी प्राप्तिके लिए संघर्षों विविध भारतीय जो कष्ट उठा रहे हैं उससे भारतको बहुत पुष्प हुआ है।

आपका भावि

टाइप की हुई बस्तरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (एस एन ५ ७७) से।

२६३ पत्र डॉ. एंस्ट्रिन्को

[सम्पन्न]

दिसम्बर १६, १९१९

डॉ. महोदय

आपके इसी १५ तारीखके ड्रपापत्रके लिए आपको धन्यवाद। मैंने जब डॉ. मॉर्लेको आपकी प्रतिक्रियाके अनुसार पत्र लिख दिया है। मैंने बरबसे हुए अनुच्छेदके आरम्भमें केवल बोझ-सा धार्मिक परिवर्तन किया है। "हम के बजाय मैंने मेरा साथी और मैं रख दिया है। सेप ठीक भीमानके मसविदे — वीसा ही रखा है।

डॉ. मू से हम आत्र मिल रहे हैं। मैं आपकी ही हुई कीमती सलाहको ध्यानमें रक्षूबा और आपको मेटके परिणामकी सूचना दूँगा।

आपका भावि

टाइप की हुई बस्तरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (एस एन ५ ७९) से।

१. इस पत्रकी पूर्व से हूँ डॉ. मॉर्लेके मित्री छविमें १८ दिसम्बरकी लिखा था " नाम डॉ. मॉर्लेके सम्मने किंग सुरेरर जोर देना चाहते थे पर उनके लिए कोई क्या नहीं है। कबसे हस्त और सम्पन्न आपकीतर पर सम्पन्नने कम्पनी लालुपुति नामके हस्त है केविज उन्हें नहीं जाना कि वो उनके सम्मने बकिद एक करमेसे कोई आकाशिक ज्ञेकन सिद्ध होना। कसबिज उन्हें केर है कि वे नामको दूरी लुकावत नहीं है लखे। केविज वे पर मानते है कि नामने अपने विचार कसिरीज-मर्भके सम्मने दूरी लख रख दिने हने। "

२. केविज लिखा बरमेक।

३. डॉ. एंस्ट्रिन्को लिखा था " मुझ बाबा है कि जब नाम डॉ. मूसे मिलने ली कसकी सुरेरर देना दिने ली लुसावा है देते ही नीर दिने। पर सिद्ध करमेसे किंग देवात पर कि सेवात्मिक बकिदर ली कसको कनी कस है; बरबदि वे ली सुरेरर नामने लुकावत करेने। नाम मेरा नाम नहीं है नहीं उनके विद्य नाम है पर उनके। "

उपस्थित लॉर्ड कू, हाजी हजीप और गांधी

लॉर्ड कू ने इन तथ्योंके साथ बातचीत आरम्भ की। मैंने बताया है, लॉर्ड एंम्ब्रिड्जका आपसे सम्पर्क रहा है और उन्होंने आपको सब-कुछ बता दिया है। मैंने आप कोबंसि मिलनेको कहा था ताकि मैं आपको यह बता दूँ कि बातचीतमें बिल्कुल हो गया है क्योंकि उप-निवेशके मन्त्रियोंको कई बुरे काम करने थे। कर्मल चीकी और मैं दोनों जनरल स्मदससे कई बार मिले। उनका रुख उचित था और वे समझीता करनेके लिए उत्सुक थे। वे कानूनको रद्द करना चाहते हैं, किन्तु लॉर्ड एंम्ब्रिड्जके संशोधनको मंजूर करना नहीं चाहते। उन्होंने यह बखर स्वीकार किया कि कुछ ब्रिटिश भारतीयोंको स्वामी अधिकार प्रमाणपत्र (पर्मनेंट रेसिडेंसियल सर्टिफिकेट्स) दिये जाने चाहिए और कहा कि वे वर्तमान कानूनमें इस मास्यका संशोधन करनेके लिए तैयार हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वे अवास्तविक समानता नहीं चाहते। जनरल स्मदस छार स्पर्म ओ-मुञ्च देनेको तैयार है उसे क्या आप स्वीकार नहीं कर सकते?

गांधी मुझे भय है कि जनरल स्मदस ओ-मुञ्च बना चाहते हैं उससे ब्रिटिश भारतीय समाज सम्पुष्ट नहीं हो सकता। उसके बाद भी कानूनकी पुस्तकमें प्रजाति (रेस)-सम्बन्धी बम्बा रहा ही जाता है।

लॉर्ड कू ने टोकते हुए कहा मगर क्या आप यह नहीं मानते कि इतनास्वयं परीक्षाएँ सेक्टर प्रवेश-निवेश करनेकी आलोकियाकी-सी नीति इस प्रश्नको ठप करनेके लिए अस्तोच बनक है?

गांधी मैं मानता हूँ कि वह अस्तोचजनक है लेकिन नास्वयिक समानता अपेक्षाकृत छोटी बुलाई है। और क्या स्वयं ब्रिटिश संविधानकी नींव बहुत-से कास्वयिक आसर्षोंपर रखी गई है? स्वयं मैंने पारलमन्टको भी इन्हीं परम्पराओंके बीच हुआ है। विद्यार्थी-जीवनमें ही मैंने इस प्रकारके आसर्षोंका मूल्य पढ़ाया था। जनरल काकी चौक-विचारकर मैं इस निष्कर्षपर पहुँचा हूँ कि इन कथित अवास्तविकताओंके लिए एक बहुत उचित आचार है, और यदि जनरल स्मदस सबकुछ समझीता करनेके लिए उत्सुक हैं और ब्रिटिश तन्त्रके नीचे रहना चाहते हैं तो वे जानबूझकर ब्रिटिश संविधानमें हस्तक्षेप क्यों करेंगे— विज्ञेपत' तब जब कि वे ओ-मुञ्च चाहते हैं वह उस संविधानका उल्लंघन किये बिना प्राप्त किया जा सकता है? मैं बीनाम्का प्यान इस बातकी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि उपनिवेशका प्रवासी कानून तात्रके अपीन उपनिवेशोंके उपयुक्त कानून नहीं है, वह जनरल स्मदसका

१ जेम्स वल सॉटीजीने स्वयं वरुदा उत्तराव किया; रेकिर "वतः वय वय न्को रोम्पदो वृष ४१४। जेम्स वलने लॉर्ड कूके विरुद्धके लिए रेकिर परिशिष्ट २४।

बनना बनाया हुआ है और उन्होंने उसमें निःसन्देह बनावतबिक्रपाका आयम किया है। कानून ऐसी धाराओंसे मरा पड़ा है।

शॉर्टेडू (बीचमें बोधते हुए) मैं आपका विश्वास बहुत हद तक सहमत हूँ। मेरे लक्ष्यसे आप जो कुछ कहते हैं वह बिलकुल न्यायसंगत और उचित है। लेकिन जनरल स्मट्स अग्रिम नहीं है और इसलिए वे संवैधानिक समानताके लक्ष्यको भी पसन्द नहीं करते।

गांधी यदि ऐसी बात है तो यह हमारे लिए कानूनकी किटावसे प्रबलित-सम्बन्धी धर्मको मिटानेके लिए जोर देनेका और भी बड़ा कारण है। और इस विरोधके द्वारा हमारा पमान है, हम साम्राज्यकी सेवा कर रहे हैं। नैसा धीमानने देया होना यह संघर्ष बाबमें बल कर मुझ आदर्शोंका संघर्ष रह गया है। हमें कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं साधना है, और यदि यह प्रसन्न केवल कुछ सुसंस्कृत भारतीयोंके प्रवेशका होता तो वह समाजके कल्याणके लिए फिटना ही वांछनीय क्यों न जाता जहाँतक मेरा अपना सम्बन्ध है मैं अपने दम बाधियोंका इतने कष्टोंमें डालने और उन्हें संघर्ष जारी रखनेकी सहाह बेमनं बहुत भागा पीडा करता। यदि मैं आपका समय बराबर नहीं कर रहा हूँ तो आपको यह बताना चाहूँगा कि सच्चा समित करनेकी बात सैते आरम्भ हुई। ट्रान्सवाल सीडर के सम्पादक श्री कार्टरएग्ने जो बीजोंके मित्र हैं और सदा प्रतिनिधित्वहीन बगैरकि मित्र रह हैं और मेर भी विशेष मित्र हैं मुझे कहा कि कम्बोंमें जहाँ यह है कि संवैधानिक समानताकी आइमें मेरा कोई सुपा उद्देश्य है और दरबसक मैंने एशियाइकोंके बास्वधिक प्रवेश-निषेधकी नीतिको स्वीकार नहीं किया है। श्री कार्टरएग्नेके जो मित्र कम्बोंमें उनसे ऐसी बातें करते थे उनको वे सम्योप बनक उत्तर दे सकें इस लक्ष्यसे मैंने उनसे कहा था कि यदि ऐसी बात है तो वे अपने मित्रोंसे कह सकते हैं कि मैं भारतीय समाजको एक बहुत कड़ी परीक्षा स्वीकार करनेकी सहाह देनेके लिए तैयार हूँ। वह परीक्षा ऐसी कड़ी हो सकती है कि उससे लगभग छ उच्च विद्या प्राप्त भारतीय ही प्रति वर्ष हैरामें प्रवेश कर सकें। इसलिए आप बर्गेसे कि संघर्षके आरम्भसे ही हमने भारतीयोंके प्रबलको कभी कोई महत्व नहीं दिया है बल्कि हम सदा कानूनी समानताके लिए लड़ते आये हैं।

शॉर्टेडू लेकिन क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि जनरल स्मट्सको अपने लोमोंगे शॉर्टेडू ऐंस्ट्रिक्टा संशोधन संभूर करानेमें कठिनाई हो सकती है?

गांधी नहीं मुझे तो नहीं लगता। मैं नहीं सोचना कि प्रयतिवादी बलसे उन्हें कोई कठिनाई हो सकती है। मुझे यार है कि एंस्ट्रिक्टेड पलानेके बार कार्यकारिणी परिवर (एशियनट्रिबुनल ऑसिड) की बैठकमें जब हम इसी लक्ष्यपर जर्ना कर रहे थे तब गर और डेपारने जनरल स्मट्ससे इस कठिनाइसे निरुक्तनेका कोई रास्ता सुमानेकी प्राचना की थी। लेकिन जनरल स्मट्सने कहा कि वे प्रबली कानूनमें सुधार नहीं कर सकते। इसीलिए मितित भारतीयोंके बर्गेका लक्ष्य तब हुए बिना रह गया। उपनिषदोंके सांग बेतक यह चाहते हैं कि आम तीएर एशियाइनोंको जाने न दिया जाये ताकि स्वयंसि बचा जा सके। यह नीति स्वीकृत कर ली गई है, इसलिए संवैधानिक समानताके विरुद्ध उनको आपनि होनी यह बात मेरी गमलमें नहीं आती।

श्री शानी हबीब जब बात यह है कि हमें सम्बन्धि प्रोटेक्टर बोल्ने और सर पीरोड पाह बढ़ानेके लक्ष्य शर मिला है, निरुक्त आयम यह है कि हम दूसरे संशोधनको स्वीकार

करनेकी राजमन्त्री दिखाकर उचित सीमासे ज्वादा आगे बढ़ गये हैं। उन्होंने मह भी कहा है कि इस मामलेसे भारतमें बहुत शोष फैल रहा है।

गांधी हमें जो-कुछ यहाँ हो रहा है उसके सम्बन्धमें स्वभावतः ही टांग देना पड़ा। और श्री पोसम्का जो पत्र भिजा है उससे पता चलता है कि भारतमें प्रजातीय अपमानपर तीव्र रोष प्रकट किया जा रहा है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि केवल ट्रान्स्बासके भारतीय ही विरोध कर रहे हैं।

कोर्डरू में बिल्कुल सहमत हूँ और आप जो-कुछ कह रहे हैं, उसकी उपयुक्तता मेरी समझमें जाती है। श्रुति में ट्रान्स्बासके स्थानीय भारतीयोंकी माँगका अधिकृत तीव्रतापर अनुभव करता हूँ इसलिए मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ मैंने इस प्रश्नको जनरल स्मट्सके सम्मुख साम्राज्यके प्रश्नके रूपमें रखा था। मैं स्वयं इस बातके लिए बहुत उत्सुक हूँ कि जैसे भी हो समझौता हो जाये किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि हो सकता है जनरल स्मट्स यह भी सोचें कि यदि वैधानिक समझौता कायम रही गयी तो उसका उपयोग भारतीयोंको बसानेके लिए नये आन्दोलनके रूपमें किया जा सकता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि उन्होंने मुझसे ऐसी कोई बात नहीं है।

गांधी मैं इस प्रकारकी किसी आर्थकाक उत्तरमें इतना ही कह सकता हूँ कि ट्रान्स्बासके मन्त्री जब यह समझें कि हम अपने बचनसे हट रहे हैं तब वे अधिक प्रतिबन्धकारी कानून बना सकती हैं। साथ ही मेरा क्वापि यह कहना भी नहीं है कि यदि हमारी माँगे मंजूर कर ली जायें तो केवल उन्हींसे ट्रान्स्बासमें तमाम आन्दोलन बन्द हो जावेगा। हम जो कठिनाइयाँ देख रहे हैं वे कुछ विरोध प्रकारकी हैं, और उनको दूर करनेके लिए नये प्रयत्न आवश्यक हो सकते हैं।

कोर्डरू बिल्कुल सही। ऐसे मामलोंमें कौहीं अनिश्चय बात नहीं हो सकती। मैं इतना ही कहता हूँ कि यदि प्रश्न आपकी दृष्टिसे समतोपजनक रूपमें तय हो जाये तो कमसे-कम कुछ बर्षों तक तो शान्ति साँस लेनी चाहिए।

गांधी मैं एक कब्रम और जाये जानैके लिए तैयार हूँ। जब मैंने नये आन्दोलनकी बात कही थी तब विभिन्न भारतीयोंके द्वाँके प्रश्नसे भिन्न कठिनाइयोंका जिक्र किया था। वहाँतक प्रवासके प्रश्नका सम्बन्ध है हम एक सिद्धित अचन देनेके लिए तैयार हैं कि हमारी माँग पूरी हो जाये तो हम जाये कौई आन्दोलन न उठवेंगे। मैं यहाँतक कहता हूँ कि यदि कोई ऐसा अनुचित आन्दोलन होगा तो बीछा मैंने समझौतेके बाद किया था उसी तर्ज अपने ही श्रेयवासियोंके विरुद्ध उल्टावह करनेको तैयार रहूँगा।

कोर्डरू हाँ मेरा जमान है कि यह बिना
इस मुझकायकी सब बातें बता हूँगा। और मुझ
लेकिन आपको अधिक बाधा नहीं बँधाऊँगा।
करनेमें कठिनाई हो सकती है। यदि उनको
पाकिस्तानमें)की प्रतीक्षा कर केना भी बच्यन न हूँ

गांधी क्या मैं स्थितिको बोझ और साक

जनरल स्मट्सको
जावेगा

ठीक-ठीक समझा हो तो मुझे लगता है कि संघ-संसदकी प्रभावी कानूनमें संशोधन करनेका अधिकार न होना क्योंकि स्वयं उस कानूनके द्वारा कोई प्रभावीय नियमितता नहीं लागू नहीं होती। संशोधनका कल्प तो कुछ बहू कानून होगा जिसमें प्राचीन नियमितताएँ रखी गयी हों।

श्री ४ महु ठीक है। पर मुझे केवल यह लगता है कि संघ-संसद ऐसे कष्टकी जननि नहीं बढ़ाना चाहेंगी। मैं आपको विन्यास देना सकता हूँ कि जनरल स्पेस भी संघर्षका जन्मा होना पसन्द नहीं करते। इसी कारण मेरा जवाब है कि संघ-संसद हस्तक्षेप कर सकती है और उचित समाधान कर सकती है। लेकिन यह जानना कठिन है कि संघ-संसदका स्वर क्या होगा ?

श्री ४ यदि हम अभी राहुत नहीं पा सकते तो मैं जानता हूँ कि हमें प्रतीक्षा करनी पड़ेगी हम अनिश्चित समय तक प्रतीक्षा करनेके लिए तैयार हैं। यदि बातचीत सफल नहीं होती तो मैं यह जवाब लेकर जाऊँगा कि हमने अभी पर्याप्त कष्ट नहीं सहे हैं और इसलिए हमें अभी जम्मा करना जारी रखना चाहिए।

श्री ४ महुत अच्छा अब मैं इस प्रश्नपर जनरल स्पेससे बातचीत करूँगा।

श्री ४ श्रीमान् जानते हैं हम यहाँ पूरे दो महीने रह चुके हैं। क्या जनरल स्पेसको ठार देना ज्यादा अच्छा न होना ताकि परिणाम बल्की माकूम हो जायें ?

श्री ४ मेरा जवाब ना कि एक सरीठा मेजना ज्यादा अच्छा रहेगा लेकिन ठार देना भी ठीक हो सकता है। मैं जानता हूँ कि आपको यहाँ जम्मे समय तक रहना पड़ा है।

टाइप की हुई बरगदी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (एस एन ४९९५) से।

२६५ पत्र श्री ४ ऐम्सहिलको

[सम्पन]

सितम्बर १६, १९९९

श्री ४ महोदय

श्री ४ श्रीमान् हवीर और मैं अभी-अभी श्री ४ से मिले हैं। उन्होंने बहुत सहायुमूर्ति प्रकट की। मेरा जवाब है, वे प्रश्नको पूरी तरह समझते हैं। मैंने यह भी देखा कि जब-जब मैं सोचकर कोई मुद्देकी बात उठता ना तभी श्री ४ बीचमें कह उठते थे यह बात उन्होंने आपसे सुन ली है। मेरा विन्यास है, वे यह भी अनुभव करते हैं कि राज्याधिक समाजताके प्रश्नपर हमारे दृष्टिकोणके पक्षमें करनेको बहुत-कुछ है।

उन्होंने हमारी मंत्रालय परिणाम धारसे जनरल स्पेसको भेजनेका और आपके द्वारा रखे हुए मेरे संशोधनको स्वीकार कर देनेके लिए उनपर जोर देनेका बचन दिया है।

हमने उनका ध्यान इस ओर भी आकर्षित किया कि भारतमें इस सम्बन्धमें बहुत रोप है। उन्होंने उत्तर देते हुए स्वीकार किया कि यह प्रश्न साम्राज्यका प्रश्न है और इसे साम्राज्यका प्रश्न ही माना जाना चाहिए।

आपका आदि,

टाइप की हुई बरगदी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (एस एन ५ ७८) से।

१ श्री ४ संघर्षके जल्दके लिए देखिए संघर्ष ९५।

करनेकी रजामन्दी दिखाकर उचित सीमासे ज्यादा भागे बढ़ गये हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि इस मामलेसे भारतमें बहुत सोम फैल रहा है।

भाभी हमें जो-कुछ यहाँ ही रहा है उसके सम्बन्धमें स्वभावतः ही तार देना पड़ा। और यी पोसकका जो पत्र मिला है उससे पता चलता है कि भारतमें प्रजातीय अपमानपर तीव्र रोष प्रकट किया जा रहा है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि केवल द्वायवाक्यके माध्यम ही विरोध कर रहे हैं।

कॉर्डेनू में बिल्कुल सहमत हूँ और आप जो-कुछ कह रहे हैं उसकी उपयुक्तता मेरी समझमें जाती है। बूँक में द्वायवाक्यके स्थानीय भाषीयोंकी माँगका औचित्य तीव्रतासे अनुभव करता हूँ इसलिए मैं आपको निश्चय दिखाता हूँ मैंने इस प्रश्नको जनरल स्मट्सके सम्मुख साम्राज्यके प्रश्नके रूपमें रखा था। मैं स्वयं इस बातके लिए बहुत उत्सुक हूँ कि जैसे ही जो समझौता हो जाये किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि हो सकता है जनरल स्मट्स यह भी सोचें कि यदि सैद्धान्तिक समानता काममें लयी गयी तो उसका उपयोग सौपेकी बढ़ानेके लिए गये आन्दोलनके रूपमें किया जा सकता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि उन्होंने मुझसे ऐसी कोई बात कही है।

भाभी मैं इस प्रकारकी द्विती आसंकाके उत्तरमें इतना ही कह सकता हूँ कि द्वायवाक्यक मन्त्री जब यह समझें कि हम अपने बचनसे डूट रहे हैं तब वे अधिक प्रतिबन्धकारी कागूत बना सकते हैं। साथ ही मेरा कयापि यह कहना भी नहीं है कि यदि हमारी सवि मंजूर कर ली जायें तो केवल इसीसे द्वायवाक्यमें समान आन्दोलन बन हो जायेगा। हम जो कठिनाइयाँ देख रहे हैं वे कुछ विरोध प्रकारकी हैं, और उनको दूर करनेके लिए सब प्रयत्न आवश्यक हो सकते हैं।

कॉर्डेनू बिल्कुल सही। ऐसे मामलोंमें कोई अतिम बात नहीं हो सकती। मैं इतना ही कहता हूँ कि यदि प्रकृत आपकी दृष्टिसे संतोचनक रूपमें तय हो जाये तो कमसे-कम कुछ बर्षों तक तो चीनकी छाँट केंनी चाहिए।

भाभी मैं एक कदम और आगे बातके लिए तैयार हूँ। जब मैंने गये आन्दोलनकी बात कही थी तब विशिष्ट भारतीयोंके बर्षके प्रत्येक निम्न कठिनाइयोंका विचार किया था। महात्मा प्रवासके प्रश्नका सम्बन्ध है, हम एक विशिष्ट मजबूत देनेके लिए तैयार हैं कि हमारी सवि पूरी हो जाये तो हम अपने कोई आन्दोलन न उठावेंगे। मैं महात्मा कहता हूँ कि यदि कोई ऐसा अनुचित आन्दोलन होया तो जैसा मैंने समझौतेके बाब किया था उसी तरह अपने ही देशवासियोंके विरुद्ध सत्याग्रह करनेको तैयार रहूँगा।

कॉर्डेनू हाँ मेरा जवाब है कि यह बिल्कुल ठीक है और जब मैं जनरल स्मट्सको इस मुकामातकी सब बातें बता दूँगा। और मुझे आशा तो है कि कोई समझौता हो जायेगा लेकिन आपका अधिक ध्यान नहीं बँधाऊँगा। जनरल स्मट्सको आपका प्रस्ताव स्वीकार करनेमें कठिनाई हो सकती है। यदि उनका कठिनाई होती है तो क्या सब-संघर (यूनिफ़ॉर्म पार्लियामेंट)की प्रतीक्षा कर केना भी अच्छा न होया?

भाभी क्या मैं स्थितिको बोज़ा और छाँट कर सकता हूँ? इस बीच अनाकामक प्रतिरोध जारी रखना पड़ेगा और इससे कष्टकी अवधि क साध तक और बढ़ जायेगी। और यदि इतिहास आधिकारी कागूतमें आपके कदमनुसार पैठ किसे गये संतोचनकी मैंने

ठीक-ठीक समझा हो तो मुझे खपता है कि संघ-संसदको प्रवासी बनाने का अधिकार न होगा क्योंकि स्वयं उस कानूनके द्वारा कोई प्रवासीय निर्णय नहीं हो सकती। संघोपनका सत्य तो खुद यह कानून होना जिसमें राष्ट्रीय निर्णयों का प्रावधान है।

सॉर्टेड कू यह ठीक है। पर मुझे केवल यह लगता है कि संघोपन के अन्तर्गत सभी विधायक चाहेंगी। मैं आपको बिरबाम बिखा सफटा हूँ कि संघोपन के संघर्षका सम्बन्ध होना पसन्द नहीं करत। इसी कारण मेरा खयाल है कि संघोपन कर सकती है और उचित समाधान कर सकती है। लेकिन यह सत्य नहीं है कि संघ-संसदका सख क्या होगा?

बापी यदि हम अभी चाहत नहीं पा सकते तो मैं जानता हूँ कि हमें क्या करना पड़ेगी हम अनिश्चित समय तक प्रतीक्षा करनेके लिए तैयार हैं। यदि संघोपन नहीं होती तो मैं यह खयाल कैकर सौदूना कि हमने अभी निर्णय कर ले लेंगे कि इसलिये हमें अभी कष्ट सहना चाही रहना चाहिए।

सॉर्टेड कू बहुत अच्छा जब मैं इस प्रसंगपर प्रत्यक्ष सम्पर्क करूँगा, गांधी भीमान जानते हैं हम यहाँ पूरे हो महीने तक रुकेंगे। इस प्रकार संघोपन को तार देना क्यासा अच्छा न होगा ताकि परिणाम जल्दी मायूस हो सकें।

सॉर्टेड कू मेरा खयाल था कि एक संघीय बैठना क्यासा अच्छा होगा कि संघोपन भी ठीक हा सकता है। मैं जानता हूँ कि आपको यहाँ कन्वे समय पर मूला है।

दाइप की हुई बरतरी संघेनी प्रतिकी प्रौढी-मकड (पत्र ११० ११० ३)

२६५ पत्र सॉर्टेड एंस्टहिमहा

सॉर्टेड महोदय

मैं जानती हूँ कि और मैं अभी-अभी सॉर्टेड कू में निरह है। संघोपन का प्रयत्न करूँगी। मेरा खयाल है वे प्रसंगको पूरी तरह समझेंगे। संघोपन के अन्तर्गत मैं सोचकर कोई सुरेकी बात उठाता था तभी सॉर्टेड कू में निर्णय ले लेंगे। उन्होंने आपसे मुल की है। मेरा खियाल है, वे यह निर्णय ले लेंगे कि संघोपन समाप्तकिये प्रसंगपर हमारे दृष्टिकोणके पक्षमें कदम उठाया जाय।

उन्होंने हमारी सेंटका परिणाम तागम बरतरी करके हमें सूचित करे हुए मेरे संघोपनको स्वीकार कर सकत कि संघोपन का प्रयत्न हमने उनका ध्यान इस ओर भी आकर्षित किया है कि संघोपन का प्रयत्न ही साधनात्मक प्रसंग ही माना जाता है।

दाइप की हुई बरतरी संघेनी प्रतिकी प्रौढी-मकड (पत्र ११० ११० ३)

१ सॉर्टेड संघोपन करने के लिए निर्णय ले लेंगे।

मिय हेतरी

मैं नहीं समझता कि आपको बेस्ट और उनकी बीमारीकी खबर जबतक फीमिलियसे मिथी होती। बेस्टको सर्वकर मिमोगिया हो गया था। उनकी हालत ऐसी थी कि एक बार तो लोग उनके बचनेकी आशा भी छोड़ बैठे थे। कुमारी बेस्ट भी टाम्प्राइडसे पीड़ित थीं। उन दोनोंकी देखभाल डॉ मानकोने की। यह समाचार बहुत चिन्ताजनक था। लेकिन मगिन्हाकने मुझे लिखा है कि खबर यह बिट्टी मेरे पास पहुँचने तक वे दोनों बच्चे न हुए तो मेरे पास तार पहुँच जायेगा। चूँकि मुझे तार नहीं मिला है, इसलिए मैं यह माने खेता हूँ कि वे दोनों अब विश्वकुल ठीक हो गये हैं। लेकिन इन बीमारियोंसे प्रकट होता है कि फीमिलियके इन्तजाममें कुछ गड़बड़ी है। मैं एक सम्बन्धी बिट्टी लिखकर बेस्ट और कॉरिडसे इस मामलेमें पूरी जानकारी करनेको कह रहा हूँ। कैमिनबीककी बिट्टी मिथी है उससे मामूम होता है कि वे अभी दर्जनमें ही हैं। मैं देखता हूँ कि कमजोर और मजिन्हाकने बेस्टकी सार-सँभाळ बहुत प्रेमसे की है। एतमें दोनों बायी-बायीसे उनकी देखभालके लिए जाते हैं। कैमिनबीकने मजिन्हाककी सेवाकी बहुत सराहना की है। इस सबसे यही प्रकट होता है कि फीमिलियके रहन-सहनसे उसके निवासियोंमें निश्चय ही सर्वोत्तम सुधारका विकास हुआ है। स्वामाबिक ही है कि इन हालतोंमें अग्रजकाकने अपनी रजतनी स्वमित कर थी। उसने मुझे लिखा है कि यह जबतक बिट्टी न वे तबतक उसे मैं भारतके पतेपर नहीं फीमिलियके पतेपर ही पत्र लिखूँ। मुझे इस बातका खेद है कि अभी आपको विस्वस्त और टिक रहने वाले सेक्रेटरीके बिना रहना पड़ेगा। फिर भी अग्रजकाकने बहुत ठीक किया है।

मुझे आपका तार मिल गया। एक बहुत अच्छा तार टाइम्स में भी छपा है। मैं आपको उसकी नकल भेज रहा हूँ। छाठ है कि आपकी सभा बहुत सफल हुई। आपने हर कर की है। मुझे आपसे यही आशा थी। सभा कोई नू के दिये हुए समयसे ५७ पहले हुई। मैं यह पत्र उनके मिलनेसे पहले लिखा रहा हूँ। आज सुस्कार है। हम उनके सभा तीन बजे मिल रहे हैं। इसलिए मैं तुम्हें सँटका पूरा हाल भेज चुकीं। मुझे खुशी है कि कमसे-कम कुछ अच्छा तो हो ही जायेगा। उससे ट्रान्स्वाककी छद्माईके लिए कोर्पोको शक्ति मिलेगी। मुझे विश्वास है कि आगले हर अहासको देखने और निर्वासित भारतीयोंकी

१. मसूदा ७ को मसूदेसे रीकलने लिखा था: "मुझे फीमिलियकी छद्माईका समाचार मिल गया है। कोरिडके अग्रज सर्वित कर्न मिला है।"

२. यह अज्ञान थी है।

३. मसूदेमें हुई सर्वाधिक उम्मा।

क्रिया कानेकी व्यवस्था कर दी होगी। मुझे यह भी आशा है कि मनबीके पुत्र और दूसरे लोग मिल सके होंगे। ये लोग आपके छतरनेसे पहले भाए पहुँच चुके थे। अगर उन सबका पता न सया हो तो आप काठियावाड़ और मूरतमें किसीके चिट्ठी-पत्री करके निर्वासितके नाम और हाक-बाक मालूम कर लना।

बहिन माखीय मुस्लिम सीपके भी अभी इमाम यहाँ हैं। मैं अभी उनसे नहीं मिला हूँ। लेकिन हमारे नेटालके मित्र मिल चुके हैं। वे उनकी बहुत प्रार्थना करते हैं। वे आपसे आपके यहाँ रहते ही लौट जायेंगे। वे पटनामें बैरिस्टरी करते हैं। आशा है आप उनसे मिल लेंगे। अकरत हो तो पटना और अलीपड़ भी जाना।

यद्यपि समुक्त कारबाई की जा सकती है फिर भी अनुमतिसे अलग-अलग कारबाई भी कराई जाये। इस बातपर जोर दिया जाये कि बहिन माखीयमें मुसलमानोंके स्वार्थ बहुत ज्यादा हैं।

मैंने जो नबीनगर संशोधन सुझाया है उसका आपने बहुत ठीक जर्ज किया है। मैं स्वयं इससे ज्यादा साफ नहीं बता सकता था। पुरस्कार-वितरण समारोहका जो हास आपने लिखा है वह बहुत मनोरंजक है। आप इस परिश्रमसे निकल सके यह अच्छा हुआ। मूरतकीके अहमदशाहने साठ तीरसे एकने लिखा है कि आपने मुझे कवि बताया है। कन्यायवाससे कहें कि वह मुझे पत्र अवश्य लिखे।

मिमी माताजीके साथ बेस्टनिष्क पई है। वे अपने संयत्को छींगी। मेरे ब्यापकमें आपको बारहोंके बारेमें लिख भी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं है। मैंने इस मामलेको इतना नमीर नहीं समझा कि इसके लिए डॉक्टरकी सलाह देनेकी जरूरत हो। मुझे बहिनके शरीरको पचाबोका घर बनानेसे गफ्त है। लेकिन डॉ. मेहता यहाँ बसती ही जा रहे हैं। अगर उनके पास बीमार न होने तो मैंना कृपा और उनसे बाबकोके लिखवा लूँगा। मेरा सयाह है डॉक्टर मेहताकी योग्यताके बारेमें मैं आपको बता चुका हूँ। वे बहुत ही योग्य हैं। कुछ भी हो वे मुझे ठीक-ठीक बता देंगे कि क्या करनी है। वे उचित समझें तो मुस्ला भी मिल देंगे। उसे हम बकरल होनेपर काममें ला सकते हैं। मैं इतबारके दिन सीकिया और एमीको बेस्टनिष्क नेजनेका विचार कर रहा हूँ। बहिन वे उसी दिन लौट जायेंगी। मिमी और मैं पिछले इतबारको बीमती रिचको देखने सके थे। सीकीने मुझे हीटलसे किफिल-बुड तक बुलाया। इसमें आपसे-आपसे एक घंटा वालीस मिनट लगे। इससे मैंने सीकीको कुछ प्यारा पहाला। इस बारेमें ज्यादा बातें मिलनेपर करेंगे। बीमती रिचकी हाकत बीरे-बीरे ही मुबार रही है। मेरी रायमें रिचके सम्बन्धमें क्या किया जाना चाहिए, यह बात पिछले हस्ते कैप्टनबीकको मेरे मेरे पत्रकी गफ्तसे बेल लगे। मेरे ब्यापकसे हूँ ऐसी कमेटीकी जरूरत नहीं है कि विमके लिए हर साल ५ पीड कर्ष करने पड़ें। अगर कम जोर लोगोंको उतकी जरूरत है तो वे उसे रखें। मेरे विमाममें एक योजना बूम रही

१. यह उलटाही मनबी माखीय केवली।

२. अपने कपमें पोलोन्को पोरीपोरी लिखा था: "अनुमति लक्षण सन्ने जी कार्यवाही कर रही है। मैं भी मुसलमानोंके कर्तों और उनके रिश्वत खास कर देता रहा हूँ। अनुमतिसे बरतलसे बरतलकी केवली होनेसे नालाचरों और खडकके विममें भी विरल किया।"

३. यह बरतल की है।

है। इस योजनाके अनुसार हम कम्बनमें बहुत कम स्वयं कार्य करके कुछ काम कर सकते हैं। यद्यपि यह काम रिजके कामके बराबर अच्छा कमी नहीं हो सकता। जब मैं इसे विस्तृत रूपसे तैयार कर लूँगा और आपके साथ विचार-विमर्श करूँगा तो मुझे विपदा है। आप इसे लूब पसन्द करेते।

लॉर्ड ऐंस्टहिङ्गसे भी गई बिट्टी-पनीकी लकड़से आपको मान्य हो जायेगा कि मे जमीतक किस्स पूर्णतासे काम कर रहे हैं।

बारमें खिन्नाया—शुभवार [सितम्बर १७ १९०९]

हम अब लॉर्ड लू से मिल चुके हैं। मेटका परिणाम लॉर्ड ऐंस्टहिङ्गको मेरे पत्र पत्रों दिया गया है। उसकी लकड़ साथमें भेज रहा हूँ। इसकिए अब लकड़की विवाद और कमी हो गई है।

मैंने सोचा था कि लॉर्ड लू के साथ जो मेट हुई है उसका सार लिख केना क्या ठीक होया इसकिए मैं आपको इसकी लकड़ भेज रहा हूँ। या यों कहें कि लकड़के समन तक पूरा कर सका तो भव लूँगा।

मुझे यह नहीं मान्य है कि जो तार मुझे भेजे जा रहे हैं उनकी बुरती लकड़ आपको भेजी जाती है या नहीं। कुछ भी हो इस हफ्ते जो तार मिले हैं उनकी लकड़ें मैं आपको भेज रहा हूँ। पहला तार आपको लॉर्ड लू को भेजे पत्रकी लकड़में मिलेगा। दूसरा भीनी सबका है। यह इस तरह है।

अम्पल सहित ८ भीनी निरस्तार। पूरी सामर्थ्यसे अनाकामक प्रतिरोध करनेका संकल्प और अधिक बूढ़। भीनी संघ।

दूसरा तार इसी १९ तारीखका है। उसमें कहा गया है

लकड़की समा जोभीली। लकड़की जारी रखनेका बूढ़ संकल्प। प्रस्तावोंमें रिद्धा कोनोंको कबाई प्रतिबिधियोंपर पूर्ण विश्वासकी पुनराविष्कल्पित, उनके प्रयत्नोंकी हार्दिक धरत-हना, पूर्ण समर्थनकी पुनः प्रतिज्ञा, बरनामके पत्र बलव्यका विरोध जो सरकार द्वारा अग्रव न होनेकी स्थितिमें प्रतिबाधोंकी बुद्धिमें सरकारी नीतिका शोतक। रमजानमें मुतसमान संविधियोंको विशेष भीजन देनेकी प्रार्थना मार्गजूर।

मैं इन तारोंके आचारपर लॉर्ड लू को एक पत्र भेज रहा हूँ। कह नहीं सकता कि इस पत्रकी लकड़ भी आपको भेज सकूँगा या नहीं। धापर बल न रहे।

विश्वके हफ्ते जोहानिसंघमें एक बिट्टी मिली है। इस बिट्टीका एक अनुच्छेद नीचे दिया है। मैं इसे लॉर्ड लू को भेज रहा हूँ। लेकिन बहुत संशय हीकर ही। अगर आप इसका उपयोग करें तो कृपाकरके बहुत सावधान रहना। इसे जानना नहीं। हाँ साथ-साथ कार्यकर्ता यह जान सकते हैं कि दाम्भवातकी जेकोंमें क्या हो रहा है। मेरी राजमें अगर कुछ बढ़ाकर भी गई है। लेकिन जिस तमिळकी बात है उससे निर्भयताका बर्याम किया गया

१. देखिए रिद्धा लीनक।

२. देखिए "पत्र: लॉर्ड लू के मिली लकड़की" पृष्ठ ३९०-९९।

३. देखिए "पत्र: लॉर्ड लू के मिली लकड़की" पृष्ठ ४११-१२।

होया। मैंने स्वयं जो-कुछ देखा है उसके आधारपर मैं इसपर पूरा विश्वास करता हूँ। वैसे ही कारणसे एक बतनी कैंचीकी कटीब-कटीब जान से ली गई थी। उसके घटीरसे इतना ज्यादा लून बहा था कि मैंने तमाम गणिकारोंमें उसके लूनके निदान हेतु वे। भेरी समझमें नहीं आता कि वह सड़का कैसे बचा होगा।

एक दिन कड़ाकेकी सर्दियोंमें लीयोंको गहानेका हुषम दिया गया। एक बारमी गहाना नहीं चाहता था। इसलिये चार बतनी बार्बरोंसे कहा गया कि वे उसको रगड़ें। इसके अनुसार उन्होंने उस बारमीको पकड़कर हीअमें बुझा दिया और एक बूतसे इतने जोरसे रगड़ना शुरू किया कि उसके घटीरसे लून निकलन लगा। संयोगसे उस समय बहूति अस्पतालका एक अरेंजी था रहा था। उसने बतनियोंको रोका और वह व्यक्ति अस्पताल से जाया गया। वहाँ उसका इन्जम कराया गया। यह बरताब के के सामीक साब किया गया था लेकिन चूँकि इस समाचारकी सरकारी क्यते पुष्टि नहीं हुई है; इसलिये स्वभावतः हम इसके सम्बन्धमें कार्रवाई नहीं कर सकते। मुझे मानूम हुआ है कि उस व्यक्तिने इस बारेमें बरके एवर्नरसे शिकायत की थी।

मैंने आपकी पुस्तिकाओंको पर्याप्त सावधानीसे पढ़ लिया है। मैं आपको उनके सम्बन्धमें लिखना चाहता हूँ लेकिन लगता है इस सत्याह नहीं सिख सचूँगा।

जैसा हमने जोहानिसर्वगमें किया था मैं बनाक्रमक प्रतिरोध की नीतिनतापर सर्वोत्तम निबन्धकी विनियुति देनेका यम्भीरतासे विचार कर रहा हूँ। लेकिन मुझे इस मामलेमें डॉ महतासे समाह करनी है। अगर वे पुरस्कार देंगे तो हम विनियुति दे देंगे। लेकिन हम ऐसा तमी करेंगे जब डॉ कू से बातचीत असफल हो जायेगी।

श्री डोककी पुस्तक अभीतक प्रकाशित नहीं हुई है। बकनूरके प्रथम सत्याहमें प्रकाशित होनेकी सम्भावना है। मैं कुछ कारणोंसे जिन्हें इस सत्याह बतानेकी आवश्यकता नहीं है किताबका पूरा संस्करण खरीब देनेकी बात सोच रहा हूँ और इसमें मुझे और किसी बातसे भी डोकका ही खयाल ज्यादा है। वे सर्वथा असफल हो सकते हैं। अगर ऐसा हुआ तो उन्हें बहुत दुःख होगा। प्रकाशकने इसपर पूरा ध्यान नहीं दिया है और चूँकि इसकी बहुत-सी प्रतिपाई मुद्रत बाँटनी होगी मैं सोचता हूँ कि अपनी व्यक्तिगत भावनाओंकी एक और रककर इस कामको स्वयं करें। मेरा खयाल है, अगर कोई पाठ्य होना ली डॉ महता उसे पूरा करनेका जिम्मा ले लेंगे। मैंने इस मामलेमें उनसे पत्र-व्यवहार किया है। इसलिये आप कोई ऐसा पुस्तक-विज्ञान लिख सकते हैं जो किताब से से। सर्वोत्तम यह खैना कि कम्पागवाठ या समनमालके भाई या वे दोनों इस किताबको अकर बहुत-से लोगोंके पास स्वयं जायें। कुछ भी हो, आप किताब ऐस किसी भी पुस्तक-विज्ञेताको जयार न हें जिनपर आप पूरा विश्वास नहीं कर सकते।

मैंन आपको आज धार दिया है। मुझे लगता है कि अगर उन औरसे कनाताग बनाव डाना गया तो सम्भव है कि बातचीतमें सफलता मिल जाये। अब डॉ कू को प्रस्तुत

१. हेरिड काल ७ पृष्ठ ५।

२. डोकने लिखा था "मैलन कैंची पुस्तक-विज्ञेताके लिए २५ प्रतिशत के दौरे हैं। यह जमाने में तो वह सर्वोत्तम पुस्तक कर लेंगे। किसी भी व्यक्तिनी पुस्तक-विज्ञेताको जयार नहीं दिया जायेगा।"

३. यह सम्भव नहीं है।

सम्बन्धमें सब कुछ मान्य हो गया है और यदि उच्चारणकीय मन्त्रिमण्डल जल्दी ही समाप्त न हो गया तो कुछ किया जा सकता है।

हरमसे आपका,

द्वारा की हुई वफादी बंधनी प्रतिकी फौजी-जगत (एस० एन ५१ ४ ब) से।

२६७ शिष्टमण्डलकी यात्रा [- १२]

[सितम्बर १९, १९१९ के बारे]

मैं इस बारे ऐसा तो किन्तु नहीं सकता कि हम यहाँ से नहीं-वही हैं। हम कोई नू से १९ टापीसको मिले। उन्होंने कहा कि जनरल स्मट्स कानूनको रद्द करने और अनुक संख्यामें सिधियोंको स्थायी निवासके अनुमतिपत्र (परमिट) देनेकी बात मंजूर करते हैं। किन्तु यह बात उनके गले नहीं उतरती कि भारतीय शिक्षा-सम्बन्धी परीक्षामें उत्तीर्ण होकर अधिकारपूर्वक बहिष्य अधिकारमें आवें। इसलिए हमने कहा कि जबतक [प्रवेशका] अधिकार नहीं निम्नता तबतक रुकाई तो जारी ही रहेगी। जबतक यह अधिकार नहीं मिल जाता तबतक भारतकी प्रतिष्ठा नहीं होगी। रुकाई ट्रांसवाल्के भारतीयोंके स्थितित्व अधिकारकी रक्षाकी नहीं बल्कि भारतकी प्रतिष्ठा की है। कानूनमें समान अधिकार रखनेके बारे मझे ही स्पष्टतामें से न दिये जायें। उसका सहन किया जा सकता है। किन्तु कानूनमें अधिकार न देना तो भारतीयोंकी नाक काट देनेके समान होगा। बहुत बड़के बाव लॉर्ड नू ने यह मंजूर किया कि हमारी रुकाई खूब और अधिकार-सम्बन्धी है। उन्होंने जनरल स्मट्सको तार देना स्वीकार किया है। अब उत्तर क्या जाता है, यह देखना है। इससे क्याबा क्या हो सकता है? हमने लॉर्ड नू से साफ कह दिया है कि यदि जनरल स्मट्स हमारी मांग स्वीकार न करेंगे तो हम समझेंगे कि अभी हमने पत्राचार कट नहीं उठाने हैं पर हम और भी कष्ट उठानेके लिए तैयार हैं।

उक्त बातचीत करते-करते भारतमें जारी संघर्षके सम्बन्धमें भी बात हुई। ऐसा दिखाई देता है कि श्री पीलरक भारतमें जो बीड़-भूषण कर रहे हैं उससे [हमारे मामलेको] बहुत बड़ा मिला रहा है। बम्बईकी विपद् समाका तार यहकि अजबार्थमें बहुत अच्छी तरह छाया गया था। उसके अनुसार समान [सरकारसे] माँग की गई कि विरमिटियोंको नेटाक सेवाना बन्द किया जाये। श्री पीलरके आपससे जोन बहुत आश्चर्यमें आवे। नामप्यनकी मृत्युकी खबरसे भी वे बहुत दुःख हुए। इसके अलावा जो जोन निर्बाधित किये दये हैं उनकी सहायताके लिए क्या भी शुरू किया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह सभा बहुत ही अच्छी हुई।

बोहालिसमर्से भीनिर्वाकी विरलतारी बेजबाधियोंके लिए समानमें सानेका साठ इन्तजाम न करने और श्री बरलोनकी आलोचनाके बारेमें जो तार जाये हैं वे भी सूभ हैं। इसमें शक नहीं कि हमारे ऊपर ज्यों-ज्यों ज्यादा तकलीफें जाती हैं, हम त्यों-त्यों ज्यादा दुःख होते जाते हैं और त्यों-त्यों हमें [संघर्षमें] सहयोग मिलता है। हम स्वयं कष्ट उठ रहे हैं, लॉर्ड नू भी इसीलिए हमारे वास्ते उठकर प्रयास कर रहे हैं।

काँई नू ने यह भी कहा है कि यदि कहीं जनरल स्मट्स हमारी माँग मंजूर न करें तो हमें संघ-संसद (यूनिपन पार्लियामेंट)की राह देखनी चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि हमें संसदकी बैठक होने तक सड़ाई जारी रखना है। यदि हम सड़ाई बन्द कर देंगे तो समस्त दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयोंकी हाजत बुरी हो जायेगी और वेसा भी स्वयंसेवकोंके कहा है हम सारे भारतकी माक अपने हाथसे काटने और फायर भी साबित होंगे।

किन्तु मुझे यह कहनेमें बरा भी संकोच नहीं है कि जो भारतीय इस समय बहादुरी दिखा रहे हैं वे ऐसे हैं कि मृत्युपर्यन्त सड़ते रहेंगे। मुझे आशा है कि जो माई बेससे घूटे हैं वे बेस जानेके लिए तैयार ही हैं और जब सरकार गिरफ्तार करेगी तब बेसका स्वागत करेंगे। मैं आशा करता हूँ कि श्री बाबू मुहम्मद भी इस पत्रके पहुँचने तक बेसमें विराजते होंगे। मेरे विचारसे हमारा बेसमें रहकर मरना बेसके बाहर तन्मुस्त रहकर जीनेसे अच्छा है। ऐसा करनेसे हमारी इज्जत रहती है और उद्योगोंमें भारतकी सेवा है। यह समय दुःख करनेका नहीं बल्कि कष्टके लिए बचाई देनेका है। जिस देशमें निर्दोष लोगोंपर मुसामी सारी बाटी हो उन्हें सजा भी बाटी हो उस देशमें सभी अच्छे लोगोंको बेसमें ही बानम्ब और मुस मानना चाहिए। यह विचार प्रत्येक भारतीय औरको अपने मनमें अंकित कर लेना है।

मैं पहले बरा चुका हूँ कि यदि जनरल स्मट्सका जवाब निराशाजनक होगा तो हमें यहाँ कुछ समय तक सार्वजनिक सभा आदि करके फिर बेस जानेके लिए दक्षिण आफ्रिका बापस पहुँच जाना चाहिए। इस बीच यह भी विचार करना है कि हमें भारत जाना चाहिए या नहीं। इस सम्बन्धमें मैं स्वयं तो कोई निश्चित निर्णय नहीं कर सकता।

[बुधपरीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-१०-१९१९

२६८. पत्र मणिलास गांधीजी

[कम्बन]

सितम्बर १७ १९१९

वि मणिलास

श्री बेस्टके सम्बन्धमें तुम्हारा पिछली २१ तारीखका पत्र पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इस पत्रको मैंने दो बार पढ़ा है। मुझे तुम्हारे ऊपर गर्व हुआ और मेरे ऐसा पुत्र है, इसके लिए मैंने ईश्वरका अनुग्रह माना। मैं कामना करता हूँ कि तुम सदा ऐसे ही बने रहो। ली सिद्धा नहीं है कि परोपकार किया जाये दूसरोंकी सेवा की जाये और ऐसा करनेमें मनमें बरा भी अविमान न कामा जाये। तुम क्यो-क्यो उम्रमें बड़े होते जाओगे लो-लो तुम्हें इसका अधिक अनुभव होता जायेगा। रोबियोंकी सेवाके मार्गसे अच्छा मार्ग दूसरा क्या होगा? इसमें बहुत-कुछ अर्थ था आशा है।

भी बेस्टको चुनेका छोरबा और बूखी बीजे की गई, इस बारेमें हमें नियम बुझि रखनी चाहिए। मेरे विचार तो तुम्हें माफूम है। छोरबा' बिये बिना बाका छरीरपात होना तो वह मुझे मंजूर या केकिन बा की अनुमति बिना में तो उन्हें छोरबा हरजिन न देने देता। वेह आत्मासे प्यारी न होनी चाहिए। जो मनुष्य आत्माको जानता है और बेहसे आत्माके असंग होनेकी बात भी जानता है वह हिंसात्मक उपायोंसे बेहकी रखा न करेगा। यह काम बहुत मुश्किल है केकिन जिसके संस्कार बहुत पवित्र हैं वह इस बातको सहज ही समझता है और उसपर आचरण करता है। यह मायता बहुत मूल-भरी है कि आत्मा बेहमें रहकर ही मजा या कुरा कर सकती है। इस मायताके कारण संसारमें भोर पाप हुए हैं और सब भी हो रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम इस मायतासे मुक्त छो। आत्मज्ञान बड़ी आयु पाकर ही होता हो यह कोई नियम नहीं है। बहुत-से बूख आत्मज्ञानके बिना ही मर जाते हैं। बूखी भोर स्वर्गीय राजबन्धुमाई जैसे पुख्य जाठ बर्षकी आयुमें ही आत्माको पहचान सके हैं। आत्मज्ञान होनेपर भी मनुष्यसे मुक्त होती है पाप हीठा है। परन्तु इस सबसे बहुत विचार करनेपर छूटकारा हो सकता है। बेह हमें बमन करनेके क्रिय ही मिली है।

समझीतेका अभी कोई निश्चय नहीं है। इस बारेमें विशेष कबनमाईके पत्रमें देखना। ऊपर जो-कुछ लिखा है वह प्रसंगबध ही है। इसे बूखे माइयोंको भी पढ़ा देता।

मोहनदासके आधीर्बाद

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूल बुखपटी प्रति (सी डब्ल्यू ८९) से।

छोत्रम्य सुखीकावेन गांधी।

२६९ पत्र मारणदास गांधीको

कव्य

सितम्बर १७ १९१९

वि मारणदास

वि छाननासका पत्र आया है। उससे देखता हूँ कि वह अभी नहीं न आ सकेपा क्योंकि भी बेस्ट अचानक सख्त बीमार हो गये हैं। बीसे राम रखेगा बीसे रहता पड़ेगा। फिर हर्ष-विपाद क्या करें? तुम मुसे पत्र लिखते रहना। अभी समझीतेकी बात चल ही रही है। यह नहीं कहा जा सकता कि इसका परिणाम क्या होगा।

भी बुधालमाईको और बैबामाईको बखबन्।

मोहनदासके आधीर्बाद

गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मूल बुखपटी प्रति (सी डब्ल्यू ४८९७) से।

छोत्रम्य मारणदास गांधी।

१. यहाँ बखूरपटी का कमीर बीमारीका कव्य है जिसे डॉ. कव्यजीने कव्यी बीमारीका नाम दी थी। देखिए अक्षरकव्य, भाग ४, कव्य २८।

२. यह कव्य यहाँ है।

२७० भारतीय मुस्लिम लीगकी सम्मेलन शाखाको लिखे पत्रका मसविदा

[सन्त
सितम्बर १७ १९ १के बाद]

मन्त्री
व्यक्तिगत भारतीय मुस्लिम लीग
सम्मेलन शाखा
प्रिय महोदय

द्राम्बवासके सिष्टमन्त्रको बोहानिसर्गसे नीचे लिखा तार भिजा है
कम्की लना बोधीली। लड़ाई जारी रखनेका बूढ़ संकल्प। प्रस्तावोंमें टिहा कोषोंको
बपाई प्रतिनिधियोंपर पूर्ण विश्वासकी पुनराभिप्यक्ति उनके प्रयत्नोंकी हार्दिक सराहना
पूर्ण समर्थनकी पुनः प्रतिज्ञा, बरतानके उस बक्तव्यका विरोध जो सरकार द्वारा लखन
न होनेकी स्थितिमें एशियाइयोंकी बुद्धिमें सरकारी नीतिका छोटछ। रमजानम मुसलमान
करियोंको विशेष भोजन देनेकी प्रार्थना नामंजूर।

मै आपका भ्याल विद्येय रूपसे इस तारके जाखिरी अनुच्छेदकी ओर दिखाता हूँ। इससे
प्रकट होता है कि जो ब्रिटिश भारतीय मुसलमान द्राम्बवासमें बस गये हैं और जिन्हें बर्न
और विवेकठ आभारपर एशियाई कानूनके नामसे प्रसिद्ध कानूनकी अबाहेलना करने और
अपने इस कार्यके लिए कैद भुगतनेकी जरूरत महसूस हुई है उनकी सामिक भावनाओंको
द्राम्बवासकी सरकारने यहरी ठेस पहुँचाई है।

जो ब्रिटिश मन्त्रा सब बर्नोंका सम्मान करता है उसीके नीचे मुसलमान अनाक्रमक
प्रतिरोधियोंको एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सामिक बतका पालन करनेसे रोका जा रहा है। यह
एक पम्मीर मामला है। मुझे आशा है कि लीग इस बारेमें फौरन कार्यवाई करेगी।

मै यह भी बतला हूँ कि पिछले घाऊ फोक्सरस्टकी खेसमें रमजानके महीनेमें मुसलमान
अनाक्रमक प्रतिरोधियोंको भुविबाएँ दी गई थी।

आपका आदि

द्वारर किये हुए अंग्रेजी मसविदेकी फोटी-नकल (एस एन ५१७९) से

नेटासक सिष्टमण्डल

नेटासके संसदोंग अकिस भारतीय मुस्लिम लीगके नेता बैरिस्टर अबी इमामवे मुककाट की। इमाम साहबने मरब बेनेका बाबा किया है। अमके हुण्टे वे द्वास्तवासके सम्बन्धमें भी कैफियत सुनेने। ग्यायमूर्ति जमीर अबी अल्लामु-परिवर्तनके किय मये वे वे अब बापस जा गये हैं। उन्होंने भी पूरी मरब करनेका बचन दिया है। सिष्टमण्डलने लॉर्ड कू से जो उत्तर मांगा था वह मिळ गया है। उसमें लॉर्ड कू कहते हैं

जो कष्ट वर्तमान कानूनके अमलमे उत्पन्न होते हैं या जो कष्ट वर्तमान कानूनमें परिवर्तन करनेसे ही दूर हो सकते हैं उनके सम्बन्धमें ब्रिटिश सरकार नेटास सरकारसे सिर्फ सिफररिज कर सकती है। वह उनके सम्बन्धमें पूरा हस्तक्षेप नहीं कर सकती। लेकिन यदि नये कानूनमें कोई ऐसी बात हो तो उसको नामनूर करनेका एक ब्रिटिश सरकारको हासिल है। नेटासमें भारतीयोंपर जो कष्ट आते हैं उनके सम्बन्धमें ब्रिटिश सरकारकी सहायगुनीय भारतीयोंके साथ है। बड़ी-बड़ी शिकायतोंके सम्बन्धमें जैसे बिकेटा-परवाना अधिनियम (डीसर्स साइसेंस ऐक्ट) में बपीसका एक न होनेके सम्बन्धमें वह नेटास-सरकारको लिख भी चुकी है। इसके अलावा [भारतीयोंके] व्यापारको हानि पहुँचानेवाला जो कानून मंनूर किया गया है, उसपर बस्तसत करनेसे साम्राज्य सरकारने इनकार कर दिया है। अब अधिष्पके सम्बन्धमें साम्राज्य सरकार आशा करती है कि संसद-संसद (यूनियन पार्लियामेंट) जिसको भारतीयों और दूसरे काले लोगोंके सम्बन्धमें कानून बनानेका अधिकार दिया गया है, ज्यादा उदारता बिसायेवी और भारतीयोंको राहत मिलेगी।

यह उत्तर अत्यन्त निराशाजनक है। इसमें अब फिर नेटास सरकारको किलनेका बचन नहीं दिया गया है। संसद-संसदके हाथमें सिर्फ ज्योर्जोपर कामू होनेवाले कानून बनानेका विषय रहता है किन्तु ब्रिटेन-परवाना अधिनियम (डीसर्स साइसेंस ऐक्ट) नामके किय एक-पर कामू होता है इसकिये उसमें नेटासकी संसद ही बहुत-कुछ परिवर्तन कर सकती है। अतः संसद-संसदकी कार्रवाईका काळज बर्बाद है। फिर भारतीयोंको विरमिटके अस्तर्धत प्रेमना बन्द करनेकी माँग सम्बन्धमें कुछ भी उत्तर नहीं दिया गया है। इससे सिष्टमण्डलन लॉर्ड कू से फिर उत्तर माँगनेका विचार किया है। इस सम्बन्धमें ऊपर किले अनुसार पत्र भी टीपार किया गया है। अब सिष्टमण्डल सर मंचरजी और ग्यायमूर्ति जमीर अबी आदि संसदोंकी उम्माह केकर उस बनावको मेव देना।

रमनाज सरीफ दूर होनेसे भी हामी हनीव और अन्ध संसद रोने रब रहे हैं। वे सब हाकमें बौस्टर अमूरुद्दमानकी बहनके बर रहने चले गये हैं। इस प्रकार उनके किय रमनाज मनानेकी पूरी सुविधा है।

पट्टी और पारसी सत्याग्रही

सोमवारको पारसियों की पट्टी की। इसलिये उसको मनानेके लिए यहूकि मुख्य पारसी सञ्जन और महिषार्ण टेम्स नदीके तटपर एक होटलमें बाबतके लिए गये थे। उसमें सर मंचरजी भावनगरीकी मार्फ्त ट्रान्सवास और मेटालक प्रतिनिधि भी निमन्त्रित किये गये थे। कामम पत्रास सञ्जन उपस्थित थे। सर मंचरजी अध्यक्ष थे। इस मण्डलीमें भारतके पितामह दादाभाई नौरोजीकी दो पोतियां भी थीं। जब टोल् सेकर सुनकामना प्रकट करनेकी बारी आई तो श्री गांधीने पारसी जातिके टोल्में सर मंचरजीके साथ श्री इस्तगमी श्री खोराबजी भी धापुरकी रबेरिया और नादिरभा कामाके नाम भी देनेकी सलाह की। इनका समामें स्थापत किया गया। अन्य प्रतिनिधियोंमें से श्री बांसिम्या ही उपस्थित थे। उन्होंने भी मंचरजीके अनुकूल भाषण देते हुए सर मंचरजीको उनके प्रयत्नोंके लिए धन्यवाद दिया। भारतकी इस बुद्ध-भाषाको सबने ध्यानसे सुना और उससे सबके मनमें सहानुभूति उत्पन्न हुई।

[युजरटीसे]

इंडियन ओपिनियन १९-१-१९९

२७२ पत्र डॉ. कृ. के निधी सचिवको

[सन्देश]

दिसम्बर १८ १९९

महोदय

मिन् तार ओहानिसबसे मिले हैं पहला भीनी संघकी ओरसे और दूसरा ब्रिटिस भारतीय संघकी ओरसे

पहला तार

ओहानिसबसे

दिसम्बर, १९ १९९

अध्यक्ष सहित ८ भीनी निरक्षार। पूरी सामर्थ्यसे मनाक्रमक प्रतिरोध करनेका संकल्प और अधिक बुद्ध।

दूसरा तार

ओहानिसबसे

दिसम्बर १९ १९९

कलकी लम्बा ओशीली। लड़ाई जारी रखनेका बुद्ध संकल्प। प्रस्तावोंमें रिहा लीयोंको बचाई प्रतिनिधियोंके पूर्ण विरुद्धकी पुनराभिप्यक्ति उनके प्रयत्नोंकी हारिक लक्ष्यका पूर्ण समर्थनकी पुनः प्रतिता बरमानके उक्त बक्ष्यका विरोध की सरकार

द्वारा सम्पन्न न होनेकी स्थितिमें एशियाईयोंकी बुद्धिमें सरकारी नीतिका दोषक।
रमजानमें मुसलमान कैदियोंको विशेष भोजन देनेकी प्रार्थना नामंजूर।

मेरे छात्रोंकी और मेरी नम्र सम्मतिमें इन तारोंसे प्रकट होता है कि द्वाय्वाकमें
ब्रिटिश भारतीय समाज और प्रकटत नीनी समाज भी प्रतिरोध जारी रखनेका पक्का इरादा
रखते हैं। मैं यह भी कहना चाहूँगा कि अगर नीनी संघ द्वारा मेरी गई विरक्तारियोंकी
संख्याक सम्बन्धमें तारमें ही कोई गलती नहीं हो गई है तो यह पक्का ही मौका है जब
सरकारने इतनी बड़ी संख्यामें नीनियोंको विरक्तार करना उचित समझा है। ब्रायोडनके
बीरानमें मुझे एक भी ऐसा बखतर याद नहीं आता जब स्वयं भारतीय समाजमें से एक ही
बनह और एक साथ इतने क्रोध विरक्तार किये गये हों। तथापि तारोंसे यह बात साफ हो
जाती है कि सरकार द्वारा उद्यमे कर्मोंने एशियाई लोगोंको कमजोर करनेके बजाय उर्गे
और ताकत भी है।

सरकार द्वारा भी बरलानके इस आशयके बकलम्पका सम्पन्न न किया जाना कि
एशियाईयोंको इससे सबड़ बाहर करना बोरे लोगोंका कर्तव्य है कुछ दुर्भाग्यकी बात है।
इस बकलम्पका जन्मेक मैंने अपने १ सितम्बरके पत्रमें भी किया है। इसी प्रकार, रमजानके
महीनेमें बिसमें मुसलमान अपने बर्मेके अनुसार रोने रखते हैं, मुसलमान कैदियोंको उनके
भोजनके सम्बन्धमें विशेष सुविधाएँ देनेसे इनकार करना भी दुर्भाग्यपूर्ण है। मुझे विश्वास
है कि कौई भी इसमें मुझसे सहमत होंगे। मैं उनका म्यान इस बातकी ओर आकर्षित करता
हूँ कि मैं जब पिछले साल फोक्सरस्टमें कैदकी सजा मुक्त रहा था तब मैंने देखा था कि
रमजानमें मेरे उन छात्रों कैदियोंको जो मुसलमान से विशेष सुविधाएँ थी गई थीं।

क्या आप यह पत्र कौई महोदयके सम्मुख पेश करनेकी कृपा करेंगे?

आपका आदि,
मो क पाँची

कॉन्ग्रेसिअल बोर्डिंग रेकर्ड २९१/१४२ और टाइप भी हुई बरतरी अंग्रेजी प्रतिका
फोटो-कॉपी (एन एन ५ ८२) से भी।

१ देखिए एन ३९८-९९। इनमेंसे कायौंकाही २३ सितम्बरकी दिल्लीमें लिखा गया था कि उस पत्र-
आवृत्तकी बकलम्पका जन्मेक तारोंकी नेत्रक मुसलमान कैदियोंके बर्मे के बखतरके विरक्तार सम्बन्धी कमी
रमजानमें देनी।

२७३ पत्र लॉर्ड मॉर्लेके निजी सचिवको

[सन्धन]

सितम्बर १८ १९ ९

महोदय

मैं इसके साथ परम माननीय उपनिवेश मन्त्रीको बेजे गये पत्रकी^१ प्रतिकृति भेज रहा हूँ और आपसे निवेदन करता हूँ कि आप इसे लॉर्ड मॉर्लेके सामने पेश कर दें।

मैं लॉर्ड महोदयका ध्यान इस बातकी ओर लास तीरसे आकषिप्त करना चाहता हूँ कि ट्राम्पबालके अधिकारियोंने रमजानके महीनेमें रोमा रखनेके धार्मिक घण्टे सम्बन्धमें मुख्यमान कैदियोंको मुक्तिबाएँ देनेसे इनकार कर दिया है। मेरी विनीत सम्मतिमें ट्राम्पबालके अधिकारियोंने अपनी मर्जीको जबरबस्ती मनवानेका जो यह तरीका अस्तिपार किया है वह निरक्षय ही गया है क्योंकि इसका अर्थ कैदियोंपर उनके धर्मके माध्यमसे हमला करना है।

आपका आशि

मो० क० गांधी

इदिया ऑफिस रेकॉर्ड्स ३९ २/ ९ और टाइट की हुई दस्तावे अंग्रेजी प्रतिकृति फोन्गेनकल (एम एन ५ ८१) है।

२७४ पत्र लॉर्ड एंस्टहिलको

[सन्धन]

सितम्बर १८, १९ ९

लॉर्ड महोदय

ट्राम्पबालके ब्रिटिश भारतीयोंके लिए धीमान्ने जो-कुछ किया है और जो-कुछ कर रहे हैं उनके लिए भी हामी हबीब और मैं आपको विनया धन्यवाद दें बोड़ा है।

धीमान्क इस मुर्दागत अवस्थाके समय मैं धीमान्को कष्ट नहीं देना चाहता। फिर भी मुझे छपता है कि लॉर्ड कू को मैंने जो पत्र^१ भेजा है उसकी प्रतिकृति और उनके साथ जो भेंट हुई उनका नाम^२ आपको भेजनेके लिए मैं वर्तमान-बद्ध हूँ। मैंने इसको लेगाबद्ध करना प्यारा अर्थात् मयता।

१. डेजि "विनया धन्यवाद"।

२. डेजि "पत्र: लॉर्ड कू के निजी सचिवको" पृष्ठ ४२१-२२।

३. डेजि "लॉर्ड कू के निजी सचिवको" पृष्ठ ४ ८११।

यदि सर जॉर्ज फेरारकी सक्रिय सहानुभूति प्राप्त की जा सकती है तो मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि मले ही जनरल स्मट्स जॉर्ज जू को प्रतिकूल उत्तर दें उनको सर जॉर्जकी बात तो चुननी ही होगी।

यदि जनरल स्मट्सका उत्तर प्रतिकूल आता है तो मैं नहीं सोचता कि श्री हार्वी हबीब और मेरे लिए दक्षिण आफ्रिकाको रखना होता सम्भव होगा। मैं यह अनुभव करता हूँ कि हमें अपनी रवानगीसे पूर्व यहाँ कुछ सार्वजनिक कार्य करना आवश्यक होगा।

हम आशा करते हैं कि आपका अवकाश जैसै बोलेंगे और मझे विपवास है आपको दृष्टिगत विधायक मिश्या जिसके आप अधिकारी हैं।

आपका वार्ड,

टाइप की हुई बफटी अंग्रेजी प्रिंटींग फोटो-ग्राफ (एस एन ५ ८४) से।

२७५ पत्र उपनिवेश-उपसचिवको^१

[सम्पन्न]

सितम्बर २ १९९

महोदय

नेटाजके प्रवासी-प्रतिबन्धक विभागकी ओरसे मेरे साथी श्री कामर भायालके नाम भेजा गया एक पत्र वहाँ उनकी अनुपस्थितिमें आया है। श्री अमोब भायालने एक मौखिकीके लिए, जिसे पीटरमैरिट्सबर्गमें मस्त्रिबका और एक मबरसेका काम सम्माप्तना है एक अस्थायी आवाजाही (डिबिटिंग) पासकी मांग करते हुए जो जर्जी वी वी यह पत्र उसीके उत्तरमें भेजा गया है। यह जर्जी पीटरमैरिट्सबर्गके सम्पूर्ण मुस्लिम समाजकी ओरसे और उसके ही नामसे भेजी गई थी। मैं इसके साथ पूर्वोक्त पत्रकी एक नकल भेज रहा हूँ।

मैं साहसपूर्वक यह मान केता हूँ कि जॉर्ज जू उन ब्रिटिश भारतीय मुसलमानोंकी भावनाओंका आकलन कर सकेंगे जो उस उपनिवेशमें ईमानदारीसे अपनी जीविका कमानके उद्देश्यसे बसे हैं। मैं और मेरे सहकारी मानते हैं कि प्रवासी-प्रतिबन्धक विभागके इस पत्रसे मनुष्यके नाते ब्रिटिश प्रजाके नाते और उतना ही मुसलमान होनेके नाते हमारी भावनाओंको कड़ी चोट पहुँची है। प्रवासी अधिकारियोंको सात ठीरसे यह आश्चर्य दे दिया

१. इस पत्रमें वर टी० नारायणरावजी छद्म हैं किन्तु इस वाक्य प्रत्यक्ष है कि प्रसिद्ध नारायणराव वा। रोडके नामसे १४ अक्टूबर, १९१६ के पत्रमें लिखा जा पीटरमैरिट्सबर्गमें मौखिकीके विषयमें (नेटाजके प्रतिनिधियोंसे केन्द्रे इत्यादि) भेजा हुआ वाक्य वर ओरदार है और बहुत बलवान है, केवल मात्र कीर्तित, कठोर लिखावट बहुत रही है। जो कहते हैं कि वकीलके केवल आश्चर्यकी दृष्टिसे बहुत कटप होता है। इस वाक्य है कि वाक्य हठकर देना कोई दोष नहीं कल्प पत्रमें। मैं इस पत्रकी अपनी वाक्यापी पुस्तकी परिशिष्टकी तरह दे रहा हूँ। वह वाक्यकी दृष्टिसे रिक्तता वाक्य होता है और जर्मने जॉर्ज नेट ही जोग नहीं बघ है। " वीकने वर वर कल्पे व् हेनेडी जॉर्ज वृन्दावर कल्पक पुस्तिकामें परिशिष्ट-कीके पत्रमें बहुत लिखा जा। देखिए " वर: कल्पि कल्पी" एच ४३२-३३।

मया या कि इस मौसमीकी जरूरत सिर्फ़ धार्मिक कार्योंके लिए है और वह व्यापारमें या किसी भी दूसरे व्यवसायमें नहीं पढ़गा और इसलिए किसीके साथ प्रतियोगिता नहीं करेगा।

पूर्वोक्त साधारण बर्गी मजूर करानेके लिए हमारे समाजको इतनी भारी मेहनत करनी पड़े और यह बर्गी इतने आपत्तिजनक बग़ैरे मजूर की भाँये—और वह भी एक ऐसे मामलेमें जिसका उपनिवेशकी आर्थिक नीतिसे कहीं कोई सम्बन्ध नहीं है सिर्फ़ यह बात बाहिर करता है कि ब्रिटिश भारतीयोंको नेटालमें कौसी बुद्धवामी अपमानजनक और कठिन परिस्थितियोंमें रूतना पड़ता है। बाबासाही (बिबिसिन्धि) पास सिर्फ़ तीन ही महीनोंके लिए क्यों किया गया है उस हर विमाहीके बाद गया करानेके लिए क्यों कहा गया है और जब उसे मया किया जाये तब हर बार उसके साथ बीस डिभिग भरनेकी बण्ड-बीसी घाँट क्यों कपाई गई है—ये सारी बातें हमारी समझके बाहिर हैं। इस सिष्टमण्डलकी नज़र रायमें ऐसी नीति बरवान्त झूटापूर्ण ही कही जा सकती है। वह भारतीय समाजकी सहन-शक्तिपर भारी बोझ लावती है। हमारे सिष्टमण्डलके यहाँ रहते हुए, मैं नम्रतापूर्वक यह अनुरोध करता हूँ कि सर्वोच्च नेटालमें भारतीयोंकी इस बिसंगत स्थितिपर यन्नीरतापूर्वक विचार करें। हम मानते हैं कि ऐसी स्थिति साम्राज्यकी सुरक्षाका—उस साम्राज्यकी सुरक्षाका—ख़याल करते हुए, जिसके प्रभावजन होनेका भारतीयोंको अभी तक बर्ब रूतना है अधिक काम तक नहीं बसाई जा सकती और न बसाई जानी चाहिए। और इसका कारण यह है कि वह असह्य है। हम अपने प्रति समाजका हममें जो विश्वास है उसके प्रति और साम्राज्यके प्रति अन्याय करेंगे यदि हम सर्वोच्च महोदयको इस बातकी प्रतीति नहीं करा देते कि नेटालमें ब्रिटिश भारतीयोंके साथ जो अपमानजनक व्यवहार किया जा रहा है वह उनके हृदयमें ज़ुलमकी तरह चुभता है और यह हास्यत्रिध बिन हरसे मुजर भावेगी उस दिन—वह दिन कमी भी आ सकता है—क्या परिणाम होने उगकी कल्पना करना कठिन है।

मैंने अपनी बात अपने साथी प्रतिनिधियोंकी सम्मतिसे किचित् आवेसपूर्वक लिखी है, किन्तु यह आवेस अबसरकी माँगके अनुसार जितना होगा चाहिए उससे ज्यादा नहीं है।

जापका आवि

एम० सी० आंगलिया

[अंग्रेजीसे]

कमोन्सियस ऑफिस रेकर्ड्स १७९/२५५।

२७६ पत्र सॉर्डू के निजी सचिवको

[सन्धन]

सितम्बर २१, १९९

महोदय

पी हामी हबीबको और मुझे मालूम हुआ था कि ट्रान्सवाल्के ब्रिटिश घाटीयोको समस्या हल करनेके लिए वो माउन्टेड फल रही पी उसके सम्बन्धमें सॉर्डू बनरज स्मट्सको एक टारट मेम्बरैवाके से। क्या मैं जान सकता हूँ कि इस टारका बनरज स्मट्सने कोई जवाब दिया है वा नहीं?'

बापका भादि,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

कॉन्वियस ऑफिस रेकॉर्ड २९१/१४२।

२७७ पत्र एच० एस० एस० पोलकको

[सन्धन]

सितम्बर २१ १९९

प्रिय हेतपी

मुझे बापका अवेलाइज्ड छोटा पत्र मिला। रमबानके महीनेमें बुकिबार्ड सेनेटे अधिकारियोके इनकारके सम्बन्धमें बोइनिंसबर्मसे पत्र सप्टाइ प्राप्त टारकी तन्त्रक मीने भेज ही पी।

बहिज भारतीय मुस्लिम लीगकी कल्पना थाबा हाप भारतीय केन्द्रीय लीगको भेजे गये टारकी तन्त्रक इसके साथ भेज रहा हूँ।' बाबा है बाप बम्बईसे केन्द्रीय लीगके साथ पत्र-व्यवहार कर रहे हूँ।

१. सॉर्डू ने वर कहा कि मैं पी गांधी और बापी लीगके एक अन्वी माउन्टेड एरिजन एरजे कन्वन्स एरजे मेव सेवे और सॉर्डू एरजेकी माउन्टेड वेक दिने ये पंजीयके उद्योगको माल केनेर भी बोर से, देखिए "सॉर्डू से मीला पत्र" पृष्ठ ४२१ और पृष्ठ २४ पी।

२. एक अन्वी गांधीकी ४ अन्वीकी अन्वीके अन्वीका वह वर मिला था: "दुम्बानके ब्रिटिश भारतीयके एरजे एरजेके से विज्याक बापको और बाबा बापको से एरजे लकी एरजेका थी है। सिद्धे एरजेके १६ एरजेके सॉर्डू एरजेके अन्वी मीने वर बापको वो वर एरजेकर मिया है, अन्वी बापको एरजेके एरजेके मेव ही गई पी। ल एर बापकोकी बापको एरजे हुर एरजे एरजेके एरजेके वर एरजे है कि वह पी एरजेके एरजेके हुर बापको कापुल एरजेके मिया है वा नहीं।"

३. एरजे था वर वा "भारतीय विज्याकको दुम्बानके एरजे मिला। एरजेका एरजेके सेवेको एरजेके एरजेके थी वर वर। एरजे एरजेके वर।"

मे इस बातमें आपसे बिल्कुल सहमत हूँ कि समाका रर किया जाना आन्दोलनके पक्षमें बढ़िया विज्ञापन रहा और उससे अधिकारियोंकी मूर्खताका भी उतना ही अच्छा विज्ञापन हो गया।'

ऐडवोकेट जॉन्स इंडिया का आक्षेप बिल्कुल पूर्वजापूर्ण है।' उससे पत्र और उसके सेलरके अतिरिक्त अन्य किसीकी हानि नहीं हो सकती। यदि भी बाडियाग उसका समाधान कर दिया हो तो ठीक ही है। यदि उन्होंने न किया हा तो भी मेरा धयाक है उससे कोई फरक नहीं पड़ता। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जिस कठरणमें यह आक्षेप या वह [आपके भेजे] कठरणोंके दो पैकेटोंमें नहीं मिली। मेरा खयाक है कल्याणरासने या बिसेने भी कठरणें बनाई हों अक्स ही यह सोचा होगा कि वह अनुष्ठेय इतना तिर स्कार-मोष्य है कि यहाँ रहनेवाले हम लोगोंको उसे देखना भी नहीं चाहिए।

मुझे अबतक सौंठे कू का उत्तर नहीं मिला है। मैं याद दिवानेके लिए एक बिट्टी भेज रहा हूँ।

मैं आपको भजे अपने पत्रोंके लोले जानेकी बात समझ सकता हूँ लेकिन आपको भेजे मिलीके पत्र इतरतन छोटे चाते हैं यह बात मेरी समझमें नहीं आती। हम बाधा करें, इन पत्रोंको पढ़नेसे पढ़नेवालोंकी झल-बूझ हुई होगी और उनको पत्नी-नक्तिका अर्थ भी मानूम हो गया होगा। किसीक पत्रोंसे उनको पूरी-पूरी सिखा मिक नई होगी।

यदि स्पद्सका उत्तर अनुकूल न हुआ तो यहसे मेरी खानगी अभी एक महीनेतक और सम्भव नहीं है। मैं मायर अब यहाँ हूँ। मैंने उसके घेंटका समय मोगा है। यदि पत्नी ही संघर मंग न हुई तो अब यहाँका मौसम सार्वजनिक कार्यके लिए अनुकूल है।

मेरा खयाक है आपको यह नहीं मिला है कि मैं जिन भारतीय महिलाओंसे मिक सकता हूँ उन सबसे मिक रहा हूँ और उनसे इंडियन ओपियियन के सम्पादकके नाम

१. जन्मे ४ डिसेम्बरके वरने भी बोल्डने लिखा था "संस्कृती कई उपासे हमारे कार्यक विर ही हुना है। लसे दुष्प्रभावकी ओर लोगोंका ध्यान दिया है; कई दुष्-सुख लोगोंमें प्रसार कर गया है हमारी भूमिका लख हुई है तथा भी कीरीकाह भेदका मल परिवर्तित हुआ है। वे लन वने कसप्रसे कार्यमें ला गये हैं। वह समा किये, देवी उरुका मिकेका विचल है, देवी काजक नहीं मिकी काकिरकार राज्यकी ही मे तारीख १४ को हीने। उरुकरने कालराय भूक की भी, किन्तु डेरिने कूसंतक। उरुा मिसा ही मिका जन और क्यारका है। उरुकरने लन जन्मी गली मन्तुल की है और डेरिक की मी। लसे मिय लना-काका भी की है (बरा कलना करें) और समाके मिय दात्र होके दे दिया है।

२. भी बोल्डने ल लकनमें परवीनीका। ४ डिसेम्बरको लिखा था "भी बीबोने कर्नरके मन्मी डेरि उरुकरने भी गलाकामी भी, वह दूर कर दिना है मीरैम हारा ऐडवोकेट जॉन्स इंडियाके सुदर भी कर्नरक जेने दिने गये हैं जन्मे लन लकी जन्म वरने। वह उरुकर लनापूर्ण है कर्नरके उरुकरके मन्म कालरायका लक कर्नरक लर मी मे लसे मन्म लना था। मुझे मन्म हुना है कि वह (पीरैम) वरा कर्नर है। मेरा लकन है लक २ बरिदा लक लक इति। मे लकी दे लूया।" मन्म-वने ऐडवोकेट को मन्म दिया था। डेरि "लर रीरैमिये लौक इतिहा की" लख ४१४-१५।

३. डेरि लिखा लौक।

४. १४ जनूकरकी बीबोने लके इरने लिखा था: "किसीक लनेके छोटे लनेके विचरने लन हम लनेमें लना लरिनु है। मुझे लना है कि लनेके मेम-लन मिकेके दिन बीर मुके है। मुज लने लरमुत्ति है, लर मीे किसीकी लकन मेमकी लिखा लेके लरिदर लकी लकी दिया है।"

२७६ पत्र लॉर्ड कू के निजी सचिवको

[सन्धन]

सितम्बर २१ १९०९

महोदय

भी हाथी हथौथको बीर मुझे मालूम हुआ था कि ट्रान्सवालके ब्रिटिश भारतीयोंकी समस्या हल करनेके लिए जो बातचीत चल रही थी उसके सम्बन्धमें लॉर्ड कू बनारस स्मट्सको एक तार^१ भेजनेवाले थे। क्या मैं जान सकता हूँ कि इस तारका बनारस स्मट्सने कोई जबाब दिया है या नहीं ?^१

आपका खास
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

कॉन्वियस ऑफिस रेकॉर्ड २११/१४२।

२७७. पत्र एच० एस० एल० पोलकको

[सन्धन]

सितम्बर २१ १९०९

प्रिय हेतरी

मुझे आपका अपेक्षाकृत छोटा पत्र मिला। रमजातके महीनेमें बुकिंगार्थ दिनेसे अधिकाधिक इतकारके सम्बन्धमें जोहानिसबर्गसे पत्र सप्लाई प्राप्त तारकी तफ़्फ़ी मैंने भेज दी थी।

असल भारतीय मुस्लिम लीगकी सम्वन क्षात्ता द्वारा भारतकी केन्द्रीय लीगको भेजे गये तारकी तफ़्फ़ी इसके साथ भेज रहा हूँ। आशा है आप सम्वर्ति केन्द्रीय लीगके साथ पत्र-सम्बन्धकार कर रहे होंगे।

१. लॉर्ड कू से यह ज्ञात हुआ था कि वे गांधीजी और हाथी हथौथके साथ अपनी बातचीतका परिणाम तारसे बनारस स्मट्सको भेज दिये और लॉर्ड कूसे बयानकी माँगमें एक दिने गये गांधीजीके उद्देश्यकी माम केनेर भी भेज दिये; रेकॉर्ड "लॉर्ड कू से मिला तार" इस ४११ और परिशिष्ट १४ की।

२. इसके उपरान्त गांधीजीकी ४ अक्टूबरकी अनिश्चित कार्यवाहीका यह एक मिला था: "दुल्हनवाले ब्रिटिश भारतीयोंके प्रश्नके सम्बन्धमें वे विचारण जातेसे लॉर्ड कूका बालबाली से उम्मेदें काली सम्वन्धन करी है। इसके उपरान्त १९ तारीखकी लॉर्ड कूके भेजे गये तार माले भी एक अनिश्चित मिला है, जसमें बालबालीकी अनिश्चित उल्लासकी भेज दी गई थी। यह सब बालबालीकी बालमें रहते हुए उनके अनिश्चित उल्लासकी यह एक ज्ञात है कि वह भी अन्तमें उल्लासे हुए बालबाली बालमें रहते हुए भेजे गये हैं या नहीं।"

३. इसमें कहा गया था: "भारतीय विद्यमानको दुल्हनवाले तार मिला। दुल्हनवाले उल्लासकी बालबालीके उल्लासमें करी को कर। इससे करी करे।"

गुजरातीमें ऐसे पत्र से रहा हूँ जो आम्बोकागको उत्तेजन देनेवाले और भारतीय नारियोंकी निष्पक्षकी सहायता करनेवाले हों। आपने मुझे सूचित किया था कि आप भारतीय रिजर्वोंकी एक समारंभ आपस देनेवाले हैं। आप उनसे जितने पत्र के चर्कों से हैं। आप उनसे अंग्रेजीमें भी पत्र हैं। अंग्रेजीमें पत्र न लेनेका कोई कारण नहीं है। मैं गुजराती रिजर्वोंसे गुजरातीमें सिद्धे पत्र से रहा हूँ क्योंकि मेरी जिज्ञासा यह है कि वे अपनी मातृभाषाकी उपेक्षा न करें। एक पत्र श्रीमती हुबेका है। वे अत्यन्त मनोहारी व्यक्तिगतकी उत्तर भारतीय महिला हैं। वे बम्बईमें रही हैं इसलिए गुजराती पत्र और सिद्ध सकती हैं। दूरत पत्र श्रीमती के ही विनयाका है। वे कुछ समय इंग्लैंडमें रही हैं और अब अपने पत्रिके साथ यूरोपमें यात्रा कर रही हैं। आप श्रीमती पेटिट श्रीमती रामदे और अन्य महिलाओंसे पत्र हैं। कुमारी बिटारबोटम अपनी सीरसे कौटुंबिक हैं। मैंने सुझाव दिया है कि अनेक नारियाँ सहायतापूर्वक पत्र हैं और अनाक्रमक प्रतिरोधियोंकी पीड़ित पत्नियों और पुत्रियोंके कष्ट-मोचनके लिए थोड़ा-थोड़ा चन्दा भी हैं। मैं इसी प्रकारकी बात बहूँके लिए भी सुझाव चाहता हूँ। मैं रकमपर जोर नहीं देता बल्कि इस बातपर जोर देता हूँ कि प्रत्येक सुसंस्कृत भारतीय स्त्री ट्रांसवाल्की अपनी बहूँके लिए कुछ दे चाहे वह एक पैसा ही हो। मैं इसका भारतमें अधिकतम प्रचार करूँगा। कोई कारण नहीं है कि रिजर्वोंकी एक समारंभ क्यों न की जाये। उसमें सिर्फ प्रस्ताव पास किये जायें।

अनाक्रमक प्रतिरोधके सम्बन्धमें जैसे हमने बोहानिसरामोंमें पुरस्कारकी घोषणा करते निबन्ध लिखावे वे बीसा ही एक निबन्ध मैं यहाँ और एक भारतमें लिखानेका विचार कर रहा हूँ। मैंने डॉ. मेहताके सम्मुख प्रस्ताव रखा था कि पुरस्कार दे दें। उन्होंने इस बारेमें विचार कर लिया है और वे पुरस्कार देनेके लिए रवाना हैं। मैं इसकी निबन्धावली बनाऊँगा और उसकी एक प्रतिभिरि आपको भेजूँगा किन्तु यह अपने सप्ताह करूँगा। इस बीच आप इन प्रश्नों पर विचार करें

१ भारतमें निर्णायक कील-कील हों?

२ पुरस्कार किसके नामसे दिया जाये?

- १ रामकुमारी हुबेका पत्र पत्र ११-९-१९०९ के इंडियन ओपिनियनमें छाया था।
- २ लुधियानाई केकुमार काक्यारी विनयाका पत्र पत्र ११-१९-१९ के इंडियन ओपिनियनमें छाया था।
- ३ कुमारी कर्करेस मिटरबोटमका पत्र पत्र १५-१२-१९ के इंडियन ओपिनियनमें "उत्प्रेक्षाओंकी बसिन्तोंकी उत्प्रेक्षा" शीर्षके सहायक हुआ था। उसके सम्बन्ध दिवसा भारतीय द्वायसिद्धका पत्र ११-१२-१९ के इंडियन ओपिनियनमें लल शीर्षके छाया था "एक अंग्रेज कील पत्र उत्प्रेक्षाओंकी बसिन्तोंके सम्बन्ध"।

४ बोम्बेके उत्तरी लिखा था "एक बालक मरणा हुआ है कि बात सम्बन्धी भारतीय महिलाओंसे सम्बन्ध बनाने हुए हैं। मैं अपनेलके द्वारा श्रीमती श्रीमती काक्यारी पत्र लिखा बनेकी कोशिश कर रहा हूँ। श्रीमती रामदेकी उत्तरी महिलाओंसे सम्बन्धकी महिलाओंके लिए उत्प्रेक्षाओंके एक मञ्च बन गया है की कलरी उन्हें मेरा दिया जायेगा। समझते हुए अधिकारोंके लिए उत्प्रेक्षा हैं श्रीमती के लिए लिखकर भी मेरेकी। श्रीमती पेटिट लाल तो कभी सुझाते पत्र मेरेकी और मैं कलसे अनुप्रेक्षा करूँगे कि वे दूरकी महिलाओंसे भी देना करकेके लिए करें। महिलाओंके एक उत्प्रेक्षा केना-करके किन्तोंकी उत्प्रेक्षाके लिए ५ कलसे उत्प्रेक्षाके मेरे हैं। वे और भी कलसे देंगी। सम्बन्ध किन्तोंकी उत्तरी मञ्च बन करवा कील करी या कलसेके सुझाते बसिन्तोंकी बसिन्तों की कलसे करकेके हैं।"

इस विषयमें बोड़ी सावधानी बरतनी होगी क्योंकि यह स्पष्ट है यद्यपि बात आश्चर्यजनक मनेगी कि बहूँ लोग जनाश्रमक प्रतिरोधका बिलकुल नहीं समझते और यदि हमें बहूँ कोई ऐसा निरन्ध्र सिद्धान्त हो जिसका कुछ भी भान हो सके तो उसमें भारतमें सार्वजनिक आन्दोलनोंपर अनाश्रमक प्रतिरोधके प्रभावोंपर पूरी मरबन्धा होगी चाहिए। आप इस सम्बन्धमें प्रो बोयले और अन्य लोगोंसे बातचीत कर सकते हैं। पुरस्कारकी रकम ५ पीठ यहाँ और ५ पीठ बहूँ हो सकती है ताकि हम दोनों देशोंमें अच्छे छसकोंको जाह्नपित कर सकें। मैं भी मायरा, डॉ किडरबर्ग और अन्य लोगोंसे सहाह करनेवाला हूँ। यदि यहाँ सार्वजनिक रूपसे कोई कार्रवाई करनी हो तो इस पुरस्कार-निबन्धसे दान्तवासके मामलेका व्यापक विज्ञापन हो जायगा।'

नेटालके मित्रोंमेंसे श्री एच एम ब्राथ वेरिस पहले बने हैं। उनका अन्तिम छन्द्य पत्रका है।

मेरा खयाल है श्री उमर और ईसा हामी सुमार बनी आपके साथ ही है।

मुझे सूझती सभाके सम्बन्धमें आपका ठार मिसा। मैं समझता हूँ कि दूसरी सभाएँ भी अच्छी रही होंगी और आपके सब प्रस्ताव भारतके बाइसपयको भेजे जा रहे होंगे।

डॉ मेहता यहाँ है और कुछ दिन रहेंगे। वे रविवारको वेरिसके लिए और पड़ोसी सारीशको मार्गेश्वरसे रंगूनके लिए रवाना हूँगे। ४ २९ अक्तूबरको रंगून पहुँचेंगे। आप जहाँ भी हों मेरा खयाल है आप डॉ मेहतासे पत्र-व्यवहार करके रंगून हाँ जायें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। डॉ मेहता आपका पत्र मिल्नेसे पहले आपको न लिख सकेंगे क्योंकि उनको आपका पता नहीं माबूम होया। उनका खयाल है कि आपके रंगून जानेका विचार अच्छा रहेगा। यहाँ एक सभा की जा सकती है। किन्तु जो भी हो मेरी चिन्ता यह है कि आप दोनों एक-दूसरेसे मिल सकें। यदि श्री उमर आपके साथ जायें तो यह और भी अच्छा होना। यहाँ कई मेमन और सूखी वेद्यमन्त्र है। हमारे मित्र मदनजीव' तो यहाँ मिलेंगे ही आप बहूँ संसारकी सबसे ज्यादा स्वतन्त्र नारियोंकी भी देख सकेंगे।' कलकत्तासे तीन दिन और मद्राससे चार दिन सगते हैं इसलिए आप जहाँ भी हों बहूँसे रंगून जा सकते हैं। मैं यहाँ समझता कि आप रंगूनमें एक सप्ताहसे अधिक रुकना सकते हैं। किन्तु यदि आपके पास समय कम रहे, तो कम समय दे सकते हैं। डॉ मेहताका पता यह है १४ म्यूस स्ट्रीट रंगून।

१. बोयले इस विषयमें बोझसे उलझ करवा करते थे। वह वह भी जानना चाहते थे कि प्रोफेसर मन्नाकरकर विचारित करना लीकार करते या नहीं।

२. मदनजीव आन्ध्रप्रदेश; देखिय आन्ध्रप्रदेशमें यही एक एक है; १८९८ में यही यही सन्देश करनेसे कल्पनेमन्त्र विरलिय वेत बोम और अर्थात् छात्रागले १९ ३ में इंडियन ओरिएन्टलियन टुक किया १९ ४ से किन्तु संरक्षण यही यही करते बने; देखिय क्लर ३ १३ ३०।

३. बोयले बल दिया: "मैं भी छात्रकी समेत आया स्वतंत्र नारियोंकी कल्पनेकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। फिर मैं मिलने कलकत्तासे बालजीव बलका, बली कम करवाते केवरीयके साथ मैं बोझ-ली यी यी। यदि वे जानते करते मैं कलकत्ता की कल्पनेकी ओरियन बलके, ताकि और अर्थात् किन्तुकी देख लूँ भी छुने कलका गा है, वह दृष्टिसे इतिहास कर दूनेका बल करती है। और बल बोम को एक बार दृष्टा विराट करनेवाले हैं उन्हें भी बल कर देती है। छुने ही कलका है कि वे बल ही करती है।"

युवराज्यमें ऐसे पत्र से रहा हूँ जो आन्दोलनको उत्तेजन देनेवाले और भारतीय नारियोंकी निष्ठाकी सहायता करनेवाले हों। आपने मुझे सूचित किया था कि आप भारतीय स्वियोंकी एक सभामें भाषण देनेवाले हैं। आप उनसे बिलकुल पत्र से रुकें छे लें। आप उनसे अंग्रेजीमें भी पत्र छें। अंग्रेजीमें पत्र न लिखना कोई कारण नहीं है। मैं युवराज्यी स्वियोंके युवराज्यमें लिखे पत्र से रहा हूँ क्योंकि मेरी चिन्ता यह है कि वे अपनी मशूभावाकी खोसा न करें। एक पत्र खीमती सुबेका है। वे मस्यस्त मनोहारी व्यक्तित्वकी उत्तर भारतीय महिला ह। वे बम्बईमें रही है इसलिये युवराज्यी पत्र और मिल सकती है। वृत्त पत्र खीमती के सी विमलाका है। वे कुछ समय बर्बनमें रही है और अब अपने पतिके साथ यूरोपमें भाषा कर रही है। आप खीमती पेटिट, खीमती राजडे और अन्य महिलासोपे पत्र छें। कुमायी विटरबॉन्ग अपनी घरसे लीट आई है। मैंने सुसाब बिया है कि अंग्रेज नारियाँ सहानुभूतिका पत्र हैं और अनाक्रमक प्रतिरोधियोंकी पीड़ित पत्नियों और पुत्रियोंके कष्ट-मोचनके लिए बोझा-बोझा बन्वा भी हैं। मैं इसी प्रकारकी बात बहूँके लिए भी सुसाबा बाहता हूँ। मैं एकमपर खोर नहीं बैठा बल्कि इस बातपर खोर बैठा हूँ कि प्रत्येक सुसंस्कृत भारतीय स्त्री द्वान्द्वबालकी अपनी बहनोके लिए कुछ दे चाहे वह एक पैसा ही हो। मैं इसका भारतमें अधिकतम प्रचार करूँगा। कोई कारण नहीं है कि स्वियोंकी एक सभा भी क्यों न की जाये। उसमें सिर्फ प्रस्ताव पास किये जायें।

अनाक्रमक प्रतिरोधके सम्बन्धमें जैसे हमने बोहानिसवर्गमें पुरस्कारकी घोषणा करके निबन्ध लिखावे वे बीधा ही एक निबन्ध मैं यहाँ और एक भारतमें मित्रानेका विचार कर रहा हूँ। मैंने डॉ. मेहताके सम्मुख प्रस्ताव रखा था कि पुरस्कार वे हैं। उन्होंने इस बारेमें विचार कर लिया है और वे पुरस्कार देनेके लिए राजामन्त्र हैं। मैं इसकी निबन्धावली बधा मूँगा और उसकी एक प्रतिकृति आपको भेजूँगा किन्तु यह बताने सप्टाह करूँगा। इस बीच आप इन प्रश्नों पर विचार करें

- १ भारतमें निर्मायक जीवन-जीन हों?
- २ पुरस्कार किसके नामसे दिया जाये?

१ रामकुमारी सुबेका पत्र पत्र ११-१-१९ ९ के इंडियन ओपिनियनमें छपा था।

२ सुकरबई कैकुला कान्धारी निबन्धाका पत्र पत्र ११ १०-१९ ९ के इंडियन ओपिनियनमें छपा था।

३ कुमायी कर्बोरस विटरबॉन्गका पत्र पत्र १५ १९-१९ ९ के इंडियन ओपिनियनमें "उत्प्लाखीवोंकी प्रतिरोधी समीप" शीर्षके अधाकित छपा था। इसके सम्बन्धा लिखा भारतीय दाम्निबन्धा पत्र पत्र ११ १९ १९ ९ के इंडियन ओपिनियनमें लख शीर्षके छपा था "पत्र अंग्रेज जीवन पत्र उत्प्लाखीवोंकी प्रतिरोधी सम्पत्ति।"

४ बोलेज्जे लखरी लिखा था "कथ नाम्कर प्रवक्ता हूँ कि काय कन्दरी परकीय मरिभन्ते सम्बन्ध बनावे हुए है। मैं बोलेज्जे द्वारा जीवनकी उत्कीर्णता नाम्काकी पत्र कथिता बनेकी बोधिब कर रहा हूँ। जीवनकी उत्कीर्णता उत्कीर्ण मरिभन्तेके सम्बन्धाकी मरिभन्तेके सिद्ध उत्प्लाखीवोंकी पत्र प्रवक्ता बतत किया है जो कन्दरी कर्बोरस देरा बन्धेप। सम्बन्धे उक्त मरिभन्तेके सिद्ध सम्बन्धर है जो के सिद्ध सम्बन्धर की भेरींती। जीवनकी उत्कीर्णता सम्बन्धे ही सम्बन्धे पत्र भेरींती और मैं कन्ते अस्तुतेन करूँगे कि वे उत्कीर्ण मरिभन्तेकी बी देला करनेके सिद्ध हों। बरिभन्तेके पत्र संशय देवा-उरकने सिद्धोंकी उत्प्लाखीवोंके सिद्ध पत्र कन्ते उत्प्लाखीवोंके मेरे है। वे और भी कन्दा देंगी। सम्बन्धे सिद्धोंकी सम्बन्धे प्रवक्ता बतत करवा मीद नहीं वा कन्तेके सम्बन्धे अधिभन्तेकी प्रतिरोधी सम्बन्धे की कन्ते अन्तिका भी।"

इस विषयमें बोड़ी सावधानी बरतनी होगी क्योंकि यह स्पष्ट है यद्यपि बात आरक्ष्य बतक स्त्री की कि वह कि लोग बनाक्रमक प्रतिरोधको बिलकुल नहीं समझते और यदि हमें वहाँ कोई ऐसा निबन्ध लिखाना हो जिसका कुछ भी काम हो सके तो उसमें भारतमें सार्वजनिक आन्दोलनोंपर अनाक्रमक प्रतिरोधके प्रभावोंपर पूरी बरेपना होनी चाहिए। वाप इस सम्बन्धमें प्रो मोखसे और अन्य लोगोंसे बातचीत कर सकते हैं। पुरस्कारकी रकम ५ पाँड वहाँ और ५ पाँड वहाँ हो सकती है ताकि हम दोनों देशोंमें अच्छे लेखकोंको आकर्षित कर सकें। मैं श्री मायर, डॉ बिलफर्ड और अन्य लोगोंसे सलाह करनेवाला हूँ। यदि यहाँ सार्वजनिक रूपसे कोई कार्रवाई करनी हो तो इस पुरस्कार-निबन्धसे द्वाग्वदासके मामलेका व्यापक विज्ञापन हो जायेगा।^१

नेटालके मिश्रोंमेंसे श्री एच एम बवात पेरिस चले गये हैं। उनका अन्तिम छन्द पत्रका है।

मेरा ख्यास है श्री उमर और ईसा हाथी सुमार बनी आपके साथ ही है।

मुझे सूरतकी समाके सम्बन्धमें आपका पत्र मिला। मैं समझता हूँ कि बूचरी समाएँ भी अच्छी रही होंगी और आपके सब प्रस्ताव भारतके वास्तव्यको भेजे जा रहे होंगे।

डॉ मेहता यहाँ हैं और कुछ दिन रहेंगे। वे उद्विचारको पेरिसके लिए और पहाड़ी टापीसको मासेलीबसे रंपूनके लिए रवाना होंगे। वे २३ अक्टूबरको रंगून पहुँचेंगे। आप वहाँ भी हों मेरा ख्यास है आप डॉ मेहतासे पत्र-व्यवहार करके रंपून जा जायें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। डॉ मेहता आपका पत्र मिलनेसे पहले आपके पास मिल सकेंगे क्योंकि उनको आपका पता नहीं मालूम होता। उनका खयाल है कि आपके रागुम जानेका विचार अच्छा रहेगा। वहाँ एक समा की जा सकती है। किन्तु जो भी हो मेरी चिन्ता यह है कि आप दोनों एक-दूसरेसे मिल सकें। यदि श्री उमर आपके साथ जायें तो यह और भी अच्छा होता। वहाँ कई मेमन और सूरती बसभक्त हैं। हमारे मित्र मदनजीत^२ तो वहाँ मिलेंगे ही आप वहाँ संसारकी सबसे ज्यादा स्वतन्त्र मारियोंकी भी देख सकेंगे। कसकतासे तीन दिन और मद्राससे चार दिन सकते हैं इसलिए आप वहाँ भी हों वहाँस रंगून जा सकते हैं। मैं नहीं समझता कि आप रंगूनमें एक सप्ताहसे अधिक लगा सकते हैं। किन्तु यदि आपके पास समय कम रहे तो कम समय है सकते हैं। डॉ मेहताका पता यह है १४ मुगल स्ट्रीट रंगून।

१ पोल्टर इस निबन्धमें मोखसेसे उल्लेख करना चाहते थे। वह वह भी चन्द्रा चाहते थे कि प्रोफेसर अन्वारुद्दर निर्दोषक कल्पना खींचकर करेंगे वा नहीं।

२. मद्रकवीर आन्ध्रप्रदेश, इंडियन नासिकामें वर्षीकिक पत्र छापी; १८९८ में वर्षीकीकी उल्लेखपर वर्षीकिके लखनऊके मिर्चिन्ड वेड डीस, और वर्षीकी उल्लेखसे १९ ३ में इंडियन ओपिबिषयक छुट किया १९ ४ से निरुद्ध उल्लेख वापीकी करते क्ले; देखिए क्ले ३ पृष्ठ २००।

३. वर्षीकिके उल्लेख किया - मैं श्री संसारकी लसे आन्ध्र लखन मद्रिबोकी केकनेकी मदीया कर रहा हूँ। फिर मैं निरुद्धि क्लेक वामेने बातचीत करनेवा बेसी क्ले क्लेकारमें केवरीकरके साथ मिले बोरी-सी श्री श्री। वरुसि जानेसे पहले मैं मकलार श्री क्लेकी बोधिब क्लेक, ताकि मेरु आसिकी क्लेकी देख लूँ श्री मुझे क्लेका पता है, वह क्लेक वरिषयण कर वृषीकिके करण करती है। और बात श्री श्री क्लेक वरु वरु विषय करनेवासे है, क्लेकी मद्रा कर लेती है। लुने ही क्लेका है कि वे क्लेकी करती है।"

श्री ठाकरका सुझाव है कि हम इतने परीव है कि हमें कन्वन्की चिट्ठीके लिए ही जानेवाली एक बिल्लीकी बचत करनी चाहिए और कमसे-कम फिलहाल उसे बन्द कर देना चाहिए। मुझे भी ऐसा ही लपता है और मैं उनसे सहमत हूँ। फिर, यह देखते हुए कि आजकल असवारका उपयोग मुख्यतः अनाक्रमक प्रतिरोधके लिए किया जा रहा है क्या इस चिट्ठीको बन्द करनेमें बुद्धिमत्ता न होगी? कृपया मुझे अपनी सम्मति बापसी डाकसे दें।

यह सप्ताह फ्रीनिकससे बेस्ट और कुमारी बेस्टके सम्बन्धमें खबर बहुत आश्वासनप्रद मिली है। दोनों बिलकुल खतरसे बाहर हैं।

टाइप की हुई बस्तरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉप (पृष्ठ एन ५ ११) से।

२७८ कन्वन्

[सितम्बर २५, १९ ९ के पूर्व]

गैटलकस सिष्टमण्डल

इस सिष्टमण्डलकी गतिविधिके सम्बन्धमें कुछ ब्याबा नहीं कहना है। चिट्ठी-पत्री बन्द रही है। न्यायमूर्ति जमीर अलीसे भेंट हुई है। वे महानुभाव मिस्त्रिमिटियाका काम बन्द करनेको बहुत महत्त्व देते हैं। उन्होंने पूरी-पूरी सहायता देनेका वादा किया है। डॉ. बार्नेट नामके एक पाठरी है वे भी [प्रतिनिधिमोक्षे] मिलते रहते हैं।

श्री बरात इस सप्ताह पेरिस चले गये हैं। यह तय हुआ है कि वे बहसि इस्तम्बुल इस्तम्बुलके बहा और बहासे मफका खरीक आवेंगे।

भारतीयकी प्रथिया

यहकि डेही म्यूब असवारमें खबर है कि एक पाठरी सज्जनने ऐसी खोजकी है जिससे पाली इस्तखत बंदीरहकी बुझाया बहुत कम की जा सकती है। डेही म्यूब के संवाकशाताने जाने किबा है कि इस खोजकी सार्वजनिक परीक्षा कुछ दिनोंमें की जायेगी।

अजीबारके भारतीय

अजीबारमें भारतीयोंका जो कष्ट पठाने पड़ते हैं उनके सम्बन्धमें बहूँ एक सार्वजनिक सभा की गई थी। उसके बाद यहाँ तार आने। एक तार घर हेनरी कौटनके नाम आया है। यह इतिहास में लया है। उसके सम्बन्धमें कोकसभामें प्रश्न भी पूछा गया था। उत्तरमें यह कहा गया कि जब तारमें उल्लिखित अजीब जायेगी तब कोई कू पीप करेगे। मुझे आशा है कि अजीबारके भारतीय संघने आवेदनपत्र भेज दिया होगा। अगर न भेजा हो तो उसको समयपर भेज देना चाहिए।

१ इतिहास ओपिचिकनने ऑप्टरपरकी कन्वन्से डेही हुई चिट्ठी लगी थी।

२. बोल्डने कल दिया : " मुझे कन्वन्की चिट्ठी बन्द करनेका विचार कीड नहीं बन्दा कन्वन्ने अनाक्रमक प्रतिरोधकी एक ही ही बन्द बात है जो बस्तरी खतरसे इस्तम्बुल कन्वन्से कन्वने हुए है। कल बात थोड़ा बन्द, करें। बात बरी बंद है और कुमारी मिलते कन्व कर लगे है। "

डॉर्ड कर्जन बनाम डॉर्ड किचनर

परियामें जमी आम बुझा कौन सकेगा? " डॉर्ड कर्जन और डॉर्ड किचनरके बीच ऐसी ही स्थिति हो गई है। एक व्यक्तित्वने यह खोज निकाला है कि डॉर्ड कर्जनने भारतसे रवाना होते समय बीसा भापन दिया था बीसा ही भापन लगभग जन्हीं दार्जिलमें डॉर्ड किचनरने दिया। इससे सभी अनुमान करते हैं कि डॉर्ड किचनरने डॉर्ड कर्जनके बिचारोंकी खोरी की है। इस सम्बन्धमें अखबारोंमें बहुत खर्चा चल रही है। अगर बड़े बड़े खानेवाले लोग खोरी करें ता फिर छोटे सोपोंका क्या कहना?

स्त्रियोंके मताधिकारका आन्दोलन करनेवाली महिलायें

मताधिकारका आन्दोलन करनेवाली संघेन स्त्रियाँ बहीर हो गई हैं। उनमें से कुछने प्रथम मन्त्रीपर अनुचित आक्रमण किया इसलिये वे गिरफ्तार कर ली गईं। उनपर मुकद्दमा चलाया गया और उनको सजाएँ दे दी गईं। जेलमें उन्होंने खाना खानेसे इनकार कर दिया। ऐसा करनेमें उनका हेतु यह था कि उनको जेलसे छोड़ दिया जाये। किन्तु अधिकारी सेरपर सबासेर निकले और जन्हीं उनके पेटमें खबरबस्ती भोजन पहुँचा दिया है। भारतीय सत्याग्रहियोंको इससे सीखना यह है कि ये स्त्रियाँ सत्याग्रही नहीं हैं बल्कि अपना सरीर-बस आक्रमाने समी हैं। वे अब पिछड़ पायेंगी इसमें सन्देह नहीं है।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २३-१०-१९ ९

२७९ शिवमण्डलीकी यात्रा [-१३]

[दिसम्बर २५, १९ १९के पूर्व]

डॉर्ड जू के पाससे जमी कोई बिलेय उत्तर नहीं मिला। सम्भावना यह है कि उनका उत्तर असन्तोषजनक जायेगा। यह मान केनेका कोई कारण नहीं है कि अगर वह स्मद्ध बालन-कानन कहेंगे कि मैं डॉर्ड जू की सलाह मान लूँगा। किन्तु मैं इतना जानता हूँ कि यदि अगर स्मद्ध यह सलाह नहीं मानेंगे तो इसमें दोष हमारा ही माना जायेगा। इस हल्केमें इससे बचावा नहीं सिद्ध सकता।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २३-१०-१९ ९

२८० तार ब्रिटिश भारतीय सचको

[अन्वय]

सितम्बर २७ १९१९

बिम्बास

बोहानिसर्ग

हानी हबीबको तार मिला है कि तुरन्त जाओ। उनके सोपॉसि पूरी पूछाछ कर उत्तर दें।

नाबीबीके स्वाबरोमें बंगेजी मसजिदकी फोटो-नकल (एस एन ९ ९८) छ।

२८१ पत्र अमीर अलीको

[अन्वय]

सितम्बर २७ १९१९

प्रिय श्री अमीर अली

आपके पत्रके लिए बन्धबाध। आपने जिस पत्रका मसजिदा मेजा है, उसकी मीने एक साफ नकल तैयार कर ली है। इसपर आज हस्तगत हो जावेगी। श्री जादिसिया इसे लेकर आपके हाथ रिसे धरे समुपपर कछ आपसे मिलेंगे।

उपमन्त्रीको आ पत्र भेजा गया है उसमें उल्लिखित मामलेके तथ्य संक्षेपमें थे हैं।

नेटालकी राजधानी पीटरमैरिट्सबर्गमें मसजिदके लिए एक मौलवीकी जरूरत थी। मौलवीको मसजिदके मरसेमें मुबारिसका काम भी करना था। पुराना मौलवी जानेबाजा था। उसकी जगह से नये मौलवी मानेबाछे थे। नेटालके कानूनके अनुसार जो व्यक्ति उपनिवेशमें जाया चाहता है उसे कोई एक यूरोपीय भाषा जाननी चाहिए। लेकिन इस मौलवीको कोई यूरोपीय भाषा नहीं आती थी। इसलिये मसजिदकी जमातने अर्जी दी कि सरकार मौलवीको प्रवासीका मानी खाबी निवासीका हक न दे बल्कि उसे ऐसा प्रभावपत्र दे दे जिसके अनुसार वह उपनिवेशमें ठीक साठ रू छके। अर्जबारांने यह जमानत देनेका बारा किया कि मौलवी जबतक रहेगा कोई ब्यापार न करेगा और मीयाब बरतते होंगे ही नेटालसे जहा जावेगा। बहुत हस्तजारके बाद सरकारने उत्तर दिया कि यह अनुमति दे दी जायेगी लेकिन इस

१. २१ सितम्बरके इस पत्रमें लिखा था: "मसजिदके लिए कन्वार्। अम्बिद-उपमन्त्रीको लिखे पत्रमें कित्त मामलेका आपने जल्दबा किया है, जल्दबा पूरा किराने कम्पनी बाधते मेकनेकी जना करें।" मन्त्र को जादिसिया बंगेजको दोहरते लगे ठीक वने रिपोर्ट पत्र था जहाँ ही छुटे कन्वार् किराने कन्वार् हीनी। मैं बह कन्वार् बरत कर रहा हूँ। बने बरत बरत कर मसजिदके लिए हस्ताक्षर करवाने और कन्वार् बने मेक हैं।"

२. दंडित "२१: अम्बिद-उपमन्त्री" पृष्ठ ४२४-४२५।

घर्षपर कि प्रमाणपत्र हर तीसरे महीने बदलना किया जाये और उसपर हर बार एक पाँचका स्टाम्प लगाया जाये।

यही जायसिया आपको यह पत्र दिखा देंगे। आप इसके मीटरों बर्षको देखें तो मामूम हो जायेगा कि यह कितना अपमानजनक है। मेरी राय यह है कि एक आत्माभिमानी चातिके गर्ते हम इन सन्तापजनक घटकोंको मंजूर नहीं कर सकते। मेरी राय यह भी है कि हर तीसरे महीने प्रमाणपत्र बदलवानेकी और उसपर एक पाँचका स्टाम्प लगानेकी शर्त बेहयादिके साथ कटना ही है।

आपका भावि

टाइप की हुई पत्तरी संवेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५ ९९) से।

२८२ पत्र मणिलाल गांधीको

[अन्वय]

सितम्बर २७ १९९

वि मणिलाल

तुम्हारा पत्र मिला।

“तुम्हें क्या करना है? — इस सवालसे तुम बचप घरे। अगर इसका उत्तर तुम्हारी ओरसे मे ई तो यह कहूँगा कि तुम्हें अपना कर्तव्य पूरा करना है। तुम्हारा वर्तमान कर्तव्य माता-पिताकी सेवा करना अतिता ही उनके उठना सम्भयन करना और खेती करना है। तुम्हें भविष्यकी चिन्ता नहीं करनी है; उसकी चिन्ता तुम्हारे माता-पिताको है। जब वे न रहेंगे तब तुम उसकी चिन्ता करना। इतना तो निश्चित मान लेना चाहिए कि तुम्हें बैरिस्टर या डॉक्टरका पन्ना नहीं करना है। हम गरीब हैं और गरीब रहना चाहते हैं। पैसैकी आवश्यकता केवल भरण-पोषणके लिए होती है। और जो मेहनत करते हैं भरण-पोषण उनको मिल ही जाता है। अधिनियमको उठाना हमारा काम है क्योंकि उसके द्वारा हम अपनी आत्माको खोज सकते हैं और देवकी सेवा कर सकते हैं। इतना पक्की तरह मान लेना कि मैं तुम्हारी चिन्ता सदा करता रहता हूँ। मनुष्यका वास्तविक कर्तव्य यही है कि वह अपना परिण बनाये। कमालके लिए ही कुछ खास सीखना जरूरी हो सा बात नहीं है। जो व्यक्ति कमी नीतिका मार्ग नहीं छोड़ता वह कमी भूँको नहीं भरता और ऐसा अवसर ना जामे तो अमनीत नहीं होता। तुम निश्चिन्त रहकर वहाँ जो सम्भयन करते बने करते रहता। यह कियते हुए तुमसे मिलने और तुम्हें हृदयसे काम लेनेका भी होता है। और पैसा ही नहीं एकता इसलिए आँखोंमें पानी भर भर आता है। भरोसा रसो बापू कमी तुम्हारे प्रति निर्भरता नहीं करतेमा। मैं जो कुछ करता हूँ तुम्हारे लिए हितकर समझकर ही करता हूँ। तुम यह मान लो कि तुम भटकने नहीं क्योंकि तुम दूसरे लोगोंकी सेवा कर रहे हो।

मोहनदासके आशीर्वाद

बाबीजीके स्वागतोंमें मूळ पुनपटी प्रति (सी बन्व ९) से।

शीत्रम्य मुजीलावेन बाबी।

२८० तार ब्रिटिश भारतीय सचको

[सम्बन्ध]

सितम्बर २७ १९१९

बिबास

बोहानिसदस्य

हानी हबीबको तार मिला है कि दुरस्त लीडो। उनके छोरोसे पूरी पूछताछ कर उत्तर दें।

गांधीजीके स्वासुरोंमें अयेनी मसबिबेकी फोटो-गफस (एस एन ५०९८) से।

२८१ पत्र अमीर अलीको

[सम्बन्ध]

सितम्बर २७ १९१९

मिय श्री अमीर अली

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। आपने बिना पत्रका मसबिबा भेजा है उसकी मैंने एक छाफ नकल तैयार कर ली है। इसपर आज दस्तखत हो जायेंगे। श्री भागलिया इसे फिर आपके हाथ दिखे वसे धमकपर फल आपसे मिलेगे।

उपमन्त्रीको जो पत्र भेजा गया है उसमें उल्लिखित मामलेके तन्म संक्षेपमें ये है

नेटालकी राजधानी पीटर्सबर्गमें मसबिबके लिए एक मीसबीकी जकरण थी। मीसबीको मसबिबके महरसेमें मुहरिसका काम भी करना था। पुराना मीसबी जानेवाला था। उसकी जगह ये नये मीसबी जानेवाके थे। नेटालके कानूनके अनुसार जो व्यक्ति उपनिवेशमें जाया चाहता है उस कोई एक यूरोपीय भाषा जाननी चाहिए। लेकिन इस मीसबीको कोई यूरोपीय भाषा नहीं आती थी इसलिए मसबिबकी जमातने अर्ची थी कि सरकार मीसबीको प्रवासीका पानी स्वाधी निवासीका हक न दे बल्कि उसे ऐसा प्रमाणपत्र दे दे जिसके अनुसार वह उपनिवेशमें तीन साल रह सके। अर्चदारोंने यह जमानत देनेका बारा दिया कि मीसबी जबतक खेवा कोई व्यापार न करेवा और मीसाब खत्म होते ही नेटालसे जाका जायेंगा। बहुत इन्तजारके बाद सरकारने उत्तर दिया कि यह अनुमति है ही जायेंगी लेकिन इस

१ २२ टिप्पणके शत पन्ने लिखा था: "मसबिबके लिए कल्पना। अन्वेषक-उपमन्त्रीको जिसे पन्ने लिख जायेंगेका आपने जल्दसे दिया है, जतना पूरा निराल जाली बाकसे मेकलेकी हवा करें। अगर जो भागलिया संजानाको दोबारेक ठाड़े तीन वसे रिपोर्ट करवा था जालें जो छुटे जल्दसे निकाल जतना दीये। मैं एक मसबिब जगस कर रहा हूँ। ये जगस करवा कर मसबिबके छेककर करवाने और जगसपूर्वक छेके भेज दें।"

२. देखिए "१२: अन्वेषक-उपमन्त्रीको" छा ४२४-४५।

पर्यन्त कि प्रमाणपत्र हर तीसरे महीने बरखना किया जाये और उसपर हर बार एक पीढका स्टाम्प लगाया जाये।

श्री बापकिया बापको यह पत्र दिखा देंगे। आप इसके नीचरी अर्थको देखें तो माफूम हो जायेगा कि यह कितना अपमानजनक है। मेरी उम्र यह है कि एक आत्मनिर्भरता की बातोंके नाते इन इन सन्तापजनक बातोंको मजूर नहीं कर सकते। मेरी उम्र यह भी है कि हर तीसरे महीने प्रमाणपत्र बरखवानेकी और उसपर एक पीढका स्टाम्प लगानेकी शर्त बहमादि काय छूटना ही है।

बापका भावि

दाशप की हुई दस्तवी संवेची प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५ ९९) छ।

२८२ पत्र मणिमाला गांधीको

[सम्पन्न]

सितम्बर २७ १९९

कि मणिमाला

तुम्हाय पत्र मिला।

“तुम्हें क्या करना है?” — इस सवालके तुम बचप यये। अगर इसका उत्तर तुम्हायी ओरसे मैं हूँ तो यह कर्तव्य कि तुम्हें अपना कर्तव्य पूरा करना है। तुम्हाय वर्तमान कर्तव्य माता-पिताकी सेवा करना मिठना हो सके उतना अध्ययन करना और खेती करना है। तुम्हें मरिप्यकी चिन्ता नहीं करनी है। उसकी चिन्ता तुम्हारे माता-पिताको है। जब वे न रहेंगे तब तुम उसकी चिन्ता करना। इतना तो निश्चय मान लेना चाहिए कि तुम्हें बैरिस्टर या डॉक्टरका धन्दा नहीं करना है। हम मरीब हैं और मरीब रहना चाहते हैं। पैसकी आवश्यकता केवल भरण-पोषणके लिए होती है। और जो मेहनत करते हैं भरण-पोषण उनको मिल ही जाता है। फीसिलको उठाना हमारा काम है, क्योंकि उसके द्वारा हम अपनी आत्माको जोर सकते हैं और वेष्टकी सेवा कर सकते हैं। इतना पक्की तरह मान लेना कि मैं तुम्हायी चिन्ता सबा करता रहूँगा हूँ। मनुष्यका वास्तविक कर्तव्य यही है कि वह अपना धर्म बनाये। कामाके लिए ही कुछ बाध सीखना पकरी हो सा बात नहीं है। जो व्यक्ति कमी नीतिकामार्ग नहीं छोड़ता वह कमी मूल्यों नहीं मरता और ऐसा अबसर जा जाये तो बयनीय नहीं होता। तुम निश्चय रहकर वहाँ जो अध्ययन करते बने करते रहना। यह लिखते हुए तुमसे मिलने और तुम्हें हृदयसे बगानेका भी होता है। और बीसा हो नहीं सकता फर्किन्ट बाँसोंमें पानी भर-भर जाता है। मरोठा रबो बापु कमी तुम्हारे प्रति निर्भयता नहीं बरसेगा। मैं जो-कुछ करता हूँ तुम्हारे लिए हितकर समझकर ही करता हूँ। तुम यह मान लो कि तुम मदकोमे नहीं क्योंकि तुम हृदये जीवोंकी सेवा कर रहे हो।

मोहनदासके बापीबादि

बाँसोंकीके स्वालरोंमें मूल बुजपती प्रति (डी डब्ल्यू ९) से।

धीरम्य सुधीकावेन गांधी।

२८३ पत्र 'एंडबोकेट ऑफ इंडिया' को

[सम्बन्ध]

सितम्बर २८, १९१९

सेवामें

सम्पादक

एंडबोकेट ऑफ इंडिया

[बम्बई]

महोदय

आपने भी अर्द्धापीर बोमनजी पेटिटके पत्रपर जप रही ९ टारीबकेन बंफमें जो पार टिप्पणी थी है और उसमें अन्य बातोंके साथ भी हैनरी एच एच पोल्कको बेतनमोपी एजेंट कहनेपर जो खेद प्रकट किया है उससे मुझे आपको यह पत्र लिखनेकी प्रेरणा मिली है।

आपने कहा है, "हमने भी पोल्कका उल्लेख बेतनमोपी एजेंटके रूपमें किया और कहा है कि उसके कारण उनके सम्बन्धमें हमारा खयाल कुछ नहीं होता। किन्तु यदि वे मझनु माव यह समझते हों कि इससे उनकी प्रतिष्ठापर बाध आती है और वे हमें विश्वास दिला सकते हों कि हमारी बात यथार्थ है तो हम उनसे खमा माँगनेके लिए तैयार हैं। मैं आशा करता हूँ, निम्न विवरणसे आपको विश्वास हो जायेगा कि आपकी बात यथार्थ है और आप ट्रान्स्वाल्डके ब्रिटिश भारतीयोंके बिनका प्रतिनिधित्व भी पोल्क करते हैं खमा माँगने क्योंकि भी पोल्कको खमा-भाषनाकी अपेक्षा नहीं है। यदि कोई गुणई हुई है तो उनके साथ हुई है बिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।

आप कहते हैं कि यदि वे बेतनमोपी एजेंट हों तो भी उनके सम्बन्धमें आपका खयाल कुछ नहीं होता। फिर भी आपके अग्रपेक्षकी विधि मैंने कई बार पढ़ा है ध्यान ऐसी है

१. यह है कि यह पत्र एंडबोकेट ऑफ इंडियामें प्रकाशित नहीं किया गया था। केवल जी वे पी० पेटिटने इसे ७-११-१९१९ के गुजरातीमें एंडबोकेट ऑफ इंडिया और जी वॉल्ड डॉर्नके द्वारा दिया था। उनके साथ यह परिष्कारपत्र वन भी लगा था "आपको यह होना कि कुछ हल्के हल्के एंडबोकेट ऑफ इंडियामें भी पोल्कको कानून बेतनमोपी एजेंट कहा था और इस तरह, वे नहीं अपने ट्रान्स्वाल्डके पीकित भारतीयोंको भरोसे की काम कर रहे हैं, उनके खयालको धरनेकी कीर्तित ही थी। भी पोल्कको खतरा जाति की ही सम्बन्धमें जाते मन्थे जाने सम्बन्धी बातें लिख, केवल अपने जातिको पूरी तरह खतरा केनेकी धारणाका वा जगता नहीं दिखाई। जब यह अखिलीन जातेपी कोर भी एंडबोकेट आन का लप कहने २८ डिसेम्बरकी सम्बन्धकी वह पत्र लिखा। इस पत्रको धर्म्य जाने कानून कतर दिन हो चुके हैं; केवल यह कमीठक प्रकाशित नहीं किया गया है। इस बात हवा करके इस पत्रकी अपने लक्ष्यमें काम देने। आपके धरनेमेंने इस पत्रकी व जगत्तर इस जातेमें, जो बहुत धर्या है अपने ठेक कानूनके अनुसार ही धर्या किया है।"

कि उससे भी पोलकके प्रयत्नोंका मुख्य निश्चय्येह बहुत कम हो जाता है। मैं उनको व्यक्तिगत रूपसे जानता हूँ वे मेरे प्रिय मित्र और भाई हैं। वे इस आन्दोलनमें सम्मिलित हुए, उन्होंने परीबीका घट किया और जोहानिसबर्गके एक साप्ताहिक पत्रके सहायक सम्पादकता पर छोड़ दिया। यदि वे सांसारिक सम्पदाओंके अभिषापी होते तो उनके लिए वह मौक़ी अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती थी। चार वर्षसे अधिक समय तक उन्होंने ब्रिटिश भारतीय समाजके कोषमें से एक पैसा भी नहीं किया क्योंकि उन्हें उसकी कोई जरूरत नहीं थी। इस पूरे समयमें वे इस समाजका काम करते रहे।

दाम्पत्यके संघर्षसे भी पोलक बहुत-से भारतीयोंकी भाँति ही अपनी आजीविका उपार्जित करनेके साधनोंसे या यों कहें कि बख़तरसे भी बञ्चित हो गये। तबसे भी पोलकने सम्मिलित कोषमें से रोनी जुगाने-भरको पैसा लिया है। हालाँकि उन्होंने अपना एक-एक मिनट संघर्षमें ही व्ययाया है। यदि मैं उनको कुछ भी जानता हूँ तो मैं यह कह सकता हूँ कि अगर समाजके पास अपने कार्यकर्ताओंको भोजन देने योग्य पर्याप्त पैसा न निकले तो भी श्री पोलक अपने काममें लगे रहेंगे और ज़रूरी होगा तो जिन कारणोंके पक्षमें वे बहुत-से बूढ़े लोगोंके साथ-साथ बकायत कर रहे हैं, उनके लिए न्याय प्राप्त करनेके प्रयत्नमें वे अपना जीवन भी दे देंगे।

आप या सम्बन्धि लोग नहीं जानते कि श्री पोलकने अपने विवाहके प्राथमिक दिनोंसे ही अपना बहुत कम समय अपनी पत्नीको दिया है और उनकी पत्नीने भी समय-व्यतिरिक्त रूपसे कम्बे विधीगको इसलिये खुशीसे सहा है कि उनका पति स्नेहसे प्रह्वन किये हुए अपने कर्तव्यको ब्यारा बन्धी तरह निभा सके।

मेरा अनुमान है कि "बेतनभोगी एजेंट" सर्वोंका वर्ष ऐसा प्रतिनिधि जो अपने कामका पर्याप्त मूल्य से केता है, और यद्यपि बख़तर ऐसा होता है कि वह अपना काम काफ़ी बन्धी तरह करता है, किन्तु फिर भी काम वह उस पैसके लिए करता है, जो उसे मिलता है न कि इसलिए अमूल्य काम उसको प्यारा होता है। एक पुत्र संपुत्र परिवारमें पुत्रका अपना कर्तव्य निभाता है। इनमें वह लूब मरता-मरता है। उसको कपड़ा और खाना परिवारके कोषमें से ही मिलता है। तब यदि हम उस पुत्रको बेतन-भोगी एजेंट कह सकें तो श्री पोलक भी निश्चय्येह बेतन भोगी एजेंट कहे जा सकते हैं ब्ययया नहीं।

मैंने जो उभय आपके सामने रखे हैं यदि उनको जाननेके बाद भी आप श्री पोलकका बेतनभोगी एजेंट समझें तो मुझे भय है कि उनके साथी प्रतिनिधि भी बख़स्य ही बेतनभोगी एजेंट माने जायेंगे क्योंकि अगर उन्हें रवाना होनेसे पहले जलरज समझने निरस्तार न कर लिया होता तो वे भी श्री पोलकके साथ ही रहने और उनका मार्ग-व्यय और होटलका व्यय भी भारतीय समाज ही देता।

मुझे विश्वास है कि न्यायकी खातिर आप कृपा करके इस पत्रको स्थान देंगे।

आपका भादि

दारुन की हुई अपनी अंजेली प्रिन्की फाटो-नकल (एच एन ५ ९९) से।

२८४ पत्र लॉर्ड फू के निजी सचिवको

[सन् १९१९]

सितम्बर २९, १९१९

महोदय

मी पोल्कने क्यूरेसे' तार भेजा है कि क्यूरेसें इसी २३ तारीखको एक सार्वजनिक सभा हुई थी। सभाके अध्यक्षने अधिकारियोंको यह तार दिया है

क्यूरे, बोल्बार्ड' और बेला' क्षेत्रोंके निवासियोंकी सार्वजनिक सभा; इन्स्टाबल सरकार द्वारा वेष्टमाइयोंके जल्दीइतपर तीव्र विरोध प्रकट करती है; साम्राज्य-सरकारसे जोरदार अनुरोध करती है कि वे तुरन्त समस्याका हृद्य खोजे कम्बोंका जारी रूना रोकें प्रजातीय अपमानको मिटावें।

मी पोल्कने तारसे यह खबर भी दी है कि अहमदाबाद और मूरछमें जोरदार सभाएँ हुईं। इनमें साम्राज्य सरकारसे राष्ट्र बिकानेका अनुरोध करते हुए दो प्रस्ताव पास किये गये।

अगर आप कृपा करके इस पत्रको सर्वे महोदयके ध्यानमें आरेंगे तो मैं आभारी होऊँगा।

आपका आदि

मो० क० मोधी

[अंग्रेजीसे]

कसोतियस डॉडिच रेकर्ड २९१/१४२।

२८५ पत्र एच० एस० एस० पोलकको

[सन् १९१९]

सितम्बर २९, १९१९

प्रिय हेनरी

जो मेहताने मधिसाकको जो छात्रवृत्ति देनेका प्रस्ताव किया था उसके बारेमें जासिर मीने फैसला कर लिया है। मेरा खयाल है उस छात्रवृत्तिके सम्बन्धमें कुछ कि समय पहले मीने आपको लिखा था। तब मीने जिन्हा था कि मीने जो मेहतासे कहा है वे मुझे इस छात्रवृत्तिका उपबोध अपने बुने हुए किसी दूसरे धीनिकसवादी छात्रके लिए भी करनेकी इजाजत दे दें। उन्होंने मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। लेकिन मीने पानता हूँ कि उन्होंने जब छात्रवृत्तिका प्रस्ताव किया था तब सिर्फ इसलिए किया था कि उन्हें लया था वे कमसे कम मेरे एक पुत्रकी सिलाका बायिल उठ लें। लेकिन आज वे आपके और मेरे समान

१, २ और ३ के बीच स्वीकृती वृत्तु रिवाकसे मे। नन वे उककसे बहुत किये गते है। देखनी कन्व दान्य होना चाहिए।

ही बनाक्रमक प्रतिरोधी हैं और मुझसे पूर्वतः सहमत हैं कि उन्हें किसी दूसरे फीनिक्सवासी छात्रको पढ़ानेका कर्ष बना चाहिए।

मैंने छयनकालको पढ़ानेका निराशय किया है और इस सप्ताह जानेवाली राफते उसको पत्र भी लिख दिया है। मैंने उसे पत्र सप्ताह एक पत्रमें अपने सुझाव लिखे थे किन्तु वह पत्र फीनिक्सको भेजा गया ना। मुझे इसका पता पीछे चला कि वह तो १५ ठाणीसको भारतको रवाना होनेवाला ना। इसलिये वह शायद यह पत्र लिखने तक आपके पास पहुँच जायेगा। बिन बातोंको सोचकर मैंने नीचेके निष्कर्ष निकाले हैं उनकी चर्चा यहाँ नहीं करूँगा। वह यहाँ आपके साथ कुछ समय रह के उसके बाद लम्बत जा जाये। फहना चाहिए कि वह क्यावासे-क्यावा मार्गके अन्ततक यहाँ पहुँच जाये। वह किसी एक बैरिस्टरीके स्कूल (इम्स बीड कोर्ट) में बालिक हो जाये। वह वस्तुतः बैरिस्टर बने या न बने यह प्रश्न पीछे तय किया जायेगा (सम्भावना यह है कि उस समय तक हम ही उसे बैरिस्टर बनाना न चाहेंगे)। वह कानून पढनेके साथ-साथ यहाँकी किसी संस्थामें अंग्रेजीके बर्गमें बालिक हो जाये। जहाँमें बैठनेसे पहले वह बरीबीसे रहने की निश्चित और विविधत् सपन थे। वह यह प्रतिज्ञा भी करे कि वह यहाँ जो-कुछ पढ़ेगा उसका उपयोग आजीविका उपायित करनेके लिए न करेगा। आजीविका उसे सदा फीनिक्ससे मिलेगी और वह अपना जीवन फीनिक्सके आदर्शोंकी प्राप्तिके लिए अर्पित कर देगा। वह किसी निरामिय-मोबी परिवारमें रहे (सम्बन्धमें और आसपास जो भी निरामिय मोबी परिवार हैं मैं उन सबकी जानकारी प्राप्त कर रहा हूँ)। यदि आवश्यक हो तो वह किसी उपनगरमें बर केकर रहे और यहाँ अपना खाना खर बनाये और अपना हर काम खुद करे। सालके अन्तमें उसे अपने ऊपर भरोसा हो जाये तो हम फीनिक्ससे लम्बतमें शिक्षण लेनेके लिए एक बारमें एक या अधिक छात्रोंको भेजें। ये छात्र उसके साथ उस बरमें रह सकेंगे। चूँकि वह मित्रों और परिचितोंका एक अच्छा समुदाय बना लेगा इसलिये उसके साथ रहनेवाले छात्रोंको अंग्रेज परिवारोंमें रहे बिना ही अंग्रेजिकी सहवासके सब काम मिल सकेंगे। फिर, छयनकालके साथ रहनेकी अपेक्षा अंग्रेज परिवारोंमें रहनेका कर्ष भी अवश्य ही ज्यादा जायेगा। साथ ही अगर बालिकीय समझा जाये तो वे केवल कुछ समय किसी परिवारमें भी रह सकते हैं। छयनकाल यहाँ रहकर प्रत्येक भारतीय छात्रसे सम्पर्क स्थापित करे। वस्तुतः वह उनका प्यान बकात् सीधे और बीरे-बीरे उनका अनुग्रह प्राप्त करनेके बाद अपने जीवन द्वारा और बावचीत द्वारा फीनिक्सके आदर्शोंको उनके सम्मुख रखे। उसके यहाँ रहनेसे हम सप्ताह प्रति-सप्ताह संवर्षकी प्रगतिकी सही जानकारी वे सकेंगे और वह कुछ हर तक रिचके जानेसे होनेवाली कमीकी पूर्ति करेगा। मुझे यहाँ ऐसा कोई विचार नहीं होता जो रिचका खान से सके। किन्तु कुछ लोग जो एड लगाये बिना कुछ नहीं कर सकते अन्तसास-बैसे व्यक्तिको खूबसे सहामठा देंगे। यदि हम छयनकालको बैरिस्टर बनानेके लिए बँच न जायें तो उसको लम्बतमें पूरे तीन बर्ष बकनेकी भी जरूरत नहीं है। यदि स्थितिका ठकाना हो तो वह कुछ दिनके लिए लम्बत छोड़ भी सकता है।

हाँ मेहतासे कोई नियत सभबृति नहीं लेनी है वे छयनकालके रहनेका सारा कर्ष भर देंगे। अन्तकाल अपनेवई स्वभावतः अपने-आपको उस पीछेका ग्यासी (इस्टी) समझेगा

जो उसे दिया जायेगा और उनमय पूरी साक्षीका पीचन बितायेगा इसकिए सर्ष कमसे-कम होगा।

मैने ये सब बातें कमनकासके सामने रख दी हैं। कृपया उसे यह पैत्र भी बिता दें। यदि उसको मेरे बिसे हुए सब मुसाब स्वीकार हों तो यह तय करना बहुत-बहुत उचित और कुछ-कुछ आपका भी काम है कि वह यहाँ मार्चमें जाये या उससे पहले। वह कुछ समय आपके पास रहे लोमकि सम्पर्कमें जाये उनको जाने और प्रस्नको कुछ ब्याबा बख्शी तरह समझ के तो बेहतर होगा। उसको अपने साथ काफी मुजरती पुस्तकें कुछ संस्कृत पुस्तकें एक उर्दूका कायदा और कुछ अंग्रेजी पुस्तकें लाती चाहिए, जो आपव यहाँ न मिलें या मिलें भी तो बहुत महीपी मिलें। उठको पुस्तकेंके सम्बन्धमें कमी करनेकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे पुस्तकें यहाँ दूसरे सार्केकिए उपयोमी होंगी। पुस्तकेंके चुनावके सम्बन्धमें आप डॉ मेहतासे भी सलाह कर लें। मैं चाहूँया कि कमनकास डॉ मेहताके पुत्रको हुसेनको और कन्वर्नमें रहनेवाले दूसरे मुजरतियोंको मुजरती भी बिचावे।

अगर बठारई गई बाठोंपर फीनिक्सके लोपेंसे मंजूरी तो कैनी ही होनी।

हवसे आपका

टाइप की हुई बपतरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५१०) से।

२८६ पत्र लॉर्ड मॉलेंके मिनी सचिवको

[अन्वय]

सितम्बर ३ १९०९

महोदय

मैं इसके साथ लॉर्ड मॉलेंकी जानकारीके किये उक्त पत्रकी नकल भेज रहा हूँ जो मैने लॉर्ड कू के मिनी सचिवको बिचा है।

आपका भारि
मो० क० मांभी

इंडिया ऑफिस रेकर्ड ३८१५/९ और टाइप की हुई बपतरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५१३) से।

मुनिपायी है। मुख्य अन्तर देनेके लीकेका है। बाहरी मुनिप्राको इस बातसे कोई संशय नहीं कि यह काममें होनेवाला खर्च कहा जा सकता है या वेतन। वह तो हर अवसरकीको सम्यक्से देखेगी वह तो काम-मात्रको संकाश बुझिसे देखेगी और यह बात मानेगी ही नहीं कि लोग निस्स्वार्थ भावसे या किसी बड़े मुन्नाबनेके बिना भी काम करते हैं। सम्बन्धमें हर एक व्यक्तिमें [सम्पादक] के [विचारों] को उचित विरस्कार-भावसे देना है और आपने भी सायब बैसा ही किया होगा।' डॉ. मेहताजो आपका [पत्र] देखा है। उन्होंने मुझे मुम्बईमें पत्र लिखा है जिसका अनुवाद मैं आपके लिए कर रहा हूँ।

उन (अर्थात् आप) पर ऐंबोकेट ऑफ इंडिया के केसका प्रभाव पड़ा है लेकिन वह इतना विरस्कारके योग्य है कि उसपर ध्यान ही नहीं देना चाहिए। स्वार्थमय हेतु न होनेपर स्वार्थमय हेतु होनेका आरोप किया जाने तो उसको मतपर लेनेकी कोई बात ही नहीं है। जो अपने कर्तव्यका पालन कर रहा हो वह अनुचित आलोचनासे उत्तेजित क्यों हो? इसके विपरीत उसे जानना चाहिए कि इस अनुचित आलोचनाका कारण आलोचनाका अज्ञान है। अगर किसी आलोचकके पास मन न हो तो उसके उचित अर्थ-सोपनका ध्यान रखना उनका कर्तव्य होता है जिसके फल यह हो। निश्चय ही उनके (आपके) सम्बन्धमें वसिष्ठ आदिशर्मों को व्यवस्था की गई, वह होनी ही चाहिए थी।

मैं आपको डॉ. मेहताकी सम्मतिका अनुवाद इसलिये भेज रहा हूँ कि वे अत्यन्त धर्मवश-बुद्धि और मन्वीर व्यक्ति हैं। फिर, मैं यह भी चाहता हूँ कि आप उनके पचास-निकट सम्पर्कमें आयें। इसके कारण आप जानते ही हैं।

मैं इस सप्ताह श्री पेटिटको भी पत्र लिख रहा हूँ। उनको किसी पत्रकी प्रतिकि

प्राप्त कठरनोंमें मुझे आपके [सम्बन्धमें उचित] कविता नहीं मिली है। मैंने आपका मेला हुआ अनुबाव देखा है। [मैं] मूल कविता देखना [चाहता हूँ] मुझ सामने वर्तमान का पेटेटी बंक भी नहीं मिला है।

मुझे हर्ष है कि आप भारतके राष्ट्र-विधामहोसे मिल सिये हैं। आपका [वर्णन] बल्यन्त कवच है। मैं यह भी देखता हूँ कि आपने अपने बन्धु पड़ोसनेपर जो ऊपरी बमरु-वमक देली थी अब आप उसका भीतर ही रूप देवने लये हैं।

एक जगनछाछ आपके पास होगा तब मुझे आशा है, आप उसके ही हितमें किसी रिमायतके बिना उससे काम करवायेंगे और वहाँ जो-कुछ देवने और सीकने मायक है उसको देखने और सीकने देंगे। अगर भोग अनाक्रमक प्रतिरोधकी भावनाको पूरी तरह न समझें तो आप कमसे-कम मेलाबोंको तो उसका मान कर ही देंगे यह मैं जानता हूँ। जो मेहता बहुत चाहते हैं कि भी मौकके उसको पूरी तरह समझ लें। मुझे आशा है कि आप वहाँ भी कार्यमें भी उमर आपके साथ रखेंगे लेकिन अगर धी हामी मुहम्मद और हमारे साथ भी अपने लक्ष्यसे आपके साथ साथ करना चाहें तो आप उन्हें भी आमन्त्रित करें। इससे आपके कामका अगर बढ़ जायेगा। क्या वहाँसे कोई इंडियन ओपिनियन को बुजरातीमें विस्तृत विवरण भेज रहा है? अगर न भेज रहा हो तो इसकी तरफ ध्यान दें। हमें एक समझे संघर्षकी तैयारी करनी है। इसी कारण मैं इन व्योरेकी बातोंकी चर्चा कर रहा हूँ। यदि आपको ऐसे एक या जनेक ईमानदार व्यक्ति मिलें जो पूरी तरह काफ़तेबामें सयमा चाहते हों लेकिन जो मेहताके सिद्धान्तके अनुसार ही कयना चाहते हों और यदि उनको सहायताकी आवश्यकता हो तो आपको याद होमा हम इस विषयमें विचार करके कह चुके हैं कि इसपर गौर किया जा सकेगा।

१. पीछे ९ सिप्टम्बरको राष्ट्रीय संगीत समझी देवने जे मे वहाँ एक जिलमें सिन्धी रई का कविता जे मे थी।

२. समरति प्रकाशित एक पुस्तकी खीन देविक। एक बंधने पोखरी उभर और काला बर केव जता वा।

३. पोखरी सिन्धी वा: मैं कवित्तको बीकरव बर भारतके विधामहोसे मिल वा। उस दिन कनडा सम्पदित वा। महाभारतके रहने इस बुकने-वने बोझका भारतम काला एक बर्नलकी इस कवित्त काला वा। ल एव वही पुने के भारतम कुर्वर देते मे। कविति लिफकम मन्ते इनाप लगत रिता और गुज मेरे कामक सिं धार्मिक कयत रिता। कले कयत देवेर गुज कया मरकत हूँ लोकि कवने कया काव किच केकि कले कयत रई सिन्धी। कवने गुज बलको इंडियन ओपिनियन मेकेके सिं कयत देवको कया। के लो लिफकम कले पने है। कवने कय भी कया कि के बलकी इका और कयकी मरकत कले है। कयकी इमिमे बलका पद कयत कयलकु वा। इन वी देवक वी रे। कवति कवित्तिक और मरकत कयकी कयलत थी। के केव वी रे है — कनक सिं ल वी-क रे ए कया है। सिं भी कवने एक वर कवित्तिक लके सिं मेवा वा। ल एव वी ए इमे कयत वर सिं कले कयती भारतम कुर्वर देते देवा वा। के कयत गुवने कयी कयुवकी और कयी कवित्तिकी और केव रे मे। एका कया वा कि के कवित्तिक कयु-कीककी बीन कर रे ही। वर कयत वा — किन्तु सिं कलेको प्रक और कवित्तिक वा। वेसाकि वी पोखरी कले है ल कले कयतक सिं कले सिं कया है, वर वी-कया कया है। ल वी। ही कया है के कले वी ल व ररे। के कयु ही कयवेर ही कले है।”

बुनियादी है। मुख्य बाजार बेनेके लरीकेका है। बाहरी बुनियादी इस बाउसे कोई सरोकार नहीं कि यह काममें होनेवासा बाब कदा वा सकता है वा बेतन। यह तो हर बराबरीको सम्बेहसे देखेमी यह तो काम-भावको संकालु बुध्तिसे देखेमी और यह बात मानेगी ही नहीं कि ज्योम गिस्त्वार्य भावसे वा किसी बड़े मुमाबजेके बिना भी काम करते हैं। बम्बईमें हरएक ब्यक्तिने [सम्पादक] के [विचारों] को उचित तिरस्कार-भावसे देखा है और आपने भी घामर पैसा ही किया होमा। डॉ मेहताजे आपका [पत्र] देखा है। उन्हूनि मुझे मुजरातीमें पत्र लिखा है, जिसका अनुबाव मैं आपके लिए कर रहा हूँ

उन (बर्बात आप) पर एंडबोकेट जोड्ड इंडिया के लेखका प्रभाव पड़ा है लेकिन वह इतना तिरस्कारके योग्य है कि उसपर ध्यान ही नहीं देना चाहिए। स्वार्थमय हेतु न होनेपर स्वार्थमय हेतु होनेका आरोप किया जाये तो उसको मनपर सेनेकी कोई बात ही नहीं है। जो आपने कर्तव्यका पाठन कर रहा ही वह अनुचित बालोचनासे उल्लेखित क्यों हो? इसके विपरीत उसे जानना चाहिए कि इस अनुचित बालोचनाका कारण बालोचनाका बतान है। अगर किसी जोड्डवेकके पास बत न हो तो उसके उचित सरण-भोपबका ध्यान रखना उनका कर्तव्य होता है बिनके पास बत हो। निरक्षय ही उनके (आपके) सम्बन्धमें दक्षिण आधिकारों को ब्यवस्था की गई, वह होगी ही चाहिए थी।

मैं आपको डॉ मेहताकी सम्मदिका अनुबाव इसलिये भेज रहा हूँ कि वे बालण समंत्रस-बुध्ति और धम्मीर ब्यक्ति है। फिर, मैं यह भी चाहता हूँ कि आप उनके पचासम्बर निकट सम्पर्कमें आवें। इसके कारण आप जानते ही हैं।

मैं इस सप्ताह भी पेटिटको भी पत्र लिख रहा हूँ। उनको लिखे पत्रकी प्रतिक्रिया इसके साथ है।

८. कलकत्ता दौलतमे बेदा नहीं किया वा। ज्जोनि दंपतीकी लिखा वा। "बाजेपको कीर्ति भी मरिषि ब्यक्ति नहीं देता बलवता इसके कारण दौलतके प्रति ज्योम देना होता है। मैंने कलकत्ता बाजेपका छेनेमें कलकत्ता भेज दिया है। मुझे वह बावबक बना। कलकत्ता बाव नहीं बनी बली, उनक वह प्रकृति नहीं होता। नाम ज्जोनि मुझे एक भोज भेजा वा, जिसमें लिखा वा कि मैं ज्जोने निरुद्ध। मैं उस बारेमें कल लीकटा हूँ मैंने ज्जोने कल किया—ज्जोनि ज्जोने इतना प्रकृति ज्जोनेकी बना कि मैं बाजेपका बाजेपकाकी हूँ। मैंने ज्जोने ज्जोनेसा कि मैं एक छेनेपिठक हूँ और देती ही दूरी नहीं भी छप्टार और बजा कि मैं ज्जोने कलकत्ता-ज्जोनेकी कर्तिक निरुद्ध देता हूँ ज्जो निरुद्धके कारणही हैलिज्जोने मुझ मेरा बाबे लिखा है। मैंने ज्जोने कल भी बताया कि दार्शनिक लिखिजे मुझे-भी कुछ लिखा है ज्जोने मेरा बाबे दूरा नहीं बरता—जिनी कल कलकी सच्ची बरी सुधीये देगी। मैंने ज्जोने कुछ नहीं लिखा और ज्जोनि कल कलकत्ता बत ज्जोने की कि कल "एक सुन्दर कलकत्ता" है। उस में और बताया। इसके बाद मैंने इंडिया ब्यक्तिबन्धने (बालक इतना लिखित) बालक बालकबन्धने भेजा। किन्तु ज्जोने नहीं लिखा है कि मैं दार्शनिककी कलकत्ता बालेकी बनेका कलकत्ता बालक बालक है। इसके कर्तिक बाजेपके कलकत्ता सुचित राता है और कलकत्ता केजोके कलमे टी कल सुत ही बत है बाकि कलके कलमे ज्जोने है। मैं और बत तो कल सम्बन्धमे कल-कुछ छप्टाते हैं। किन्तु ज्जोने कल सोके है कि कल "एक सुन्दर कलकत्ता" है और निरुद्धने कर्तिककी बत टी कलकी छप्टाते वा ही नहीं लकी। बत को माउण्ड बाकिबन्धने भेज लकी है।"

९. कल सम्बन्ध नहीं है।

जमी सॉर्ड्स नू ने कोई खबर नहीं की है। मैं उनसे जल्दी करानेका इच्छित-भर प्रयत्न कर रहा हूँ लेकिन यह काम ही ऐसा है जिसमें जल्दी नहीं की जा सकती। मैं भी मायल और डॉ क्लिफर्डसे मिल चुका हूँ। श्री मायलने बहुत अच्छी तरह बात की। उन्होंने कहा कि खबर सॉर्ड्स नू का उत्तर सन्तोषजनक न होगा तो वे प्रभावशाली व्यक्तियोंकी एक सभा बुलायेंगे और आवश्यक कार्रवाई करेंगे। मैं आपके पास पुरस्कारके प्रतिस्पर्धियोंके लिए एक कच्चा विवरणपत्र भेज रहा हूँ। पुरस्कारबाटाके रूपमें डॉ मेहताके नामका उल्लेख नहीं करता है। एक निर्णायक डॉ क्लिफर्ड होंगे। मैं ब्रिटिश बीरुमी के सम्भारके मिर्झगा और विवरणपत्रको इनकी सलाहसे अन्तिम रूप दूँगा। प्रतियोगियोंको निमन्त्रित करनेकी सर्वोत्तम विधिके सम्बन्धमें भी उनसे बातचीत करूँगा।

मैं आगामी मासकी ८ तारीखको अनाकामक प्रतिरोध" पर इमर्सन क्लबके सदस्योंके सम्मुख भाषण दूँगा और आगामी मासकी १३ या १४ तारीखको सायब हेम्पस्टेड पीस एंड आर्बिट्रेशन सोसाइटी" में भी बोलूँगा। इन दोनों सभाओंमें अल्पसंख्यक रूपसे संघर्षकी चर्चा होगी। यह अमिस्टनकी समाके समान ही होगी।

कृपया डॉ मेहताले अत्यन्त विवक्षित रूपसे पत्र-व्यवहार करें।

मेरा खयाल है मैंने आपको गत सप्ताह लिखा था कि डॉ मेहताने मिर्झा को देखा था। उनका खयाल है कि जहाँतक छापीका सवाल है वह बिल्कुल ठीक है। मिर्झासे बातचीत करके उन्होंने जो विचार किया उसके बाद स्टेवस्कोपके प्रयोगकी आवश्यकता भी नहीं समझी। उन्होंने कहा कि स्टेवस्कोपसे वे कुछ अधिक नहीं जान सकते। उनका खयाल था और सायब वसेमें कुछ खराब 'मेरा विश्वास बहुत समयसे रहा है। मैंने कुछ समय पहले बलेके लिए मिर्झाकी पट्टियाँका सुझाव दिया था। मैंने अपनी सलाह दे दी है। इसलिए अब वे मकेपर सायब मिर्झाकी पट्टियाँ बँधवावेने। कुछ भी हो सतत बात भी नहीं है। क्या आप भारतके राष्ट्र-पितामहका एक विशेष चित्र इंग्लिश कोपिलियम के लिए प्राप्त कर सकते हैं? यदि कोई उपलब्ध हो तो ठीक है। बाबा है वे विशेष रूपसे चित्र लिखना लेनेका कष्ट करेंगे। आप जिन नेताओंको अच्छे और सच्चे रचनात्मक समझें उनके परिचय और चित्र भी प्राप्त कर सकते हैं। आप प्रो रेकिनकरसे मिले या नहीं? आपने इसका विक्र नहीं किया है।

अखिल भारतीय मुस्लिम लीगके बाबी इमाम इस समय यहाँ हैं। मैं उनसे बोड़ी बेर तक बातचीत कर चुका हूँ। वे मुझे बहुत अच्छे व्यक्ति बने वे बिल्कुल धार्मिक भावनाके हैं। वे पटनाके बकीओके नेता हैं और उदारमता व्यक्ति हैं। जान उनको एक भोज दिया था रहा है। मैं आपको इस सम्बन्धमें तिकाजी कई सूचनाओंकी एक प्रति भेज रहा हूँ। वे यहाँ एक पत्रबाढ़ेमें भारतको रबला हो जायेंगे। वे यहाँ अपने बेटोंको बॉक्सजोर्डमें शामिल करने

१ वामसे देखते बावले १२ तक १२ अक्षरकी बावलेका भी भी। देखिए क्लिफर्ड की।

२. यह काम वामसे क्लिफर्ड १२ को क्लिफर्ड "एनिस बॉक्स देखिए देखिए" ("अनाकामक अखिलेका मोति-पत्र") के क्लिफर्ड क्लिफर्डकी डॉ की गई थी, क्लिफर्ड नहीं है।

३ देखिए "आपने इमर्सन क्लबमें" पृष्ठ ४००। और पृष्ठ ४०४-०५।

४ देखिए "अपने अखिलेका" पृष्ठ ४४२-४४।

५ और ६. यहाँ कुछ अन्य पत्र हैं।

आये थे और यही ज्ञानपर स्वभावतः वे लॉर्ड मॉर्ले और अन्य नेताओंसे मुत्सुत मुसलमानोंके प्रतिनिधित्वके सम्बन्धमें मिल रहे हैं। आप कृपा करके बखशारोंको बेलते रहें और ज्यों ही वे आये त्यों ही उनसे पत्र-व्यवहार करें। उनसे आपका बहुत बड़ी गहायथा मिलेगी।

टाइम की हुई बफतरी अंग्रेजी प्रति (एच एन ५१ २) से।

२८८ पत्र लिजो टॉस्टॉपको

अम्बल

अक्तूबर १ १९९

महोदय

द्राम्बवाल (बदिल आधिकार) में कगमग पिछले तीन वर्षोंसे जो-कुछ बज रहा है उसके प्रति मैं आपका ध्यान आकर्षित करनेकी कृपता कर रहा हूँ।

उक्त उपनिवेशमें ब्रिटिश भारतीयोंकी आबादी कीई ११ ०० है। ये भारतीय विपत कई वर्षोंसे अनेक कानूनी निर्दोषताओंसे ग्रस्त रहे हैं। उपनिवेशमें रबके तथा कुछ बातोंमें एशियाइयोंके विपद उक्त पूर्वग्रह हैं। जहाँतक एशियाइयोंका सवाल है, व्यापारिक ईर्ष्याका हममें काफ़ी बड़ा हाथ है। इन पूर्वग्रहोंकी परकाप्ट आससे तीन वर्ष पूर्व एक कानून बनानेका सच हुई। मैंने और अग्य बहुत-से लोगोंने मी ऐसा माना कि यह कानून अपमानजनक है, और इसका मंगा इसके प्रभावलेखमें आनेबाधे सोचोंको कापुस्य बना देना है। मुझे लगा कि ऐसे कानूनके आये झुकना उचित बर्तकी भावनासे विरुधत है। मैं और मेरे कुछ साथी बुराईका विरोध न करनेके मिशान्तमें बड़ आस्था रखते थे और आज भी रखते हैं। मुझे आपकी कृपियोंके अध्ययनका भी सीमाध्य प्राप्त हुआ था और उनकी मेरे मनपर गहरी छाप पड़ी है। पूछे तरहसे परिस्थिति समझानी जानेपर ब्रिटिश भारतीयोंने यह सलाह मान ली कि हमें इस कानूनके आग नहीं झुकना चाहिए, बल्कि इसे अंग करनेके बरकमें जेल या अन्य जो मरा कानूनन की आप उसे स्वीकार करना चाहिए। फलस्वरूप भारतीय आबादीमें से करीब आधे लोग जो संवर्षकी कठिनाइयोंको सहने और जेल जीवनके कष्टोंको उठानेमें समर्थ नहीं हुए, कानूनके आगे झुकनेके बजाय जिसे उन्होंने अपमानजनक माना है, द्राम्बवाल छोड़कर चले गये। बच हुए लोगोंमें से करीब २५० लोगोंने आरमरेरजाते जेल जाना स्वीकार किया है। कुछ लोग तो पाँच-पाँच बार जेल गये हैं। जलकी उमा ४ दिनसे लेकर ९ बहीने तक की रही है। व्यावहारिक लोगोंकी मजार्से उपरिचय वी गई है। अनेक आधिकार कृपिते बर्बर हो गये हैं। इस समय द्राम्बवालकी जेलोंमें छोटे अधिक तत्याप्रदी हैं। इनमें कुछ लोग बहुत परीब हैं—छोड़ कुर्मा लाइला रोज पानी पीना यह उनकी अवस्था रही है। परिणामस्वरूप उनके परिवारोंका पालन तार्वरिदिक बन्धेने करना पड़ा है। यह बन्धा भी अधिकारिणत मत्याप्रदियोंसे ही प्राप्त हुआ। ब्रिटिश भारतीयोंपर इनके कारण बहुत बंधन आ पड़ा है। किन्तु मेरी समझमें उन्होंने अपनेको बचकरके अनुकूल मित्र कर दिया है। संवर्ष

अभी पायी है और कहा नहीं जा सकता इसका अन्त कब आयेगा। तथापि हममें से कुछ लोग तो यह अच्छी तरह समझ गये हैं कि जहाँ पशुबलकी हार निश्चित हो अनाक्रमक प्रतिरोध नहीं भी बिजयी होगा और हो सकता है। हमने यह भी देखा है कि जहाँ तक सचके लिये चलनेकी बात है बहुत अंधोंमें उसका कारण है हमारी अपनी ही कमबोरी और उसी कमबोरीसे उत्पन्न सरकारकी यह धारणा कि हम बहुत दिनों तक लगातार कष्ट सहनेमें समर्थ नहीं होंगे।

मैं अपने एक मित्रके साथ जहाँ साम्राज्यीय अधिकारियोंसे मिलने और परिस्थितियोंको उनके सामने रखनेके लिए आया हूँ ताकि राहत मिल सके। उत्पादकियोंने यह समझ लिया है कि सरकारके सामने अनुमन-विनय करनेसे उन्हें कोई बास्ता नहीं रखना है किन्तु समाजके उपेक्षाकृत निर्बल सदस्योंके आग्रहसे डिप्टमण्टस यहाँ आया है और इसलिए वह उनकी सक्रियता नहीं असक्रियता प्रतिनिहित करता है।

मैंने यहाँ आकर जो-कुछ देखा-सुना उससे ऐसा लपटा है कि यदि अनाक्रमक प्रतिरोधकी आधार-नीति और उसकी अमोघतापर एक आम निबन्ध-मठियोगिता आयोजित की जाये तो उससे आन्वेषण लोकप्रिय होगा और लोग इस विषयमें विचार करेंगे। प्रस्तावित प्रतियोगिताके सन्दर्भमें एक मित्रने नैतिकताका प्रश्न उठाया है। उनका खयाल है कि ऐसी प्रतियोगिताका आमान्य देना अनाक्रमक प्रतिरोधकी वास्तविक भावनासे मेल नहीं खाता और यह तो एक तरहसे सहमति स्वीयता हो जायेगा। मैं नैतिकताके बारेमें आपकी राय जाननेका अभिलाषी हूँ। यदि आपकी समझमें निबन्ध-सेनाके आरम्भमें कोई चुपई न हो तो मैं आपसे उन व्यक्तियोंके नाम सुझानेकी प्रार्थना भी करूँगा जिनसे इत विषयपर लिखनेकी विशेष प्रार्थना भी जानी चाहिए।

एक और बातके लिए मैं आपका कुछ समय लेना चाहता हूँ। मुझे एक मित्रसे भारतकी वर्तमान अस्थितिके बारेमें एक 'हिन्दूके' नाम आपके लिखे गये पत्रकी प्रतिकृति मिली है। देखनेसे तो लगता है कि उसमें आपका मत ही प्रतिबिम्बित है। मेरे मित्रकी इच्छा है कि वे अपने सर्षसे उसकी २ प्रतियाँ छपाकर बँटवा दें और उसका अनुवाद भी करायें। किन्तु हमें इसकी मूल प्रति नहीं मिल सकी है और हमें लगता है कि जबतक यह निरचय न हो जाये कि पत्र आपका ही है और प्रति बिल्कुल सही है तबतक उसका प्रकाशन ठीक नहीं होगा। मैं प्रतिकृतिकी प्रतिकृति साथमें भेज रहा हूँ और यदि आप यह सूचित कर सकें कि पत्र आपका है या नहीं उसकी प्रतिकृति नहीं है वा बलन और आप उसे उपर्युक्त ढंगसे प्रकाशित करनेकी अनुमति दे रहे हैं वा नहीं तो मैं आमाटी होऊँगा। यदि आप पत्रमें कुछ जोड़ना चाहें तो रुका करके अक्षय जोड़ दें। मैं एक बात और सुझानेकी प्युछता करूँगा। उपर्युक्तके अनुच्छेदमें आपने पाठकको पुनर्जन्मके विरताससे विरत करना चाहा है। मैं नहीं जानता (यदि वेरा यह करना आप अनुचित न मानें) कि

१. देखते हुए कलौ प्रकाशित श्री हिन्दुस्तान समाज के सदस्योंके उत्प्रेरणके नाम पर एक पत्र लिखा था। पर वह अति अल्पमे लिखा गया था। परिच्छेदके अन्त उत्प्रेरण उत्प्रेरण पर दे। उत्प्रेरण पर इतिहास अधिविषयके २५-२६-२७ और १-२-१९११ के अन्तमें खत्रीजी का प्रकाशित अनाक्रमके नाम का। अन्तमें लिखा गुजराती अनुवाद भी लिखा था, जो उनके इतिहास अधिविषयमें था और कि वह उपर्युक्तके नामे।

आपने इस प्रश्नका विशेष अध्ययन किया है अथवा नहीं। भारतमें करोड़ों कोपोंका पुनर्जन्म या रीहान्तरणमें युभोसे बहुरा विश्वास रखा है और चीनमें भी यही बात है। कहा जा सकता है कि अनेक व्यक्तियोंको तो इसका अनुभव भी हुआ है और उनके लिए अब यह तर्कपर आधारित मायता नहीं है इससे जीवनके अनेक रहस्य तर्कसंगत ढंगसे समझमें आ जाते हैं। ट्राम्पबाबूके खेच जीवनके कष्ट झेकनेवाले अनेक सत्याग्रहियोंको इससे सात्वना मिली है। आपको ऐसा लिखनेमें मेरा सह्य्य आपके निकट सिद्धान्तकी सत्यता प्रमापित करना नहीं है बल्कि यह पूछना है कि आपने बिग-बिग बातोंसे पाठकोंको विरत करना चाहा है, क्या आप उनमें से केचक पुनर्जन्म शब्दको हटानेकी ह्मा करें।^१ आपने उक्त पत्रमें आपने विस्तार से ह्पन 'को उद्धृत किया है और बहुतसे अनुच्छेदोंके ह्वाले दिये हैं। ये उद्धरण आपने जिस पुस्तकमें से दिये हैं यदि आप उसका नाम वे सकें तो आपका आमार मारुंषा।

मेरा यह पत्र बहुत कम्बा हो गया। मे जानता हूँ कि जो आपका आदर करते हैं और अनुसरण करना चाहते हैं उन्हें आपका समय लेनेका कोई अधिकार नहीं है बल्कि उनका कर्तव्य यह है कि बहोतक बने आपको कष्ट न हों। मैं आपके निकट विगत अपदिशित हूँ फिर भी मैंने सत्यके ह्दिको दृष्टिगत करके आपको यह पत्र लिखनेकी शूष्टता की है और उन समस्याओंके बारेमें आपका मार्गदर्शन चाहा है जिन्हें ह्क करना आपने अपने जीवनका श्येय माना है।^१

विनीत

मो० क० गांधी

[काउंट सिद्धो टोस्टाय
वास्नाया पॉस्वाना
रस]

[अपेजीसे]

टॉलस्टॉय और गांधी का काश्मिरास नाम प्रकाशक पुस्तक मंडार पटना पृष्ठ ५९ ६२।

१ टोस्टायाको क्म पेसा करवा लीकर नहीं दिया। कम्पाय क्या कि कि बरि वात न चरे तो क्मे क्मे अपदिशित करते हुए क्म लिखेको कोत्र है। रेक्षिर अदिशित २०।

२. क्म किंको रेक्षिरेकिंकोमे निरात करेवाले वाता मेमाल्द वाणी वाक्क प्द बंघनी क्म क्म क्म १४ ४ मे सिद्धी प्द पुलिता।

३ टोस्टायाको क्म पत्र क्म ७ क्म क्मको दिसा वा; रेक्षिर अदिशित २०।

नेटाकका सिष्टमण्डळ

नेटाकके सिष्टमण्डळकी गतिविधिके सम्बन्धमें फिज्जहाल कोई प्यादा बाबर देने योग्य नहीं है। कोई नू को इससे पहले जो पत्र लिखा था उसका उत्तर अभी नहीं मिला है। बाबर न मिले वह भी बिल्कुल सम्भव है। श्री मजी इमामने सबर करनेका बाबा किया है। सिष्टमण्डळने मैटिसबर्गकी मसजिदके लिए एक मीसबीके जानेका अनुमतिपत्र (परमिट) मांगा था। नेटाक सरकारने उसका उत्तर दे दिया है। इसके विरोधमें कोई नू को एक कड़ा पत्र भेजा गया है। नेटाक सरकारने श्री आमर भावातको यह उत्तर दिया है कि वह मीसबीके लिए तीन-तीन महीने बाबर बरखा जानेवाला अनुमतिपत्र देनी और उस अनुमतिपत्रपर हर बार एक पीठकी फीस देनी होगी। इसका अर्थ यह हुआ कि एक सालमें चार पीठ कर देना पड़ेगा। इस पत्रके सम्बन्धमें सिष्टमण्डळने कोई नू को लिखा है कि ऐसा उत्तर स्पष्ट अपमान है और इससे भारतीय समाजकी भावनाओंको ठेस पहुँचती है। भारतीय समाज इस कर्तपर मीसबीको कैसे बुला सकता है? इस प्रश्नको मुस्लिम सीपने भी उठाया है। मैं तो माया करता हूँ कि इस अनुचित बत्त्याचारको सहन करनेके बजाय भारतीय समाज सत्याग्रह करेगा। इस सम्बन्धमें पहले तो यह होना चाहिए कि मीसबी सुचना देकर उपनिवेशमें प्रविष्ट हो जायें। फिर यदि उन्हें खेल भेजा जाये तो वे खेल चले जायें। यदि उन्हें सीमा-पार करें तो वे सीमा-भार हो जायें और रेशमें संडा उठायें। सत्याग्रही खेल जानेसे न डरे और सीमा-भार किये जानेसे भी न डरे। वह पिछारी हो जाये तो भी परबाह न करे और उसको मोसलीमें फूटें तो भी न डरे। सत्याग्रहीका ज्यों-ज्यों बमन हो त्यों-त्यों पतक तेज निखरे और उसकी हिम्मत भी बढ़े। तभी वह सत्याग्रही गिना जायेगा। मैं तो मीसबीके सम्बन्धमें दिने पये उत्तरको अर्थमें हस्तक्षेपके बराबर मानता हूँ। इसका अर्थ तो यह हुआ कि यदि हमे अर्थ-यातनकी भी सुविधा न हो जाये तो हम अन्तमें डरकर बेच-स्वाप करेंगे। भारतीयोंमें पानी होगा तो वे बेच-स्वाप नहीं करेंगे और सभी यहाँ नेटाकमें अपने-अपने अर्थका पूरा पावन करेंगे। सरकार उताके सबमें जो बत्त्याचार करेगी हम उससे बर्ने नहीं। किसी बेहूदा अन्ध्यायके विरुद्ध तीबा चल और धीम्र स्वाय पानेका मार्ग सत्याग्रह ही है।

स्त्रियोंके मताधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली महिलाएँ

जब स्त्रियोंकी मताधिकारकी लड़ाई फिर सामने आ लड़ी हुई है। मैं सिध बुका हूँ कि कुछ स्त्रियोंने अपनी मर्यादाको त्याग दिया है। उन्होंने प्रबान मन्त्रीकी बाड़ीपर पत्थर फेंके। इसका ही नहीं उन्होंने सिपाहियोंपर भी प्रहार किया। [इसके लिए] वे खुद हथियारोंसे सैर थीं। ये स्त्रियाँ बहुत बहादुर थीं इसमें तो शक नहीं किन्तु उन्होंने बहा-दुरीका दुरुपयोग किया। जजता तो ऐसा है कि वे कह रही हैं मताधिकार न मिलेगा तो

हम विरुद्ध पत्थर ही नहीं फेंकेगी बल्कि इसके आगे भी बढ़ेगी हम भाग सपायेगी और हत्या करेगी। यदि सब ऐसा ही करने लगे तो इसका अर्थ यह हुआ कि जब-कभी कोई उचित या अनुचित अधिकार सेना पाहे और वह उसे न मिले तो वह हत्या तक कर सकता है। ऐसा हो तो कौमें लज्ज हो पायेगी। वे स्त्रियाँ अब उन कपटोंको सहन करना नहीं चाहती जो उन्हें जख्म पड़ते हैं। बेलसे सुरक्षित घूमनेकी नीयतसे उन्होंने घाना खानेसे इनकार कर दिया। सरकार अब उनको जबरदस्ती खाना खिलाने लगी है। अधिकारी पेटमें ममी डालकर उसके द्वारा मोहन पहुँचाते हैं। यदि स्त्रियाँ घरीर-बकसे काम लेंगी तो उनके विरुद्ध सटीर-बकका प्रयोग किया ही जायेगा। ऐसा होगा तो इन्फैंड रहने योग्य बेच न रह जायगा। यदि ये ही स्त्रियाँ सत्याग्रहपर कायम रहें तो कोई परेशानी न होगी। इससे मताधिकार मिशनमें बेर भसे ही लगे किन्तु उनकी कार्यवाहिसि घारे समाजको लक्ष्य पैदा न होगा। अथवा उन्होंने भूक की है तो उसका फल उन्हींको भोगना होगा। उन्होंने ये उल्हास आरम्भ किये हैं इससे बहुत-सी स्त्रियाँ उनके विरुद्ध हो गई हैं। एक स्त्री तो लिखायी है कि यदि हत्या या मार-काटसे मताधिकार मिश्रता हो तो उसे यह नहीं चाहिए। ये स्त्रियाँ कहती हैं कि वर्तमान कानून-निर्माता भूत हो गये हैं। लेकिन यदि वे मारकाट करते सत्ता लेंगी तो उनका पासत कुछ अच्छा होगा ऐसा नहीं माना जा सकता। मैं कह चुका हूँ कि इन स्त्रियोंके जवाहरभोंसे हमें मार-काट आदिसे बसग रहनेकी शिखा लेनी है। उनसे सीखने योग्य बूझरी बात उनकी बहादुरी है। वे किम्बदात जिस उपायका आशय से रही हैं वह बुरा है किन्तु वे जिस बुरासे लड़ रही हैं कष्ट उठा रही हैं और पैस इकट्ठा कर रही हैं, वह सब अनुकरणीय है। वे किसी बातसे नहीं हारतीं। उनकी प्रतिज्ञा है कि वे मताधिकार लेकर ही छोड़ेंगी। और उस प्रतिज्ञाके अनुसार वे मन देती हैं और प्राण भी। जब स्त्रियोंको अपने अधिकारोंके लिए अपनी ही बीटी भमङ्गीके सोमसे इतना जूझना पड़ता है तब फिर भारतीय सत्याग्रहियोंको अधिक समय तक जूझना पड़े और वे रहना पड़े मार पानी पड़े और भूसा रहना पड़े तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

टॉन्स्टॉयक सत्याग्रह

काउंट टॉन्स्टॉय एक स्त्री सामन्त है। कभी उनका पास बहुत सम्पत्ति थी। उनकी जायु अब लगभग ८ बरोंकी है। उन्होंने बहुत दुनिया देनी है। वे पाश्चात्य लेखकोंमें खेप्ट माने जाते हैं। सत्याग्रहियोंमें वे प्रमुख भिने जा सकते हैं। उनकी बात मानकर हजारों लोग जेल गये हैं और अब भी जा रहे हैं। स्त्री सरकार उनसे डरती है। उनके सेल बहुत लीचे होते हैं। वे लोगोंको निर्भय होकर यह सलाह देते हैं कि वे स्व-नरकारके कानूनको न मानें और चीजमें भर्ती न हों आदि। उनके लेखोंको छापने नहीं दिया जाता। फिर भी उनके लेख बहुत छपने हैं। इससे स्व-नरकारने उनके विरुद्धकारको विरल्लार कर लिया है और जेल खेज दिया है। काउंट टॉन्स्टॉयने हम बार्बार्डीकी आजायका करने हुए जो-मुछ लिखा है वह जानने लायक है इसलिए उसका धार नीचे देता हूँ

स्व-नरकारने बेरे विरुद्धकारको विरल्लार कर लिया है। उनसे इनी प्रकार बर्तनोंको विरल्लार किया है परन्तु यह पटना मेरी जानोंके नामने पटित हुई,

१ यह वर देनी मूजने का। वा और वर ११० इन्फैंड रिक्के स्व मित्र का वा।

नेटासका सिष्टमण्डल

नेटासके सिष्टमण्डलकी नतिविधिक सम्बन्धमें फिलहाल कोई ध्याता खबर देने योग्य नहीं है। सर्वे कू को इससे पहले जो पत्र लिखा था उसका उत्तर अभी नहीं मिला है। सामर न मिके यह भी बिल्कुल सम्भव है। श्री बकी इमाने मयद करनेका वादा किया है। सिष्टमण्डलमें मैटिस्वर्नकी मसबिबके लिए एक मौलवीके जानेका अनुमतिपत्र (परमिट) मीमा था। नेटास सरकारने उसका उत्तर दे दिया है। इसके विरोधमें डॉर्ड कू को एक कड़ा पत्र भेजा गया है। नेटास सरकारने भी सामर भाषातको यह उत्तर दिया है कि यह मौलवीके लिए तीन-तीन महीने बाद बरला जानेवाला अनुमतिपत्र देनी और उस अनुमतिपत्रपर हर बार एक पींडकी फीस देनी होगी। इसका अर्थ यह हुआ कि एक सालमें बार पींड कर देना पड़ेगा। इस पत्रके सम्बन्धमें सिष्टमण्डलने डॉर्ड कू को लिखा है कि ऐसा उत्तर स्पष्ट अपमान है और इससे भारतीय समाजकी माननाओंको ठेस पहुँचती है। भारतीय समाज इस धर्मपर मौलवीको कैसे बुला सकता है? इस प्रश्नको मुस्लिम धीयने भी उठामा है। मैं तो वादा करता हूँ कि इस अनुचित अत्याचारको संहत करनेके बजाय भारतीय समाज उत्पाग्रह करेगा। इस सम्बन्धमें पहले तो यह होना चाहिए कि मौलवी सूचना देकर उपनिवेशमें प्रविष्ट हो जायें। फिर यदि उन्हें बेल भेजा जाये तो वे बेल भले जायें। यदि उन्हें सीमा पार करें तो वे सीमा-पार हो जायें और देशमें संघा सठायें। उत्पाग्रही बेल जानेसे न डरे और सीमा-पार किये जानेसे भी न डरे। यह भिखारी हो जाये तो भी परबाह न करे और उसको बोसलीमें फूटें तो भी न डरे। उत्पाग्रहीका ज्यों-ज्यों रगत हो त्यों-त्यों उसका तेज निखरे और उसकी हिम्मत भी बढ़े। अभी यह उत्पाग्रही गिना जायेगा। मैं तो मौलवीके सम्बन्धमें दिये गये उत्तरको बर्नमें हस्तक्षेपके बग़र मानता हूँ। इसका अर्थ तो यह हुआ कि यदि हमें बर्न-वालनकी भी सुविधा न भी जाये तो हम अन्तमें डरकर बैस-त्याग देंगे। भारतीयोंमें पानी होमा तो वे बैस-त्याग नहीं करेंगे और अभी नेटासमें अपने-अपने बर्नका पूरा पावन करेंगे। सरकार उसको बर्नमें जो अत्याचार करेगी हम उससे बर्नने नहीं। किसी बेहुवा अत्याचके विरुद्ध सीमा सरल और सीमा ग्याम पानेका मार्ग उत्पाग्रह ही है।

बिषयोंके मताधिकारके लिए जान्योकर करवैवाली महिछायें

बब स्त्रियोंकी मताधिकारकी कड़ाई फिर सामने आ खड़ी हुई है। मैं लिख चुका हूँ कि कुछ स्त्रियोंने अपनी मर्यादाको त्याग दिया है। उन्होंने प्रधान मन्त्रीकी बाड़ीपर पत्तर पड़े। इतना ही नहीं उन्होंने विपाहिनोंपर भी प्रहार किया। [इसके लिए] वे लुब हबियारोंसे लैस थीं। ये स्त्रियाँ बहुत बहादुर थीं इसमें तो शक नहीं किन्तु उन्होंने बहादुरीका बुझाबोध किया। लक्ष्मा तो ऐसा है कि वे कह रही हैं मताधिकार न मिलेना तो

हम सिर्फ पत्थर ही नहीं कंक्रीती बल्कि इससे आगे भी बढ़ेंगी हम भाग सपायेंगी और हत्या करेंगी। यदि सब ऐसा ही करने लगे तो इसका कर्म यह हुआ कि जब-कभी कोई अशुभ या अनुशुभ व्यवहार सेना चाहे और वह उसे न मिते तो वह हत्या तक कर सकता है। ऐसा हो तो कौनो मरुट हो जायेंगी। वे स्थियाँ अब उन कपटोंको सहन करना नहीं चाहती जो उन्हें उठाने पड़ते हैं। बेकसे सुरण्ट सूटनेकी भीयतसे उन्होंने पाना खानेसे इनकार कर दिया। सरकार अब उनको जबरबस्ती खाना खिलाने लगी है। अधिकारी पेटमें लसी डालकर उसके द्वारा भोजन पहुँचाते हैं। यदि स्थियाँ घरीर-बन्धसे काम लेंगी तो उनके बिरुद्ध घरीर-बन्धका प्रयोग किया ही जायेगा। ऐसा होगा तो इन्डिड रहने योग्य रेष न रह जायगा। यदि वे ही स्थियाँ सत्याग्रहपर काम रूँ तो कोई परेशानी न होगी। इससे मताधिकार मिळनेमें देर भले ही छमे किन्तु उनकी कार्रवाईसे सारे समाजको सतर्क पैदा न होना। अगर उन्होंने मूस की है तो उसका फल उम्हेंको भोगना होगा। उन्होंने ये सत्याग्र आरम्भ किये हैं इससे बहुत-सी स्थियाँ उनके बिरुद्ध हो गई हैं। एक स्त्री तो किराती है कि यदि हत्या या मार-काटसे मताधिकार मिळता हा तो उसे वह नहीं चाहिए। ये स्थियाँ कहती हैं कि वर्तमान कानून-निर्माता भूत हो गये हैं। लेकिन यदि वे मारकाट करके सत्ता लेंगी तो उनका घासन कुछ अच्छा होमा ऐसा नहीं माना जा सकता। मैं कह चुका हूँ कि इन स्थियोंके उदाहरणसे हमें मार-काट आरिसे बचन रहनी गिस्ता सेनी है। उनसे भीखने साम्य बूखटी बात उनकी बहाराटी है। वे किराहाल जिस उपायका माध्यम से रही है वह बुरा है किन्तु वे जिस बुरतासे सड़ रही हैं कष्ट घटा रही हैं और पीसे इनट्टा कर रही हैं, वह सब अनुकरणीय है। वे किसी बातसे नहीं हारतीं। उनकी प्रतिज्ञा है कि वे मताधिकार लेकर ही छोड़ेंगी। और उस प्रतिज्ञाके अनुसार न पन देती हैं और प्राण भी। जब स्थियोंको अपने अधिकारोंके लिए अपनी ही बीसी जमड़ीके लोपसे इतना जूझना पड़ता है तब फिर भारतीय सत्याग्रहियोंको अधिक समय तक जूझना पड़े कैंदमें रहना पड़े मार लागी बड़ और मूछा रहना पड़ तो इतमें मादकर्म ही क्या है?

टॉस्टोयका सत्याग्रह

काउंट टॉस्टोय एक स्त्री सामन्त हैं। कभी उनके पास बहुत सम्पत्ति थी। उनकी आयु अब लगभग ८ वर्षकी है। उन्होंने बहुत दुनिया देनी है। वे पाचारण सेवकोंमें सेठ माने जाते हैं। सत्याग्रहियोंमें वे प्रभूस बिन जा सकते हैं।

उनकी बात मानकर हजारों लोग जेल गये हैं और अब भी जा रहे हैं। स्त्री सरकार उनसे डरती है। उनके सेठ बहुत तीखे होते हैं। वे लोगोंको निर्भय होकर यह सलाह देने हैं कि वे स्व-मारकाटके कानूनको न मारें और कौबमें भरीं न हों आरि। उनके सेनोंको छानने नहीं दिया जाता। फिर भी उनके सेन बहुत छाने हैं। इससे स्व-मारकाटने उनके गिरस्तेदारको विगलार कर किया है और जेल भेज दिया है। काउंट टॉस्टोयने इस कार्रवाईकी आलोचना करने हुए जो-मुठ किया है वह जानने लायक है इसलिये उसका धार नीचे देना है

स्व-मारकाटने मेरे गिरस्तेदारको विगलार कर किया है। उनसे इनी प्रकार बर्णोंको विगलार किया है परन्तु यह पटना मेरी आँखोंके सामने पटित हुई,

। वा वर इन्दी न्युत्रने जा न और वर न्यु इन्कु रिषेठ न्यु लिग न्ता वा ।

इसलिए मेरे ऊपर इसका प्रभाव ब्याबा हुआ। ठीक वेलें ता उसे मुझको गिरफ्तार करना था क्योंकि उसने मेरे ही केसोंका प्रचार किया है।

जब पुलिसने गुटेफका पकड़ा तब मैं रो पड़ा।^१ यह रोना उसपर क्या जानेसे था उसकी हाकत बेलकर नहीं आया। उसपर क्या जानेका तो कोई कारण ही नहीं था क्योंकि मैं जानता था कि गुटेफको अपने आत्मबलपर भरोसा है। जो व्यक्ति अपने आत्मबलका भरोसा करता है उसको बाहरी यार्थ प्रभावित नहीं कर सकती। ऐसा व्यक्ति जानता है कि उसका सच्चा सुख किस बातमें है। मेरे बाँसू हँसके बाँसू थे क्योंकि मैंने देखा कि गिरफ्तार किये जानेपर गुटेफने प्रसन्नता प्रकट की और वह मुझपर मुसकान केकर जेक गया। जिस व्यक्तिको अधिकारियोंने पकड़ा है वह स्नेही ईमानदार और किसीको कष्ट न पहुँचानेवाला है। उस आदमीको रातमें गिरफ्तार किया गया। वह ऐसी जेकमें रखा गया है जहाँ रतबा (टाइफस) ज्वरकी घूत लगती है और उसको निर्वासित करके ऐसी जगह भेजा जायेगा जहाँ लोगोंको बहुत कष्ट सहने पड़ते हैं।

अधिकारी मुझे गिरफ्तार करनेसे डरते हैं। मैं लीजेंसि कहता हूँ कि हत्या ठीक नहीं है यह उनको पसन्द नहीं है। मुझे पाँच-साठ घासके लिए जेकमें बन्द कर दें तो मैं बोलने और लिखनेसे रुक जाऊँ। किन्तु जैसे ये अधिकारी मुझे पालन भागते हैं वैसे ही यूरोपके दूसरे जाँय नहीं मानते। इसलिए अधिकारी मुझे गिरफ्तार नहीं करते मेरे कोषोंको गिरफ्तार करते हैं।

किन्तु ऐसा अत्याचार ब्यर्थ है। मैं मानता हूँ कि मेरे विचार सच्चे हैं और उनका प्रचार करना मेरा काम है। मैं इसके लिए भीठा हूँ। इसलिए जबतक मेरे धीरमें प्राय है तबतक मैं अपने विचारोंको प्रकट करता ही रहूँगा। जैसे गुटेफकी मार्फत मैं अपने जेक भेजता था वैसे ही अब दूसरोंकी मार्फत भेजूँगा। गुटेफकी जगह केनेके लिए बहुत-से कोस तैयार हैं। और जब मेरे पास काम करनेके लिए जानेवाले सभी लोगोंको वे पकड़ लेंगे तो मैं अपने जेक उन लोगोंको स्वयं भेजूँगा जयवा भूँगा जिन्हें उनकी जरूरत होगी।

किन्तु मैं यह पत्र लिखें अपनी या गुटेफकी खातिर नहीं लिखता। जो हजारों लोगोंपर अत्याचार करते हैं उनको औरमें भेजते हैं या फँसी देते हैं, उनके बारेमें क्या कहूँ? जो अत्याचारसे कुशल बने हैं उनकी आरमाएँ उन्हें घाप दे रही हैं। उनकी हान अत्याचारियोंकी कम रही है। कुछ अत्याचारी समझते होंगे कि उनके कामसे आमलोगोंको काम होता है। ऐसे अत्याचारियोंपर मुझे क्या आती है। उन्हें समझना चाहिए। वे ईश्वरकी बी हुई आत्मबलकी पूँजीको बर्बाद कर रहे हैं। उनको सच्चे सुपका स्वाह बचनेकी नहीं मिळता। गुटेफ और मेरे सम्बन्धमें जो बटना बटित हुई है वह असकमें देखें तो कुछ भी नहीं है। किन्तु इस बगलपर

मैं अत्याचारी साबित हो रहा हूँ अपनी विनयपीपर विचार करो अपनी आत्माको खोजो और अपने ऊपर दया करो।”

यों व्यक्ति इस प्रकार लिख सकता है, सोच सकता है और उसके अनुसार व्यवहार कर सकता है, उसने तो अपराधी बन गया है, बुद्ध पर विनय प्राप्त कर ली है और अपना जीवन सार्थक बना लिया है। ऐसे जीवनमें ही सच्ची स्वतन्त्रता अपना सच्ची आभासी है। हम द्वान्द्ववादमें ऐसी ही स्वतन्त्रताकी आकांक्षा करते हैं। अगर भारत ऐसी स्वतन्त्रताका उपयोग करने लगे तो वह स्वतन्त्र ही होगा।

पोखकका काम

श्री पोखक माछमें जो काम कर रहे हैं, वह अत्यन्त ही किस्वी विन पक्ष देना। मुझे बुरे लोगोंसे जो पत्र मिले हैं उनपरसे देखा जा सकता है कि इस समय बम्बईमें हमारी कड़वाहट ही चर्चा बह रही है। श्री पासकने बम्बईके लोगोंका मन हर किया है।

पेटिटकी आनन्दगीतता

इस काममें श्री आनन्दगीत बोलमन्त्री पेटिटके श्री पोखकको बहुत मदद मिली है। श्री पोखक उनके यहाँ ही ठहरे हैं। इतना ही नहीं श्री पोखककी जो पुस्तिका छपी है, उसकी २ प्रतियाँ भी श्री पेटिटने अपने ही खर्चसे छपाई हैं। इसमें उन्होंने १० रुपये खर्च किये हैं।

ऐसे उद्योगमें सत्पात्रियोंमें हुपना धर्म माना चाहिए।

पागलपन

बन्ने मातरम् नामका पत्र भारतमें या इन्डियामें नहीं निकल सकता इसका ह्रास ही में सिद्धांतसे निकाला गया है। इसमें सुल्फमसुल्फा मार-काट करनेकी सलाह दी गई है, मानो ऐसा करनेसे भारत मात्र ही स्वतन्त्र हो जायेगा। किन्तु, अगर स्वतन्त्र भी हो जाये तो वह उस स्वतन्त्रताका करेगा क्या? तब मैं इस बार मार-काटकी बातपर ज्यादा विचारना नहीं चाहता। मैं इन्डियामें कुछ माछीय मुक्त बिना विचार किये उन लोगोंको गालियाँ देते हैं और उनका विरस्कार करते हैं जिन्होंने आमतक भारतकी सेवा की है। ऐसा करनेसे भारत स्वतन्त्र होनेवाला नहीं है। बरि मातरम् के इस अंकमें श्री पोखके और उनके साथियोंपर आक्षेप किया गया है। कसक कहता है कि श्री पोखके और उनके साथी नीच और कायर हैं। उसका अर्थ है कि ऐसा आक्षेप करनेमें देहाका कल्याण है। मुझे तो लगता है कि ऐसा केस सिद्धनेवालेको भिरा बालक ही होना चाहिए। जब विचार करें। यह सम्भव है कि श्री पोखके सर फीरोजशाह मेहता आदि उरनी बुर नहीं पाते जिनकी बुर गौरवान् जा सकते हैं। ऐसा हो तो क्या इससे उनका क्रिया हुआ क्या अर्थ हो जाता है? श्री पोखकेने मिखापी-वीटी हासतमें पढ़कर, अट्टाहू बर्पतक केवल जीवन-निर्वाहका खर्च केकर फर्मुहन कवित्रके विद्याभियोंको पढ़ाया। उनमें इतनी सक्ति है कि अगर वे चाहते तो बहुत कमाई कर सकते थे। इस समय परिपर (डेविस्लेटिब कौन्सिल) के सहायके रूपमें उनको जा देहा मिलता है उसका अधिकार के परोपकारमें लगा देते हैं। जब श्री पोखकेन ऊपर मिले अनुसार [त्याग] किया तब कम ही लोगोंमें एसा उत्साह था। उनका त्याग बहुत बड़ा था यह सभी स्वीकार करेंगे। सर फीरोजशाहने बम्बई

कारपोरेखनमें तीस वर्ष काम किया है। उन्होंने जिन दिनों यह काम किया उन दिनों बीसा काम करनेवाले लोग कम ही थे। अगर वे आज हमारी तरह विचार न करें तो क्या हम उनका विरस्कार करेंगे? उन्होंने जो काम किया उसीके फलस्वरूप आज हम क्या काम करनेके योग्य बन सके हैं। मैं इस सवालपर बहुत नहीं करता कि वे इस समय मूक कर रहे हैं या नहीं। मैं तो इतना ही कहता हूँ कि वे मूक कर रहे हों तो भी उनकी निन्दा करना हमें खोसा नहीं देता। इसमें हमारा खोसापन है और इससे प्रकट होता है कि हमें स्वतन्त्रताका पहला पाठ बसी पढ़ना है। स्वतन्त्रताका अर्थ स्वच्छन्दता नहीं है। मुझे स्वयं अपनी नीतिके उपभोगकी स्वतन्त्रता हो सकती है। लेकिन ऐसा मासूम होता है कि हम तो बुराईकी भीतें छीन छेनेका विचार कर रहे हैं। मुझे ये विचार प्रकट करनेकी जरूरत इसलिये पड़ती है कि मैं जानता हूँ ऊपर बताये हुए पत्रके अंक इंडियन ओपिनियन के भी कितने ही पाठकोके हाथोंमें आठ होंगे। वे गर्मदसी हों या नर्मदसी इससे यहाँ मेरा कोई सरोकार नहीं। दोनोंका कर्तव्य है कि जो लोग भारतके स्वतन्त्र कहे दये हैं उनकी बनाई हुई इमारतको तोड़ें नहीं उसके ऊपर वे बिनाई भरे ही करे। ऐसा न करेंगे तो वे जिस डाक पर बैठे हैं उसीको काटनेके बराबर होया। तम्रता पम्मीरता और विचारपूर्वक व्यवहार—ये स्वतन्त्रके स्वतन्त्र हैं। जो जी चाहे बोझना चाखना तो प्रलाप कहा जायेगा।

डॉक्टर मेहता

डॉ० मेहताने डाक ही में सरप्राइज-नोटमें पीठे दिये हैं। वे अब रंगून चले गये हैं।

आजम हाफिजी

देखता हूँ इंडियन ओपिनियन में वह खबर लगी है कि श्री आजम हाफिजी परीशामें पास हो गये हैं। यह सत्य है। श्री आजम जमीतक पीठकी लंगीके कारण किसी स्कूलमें शालिक ही नहीं हो सके हैं तब वे पास कहसि होंगे?

सैयद अली इमाम

अलिस भारतीय मुस्लिम लीगकी बिहार शाखाके अध्यक्ष श्री सैयद अली इमामके सम्मानार्थ पहली अक्टूबरको भोज दिया गया था। इसमें कब्रग सी लोग जाये होने। डॉक्टर अब्दुल मबीन प्रमुख थे। आमन्त्रण-समितिके हिन्दू और मुसलमान दोनों ही थे। श्री बर्मा और श्री आकर मन्त्री थे। उपस्थित सम्मेलनोंमें सर हेनरी कॉटन डॉक्टर रबर फोर्ड श्री अपटन सर मंचरजी भावनगरी तथा साहब सैयद हुसैन बिलग्रामी मेजर सैयद हुसैन श्री रिच श्री [जे एच] पोल्क श्री बिपिनचन्द्र पाल श्री बापरडे श्री परीत श्री डोटालाक पारेक आदि थे।

श्री अली इमामने भाषणमें कहा कि भारत इन्फेडके साथ रह सकता है उसके अपीन नहीं रह सकता। भारतीयोंको अंग्रेजोंके बराबर अधिकार दिये जाने चाहिए। सर्वे मॉर्सेने जो-कुछ दिया है उसका अच्छा उपयोग किया जाये और उसके साथ और माया जाये। हिन्दुओं मुसलमानों और पारसियों सबको एक राष्ट्र बनकर रहना है। तुर्कीमें मुसलमान यहूदी और ईसाई सब एक होकर रहते हैं। इसीसे उनको सम्मान मिलता है। भारतमें जहाँ हिन्दू ज्यादा हों और मुसलमान कम हों वहाँ उचित यह है कि हिन्दू मुसलमानोंको

ज्यादा हक पानेमें मरद वें। जहाँ मुसलमान ज्यादा हों वहाँ मुसलमानोंको उचित है कि वे हिन्दुओंके ज्यादा हक पानेमें मरदवार हों। अगर ऐसा किया जाये तो हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न खड़े ही नहीं। भारतमें हमें बहुत सुधार करनी जरूरत है। हमें शिक्षा-प्रचार करना चाहिए और स्त्रियोंके अधिकारोंकी रक्षा करनी चाहिए। जो काम हमें बुरा करना है उसमें पीछे न रहना चाहिए। समारमें उनकी स्वास्थ्यकी सुभ-कामनाका स्वागत शालिम्योंकी पड़गड़ाहटसे किया गया।

उनके बाद सर हेनरी कॉटनेने छोटा-सा भाषण दिया। उन्होंने कहा कि भारतीयोंके अधिकार भारतीयोंके हाथमें हैं।

फिर सर मंचरजी भावनमरी बोलनेको लड़े हुए। उन्होंने ट्रान्सवाल और नेटालके विप्लमण्डलों [की सफलता] के लिए सुभ-कामना करनेकी अपील की। उन्होंने अपने भाषणमें कहा कि दक्षिण आफ्रिकाका प्रश्न बहुत गम्भीर प्रश्न है। उसके सम्बन्धमें यहाँ दो विप्लमण्डल जाये हुए हैं। उनको मरद देनेकी जरूरत है। हमारे भाई दक्षिण आफ्रिकामें बहुत कष्ट पा रहे हैं। उनकी इस अपीलका भी समारमें बड़े उत्साहसे स्वागत किया गया।

इसके बाद श्री भाषीने उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय राष्ट्रका निर्माण दक्षिण आफ्रिकामें हो रहा है। जहाँ लोग स्वतन्त्रताके सातिर कष्ट-सहन करते हैं वही राष्ट्रका निर्माण होना सम्भव है। इसके बजाया दक्षिण आफ्रिकामें हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न उठता ही नहीं है। इस प्रश्नका निर्णय वहाँ हुआ-जैसा ही है। श्री जकी इमाम कहते हैं कि अल्पसंख्यकोंको अधिक अधिकार देने जाने चाहिए, यह बात बिल्कुल उचित है। ऐसा होनेसे ही हिन्दू और मुसलमान एक हो सकते हैं।

[उन्होंने कहा] ट्रान्सवालके भारतीय अपने स्वार्थकी लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं बल्कि भारतकी प्रतिष्ठाके लिए लड़ रहे हैं। पारसी स्वतन्त्रजी इसीके लिए जेठ भूयत रहे हैं। कुछ शिक्षा भी लेके गये हैं। जबतक श्री जकी इमाम-जैठे लोगोंको ट्रान्सवालमें अधिकार प्रवेशकी स्वतन्त्रता नहीं मिल जाती तबतक भारतीय जेठ जाते ही रहेंगे। वे यह अधिकार लेकर रहेंगे।

नेटालमें सरकार भारतीय व्यापारियोंको कुछछ देना चाहती है। वह तरीक भारतीयों तकसे ठीक पीछे बाँध कर कैदी है और उनके बच्चोंको पढ़ने नहीं देती। ऐसे अन्यायका विरोध प्रत्येक भारतीयको करना चाहिए। गवाह छाहूब ईशिया कौंसिलके सरस्य हैं। इन भारतीयोंके लिए न्याय माँगना उनका कर्तव्य है और यदि न्याय न मिले तो उनका धरस्यवा से स्वायत्त दे देना उचित होगा।

भारतीय मुसलमनोंको यह विचार करना चाहिए कि यह समस्या क्या है। अगर ऐसा हो तो हमका हल पुरस्त निकल जाये।

मेजर सीमर हुसेनने भाषण देत हुए कहा कि जैसे हिन्दू और मुसलमान इंग्लैंडके होटलमें एक मेज पर बैठकर जाना जाते हैं वैसे भारतमें भी किया जाना चाहिए।

श्री विपिनचन्द्र पाण्डेने भाषण करते हुए कहा कि हिन्दू और मुसलमान एक हो सकते हैं और उनको एक होना चाहिए। श्री जकी इमामको हिन्दुओं और मुसलमानों सबने सम्मान दिया यह बहुत ठीक हुआ है। हिन्दू हिन्दू हैं और मुसलमान मुसलमान हैं यह ठीक है ही लेकिन उनकी भारतीय होनेमें अधिक पर्य मानना चाहिए।

श्री अली इमामने फिर बोखले हुए कहा कि वसिज बाफिकाका प्रस्न बहुत बड़ा है, इसीसे उन्होंने अपनी भाषणमें उसके सम्बन्धमें कुछ नहीं कहा है। किन्तु वह प्रस्न उन्हें सास्ता रहता है, और वे उसको भूल गयीं सफ़ते। भारतीयोंके कष्ट दूर करनेके लिए उनके ब्रिताना हो सकेगा उतना वे करेगे ही।

डॉ एवरकोर्डने कहा कि उनमें श्री बाँधीका भाषण सुननेके बाद मया उत्साह जा गया है। ट्रान्सवालमें भारतीय एक अच्छी सफ़ाई सड़ रहे हैं। सभी लोगोंको उनके उदाहरणका अनुकरण करना चाहिए। वे यथासक्ति सहायता तो देंगे ही।

संसद-सदस्य श्री अप्टनन भी बैठा ही भाषण दिया। उनके बाद श्री परीज बोले और अब समा समाप्त हो गई। मुझे कहनेकी आवश्यकता नहीं कि मोबमें दोनों सिद्ध मन्त्रोंके सदस्य गीबूथ थे।

श्री अली इमामके सम्मानमें हुएरा समावेह मंगलवार शामको चार बजे होगा। उसका आयोजन अखिल भारतीय मुस्लिम लीगकी ओरसे किया जायेगा। श्री अली इमामको पहचि इस्तम्बूल जाना है और बहसि वे भारत जायेंगे।

गुजरातीयोंकी समा

गुजराती भाषाके सुधार और विकासके उपायों पर [विचार करनेके लिए] एक सम्मेलन काठियावाड़में किया जानेवाला है। इसके समर्पनके लिए मंगलवारको छह मंथरवी भाषणपरीची अन्वेषणमें गुजरातीयोंकी एक समा की जायेगी।^१ इस समाके संयोजक श्री इस्तम बेसाई, श्री हुसेन पांडर मुहम्मद और श्री जेठालाल परीज हैं।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ३०-१०-१९१९

२९० पत्र मारणवास गांधीको

सम्बन्ध

अक्टूबर ३, १९१९

श्री मारणवास

तुम्हारा पत्र फिर नहीं मिला। तुम्हारा चम्बा इकट्ठा करनेका काम चल रहा होगा। मैं चाहता हूँ कि यदि श्री छगनलाल इम्बई जानेका विचार करे तो तुम दक्षिण बाफिका जाओ। तुम्हारा भी वही विचार हो तो मेरा आग्रह है कि तुम जाओ। स्वयं सड़न ही बारम-कस्याप होना ऐसा मैं मानता हूँ। लेकिन इसके लिए तुम्हें पहले अपने पिताकी अनुमति लेनी चाहिए। मैं भारतीय लीडरोंको लिख रहा हूँ। अगर उनका विचार तुम्हें मेजनेका हुआ तो वे तुम्हें यह पत्र देने अथवा पत्र देते हुए अपना विचार बतायेंगे। मैं नहीं हूँ यह मानकर उत्तर देना। तुम्हारा जाना ठय हो तो भी श्रीमिन्त्रोंसे मंजूरी मँदानी होगी।

१ इंडियन ओपिनियन: गुजरातीयोंकी समा ३०-१०-१९१९।

२ इंडियन ओपिनियन: ३०-१०-१९१९।

तुम जेठ जातके लिए जाओ तो मजूरीकी जरूरत नहीं है, क्योंकि तब तो तुम्हें जोहानिसबर्ग माना होगा। अगर मानें तो जेठमें कुछ तनिक भी नहीं है, कुछ ही है। तुम विशेष विचार-विमर्श वि० समझासके करना। गांधी-परिवारने सवाचरण किया है और पुत्रचरण भी किया है। किन्तु, हम सवाचरणके लिए प्रसिद्ध हैं। इसमें बुद्धि हो सके तो यह परिवारकी सम्पत्ती सेवा है। इसलिए परिवारमें जितने सवाचारी युवक हैं उन्हें बुरा सेनेकी इच्छा मुझे सदा रखी है।

मोहनदासके मासीबाबि

गांधीजीके स्वासरीमें मूळ गुजरती प्रति (सी डब्ल्यू ४८९८) से।
सौम्य नारनदास गांधी।

२९१ पत्र सुशासन गांधीजी

अन्वय

अक्टूबर ६, १९१९

बादरनीय सुशासनबाई,

बि ध्यानकाधने पहले आपसे बि नारनदासको भी फीनिक्समें होम देनेकी इजाजत मांगी थी। लेकिन उस वक्त तो इजाजत नहीं मिली थी। मुझे याद है कि मैंने भी लिखा था। अब फिरसे विचार किया जा रहा है।

अगर बि नारनदासको दे दें तो बुरा न होया इसमें उसका कस्याम है।

ऐसा चाहना स्वाभाविक है कि उत्तर अबस्वामें सब बेटे आपके पास रहें लेकिन यह मोह भी है। अगर वे समय रहकर जालनकस्याम कर सकते हों और एक बेटा आपके पास रह सकता हो तो दूसरे अलग क्यों न रहें? अपने बेटोंको सवा पास रखना सधमूच स्वाम है। इमाप धर्म तो सवा परमार्थ सिखाता है। फिर, अगर कड़कोके उस मार्गपर धाकड़ होनेका प्रसंग आवे तब तो मुझे लगता है उन्हें उसपर जाने ही देना चाहिए। अगर यह बात गले उठर सके तो मेरी बिनती है कि आप बि नारनदासको इजाजत दे दें।

इस सम्बन्धमें मरम पहले ध्यान इस बातका रखना है कि उसकी अपनी बृत्ति बीसी होनी चाहिए। उसका विचार हो तभी मेरी यह बिनती कामू होती है। मुझे याद नहीं है कि नारनदासका ब्याह हो गया है या नहीं। अगर न हुआ हो और सवाई भी न हुई हो तो मेरे खयालसे बहु क्याथा अच्छा काम कर सकेगा। मैंने इस विषयमें बहुत विचार किया है। बीसा आचरणभी किया है, और कर रहा हूँ। [इस समय] इसमें पहले नहीं उचरता। [सिर्फ] अपने विचार आपके सामने रखता हूँ क्योंकि मुझे क्यता है और मैं यह मान लेता हूँ कि हम सब भाइयोंमें आप ही मुझे कुछ-कुछ समझे होंगे।

विशेष बि समझासके आपसे कहेगा। उसकी बात मुनकर बीसा ठीक कने बीसा करें।

मोहनदासके दण्डबत

गांधीजीके स्वासरीमें मूळ गुजरती प्रति (सी डब्ल्यू ४८९९) से।
सौम्य नारनदास गांधी।

लॉर्ड महोदय

मैं आपके इसी ४ तारीखके पत्रके लिए धन्यवाद देता हूँ।^१ आप जो बोझ-या बरकाश से सके हैं आशा है वह सामान्य बीता होगा। मैंने जान-बूझकर इस विषयमें और जागृकी पैकर आपको परेशान नहीं किया। लेकिन अब मैं कहूँ कि श्री पोल्क भारतमें बहुत काम कर रहे हैं। सम्बन्धमें जो सार्वजनिक समा की गई थी वह बहुत सफल रही। उसके बाद कुछ महमशाबाह और कदूरमें सभाएँ की गई हैं। भारतके अखबारोंमें इस सवालपर पहुँचेसे ज्यादा विस्तारपूर्वक और निरन्तर ही बहुत ज्यादा समझघारीसे चर्चा की जा रही है। अब अखबार यह मानते हैं कि ट्रान्स्वाल्के भारतीय किसी स्वार्थपूर्ण उद्देश्यसे कष्ट नहीं उठा रहे हैं बल्कि राष्ट्रीय अपमानको दूर करानेके लिए कष्ट उठा रहे हैं। वे अबतक इस बातको स्वीकार नहीं करते थे।

आपने लॉर्ड मॉन्टेगुके पत्रके सम्बन्धमें जो उल्लाह की है और लॉर्ड समाके सूचना-पत्रमें अपने प्रस्ताव^२ सम्बन्धमें जो खबर दी है उसके लिए मैं इतना हूँ।

मुझे बनी-बनी लॉर्ड कू का उत्तर मिला है।^३ उनके पत्रकी मकल और उत्तरका मस-विधा इसके साथ भेजता हूँ। मसविधा आपकी मंजूरी या आपके संशोधनके लिए है। कुछ टाइम्स ने अपने बोहामिसबर्नके सबाहबाताकी मेजी हुई जो खबर छापी थी उत्तर बहुत-कुछ वैसा ही है। श्री स्मट्सने 'रेड पायोनियर्स' आपका दिया था। सबाहबाताने उनके पापनका सारांश देते हुए लिखा है

श्री स्मट्सने वर्तमान राजनीतिकी कोई चर्चा नहीं की, यद्यपि इस बातका प्रयास बहुत किया गया कि वे संयुक्त मंत्रिमण्डलके बारेमें सरकारके विचार और एम्प्लोई सरवायफ़िबॉके प्रति उसके कानमें परिवर्तनकी अफवाह जादि विषयोंपर कुछ कहें। सरकारके कानमें किसी तरहके परिवर्तनकी बात अब भी अफवाह ही है।

मेरी रायमें लॉर्ड कू का उत्तर सन्तोषजनक भी है और बहुत असन्तोषजनक भी — असन्तोषजनक इसलिए कि लॉर्ड कू स्पष्टतः श्री स्मट्ससे अकरतसे ज्यादा डरते हैं सन्तोष जनक इसलिए कि बातचीत ।

१. दार्जीलिंगे लॉर्ड ऐंस्टहिलको २१ और २२ सितम्बरकी पत्र जिन्हे वे डेप्युटी ने क्लकक नहीं है। कल्ल लॉर्ड ऐंस्टहिलके कल्लसे बोझ-बहुत पाठान हो जाता है कि दार्जीलिंगे स्व पत्रोंमें क्या लिखा था। देखिए परिशिष्ट २८।

२. इस सबाह कल्ल लॉर्ड कू ने १९ सितम्बरकी लॉर्ड एम्प्ले कीसालीन अधिसूचनामें दिया था।

३. कल्ल ४ सितम्बरकी टारिख की; देखिए संकलन-पत्र, पृष्ठ ३५५।

४. लॉर्ड एम्प्ले कीसालीन अधिसूचना में है।

ऐसा लगता है कि श्री ह्याजी हबीबको और मुझे सार्वजनिक रूपसे कुछ काम करनेके पार ही सहसि जाना चाहिए। सामान्यतः देखनेसे तो यही आश्चर्यक सामूहिक होता है। अगर हो सके तो हमें लोकसभाके उन सदस्योंकी जो हमारी बात सुनना चाहें एक बैठक बुलानी चाहिए। हमें सभी दफ्तरे सहायता और सहयोगकी माँग करनी चाहिए। हमें विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायोंके प्रतिनिधियोंके सामने भी स्थिति रखनी चाहिए। आपने जो छोटा विवरण पत्र लिखा है उसे भी विस्तारित करना चाहिए और उसके साथ एक ऐसा परिपत्रात्मक पत्र भेजना चाहिए, जिसमें अरबोंकी सब स्थिति भी जाये। हमें उन सम्पादकोंसे भी मित्रता चाहिए जो हमसे मित्रता मंजूर करें और अरबोंको एक आम पत्र भेजना चाहिए। इसके लिए धायर हमें कमसे-कम इस महीनेके आखिरतक ठहरना पड़ेगा। मैं यह भी फिरसे साथ रहा हूँ कि अगर हमें ओहानिखर्षकी यूरोपीय और भारतीय समितिवाँ मंजूरी से दें तो क्या हमारा बोझ-से समझके लिए मारण जाना और फिर सम्बन्ध छोटे हुए बलिब आफ्रिका मीटिंग क्या आच्छा न होगा? सेकिन मेरे आशयसे हमें सहसा रुकन यह उठाना चाहिए कि हम डॉ. रॉ. को एक पत्र लिखें। इस पत्रको मैं आपके पाससे मसविदा आपस मिलते ही भेज दूँगा। बाकी बातोंके बारेमें अगर आपको पुरख्य हो और आप छहर जा रहे हों तो आप जब चाहें हम बातचीत कर सकत हैं। अगर यह न हो सके तो मेरे लिए आपकी सहाह ही मुख्यबान होगी।

आपका आदि,

[संछन्न-पत्र]
पत्रका मसविदा

[सन्देश]
अक्टूबर ५, १९९

उपनिवेश-उपमन्त्री
कौन्सिल ऑफिस एण्ड
महोपय

द्वान्तवाकके ब्रिटिश भारतीयके प्रदनके सम्बन्धमें आपका इसी ४ तारीखका पत्र पानेका सीमास्य मिला। डॉ. रॉ. न संतोषजनक समाज्ञता करनेके उद्देश्यसे जो प्रयत्न किये हैं और वे काम जो करने उनके लिए श्री ह्याजी हबीब और मैं उनके आमाटी हैं। सेकिन मेरे साथी और मैं बड़े अनुभव करते हैं कि जब वक्त आ गया है जब हमें अपनी स्वातंत्र्यसे पहले बलवाको अपनी सब बात बताना बेनी चाहिए और जब हम महां क्याथा कर सकना भी नहीं चाहते। मेरा अर्थाल है कि बातचीत बहोतक बली है बहोतक उसका विमुक्त परिचाम सार्वजनिक रूपसे प्रकट करनेमें डॉ. रॉ. को कोई आपत्ति न होगी।

आपका आदि,

टाइप की हुई अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एन एन ५१११-२) से।

१. पत्र अक्टूबर ५, १९०९ को प्रकाशपूर्ण भेजा था।
 २. बाकीकी डॉ. रॉ. टॉल्डिनके द्वारा दिन रॉ. टॉल्डिनके भिजे थे।
 ३. बाकीकीने कुछ दृश्य कल्पना टैपट किया यह "पत्र: डॉ. रॉ. टॉल्डिन" एन ४५९।
- सेकिन कन्ने भी वन मेथ कल कू मिला था; देखिए "पत्र कन्नेविश-अपमन्त्रीको" एन ४५७-८।

[अम्बन

बम्बुर ५, १९१]

भारतमें भाषणक नई हवा बल रही है। हिन्दू, मुसलमान पारसी सभी आतुरतापूर्वक 'मेरा देश' बगवा 'हमारा देश' की रट लगा रहे हैं। हम इसके विषयमें फिलहाल राजनीतिक दृष्टिसे विचार नहीं करेंगे। भाषाकी दृष्टिसे विचार करते हुए सहज ही मान्य हो जाता है कि इसके 'हमारा देश' कहकर पुकारनेसे पहले हममें अपनी भाषाके प्रति अनिश्चान उत्पन्न होना चाहिए। यदि हम जाने उदाहरणोंपर विचार करें तो देखेंगे कि बोझ लोगोंको मात्र भी स्वयम्भू मिला है उसका एक प्रबल कारण तो यह है कि ऐश्वर्य भी और उनके बाल-बच्चे भी अधिकतर बोझ भाषाका ही उपयोग करते हैं। जनरल बोबा डॉर्न को से बात करते समय भी बोझ भाषाका उपयोग करते हैं। उनका अंग्रेजीका ज्ञान हमारे अंग्रेजीके ज्ञानसे बड़ा-बड़ा माना जा सकता है किन्तु वे अपने सम्मानकी रक्षा करने और आवर्ण उपस्थित करनेके विचारसे भी अपनी जन्मभूमिकी भाषाका उपयोग करते हैं। हमें ऐसे उदाहरण और भी मिलते हैं किन्तु उनको यहाँ देनेकी आवश्यकता नहीं है।

इसलिए मुझे तो लगता है कि भारतमें छोटे-बड़े सभीका ध्यान अपनी-अपनी भाषाकी ओर जा रहा है, यह एक सन्तोषजनक प्रसंग है। इस उद्बुधकी अभिव्यक्ति भी देखनेमें आती है कि सारा भारतीय राष्ट्र एक भाषाका उपयोग कर सकता है। भविष्यमें शायद ऐसा हो भी सके। वह भाषा भारतकी ही होनी चाहिए, इसे सब कबूल कर लेंगे। किन्तु वह भाषाकी मंचित हो सकती है। 'मैं भारतीय हूँ' ऐसा अभिमान मनमें बाधे तो उसके बन्धन यह अभिमान भी होना चाहिए कि 'मैं गुजराती हूँ'। यदि ऐसा न होना तो हमारी चीजमें न देशमें की स्थिति हो जायेगी। इएक प्रान्तके नेताओंको इतरे प्रान्तकी भाषा व्यवस्था पाननी चाहिए। गुजरातीको बमला मराठी उनिक हिन्दी इत्यादि भाषाएँ सहज ही जा सकती हैं। यह कोई मुश्किल बात नहीं है। हम अपनी कुछ [मजद] भारतीयोंके कारण अंग्रेजी भाषा सीखनेके लिए धर्य ही निरुत्तरी भाषापन्नी और मेहनत करते हैं उससे भाषा परिधम भी भारतीय भाषाओंको सीखनेके लिए करें तो कुछ और ही रंग जाये। भारतका उदार बहुल-सुख इसीमें समया हुआ है। [किष्ठी समय] मैं भारतकी शिक्षाके सम्बन्धमें डॉर्न मैकलिके विचारोंके मोहमें पड़ गया था। इतरे लोग भी मोहमें पड़े हैं। लेकिन मेरा वह मोह दूर हो गया है। मैं चाहता हूँ इधरोंका भी दूर हो जाये। लेकिन शायद यह बनकर इस सम्बन्धमें क्यावा कहने या सोचनेका नहीं है।

१. उम्बनमें गुजराती छाहित उम्बनका ठीकत अभिव्यक्ति इतिहास था। उम्बनके उम्बनमें उम्बे पूर्व ही, ५ बम्बुरकी, उम्बनमें गुजरातियोंकी एक उम्ब बलविक्रम की थी थी। उम्बे गाँवमें निजाल के इर का उम्बल देश दिना था "यह उम्ब उम्बनमें उम्बे मन्ने इतिहासके गुजराती छाहित उम्बनके ठीकते उम्बेइलको अपनी उम्बे मेरवी है और उम्बे उम्बनका उम्बल करती है।" उम्बकी रिपोर्ट इतिहास उम्बेइलमें "गुजराती उम्बनके उम्बनमें उम्ब विचार" उम्बेके उम्बलित इर थी। उम्बे उम्बे १९।

यदि ठगरकी इमील ठीक है तो हम आने आस पुनरुत्थी भापाके बारेमें विचार कर सकते हैं। पुनरुत्थी आपसमें बंधनी भापाका व्यवहार करते हैं। इसपर कहना पड़ेगा कि यह उनकी अपन बचाका सूचक है। इसके कारण मातृभापा कगल हो गई है। हम स्वयं उसका अपमान करते हैं और फलतः स्वयं दीन बनते पाते हैं। मैं यह सोचकर कोप उठता हूँ कि मैं अपने विचार पुनरुत्थीमें ठीक-ठीक व्यक्त नहीं कर सकता और बंधनीमें कर सकता हूँ। जिस व्यक्तिने अपनी भापाका बनाकर किया है, वह अपने देशका क्या मका करेगा? महान् पुनरुत्थी समाज कमी पुनरुत्थीको भूलकर अन्य भापा बंधीकार करेगा यह स्वप्नमें भी सम्भव नहीं। यदि यह सम्भव नहीं है तो यह कइनेमें कोई अतिगोपित न होनी कि जो अपनी भावाकी उपेक्षा करते हैं वे अपने देश और समाजके हीही हैं। यह बचन अनुचित नहीं है कि भापामें उस बोझनेवालोंका प्रतिबिम्ब होता है। यदि ऐसा है तो यह एक बड़ा अच्छा सन्नग है कि पुनरुत्थी बंगला उर्दू मराठी आदिके सम्मेलन होना चपे है।

विदेश जानेवाले भारतीयोंके लिए यह बात बहुत विचार करने योग्य है। उनकी जिम्मेदारी बड़ी है। उन्हें अपनी जातिका नेतृत्व करना है। यदि वे ही अपनी भापा भूल जायेंगे तो पापके मारी होंगे।

मैंने बंधनीकी काकी पिछा पाये हुए कुछ लोगोंके लेखोंमें पढ़ा है और कुछको ऐसा कहते भी सुना है कि वे पुनरुत्थीकी अपेक्षा बंधनी अधिक जानते हैं। यह हमारे लिए बहुत चर्चकी बात है। सब कहा जाये तो यह ठीक भी नहीं है। मुझे यह कहनेमें कोई शिक्का नहीं कि ऐसा लिखने और बोलनेवाले बंधनी भापा गुन नहीं लिखने-बोलते। ऐसा ही होना भी चाहिए। मैं मानता हूँ कि कुछ विचार बंधनी भापामें आमातीसे प्रकट किये जा सकते हैं यद्यपि यह भी हमारे लिए चर्चकी बात है। लेकिन साधारणतः यह कहना कठिन है कि हम बंधनी भापाके मुहाबरे और व्याकरणसे अच्छी तरह परिचित हैं। [इसके विपरीत] पुनरुत्थी भापाके मुहाबरे और व्याकरणसे साधारणतः सभी भारतीय सहज परिचित होते हैं। हम पुनरुत्थीमें भूतकालके बरके वर्तमान कालका प्रयोग कमी नहीं करते किन्तु बहुत बंधनी पढ़े-लिखे भारतीयोंके लेखोंमें भी कानका अगुन प्रयोग मिलेगा। मुहाबरोंकी अगुनिका तो बार नहीं है। ऐसा होता है कि [कमी-कमी] हम पुनरुत्थी उच्चारण ठीक नहीं करते और संयुक्तार नहीं बोल पाते। लेकिन यह एक ऐसा दोष है जिसे आमातीसे दूर किया जा सकता है। इसीके कारण यह नहीं कह सकते कि हम पुनरुत्थी कम जानते हैं।

कई बार यह भी सुना जाता है कि जो विद्यार्थी बंधनी पढ़नेके लिए [महाँ] जाते हैं उन्हें बंधनीका अभ्यास करना होता है इन स्थितिमें वे पुनरुत्थीकी विन्यास क्यों करें? यह बहस है। जब पुनरुत्थी मिले-जुलें तब यदि वे पुनरुत्थीमें ही बोलें तो उनका बंधनीका ज्ञान कम नहीं होगा उमरा बड़ना ही सम्भव है क्योंकि तब वे बंधनीकी ही बंधनी सुनते रहेंगे जिन्हने उनके जान तेज होने और वे गलत बंधनी पीरन पकड़ सकेंगे। इनके विद्या विद्यालयमें रहनेवाले भारतीय विद्यार्थी अपनी पढ़ाई-लिखाईमें कुछ जाने व्यस्त नहीं रहते कि वे सोने समय भी पुनरुत्थी सुनकर न पढ़ सकें। अन्तमें यदि उन्हें देवकी सेवा करनी है तब अतिरिक्त काम करना है तो अपनी मातृभापाके लिए उन्हें समय निवाहना ही पड़ेगा। यदि अपनी भावाकी हानि करके बंधनी नीगनेमें ही अपना समय देना है, तो बंधनी पढ़नेका जो

हेतु है—अर्थात् बेसहकार्यता—वही सत्य हो पायेगा। यदि ऐसा हो तो उससे यही सिद्ध होगा कि अंग्रेजी पढ़नेकी कोई जरूरत नहीं है। अगर औपरोक्षतसे बीमारकी मौत ही हो जाये तो कोई भी कह सकता है कि औपरोक्ष नहीं किया जाना चाहिए।

फिर, गुजराती कोई त्यागने योग्य भाषा नहीं है। जिस भाषामें जरूरी मेहुता^१ बसा मगत और हयाराम^२ जैसे कवि हो गये हैं और उस विकसित कर गये हैं तथा जिसकी बोझले वाले बुनियाके तीन बड़े धर्मों—हिन्दू, इस्लाम और जर्बुस्त्र—के अनुयायी हैं उस भाषाकी उन्नतिकी कोई सीमा नहीं बांधी जा सकती। एक ही विचार गुजराती भाषामें अनेक बार तीन छद्मसे पेश किया जा सकता है। पारसी जिसे कुशा मुसलमान जिसे अस्का-ठाका और हिन्दू जिसे ईस्वर कहेसे अंग्रेजी भाषामें उसके लिए एक ही नाम है “गाँड”। मुसलमान को गुजराती किलेगा उसमें अरबी और रोख सादीकी फरसीकी छाया पड़ेगी पारसीकी गुजरातीमें जर्बुस्त्रके जेम्ब की छाया पड़ेगी और हिन्दूकी गुजरातीपर संस्कृतका प्रभाव होगा। हिन्दू और मुसलमान तो भारतकी सब भाषाओंकी सेवा करते हैं लेकिन जान पड़ता है पाठसियोंको तो ईस्वरने ईश्वरसे गुजरातीकी सेवाके लिए ही यहाँ भेजा है। उनके जस्ताही स्वभावके कारण गुजराती भाषाको बहुत लाभ हो सकता है। उनके हाथमें अनेक गुजराती पत्र-पत्रिकाएँ हैं। इसलिए उन्हें गुजरातीके भविष्यको बहुत यत्नपूर्वक सम्भालना चाहिए। मैं उनसे एक ही निन्ती करना चाहता हूँ “बा भाषा आपकी मातृभाषा बन गई है, और जिसे अब आप छोड़ नहीं सकते उस भाषाका आप जून न करें।” पारसी केन्द्रक सरस गुजरातीमें सुन्दर विचार प्रस्तुत करते हैं लेकिन भाषाके उच्चारण और हिन्दूके सम्बन्धमें ऐसा व्यवहार करते हैं मानो जान-बूझकर उससे दूर ठान लिया हो। यह खेरकी बात है। सभी गुजरातियोंको इसपर विचार करना चाहिए। पन्मीरतापूर्वक विचार करने-पर हमें मानना पड़ेगा कि हिन्दू, मुसलमान और पारसी इन तीनोंके पंथ स्याते हैं। ऐसा समझना है मानो तीनों अपनी-अपनी सम्भालने का निश्चय कर बैठें हों। मुसलमानोंने अभी तक शिक्षामें पहुँची दिलचस्पी नहीं ली है। इसलिए उन्होंने गुजराती भाषापर अभी तक कोई स्पष्ट छाप नहीं डाली है। लेकिन वे शिक्षा में रहे हैं। हिन्दुओं और पाठसियोंको उन्हें शिक्षित करनेके लिए पूरा उद्योग करना चाहिए। यदि ऐसा हो तो उनसे गुजराती भाषाका बहुत बड़ा सहारा मिलेगा।

राजकोटमें जो सम्मेलन होनेवाला है उससे मैं नम्रतापूर्वक निन्ती करने का उद्योग करता हूँ। गुजराती भाषाके विद्वान्, मुसलमान और पारसी विद्वानोंकी एक पिन्धी-बुधी समिति बनाने में। उस समितिका काम तीनों कीमोंके गुजराती केन्द्रपर निगाह रखना और केन्द्रोंको सहाय देना हो। विचारहीन केन्द्रोंके लिए इस समितिसे अपने केन्द्र बना पारिभ्रमिक विदे सुचरवाना भी सम्भव होना चाहिए।

- १ (१४१५-१५) गुजरातीके छठ कवि; पंथीके सिद्ध मन्त्र “वेष्म बन ती सेने कविने” के रचयिता।
२. उपरवीं छन्दस्ये पंथी कवि, जो अपने कविने सिद्ध प्रसिद्ध वे। वे गुजराती और गुजराती की वे।
- ३ (१०००-१०१३) वेष्म कवि; अनेक कीमोंके रचयिता की गुजरातीमें कीमति है।
- ४ (११८४-१२९९) पारसी कवि।

हेतु है—अर्थात् वेदकर्मस्थान—वही सत्य हो जायेगा। यदि ऐसा हो तो उससे यही सिद्ध होगा कि अनेकी पढ़नेकी कोई जरूरत नहीं है। अपर औपदेसगत बीमारकी मीठ ही हो चाये तो कोई भी कष्ट सहता है कि औपदेसगत नहीं किया जाना चाहिए।

फिर, गुजराती कोई त्यागने योग्य भाषा नहीं है। जिस भाषामें मरछी मेहता बसा मजदूर और दयाराम जैसे कवि हो गये हैं और उसे विकसित कर सके हैं तथा जिसको बोलने-बाले पुनियाके तीन बड़े धर्मों—हिन्दू, इस्लाम और जेरबुलन—के अनुयायी हैं उस भाषाकी उपस्थिती कोई सीमा नहीं बाँधी जा सकती। एक ही विचार गुजराती भाषामें अनेक बार तीन तरहसे पेश किया जा सकता है। पारसी जिस बुद्धा मुसलमान जिसे अस्का-शामा और हिन्दू जिसे ईश्वर कहेंगे अनेकी भाषामें उसके लिए एक ही नाम है “गौड”। मुसलमान जो गुजराती लिखेया उसमें अरबी और सेक सादीकी कारसीकी छाया पड़ेगी पारसीकी गुजरातीमें जरबुलनके बोध की छाया पड़ेगी और हिन्दूकी गुजरातीपर संस्कृतका प्रभाव होगा। हिन्दू और मुसलमान तो भारतकी सब भाषाओंकी सेवा करते हैं लेकिन काम पकटा है पाठसिखोंको तो ईश्वरने ईश्वरने गुजरातीकी सेवाके लिए ही यहाँ सेवा है। उनके बसाही स्वभावके कारण गुजराती भाषाको बहुत काम हो सकता है। उनके हानमें अनेक गुजराती पत्र-पत्रिकाएँ हैं। इसलिए उन्हें गुजरातीके मरिष्यको बहुत यत्नपूर्वक सम्मानना चाहिए। मैं उनसे एक ही विनती करना चाहता हूँ जो भाषा आपकी मातृभाषा बन गई है और जिसे अब आप छोड़ नहीं सकते उस भाषाका आप जून न करें। पारसी केवल सरल गुजरातीमें सुन्दर विचार प्रस्तुत करते हैं लेकिन भाषाके उच्चारण और हिन्दूके सम्मानमें ऐसा व्यवहार करते हैं मानो जान-बूझकर उससे बैर ठान लिया हो। यह बरकी बात है। सभी गुजरातियोंको इसपर विचार करना चाहिए। मन्नीरतापूर्वक विचार करने पर हमें मानना पड़ेगा कि हिन्दू मुसलमान और पारसी इन तीनोंके पैर म्यारे हैं। ऐसा क्यता है, मानो तीनों “अपनी-अपनी सम्मानने” का निश्चय कर बैठे हों। मुसलमानोंने अभीतक विज्ञामें गहरी दिक्कतसी नहीं की है। इसलिए उन्हें गुजराती भाषापर अभी तक कोई स्पष्ट छाप नहीं डाली है। लेकिन वे शिक्षा के रहे हैं। हिन्दुओं और पाठसिखोंको उन्हें शिक्षित करनेके लिए पूरा उद्योग करना चाहिए। यदि ऐसा हो तो उनसे गुजराती भाषाको बहुत बड़ा सहारा मिलेगा।

उपरोक्तमें जो सम्मेलन होनेवाला है उससे मैं तत्प्राप्तपूर्वक विनती करूँगा कि उसके नेता गुजराती भाषाके जित हिन्दू, मुसलमान और पारसी विद्वानोंकी एक मिठी-बुकी समिति बनायें। उस समितिका काम तीनों कीमोंके गुजराती केवलपर गियाह रक्षणा और केवलकोंकी सहाह देना हो। विचारसीक केवलकोंके लिए इस समितिसे अपने केवल बिना पारिभसिक रूपसे सुचरनागा भी सम्भव होगा चाहिए।

१ (१४२४-०९) गुजरातके एक कवि; राष्ट्रीय विज्ञान मन्त्रालय “वेदक कर्म की लेने कवि” के रचना।

२ सरस्वती केवलद्वि उल्लेखनी कवि जो अपने कर्मके लिए प्रसिद्ध थे। वे वेदकी और दुर्दिशनी की थे।

३ (१७००-१८९३) वेदक कवि। अनेक कीमोंके रचना का उपलब्ध-मरने कीमति है।

४ (११८४-१२९९) पारसी कवि।

विभागतमें रहनेवाले भारतीयोंसे मैं यह कहता हूँ कि विभागतमें जाकर उन्हें अपने भाप-बादोंकी माया न मूर्खनी चाहिए, बल्कि धर्मबोधे सबक लेकर उन्हें उस मायासे अधिक प्रेम करना चाहिए। यदि वे परस्पर किलने या बोलनेमें अपनी मज्जुभायाका ही उपयोग करने लगे तो मायाका बड़ा धीघ होगा। इसके भारतकी उन्नति होगी और वे अपने कर्तव्य पूरे कर सकेंगे। जय विचारपूर्वक देखनेपर यह काम आसान मान्य होया।

[पुष्पराठीसे]

इंडियन ओपिनियन २०-११-१९९

२९४ पत्र लॉर्ड ऐंन्टहिलको

[सन्दा]

अक्तूबर ९ १९९

लॉर्ड महोदय

इस पत्रके साथ मैं धर फासिस हॉपबुडको सिधे पत्रका मसबिदा भेज रहा हूँ। चूँकि इस प्रकारके मजमूकका पत्र भेजनेमें कोई मुकसाब नहीं हो सकता इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण नहीं है कि वह पत्र भेजा जाया है या कब जो मसबिदा भेजा गया है उसके अनुसार सिधा पत्र भेजा जाया है। इस मामलेमें बितना धोबना हूँ उतना ही मुझे लगता है कि हमें इस बात इसके ब्याबा सम्बोध न भिडेना। मुझे यह भी लगता है कि स्थितिको जान-बूझकर बसपटा रखा गया है और इसके पीछ कटनीति है। इसलिए इसके स्पष्ट किये जानेकी गुंवाइश नहीं रहती। गुड राजनीति और कूटनीतिका अनुभव मुझे बिल्कुल नहीं है इसलिए मुझे तो बही मसबिदा ज्पादा ठीक लगता है जो मैंने कलके पत्रके साथ आपको भेजा ना। लेकिन हमें यहाँ जो आन्दोलन करना है उसकी मोटी कपरेबा उधमें थोड़ ही जाने और अपना भारत जानेका इरादा भी बता दिया जाये। परन्तु इस बारेमें मैं बिल्कुल आपपर निर्भर हूँ और आप जो भी मताह देनेकी ह्पा करने बही कर्क्या।

आपका आदि

१ इंडियन " एन बीई रॉयलिको एन ४५५।

२. लॉर्ड रॉयलिको ० अक्टूबरको राष्ट्रीयिक न और १ अक्टूबरके त्तोकी प्रति उत्पिन करने हुए सिधा ना " सिधा हूँ जाने बिचार करनेपर बातकी रक्षा किल्ल प्रक्रियाकी अनुभवेकी नहीं है की सि ल उधमें भी। मुझे लगता आदि कि ना उध कसे भी दीकसे है वह बिल्कुल ठीक है। और ऐसा मानना बसि कलक मौजूर है कि ना उध कसे भी दीकसे है वह बिल्कुल ठीक है। और ऐसा मानना बसि उधमें। ऐसी हालतमें ना उध निर्भरते इकसेर करवा मन्दा नहीं लगता। मैं कस बसते उधमें हूँ कि ना उध ना वेदा ही किने वेदा परके सिधा उधमें वे ही पर फल न दीक। ही ना सि उधमेंसे बसपटा अपनी बसि करवा चाहते हैं, कसको ना उध करनेके सिध कुछ उधमेंसे बसि है। "

[संलग्न]

अक्टूबर १ १९९९

सर इंग्लिश जे बी० हॉपवुड
कॉन्सुलर ऑफिस एस डब्ल्यू
महोदय

आपके हस्ताक्षरोंसे युक्त ४ अक्टूबरके पत्र संख्या ११६४९, के सम्बन्धमें मैं आपको अनौपचारिक रूपसे लिखनेकी श्रुष्टता कर रहा हूँ। जो इसलिए कि आपका समय बचा सके, और हो सके तो पत्रका सही अर्थ भी जान सकूँ। चूँकि आप ट्रान्सवाल्के ब्रिटिश माण्ड्रीपोंके प्रश्नके सम्बन्धमें हुई बातचीतसे परिचित हैं इसलिए मेरे छापी भी हाजी हबीब और मैं आपसे अनौपचारिक बैठकी प्रार्थना करते हैं।

हमारे सामने कठिनाई यह है। जिस पत्रका उल्लेख मैंने किया है उसमें कहा गया है
अपदिदेशकी सरकारको पहले यह तय करना चाहिए कि वह भी स्मट्सके
सुझावे हुए आचारपर कानून बनानेके लिए तैयार है या नहीं।

चूँकि बर्न बोर्डरू से बैठके समय मेरे पत्रका उल्लेख किया गया है इसलिए मैं नहीं जानता कि भी स्मट्स को कानून पेश करना चाहते हैं वह बैठमें दिये गये मेरे सुझावके आचारपर होना या बसिज आफिका जानेसे पहले भी स्मट्स द्वारा सुझावे गये आचारपर। आप जानते ही हैं कि मेरे सुझावे गये भारतीय प्रस्तावमें और भी स्मट्स को कुछ देनेको तैयार हो उसमें बुनियादी रुक है। यह तो माना ही जायेगा कि कोई महोदयके तारके बाद भी स्मट्सने जो कुछ अस्विकार किया है उसे ठीक-ठीक जान केना मेरे और छापीके लिए अधिकसे-अधिक महत्त्वकी बात है क्योंकि स्पष्ट है कोई महोदयने अपना तार उक्त बैठके बाद भेजा था।

आपका आदि

टाइप की हुई इन्टरी बंधेकी प्रतिका फोटो-नकल (एस एन १११४ और ५११५) से।

मिय हैनरी

क्यूसे लिखा आपका पत्र मिला। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आप अपनी बात-चीतमें—कमसे-कम मेरे साथ अपनी बातचीतमें—मेरी चर्चा न करें? मैं समझता हूँ हमारे उद्देश्यके हितकी दृष्टिसे भी मुझे बिपारसे बाहर ही रतना चाहिए। हाँ जहाँ मेरी चर्चा करना आपको आवश्यक जान पड़े वहाँ बात हुआ ही है। मैं जानता हूँ उत्तरमें आप कहेंगे कि आपने कमी भी मदी जनाबपरक चर्चा नहीं की लेकिन बात बरबसस ऐसी है नहीं। वैसाकि आप भी स्वीकार करेंगे कमी-कमी आप अपने उत्साहमें बह जाते हैं। आप देखेंगे कि अगर आप ऐसा ही करते रहे तो एक दिन इसकी प्रतिक्रिया हागी—तो मेरे विरुद्ध नहीं और मेरे विरुद्ध हो भी तो उसे तो अच्छी तरह सहा जा सकता है। प्रतिक्रिया हमारे उद्देश्यके विरुद्ध होगी जो कमसे-कम आपका तो अच्छी नहीं मगीगी। मुझे एक बार भी थोकेसे भी पत्र में उनके साथ कलकत्तेमें जा' और उन्हीं मेरे जयाजये मेरी बहुत ब्याबा प्रवंचा कर दी थी कुछ ऐसा ही कहना पड़ा था। बल्कि उनसे तो मैं कुछ कहने स्वयं शोक गया था।

मुझे इन बातमें सुधी हुई कि आपको बहुतकि जीवनमें पराम्यान नहीं लयता। मैंने बनेछा भी यही की थी। आपने पहले ही उसके अच्छे हीनेकी कल्पना कर ली थी।

इन हफ्ते बहुत कम कतरने मिली हैं। इसके लिए विम्वार कोई भी रहा हो उसने अपना कर्तव्य पूरा नहीं किया। मुझे 'टाइम्स ऑफ इंडिया' की रिपोर्टक नहीं मिली। बोम्बे गवट भी नहीं मिला। आपने महिकाओंकी विष्ट समामें भाषण दिया उसकी भी कोई रिपोर्ट नहीं मिली और न आपके सम्मानमें लिखी गई कविता ही। मूल देखनेकी बड़ी थीय इच्छा है।

यह पत्र मैं धीरे धीरे की बिट्टी मिडनेके बाद लिखवा रहा हूँ। उसके बारेमें भाये मिल्पा। फिर भी इतना कह देना चाहूँगा कि जाहिर है हमारे बहकि मित्रोंको जो ऐसी जलाहूर्ण समारोकि बाधभूव इतने ह्याय है, या तो हमारे पद्यकी सचार्कि विस्वास नहीं है या इस बातमें मरीजा नहीं है कि अन्तमें सत्यकी विजय होती है। अन्तसे मेरा मतसद बुभिक और दूरसब भविष्यसे नहीं बल्कि किनी ऐसी अवबिसे है जिसका अन्त्या लयाया जा सके और यह अन्त्या इस बातसे लयाया जायेगा कि हम कोपिया फिटनी करते हैं। क्या भाव उन्हें यह नहीं समझा सकते कि सच्ची मफमता स्वयं प्रयत्नमें निहित है और हमारा प्रयत्न है अनावाभक प्रतिपेच कि हम अपने-आपको उतम प्रकारकी विद्या दे रहे हैं या सिधी भी विरविद्यान्वकी विद्यासे अच्छी है कि संघर्ष विजिता लम्बा होगा शोक अन्तमें उनसे उनसे ही निगरकर निकलने और भाये मुबारोंको प्राप्त करनेकी उम्मी

१. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके १९१३वां अधिवेशन लण्डन होकर लंदनीकी बर्से म्युने-कल कन्वन्सेंस की बीकनेसे थाप रहे थे। देखिए अष्टमकथा, अन्त ३ अक्टूबर १०-१९।

२. अक्टूबर १९१३की बीकनेसे अन्वयि बर्सेविज विरिकाओंकी एक सभामें बयान दिया था। शिवा ५५ "इतिव बार्किनामें भारतीय विरिकाओंकी अन्त्या और विविदि"।

पात्रता बड़ेभी तथा उन्हें छड़कर सेनेकी उतमें क्याथा सामर्थ्य होगी? अगर नेतामन हमारे उद्देश्यों या समाजोकी उपमायितामें आस्था रखे बिना नहीं समार्ण करते हैं तो निरिषय है कि वे बुरी तरह असफल होंगी। हो सकता है कि समार्ण ऊपरस उत्साहपूर्ण विज्ञाई देती हों लेकिन वह अन्तर्गत जिसे स्वयं नेतामोंने सशित किया होगा सरकारकी नजरसे भी छिपी नहीं रहेगी। क्या आप उन्हें यह नहीं समझा सकते कि यद्यपि भारतमें हमें वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है फिर भी इसका मतलब यह नहीं कि अगर द्वास्वबाकके राष्ट्रीय माम् होनेपर भी अपनी स्थिति सुदृढ़ नहीं कर सकते और भारतमें रहनेवाले भारतीयोंसे उन्हें यह सहामता प्राप्त नहीं हो सकती जिसका उन्हें हक है? क्या वे यह नहीं देख सकते कि द्वास्वबाकके बसनेवाले प्रयत्नों और तबनुरूप भारतमें किये जानेवाले प्रयासोंका स्वरूप ही ऐसा है कि वे भारतको उसके कर्त्यके अधिकाधिक निकट ले जायेंगे और सो भी बड़े बृद्ध तरीकेसे? क्या हम डिप्लोमाकी सीमाका उत्खनन किये बिना उन्हें यह नहीं विज्ञा सकते कि भारतमें किसी भी संघर्षको बैसा आदर्शरूप नहीं दिया गया है, बौध्दाकि द्वास्वबाकके संघर्षको दिया गया है? कांग्रेस बिताने भी मुबारोंकी मान कर रही है सबका उद्देश्य कोई-न-कोई ठोस और मौखिक काम प्राप्त करना है। उसके किसी भी मुबारका उद्देश्य विपुल रूपसे उस प्रकारके कामकी प्राप्ति नहीं है जिससे किन्हीं बुद्ध कक्षाओंके बिना मात्र राष्ट्रीय पीड्यकी अभिवृद्धि होती है। तब अगर द्वास्वबाकके मुट्ठी-भर भारतीय भारतके सम्मानकी खातिर अपने-आपको उत्सर्ग कर देनेके लिए कृतसंकल्प हैं तो भारत अपनेको अवसरके योग्य सिद्ध करने इन बातोंको अपने कार्यक्रममें प्रमुख स्थान नसा नहीं देया? भारतके नेता इस प्रसन्नको भारतमें या उपनिवेशोंमें निर्भीकतापूर्वक जायेंगे कि सामने ला सकते हैं और उन्हें जाना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि ये उपनिवेश हर तरहके बख्शयसे मुक्त होकर भारतका अपनापन भी करते जायें और ब्रिटिश साम्र्यके हकदार होनेका भूठा दावा भी करते रहें। हम जानते हैं कि हम बहुत ही सीमित बंगकी वैधानिक समानताके लिए सड़ रहे हैं और उचते तत्काल कोई लाभ भी होनेका नहीं है। लेकिन इसी कारणसे मेरे और आपके लिए, यह और अधिक जरूरी हो जाता है कि हम अपना पूरी धक्ति लगा दें। क्या बहूँके नेता यह सब नहीं समझ सकते? क्या वे नहीं देख सकते कि इस क्कारिके द्वारा हम मावूमूमि भारतक संघर्ष अभिव्यक्त किए एक अनुष्ठासिध सेना तैयार कर रहे हैं? यह सेना ऐसी होगी जो बड़ीसे-बड़ी बहुषी ताकतसे सामना होनेपर भी अपना बौद्धर विज्ञा सकेगी। अब बहूँके नेता ब्रिटिश भारतीय संघके अभ्यसकी मार्फत हमें लिख भेजें कि हम संघर्ष जारी रखें और उनका आधीबेध हमारे साथ है।

भुक्तारको मैं हमसैन कलमे 'अनाक्रमक प्रतिरोधकी नैतिकता' पर बोध रहा है^१ और बुक्तार राष्ट्रीय १३ को हैम्पस्टेडकी साप्ति और पंच-सैसका समिति (पीस ऐंड आक्टिवेशन सोसायटी) में पूर्व और पश्चिम' पर।

आपकी नापपनकी तसबीर मिल गई होगी। मेरी इच्छा है आप बहूँके अक्षबारोंमें उसे प्रकाशित करवा दें। इसके लिए आप 'इंडियन रिभ्यू' और मद्रासके अन्य अक्षबारोंको लिखें तो अच्छा हो। मेरा सवाक है मैं आपको यह बधा चुका हूँ कि मैंने अपने जोहानिस

१. रेडिय "अनन्य समसैन कलमे" पृष्ठ ४००।

२. रेडिय "अनन्य इन्कलेबमें" पृष्ठ ४०१-०२।

बर्षवासी बन्दुओंको तागप्यनके नामपर एन सात्रवृत्ति प्रारम्भ करनेकी सलाह भी है। अगर बम्बई या मद्रासमें ऐसा करनेबाधा कोई जादमी मित्र बाधे तो बड़ी सानसार बात हो। उन्हें इस बातका एहसास होना चाहिए कि २ बर्षके एक सञ्चारिक बुनकने देखके लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर दिये।

श्री बोझकी पुस्तक घायर जगते हुते मुझे मित्र बामेयी। श्री कूपरन' तो कुछ प्रतियाँ सनिवारको ही बेनकी कहा है।

पुनकारको श्री अली इमामके सम्मानमें समारोह किया गया। लोपोने पहलेसे बिल्कुल सोच नहीं रखा था लेकिन 'टोस्ट'की बिकिके सिलसिलेमें बसिग आफिकी सिष्टमधरलके प्रति श्री शुभकामनाएँ व्यक्त की गईं। समारोहकी बध्यसठा घर मचरबी कर रहे थे और वे बहुत अच्छा बोस। इस बातसे इनकार नहीं किया था सफता कि वे सचपके महत्त्वको पूरी तरह समझते हैं। 'टोस्ट'का जबाब' देते हुए मैंने श्री अली इमामको इस बातके लिए पय बाते हाथों किया कि उन्होंने अपने मापनमें बसिग आफिकी प्रसनका कोई उत्सव नहीं किया। मैंने कौसिलके भारतीय सदस्यंसि जपीक की कि वे सिकामते हुए करनेकी मांग करें और अगर भारतीय कौंसिल तब भी कुछ नहीं करती तो अपने पर त्याग दें। कौंसिलके मृतकमान सवस्य समारोहमें उपस्थित थे। इसपर श्री अली इमामने उठकर यह बताया कि उन्होंने बसिग आफिकी प्रसनका जिक्र क्यों नहीं किया था और कहा कि प्रसन इतना बड़ा था कि उसपर अनेक अन्य विषयोंके साथ-साथ विचार नहीं किया जा सकता था लेकिन वह उनके हृदयमें पैठ हुआ है और वे उसके लिए भारतमें जो-कुछ बन पड़गा करेंगे। कस उनको एक प्रीति-ओज दिया गया था। वे उसमें मही जा सका क्योंकि मुझे पुनरुत्थी साहित्य प्रोत्साहन समितिकी एक बैठकमें धामिस होना था। लेकिन उन्होंने मॉडसे कहा है कि अगर आप कसकसके आसपास कहीं होंगे तो वे आपको अपने यहाँ निभन्वित करेंगे। आपको यह बता दें कि श्री अली इमाम बड़े स्नेही जादमी हैं और आप जब-कभी उबर जायें और वे आमन्त्रित करें तो आप उनके साथ अवस्य ठहूरें। आप उनकी टोह रसिए। वे इसी महीने भारतके लिए प्रस्थान करेंगे।

श्री कैदुबाब काबसबी बिनघा और श्रीमती बिनघा सनिवारको रवाना हो गये। जिस बहाजसे यह पत्र जायेगा उसीसे वे बम्बई पहुँच रहे हैं। श्री वेस्टि उन्हें जानते हैं। आप बंसीबारमें उनके परिवारके जोगेसि मित्र सफते हैं। श्रीमती बिनघामे मुझे इंडियन ओपिनियन' के सम्पादकक नाम पुनराठीमें एक पत्र' दिया है। जयमें उन्होंने हमारे प्रति सहानुमृति व्यक्त की है और जो महिकारें कष्ट उठ रही हैं उन्हें प्रोत्साहन दिया है। याद नहीं मैंने आपको यह बताया या नहीं कि जबतक 'रामने मिकबोनास' भी वहाँ पहुँच पये होंगे। कुमाठी बितर बरैम उन्हें बड़ा ईमानदार ब्यक्ति बताया है और उनकी बहुत प्रसंसा करती है। वे किसी नैतिकता समितिके सदस्य भी थे। मैं चाहूँगा कि आप उनसे अवस्य मिलें।

१ इंडियन आफिकडक संपादक कसरतजरी एन कूलने बोस हाथ सिन्धी गानीवीकी बीमनी प्रकाशित की थी।

२ देखिए "कसल" पृष्ठ ४५९।

३ एन २३-२४-२९ के बंधी प्रकाशित किया गया था।

४ (१८९६-१९१०); मन्सूर-दक (जेन बर्मी)के पद मन्सूर एरल, और १९२४ एन १९२३-२५ में (कौंसिलके सपन कटी।

अगर आपने पारसी स्तम्भों की टहिली छोरानकी व्यास नामाका काल कामा शरद मुहम्मद एबिहकूम मेड ' हरिभास बेदियार तथा अन्य कोपोंके पास दो-चार पंक्तियाँ लिखकर नहीं जेबी हों तो हजबा अब बीसा कर बाखिए।

बारी—७-१-१९१९

विभिन्न पत्रों और पत्रोंके मसबिबोंसे आपको पता चल जायेगा कि स्थिति कैसी है। यह पत्र मिलते-मिलते मर एक ठार भी आपके पास पहुँच जायेगा। लॉर्ड कू का बखान बीसा मीने लॉर्ड एन्टिहिलको लिखे पत्रमें बताया है बीसा ही है। एक बात अब निश्चित है और यह वह कि संवर्ष अभी जारी रहेगा। म उसके लिए आतुर हूँ। दुस्त मुझे सिर्फ़ इस बातका है कि मैं ट्रान्स्वाल्डमें होनेके बखते यहाँ हूँ। कक समितिकी एक बैठक भी जिसका मुख्य उद्देश्य मेडाखके प्रतिनिधियोंसे मिलना था। लेकिन जहाँ-कहीं बखिब जाकिकाकी बर्षा होयी ट्रान्स्वाल्डका प्रबल तो आ ही जावेगा। लॉर्ड एन्टिहिल बहो मौजद ये लेकिन उन्हीं मेरा पत्र नहीं देखा था। मीने उन्हें कार्यकमकी एक स्प-रेखा तैयार कर बी बी जिसे उन्हीं पुरी तरह स्वीकार कर लिया था। तबनुसार अब बकतब्यकी प्रतियोजना बितरण होया। घामद हाउस लॉर्ड कॉमन्सके सबस्वोंकी एक बैठक तथा ऐसी ही कुछ और भी बातें होंगी। इसमें पूरे तीन हफ्ते छोगे। काम चुरू करनेके पहले मुझे लॉर्ड एन्टिहिलसे पत्रके एक-न-एक मसबिबेपर स्वीकृति लेनी है, फिर उसे भेजकर उसके उत्तरकी राह देखनी है। हो सकता है इसमें एक कीमती सप्ताह पूरा निकल जाये। लेकिन सबसे बड़ा सबाल है—भारतकी प्रस्तावित यात्रा। बरअसल तो मुझे भारत बिस्कुड जाना ही नहीं चाहिए। मेरे लिए उपयुक्त स्थान ट्रान्स्वाल्ड है लेकिन जिस कारणसे मैं यहाँ जा गया हूँ बही कारण मेरी भारत-यात्रापर भी लागू होता है। फिर भी मेरा निश्चित मत है कि अगर मुझे भारत जाना ही है तो भी हामी हबीबके बिना हरिम नहीं जाना चाहिए। ये भारत-यात्राका महत्त्व समझते हैं लेकिन ट्रान्स्वाल्डमें उन्हें अपना कोई आवश्यक काम है। ये मुझे बरोसा दिखते हैं कि उन्हीं संवर्षके आन्तरिक उद्देश्यको समझ लिया है और ये ट्रान्स्वाल्डमें भी उसमें पूरा हिस्सा लेना चाहते हैं। तब अगर उन्हें बखिब जाकिका कीट ही जाना है तो मुझे भी बीसा ही करना पड़ेगा। इसलिए कुछ ऐसा जकता है कि भारत-यात्रा नहीं हो सकेगी। लॉर्ड एन्टिहिल तो (यह बात तोपनीय है) भारतकी प्रस्तावित यात्रापर बहुत जोर देते जान पड़ते हैं। समितिकी कककी बैठकमें सर मंवरबी भी उपस्थित थे। उन्हींने सभ बर्तमान म प्रकाशित बम्बईकी समाजी रिपोर्ट देखी। इस बातसे ये बहुत दुःखी थे कि इकनिया चन्दा नहीं हुआ। उनका जवाब है कि कुछ ऐसे कार्यकर्ता होने चाहिए जो "इकनिया" या "पैसा" चन्दा इकट्ठा करनेका वत से हैं और बहोके बखबार इस जगाहीको अधिकसे-अधिक प्रचारित करें। यह निजान्देह, सिताका एक सुन्दर तरीका है लेकिन इसके लिए हमें कार्य

१. यहाँ कू का-कू का है, लिखे बीबके नाम लं लॉर्ड का एक।

२. कक करण्य लॉर्ड है।

३. लेकिन पत्र लॉर्ड एन्टिहिलको " पृष्ठ ४५९।

४. दांवीने फर-फर कक केका उलल विवा था; लेकिन "उर एव कक-कक-कक-कक" पृष्ठ ३६६। "वेसा-कक" के बखसे मसिब एव ककके किलर कूट कोडमल सिखलका था। इस लल एक बम्बई प्रालमें लसे कक संकलक कक कक कक किना था। लल कोकल ककने लदेही बखकोककी ककल केके कि किना ककल था।

कर्ताओंकी एक सेना चाहिए। अगर आप ऐसे कार्यकर्ता प्राप्त कर सकें तो यह एक योग्य काम है। कार्यकर्ता के भोग हों तो अच्छा रहे, जिन्हें दण्डित आक्रांता अनुभव है। यह पकड़ी नहीं कि उनकी संख्या बहुत अधिक हो। अगर आपको हर क्षेत्रमें पांच भी मित्र बामें तो पर्याप्त है। सर मंचरजी भी यह सोचते हैं कि नेताओंके लिए परिमितिया मजदूरोंकी मर्ती और सरकारी ठौरपर भी बन्द करनेकी कोसिख होनी चाहिए। उनका उद्देश्य है कि हमारे पास कुछ ऐसे बच्चा होने चाहिए, जो ऐसे हर स्वागतका शीत करें, जहाँ मर्ती-एजेंट भेजे जाते हैं, और भावी प्रभावोंके लिए परिमितमें न बंधनको नहों। इस कामके बारेमें आप केवल बलकता और मद्रासमें बातचीत कर सकते हैं। मुझे मरोसा है कि आप इन दोनों मद्रासमें प्रवासी-नेत्रोंको बैलने अबदम बायेंन बस्कि अधिकारियोंके भी मिसेमें तथा इस प्रभावीका सम्मयन करेंगे और सम्मय हुआ तो मर्ती-एजेंटोंके भी सम्पर्क स्थापित करेंगे। इस तरह आप देख सकते हैं कि वहाँ आपका काम अधिकधिक महत्वपूर्ण होगा या रहा है, और हमारे प्रयत्नोंका क्षेत्र-विन्दु भाठकी ओर खिसकता जा रहा है। अबतक ट्रान्सबायमें बनाक्रमक प्रतिरोधकी आन प्रखलित नहीं रही जाती और भाठमें उसकी कोई ठोस प्रतिक्रिया नहीं होती तबतक यहाँ कोई प्रभावकारी काम न हो सकता है और न होनेका है। अगर छगनबाल यहाँ आतका तैयार हों तो उसके लिए अच्छा यही होगा कि आपके साथ कुछ दिन भूम-निकरकर मार्चके पहले ही जा जायें और यहाँकी ठंडका मजा से। वाद बरबसक यह है कि भारतीय इंग्लैंडमें अपनी पहली सदियोंकी सखी महसूस नहीं करते हैं, और ऐसा ही छगनबालके साथ भी हो सकता है। रिश्के महति बल आनके बाद—और मुझे लगता है, वे जैसे जायेंगे—छगनबाल कुछ उपयोमी काम कर सकेगा। कमी-कमी ऐसे सबाक भी उठ सकते हैं, जिनके सम्बन्धमें कोई ऐंस्टहितको कुछ आनकारीभी बकरत हा। इसके लिए उन्हें कोई आदमी तो चाहिए ही।

आप की महताको भी पुजउठी और अंग्रेजी शानों भापाबोंके बखबारकी कतरनें भेज दें तो हुपा हो।

मैं आपको बता चुका हूँ कि नेताक सिष्टमण्डलके भी बदात कुछ दिन पहले ही रहाना हो पये है। और यह देखते हुए कि यहाँ सबमुच करनेको कुछ है नहीं थी भापात भी अगले सनवारकी मापी खिस दिन यह पत्र भेजा जायगा उसी दिन प्रस्वान कर रहे हैं। म समझता हूँ थी आंगनिया अबतक हम भोग नहीं हैं ठहरेंगे।

आज मुखह मुझे लोर्ड ऐंस्टहितका एक पत्र मिला है। उसकी एक तफ़्फ़ भज रहा हूँ। इनलिए पहले पत्रका मगदिरा' बरतें बौठ नू को भेजा जायगा।

इसपसे आपका

टाइप की हुई दस्तावे अंग्रेजी प्रतिकी फोनी-मकस (एम० एन ५१११ और ५१५२ अ')से।

[अक्तूबर ८, १९९३पूर्व]

मैं हल्ले-दर-हल्ले अनिश्चित खबर देता जाता हूँ। जाया है कि इससे कोई माखीय निराश न होगा।

यह कहना मत याद रखनी चाहिए कि अपने उसके खतरा कोई बल नहीं होता। इतना तो मुझे निश्चित जान पड़ता है कि जो निश्चय हो रहा है उसके कारण हम ही हैं। किसीको यह तो मानना ही नहीं चाहिए कि हममें जो निर्विस्था है उसको सरकार नहीं जान सकती। सबलता है उसको तो हम देखते हैं किन्तु ऐसा आभास मिश्रता रहता है कि हम अपनी निर्विस्थाको छुटाना चाहते हैं। ऐसा नहीं होगा चाहिए। अब हम जेलके तो सम्पन्न हो ही गये हैं।

खबर आई है कि श्री नानाकाठ छात्रको फिर सीमाके बाहर भेज दिया गया और फिर तुरन्त फिरफार भी कर लिया गया। मुझे इस खबरको पढ़कर बहुत खुशी हुई है। मैं उनको मुबारकबाद देता हूँ। हमें यह सीख केना है कि जेलसे बाहर रहकर कोई भी कुछ भोगनसे जेलमें रहकर मर जाना क्या वाञ्छा है।

मैटिकला-सभ (यूनिवर्स ऑफ एमिक्त सोसाइटीज) ने मुझे इमर्शन क्लबमें भाग्य देनेके लिए आमन्त्रित किया है।^१ यह भाग्य राजनीतिक नहीं है। इसका विषय सिर्फ यह है कि सत्याग्रह क्या है। किन्तु उसमें कड़वाईकी बात आ जायेगी। इसी प्रकारका एक और भाग्य देनेकी भी बात चल रही है।

श्री मायरेजे जोहानिसबर्गमें ही मेरी जान-महजान हुई थी। उसी आचारपर मैं उनसे भिन्ना हूँ। यदि लॉर्ड नू से प्रतिफल जनाब भिन्ने तो उन्होंने भी सहायता करलका बचन दिया है। डॉ. कबीफर्ड ने भी ऐसा ही बचन दिया है। वे श्री जोकरके परिचित हैं और यहकि एक प्रख्यात पाठक हैं।

[सुनपतीसे]

इंडियन ओपिनियन, १०-१०-१९९१

१. एंटीपीने यह भाग्य ८ अक्तूबरको दिया था; देखिए "भाग्य समर्थन क्लबमें" पृष्ठ १००।

२. देखिए "भाग्य: इमर्शनमें" पृष्ठ १०४-१०६।

महोदय

मुझे द्वाल्नबाबूके त्रिटिघ भारतीयोंके प्रश्नपर आपका इसी मासकी ४ तारीखका पत्र प्राप्त करनेका धीमाप्य मिला। आपके पत्रका अन्तिम माम मेरे और मेरे साथीकी समझमें साफ-साफ नहीं आया है। हमारे सामने कठिनाई यही है। इस पत्रमें कहा गया है

उपनिवेशकी सरकारको पहले यह तय करना चाहिए कि वह भी स्मट्सके सुझावे हुए आपाएपर कानून बनानेके लिए तैयार है या नहीं।

म नहीं जानता कि श्री स्मट्स जो कानून पेश करना चाहते हैं, वह गठ मासकी १९ तारीखकी भूममें दिये गये मेरे सुझावके आपाएपर होमा या दक्षिण आफ्रिका जानेसे पहले श्री स्मट्स द्वारा सुझाये गये आपाएपर। मेरे सुझावे गये प्रस्तावमें और श्री स्मट्स जो कुछ बेनेके लिए तैयार थे उसमें एक बुनियादी फर्क है। यह तो माना ही जायेगा कि सर्वे महोदयके ठारके बाव भी स्मट्सने जो रख अस्तिमार किया है उसे ठीक-ठीक पाल केना मेरे और मेरे साथीके लिए अधिकसे-अधिक महत्वका है। स्पष्ट है कि सर्वे महोदयने अपना ठार उक्त बेटके बाव भेजा था।

हम मानते हैं कि आखिरी गतीका मानस होनेसे पहले बातचीतमें कुछ बन्द लयेगा। फिर भी हमारी इच्छा यह है कि हमें इस देशमें अनिश्चित रूपसे लम्बे अर्ध तक न रुकना पड़े। इसलिए मेरे साथी और मैं यह अनुमान करते हैं कि हमारे लिए अपनी रवानगीसे पहले जोकोंको सब बातें बतानेका बन्द यही है। हम ऐसा करना जरूर चाहते हैं लेकिन इससे हम अर्ल बॉर्डर को परेमानिमें कठिनाई नहीं डालना चाहते। दरअसल हम उन प्रबलोंने लिए सर्वे महोदयके इत्तज है जो सन्तोपजनक समझीटा करामेकी तरजसे उन्होंने किये हैं और जाने भी करते। इस धार्मिककार्यको उठानेमें हमारी इच्छा केवल यह है कि हम सर्वे महोदयके हाथ मजबूत करें और अपने कार्यका सन्तोपजनक स्योरा अपने दक्षिण आफ्रिकी देषवासिवांको से लेंगे। हम उन लोकमान्य मैताबंसि भी मिल्ना चाहते हैं जिनको हमारी सूचीकर्णोंका पयाल हो सफटा है। मन्भव हो तो हम निर्ले-बुने जोसोधी मन्वाओंमें भावक देना अलबारेमें एक छोटा-या बकतभ्य छपाना आवि काम भी करना चाहते हैं। यदि हमें आहातिनबपकी यूरोपीय और भारतीय समितियां सहाह हैं और हमारे पाठ समय पछा तो हमारा विचार भारत जान और अपने महिके कामका स्योरा भारतीय जनताके सामने रखनका भी है।

मेरा यह धयाक है कि अपनी बातचीतके दौरान हमने जो प्रपति भी है और हम जिन निर्णयोंपर पहुँके हैं, उन्हें हम प्रकट कर दें तो सर्वे को भी आपति न होयी।

क्या मैं आपसे बल्की उत्तर देनेकी प्रार्थना कर सकता हूँ ?

आपका आदि
मो० क० गांधी

कॉमोन्स ऑफिस रेकर्ड्स २९१/१४२ और टाइप की हुई बप्टरी बंगेजी प्रतिकी फोटो-
ग्राफ (एस एन ५११९) से।

२९८ पत्र लॉर्ड मॉर्लेके निजी सचिवको

[समय
अक्टूबर ८, १९१९]

महोदय

मैं इस पत्रके साथ ट्रान्स्लाकके ब्रिटिश भारतीय प्रश्नके सम्बन्धमें लॉर्ड मू के आखिरी
पत्र और उसके उत्तरकी गफल सेवामें भेज रहा हूँ। यह लॉर्ड मॉर्लेकी जानकारीके लिए है।
आपका आदि,

टाइप की हुई बप्टरी बंगेजी प्रतिकी फोटो (एस एन ५११८) से।

२९९ पत्र लॉर्ड एंम्सट्रिहसको

[समय
अक्टूबर ८, १९१९]

लॉर्ड महोदय

मैं आपके पत्रके लिए आभारी हूँ। चूंकि आपने सारी जिम्मेदारी मुझपर डाल दी है
मैंने बीचका रास्ता अपनाया है और दोनों पत्रोंको मिलाकर एक पत्र बना दिया है। पत्र
बिना बर्णने गया है, उसकी गफल मैं साथ भेज रहा हूँ। मुझे धरोसा है कि आप इसे पसन्द
करेंगे। इस बीच मुझको विवरणकी २ प्रतियाँ आपनेका आवेष्ट किया जा रहा है।

आपका आदि

टाइप की हुई बप्टरी बंगेजी प्रतिकी फोटो-ग्राफ (एस एन ५१२) से।

१. रेकॉर्ड फिलिंग ऑर्डर।

२. अक्टूबर ८को किया पत्र।

३. रेकॉर्ड "बन कन्वेंशन-कमिटीकी" पृष्ठ ४२०-२८।

४. लॉर्ड एंम्सट्रिहसके ९ अक्टूबरको बप्टरी से हुए २५ वारसे एकत्र किया जा चुके "सारी जिम्मेदारी"
संबंधी कर्तव्यका बाल ही। कन्वेंशन कर्तव्यको कन्वेंशन विचारसे देवी एवं किट्टीसे सुधारकी कोई कक्षा
सुझास नहीं थी। "मुझे ऐसा लगता है कि कन्वेंशन की बात यह ही थी है और बहुत अच्छी तरहसे बनी
थी है, इसलिए अगर आपको कन्वेंशनके अर्थ में थिंक की मुझे खुश लगता है।"

५. रेकॉर्ड "सुलतानगली भारतीयोंकी सामूहिक विचार" पृष्ठ १८०-३।

सेवामें
सम्पादक
गुजराती पत्र
[बम्बई]
महोदय

आपने मुझसे अपने दिवाली विरोधाङ्कके लिए कुछ लिख भेजनेका अनुरोध किया है।

मेरा जीवन इस समय एक ही काममें लगा है और वह है ट्रान्सवालवासी एजिप्ट बाफिक्राके भारतीयोंकी प्रतिज्ञा पूर्य करानेमें मृत्यु-पर्यन्त जुझना। यह प्रतिज्ञा माण्डवी प्रतिष्ठाकी रक्षाके निमित्त हिन्दू, मुसलमान पारसी पंजाबी बंयाबी मद्रासी गुजराती और दूसरे हजारों मरीच भारतीयोंने की है। ट्रान्सवाल जो भारतके सामने ऐसा ही है जैसे महासागरके सामने अंगकि हमारे राष्ट्र-पितामह^१-जैसे व्यक्तिको भी जाने देनेसे इनकार करता है। यहकि मुट्ठी-भर अक्षिप्त व्यापारी फेरीवाले और मजदूर भारतीय इस अपमानको सहन नहीं कर सकते और न करेये। इस अपमानको दूर करानेके लिए और अपने धर्मका फिर वह चाहे हिन्दू धर्म हो इस्लाम हो अथवा ब्रह्मसूत्री धर्म हो पासन करनेके लिए ट्रान्सवालकी तरह हजार भारतीय बाबाजीमें से २,५८ भारतीय अथक खेस भोग जाये हैं बहुत-से अब भी भोग रहे हैं और जाये सोचेंगे। अपनी प्रतिज्ञाका पावन न करें तो हम धर्म-भ्रष्ट हो जायेंगे यह सब बयोंकी विला है। मुझे यह भी कह देना चाहिए कि यह खेस धर्मकर है। वहाँ हमें उचित भोजन नहीं दिया जाता और हमें कारिदोंकी श्रेणीमें रखा जाता है। बहुत-सी अबला कहीं जाने जाती लेकिन दण्डवत् सबल भारतीय नारियाँ विधेयका दुःख सहती हैं ताकि उनके पति इस संघर्षमें ऊड़ सकें। किन्तु ही अपने बाल-बच्चों सहित भूखी रहती हैं। इस दुःखको सहन करनेवालोंमें गुजराती काय्य है क्योंकि इस देशमें गुजरातके हिन्दू और मुसलमान ज्यादा हैं।

अगर यह पत्र छप जाये तो गुजराती पत्र के पाठक इस दिवालीक उत्सवपर अपने मनमें यह सोचें कि इस समय उन्हें ट्रान्सवालमें रहनेवाके भारतीयोंके लिए क्या करना है। ट्रान्सवालके भारतीयोंके लिए तो दिवाली ईद या पेट्टीका त्यौहार ठीकी हो सकता है, जब वे इस छड़ाईमें भीतरक बापस लौटें।

आपका

मोहनदास करमचन्द गांधी

इतिवृत्तो उद्धारक अथवा मुत्तय्य कायेल पाठानुं जीवन-वर्तिन तथा बीजा लेशो नामकी मूल गुजराती पुस्तकसे।

[सत्यम]

जन्तुवर ८ १९०९]

पुष्टको घटीर-बकका पुषयान करके गीरबाम्बिठ किया जाता है लेकिन वह मूख्य मनुष्यका पतन करनेवाला है। वह उनका नैतिक बल तोड़ देता है जिन्हें उसकी धिमा बी जाती है। वह स्वभावतः सौम्य प्रकृतिके लोगोंको क्रूर बना देता है। वह नैतिकताके हर सुन्दर सिद्धान्तका उल्लंघन करता है। उसमें प्रतिष्ठित प्राप्त करनेका मार्ग वासनाके जानेमोंसे दूषित और हत्यामोंके रक्तसे रंजित है। हमारे समय तक पहुँचनेका मार्ग यह नहीं है। हमारा समय तो सफल पवित्र और सुन्दर चरित्रका विकास करना है और उसे सिद्ध करनेमें उत्तम सहायता मिलनी है—कष्ट सहनसे। आत्म-संयम स्वार्थहीनता वैयं और ममताके पूरक उनके चरमोंके नीचे खिसके हैं जो स्वयं कष्ट सहन करते हैं परन्तु दूसरोंको कष्ट देनेसे इनकार करते हैं और बोद्धामिसर्ग मिटोरिया हाइवेकर्म तथा फोक्सरस्टके मबाबने कारायार इस विषय मंडलनके चार सिंह द्वार हैं।

[संवेबीसे]

इंडियन ओपिनियन १२-२-१ १

३०२ क्षिष्टमण्डसकी यात्रा [—१५]

[जन्तुवर ८ १९ ९ के बाद]

इस बार मैं क्यावा सार के सफटा हूँ किन्तु मुझे मय है कि इससे बहुत सन्तोष नहीं होगा। लॉर्ड नू किसते हैं कि "फ्रिन्हाड के क्यावा जानकारी नहीं दे सकते। जनरल स्मट्स अपने बूधरे मन्त्रियोंके सामने बात रखेये। उसका बाद जातकारी मिलेनी। जनरल स्मट्स मन्त्रियोंके सामने क्या बात रखेये यह माकूम नहीं। अगर वे बात लॉर्ड नू के तारके अनुसार रखेये तो वह हमारी ही मान होनी। यदि वे अपने मनमें निश्चित की हुई बात रखेंगे तो वह होगी कालूम रख करनेकी बात और रियायतके तौरपर एक निश्चित संख्यामें फ्रे-सिसे मोंनोंको स्वादी करनेसे जाने देनेकी बात। यदि वे इस बातको रखना चाहते हैं तो कहा जा सकता है कि यह बेकार है। यदि वे हमारी माँगें रखते हैं तो ठीक है। किन्तु [लॉर्ड नू के] इस पत्रका जो भीतर की मतकम है वह प्रत्येक भारतीयके समझने योग्य है। उस पत्रका मतकम यह है

१ वह "जनरलमण्ड प्रतिरोधका नीति-पत्र" पर दिने ये यंत्रीयिक व्यवस्था एक संघ है। से जनरल, १९ ९ के इंडियन रिज्यूने बकाशित किया वा और उक्त इंडियन ओपिनियनके बहुत किया वा। जनरलके मन्त्र बाजार पत्रिकामें उनके जनरल किन संशयताओंकी भेजी वह जनरल की भी कि तथा रिज्यूने कर्मों की भी, यदि क्या केमोंके केमोंकी व्यवस्था ही संके।

कि जिनके समस्त ऐसा करके समय प्राप्त करना चाहते हैं और समय मिस जानेपर वे इस बीच सत्याग्रहियोंका उपाह्व तोड़ देना चाहते हैं। यदि उनका उपाह्व न टूटा तो फिर हम जो-कुछ मांगते हैं वे वे देंगे। यह मेरे समझकर सत्याग्रहियोंको पूरा बल मगा देना चाहिए। उन्हें न चुप बैठना है और न दुर्बलता बिलानी है।

[सॉर्डू के] उपर्युक्त जवाबसे स्पष्ट है कि [हमारे कष्ट दूर करनेका] सच्चा उपाय ईर्ष्यासे नहीं बल्कि हमारे अपने हाथोंमें है। वह उपाय है केवल हमारा आत्मबल। इसका परिणाम हमने अभी पूरी तरहसे दिया नहीं है इसलिए हम जो-कुछ मांगते हैं वह मिर नहीं पाया है।

जोग बल गये हैं, इतना ही काफी नहीं है। मैं बहुत बार कह चुका हूँ कि हमारा मन मैसा न होना चाहिए। हमें अपने कष्ट-महत्त्वकी इतनी बाँध लेनी चाहिए। जो कुछ कार्य उन्हें सहनेके लिए हमें तैयार रहना चाहिए। उन्हें न सहेंगे तो हम हार जायेंगे। हमें एक बार या दो बार भी जेल जाना काफी न समझना चाहिए। जबतक हमारी माँग पूरी न हों तबतक हमें जेलका दुःख ही नहीं मानना दुःख भी लुप्टी-लुप्टी सहनेको तैयार रहना चाहिए। इसलिए मैं धापा करता हूँ कि सारे सत्याग्रही अपने निश्चयपर पूरी तरह बड़ रहेंगे और जेलोंको मर देंगे। सब भारतीयोंको याद रखना चाहिए कि ट्रान्सवालकी याबा सारे भारतमें पाई जा रही है। श्री पोम्पकी बाबाज भारतमें भूख रही है। जबबार हमारी बचति भरे हुए हैं। बाधा है, इस सबको ध्यानमें रखकर भारतीयों को कर्म देना ही है। न हटाये और कमजोर नहीं पड़ेंगे। ईर्ष्यासे भी यही चर्चा है कि ट्रान्सवालके भारतीयोंने हर तरफ ही है और वे पीछे न हटेंगे। यह याद रखना चाहिए कि ट्रान्सवाल पूरे पश्चिम आफ्रिकाकी झड़ई मड़ रहा है।

सॉर्डू के उपर्युक्त पत्रके प्रकट होना है कि सिद्धमन्त्रालीका केवल तानपी तरीकेसे काम करना अब काफी नहीं है। अब उनका बाहर निकलनेकी जरूरत है। इसलिए सॉर्डू के मामलेको प्रकट करनेकी मंजूरी मंगाई है। उनकी मंजूरी मिलनेपर कोपेण्डि सम्मुख साठ मामला रख दिया जायेगा। फिर यदि हाइड्रस ऑर्डर कोमन्सके सदस्य हमारी बात सुनें तो हम उनके सामने सब तथ्य रखेंगे। जबबारोंमें यथासम्भव चर्चा की जायेगी और समाप्त करना सम्भव हुआ तो वे भी की जायेंगी।

एक बड़ा सबाल यह उठा है कि बोर्डे समयके लिए ही नहीं हम दोनोंको भारतका एक चरकर लपाना चाहिए या नहीं। इन सम्बन्धमें हमारे हिंदीपियोंका मत यह है कि जाना तो उचित है। कुछ कारणोंसे ऐसा प्रतीत होगा भी है कि यदि जा सकें तो ठीक हो।

मेरा अपना विचार तो यही है कि हमारा मुख्य काम ट्रान्सवालमें है और ट्रान्सवालमें भी वहाँकी बलमें है। केवल एक ही विचार आते जाना है। इस बार हम वहाँ जायें हैं तो अपनी दुर्बलता बलानके लिए ही। हम यह जवाब देकर जायें हैं कि सायर समझना उम्मी हो जाये। जिस दृष्टिसे हम वहाँ जायें हैं उसी दृष्टिसे हमारा भारत जाना भी ठीक है। लेकिन यह बहाना-ही बहाना बातें भी हैं। हमने हमारे आश्रित लीगनेमें देर लपटी है। वीना हमने ऊपर बताया यह काम करनेमें कुछ बकल लयेगा। हम ३ अक्टूबरके बाद ही जाना जा सकेंगे। वहाँ लपामन एक नहींना लपगा और एक नहींना जायामें भी लप

जाता है। इस प्रकार विसम्बर का चायेगा। हम विसम्बरके अन्त तक ही जीव सक्रिय। और यदि इतनेपर भी समझीता न हुआ तो हम बहकि-तहाँ रहेंगे। ऐसा करनेकी अपेक्षा सीधा रास्ता तो यही जान पड़ता है कि भारत जानेका विचार छोड़ दें। फिर भी जिस विषयपर यहाँ बर्बा भी गई है, उसको सब लोपके सामने रखना जरूरी है। फिर, इस प्रकार मामलेको खम्बा करनेसे ऐसेका खर्च भी बढ़ेगा। मैं खुद विसंगुल निरिषयत राय नहीं दे सकता। सरयाप्रहीकी हृदियतसे मेरी अकेलेकी राय पूछी जाये तो मैं एक ही बनाव रूपा कि हमें तुरन्त ट्रान्स्वाकमें फिर वासिक हो जाना चाहिए।

[मुंबरायीसे]

इंडियन ओपिनियन १-११-१९ ९

३०३ सम्बन्ध

[मकसूर ८, १९ ९के बाब]

नेटालक पिष्टमण्डल

नेटालके पिष्टमण्डलसे मिलनेके लिए [दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय] समितिकी साध बैठक बुलाई गई थी। वह गठ बुबदारको हुई थी। उसमें लॉर्ड ऐन्टविल्ड सर रेमंड वेस्ट डॉक्टर बॉर्मटन सर मंजरबी भावनगरी भी पोकक और भी रिच उपस्थित थे। श्री बांगलियाने सर रेमंडको सारी स्थिति बताई। लॉर्ड ऐन्टविल्डने उनसे इसने सम्बन्धित सारे कामनात ममि। इन्हें वे खुब पढ़ेपे। उन्होंने लॉर्ड मू का उत्तर पढ़नेके बाद कहा कि यह-ज्यादा कुछ करने सोच नहीं रहता।

श्री बांगलियाने खम्बनक' डेली टैकीघाठ के सम्पादकको सारे तप्य भेज दिये हैं। लॉर्ड मू का उत्तर मिका है कि वे और लॉर्ड मॉर्ले दोनों इसपर विचार कर रहे हैं। वे नेटालके विषयमें विचार कर रहे हैं उनके इस उत्तरसे भी प्रकट होता है कि नेटालपर ट्रान्स्वाक का बसर पड़ता है। उनको यह मय क्या हुआ है कि कहीं नेटाल भी न सरयाप्रहीका रास्ता बकितयार कर ले।

श्री आमव घामाठ उठी बहाजसे लौट रहे हैं जिससे यह पत्र का रहा है। उनको क्याता है कि अब यहाँ कोई काम सेप नहीं रहा। ऐसा जान पड़ता है कि बबतक ट्रान्स्वाकक पिष्टमण्डल यहाँ रहेया तबतक श्री बांगलिया भी यहाँ रहेंगे। आमव भी यन्तुक काधिर भी बैठा ही करेये।

आत्मबलकी नीति

श्री बांगीनें बुबदारकी 'उठको हमसंग नकबके इरसमके सामने आत्मबलकी नीति पर मापन दिया।' यह क्त्व बहूकी नीतिबिनी सभा (मुनिबन कोठ एधिकक लोघाइटोड) का है। सनाकी अम्यजता कुमारी बितरबॉटमने की थी। भारतीयोंकी उपस्थिति जाती थी। उनमें

१. मूके खम्बनक है, श्री लखतः झाईकी मूक है।

२. डेकिर "मानव बसनेन कबये" पृष्ठ ४००।

सुर मंचरजी भी पॉस भी परीख और अन्य लोग भी थे। कुमाठी बोधी और श्रीमती दुबे भी आई थीं। थी बांधीके मापनका सार यह था कि आत्मबल शरीर-बलसे बहुत ठेका और बजबे है। उन्होंने उसके सम्बन्धमें पूछे गये बहुत-से सवालके जबाब भी दिये। उन्होंने द्वाग्धबासका प्रश्न भी उठाया और हमारे कर्णोंकी कथा सुनकर सभी लोग प्रभावित हुए। श्री पॉसने भी मापन दिया जिसमें उन्होंने कहा कि आत्मबलके पीछे शरीर-बल होना चाहिए। थी बांधीने कहा कि वह बल आत्मबल कहा ही नहीं आयेगा। समामें श्रीमती टेकमन श्रीमती पोरुफ और श्री रिच भी बोले।

स्त्रियोंके मताधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली महिलाओंका खलसा

शरीर ७ को स्थानीय बस्वर्ट हॉल नामक विद्यालय भवनमें स्त्रियोंके मताधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली महिलाओं (सफ़ेजेटस) का बहुत बड़ा खलसा हुआ। उसमें सैकड़ों स्त्रियाँ आई थीं। श्रीमती पैकहर्स्ट आदिने मापन दिये। समामें उत्साह इतना था कि सड़ाई बकानेके लिए ३ पीठ वहीं इकट्ठे हो गये। चार व्यक्तिबोंने डार-डार ही पीठ दिये। इन स्त्रियोंने जबतक ५१ पीठ इकट्ठे कर लिये हैं। उनके खलबाराका प्रकार प्रति सप्ताह ५ प्रतिबों तक है। उन्हें देखनेसे ऐसा लगता था कि वे मरते दम तक सड़ेंगी। वे शरीर-बलका उपयोग करती हैं। हम इसे छोड़ दें तो उनका बस उनका उत्साह और उगका चादुर्ब से सब कुछ अनुकरणीय है। उनकी-बीची व्यवस्था पुरख्य भी नहीं कर सकते। हम कह सकते हैं कि उनके पास स्वयंसेविकाओंकी एक बहुत बड़ी सेना है। उनकी मुक्तिर्वा असीम है। वे बहुत कष्ट सहती हैं। मताधिकार प्राप्त करनेके प्रयत्नमें उनमें स बहुत-सी महिलाएँ परीश हो गई हैं। बहुत-सी स्त्रियोंने अपनी नोकरियाँ छोड़ दी हैं। यह कड़ाई कोई मामूली कड़ाई नहीं है। माटीय उनके चरम-विह्वोर पर चले तो काफी है। किन्तु हमें उनके शरीर-बलका अनुकरण नहीं करना है। यह समझना चाहिए कि शरीर-बलसे कोई साम न होगा।

मेरी जासूस

श्री आनन्द भायात यह सब देखकर यहसि जा रहे हैं। वे समझ गये हैं कि द्वाग्धबासकी कड़ाईसे नेटासको भी घाम पहुँचा है। उन्होंने यह भी देखा लिया है कि यहाँ आन्दोलनपन देनेसे यहकि लोगोंको भी ग्याय नहीं मिलता। आन्दोलनपनका कोई महत्त्व नहीं है यह सब समझते हैं। इपीत्यैर जासा करता हूँ कि श्री आनन्द भायात नहीं पहुँचकर सत्त्वाग्रहका आधिपत्य करें। उन्होंने द्वाग्धबासके सत्त्वाग्रहमें सहायता देनेका बचन तो दिया ही है।

[सुनपाठीसे]

इंडियन ओपिनियन ९-११-१९ ९

[संभव]

मकसूर १२ १९९

वि मणिसाल

तुम भी बेस्ट और वुसरे जोगोंकी ओ सेवा-सुभूषा कर रहे हो वह तुम्हारी सबसे बच्ची पढ़ाई है। जो व्यक्ति अपने कर्तव्यका पालन करता है वह सवा पढ़ता ही रहता है। तुमने किन्ना है कि तुम्हें पढ़ाईको खुने वे बेनी पड़ी है। ऐसा नहीं है। तुम सेवा-सुभूषा करते हुए पढ़ाई ही कर रहे हो। हाँ यह कहना ठीक होना कि अक्षरजानको छुट्टी दे बेनी पड़ी है। इस तरह छुट्टी देनेमें कोई हानि भी नहीं है। अक्षरजान तो फिर प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन सेवा-सुभूषा करनेका अवसर फिर आवेगा यह नहीं कहा जा सकता । अपने मनमें यह बात अंकित कर लेना कि तुम्हारा मन स्वच्छ है इसलिये सेवा-सुभूषा करते हुए तुम बीमार नहीं पड़ोगे। अगर उसके बावजूद तुम बीमार हो जाओगे तो मैं उसकी चिन्ता नहीं करूँगा। इस तरह की पढ़ाईसे ही तुम और मैं सभी पूर्ण बन सकेंगे। ठीक तरहसे रहना सीखना ही पढ़ाई है। सब धन पढ़ाई मूठी है।

बापूके आशीर्वाद

[बुधरातीसे]

गांधीजीना पत्रों से

३०५ भाषण हैम्पस्टेडमें

[संभव]

मकसूर १३ १९९

श्री गांधीने कहा कि पूर्व और परिवर्तनका प्रश्न बहुत बड़ा और जटिलता हुआ प्रश्न है। मुझे पूर्व और परिवर्तनके संबंधका अठारह बरोंका अनुभव है। मैंने इस प्रश्नको समझानेकी कोशिश की है। मुझे लगता है कि ऐसे लोगोंके सामने जिनके इस सजार्में मौजूद हैं वे अपने सुखम अर्थसौकरके परिचयन करता सकता हूँ। जब मैं इस विषयका जवाब करता हूँ, मेरा विषय चबरा-स्ता जाता है। मुझे कई बातें ऐसी कसुनी होंगी जो आपको अवधिकर समझी और

१ नाम पढ़ता है गांधीजीना पत्रोंमें, जहाँसे वह पिछी की गई है, एतका अर्थ नई जोड़ दिया गया है।

२. तात्पर्य-पूर्व पत्र किन्नेका स्थान जोड़दियेगनी दिया गया है। एतक ही वह पत्र है, क्योंकि गांधीजी एतक शब्दोंमें थे।

३. जहाँ कुछ अर्थ जोड़ दिये गये हैं।

४. गांधीजीने हैम्पस्टेड वीस रेंज आर्बिटरके संस्थापकके उत्तराधिकारी केविल मीरिंग हाउसमें की गई छापमें "पूर्व और परिवर्तन" का विवरण दे दिया गया है। अन्तर्गत ही-० है मीरिंग के।

कड़े शब्दोंका प्रयोग भी करना होगा। जिस पद्धतिमें मैं पला-मुसा हूँ, उसके विपक्ष भी कहना होगा। अगर आपकी भावनाओंको मेरे कबलसे चौंठ पहुँचि तो आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे। मुझे ऐसी कई भारतीयोंका सम्बन्ध करना होगा जो मुझे और मेरे देशके लोगोंकी प्रिय रही हैं और शायद आपको भी प्रिय रही हों। इसके बाद उन्होंने कल्पितपत्नी कविताकी उन दो पंक्तियोंका उल्लेख किया जिनका अर्थ है "पूर्व पूर्व है और पश्चिम पश्चिम; ये दोनों कभी न मिल पायेंगे।" फिर उन्होंने कहा मैं समझता हूँ कि यह सिद्धान्त गिरासाधारका सिद्धान्त है और मानव-विकाससे मेल नहीं खाता। मुझे सफ़्ता है कि इस तरहके सिद्धान्तको मान्य करना मेरे लिए विन्मूलन अत्यन्त है। अंग्रेजीके एक दूसरे कवि हेनरिस्तने अपनी "विजय" ["स्वप्न"] शीर्षककी कवितामें स्पष्ट भविष्यवाणी की है कि पूर्व और पश्चिम मिश्रमें। चूँकि उस "स्वप्न" में मेरा विश्वास है इसीलिए मैं दक्षिण अफ़्रीकाके कोपेन्डि मुक्त-बुद्धका छापी बन गया हूँ। वे लोग वहाँ बहुत बड़ी कठिनाइयोंमें रहे रहे हैं। मेरा जयान है, दोनों जातियोंके लोग एक-दूसरेसे बराबरीका बरतान करके हुए साव-साव रहे सकते हैं। इसीलिए मैं दक्षिण अफ़्रीकामें रहा हूँ। अगर मेरा विश्वास कल्पितपत्नीके सिद्धान्तमें होता तो मैं वहाँ कभी न रहा होता। अंग्रेजों और भारतीयोंके, आपसमें बिना किसी अवरोधके, एक ही घर रहनेके उदाहरण वहाँ-वहाँ मिलते हैं और जो बात व्यक्तियोंपर लागू होती है वही जातियोंपर भी लागू हो सकती है। एक हद तक यह सच है कि इन संस्कृतियोंमें मिश्रता-बुद्धता कुछ भी नहीं है। अत्यामियों और यूरोपीयोंके बीचकी बीबारे विन-प्रति-विन इहती जा रही हैं क्योंकि जायावियोंने पादचारण सम्प्रदायको पचा लिया है। मेरे जयानसे आधुनिक सम्प्रदायका मुख्य लक्षण है आत्मासे अधिक शरीरकी चिन्ता और शरीरकी प्रतिष्ठाके लिए सर्वस्वका समर्पण। रेल तार और टेलीग्राफ नया पादचारण कोपेन्डि नैतिक उत्थानमें दृष्टाण्ड है? जब मैं भारतपर निगाह डालता हूँ तो अंग्रेजोंके राज्यमें वहाँ क्या बिबाई बैता है? भारतपर आधुनिक सम्प्रदाय राज्य कर रही है। उतन क्या किया है? जब मैं यह कहता हूँ कि आधुनिक सम्प्रदायसे भारतकी कोई भलाई नहीं हुई है तो मुझे आया है, मेरे इस कबलसे आपकी लहना न पहुँचिया। वहाँ रेलों तारों और टेलीग्राफोंका जाल बिछा है आपका कककता भ्रष्टता बन्दई काहीर और बनारस-जैसे नगर खड़े कर दिये हैं जो स्वतन्त्रताके नहीं दातदाके सूचक हैं। मैंने देखा है कि पातयातके इन आधुनिक साधनोंसे हमारे तीनों—पश्चिम स्वार्थों—को अपवित्र बना दिया है। मैं सम्प्रदायकी इस उन्मत्त बीड़के पहलेके बनारसकी कल्पना कर सकता हूँ। और आजका बनारस भी मैंने अपनी इस अँकडि देखा है जो एक अपवित्र नगर है। मैं जो चीज भारतमें देखी वही चीज यहाँ भी देखी है। इस उन्मत्त शरणरामिने हमारी जूमें उखाड़ दी है। पद्यपि मैं स्वयं भी इसी व्यवस्थामें रहे रहा हूँ फिर भी मुझे आपसे यही कहना जरूरी मान्य होता है जो कह रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि जबतक अंग्रेज अपने तरीके न बरनें भारतमें दोनों जातियाँ साव-साव नहीं रहे सकती। आपने हिन्दू तीव्रस्वार्थोंमें आलोट और आधोव-मधोव करके हिन्दुओंकी धार्मिक पादनाको डेठ नहुँवाई है। यदि यह उन्माद-मरी बीड़ बन्द नहीं की जाती तो संनठ अवश्य आवेगा। हमारे सम्मुख एक मार्ग यह हो सकता है कि हम आधुनिक सम्प्रदायको अपना ल; लेकिन मैं तो यह हर्षित नहीं कह सकता कि हमें कभी भी यह सम्प्रदाय अपनानी चाहिए। ऐसा ठुमा तो भारत संतारका भीड़-कन्धुल बन जायेगा और दोनों राष्ट्र एक-दूसरेपर हट पड़ेंगे। भारत सब भी नष्ट नहीं ठुमा है यह काश्चित हो गया है। ऐसी बहुत-सी बातें

हैं जो समझमें नहीं या सकतीं। इन्हें समझनेके लिए हमें बीएच रखना होगा। सिद्धि एक बात निश्चित है यह यह कि जबतक यह उम्माद-भरी बीड़ जितमें धरीरका ही महत्व है बल्की रहेगी तबतक शरीरके भीतर प्रतिष्ठित अमर आत्मा दुर्बल ही रहेगी।

[अध्यायी]

ईशिया, २२-१ - १९ ९

३०६ पत्र लॉर्ड एंस्ट्रिलको

[अन्वय]

अक्टूबर १४ १९ ९

लॉर्ड महोदय

बोहानिसबसे बनी एक तार मिला है। इसमें कहा गया है

श्री स्मट्सने अखबारों [के प्रतिनिधियों] से कहा है कि वे अपने प्रस्तावोंके बारेमें मन्त्रीके उत्तरकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

यै इस तारका अर्थ यह क्याठा है कि लॉर्ड न्यू के जिस पत्रका मैंने जवाब देना है उस पत्रमें उल्लिखित प्रस्ताव श्री स्मट्सके मूख प्रस्ताव है और श्री स्मट्स यह जाननेको ठहरे हुए है कि अगर ये प्रस्ताव अमलमें आये जायेंगे तो क्या अनाक्रमक प्रतिरोध बन्द हो जायेगा। अभी लॉर्ड न्यू का कोई उत्तर नहीं मिला है। मुझे यह साफ दिखाई देता है कि अगर लॉर्ड न्यू और लॉर्ड मॉन्टैगो अपना कर्तव्य निभाता है तो उनके लिए ठीक अवसर नहीं है। दक्षिण आफ्रिकाके लिए बहाबमें बैठनेसे पहले साउथैम्प्टनमें श्री स्मट्सने जब रजिस्टरके प्रतिनिधिको बतव्य दिया था तब वे बहुत प्रसन्न और आनन्दित होकर बोले थे। उनका क्याक था कि अनाक्रमक प्रतिरोधियोंमें अब कड़नेका पम नहीं रहा। यह साफ है कि प्रिगेरिया फ्लोचनेपर उनका यह भ्रम दूर हो गया। इसलिये अब वे जानना चाहते हैं कि हम नहकि कोय उनके प्रस्तावोंको मानने और अनाक्रमक प्रतिरोधको बन्द करनेकी उम्माह देनेके लिए तैयार हैं या नहीं। आन्वोक्त बन्द होना औद्योगिक अतिकार दिये बिना असम्भव है। श्री डोऊने मुझे एक पत्र लिखा है। इसमें उन्होंने कहा है कि अनाक्रमक प्रतिरोधी दक्षिण आफ्रिकाके उनके पत्रकी रवानगीके बतव्य जितने सबबूत थे उतने सबबूत पहले कभी नहीं रहे।

आपका आज्ञाकारी सेवक,

हस्तलिखित बल्की अध्यायी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एस एन ५१२५) से।

प्रिय हेनरी

आपका मनाससे भेजा हुआ ठार मिला। मुझे दुःख है कि श्री डोककी किताब अभी तैयार नहीं है। प्रकाशनस पहले अभी कई दो प्रतियाँ मुझे अभी मिली हैं लेकिन मेरा जवाब है इनमें से एक आपको भेजनेकी जरूरत नहीं है। प्रतियाँ तैयार होते ही मैं श्री कूपरसे कहूँगा कि वे २५ प्रतियाँ श्री गट्टेसनको भेज दें।

टाइम्स में मद्रासकी समाचारों जो हास छपा है उसकी कतरन इसके साथ भेज रहा हूँ। आपको प्रिटोरियाका एक ठार भी मिलना। मैं नहीं जानता इसका क्या अर्थ है। श्री स्मट्सक जानेके बाद बातचीत बेघरक जारी रही है। लेकिन हमें ठा यह समझकर ही काम करना है मानो बातचीत बमरुक्त हो गई हो। भारतीय प्रवासी आयोग (इमिग्रेशन कमीशन) की रिपोर्ट इस भीतर बखूबी है। मेरा जवाब है आप जब कलकत्तेमें हों तब एक बलिष्ठ भारतीय चिप्टमण्डलको सॉर्ट मिस्टोसे मिलानेकी काशिस की जाये। आप सर चार्ल्स टर्नरको अपने हाथ से सफते हैं यद्यपि मैं आपकी कठिनाई समझ सकता हूँ। लेकिन वे आपका साथ दें या न दें चिप्टमण्डल बनानेमें कौई कठिनाई न होनी मद्रास बम्बई, इलाहाबाद, आदिर [मगरो] से एक-एक प्रतिनिधि या सकता है। मैं आपको कायेस और मुस्लिम कान्सेसमें प्रतिनिधि बनानेके सम्बन्धमें लिख रहा हूँ। मेरा जवाब है उनके बहिर्देशन समयस एक साथ होंगे लेकिन अगर वे एक ही दिन हों ठा आप मुस्लिम कान्सेसमें जायें या काबसमें इस बारेमें आपकी अपनी बिबेकबुद्धिसे काम लेना होगा। बमरुक्त प्रतिरोधकी बुद्धिसे तो मुझ लगता है कि मुस्लिम कान्सेसमें जाना सबसे अच्छा होगा। मैं यह भी मान लेता हूँ कि बार असीमइ जायेंगे।

मैं अब भी बीरे-बीरे प्रगति कर रहा हूँ। मैंने सोचा था कि मेरे पत्रके उत्तरमें सॉर्ट पू का पत्र मुरलध या जावेगा लेकिन यह पत्र लिखनक बहुत ठक (मुम्बयारके प्रात-कास तक) उत्तर नहीं जाया है और अबतक वे बातचीतका अखली नतीजा प्रकाशित करनेका अधिकार नहीं देते मुझे लगता है तबतक कुछ नहीं किया जा सकता। अगर उनका उत्तर इन गत्याह या जायें तो मैं अब हममें सन्देह है कि मैं जागामी ३ तारीखमें पहले [कोक-] मित्रपका काम पूरा कर सकूँगा। आप कटीब-कटीब सारे भारतकी घूर करेंगे। यह एक बिलेव बुविषा है, जो अभीतक मुझ भी नहीं मिल पाई है। इसलिए मैंने यहाँ प्यासा पम्भीर निरीक्षणके बाद जो निरिक्त निष्कर्ष निकाला है उन्हें मेरा जवाब है, अब मुझ निम्न डालना चाहिए।

१ पर ११ मन्सूरको प्रै भी ।

२. (१८५५-१९१४); भारतके बसलपेव और कर्म-कर्मक १९ ५-१ ।

३. उदाहरण के लिये बकी बकिने कीसे भारतके दो एक भी को है जो उद्वेगु कोक इतिहास की-सी, इनमें मुस्लिम को कोकक कगककने तबी इतिहासिक बकिने के बिने को है और दो या भी केउ-को मुसक बम के गांभी केड व साउथ अफ्रिकन इतिहास की-सीके बिने को को कोक केकके बिना बिने को है ।

यह बात मेरे विमाममें पहुँचसे ही थी लेकिन कोई निश्चित और साफ चिन्त नहीं उभरा था। मुझे पीछे एंड्र आन्ट्रेडिशन सोसायटीकी ओरसे पूर्व और पश्चिम विषयपर दोलनेके लिए जो निमन्त्रण दिया गया था उसे स्वीकार करनेके बाद मेरा हृदय और मस्तिष्क दोनों अधिक क्रियाशील हो उठे। सना पिछली रात हुई और मेरा क्याण है कि वह काफ़ी सफल रही। सोता बड़े उत्साही ने लेकिन दक्षिण आफ्रिकाकी स्थितिके बारेमें कुछ उद्धृत प्रश्न भी किये गये। आपको यह जानकर आश्चर्य होया कि हैम्स्टेडमें भी दक्षिण आफ्रिकेके कुछ बर नाटककी हिमायत करनेवाले और भारतीय व्यापारियोंको सज़ा पान और न जाने क्या-क्या बताकर, उनके बारेमें तरह-तरहकी ऊल-झलूस बातें कहनेवाले काफ़ी लोग थे। एक बहुत ही बूढ़ा महिष्ठाने उठकर कहा कि आप राज्य-विरोधी बातें कर रहे हैं। और जैसे ही दक्षिण आफ्रिकामें रीति-रिवाज और अगरी बातों — उदाहरणके लिए बैंगुलियोकें निधान — के बारेमें सोचनेवाले और उन्हीसे चिपके रहनेवाले अन्धविश्वासियोंसे निवृत्ता पक़ता है वैसे ही पिछली रात मुझे फेंड्स हाउसमें भी करता पक़ा। मुझसे किये गये प्रश्नोंकी सज़ीमें मेरा मुख्य उत्तर यह सो गया और तफ़्सीलकी बातोंपर ही परमागरम बहस हाठी रही। उससे प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है

(१) पूर्व और पश्चिमके बीच घेरकी कोई दुर्बल्य बीवार नहीं है।

(२) पश्चिमी या पूर्वी सम्मता-बैधी कोई बीज नहीं है। हाँ एक आधुनिक सम्मता अवश्य है और वह सर्वथा मौलिकवादी है।

(३) आधुनिक सम्मतासे प्रभावित हानके पूर्व यूरोपके लोग बहुत-सी बातोंमें पूर्वके लोगोंसे या कमसे-कम भारतीयोंसे काफ़ी निस्ते-बुल्ले थे और आज भी जो यूरोपीय आधुनिक सम्मताके प्रभावसे बहूते हैं वे उस सम्मताके सपूर्वकी तुलनामें भारतीयोंसे बहुत क्याबा यादानीसे बुलमिस सकते हैं।

(४) भारतपर राज्य क़िटिश लोग नहीं कर रहे हैं बल्कि रेल तार, टेल्ग्राफ़ेन और सम्मताके विषय-भूषण माने जानेवाले कमभाग सारे आधिकारिके माम्मसे यही आधुनिक सम्मता कर रही है।

(५) बम्बई, कलकत्ता और भारतके अन्य प्रमुख नगर मुसीबतके असली स्वान हैं।

(६) अगर कक ब्रिटिश शासनका स्वाम आधुनिक तीर-तरीकोंपर आधारित भारतीय शासन के से तो इससे भारतकी स्थिति बल्ली नहीं हो जावेगी। तब भारतीय भी बुराप या कमठीकाके बूधरे या पाँचवें संस्करण बनकर रह जायेंगे। हाँ इतना जरूर होना कि जो बन बहकर इन्हीं बका पाठा है उसका कुछ भस रेशमें ही रह जावेगा।

(७) पूर्व और पश्चिम वास्तविक रूपमें ठमी मिल सकते हैं जब पश्चिम आधुनिक सम्मताका लगभग पूर्ण रूपसे परिव्याग कर दे। बिधानमें तो वे तब भी मिल सकते हैं जब पूर्व भी आधुनिक सम्मताको स्वीकार कर के लेकिन वह मिलन सवत्न-स्थानिसे समान होया — ऐसी स्थानिके समान बैधी उदाहरणके लिए, जर्मनी और इन्हींके बीच है। ये दोनों ही देश एक-दूसरे हाथ डीछ किये जानेके सतरेसे बचनेके लिए मृत्युके पादमें अपने दिन काट रहे हैं।

(८) यदि कोई एक व्यक्ति या व्यक्तिवोका संवतन साठी बुनिवाको तुभारना पूर करे या उसकी बात भी सोचे तो यह हिमाकत ही होगी। उँके दर्जेकी कापीयोंसे बने

और तेज बालबालके बाहुरीके सहारे भी ऐसा करनेका प्रयत्न असम्भवका सम्भव बनानेका प्रयत्न होया।

(९) सामान्यत यह कहा जा सकता है कि मौखिक मुषिभाषाओंकी वृद्धि होनेसे वैदिक विकासमें किसी तरह कोई सहायता नहीं मिलती।

(१०) चिकित्सा-विज्ञान इस काल बाहुका सार है जिसे हम उच्च चिकित्सा-कौशल मानते हैं उससे तो नीमहकीमी छात्र बने अच्छी है।

(११) अस्पताल के साधन हैं जिनका उपयोग रीतान अपने उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए, अपने साम्राज्यपर अपना अधिकार बनाये रखनेके लिए करता है। वे कुपचार, कुस विचारवट और वास्तविक वास्तवकी स्थायी बनाते हैं।

(१२) जब मैंने चिकित्सा-साधककी शिक्षा देनेकी सारी भी ठव में बिल्कुल बहक ही गया था। अस्पतालकी वृषित प्रक्रियाओंमें भाग लेना मेरे लिए हर तरहसे एक पापपूर्ण कृत्य होना।

अगर मैंने रोमके लिए, या लय रोमियोंके लिए भी अस्पताल न होते तो हमारे बीच लय रोम कम होता और मैं पाप भी करने न होते।

(१३) भारतकी मुक्ति इसी बातमें है कि उसने पिछले पचास वर्षोंमें जो-कुछ सीखा है उस मुझ बाये।

रेल तार, अस्पताल बन्धील डॉक्टर आदि—सबकी जाना होना और तथाकथित उच्च वर्गके लोगोंको इस बोधके साथ कि किसानका सारा जीवन ही सच्चा सुख देनेवाला है अन्तःकारमाको शांति बनाकर, बर्न मानकर और मनको बचमें करके वह जीवन बिताना सीखना होया।

(१४) भारतीयोंको मिलके कपड़े नहीं पहनने चाहिए, पाहे वे यूरोपीय मिश्रोंमें तैयार हुए हों या राष्ट्रीय मिश्रोंमें।

(१५) इंग्लैंड इसमें भारतका सहायक हो सकता है और तमी वह माध्यपर अपने अधिकारका भीषित्य सिद्ध कर पायेगा। आज इंग्लैंडमें भी ऐसा सोचनेवाले बहुत लोग दिखाई देते हैं।

(१६) पुराने ऋषियोंमें सच्चा ज्ञान था। तमी तो उन्होंने समाजकी व्यवस्था एही की थी कि लोगोंकी मौखिक स्थिति मर्बाहित हो जाये। सायब पाँच हजार साल पुराना आदिम हूड आज भी किसानके लिए उपयुक्त हूड है। हमारी मुक्ति उसीसे हीनी। ऐसी हासलोंमें लोग क्याशा जीते हैं या क्याशा धाम्तिसे रहते हैं। उसकी तुलनामें आपुनिक उद्योगकारको उपमानेके बाव यूरोपके लोगोंको उत्तमी धाम्ति नहीं मिलती है। मुझे लगता है कि प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति चाहे तो इस सत्यको सीख सकता है और उसके अनुसार आचरण कर सकता है प्रत्येक अर्थेय भी अवश्य ही ऐसा कर सकता है।

किन्ननेके लिए बार्ते बहुत है। आज बापको उतना नहीं लिख सकता। लेकिन ऊपर दी गई सामग्री दिखारके लिए काफी है। जब आप यह देखें कि मैं पत्ता कहता हूँ तो मुझे रोक सकते हैं।

आप यह भी देखें कि मैं उपर्युक्त लिफ्टोंपर, जो करीब-करीब निरिचित हैं अनात्मिक प्रतिरोधकी सच्ची मापनासे ही पहुँचा हूँ। अनात्मिक प्रतिरोधकी रूपमें मुझे इस बातकी कोई

खिन्ना नहीं है कि जो लोग उम्पाद-भरी वर्तमान बीड़में सन्तोष अनुभव कर सकते हैं, उनमें इतना बड़ा सुधार—अगर उसे सुधार कहें तो—किया जा सकता है या नहीं। अगर मैं यह समझूँ कि यह बात सच है तो मैं इसके अनुसार चलनेमें जातन्त्र अनुभव करूँगा और इसलिए मैं सब लोगोंके पुरु कराने तक न ठहरूँगा। हममें से जो लोग इस तरह सोचते हैं उन सबको इसके लिए बहरी कदम उठाना पड़ेगा। अगर हम ठीक रास्तेपर हैं तो बाकी लोग जरूर ही हमारे पीछे आवेंगे। सिद्धान्त मीठू है हमें अपना व्यवहार यथासम्भव इससे मिलाता जुलता रखना होगा। इस बीड़में रहते हुए, सम्भव है हम सभी बुराईयोंको न छोड़ सकें। मैं जब भी रेल्पाड़ीमें बैठता हूँ बसमें जाता हूँ मैं जानता हूँ कि मैं जो ठीक समझता हूँ उसके विरुद्ध आचरण कर रहा हूँ। इसके मुझे स्वाभाविक परिणामोंका भय नहीं है। इम्पूरी जाना बुरा है और बसिब आशिका और भारतके बीच समुद्री बाधाओंसे आबायमन भी अच्छा नहीं है भावि। आप और मैं अपने इस जीवनमें इन चीजोंसे बच सकते हैं और सम्भव है बच जायें लेकिन आज बात तो अपने सिद्धान्तको सही करनेकी है। आप यहाँ सब तरहके लोग और उन्हें सब इलाजोंमें देख रहे होंगे। इसलिए मुझे लगता है कि मैंने मानसिक दृष्टिसे जो कदम उठाया है और जिसे प्रगतिशील कदम मानता हूँ मैं उसे आपसे न छुपाऊँ। अगर आप मुझसे सहमत हैं तो ज्ञानिकारियों और दूसरे सब लोगोंसे यह कहना आपका कर्तव्य होता कि वे जो स्वतंत्रता चाहते हैं, या उनका खयाल है कि वे चाहते हैं वह स्वतंत्रता लोगोंको मारनेसे या हिंसा करनेसे नहीं मिलेगी बल्कि अपना सुधार करने और सभी अर्थोंमें भारतीय बननेसे और भारतीय रहनेसे मिलेगी। तब अंग्रेज शासक भी सेवक होने स्वामी नहीं। वे सरसक होने सतानेवाले नहीं और वे भारतके सब निवासियोंके साथ बिल्कुल घाति तथा मेल-जोकरे रहेंगे। इसलिए भविष्य अंग्रेज आतिके हाथमें नहीं बल्कि स्वयं भारतीयोंके हाथोंमें है। और अगर उनमें काफ़ी आत्म-त्याग और संयम है तो वे इसी अर्थ स्वतन्त्र हो सकते हैं। हम भारतके लोग जब उस शासकीको स्वीकार कर लेंगे जो बहुत-कुछ सब भी हमारी विशेषता है और जो कुछ साक पहले तक हमारी पूरी विशेषता थी तो तमाम भारतमें सब भी सर्वोत्तम भारतीय और सर्वोत्तम यूरोपीय एक-दूसरेसे मिल-जुलकर रह सकेंगे और एक-दूसरेकी उन्नतिमें सहभागता कर सकेंगे। जब तब चलनेवाली गाड़ियाँ न थीं तब व्यापारी और बर्मापेसक बैचके एक घिरेसे दूसरे घिरे तक कपड़ोंको सेकते हुए पैदल जाते वे आत्मसुख या स्वास्थ्य लाभके लिए नहीं (बल्कि वे उनको पैदल यात्राओंसे मिल जाते थे) बल्कि मानव आतिके हितके लिए। तब बनारस और दूसरे तीर्थ पवित्र स्थान वे लेकिन आज तो वे बुनास्पद बन गये हैं।

आपको याद होगा आप मुझपर अपने अर्थोंसे गुजरगतीमें बोलनेपर माराज हुआ करते थे। अब मुझे अधिकारिक विश्वास होता जाता है कि अगर मैं उनके अंग्रेजीमें बात करनेसे इनकार करता या तो बिल्कुल ठीक ही करता था। कल्पना तो कीजिए, एक गुजरगती दूसरे गुजरगतीको अंग्रेजीमें पत्र लिखता है। आप यह कहें तो ठीक ही होगा कि वह बहुत सम्भारण करता है और व्याकरणकी दृष्टिसे बहुत लिखता है। मैं अंग्रेजी लिखने या बोलनेमें वैठी नहीं गलतियाँ करता हूँ वैठी निश्चय ही गुजरगतीमें न करूँगा। मेरा जयाज है, मैं बर्क-बर्क किसी भारतीयसे या विदेशीसे अंग्रेजीमें बात करता हूँ तब एक हूँ तक उस भाषाको मुकता हूँ। अगर मैं उस भाषाको अच्छी तरह सीखना चाहता हूँ और अपने कामोंको उसके

स्वरका सम्बन्ध बनाया जा रहा है तो मैं ऐसा एक संभवसे बात करके और उसको बात करते हुए सुनकर ही कर सकता हूँ।

अब मैं समझता हूँ कि मैं आपको बहुत बड़ी खुशक दे चुका हूँ। मुझे आशा है आप इसे पचा सकेंगे। बहुत सम्भव है कि आप भी भारतके अपने विभिन्न अनुभवकें आचारपर, धारक स्वतंत्र रूपसे इमी निष्कर्षपर पहुँचें हों क्योंकि आपकी कल्पनाशक्ति और ध्यावहारिक ज्ञान अवरदस्त है। आतिर ये निष्कर्ष नये तो नहीं हैं बभी तो इन्होंने विभिन्न रूपमात्र किया है और मुझे एकदम आश्चर्य कर दिया है।

मुझे अभी-अभी ओहानिचबर्गसे निम्नलिखित पत्र मिला है

स्मृतने मलबारों [के प्रतिनिधियों] से कहा है कि वे अपने प्रस्तावके बारेमें उपनिवेश-मन्त्रीके उत्तरकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। सम्बन्धी समिति किम्हान्त काम जारी रख रही है।

इस पत्रका अर्थ यह है कि ओहानिचबर्गमें इस प्रश्नपर कुछ हलचल अभी हुई है और स्मृतने मलबारक प्रतिरोधको कुछतनेके बारेमें आशान्वित नहीं हैं। इससे यह भी प्रकट होता है कि अगर कोई नू पूरी सन्धिसे प्रयत्न करें तो वे समझौता कर सकते हैं। लेकिन [तबतक] हमें तो सहाई जारी ही रखनी होगी। सो सम्बन्धी समिति अपना काम जारी रख रही है। इससे ज्ञान बदलती नहीं और रिचकी स्थिति सुपर जाती है।

बेचारी धीमती रिचको एक और माँगेशान कराना होगा। सम्भव है वे उससे न उबरें। अगर उनकी यह जिन्दा नीत अतमी नीत बन जाये तो उनको बड़ी राहत मिलेगी।

बारेमें— इस पत्रका इससे पहला भाग समाप्त होनेपर यहाँ मिली आ गई थी। चूँकि मेरे लयात्से यह पत्र महत्वपूर्ण था इसलिए मैंने उन्हें पढ़कर सुना दिया। इसके बाद उपयोगी विचार-विमर्श हुआ जिसकी कल्पना आप शुरू कर सकते हैं।

भी बनी इमान अब भी यहीं है। मेरा ध्यान है कि वे सीमाकारको रवाना हूँ।

इससे आपका

मो० क० गांधी

टाइप की हुई सप्तरी अंग्रेजी प्रति (एम एन ५१२७) हस्तलिखित अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल और एम के गांधी एंड साठक आधिकार प्रोव्हेन से।

पिछम हफ्ता बुरा बीठा है। पहले तो 'टाइम्स'में इस आसयका तार बेजनेमें जाया कि समझौतेकी बात बिन्दुबिन्दु पकठ है। [वारमें जायं कहा गया है,] श्री स्मट्सने लॉर्ड कू के बातचीत की थी किन्तु सरकारका विचार भारतीयोंकी माँग मंजूर करनेका नहीं है।

एक दूसरी खानगी खबर भी तारते आई है, जिसमें कहा गया है कि श्री स्मट्स लॉर्ड कू के बनावकी यह देख रहे हैं।

लॉर्ड कू का बनाव आज (शुक्रवारको) मिला है। वे उसमें लिखते हैं कि जतरत स्मट्स जो-कुछ देना चाहते हैं वह अपने पिछके विचारके अनुसार ही देना चाहते हैं तथापि वे कानून रब कर देंगे और [प्रवासी प्रतिबन्धक कानूनमें] ऐसा परिवर्तन कर देंगे जिससे उनकी पसन्दके कुछ विहित भारतीय [प्रति बर्ष] स्थायी रूपसे जा सके। इसके अलावा लॉर्ड कू लिखते हैं यहाँ कोई खुजा आन्दोलन किया जाये या नहीं इस सम्बन्धमें हमें ही सोचना है। चाप ही इसपर भी विचार कर लेना है कि यहाँ किसे गये आन्दोलनका अवरुध स्मट्सपर क्या असर होगा।

यह यहाँकी स्थिति है। अब विचार करनेकी बात यह है कि क्या करना ठीक होगा। यदि श्री स्मट्स सचमुच हमारी माँगें मंजूर करना चाहते हों तो यहाँ खुली लड़ाई सङ्गनेसे उनकी स्थिति विषम होती है। यदि उनका विचार ऐसा न हो तो यहाँ खुला आन्दोलन करना ठीक ही होगा।

बिन्दुबिन्दु निश्चित सम्मति दे देना सरल नहीं है। सरयाग्रहकी नीतिके अनुसार [परिणामके प्रति] उदासीन रहा जा सकता है। किन्तु जहाँ दुर्बल और सबल सभी तरहके लोग मौजूद हों वहाँ विचार करना बकरी है। अब यह देखना है कि लॉर्ड ऐन्टहिम जाहि महाभूषण क्या कहते हैं। यह पत्र छपनेसे पहले ही यहाँ कार्रवाई शुरू कर ही जायेगी। उपाठ भारतका है। किन्तु मुझे तो धयता है कि लड़ाई बीसे-बीसे जाने बढ़ती जायेगी बीसे-बीसे सही रास्ता सूझता जायेगा। इस बीच सबको बीरज और साहसकी बकरत होनी और भारी दुःख सहन करने पड़ेंगे।

स्वयंके एक महाभूषण कार्ट टॉम्स्टॉय हैं। उनकी मीने इस लड़ािके सम्बन्धमें और उचते सम्बन्धित अल्प विषयोंपर पत्र लिखा था। उन्होंने उस पत्रका जो उत्तर दिया है, उसका एक अनुच्छेद नीचे दे रहा हूँ।

मुझे आपका अत्यन्त मनोरञ्जक पत्र मिला। उससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। खुदा हमारे इन्तज्जालवासी माइसों और छात्रियोंकी मदद करे। जर्म दिखके लोनों और

१ अक्तूबर १९, देखिए "दैनिक अन्तिम अन्वेषण" पृष्ठ ४८५।

२, देखिए "दैनिक अन्तिम अन्वेषण" पृष्ठ ४८५-४८६।

३, टॉम्स्टॉयके इन्तज्जालवासी लड़के अन्वेषणके दिनांक देखिए अन्तिम अन्वेषण १०।

कड़े दिग्गज लोगोंके बीच ऐसी कड़ाई— जिसमें एक ओर यरीबी और आत्मबल होते हैं और दूसरी ओर कमिमान और घटीर-बल— यहाँ भी जामे बिन आरति बसती रहती है। यह कड़ाई मुस्मता तक होती है जब यहाँके लोग फौजी मौकरी करनेसे इनकार करते हैं। यह कड़ाई सुबान्द कानून और इनसानी कानूनके बीच है। इसके लोग बिन प्रतिबिन फौजी मौकरी करनेसे इनकार करते जाते हैं।

मैं आपको अपना भाई मानता हूँ और आपसे सम्पर्क होनेपर मुझे बहुत प्रसन्नता है।

इन महापुरुषकी आयु जमी अस्ती बर्य है। यूरोपमें तो उनके समान पवित्र और बर्मात्मा पुरुष बूझा दिखाई नहीं देता। वे फौजमें रहे हैं जहाँने लाखोंके ऊपर हुजम चलाया है लाखोंकी सम्पत्तिका उपभोग किया है और बहुत मुक्त देता है। उन-वीरों से एक नाम यूरोपमें बूझा नहीं है। फिर भी वे इस समय स्वच्छासे फकीरकी तरह रहते हैं। वे जब इसके अत्याचारी कानूनोंका पूर्ण विरोध करते हैं और बूझोंको भी उनका विरोध करनेके लिए प्रेरित करते हैं। किन्तु वे घटीर-बलका प्रयोग कभी नहीं करते और बूझोंको भी उसका प्रयोग करनेसे रोक्ते हैं। वे आत्मबलपर पूरा भरोसा रखते हैं। उनकी कृतिर्मा सारी हुनियारों जाबत पकी जाती है। इस देशमें उनकी शिक्षाके अनुसार चलनेवाले बहुत-से लोग दिखाई देते हैं। उनका विश्वास बिल्कुल ईश्वरके ही ऊपर है। इसलिए उनके सम्बन्धि मेरा उत्साह तो बहुत ही कम है। मैं आशा करता हूँ कि प्रत्येक भारतीय उनके सम्बन्धि स्वाम्त करेगा और उनके अनुसार आचरण करेगा। ऐसा महापुरुष हमारा सम्पर्क है, यह बहुत ही खुशीकी बात है। उनके पत्रसे अभी भी प्रकट हो जाता है कि आत्मबल या अत्याग्रह हमारा एकमात्र अवलम्ब है। सिष्टमण्डक भेजना बाकि प्रयत्न तो व्यर्थ है।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन १३-११-१९ ९

३०९ पत्र 'साज्ज आफ्रिका' को

[सम्बन्ध]

वक्तुबर १९ १९ ९के पूर्व]

महीशय

आपके बोहानिसबर्नके संवादवाताने अपनी साप्ताहिक बिहूलीमें जिसे आपने अपने जन्मवारके इसी अंकमें प्रकाशित किया है, नाबन्पनके मामकेसे सम्बन्धित तर्कोंको बल्लत रूपमें पेश करके ट्रांसवालके ब्रिटिश भारतीय समाजके प्रति सारी जम्हाब किया है। इसके ब्रिटिशक उद्यम अपने पत्रमें यह नहीं कहा कि ब्रिटिश भारतीयके ब्रिटिशक भी बहुत-से जामेने जिन्होंने

१ यह "साज्ज आफ्रिका बिहूली-सुपर" बीसके जमा वा। इसके एक एक करीता भी जमा वा, जिसका ऊपर बीबी-बिने दिया वा; देखिए ब्रिटिश १ ।

कमिश्नरल^१ सामने पेश किये गये प्रमाणोंको पढ़ा है कमिश्नरकी जांचके निष्कर्षोंको मस्वीकार किया है और भी बेसुतने^२ जिन्होंने जांचमें द्विदिश भारतीयोंका प्रतिनिधित्व किया वा ट्रान्स्वाकक असभारोंमें तीन काकमका एक पत्र छपवाकर जांचके निष्कर्षोंकी कमबोरी बताई है। उनके उस पत्रका उत्तर जमीठक नहीं दिया गया है। और बाहिर मेजर डिकसनके निष्कर्ष है क्या? मृत ब्यक्तिके पास दो कम्बल थे या नहीं इस प्रस्नके सम्बन्धमें तो उन्होंने कोई निर्णय दिया ही नहीं। उन्होंने यह स्वीकार किया है कि मृत ब्यक्तिको जाबल नहीं दिया जाता था। आपके संवाददाताने यह कहकर बड़ी उधाराता प्रकट की है कि यदि जाबल नहीं दिया जाता था तो पानी तो निश्चय ही दिया जाता था और वह भी काफी। लेकिन मेरे देशवासी यह मानते हैं कि पानी काफी दिया जानेपर भी वह जाबलका स्थान नहीं ले सकता। कमिश्नरने यह निष्कर्ष भी नहीं निकाला है कि बेचार नामयन जैसा आपके संवाददाताने कहा है बेसुतमें अधिक स्वस्थ था। कोई सामारज ब्यक्ति भी और मेरा तो खयाल है कि कोई चिकित्सक भी यह मानेगा कि यदि कोई अन्य बात न हो तो बाहिक मुझमरी और व्यपणित बस्थ ही ट्रान्स्वाकके इस ऊंचे पठारकी इस कड़ी सर्दीमें निमोनियाको जग्य देनेके लिए काफी है जिससे यह बेचार बनावकमक प्रतिरोधी बेसुते छूटनेपर छ दिनके भीतर ही मर गया। डॉ. मॉडफ्रेका^३ खयाल बेराक यही था।

आपके संवाददाताके इस कथनके बावजूद ट्रान्स्वाकके और, वस्तुतः समस्त दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयों और कितने ही अन्य निष्पक्ष यूरोपीयोंका^४ यह खयाल बना ही रहेगा कि नामयन कर्तव्यकी बेबीपर बसि हो गया और उसकी मृत्युका खयाल उन लोगोंकी बन्त रात्माको छारुता रहेगा जिनकी बचीनचामें यह अपनी कहरकी सजा काट खा था।

[अपेचीठे]

इंडियन ओपिनियन १९-१ -१९ ९

१ मेजर एडम से डिकसन, क्वेन्सि १९ जुलाईको, बीकनर तिकर निष्पक्ष बेसुते मामलेकी टुली बीकनी बी। इस डिकसनके बीकनरी बी क्वेन्सि बीकनरी रिपोर्ट १४-७-१९ ९के इंडियन ओपिनियनमें टी। बी. और कमिश्नरके निष्कर्ष १४-८-१९ ९के अंकमें।

२ बेसुत मृत बेसुत हाटा मेला गया सुकनेका बीकनी रेखा हाक १४-७ १९ ९के इंडियन ओपिनियनमें छपा था। १४ भाग्यकी क्वेन्सि ट्रान्स्वाकक बीकनरी एक पत्र किया था, क्वेन्सि बीकनरीकके कुछ क्वेन्सियों हाटा कमिश्नरके निर्देशकी बेसुत-रेखा लीकनर परनेकी बालीकना की थी बी। मर पत्र बी ११ ८-१९ ९के इंडियन ओपिनियनमें छपा गया था।

३ डॉ. विडियम मॉडफ्रे नामयनकी बसिज बीकनरीक उलय क्वेन्सि चिकित्सक थे। क्वेन्सि वार्मे मर खयालन बी दिया था कि नामयनकी वस्तु निर्दिष्टते हुई और "मर बी कुछ पढ़ा गया है मर उलय है टी बेसुत-बिचरिनेका वरदण क्वेन्सि हाकन विनामके लिए क्वेन्सि है।"

४ रेखा क्वेन्सिमें देरदरे से से-७ बीकनर और क्वेन्सि देकी थी थे। ट्रान्स्वाकके क्वेन्सियोंको क्वेन्सि मरे क्वेन्सि ११-८ १९ ९के इंडियन ओपिनियनमें बी क्वेन्सि दिने मरे थे।

३१० पत्र मदनमाल गांधीको

[कम्पन]

बम्बूबर १८ १९०९

प्रिय श्री मदनमाल

तुम्हारा गठ मासकी १५ ठाटीयका मिया पोस्टकार्ड मिला। श्री बन्नीके सम्बन्धमें परि
शुभ कागजात उनके डैनहाउजरके पतेपर तुल्य भिजवा दो तो बहुत अच्छा हो। कागजात
पब्लिशिंगे भेजे जाने चाहिए। मैं भी बन्नीको भी लिख रहा हूँ।

मुझेभू

दास की हुई बापटी बंनेकी प्रति (एम० एन० ५१३२) से।

३११ पत्र बन्नीको

[कम्पन]

बम्बूबर १८ १९०९

प्रिय महाशय

आपके इसी ८ ठाटीयके पत्रके सम्बन्धमें निवेदन है कि मेरा लयाक का आप दर्शनमें होये
इसलिए मैंने बसाकी रखीर इसी १२ ठाटीयको श्री मदनमाल गांधीको भेज दी थी और
उनसे अनुरोध किया था कि वे उसपर आपके हस्ताक्षर से लें। अब मैंने उन्हें मिला दिया है
कि वे उसे आरको भेज दें। बापटी ठीक लच्छे गयी हुई रखीर मिलते ही मैं आपसे
निवेदनके अनुरोध एकम फिर बना कर रूना।

आपका विश्वास

श्री बन्नी

पार्टन बुरपीन बापीर

डैनहाउजर

दास की हुई बापटी बंनेकी प्रति (एम० एन० ५१३३) से।

महोदय

मुझे आपका इसी १५ तारीखका पत्र^१ प्राप्त करनेका सीमास्य मिला।

इस पत्रमें मुझे और मेरे साथीको बड़ी अनिश्चित अवस्थामें डाल दिया है। पिछले गहनेकी १६ तारीखको श्री हाजी हुबीब खीर मैं जब कॉर्डरू से मिले थे तब उन्होंने कृपापूर्वक हमसे कहा था कि मैंने जो प्रस्ताव रखा है उसे वे उचित मानते हैं और मंजूरीके लिए स्मट्सके सामने पेश करेंगे। जिस पत्रका यह उत्तर है उसमें वह नहीं बताया गया है कि वह प्रस्ताव भी स्मट्सके सामने रखा गया या नहीं और अगर रखा गया था तो उसके बारेमें उन्होंने क्या फैसला किया है। बर्हातक जनता [के सामने मामला रखने] का सम्बन्ध है हमने बिस्कुट कुछ नहीं किया है और जबतक मेरे रज्जे प्रस्तावके आधारपर बातचीत चलती है तबतक यह सब बनाये रखना हम अपना कर्तव्य समझते हैं ताकि बातचीतको हाथ न पहुँचे। मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि कॉर्डरू महोदय हमारे इस सबको समझेंगे। ट्रान्स्वालके ब्रिटिश भारतीय बहुराज्य विनोदों को भारी तकलीफें सह रहे हैं उनका अन्त तभी हो सकता है जब मेरे प्रस्तावके अनुसार पर्ये-किस्के ब्रिटिश भारतीयोंका सैद्धान्तिक अधिकार सुरक्षित कर दिया जाये। क्या भी स्मट्स ट्रान्स्वालके मन्त्रियोंके सामने और ट्रान्स्वाल-संसदमें अपने उठी मूक प्रस्तावको रखना चाहते हैं जो उन्होंने यहूति बक्षिभ आधिकारको रखाता होते वक्त रखा था? अगर ऐसी बात है तब ही हम साबर निवेदन करते हैं कि बर्हातक ब्रिटिश भारतीयोंका सम्बन्ध है उन्हें निष्क्रियताकी नीतिसे कोई काम न होगा। मुझे विश्वास है कॉर्डरू महोदय इस बातसे सहमत होंगे कि हमें बातचीतके सम्बन्धमें निश्चित स्थिति माकूम होनी चाहिए, ताकि हम उसको ध्यानमें रखकर अपना व्यवहार निश्चित करें और, बर्हातक यह हमारे-बचकी बात है इस बातचीतमें सहायक हों। इसलिए क्या मैं आपसे बातचीतके बारेमें जल्दी ही ज़पारा पूरी जानकारी देनेकी प्रार्थना कर सकता हूँ?

मैं वह भी कहूँ कि जोहानिसबर्गसे एक टार मिला है जिसमें कहा गया है कि भी स्मट्सने एक संवादवातासे कहा है, वे अर्थ कॉर्डरू के उत्तरकी प्रतीक्षा कर रहे हैं और

१ यह पत्रिका ८ अनुसूचके पत्रके उत्तर-अन्तर्गत था। इसमें लिखा था

"सब विचारके ली ४ तारीखके पत्रमें ट्रान्स्वालके ब्रिटिश भारतीयोंके प्रकृत सम्बन्ध का मुझे सम्बन्धित आधारके लिये कि प्रस्तावके अन्तर्गत लिखा गया है, वे भी अनुसूचके आधार हैं। वे प्रस्ताव कबसे कबसे रखता होमेने पहले रहे थे। वे प्रस्ताव वे कहीं हैं जो ज़पाने पिछले मिनिकी १६ तारीखकी कृपापूर्वकमें रहे थे।

"मुझे यह भी बतना है कि सब विचारके सम्बन्धमें जल्दी क्या कदम चलना है, यह सब ही ज़पाने ही उन करनेका है। लेकिन, इसमें मुझे कोई शक नहीं है कि ज़पाने भी उन्हा बचपना चाहते हैं, कसब भी अनुसूचके प्रस्तावके प्रति ट्रान्स्वाल सरकार और ट्रान्स्वाल-संसदके कसब क्या कसब ज़पाने सब बचपना ज़पाने रखेंगे। सब ही ज़पाने सब ही उचित कहे कि ज़पाने ज़पाने करते हैं ज़पाने सब ज़पानेके उत्तरकी प्रतीक्षा होने तक सब रहना क्या ज़पाना बचपना न होये।"

यह उत्तर मित्रपर ही के इस प्रश्नपर अपन प्रस्तावोंके सम्बन्धमें कोई सार्वजनिक वक्तव्य देंगे। जबतक हमें यह न मालूम हो कि डॉ. महोदयने पिछले महीनेकी १९ तारीखकी मूलाकाशके वक्त जो कार्रवाई करनेकी बात कही थी उसका क्या हुआ तबतक हमारे लिए यह तय करना कठिन हो जाता है कि हम अब क्या रास्ता बख्तिवार करें।

आपका आदि
मो० क० गांधी

कमोनिवस ऑफिस रेकॉर्ड २९१/१४२, वीर टाइप की हुई बफररी नंवेनी प्रतिप्री कोणे-नकड (एस एन ९१३९) से भी।

३१३ पत्र डॉ. रॉबर्ट हॉब्सको

[सम्बन्ध]

मकसूर १९, १९ ९

डॉ. महोदय

आपके इसी १८ तारीखके पत्रके लिए वीर आपकी बहुत ही कृपापूर्ण वीर लक्ष्मी ससाहके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

अब मैंने एक पत्र डॉ. रॉबर्ट हॉब्सको भेजा है। उसकी मकसूर इस पत्रके साथ भेजा रहा है। मेरा क्याक है कि हममें आपक पत्रके सारे मुद्दे भा बने हैं। आशा है इसे आप पसन्द करेंगे।

आपका आदि

टाइप की हुई बफररी नंवेनी प्रति (एस एन ५१३७) से।

१. अपने १८ मकसूरके अपने डॉ. रॉबर्ट हॉब्सको लिखा था "वेकड वर भाजा ठी भी ही कि कान्धियेस कर्षाक्य भातको सुत रक्या बनेप और वह उन करना सुविधा है कि कज्जी वर उमर कर्षाक्य लिप्य है वा लिप्य नहीं है। कर्षाक्यका करण है कि विवर करण लयसुत प्रस्तावोंके बिना वा रहा है; केकिन अपने भातकी वह नहीं कतना कि डॉ. रॉबर्ट हॉब्सने दुःखनाक लखरकी वह वरनेके लिए कीरे करण क्यथा है वा नहीं कि वे प्रलाप लिप्युत बरनाम है। अर भातकी कड में होता तो मैं डॉ. रॉबर्ट हॉब्स कय करेते कडे वर कि-कर वा मिच्छर कान्धियेस कर्षाक्यका भाव वर और रिवाज। मैं कडठा, कधी हम लयसुतः कड वरनीयते कडहन क्यथा नहीं कडते भी हमारी बीरते कर्षाक्य वा रही है, फिर भी हमें वर विवत ठी रिक्ता क्यथा कान्धियेस कि भातकी ठाठी किवा-कान्धियेस कडेडा ठी नहीं की वा रही है। मैं कर्षाक्य किमुक ताक-ताक, केकिन सुवसिन और सावधानीसे मुने दुप कर्षाक्यमें करण, हम कडनीयकनड समसति की वरनीयत नहीं हमें वे कडते। हमें वर वरनेमें वरनीयते कडना रखा वा रहा है। वर वर कय ही कान्धियेस और हम वरनीय करेके लिए मकसूर हो कान्धियेस उन हमें कडा कान्धियेस कि भात ठी कने लयक कड रहे हैं। मैं समसता हूँ कि कडनेमें भातको वर लखे कडनेमें वर रकनेका लीका रिवा है। भातको कडनी वर वर कडनेमें-के कडनीयक लयसुत केते रकनी है वर कडनेमें लखे माड्य है। भातकी वर लखे कडने और कडने करेके मकसूर किवा वा रहा है कडने भातका कडने ही कडनी हीकी हीकी। मैं भाजा कडठा हूँ कि कान्धियेस-कर्षाक्य ठीय वरनीय वर वर होय और कान्धियेस और कडने-कडनेका भी लखे लयक रिवा है कडने कडने कडने कडने नहीं कडने वा रिवा है।"

२. केकिन लिप्य कर्षाक्य।

मैटलकका डिप्टमण्डल

कितनाही तो मुझे इस डिप्टमण्डलके लिए यहाँ कोई काम दिनाई नहीं देता। श्री मांगलिया और श्री हानी हबीब कुछ समयके लिए पेरिस चले गये हैं। उनके एक-दो रिश्ते-में वापस आ जानेकी आशा है।

अली इमाम

श्री अली इमाम यहूकि सभी भारतीयोंसे बराबर मिलते-जुलते रहते हैं। उन्होंने आज अपनी रवानगीसे पहले बहुत-से भारतीयोंको चायके लिए निमन्त्रित किया था। इसमें कभी भारतीय आये थे। श्री अली इमाम २ ठाण्डको भारतको रवाना हुंने। उन्होंने बात किया है कि वहाँ पहुँचकर हमारे काममें पूरी सहायता दें। उनको पटनामें सरकारी बकीलका पद दिया गया है।

स्त्रियोंके मताधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली महिलाओंकी पीठा

मताधिकार माननेवाली स्त्रियों—सफेजेट्स—के विरुद्ध मैं सख्तीसे किस मुझ हूँ और सख्तीसे बोल चुका हूँ क्योंकि वे सख्ती-बलका उपयोग कर रही हैं। लेकिन वे जो पीठा विचारती हैं और जो कष्ट सहन करती हैं उसके लिए तो हमें उनके सामने सिर झुकाना ही पड़गा। उनमें से कुछ बहुत सुकुमार स्त्रियाँ हाल ही में गिरफ्तार की गई थी। उन्हें जेलकी सजा भी गई। उन्होंने वहाँ खाना खानेसे बिल्कुल इनकार कर दिया इसलिये उनमें से जो कमजोर थी उनको दो-चार दिन भूखा रखकर छोड़ दिया गया। बाकी सभी जेलमें हैं और खाना खानेसे इनकार कर रही हैं। इस कारण उनको जेलमें मज्जी डालकर बबरखस्ती खाना सिकाया जा रहा है।

इन स्त्रियोंने ऐसा आतंक फैला दिया है कि मन्निमण्डलका कोई भी सदस्य सत्राओंमें धाँसिपूर्वक मान नहीं ले सकता। वे जहाँ भी जाते हैं इन स्त्रियोंकी गुलबंदी उनके पीछे पहुँच जाती है और उनको हारन करती है। जगपर परबतोंकी बर्पा तक करती हैं। इन मुद्वी-आर स्त्रियोंने ऐसा आतंक फैला रखा है मानो कोई बड़ी लड़ाई चल रही हो।

श्री डॉक्टर बॉर्ड मन्निमण्डलके सदस्य हैं। न्यू सैडिंसमें उनकी एक सभा थी। लेकिन मताधिकारका आन्दोलन करनेवाली स्त्रियोंका इतना बर था कि उन्हें बहुत इतना बर करवाना पड़ा। इस सम्बन्धमें टाइम्स ने लिखा है

श्री डॉक्टर बॉर्डकी सभामें लोहेकी मजबूत छड़ें पुष्पिते बुझसवार सिपाही और कोपेकि बल बिबाई देते थे। कुछ ही दिन पहले स्थिति ऐसी थी कि इस तरहकी सभाओंमें लोग बिना टिकट आ सकते थे। धाँसि-रखाके लिए पुष्पिते एक या दो सिपाही होना काफी हो जाता था। किन्तु मताधिकार माननेवाली स्त्रियोंने यह सब स्थिति बदल दी है। अब मन्निमण्डलके किसी सदस्यको धाँसि देना होता

है तब स्थानीय पुलिस अधिकायियोंको सब मुख्य मार्ग बन्द कर देने पड़ते हैं और आमनामके धारकोंमें पुलिसमें बहुत-से पैरक और पुइसवार गिनाही बूझाने पड़ते ह । जो लोग मनामें जाना चाहत हैं, उन्हें सुभाकी अवहृष एक-दो गली पहले ही अपने टिकट दिगाने पड़ते हैं । अन्तमें वे तंग मन्थियोंमें होकर ही समामें पहुँचते हैं । यहाँ जानेवालोंमें अगर किसीपर टाक हो जाये ता उसे अपना नाम-बाम भी बताना पड़ता है । इस सब दृश्यबाममें बहुत पैसा नर्ब होता है ।

ऐसा जान ये सिखाया दिया रही है । ये बड़ी-भर हम सेनेक किश भी नहीं बँडती । उनका बिरोध भाखों सिखाया करती है । वे उन्हें उनके बिरोधका इतना ही उत्तर देती है आप अपना हिन नहीं समझतीं । हम आपसे सिग लड़ेंगी । आप मदद न करें तो हमें टिक नहीं है । इससे अन्नावा उन्होंने सरकारका हम आपकी पिट्टी सिन्नी है कि अगर सरकार योग्य सिखाओंको मनाधिकार दे दे ता जो सिखायें जेकमें है वे उपद्रव किसे बिना अपनी जराएँ भुगतेंगीं । वे आपन सिग मताधिकार भी न माँगेगीं । एमी बीग सिखायें कमी नहीं हारेंगीं । उनका स्वार्थ नहीं है यह तो स्पष्ट है । मारपीट हो पन बाम और लोग सज्जन करें—बाहे जा हो—उमसे वे डरती नहीं है । इस दुनियामें अधिकार प्राण करनेका सुपम मार्ग कहीं भी नहीं है । ये सिखायें स्वयं ही उपद्रव करके अपनी एमी बगडीं लफ़ारोंको बट्टा लगा रही है । उन्हें अन्तमें अपनी करनी पार उगनी होगी । यहाँक लोग घरीर-बलका डर भाठे हैं और घरीर-बलकी पूजा करत है इगकि सिखायें मताधिकार ता स सेगीं किन्तु वे मताधिकार लेकर बड़ी अन्नाय रखयें भी करेंगीं त्रिबुवा के बिरोध कर रही है । इसलिये लोगोंकी हाटन जेकीडी-डीगीं रहपी । यन् व केवल सग्याबहक हाप लुगीं ता गार ईसईकी हाकनको बरत मरती थी । गाब ही उनका प्रभाव दुनिया भर में पड़ा होता । वे घरीर-बलको आजमाती है । इसमें अन्तमें रगाब का ताड़ा होगा । हमें उनसे घरीर-बलका आपस रयागनेकी गिशा समी है और उनकी बहू पहनकी बीगनावा अनुसरण करता है । इसका अन्नावा हमें यह भी दगना है कि अगर आप ऐसे है जा अपनी सिखाओंको भी कमीगीर कमे बिना अधिकार नहीं हैन ।

पीटके बइसे पीट

मैंने बम्बईके नुजराणी नामक पत्रमें दो अत्यन्त सुन्दर बरिवाणें पढ़ीं हैं । इनमें एकमें बरिने भनखान ही मयाप्रद्वी लखीर गीब की है । वह बरिवा इस प्रकार है :

अबतत हीरक नहीं जमना
 लखनक पगना बहू बिरेकर जसेया ।
 हमें जमानेका प्रयत्न करामे
 पढ़े मुझे अन्ना पड़ेया !

मुफारे और हमारे हीरक
 और जीवना मरकब है
 गुप जवतक जवत इतना करत है
 तरकत हमें जवत करत है

१. इन श्लोकोंकी बरिवा लखनक है :

ये हीरो न कां हीरो
 बरिबी कां बरी बरिबी ।
 इबंभ बाज्वा कां
 अन्ना बरिबी जे बरिबी ।

लखनक हीरक
 इतना करत है
 न हीरक हीरक
 न हीरक हीरक

मैं तुम्हारा प्रेमी हो गया
 तबसे तुम मेरे प्रेमपात्र बन गये
 मैंने तुम्हें जो यह नाम दिया है
 वह मेरे साथ ही मिलेगा।
 तुम जान यह मान करते हो
 और जानें ठरेरकर मुकरते हो
 परन्तु तुम्हारे ये ठीर मुझे बायक न करके
 वापस तुम्हारे ऊपर मुड़ बायेंगे।
 यह निश्चय जान लो कि मैं हूँ
 तो तुम हो मैं नहीं हूँ तो तुम भी नहीं हो।

बीज न हो तो वृक्ष कहाँसे होया ?
 तब फल किसपर फलेगा ?
 जबतक प्रजा है तबतक राजा है,
 प्रजा नहीं है तो राजा भी नहीं है।
 वह प्रजाके बिना राज्य क्या जंबक
 और पत्थरपर करेगा ?
 मेरे अस्तित्वमें तुम्हारा अस्तित्व
 खबीर ढंगसे मुका है।
 मुसपर चोट करते हुए चोट
 तुम्हारे ऊपर ही पड़ेगी।

—दिवाला

यह सबकु बहुत विचित्र है। इसको एक भारतीय एक अंग्रेजको सम्बोधन करके सुनाता है। तुम्हारे ये ठीर मुझे बायक न करके वापस तुम्हारे ऊपर मुड़ बायेंगे। इस वाक्यमें सरलाप्रहका ईश्वरीय नियम का जाता है। जबतक विरोधी प्रतिरोध नहीं करता तबतक मारनेवाले व्यक्तिको स्वयं ही चोट छगटी है। ह्वामें बूसा मारें तो हाथ सटका जाकर रह जाता है। इसलिए यदि एक मोरसे बलका प्रयोग किया जाता है तो वह प्रति रोधके अभावमें मरने ही जाता है। इसीलिए सब जगहोंमें बताया गया है कि अगर बुनियामें सभी लोग मरके बन बायें तो बुनियामें जहरीले बीज और हिंस पशु तक न रहें। यह निश्चय विज्ञान-सम्मत कहा जा सकता है। यदि यह नियम ठीक हो तो जिस ह्व तक मैं अपने विरुद्ध किसे जानेवाले शरीर-बलका प्रतिरोध अपने शरीर-बलके नहीं करता उस ह्व तक तो मेरी जीव ही है। जो मुझे मारनेके लिए जाता है, अन्तमें जमीको मरना पड़ेगा। उसी तरह वह "प्रजाके बिना राज्य क्या जंबक और पत्थरपर करेगा ?" इस वाक्यका अर्थ यह है कि यदि प्रजा राजाकी सत्ताको स्वीकार न करे तो राजाकी सत्ता व्यर्थ है। प्रजा सरलाप्रहका आभय लेकर कहे हम तुम्हारी आज्ञा नहीं मानते हमें जेकमें रजो का मारा। हमें इसकी परवाह नहीं। बुनियामें ऐसा राजा न तो कभी हुआ है और न कभी होना जो सारी प्रजाको जेलमें डालकर राज्य करे। यह ठीक है कि [आज्ञा न माननेवाले

हमें बायक क्या ठारा
 कहां लार भी पासुके,
 कसे जे नाम बासु के
 जमारी ठार जे कसे।
 करो जो नाम का ककरा
 करो जो नाम खीरीने,
 ठारा ठीर न राजा -
 हरो दिन ठम कर कसे।
 कसे ही हूँ, हसे नहीं तो—
 नहीं हूँ, ककने विरके

नहीं भी बीज कहां भी हुआ।
 कस बोना कर कसे।
 क्या के लो सुनी राजा,
 मना नहीं तो नहीं राजा,
 प्रजा मिल राज्य हूँ बाक
 कसे ककर कर कसे।
 हमारी हलियां हली
 एही ठारी बल रीने,
 कसे पर बल ककरा बल
 जमी ठम कर कसे।

—दिवाला

नेम] थोड़े होते हैं तो उनको धँसमें रखा जाता है लेकिन उसमें भी राजा ही बाजी हारता है। जेल जानेवाले सत्याग्रहियोंकी आसमाएँ काम करती ही रहती हैं और बन्दमें छुटे लोग भी वैसे ही विरोध करते हैं। उक्त कविताकी सभी पंक्तियाँ विचार करने लायक हैं।

'हमारी फकीरी'

'हमारी फकीरी' शीर्षक इसी कविता भी देने असवारमें पढ़ी। यह भी रिकवर्सन है इसलिए इसको भी नीचे देता हूँ

हमने अपनी [माय] भूमिके लिए
यह फकीरी की है
हमने भारतके लिए यह
प्रेमकी बुनी बछाई है।
हमने मूर्तियोंकी पूजा छोड़ दी है
और पुस्तकें पढ़में डाल दी हैं।
हम सबने अब भारतकी खातिर
बहु कीमती सोबी के की है।
हमने बेबहुतों और बर्माचारियोंकी
सब बायीको मुका दिया है।
हमने मधुर सुर्तोंको त्यागकर
यह कड़वा बहर पिया है।
हमने बेदों पुरानों और प्रभोंको
पाणीमें डाल दिया है

हमें ईश्वरकी परवाह नहीं है
हमें भारतकी परवाह है।
हमारी गस-नसमें बहुत तेज
गसा छा गया है।
बैध तुम उसको पूर करनेके लिए
क्यों आते हो ?
तुमको तो मुझ और सुविषाओंकी
बाबत पकू गयी है
किन्तु हमें बफादार
रहनेकी बुटी जाबत है।
हम मस्तानोंके मस्ताने हैं,
हमारी यह मस्ती इसरी ही तरहकी है
हमारा यह बीबन
भारतके निमित्त है।

—सुब्रह्मण्य

१ मूक गुजराती कविता का प्रथम है
जसे बीबी कपटी या
जमारी भूमिने जमने,
जमानी इसकी बुनी
जमारा सिन्धने जाने।
मूले-मूय बीबी ठीकी
फिरानी उज्ज्वली रोकी;
जसे ठी सिन्धने जाये
बीबी करी इने सोकी।
फिरना मुक्तिना ठी
बकने दूर तो बीबा
बहुतसम तुम लज्जामे
बहुतसम मने बीबा।
फिरानी हेर पुरानीमे
बीबा बनी नहीं उरवा;

सुरानी मातमा जमने
जमने धिरनी उरवा।
जमने ठी फेजजमा
पुरी मन्नी गने जमाने,
गने ठीने दण्ड करवा
बहुतमी धीने जमो।
जमने छ बनी ठीने
मनेउरी बजलानी,
जमारी जे पुरी बजल
बहुतसमी उज्ज्वानी।
जमो बजलना बजलनी
जे और बली ठे;
जमारी या जमारा
सिन्धने जमने व इठी ठे।

—सुब्रह्मण्य

यह कविता उतनी अच्छी तो नहीं है, जितनी पहली कविता है फिर भी इसमें बिचार अच्छा है कवियोंकी रचना भी अच्छी है। इस कविताकी भावना सरवाग्रहीपर भागू होती है। इस भावना—इस फकीरी—के बिना सरवाग्रही होना कठिन है। भारतकी सेवाके लिए मरुछ भूमी रमानी है। अभी हम उस कर्बको चुका सकेने जो हमने भारतमें बन्ध केकर अपने ऊपर बढ़ा लिया है। अब यह पम्मीर जाबाब हमारे हृदयसे निकलेभी कि हमारा जीवन भारतके लिए है, अभी ईश्वर हमारी प्रार्थना सुनेया। यह हृदयको देखनेवाला है। यह सम्बन्धि बोला नहीं था सकता। यह खोल तो सचाईका है। इसमें गटका काम नहीं है।

भारतकी मापाएँ

ऊपरकी सुन्दरती कविताओंको पढ़कर यह खयाल पैदा होता है कि ऐसे विचारोंको ऐसे माधुर्यके साथ अंग्रेजीमें प्रकट करना कठिन है, क्योंकि सरवाग्रह और फकीरी—ये दोनों अंग्रेजोंके खूनमें नहीं है। जो माया इतनी सुन्दर है, उसका उपयोग हम क्यों न करें? अब हम भारतकी सभी मापाओंमें वैश्वमस्तिकी भावना भरेंगे तभी भारतीय जायूत होंगे। श्री लॉयड जॉर्ड्स जिनके विषयमें मैं लिख चुका हूँ वेस्सके एक परगनेमें उत्पन्न हुए हैं। वेस्स इंग्लैंडका एक तालुका है। वहाँ एक अल्पय भापा बोली जाती है। लॉयड जॉर्ड्स यह प्रयत्न कर रहे हैं कि वेस्सके बाकक वेस्सकी मापाको न भूलें। वेस्सके लोगोंको अपनी मापाकी रक्षा करनेकी जितनी आवश्यकता है उसके मुकाबले भारतीयोंको भारतीय मापाओंकी रक्षा करनेकी जितनी ज़रूरी आवश्यकता और यत्न होनी चाहिए?

[सुन्दरतीसे]

हॉडिपन मोसिनिपन, १३-११-१९१९

३१५ पत्र एन० एम० कूपरको

[कन्नड]

बक्सुवर २१ १९१९

प्रिय श्री कूपर,

मया आप की डोककी पुस्तक इस प्रकार भेज देनेकी कृपा करेंगे २४ प्रतिमा डॉक्टर मेहता १४ मुगल स्टीट, रंगून भारतको २५ प्रतिमा मेसर्स मन्टेन एंड कम्पनी पुस्तक बिन्धेता महाश्व भारतको।

२५ प्रतिमा मीनेजर, इन्टरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस बर्न मेटाक दक्षिण आफ्रिका (बाकका पता बॉक्स १८२, बर्न मेटाक) को।

आपका विश्वस्त

श्री एम एम कूपर,

१५४ हार्ड रोड

इल्लफोर्ड

इसेक्स

टाइप की हुई दस्तवी अंग्रेजी प्रति (एस एन ५१४) के।

३१६ पत्र लॉर्ड क्रू के मित्री सचिवको

[सन् १९१२]

अक्तूबर २२, १९१२

महोदय

मीकेका छार बोहानिसबर्मसे जमी-जमी मिला है

अस्वात सहित इन्कीस गिरफ्तार। बम्बी तीन मासके लिए जेल भेजे गये। सीराबजी जोड़ी मेरको निर्वासन-आज्ञा।

मी अस्वात मुसकमान और ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन असोसिएशन)के उपाध्यक्ष है और अब तीसरी बार जेल गये है। मी बम्बी समिल समाजके नेता बम्बी गायक है और अब पाँचवीं का छठी बार जेल गये है। जो तीन वृत्तरे व्यक्ति निर्वासित किये गये है उनमें से एक पारसी और दो हिन्दू है। वे सब सुसंस्कृत और सुविभित ब्रिटिश भारतीय है। उनमें से दोने जूसू-बिरोहके समय बताने गये बोधीबाहक दसमें साबोटकी हुसियतसे काम किया बा।

आपका बारि
मो० क० गांधी

ककोनियस ऑफिस रेकर्ड्स २९१/१४२ और टाइप की हुई बतरी बरेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५१४१) से।

३१७ पत्र: एच० एस० एल० पोसकको

[सन् १९१२]

अक्तूबर २२, १९१२

प्रिय हेनरी

इस हस्ते में बिस्तारके साथ नहीं लिखूंगा। आप विभिन्न पत्रोंकी प्रतिक्रियाँ देखेंगे जिनसे प्रकट हो जाता है कि मुझे अब भी प्रतीक्षा करनी है।

अपने हस्ते भीमकी रिक्का दूसरा भाग और अपरेसन होमा। रिज अब मही समयय काम ही गये है सम्भवतः सबके लिए।

मी डोककी पुस्तक अब भी नहीं मिल सकती। बेचारे कूपर समझ नहीं पा रहे है कि क्या करें। उनके मुँहके जेलमें है इसलिए उनकी पत्नी अपने बारेको पूछ नहीं कर सकी है। मेरा खयाल है कि अपने हस्तेमें पुस्तक लेकर निक जायेगी।

१ सन् १९०२ में; देखिए खण्ड ५, पृष्ठ ३८०-८१।

२. देखिए "सन् १९१२" पृष्ठ ३९।

में बापको टॉस्टोंयकी एक पुस्तिका भेज रहा हूँ। इसे बाप पढ़ें। मेरा मयास है यह बहुत अच्छी है।

श्री अम्बुस काविर कब दक्षिण अफ्रीकाको रवाना हो रहे हैं। इसलिये अब यहाँ केवल श्री बांमनिया और श्री हानी इबाब रह जायेंगे।

मैं इसके साथ श्री फेल्लका पत्र और श्री स्त्रबस्टके नाम लिखा गया एक पत्रक (क्वैट्टेड) भेज रहा हूँ।

टाइप की हुई बसतरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉल (एच एन ५१४४) से।

३१८ शिष्टमण्डलकी यात्रा [-१७]

[अक्टूबर २२, १९१९]

मैं ठा बक गया हूँ। मुझे लगता है कि पाठक भी अनिश्चित सबरोसे बक गये होंगे। अभी डॉर्ड बू के पाससे लिपिबत खबर नहीं मिली है इसलिये पत्र-म्यबहार जारी है। अबतक वे हमें साफ-साफ जबाब नहीं दे रहे तबतक सोचोंको कोई बात न बताना ही ठीक लगता है। डॉर्ड एंस्ट्रिहलने भी अभी समाह ही है।

अभी बोहानिसबसे ठार मिला है कि वहाँ इक्कीस ओगोंरर मुकबना जलाया गया था और उन सबीको तीन-तीन महीनेकी जेल दे दी गई है। इन सोचोंमें श्री अस्ताठ और बम्बी नायबू भी हैं। इसके अलावा श्री सोराबनी भी जोड़ी और श्री मेडको वैलनिकावा दिया गया है। मैं इन सब माइयोंको बचाई देता हूँ और ईस्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि वह इनको पूरा बक दे। मेरी नजरमें यही [बक] सच्चा शिष्टमण्डल है। इसमें [सफ़लताकी] बाबी है। अब मुझे श्री अस्ताठ और श्री सोराबनीकी सेहतका खयाल आता है तब मैं कुछ कवि भी जाता हूँ। फिर भी मैं जानता हूँ कि सेहत खराब हो या अच्छी जेक जाना ही ठीक है इसलिये मैं तुरन्त बीरज बाब भेजा हूँ।

इस समय मेरी यही इच्छा है कि श्री बाउब मुहम्मदको ट्राम्बवाकमें प्रवेश करते हुए देखूँ। तबीयत अच्छी हो या खराब सैनिक उसके लिए ठहर नहीं सकता। मेरा विश्वास है कि तबीयत खराब हो तो भी बेसकी खातिर जेक भोजना हमारा कर्तव्य है। मेरा खयाल है कि श्री बाउब मुहम्मदपर बहुत-से भारतीय स्नेहबस तबीयत अच्छी हो जानेपर ही मीबातमें जानेके लिए बचाव बाक रहे हैं। मेरी उनसे विनती है कि वे ऐसी सलाह न माँयें। जो ऐसी सलाह देते हैं उनसे भी प्रार्थना है कि वे कौमके मलेकी खातिर श्री बाउब मुहम्मदको एक बड़ीके लिए भी न रोकेँ। यहाँ [मवाबिकारके लिए] कड़मेबाधी स्थियाँ बुरी सेहतकी परवाह न करके जेक जाती हैं। इतना ही नहीं वे जेकमें बाकर बिस्कुस जाना नहीं जातीं। अन्दाईमें पकना ठो छिर हबेनीपर रह लेना है। इसलिये सबसे मेरा मन्न निवेदन है कि वे श्री बाउब मुहम्मदको न रोकेँ बल्कि बीसे पहले हवायें

कोय उनको बिबाई देगके सिम्प निकस से बीसे ही बिबाई देनेके सिम्प निकलें और उनको ट्रान्सबाक मेज दें ।

[मुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २ - ११-१९०९

३१९ पत्र मजिस्त्राल गांधीको

[अन्तत

अस्तुवर २२, १९०९]

पि मजिस्त्राल

तुम्हारा पत्र मिला । मैं देखता हूँ कि तुम फिर अपनी पढ़ाईकी चिन्तामें पड़ गये हो । बात यही है न कि जब कोई पूछता है कि तुम किस बजमें हो तो तुम बयाब नहीं दे सकते ? अब कहना बापूके बजमें हूँ ।" तुम्हें पढ़नेका जयाल क्यों आता रहता है ? कमालके जयालसे आता है तो वह ठीक नहीं है, क्योंकि, ईस्वर बाना-पानी तो समीको देता है । तुम मजबूरी करके भी पेट भर सकते हो । फिर हम तो फीनिक्समें या और कहीं ऐसे ही काममें मरता है । तब कमालकी बात ही क्या रही ? अगर तुम्हें देखकी खातिर पढ़ना हो तो बीसा तुम अब भी कर रहे हो । अगर तुम्हें आत्मज्ञान प्राप्त करलके लिए पढ़ना हो तो तुम्हें अच्छा बनना सीखना चाहिए । तुम अच्छे हो यह तो सभी कहते हैं । अब यह गई क्याका काम करनेके जयालसे पढ़नेकी बात । उसके लिए उतावली करनेकी जरूरत नहीं है । फीनिक्समें जो हो सके वह करो । जाने फिर बिचार कर लेंगे । अगर तुम्हें यह विश्वास हो कि मुझे तुम्हारी चिन्ता रहती है तो तुम चिन्ता करना छोड़ देना ।

तुमने डॉ० गानधीको ठीक उत्तर दे दिया ।

क्याया क्या लिखूँ ?

यही चाहता हूँ कि तुम निर्भय होकर रहो और मेरे ऊपर भरोसा रखो ।

मोहनदासके आशीर्वाद

गानधीजीके स्वाक्षरोंमें मूल मुजराती प्रति (सी डब्ल्यू ११) से ।

श्रीबन्धु मुजीबखाने गानधी ।

[अक्टूबर २३ १९९६ पूर्वे]

गैटालका डिप्टमण्डल

श्री अमृत कान्तिर जसी जहानसे रबाना होनेवाले हैं^१ जिससे यह पत्र चायेगा। इसलिये अब केवल श्री बांगडिया यह पत्र है। वे श्री हाजी हबीबके साथ पेरिससे इम्पीड वापस आ गये हैं।

अली इमाम

श्री अली इमामने एबिबारको भारतीय समाज संघ (इंडियन सोशल यूनियन) में वापस दिया था। इसमें उन्होंने कहा कि हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता होनेकी आवश्यकता है। दोनों कौमों में फूट कटई नहीं होनी चाहिए। मुसलमानों और हिन्दुओं दोनोंकी मिट्टी भारतमें ही मिळनी है। उन्हें चाहिए कि वे एक-दूसरेके प्रति छद्मता बर्तें और छानी-माटी बातोंका खयाल न करें। भारतको स्वराज्य मिलना ही चाहिए। वह अंग्रेजों [की सङ्ग्रहण] से ही मिळ सकता है। उनके भाषणका आशय यही था। वे दुपहारको भारतके लिए रबाना हो गये। उनकी विशिष्ट बक्त श्री परीख श्री बगर्बी डॉक्टर अमृत मजीब और श्री मोस आदि जनमय पत्रहू भारतीय मौजूब थे। श्री अली इमामने वाते-वाते भी कहा कि वे दक्षिण आफ्रिकाके मामलेमें पूरा प्रयत्न करेंगे। स्टेशनपर श्री पोसककी बहुत भी मौजूब थीं। श्री अली इमामने श्री पोसकको पूरी सहायता देनेका वादन दिया। उनके साथ श्री अमृत मजीब पेशावरही भी गये हैं।

छोटाछाछ पारेख

श्री छोटाछाछ ईश्वरकाळ पारेख बहुते प्रथम भारतीय बैंकके प्रथम मैनेजर हैं। इस बैंककी स्थापना स्वदेशी आन्दोलनके बाद की गई थी। इसमें ज्यादातर पूँजी भारतीयोंकी ही लगी है। श्री पारेखने बैंककी नींव मजबूत कर दी है। इस खयालसे और स्वदेशी आन्दोलनको उत्तेजन देनेके खयालसे उनकी विशिष्ट समझ एक समारोह किया गया था। श्री पारेख से वर्ष तक यहाँ काम करनेके बाद अब बम्बई आ रहे हैं। समारोहमें पचासके करीब लोग मौजूब थे। सर मंजरजी अय्यर थे। चाय आदिसे सबका उत्कार करनेके बाद सर मंजरजीने भाषण दिया। इसमें उन्होंने बैंककार और श्री पारेखकी समझपारीका तल्केब किया। इसके बाद उनको एक चाँचीका टी-सेट भेंट किया गया। श्री पारेखने आमार मानते हुए कहा कि बैंकका व्यवसाय भारतमें गया नहीं है। उनको अपने अनुभवसे ऐसा लगता है कि वह बैंक प्रविष्यमें उभरि करेगा। इम्पीडमें उनके कार्नेमें कोई कठिनाई नहीं आई।

डॉक्टर अमृत मजीब और श्री पांवीने भी कुछ शब्द कहे।

अमिती रिच

मुझे यह किसत हुए दुःख होता है कि बीमती रिचका रोग अभी तक गया नहीं है। उनको फिर औपरोधन करवाना पड़ेगा। इस बारका औपरोधन कुछ सतर्नाक होगा। लेकिन बीमती रिचमें हिम्मत खूब है। बी रिच तो जबके बोससे पिघ ही मये हैं।

स्त्रियोंके अनाधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली महिलाएँ

महाधिकार-आन्दोलन करनेवाली स्त्रियाँ पूरी वीड़-भूप कर रही हैं। यहाँके अन्धकारोंमें उनकी जर्जा रोम होती है। बी जर्जिजने उन्हें सहाह दी थी कि वे जोयोंपर आक्रमण करना बन्द कर दें। इससे उनका विरोध बढ़ गया है। बी जर्जिजको एक समामें भाषण देना था। स्त्रियोंने उस समाजो प्रंग करनेका प्रयत्न किया। वे खुस्कम-खुस्का कहती हैं कि बगवत किन्हे बिना उन्हें प्याम न मिलेगा। इसलिए उन्होंने आक्रमण जारी रखने मस्त्रियोंकी समारोंको मंग करने और उन्हें बुरी तरहसे भी परेधान करनेका निश्चय किया है। उनका नेतृत्व करने वाली स्त्रियाँ बहुत कष्ट बठा रही हैं। वे सारौरिक कष्टसे तनिक भी नहीं डरतीं। उनकी मुखिया बीमती पैकहस्ट स्त्रियोंमें आन्दोलनकी भावना जागृत करनेके लिए अमेरिका गई हैं।

घोरर-बछपरी व्यर्थता

स्नेनमें घोरर नामका एक प्रख्यात व्यक्ति था। उसका काम जोर्मोंमें सिधा-प्रचार करना था। इसके अलावा वह रोमन कैथॉलिक धर्मनिकम्नियोंका बहुत बड़ा विरोधी था। वह खूब नास्तिक था और उन्मत्तताका शत्रु था। ऐसा मान्य होता है कि कुछ समय पूर्व स्नेनके एक प्राणमें जो विद्रोह हुआ था उसको उसीने मरकापा था और सधमें उसका हाथ था। इससे उसके ऊपर पीवी अबासतमें मुकदमा चलाया गया और उसको मोडीसे उड़ा देनेकी आज्ञा दी गई। इसके बाद उस आजापर गुरत बमछ किया गया। इस कारण यूरोपके बहुतसे घरे उत्तेजित हो मये हैं। उनका कहना है कि घोररपर कानूनके मुदायिक मुकदमा नहीं चलाया गया और उसके घात अन्माय किया गया। विद्रोहमें उसका हाथ था यह सिद्ध नहीं हुआ। बहुतसे स्वार्थोंमें घनाएँ करके स्नेन-सरकारकी निन्दा की गई। पेरिसके कुछ लोग तो इतने उत्तेजित हो मये थे कि कोई माँ फसाद हो बालकी आशंका उत्पन्न हो गई थी। एक सिपाहीकी तो मान भी बची गई।

यहाँ भी एजिबारको एक लुके मीबानमें बहुत बड़ी समा की गई थी। जोर्मोंने स्नेनके हुताबाधपर बाबा भोक्ष दिया था लेकिन पुब्लिशका नियन्त्रण पर्याप्त था इसलिए हुता-बाधकी इमारत बच गई।

कुछ यूरोपीयोंका कहना है कि यूरोपके दूसरे देशोंके जोर्मोंको स्नेनके आन्दरिक मायनोंमें इस तरह बलक न देना चाहिए। उनको ऐसा करनेका हक नहीं है।

मुझे तो इससे यह खयाल होता है कि अब घोररके भाई-बैंड उसके मोडीसे उड़ा दिये जानेका बदला लेना चाहते हैं। इससे आपसी पूजा और बैर बढ़ेगा। इस समय ऐसी अफवाह है कि लान स्नेनके उमाका लून कर देंगे। ऐसा हो तो भी क्या होगा? इससे क्रिस्तीका काम तो होगा नहीं बीसठा। इसमें तो एक नहीं कि घोरर खूब घोरर-बछपर धोर देता था। उसने अपने प्राण पँचामे इसलिए यूरोपके नास्तिकोंकी बिना सोचे-बिचारे उत्तेजित हो मये हैं। इसमें प्यायकी बात तो है ही नहीं। बस "माँ माँ"—मही

कहा जा रहा है। अगर वही परिस्थिति रही तो यूरोपमें किसीका भी जीवन सुरक्षित न रहेगा। बादसाह और बड़े अधिकारी तो भाग भी सुरक्षित नहीं हैं। वे भी तो सरीर-बन्धके पुजारी हैं। इसलिए बिन-मति-बिन यह भी बड़ेनी। कुछ भारतीय भारतमें भी यही साधन अपनाया चाहते हैं। मुझे लगता है कि उन्हें फेरके उदाहरणसे शिक्षा लेनी चाहिए।

[मुजराठीसे]

इंडियन ओपिनियन २ - ११-१९ ९

३२१ छन्दस

[अक्तूबर २४ १९ ९ के बाद]

विजयाशुक्लमी

इन्दीयमें भारतीय जातियाँ अपने-अपने त्यौहार मनायें यह कुछ आश्चर्यकी बात है। ठीक वैसे तो हममें आश्चर्य कुछ नहीं है लेकिन हम ऐसी हीन बचत्वानें पहुँच गये हैं कि हमें इस देशमें अपने त्यौहारोंका मान नहीं रहता। जबतक हमारी यह स्थिति है जबतक यह कहे कहा जा सकता है कि हम एक राष्ट्र होने योग्य हैं, अगर हम इस स्थितिके लिए शासकोंकी निन्दा करे तो वह भी उचित न होगा। हममें तो स्पष्ट हमारा ही बोध है। इसलिए यह अच्छी बात है कि अब इन्दीयमें विभिन्न [भारतीय] जातियाँ अपने-अपने त्यौहार मनाने लगी हैं।

इस विषयमें पहले तो पारसियोंकी ही है। वे पटेटीका त्यौहार कई बरससे मना रहे हैं। मुसलमान भी ईद मनाते हैं। वो बरससे हिन्दू अपने उत्सव मनाने लगे हैं। इन उत्सवोंमें सभी जातियाँ बौद्ध-बहुत हिस्सा लेती हैं। ऐसा ही होता चाहिए। हम सबको एक-दूसरेके त्यौहारोंकी जानकारी रखना जरूरी ही है।

विजयाशुक्लमीके दिन^१ यहाँ हिन्दुओंने एक मोज दिया था। उसमें सब टिकटसे आये थे। वो हिन्दू न थे उन्हे [अतिथि-स्वमें] निमन्त्रित किया गया था। बाकी लोगोंने ४ शिर्षिक प्रति टिकट दिये थे। मोजन बनानेवाले सभी भारतीय चिकित्सा-शास्त्र या कानूनके विद्यार्थी थे और उन्होंने स्वेच्छासे खाना बनाया। उनमें एक भारतीय बहुत प्रतिभाशाली था। उसने बहुत कष्ट सहकर कानूनके अध्ययनका अवसर प्राप्त किया है। परोसनेवाले भी वही बोध थे। वह नहीं कहा जा सकता कि सब व्यवस्था ठीक थी। निश्चित समयसे कुछ बिलम्ब हो गया था। परोसनेवालोंको भी परोसनेका काम ठीक-ठीक नहीं जाता था। फिर भी नया नाम था इस ब्याजसे वही कहा जा सकता है कि सब काम ठीक तरह पूरा हो गया।

इस समारोहमें भी हुसेन दाउदने बेलकी कई कविताएँ गाकर सुनाईं। श्री गंधीकी अध्यक्ष-पद दिया गया था। विजयाशुक्लमी राम रामके मुखकी मार बिल्ली है। श्री गंधीने अपने भाषणमें कहा कि ऐतिहासिक पुस्तके रूपमें रामचन्द्रजीको प्रत्येक भारतीय सम्मान दे सकता है। जिस देशमें भी रामचन्द्र सँभले पुस्त हो गये हैं उस देशपर हिन्दुओं मुसलमानों और पारसियों—सभीको गर्व करना चाहिए। श्री रामचन्द्रजी महान भारतीय हो गये हैं इस

बुटिसे वे प्रत्येक भारतीयके लिए माननीय है। हिन्दुओंके लिए तो वे देवता-मग हैं। अगर, रामचन्द्रजी सीताजी लक्ष्मणजी और भरतजी-सँसे लोग भारतमें फिर पैदा हों तो भारत ही सीमा एक मुनी देश बन जाये। पहले तो यह धार रक्षना चाहिए कि रामचन्द्रजीने देश सेवाके योग्य बननेसे पूर्व १२ वर्ष बनबास भोगा। सीताजीने बहुत दुःख सहन किया और लक्ष्मणजीने इतने साकलक गौर त्यागी और ब्रह्मचर्यका पावन किया। जब भारतीय ऐसा जीवन बितायेंगे तब वे स्वतन्त्र ही माने जायेंगे। इससे भिन्न मार्ग अपनायेंगे भारत मुसीबत होगा।

श्री हान्डी हबीबने भारतके लिए संपन्न-कामना की। श्री बट्टोपाध्यायने उनका समर्थन किया। श्री साबरकरने रामायणकी महागठायण जोषीका मापन किया। उन्होंने सभी भारतीयोंसे इस बातपर विचार करनेका अनुरोध किया कि बिजयापसमीसे पहले नवरत्नके इत (रोने) भाते हैं। इस समारोहमें जनमग उत्तर भारतीय उपस्थित थे।

साक्षात्कीय मुकदमा

स्वामीय 'इली एक्स्प्रेस' पत्रमें जाला साबरकरके विरुद्ध कुछ आरोप छाये गये थे। इसपर साक्षात्कीय पत्रपर मानहानिका बाबा शायर किया। इस मुकदमेमें साक्षात्कीय ५ पीड हुईं और लक्ष विख्यात गया है। इस मामलेमें स्यामाधीयने जो मत व्यक्त किया उससे प्रकट होता है कि जब राजनीतिक मामलोंमें मुख्यमा जसापा जाता है तब बहासवसे स्याम मित्रता अत्यन्त कठिन हो जाता है। स्यामाधीयने तो यही मत व्यक्त किया कि लॉर्ड मोर्रे-वैसे व्यक्तिज जब साक्षात्कीयको निर्वासित किया है तब कुछ तो नारण होना ही। यह कहा जाये तो टीका यह विस्तृत अनुचित थी। इसके अलावा स्यामाधीयके सामने इस सम्बन्धमें कोई प्रमाण भी नहीं थी। फिर श्री स्यामाधीयने यह मत प्रकट किया इसका उद्देश्य तो केवल यही था कि वैसे-ही-सँसे साक्षात्कीयको पत्रोंकी नजरोंमें विरामा जाये और उनके (ज्यूरीके) मनमें क्रम उत्पन्न किया जाये।

[गुजरगदीसे]

इंडियन ओपिनियन २७-११-१९०९

३२२ पत्र लॉर्ड क्रू के निजी सचिवको

[अन्त]

अगस्त २९ १९०९

महोदय

नीचेका पत्र जोहासिद्वर्गसे जारी-जारी मिला है

प्रिटोरियाके भारतीयोंपर १८९९ के नगर-विनियमके खण्ड ३९ के अनुसार नगरमें रहनेके आरोपमें मुकदमा। पहली पैरी एक नवम्बरकी। तोरावजी मेड बापत भाये; छः बहीनेकी लजा।

१. यह लॉर्ड क्रू की कृपया है। अन्त १४ वर्षका था।

सम्पत्ता या वर्षरता ?

इन दिनों यहूकि अलबारोंमें यहूकि साध पचाबोंपर टीका-टिप्पणी निकलती रहती है। उसमें यह बताया जाता है कि प्रायः सभी तीमार साध पचाबोंमें मिलावट की जाती है। बहुत-से साध पचाबोंमें तीरीय प्रतिभयत मिलावट होती है और कभी-कभी यह मिलावट मुक्यागवेह होती है। जेली बारिके बड़े-बड़े कारखानोंमें निपुण रासायनिकोंको रखा जाता है, ताकि [उनके रसायन-कौशलकी बचीभूत] घटिया साध-यथाय भी वेसनेमें अच्छे मास-वैधे ही सों। यह कार्य रत्नायन मिलाकर किया जाता है और इससे पैसोंका फायदा होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि साध-निर्माताओंकी कुट्टि केवल अपने कामपर ही रहती है उस कामको प्राप्त करनेमें लोगोंको क्या हानि पहुँचती है, वे इस बातका ध्यान रखते ही नहीं। ये ही लोग इस प्रकार जम्मायसे कामसे हुए पैसोंमें से कुछ पैसा लोकापयोगी कहसकनेवाले कार्योंमें दे देते हैं और बाह्यवाही मूटते हैं। उन्हीं भसा और नीतिवान माना जाता है। मयजब यह है कि इस सम्पत्तामें बनीति नीति बग बीटी है। जमाबातर तीमार मासमें वर्षों लो काममें सारी ही जाती है। मिलावटके तीरपद, विहायती चाबकोंका साक करने और चमकीला बनानेके लिए वर्षोंका इस्तेमाल किया जाता है। यह बात भयंकर है फिर भी सही है। इससे हिन्दुओं और मुसलमानों दोनोंका बर्न भ्रष्ट होता है। इसमिए ध्याय लो यह है कि पवित्रमकी कोई भी चीज इस्तेमाल न की जाये। तीमार साध लो काममें लाया ही न जाये।

जापानका तीर पीडा

स्वामीय बलबारोंमें यह पार छनी है कि जापानका तीर पुष्य मानिसल इटो' एक कोरिया'की रिवास्वकी बोकीसे मारे मये कोरिया जापानके निकटका देण है। जिस प्रकार अंग्रेज मिस और मारतमें घाघन करने हैं उसी प्रकार जापानी कोरियामें करते हैं। अंग्रेजोंका विजना अधिकार मात या मिसमें है, जापानका उजना ही अधिकार कोरियामें है। जापान कुछ कोरियाकी मलाइके लिए बर्दा नहीं गया है बल्कि उसने इसलिये बर्दा इस्तेमाल किया है कि कोरिया दुर्बल राज माना गया है और बरि उमपर कस या चीनका अधिकार हा लो जापानको हानि पहुँचनी। यह कारियाक लोनोंको कुछ पल्ल नहीं आया। कोरियाके लोय जापानकी और मदेव डेपकी कुट्टिसे डेगते जाये हैं। ईगपर हमसे पहले भी बा बार बार किया गया था। किन्तु जापान विजने एक बार कसका लून बन लिया है कारियाम जम्बी नहीं हटेया। मलाका मर

१ मर ८ १-१९१ के इन्डियन ओपिनियनमें इस मलाकका लम मकाडित हुआ था कि लोकीने के कनुपेर बानी कडरकी निकिस विद्विमी मिस य कडिन लाककी कडिके कारण अर्धे मलक लीं एता ग्या था।

२. मिस विरलुवी डे (१८८१-१९९); मारती एक्सीटिव और एक्तरक एज १८८९ ग केवर १९ १ एक बार वर वजन कमी डुर। के १९०५में इंडियामे रीजिडय कडक मिसुल विने गये और १९९ में मारकी विरी इंडियन क-कड डुर। कड इंडियनके मर के इरकिनी मारत के कडकी इज कड है।

ऐसा ही होता है। उन्नावरानी प्रायः उन्नावरसे ही मरता है जैसे ठीक प्रायः डूबकर मरता है। रिवाजवर बसानेवासेमे साक-साक कहा कि कोरियामें जापानका शासन उचसे चलन मही हुवा इसकिए उसने ईटोको मारा है। कहा जाता है कि जापानने कोरियापर अपनी सत्ता बसानेके लिए करीब १२, कोरियाहर्मोका बच किया है। इतिहास बताता है कि सत्ता बुढ़ी बस्तु है और दूसरे बैसपर हाथ बाककर मुससे बैठना सम्भव नहीं है। हमारे कुछ मन्वुवक मानते हैं कि [कुछ लोगोका] लूग करके अंग्रेजोको भारतसे निकाला जा सकता है। यह सम्भव हो तो भी म्प्यर्ष है। जापानकी कुछ बातें प्रसंघनीय हैं, परन्तु जापानने जो परिचमी प्रजाजोको अपनाया है वह किसी भी प्रकार प्रसंघनीय नहीं माना जायेगा।

तब ईटोको भीर क्यों माना? यह बात अलग है। ईटोमें बचपनसे ही स्वदेशामिपल था। उनका जन्म १८४१ में हुआ था। उन्होंने सबसे होब सँभाजा तनीसे जापानके उत्पातका समाप्त रखा। उसको बमकर्म करनेके लिए उन्होंने बहुत कष्ट सहे। इसके छाप जो मुद्र हुआ उसमें उन्होंने बहुत बीरता दिखाई। इस प्रकार युद्धमें नगितमें शिक्षक-कार्यमें और शासन-मन्वुवकामें—बचत् सनी बातोंमें वे पूर्ण दक्ष थे। इसकिए वे भीर तो माने ही जायेंगे। उन्होंने कोरियाको भीतनेमें अपनी बीरताका दुस्वयोग किया। परन्तु जो लोग परिचमी सम्पदापर मोहित होते हैं वे ऐसा किये बिना रह नहीं सकते। सत्त्वोसि जापानका अस्तित्व रक्षना उसकी रक्षा करना और उसको सतत बनाता हो तो उसके लिए अपने हर्ष-निरिर्षके बैसोको बर्बाद करना अनिवार्य ही है। इससे सार यह निकला कि जो राष्ट्रका सच्चा हिताकाजी है वह तो उसे सत्वावहके रास्तेपर ही से जायेगा।

भारतकी जागृतिपर एक गौरवके विचार

श्री पी के वेस्टरटन महकिये महान् लेखक हैं। वे उबार बिलके अंग्रेज हैं। उनके लिखोको जाबो लोग चाबसे पढ़ते हैं। उनके लिखनेकी लुबी ही ऐसी है। १८ सितम्बरके 'इकस्ट्रेटव कम्पन म्यूज' में उन्होंने भारतकी जागृतिके सम्बन्धमें एक लेख लिखा है। वह पढ़ने और समझने लायक है। मेरा समाल है उन्होंने बहुत उचित बात लिखी है, मैं लेखके आत्म्य अंग्रेजोका सार नीचे देता हूँ।

भारतके लिए स्वराज्यकी बात करनेवाले भारतीय युवक जब यह बात करते हैं तब मुझे ऐसा भासित होता है कि वे जो कहते हैं उसे समझते नहीं हैं। जो स्वराज्य मांगते हैं वे अच्छे लोग हैं यह मैं स्वीकार करता हूँ। बैसमेमसे प्रेरित प्रायः सभी लोग अच्छे होते हैं। हमारे अफसर प्रायः बहागी और अत्याचारी होते हैं इसमें मुझे शक्य नहीं है। ऐसे अफसर प्रायः बहागी और अत्याचारी होते ही हैं परन्तु जब मैं स्वराज्य मांगनेवालेके अन्वुवको और उनके विचारोंको देखता हूँ तब मैं ऊब जाता हूँ और मुझे उनके सम्बन्धमें शक्य होता है। भारतीय स्वराज्य मांगनेवाले जो-कुछ मांगते हैं वह न भारतीय है और न स्वराज्य ही है। वे हर्बर्ट स्पेंसरकी और ऐसी ही बुरी बातें करते हैं। यदि वे हर्बर्ट स्पेंसरके विचारोंसे नहीं बच करते तो भारतीय स्वराज्य किये कहा जाये? बुढ़का उत्पन्न मुझे अधिक प्रिय नहीं है, परन्तु उनकी विचारों स्पेंसरकी विचारोंके समान खोजली नहीं हैं। बुढ़की विचारोंमें कुछ ठके हेतु हैं।

१ (१८२ १९ ३) अंग्रेज अन्वुविक; मिडिलम जाँक सार्वेयोंकी, सिनेटिक फिर्ताकी और मिडिलम जाँक सीलियोंकी लेखक।

यह बात स्पेंसरकी विचारोंमें नहीं है। उनका एक अन्तबार इंडियन सोशियलॉजिस्ट कहता है। क्या भारतीय युवक स्पेंसरकी विचारोंको ग्रहण करके अपने प्राचीन गाँवों और अपने प्रेमपूरित घरोंमें बिल फँसाना चाहते हैं ?

किसीके अपनी पुरानी जीवन-व्यवस्था माँगने और दूसरोंकी खोजी हुई नई वस्तु माननेमें बड़ा अन्तर है। विजित लोगोंके अपने प्राचीन राज्य-व्यवस्था बापम मानने और विजिताजोंकी राज्य-व्यवस्था माननेमें अन्तर है। मान लें कि एक भारतीय कहता है 'मारल सबा पोरोसि और उनके कामसि अरुण रहता तो ठीक होता। हर चीजमें कुछ-न कुछ कमी तो होती ही है सो हमें अपनी ही चीज पसन्द है। हमारी पुरानी राज्य-व्यवस्थामें रजवाड़ोंमें सड़ाइयाँ होतीं परन्तु हमें अस्पतालोंमें मरनेसे सड़कियोंमें मरना अधिक पसन्द है। पुरानी व्यवस्थामें अत्याचार होता है। किन्तु एक ही राजा जिसे मैं शायद ही कमी बेज सक्, इन सँकड़ों राजाओंसि जो मेरे बेटों और मेरी रानीपर अधिकार रखना चाहत है मज्जा है। हमारी व्यवस्थामें सम्भव है महामारी फैलती किन्तु सदा मृत्युके भयसे भूतबत्त बने रहनेकी अपेक्षामें हमें महामारीसे एक ही क्षपाटेमें मर जाना अधिक पसन्द है। हम साग अपने घमंके विरोधको छेकर कमी-कमी आपसमें लड़ते परन्तु बर्माहीन साम्रिकी अपेक्षा बर्मकी रक्षा करते हुए अचान्त मोक्षता हमें ज्यादा पसन्द है। जिन्की छोटी है हर आदमीको फिठी तरह भीना है कहीं-न-कहीं मरना तो है ही। आपकी जीवन-पद्धतिके अनुसार आपके किसानोंको जो शरीर-सुख प्राप्त है उससे हमारी जीवन-पद्धतिका कुछ कम नहीं है। हमारी पद्धति आपको अच्छी न लगे तो हमारी आपसे कोई जबरदस्ती नहीं। आप बज जायें और हमारी चीज हमारे पास रहने दें।

कोई भारतीय ऊपरके अनुसार कहे तो मैं उसे भारतके लिए स्वराज्य माँगनेवाला मानूँगा। ऐसा भारतीय सच्चा भारतीय माना जायेगा। और मुझे खपता है कि उसके ठरकका अग्रज करना कठिन होगा। किन्तु मैंने भारतके लिए स्वराज्यके समर्थकोंके जो मेज पड़े उनमें वे काय नहीं लिखते रहते हैं 'हमें बैसट बॉक्स (मठबान-पेट्टी) दो हमें अधिकार दो हमें जबरकी दीपी दो। प्रयाग मन्त्री बनना हमारा स्वाभाविक अधिकार है। हमें बजट पेश करनेका हक है। यदि मुझे डेली मेस अन्तर्धारका सम्पादनकत्व प्राप्त नहीं होता तो मुझे बेचैनी होती है।' इस आठवकी बातें भारतमें स्वराज्य माँगने वाले करते हैं। जो ऐसा कहत हैं उनको उत्तर देना कठिन नहीं। जिसे बहुत सहानुभूति है वह व्यक्ति भी कह सकता है 'मैंने भारतीय युव बाट तो ठीक कहते हो किन्तु तुम जो चीज माँगते हो वह तो हमने बनाई है। यदि यह चीज उगनी अच्छी है विदानी तुम मानते हो तो इसके सम्बन्धमें तुमने गुना भी तो हमारी ही इजाजत है। यदि ये अधिकार स्वाभाविक है तो हमारे बताये बिना तुम्हें अपने घ अधिकार मुझसे भी नहीं। मठाधिकार ऐसी बड़ी बात हो (जिम्के सम्बन्धमें स्वयं मुझे लम्बेह है) ता हमें जो उनको विज्ञानेबासि है कुछ सला होनी चाहिए। जब भारतीय बड़े बर्बसे मठाधिकार माँगते हैं तब मुझे डकटी बाल मार जाती है। यह तो ऐसी बात हुई जैसे मैं तिब्बतमें जाकर कामास महारना बननेका परवाना माँपूँ। यदि मैं कामास उक्त माँग करूँ तो वह मुझसे कहेगा "हमारी पद्धति खरी या लोटी प्राह्य या मयाह्य—पैसी भी है हमारी है। यदि आपका ज्ञान हमसे उच्च है तो हमारी पद्धतिसे आपको कोई काम नहीं।

यदि हमारी पद्धति अच्छी है ऐसा आप मानते हैं तो याद रखें कि वह हमारी सौजी हुई है हमने उसका अभ्यास किया है और कोई व्यक्ति महात्मा है या नहीं यह हम जान सकते हैं। यदि आपको हमारे विरोध अधिकार चाहिए तो आपको हमारे विरोध नियमोंका पालन करना होगा और हममें जो मानवत्व निपटत किया है उसपर ध्यान उठरना होगा। अभी हम आपको वह चीज दे सकेंगे जिसकी आप माँग कर रहे हैं।

मैं इस प्रकार झिंझता हूँ इससे कोई ऐसा जवाब करेगा कि मैं भारतको स्वराज्य देनेके विरुद्ध हूँ। परन्तु यह पक्ष्य माना जायेगा। मैं तो केवल आसपासका विचार करता हूँ। और जब दो सम्पूर्ण सम्प्रदायोंके बीच संघर्ष उत्पन्न हो तब आसपासका विचार करना आवश्यक है। फिर मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि स्वामाधिक अधिकार होते हैं। कोब अपने विचार प्रकट करें, अपनी पद्धतिके अनुसार आचरण करना चाहे यह स्वामाधिक है। भारतवासियोंको भारतीय बनने और रहनेका अधिकार है। परन्तु हार्डटै स्पोर्ट कोई भारतीय नहीं है। उसकी शिक्षा भारतीय नहीं है। शिक्षा-वास्तव आर्थिकी डॉक-मरी वालें भारतीय नहीं हैं। मैं चाहता हूँ कि अंग्रेजोंमें ऐसा होंग न हो। परन्तु हमारी पहली कठिनाई यह है कि भारतके लिए स्वराज्य मँगानेवाला भारतीय ऐसा नहीं है जो भारतीय जातिके लिए शोभास्पद हो।

श्री वेस्टरटनने ऊपर जो विचार व्यक्त किये हैं, उनको सम्मुख रखकर प्रत्येक भारतीयकी सोचना है कि भारतको क्या मँगाना उचित है। भारतकी जनता किस प्रकार सुखी होगी? हम भारतकी जनताके नामपर अपने स्वार्थकी पूर्ति करना तो नहीं चाहते? भारतकी जनताने किस वस्तुकी सहूलतों बर्षसे बड़े बलसे रक्षा की है, उसको हम एक अन्नमें उखाड़कर फेंक देना तो नहीं चाहते? श्री वेस्टरटनके क्लेशोंको पढ़कर मेरे मनमें तो ये सब विचार उत्पन्न हुए हैं, इसलिये इनको 'इंडियन ओपिनिजन' के पाठकोंके सम्मुख रखता हूँ।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनिजन ८-१-१९१

३२५ पत्र सॉर्ड ऐंस्टहिल्सको

[अंग्रेज]

अक्तूबर २८, १९१९

श्रीमान

मद्रास प्रेसीडेन्सीमें अपह-अपह जो समाएँ हुई हैं, उनके बारेमें सॉर्ड नू के निजी सचिवको एक पत्र भेजा गया है। उसकी एक नकल मैं इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ।

मैं यह भी कहूँ कि बोहानिसबर्से जो टार मिळे हैं उनमें कहा गया है कि ट्रान्सवालमें अनाक्रमक प्रतिरोधियोंके विरुद्ध फिर सरपमें कार्रवाही शुरू कर दी गई है। इनकीस व्यक्तिओंको गिरफ्तारकर तीन-तीन महीनेकी सजायें दे दी गई हैं। इनमें ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन) के कार्यवाहक अध्यक्ष भी हैं। तीन पड़े-किन्हे

भारतीय निर्वासित क्रिये मये थे। इनमें से दो वापस आ गये। ये फिर गिरफ्तार कर सिये मये और छ-छ महीनेके लिए बेक भेज दिये गये।¹

आपका भादि

टाइप की हुई इल्लरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५१४८) से।

३२६ पत्र साठ ईंस्टिहिलको

[सन्तन]

मस्तूर २९ १९ ९

धीयन्

मुझे लिखलिखित तार मिळा है

समितिकी तरफह है कि यदि सम्बन्धका काम समाप्त हो गया हो तो प्रतिनिधिमय आफिका लौट आयें।

यह (अपने जर्मन मित्र कैनेनबीकको जो भी डोकके साथ बहुरिसे सम्बन्धित मामलोंको देखते हैं एत ए टापीकको किसे) मेरे उस पत्रके उत्तरमें है जो नीचे लिखे अनुसार है

वह पत्र बहुस्पतिवारको आपको मिलेगा। मेरा कार्यक्रम ब्रह यह है कि हम इस मासकी ३ टापीकको यहसि चलेगे। इस बातकी पूरी जाया है कि उस समय तक हम काम समाप्त कर लेंगे। यदि ऐसा हो जाये तो बाबमें भारतके बारेमें सबाध उठेगा। रवानगीकी प्रस्तावित टापीकसे दो दिन पहले यह पत्र आपके हाथमें होगा। यदि मैं आपको इसके विपरीत कुछ सूचना न भेजूं तब परिस्थिति और तरफसे बरक न जाये तो इयापूर्वक मुझे तार ब्राघ सुचित करें कि समितिका इरादा क्या है? यादव आपके सप्ताह शुरू मुझे ही पूरी हिरायतके लिए तार भेजना पड़े। परन्तु यदि मैं न भेजूं तो इस पत्रके पानेके बाद आपका भेज देना जरूरी होगा। भारतीय बीरेका बर्ष है दो महीनेका समय। एक महीना बहुरि जाने-आनेके लिए और एक महीना भारतमें बितानेके लिए। ज्यादा समय भी कम संभव है। एक सत्याग्रहीके नाते मुझे लगता है कि भारतकी याया हम यात्राके ही समान स्पर्ष है। परन्तु मैं सरवापदियोंके इन्टिकोनसे सोचते हुए कहता है कि जैसे कुछ महीने सम्बन्धमें समा

१. बीई ईन्टरिक्टो १ मस्तूरको सली वरुच को हुए लिखा था: "मजले सुने को कतर मेवी है कले लिख मे मजला वरुच मजारी है। मैं देखता हूँ कि कलवारमे हमारे मामलेका पूरा बहिष्कार कर रखा है एतकि मजली कतर न मिलती तो मैं मरत और बकिम बाकिमकी बलाकके बारेमें सम्बन्ध ही उठता। इस पर मजलार ईरामी ही उठी है कि इस्लामजान सम्बन्धक प्रतिरिक्तियों के विरुद्ध भी बनेवाली सार्वजनिक बहिष्कारमे बहिष्करी नहीं हुई है।"

२. पत्रकी मूक प्रति सम्बन्ध नहीं है।

दिये गये हैं जैसे ही भारतका काम समाप्त कर देनेके लिए भी दो महीने और छात्रा दिये जायें। उस बखामें पैसेका प्रश्न भी उठेगा और पैसा मेरे पास ठार हाउ भेजना होगा।

इसका कारण चाहे समिति द्वारा विप्लव सत्याग्रही दृष्टिकोण अपनाया जाता हो या पनामाका हो जबका दोनों ही सत्यता है कि परिस्थितिके देखते हुए हमें कमसे-कम वर्तमान समयमें भारत-यानाका विचार छोड़ देना चाहिए। यह मामला भी पौडकके ठारसे और भी मुश्किल हो गया है। उन्होंने आज भारतसे नीचे सिन्धे अनुसार ठार भेजा है

बहुत धीर हैकर आपको जानेकी सलाह देता हूँ।

परन्तु कुछ मिलाकर मुझे यह लगता है कि संघर्ष किसी भी मंजिलपर क्यों न हो हम १३ मदनमरको निश्चित रूपसे दक्षिण आफ्रिकाके लिए रवाना हो जायेंगे और ट्राम्पवाककी सीमापर गिरफ्तारीके लिए सतकारेंगे।

कौडें नू का उत्तर अभीतक नहीं मिला। मैं नहीं जानता कि इसका क्या अर्थ है। परन्तु यदि वह इतनी बेरते आया कि यहाँ उठे हम उसपर धार्मिक रूपसे कार्यवाही न कर सकें तो मैं सोचता हूँ कि उस बखामें उसपर समितिको कार्यवाई करनी चाहिए।^१ श्री रिच इस विचारसे सहमत है।

आपका आदि

टाइप की हुई बस्तुकी अनेकी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५१५) से।

३२७ पत्र एस्मर मॉडको

[अन्वय]

जनवरी २९, १९१९

प्रिय महोदय

मैंने पिछले हफ्ते आपके कृपापूर्ण पत्रके उत्तरमें आपको एक पत्र लिखा था।^१ चूंकि मैं आपसे भेंटकी तारीख नियत की जानेकी प्रतीक्षा उल्लुखतासे कर रहा हूँ इसलिए आपको फिर याद दिलाता हूँ। कहीं मेरा पत्र इधर-उधर तो नहीं चला गया?

मैं आपसे अनाक्रमक प्रतिरोध-सम्बन्धी मामलोंपर बातचीत करना चाहता हूँ। इनमें से एक मामला टॉल्स्टॉयके एक हिन्दूके नाम लिखे पत्र के प्रकाशनसे सम्बन्धित है। मैंट ज्ञात है कि पिछले महीने जब आप इस गये थे तब आपने वह पत्र टॉल्स्टॉयके पढ़ा होगा होगा। मैं इन पत्रकी छापनेके लिए किसे भेजूँ इस सम्बन्धमें आपकी सलाहकी बड़ा करूँगा।

१. यह पत्रकी प्रतिलिपि देते हुए श्री ई. डेविलिने भी यह विचारसे अपनी छापणिका पत्र की।

२. यह पत्र अज्ञान्य नहीं है।

३. देखिए "नव दौलतवादी" पृष्ठ ४४३-४५५।

मैंने यह पत्र प्रकाशने के लिए डेसी म्यूज को दिया था लेकिन श्री गांधिनारने पत्र री है कि यह पत्र ज्यादा लम्बा है और उनके स्तम्भोंमें इसकी मुंसाहय नहीं है।

आपका विपक्षत
मो० क० गांधी

श्री एस्मर मॉड'
स्टेट बीडो
वेम्पकाई।

वांशीजीके स्वाधरोंमें मूज भंवेनी प्रतिष्ठी फोटो-नकक (श्री डब्ल्यू ४४१८) से।

३२८ पत्र एख० एस० एल० पोलकको

[अन्त]
अक्तूबर २९, १९१९

प्रिय हेनरी

श्री डोककी किताबें आखिर ठीकार हो गईं। माण्डके त्रिन अन्तबारोंको पुस्तकें भेंट स्वकय भेजी गई है उनकी सूची साथ है। अगर कुछ ऐसे अन्तबार रह गये हों जिन्हें आपकी पत्रमें भेंटकी प्रतिमां री जानी चाहिए तो उनके लिए प्रतिमां उच पार्सलमें से से से जो भेटेउनको मिलेगा। मुझे अय है कि पार्सल हम डाकसे नहीं जायेगा जिससे यह पत्र जा रहा है बल्कि इससे अगली डाकसे जायेगा। मुझे ये प्रतिमां बड़ी मुश्किलसे मिली है। रिच बीर मैं हम मजीमेपर पहुँचे हैं कि भेंटकी प्रति अन्तबारोंके अलावा किमी मोकसेबकको न री जाये। इमीलिए ऐसी कोई प्रति नहीं भेजी गई है। लेकिन अगर आप समझते हों कि आपकी तरफ किसीको भेंटकी प्रतिमां भेजी जानी चाहिए तो आप डॉ मेहतासे सलाह कर लें और फिर बॉट रें। डॉ मेहताने इस तरह बॉटनके लिए २५ प्रतिमां लीरी है। आप या तो कुछ प्रतिमां डॉ मेहताने से लें या वे अपनी प्रतिमां किम-किम व्यक्तिको देंगे यह उनका पुछनेके बार आप भेटेउनसे से लें ठानि किमी एक व्यक्तिके पास ही प्रतिमां न पहुँच जायें। मेरा खयाल है आपने भेटेउनके साथ कोई एना प्रकल्प कर लिया होया जिससे हमें तुम्हल पैना भिन्न जाये। यहाँ भेंट-स्वरूप ८५ प्रतिमां बीगी गई है। ४४३६ ८१ अन्तबारोंके कोषोंको री गई है। अन्तबारोंमें आ लमानोचनायें निकलें उनमें कन्ट क्या आप श्री डोकको मित्रबानेकी व्यवस्था कर देंगे?

मुझे आपके दो वार मिले हैं — एक मगान प्रेमिदेम्नीकी विविध कथाएँ कहे हैं इतरा आपके रंयून जानेके इरादेके बारेमें। अगल इस बातकमें त्रिन मगन का कथा है का बमानकी बात है। बहूके लीय बहुत व्यावहारिक दिगले हैं। वे का से कथा इति मू करने हैं या विगुन करने ही मती। मुझे खुशी है कि आप डॉ मेहतर का से कथा उनी समय उनसे त्रिन लेंगे। आशा है, आप शनीका कथाएँ कहे लेंगे।

१ टेलीग्राफी बॉटनीके केरु जिनसे कमी मने कहे मगन का से कथा कथाएँ कहे लेंगे। अक्तूबर भंवेनीके दिना।

दिये गये हैं बड़े ही भारतका काम समाप्त कर देनेके लिए भी वो महीने और सत्रा दिये जायें। उस दसमं पैसाका प्रश्न भी उठेगा और पैसा मेरे पास ठार ठार भेजना होगा।

इसका कारण चाहे समिति द्वारा बिन्दु सत्याग्रही बुद्धिकोच अपनाया जाता हो या मनामात्र हो अपनाने बनें हों समझता है कि परिस्थितिके देखते हुए हमें कमसे-कम वर्तमान समयमें भारत-नामका विचार छोड़ देना चाहिए। यह मामला भी पोलकके ठारसे और भी मुश्किल हो गया है। उन्होंने आम भारतसे नीचे लिखे अनुष्ठार ठार भेजा है

बहुत जोर देकर आपको जानेकी सलाह देता हूँ।

परन्तु कुछ मिलाकर मुझे यह लगता है कि संघर्ष किसी भी मंचिसपर क्यों न हो हम १३ मजमूरको निरिच्छत रूपसे बखिज आधिकारके लिए रखाजा हो जायेंगे और द्रान्धबालकी सीमापर गिरफ्तारीके लिए कलकारेये।

कॉर्डर का उत्तर अभीतक नहीं मिला। मैं नहीं जानता कि इसका क्या खर्च है। परन्तु यदि वह इतनी बरसे आया कि यहाँ रहते हम उसपर सार्वजनिक रूपसे कार्यवाही न कर सकें तो मैं सोचता हूँ कि उस दसमं उसपर समितिको कार्यवाही करनी चाहिए। श्री रिज इस विचारसे सहमत हैं।

आपका आदि

टाइप की हुई शपथी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एच एन ५१५) से।

३२७. पत्र एल्मर मॉडको

[छन्दे]

अक्तूबर २९, १९९

प्रिय महोदय

मैंने पिछले हफ्ते आपके कृपापूर्वक पत्रके उत्तरमें आपको एक पत्र लिखा था। क्योंकि मैं आपसे भेंटकी तारीख नियत की जानेकी प्रतीक्षा उत्पन्नताये कर रहा हूँ इसलिए आपको फिर याद दिलाता हूँ। कहीं मेरा पत्र इधर-उधर तो नहीं चला गया?

मैं आपसे अनाक्रमक प्रतिरोध-सम्बन्धी मामलोंपर बातचीत करना चाहता हूँ। इनमें से एक मामला टॉस्टॉयके "एक हिन्दूके नाम लिखे पत्र" के प्रकाशसे सम्बन्धित है। मेरा खयाल है पिछले महीने जब आप रुस गये थे तब आपने यह पत्र टॉस्टॉयके यहाँ भेजा होगा। मैं इस पत्रकी आपनेके लिए किये घेरे, इस सम्बन्धमें आपकी सलाहकी कद्र करूँगा।

१. इस पत्रको प्रसिद्धता देने हुए कॉर्डर दंडविन्ने जी से विचारते कल्पी छन्दे प्रकाश की।

२. यह पत्र अज्ञान नहीं है।

३. देखिए "पत्र दौलतपुरी" पृष्ठ १०३-१०५।

मैंने यह पत्र प्रकाशितके लिए डेसी म्यूज का दिया था लेकिन भी पाठिनरने लखर दी है कि यह पत्र ज्यादा लम्बा है और उनके स्वप्नोंमें इसकी गुंजाइश नहीं है।

आपका विदवस्त
मो० क० गांधी

श्री एस्मर मोहं
प्रेट बीडो
चेम्सफोर्ड।

गांधीजीक स्वागतमें मूक संवेदी प्रतिकी फोटो-नकल (श्री इन्पू ४४१८) से।

३२८ पत्र एच० एस्० एल० बोलकको

[सम्पन्न]

बम्बुवर २९, १९९

प्रिय हैनरी

श्री बोधकी कितारें बाहिर तैयार हो गईं। भारतके त्रिन लखबारोंको पुस्तकें मेंट स्वल्प मेरी गई है उनकी सूची साप है। अगर कुछ ऐसे बलवार रह गये हों जिन्हें आपकी पत्रमें भेंटकी प्रतियां दी जानी चाहिए तो उनके लिए प्रतियां उस पासेकमें से ले लें जो नटेशनको मिलेगा। मुझे भय है कि पार्सल इस बाकसे नहीं जायेगा जिससे यह पत्र जा रहा है बल्कि इससे जगती डाकसे जायेगा। मुझे ये प्रतियां बड़ी मुश्किलसे मिली हैं। रिच और मैं इस महीनेपर पहुँचे हैं कि मेंटकी प्रति लखबारोंके बलवा किसी भीकसेबकको न ही जाये। इसीलिए ऐसी कोई प्रति नहीं मेरी गई है। लेकिन अगर आप समझते हों कि आपकी तरफ किसीका भेंटकी प्रतियां मेरी जानी चाहिए तो आप डॉ मेहतासे मलाह कर लें और फिर बातें हों। डॉ मेहतासे इस तरह बातनेके लिए २५ प्रतियां खरीदी हैं। आप या तो कुछ प्रतियां डॉ मेहतासे ले लें या वे अपनी प्रतियां किम-किम व्यक्तिको देंगे यह उनम पुछनेके बाद आप नटेशनसे ले लें ताकि किसी एक व्यक्तिके पास दो प्रतियां न पहुँच जायें। मेरा सम्मान है आपने नटेशनके साथ कोई ऐसा प्रकरण कर लिया होगा जिससे हमें सुरक्षित बना मिल जाये। वहाँ मेंट-स्वल्प ८५ प्रतियां बाँटी गई हैं। इनमें से ८१ लखबारोंके लोगोंको दी गई हैं। लखबारोंमें जो समालोचनार्थ निकलें उनकी बनगने क्या आप भी बोधको निजवानेकी व्यवस्था कर देंगे?

मुझे आपके दो तार मिले हैं— एक मगम प्रेसिडेन्सीकी विभिन्न मसालोंके बारेमें और दूसरा आपके रंजून जानेके इतारेके बारेमें। मगस इस मामलेमें जिस तरह जागे जाया है वह ब्यालकी बात है। बल्कि लोग बहुत ध्याबहूतिक दिगने हैं। वे वा तो कामको बखी तरह करने हैं या किम्बुल करने ही नहीं। मुझे सुणी है कि जान डॉ मेहताके आते ही सगमय उही समय उनसे मिल लेंगे। आशा है, आप दोनोंको एक-दूसरेसे मिलना सुणी होगी।

१. पेंसिलवणी जॉर्जोंके केतड जिन्ने जन्मी लगी लम्बी लखलखे ऊनरी बरिबधंय रकममेंका कदुन संवेदीसे दिया।

जॉर्ज नू का उत्तर असीतक नहीं माना है, इस पत्रको जिज्ञानेके वक्त (मुम्बारकी छात्र) तक। आपका पिछला पत्र (मेघ मठस्थ उद्योग पत्रसे है जो मामूम होता है आपने बौद्धिक जिज्ञाया है) बड़ा मनोरंजक था। उसे आपके पूरे परिवारने पढ़ किया है। वही मॉड और आपके परिवारके दूसरे लोगोंके बारेमें मिलनेपर बातें होतीं। मॉड मेरे पाससे बची गई है फिर भी करीब-करीब हर रोज मिलती है, और इसी तरह वही भी। कुछ समयसे मेरी हिम्मत बढ़ गई है। मैं शेषहरके वक्त होटलमें बैठनेके कमरेमें ही फर्शका मोबल करता हूँ वैसे हम जोहानिसबर्गमें करते हैं। वही भी बड़ी जा जाती है। हमनेमें दो बार मिली थी हमारे पास जाती है। चिन्मंड भी नहीं होता है और बहुत बार माइराज जे फेस भी। वे अपना हिस्सा खानेकी बिदा करते हैं। रिच भी जा जाती है। इसके आपकी सम्पत्ति आप स्वयं कर सकते हैं। पिछले इतवारकी मैंने शहर-उत्सवकी मोब-समाप्ती सम्पत्ति की थी।^१ इसका इन्वन्त करीब-करीब बर्गवकी कमेटीने ही किया था। लगभग ७ भारतीय आपने जे। मैंने यह प्रस्ताव बिना शिक्षक स्वीकार कर दिया था जिससे वहाँ इकट्ठे होनेवाले लोगोंसे शुभारंभ करनेमें हिंसाकी व्यर्थताके सम्बन्धमें बात कर सकूँ। ऐसा ही मैंने किया। मेरी छठें से भी कि कोई राजनीतिक विचार न जेना आपने। इनका पूरा पाठन किया गया। रामायणकी जिस शिक्षाकी ओर मैं ध्यान दिखाना चाहता था उसको मैंने उनके सामने रखा। बहादुरका उत्सव राबणपर रामकी — बर्गव शरणापर सत्यकी विजयका उत्सव है। मैं यहाँ अपना वक्त कैसे गुजारता हूँ यह बात आप समझ लें इस सम्बन्ध ही मैं आपको यह सब बातें लिख रहा हूँ। मैंने वहाँ भरपूर व्याख्यान-व्याख्यान भारतीयोंसे मिलनेकी कोशिश की है। कार्यक्रम बच भी नहीं है। अगर उन्हें नू उत्तरमें बेबा डेर न कर दें या कोई ऐसा बहुत बुरी काम न जा आपने जिससे हमारे स्कूलकी बरूण हो तो बाधा पड़ता हूँ कि मैं १३ नवम्बरको महुँसे रवाना हो जाऊँगा। भारत जानेका इरादा तो बिल्कुल छोड़ ही दिया है। सतिवारकी मैं इंडियन सोषल यूनिटन^२ की समामें भाग लूँगा। संसदकारको भारतीय विचारविमोकी एक सूची समा है। तीसरी समा कैम्ब्रिजमें इंडियन मजलिसकी ओरसे इस इतवारके बाबबाके इतवारकी होगी। सतिवारकी यीमटी रिचका बोपरेखन होना जो कुछ अंतरात्मा है। कांग्रेसकी उत्प्रेष भेजनेकी माँग कुछ कठिन है। फिर भी मैं कुछ मिलनेकी कोशिश करूँगा। आपको इसके साथ ध्यान देरे पत्रकी^३ एक प्रतिकृति मिलेगी।

मैं बेलता हूँ कि आप महात्ममें खासा अपना इकट्ठा कर रहे हैं। इकट्ठा किया हुआ अपना कौशल विस्तारित किया जाता है यह जानना जरूरी है। यह क्या कितने हाथमें पड़ता है? कौशल संघर्ष जम्मा जम्मा इसलिए हमें निश्चय ही जेक जानेवाले कोमंकि परिवारोंका भरण-पोषण करना होगा। यह प्रश्न उठ ही चुका है इसलिए इस पत्रकी या इसके एक हिस्सेको इन परिवारोंके भरण-पोषणके लिए भेजा जा सकता हो तो यह बड़े उत्प्रेषकी

१. आज पत्रका है वह पत्र दूसरे दिन, बर्गव सुम्बार, मधुकर २. को भेजा गया।

२. इंडियन "सम्बन्ध" पृष्ठ १९८-१९९।

३. इंडियन "सम्बन्ध" नू रिपोर्ट पत्रमें "पृष्ठ ५१५ और पत्र ५५०-५५३-५५४-५५५-५५६-५५७-५५८-५५९।

४. इंडियन "सम्बन्ध" भारतीयोंकी समामें "पृष्ठ ५१९।

५. इस सम्बन्धमें लिखे गये उत्प्रेषकी रिपोर्ट सम्बन्ध में है।

६. इंडियन "सम्बन्ध" पत्र की ९ नोवम्बरको पृष्ठ ५१०-५११।

बस होगी। एक सम्बन्ध बूझते भी इसी तरहका जन्म प्राप्त करना ।
मुझे आशा है कि आपको वहाँ कठिनाई न होगी। जो सोच निर्बाधित किसे आते हैं उनकी
बेहताकके किण्व क्या कुछ सोचोंको आस ठौरसे नियुक्त कर दिया गया है? अगर नियुक्त
किया गया है तो क्या आपको उनमें से किन्हींके नाम मान्य है? ये सब बातें प्रकाशित
की जानी चाहिए। जिन्हें सहायता मिलती है उनके मन भी भिन्नमाने जा सकते हैं।

मैं इस वक्त इतना ही कह सकता हूँ कि अपना दीर्घ काल करनेके बाद आपका
वक्तव्य संपर्कका अन्त नहीं होता वहाँ रहना पड़ेगा। अगर बात ऐसी ही तो मेरे अभावसे
आपके लिए हिन्दी या गुजराती सीखना बहुत जरूरी है। बूँकि आप समाचार कमेटीका काम
करते इसलिए आपके लिए कुछ वक्त निकालना अवश्य मुदिकर नहीं होगा।

आपका बहु तार मिला जिसमें आपने मुझे भारत जानेकी ओद्यार ससाह दी है।
मुझे ओद्यानिसबमेंसे एक और तार मिला है, जिसमें कहा गया है कि यहाँ काम काल हो
गया हो तो हम ट्रान्सवाल्ड लौट जायें। इसलिए मेरा समास है कि मेरा ट्रान्सवाल्ड जाना
बहुत ही जरूरी है। मुझे अच्यता है कि मैं यहाँ बहुत क्याथा ठहर गया हूँ। इसलिए आप
इस स्थितिमें ज्यादासे-ज्यादा ओद्युक्त कर सकें वह करें। मैं जानता हूँ कि हमारे भारत
जानेमें स्पष्ट काम है। लेकिन हमारा इस वक्त भारत न जाना भी अवश्य उतना ही
अच्छा है।

टाइप की हुई वस्तु अगेनी प्रति (एस एन० ५१५१) पृ०

३२९ शिष्टमण्डलकी यात्रा [-१८]

[अक्टूबर २९, १९१९]

शिष्टमण्डलके विषयमें टिप्पणी

ममी तक जाँचें नू की ओरसे अन्तिम निर्बंधकी विट्टी नहीं आई। इस बीच ओद्यानिसबमेंसे
तार मिला है कि यदि इंग्लैंडमें काम काल हो गया हो तो शिष्टमण्डल [बतिस आशिका]
बापस जा जायें। साथ ही मत्रासे भी तार मिला है कि हमारा भारत जाना निवृत्त
आवश्यक है। सर मंचरजीकी राय भी पूरी तरह हमारे भारत जानेके पक्षमें है। फिर भी
मुझे विश्वास हो गया है कि भारत न जाना ही ठीक होगा। इसलिए हमने वर्तमान योजनाके
अनुसार बहसि रवानगीकी तारीख १३ नवम्बर मुकरर की है। हमने यह सोचा है कि यदि
जाँचें नू का अन्तिम उत्तर न जायें तो भी हम सार्वजनिक रूपमें कोई काम किये बिना चले
पड़ें। सार्वजनिक काममें तो केवल ये तीन ही बातें हैं अपना [अर्थात् अपने मामलका] इतिहास
प्रकाशित करना रेबर्ट मायरकी मार्फत सब पाश्चिमीकी घमा बुलाना और यदि सम्भव हा
तो लोकमजालके सहायकी घामने मामलके उच्च रचना। कस्ता है, इनमें से रेबर्ट मायरकी
मार्फत जो काम किया जाता है उसे तो हम अभी कर लेंगे। इतिहास प्रकाशित करना

१. मूमें का एक टिकि कटी हुई है।

२. यह तार २९ अक्टूबरकी मिला था; देखिए "दस जॉर्ड रॉन्डिन्को" पृष्ठ ५०५-०६।

ठीक कसे तो हमारे जानेके बाद प्रकाशित किया जाने और सम्भव हो तो कॉमन्स समझे सबस्योकी बैठक भी ठमी की जस्ये।

भारतीयोंको पूरी खबर देना आवश्यक है इस लयाकसे भारतीयोंकी एक सभा सनिवारको होनेवाकी है। इसमें मुझे भाषण देना है। इसरी सभा मंगलवारको होगी। इसमें भारतीयोंको क्या करना चाहिए, यह बताना है। तीसरी सभा केम्ब्रिजमें होगी। फिलहाल तो यही कार्यक्रम है।

किन्तु यह तो निश्चित समझ देना चाहिए कि जबतक हम पूरा बस नहीं बनयेंगे तबतक कुछ न होमा। मुझे बार-बार यह सिखनेकी जरूरत मालूम होती है कि इसके सिवा कोई दूसरा बस नहीं है। इसीलिए मुझे खुशी हुई है कि श्री चोरावजी और श्री मेड फ़िर लौट गये। मैं उनको बधाई देता हूँ। सब लोगोंको इन बीर भारतीयोंका अनुकरण करना चाहिए। इसरी छद्माईकी नींव भी चोरावजीने डाली थी। सक्ता है उसका अन्त भी उन्हीके हाथों होमा। मबियमें जो भी हो किन्तु भारतीयोंको समझ देना चाहिए कि जहाँ बुन्मी लोग राज्य करते हैं वहाँ अच्छे लोगोंका घर बेसमें ही होना चाहिए।

सत्याग्रहियोंकी सहायता

एक सज्जनने जो अपना परिचय एक भारतीय सेवक के नामसे देना चाहते हैं, यह निश्चय किया है कि जबतक यह छद्माई जारी रहेगी तबतक वे गरीबोंकी सहायताके लिए प्रति मास ५ रुपये देते रहेंगे। उन्होंने ३ पीठका पहका भेज दे भी दिया है। अगर इसरी भारतीय भी इसी तरह सहायता करें तो अच्छा होमा। मेरा लयाक है, वे जसस ही सहायता करेंगे।

[मूबरातीसे]

इंडियन ओपिनियन २७-११-१९१९

३३० पत्र बी० ए० मटेसनको'

[सम्बत

अक्तूबर २९, १९१९के बाद]

प्रिय महोदय

आपने मुझे पार किया है कि कासेसका जो मबियेघान होनेवाला है उसके लिए मैं सम्वेस भेजूं। मैं कोई सम्वेस भेजनेके योग्य भी हूँ यह मैं नहीं जानता। किन्तु आपके पारके जतरमें कुछ कर्तुं यह सामान्य सौजन्यकी भाव है। फिलहाल मेरे विभापमें उस संघर्षके अतिरिक्त जो दाम्भबाकमें चल रहा है कोई दूसरी बात नहीं आ सकती। इस बसत वही काम मेरे सामने है। चूंकि यह संघर्ष भारतके सम्मानकी रक्षाके लिए आरम्भ किया गया है इसलिये मुझे आशा है कि मेरे सब सेजवासी सहेसकी दृष्टिसे इसे राष्ट्रीय

१. वर इंडियन रिपब्लिक रिजर्वके अंशमें बना वा। जती सम्व. गांधीजीने सलीक एक मकस लख दी इंडियन ओपिनियनकी भी भेज दी थी जो, जसने "भारतीय राष्ट्रीय मबियेघान सम्वेस" शीर्षकसे जती थी इंडियन "पत्र: पत्र पत्र मकस सेजवासी" पृष्ठ ५००।

संघर्ष माने। मुझे पुस्तकमनुस्का यह कहनेमें भी कोई झिझक नहीं हुई है कि यह संघर्ष हम मुझका सबसे बड़ा आत्मालम्ब है, क्योंकि इसका उद्देश्य भी सृष्ट है और इसके लक्ष्यके भी। हो सकता है मर्यादा यह जवाब गलत हो। हमारे जो बेमनाही द्वात्मवाक्यमें रहते हैं वे हमस्मिन् सङ्ग रहे हैं कि सुसंस्कृत भांगनीयोको द्वात्मवाक्यमें जानेका बीजा ही अधिकार प्राप्त है। जैसा यूरोपीयोको प्राप्त है। इस संघर्षमें जो लोग सङ्ग रहे हैं उन्हें अपना कोई निजी स्वार्थ सिद्ध नहीं करना है। जिस अधिकारका यहाँ उल्लेख है (और जो उपनिषेदीय कानूनमें पहली बार उल्लेख किया गया है) उसके बहाक किसे जानेक बाद किसीको कोई भौतिक काम भी नहीं होना है। भारतक जो उपनू द्वात्मवाक्यमें हैं वे यह दिखा रहे हैं कि वे एक विमुक्त आदर्शके लिए सङ्ग उठते हैं। उल्लेख पानेके लिए उन्होंने जिस सामग्रीको अपनाया है वे भी उल्लेख ही सृष्ट है। इन भारतीयोंने हर तरहकी हिंसा सर्वथा त्याग दी है। उनका विश्वास है कि कष्ट-सहन स्वामी सुधार प्राप्त करनेका एकमात्र उपाय और प्रभावकारी माध्यम है। वे बुनाया सामग्री प्रेमम करने और उसे प्रमत्त ही जीवनका प्रयत्न करते हैं। वे पराक्रम या शरीर-बलका मुकाबला आत्मबलक करते हैं। वे मानते हैं कि लौकिक सत्ता या विधानके प्रति बंधनशरीर ईश्वर और उनके विधानके प्रति बंधनशरीरकी तुलनामें गौण है। यह सम्भव है कि उनकी अन्तर्दृष्टि ईश्वरके विधानकी व्याख्या करनेमें भूल कर जाये। इसीलिए वे जिन मानवीय कानूनोंको ईश्वरके नित्य कानूनोंके विरुद्ध पाते हैं उनका मुकाबला करते हैं या उनकी अक्षय्यता करते हैं। इसके लिए उन मानवीय कानूनोंमें जो सजाए बनाई गई हैं उन्हें वे चुपचाप सहन करते हैं। साथ ही उनका विश्वास यह है कि उनकी स्थिति समय पाकर मनुष्यकी सहज सत्त्ववृत्तिये सुधार जायेगी। अगर वे पसन्दी कर रहे हैं तो वे ही तकलीफ पाते हैं और प्रतिष्ठित व्यवस्था स्योंकी-स्यों रह जाती है। इन काममें २५ से ज्यादा भारतीय ऐसी कैदकी सजा मुक्त चुके हैं जिसमें सर्वकर कष्ट होने पड़ते हैं। यह सत्ता यहाँकी इन बन्दकी भारतीय आजादीकी कटीब जाती या यहाँकी सम्भावित भारतीय आजादीके पाँचवें भागके बराबर है। इनमें से कुछ लोग एकामिक बार जेल गये हैं, किन्तु ही परिवार लुप्त हो गये हैं। कुछ व्यापारियोंने पीसपका त्याग करनेकी अपेक्षा कष्ट सहना स्वीकार किया है। अधिप आधिकारमें संयोगसे हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल हो गई है। हम यहाँ अनुभव करते हैं कि दोनों एक-दूसरेके बिना नहीं रह सकते। यहाँ मुख्यमान पारसी और हिन्दू — मुबंकि सयापने कहीं तो — बंधासी मराठी पंजाबी बंगाल और बम्बई — सब कन्वेनेन्सिया मिताकर सङ्गे हैं।

मे यह कहना चाहता है कि यह संघर्ष ऐसा है जिसकी ओर कश्चित् अगर कुछ ध्यान न दे लेंगे तो उसे ज्यादासे-ज्यादा ध्यान हो देता ही चाहिए। अगर अविज्ञता न सक्ती जाये तो मे यह बताना चाहूँगा कि हममें और बहिष्कार-कार्यक्रमके दूर बिषयमें क्या अन्तर है। बहिष्कार-कार्यक्रमके दूर बिषयोंमें कानूनों या नीतिका या बहिष्कार किया जाता है उसमें कोई भौतिक हानि उदात्तकी बात नहीं जाती। बहिष्कार नाम किसी कामकेमें बिचार प्रकट करने तक ही सीमित है उसे सर्वथा बल पहुँचाया जाता नहीं। द्वात्मवाक्यके भावकेमें या गलत कानून और नीति है इन दोनों अक्षय्य करने हैं इनके अन्तर्दृष्टि आजादी और मोक्ष-अपसङ्ग नीतिक और शारीरिक हानि उगने हैं। इन जाने बिचारके अनुसार कार्रवाई करने हैं। जो बिचार यहाँ दिया गया है अगर वह ठीक है तो मुझे यह कहनी

अनुमति है कि मैंने द्वांसबाइके मामलोंकी कार्यक्रममें सबसे पहली बगह देनेकी माँग करके अनुचित नहीं किया है। क्या मैं यह भी कह सकता हूँ कि ऊपर जिस बलात्कर्मक प्रतिरोधकी व्याख्या की गई है उसपर विचार करने और ध्यान बमानेसे घायब हूँ बलात्कर्मक प्रतिरोधक रूपमें उन बहुत-सी बुराईयोंकी अपूर्ण औपचि मिल जाये जिनसे हम भारतके सोय पीड़ित हैं। यह सावधानीसे विचार करनेके योग्य है। मुझे विवबाध है कि यह हमारे लोगोंकी और हमारे देशकी प्रकृतिके अनुकूल एकमात्र धस्त्र सिद्ध होया। हमारा देश प्राचीनतम बर्गोंकी जग्म-भूमि है। उसे सामुद्रिक सम्पत्तासे बहुत कम सीखना है क्योंकि उसका आचार बध्म्यतम सिद्ध है, जो मनुष्यके समस्त दिव्य गुणोंके विपरीत है। यह सम्पत्ता भारतविनाशके पक्षपर बलि मूरकर बौड़ रही है।

[अध्यायीसे]

इंडियन ओपिनियन २७-११-१९ ९

३३१ पत्र लॉर्ड ऐम्बहिलको^१

[अन्वय

अक्टूबर १ १९ ९]

लॉर्ड महोदय

पिछले कुछ दिनोंसे मेरी यह इच्छा रही है कि यहाँके बोर्डे विनोके प्रभावमें मैंने अपने देशके लोपोंके राष्ट्रीय आन्दोलनका जो निरीक्षण किया है, उसके परिणामोंको आपके सामने रखूँ।

अब आप इजाजत दें तो मैं कहना चाहता हूँ कि मैं आपकी निष्पक्षता सबाई और इमानदारीसे विनका आक्षेप हमारे बड़े-बड़े लोकसेवकोंमें इतना ब्याप बिखाई देता है बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैंने यह भी देखा है कि आप अपनी साम्राज्य-वाचनके कारण उन मामलोंको देखनेसे इनकार नहीं करते विनके पक्षमें स्पष्ट न्याय होता है। साथ ही आपको भारतसे सच्चा और बहुत ब्याबा प्यार है। इसके अलावा मैं उन भारतीय मामलोंसे सम्बन्धित विनका द्वांसबाइके संवर्धपर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ सकता है, अपनी पतिविधिपतिके बारेमें आपसे कुछ भी छुपाना नहीं चाहता। इन सब बातोंके कारण मैंने

१ कभी मद्रासमें बर्गोंके नाम नहीं है, कि भी किन्हीं का लक्ष है कि उन लॉर्ड ऐम्बहिलकी सिखा गया था। उसकी शुरुआत से ही लक्षमें २ अन्वयकी चौथी-तीसरी सिखा था कभी मैं अभी कुछ भी खरना नहीं चाहता, तथापि विचारोंकी बलिबलिसे कि मैं आपको सम्बोधित करता हूँ और कभी लक्ष और भारतकी लक्षना करता हूँ किन्तु इस खरना करता है कि उनके लक्ष ही लक्ष मेरी लक्षमें नहीं बने और उनके लक्षोंके लक्षमें भी मैं लिखता हूँ। मैं लक्षसे लक्ष किन्तु लक्ष (किन्तु लक्ष लक्षमें हूँ), जैसे ही लक्ष लक्ष, लक्षकी लक्ष कि लक्ष

२. लक्षमें लक्ष लक्ष नहीं है; लक्ष लक्ष लक्ष

को-कुछ देखा है उसे बताना यद्यपि आवश्यक नहीं है फिर भी उसे बतानेकी मैं बूट्टा कर रहा हूँ।

मैंने यहाँ सब विचारोंके भारतीयोंसे मिलनेका साध जवाब रखा है। चूँकि मैं सभी तरहकी हिंसाके विरुद्ध हूँ इसलिए मैंने उन लोगोंसे साध तो रखे मिलनेकी कोशिश की है जो परमेश्वरी कहे पाठे हैं लेकिन जिन्हें हिंसाकापी हलके लीग कहना ब्याया ठीक होगा। ऐसा मैंने इसलिए किया है कि अगर सम्भव हो तो उन्हें यह विश्वास दिला सधूँ कि उनके तरीके गलत हैं। मैंने यह देखा है कि इस दलके कुछ सदस्य सच्चे काम हैं जिनमें अने दलकी शैथिल्यता है, भापी शैथिल्यता है, और उष्ण कोटिका आत्मरथाय है। यहाँके भारतीय मुक्कोंपर उलका प्रभाव है, इस बारेमें कोई सन्देह नहीं। वे भी इन मुक्कोंको अपने विश्वासोंसे प्रभावित करनेमें कोई कसर नहीं रखते। इनमें से एक सम्जन मेरे पास आये व। वे मुझे यह विश्वास दिसाना चाहते थे कि मेरा तरीका गलत है और उनका जवाबके अनुसार हम जिन अन्वामोसे शीकृत हैं, उन्हें सिर्फ धूरी या सुनी बनना योग्य तरहकी हिंसाका प्रभाव करके ही दूर करना सम्भव है।

इसमें कोई शक नहीं कि राष्ट्रीय भावना प्राप्य हो चुकी है। लेकिन ब्यासातर कोर्मों वह अपरिमात्रितरूपमें मौजूब है। और उनमें तरनुबप आत्मरथामकी भावना नहीं है। मुझे हर बयह यह दिखाने दिया है कि लोग शिथिल राजसे कपीर हो उठे हैं। कुछ लोगोंका पूरी जातिसे बड़ी तीव्र बुना है। अंग्रेज राजनयिकोंके प्रति अविश्वास तो लगभग सभीके मनमें स्पष्ट रूपसे ब्याप्त है। माना यह जाता है कि वे निस्वार्थ भावसे कुछ करते ही नहीं। जो हिंसाके विरुद्ध हैं वे भी सिर्फ बसके विचारसे वे उसे नापसन्द नहीं करते। लेकिन वे इतने कामर या स्वार्थी हैं कि अपनी राजका कुमेजाम संभूर नहीं कर सकते। कुछ लोगोंका पचास है कि सभी हिंसाका समय नहीं आया है। मुझे लगभग ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला जिसका यह विश्वास हो कि भारत हिंसाके बिना कभी स्वतन्त्र हो सकता है।

मेरे जवाबसे दमन बेकार होगा। साय ही मुझे लगता है कि अंग्रेज साधक समयपर पर्याप्त अधिकार न देंगे। ऐसा कथना है कि ब्यावसायिक स्वार्थने शिथिल लोगोंको ब्याया बना रपा है। इसमें दाय आरमियोंका नहीं पदतिका है। इस पदतिका प्रतीक वर्तमान सम्पत्ता है जिसका यहाँके और भारतके लोगोंपर बिनायकापी प्रभाव हुआ है। भारतका प्रोपण विदेशी पूंजी-शक्तिसे स्वार्थके लिए किया जाता है, और केवल इसी कारण भारत अतिरिक्त कष्ट पाता है। मरी नम सम्पत्तिमें इसका सच्चा उपाय यह है कि ईश्वरीक जाबुनिक सम्पत्ताका वा स्वार्थ और शीथिल्यताकी भावनासे मरी होनेकी बसहसे सर्वस्वहीन और निरर्थक है और जो ईश्वरपदके विरुद्ध है परित्याग कर है। लेकिन यह एक दुरागा है। जब यह भी सम्भव हो सकता है कि भारतके शिथिल साधक कपसे-कम भारतीयोंकी तरह ब्यावहार करें और उनपर जाबुनिक सम्पत्ताको तो न छोड़ें। रमें मयोंने और उनके काय बड़ी हुई आरामयत्नकी आरजे बुरोनीयोंकी भाति ही भारतीयोंके लिए भी राजनाके नखे बिल्ल हैं। इसलिए साधकोंसे मेरा कोई सपका नहीं है। हाँ उनके तरीकोंसे शैर पूरा शिथिल है। मैं पहले मानता था कि कोई शैकितने अपनी शिथिल-सम्पत्ती रिपोर्न भिगकर भारतका शिथिल-नापन किया है लेकिन अब नहीं मानता। मेरा पचास यह भी है कि शिथिलने अपने कपीरत्व देखाको जो पाम्त्रि-मुष्पत्त्या ही है उनका बहुत प्रयास

छिबोरा पीटा जाता है। मेरे ब्यासस कसकरता और बन्दई-बैसे सहरोका बनना हुसकी यात है बभार्द बेनेकी नहीं। भारतको धाम प्रभाके आसिक उग्मूसगटे हाति हुई है। उनकी तरह मुझमें भी राष्ट्रीय भावना है। इसलिये गर्मबस्मियों वा गर्मबस्मियोंके तरीकोसे मेरा पूरा मतभेद है। इसका कारण यह है कि दोनों ही दस आसिरकार हिंसामें विरवाध करते हैं। हिंसामक तरीकोंका अर्थ है आधुनिक सम्बन्धको और इस तरह उसी विनासकारी स्वर्णको अंगीकार करना जिसे हम यहाँ देखते हैं। इसका अर्थ है अस्तमें सच्ची नैतिकताका ध्वंस। कौन साधन करता है, इस बातमें मेरी विम्वत्नी नहीं है। मैं तो चाहूँगा कि धासक मेरी इच्छाके अनुसार साधन करे अन्यथा मैं उन्हें अपने ऊपर साधन करनेमें सहामता न दूँगा। मैं उनके विरुद्ध अनाक्रमक प्रतिरोध करूँगा। अनाक्रमक प्रतिरोध शरीर-बलके विरुद्ध आरम्भक प्रयोग है— दूसरे शब्दोंमें गुनापर विजय प्राप्त करनेवाला प्रेम का।

मैं नहीं जानता कि मैं अपनी बात कहतीक समझा सका हूँ और मैं वह भी नहीं जानता कि मैं अपने इस विवेचनसे आपको कहांतक सहमत कर सका हूँ। परन्तु मैंने ऊपर बताये गये तरीकेसे अपने देशके लोयोंके सामने सारा मामला रखा है। मैंने आपको यह पत्र जो उद्देश्यसे लिखा है। पहला उद्देश्य आपको यह बताना है कि जब-कभी समय मिलेगा मैं राष्ट्रीय पुनरुत्थानमें अपना कितना योगदान करना चाहूँगा और दूसरा उद्देश्य यह है कि मैं जब-कभी बड़ा काम करूँ तब या तो उसमें आपका सहयोग ले सकूँ या आपसे उसकी आलोचनाका अनुरोध कर सकूँ।

मैंने आपको जो आनकारी दी है वह बिल्कुल गोपनीय है उसका और कोई ऐसा प्रमाण नहीं किया जाये जिसे मेरे देशके लोयोंके हितकी हाति हो। मुझे समता है कि जब तक सत्य भली भाँति मान्य नहीं हो जाता तबतक कोई उपयोगी उद्देश्य सिद्ध न होना।

अगर आप कुछ और जानना चाहते हैं तो आप जो भी प्रश्न पूछना चाहें मैं उसका उत्तर खुशीसे दूँगा। श्री रिचको इस पत्रकी पूरी आनकारी है। अगर बातचीत आवश्यक समझे तो मैं तैयार हूँ।

अस्तमें आशा है मैंने आपके सौजन्यका अनुचित और अवाञ्छनीय काम नहीं उठया है और आपका ध्यान इस ओर अकारण ही आकषित करनेकी बृष्टता नहीं की है।

1

आपका आदि

गांधीजीके स्वासर्थमें मुझ अंग्रेजी मसजिदेकी फोटो लकड़(एच एन ५१५२)से।

१३२ भाषण यू रिफॉर्म बिलमें^१

[अन्वय]

अक्तूबर ३ १९०९]

(उन्होंने कहा) यह लड़ाई अन्तरराष्ट्रवादी स्वतन्त्रता विचारोंकी स्वतन्त्रता और कर्मकी स्वतन्त्रताके लिये लड़ी जा रही है, मत देनेके वाणिज्यिक अधिकारके लिये नहीं। ब्रिटिश भारतीय सबसे पहले १८८६ में ड्रान्तवाक भाये वे और तभीसे उन लोगोंने जो यह न समझ सकते थे कि ऐसे देशमें रहना भारतीयोंके लिये कितना मुश्किल है उनके गुणोंको बोल मान लिया था।

हमारे लॉर्ड लंसडाउनने सुना था कि [बोअर] युद्ध ब्रिटेन उद्येतर गोरोंके लिये लड़ा गया था उतना ही ब्रिटिश भारतीयोंके लिये भी। लेकिन लड़ाईके अन्त होमेपर ब्रिटिश भारतीयोंकी हानत और भी ब्याधा करार हो गई। उनके लिये ज्ञास बसितया बना दी गई है; वे तिरके नहीं ब्याधार कर सकते हैं या जमीनें ले सकते हैं। उन्हें वायविक अधिकार मिलानुक्त नहीं दिये गये हैं और उनको पैरल पटरीपर चलने तकका हक नहीं है। जब कानूनकी नियाहमें उनकी हानत इतनी बिरा भी गई है तब यह अनुमान किया जा सकता है कि ड्रान्तवाकके लोप उनके साथ कौसा बरतान कटते होंगे। कई राजनयिक उन बोर्डे-से अन्धोत्सुक-कारियोंकी बातोंने आ गये हैं जो ब्याधारमें ब्रिटिश भारतीयोंके प्रतिस्पर्धी हैं; और १९०६ के नये पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) कानूनका उपयोग ब्रिटिश भारतीयोंपर ब्याधार करनेके लिये किया गया है। जिन लोगोंमें कुछ भी अज्ञान-सम्मानका भाव है उनके लिये उस कानूनको मानना असम्भव है। सिप्टनगडलोसे मिलनेसे इनकार कर दिया जाता है और अरास्ती जाँचकी प्रारंभना भी नहीं मानी जाती। ब्रिटिश भारतीय जेलोंमें डूँत दिये गये हैं काले लोगोंके साथ बर्षीकृत किये गये हैं और वे जहाँकी कुराक केनेके लिये बजबूर किये गये हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि उन्हें करीब-करीब मूर्खों भरना पड़ता है। वे अपने जातीय सम्मानकी रक्षाके लिये अनाकामक प्रतिरोधी बन गये हैं। सम्भव है, उनकी सुनवाई होनेमें कहीं लय जावे; लेकिन इस बिलबका कारण यही होगा कि कभी उन्होंने पर्याप्त कदम नहीं लहे हैं। न्याय उनके पक्षमें है। हिन्दुओं मुसलमानों और तमिलोंने इस उद्देश्यके लिये साथ-साथ काम करके एक बड़ी जातीय समस्या हक कर दी है।

[अंशेजीसे]

६ ब्रिया ५-११-१९०९

^१ गांधीजीने ब्रिटिश इन्डियन एसोसिएशनके लक्ष्यके लक्ष्य "ब्रिटिश वायविक लक्ष्य-वर्गीकरणके लिये उतने उद्देश्यके लिये" लिखकर वह कदम रिसा था।

विनाश पीटा जाता है। मेरे जनालये कसकता और बम्बई-जैसे सहरोका बनना बुझकी बात है बघाई वेनेकी नहीं। भारतको धाम प्रभाके आसिक उम्भूकनसे हानि हुई है। जनकी तरह मुझमें भी राष्ट्रीय भावना है। इसलिए मर्मवर्षियों या नर्मवर्षियोंके तरीकोसे मेरा पूरा मतभेद है। इसका कारण यह है कि दोनों ही एक व्याखिरकार हिंसामें विरवास करते हैं। हिंसालोक तरीकोका अर्थ है आधुनिक सम्मताको और इस तरह उसी विनाशकारी स्पर्शको बंभीकार करना जिसे हम मूर्खी बोलते हैं। इसका अर्थ है अन्तमें उसी नीतिकताका प्लस। कौन घासन करता है इस बातमें मेरी विषयवस्ती नहीं है। मैं तो चाहूँगा कि घासक मेरी इच्छाके अनुसार घासन करे, अन्यथा मैं उन्हें अपने ऊपर घासन करनेमें सहायता न दूँगा। मैं उनके विरुद्ध अनाक्रमक प्रतिरोध करूँगा। अनाक्रमक प्रतिरोध शरीर-बलके विरुद्ध आत्मबलका प्रयोग है—दूसरे क्षणोंमें बुधापर विजय प्राप्त करनेवाला प्रेम का।

मैं नहीं जानता कि मैं अपनी बात कहींतक समझा सका हूँ और मैं यह भी नहीं जानता कि मैं अपने इस विवेचनसे आपको कहींतक सहमत कर सका हूँ। परन्तु मैंने ऊपर बताये गये तरीकेसे अपने देशके लोगोंके सामने सारा मामला रखा है। मैंने आपको यह पत्र दो उद्देश्योंसे लिखा है। पहला उद्देश्य आपको यह बताना है कि जब-कभी समय मिलेगा मैं राष्ट्रीय पुनरुत्थानमें अपना विनाश योगदान करना चाहूँगा और दूसरा उद्देश्य यह है कि मैं जब-कभी बड़ा काम करे तब या तो उसमें आपका सहयोग के सकें या आपसे उसकी आलोचनाका अनुरोध कर सकूँ।

मैंने आपको जो जानकारी दी है वह बिल्कुल गोपनीय है, उसका और कोई ऐसा प्रयोग नहीं किया जाये जिससे मेरे देशके लोगोंके हितकी हानि हो। मुझे लगता है कि जब-तक घास मन्की भाँति भालूम नहीं हो जाय तबतक कोई उपयोगी उद्देश्य सिद्ध न होगा।

अगर आप कुछ और जानना चाहते हों तो आप जो भी प्रश्न पूछना चाहें मैं उसका उत्तर खुशीसे दूँगा। भी रिचको इस पत्रकी पूरी जानकारी है। अगर बातचीत आवश्यक समझे तो मैं तैयार हूँ।

अन्तमें आशा है, मैंने आपके सौजन्यका अनुचित और अवाञ्छनीय काभ नहीं उठाया है और आपका ध्यान इस ओर अकारण ही आकर्षित करनेकी बृष्टता नहीं की है।

आपका आशि

नाबीबीके स्वाक्षरोंमें मुझ अंग्रेजी मसविदेकी फोटो नकल (एच एम ५१५२) है।

[संवाद]

अक्तूबर ३ १९९]

(उन्होंने कहा) यह कड़ाई अन्तरराष्ट्रमयी स्वतन्त्रता विचारोंकी स्वतन्त्रता और कर्मकी स्वतन्त्रताके लिए लड़ी जा रही है मत देनेके भागिक अधिकारके लिए नहीं। ब्रिटिश भारतीय सबसे पहले १८८३ में द्वायतबाल कार्य में और तभीसे उन लोगोंने जो यह न समझ सकते थे कि ऐसे देशमें रहना भारतीयोंके लिए स्थितना मुश्किल है, उनके पूर्वोंको शेष जान लिया था।

इतने लोई सैतबाउनसे सुना जा कि [बोमर] कुछ स्थितना उबेतर पारोंके लिए लड़ा गया था जतना ही ब्रिटिश भारतीयोंके लिए थी। लेकिन कड़ाईके अन्त होनपर ब्रिटिश भारतीयोंकी हालत और भी ब्यादा बराम हो गई। उनके लिए खास बस्तियां बना दी गईं हैं; वे सिर्फ वही ब्यापार कर सकते हैं या जमीनें ले सकते हैं। उन्हें नागरिक अधिकार मिलानहीं मिले क्ये हैं और उनको पैदल पठरीवर चलने तकका हक नहीं है। जब कम्पनकी निमाहमें उनकी हालत इतनी गिरा दी गई है तब यह अनुमान किया जा सकता है कि द्वायतबालके लोब उनके साथ कैसा बरताव करते होंगे। कई राजनयिक उन बोड़े-ले आन्धोलन-कारियोंकी बस्तोंमें जा गये हैं जो ब्यापारमें ब्रिटिश भारतीयोंके प्रतिस्पर्धी हैं और १९६ से गये पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) कानूनका उपयोग ब्रिटिश भारतीयोंपर अत्याचार करनेके लिए किया गया है। किन लोगोंम कुछ भी आत्म-सम्मानका भाव है, उनके लिए उस कानूनको मानना असम्भव है। मिष्टमन्थलोसे निकलेसे इनकार कर दिया जाता है और बराबरी जांचकी प्रार्थना भी नहीं मानी जाती। ब्रिटिश भारतीय जेलोंमें ईस दिये गये हैं काले लोयोंके साथ कर्षीय किये गये हैं और वे जहाँकी कुराक सेनेके लिए मजदूर किये गये हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि उन्हें करीब-करीब जूकों मरना पड़ता है। वे अपने जातीय सम्मानकी रक्षाके लिए अनाकामक प्रतिरोधी बन गये हैं। सम्भव है, उनकी सुनवाई होनेमें वनों कम जायें; लेकिन इस विरोधका कारण यही होया कि जमी उन्होंने पर्याप्त कष्ट नहीं सहे हैं। ब्याप उनके पासमें हैं। शिशुओं नुसकानों और तमिलोंने इस उद्देशके लिए साब-साब काम करके एक बड़ी जातीय जनसत्ता हक कर दी है।

[संवेदीसे]

इंडिया, ५-११-१९९

३३३ भाषण भारतीयोंकी सभामें'

[अन्त

नवम्बर २, १९११]

भी बाँबीने कहा कि जहाँतक दक्षिण आफ्रिकाका सम्बन्ध है, ब्रिटिश भारतीयोंके सर्वोच्च संसदा दृष्टिकोणसे होगा। भारतमें भी इसका दूरगामी प्रभाव हुआ है। निश्चय ही सभी भारतीय इस कार्यमें सहाम्यता देनेका अधिकते-अधिक प्रयत्न करेंगे क्योंकि दृष्टिकोणकी लड़ाई उनके राष्ट्रीय सम्मानकी रक्षाकी लड़ाई है। मुझे लगता है कि अन्तर सम्बन्धमें और उनके आसपासके क्षेत्रोंमें प्रचार करनेके लिए कुछ भारतीय स्वयंसेवक आगे आये तो लोकमत तैयार करनेकी दिशामें बहुत-कुछ किया जा सकता है और इस लोकमतका प्रभाव तो आखिरकार दृष्टिकोणपर पड़ेगा ही। स्वयंसेवकोंको अपने मामूली कामकाज करते हुए कुछ बक्त निकाल देना चाहिए। इसमें वे घर-घर जाकर उत्पादकियों और उनके परिवारोंके कष्ट दूर करनेके लिए बच्चा करे, जो कमते-कम एक-एक फाँसि हो। वे भीषण एक प्रलेपपर' इस्तक़त भी करवें जिसमें अनाकामक प्रतिरोधियोंके सर्व्वके प्रति सहूलभूति प्रकट की जाये' और उन्हें प्रोत्साहन देते हुए यह बिजबात बयक्त किया जाये कि अधिकारी उनके कष्ट दूर करेंगे।'

[अंतिम]

इंडियन ओपिनियन ४-१२-१९११

१ वह सभा भी केम्पाडो और कम्पन सुनिश्च्य कीजके यह सभ्य भी बाबाको पुनर्ग भी। सभा दिने १ वने केके कोरल-मरबने भी वसेकी मन्वद्वारे ही। सभमें हाकी इरील और भी वर ही बाँबीनेमे भी प्रक्य दिने। सभमें कम्पन ४ मास्टीन बने ने। पूरे किरकक सिव रेडियर विद्यमानकी बाँबी दिने" एड ५१९।

२. रेडियर वर: उल्लेखक विविध मरठियोंको" एड ५१५-१६।

३ सभकी रिपोर्टमें फाज्दा बना है कि २ मरठियों और कम्पन काने ही वुरीनेमे भी वर कम्पन दिनेके मार्केटमें कम्पनमें मरठका काम करनेके सिव कम्पनी केवर्न ही। वर उन किये बना कि वरमें एक सामाजिक कुर्नेल विद्यमान बान कियेमें संपर्की मरठिका मरठ किये बाने और कियेक कर कत कर्ममें उल्लेखित एडियरके कम्पनके अंतर्गत काने। "वर वर वर कम्पन कोरकको" एड ५१८-१९ भी रेडियर।

३३४ पत्र उपनिवेश-उपमन्त्रीको

[कम्बल]

नवम्बर १ १९९

महोदय

आप जब सोई नू मेरे १९ अक्टूबरके पत्रका उत्तर देनेकी कृपा कर सकें तो मैं
बहुआशी होऊँगा।

आपका आदि

टाप की हुई बरतरी अंग्रेजी प्रति (एस एन ५१५८) से।

३३५ पत्र लॉर्ड एंन्टहिलको

[कम्बल]

नवम्बर ४ १९९

लॉर्ड महोदय

आप मुझे सोई नू का पत्र मिला गया है। इसकी एक प्रतिलिपि^१ राज मेज रहा है।
इससे साफ़ बाहिर हो जाता है कि हमारी स्थिति क्या है। अन्तिम अनुच्छेद मेरी समझमें
बिल्कुल नहीं आया। सोई नू को जो उत्तर देना चाहता हूँ उसका मसविदा^२ सलम कर रहा
हूँ। अबतक भीमानकी सलाह नहीं मिल पायी अबतक इसे नहीं भेजूँगा।^३

आपका आदि

टाप की हुई बरतरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५१५९) से।

१ डेविलर परिसिड ३१।

२ नू लोदी पत्रका मसविदा या लो ३ नवम्बरको सेवा पत्रा या। डेविलर "पत्र : उपनिवेश-उपमन्त्रीको"
पृष्ठ ५२४-२५।

३ सोई नू परिसिडके उत्तरके लिए डेविलर परिसिड ३१।

[सन्दर्भ

नवम्बर २ १९१९]

भी गांधीने कहा कि अर्थात्क वसिष्ठ आदिनाका सम्बन्ध है, ब्रिटिश भारतीयोंके बर्बका फसला द्वास्तबासमें होना। भारतमें भी इसका दूरगामी प्रभाव हुआ है। निश्चय ही सभी भारतीय इस कार्यमें सहायता देनेका अधिकते-अधिक प्रयत्न करेंगे क्योंकि द्वास्तबासकी लड़ाई उनके राष्ट्रीय सम्मानकी रक्षाकी लड़ाई है। मुझे लगता है कि अगर अन्दरमें और उसके बाहरपासके क्षेत्रोंमें प्रचार करनेके लिए कुछ भारतीय स्वयंसेवक जाये जायें तो लोकमत तैयार करनेकी दिशामें बहुत-कुछ किया जा सकता है और इस लोकमतका प्रभाव तो आखिरकार द्वास्तबासपर पड़ेगा ही। स्वयंसेवकोंको अपने मामूली कामकाज करते हुए कुछ बरत निकाल लेना चाहिए। इसमें वे बर-बर आकर छात्याग्रहियों और उनके परिवारोंके कष्ट दूर करनेके लिए जाना करें जो कमसे-कम एक-एक फादिन हो। वे लोपसे एक प्रत्येक्षपर' वस्तुवत् भी करायें जिसमें अनाक्रमक प्रतिरोधियोंके संघर्षके प्रति सहानुभूति प्रकट की जायें और उन्हें प्रोत्साहन देते हुए यह विश्वास बयगत किया जायें कि अधिकारी उनके कष्ट दूर करेंगे।'

[अपेनीचे]

इंडियन ओपिनियन ४-१२-१९ ९

१ यह समा भी डेल्हाडी और कन्दन सुनिश्चय कीलके यह मन्त्री भी बालासमे कुर्तर्ष भी। समा दिनेके ३ बने सवके प्लेस-मन्त्रमें भी पलेकडी मन्त्रवर्गमें कुर्ष भी। समें हाकी इरीन और भी यम ही मन्त्रीवामे भी यज्ज सिरे। सवामे कन्दन ४ मरडीन बने रे। दूरे किरानके किर देकिए। सिधमन्त्रकी मन्त्री सिधु" कु ५२९।

२ शिखर १५: द्वास्तबासके ब्रिटिश भारतीयोंको" कु ५२५-२६।

३ समाकी रिपोर्टमें कतावा म्ना है कि २ मरडीनों और कम्पन बने ही दूरतीमें भी एक कम्पन सिधके मार्गदर्शमें कम्पनमें प्रवाहक काम करकेके किर मन्त्री केवर्ष ही। यह एक किया गया कि बनेमें एक साम्प्रदिक दुर्भेज्य निष्काम बाने कितने संनर्षकी मन्त्रीवका कोटा मिला बाने और कितना कच लु कर्ममें छातुर्षु सिधकेवामे कम्पनके अर्थिक बन्धमें। "१५: १५ पस एक-१० बनेकडी" कु ५२८-१९ भी देखिए।

३३४ पत्र उपनिवेश-उपमन्त्रीको

[सन्देश]

नवम्बर ३ १९०९

महोदय

अब सब लॉर्ड्स के मेरे १९ मसूबरके पत्रका उत्तर देनकी इया कर सकें तो ये बाबारी होईगा।

आपका आदि

दारा की हुई दस्तवी अंग्रेजी प्रति (एस एन० ५१५८) से।

३३५ पत्र लॉर्ड ऐंस्ट्रिहसको

[सन्देश]

नवम्बर ४ १९०९

लॉर्ड महोदय

अब मुझे लॉर्ड्स के पत्र मिल गया है। इसकी एक प्रतिलिपि माघ भेज रहा हूँ। इससे माफ जाहिर हो जाता है कि हमारी स्थिति क्या है। अन्तिम अनुच्छेद मेरी रायमें बिलकुल नहीं आया। लॉर्ड्स को जो उत्तर देना चाहना हूँ उसका सम्बन्ध संकल्प कर रहा हूँ। अब तक भीमानकी सलाह नहीं मिली थी। अब तक पूरे नहीं भेजुंगा।

आपका आदि

दारा की हुई दस्तवी अंग्रेजी प्रति की फाटो-नकल (एस एन ५१५९) से।

१. देखिए अर्चिब ३१।

२. यह लॉर्ड एंस्ट्रिहस के लॉर्ड्स के पत्र का उत्तर है। देखिए "दारा की दस्तवी-उपमन्त्रीको" पृष्ठ ५१४-२५।

३. लॉर्ड ऐंस्ट्रिहस के पत्र देखिए अर्चिब ३१।

प्रिय हिनरी

यद्यपि मुझे बहुत-कुछ कहना है तथापि मात्र मैं आपको एक छोटा-सा पत्र ही लिख सकता हूँ। लॉर्ड कू के पत्र और मेरे उत्तरकी प्रतिक्रिया आपको साथ मिलेगी। उत्तर अभी लॉर्ड कू को दिया नहीं गया है क्योंकि यह स्वीडिशके सिर्फ लॉर्ड एंन्टहिलको भेजा गया है।^१

बिबरण अब वितरित किया जा रहा है। मैं आपको 'टाइम्स' के साहित्य-परिचिष्टके साथ पार्सलसे उसकी एक प्रति भेज रहा हूँ और जाना है कि बिबरणके साथ जो पत्र भेजा जायेगा उसकी भी एक प्रति भेज सकूँगा। इससे बिबरण का व्योम पुरा हो जाता है। लॉर्ड कू का पत्र समयपर जा गया है इसलिए कांग्रेस अपने कर्तव्यका पालन कर सकती है। हम आज्ञा करें कि यह ऐसा करेगी।

हम ११ नवम्बरको रवाना होंगे। गठ सचिवालयको मैंने इंडियन यूनिफन सोसायटीकी एक समामें मावज दिया।^२ अब श्रत्येक भारतीयको स्थिति बढानेके लिए ये सब बातें आवश्यक हैं। इस समामा बिबरण सादर इंडिया के स्टाम्पमें छपे। वैसे कि सलमन काईसे माकूम होना संयुक्तभारतको यहाँ मौजवान भारतीयोंकी एक समामा यह बिचार करनेके लिए हुई थी कि वे क्या कर सकते हैं। उसमें श्री आनन्दिका भी हामी हामी और मैं बीका। मैंने उनके सामने यह बिचार रखा कि बिधार्मी और अन्य आभासी भारतीय प्रचार-कार्यके लिए नियमित रूपसे बितना समय दे सकें। उतना समय है वे यहकि हजारों ओपेसि एक स्मरणपत्रपर हस्ताक्षर करयें और समार्यको चाल रखनेके लिए बितना दे देना चाहें उनके उतना बन्धा लें। मैं आपको स्मरणपत्रका मसबिदा भेज रहा हूँ। कार्यक्रम और स्मरणपत्रके मसबिदेपर बिचार करनेके लिए कम एक समामा होनेबाकी है। यदि सम्भव हो तो एक साप्ताहिक बुलेटिन भी प्रकाशित करनेका बिचार है जिसमे भारत और दक्षिण आफ्रिकाकी स्थितिका मार विधा जाये। परन्तु इस पत्रिकाके सम्बन्धमें स्पष्ट कठिनाइयाँ हैं। मेरी सम्मतिमें इस पत्रिकाके लिए रुपया भारतसे नहीं किया जा सकता। यह स्वाभकम्बी होनी चाहिए और यदि कुछ बाटा हो तो उसे अंग्रेजोंको पूरा करना चाहिए, क्योंकि मेरी मान्यता है कि जनेक दृष्टियोंसे इस कामको हाबमें केना उनका कर्तव्य है। परन्तु हमें एक ऐसा आशय चाहिए, जो काफी योग्य हो और जो इस कार्यमें अपना पूरा ध्यान कमा सके। रिच इस समय यह काम नहीं कर सकते।

१ देखिए किन्ना सीरीज।

२. पत्र १६ जुलाई, १९९१ का जमा हुआ विकरण न. ५ की बलुड विचारित नहीं किया गया था। यह पत्र दक्षिण काले साथ प्रकाशित किया गया था। देखिए किन्ना सीरीज।

३ देखिए "मानव न्यू रिपोर्ट्स कलमे" पृष्ठ ५२५

४ देखिए "मानव। भारतीयोंकी लक्ष्य" पृष्ठ ५२६।

५ देखिए "पत्र। युष्मताकाले विद्विज भारतीयोंकी" पृष्ठ ५२५-२६।

इसलिए यह बेचना है कि बुकेटिन निकल सकता है या नहीं। यदि लगनवास यहाँ समयपर आ गया तो बुकेटिन निकलनेकी सम्भावना है। समितिका कार्य जारी रहेगा। मेरा खयाल है, आप रिश्के साथ नियमित रूपसे पत्रव्यवहार करते रहेंगे।

मैं आपको इसके साथ डॉई ऐंस्ट्रिखके नाम लिखे अपने पत्रकी एक प्रतिक्रिया भेज रहा हूँ। यह सर्वथा गोपनीय है परन्तु आपको पूरी स्थिति तो मालूम होगी ही चाहिए। मैं चाहता हूँ कि आप इस पत्रको पढ़नेके बाद फाइल डालें। मैं एक नकल डॉक्टर मेहताकी भेज रहा हूँ और उनसे भी ऐसी ही प्रार्थना कर रहा हूँ। इस पत्रकी भी नकल उमको भेज रहा हूँ ताकि मुझे इसी बातके बारेमें फिर न झिंझना पड़े। यदि स्वयंसेवक यहाँ अपना कर्तव्य निभायें और भारतमें पर्याप्त प्रयत्न किया जाये तो इस कार्यके पूरा न होनाका कोई कारण नहीं है। हाँ यह सतं तो है ही कि हम ट्रान्सवालके लोग बूढ़ रहे। यह एक विचित्र संयोग है कि डॉई नू के पत्रके साथ ही ट्रान्सवालसे समाचार मिला है कि हरिकान्त सफुसल बेस पहुँच गया। मैं भी उसके पास जा पहुँचनेके लिए छटपटा रहा हूँ।

आपका यह तार मिला गया जिसमें आपने मेरे पिछले तारके अन्तिम शब्दको बहुरूपनेके लिए कहा है। मैं इसे कल भेजूंगा साथब कुछ और भी लिख सकूंगा। अन्तिम शब्द वा "नियन्त्रित"। इसका अर्थ है १३ नवम्बर। यह ए बी सी कोडके पाँचवें संस्करणमें आया है।

मैं इतवारको कैम्ब्रिजमें इंडियन मजदूरकी एक सभामें भाषण दूँगा।^१

स्वयंसेवकोंकी सूचीसे आपको मालूम हूँ। जायेगा कि सीबी और मॉड दोनों सहायताके लिए तैयार हैं। माताजी और पिताजी भी कुछ आ रहे हैं। मैं नहीं जानता कि वे क्या करेंगे। निश्चय ही यदि चाहें तो वे भी सेवा-कार्य कर सकते हैं। परन्तु मुझे नहीं लगता कि ऐसा हो सकेगा। कुमारी बिटरबॉटम उसमें एक-लगसे कम गई हैं।

श्री डॉककी पुस्तककी समालोचना एडिनबरा ईवनिंग स्कुल में करीब २ पक्षियोंमें की गई है। 'टाइम्स' ने केवल चार पंक्तियोंमें इसकी प्राप्ति स्वीकार की है। मेरे खयालसे अभी कहीं अत्यन्त इसकी समालोचना नहीं हुई है। श्री मामरने इसी १२ तारीख सुक्रवारको एक सभा हूमें बिदाई देने और स्थितिके सम्बन्धमें मेरे बिचार सुननेके लिए बुलाई है। इसमें कमभग ९ व्यक्ति भागपर बुलाये गये हैं।

टाइप की हुई दफ्तरी अंग्रेजी प्रति (एन एन ५११२) से।

१ देखिए "एन० डॉई ऐंस्ट्रिखकी" पृष्ठ ५१२-५१४।
 २. हा मजदुरी कोरे रिपोर्टे कलकत्ता दर्जा है।
 ३. देखिए "दिल्लयलकी अखिरी किर्ती" पृष्ठ ५२९।
 ४. देखिए "वाक्यः विरहकी-समाप्ते" पृष्ठ ५२५-५५०।

महोदय

द्रास्यवासके ब्रिटिश भारतीयोंका विष्मण्डल मत १ जुलाईको संस्करणमें आया था। उस उपनिवेशके ब्रिटिश भारतीयोंके सामसेका संज्ञान बिबरण' इस विष्मण्डलके संस्करणमें आने ही तैयार किया गया था। लेकिन उस खातिगुर्न समझीजा करनेकी दृष्टिसे नागुक बाउपीठ बच रही थी इसलिये उन प्रकाशित नहीं किया। हमें अब मालम हुआ है कि यह बाउपीठ अचक्रम हो गई है और स्थिति बेगी भी बेसी ही है। इसलिये हमारे लिये यहूके सार्कोको यह बताना आवश्यक हो गया है कि स्थिति क्या है और द्रास्यवासमें भारतीयोंके संघर्षका मतम्ब क्या है।

द्रान्सवासके भूतपूर्व उपनिवेश-सचिवने गल करवरी मासमें जब यह उपनिवेश ठाके घासनाधीन था एक दशिन आठिकी पत्रिकामें एक लेख लिखा था। उसमें उन्होंने इस प्रकारका सही-सही जुकासा इस प्रकार किया था

भारतीय नेताओंकी स्थिति यह है कि वे ऐसा कोई कानून सहन न करेंगे जिसमें प्रवासके सम्बन्धमें उनको यूरोपीयोंके समान अधिकार न दिये जायें। वे यह स्वीकार कर लेंगे कि एशियाइयोंकी संख्या प्रजासत्तीय कार्यवाहिसि सीमित कर दी जाये । उनका आग्रह है कि कानूनमें समानता होगी ही चाहिए।

स्थिति अब भी वही है।

द्रास्यवासके वर्तमान उपनिवेश-सचिव भी स्मृष्टने उस पंजीयन-कानूनका' लिये लेकर पिछके तीन सालसे आन्दोलन चला रहा है उस करनेका और द्रास्यवासमें पहलेसे आबाद भारतीयोंके अलावा एक निश्चित संख्यामें ब्रिटिश भारतीयोंको स्थायी निवासके प्रमाणपत्र देनेका प्रस्ताव किया है। अगर ब्रिटिश भारतीयोंका उद्देश्य केवल यह होता कि उपनिवेशमें उनके कुछ घाई और आ जायें तो इस रियायतम कुछ धार माना जाता। लेकिन इस कानूनकी रव करानेके लिये वे जो आन्दोलन कर रहे हैं उसका उद्देश्य है प्रवासके सम्बन्धमें कानूनी या वैज्ञानिक समानता प्राप्त करना। इसीलिये कानूनी नियमितताको कायम रखनेके इस प्रस्तावसे उनके उद्देशकी पूर्तिभी विद्यामें एक कबम प्रपति भी नहीं होती। द्रास्यवासके ब्रिटिश भारतीयों द्वारा जनान्कमक प्रतिरोध जारी रखनेके बावजूब वर्तमान कानूनमें भी स्मृष्टके द्वारा सुझाया गया अग्रका परिवर्तन किया जायेगा या नहीं यह हम नहीं जानते। लेकिन हम इतना बचसब बहू सकते हैं कि जो रियायतें देनेका प्रस्ताव किया गया है, उनसे जनान्कमक प्रतिरोधियोंको सतौप नहीं होगा। भारतीय समाजने यह शर्ष इस उद्देशसे शुरू किया था कि उक्त कानूनसे समस्त भारतपर जो कर्षक कनता है वह दूर किया जा सके। वह एक ऐसा कानून है जिससे उपनिवेशीय कानूनके इतिहासमें पहली बार किसी ब्रिटिश उपनिवेशके प्रवासी कानूनोंमें प्रवासीय और रव-सम्बन्धी प्रतिबन्धका समावेश होता है। इतने यह सिद्धांश स्थापित होता है कि ब्रिटिश भारतीय द्रास्यवासके सिर्फ ब्रिटिश भारतीय होनेके कारण नहीं आ सकते। यह परम्परागत

१ लेकिन " इन्डियनसर्विी भारतीयोंके आन्दोलन विवरण " पृष्ठ २००-१ ।

२ उल्लेखन में ।

है किन्तु वह उन्होंने बहुत बेरसे किया है। श्री स्मट्सने लॉर्ड महोदयकी इस बातकी उचित याव बिकारी है कि उक्त कानूनपर सम्राटकी मंजूरी मिस चुकी है। ट्रान्सवालके भारतीयोंने उस कानूनको मंजूर करना और उसको भंग करानेकी सजा भुगतना शुरू कर दिया है। केवल इसीलिए उन्हें अपना पग पीछे हटानेका न कहना चाहिए, न कहा जा सकता है। स्पेस एसिया आफ्रिका में एक राजनीतिक और उच्च परके जाकादीके रूपमें उनकी स्थिति निर्दिष्ट है। किन्तु इससे न तो ब्रिटिश लोगोंका कोई सम्बन्ध है और न भारतीयोंका ही। फिर वे ब्रिटिश सरकारके इस अपराधके लिए जिम्मेदार भी नहीं हैं।

हम यह भी कहें कि पिछले चार महीनोंमें गिरफ्तारियों और सजाओंमें कोई कमी नहीं हुई है। समाजके नेताओंका जेल जाना जारी है। जेलके कामोंकी सख्ती कायम है। जेलका खाना और नौ खराब कर दिया गया है। बोहानिसबर्गके प्रमुख डॉक्टरोंने गवाही दी है कि भारतीय कैदियोंकी मौजूदा भोजन-ताकिया अपर्याप्त है। अधिकारियोंने मुसलमान कैदियोंकी वार्षिक मान्यताओंकी उपेक्षा की है और उन्हें बिन पवित्र रोजोंको सातों मुसलमान सास-बर-साथ पिछाड़े रखते जले भाये हैं। उनको रखनेकी सुविधाएँ देनेसे इनकार कर दिया है। ऐसा पिछले साठ नहीं किया गया था। अभी हालमें साठ अनाकामक प्रतिरोधी प्रिटोरिया जेलके स्टूट हैं। वे सीधे और दुर्बल होकर भाये हैं। उन्होंने हमें यह खबर घेदी है कि यद्यपि उन्हें मूर्खों रूना पड़ा फिर भी सरकार उनको बंद गिरफ्तार करना चाहे वे उसके लिए तैयार हैं। ब्रिटिश भारतीय सबके कार्यवाहक अध्यक्ष अभी गिरफ्तार किये गये हैं और तीन मासकी सख्त कैदकी सजा देकर जेल भेजे गये हैं। यह उनकी तीसरी जेल-जाया है। वे मुसलमान हैं। एक और पारसी जो एक सुसिद्धित व्यक्ति है नेटालको निर्वासित कर दिये गये थे। वे फिर जा गये और अब उन महीनेकी कड़ी कैदकी सजा काट रहे हैं। वे पाँचवीं बार जेल गये हैं। उनके साथ एक दूसरा भारतीय मुबक भी जो कभी स्वयंसेवकोंका सार्जेंट था तीसरी बार जेल गया है। उसे भी वही सजा दी गई है जो उक्त पारसीको भी पई है। जेल गये हुए ब्रिटिश भारतीयोंके स्त्री-बच्चे टोकरियोंमें फल भरकर इधर-उधर छेरी जगाते हैं और इस तरह अपनी आजीविका कमाते हैं या उनकी परवरिश करनेसे की जाती है। श्री स्मट्सने एसिया आफ्रिकाके लिए बहानोंमें खबर होते समय कहा था कि उनका लॉर्ड क्रू से ऐसा समझौता हो गया है जिससे बहुसंख्यक ब्रिटिश भारतीयोंको जो जायबोक्तनसे अत्यन्त ऊब गये हैं, सम्बोध हो जायेगा। लेकिन उसके बावजूद घटनाओंसे उनकी मतिव्यवस्था भी विस्तृत गलत साबित हुई है।

आपके भावि
मो० क० गांधी
हाजी हबीब

[संक्षेपतः]

बस्तब्यका सारांश

ट्रान्सवालके ब्रिटिश भारतीय पिछले ढाई सालसे अकथनीय कष्ट मुक्त रहे हैं। उनका उद्देश्य है

ट्रान्सवालके एसियाई पंजीयन अधिनियम (१९०७ के कानून २)को रद्द कराना। कानूनके निर्माता उसे उपनिवेशमें रखनेके अधिकारी ब्रिटिश भारतीयोंकी धिमास्त

करनेकी कार्रवाई माग बताते हैं किन्तु ब्रिटिश भारतीय नुस्खे से बल्कि आपसि जनक मानते हैं। क्योंकि वास्तवमें—

(१) इस कानूनसे जनकी सामिक भावनाओंको जोट लयती है और कई तरहसे जनका अपमान होता है और

(२) बादकी ठारीके एक दूसरे कानूनके साथ (जो प्रवासी अधिनियम कहलाता है) मिलाकर पढ़नेसे यह भारतीयोंके प्रभावके मार्गमें बाह्य वे भारतीय किन्तु ही मुसलमान क्यों न हों जनकी जाति और रगके कारण एक अर्थम्य स्काबट पैदा करता है।

वे जो राष्ट्र चाहते हैं, वह पंजीयन कानूनको रद्द करने और प्रवासी कानूनके छोटे-से संशोधनसे उपनिवेशमें ब्रिटिश भारतीयोंकी बाइ टोकनेकी नीतिको खतरें वाले बिना बाधानीसे ही जा सकती है। कानूनको रद्द करने और संशोधनकी कार्रवाईका क्रियात्मक प्रभाव होना भारतीय अपमानका निराकरण और उससे घायब कुछ थोड़े-से नवानुसुक भारतीय ही प्रबंध कर पायेंगे बिनाकी यहाँ आबाद भारतीय समाजकी साम्प्रतिक और बौद्धिक आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिए बकरत है।

द्राम्बबाळमें वास्तवमें इस समय जो भारतीय रहते हैं जनकी संख्या लगभग ५०० है।

द्राम्बबाळमें अधिवास प्राप्त भारतीय आबादी करीब १३ है।

इस अन्तरका अर्थ यह है कि लगभग ८० भारतीय द्राम्बबाळसे मगा बिये गये हैं क्योंकि वे इतने कमजोर हैं कि जेल जीवनके घोरिरक कष्टोंको सहन नहीं कर सकते।

२.५ से ज्यादा ब्रिटिश भारतीय द्राम्बबाळकी जेलको मुपोभित कर जाये हैं। इनमें से १५ के सिवा बाकी सबको उपरिदम कारावासकी सजाएँ दी गई हैं। वे सजाएँ चार दिनसे केकर छ मास तक की कभी कँदकी थीं। इस संघर्षमें सैकड़ों भारतीय बर्बाद हो चुके हैं। किन्तु ही परिवारोंका भ्रम-पोषण जनताके जन्मसे किया गया है क्योंकि परिवारके कमाऊ लोग द्राम्बबाळकी जेलोंमें बन्द हैं। बूढ़े और बवान सभी भारतीयोंमें फैल भुपती है और अब भी मुगत रहे हैं। किन्तु ही नेता इस समय जेलोंमें हैं। इनमें ब्रिटिश भारतीय संघके मुखिम बल्कि और एक पारसी सज्जन भी हैं जो समस्त दक्षिण आफ्रिकामें अपनी शान्तीकलाके लिए प्रविष्ट हैं। बाप और बेटोंने साथ-साथ कैद भोयी है। लगभग छठ भारतीय भारतको निर्वासित कर बिये गये हैं। वे अब वहाँ उतरे तब उनके पास न एक पैसा था और न कोई मित्र।

द्राम्बबाळके कुछ उदारमना यूरोपीयोंके एक बरने त्रिममें द्राम्बबाळके संसद-सदस्य भी बन्सु हाँसक भी हैं स्वाय-प्राप्तिके लिए अपनी एक समिति बना ली है।

हिन्दू और मुसलमान पारसी और सिख कन्से-कन्वा मिळाकर लड़ रहे हैं। जात्रका संघर्ष अपने पीछ करीब देसबायियोंकी सम्मान-रक्षाके लिए जारी रखा जा रहा है और यह विरुद्ध नि-स्वार्थ है। कष्ट भुगतनेवाके लोयोंको अपना कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं करना है।

भारतीयोंका कहना है कि द्राम्बबाळके उपनिवेश-निधि नगरक स्मूथ १९०७ के एडिवाई पंजीयन कानूनको रद्द करनेके लिए बचनबद्ध हैं। यदि यह कानून बापस ले लिया जाता तो जितित-भारतीयोंका प्रदल अपने-आप हम हो जाता क्योंकि इसके बिना ऊपर कहे हुए

प्रवासी कानूनसे उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयोंके प्रवेशमें कोई रोकबंद नहीं होती। जनरल स्मट्सका कहना है कि उन्होंने भी बांकीसे इस कानूनको रद्द करनेके सम्बन्धमें बातचीत की थी लेकिन कोई निश्चित बचन देनेकी बात उनको याद नहीं आती। श्री गांधीने हुकूम-नामा शक्ति किया है कि ऐसा बचन दिया गया था और अपने कबलके सम्बन्धमें लिखित प्रमाण भी देण किये हैं। जनरल स्मट्सका कहना है कि भारतीयोंकी भाँयें कियारतक रूपमें पूरी हो गई, क्योंकि उनकी इच्छा पंजीयन कानूनको अगस-बाहर मानकर चलनेकी है वे इसके लिए तैयार हैं कि लिखित भारतीय अनुमति लेकर और अस्थायी अनुमतिपत्रोंसे प्रवेश करें और इन अनुमतिपत्रोंकी अर्थात् समय-समपार बढ़ाई जाती रहेगी। भारतीयोंकी माँग्यता है कि उक्त कानूनको रद्द करवाना उनका महत्त्वपूर्ण बाधित्व है और यदि यह कानून अगस-बाहर है तो इसके सरकारको कोई खान नहीं हो सकता। उनका यह भी कहना है कि लिखित भारतीयोंका अनुमति लेकर प्रवेश करना बेकार है क्योंकि यह आम्बोलन कुछ व्यक्तियोंके प्रवेश प्राप्त करनेके लिए नहीं बल्कि जातीय सम्मानकी रक्षाके लिए किया जा रहा है। इस अनावश्यक कानूनी जातीय विरोग्यतासे स्थिति इतनी अपमानास्पद हो जाती है और यह समस्त भारतीयोंके लिए कष्टका स्थायी खेत बन जाती है। यह कानून उपनिवेशोंके इतिहासमें इस बंधका पहला कानून है। किसी भी दूसरे स्वशासित उपनिवेशमें ऐसा कानून नहीं है जिसमें ऐसा जातीय अपमान हो जिसे कोई यौजने 'दुष्ट्यापूर्ण प्रतिबन्ध' कहा है।

ब्रिटिश भारतीयोंकी इच्छा यह नहीं है कि उनके देशवासी ट्रान्सवाल्डमें अन्यायपूर्ण नर भाँयें। उनका निवेदन यह है कि प्रवासी कानूनके उचित अमलसे बोझे-से भारतीयों— उदाहरणार्थ प्रति वर्ष छ उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतीयों—के अतिरिक्त सब उपनिवेशमें प्रविष्ट होनेसे रोक दिये जायें। केप आस्ट्रेलिया और दूसरे उपनिवेशोंमें एशियाइयोंके प्रवासका प्रश्न जातीय कानूनका सहारा दिये बिना ही तय कर लिया है।

जुनी हुई अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एस एन ५१८) से।

३३८. पत्र उपनिवेश-उपमन्त्रीको

[सम्बन्ध]

नवम्बर ९ १९१९

महोदय

मुझे आपका इसी ३ तारीखका पत्र संख्या ३४५१५/१९१९ प्राप्त करनेका धीनायक मेला। यह अत्यन्त संवेदनक बात है कि अर्ल ऑफ़ न्यू प्रवासेके सम्बन्धमें उक्त सैद्धान्तिक उपायोंको मंजूर करानकी जाया नहीं जैसा पहले जिसकी याँन ब्रिटिश भारतीय करने है। यह सैद्धान्तिक उपायोंका अन्तक सारे उपनिवेशोंमें लागू रही है और, उदाहर निवेदन है कि कमात्र इसके कारण ही एक प्रभुत्वताके मनीन विषयकी विभिन्न जातियोंके एकीकरणकी नीतिसे सिद्ध हो सकता है। इस विषयको जनताके सामने रख देने और ट्रान्सवाल्ड की

जानेके सिवा मेरे और मेरे साथीके लिए अब कुछ करना शक नहीं रहता। परन्तु यह प्रश्न साम्राज्यीय महत्त्वका प्रश्न है, यह देखते हुए मैं और मेरे साथी सम्मानपूर्वक माया करते हैं कि श्रीमान् अब श्री द्वांसवाल्के प्रवासी कानूनोंमें मौजूद अपमानजनक रग-सम्बन्धी प्रतिबन्धको दूर करानेके लिए अपने प्रभावशाली काममें लायेंगे।

आपका आदि
मो० क० गांधी

कमिश्नरिस ऑफिस देहली २९१/१४२ और गार्ड की हुई दफ्तरी संघेनी प्रतिकी फोटोकॉपी (एच एन ५१६४) से भी।

३३९ पत्र द्वांसवाल्के ब्रिटिश भारतीयोंको*

[सम्पन्न

नवम्बर ९ १९१९]

हमें ब्रिटेनके लोगोंको आपकी ओरसे यहाँ काम करनेवाले व्यक्तियोंसे आपकी उम मूषीबतों और विस्तृतोंका पता पत्र है किन्हें आप ब्रिटिश राज्यके नीचे भोग रहे हैं। आप अपनी प्रजाति (रेग) और मानभूमिकी मान-जाके लिए लड़ रहे हैं इसकी हम प्रशंसा करते हैं। हमारे साथसे द्वांसवाल्के सरकारको उन ब्रिटिश प्रजाजनोपर, जो उनसे भिन्न प्रजातिके और भिन्न रंगक हों रंग मा प्रजातिके आधारपर उपनिवेशमें आनेकी रोक लगानेका कोई हक नहीं है। इसे हम उम साम्राज्यकी विसमें आप और हम उहे हैं परन्तु उनके विपरीत मानते हैं। आपने जो मरम रूख बलिदान किया है हम उसकी सपहना करते हैं क्योंकि जहाँ आप स्वभावत अपने भारतीय सम्मानको निष्कर्षक बनाये रखनेपर जोर देते हैं, वहाँ आप द्वांसवाल्के उपनिवेशियोंकी भारतीय प्रवासको नियमित और सीमित करनेकी इच्छाका विरोध नहीं करते। लेकिन आप चाहते हैं कि यह कार्रवाई सामान्य और अप्रजातीय कानूनके अन्तर्गत और ऐस जातिक आधारपर की जाये जो उपनिवेशियोंको उचित प्रतीत हो।

आपने अपनी धिकायमें दूर करानेका जो तरीका अपनाया है वह कर्मको बीजककी पक-प्रदर्शक उचित माननेवासे हम लोगोंको अच्छा लगा है। आपने अपनी स्थितिको मजबूत करने

* नवम्बर ९ को लिखे एक पत्रकेसे उपनिवेश-कार्यपालक हुई अतिरिक्तका पता पत्र जाता है। भारतीयोंका एन एमएस कमिश्नरिस द्वांसवाल्के सरकारको एक तरफ भेजा था। देखिए इतिहास ३३।

२. एडवड गवर्नरिग भारतीयोंके उद्धार किया था। वह ५ घण्टी तक ठहर ही कुछ था, क्योंकि उनके दिन हीमराजी सगळे कार्यालय और मन्त्रिग निवारण प्रस्ताव किने कोसेरके थे। देखिए "एन एन एन एडवड वीम्बको" १४ ५१८। यह ब्रिटेनके भी बड़े जनप्रमुख ब्रिटीश भारतीयोंसे छात्रपूति रखते थे जन्मी करते थे "द्वांसवाल्के ब्रिटिश भारतीयोंको और दरबानों" किया गया था। एडवड वीम्बकोके एक बड़े पत्र लोगोंके सम्बन्ध करवाने थे।

और अधिकारियोंको अपने उद्देश्यके स्यायोचित होने और अपनी माँगकी सच्चाईका विश्वास दिलातेमें हिंसा और धरिदरबलका सहारा नहीं किया है बल्कि उस कानूनको जिसे आप उचित ही अपनी अन्तःआत्माके विरुद्ध समझते हैं माननेसे बहादुरीके साथ इनकार करके स्वयं कष्ट उठा है और कानूनकी जखमाके फससबक्य मिलनेवाले दण्डको स्वीकार करके आपमें से २५ लोय अबतक ब्रेस वा चुके हैं। ये सजाएँ छ महीने तक की और ज्यादातर छल्ट कैदकी थीं। आपमें से कुछ लोग कंगाल हो गये हैं। रिजर्वोंने बर्षपूर्वक अपने पतिवर्षका विवोग उठा है और उनकी हास्य करीब-करीब भूसों मरनेकी हो गई है। आपके स्यापा रियोने अपना माक बिक जाने दिया है और अपने कनवारोंको माक से जाने दिया। इस तरहके कष्ट सहकर आप विश्वके विभिन्न जर्मोंके महान आचामोंके सच्चे साहसका परिचय दे रहे हैं। हमें आपसे सहानुभूति है। कहनेका आद्यय यह है कि हमारा समस्त जीवन साक्षी रहेगा कि हम कितने सच्चे बिल्ले चाहते हैं कि यह सच्य पारी रखनेके लिए आपको बल और साहस प्राप्त हो। आपके प्रति अपनी सहानुभूतिको व्यक्त करनेके लिए हम इस पत्रपर अपने हस्ताक्षर कर रहे हैं। आपके कष्ट दूर करनेके लिए जितना बल देना हमें जरूरी लगता है उतना बल भी दे रहे हैं। हमें आशा है कि ट्रान्सवालके अधिकारी और कन्वन्सके अधिकारी भी अपनी आँसे खोलेंगे और तुरन्त सहायता प्रदान करेंगे।

[अंबेजीसे]

इंडियन ओपिनियन ११-१२-१९१९

३४० शिष्टमण्डलकी आखिरी चिटठी'

[नवम्बर ९, १९०९के बाद]

डॉर्ड्स नू कउ उत्तर

बन सब दिनके उजाहे-जैसा साफ बिचारै देता है। डॉर्ड्स नू ने स्पष्ट उत्तर दे दिया है। उन्होंने लिखा है '।

श्री स्मट्स को वार्ते स्वीकार करते हैं १९०७का कानून २ रख कर दिया जायेगा और हर साल छ धिभित एधियाइयोंको स्वावी निवासीके रूपमें नहीं जाने दिया जायेगा। आप स्वीकार करेंगे कि यह जो वे देना चाहते हैं जायेकी ओर एक कदम माना जायेगा क्योंकि इससे कानूनको बरकनेका जो असर होना चाहिए वह तो हो जायेगा। लेकिन आप जो धारतीयोंको कानूनमें यूरोपीयोंके बराबर हक देनेकी माँग करते हैं उस माँगके मंजूर होनेकी आशा डॉर्ड्स नू नहीं रिला सकते। १९ शिष्टमन्वरीकी सेंटमें डॉर्ड्स नू ने आपसे कहा था कि प्रवेश और अन्य वार्तेके सम्बन्धमें धारतीयोंको यूरोपीयोंके बराबर हक देनेकी माँग भी स्मट्स मंजूर नहीं कर सकते।

१ यह इंडियन ओपिनियनमें ११ वींकोटे आता था, "इसमें क्या क्या कम : कानूनको किल्लु पत्र : अन्तमें मरद बस करनेके लिए कल्पिक ।"

२. यूने वरुके लिए देखिए परिशिष्ट ११ ।

ब्रिटेन-भारत का उत्तर

इस पत्रका उत्तर ब्रिटेन-भारत के बीच सिद्ध करने की आवश्यकता है ।

दृष्टिकोण

यह सब भारतीयोंको समझ देना चाहिए कि यह सड़ाई किस लिए कड़ी जा रही है और कितनी बड़ी है। हम सारे भारतका बोझ उठ रहे हैं। ऐसा करना हमारा कर्तव्य है। अगर हम यह मंजूर कर लें कि यूरोपीय और हम बराबर नहीं हैं तो फिर स्वयं हम जो कुछ माँगें वेतके लिए तैयार हैं। लेकिन वे कानूनमें यह बात अहर रखना चाहते हैं कि हम पीछे बराबर नहीं हैं। उन्होंने ब्रिटिश नीति और मानवीय सिद्धान्तोंकी अड़पर कुल्हाड़ी मारी है। हमने यह बोट अपने ऊपर सभ की है क्योंकि हम इन सिद्धान्तोंकी रक्षा करना चाहते हैं। अगर इस मूकपर कुल्हाड़ी लागती है तो ब्रिटिश राज्य स्वयं है और द्वायबाकमें या बलिय आफ्रिकामें ब्रिटिश भारतीयोंका रहना गुलामी है। लेकिन हमें कोई भी हमारी मर्जके बिना गुलाम नहीं बना सकता। अगर हम उसके सिद्धान्तोंको न मानें उसकी आज्ञा पालन न करें तो हम गुलाम नहीं रहते। पहले जमानेमें लोग मार-मारकर गुलाम बनाये जाते थे अब फूमलाकर गुलाम बनाये जाते हैं। पहले जमाना मच्छा था क्योंकि उसमें सब सड़ाई सड़कर ही जाती थी। इससे लोग बेज सड़ते थे और उससे उन्हें बुना हो जाती थी। गुलाम भी अब कष्ट सहन न होता तो आम जाते थे या मर जाते थे। अब हमें बालक बेकर गुलामीमें फँसाया जाता है और हम इस गुलामीको मंजूर कर लेते हैं और जानते भी नहीं कि यह गुलामी है। हम बलिय आफ्रिकामें ऐसी बसानें रहना नहीं चाहते इसलिए उत्पादकी सड़ाई सड़ रहे हैं। सरकार यह बात जानती है कि अगर हम उसके गुलाम बनानेके प्रयत्नोंको अवरुद्ध कर दें तो हमारे लिए बुरी बातें आसान हो जायेंगी। अगर हम इस बातको न जानते हों तो हमें इसे सब जानना चाहिए। हम अपने मताधिकारकी सड़ाई सड़ रहे हैं। हम यह रिखा रहे हैं कि एक राष्ट्र बननेकी आकांक्षा रखनाके जोरोंमें जो संभावनाय और बाधना होनी चाहिए, वह हममें है।

इसके अतिरिक्त हम केवल द्वायबाक [उत्तर] से ही नहीं सड़ रहे हैं बल्कि सामान्य सरकारसे भी सड़ रहे हैं, क्योंकि उन्होंने यह कानून मंजूर किया है। "कानूनमें बराबरीके हककी माँग छोड़ो तो तुम्हें मूहमांगा मिलेगा" इसका अर्थ था यह है कि तुम गुलामीका पट्टा किस को तो तुम्हारे सब मच्छा व्यवहार किया जायेगा। यह तो ऐसी ही बात हुई मानो अर्थ अर्थसे कहें तुम हमारे आधीन हो जाओ तो तुमसे मच्छा व्यवहार किया जायेगा। अर्थ इसका उत्तर यह होगा हमें तुम्हारे मच्छे व्यवहारकी जरूरत नहीं है। हमें अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करनेमें तुल भी हो तो वह भी हमारे लिए मुक्त है। ऐसा ही उत्तर हम तीन बारसे दे रहे हैं और आधा है, उधा देते भी रहेंगे। यह सड़ाई प्रयायके सम्बन्धमें कानूनमें बराबरीका हक देनेके लिए सड़ी जा रही है। उस हकको देनेके लिए फकीरी तो बहुत होयाने ली है और उसे देनेके लिए हम प्राण भी दे देंगे। मैं यह माने लेता हूँ कि जो पूरे रणमें लड़ते हैं वे कभी पीछे नहीं हटेंगे। प्रत्येक भारतीयको स्वयं याद

१ एके वर्ये सि देकिर वनः अविदेय अमयीयो" इ ५१४-२५ ।
२ ५५ १९०० का अविदेय वर्येय अविदेय ५० १ ।

रखता चाहिए कि इसका जपाय केवल हमारे हाथमें है, ब्रिटिश सरकार या ट्रान्सवाल सरकारके हाथमें नहीं। उसके सामने सब छम्पू विधिबद्ध पैदा करना और उनको समझाना हमारा काम है। लेकिन हमें यह न भूलना चाहिए कि अपने पहले सिवा कुछ बक कभी काम न देना।

मायना

एक बार मुझे सॉर्टेड शू की बिट्टी मिली और इसी ओर बसबाजारों में मेरे सड़के हरि साहके जेल जानेका सार समाचारपत्रोंमें छपा। इससे मुझे निश्चयपूर्वक प्रसन्नता हुई। मुझे यह पता भी अच्छा नहीं लग रहा था कि जब बहुत-से भारतीय मिरकास हो गये हों तब ये पेट बेटा और मैं बेकरारे बाहर रहें; तभी यह तार था गया। कुमारी पोलक इस सम्बन्धमें मेरी भावनाको समझती है इसलिए उन्होंने मुझे यह खबर देते हुए बपाई थी। यद्यपि मैं जानता हूँ कि इससे उस बालकको कष्ट होना फिर भी मैं उस खबरका स्वागत करता हूँ। इसमें छका हित है भेद भी हित है और जातिकी सेवा है। यह ईस्वरकी आज्ञा भी है। नायपन। तुम भी तो बालक ही थे। तुमने अपने देशके लिए अपनी बलि दे दी। मैंने इसमें तुम्हारे परिचारका कसबा माना। मैं यह मानता हूँ कि तुम मरकर बमर हो गये हो। अब मैं अपने बेटेके जेल जानेपर क्यों पचता हूँ? उसके साथी फिर जेल चले गये हैं। इसमें उनका कोई स्वार्थ नहीं है। फिर भी वे बेकरार कुत्त भोग रहे हैं। मैं यह नहीं मानता कि इस कुत्तके बचके कुछ न मिलेगा और हमारी प्रतिभाके अनुसार काम नही होगा। मुझे आशा है कि कोई भी भारतीय ऐसा माननेकी काबलता नहीं दिखावेगा।

इंडियन आफ्रिकी भारतीयोंसे

मैं समस्त इंडियन आफ्रिकी भारतीयोंसे कहता हूँ कि यह सड़ाई केवल ट्रान्सवालकी नहीं है। यह आप सबकी है। इसलिए आप सब सड़नेवालोंको पूरी हिम्मत बँधायें। श्री अब्दुल कादिर और श्री आगाब भायात यहाँका रंपडंग बेककर गये हैं मैं उनसे कहता हूँ कि लोगोंको यथाशक्ति उत्साहित करना उनका कर्तव्य है। इस सड़ाईमें सभी मदद कर सकते हैं कोई अपने सम्बन्धों और अपने भगसे और कोई जेल जाकर। मुझे आशा है कि सभी ऐसा करेंगे।

हमारे रवाना होनेमें एक ही हृदय बाकी है। और इस बीच बहुत सारे काम निकटाने हैं। छपा बिबरन तैयार है उसे अभी सब जगह भेजना है। उसके साथ पत्र भी लिखा है। यह इस प्रकार है

आशा है, यह पत्र बसबाजारोंमें प्रकाशित किया जावेगा।

इंडियन यूनिफन घोसाइटी

इंडियन यूनिफन घोसाइटीकी बैठक कमिश्नरको हुई। इसमें भारतीयों और यूरोपीयोंके सामने सड़ाईकी पूरी स्थिति रखी गई। इसका संक्षिप्त समाचार स्वामीय बसबाजारोंमें छपा है।

१. इंडियन आफ्रिकी आफ्रिकी (१३) बसबाजारों (१) पत्रा १७५५।

२. सारे पत्रोंके लिए देखिए "पत्र बसबाजारोंको" पृष्ठ ५२०-२२१।

छन्मके भारतीयोंकी समा

गठ मनसबदारकी यहाँ रहनेवाले भारतीयोंकी समा हुई थी। इस समामें बाबीस-पचास भारतीय बाने होंगे। उनके सामने श्री हाबी हबीब थी आनजिया और मीने भाषण बिये। मीने भाष की कि कुछ भारतीय स्वयंसिबक बनें और बर-बर बाकर एक सद्दानुमति-पत्रपर^१ हस्ताक्षर करायें। जोन पत्रपर हस्ताक्षर करनेके साब-साब बितना चाहें उठना पैसा भी वें जो कमसे-कम एक आरिब हो। ऐसे हजारों हस्ताक्षर प्राप्त हो सकते हैं। उनका बसर ब्रिटिश सरकार और ब्रुसरोपर हुए बिना न रहेगा। इस मीगको स्वीकार करके लगभग २ भारतीयोंने तत्काल ही अपने नाम बिये। यह एक बड़ी बात है। इसकी बड़ें गहरी जा सकती है। और यदि सब स्वयंसिबक पूरी ईमानदारीसे काम करें तो बहुत बड़ा काम हो सकता है। ऐसी हाकूमतें यदि एक ओर भारतमें और दूसरी ओर ईन्कैडमें बोरोंसे काम बसे और हम ट्राम्पवाकमें जस्ताह बगामे रलें तो बहुत दीप्त सज़ाईजा बस्त हो सकता है। बाबमें कुछ यूरोपीयोंके नाम भी मिळे। कुछ भिजाकर ये नाम मिळे हैं

सर्वथी थी सी बर्मा एच पी बर्मा एक जाकन बे पी पटेक के बमीर एन० डारकाबास बी सी बोप एच एम बोस बी एच खान अब्दुल हक एच मंग ए हाकिमी बी घझय एच बार बिलिमोरिया बी सिह, बी प्रसाद हुसेन बाबर ए एच गुप्त बार बी मूषिक, एम के बाबाब पी बगर्बी ए मीन और एच० ई बीजमैत। निम्न महिछाएँ भी हैं कुमाठी एक मिटरबोटम श्रीमती बी गाय श्रीमती पोचक श्रीमती हुबे कुमाठी हुसेन और श्री पोचककी पुर्बिया।

बलवार निकालनेका सुझाव

इसके बजाया ऐसा बिचार भी है कि बलवार सज़ाई बलती है तबतक यहाँ एक छोटा-सा बलवार निकाला बाने। इस बलवारमें बक्षिब बाफ्रिका और भारतसे प्राप्त समा बारीका सार छाना बाने और यह बलवार अनेक स्वार्गोंमें बेबा बाने। ऐसा निबधय किया गया है कि यह तभी निकाला बाने जब इसका लार्थ यहाँके बीरे उठायें। इसको बलाना पीरोंका कर्तब्य है। और उन्हें ऐसा करना भी चाहिए। रिक्कत यह जाती है कि श्री रिक्कको स्वनी फुरखत नहीं है और इनकी तरह काम करनेबाधा कोई ब्रुसरा इस समय है नहीं। उनके मतहत्य काम करनेवाले बहुत मिलते हैं। लेकिन बकरत किची ऐसे ब्यक्तिकी है जो अपना वार्य बकत उधमें लपा दे। ऐसा ब्यक्ति मिळे तभी बलवार निकल सकता है।

भापरकी सहायता

बन्तमें प्रख्यात पावरी थी भावरने जो कुछ समयके लिए जोहानिसबर्न बाने बे अपने लार्थसे एक बामपार्टीका आयोजन किया है। इसका उद्देश्य यह है कि लोग हम बीरोसे मिळ सके। पार्टीमें जहाँने कमसप ९ बोरोंको बुलाया है। उधमें सब मामला समझाया बानेगा। समापोहू सूफवार, १२ ठाटीसको होगा। जब बारीं ओर ऐसा सब ही रहा है। किन्तु, इसका बसर कितना होगा यह हमारी हिम्मतपर निर्भर है। थी भापरके बन्तिम सब ये बे ' ' हम

१ डेक्लर सिक्क डीनेक ।
 २ डेक्लर " मन्त्र: निर्दल समामे, " एड ५१५-५ ।
 ३ बरीबी २४ सिक्कको बीरारके बीज्जवर १२०० मन्त्रत मिळे दे ।

(कपड़े) आपकी बहुत सहायता नहीं कर सकते। आपको कष्ट सहने होंगे आपको जेब बाता पड़ेगा। ऐसा करनेपर और जब मारत जायेगा तभी इसका अन्त होगा। आप याद रखिए कि इसका बिना कुछ नहीं होगा। मैं तो जो मुझसे हो सकेगा करूँगा ही। यह कहना ठीक ही है। दूसरे लोग हमारे लिए कुछ कर देंगे यह मान बैठना भ्रमपूर्ण है।

हाँ कुमारी बोधी और श्री महस्करने सड़ाईके लिए तीन-तीन पीड बिसे है। यी मोकुसमाई बसामने १ बिबियकी रकम भेजी है। डॉ बोधीने [इंडियन ओपिनियनके] सम्पादकको पत्र भी लिखा है।

[गुजरातीसे]

इंडियन ओपिनियन ४-१२-१९ ९

३४१ सन्धन

[मन्बर ८ १९ ९ के पूने]

शिपोंके मताधिकारके लिए आन्दोलन करनेवाली महिलाएँ

मुझे तो समता है कि इस समय सिव्वाँ मताधिकार देनेके लिए जो सड़ाई बला रही है वह हमारे लिए अधिकसे-अधिक उपयोगी है। उसका महत्त्व बर्तमान आफ्रिका और भारत दोनोंके लिए है। हमें उनकी बहुत-सी बातोंका अनुकरण करना चाहिए, और बहुत-सी बातें छोड़ देनी चाहिए। वे हमारी ही भाँति मानती हैं कि उनके हक मारे जा रहे हैं। उनको [पुस्वोधि] हीन माना जाता है। उनकी सड़ाई अन्धे बरोंसे बच रही है। उनमें भी दो परत हैं—एक कमजोर और दूसरा ताकतवर। उनमें और हममें अन्तर यह है कि वे सत्याग्रही नहीं हैं बल्कि सरीर-बककी पूजा करनेवाली हैं।

उनकी बीरता उनकी एकता उनकी बल-स्थापन करनेकी शक्ति और उनकी बुद्धिमत्ता सभी तारीफ करने और अनुकरण करने लायक है। वे पत्थर फेंकती हैं दूसरोंको कष्ट देती हैं और मर्यादाका अतिक्रमण करती हैं—ये सब छोड़ने लायक है। ऐसी तीन बटनाएँ अभी हालमें हुई हैं। मसेस्टर बेल्गेम एक स्त्रीको बबरबस्ती खाना खिलाया जा रहा था। इसलिए उसने ऐसी शक्ति की बिससे [कोठरीका] बरबाबा खोला ही न जा सके। इसपर अति कारिबोने उसके ऊपर बन्धेस पानी छोड़ा उसने फिर भी बरबाबा नहीं खोला। इस स्त्रीकी बहादुरी सच्ची बहादुरी है लेकिन उसने उसका अनुचित उपयोग किया। जो कष्ट सहन करनेके लिए बैठे हैं, उनसे ऐसा होना ही नहीं। इसमें उसका उद्देश्य बेल्गेम से छूटना था। वह पूरा हो गया लेकिन इससे सिव्वाँको अधिकार तो नहीं मिला। जब बन्धेसे पानी छोड़नेकी बात फैली तब उस स्त्रीको रिहा करनेका हुक्म दे दिया गया।

बहुते एक हलकेमें कॉमन्स समाके लिए सदस्यका चुनाव किया जा रहा था। जो सिव्वाँ मतदानपत्रोंको खराब करनेके इराबेसे निकलीं। उन्होंने फानब जमानेका ठपान बपने

१ अभी से सच्ची ही बन्धेकी बरतें २-११-१९ ९ के इंडियन ओपिनियनके गुजराती कम्प्रीमे बनी थीं।

साथ से लिखा था। वे किसी व्यक्तिसे मतदान-केन्द्रमें घुस गईं और वहाँ उन्होंने वह ठेका बन्देज दिया। उससे ज्यादा काम तो साथ नहीं हुए। लेकिन उनमें से एक स्त्रीकी हरकतसे एक अधिकारीकी आँसुको बहुत मुकसान पहुँचा। यह बहुत बौद्धा काम है। उसकी निम्ना सभी कर रहे हैं। फिर भी उनके संग्रह इसका बाविल अपने ऊपर से लिया है। इन स्थितियोंपर अब मुकदमा चलाया जा रहा है।

एक बमह जो डॉक्टर परबख्सी आता लिखाया था उसके धरके किवाड़ोंके काँच तोड़ दिये गये। इसका उद्देश्य डॉक्टरकी सम्पत्तिको हानि पहुँचाना ही था। इसमें डॉक्टरका क्या कमूर था? वह तो अधिकारी था इसलिए उसने वह काम अपने जिम्मे लिया था। वे सब [निस्सन्देह] हिम्मतके काम हैं लेकिन सिर्फ हिम्मतसे नहीं अधिकार नहीं मिलते। हिम्मतका उपयोग अच्छा होना चाहिए।

मुझे हालमें ही मालूम हुआ है कि मद्रासिकारका आन्दोलन करनेवाली स्थियोंके चार बलवार निम्नलिखित हैं— तीन साप्ताहिक और एक मासिक। उनके संगकी एक छालाने निश्चित अवधिसे पहले ही ५ पौंडकी निश्चित रकम इकट्ठी कर ली इसलिए अब वे १ * पौंड इकट्ठे करनेका विचार कर रही हैं। उनका अपना बैंक अलग है और उनका पत्रोंका अपना चित्रकार भी अलग है। संगकी शाखाओंकी बैठकें सप्ताह भर कहीं-कहीं होती ही रहती हैं। सभी मद्रासिकार मिलनेकी कोई आशा नहीं लेकिन वे हार नहीं मान रही हैं। अकली हो जा रही हैं। उनका वह उत्साह मामूली नहीं है।

बमट

कॉमन्स समामें बमटपर छ-महीने तक बहुत बर्बादी। अब बमटका बिल मंजूर हो गया है और सोमवारको साईं-सामें जायेगा। उसपर बहुत विवाद होनेकी सम्भावना है। बहुत-से लोगोंका खयाल है कि कॉर्ड-सभा बमटको नार्मजूर कर देगी। ऐसा हुआ तो जनवरीमें गये चुनाव होने। बहुत-से लोग यह मानते हैं कि अगर ऐसा होता तो भी उबार बल ही जीतेगा। इसीबद्दे काय टिकहाल तो इस काममें व्यस्त है। उनको दूसरी बात पसंदी ही नहीं क्योंकि कॉमन्स सभा और कॉर्ड-सामें बड़ा संघर्ष चल रहा है। यद्यप्य एक दूसरेको गालियाँ देते हैं और एक-दूसरेको झूठ मानते हैं। बस इतनी ही कसर है कि मारपीट नहीं करते। मारपीट नहीं करते तो मतमनसाहूतके कारण नहीं बल्कि इसलिए कि उस उल्लेख दोनोंमें से किसीको भी फायदा नहीं। लेकिन यह बात तो बिस्मूक साफ है कि कोई भी बल अपना बचका टप कटानेके लिए किसी तीसरेको न बुलायेगा।

[मुम्बयीसे]

इंडियन ओपिनियन ४-१२-१९९

३४४ पत्र लॉर्ड एंस्टहिलको

[सन्धत]

नवम्बर १ १९९

लॉर्ड महोदय

आपके आजके पत्रके लिए मैं बहुत आभारी हूँ। चूँकि आप लॉर्ड-सभाकी जगती बहुसंख्यमें मॅटकी^१ आनकारीका उपयोग करना चाहते हैं इसलिए मैं इस बातसे बिल्कुल सहमत हूँ कि उस मॅटका बिबरन लॉर्ड्स के पास पुष्टिके लिए भेज दिया जाने या ।^२

यह आनकर हर्ष हुआ कि आपके पुत्रके स्वास्थ्यमें सुधार हो रहा है।^३

आपका आदि

टाइप की हुई बफारी संघेजी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एस एन ५१७२) से।

३४५ पत्र लिओ टॉस्टॉयको

सन्धत

नवम्बर १ १९९

मिय महोदय

"एक हिन्दूके नाम पत्र के सम्बन्धमें और अपने पत्रमें" मैंने जिन बातों की चर्चा की थी उनके सम्बन्धमें आपने जो रिविस्टर्ब पत्र भेजा है उसके लिए मैं नम्रतापूर्वक आपको धन्यवाद देता हूँ।

आपके विरसे हुए स्वास्थ्यका समाचार सुन चुका था इसलिए आपको कष्ट न देनेके आकांक्षे और यह भी जानते हुए कि धन्यवादकी किञ्चित् अभिव्यक्ति केवल अनावश्यक औपचा रिकता होगी मैंने आपको इस पत्रकी प्राप्तिकी सूचना नहीं की। किन्तु भी एम्बर मॉडने जिनसे मेरी मॅट अब हो पाई है मुझे आपसत किया कि आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है और पत्र-संश्लेषणका कार्य तो आप प्रतिदिन सुबह निरपवाद रूपसे और नियमपूर्वक करते ही हैं। यह समाचार पाकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ और उछले मुझे उन बातोंके विषयमें जो मेरे आकांक्षे आपकी शिक्षाके अनुसार अत्यन्त महत्वकी हैं आपके छात्र और अधिक चर्चा करनेका प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है।

१ रेडिफ " लॉर्ड्स के नाम मॅटका पत्र " पृष्ठ ४०६-२१ और परिशिष्ट ३३।

२ लॉर्ड्स बफारी प्रतिके कुछ अन्य मिय लो है।

३ लॉर्ड्स रिविस्टर्बके ० अंककारकी अर्थसूचीकी पत्र ही थी कि कथन यह कथना दीवार ही था है, और एतद्विषय कर्तव्य लोके लिखे किन्तु अर्थसूचीके नाम विहित मंत्र लक्षित कर दी थी।

४ रेडिफ " पत्र : किना रीकॉर्डकी " पृष्ठ ४४३-४५।

इसके साथ मैं आपको अपने जीवनके सम्बन्धमें एक मित्र ह्राय लिखित पुस्तककी एक प्रति भेज रहा हूँ। ये मित्र अंग्रेज है और इस समय दक्षिण आफ्रिकामें रह रहे हैं। पुस्तक मेरे जीवनके उस पहलूपर है, जिसका वर्तमान संवर्षसे बहुत पहलू सम्बन्ध है—उस संवर्षसे जिसे मैंने अपना जीवन समर्पित कर दिया है। चूंकि मैं उसमें आपकी सक्रिय रुचि और सहायगुणवृत्तिके लिए आतुर हूँ मैंने ऐसा मागा है कि आपको यह पुस्तक भेज देना अनुचित न होगा।

मेरी छपमें ट्रान्सवालमें भारतीयोंका यह संवर्ष आधुनिक युगका सबसे महान् संवर्ष है। कारण उसमें साम्य और उस साम्यकी प्राप्तिके लिए स्वीकृत साधन—दोनोंको आदर्श बनानेका प्रयत्न किया गया है। मैं ऐसे किसी दूसरे संवर्षको नहीं जानता जिसमें संवर्षकारियोंको संवर्षके अन्तमें कोई वैयक्तिक लाभ न हो और जिसमें उससे प्रभावित व्यक्तियोंमें से ५ प्रतिशतने सिर्फ एक सिद्धान्तके लिए कठिन कष्ट और संकट झेले हों। इस कड़ाईको मैं जितनी प्रसिद्धि देना चाहता था उतनी नहीं दे पाया हूँ। आज आपकी बात पढ़ने और सुननेवालोंकी संख्या दुनियामें कदाचित् सबसे ज्यादा है। यदि आपको श्री डोकरी पुस्तकमें दिये गये तथ्योंसे सन्तोष हो और आप यह समझते हों कि मैंने जो परिचय निकाले हैं वे तथ्योंकी दृष्टिसे उचित ठहरते हैं तो क्या मैं आपसे जिध तरह भी आप ठीक समझें इस आन्वोपनको लोकप्रिय बनानेके लिए अपने प्रभावका उपयोग करनेका अनुरोध कर सकता हूँ? यदि यह आन्वोपन सफल होता है तो वह न सिर्फ अथर्व असुर और विरोधपर बरस सत्य और प्रेमकी विजय हीनी बल्कि बहुत सम्भव है कि वह भारतके लाखों-करोड़ों निवासियों और दुनियाके दूसरे हिस्सोंमें बसलवाले परबन्धित लोगोंके लिए एक अनुकरणीय उदाहरण होया और हिंसाकी नीतिमें विश्वास करनेवाले हकोंका बल तोड़नेमें कससे-कस भारतमें तो वह बबरन ही बहुत सहायक सिद्ध होया। यदि हम अपने प्रयत्नमें अन्ततक डटे रहते हैं और मेरा खयाल है कि हम डटे रहेंगे तो उसकी अन्तिम सफलताके विषयमें मुझे तनिक भी संशय नहीं है और आपने जो रास्ता चुनाया है उसमें आपके प्रोत्साहनसे हमारे अपने निरन्तरको और अधिक बल मिलेगा।

प्रश्नके समाधानके लिए जो समझौता-वार्ता चल रही थी वह लगभग विफल हो गई है और मैं अपने साथीके साथ इसी सप्ताहमें दक्षिण आफ्रिका चला जाऊँगा और वहाँ जेल जानेकी कायदा करूँगा। मैं यह भी बता दू कि सीमावर्षसे मेरा लड़का भी इस संवर्षमें मेरा साथ दे रहा है वह आजकल छ माहकी उमर कीवकी उमर भोग रहा है। इस संवर्षके दौरान यह उसकी चौथी जेल-यात्रा है।

यदि आप इस पत्रका उत्तर देनेकी कृपा करें तो पत्र बॉक्स १५/२२ जोहानिसबर्ग ४ आ के पतेपर भेजें।

आपका आदि
मो० क० गांधी

महाराजा खण्ड १ में दिये गये मूल अंग्रेजी की और टाइटल की हुई बल्गरी अंग्रेजी प्रतिकी फोटो-कॉपी (एच एन ५१७१) है।

१ डोक-सिद्धि गांधीजीकी जीवन-काल के गांधी: दश दशक दक्षिण आफ्रिका में।

३४६ पत्र एष० अस्टको

कम्पन

नवम्बर १ १९९

मिय भी बस्ट'

सरकारी पत्र संख्या ३४९२४/१९९ की याद बिलाने हुए क्या मैं आपको यह कष्ट दे सकता हूँ कि इस पत्रमें मेरे २४ अयस्त्रके जिस पत्रका उल्लेख है उसकी एक नकल आप मुझे भेजें? ऐसा लगता है कि मेरे मुहरिरस उसकी कार्रवाय-नकल नहीं गुम गई है।

आपका वारि
मो० क० गांधी

भी एष अस्ट
कॉमोनियस ऑफिस
बाइनिंग स्ट्रीट
[कम्पन]

कॉमोनियस ऑफिस रेकर्ड्स २९१/१४२

३४७ पत्र उपनिवेश-उपमन्त्रीको

[कम्पन]

नवम्बर १ १९९

महोदय

मैं लॉर्ड क्यू का ग्याज रजुनसे मिले नीचेके तारकी ओर-धारर आकर्षित करता हूँ कक भारी सार्वजनिक लघा हुई। समाजके भारतीय चीनी बर्मी सभी वर्ग शामिल। द्वास्तबाल एशियाई कानूनकी ओरधार निम्ना। अतीम अपमान दुर करने और बर्मी एहनबाले एशियाइयोंके साथ भविष्यम दुर्भ्यबहार बन्द करनेके लिए साम्राज्य-सरकारसे पौरत दखल देनपर और। मौजूदा शिकायतें दुर होतक बलिम आधिकारके लिए भारतीय नजदूरोंकी बर्ती बन्द करनेपर भी और। द्वास्तबालवासी एशियाइयोंके दखल

१ हार्मिंग क्यू (१८५४-१९१९); लखनऊ कन्फिडेंस-कम्पनी १९ ०-१६ ।

२ रेडियर "नन लॉर्ड क्यू के निजी लखनौ" पृष्ठ ३९५ ।

प्रस्ताव करते हुए दूसरे भी प्रस्ताव पास। जनकी बकरलें पूरी करनेके लिए चन्दा इन करनेके लिए समिति बनाई जा रही है। बहुत रोव उल्लाह दिखाया गया।

जापका खा
मो० क० ग

कमोनिवक मॉक्सि रेकर्ड्स २९१/१४२ और टाइप की हुई बपटरी अंग्रेजी प्रॉ
फोटो-नकस (एच एन ५१७४) से।

३४८ मेट 'डेन्डी एक्सप्रेस' के प्रतिनिधिको'

[कम्बन

नवम्बर १ १९

जापतिवक एक्सप्रेस कानूनको रद्द कर देनेकी बात कहकर बनरस स्मट्स एक न
बाये बड़े से। उन्होंने यह भी कहा था कि बहूतक इस कानूनके अन्तर्गत छि
मास्तीयोके बर्को प्रबल है, के एक सीमित संख्यामें भारतीयोंको स्थायी निवासके प्रया
देनेको तैयार है। बात बहूतक पड़ोसी है बहूतक तो संतोभवक है लेकिन हम।
एकमात्र सिद्धान्तके लिए लड़ रहे हैं, उसे तो यह स्पर्ध भी नहीं करता। वह सिद्धान्त
प्रवासके सम्बन्धमें कानूनी समानताके अधिकारका। बनरस स्मट्स जो-कुछ देनेके लिए तै
है, वह हमारा सत्याग्रह रोकनेके लिए अपर्नात है। भी हाथी हवीं और मैं फौरन
ओहानिसबर्द आपस जा रहे हैं। मन्दा करम सापब मह हौया कि हम दोनोंको द्वास्तबात
छीमापर गिरफ्तार कर जिमा जायेगा लेकिन लड़ाई उसी उत्साहसे चलती रहेगी। जब
हम लोगोंने भारतसे वा बक्षिण आधिकारके बाहरके किसी स्नागसे चन्दा नहीं माया। धी
जब चन्दा माँगना आरम्भ हो गया है क्योंकि जब हमारे साधनोंपर बहुत बोझ बढ़
है और उन बर्बाद परिवारोंकी संख्या बहुत बढ़ गई है, तिनका भरण-पोषण हमें क
पड़ता है। हमने भारतीय और अंग्रेज स्वयंसेवकोंका एक एक तैयार किया है। यह
हमारे इस बैठके जाते ही कम्बन और बाहरी प्रात्योंमें बर-बर आकर एक स्मरणपत्रके
कोर्गेसि हस्ताक्षर देना शुरू कर देना। यह स्मरणपत्र द्वास्तबात और कम्बनके अधिकारिण
नाम भेजा जायेगा।

[अंग्रेजीसे]

इंडिया १९-११-१९१९

१ मेटका कर विवरण १०-११ १९०९ के डेन्डी एक्सप्रेसमें बना था और वारमें इंडियामें क
दिना गया था।

प्रिय प्रोफेसर जीबके

मद्यपि श्री पोलकके द्वारा मुझे आपका यह कृपापूर्वक सन्देश मिला गया था कि मैं आपकी प्रोफेसर कहकर सम्बोधित न करूँ। तथापि मैं आपके प्रति यद्वाके कारण इससे ज्यादा अपनेपनकी भाषा न अपना सकूँगा।

अपने पिछले पत्रमें श्री पोलकने मुझे लिखा है कि अधिक काम और चिन्तासे आपका स्वास्थ्य बिगड़ गया है और आपकी स्पष्टधारितासे आपकी ज्ञान बोधिममें पड़ गई है।^१ मैं तो यह सुखान रूपा कि आप ट्रान्सवाल जा जायें और हमारे साथ काम करें। मेरा खयाल है कि ट्रान्सवालका संघर्ष हर वर्षमें राष्ट्रीय है। यह अधिकतम प्रोत्साहनके योग्य है। मैं उसे आधुनिक युद्धका महामतम संघर्ष मानता हूँ। मुझे इसमें रंघमात्र भी सम्बन्ध नहीं है कि यह जन्तमें सफल होया। परन्तु यदि यह जन्ती सफल हो जायेगा तो इससे भारतमें हिंसात्मक आन्दोलन समाप्त हो जायेगा।

मैं वहाँ अपने देशवासियोंसे बहुत जुलफर मिला-जुला हूँ और मुझे उतमें आपके प्रति तीव्र कटुता दिखाई देती है। क्याकारण कोनोंका जयाक यह है कि कोई भी सुधार करवानेके लिए हिंसा एकमात्र उपाय है। हम ट्रान्सवालमें यह दिखानेका प्रयत्न कर रहे हैं कि हिंसा अर्थ है और उचित उपाय है स्वयं कष्ट सहना बर्बाद जनाक्रमक प्रतिरोध। इसलिये यदि आप सार्वजनिक रूपसे यह घोषणा करके ट्रान्सवाल जायें कि आप हमारे बुद्धिमें भाव लेना और इसलिये साम्राज्यके नागरिककी हैसियतसे ट्रान्सवालकी सीमाको पार करना चाहते हैं तो आपके इस कार्यसे आन्दोलनको विश्वव्यापी महत्त्व मिलेगा संघर्ष बरबी समाप्त हो जायेगा और आपके देशवासी आपकी और बन्धी तरह जान जायेंगे। सम्भवतः यह पिछली बात आपकी दृष्टिमें महत्त्वपूर्ण न हो परन्तु उन देशवासियोंकी दृष्टिसे मैं इसे महत्त्वपूर्ण मानता हूँ। यदि आप वहाँ जायें और आपको पकड़ा न जाये तब मैं स्वतन्त्र रहूँ तो मैं आपकी सेवा करना अपना बहुत बड़ा सम्मान समझूँगा। यदि आप गिरफ्तार कर लिये जायें और जेल भेज दिये जायें तो मुझे प्रसन्नता होगी। यह मेरी मूछ हो सकती है किन्तु मुझे तो कपता है कि यह एक ऐसा कदम है जो भारतकी काठिर उठाने कायक है। मैं इस बातको बहुत ज्यादा महत्त्व करता हूँ इसलिये मुझे यह सुखान देनेके लिए क्षमर किया

१. पोलकने अपने २. डिप्लमके जन्ती गर्वीयको दणित किया था कि श्री जीबके से "मदुर नीतवादि" पत्रमें है, और वे और बात यह सुखेकी कन्ती जन्ती तरह बन्ते है कि इन नीतवादिपत्रालीकी कोरे कपत नहीं है।"

२. पोलकने १४ अक्टूबरकी लिखा था: "मैं जान लेतीं कि वेपारे गोखलेकी लिखी एककीक छात्री कपती है। कन्ति छुसे (१२५ कन्ते) कपता है कि कन्ते पत्रमेंले दुकता और वेपानी दी है कि कन्ती कन्ती पत्रमें है।"

बावे कि ट्रांसवालके प्रसन्नको काप्रेसके मंचपर प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए और आप इस संपर्कमें मान लेनेकी घोषणा कर देंगे तो इसके अधिक प्रभावशाली मन्त्र कोई बात नहीं हो सकती।

मैंने यह पत्र विष्णु-बाबाओंके बीच लिखा है। इसलिए जो मैं चाहता था वह सब वहाँ स्पष्ट नहीं कर सका हूँ। मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि आपके प्रति अन्धके कारण ही मुझे यह मुझसे देनेकी प्रेरणा मिली है। मैं आपको दक्षिण आफ्रिकामें अपने देशवासियोंके बीचमें पूर्णता प्राप्त करते हुए देखना चाहता हूँ। यहाँ आपके सम्बन्धमें कोई घम नहीं होगा और आपका इतना मान होगा जितना और कहीं नहीं हो सकता।

क्या आप मुझे बोहानिसवर्न बॉक्स १५२२ के पतेपर उत्तर देनेकी कृपा करेंगे?

आपका आदि,
मो० क० गांधी

गांधीजीके स्वामरोंमें मूक अंग्रेजी प्रति (सी इन्सू १२४) से।
सौम्य सर्वेस ऑफ इंडिया सोसाइटी पूना।

३५० पत्र एच० एस० एल० पोलकको

[कल्पन]

नवम्बर ११ १९१९

प्रिय हेनरी

मैं आपको एक बहुत बड़ा पत्र लिखना चाहता हूँ परन्तु समयमें नहीं आता कि कैसे लिखूँ। मुझे आपको बहुत-सी बख्शत महत्त्वपूर्ण बात बताानी है परन्तु मेरे पास जो समय है उसमें मैं वह सब अच्छी तरह नहीं कह सकता। फिर भी पहली बात जिसकी मैं चर्चा करना चाहता हूँ मोडकी स्थिति है। मैंने उससे केवल एक बार, हैलीमें कहा था कि क्या वह दक्षिण आफ्रिका जाना चाहती है और वह हैली हाजी हबीबकी एक बातपर की गई थी परन्तु स्पष्टतः उसने इस सम्बन्धमें बहुत सम्भीरतापूर्वक विचार किया है। कल शाम वह अपने-आपको रोऊ न सकी और उतन मुझे बताया कि वह दक्षिण आफ्रिका जान और आम्बोलनके निमित्त कार्य करनेके लिए बहुत व्याकुल है। इसके मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। फिर भी यह विस्तृत सत्य नहीं है क्योंकि मुझे बोझा अचम्भा तो हुआ ही। कारण मुझे कुछ ऐसा समझा था कि वह जित स्वानपर है वहाँ स्थायी रूपसे जमी है। यह नहीं कि वह स्वान मुझे जरा भी प्रिय है, किन्तु वर्तमान स्थितियोंमें वह मुझे सर्वोत्तम प्रतीत हुआ है। उसका स्वभाव बहुत मधुर है। मेरा समझ है कि उसमें महान आत्मत्यागकी क्षमता है और वह कार्य करनेके लिए इच्छुक है परन्तु मैं नहीं जानता कि पीनिस्नका जीवन उसको कहीं तक अनुकूल पड़ेगा। मेरा सुझाव यह जवाब है कि यदि वह केवल अपनी पीथिका अजिन करनेके लिए दक्षिण आफ्रिका जाना चाहती है तो इनका कुछ काम नहीं होगा। परन्तु यदि वह एक आदर्शके लिए कार्य करना चाहती है तो उतमें इसके लिए

सामर्थ्य और साहस होता चाहिए। मैंने उसको स्थितिके सम्बन्धमें जो मैं बता सकता था वह सब बता दिया है। मैंने उसको बड़ी प्रतिकूल पङ्कनाली सारी बातें जितनी अच्छी तरह मैं बता सकता था उतनी अच्छी तरह बता दी है। मैंने उसको यह भी कहा दिया है कि उस कार्यमें आर्थिक-साम नहीं है। इसके अतिरिक्त मैंने उसे बताया कि स्वयं मिलीको फीनिक्सके जीवनसे मेक बैठानेमें कठिनाई होती है। मैंने उसे जितनी जानकारी दे सकता था उतनी-उसको मिला गई है। मैंने उसको यह भी बताया है कि मैं कोई निश्चित सम्मति देनेकी स्थितिमें नहीं हूँ। उसे सबसे पहले पिताजी और माताजीकी अनुमति प्राप्त करनी चाहिए और फिर लैडीकी। जब उसे इन तीनोंकी अनुमति मिल जाये तब उसे अपनी स्थिति आपके सामने रखनी चाहिए और अन्ततः उसे मिलीकी सलाहपर निर्भर करना चाहिए। मैंने उससे यह भी कहा दिया है कि मेरे दृष्टिकोणका वह कितना ही सम्मान करे और उसे कितना ही पसन्द करे, फिर भी मैं अपने-आपको एक स्त्रीकी समस्त भावनाओंको समझनेके अपेक्ष्य समझता हूँ और जब इसको मिलीकी प्रेमपूर्ण सहायता और सलाह मिल सकती है तब वह मिलीके निर्णयपर निर्भर रहनेसे अधिक अच्छा और कुछ नहीं हो सकता। उसने मुझे कहा है कि वह परको प्रति मास ५ पौंड मेहनती बुनाइस चाहती है। मैंने उसको कहा है कि वह असम्भव नहीं है परन्तु मुख्य विचारणीय बात यह है कि वह फीनिक्सके जीवनको ठीक-ठीक समझ और पसन्द कर सकेगी या नहीं। मैंने उससे यह भी कहा है कि ऐसा कोई निश्चित कार्य नहीं है जो उसे सौंपा जा सके। फीनिक्समें उन गृहकार्यसि सेकर, जिन्हें छोटे-छोटे समझा जाता है, बच्चोंको पढ़ाने और उनके अरिक्त निर्माण करनेतक कुछ भी काम हो सकता है। अब मेरा खयाल है कि मैंने आपको सब-कुछ बता दिया है। वह आपको पूरी-पूरी बातें लिखेगी। आप उसे मेरी अपेक्षा अधिक अच्छी तरह जानते हैं और उसके वैयक्तिक कल्याणके लिए जो मार्ग सर्वोत्तम समझते हैं उसे उसको बताना सक्ते हैं। कुछ क्षम्य बरेलू मामलोंके सम्बन्धमें मैं आपके साथ विचार-विमर्श करना चाहता हूँ। अगर मरीच पढ़नेसे एक अक्षय न मिला तो आपको प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। परन्तु मेरी समुद्र यात्राका कार्यक्रम इतना व्यस्त है कि उन बरेलू मामलोंपर, जो तात्कालिक महत्त्वके नहीं हैं सम्मेलन विचार न कर पाऊँगा। मैंने आपको बहुत विस्तारसे लिख रही है और उसने अपना पत्र मुझे बिलालेका बचन दिया है। और यदि उन पत्रका पढ़नेके बाद मुझे कुछ और सुझाव देने होंगे तो मैं फिर लिखूँगा। मिली वेस्टमिन्सने यहाँ घुम्नारको आयेगी और मैं इस सम्बन्धमें उनसे और यदि माताजी और पिताजीसे मिलनका अवसर मिला तो उनसे भी भली भाँति विचार-विमर्श करूँगा। मिली होटलमें छोपेगी "संक्षिप्त आया करता हूँ कि मैं उनके साथ इतमीनानसे लम्बी बातचीत कर पाऊँगा। स्वभावतः अब हम बोहानिमर्शकी अपेक्षा यहाँ मैं उनसे असय बहुत कम मिलता था एक-दूसरेके बहुत करीब है क्योंकि एक-दूसरेसे ज्यादा मिल पाये हैं। बास्को और वाजनी बहुत ही अच्छे रिश्ते हैं। मरी अब भी यह प्य है कि मुन्दरतामें बास्कोकी बराबरी करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। वह दिनपर-दिन अधिकारिक हटी होना जा रहा है। वह निश्चय ही बहुत मनमोही है और आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि उसकी शिर्महमेके साथमें पूरा आनंद मिलता है। लैडी मेरे पास बैठी हुई हैं। उनमें मुझे पार दिनापा है कि मैं आपको वाजनीके सम्बन्धमें कुछ बताने बिना यह पत्र समाप्त न करूँ। उसकी ऊपर की कुल्पता मिट रही है और वह अब बोलने लगा है, य समाचार तो पुराने हो गये हैं। परन्तु कराबिन् आपको वह

माकूम नहीं है कि पड़का नाम जिसे उसने बोझना सीखा सीखा था। सीखी अपने कार्यालयमें पायर बन्धी कार्यकर्मी होगी। वह एक आदर्शवीय महिला मताधिकार-आन्दोलनकर्मी होनेका दावा करती है और किसीसे सिर्फ इस बातसे हार नहीं ला सकती कि वह पुरुष है। मैं उसे निरन्तर ही प्रमाणपत्र दे सकता हूँ कि जब वह बास्को और ब्राउनीके साथ होती है तब उसके मुख प्यासासे-प्यासा सिल बाते हैं। जब भी कोई ऐसी स्त्री जिसे जो बन्धोंके प्रति उत्तम व्यवहार करती है तब आप जानते ही हैं उसके बारेमें मेरी सम्मति कितनी बन्धी होती है।

इन पत्रको लिखानेके बाद मेरी सैडीसे मेंट हो गई है। कल्पना तो कीविए, सीखी कह रही है कि वह भी फीनिक्स जानेके लिए उत्सुक है और उसको वह जीवन विस्तृत पसन्द है। मैं सोचता हूँ कि क्या सारपीकी झूठ (?) सारे परिवारको लगी हुई है और क्या उसको पूर्ण रूपसे प्रकट करनेके लिए बरा-से सहादेकी ही आवश्यकता है? वह कहती है कि उसने ही मौडको बाहर जानेकी बात सुझाई थी परन्तु उसका यह भी कहना है कि वह अपने माँ-बापको छोड़ना नहीं चाहती। इसलिए वह स्वीकार करती है कि उनमें से किसी-न-किसीको घर रहना चाहिए। मैं नहीं जानता कि इस सबसे क्या समझा जाये। मुझे लगता है कि उसके इस उत्साहका कारण बहुत-कुछ मैं ही हूँ। मैंने सारपीकी सुन्दरता आदिका बखान ऐसी माबपूर्व मापामें किया कि उसने फीनिक्सकी कल्पना स्वपनेके रूपमें कर ली है। सिमेंटसने मुझे सावधान किया कि मैं जस्बबाजीमें कोई सहाह न हूँ और न कोई कब्रम उठाऊँ। मैं उसकी बेठाबनीके लिए बहुत आभारी हूँ इसलिए इसकी चर्चा आपसे कर रहा हूँ। मेरा हराहा इन कड़कियोंको एकरम कर पढ़नेकी सहाह देनेका नहीं है।

जैसा कि मैंने एक दूसरे पत्रमें लिखा था मैं बहुत विस्तारसे लिखना चाहता था और फिर भी यह पत्र पठके १ बजेके बाद लिखना रहा हूँ और धनिचारसे पहले बहुत-से छोटे-मोटे काम निपटाने हैं।

टाइम की हुई बपवरी बंधेजी प्रतिकी फोटो-नकल (एच एन ५१७५) से।

३५१ पत्र उपमिवेश-उपमन्त्रीको

[सन्धन]

मन्धर ११ १९ ९

महोदय

मुझे आपका इसी ९ टाटीकका पत्र पानेका सम्मान प्राप्त हुआ। पत्रके साथ आपने ब्रिटिश माष्ट्रीय कैंबियोंके साथ किये जानेवाले व्यवहारके बारेमें ट्रान्सबालके यमनरके ब्राटीकी नकल और ट्रान्सबालके मन्त्रियोंकी रिपोर्ट भेजी है।

मेरे देखता हूँ प्रबान मन्त्रीके प्रिटोरिया-स्थित दफ्तरसे बिपुटी यमनरको भेजी गई रिपोर्टमें कहा गया है कि जो भी पिकापतों की गई हैं वे विस्तृत पकट हैं। लेकिन मैं कोई महोदयके सामने विचारके लिए यह तथ्य पेश करता हूँ कि मुझे जो पिकापतें भिजी हैं और जो मैंने

उपनिवेश-कार्यालयको मेची है उनमें से अधिकांश द्राष्टबानकी विभिन्न जेजोंमें मैंने स्वयं थो-कुछ देखा है, उसके आधारपर सब मान्य होती है।

स्वर्गीय नागप्पनकी मृत्युके सम्बन्धमें मन्ड्रेटके बाँके परिणामपर भारतीय समाजने और श्री हॉस्केनकी ब्रह्मसतार्थमें नियुक्त यूरोपीय-समितिनें आपत्ति की है।^१ इस बटनाके सम्बन्धमें फिर बाँके करनेकी माँग की गई थी लेकिन वह नामंजूर कर दी गई। इसके अलावा मैं जॉर्डे महोदयका ध्यान इस ओर भी आकर्षित करना चाहता हूँ कि मृत व्यक्तिको बाबल न दिया जानेका आरोप सही मान लिया गया है। उसके पास दो कम्बक थे या नहीं मन्ड्रेटने इस प्रश्नपर कोई निर्णय नहीं दिया है। मृत व्यक्ति बोहानिघबर्गसे कड़ी छर्चामें कैम्प जेलमें ले जाया गया था और उससे बड़ा काम कराया गया था वे बातें निर्विवाद हैं।

दुरात्तके बारेमें जॉर्डे महोदयको बोहानिघबर्गके स्वतन्त्र डॉक्टरोंकी विस्तृत रिपोर्ट मिल ही चुकी है जिससे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान दुरात्त काकी नहीं है।

श्रेयी मुहम्मद बाँके बारेमें मैं अपने १६ अगस्तके पत्रमें कह ही चुका हूँ कि उसमें कुछ अविश्वसनीय हो सकती है। लेकिन सम्बन्धित अधिकारी अधिकारियोंको सब नहीं मानते यह कोई वबाव नहीं है। मैं विश्वास करता हूँ आप मुझे यह कहनेके लिए धन्य करेंगे। सरकार चाहती तो मुहम्मद बाँके कह सकती थी कि वह या तो अपनी बातकी सचाई घोषित करे या अपनी शिकायतको वापस ले ले। वह ऐसा अब भी कर सकती है।

इसके बाद दूसरी बटनाएँ हुई हैं। भारतीय कैदियोंकी वार्षिक सन्तोष प्राप्त करनेकी और रमबानके पवित्र महीनेमें मृतसमानोंको रोजे रखनेकी सहूलियत देनेसे इनकार कर दिया गया है। इससे यह कथन तो सत्य सिद्ध नहीं होता कि भारतीय कैदियोंसे क्याका बरखाब किया जाया है और जो अधिकारी अनाकामक प्रतिरोधी होनेके कारण ही इनके साथ सकती बरखना नहीं चाहते।

१ विभिन्न भारतीय संकेत कार्यालय बन्द है यह अनाकामके अनाकामी हैंड डेडी मेकरी एक नव सिद्धा था और जर्मनी अधिकारके निरन्तर बाजारमें बन्द किया था। जर्मनी पर भी प्रहार किया था कि कुछ जर्मनोंकी गलतीको मरान नहीं दिया गया। अविरोध-सम्मेलन ३ अगस्त १९५३की मिथौरा-संकेत विधिक भारतीय समितिवा एक नव सिद्धा था कि जर्मनी पर प्रहार करनेसे जर्मनीमें जितने बाँके करकेका अनुरोध किया गया है। अविरोध संकेतके अधिकारियों २ अगस्तके अनाकामके सिद्धा था “मुझे कष्ट है, पर यह सही है। अनाकामकी दुरुस्ती छोड़नी बाँके निवृत्त होनापत्ती है और अविरोध अनाकामके अधिकारियों को अधिकार पर किया है। लेकिन, वह सत्य बाँके है कि अनाकामके अनाकामके अधिकारियों की पुष्टि नहीं होती।”

२. यूरोपीय समितिनें दुरात्तके अनाकामके अनाकाम जॉर्डे सेकुपसे नहीं की थी। लेकिन जर्मनी अनाकामके अधिकारियोंको दुरात्त बाँके करनेकी वजा देनेसे इनकार कर दिया।

३. देखिए “११ जॉर्डे मुक निगी अधिकारी” पृष्ठ २५०।

भाष्यीय कॅम्पे शायब जब हुमेधा अरुम कोठरियोमें बन्व किये जाते हों केरिण मी यह जानता हूँ कि मई महीने तक मे बचनी कॅम्पेकी कोठरियोमें उनके साथ ही बन्व किये जाते थे।

जापका बादि
मो० क० गांधी

कलोनियल ऑफिस रेकर्ड्स २९१/१४२ और टाइप की हुई बस्तरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-गकक (एच एन ५१७७) से।

३५२ पत्र 'डेली टेलीग्राफ' को

[अन्त]

नवम्बर ११ १९९

सम्पारक

डेली टेलीग्राफ

प्रिय महोदय

आप मुझसे मिलनेके लिए बोझा-सा समय भी नहीं मिकाऊ सके इसका मुझे खेद है। मुझे यह सन्देश मिला है कि मैं अपनी बात आपको सिद्धकर भेज दू। ट्रान्स्वाल्के ब्रिटिश भारतीयोंके प्रश्नके सम्बन्धमें अखबारोंको एक विवरण भेजा गया था।' अखतरकी पूरी स्थिति उस विवरणमें थी मई है। मुझे आशा है कि उसकी प्रति आपने देखी होगी। ट्रान्स्वाल्के भारतीयोंका प्रश्न कितना बन्मीर है यह मैं व्यक्तिगत रूपमें मिलाकर आपको बताना चाहता था। आप पूरक विवरणसे देखेंगे कि जब प्रश्न ट्रान्स्वाल्को एशियाईकी बाइसे बचानेका नहीं है। सब साफ और सीधा प्रश्न यह यह पता है कि सुघसुघत ब्रिटिश भारतीय मूरोपीय प्रवासियोंके बराबर ट्रान्स्वाल्केमें प्रवेशका हक पा सकते हैं या नहीं। उस कानूनके बलसे पहले ब्रितके विषय सत्याग्रह किया गया है उन्हें यूरोपीय प्रवासियोंके समान अधिकार वा और दूसरे ब्रिटिश उपनिवेशोंमें सब भी प्राप्त है। श्री वेम्बरलेनका कहना है कि भारतके करोड़ों लोगोंका यह अपमान " उपनिवेशीय कानूनके इतिहासमें पहली बार किया गया है। इसीलिए मेरा खयाल है कि हुमे ब्रिटेनके अखबारोंसे समर्थनकी माता करनेका हक है। मैं आशा करता हूँ कि आप जैसे बने जैसे हमारे आम्बोडनका उचित प्रचार करेगे और उसका समर्थन करनेकी इया करेंगे। यह भी स्मरणीय है कि ट्रान्स्वाल्के कठीन-कठीन पचास प्रतिशत भारतीय बोक था चुके हैं। एक बुकक भारतीय' निमोनियासे मर भी चुका है। उसे जेलमें ही निमोनिया हुआ था यह बात नवाहोंकी साक्षीसे सिद्ध हो चुकी है।

जापका बादि,

टाइप की हुई अंग्रेजी बस्तरी प्रतिका फोटो-गकक (एच एन ५१७६) से।

१. डेली " ट्रान्स्वाल्की भारतीयोंके मामलेका विवरण " पृष्ठ २८०-३ और " सब अखबारोंको " पृष्ठ ५२०-५२१

२. सभी बाळमन; डेली " ट्रान्स्वाल्की भारतीयोंके मामलेका विवरण " पृष्ठ २९८।

३५३ पत्र उपमिवेश-उपमन्त्रीको

[सम्बन्ध]

नवम्बर १२ १९ ९

महोदय

मुझे आपका इसी ९ तारीखका पत्र पानेका सम्मान प्राप्त हुआ। श्री पोसकके ठारने को-कुछ बताया गया है, परिस्थितियोंकी वजहसे अधिक जानकारी मुझे नहीं है। परन्तु मुझे यी बुझीसाऊ पानाबन्धके निर्वातनकी जानकारी है। व अपनेकी जानते हैं इसलिए नेटाक तथा क्य काकोलीमें प्रवेश करनेके अधिकारी हैं। साथ ही वे डेसागोमा-जेके अनिवासी भी हैं। फिर भी वे निर्वासित करके भारतको भेज दिये गये हैं। उनका मामला काफी प्रसिद्ध है।

मैने स्वयं एक दूधरे मामलेमें पैरवी की थी। वह मामला श्री घोखतका था।' कभर वहाँने मुझे कबर न बी होती और मैने मामला ठीक करानेके लिए नक्सिस्टेके सामने पैरवी न की होती वो वे भारतको निर्वासित कर दिये गये होते। इस तरहके बहुत-से मामले निरचय ही पण किये जा सकते हैं। कानूनके निर्वातन-सम्बन्धी खण्डसे बहुत कष्ट होता है यह उस खण्डके अमलका मुझे यी अनुभव है उसके आधारपर भली-भाँति विद्व द्रिया जा सकता है।

आपका ज़ावि

मो० क० गांधी

टाइप की हुई बस्तरी अंग्रेजी प्रतिका फोटो-नकल (एस एन० ५१७८) और कपोनिबल ऑफिस रेकॉर्ड २ १/१५२ से।

३५४ पत्र भारतीय अखबारोंको

[सम्बन्ध]

नवम्बर १२ १९ ९]

महोदय

मेरे साथी श्री हाजी हबीबने जी मैंने ट्रान्सवालके विटिम माप्टीयोंके संघर्षके बारेमें एक विवरण निकाला है। मुझे मरोसा है आप उसका अधिकसे-अधिक प्रचार करते। यह भीयन संघर्ष कम ठो रजा है ट्रान्सवालमें लेकिन इन तथ्योंको कोई भी बहुत आसानीसे देख सकता है कि यह मामला पूरे भारतके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ट्रान्सवालकी सरकारने यह बात बिलकुल साफ कर दी है जो इस तरह कि उपने जोखार घर्षोंमें यह बोधित

१ देखिये "द्वयह और क्य कोपेका इकलम, इव १५१-५२ और "कोवमिन्काली विद्वि" इव १५४ ।

२. क्य "द्वयजालमें कोप्टीयोंके संघर्ष" अर्न्तकते क्य १५ देखिय "क्य अखबारोंको" इव ५२०-२४ ।

कर दिया है कि हम जिस सिद्धान्तके लिए लड़ रहे हैं सरकार उसके बारेमें हमारी माँग माननेके लिए तैयार नहीं है, बल्कि उस सिद्धान्तको मान लेनेपर निकलेवाले हक वह हमें दे देगी। अब यह संघर्ष चलता रहेगा। हम जिस सिद्धान्तके लिए लड़ रहे हैं उसकी उससे अधिक बलही वीर कोई ब्याख्या नहीं हो सकती जो स्वयं द्रान्धवास सरकारने की है। लॉर्ड वू द्रान्धवासके ब्रिटिश भारतीय सिष्टमण्डलको भेजे गये अपने बचावमें कहते हैं

लॉर्ड महोदयने आपको बता दिया था कि भारतीयोंको प्रवेशके अधिकारके या दूसरी बातोंके सम्बन्धमें यूरोपीयोंकी बराबरी की स्थितिमें रखा जाना चाहिए—यही स्वयं आपकी इस माँगको मञ्जूर करनेमें असमर्थ है।^१

“या दूसरी बातोंके सम्बन्धमें”—इस वाक्यांशपर विचार करनेकी बात तो फिक्रहाक छोड़ी जा सकती है। हमने जो-कुछ माँगा है वह इतना ही है कि हमें प्रवेशके मामलेमें कानूनी तौरपर यूरोपीयोंके बराबर हक दिया जाये। स्मरण रहे कि जब हम इस बराबरीके हककी बहालीके लिए लड़ रहे हैं। यह हक इस कानूनके पास ही है—बोम्बेके शासनमें और अंग्लोका कब्जा होनेके बाद भी अर्थात्, सन् १९६ के अन्तर्गत—हमें हासिल था। जो सिद्धान्त द्रान्धवास-सरकारने स्थापित किया है और साम्राज्य-सरकारने जिसपर स्वीकृति दी है उस सिद्धान्तसे साम्राज्यकी अक्षर ही कुठाराघात होता है। लॉर्ड ऐन्टिहिक जिन्होंने इस कार्यको अपना कार्य बना लिया है कहते हैं^१

यह मामला हमारे प्रजातीय सम्मानको ठेस पहुँचानेवाला है, और तारे साम्राज्यकी एकताको प्रभावित करता है; इसलिये इसका सम्बन्ध साम्राज्यके हर हिस्सेसे है। इसके अलावा यह निश्चित है कि अगर साम्राज्यके इतने केन्द्र-स्थलमें सिद्धान्तको छोड़कर चलनेकी किसी भी बातको स्वीकार किया गया था उसकी अपेक्षाकी गई तो उससे बाहर भी और भीतर भी दूसरे स्थानोंके लिये एक बुरी निसाल कायम होती है, और तब सारी व्यवस्थाको कोई बड़ा आघात लगनेके बाद ही इस भेदिक पतनको रोकना सम्भव होपा।

लॉर्ड महोदय जाये फिर कहते हैं

किसी सिद्धान्तमें अक्षर करते वक्त रैड और कालकी अक्षरोंके पुरातात्विक खोजकर किया जा सकता है; लेकिन अगर सिद्धान्तकी ही अक्षरोंके तारुण्य रखें तो अक्षरोंपर निवन्धन रखनेका कोई साधन नहीं रह जाता।

हमारी जो स्थिति है, उसे मैं इसके अधिक स्पष्ट शब्दोंमें नहीं कह सकता। अगर द्रान्धवास सरकारका सिद्धान्त सही है तो भारतकी जनता साम्राज्यमें साम्प्रदायिक नहीं रह पाती और इसी लक्षणका अनीतिक और वास्तविक सिद्धान्तका विरोध करनेके लिए हम द्रान्धवासमें लड़ रहे हैं। भारतीय जिनमें अंग्ल-भारतीय भी शामिल हैं इस राष्ट्रीय संघर्ष में कैसे अक्षर दे सकते हैं? स्मरण रहे कि हम इसके विरोधकारोंके लिए सक्रिय करण भी उद्यम चुके हैं अर्थात् हम जिस कानूनको अपनी अक्षरोंके और, बर्न राजका उद्घोष

१ टोक-वृत्त संदीपीपी वीकलीकी अक्षरणा लॉर्ड ऐन्टिहिकके लिखी थी। वे अनुच्छेद अक्षरिते लिखे गये हैं। ऐन्टिहिक १८ थी।

धर्म हैं तो धर्मके भी बिना समझते हैं, उस कानूनको माननेसे इनकार करते स्वयं कष्ट
 झेक रहे हैं। सभी वर्गके लैकड़ों भारतीय वा बीसे अधिकांश हैं अपने आदर्शकी रक्षाके
 लिए बोल पाते हैं। क्या भारत उनकी रक्षा न करेगा? क्या यह इस मामलेको अधिकतम
 महत्त्व न देगा? क्या कांग्रेस इसे अपने कार्यक्रममें सबसे ऊँचा स्थान देगी? क्या सुधारके
 बाद मजिस्ट्रियल विभाग-परिषद इस समस्याको हल करनेका दायित्व लेकर अपने अधिकार और
 सम्मानकी रक्षा करेगी? यह सब हो या न हो अन्तमें मैं भारतके लोगोंको यह आश्वासन
 दिलानेकी बृष्टता करता हूँ कि जबतक एक भी सत्याग्रही जीवित है द्वांसवालमें यह सपर्य
 जारी रहेगा। द्वांसवालके भारतीय जो लड़ाई लड़ रहे हैं यह हर सत्याग्रहीके मर जानेपर
 भी खल हो सकती है इसमें मुझे बहुत शक है।

भाषका भाषि
 मो० क० गांधी

[बंशेजीसे]

पुनराती ५-१२-१९ ९

३५५ भाषण विवाह-समापने

[सन्वाह

नवम्बर १२, १९ ९]

धी पाँचीने धी मायरकी समाका आयोजन करने और अगुँ तथा उनके साथीकी द्वांस-
 वालमें विविध भारतीयोंकी कठिनाइयोंका विचारण पैल करनेका मौका देनेके लिए मायबाह
 दिया। उन्होंने कहा, हम जोय द्वांसवालमें जो-कुछ कर रहे हैं उसके सम्बन्धमें धी मायरकी
 की हुई बैठावनी बहुत उचित है।^१ हम ईंग्लैंडकी जनताके पास इसलिये नहीं माये हैं कि इत

१. पंजीमी और राजी इरीके अधिन बाकिदा राला इमिके लके लमें पिबाइ देनेके लिए वेध मिन्नर
 सेल इरीकी एक सय डुरी थी। कानून बाकिमिके सिवा इस समाके धी एरकोई उरर-सकल एर ईमिक
 वेध, एर कोवरिक केने, एर मंकाकी मानसरी से एम कौड मालीन की करे, पीठीकल मेरक और
 एक-कल्पु-रिष की से। एमके उरीकल रेकॉड एक-की मारने पाँचीमी और राजी इरीकल इरिष
 काला। पंजीमीके कला की रेमंड केध और एर कोवरिक केनेने की एमके मफल रिने से। एर अड
 इरिषक कोविधिपणने कलाकिल समथी रिपोरेसे सिवा कला है।

२. रेकॉड बाकने कहा वा: "धरों की जेल जाने हैं, कनडी कठिनाकिल यह लमें नहीं है कि मनी कनी
 और अधिन कानूने की पंजीने जो-कुछ भी कहा है वा सिवा है, हम कडका एर-एर एरनेन करते हैं। कानूनी
 कानूनी न करे ही यह कुछ कर ही नहीं लला। पैला कीने कानूनी नहीं है किने मनी नहीं डुरी किली कालर
 वा किने हुए किली कानूने बादने कलाका म हुना ही और पैला न कला ही कि कल बाकने कला कनी
 एरर कहा वा लला वा वा कल कानूनी कला कनी एरर किना वा लला वा। केदिन कनडी कठिना
 न कलाती है कि वे रिपुएरनेने वेनेड और कलाकिल मिस्तारं कानूने कनेने कनेनेके कल एरनेन कानूनेन
 करते हैं। पैला क नी एररक है कि हम नहीं कन कानूनेक कोनेनका को कल एरनेनेकी वरी रिक्कालीने केर
 रहे हैं और की यह कानून करते हैं कि कने एर एरनेने जाने कलाकल वेनेनल कनर कला कदिन,
 कठिनाकिल करते हैं।"

संपर्कमें हमने जो भी किया है, आप उस सबको अपनी स्वीकृति दे दें; हम तो आपके पास इसलिये आये हैं कि हम जिस संपर्कमें लगे हुए उसमें आपका प्रोत्साहन चाहानुभूति और प्रेरणा प्राप्त हो। मैं आपका ध्यान खम्ब मित्रों तक जिस तबासपर एकाग्र करना चाहता हूँ वह तबाल मेरी लक्ष रायमें मैं सिर्फ द्वास्तबासके विद्विष भारतीयोंके लिए — जो यह संपर्क बना रहे हैं — बल्कि सारे विद्विष साभान्तके लिये सम्भार महत्त्वका तबाल है। यह बात बिल्कुल सही है कि इस संपर्कके सम्बन्धमें [सरकारकी ओरसे] तनसौतेका एक प्रस्ताव हमारे पास आया था और श्री मायने यह कहकर स्थितिकी आपके सामने बिल्कुल सही तौरपर रख दिया है कि हमने उस प्रस्तावको इसलिये नार्नकूर कर दिया कि उसमें उस विद्वान्तको स्वीकार नहीं किया गया था, जिसके लिये हम लड़ रहे हैं। बलिन आधिकारमें लयमम १५ विद्विष भारतीय हैं जो बड़ी यदि क्याबा नहीं तो लयातार ४ बसोति बसे हुए हैं। [बलिन आधिकारमें] विद्विष भारतीयोंके प्रवेसका आरम्भ नेटालमें विरिधिया मन्त्रालयकी प्रबासे हुआ। इसके बाद मुक्त विद्विष भारतीय आये जिन्होंने अपनी भाषाका खर्च बुर उठाया। इन मुक्त विद्विष भारतीयोंके कारण ही व्यापारके क्षेत्रमें उनके प्रति-
 हुंठियोंके भनमें व्यापारिक ईर्ष्याका भाव बना। बलिन आधिकारमें विद्विष भारतीयोंकी मौजूबा समस्याका मूल यही है। उस देशमें उनकी स्थिति बहुत कठिन और धावुक है। वह बहुत ही क्याबा अनिश्चित भी है। नेडाल, केप ऑरेंज की स्टेट और द्वास्तबासमें ऐसे [कितने ही] कानून हैं जिनसे उनकी भाषनाओंको, उनके अस्तमसामानको बोट बर्तुकी है और जिनसे ईमानदारीसे अपनी जीविका कमानेके उनके अनेक रास्ते बन्द हो जाते हैं। आसकर द्वास्तबासमें तो परिस्थिति बहुत ही बुर हो गई है। पुढके पहले हाकत यह भी कि वे नू-सम्पत्ति रख ही नहीं सकते थे। जहाँ नागरिकोंके अधिकार नहीं थे वह कहनेकी तो आवश्यकता ही नहीं है। वे सिर्फ बस्तियों [लोकेसल] में रह सकते थे। जहाँ पैदल पठारियोंपर बसने और द्वास्तबासियोंमें बैठनेकी मनाही थी। बस्तियोंमें ही रहनेकी कठिनाई तो अब बुर हो गई है, यद्यपि इसका कारण सरकारका सम्भाव नहीं बल्कि यह है कि वहके लक्षम्बन्धी कानूनोंमें बाधमें बुरि पाई गई। आप देश छोड़ें कि हुत्ते सारे प्रतिबन्धोंसे द्वास्तबासमें और सारे बलिन आधिकारमें विद्विष भारतीयोंकी स्थितिपर कितना गहरा असर पड़ता है। जनी हुस्तक, पानी सन् १९६ तक, हम सोच इन सारे प्रतिबन्धोंको खूले रहे। हमें निबेसोति लयमम थे सारी कठिनाइयाँ भोगनी पड़ती थीं। हमने सरकारको बर्धिया लेनी। हम विद्विष एजेंडके पास पहुँचे। मेरे मित्र और सह-अतिमिष भी हुन्धी हुन्धी आपकी बता सकते हैं कि एक प्रतिबन्धित व्यापारीके लयमें प्रिबोरियाके अपने निवसतकालमें बुढके पहले राहुतके लिये, वे विद्विष एजेंडके पास कितनी ही बार गये होंगे लेकिन जहाँ कामम कुछ नहीं निकल। फिर भी संकटके समय विद्विष एजेंडका हमें सहारा था। वह हमें सहानुभूति देता था और कभी-कभी कुछ बंसने हमारी धिकायते भी बुर कर देता था। [पेटी स्थिति थी] किन्तु विद्विष भारतीयोंको तबतक ऐसा नहीं क्या था कि उन्हें वे जो-कुछ कर रहे हैं उससे आये बंदकर कोई कयम उठाना चाहिए। लेकिन अब १९६ में यह कानून पास हुआ है, जिसके सम्बन्धमें आपको बता रहा हूँ तब मुझे क्या

कि हमें नीचा धराने और बहिष्कृत आधिकारों निर्वासित करनेके लिए जो प्रयत्न किये जा रहे हैं यह उतनी ही है। यह कानून ब्रह्म कि मैंने मन्व्यत्र कहा है अविद्यासकी सन्तान है इसका जन्म युवाहके वातावरणमें हुआ और पालन-पोषण अहंकार और उद्वेगके वातावरणमें। यह कानून जित समय माया उस समय मेरे समाजपर तरु-तरुके आरोप रूपमें पड़े थे। ये सारे आरोप बाह्यमें निराधार सिद्ध हुए। यह कानून हमारी अन्तरात्मापर किया गया प्रहार है और मैं तो कर्तुंगा कि धर्म शब्दके गम्भीरतम और उच्चतम धर्म यह हमारे धर्मपर किया गया प्रहार भी है क्योंकि यह हमसे हमारा मानवीय और हीनता है। हमारा बिश्वास है कि ऐसे कानूनको स्वीकार करना हमारे लिए अतन्मय है। हम अपनी परित्राह लेकर फिर सरकारके पास पहुँचे। यहाँ मैं यह भी कहना चाहूँगा कि इस कानूनका रसा हमें सिर्फ नीचा धराने और अपमानित करनेका ही नहीं है। जित महोदय यह कानून पेश किया था उन्होंने एक दूसरे कानूनकी पूर्ण-सूचना भी दी है। इतना मानी कानूनके साथ प्रस्तुत कानूनका उद्देश्य इन्सालाहमें विविध भारतीयोंके प्रवेशपर रोक लगाया भी है। यह कानून अविधिधीय कानूनके इतिहासमें पहली बार जारी किया जा रहा है। मेरा समाज समझ गया है कि यह सब किसलिए किया जा रहा है। इस कानूनके द्वारा इन्सालाहकी तरफ अपनिवेशकी कानूनकी किताबमें इस सिद्धान्तको शक्ति कराना प्रयत्न कर रही है कि यह विविध भारतीयोंका, विविध भारतीयोंके नाते, इन्सालाहमें जागेका अधिकार जल करना चाहती है। हमें यह बात बहुत अच्छी। हमें लगा कि इस कानूनको स्वीकार कर लेना और अपनिवेशमें जाने देना और ऐसे गम्भीर सवालपर सरकारको सिर्फ अविद्या और प्रार्थनापर भरोसा ही सम्पुष्ट हो जाना हमारी राष्ट्रीय भावना और हमारे इस्लामी गौरवके लिए अपमानजनक है। और यही कारण है कि जब न्याय प्राप्त करने और इस अशुभ प्रतिबन्धको दूर करनेके हमारे सब प्रयत्न विफल ही मयें तो मेरे मित्र और सहकारी भी हाजी हाजीने जोहाहितके एक विषयमें विविध भारतीयोंकी एक सार्वजनिक सम्मेलनमें मैंने इस बातकी अपेक्षा कि वे इस मुस्लिम कानूनके माये कमी चुकेंगे नहीं। इस सम्मेलन करीब दो हजार आदमी उपस्थित थे और इस सम्मेलन एक स्वरसे अपेक्षपूर्वक यह घोषणा की कि यदि उक्त कानून साम्राज्य-सरकार द्वारा मंजूर कर दिया गया तो वे उसे स्वीकार नहीं करेंगे बल्कि उसे तोड़नेके कारण उन्हें जो भी बच दिया जायेगा तो सह लेंगे। आप नीचे देख सकते हैं कि इतने संयुक्त स्वार्थ सिद्ध करनेकी बात नहीं है। अन्ततः तबाल संयुक्त था, जबतक उतसे हमें केवल शक्ति ही होती थी तबतक हम इन विधायकताओंको सहते रहे लेकिन जब हमारे राष्ट्रीय सम्मानपर धोखे होने लगे तब तबालका रूप यह हो गया कि प्रवेशके मामलेमें भी हमें यूरोपीयोंके बराबर नहीं माना जायेगा, और जब हमने देखा कि इन्सालाह अपनिवेश उस नीचको ही छोड़े शक्ति है जितपर विविध संविधान कहा है तब हमने महसूस किया कि हमारे अधिक सहस्रपूर्व कथन उद्घाटनका समय था पहुँचा है। हमारे सामने दो रास्ते थे। एक तो यह था कि हिंसाका अन्त

हिंसासे बिया जाये। हमने इस सिद्धान्तको अमान्य किया। और दूसरा रास्ता क्या था? समाजके नेताओंने यह निश्चय किया कि वे कोई हिंसात्मक तरीका न अपनानेमें लेकिन वे इस कानूनको स्वीकार न करेंगे। इसके बरते वे जो दण्ड मिलेगा सहन करेंगे। इस तरीकेको एक बेहतर नाम न मिलनेके कारण "पैसिव रेजिस्टेंस" की संज्ञा दी गई। मैं नहीं जानता कि इस नामके जो अर्थ में लपाना जाहूता है, उसकी व्याख्या किस प्रकार करें। मुझे इस बातकी चिन्ता रही है कि मैं अपने अनेकोंके सम्मुख अपने जोसोंका रचना किस प्रकार स्पष्ट करें। मुझे 'बाइबिल'की एक घटना स्मरण आती है— ईजिप्टके बीचमकी एक घटना— और मैं कहूंगा कि इन्सबालमें ब्रिटिश भारतीय बही करते रहे हैं जो ईजिप्टमें उस समय किया था जब उससे पीड़ों और फारसियोंके कानून स्वीकार करनेको कहा गया था। मुझे यह कहते खेद होता है कि साम्राज्यीय सरकार इस अपराधमें जापीदार है। उसके [साम्राज्यीय सरकारके] लिए यह कानून स्वीकार करना जरूरी नहीं था। उसे यह माफ़म होना चाहिए था कि इस कानूनसे ब्रिटिश भारतीयोंकी भावनाको प्युरी ठेस पहुँचेगी, और उनके लिए मानसम्मानपूर्वक उसे स्वीकार करना अतन्मय हो जायेगा। साम्राज्यीय सरकारको इन्सबाल सरकारपर रोक ज़माना चाहिए थी। और कुछ नहीं तो ऐसे कानूनको स्वीकृति देनेसे पहले यह कुछ विचारक सकती थी। लेकिन इज्जत राजनीतिके दबावके जाले यह मुक गई। मैं यह नहीं कह सकता कि किन मतलबोंसे पहले ऐसे कानूनको मंजूर किया गया। भारतीयोंने अनुभव किया कि उसे स्वीकार करना अतन्मय है, अतः वे सत्याग्रही बन गये। बस्तुतः, उन्होंने इन्सबाल सरकारसे कहा: "हम तोय आपकी जेबें भर देंगे और आप जो दण्ड देंगे हम सहन करेंगे लेकिन यह कानून स्वीकार करना हमारे लिए अतन्मय है।" मैं जानकर चककर मनमें विचार करना जाहूता हूँ कि ब्रिटिश संविधानके क्या अर्थ हैं। क्या यह संविधानमें ब्रिटिश साम्राज्यके विभिन्न सदस्योंको समानताका अधिकार नहीं देता? मैं यह बात समझ सकता हूँ। मैं इस सिद्धान्तपर आधारित साम्राज्यकी प्रजा बने रहनेको सहमत हो सकता हूँ किन्तु अपने अनुभवके बलपर मैं कहना चाहूँगा कि मेरे लिए एक ऐसे साम्राज्यके प्रति निष्ठावान रहना निरालत अतन्मय है, जिसमें मेरे साथ साम्राज्यके किसी सदस्यकी ही अति समानताका व्यवहार न किया जाये चाहे वह मात्र सिद्धान्त रूपमें ही हो। यदि मेरे साथ एक हीनतर व्यक्ति-बैसा व्यवहार किया जाना है तो मैं बराबरीके दर्जोंकी कमी कमाना नहीं करूँगा। मैं एक ऐसे साम्राज्यका सदस्य होकर तनुष्ट रहूँगा जिसकी [अतिविधियोंमें] मेरा भी कुछ हिस्सा होना चाहे यह केवल एक प्रतिहत ही हो। किन्तु यदि मुझे बुझाम ही रहना है तो साम्राज्यका मेरे लिए कोई मतलब नहीं है। वही प्रधान "ब्रिटिश प्रजा" की संज्ञा मेरे लिए कोई अर्थ नहीं रखती। पर कानूनके इतने प्रभावको मैं इस सभाके सामने स्पष्ट कर देना जाहूता हूँ इसे बिना हम पिछले तीन बरतोंसे यहूत करते रहे हैं। इन्सबाल उपनिषेधका यह कानून ब्रिटिश साम्राज्यकी बड़ोंको कायता रहा है और इस प्रकारके कानूनमें निहित सिद्धान्तका प्रतिरोध करके हम न केवल ब्रिटिश भारतकी बल्कि [सम्पूर्ण] ब्रिटिश साम्राज्यकी सेवा करते रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह सभा अतन्मय रूपमें मुझे इस बातका बरोसा देगी कि ऐसा करके हम ठीक ही करते रहे हैं

("बाहू, बाहू" और हर्षस्वनि) । हम अनुभव करते हैं कि यदि इतना भी नहीं करते तो हम साम्राज्यके सदस्य होने योग्य न रह जायेंगे — हम साम्राज्यमें सामीबार होनेके योग्य न रह जायेंगे और अगर सामीबारी नहीं हो तो साम्राज्यका अस्तित्व ही नहीं रह जाता इसीलिए मैंने यह कहनेमें तनिक भी संकोच नहीं किया है कि यह संघर्ष वर्तमान युगके महानतम संघर्षोंमें से एक है और ऐसा इसलिए कि एक महान सिद्धांत बर्बरता का उद्भव हुआ है हम एक पवित्र आदर्शके लिए लड़ रहे हैं और इसलिये भी कि हमने उस आदर्शकी प्राप्तिके प्रयत्नोंमें कुछ तरीके अपनाये हैं । और अब यह प्रस्ताव क्या है जो [हमसे] किया गया है? यह यह है कि यह कानून तो रब हो जाना चाहिए लेकिन प्रस्तावके अर्थ जो शर्त जोपनेकी कोशिश है वह यह है कि अविद्यमाने ब्रिटिश भारतीय कानूनकी बुद्धिमें यूरोपीयोंके साथ बराबरीका दर्जा लेकर ट्रान्सवालमें प्रवेश न करें । ट्रान्सवाल सरकार कानूनमें इस परिवर्तनके कारण होनेवाले परिणामका लाभ ब्रिटिश भारतीयोंको देनेके लिए राजी भी अर्थात् अगर भारतीय ट्रान्सवालमें प्रवेश कर सकेंगे । ब्रिटिश भारतीय इतनेसे संतुष्ट नहीं हैं । उदाहरणके लिए आप मान लें कि एक स्वामी अपने दाससे कहता है "तुम मेरे साथ मैजिस्ट्रेट बैठ सकते हो मेरे साथ रह सकते हो तुम ये तमाम बुद्धिवायें भीय सकते हो किन्तु इस धर्तपर कि दास और स्वामीका यह रिश्ता हमारे बीच सबब बना रहेगा ।" क्या आप सोच सकते हैं कि दास इससे संतुष्ट हो जायेगा? जबतक दासताका कर्मक लगा हुआ है तबतक चाहे उसे मैजिस्ट्रेट सर्वोच्च नर ही मिले क्या वह दास संतुष्ट हो सकेगा? क्या यह साफ नहीं है कि समर्पणकी भावना तबतक असम्भव है जबतक वह मेव कायम है जबतक दासताका कर्मक लगा हुआ है? उपनिवेश सरकार अब जो-कुछ देनेकी कहती है उसे पर्याप्त मानकर स्वीकार नहीं कर सकते और इसलिये हम अपने सधर्ममें ब्रिटिश जनतासे उधारी सहानुभूति और समर्पण माँगनेके लिए यहाँ आये हैं । मैं समझता हूँ कि साम्राज्यीय सरकारके लिए दास-अन्वेषण ट्रान्सवाल सरकारको कुछ करनेके लिए विवश करना असम्भव है । हम स्वयं भी किसी बातका प्रयोजन नहीं करते । हम कितनीसे नहीं कहते कि हमारी ओरसे बसना प्रयोज्य करे; लेकिन हम यह बकर सोचते हैं कि ब्रिटिश जनताकी मानस हो कि उस संघर्षका मतलब क्या है, वह जानें कि [ट्रान्सवालके] अधिवासी [भारतीय] समाजमें से ५० प्रतिशत पहले ही बोल हो जायेंगे; उसे मानस हो कि बोलनें निमोनिया हो जानेके कारण एक नौजवानकी मृत्यु हो चुकी है; वह जानें कि पिता और पुत्र साथ-साथ बोल गये हैं; वह जान लें कि माताओंमें टोकिया से ली है और सड़कोंपर फल बचती है ताकि जबतक उनके पति बोलनें हैं, वे अपनी और अपने बच्चोंकी बरबर्दि कर लें; उसे मानस हो कि बहुत-से परिवार बर्दि हो गये हैं और बच्चेकी रकबते धनका पुकार होता है । यदि आजकी समाजमें उपनिवेश आप सभीको लने कि जिन आदर्शोंमें सत्याग्रहियोंको लुपी-मुसी ये कष्ट लेनेके लिए प्रेरित किया है, वे आपकी बुद्धिमें सही है तो आप सत्याग्रहियोंके उत छोटे-से समुदायको अपने प्रोत्साहन सहानुभूति और उर्ध्व देना करनेवाले कुछ सधर्म में । आप साम्राज्य-सरकारकी कर्म-क्रम पर विचार हैं कि साम्राज्यीय जनतावाले विचार इस समय आप भागीदार बननेकी

तैयार नहीं हैं। द्वांसबाळमें एहूबेबाळे हम लोग जानते हैं कि हमें इंसैडकी सहानुभूतिपर गहीं बलिब अपनी शक्तिपर निर्भर करना है, और में अनुभव करता हूँ कि हममें यह धारणा है। में मानता हूँ कि जबतक एक भी सत्याग्रही जीवित रहेगा वह संघर्ष जारी रखेगा। मुझे चौद्धानिसवर्षसे अभी-अभी एक तार मिला है जिसमें कहा गया है कि [यहकि] लोग संघर्षको अन्ततक जारी रखनेके लिए कठिबद्ध हैं। यह सम्बन्ध ब्रिटिश भारतीय सभ द्वारा ही नहीं प्रेषित गया है, इतमें यूरोपीय कार्यकर्ताओंका यह छोटा-सा दल भी शामिल है जिसने विशालसभाके एक सदस्य श्री ब्रिक्मिस हॉस्केनकी अध्यक्षतामें एक समितिकी स्थापना की है। में अपने सुननेबाळोंसे कहूँगा कि वे उस यूरोपीय समितिका अनुकरण करें और जहाँ जितना अधिक सम्भव हो जत्साहू प्रदान करें तथा इस प्रकार हमारे कर्षोंका यथामीत्र अन्त करायें।'

[अप्रेषिते]

इंडियन ओपिनियन ११-१२-१९ ९

१ गांधीजीके एक तर दैनिक देर और तर डेडरिड केकी पीछे। सचची संपादित सिम्पलिसिटी अन्तर्गत मान्यताके दाल दिला वशाः " यह सच द्वांसबाळके ब्रिटिश गवर्नरीों द्वारा बने गवर्नर ब्रिक्मिसके सिद्ध किने अन्तर्गत अन्तिमूर्त और सिस्लार्ने संतैक प्रति जानी डारिड स्यानुभूति बरक करती है, और सच संतैके अपने अपने प्रोत्साहन प्रदान करती है। "

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

एगियाई पंजीयन संगोषण अधिनियम (१९०८)

सम्पूर्ण पाठ

एव भी एगियाई संघर द्वारा हस्त ही में वारित एत अधिनियमका पूरा पाठ दे रहे हैं किन्तु सरकार का एघियरमेंटके, वो एम् १९०० के अधिनियम संख्या २ के अन्तर्गत पालन नहीं कर पाये लेखना मंजूर हो बैव करला है और एघियरमेंटके एगियाई अधिनियम पालना करला है ।”

एगियाई विधान-परिषद और विधान-सभाकी एम्बर और एम्बरिसे हवारे एरमनेड एगियाई महाराज किन्डकिटको कानूनके रूपमें मान्य करें

१ एत अधिनियममें बजुठ कि ए संघसे कसुंय व हो.

एकिय " का अर्थ होय एतेक एत का एतेक एगियाई एगियाई;

एगियाई-अर्थनयन " का अर्थ होय एघियरमेंटके एगियाई एकिय की अर्थनयनी देती अर्थी को [एतअर्थी] अधिनियमके द्वारा निर्धारित रीति और कानूनके अनुसार किन्ती और मंत्री एं ही और किन्तेक एत अधिनियमकी मंजूरके अनुसार अपना निरूपण और किन्तुएक एत ही बजुठे एते हो;

" एगियाई " का अर्थ होय एघिया महाराजमें एगियाई मन्त्रिबोर्डको अर्थी ही एतअर्थी; एतमें एत, एत और एतकी एतके होय किन्तु किन्डकिट एतके अर्थी होय —

(क) एत एतकी किन्तु एत अधिनियमके किन्ती निर्दिष्ट अधिनियमों वा किन्ते अधिनियमोंमें हुवा ही और भी एतों निर्धारित करला ही; वा

(ख) एत एतों अधिनियमोंमें १९४के " अर्थनयन अधिनियम " (एत अधिनियम अधिनियम)के अधिनियम करला एत हो; वा

(ग) किन्ती किन्ती एतअर्थमें एत अर्थनयन अधिनियम;

" एगियाई एगियाई " का अर्थ होय एम् १९००के अधिनियम संख्या २के अन्तर्गत एत एत एगियाई, एतका एत अधिनियमके अन्तर्गत एतकी एतकी एतकीमें एतमें एते कानूनके अनुसार वा अधिनियम द्वारा निर्धारित एतके अनुसार एत एत एगियाई;

" एत अधिनियमका अधिनियम " — एत एत-अनुसंधानका अर्थ होय एत एतकी किन्ते कि एत अधिनियम अधिनियमका एत;

" एतके " का अर्थ होय एत अधिनियम की किन्ती एत एत अधिनियमकी एतकेका अधिनियम अधिनियमकी एतके और एतके अनुसार अधिनियम एत एत हो;

" एतके " का अर्थ होय किन्ती अधिनियम अधिनियमका एतका वा एतका वा एतके ही एतका एतकी किन्ते एतकेमें एत अधिनियम अधिनियम एत एत एत एत ही और एत किन्ती अधिनियमके अधिनियमके एत अधिनियमका अधिनियम ।

" एत एतके " (एतके एतके) का अर्थ, एगियाई एगियाईके अधिनियमोंमें होय (एगियाईके अधिनियम अधिनियमके अधिनियम) वा अधिनियम किन्तु एगियाई एत एतके अधिनियमके अधिनियम होय है;

मी बेसने मी खांबीचे पाप एक मोडितका मजकरी मी के गने बे जो बाबूतही संघर्षादि वारोमे वचन मे उगावा वारोको वा । मुझे जो नावाखन रिया करा वा, वडे मेरे असने देखासिरोको फटा रिया । मुझे निम्न हे दि नकर का नावाखन व रिया करा होटा तो मारपीन समल्लो समझौता परंवर व किया होटा ।

सी के घाम्बी नाम्नु

मेरे घाम्बे,

ए एच सी बाबूतौर

बकिउ नोक व पीठ

बोडामिस्ताने

नाच ५ सितम्बर १९८६ को बकिउ ।

[बंयेबीसे]

कमिनिष्ठ बकिउ रेड्यूस २९२/१९८ ।

परिसिष्ट ५

प्रस्ताव सार्वजनिक सामाने

[बोडामिस्ताने

सितम्बर १ १९८६]

“ मित्रिय मारपीनोकी का सार्वजनिक सभा का मित्रिय मारपीनोको मारी समार्य बी वाकेल केर मजद करटी है, किलकर मंगलवार, ८ सितम्बरको बीकानेरको मारपीनोके मुकदमे कसने गने बे । उखेमे से कुछ अनिष्ट बकिउ बाकिउके कलकत मसुदा मारपीन है और दृष्टवत्तमे बालेके बकवा वता का समीक्षा है । सफर मित्रिय मारपीनोका जो का देटी है, कलके वाक्यूर मित्रिय मारपीन का प्रस्ताव द्वारा निम्न करते हैं कि वे उक्तक का उखे उखे कलकत कर्षे कसदी किम्वदतिके समल्लो का समल्लो प्रदान कर्षे किया करटा, किम्वद वे बकिउरी है । ”

का प्रस्ताव तोरामबी बाबुरबीने केस किया । मी बेकिवार (कलकत, उमिक बेमिषिय सोसायटी) ने कसका मसुदोदर और सार्वजी बाबुके कसने, कसाम बाबुके बाकिर वावरी (कलकत बरविदिना सन्नामिना बंभुमल), सुबेरीबी बेसर्न और मी कलकतमे कलकत समल्लो किया ।

“ का समा मारपीनोका कसदी सफरसे मारपीन करटी है कि का बकवाके करके बकिउरिता, किम्वद और एउ कलकत बकवाके लिपिओ समल्लो कर हे, जो कसल्लोके मित्रिय मारपीन का रहे है ।

का प्रस्तावको मी कलकत कुवादिबाले केस किया और मी बाकिउबाद कसामे कसका मसुदोदर और सार्वजी कसरी सार्व और मी के नावाखने समल्लो किया ।

“ का समा का प्रस्ताव द्वारा कलकतको बकिउर देटी है कि वे प्रस्ताव समल्लो बकिउरियोको केन है । ”

[बंयेबीसे]

बकिउम अडेपिबिकल १९-९-१९८६

जी गांधी अपनी इच्छासे मेरठसे लौं रिहवात होनेके लिए जाने थे। उन्होंने बकिदाखिलिह साल अपने व्यवहारमें और आचारे-आदा आटाकाय परिवर्ण दिया है। उन अन्ध अन्ध देश व्यवहार अपना लगे दिया गया।

मिस्त्रेड कुछ लोग कहते "वह तो मरुत केलेके बालेकी बात है।" ऐसे वह कालेकी अनुमति है कि जी गांधी किसे बलि देदी है उस बलि देदीके लिए कोई बज्जा नहीं है, क्योंकि वह ली अपराधीके नहीं है बलि देता कि जी करसुने कहा "अन्धकारका वासति करलेनामें" का है। कोकरछले मिस्त्रेडा एक इन्फिर्नोकी व्यवहार नहीं समझी जै भी और न अन्ध अन्धको बोझासिद्धमें ही किया गया। मिस्त्रेड ही, मिस्त्रेडामें एक अन्धकारका अपनाको अपना बलिह प।

कहा गया है कि परमेश्वर अन्धकारको छोड़नेसे गत उदाह्र केम अन्धमें कानिमेंके उवाकर अपने बहुत ही अच्छे मानने "तंग करकी शक्ति" और अन्धके "उपयय कसठ इतिहासे प्रमाण" के बारेमें बोरदा अन्धमें अपने विचार व्यक्त किये।

कहाँ "तंग करकी शक्ति" है, किसे पकिलालेके किसे मिर्जा गैरकिमेदार लोगों द्वारा नहीं, बकि उदाहरण बकिदाखिलिह द्वारा क्यू किया जा रहा है। सते मरठमें अन्धकी ह्युहकारन कही है और तंग ही सते उस बकि उदाहरण विद्या करवा भी अन्ध अन्ध हो जाता है।

वाक्या, बकि,
बोझेप जे डोक

[अंशेबीसे]

रेड डेकी मेक, १९-३-१९०९

(१) दुम्पवाक कीरर 'को किया प्रतिक नैकवाका पत्र

[बोझाखिलिह]
मार्च १९, १९०९]

जी गांधी एक बड़े कामके सिद्धिमें किसे अन्धोंने छोड़ी हो वा गलत करना किया है तंग माहरी देर भोग रहे हैं। कुछ दिन हुए देदी कर जहाँ भी कि वह है मिस्त्रेडको एक अन्धकारमें अन्ध रहे थे उस अन्ध अन्ध शक्तिमें इन्फिर्नो कही थीं। उस अन्धकी एक मानना बकि या केकि बालके नाम सुनके अन्ध पदकी बोझमें एक अन्धकी बोर फिर आप बाह्य किया है।

इसे नहीं मानस कि केलेके अन्धके अनुसर किडी बोरको अन्धकारमें कही सेले अन्ध एक परिवर्णमें इन्फिर्नो अन्धकार अन्धी है वा नहीं। बकि वह रूप है कि जी गांधी—को विद्याका बाल और उरक, अन्ध विद्या-मान और अन्ध कि अन्ध है—इन्फिर्नो अन्धकार अन्धकार अन्धकार काली कला गया वा ही कुछ वह गत बहुत ही फ्रंट, अन्ध अन्धकार और अन्धकार कही है।

इस विद्या है कि कही और ही बालेकी, और यदि अन्ध अपनी उवा [इन्फिर्नो अन्धकार] अन्धकार गवाहन हो तो [जी गांधीके बकि सिद्धे अन्ध] अन्धकार और अन्धकार अन्धकार किये बालेका और कही अन्धकारको फ्रंट एक दिया बालेका।

वाक्या, बकि,
प्रतिक नैक

[अंशेबीसे]

दुम्पवाक कीरर १९-३-१९०९

(३) "लेखकताम"

विपत्ती जबकि दौरान ही हम उस बातपर लेख करने करवा खाँगे और हमारा विश्वास है कि वह एक प्रबल मजबूती सामान्य जनताकी भीरसे है, कि दूनसबाहक हुए बलिघारिबेनि नमी उस दिन भी गाँधीको कुछ भद्राश्रमे गवाही देनेके लिए पैरु के जाने उसर हबघरिबी जनाकर उन्हें नमामात्र करवा बापसक समझा । हमारा विश्वास है कि बाबूके अन्तर्गत देखी ही ब्यक्तता है । लेकिन भी गाँधी और कुछ नहीं तो एक दायनीरिक्त क्षेत्री है, और उस दृष्टिसे उन्हें मीची बाबूतमे भिरे हुए बयताबिरोधी बनेषा वैधर अन्तहार प्रमेका हक है । जो कानरा किती बाबूकीको, अन्तर कोरे भी नमिबीन नहीं न ही, ऐसे अन्तहारका नमी बन्दता है अमानुषिक है; और उस बात सामनेमें ही कृपा कबचोग और भी नहीं करता पात्रिय वा, क्योंकि उस बलिघारिबे मरी दूनसबाह [सबहार] के रबेके विरोधियोंको एक स्या करण दिखेगा ।

[अभेदीते]

इंडियन ओपिनियन २०-३-१९०९

(७) कामसस समारो मय

भी ओपेदीते पूछा कि क्या कम्पिनेड कम्पनीको बात है कि दूनसबाहके माटीन केवा भी गाँधीकी, जो बलीनम कम्पनीके अन्तर्गत हीन मदीकी कड़ी देरकी स्या मोग रहे है, १ मार्चकी मिरोरिवा केकते मकिरोकी अन्तगत एक, नहीं कि कम्पनी कम्पिनेड गवाहके समे बापसक भी, हबघरी जनाकर के नमा नमा; क्या वे उस बातकी बोन करेके कि बलिघारिबेनि भी गाँधीको बाबूसुखर उस मन्तर नमामात्र किना वा नमना देवा कळीते हुना; और क्या दूनसबाह सरकारसे प्रार्थना की जानेगी कि वह रिटिक बरटीकेकै एक, जो कम्पनी अन्तगतमे नमी लेक वा रहे है, वैरिड अन्तर्गतके लिए बलिघार देरिबीकी बनेषा कम कडोर अन्तहार करे ।

कर्मक हीनो; देसा कोरे प्रमल नहीं है कि भी गाँधीकी कोरे विरिड कम्पिनेड उखनी बड़ी है । भी गाँधीके एक हर दृष्टिसे देसा ही अन्तहार किना गवा देसा कि किती सुतेर क्षेत्रीके एक होता, और जके एक मीकि-क भी गाँधीके एक करवा वा कि मैं सुतेरी उखका अन्तहार नहीं पासता. हुते नमसे एक कम्पिनेड हीन होमेमे विपत्त है कि भी गाँधीके एक किती विरिड प्रकरका अन्तगतमेक अन्तहार नहीं किना गवा है मेरे समे भी प्रमल नमसे है कळीते में समुद्र हूँ कि भी गाँधीको एक कम्पिनेडे उरिड भी नमना नहीं उख करवा बवा है जो केते किती सामनेमें किती भी रके किती भी कम्पिनेडो उखरा बवा ।

[अभेदीते]

इंडियन ओपिनियन १९-२-१९०९

(५) दूनसबाहके मवानमन्त्रीकी कार्यवाही

मवानमन्त्रीका कार्यक्रम
मिरोरिवा
मई २१, १९

कार्यवाही नं २९३

मकिरोकी कम्पिनेड किती कर्मकेके एक मवानकी १३ उरटीकेकी कार्यवाही, उंला १५/१/१९ (२), की मात्रि लीकर करकेका समान माल है । उस कार्यवाहीके एक उंला परममन्त्रीक कम्पिनेड-मन्त्री हरा मेरि २४ अनेका वन उंला १४४, भी मात्र हुना, जो भी मी-क गाँधीके एक केकनी हुए अन्तहारके निरुप है ।

१ वह मंत्र "ट्रिमेन्ट बौड मि गाँधी" (भी गाँधीके एक अन्तहार) बरीक रिरोरिडे किना गवा है ।

काष्ठिका मामसा

(१) रेंड डकी मेड के ५-१०-१९९ के अंकमें छात्राध्यकी एक हास्य विपत्ति (ए ड्रेडडी बॉक प्रभाव) पर श्री एच० एस० एच० पोल्डकी जो आलोचना छापी थी, उसका अंश :

" क्या बता है कि कब भी वर्षी केसमें वे उन्हें एक काष्ठिके पत्र दिया क्वर डडना और बोले क्वीनर पर दिया था । क्वर भी वर्षीने गिरे-गिरे दरजेकी श्रेण्य न पत्र की होती तो क्वर ही डडना फिर फल बना होता । "

(२) पत्रों व जे बोक द्वारा • अक्षरकी रेंड डकी मेड में क्विने पत्रका अंश :

" एड विक्टर भासके संकलनके अंकमें एक छात्राध्यकी विपत्ति छापी है । मैं देखता हू कि उठमें बास्के भी पोल्डक एड क्वनडो एच मान्नेमें सिद्ध रिबार्ड है कि कब भी वर्षी बोर्डनिस्की केसमें वे एच क्वर एक काष्ठिके कूटापूर्ण हस्य दिया था । बास्के सिद्ध है, की वर्षीने केस-व्यक्तिगतिते सिद्धक करके एड काष्ठिके उमा रिबार्ड भी वा नहीं क्व नहीं बताया गया है । और बास्के सिद्ध है, कुछ भी हो, हमें हमस एसा नहीं माइत होगा किन्तु कि एडकल एक्कर विमेरार डरार्ड वा एड । "

उभोउध जो बास्केरी नहीं ही नहीं है क्व मैं हे उछटा हूँ । क्व कुछ एड क्व्याकल हसकी वात माइत हूँ, किन्तु एसा एसा एसाकिक ही है, बास्के नहीं डरार्ड, एच मैंने एच एच डरार्डमें भी क्वको क्वकीड की । भी क्वको क्वर क्व प्रक्य दिया और बताया कि भी वर्षी उन्हें क्व वात वडा कुड हूँ । मेरा डरार्ड है काष्ठिके उमा नहीं ही नहीं थी, क्योंकि भी वर्षीने क्वकी क्वरकलकल क्वरकल क्व क्वनि-के विक्लक व क्वनेडा रिबार्ड क्व किया था, किन्तु क्वको बोज रूडवार्ड थी । एसी प्रक्य क्वने एड प्रकलर क्वरकल क्वनेसे भी क्वकल क्व किया था किन्तु क्वर हस्य दिया था ।

एसी उरकलरकी विमेरारीकी वात — एच डरार्डमें मैं बास्केरी एक्के उरकल नहीं हो उछटा । क्व किन्तु नहीं है कि एक्केड क्वकलका क्वीं एसा उरकल नहीं था । क्वर किन्ती उरकल क्वकल क्व भी प्रक्य दिया गया और एचमें एच एक्केड नहीं कि एच क्वनके डीमेरार क्व क्वकल भी किया गया, केवल फिर भी कि प्रकलकिक क्वकलक क्व क्वना उरकल हूँ क्वकी विमेरार उरकल है । एच वात क्व है कि क्वकलक क्वीरकी बास्केरी क्वनिमें और क्वरकलकिक क्वने एच एसे है और क्वीउध मैं बास्केरी हूँ एसा विपत्तिके क्वकलनेकी क्व क्विक्के क्वकल क्व है । भी वर्षी क्वकी के क्वने क्व क्वर क्वनिक्के एच फल ही क्वकीमें एच क्व है, नहीं क्वने एसी एच क्वर क्वना क्वनी क्वी किन्तु क्वने भी पोल्डके किया है ।

क्वकी के क्वने क्वने क्वनिक्के एच एसा क्व और क्व क्वकलीकी हास्य क्वर क्व हस्य दिया गया । क्व क्वीउध हो उछटा है क्वीउध बास्केरीकी ही एच-एच क्वनेडा क्वकल किया था एसा है और मेरा उरकल है, क्व एच भी क्व है । केवल क्वकल क्वकी क्वरकलकिक क्वने क्वनिक्के क्वने और क्वकी क्वनेकी विक्लकिकी एसे क्वने है उरकल किन्ती भी क्व क्वी क्वना हा क्वकी है केनी की वर्षीके एच क्वीने, क्वकलके एच क्वकलके रिक् देज केने और एसे क्वनेके एच विक्ल क्वनेमें हूँ है । "

[अमरुत]

उत्तरक कलेक मानेकर कमा हुमा हे, कलकक कानूनी विधानमे कुत्ता कानून मोखु हे । रिपब्लिके अनुसार, पिछली ५ करपीको रिफार्ड बोर्डमिसलमि माना केते हुम कलकक समझने कर कमा ना

“कह कानून सध उपरका हे कि कए एक बार कम्पू किना बने एक बार ककर करे और इमेखाक किम ककर करे । कए कानून बहुत बोझिमन्सा हे, कौन्दि ककर पक्षिवाँ सध कलमिमे पनीकन करणे न माने तो पनीकन कसम्म हो बानेक्य और कानून कैकर हो बानेका । हुमा का हे हे इम पूर्ण पक्षितोक्ती लिखिमे हे । कए हम कही लिखिमे एख गने हे । कए पक्षितोक्ते किम सरकार ना करेँ एक बोमी खाँ हे; बकिड सत्ता करण कह हे कि एक कानून पध किना ना खुबा हे किउमे मापनीका छलोग प्रश करणा नाककक हे । मारपीमिमे कर छलोग खाँ दिना । हे किउकक कमा कने हो म्मे हे ।”

कए उपर पुणे पक्षिवाँ कानूनी अप्पिनेक-सकिमे अनुमोती तो बोधि कर दी दिना हे; कले कलमा कह एक इकक म्मे कानूने, जो मस ठौरर बापडि-पहित हे, एर भी हो गमा हे, कश्चिद कए किउकि किम जध पुणे कानूनी करेँ बाककिड कलोग खाँ हे । पक्षिवाँमि जध मारोसर इमेका मारली कश्चिद की हे किउकर पुणे कानूनी नीति बापडिठ हे । कहीमि के कह भी अनुमन करते हे कि कलकक कह कानून हे कलकक कली इकक ककरवाक हो हे । हमारी रामे कलि कए कनेक खाँ हे कि कनेमि कानून एर किना बानेका विवाड होजेर ही केकला पनीकन करणा ना । कश्चिद के कह अनुमन करते हे कि कनेमि कलक केककक सकिमको दिव्य कर को ईदलसरीका कए किना हे कली कलमे सरकारकी मोसे बेसी करेँ करेवाँ खाँ हुँ हे ।

दुसरा दुस कह हे कि पक्षिवाँ सामान्य मनाही कानूनी कनुगत अप्पिनेकमे डिहित मारपीमिमे म्मेकले कश्चिदकरका मान्य करणा कएते हे । कए लीकर किना बाठा हे कि कनेके मनाही कानूने अप्पिनेकमे डिहित पक्षिवाँ-बकिड म्मेककर टोक खाँ कली । पक्षिवाँ कल कए कलक किम ठौरर हे कि सरकार पक्षिवाँ मनासिनेकी कलक-परीखा देती कर हे कि म्मासमिड ठौरकेसे मनास हीमिठ हो बाने और अप्पिनेकमे कने कबकिड कौनों ना दिरपकिबाकके लालकके सिना दुसरे कौनेका बान्य कसम्म हो बाने । कले किना कनेमि सार्नककिड कनेके कह कल भी मल की हे कि सरकार कली कलकले देते बानेकले कौनेकी कलका सामे कए एक हीमिठ एके । कलका कलना कह हे कि कलक-कसरर म्मे किने बानेकले कलका परिमिनेकी कलकला बनेकेके किम कलकमेमि हे और कनेके हमारी ककएँ पूरी खाँ ही कएकी । कलका करण कह हे कि हे परिमि किल कौनेकी दिने बानेके कलका अप्पिनेकमे म्मेक विवाकही होगा कश्चिदकर कनेमि खाँ । हे देते डिभिद मनाही हेमि किनकी सवाँ लमिठ कर ही गँ हो; कलककन के कने कने ठीक उपरते न कल कनेगे । इम कनेकी कए कनेके कलक हे । इम अनुमन करते हे कि कल पक्षिवाँकोही कलक-सुविवाके किम कल बोधे-ने कने-किने पक्षिवाँकोही किरीय बाने देना नाककक हे । कह मुरोमि मनाहीक किम तो और भी कलका म्मेकपूर्ण हे । कए कलकक कनेमि किउकले सार्नकिड कलकमे पक्षिवाँ बोध, कुक कलकमे, मोरे अप्पिनेककिरकि किम कलक कए कनेगे कनेके कने लामविद केताबकि न किउकेसर कनेकी एका कनी कलक हो बानगी डि किउकी कलकना बानेके न होना हे ।

दुसरी कल कने सिडे कलककिरी हे और कलकलेसे कल की ना कली हे । कश्चिद कल की कुरेकी मंगु कलेक किम ही पक्षिवाँ कलककक पक्षितोक्ती एड नीतिर कल रहे हे । कने कलकले कनेके कलका कनेमि कनेमि ही कलक हे । कुरेके कलककमे कलका कने अप्पिनेकिल खाँ हे और हे देते कलककक हे, किनकी दुसरी कल भी कने कलकक खाँ होकी और कलककमे कलक-कली एर मकिर कनेके विवाकेकी कनेका की हे कश्चिद कनेमि कली किवाकें हू कलेक किम को कलका कलककन किना हे कनेके सिना कनेँ दुसरा कलका कनेके कुरेकक हे ।

कए कमा का हे कि पक्षिवाँमे मीकूला कनेके किल कनेकर कनी कौरकर बापडि की हे, हे कलक-कुक कने हे । इम कए कलका कनेमन कनेमन हे । हमारे कलकमे पक्षिवाँकोही किवाकें कुक किवाकर कीक हे । कए कुरेकपूर्ण कलककककिड करण कने बहुत कलककली हुँ हे और कह कलके करे हे । किल कौनेकी

परिसिद्ध १३

बठककी कार्यवाही जून १३, १९०९ को हुई

निम्नलिखित व्यक्ति समितिकी स्थापना की गई है, जो नीचे ब्रानेवाले विषयवस्तु पर कार्य करना करेगी।

निम्नलिखित व्यक्ति समितिके अध्यक्ष हैं

१ डा. व. लक्ष्मी, २. मो० क० शंभू, ३. डा. व. शशी ४. म. सु. काश्मिरी ५. टी. गणेश, ६. एम. ए. कामा ७. ब्रह्मचरिणी ८. अमरजी साहे ९. कर्मिणी १०. बालामार्ग, और ११. बी. बी. शंभू ।

श्री शंभू प्रस्ताव करते हैं कि काश्मिरी और लक्ष्मी [शंभूजी] श्री बी. ए. शैली और डा. व. शशीके साथ — श्री डा. व. शशीके साथ सहयोग दि. लक्ष्मी ने मा. लक्ष्मीको समझाया बतिया करते हैं — ईश्वर बा. श्री लक्ष्मी प्रस्तावका एक भागपर विरोध करते हैं कि (१) यह योजना इससे शर्तों की गई है, (२) क्योंकि भारतकी कमीशनर नहीं है, और (३) क्योंकि श्री ए. शैली नाम नहीं है।

श्री कर्मिणी जो बतियाते उपस्थित हैं। श्री कामा खुले बतियाते तो उन्हें खतर समझा जायेगा।

श्री बी. बी. शंभूके प्रस्तावपर सहयोग बतियाते करते हैं कि (१) किशोरबाबाके कुछ उद्देश्य तो कमीशनरके द्वारा ईश्वरबाबाके द्वारा बतियाये नहीं होते और (२) इसप्रकारके बतियाये भारतकी एक एकाग्रता प्रस्तावके उपस्थित नहीं होते।

श्री बालामार्ग दूसरा प्रस्ताव करते हैं कि श्री कामा श्री शंभू और श्री शशीकी नामा पत्रिका।

श्री कामा श्री शंभूके कुछ प्रस्तावका समर्थन करते हैं।

श्री गणेश उपस्थित हैं कि समझते श्री शैलीकी योजनाकी बारेमें गणेशबाबा हैं। वे बतियाते बतियाते कि समझते कि श्री शशी व. लक्ष्मीका साथ कमीशनरकी एकताके साथ करते हैं कि श्री शशी व. लक्ष्मीका साथ और लक्ष्मीकी एकताके साथ करते हैं कि "एकप्रकार में ब्रानेवालीकी नामा पत्रिका, एकप्रकारकी नहीं।"

एक प्रस्तावपर मत किना जाता है और निम्नलिखित समझते सहयोग करते हैं श्री लक्ष्मी, शंभूके ब्रह्मचरिणी, कर्मिणी और डा. व. शशी । विरोधमें मत देनेवाले वे हैं कामा, शंभू नामक बालामार्ग, काश्मिरी और अमरजी साहे ।

श्री शंभू अपना कुछ प्रस्ताव पत्र करते हैं। लक्ष्मी मत किने जायेकर वह ३ मतोंके विरुद्ध ६ मतोंके साथ किना जाता है। सहयोग में देनेवाले वे हैं श्री शंभू (प्रस्तावक), श्री अमरजी साहे (बहुमतके), नामक, कामा बालामार्ग और काश्मिरी । विरोध करनेवाले वे हैं श्री लक्ष्मी, शंभूके और ब्रह्मचरिणी । श्री कर्मिणी मतदानके उपस्थित करते हैं।

श्री शंभूके श्री शंभूके प्रस्तावपर विरोध बतियाते करते हैं। श्री लक्ष्मी श्री शशीके करते हैं।

श्री डा. व. शशी एक बतियाते लक्ष्मीकी समझाया बतिया करते हैं, और श्री शशीके वे किशोरबाबाके बतियाते ।

अम्मा ३ भारतीय समझते उपस्थित हैं।

उपर्युक्त विषय पर कुछ बतियाते ब्रह्मचरिणीकी बतियाते (पत्र पत्र १९१८) प।

पैरा २१ "सन् १९८८ का अधिनियम २" की कक्षा को "सन् १९०० का अधिनियम ९" होना चाहिए।
पैरा २२ समझौते की शर्तोंका अन्वेषण करना बरकी है।

सब पैरोंके बाद कुछ सम्बन्ध नोटनेवाले विकल्पकी कमी बात पढ़ती है। बात यह कहना चाहते हैं कि भारतीयोंने हैमबर्गराधिक साथ समझौतेके विषयमें बेटी करण कर रखी थी बेटी यह नहीं है, यह अन्वेषण कैसे सम्पन्न।

पैरा २५ कठोर अन्वेषण सब प्रकार कठोर जाने कि यह स्पष्ट ही जाने कि [पब्लिकार्ड कानून] पर करनेकी बात पूरी नहीं की थी, कभी दोन भारतीयोंका नहीं है। यह स्पष्ट कर देना भी अच्छा होगा कि कसबक समस्त समझौतेकी विधि और उत्तर उत्तरि भी नहीं और कैसे सुकर गये।

पैरा २६ भारतीयोंने अपने प्रभावजन कर्तों कका विवे, सब बातका फलित स्पष्टकरन नहीं हुआ है। यह बात उल्लेख चाहिए कि यदि सब विकल्पका कर्तों अन्वेषण किया गया हो यह उन कोठेकी मानकराधिक सिद्ध किया गलेगा तो सब उपायक वसनें कुछ भी नहीं बाले।

पैरा २९ पैरा सुगत है कि उचितकित नहीं परिशिष्टकी तरह जारी वाली चाहिए।

पैरा ३ (१) का नहीं फिर "१९०८" "१९००" की कक्षा भूषते नहीं बन गया है।

कामा यहकर कर्तोंके विषयमें मैं यह कहकर भूषते कि सब कमी कर्तोंकी उल्लेख करने और उनके उत्तरपुत्र उत्तरोंकी उत्तर करनेमें बातकी बाध्यताक सम्बन्ध सिद्ध है। कुछ अन्वेषण है कि पैरा में बोले-ले सुगत हैना बातको ध्यानका नहीं। बात धारी स्थितिसे पूरी तरह परिचित है, फिर भी सुझे अच्छा है कि सब केने कोठेकी बेटी और कितनी मानकराधिक बेनेकी बातकथना है, यह मैं निश्चय ही बातसे जानता अच्छी तरह समझ सकता हूँ।

आपका विश्वस्त
एन्टिडि

हस्तलिखित सूच संघेकी प्रतिका कोठे-मन्त्र (पत्र पत्र ४९०५) से।

परिशिष्ट १५

द्वान्तवासके भारतीयोंके प्रार्थनापत्र

(१) साज्याधीकी प्रार्थनापत्र'

प्रार्थनापत्र लम्बी

कन्व

अन्तरगतके हेतु पिछले ही वर्षोंसे द्वान्तवासकी कोठेमें सजा भीगनेवाले द्वान्तवासके विविध भारतीयोंकी पत्रिका, माताओं का पुत्रिकाका प्रार्थनापत्र लिखन है कि,

हम उन विशिष्ट भारतीयोंकी पत्रिका माताओं का पुत्रिका है जो द्वान्तवासकी दुःखेवत कम रहे पत्रिकाके अन्तर्कितिकेमें केक भील चुके हैं या कम भी नोन रहे हैं।

१. उन बातके कोठे प्रमाण नहीं है कि उन प्रार्थनापत्रोंका पत्रिका पत्रिका द्वारा ठेकर किया गया था। एवधि देती सम्पन्नता है कि प्रार्थनापत्र हैमबर्ग सुगत अन्वेषण ही किया ही। अन्वेषण कन्व रवाना होनेसे पहले वे प्रार्थनापत्र हस्ताकर प्राप्त करनेके अन्वेषण हमने अपनेके सिद्ध ठेकर कर सिद्ध गये थे। इतिहास कोठे-विषयमें वे सब दिव्यकित साथ प्रकाशित हुए थे कि द्वान्तवासकी सुगत-से भील कन्व हस्ताकर कर रहे हैं।

हमारी माझ्या हे कि विविध भारतीयोद्धा कर उत्पन्न व्हावयाचे हे गौर जनते बाबीत समजावणी कराव
 किय हे ।

हम जीव हत ठव्य से जगता है कि जगातल केक जनेवाक भारतीय जनसमूह हे कि किन
 विद्यालयोंके कारख देवी जसब केनी रही है वे जनसमूह हूर नहीं होतीं उनका वे दुःखवाली छंद हारा वधाने
 गने बहिषाई बहिषिज्जमकी लीजकर नहीं करेते ।

हमें जगता है कि जसब केरों, पठियों वा किताबोंको जसके बहिषिज्जमकी प्रीतिवित्त करना हवारा
 कर्या है ।

उत्सुकता कारकोसे एवमे से भावकी जनेतोंको न केक किहीहवा दुःख बसिक नज्ज-वकला छंद भी छवता
 वहा है । उन्केके गौरव जनेक भारतीय परिवार हंगलक बन गने हे ।

हम जीवोद्धा माझ्या हे कि विविध संविधानके कर्तव्य भाव कर जनेवाकके कसमे एते हारजोव
 नहीं कर सज्गी । किन्तु भावकी प्रविधानके जसका माझ्या जसकरूँक जालेक सामने हत भावगत रस रही है
 कि छावर भाव जक माता वा कली इमेक नते [हम] माताओं वा बहिषिज्जि प्रति कसबकी माझ्यासे गैर
 छरझरी गौरवर जवन मजाकज कबनी गौर पक कसबक दुःखर बहिषिज्जिज्ज कस करमेमे छवजता कर छरे ।

कर जनेवाकके गौरव कर है कि कर कानून रर कर रिषा जाने किउकी कसकर मन छरझरको नहीं
 है; गौर कर्मिनेउके मजाकी कानूने को कर्तव्य-सम्पनी प्रतिजन्य है कर हरा रिषा जाने ठाकि कसकतम किता-
 पज माझ्याओंके किय देवी ही छरझर जनेविसमेमे प्रवेक जसका सम्पन हो छके बेही कस प्रविधानके
 किय है ।

हम जसकरूँक भाव्या करती है कि हमारी कस प्रविधानक बाव विचार कसोकी कना करेवी ।
 गौर भावक हत भाव ठवा हवाक कारके किय भावकी प्रविधानके छरेक हुवा करेगी भावि ।

[अधोवृत्ति]

इतिमम अधिपतिपत्र १-०-१९ ९

(१) भारतीयता : बाबासाहेब अंबेडकरजी

छेतामे
 भारतीयता बाबासाहेब अंबेडकर
 मजोरन,

गुरुजनाके रहताके हम मीने हलाकर जनेवाके विविध भारतीय भावको भावी भारतीय राज्या किता माझ्या
 भावकी छेतामे हम जनेविसमे कनेवाक जसमे जसक उन्केक सम्पनक कर जनेवक कर रहे हे । हमारी कर कर्तव्य
 भावक हारा कानून जसकर है ।

हम हम उत्तंका प्रविधान न कसकर केक कर्तव्य विविधा ही कनेव करेते ।
 हलाकरभावाती भारतीयतामे १९०० के बहिषाई संजीवन अधिपतिम (बहिषाजिक एजिरेडन केक) को रर
 कसकी गौरव की है, ठाकि प्रविधान कोकला-माझ भारतीय, उन्की छेता किउकी ही हत नहीं म ही, जाहे
 प्रविधान छः ही ही, जकी छरझर गुरुजनाके प्रवेक कर छरे को कस प्रविधानके किय हो । भावकी विविध
 कानूनार संजीवन अधिपतिम गौर जनेविसके मजाकी अधिपतिमक कर्तव्य कसकर को प्रविधान कस कर्मिनेउका
 पूँ-अधिपति म ही, नहीं नहीं वा सज्गी । हत माझ्या कर्मिनेउके वे कानून ग-जेवकर प्रविधान कनेवाके
 है । किनी कस विविध कर्मिनेउके वे कानून नहीं है । कत भारतीयतामे कर्मिनेउके संजीवन कानूनोकी
 लीजकर न जनेवे गौर कसकर भारतीय कर्तव्य किय न जाने कसकर गैर उना कस कर कर्तव्य कनेवका छर
 कर्तव्य कस कर्तव्य नियम रिषा है ।

उक्त विवेकक बाबत विच्छेद कार्य बरामे २५ मार्चकोमे केरकी सभा भोगी है । सभा अधिवेशनक सभा रही है । कार्य पर उग्र प्रतिक्रिया है, कार्य परिवार संक्रमित हो गये है । रोटी हुई चिनबो और मसालोंको बरसे पीछे छाड़कर चिया और पुत्र मन्त्र-साल बेच गये है । कार्य परिवारोंका सम्पन्नास्य हमारे कमा बिन्दु हुए जा रही रकमय चिया जा रहा है । जो समय करीब दो सौ भारतीय जनसंख्याके लुप्त केक भोग रहे है ।

अधिकांशकी सभा सभा है कि बहुतोंने तो यह कर चुकने देक दिए है । दूसरोंने अपवित्र होके चिया है और आज साधारण मूर्खों पर रहे है । ठीक हीसे अतिरिक्त हस्तसंभव कोमेंका एक एक सखिज संकी गरी एक रहा है । कुछ तो पीन-पीन बार दूधलाकडी बेचोसे हो गये है ।

निश्चय करतेवकले कोमेंमे भारतीय समाजके सभी बागिके कला है । विन्तु सुखमयान, पारसी, सिख और ईसाई, सभी भारतीयोंके बीरसे लड़ाई लड़ रहे है । वेसे जापानी जिन्दगी कभी भारतीय परिष्कृत नहीं चिया है और जो सुख-सुखकी भावने परे है, [मान] फलक तोत्र रहे है, वा संकीका काम कर रहे है कला कला कलाकामी मार्गान मिथी का रहे है, और साधारण मूर्खोंका बचिया और कले बाह्य कला बाक्य और की बाहर रहे रहे है ।

हम करतेसे छात्राकाके किन्तु जलो बायोका अनुशील करते है और भारत सरकारसे यह कार्यकलन रणमयकी इलाकेकी रण करणे है । भारतक दण्डनाटक कानूनोसे रणमयका कलेक हयला नहीं जाता उक्त कर्तुंके नरतीकोका एक सुदुर्लभत यह छान करेय । हम उक्तकी प्रवर्णा करते है ।

[अधिवेशन]

इतिपत्र ओरिगिनल १-०-१९९

(१) मार्चवाक्यम : बंगाल बेकर और कर्मसंकी

सेवामे

बंगाल

बंगाल बेकर और कर्मसंकी

कर्मसंकी

मार्चवाक्यम

हम निम्न-दलाखीकरी दण्डनाकामी विच्छेद भारतीय नरतीके बीर समाजके नेताकी इच्छितसे बाते समाज कला विवरण प्रस्तुत करना करते है । इयाक कर विवरण पक्षिर्षी संकी विच्छेद है, बी जो अन्विष्टमे विच्छेद कार्य करणे कर रहा है ।

जो संकीका पूरा परिष्कृत कानून भारतीय बरेष्ठान करनेकी हमारी इच्छा नहीं है । स्वामी सरकार और विच्छेद भारतीयके बीच विचारक मुद्रा कर है कि अतीरक प्रारम्भक उन्मय है अन्विष्टके कानूनोमे कर्म-विच्छेद किर्वाणता हो कला नहीं । स्वामी संक्रमे की कानून कला । एक कानून १९०० का पक्षिर्षी बंगाल अधिनियम प्रकृता है और दूसरा की बरेष्ठान अन्ती अधिनियम । इन कानूनोके अन्तर्गत कार्य की विच्छेद भारतीय, अन्ती अधिनियम कोला बाते कुछ भी हरे यदि कर पक्षेसे कोका अधिनियम नहीं है तो कला कलाक नरतीक बाते कला भारतीय नरती-नरती उन्मय होमक करणे कर अन्विष्टमे कानून करने की विच्छेद नरती हो जाता है । कर कानून विच्छेद अधिनियमोमे नहीं नहीं है । कला इप कोमे, कला कला कला कला होमेके बाते, कानूनिक कले कानूनोपूर्वक कला की है कि इप कानून बंगाल कानून (उत्तराखण्ड के) तथा संकीके हीरान १९८ मे कला कला दूसरा कानून उन्मय लीकर नहीं हरे कलाक १९०० का बंगाल कानून रर नहीं कर चिया जाता और कानूनिक कलेक विच्छेद नहीं जाता ।

एष उपनये परिणामस्यैव समी नातिर्नो कर्तौ नौर न्यौडा प्रतिनिधिपुन करेलाके २५ से नदिक
 कार्त्तलानि केलाके एष मोय है । इत्युक्तान्मे कल्पा इद्विन नातिहाके पुन कल्प उपनिबन्धोमे एहमेवाके ननेड
 मारुतीर्षोका मातामिड प्रान्तके पुनैपकी प्रवृत्तनाकी उवावतसे एव कल्प नीतिर एभि मरत मेव दिवा
 ग्ना है । कौटिल्ये कि पुन कार्त्तोका कल्प परिवार नौर न्यापारकी इवरेलकी समुचित कल्पना किने किना
 कला पदा है । कनेड कर उवड गये है । बहुउ-से न्यापारी कल्पक हा कने है । बहुउ-से परिवारोको मारुतीन
 समाव द्वारा पकड दिने कल्प कल्पकी रकमसे उवावता बी बा रही है ।

इम कल्पनिबन्धोमे कार्त्तलानोका निर्वाण प्रवेड न्यौ वाहते । इम एष कल्प-महावर्तयन वीरौकी प्रकमताक
 विवृताको स्वीकार करते है । इम कल्पक वर राजा करते है कि कल्प उपनिबन्धोके विस्तर इत्युक्तान्क उरकर
 कर्षि मेववर नापपरित करीहा कम्पु करके भी कल्पकनेक दशरोमे मरतके करोडो कोरोडो मात्तामोका उेठ
 न्यौ पवुवा सज्जी ।

इम एव पारिजोति, एव विविध नवाभोति नरीक कर चुके है । नौर कल्प एवमे इमारा समर्भन दिवा
 है । कौटिल्ये कि इत्युक्तान्क मी वुरोतीन समावक प्रमुक उरलोकी एव वुरोतीन समिति मिजेके कल्पक
 मी विविध होकेक, एम कल्प है इमारा समर्भन करती रही है ।

इमे तनिक मी एवमे न्यौ है कि मारुका कम्मल नांक-मारुतीको मी उता ही पदा है किना कि
 मारुतीको । कल्प नापके करिप इम कम्मल नांक-मारुतीन समावसे नतुरीन करते है कि एव दुर्गम्यपूरी
 विविधता मी करतम नाव किपु एव उजिा समष्टे कल्प एवमे इमारी उवावता करे ।

उवावकी कम्मल नखनीन कठिनायकोके कारण बहुउ-से कल्प दूर नये है । किपु वीरौका एव वाएनार
 कल्पको मिरफार करवा रहा है । वे कल्पुसंन्य उवाव करके किय उरुसंन्य है । एव कल्पको किपुने समन
 द्वा उवावकी केवमे २ उवावकी है । उवावने इमारी कलाव कल्प करेकी नीतयसे यौव देते उवावकीको
 मिरफार कर किना है किने विवृताकक कल्प मरत नौर इन्को नापके किय बुना ग्ना वा । इम
 एवकी कल्पना करते है ।

[अन्वेषण]

इतिवचन मीपिचिचन १-७-१९

परिणित १६

गांधीजीके नाम सौंड एम्प्टहिकका पत्र

गोपनीय

जुलै २९ १९१९

मिच मी मीरी,

मै कपो-कमी कर वाएव न्यौदा हूँ नौर टीले ही मारुका कल्पक एव चुके मित्र । मै एव कल्पना
 "कल्पमे" क वीच कल्पके वरुडा इद्विन-मे कल्प व रहा हूँ ।

कल्प कल्पक इत्यादि कर्षि वरु न्यौ होमी कि एव मरुतीन नौर मेरे कल्पमे कल्पक मिरत ही
 ली किनी कल्पकनाके वर कल्पकक उवाव नातिव ।

कल्पक कल्प मित्रा है कि एव कल्पकी नापक कर रहे है । मै तो कल्प एवमे न्यौ कर उवाव ।
 मै कल्प उवाव व उवाव हूँ । मी नौर कल्पकी उवावक वीच कल्प करवा कल्पक काम है ।

कल्पक कल्पमे "कल्पक" नौर "कल्पक" कौटिल्ये म कोरे एव कल्पकक विवृता है ।

बरि १९०३ का अधिनियम रद्द कर दिया गये और परि वह कबन दे दिया जाने कि दाम्पत्यकामे प्रति वरि १९०३ का अधिनियम रद्द कर दिया गये और परि वह कबन दे दिया जाने कि दाम्पत्यकामे प्रति वरि १९०३ का अधिनियम रद्द कर दिया गये और परि वह कबन दे दिया जाने कि दाम्पत्यकामे प्रति

वह बार देकर कहा जाता है कि मातृत्व कमी उत्पन्न नहीं होगी और रिवाजों से ही नई नयी पेश की जाने लगेगी। एवम् साफ-साफ कहिए कि ऐसी मातृत्व कमी में क्या खूँ। ऐसे कथन कबन देना पड़ेगा।

उक्त अधिनियमोंका विषय है कि दाम्पत्य कल्याणको नष्टकरा जायेगी वरि, जो नहीं चाहता कि इस कल्याणको कोई एक निश्चय हो, जेकरा कारण है और अधिक उदाहरण देता है। इसके कारण जेकरा मकसद कि प्रतिकूल मानना है। इसका मुझे मत है कि मैं कुछ सम्झने में नहीं हूँ।

निश्चय ही यह बात कबने उपायोंको सिखा उठने है और यदि बात रद्द की रिवाजों की सिखा है तो नहीं कना होये, क्योंकि मैं बात नहीं समझने पर एक निश्चय हो गया नहीं है। किन्तु इसका रिवाजों की सिखा है।

मानका विचार
द्वैत

ललितिका कृष्ण जीकी कठिनी कठिनी-कठिनी (१३३ पृ ३९१५) से।

परिशिष्ट १८

एम० के० गांधी एम ईन्डियन पेडिगमट इन साउथ आफ्रिका की लॉर्ड एम्प्टिस द्वारा लिखित भूमिका

इस पुस्तकके लेखकने मेरा अधिकृत करिका नहीं है। परन्तु जिस ज्येष्ठको विचारक ज्येष्ठने अपने उदाहरण और सभी निगाहों से है उनके सम्बन्धमें कबनो उपाय नहीं कबनारं २८-बीसी है, और इस उपाय उदाहरणोंके सम्बन्धमें से हुए है।

जो लोग मेरे इस सम्बन्धको स्वीकार करनेके लिए तैयार हों कि वह पुस्तक कबने कबन है, कबन में से कबनेकी विकरित करता हूँ। मैं उदाहरण देता हूँ कि कबने से ही की मेरी उपायोंको कोई उपाय नहीं हो, इन पुस्तकमें ही मैं कबनकारके कबन हूँ उठने है। यह कबनकारी कब देते प्रकृत सम्बन्धमें है किन्तु दुर्भाग्यवश इस देशमें कबन कबन हीरिका है। कबन कि जो यह सम्बन्ध कबनका उपाय-सम्बन्धी प्रकृत है।

जो हीरिका उपाय यह नहीं है कि ज्येष्ठने इस पुस्तकमें दाम्पत्यकामे मातृत्व कल्याणको मेरा ही उदाहरण करिकार कबनेकी उदाहरण कबनेकी और कबनेके उदाहरणोंके उदाहरण देता है। कबन पुस्तकका उपाय इन उदाहरणोंके कारण है कि उन मातृत्व कबनेके अधिक और कबनेके उपाय होने है और कबने कबन नहीं देना का उदाहरण; कबने, कबने कबने उदाहरणोंके उदाहरण उपाय का उदाहरण है कबन का उदाहरणोंको उदाहरणोंके कबने और कबने कबने कबने।

जो हीरिका कबनेकी कबनेकी नहीं हूँ, कि जो कबने मुझे कोई उपाय नहीं कि जो कबने कबने कबने उपाय नहीं है और मेरे कबन यह विचार कबनेका ही कबन कबन है कि उदाहरण उदाहरण है।

क्या है और किन्हे वापारपर हम फुल्ल अधिकतमका मौखिक सिद्ध किया करते हैं और जो उस अपने वापार करनेके सिद्धान्त है किसे अत्यन्त उस दृष्टिके अग्रिम मानते माने हैं, उनकी मज्जी बड़ी अवबोधना चाहत करते पाते कमी नहीं की गई थी। बेइजिन हमारी वास्तविक एजर्नालिटिक वापार-कर्म क्रियाय नये दक्षिण वास्तविक विधानमें मंग हुआ है अतः आता हुआ है दृष्टव्यक द्वारा स्थापित रोज-प्रतिक्रम कि मानकेमः। अगर वह बात छेकर और अवधारणेको दिखाने नहीं देती और अगर वे देती महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रियाको भी ब्याज देते भोज्य नहीं समझते तो ऐसा काला है कि साम्राज्यके शासनकी हमारी प्रतिमाका दास अत्यन्त ही गया है।

अगर अन्तमें वह सिद्ध हो जाने कि हम क्रिस्टियन संघिके मनी क्रिस्टियन भारतीयोंकी रक्षा नहीं कर सकते और अपने वापारक और राजनीतिज्ञिक कर्मोंको भी पूरा नहीं कर सकते तो इनका नतीजा मतलबमें क्या होना है वा बीज मतलबका जानन है उन्हें कुछ पाठ्यात्मिक कारमें कोई सब नहीं होना। अगर भारत किन्कर परेसाम होकर और अत्यन्तित होकर मनु महान साम्राज्य-संस्कारों सामिक न रहना चाहे और किन्कर छे तब हम क्या करेंगे। किन्कर ही एसे साम्राज्यका जालना मुक्त हो जायेगा।

अन्तमें वे ही कारण है "किन्कर दृष्टव्यकम क्रिस्टियन भारतीयोंका" वह मध्य साम्राज्यका पद तथा मध्य अरदा है, न कि एक ऐसे स्वतन्त्रिज जर्मिनेसका जागरिक प्रस-भाव किन्कर मानुसेतकी इच्छाकम अन्धकार वा कारण न हो।

वह मानका हमारे प्रकृतगत सम्मानको ठेस कुचलनेका है, और सारे साम्राज्यकी पछाको प्रभावित करगा है। अन्तमें सदा सम्मन साम्राज्यके हर हिस्सेमें है। उनके अन्तमें वह निश्चित है कि अगर साम्राज्यक स केंद्र-कममें सिद्धान्तका टोकर सिद्धी भी बतकी लीकर किया गया वा अन्तरी कहेया भी गई तो उनसे दूरे स्वामेकि किम बहर भी और भीतर भी एक बुरी मित्रक काम हीती है और उन सारी अवस्थाकी कोई क्या वापार वैदिक सतनकी रोझना सम्मन कने किन्कर नहीं होना।

इसकि स मतलबमें उन सभी कर्मोंका सम्मन है जो "साम्राज्यकी उच्चि" सोनने है और एकर परभेसे आरा टाक-टाक सोननेकी बचत है।

स सबको टाकमिक कमकी इच्छे तब नहीं करना बहिष्य; समें ही अत्यन्त मुक्त मन जाता है और सिद्धान्तकी रोझना कर ही जाती है इत ही हमारी प्रकृतिकी वैदिकताके दृष्टव्यक सिद्धान्तोंके वापारपर तब किया जाना बहिष्य। किन्कर सिद्धान्तमें, अत्यन्त करते बत देस और बतकी बचतके सुतन्त्रिक केकर किया जा उछता है; अन्तमें अगर सिद्धान्तको ही अत्यन्त टाकर एव में ही अत्यन्त निर्जन एजेका कोई सम्मन नहीं रह जाता।

अब भी अन्तमें है कि ककरेका उछता बाकना और अत इका बायेपा; कर्मिक वह किन्हे कत भी सुम बत हुआ है कि दृष्टव्यकम क्रिस्टियन भारतीय सम्मनका एक कारण किम बतकीत अब भी कत रही है। मेरी इच्छि कामना है कि भी बंधी तथा कनेक लकी संघर्षमें जाल अत अत्यन्तकी इच्छि, किन्कर किम कर्मिक लकी बहादुरीत कर्त किया है और सना स्वग किया है, सत पुच्छकक अन्तन्तमें दूने सम्मनका मध्य करे।

एम्प्टिस

मिस्टन अर्नेल् हॉल

बेइसीई

२९ अगस्त १९१९

[अधेनीने]

अब क० लकी। देन इकिन्कर परिभा इत लाल अन्तिका

मे वर वर वृत्ति इस राक्षसिष्ठ मण्डलपर कृत और श्री दे रहे हैं, इसीसे भारतमें हमें वह कश्चित् एक मिन उत्पन्ने सिद्ध हुआ है। उपर्युक्त कि भारत किन्न सिंहाली भारतमें मूर्तिक्रम औरिक्रम वा स्थानिक बौद्ध कला वा, लक्ष्मी बौद्ध कला वा और मलयभिक्षुकी बोरके कर्मकी विधानक्रमके एक उत्कर्षके निर्धारक कि युवात्ममें मन्त्रात्ता युवा का वा।

यस कलाके विधानों हमारी विचारणी मनसिष्ठ कस्तोरस मन्त्र ही सुनी है। बोकर बुद्धम और इसके कला विद्येके सम इमने बौद्धिकक क सुदिता सिता। एतद कला का कस्तोर ही, इस इसका कस्तोरामें बानिष्ठ वा काय उत्कर्षके कि उदार रहे। किन्ते बोकर बुद्धके औरम कलेद मलयभिक्षुके उदा को कृत सिने के किन्ते कृत श्री उत्कर्षमें गोरिने और ऐसे बौद्धि मी कला कला वा की विधि कला श्री वे। एमी भारतीय कलाविद्येके हमारे उपासन ही बाधन सिता वा। मेरिष्ठकमें हमारे एक एमी प्रतिनिधि मी बामोद मन्त्रामे एका कुल का बौद्धि कला मन्त्र-सोम सिता वा एका का बौद्धि मी मन्त्र की मी। कर्त्तमें इसमें उत्कर्षामे से बोके मी मन्त्र कमी श्री योगी, और कर्त्तक उत्कर्षामे मन्त्र की विद्येक, ही- एका की- ने एकी-बिन्दु कले उरुही मन्त्र की मी।

उत्पन्ने कर्त्तक एत सिने ये उपास विद्येके और बाधक कलात कर्त्तकी हमारी कर्त्तकके कलाय कले मी उदा कमी उदा श्री ही गै है।

कलात्मन कला हमारा कला श्री है, कर्मके इस वैदिक स नामकी है, और इस वा योगी है वह है कस्तोर का। श्री का नाम हमें का मी श्री सिता गा ठा हमारे कि वह कर्त्तक हीगा कि का कर्त्तके कुल का उदा कर्त्तक हीगा।

इस माने हुए उत्कर्ष और कलात्मन कर्म ही, और हमारी बाधका है कि २८९० के किन्ते मन्त्रात्ता कला (बौद्धि कर्त्तके एक) व २८ में एक उत्कर्षम का सिता का। कला कि हमारा उपास कर्त्तके मन्त्रात्ता नामकी काय।

२८९५ के विद्येके मन्त्रात्ता कलात्मन उत्कर्षमें सिद्ध है कि भारतीय कलात्मने कर्त्तके मन्त्रात्ता कला विचारिनेही ही, कलात्मने कलेके का कर्त्तके हीने कमी और कर्त्तकी बानिष्ठ हीन मन्त्रात्ता ही गै। कर्त्तकेके कुल और कलात्मनी कलात्मने कर्त्तकेके कि ए उदाके मन्त्रात्ता किने है। एतद कलात्मनी कलात्मने सिता गा है। विद्येके उपासित वा, और कलात्मन कलेके कलात्मने कर्त्तकेके विद्येके का कले का का एका किन्ते विचार सिने किन्ते कर्त्तके उदाका है उदाका का का कर्त्तके श्री कलात्मनी कलात्मनी ही कर्त्तके है। कलात्मने एका कर्त्तकेके कि कलात्मनी हीना २४ का है। कुल कर्त्तकेके उपास को कलात्मने सिता गाता है वह कलात्मने होता है। कर्त्तकेके मन्त्रात्ता कलात्मने कलात्मने है, कलात्मने कर्त्तकेके मन्त्रात्ता कलात्मने ही का सिता वा और कलात्मने कलात्मनेके मन्त्रात्ता सिता वा कि ही, सि सिता सिता है।

एत कलात्मने इस का कलात्मने कले है, कलात्मने कलात्मने सिता गा है। इसमें केके उदाके मन्त्रात्मनी सिद्धात्ता एक कलात्मने उदा कलात्मने है। का केके कलात्मने कलात्मने सिता गा उदा है। किन्ते सिद्धात्ता, को उदा एका कलात्मने ही कर्त्तकेके कि नितात्ता कलात्मने है, कलात्मने का ही है। कलात्मने का हमारा कर्त्तके है कि सिद्धात्ता का उदा कर्त्तकेके सिने कलेके किने कर्त्तके।

मन्त्रात्ता प्रतिनिधि कलात्मनी मी का कलात्मने है। एका कर्त्तकेके सिता गाता का वा का, को कलात्मने मन्त्रात्मनी ही, श्री केके हुए सिता कलात्मने का श्री का उदा, और एक सिद्धात्ता कलात्मने कलात्मने मी का का का मन्त्रात्मने का का का श्री का उदा की कर्त्तके पात्रम कर्त्तके है। का कर्त्तकेके मन्त्रात्मने को केके हानि ही ही श्री कलात्मनी।

और मी कले कलात्मने है। कलात्मने कुल कलात्मने ही कलात्मनेके मन्त्रात्मनी ही सिता है। मी एका मेरे एमी प्रतिनिधि सि कलात्मने कर्त्तकेके कलात्मने के है कि कले केके उपास हमने कलात्मने की और हमारी का कलात्मनी।

विद्यमाने वात का दमन परिस्थितियों से परिचित है किन्तु हम मेराकमें सामना कर रहे हैं। हम मन्तव्यपूर्ण वाता कर रहे हैं कि वात हमें अपने कोशिके फिर कोशें उपेक्ष्य होनेकी इजा करते हैं।

इस प्रस्तावनाके वाद भी मनुष्य कादिने मेराकमें प्रतिस्थितियोंकी तरफ से जोई म्वायको मेरवाणी करके सुकाम्यत देनेके लिए कल्पना किया।

मेराकमें दुई एक वाक्यमा से मध्य पद पर भी जोई म्वायको कदम सुनाया गया। उस तरफे कि-मन्तव्य उपर्युक्त किया गया था।

मुकाम्यतक अन्तमें भी मनुष्य कादिने बताया कि मैं मेराकमें लौकिकी वीच २५ वर्षेकी पी कविद समन से छे छे हैं और मुझे कन्वेता है कि उन-करकरसे मेराकमें विविध भारतीयोंको कोशें म्वाय म्वाी मिके छोला।

एम सी० बांयतिया

[अपेक्षिते]

इति वा बांयतिया रेकर्डसः १०५/९

परिशिष्ट २०

एन्टहिम, कू और स्मदसके बीच पत्र-व्यवहार

(१) कनरक एम्सके नाम कोई दम्बहिलका पत्र

कनरा १ १९९

मि कनरक एम्स,

मैं एक दोहर वाद भी बांयते मिकन बना था। मि कनरा नामक दुताकी मनुष्य वाद की-केविन कर्ने क्क म्वाी बताया कि वे दुताक वाक्ये हैं। मि बताया कि कनरा विचारोंकी दृष्टि से कनरा ही एक कनरा करनवाके और दृढ़ है किने वात कनरी दृष्टिसे है। इसरी वातकी ही कनरा कनरी कनरी हमने कान्वादि, एन्टीदि, कनली और पैदि — कनेद दृष्टिसे म्वाय विचार किया। कविद मैं कनराके के वाते मिकन हीम ना गया।

भी गंधी देते किनकी लिए क्क रहे हैं, किने वे एम्स मानन है और कनरा में एम्स उदाता हू वेते हम कनरा मिकनी-मनेके एन्टीदि वा कान्दि किनकीको म्वाी कोष करते वेते ही वे भी उस कान्दि वात म्वाी कर करते किने वे एम्स और कनरीके मानने हैं। इककर ही मुझे पता कनरा है कि कनरा देता करनेकी कनराकी और भी कम है; कनरीके इमान कनरा कम भीम देते हैं जो केक किनी कनरा के कनरीके और किनेके कविदर म्वाय करनेके लिए एम्सका कविदर कर रहे। इस कनराकी कनरा किने किना एम्स कनरा है; कनरीके एक है क्क कनरा कनराके कनरा कनरीकी कोशें कनरी कनरा मानता भी म्वाी।

कन कनरा मैं कनराके एक दुताक हूँ तो कनरा है कनरा के मेरी कनरीके देता म्वायते। कन भी-कनरा करनेके लिए वेक है, कने कनराके प्रतिस्थितियोंको कोशें कनराकी किने किना कनरा म्वाी न कर है। कनरा कनरा कनरी एम्सके ही कनरी, क्क भीम वे रहे किनकी वे मीम कर रहे हैं—कनरी १९००के कनरा १ का एम्स किना कनरा और इर एक कनराके-कनरा क्क मारकीके कनरा किनकीके कनरा कनरा म्वाय — तो कनरा कनरा कनरी मिकन म्वाी कनरा देता कनरा कविद हो तो किनी भी कनराकी—कनरी, कने कनराके प्रतिस्थितियोंके कनराकी ही ना म्वाी—कनरा कर कनरी म्वाय कनरा कनराके कनरीकी कनरीकेको कनरा कर रहे और कनराके कनराके एम्सके-कनराके मारकीकी कनराकी किनकीके कनरा कनरा भी मिकन म्वायते।

कन मैं एक कनरा कने कनरा कनराके देता कनरी किना कनराके क्क मारकीके म्वायकी कविद कनराकी हो।

प्रतिनय " एम्स

दिखावे का एक बहुत परिचितियों से परिचित है किन्तु इस लेखकने साम्ना कर रहे हैं। इस लेखक पूर्णतः मानता करते हैं कि बात इने अपने कोशिक सिद्ध को संकेत देनेकी कृता करेगे।

एक प्रस्तावनाके बाद भी कल्पित कहियेने लेखकने प्रतिनिधित्वी तरह से कोई महीनको भेदराभी करने मुकलता देना सिद्ध बनाना सिद्ध।

लेखकने हरे एक नामसमा से मात्र एक तर भी कोई महीनको कल्पित कृताया का। उस तरहसे कि-सम्बन्ध समान किया का था।

मुकलताके अन्तमें भी कल्पित कहियेने कृताया कि मैं लेखक कोशिक बीच २५ करते भी कल्पित सम से राया ह, और मुझे कहेता है कि उन-उपकरणसे लेखकने विविध मारतीको को म्वाज नहीं सिद्ध कल्पित।

एम सी बाबुसिमा

[बाबुसिमा]

इन्डिया ऑडिस रेकर्ड्स: १०५/९

परिमिष्ट २०

एन्टिहक, कू और स्मवसके बीच पत्र-व्यवहार

(१) कवरक छद्मके नाम काई एन्टिहकका पत्र

काल १ १९९

मि कवरक कवरक

मैं एक दोहरा नाम भी बाबुसिमा सिद्धो का था। मि कवरक नामके कृतायिके अन्तगत बाद की केसिन काई का नहीं कृताया कि वे कृताय नामके हैं। मि पता कि अपने विचारोंकी दृष्टिसे वे अपने ही तरह कल्पित कृतानके और हरे हैं किन्तु नाम कल्पी दृष्टिसे है। इसकी वजहसे ही दृष्टिक कल्पी अपने अपने आकाशिक, उन्निहित, कल्पनी और नैतिक—मनेह दृष्टिकोण मकर विचार सिद्ध। कल्पिक मैं उन्निहित के बारेमें सिद्ध दोहरा का था।

भी गांधी केसे सिद्धांतिक सिद्ध कर रहे हैं, जिसे वे सारमूत मान्न हैं और कल्पिक मैं सम्य कृताया ह, वेत इस अपने विचारों-मनेके उन्निहित वा कल्पिक सिद्धांतोंकी नहीं काइ अपने वेते ही वे भी एक कल्पित कृताया नहीं कर सकते, जिसे मैं सारमूत और आलोचित मानते हैं। एकतरफ तो मुझे पता कृताया है कि अपने पेशा कोशिकी समानता और भी कम है, क्योंकि इनमें बहुत कम जोन सेते हैं जो केवल कितरी कल्पित उन्निहित और निरनेह कल्पिकर म्वाज कल्पिके सिद्ध उन्निहित कल्पिकर कर हैं। इस मनुककी म्वाजा सिद्धे सिद्धा उन्निहित कल्पिक है, क्योंकि लक्ष है का अपने कल्पिकरके कल्पना कल्पिकी कोइ दृष्टी कल्पिक कृताया ही नहीं।

एक काल मैं नामकी एक कृताय हू तो मानता है, नाम केसे मेरी कल्पिकर केसा मैं म्वाजे। नाम को-कृताय कल्पिके सिद्ध उन्निहित है, केसे कल्पिकरके प्रतिनिधित्वी कोइ लक्षिकी सिद्धे सिद्धा काई न कर हैं। कवरक नाम काई कवरकने ही कल्पी का बीच है हैं कितरी वे म्वाज कर रहे हैं—कल्पिक १९०० का कल्पिक २ का ११ सिद्धा नाम और हर एक कल्पिके-कृताया का म्वाजिकोण कल्पी कल्पिकोणिके इनमें कल्पिक म्वाज — तो का नाम काई सिद्ध न कर हैंवे? कवरक पेशा कृताया कल्पिक ही तो कितरी मैं कल्पिके—कल्पिक, काई कल्पिकरके प्रतिनिधित्वी कल्पिक ही न हों—नाम कर काई न कल्पिक? इस तरहसे नाम कवरके कोशिकी कल्पिकीकादी कर कर हैंवे और नामके इन कल्पिके समान-उपकरणकी मारकने की कल्पिकी सिद्धांतोंका कवरक कल्पिक भी सिद्ध कल्पिक।

का मैं कइ कल्पिक नामे कवरक नामकी पेशा कल्पिक कृताया ह किन्तु "उन्निहित कल्पिक" ऐसे सिद्धा कल्पिके का मारकिकोणिके कल्पिकी लक्षिक कल्पिक ही कल्पिक।

(१) डॉई कू क बास डॉई ऐंमहिकका पत्र

पोपबीच

मसल १२, १९९

मैय डॉई कू

मैय दो दिन पत्रक बासको पत्र पत्र किबा बा किबा जल बासने वजुत हुमापूर्वक बासी और बासने हासत
कैकूर दिबा है, बास बासको कनकनकनकन दो बास ।

मैय किबापूर्वक यह नहीं कर सकता कि जो एक मैय सुझावा है कने बासनीस इस इस एक मास कने कि
बासने और मौन न करेगा कनक व रें । कूकि मैय कनकनकन कनकनकी लिबिने नहीं हू कनकन मैय इस प्रकनको
मी कनकन सम्मने व रखा । कनकन मैय कनकन कू है कि मरुतल समान समानः कन केकरोके कनकेका सममान
कनकेका एक समान समान मैय इसको प्रकनकासे कनकन कर केगा । कनकन मी गापी बैस कोम टी जस बासने
कने बासिकी कनकन कनेते रेंगे किने व नाल और कनकनकन मानने है ।

कनकन, मैय कनकनके, कनकन कोके-स रंर-कौकुरैकी हुमाकीकी कनकन नहीं किबा बा कनकन, इस कारण बासका
कनकनके कोकेकी कनकन केनेते हल बास केगा बासकनकन नहीं है । कनकनके प्रकनकनके मैय कनकनके मैय कनकनके
कनकनके है । कनकनके कनकन कनकन कनकनके कनकनके कनकनके कनकनके कनकनके कनकनके कनकनके कनकनके
मी कनकन कर कनकन है । कनकनके मैय कनकन है कि कनकन बास मैय सुझावा हुमा कनकनके मी कनकनके बासकेके
किने किबा कनकी मरुति कनकन करे टी केकी लिबिने बैबा हो बासने किने मी कनकन कने किबाकनकेके टीके
किबा कनकन कनकनके हल बास कनकन । केकी लिबिने के कनकन कर केने । मैय कनेते केका कनकनके बासके किने
की कनकनके और बासने कोके [मौन] कनकनके कनको कनकनका न कूक । कनकनके मैय कनेते कर मी कनकन हू कि
कनका कनकनके मने कनकन कनकनके कनकनके है कनकनके केका कनकन नहीं बा बासके और केकी लिबिनेके बैबा
नहीं हो बासके कि कनकन कनकनके कनकनकेके इस कोके कूक कनकन के कने ।

इसको बासका
ऐंमहिक

[कनकनके]

कनकनके कनकनके केकनके, २२१/१२१

कोई करनेसे बड़ी प्रशंसा मिले वा और उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया था; बल्कि ही नहीं उन्होंने मेरा कोई परिश्रमोंको एक छोटा भी मेरा वा जिसमें कोई एक शुकना ही गई भी कि यदि [मराठीकों] किशानोंकी दूर नहीं किया गया हो [किस] करवर्षकी बालेगी। हमें पता नहीं कि इस सारे विचार-विमर्शका क्या फलाना निकला। किशानों दूर करनेका या कर कायदाका हमें नहीं किया गया; उनको हमारी स्थिति लक्ष्य और बचाया किया हो यह है। बल्कि, पूर्वोक्त करवर्षकी और एक कर ही नहीं है और अगर कमाल निर्देयता का लक्ष्य किया वा रहा है। हमारी बौद्धिक शक्तोंमें कमी नहीं थी वा रही है और प्रिय विचारका लक्ष्य किशानों माबिक नकिशानोंके उपयोगकी दृष्टिसे भी इस जर्मिनीमें हमारी इच्छा ही करतेमें यह यह है।

सुखिंद हम प्रयोग करते हैं कि बात उत्तरित पेशी करवर्षके करतेकी दुना करें जिससे हमें मेरा लक्ष्य प्राप्तकरके लक्ष्यपूर्वक और लक्ष्यपूर्वक लक्ष्यकरते रहते मिले। लक्ष्य हा ता इस प्रयोगकी प्रतिक्रिया कि बात सामान्य-संरक्षण इच्छापूर्वक भी मौग करें।

परमेश्वर महाशयरी सेवक

[अंशमें]

इसका मॉड्युल देखें १०१/१५४

परिशिष्ट २२

डू और गांधीजीके नाम सॉर्ड ऐंस्ट्रिक्के पत्र

(१) गांधीजीके नाम सॉर्ड ऐंस्ट्रिक्का पत्र

लिखी और गोपनीय

अक्टूबर ११ १९१५

मि. जी. गांधी,

इसके नामका अक्षर पत्र मिल गया है और इसे हर दृष्टिकोणमें मान्यता प्राप्त करने पर विचार करना था।

जाने एकतरफा किने गये किंतु लक्ष्यका किंतु मित्रा है वह भी नहीं देखा है। लेकिन मैं लक्ष्यकारोंमें सेहोना और कसूर होनी तो इस पत्रों पर एक हीक बोध हुआ। एकतरफा मैं जानकी वह बात तो किंतु हूँ जो इसे हर दृष्टिकोणमें मान्यता प्राप्त करने की है।

इसके अक्षर इसे कसूर लक्ष्यका वह पत्र मिल था जो उन्होंने अपनी राजनीति का लक्ष्यमें लिखा था। उन्होंने इससे कि न कि लक्ष्यकर कर लक्ष्य किया है और बहुत उत्तरमें दृष्टि किया है कि उन्होंने कोई हूँ के सम्मने कुछ मरदान एक है। इसे मरदान हुआ है, मरदान के है कि १९०० का अक्षर २ मरदान कर दिया जाने और हर एक वह उत्तम संख्यामें किशान मराठीय प्रार्थिकोंको लक्ष्यी मरदानके उत्तमिच्छा जारी किने जाने। लेकिन बोधका उन्होंने कहा है अपने इसे म्म है कि वे "सुखिंद" के अक्षर हमारी बात न मरानि। इस में अक्षर गया वा और मि. कोई छानमें कोई हूँ से दूरता मेंदय सम्म मरानि किया। मि. अपने कहा कि वह कसूर वा गया है वह में अपने लक्ष्यका लक्ष्य किंतु वह लक्ष्य हूँ। कोई हूँ ने जारी वह पत्र नहीं पत्र था, जो कोई कसूर लक्ष्यको लिखा है। सुखिंद उन्होंने उत्तरमें लक्ष्यको लक्ष्य मरानि की। उन्होंने लक्ष्य करण का लक्ष्य (और मरान लक्ष्य है, वह किशानों की ही है) कि लक्ष्यकर लक्ष्यको धारण दृष्टि लक्ष्यकर लक्ष्यकर की बोधका मरानि पत्रों लक्ष्यकर लक्ष्य करनी करना ठीक न होगा। मि. मान्य किया कि वह किशानों लक्ष्य है, लेकिन हर लक्ष्य कि बात लक्ष्यकी मरानि कर रहे है; लक्ष्यका लक्ष्य लक्ष्यकी है और लक्ष्यको लक्ष्य लक्ष्यमें लक्ष्य लक्ष्य की नहीं होगा। लक्ष्य कोई हूँ ने कहा कि वे लक्ष्यको लक्ष्य

कहते कि वाग सुदृग् करने वा कण्ठी बाह्य कर्म विनाशके मित्री उपलक्ष मित्र हैं । मैं इस वाक्ये छत्रुने मन्त्र को कि हस्त कथा कुछ नहीं सिखा वा उलटा । उन हमने पूरे प्रश्नर विचार किया और मैंने "बन्धुकर" के प्रश्नर कार्य की । लॉर्ड हू मेरे इस कथने प्रसन्नित हुए जाने क्ये कि मारपीलेको सजावणके मित्री की मन्त्रो बनेका बन्धुकर कथने-कम सिद्धांत-कथने एता ही प्रश्न एता है और यह परकी वर कृष्णवाणे की धीमा का है । वागको छत्रुग् करमेके किंर वे बहुत विचिंत है और कथना साराण इस कथने कथा छत्रुद्वितीय वा । कथिण वाग वाग कथने एतं किंर तो वागके किंर कथनी स्थिति एत कथनेका बहुत मन्त्र कथर है । यह एत करना वागका काम है कि वाग ऐकान्तिक बन्धुकरक किंर कथान्तक्य प्रतिरोधको जारी रखेके किंर बने है वा नहीं । बेकिन मैं तो यह वागता करता हूँ कि वाग कथने किंर बने है ऐसा कथको न कथणर कथनेके वागकी कथनेकी वागिण मैं इस कथनेकी समग्रिके किंर विचिंत हू । कथना कृष्ण करण यह भी है कि वाग उम्मानकी वागिण मन्त्रक कथनी कर कथने है । १९००के कथन २ की मंछाति वागकी एत कथनी कीट पीठ मित्र कथनेगी । वाग यह किंरक एत कर कथने है कि कथिण वागको इस कथान्तरिक कथनेको वागक्य कथिण मन्त्रक होता है, बेकिन फिर भी बन्धुकरक मन्त्रक वागकी एत कथनेकी-कथने है ।

मैं इस उम्म वागको कथनी ही उलटा वे उलटा हूँ । बेकिन लॉर्ड हू वा कथने प्रतिबिंधिते वागक मित्र केनेके वाग हने फिर उलटा करनी होती ।

वागता है, वागने मेरी सिद्धी वागकी किताबकी प्रमिता देख की होती । मेरा कथन है कि कथने यह वाग केक-कथने वा वागती है कि मैं "बन्धुकर" के प्रश्नर वागते किंरक उलटा हूँ ।

वागका विचार
ऐम्स्टर्डिह

[संशोभिते]

उपरा की हुई मूक वागकी कथिणी कथनेकक (कथ फा ५ ३१) ए ।

(२) लॉर्ड हू के नाम लॉर्ड ऐम्स्टर्डिहका पर

कथन ३ १९९

मिन् लॉर्ड हू

गुप्त कथनी-कथनी कथनर कथनेका एत कथना मित्र है, जो कथने कथनी एवाकथिते कथने कथिण सिद्धा है । कथने कथनेके गुप्त कथिण सिद्धा है कि कथना वागते किंरक मारपीलेके मन्त्रर उलटाका हो क्या है। कथनेके किंरक कथने कथनेका है कि कथा उलटाका हुआ है; बेकिन गुप्त कथा कथने है कि यह मेरे उलटने हुए उलटाकथिते कथन कथना है ।

कथा कुष्णरको कथने कथनेके कथनर कथना वागके किंर कथिणकथनर रोग्य ?

कथनर कथनी वाग हो तो कथा मैं कुष्णरको ४-३ कथनेके कथने कथनेके कथने कथनेका मन्त्र कथना है । कथना कथन यह है कि यह "मित्री कथनेके" कथा मन्त्र किंर कथना कथने ।

कथनर कथनेकथिण कथनर कथनेके कथनी कथिणर हो तो मैं वागकर कथन कथनर कथने कथनेका, बेकिन भी कथनेका कथिणी कथनी ही एत कथनी कथनी कथने केक कथनर होता । मैं उलटाका हूँ कि वे वागकीकथा कथिणर कथनेके किंर ही कथनर है ।

हृदके वागका,
ऐम्स्टर्डिह

१ लॉर्ड ऐम्स्टर्डिहकी प्रमिताके किंर किंरके कथन कथना कथन विचारके सिद्धा क्या है किंर कथिण १८ ।

कहते कि बात सुन करते वा कनकी बोलेते समय विमानके किटी उरकते मिक ठे । कि इस वकते उरकते मक को कि करते कथा कुछ नहीं किना वा उरता । उन हमने पूरे मकर निवार किना और भिने " बकिर "के मकर नहीं की । कोई कू भरे इस ककते मभक्ति रूप बात परे कि मरठीबोका साभामके किटी भी कने जानेका बकिर कभसे-कभ सिद्धांत-कभसे सदा ही मज उठा है और पर परली वर दुम्भकामे ही उरता मक है । मरठो उरता करके कि व बहुत निमित्त है और ककता साभारण भउ परके कथा उरतुपुकिने वा । उरकि मर बात कनेते उर मिनें तो बातके कि कनी सिद्धि एव कनेका बहुत ककता मकर है । मर उन करवा मरका मक है कि बात उरकितक बकिरके कि मरकामक मरिठामको वारी उरके कि बने है वा नहीं । केकिन में ता पर बात ककता व कि बात कने कि बने है उठा ककतो व कने; कनेके मरकी कनेकी ककतिर में एव संकनेकी उरकिने कि किठित हैं । ककता उरता ककत मर भी है कि बात उरमालकी ककतिर ककक ककती कर कुके है । १९००के ककत २ की मंघुकिने मरकी एव ककती ही मर मिक बनेगी । मर मर किकुण एव कर उरते है कि ककति मरको क कककककिर संकनेका मरक ककित मरक होता है, ककिर कि भी ककिरक मकर मरकी एव कनेकी-कने है ।

में कत समय मरको कनी ही उरकत है उरता हैं । केकिन कोई कू वा कनेके मरिठकिने मरने मिक केक वर हमे कि उरकत कनी होगी ।

मरका है, मरने मेरी किटी कनेकी ककतकी मूकिना केव भी होनी । मेरा ककत है कि कने मर कत केक-कभमें वा ककती है कि में " बकिर "के मकर मरसे किकुण उरता ह ।^१

मरका किकत,
ऐम्पिक

[कनेके]

मर की कू मू कनेकी मरिठकी कने-कक (क क ५ ३२) से ।

(२) कने के मर कने ऐम्पिकक मर

ककत ३ १९९

मि कने कू

उर मनी-मनी मरक उरकता वर ककता मिका है, जो कनेके कनी एवकनेके कने कनेके मिक है । कनेके कनेके उरके ककित मिका है कि ककता मरसे मरिठ मरठीबोके मकर उरकता हो मर है । कनेके मिक-मिक मर नहीं ककता है कि कक उरकता मर है; केकिन उरके मर कने है कि मर मेरे उरने क उरकनेके बहुत मर ककता है ।

मर दुम्भारको कने उरने ककत केव मरके कि उरिभामक उरता ।

मर केटी वर हो तो मर मैं दुम्भारको ४-३ कनेके कने मरसे क कने-क मर क उरता है । ककता मर मर है कि मर " मनी ककते " एव मरक मिके किना मूक मने ।

मर उरकेकिर ककत केने मनी कककिर हो तो मैं मरक मरक ककता कने मरक, केकिन मी कनेको ककनी कनी हो उरके कनी कनी मने केव ककत होना । मैं उरकता ह कि मैं मरकीक ककत मरकेके कि ही कने कू है ।

कनेके मरक,
ऐम्पिक

१ कने ऐम्पिककी मूकिनेके कि, कनेके कत मकर ककत क ककककत मिका मर है, केकिर ककित १८ ।

लॉर्ड सूची टिप्पणी

[अन्त]

श्री गंधी और श्री इरीश नाम मुझसे मिलने वाले। मैं उन्हें भी समझते हूँ जल्दी ब्राह्मणिक परिष्कार करना। मैं उन्हें बताता हूँ कि वे ही रिपब्लिकें बना सकते हैं (क) १९०६ कायूर २ की मंजूरी और (ख) हर एक के फे-बिल्डे परिष्कारकोंका स्वामी निवासीके समझे प्रथम; श्री गंधीने यथा कि इन परिष्कारकोंका लक्ष्य वास्तवमें एक ही नाम था वह यथा है, और उन्होंने कहा कि क्रांतिक्रम अथवा आन्ध्रिक प्रयासका सम्भव है, वे उन्हें मंजूर करनेके लिए तैयार हैं। लेकिन उन्होंने और कबसे जानते जो इस कथनाता है और किसे कि नहीं कह सके या सुने हैं उनको लगना सम्भव नहीं है—कह रहा है कायूरकी निवासीके समझता फिर वह एक समझता वैधानिक ही नहीं म हो। कल्पित वे इन रिपब्लिकें किसेकर भी इस समझताका नामोत्तर न करे; उन्होंने कहा भी कहा कि श्री समझको मेरे गले कोई दैत्यके १ अन्त, १९०९ क समझे और कबसे छात्रोंको जो बीजा ही यह है वह मंजूर कर भी जानेगी जबकि इस मुक्त कोशिका ब्रैट ही दोहरेके, प्रतिष्ठापूर्वक ही लौकिक किया है। मैंने कहा कि प्रस्तावित प्रियके स्वामी कायूरकेकाको मासक करने कथना कायूरकाके मंत्री इस प्रस्तावको कि एक करके कायूर भी कर सकते हैं वह है वह समझता कि अगर प्रिय-विशेष केवल कायूर करकेका किता उठा तो एक ही संज्ञामें बुद्धिके लिए उठा नामोत्तर किया जाय होगा। श्री गंधीने कहा कि इस संज्ञामें बुद्धि कर पना कथित क्या किया जाने, उन्हें कभी कोई प्रयास नहीं केवल सिद्धांतमें समझता कामन ऐसी चाहिए। अन्तमें अगर एक मायूरकोको नामे किया जाने तो परतेके कथी कूरे मसालोंमें सुधार करनेके लिए इच्छुक करके लेकिन प्रस्ताव वह एक कथित समझे उन मात्र जानेगा। अन्त मैंने पूछा कि मात्र हीकर कायूरकाके मन्त्रिकोंने जो-कुछ केके लिए कहा है, वे करते जाने नहीं सकते ही मायूरिक इस प्रस्तावको संकल्पके लक्षित करना प्रत्यक्ष करने वा नहीं। श्री गंधीने कहा, कायूरको केवल मैंने समझा है, उनमें परिष्कारकोंका कायूरकाका प्रिय समझना मंत्री कायूरको विधि किया गया है, प्रयासकारी कायूरको नहीं, कल्पित वे इस मामलेमें उनके कथित नहीं करते। मैंने बताया कि एक बात काई ऐसा समझना मंत्री कायूर कथनेके मायूरिके कोई कथित नहीं है, किसे कथित कथित प्रिय विधि हो, लेकिन एकमन्त्रिकोंका काम ही तो वैधानिक समझता भी कामन रहे। श्री गंधीने कहा कि इस बीच नामोत्तर मन्त्रिकों कायूर होगा।

श्री गंधीने बराबरका काम करते हुए कहा कि मैं कायूरकाको एकतरफा तर है हूँ कि वे भी कायूरके मुझसे मिलने निहित आन्ध्रिक प्रतिक्रिया मंजूर करते हैं लेकिन वैधानिक समझताका एक वे भी कायूर रखेंगे। मेरे मतका वह प्रस्ताव यथा है कि कबसे कायूर कायूरका एकतरफा दोनों रिपब्लिकें वे केही तो मंत्रिकोंका, लॉर्डिके कथने एक आन्ध्रिक कथितका ही हूँ ही कायूरकी और कथनेके करते बने विरसेकी एक एकतरफे एकतरफे मंत्री ही जानेगी।

एक कथित एक तरफा मन्त्रिकों किता जाने किन्हीं श्री गंधीने कथितका एक ही। कथने कथने कथनेके कथित कथितका एक भी बीज किया जाने।

५

१९ अन्त

[अन्त]

परिशिष्ट २७

माधीजीके माम टॉस्टॉयका पत्र

वाचनाता परिषदात्
बम्बई ७ १९९

श्री ७ माधी
मुम्बई

हम माधीजी कातका कलकत्त विचकार पत्र लिख । जससे सुझे बहुत प्रसन्नता हुई । भवान इतने सुसज्जित मातों का छात्रोनिर्वाही मरत हों ।

छोटोछोटे कोमलताका हर्ष का विचसे किम्वता व प्रेम्णा ठीक नहीं उतर्न वहाँ इतने बीच भी प्रतिबर्ष विचिन्तित कोर पड़ता वा रहा है । वर कोर वार्मिक भाव्य और दुमिलनी कानूनी कानूनको एक तीव्रता मित्रोक्त कर्म, कर्तव्य, वैदिक सेवसे उत्कृष्ट करेके कर्म, ज्ञान तीरसे विचकार पत्रा है । वैदिक उपास कालर कसेही पलायनी उपास रोम कटी वा रही है ।

“एक शिष्यके नाम वर” मी लिखा वा और जका अनुभव बहुत ही सुन्दर है । कर्म-कर्मकी पुष्पका काम कातकी मातकोसे मेर विरा वायेव । जहाँक “पुनर्विष” कालकी वर है, मी सुदर जसे छोड़ना नहीं वार्तव्य, कर्तव्य, मेरी पत्रसे, पुनर्विषमे विचार कमी भी कतना हर्ष नहीं हो कता किना कि कातकी कसता का ईकारके वाज व मेरम । फिर मी वास जस कालको छोड़के वारसे बैधा वहाँ कर हों, वरि मी कासे प्रसन्न-वर्षमे मरत कर जहाँ ती सुझे बहुत सुधी होना । मेरे फले शिष्य मातसे अनुभव तथा प्रपारसे सुझे प्रसन्नता ही होनी ।

मेरा काल है, वर प्रवेष्टिता, कर्तव्य एक वार्मिक विचारे कर्मकर्म मिठी प्रकारका वार्मिक प्रसन्नता का, कथित नहीं होगा ।

मी ज्ञान-मातसे कातका वरिचन्द्रन उठा हूँ और कासे धाम वर-वर्षर होमेही हम सुधी है ।

लिखा टॉस्टॉय

बैतर्विक इकाकतुल इन्वितिका मूक वधेही प्रिन्टी कसेनर (वस प्र ५१५९ की) से

परिशिष्ट २८

गांधीजीक नाम सार्ड एंस्ट्रुह्लका पत्र

कम्ब्रज ४ १९०९

जिज जी गांधी

आपके कम्ब्रज २१ तथा २२ दिनांकके दोनो पत्रोंके लिए धन्यवाद । वे मुझे बड़ा सन्तुष्ट, जब मैं स्वयंसेवकोंके प्रतिबंधोंके पैदाश कर कर रहा था, मिल गये थे । पहले पत्रमें आपने कोई संशयिणी बात बतलाई नइस भेजनेकी इनामी है । मैं मानता हू कि वह बात बहुत उचितजनक है कि आपने कोई संशयिणी बात बतलाई कि उचितक तथा उचितक करकेसे कहीं उचितमूर्ति आपके पास है । वह कभी देखा है जो आपके लिए आपने मूल्यवान सचिवा होगा और मेरी उम्मीद है कि शक्य विधिसे जान लेंगे ।

दूसरे पत्रमें आपने उस प्रश्नका उत्तरके दिया है जो मैंने कई उपायोंके द्वारा-पत्रमें दर्ज करवा रखा है । वह कोई स्या प्रश्न नहीं; वह सही प्रश्न है जिसकी उत्तरा मैंने आपके इस देशमें जाते ही वे ही भी और फिर किसी भी आप-उत्तरमें लिखितके लिए तैयार रहने तथा उत्तरकेको वह बात लिखनेके लिए कि कल उपाय किसी भी उपाय बताना या उपाय है, मैंने कल उत्तर-पत्रमें एक छोटा है । आप जानते ही हैं, मैं कई बार कोई सू से पूछ चुका हूँ कि वे कभी शक्य कर देतेही स्थितिमें है या नहीं ।

जब मैं कम्ब्रजमें वे जानेकी स्थिति कर रहा हूँ कि आपके पास मेरे लिए कुछ नहीं बकर है या नहीं ।

आपका विश्वास,
एंस्ट्रुह्ल

जी जी ५ गांधी

आपकी हुई सू कियेकी प्रतिकी को-मेलक (पत्र- नं ५१ ९) से ।

परिशिष्ट २९

कम्ब्रजमें युवराजिपौली समा

इतिहास जीतिवियव में प्रकाशित रिपोर्टका अंश

राज्यपालके आदेशके अनुसार हमने इतिहास जीतिवियवके लिए प्रोफेसरकी मीग करते हुए परिषदके कमी जी कम्ब्रजमें आगुवाकी बारेमें वैरिक्टर जी वेदायक फीस तथा दूसरे प्रकारके विषय पर बात की । परिषदके रिपोर्टमें वेने हीप्रकार पर संकरी मानकरकी कम्ब्रजमें कम्ब्रज ५ को प्रकारकेको वचन बना हुई ।

कम्ब्रजका कम्ब्रज प्रश्न करकेके लिए अपना काम युक्ति किया जानेर पर संकरी मानकरमें कल कम्ब्रजमें बना " मैंने कल छोड़ी कम्ब्रज या ठर मुझे प्रकारकी कम्ब्रज की है । मैंने कम्ब्रजकी विचारविचार बना " कम्ब्रजका प्रकारमें मानकर किया था । वह कल कम्ब्रज कम्ब्रज है कि मुझे कोई-कम्ब्रज प्रकारकी कम्ब्रज है । इतिहास मैंने कम्ब्रजका कम्ब्रज प्रश्न करके लीकर किया । "

कुछ वर्ष हुए प्रकारकी परिषद करकेके कम्ब्रज की कम्ब्रज हुई थी और वह कम्ब्रज कम्ब्रज था की है । हर कम्ब्रज कम्ब्रज की है । कल कम्ब्रजके कम्ब्रजमें कम्ब्रजकी कोई कम्ब्रज नहीं है । कम्ब्रज कम्ब्रज करके

पांडीबीके नाम कांड ऐंस्ट्रिहलका पत्र

अक्टूबर ४ १९ ९

मि श्री पांडी,

आपके अग्रपत्र २१ तथा २२ सिंघमरके हीनों कर्मके सिंग क-सवाह । वे मुझ डीक समान वन में लड़कियोंके सर्तोंको देख कर पत्र कर रहा था, सिंग गये थे । पहले पत्र मैंने कोई बॉर्से प्रान्त कलानी मरक मेकनेसी हुआही है । मैं मानता हू कि वह वरत बहुत लोकोत्कण्ड है कि आपने कोई बॉर्से वर क-क्या सिंग कि उरलिक तथा समान करकेसे जल्दी छात्रसुधि नामके छात्र है । वह कवन पेटा है जो आपने सिंग वाले मुकवान उरमित होना और मेरी छात्र है कि इतना सिंगे नाम रखें ।

दूसरे पत्र मैंने लठ प्रकटा कमेक सिंग है जो सिंगे कोई उरलके धुला-सवने रज कर रहा है । वह कोई नाम कवन नहीं; वह कभी मका है सिंगी हुआ सिंगे आपने वर इदमें बने ही है ही की और सिंगे सिंगी भी नाम-लकनील सिंगे सिंग ठेकर उरने तथा उरकरका वर वर सिंगेके सिंग कि कल छात्र सिंगी भी उरक कडना वा उरता है, सिंगे लठ कवन-कवन रख डोगा है । आप बान्ते ही हैं, मैं वर वर कोई हू वे पूछ मुझ हू कि वे कमी कडका कल हेनेसी सिंगेसे है वा नहीं ।

मैं मैं लठकसे वह बान्तेकी मीका कर रहा हू कि आपने पत्र मेरे सिंग कुछ नई कर है वा नहीं ।

आपका विश्वास,
ऐंस्ट्रिहल

मी मो० क पांडी

अगर की हूँ मूक अंगीकी मीका कोरो-मरक (सं० पत्र ५२ ९) से ।

सम्बन्धमें युवराजिपोंकी सभा

इंडियन बोर्डिंगस में प्रकाशित रिपोर्टका अंत

कर्मनामक (राजकोर) कहरमें हीनेवाही लीखी युवराजि उरल-परिकके सिंग मीकलकनी मीप कडो कुप करिगके कनी भी कवनकरक लठकनी बोरोसे बैरिखर भी केलकल फीक तथा दूसरे युवराजिपोंके नाम वन बला था । लठकल बैरिखर केक हाकमें लठ मंकरकी पाकलकनीकी कवनकलमें अक्टूबर ५ वा युवराजिपोंकी पत्र उरता हूँ ।

कवनकल नामक प्रकल कलेक सिंग कवन नाम सुकिट सिंग बान्तेक लठ मंकरकी मकलकने कमे नामके वर " मैं कल लीखी कडका वा लठ मुझे युवराजि मकलक डीक था । सिंगे महरकनी सिंगेसिगके नाम-कुलकल युवराजिमें मकलकल सिंग था । वह कल वरकल प्रकल है कि मुझ बोधी-कुल युवराजि कनी है । लठके सिंग कवनकल कल प्रकल कलना कौकर सिंग । "

कुल वरें हूँ, युवराजि उरल परिक वरकनी कलना कवन हूँ की लठ, वह लठके कल कडो वा ली है । लठ लठ कनी बैरक डोगी है । लठ लठके नाममें उरनीसिगि कौरे कल नहीं है । कडका मुझ कलेक

एत प्रत्याकर मानवकरोके श्री चोराकर्तृवृत्तानी वासपुरके श्री वासराट, दक्षिण वाकिरको श्री हामी हर्षि और श्री वापकिना श्री बोले ।

श्री हामी हर्षिको कहा " हमारी मारुमावाकी छात्रके वे प्रान्त स्वतन्त्र-योग है । "

श्री वापकिनाके कहा : " कुछ इस वाक्का अधिमान है कि मरा कम प्रकृतके हुना । "

तीसरा प्रस्ताव

श्री वापकिनाके तीसरा प्रस्ताव देव किना

" यदि प्रकृती मानके विच्छेदके निय वेदी लेना लक्षित की जाने लिखा हएक कम प्रकृतके फले तो वही कर्तव्य प्रकृती जयमे सुसंज्ञे वाकिना हेमि । " ठीक वाकिनाके इस प्रस्तावका निरोध किना प्रकृति का द्युनकते वाच हुना ।

कतमे श्री वापकिना कवचका नामार माना, दिखे वाच १-२ बने छया छयत हुं ।

[प्रकृतीके]

इतिहास श्रीपिपिनयन १-११-१९ ९ और ११-११-१९ ९

परिशिष्ट १०

'साक्ष्य आशिका' में प्रकाशित समाचार

मारुतीकी फल और मन्त्रकृत धारणीका मेर हुक फला । कुछ उत्तराह फले दक्षिण वाकिरको इस वाक्के उर बेवेकर कनकके कोमेके फले वाच वाच लटकी वा छी श्री कि फल मरीम मारुती हुक कर्मिकेके उपायन वाक्की वाच-दुलकर ठोकेके सुममे बोले लिखी केरकी छात्र बोमका हुना दुर्लभकारके करण मया फला है । मिथिल कलाके मन्त्रिकके कर्कर लक्षणीका कुछ भी कलर हुना हो, फेठ कलरकेके उपायनमे उरछरी बाँच दुःख निना नहीं एह छटती थी । नामक केकमे हुनेके वाके रिना वाच मर फला । कलेके फले कवचके उपायनमे परिशिष्टकी बाँकेके निय यकिरके देकर किमनर नियुक्त किने फले वे । कलेके कवाकी रिरोकेके कहा है कि नामकको फल किमिना-वाकिरकी लेल जाता था । वह एक नहीं मन्त्र ही एका है कि केकमे एका सुठ वाकिरके वाच ही कल्पक वे ना नहीं । और वह एज किरी भी वाचके हीक छिर नहीं हीती कि यम-दुर्लभके लमेका वाकिरकेके प्रयत्न हुना होया । कवाके कलर नहीं रिना वाच वाच किर श्री वाकी काकी रिना वाच था । देकर किमनके अधिमुककर इमान किना वाकेके, और क्विकि का किमि-केकेके लेलकः एलन निम्कर वा लक्षिकि काँ कलेके बीकर इमेका वाकेमे श्री केमुकिनाक वला है । वे मानके है कि मार ठीक कवाकेके वाकेकेका दूरी एह कल्पक हो फला है । कल वाकिरकी छेव छात्रके कपुराकेके सुमन्त्र देकर किरी थी कला केकमे फले वाकेका अधिकार था । केककी रिशिष्टकी बाँच वाकिरकेके की है । कलेके बी-ठीक क्विकि-क्विकि एकर छलाके है । केकिन कलाक लक्ष मारुतेके कोरे उपायन नहीं है । परिनालकेके इस कोएक और लक्ष मन्त्रकृत धारणीकी बाँकेके मतीकेके का सिद्ध हुना है कि कलाक सारी कला पुजेके कोका बीकल वाचमे करकेके उपायनी वाकेका केकमे और केकमे हुनेकेके जाता कला था ।

[अन्तिमके]

इतिहास श्रीपिपिनयन ११-१०-१९ ९

उपनिवेश कार्यालय और ऐंस्टहसकी ओरसे पत्र

(१) गांधीजीके नाम उपनिवेश कार्यालयका पत्र

बर्निका धीरे

नम्बर ३ १९९

महोदय

बॉर्डर के निरीक्षणसमय में आपके पिछले मसहकी तारीख २ के पत्रकी प्रतिलिपि लीकर भेजा है। आपका पत्र पत्र हम मसलतके बारेमें है जिसका जवाब हम विगतके पिछले मसहकी तारीख ४ के पत्रमें दस्तावेजमें विहित मसलतोंके समाधान कर रहे बिनाते लक्ष्मीका दस्तावेज सम्मान्य भावसे किये हुआ था।

उक्त पत्रको वह क्षणिक करलें कि वह क्या था है कि वे प्रस्ताव नहीं है जो बॉर्डर मसलतका आपके सम्मान १६ विभागको वह जानकर उसे वे कि वे भी स्वतन्त्री भोगत वाले हैं। प्रस्ताव वे वे एम् १९०० का अधिनियम २ २२ कर दिया जानेगा, और प्रतिबन्ध है विहित मसलतोंको निराकरणे लक्ष्मी अधिकाधिक समाप्त करने का प्रयत्न करके अधिनियम मसलत किया जानेगा। आपकी भी राज कर भी कि वे प्रस्ताव मसलतकी विधायी कालेन एवं ठोस करत है और आन्तरिक परिणामोंकी दृष्टिसे वे मौजूदा अधिनियमका एक पत्र कर छेदे। हम मसलतोंका आपके द्वारा फेस किये गये प्रस्तावसे कोई सम्मान नहीं है, वह कम मिन है। आपके प्रस्तावमें मसलतके वैधानिक अधिकाधिक तथा अनिश्चित है, इसे लीकर हम आपके आन्तरिक क्षेत्रमें कोई मसलत करलें हैं। १६ विभागकी मसलतें बॉर्डर मसलतके आपके सम्मान ही वा कि भी स्वतन्त्र वह तथा लीकर नहीं कर छेदे कि परिणामोंको सम्मानिकरण सम्मानमें वा सम्मान दूरीतिके उक्त समाप्त करवा दिया था। बॉर्डर मसलत आपकी शत बातकी नहीं मान छेदे कि उक्त मसलतें जहाँमें भी लक्ष्मीकी लीकरिनि मिन करके सम्माने आपका प्रस्ताव रखनेका बात किया वा। बॉर्डर मसलतके आपकी बातचीतसे काल ही सम्मान वा कि आपकी सम्मान है कि वे दस्तावेजकी लक्ष्मीके उक्त द्वारा वह क्षणिक कर रहे कि बर्निका पत्र वह लीकर करके है कि भी स्वतन्त्र वे प्रस्ताव [अन्तिम विधायी आन्तरिक] मसलतें लक्ष्मी है लक्ष्मी पत्र वैधानिक सम्मानके सम्मान ही लक्ष्मीके विवर नहीं है। लक्ष्मी मसलतके उक्त सम्मान उक्त कर दिया है।

आपका आभारपूर्वक
परिशिष्ट ३१ ३१९९

उक्त ही मसलत अधिनी मसलतें कोरे-काल (१९०० पत्र ५१ ७) ३।

हमें दृष्टान्तक सरकारका उत्तर समीक्षा नहीं किया है, लेकिन कल्पना करते हुए या कालकी भाषा है। मुझे मायात हुआ है कि कोई दैनिकिक कलम वाचार्थन प्रकाशो प्रकाश करते हैं।

ह

[अभेदीति]

कानूनीक अंतिम रेकर्ड: २९१/१४१

परिशिष्ट ३३ उपनिवेश कार्यालयकी रिप्यपी

[अन्त]

सन् १९१९

इसके नामक "उत्तर" पृष्ठ ५, अधिका "वर्षा विवरण"—हमें दृष्टान्तक मायात करना चाहिए कि जगत् बना करनेका प्रयास है। मैं मस्तिष्क विकसित प्रयत्न करता हूँ।

पर उपलब्ध ही बहुत कम है। यदि भी वर्षाका वाचन नहीं है तो वे करते हैं—कहाँ वह कि मायातें हमसम्बन्ध को नौकिल नहीं है—तो वे सीक नहीं करते तो नहीं, पर प्रयास करना नहीं बन करते हैं। कल्पना समुदाय समानता प्राप्त करनेमें जगत् बसके नौकिलसे हम कलक नहीं कर सकते। कल्पना वह ही पर दुनियाकी सिद्धांत है। किन्तु विज्ञानमें हम कोई संघ नहीं है, ऐसे एक सिद्धांतकी मान्य करनेके लिए हम बार बार करते हैं, क्योंकि हम समानता एक भिन्न कोईके हममें है जगत् अपनी एक नामके हम कोई अधिकार नहीं है। हम किसी उपनिवेशकी कल्पनाकी वाचन सीमा जाता है, हम ऐसे प्रयत्नके निर्माण अधिकार भी अधिकारके उपनिवेशकी सरकार और उत्तरे हममें बना जाता है और कल्पि दृष्टिको सरकारके लक्ष्यके मान्यमें हमारी बात लीकर करनेकी उत्तरता प्रकाश की है, तथापि सिद्धांतक मध्यक हममें नैरा भाव्य विद्या है (किन्तु करण विचारके मोरों और उत्तर कोमें समानताके प्रति एक कोईकी प्रसिद्ध वृत्तक करण है) वह हीक मायातके वाचन-विद्या ही है। यदि वे हमारा सिद्धांत लीकर नहीं करते, तो सामान्यको नैरा भाव्य विद्याकी मान्यमें रखते हुए हम उन्हें विचार नहीं कर सकते।

सम्बन्ध: कुछ ही प्रयासक एक उत्तर प्रकाशित करना संभव होना।

ह एच एच

"उत्तर-प्रकाश प्रतिपत्त" उत्तरेका प्रयोग करनेमें भी वर्षाका जगत् दक्षिण वाचिक विचारकर उत्तरेमें होने वाली बात है और वाचिक [उत्तर] की सरकारकी रिकॉर्ड हीमें मान्यमें एक ही है, कल्पना वह कल्पना दृष्टिकोको, जो बहुत बुरा है, लीकर करनेको विचार हो गई है।

भी पोषकक रूप भी वर्षाके उत्तरेमें भी बात नहीं गई है (और किन्तु उत्तरमें किन्तुकि उचित विचार प्रकाशित करने हुए बहुत बिना है) वह विचारके कोई नू के एक [अन्त] में और हमारे ३ नामके उत्तर वाचिक है।

पत्रका उत्तर एक उत्तर हम उत्तरका जगत् नामके प्रतीका करनी चाहिए।

ह एच एच के०

१ उत्तरमें मैं मूक भवेकी प्रतीक वा "वेचकेर कोरु व कोरिप्यन्त"।

तार पौरुष बनावा अर्थीय — माण्ड इंग्लेण्डचे कठोरें साजद इमे पन्दी वाठका बोरे कपय मिक बये । फिरी मी बघाले छी क्वात ही सज्जान्त सज्जतका छानुमूठिपूले कहरेंबईको विलारपूर्वक कतने, बीर ताल ही रेडिब्रासिड हुरिये — हेच-मातके ताल मूर्ति बहिन्य बाकिनाडा कायान बहिनिका जन्मेबड ताल जनुयभित करेतर ही मिक सध्या हे ।

(ह)

[तार]

कारणे मज्जातमे बालक प्रकाशित दिवा हे किशुमे क्वा हे कि दुखतराल सज्जतमे १९०० का बभिनितन रर करत्या मंगरु कर दिवा हे बेरिज क्वा प्रवती काकून (शिमियेसल बई) मे प्रथिक्ने बनेलाके बहिन्यमोका संवा संमित करेलाकी बक वास बाजना बाहरी हे । क्वाके सज्जत काई सध्यामे मुरास एक मलन वृत्त बनेबड । क्वा: क्वासा मयिन्तोसि क्वां कि मेरे १ क्वाकूले तार, संवा १, का क्वाक मेज हें ।

५

[अमेबांसे]

दुखीनिक ब्योकिंग रेकर्ड: २९१/१४९

सामग्रीके साधन सूत्र

बापुना बाने पत्रो १९४८ में फीनिक्सके इन्टरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस द्वारा प्रकाशित।
केप टाइम्स केपसे प्रकाशित दैनिक पत्र।

कम्योनियस ऑफिस रेकर्ड्स उपनिवेश कार्यालय सन्दनक पुस्तकालयमें सुरक्षित नाम
बाट देखिए लख १ पृष्ठ ३५९।

इन्डिपेन्डन्ट रजिस्ट्रार अथवा मुस्तफा कामल पाषाण जीवनचरित्र तथा बीजा सेखी
गांधी साहित्य मंदिर, सुरत द्वारा १९२२ में प्रकाशित।

गांधी स्मारक नई दिल्ली गांधीजी-सम्बन्धी साहित्य और कागजातका कन्द्रीय संग्रहालय
तथा पुस्तकालय देखिए लख १ पृष्ठ ३५९।

गांधीजीना पत्रो डाइयामाई पत्रेक द्वारा सम्पादित सेवक कार्यालय अहमदाबाद
१९२१।

गांधीजीनी साधना" राजकीमाई पत्रेक लक्ष्मीधन प्रकाशन अहमदाबाद १९३९।

गवर्नर्स फाइल प्रिटोरिया आर्काइव्स प्रिटोरियामें दक्षिण आफ्रिकाकी सरकारके
कागजात।

गुजराती बम्बईके गुजराती और बंबेजीमें प्रकाशित साप्ताहिक पत्र।

इंडिया (१८९०-१९२१) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसकी ब्रिटिश समिति सन्धन द्वारा
हर सुक्रवारको प्रकाशित पत्र देखिए लख २, पृष्ठ ४१।

इंडिया ऑफिस रेकर्ड्स नुतपूर्व इंडिया ऑफिसके पुस्तकालयमें सुरक्षित भारतीय मामलोंके
सम्बन्धित कागजात और प्रलेख, जिनका सम्बन्ध भारत-अंग्रेजीसे था।

इंडियन ओपिनियन (१९३-१९१) हर घनिवारको प्रकाशित होनेवाला साप्ताहिक
पत्र जिसका प्रकाशन डर्बनमें आरम्भ किया गया किन्तु जो भारतमें फीनिक्स से आया गया
था। इसके पहले चार विभाग थे—बंबेकी गुजराती हिन्दी और तमिल भारतमें हिन्दी और
तमिल विभाग बन्द कर दिये गये थे।

बीबलनु परोड प्रमुवाच गांधी लक्ष्मीधन प्रकाशन अहमदाबाद १९४८।

महात्मा मोहनदास करमचन्द गांधीका जीवन चरित्र डी बी तेंडुलकर अवेरी
और तेंडुलकर, बम्बई, १९५१-५४ जाठ लख।

एम के गांधी ऐन इंडियन पेट्रिअट इन साउथ आफ्रिका (मो क गांधी दक्षिण
आफ्रिकामें एक भारतीय दैचमफत) वे वे डाक अफिस भारत सर्व सेवा संघ वाचनाली
१९५९।

एम के गांधी ऐन साउथ आफ्रिकन इंडियन प्रॉप्यम (मो क गांधी और दक्षिण
आफ्रिकाकी भारतीय समस्या) डॉ प्रा बी मेहता मटेगन ऐन कम्पनी मद्रास।

नेटाक मर्क्युरी (१८५२) डर्बनका दैनिक पत्र।

प्रिटोरिया आर्काइव्स प्रिटोरियामें दक्षिण आफ्रिकी सरकारके कागजात। इसमें प्रधान-
मन्त्री और ट्रान्सवाल-गवर्नरके अभिप्रेक्ष-संग्रह भी हैं।

रैड डेडी मेक ओहानिसदरगका बैनिक पत्र ।

साबरमती संग्रहालय पुस्तकालय और संग्रहालय जिसमें गांधीजीके बसिष आश्रम काल और १९३३ तक के भारतीय कालमें सम्बन्धित कामनात सुरभित हैं । बैसिए पन्ड १
पृष्ठ ३६ ।

स्टार ओहानिसदरगसे प्रकाशित साम्म्य बैनिक पत्र ।

टॉस्टोय एंड गांधी डॉ कालिदास नाग पुस्तक प्रन्धार, पटना ।

ट्रान्सलाक लीडर ओहानिसदरगसे प्रकाशित बैनिक पत्र ।

सारीसवार जीवन-वृत्तान्त

(सितम्बर १९८-नवम्बर १९९)

सितम्बर २ एशियाई पंजीयन संघोच्च अधिनियम (एशियाटिक्स रजिस्ट्रेशन अमेंडमेंट ऐक्ट) सरकारी पत्र में प्रकाशित।

सितम्बर ५ गांधीजीने इंडियन ओपिनियन में कर्नाठ सीलीके बुलाई ११ को संसदमें दिये गये इस बकतव्यकी प्रस्ता की कि जिन्हें उपनिवेशोंमें रहनेका हक है उन्हें गोरेके बराबर अधिकार दिये जाने चाहिए और पूर्ण नागरिक माना जाना चाहिए।
बम्बी नायडू, नाविरसा कामा और अन्य व्यापारियोंने हुसकिया बयात देकर कहा कि द्वायवाकके अधिकारियोंने इस बातका बचन दिया था कि यदि भारतीय व्यापारी स्वेच्छापूर्वक पंजीयन कराना स्वीकार कर लेंगे तो एशियाई पंजीयन अधिनियम रद्द कर दिया जायेगा।

सितम्बर ७ गांधीजीने बकाळठ बन्द कर दी थी इसलिये उन्होंने ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन) की एक सभामें पोळकके लार्ड जि मा संप-नार्याक्यके विषये और इंडियन ओपिनियन का बाटा पूरा करनेके लिए आर्थिक सहायताकी मांग की।

गांधीजी चम्बा करनेके लिए भिटीरिवा रवाना हुए।

सितम्बर ९ दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समिति (साउथ आफ्रिका ब्रिटिश इंडियन कमिटी) को तार द्वारा यह सूचना दी कि अबतक १७५ भारतीय भेस वा चुके हैं। उसमें यह जाणा ब्यक्त की गई है कि लॉर्ड एंस्ट्रिड और अन्य संजगत राहत दिखानेका प्रयत्न करेंगे।

स्टार के प्रतिनिधित्व में कहा कि भारतीय अपन ही घरोंमें बचनबी बने हुए हैं। उन्हें कानूनी समानता दी जानी चाहिए।

ब्रिटिश भारतीय संघने उपनिवेश-सभ्रीको १९७ के कानून २४ रव क्रिये जाने और घोषित भारतीयोंको उचित बर्जा दिये जानेके लिए बर्जा दी।

एच एच एच पोळक और ए एम एंड्रुज ने हुसकिया बयात देकर कहा कि अधिकारियोंने पंजीयन अधिनियम (रजिस्ट्रेशन कानून) रद्द करनेका बचन दिया था। ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन) ने गांधीजीकी आर्थिक जिम्मेदारियां अपने ऊपर के लीं। सगका अपना लार्ड लो कैमैनरीक सम्पाळे हुए ही थे।

सितम्बर १ गांधीजीने जोहानिसबर्गकी सार्वजनिक सभामें भाषण दिया।

काङ्गडिया ब्रिटिश भारतीय संघके अध्यक्ष हुए।

सितम्बर १२ के पूर्व गांधीजीने जोहानिसबर्गकी अरासतमें रहिरीकी पैरबी की।

सितम्बर १३ कोकबी और कामिया समुदायके मतधेदाको दूर कपनके लिए बुलाई गई सभाकी अध्यक्षता की।

सितम्बर १४ द्वांसबालके पठानों और पंजाबियोंकी ओरसे उपनिवेश-मन्त्रीको भेजनेके लिए एक प्रार्थनापत्रका मसबिरा तैयार किया जिसमें एसियाई कानूनको रद्द करनेकी मांग की। नूतनपूर्व भारतीय विपार्हियोंने उपनिवेश-मन्त्रीसे प्रार्थना की कि एसियाई कानून रद्द किया जाये।

सितम्बर १५ बकी बगस और उन बन्धन व्यक्तियोंकी प्रिटोरिया महाकठमें पैरवी की जिनपर बिना पंशादी परवानों (प्राइसर्स लाइसेन्स) के व्यापार करनेका आरोप लगाया गया था।

सितम्बर १६ रायटरके प्रतिनिधिसे मेटमें भारतीयोंके लिए कानूनी समानतापर जोर दिया। जेम्स-निरेसेक (डायरेक्टर ऑफ प्रिन्स) ने ब्रिटिश भारतीय संघको सूचित किया कि स्वास्थ अधिकारीकी रायमें कैबिनेटको दिया जानेवाला भोजन पूरी तरह स्वास्थ्यप्रद है और सिर्फ रोमियोंके लिए ही उसे बदला जा सकता है।

सितम्बर १७ ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन) ने जेम्स-निरेसेकको सूचित किया कि यदि भोजनमें सुधार नहीं किया गया तो उसका यह बर्ष माना जायेगा कि भारतीय समाजको भूखों मारकर कानूनके नामे भुक्तके लिए बाध्य किया जा रहा है।

हरिकान्त गांधीको द्वांसबाससे बेध-निराशा दिया गया।

सैनिक जाँचके सम्बन्धमें स्पष्टीकरण देते हुए गांधीजीने स्टार को लिखा और उसमें स्मट्सपर पंजीयन अधिनियम (रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) के रद्द करनेके बचनका संघ करनेके सम्बन्धमें आरोप लगाया।

सितम्बर १८ इस आशयके समाचार मिले कि नये एशियाई कानूनका सही मंजूरी मिल गई है, और इतिहास आफ् इन्डिया ब्रिटिश भारतीय समिति (साउथ आफ् इन्डिया इंडियन कमिटी) ने लॉर्ड एंटेड्विजको द्वांसबासके भारतीयोंकी धिकावतोंको साम्राज्यीय सरकारके धामने पेच करनेका अधिकार देनेका निर्णय किया है।

ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन) ने भारतीय कैबिनेटके भोजनमें जागबतोंकी जरूरी भी जानेका विरोध किया और माँग की कि उन्हें फिरसे भी देना शुरू किया जाये।

सितम्बर १९ भारतीय और चीनी नेताओंके साथ गांधीजी हॉल्केनसे मिले और उन्हें समझौतेकी शर्तसे अवगत कराया।

गांधीजीने इंडियन ओपिनियन में क्लिकर नेताके भारतीयोंके आप्रह किया कि वे नेताके सरकारके उस विवेक (विज) का विरोध करें जिसका मन्दा नगरपालिकाओं द्वारा कतिपय परवाने (लाइसेंस) बिने जानेपर प्रतिबन्ध लगाया था।

ब्रिटिश भारतीय संघने जेम्स-निरेसेक (डायरेक्टर ऑफ प्रिन्स) का ध्यान बॉक्सबर्ग जेम्समें सैयद मलीके उमर किने मये अल्पाचारोंकी ओर आकर्षित किया और गांधीकी माँग की।

लॉर्ड एंटेड्विजने टाइम्स में लिखा कि बीबीकरन कानून (बीबीकरण ऐक्ट) से समझौता संभव हो गया है और भारतीयोंपर पंजीयन कानूनके अपमान फिरसे काब दिने मये है। ब्रिटिश भारतीय संघकी कककता स्थित शाखाने उपनिवेश मन्त्रीको तार दिया कि साम्राज्य सरकार द्वांसबासके भारतीयोंकी रक्षा करे।

सितम्बर २१ ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन एनीवर्सरी) ने उपनिवेश-सचिवसे सैमर अफीके मामलेमें राहतकी मांग की और बँदियोंके भोजनमें सुधार करनेको कहा। हरिकान्त गांधी और अन्य व्यक्तियोंके लिखाऊ दायर किये गये मुकदमे उठा सिये गये और प्रेससरस्ट अच्छे रिहा कर दिया गया। नया एमिग्राई कानून अमलमें ला गया।

सितम्बर २२ मेटाकके सर्वोच्च न्यायालयने फैसला दिया कि प्रवासियोंके बच्चोंको प्रवासी प्रतिबन्धक अधिनियम १९०७ (इमिग्रैण्ट्स रिस्ट्रिक्शन ऐक्ट १९०७) के अन्तर्गत नया ही ला सकती है।

हरिकान्त गांधी ओहानिसुधम पहुँचे।

सितम्बर २३ स्मट्सने समझौतेके लिए भारतीयों डारा रखी गई शर्तोंको अस्वीकार कर दिया।

जेस-निदेशक (डायरेक्टर ऑफ प्रिजन्स) ने सैबर अफीके प्रति दुर्भंगहार किये जानेकी बात बख्तु बताई।

सितम्बर २४ ब्रिटिश भारतीय संघने सैबर अफीका हसकिया बयान जेस-निदेशकको भेजा। उपनिवेश-सचिवन ट्रान्सवालकी जेलोंमें भोजन-सम्बन्धी विनियमोंके बारेमें हस्तक्षेप करनेमें असमर्थता प्रकट की।

सितम्बर २५ ब्रिटिश भारतीय संघने जेस-निदेशकको लिखा कि सभी भारतीय बँदियोंको एक ही तरहका भोजन दिया जाना चाहिए और चरबीकी जगह उर्ई भी मिछना चाहिए।

सितम्बर २६ गांधीजीने डर्बन पहुँचकर मेटाकके नेताओंको सलाह दी कि वे भारतीयोंको अंगूठोंकी छाप डेकर मेटाकमें आनेसे रोके उन्होंने ट्रान्सवालके संघर्षमें मेटाकने भी हिस्सा किया उसकी प्रशंसा की।

सितम्बर २८ ब्रिटिश भारतीय संघने उपनिवेश-सचिवसे भारतीय बँदियोंकी भोजन-ताकिकके बारेमें आनकाटी माँगी।

पोलकने प्रिटोरिया ग्यून डारा भारतीयोंपर लमाये गये इस आरोपका खण्डन किया कि उन्होंने समझौतेके सम्बन्धित अपना काम पूरा नहीं किया।

सितम्बर १ डर्बनमें मेटाक मधुर्पुरी के प्रतिनिधिको एक सम्बन्धी बैठके दौरान गांधीजीने इस बातपर बोर किया कि भारतीय निर्बाध प्रवेश अपना स्वाभारथी इच्छा नहीं करते वे कानूनकी दृष्टिमें भेदभाव रखा जानेपर असह्य आपत्ति करते हैं।

ब्रिटिश भारतीय संघने दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समितिको पुराने कानूनके अन्तर्गत भारतीयोंकी विरल्लारी और समाके विरोधमें तार दिया और कानूनके रद्द किये जानेकी माँग की।

अक्टूबर २ आहानिसुधमके पाठियोंकी ओरसे भारतीयोंके प्रति किये जानेवाले दुर्भंगहारके विषयमें एक आपनका सचिवा सैवार किया।

नेगल भारतीय कांग्रेसन उपनिवेश-सचिवको तार देकर सूचित किया कि प्रवासी अधि कापीने भारतीय यात्रियोंको डर्बनमें उतरने नहीं दिया है। दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समितिको भी कांमाटीपुईमें भारतीयोंके विरल्लार होनेका समाचार तारन दिया।

अक्तूबर ३ गांधीजीने मेटासके भारतीयोंसे अनुरोध किया कि वे विरमिटिवा पद्धतिको सख्य करानेके लिए आत्मोत्सव करें।

अक्तूबर ५ दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समितिको कोमाटीपूरुमें ८ भारतीयोंको एक छोटे और गन्धे कमरेमें दूध दिया जानेका समाचार ठारसे दिया।

अक्तूबर ६ डर्बनसे ट्रान्सवाल रवाना हुए।

अक्तूबर ७ बिना परीक्षण प्रमाणपर्या (एडिस्टरन सर्टिफिकेट) के ट्रान्सवालमें प्रवेश करनेके अपराधमें अन्य १५ भारतीयोंके साथ फोक्सरस्टमें गिरफ्तार किये गए।

अक्तूबर ८ उक्त १५ व्यक्तियोंके साथ मजिस्ट्रेटके सामने पेश किये गये। समाप्तपर कुत्नेसे इनकार किया एक हफ्तेके लिए हवाकाठमें भेज दिये गये।

अक्तूबर ९ ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन) ने उपनिवेश-सचिव प्रिटो रिया को लिखा कि डेलायोभा-सेसे कौटनेवाले भारतीयोंके साथ किये गये कठित दुर्व्यवहारकी सार्वजनिक जाँच की जाये।

अक्तूबर ११ फोक्सरस्ट जेलमें अपर्याप्त भोजन दिया जानेके बारेमें आवासी (रेजिडेंट) मजिस्ट्रेटके नाम प्रार्थनापत्रका मसविदा बनाया।

अक्तूबर १२ बारबर्टनसे भारतीयोंके एक दलको जिसमें नाबालिग बच्चे भी शामिल थे देखसे बाहर पुर्तगाली क्षेत्रमें भेजा गया।

डर्बनमें राष्ट्रीय परिषदकी समा हुई।

अक्तूबर १३ गांधीजीने भारतीयोंको हवाकाठसे सन्देश भेजा कि वे मायूनमिके लिए जेल जाना स्वीकार करें।

अक्तूबर १४ दाबजी आमर और अन्य व्यक्तियोंकी ओरसे सहायक मजिस्ट्रेट जी' विंथमसेके सामने पेशी की। मुख्यतःसे यहूक भारतीय तपकोंके नाम सन्देश भेजा।

दो महीनेकी छुट्टी समा मिली।

जेल जाते समय भारतीयोंके नाम संबोध दिया कि वे जल्दतक दूध रहें।

डर्बनमें हुई मेटास भारतीय कांफेसकी समामें प्रस्ताव पास किया गया कि सरकारसे शैक्षणिक जाँच सम्बन्धी आजाको वापस लेनेकी माँग की जाये।

अक्तूबर १५ गांधीजीसे मार्सेट स्वनेयरमें सड़क बनानेका काम किया गया।

राबटरके फोक्सरस्ट-स्थित संवादघाटाने लिखा "गांधीजीने अपने-आपको ट्रान्सवालका सबसे सुखी भाग्यी कहा।"

अक्तूबर १६ ब्रिटिश भारतीय संघ और मेटास भारतीय संघने रिषको ठार लेकर इस बातपर छोन प्रकट किया कि गांधीजीसे सड़क बनानेका काम किया गया।

सम्बन्धमें सर मंथरजी भावनवरीकी अध्यक्षतामें समा हुई जिसमें लाळा काबपतपय और विपिनचन्द्र पाक भी बोले। समामें गांधीजीके काणवास-बन्धक विरोध किया गया।

गांधीजीको समा की जानेपर विम कोषोंने सहायसृष्टि प्रकटित की थी और बचाई की थी अस्तुत्वाने उन्हें बन्धवार दिया।

अक्तूबर १७ के पूर्व फीरोजघाट मेहलाने डॉर्ड एंस्ट्रिक्सको ठार दिया कि दक्षिण आफ्रिकामें भारतीयोंके प्रति होनेवाले दुर्व्यवहारके कारण भारतीय जन-मानस बहुत दुःख हुआ है। उन्होंने इस प्रकारके अन्यायारोधि भारतीयोंको बचानेके लिए ब्रिटिश सरकारसे हस्तक्षेप करनेका आग्रह किया।

- अक्तूबर १७ रिचने उपनिवेश कार्यालयको विविध भारतीय संघ (विविध इंडियन एसोसिएशन) और मेटास भारतीय कांग्रेसके तारोंकी प्रतियाँ भेजीं।
- अक्तूबर १८ फोर्डसर्वर्षकी हमीरिया मस्जिदमें धार्मिक समा हुई।
- अक्तूबर २१ हाउस ऑफ कॉमन्समें ऐंस्टिडके प्रस्तावका पत्राव बेटे हुए जर्म ऑफ कृ ने कहा कि उन्होंने गांधीजीकी गिरफ्तारीके बारेमें तथ्य जाननेके विचारसे द्वांसबाहक सरकारको तार किया है। उन्होंने यह भी बताया कि गांधीजी सत्याग्रह संघर्षमें भाग ले रहे हैं और यह बाबित ही है कि उन्हें उसकी सजा मिले।
- अक्तूबर २२ भारतके राष्ट्रपतिने भारत-कार्यालयको द्वांसबाहकमें सत्याग्रहियोंके प्रति किये जानेवाके स्पन्दहारपर भारतीयोंके लोभसे अलग करवा और विचारिष्ठ की कि उनके प्रति उदारताका बरतान किया जाना चाहिए और प्रतिबन्ध छ विहित भारतीयोंके प्रवेशकी मीम स्वीकार की जानी चाहिए।
- अक्तूबर २५ गांधीजीको फोर्डसरस्ट बेलचे श्रेणीकी पोशाकमें बाह्य काकाके मुकदमेमें गवाही देनेके लिए बाह्यसिखर्ग काया मया उन्होंने बाकीमें बैठनेसे इन्कार कर दिया और पार्क स्टेशनसे फोर्ट ठक कैदियोंका बैला छटकामे हुए वे पेश ही गये।
- अक्तूबर २७ पोहानिसर्ग बेलसे उच्च-न्यायालय से जाया गया।
- अक्तूबर ३१ उपनिवेश-मन्त्रीने द्वांसबाहकके गवर्नरको तार देकर अनुरोध किया कि सीमित संख्यामें विहित म्कितियोंका द्वांसबाहकमें प्रवेश करनेका अधिकार बस्वापी ठीरपर मान किया जाये।
- नवम्बर ३ द्वांसबाहक सरकारने उपनिवेश कार्यालयको तार दिया कि गांधीजीसे फोर्डसरस्टमें होनेवाची कृपि-अवर्षनीके मैदानमें डार्ड दिन पढे खोदनेका काम और बावमें नगर पाकिष्काके ठोठों और बेलके बगीचोंमें भी काम किया गया।
- नवम्बर ४ गांधीजीको कैदियोंके कपड़ोंमें फोर्डसरस्ट बेल से जाया गया। हमीरिया मस्जिदमें द्वांसबाहककी स्थितिपर विचार करनेके लिए धार्मिक समा हुई, जिसमें यूरोपीयोंने भी भागप किये। समामें छ विहित भारतीयोंके प्रवेशके अधिकारकी मीम की गई।
- नवम्बर ५ द्वांसबाहककी सरकारने उपनिवेश कार्यालयके अक्तूबर १३ के तारके जवाबमें कहा कि विहित भारतीयोंके प्रवेशके बारेमें की गई भारतीय मीम अस्वीकृत की गई है। यह भी कहा कि वर्तमान कानूनमें इसकी स्पन्दवा है किन्तु भारतीय जागोत्सन करनेके विचारसे कानूनकी अवज्ञा कर रहे हैं।
- नवम्बर ९ गांधीजीने बैस्टको पत्रमें लिखा कि सत्याग्रह एक धर्म-मुख है। मद्यपि कस्तूरवा बहुत अधिक बीमार थी फिर भी उन्होंने जुर्माना देकर बेलचे कूटकारत जाना स्वीकार नहीं किया कस्तूरबाको पत्र लिखा।
- नवम्बर १४ अन्य कैदियोंके साथ गांधीजीकी नगरपाकिष्काके जलप्रवायों (बॉटर बर्न) पर काम करवाया गया कबिलान और पौडियोंकी कर्षे साक करवाई गई।
- नवम्बर १९ सर्वोच्च न्यायालयके इस फैसलेपर कि उपनिवेशमें लौटकर जानेवाके अधिकारी भारतीयोंको पंजीपन करनेकी अनुमति मिलनी चाहिए, मरीज बायर करनेवाके बार बर्टन और फोर्डसरस्टक ५ कैदियोंको छोड़ा गया।

नवम्बर २२ कलकत्तामें सार्वजनिक सभा हुई जिसमें १९७ के कानून २ को रद्द न करनेके लिए द्वायसबाब सरकारकी निन्दा की गई। सुरेन्द्रनाथ बनर्जीने इस बाठपर शोभ प्रकट किया कि गांधीजी जैसे व्यक्तिके साथ बोहानिसबर्गकी सड़कोंमें अपमानजनक व्यवहार किया गया है।

नवम्बर २४ पोखकने बराबतके सामने गांधीजी और अन्य कैदियोंके झुटकारेकी पैरवी की। बोहानिसबर्ग व्यापार सब (बैम्बर ऑफ कॉमर्स) ने प्रस्ताव पास किया कि सरकार भारतीय समाजके बचावमें आकर कानून लागू करनेसे पीछे नहीं हटेयी।

नवम्बर २५ साही उपनिवेशोंमें प्रवास-सम्बन्धी जाँचके लिए लॉर्ड सेक्रेटरी-कमीशनकी नियुक्ति।

नवम्बर २७ महात्म्यावबादी (बटनी जनरल) ने गांधीजी और अन्य कैदियोंको फोक्सरस्ट जेलसे छोड़ना मार्मजूर कर दिया।

नवम्बर २८ जनरल बोबाके इस बक्तव्यका मुसलमानोंने तार भेजकर खण्डन किया कि अभीतक ज्यादातर मुसलमानोंने सत्याग्रह संघर्षमें भाग लेनेसे इनकार कर दिया है।

ब्रिटिश भारतीय संघ (ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन) ने महात्म्यावबादी प्रिटोरियाको लिखा कि बोहानिसबर्ग जेलमें भारतीय कैदियोंके साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है।

नवम्बर २९ ब्रिटिश भारतीय संघने एक सभा करके सरकारसे भारतीयोंकी माँगको पूरा करनेके लिए कहा और यह भी कहा कि यदि ऐसा न किया गया तो सत्याग्रह जारी रखा जायेगा।

गांधीजीने फोक्सरस्ट जेलसे सन्देश भेजा कि भारतीयोंको अपनी प्रतिज्ञापर अटक रहना चाहिए। सन्देश बोहानिसबर्गकी सार्वजनिक सभामें पढ़ा गया।

नवम्बर १ अम्बनके म्यू रिफार्म क्लब में भाषण देते हुए भी बोबजेने दक्षिण आफ्रिकामें भारतीयोंको होनेवाले कष्टोंका उल्लेख किया और कहा कि ब्रिटिश राज्यके प्रति अविश्वास फैलनेके कारणोंमें यह भी एक है।

कर्नल सीलीने कॉमन्स सभामें कहा कि अर्हातक उन्हें माजूम है, गांधीजीसे आम सड़कोंपर कभी कोई सख्त काम नहीं किया गया।

दिसम्बर १ ब्रिटिश भारतीय संघने दक्षिण आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समितिको तार किया कि गांधीजीके साथ किये गये व्यवहारके सम्बन्धमें कर्नल सीलीकी जानकारी विशुद्ध पक्का है। इत्फामे भेजे जा रहे हैं।

फोक्सरस्ट मजिस्ट्रेटने पोखक डाटा की गई भारतीय पैरवीको ठीक मानकर उस भारतीयको छोड़ दिया जिसने घिनाकत करानेसे इनकार कर दिया था।

गांधीजी और उनके सहयोगियोंको एनी बेट्टेने म्यू-कामताजीका सन्देश भेजा।

दिसम्बर १ लॉर्ड सेक्रेटरीने जनरल बोबाको साही सरकारके इस विचारसे अवगत करवाया कि द्वायसबाब सरकारको उन भारतीयोंके साथ उचार व्यवहार करना चाहिए जिन्हें मुडसे पहले अधिकार मिल चुके हैं। निश्चित संख्यामें ब्रिटिश भारतीयोंको प्रवेश दिया जाना चाहिए १९७ के कानून २, और १९८ के कानून २९, को रद्द किया जाना चाहिए और कुछ समयके बाद प्रवासके सम्बन्धमें कोई सख्त कानून बना देना चाहिए।

दिसम्बर १२ गांधीजी फोक्सरस्ट जेलसे छूटे। बोहानिसबर्ग जले हुए फोक्सरस्टमें संवाद बस्ताजोंको जेलमें किये जानेवाले दुर्व्यवहारके विषयमें बताया।

बोहानिसबर्गमें स्वामय सभामें भाषण दिया।

जनवरी १ १९९ मेंटाल भारतीय कांग्रेसके संयुक्त मन्त्री बाबा उस्मानके घर प्रीति-सोबमें गांधीजीका स्वागत किया गया। गांधीजी समामें बोले।

जनवरी २ के पहले जैयूटेकी छाप म देनेके कारण प्रवासी प्रतिबन्धक अधिनियम (इमिग्रेशन रिस्ट्रिक्शन ऐक्ट) के अन्तर्गत बाबा उस्मान पारसी स्लमजी और एम सी आनन्दिया मजरबन्द किये गये।

जनवरी २ गांधीजीने इंडियन ओपिनियन में अपने नव-वर्षके सम्बोधमें बेसवासियोसे स्वदेशीका व्रत लेनेकी प्रार्थना की।

इंडियन ओपिनियन में गांधीजीकी दूसरी जेल-यात्राके अनुभव प्रकाशित हुए, जिसमें उन्होंने कहा कि जेल जाना राजनीतिक गिरावटको विरुद्ध खड़ेनेका सबसे कारगर उपाय है।

१८९४ के कानून ६ खण्ड ३ के अन्तर्गत प्रिटोरियामें धरना देनेवालोंकी गिरफ्तारी।

जनवरी ४ प्रिटोरियाके बरताबारोंको सूचित किया गया कि उनपर मये कानूनके खण्ड ७ के अन्तर्गत मुकदमा चलाया जा रहा है और उन्हें निर्वासित किया जा सकता है।

जनवरी ५ गांधीजीने मेंटाल मर्कुरी को भेंट देते हुए कहा कि भारतीय विद्युत्तम लीकेसे संघर्ष कर रहे हैं।

फ्लेक्सस्टमें हरिवाल गांधी और पुसरे जोग हुआकाठमें।

कबीरूममें तीन भारतीयोंपर पंजीयन प्रमाणपत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) पेश न करनेका आरोप छपाया गया।

जनवरी ६ हमीरिया मस्जिदके मौलवी बहुमद मुक्तिपाले फिरसे अनुमतिपत्र नवा कराना मंजूर नहीं किया। उन्हें द्वान्दवाक खोजनेका आदेश दिया गया। वे केप रवाना हो गये। बाउव मुहम्मद और ३१ अन्य व्यक्तियोंपर पंजीयन प्रमाणपत्र (रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट) पेश न कर सकनेका आरोप छपाया गया।

जनवरी ७ स्टार ने गांधीजीपर यह आरोप लगाया कि पहले ही एधियाई कानूनके उल्लंघनक को मामले हुए हैं और जिन्हें अब कानूनी मान्यता दे दी गई है, उन्हें मामलोंको वे उक्त कानूनको रद्द करनेकी बलीकके रूपमें पेश कर रहे हैं।

बौंसवर्षके भारतीय व्यापारियोंको बस्तीकी बुकानवारीके अलावा और किसी तरहके व्यापारिक परवाने देनेमें इनकार किया गया।

जनवरी ९ के पहले बहुत-से भारतीयोंपर, जिनमें कुछ उपनिवेशमें जाये हुए भारतीय भी शामिल थे और जिन्हें द्वान्दवाकसे मेंटालको निर्वासित कर दिया गया था कानून ३६ के विनियमोंके अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया और उन्हें मेंटालमें प्रवेशके लिए बरामाम समा दी गई।

जनवरी ९ गांधीजीने उर्वरके भारतीय व्यापार संघ (इंडियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स) की समामें भाष किया और उनके नियमोंके बारेमें कुछ सुझाव दिये।

रिचम उपनिवेश कर्नालको नटाल सरकारकी इस विधायिक विरुद्ध सिखा कि जनवरी २३ से १४ सावने उपरके भारतीय विचारों जेष घालात्रामें धरती नहीं किये जावेंगे।

जनवरी १ डॉ. नानाजीने बर्लिनमें कस्तूरबाका ऑपरेशन किया। गांधीजी जो उन्हें देखने वहाँ गये वे जोहानिसबर्ग रवाना हुए।

जनवरी १२ उन तीन भारतीयोंको जिनपर १९८ के अधिनियम ३६ के अन्ध ७ का उल्लंघन करनेका आरोप लगाया गया या आठ दिनोंके अन्दर पंजीयन करनेकी आज्ञा दी गई।

जनवरी १६ गांधीजी पंजीयन प्रमाथपत्र पेश न करनेके अपराधमें जोहानिसबर्ग जाते हुए फोक्सरस्टमें गिरफ्तार। निर्वासन दण्ड देकर उन्हें सीमाके बाहर छोड़ दिया गया। लेकिन वे फिर लौटे, और फिर गिरफ्तार। अपनी जमानत माग देकर छूटे और जोहानिसबर्ग गये।

सर्वोच्च न्यायालयने पंजीयन मागियोंके निर्वासनको वैरकानूनी ग़रब रिया।

जनवरी २ गांधीजीने समाचारपत्रोंको लिखा कि भारतीयोंका संघर्ष तीसरी और अन्तिम अवस्थामें पहुँच गया है।

जोहानिसबर्ग ग़रब-परिपत्रने सरकारसे आग्रह किया कि एशियाई प्रश्नपर सखी बरती जाये और पंजीयन कानून (रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) कायू किया जाये।

जनवरी २१ गांधीजीने नेताक मकसुदी का भेंट ही जिसके दौरान कहा कि यह बताना मुश्किल है कि भारतीयोंका पंजीयन अपनी घाटी सम्पत्ति साहूकारोंके सुपुर्दे करनेमें छिपी जोखिम उठानेको तैयार हो जायेंगे।

इन्डियन ओपिनियन के जोहानिसबर्ग-नियत संवादवाताने खबर दी कि ३ व्यापारी काछलियाके पत्रिज्ञोंपर बसनेके लिए तैयार है।

रैड डेली मेक ने काछलियाके साहूकारोंकी समापर टिप्पणी लिखते हुए कहा कि तथाकथित सत्याग्रह संघपने जोर-जबरदस्तीका रूप धारण कर लिया है। सरकारसे घटना देनेपर पाबन्दी लगानेका अनुरोध किया।

नेताक मकसुदी में एक तार प्रकाशित किया गया जिसमें जोहानिसबर्ग व्यापार-संघ (बीम्बर ऑफ कॉमर्स) ने भारतीयोंपर सरकारको आचार करनेके प्रयत्नका आरोप लगाते हुए उनकी इस कार्रवाईके प्रति धाम व्यक्त किया बा। उद्योगियोंने व्यापारियोंकी सम्पत्ति जप्त करने और वेदियोंपर करना देनेकी कार्रवाईको ग़ना करनेके लिए उद्योग गये करमका समर्थन किया।

जनवरी २२ गांधीजीने काछलियाके यूरोपीय साहूकारोंकी समामें हिदायत पेश किया।

रैड डेली मेक के इस कबनकी आलोचना की कि सत्याग्रहमें जोर-जबरदस्ती की जा रही है।

सर्वोच्च न्यायालयने एशियाई पंजीयन संशोधन अधिनियम (एशियाटिक रजिस्ट्रेशन अमेंडमेंट ऐक्ट) के अन्तर्गत ही नई सजाके विरोधमें नायडूकी अपील खारिज की। जोहानिसबर्ग व्यापार-संघ (बीम्बर ऑफ कॉमर्स) के बच्चाकि विमानने सरकार द्वारा एशियाई पंजीयन कानून कायू किये जातके समर्थनमें प्रस्ताव पेश किया।

मुलावापो ग़रब-परिपत्रने भारतीयोंको नये व्यापारिक परवाने देनेसे इनकार कर दिया।

जनवरी २३ सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नायडूकी अपील खारिज करनेका स्टार ने स्थापित किया और कहा कि कुछ पायस व्यापारियोंको छोड़कर कोई भी भी गांधी और

जनवरी १ १९९ नेटाल भारतीय कांग्रेसके संयुक्त मन्त्री बाबा उस्मानके घर प्रीति-भोजमें गांधीजीका स्वागत किया गया। गांधीजी उभारमें बोले।

जनवरी २ के पहले ब्रैगूठकी छाप न देनेके कारण प्रवासी प्रतिबन्धक अधिनियम (रिमिड्रेशन रिस्ट्रिक्शन ऐक्ट) के अन्तर्गत बाबा उस्मान पारसी व्यस्तमजी और एम सी आनन्दिका गजरबन्द किये गये।

जनवरी २ गांधीजीने इंडियन ओपिनियन में अपने गव-वर्षके सन्देशमें वेमबासियमें स्वदेशीका व्रत देनेकी प्रार्थना की।

इंडियन ओपिनियन में गांधीजीकी दूसरी लेख-मात्राके अनुभव प्रकाशित हुए, जिसमें उन्होंने कहा कि लेख जाता राजनीतिक निर्दोषताके विरुद्ध लड़नेका सबसे कारगर उपाय है।

१८९४ के कानून ६, खण्ड ३ के अन्तर्गत प्रिटोरियामें करना देनेवालोंकी गिरफ्तारी।

जनवरी ४ प्रिटोरियाके घरनाबारोंको सूचित किया गया कि उनपर नये कानूनके खण्ड ७ के अन्तर्गत मुकदमा चलाया जा रहा है और उन्हें निर्वासित किया जा सकता है।

जनवरी ५ गांधीजीने नेटाल मर्क्युरी को भेंट देते हुए कहा कि भारतीय विद्युत्तम तरीकेसे संघर्ष कर रहे हैं।

फोक्सरस्टमें हरिकान गांधी और दूसरे लोग हूबाकालमें।

स्वीडनमें तीन भारतीयोंपर पंजीयन प्रमाणपत्र (रिमिड्रेशन सर्टिफिकेट) देना न करनेका आरोप लगाया गया।

जनवरी ९ इमीरिया मस्जिदके मौलवी अहमद मुस्लिमानने फिरसे अनुमतिपत्र नवा कराना मंजूर नहीं किया। उन्हें ट्रान्सवाल छोड़नेका आदेश दिया गया। वे कैप रवाना हो गये। बाबर मुहम्मद और ३१ अन्य व्यक्तियोंपर पंजीयन प्रमाणपत्र (रिमिड्रेशन सर्टिफिकेट) देना न कर सकनेका आरोप लगाया गया।

जनवरी ७ स्टार में गांधीजीपर यह आरोप लगाया कि पहले ही एशियाई कानूनके उल्लंघनके जो मामले हुए हैं और जिन्हें अब कानूनी मामला दे भी नहीं है, उन्हीं मामलोंको वे उक्त कानूनको रद्द करनेकी दलीलके रूपमें पेश कर रहे हैं।

बॉक्सबर्गके भारतीय व्यापारियोंको बस्तीकी बुकानकारीके अलावा और किसी तरहके व्यापारिक परजाने देनेमें इन्कार किया गया।

जनवरी ९ के पहले बहुत-स भारतीयोंपर, जिनमें कुछ उपनिवेशमें जाये हुए भारतीय भी शामिल थे और जिन्हें ट्रान्सवालसे नेटालको निर्वासित कर दिया गया या कानून ३६ के विनियमके अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया और उन्हें नेटालमें प्रवेशके लिए अटकलाम सजा भी दी।

जनवरी ९ गांधीजीने सर्वलके भारतीय व्यापार संघ (इंडियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स) को उभारमें भाग लिया और उसके नियमोंके बारेमें कुछ सुझाव दिये।

रिचने उपनिवेश कार्यालयका नेटाल सरकारकी इस विनियमके विरुद्ध किया कि जनवरी २३ से १४ सालके ऊपरके भारतीय विद्यार्थी उच्च छात्राओंमें भर्ती नहीं किये जायेंगे।

जनवरी १ डॉ. मानबीने इकनमें कस्तूरबाका जोपरेशन किया। गांधीजी जो उन्हें देखने वहाँ गये वे जोहानिसबर्ग खाना हुए।

जनवरी १२ उन हीन भारतीयोंको जिनपर १९८ के अधिनियम ३६ ने कष ७ का उत्कमन करनेका आरोप लगाया गया था जाठ दिनके अखर पंजीयन करनेकी आज्ञा दी गई।

जनवरी १६ गांधीजी पंजीयन प्रमामपत्र पेठ म करनेके अपराधमें जोहानिसबर्ग जाते हुए कोम्पारस्टमें बिरफ्तार। निर्वासन दण्ड देकर उन्हें सीमाके बाहर छोड़ दिया गया। मफिन के फिर छोटे और फिर बिरफ्तार। अपनी जमानत आप देकर सूटे और जोहानिसबर्ग गये।

सर्वोच्च-न्यायालयने पंजीयन नागरिकोंके निर्वासनको गैरकानूनी करार दिया।

जनवरी २ गांधीजीने समाचारपत्रोंकी किन्ना कि भारतीयोंका संघर्ष तीसरी और अन्तिम अवस्थामें पहुँच गया है।

जोहानिसबर्ग नगर-परिषदने सरकारसे आग्रह किया कि एधियाई प्रथमपर सखी बरती जाये और पंजीयन कानून (रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) कायू किया जाये।

जनवरी २१ गांधीजीने नेटाल मर्च्युरी को बेंट दी जिसके शीटन कहा कि यह बताना मुश्किल है कि भारतीय व्यापारी अपनी सारी सम्पत्ति साहूकारोंके सुपुर्दे करनेमें छिपी जोखिम उठानेको तैयार हो जायेंगे।

इंडियन ओपिनियन के जोहानिसबर्ग-निष्ठ सभासदावाने अबर दी कि १ व्यापारी काष्ठकियाके पब्लिशिंगपर बसनेके लिए तैयार है।

१४ डेसी मेड ने काष्ठकियाके साहूकारोंकी सभापर टिप्पणी लिखते हुए कहा कि उवाकमिष्ठ सत्वाग्रह संघर्षने जोर-जबरदस्तीका रूप धारण कर लिया है। सरकारसे बला देनेपर पाबन्दी कमानेका अनुरोध किया।

नेटाल मर्च्युरी में एक तार प्रकाशित किया गया जिसमें जोहानिसबर्ग व्यापार-संघ (संघर्ष जाँठ कॉमर्स) ने भारतीयोंपर सरकारको काधार करनेके प्रयत्नका आरोप लगाते हुए उनकी इस कार्रवाईके प्रति शोक व्यक्त किया था। उपवासियोंने व्यापारियोंकी सम्पत्ति पब्ल करत और वेधियाँपर बला देनेकी कार्रवाईको बन्द करनेके लिए उठाये गये कबमका समर्पण किया।

जनवरी २२ गांधीजीने काष्ठकियाके यूरोपीय साहूकारोंकी सभामें हिसाब पेश किया।

१४ डेसी मेड के इस कबमकी जापोचना की कि सत्वाग्रहमें जोर-जबरदस्ती की जा रही है।

सर्वोच्च न्यायालयने एरियाई पंजीयन संघोपन अधिनियम (एधियाटिक रजिस्ट्रेशन अक्ट)के अन्तर्गत भी कई सजाके विरोधमें नायडूकी अपील स्वीकार की।

जोहानिसबर्ग व्यापार-संघ (संघर्ष जाँठ कॉमर्स) के बस्ताकि विधानने सरकार द्वारा एधियाई पंजीयन कानून कायू किए जानेके समर्पणमें प्रस्ताव पेश किया।

कुलाबायो नगर-परिषदने भारतीयोंको नये व्यापारिक परवाने देनेके इत्कार कर दिया।

जनवरी २३ सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नायडूकी अपील स्वीकार करनेवा स्टार ने स्वागत किया और कहा कि कुछ पावल व्यापारियोंको छोड़कर कोई भी भी पांधी और

श्री काङ्ग्रेसियाकी बात मानकर अपने व्यापारको दौबपर चलाता पसन्द नहीं करेगा। ई आई अस्वात और अन्य भारतीय व्यापारियोंने काङ्ग्रेसियाका अनुसरण किया। जनवरी २५ गांधीजीने रीड डेसी मेस का मेट ही जिसमें कहा कि जबतक एशियाई व्यापारियोंको दक्षिण आफ्रिकामें उनका अधिकार प्राप्त नहीं हो जाता मैं संतुष्ट नहीं होऊँगा।

रीड डेसी मेस ने सिद्धा कि यदि उत्पादियोंके ठरीके दक्षिण आफ्रिकाकी रंगरा और शतनी आबादीमें भी फैल गये तो अण्डमण्डाकी स्थिति उत्तम हो जायेगी।

जनवरी २६ गांधीजीने तमिस समाजकी धाममें भाषण दिया।

हाँ अण्डमण्डाको सिद्धा कि काङ्ग्रेसियाने जो कथन उठाना है उसके विरुद्ध उभाया गया आरोप ठीक नहीं।

साङ्गकारोंने काङ्ग्रेसियाको सूचित किया कि उनका इच्छा काङ्ग्रेसियाकी सम्पति अस्वायी ठीरपर बन्द करनेका है।

बनेक भारतीयोंको निर्बाधित करके डेकायोबा-वे भेज देनेकी आज्ञा दी गई। इनमें १४ घाक पुणने अधिकारी भारतीय भी शामिल थे।

जनवरी २७ गांधीजीने आई कर्जनको भारतीय स्थितिके सम्बन्धमें अपना बहुतब्य भेजा और आधा व्यक्त की कि यदि वे हस्तक्षेप करें तो संघर्षका मंगलमय अन्त हो सकता है। काङ्ग्रेसिया और अन्य १ व्यक्ति अक्ट ९ के अन्तर्गत विरपटार करके मजिस्ट्रेटके सामने पेश किये गये।

बोडबाइमें भारतीयोंकी धमा हुई, जिसमें निर्णय किया गया कि न परवाने किये जाएँ और न फिरसे पंजीयन प्रमाणपत्रको गया कराया जाये।

जनवरी २८ बोडानिचबर्गके भारतीय व्यापारियोंने बिना परवाना व्यापार करके जेज जानेका निरवचन किया।

जनवरी २९ गांधीजीको कस्तूरबाका स्वास्थ्य सुधारनेकी सूचना मिळी और वे डरबन रवाना हुए।

काङ्ग्रेसिया नायक और अन्य व्यक्तियोंको तीन महीनेकी कैद या ५ पीड जुमनिकी सजा भी गई सेक्रेटको २ महीनेकी सजा भी गई।

ड्रान्चबाइ सरकारने उपनिवेश-मन्त्रीको सूचित किया कि गांधीजीसे आम रास्तोंपर काम किये जानेकी खबर सुठी है भारतीय कैदियोंके साथ कुर्बानहार नहीं किया गया है और न ही उनको आर्थिक धावनाको डेस पहुँचाई गई है।

फरवरी १ काङ्ग्रेसियाकी कारावास अवधियों ई आई अस्वात सर्वसम्मतिसे कठिण भारतीय संघके अध्यक्ष चुने गये।

फरवरी २ आई कर्जनने गांधीजीको सूचित किया कि बोबा और कस्तूरबा उनकी बातचीत हुई है और वे भारतीयोंके साथ सभारता और न्यायका बयान करनेके लिए सन्तुष्ट हैं।

फरवरी ३ निर्बाधनके हुकमकी अवज्ञा करनेके अण्डमण्डे पारसी स्तम्भकी और अन्य व्यक्ति विरपटार किये गये।

फरवरी ४ गांधीजी कस्तूरबाको अण्डमण्डके दाह स्वस्थ होनेपर छीमिक्स से गये।

फरवरी ५ ड्रान्चबाइके सर्वोच्च न्यायालयने रक्षितियोंकी अपील खारिज कर दी। हरिबाइ गांधी शठम मुहम्मद और अन्य प्रमुख भारतीयोंको निर्बाधनका हुकम दिया गया।

फरवरी ९ सरकारी पत्र में संघीकरण-कानूनका मसविदा प्रकाशित हुआ।

वाटर मुहम्मद और काउन्सिलरने अन्तर्गतमें मसूदाको अपनी सम्पत्तिपर अस्पायी बन्धकार बना मंजूर किया।

फरवरी १ हरिदास गांधी और अन्य अनेक व्यक्तियोंको फोक्सरस्टमें तीनसे लेकर छ महीने तक की सजा सुनाई गई।

साम्प्रदायिक सरकारने रोडेधियाके एचियाई कानूनको मंजूरि महीने दी।

फरवरी ११ निर्वाचनकी समाके बाद ट्रांसवाल्में पुनः प्रवेश करनेके अपराधमें पारसी स्वतन्त्री और अन्य व्यक्तियोंको तीन-तीन महीनेकी सजा दी गई।

फरवरी १५ के पूरा राष्ट्रीय सम्मेलन (नेशनल कन्वेंशन) ने दक्षिण आफ्रिका कानूनका मसविदा पेश किया।

फरवरी १६ बी ए० वेस्टमरको तीन महीनेकी सजा दी गई।

अन्तरिम बोधाने गवर्नरको एक पत्र किया जिसमें १९७ के कानून २ के रद किये जानेकी मांगके विषयमें सरकारकी स्थितिका व्योप देखे हुए इस बातसे इनकार किया कि ऐसी किसी मसूदाका बचन किया गया था। उन्होंने यह भी कहा कि एचियाई अधिवासियोंमें ९७ प्रतिशत लोगोंने पंजीयन कर लिया है और अनाक्रमक प्रतिरोधकी हास्य बीबांडोक है।

फरवरी १७ कुछ और सत्याग्रहियोंको तीनसे छ महीने तककी सजा दी गई अन्य कोम द्विपक्षमें बापस भंग किये गये प्रिटोरिया हाइकोर्टने अमिस्टन आदिसे विरफ्तारियोंकी सबरे निन्दी।

फरवरी १८ एम ए कामाको तीन महीनेकी सजा। और भी अनेक प्रमुख भारतीय निर्वासित किये गये या जेल जैजे गये।

फरवरी १९ घिनाक्ट न देने अथवा पंजीयन प्रमाणपत्र न पेश करनेके अपराधमें छ भारतीय स्टैडेंटमें विरफ्तार।

फरवरी २ घिनाक्टके निघान देनेसे इनकार करने और पंजीयन प्रमाणपत्र पेश न करनेके अपराधमें निर्वासन विरफ्तार किये गये।

फरवरी २२ नाबीबी फीनिक्ससे जोहानिसबर्ग रवाना हुए।

फरवरी २५ पोल्क और म्यासके छात्र फोक्सरस्टमें विरफ्तार।

पंजीयन प्रमाणपत्र पेश न करनेके अपराधमें तीन महीनेकी कैद अथवा ५ पाँड जुमानेकी सजा दी गई।

तमिल समाजको संघर्ष जारी रखनेका संश्लेष किया।

फरवरी २८ श्रीडॉक्टरके ह्मीधिया इस्लामिया अंजुमनके उरबाकवानमें आयोजित विरिष्ठ भारतीयोंकी सभामें नाबीबी काउन्सिलर पारसी स्वतन्त्री और अन्य लोगोंको बल आनेपर अबाई दी गई। और संघर्ष जारी रखनेका निश्चय किया गया।

मार्च २ नाबीबीको फोक्सरस्ट वेम्सि प्रिटोरिया पल ले जानेका हुक्म जारी हुआ और सामकी पाईसे से लन्दरीके साथ रवाना हो गये।

मार्च ३ प्रिटोरिया सेम्स जेल पहुँचे।

दक्षिण अफ्रिकिया के फोक्सरस्ट-स्थित संसारवागने उार किया "मापी प्रयासकिक कारमेंसे प्रिटोरिया ले जाये गये है। मेरा विश्वास है कि यह करम उन्हें सब कोषेति

बिस्तुळ अलग कर देणेकें किय उठाया गया है। निकट भविष्यमें समझौता होनेकी खबर ब्रिटिश भारतीय संघकी कार्यकारिणी बिस्तुळ यच्छ बताती है।

पोरुक्कने सबायापस्ता सत्याग्रहियोंकी पस्त्रियों और रिस्तेदारोंकी सभाका उद्घाटन किया।

ई आई बस्वात और छिन्नन विचनको तीन-तीन महीनेकी सजा दी गई।

मार्च ४ गांधीजीको जेसके दरवाजे और छर्वां छाउ करनेका काम दिया गया।

मुख्य दरनेदार के के छानीको जो ठमिल कान्यान समिति (ठमिल बेमिच्छिठ सोसाइटी) के मन्त्री सी जे तीन महीनेकी सजा दी गई।

दो महीनेकी सजा पूरी हो जानेपर रंवेरिया मुक्त किये गये।

मार्च ५ रवेरिया फिर गिरफ्तार।

केपके रंखदार कोषोंकी समामें संघीकरण कानूनके मसविसेपर चर्चा हुई और संघकी संघर्षमें प्रतिनिधित्व तथा राजनीतिक अधिकारोंकी मांग की गई।

श्री काछकिया और बस्वातके कैदमें होनेके कारण ई एच बुबाकिवा ब्रिटिश भारतीय संघके कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त।

मार्च ६ धोरोने बारकर्टन बॉक्सबर्न क्रूमसंडर्में आदि स्थानोंमें बस्त्रियां स्थापित करनेके किय आन्दोलन शुरू किया।

मार्च ७ हुमीरिया इस्लामिया मंजुमनमें ब्रिटिश भारतीयोंकी सभा हुई, जिसमें अन्य लोगोंके अतिरिक्त बुबाकिवा कैरलबैक और पोरुक्क भी बोले।

मार्च ८ गांधीजीके कारावाससे सम्बन्धित अपने बरतबर्नमें कर्नल सीसीने कहा कि श्री गांधीको सजा इसकिये दी गई है कि उन्होंने ट्रान्सवाल कानूनका पालन करनेसे इत्कार किया और सही सरकार ट्रान्सवाल सरकारको पंजीयन प्रमापपभते सम्बन्धित कानूनको लागू करनेसे मही रोक सकती।

मार्च ९ गांधीजीको हफरुड़ी बालकर बवालतमें पवाड़ी देनेके किय पेश किया गया।

सत्याग्रहियोंने कस्तूरबाको गांधीजीकी तीसरी जेस-यात्रापर बचाई दी।

जीनी सत्याग्रहियोंने गांधीजी और छिन्नय विचनके जेल जातेपर बचाई दी और निर्णय किया कि न्याय और आत्मानिमानके किय संघर्ष जारी रखा जायेगा।

भारतीय सत्याग्रहियोंको निर्वासितकर बेछानोजा-बेके रास्ते भारत मेंजना आरम्भ।

ब्रिटिश भारतीय संघने ट्रान्सवाल और पुर्ववाककी सरकारोंने भारतीयोंके निर्वासनके किय आपसमें जो प्रबन्ध किया वा पसका विरोध करते हुए ट्रान्सवाल गवर्नरकी किखा।

मार्च ११ बोहामिसघर्षमें भारतीय महिलाओंने सभा की। कस्तूरबाने पत्र भेजा कि यदि मुझे पंच होंगे तो मैं चढ़कर समामें जा जाती।

कस्तूरबा और अन्य चार महिलाओंके हस्ताकरसे ट्रान्सवालके अखबारोंके नाम पत्र भेजा गया।

डोकने बोहामिसघर्षके अखबारोंके नाम पत्र किखा जिसमें गांधीजीको हफरुड़ी बालनेकी बातका संकेत करते हुए उन्होंने कहा कि श्री गांधीजीके आबनीके इस अन्यायक अपमानके उपनिवेशके अधिकार व्यक्ति सम्बन्धा अनुभव करते हैं।

मार्च १२ इडिचन ओपिनियन क विसेच संवादवाटाने वार हाउस खबर दी कि गांधीजी बुबके और बीमार रिबाई पड़े हैं।

व्यासासङ्के भारतीयोंकी समामें द्वांसबासके भारतीयके प्रति किये जानेवाले दुर्व्यवहार और साम्राज्यीय सरकारकी कमजोरियोंकी निन्दा की गई।

किम्बल्लेकी अखेट जातियोंकी समामें इस बातपर चिन्ता प्रकट की गई कि प्रस्तावित परिवर्तनमें उनके हितोंकी रक्षाकी समुचित व्यवस्था नहीं है।

मार्च १३ इंडियन ओपिनियन ने गांधीजीके फोक्सरस्टसे प्रिटोरिया सेंट्रल बैठक में जिये जानके सम्बन्धमें इस सरकारी वक्तव्यकी आलोचना की कि ऐसा केवल प्रशासनिक सुविधाके लिये किया गया है और किता कि इसका मन्दा केवल यह है कि वी गांधीकी अन्य कोषोंसे विस्तृत अलग रखा जाये ताकि उनके देश-भाइयोंको उनसे किसी तरहकी प्रत्या और प्रोत्साहन न मिल सके।

ब्रिटिश भारतीय अपने ही कमिश्नरसे प्रार्थना की कि वे निर्वासन नीतिके सम्बन्धमें एक सिष्टमम्बल्लेने मिलनेकी कृपा करें।

मार्च १४ बर्नमें आयोजित मेटाल भारतीय कांग्रेसकी समामें द्वांसबासके सत्याग्रहियोंका सम्बन्ध किया और द्वांसबास तथा बेसायोवा-बेके अधिकारियोंके बीच हुई निर्वासन सम्बन्धी व्यवस्थाकी निन्दा की।

जोहानिसबर्गमें आयोजित ब्रिटिश भारतीय संघकी समामें निश्चय किया गया कि जबतक सरकार भारतीयोंकी माँगोंको स्वीकार नहीं करती जबतक पूरी सभितके साथ सत्याग्रह जारी रखा जायेगा।

मार्च १५ बलिन आफ्रिका अधिनियम (साउथ आफ्रिका ऐक्ट) का मसविदा बलिन आफ्रिकी संसदके सामने पेश किया गया इस सम्बन्धमें कॉमन्स समामें प्रश्न उठाया गया। ही कमिश्नरने निर्वासनके प्रश्नको लेकर मिलनेवाले ब्रिटिश भारतीय मन्त्रके सिष्टमम्बल्लेकी मुलाकात देनेसे इनकार कर दिया।

मार्च १६ बेसायोवा-बेमें भारतीयोंकी समा द्वांसबासकी स्थिति और निर्वासनके प्रश्नके बारेमें अधुस्ला हाजी आदम और पोसक बोले पुर्तगाधी बलर-जनरलके पास सिष्ट मम्बल्ले भेजनाका निश्चय किया गया।

मार्च १७ किम्बल्लेके भारतीयोंकी समामें द्वांसबासमें भारतीयोंके साथ होनेवाले अत्यायपूर्ण व्यवहारके प्रति विरोध प्रकट किया।

द्वांसबासके गवर्नरने उपनिवेश-कार्यालयको धार दिया कि ऐसा कोई भी भारतीय देशसे निर्वासित नहीं किया गया जिसने अपना पजीवन प्रमाणपत्र दे दिया हो। केवल वे ही एसियाई देशके बाहर निकाले गये हैं जिन्हें अविश्वासका अधिकार नहीं था और जिन्हें मजिस्ट्रेटने निर्वासनका हुकम दिया था।

ब्रिटिश भारतीय संघकी पोर् एलिजाबेथ साखने धार देकर वाइसरायसे आपह किया कि वे द्वांसबासके भारतीयोंके पक्षमें हस्तक्षेप करें।

मार्च १९ द्वांसबासके सर्वोच्च न्यायालयने फैसला दिया कि अतिरिक्त क्षेत्रोंमें व्यापारिक परवाने प्राप्त करनेके सम्बन्धमें भारतीयोंपर कोई बन्दिन नहीं है।

मार्च २२ मेटाल नगर-पालिका संघने नगरपालिका कानून एकीकरण विधेयक (यूनिफिकेशन ऑफ म्युनिसिपल कानून) में विदेश-सम्बन्धी भागोंको अस्वीकृत करनेके लिए सामान्य सरकारकी आलोचना की।

- मार्च २४ ईस्ट इन्डिया के ब्रिटिश भारतीय संघकी समाने ट्रान्सवाळ सरकारकी निर्वासन-नीतिकी निष्ठा की।
- मार्च २५ हमीदिया अंजुमनके हासमें भारतीय महिलाओंकी समा हुई जिसमें श्रीमती बन्नी नामडू श्रीमती पोल्क और कुमारी स्केचिनने भाषण किये तथा भारतीय महिला समाजकी स्थापना की गई।
- ईस्ट इन्डियाके ब्रिटिश भारतीय संघने हार्ड कमिश्नर, उपनिवेश कार्यालय और भारतके बाइसरोबके पास भारतीयोंके साथ किये जानेवाके दुर्व्यवहारके प्रति विरोध पत्र भेजे।
- कोई समाने कोई ऐंस्ट्रिक्के प्रयत्नका उत्तर देते हुए कोई नू ने ट्रान्सवाळकी निर्वासन-नीतिका समर्थन किया।
- सूरी मसबिबक मोक्षी महमद जसि श्री बोर्डकी वक्ताओंमें बिरहू की गई। सूचना मिली कि प्रिटोरियामें पंजीयनका काम ठप है।
- मार्च २६ केप टाउनमें भाषण देते हुए आइरले रज-मेडको संघके विधानका कसक कहा। पोर्ट एडिम्बरोबके ब्रिटिश भारतीय संघ द्वारा १७ मार्चको भेजे गये तारके जवाबमें भारत सरकारने आश्वासन दिया कि वह ट्रान्सवाळमें ब्रिटिश भारतीयोंके प्रति होनेवाके व्यवहारको सुधारनेके प्रयत्न करती रहेगी। साथ ही यह भी कहा कि कानूनका उल्बन्धन करनेकी सभामें हस्तक्षेप करना उसके बचकी बात नहीं है।
- मार्च २७ बोहानियुवर्ब वेटीनिंका और फोक्सरस्टमें और अधिक लोगोंके विरफ्तार किये जाने सजा किये जाने और निर्वासित किये जानेका समाचार मिला।
- खबर मिली कि १५ कैदियोंको जालोंमें काम करनेके लिए फोक्सरस्टसे हाइसेलवर्ब ले जाया गया।
- मार्च २८ ब्रिटिश भारतीय संघकी समाने कोई नू के उस भ्रामक वक्तव्यके प्रति विरोध प्रकट किया गया जो उन्होंने भारतीयोंको डेलापोसा-बेके रास्ते ट्रान्सवाळसे निर्वासित करनेके सम्बन्धमें संसदमें किया था।
- बिस्मारकाई ब्रिटिश भारतीय संघके कार्यकारी सम्पन्न चुने गये।
- सरावाइडियंकि साथ ट्रान्सवाळ सरकारके दुर्व्यवहारके प्रति हमीदिया इस्लामिया अंजुमन द्वारा विरोध प्रकट करनेका निश्चय।
- मार्च २९ टीम महीने वाब जेक्से क्यूनेपर बन्नी नामडू तथा अन्य लोगोंका ब्रिटिश भारतीय संघ द्वारा अधिनियम १५ से अधिक भारतीयोंके जमीतक खेलेमें होनेकी खबर।
- खेले और १३ अन्य सत्याग्रही बारबर्टनमें रिहा किये गये लेकिन निर्वासनके लिए पूर्ववाक्कीके साथ प्रबन्ध होने तक उन्हें रोक रखा गया।
- ट्रान्सवाळ गवर्नरने उपनिवेश-सन्धीको सूचित किया कि पूर्ववाक्की अधिकारियोंने भारतीयोंको अपने सामान्य प्रवाही विधियोंके अधीन निर्वासित किया।
- ब्रिटिश भारतीय संघने ९ सितम्बर, १९८ को जो प्रार्थनापत्र दिया था उसके उत्तरमें ट्रान्सवाळके गवर्नरने उपनिवेश-सन्धीका जवाब संघको भेजा। कहा गया कि ट्रान्सवाळ सरकार पंजीयन अधिनियम रच नहीं करना चाहती और साम्राज्यीय सरकार उसे रच करवानेके लिए जवाब डालनेकी स्थितिमें नहीं है। प्रतिवर्ष ६ ब्रिटिश भारतीयोंके प्रवेशके सवाळपर दोनों पक्षोंमें मतभेद कैवल प्रवेशके तरीके और नियमको लेकर है।

अप्रैल १ काउन्सिलके साहकारोंकी सुतीसरी बैठकमें देनवारीका पुरा-पुरा भुगतान किया गया।

अप्रैल १ कमिश्नरकी महिसाबोंने अपना सब स्थापित किया।

इंडियन ओपिनियन के संवादवाचाने सूचना दी कि वे सत्याग्रही जो नेटालके मजिस्ट्री हैं और जिनको निर्वासनका आदेश हुआ है सिर्फ फ्लेक्सरस्टकी सीमाके पार छोड़ दिये जायेंगे।

बारबर्टनकी समामें निर्वासनकी भीतिका विरोध किया गया और गांधीजीने कर्टों और अपमानोंको जिस साहसके साथ सहन किया उसकी सराहना की गई।

अप्रैल ५ के पहले ब्रिटिश भारतीय संघ और ए. इ. बंजुमनने गांधीजी तथा अन्य लोगोंको धर्म और बलनाहर्षके लिए जेल जानेपर बर्बाद की और संघर्ष जारी रखनेका निर्णय किया।

अप्रैल ९ ब्रिटिश भारतीय संघने हार्ड कमिश्नरको पत्र लिखा जिसमें उसने संघके निवेदन पत्रको ठार द्वारा उपनिवेश मन्त्रालयके पास न भेजनेके लिए उसकी निन्दा की। ट्रान्सवालके चार भारतीय निर्वासित किये गये तथा बारबर्टनमें १ अन्य निर्वासित किये जानेकी प्रतीक्षामें।

अप्रैल ७ पोलकने हमीरिया बंजुमनके हालमें जोहानिसबर्गके हिन्दुओंकी एक समामें शीप-कमिट और हाइडेलबर्गकी जेलमें बन्द सत्याग्रहियोंकी स्थितिके बारेमें बताया। ब्रिटिश भारतीय संघने कार्यवाहक जेस-निदेशकको पत्र लिखकर बन्धियोंके साथ होनेवाले दुर्व्यवहारकी शिकायत की।

नेटालके प्रधान मंत्रीने संसदमें इस बातको गलत बताया कि गिरमिटिया एशियाई मजदूरोंका प्रवास जारी रखनेके लिए नेटाल सरकारने अन्य उपनिवेशोंसे समझौता किया है।

अप्रैल ११ जोहानिसबर्गमें भारतीयोंकी आम सभा हुई, जिसमें योषा द्वारा लॉर्ड कू के समझ दिये गये इस बक्तव्यका खण्डन किया गया कि बहुत-से एशियाई अपनी वर्तमान स्थितिसे सन्तुष्ट हैं। समाने साम्राज्यीय सरकारसे अनुरोध किया कि वह हस्तक्षेप करके संघर्षको समाप्त करवाये।

अप्रैल १२ गांधीजीको हथकड़ी पहनाकर पैदल से जानेके बारेमें ब्रिटेनकी लोकसभामें प्रश्न उठवाया गया।

२९ चीनी सत्याग्रहियोंको जिनपर जेन्टोंकी छाप देनेसे या हस्ताक्षर करनेसे इनकार करनेका आरोप ला बरी कर दिया गया।

अप्रैल १४ डॉ. अब्दुलहमानने केप टाउनमें आफिकी राजनीतिक संगठनके सातवें वार्षिक सम्मेलनका उद्घाटन किया।

१९ भारतीयोंको जो जोहानिसबर्गके पुचने निवासी जे डेकापोसा-जेके रास्ते निर्वासित करके भारत भेज दिया गया।

अप्रैल १७ इंडियन ओपिनियन के संवादवाचाने खबर दी कि गांधीजी प्रिटोरिया मेंदूर जेलमें जेल विनियमोंके अन्तगत भारतीयोंके साथ बतलियों-बीठा व्यवहार किये जानेके विरोध-स्वरूप पुरा भोजन नहीं ले रहे हैं और उन्होंने तबतक भी लेनेसे इनकार कर दिया है, जबतक कि सभी भारतीय कैदियोंको भी नहीं दिया जाता।

- अप्रैल २२ काँडे सभामें काँडे कू ने गिरमिटिया मजदूरों और चाही उपनिवेशोंमें भारतीयोंके प्रवासके बारेमें एक सम्झा बकलप्य दिया।
- अप्रैल २४ चीनी सत्याग्रहियोंके सभठनने चीनियों द्वारा अँगुलियोंकी छाप देनेसे इनकार करनेकी सराहना की।
- अप्रैल २९ पोलकने रीड डेबी मेस को पत्र लिखकर उसके सम्पादकीयमें संघर्षके बारेमें कही गई गलत बातोंका खोखार लखन किया।
- अप्रैल २७ सरकारी बजट मे १८९४के अर्थनियम ५ के खण्ड ९ के अन्तर्गत बनाये गये जो नये विनियम प्रकाशित हुए उनके द्वारा यूरोपीय स्कूलोंमें बतनी भारतीय या रंमधर बच्चोंका प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया।
- अप्रैल २९ तीन माहकी सैदकी सजा पूरी होनेपर काछडिया और १८ अन्य भारतीय रिहा किये गये।
- अप्रैल ३ मुहम्मद मकराके मामलमें सर्वोच्च न्यायालयने फैसला किया कि पंजीयन करनेसे इनकार करनेपर एशियाई पंजीयनके विरुद्ध अपील नहीं की जा सकती।
- मई १ बोबाके इस कथनके सम्बन्धमें कि ट्रान्सवालके ९७ प्रतिशत एशियाई पहले ही पंजीयन कर चुके हैं, इंडियन ओपिनियन ने स्पष्टीकरण देते हुए बताया कि इन एशियाईयोंने सत्याग्रह आन्दोलनके नेताओंके प्रयत्नोंके फलस्वरूप ही स्वेच्छया पंजीयनके अन्तर्गत पंजीयन कराया था।
- मई ४ ट्रान्सवालकी जेलोंमें केब भारतीय सत्याग्रहियोंको घोरनमें भी मिलना शुरू। पी के मायडूको भीविनियमोंमें बिना परवाने ब्यत्पार करनेपर ३ महीनेकी सजा दी गई।
- मई १ पंजीयनने बिन ९२ एशियाईयोंका पंजीयन करनेसे इनकार कर दिया था उन्हें जोहानिसबर्गकी अदालतने निर्वासित करनेका आदेश दिया।
- मई १५ नेताक भारतीय कांग्रेसने १८९४के अर्थनियम ५ के खण्ड ९ के अन्तर्गत बनाये गये विनियमोंको भारतीय छात्रोंके प्रति बेवभाव करनेवाला बताकर उनके विरुद्ध उपनिवेश सचिवको लिखा।
- मई १९ ट्रान्सवालके सर्वोच्च न्यायालयने निर्णय दिया कि सरकारको १९८-के मोटिसके अन्तर्गत पुस्तक बस्तियोंके निर्धारणको रद्द करनेका कोई अधिकार नहीं है।
- मई २४ प्रात सत्र साठ बने गांधीजीको प्रिटोरिया सेट्रल जेलसे रिहा किया गया मुस्लिम मस्जिदके हॉलमें आयोजित सभामें भाषण दिया। प्रिटोरिया म्यूज के प्रतिनिधिको बताया कि १९ वर्षीय बालकको निर्वासित करके भारत भेजना निन्वनीय है। इस तरह भारतीयोंकी हिम्मत नहीं टाँड़ी जा सकती। पार्क-स्टेशन पहुँचनेपर उनका ध्यानराग स्वागत किया गया। मस्जिदके अहातेमें आयोजित सभामें बोल्ते हुए उन्होंने भारतीयोंसे अपनापी कानूनोंका मुफाबला करनेको कहा। प्रिटोरिया म्यूज ने साम्राज्य दिवसपर गांधीजीकी रिहाईका स्वागत करते हुए अपने सम्पादकीयमें गांधीजीके ध्येयोंकी सराहना की।
- मई २६ अपने जेलके अनुभवोंके बारेमें जोहानिसबर्गके समाचारपत्रोंमें लिखा।
- मई २९ इंडियन ओपिनियन में लिखे गये लेखमें सत्याग्रहके अर्थ और उसके परिणामों पर विस्तारपूर्वक विचार व्यक्त किये। जेलके अनुभवोंके ऊपर एक लेख-माला शुरू की। गैर-सत्याग्रहियों द्वारा ट्रान्सवाल विटिड भारतीय समसोया समिति स्थापित।

- मई ३१ मद्रास नगरके भारतीयोंने ब्रिटिश संसदको एक प्रार्थनापत्र भेजकर १९०० के अधिनियम २ को रद्द करने और ६ शिक्षित भारतीयोंको प्रवेश करनेका अधिकार देनेकी प्रार्थना की।
- जून २ वेस्ट एण्ड हाँकमें आयोजित स्वायत्त-समारोहमें और बादमें अस्वाठ और चित्तकी रिजर्वपर आयोजित एक चाय-पार्टीमें गांधीजी बोले।
- जून ३ मिटोरियाकी मगर-परिषदने रंगवार मार्गों द्वारा मगरपालिकाक बुझा-बटें (बास हाउस) का उपयोग करनेपर लगाये अपने प्रतिबन्ध उठा लिये।
- जून ६ गांधीजी ट्रान्सवाल ब्रिटिश भारतीय समसोता समितिकी बैठकमें बोले। समितिने उपनिवेश-सचिवको प्रार्थनापत्र भेजनेका निर्णय किया।
- जून ७ बर्मिस्टनकी साहित्यिक और वास्तुशास्त्र समितिमें "सर्वबापहूको आचार-नीति" विषयपर बोले।
- जून ८ ट्रान्सवाल विधानसभामें उपनिवेश-सचिवन जी सी मन्डल संसद सदस्यकी माँगपर सन् १९०१ के दौरान ट्रान्सवालमें एगियाइयोंके प्रवेशका म्योप प्रस्तुत किया। प्रचार-कार्यके लिए पाठक केप कामोमी रचाना।
- जून ८ के बाद ट्रान्सवाल सीडर में पत्र लिखकर गांधीजीने माँग की कि मन्डल एगियाइयों-पर सबैष कपड़े ट्रान्सवालमें प्रवेश करनेका जो आरोप समाप्त है उस वापस ले।
- जून १३ ब्रिटिश भारतीय संघकी समितिने इन्डिया और भारत जानेवाले विष्टमण्डलके सदस्योंका चुनाव किया।
- जून १४ उपनिवेश-सचिवने नेटाल भारतीय कांग्रेसकी यह प्रार्थना अस्वीकृत कर दी कि १९०१ की सरकारी विज्ञप्ति संख्या २०१ के अन्तर्गत भारतीय सिद्धापर जो प्रतिबन्ध लगाया गया है उसे वापस ले लिया जाये।
- जून १५ इसाम बन्धुप टाडिर बाबुजीर रिजर्व किये गये। बम्बी नायडू जी पी प्याम एन ए कामा और डू एम वेल्ड जोहानिमबर्गमें गिरफ्तार कर लिये गये। मिटोरियामें कुछ और तमिल भारतीय गिरफ्तार।
- जून १६ गांधीजीन बम्बी नायडू तथा अन्य सोवोंरी पैरवी की। इरंड और बायल जानेवाले विष्टमण्डलके सदस्योंका चुनाव करनेके लिए आयोजित जोहानिमबर्गकी आम सभामें भाग्य लिया। समाने क मु कडनिया हाजी हबीब की ए फेटियार और गांधीजीका इन्डियाके लिए तथा एन ए कामा एन जी नायडू, ई एम बुबादिया और एच एम एल गोसडको भारतके लिए प्रतिनिधि चुना। क मु० वाडसिया जी ए फेटियार और ई एम बुबादिया गिरफ्तार कर लिये गये। वाडसिया और फेटियारका ३ महीनकी कैद या ५ पौड जुमनिकी सजा दी गई। बि भा म के अध्यक्षने उपनिवेश-सचिवको तार देकर प्रार्थना की कि विष्टमण्डलके सदस्योंकी सजा मुक्तकी कर दी जाये।
- जून १७ पोपल नायडू और भागल जानेवाले तमिळोंके अन्य प्रतिनिधि गिरफ्तार। वेन टाडनकी हजीबिया मुस्लिम संजुमन ट्रान्सवालके ब्रिटिश भारतीय मुसलमानोंके साथ होनेवाले इन्डियाकारक विरोधमें प्रस्ताव पान किया।

- जून १८ उपनिवेश-सचिवने हि मा सच की यह प्रार्थना जस्वीकार कर दी कि मनोनीत प्रतिनिधियोंकी सजा मुस्तबी कर दी जाने। ये छोप सिष्टमण्डलके घटस्य होकर स्वरेष जानेवाले ने इसकी जातकारीसे उन्होंने झकार किया। गांधीजीने स्टार में एक पत्र लिखकर उपनिवेश-सचिवके इस शबेका खण्डन किया। बहरामपुरमें आयोजित मद्रास प्रांतीय सम्मेलनमें एक प्रस्ताव पास किया गया जिसमें दक्षिण आफ्रिकामें ब्रिटिस भारतीयके घाप होनेवाले अत्यापपूर्ण व्यवहारकी निन्दा की गई।
- जून १९ गांधीजीने इंडियन ओपिनियन में लेख लिखकर सिष्टमण्डल बाहुर मेवना उचित बताया। यह मुझाव भी दिया कि आन्दोलनके बारेमें सही जातकारी देकर संघर्षको सीध समान्य करनेके उद्देश्यसे जानेवाले सिष्टमण्डलको समर्थन प्रगत करनेके लिए दक्षिण आफ्रिका-भरमें उभाएँ की जाएँ। ट्रान्सवाल ब्रिटिस भारतीय समझौता समितिके प्रतिनिधिमण्डलने स्मट्ससे भेंट की।
- जून २१ क पहले ट्रान्सवालके भारतीयोंके नाम एक जपितमें गांधीजीने जेल-यात्राको समयाव बताया। हबीब भाटनको पत्र लिखते हुए गांधीजीने बाइसरॉयकी परिपक्षमें मुसलमानकी नियुक्तिको उचित बताया और हिन्दू तथा मुसलमानके बीच सगे माइयो-बीसा सम्बन्ध होनेकी आवश्यकतापर जोर दिया।
- जून २१ इन्डियन जनके लिए गांधीजी और हामी हबीब केप टाउनको खाना। सत्याग्रही सामी मागपनको १ दिनकी एकत रीटकी सजा दी गई।
- जून २३ गांधीजीने केप टाउन और केप आर्यस के प्रतिनिधियोंको भेंट देते हुए इस बातकी जासंका प्रकट की कि यदि साम्राज्यीय सरकारने कुछ संरक्षण मुझम न करवाये तो दक्षिण आफ्रिका संघ बननेपर एघिदाई तथाह हो जायेंगे। इन्डियनके लिए बहाजपर सवार हुए। स्मट्सने ट्रान्सवाल ब्रिटिस भारतीय समझौता समितिके प्राबंधावको जस्वीकृत कर दिया। कुवाडिया और सोराबजीको तीन-तीन महीनेकी सजा।
- जून २५ ट्रान्सवाल ब्रिटिस भारतीय समझौता समितिके स्मट्सको एक पत्र लिखकर इस-पर खेद प्रकट किया कि उन्होंने प्रतिनिधिमण्डलको जो आस्तासन दिया था वे उघसे मुकर गये हैं। मास जानेके लिए पीकट नेटाल खाना।
- जून २६ इंडियन ओपिनियन में खबर छपी कि हि मा स की समितिके जपनी रीटकमें कौन्सेलरको संघका जस्वीकृत मन्त्री नियुक्त किया है। पोर्ट एडिनाब्रेषके हि मा संघने भारत सरकारको इस आघयका प्राबंधाव लिखा कि उन कानूनको रद्द कर दिया जाना चाहिए जो सम्पूर्ण भारतके लिए अयमानवक साम्राज्यमें निरन्तर कटुताके कारण और दक्षिण आफ्रिकामें अन्य भागोंमें रहनेवाले भारतीयोंके लिए खतरनाक है।
- जून ३ मागपनको मरणासन्न अवस्था में बोहानिसवर्ष खेससे रिहा कर दिया गया।
- जुलाई २ अन्तरमें मरणासन्न बीनरा नामक युवकने सर कर्बन बाइबीकी हत्या कर दी। डॉ डाकटाका भी मारे गये।

जुलाई ३ सन्दर्भ में भारतीय छात्रों की समाने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के समापनित्व में बाइसीकी हत्या की भर्त्सना की।

इंडियन ओपिनियन में क्या कि कानून में रंगभेद और जातीयता के अर्थको दूर करने तथा एखियाई अधिनियमको रद्द कराने के लिए ट्रान्सवाल के भारतीयों की ओरसे साम्राज्यी शासनाई नौरोजी और बंगाल व्यापार संघ (बैम्बर थॉफ कोमर्स) को जो प्रार्थनापत्र भेजे जानेवाले हैं, उनपर सौगोंके हस्ताक्षर करायें जा रहे हैं।

जुलाई ४ प्रिटोरिया की भारतीय बस्ती में भारतीय महिलाओं की एक समारं प्रिटोरिया के ७० भारतीयों की निरपत्तापीर शोभ व्यक्त किया गया।

जुलाई ६ नागपन की मृत्यु।

जुलाई ७ भारतीय समाज की ओरसे नागपन का सम्मानपूर्वक वाह संस्कार।

जुलाई ८ सरकारने एक वक्तव्यमें कहा कि नागपन की मृत्युके लिए जेल-अधिकारी दोषी नहीं हैं।

जुलाई ९ के पून बहादुर नेटा के मन्निमण्डलके सदस्यों और रंगार कोयंके सिष्टमण्डलके सदस्योंसे भेंट।

जुलाई ९ बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटीने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके आगामी अधिवेशनके समापति-पत्रके लिए पांडीजीका नाम भी प्रस्तावित किया।

जुलाई १ पांडीजी और हुजी हबीब सार्वभूम्यतन पहुँचे। रायटरके प्रतिनिधिको भेंट दी। प्रात साडे १ बजे सन्दर्भ पहुँचे।

साठव आफ्रिका असोसिएटेड प्रेस एजेंसीके प्रतिनिधिको भेंट दी।

रिच और बन्धुस कादिरसे मिले। सर मंजरजी भावतगरीसे मिलने गये। लॉड एंस्ट्रिहसको पत्र लिखकर मुआकाशका समय मीया।

३ भारतीय ट्रान्सवालसे निर्वासित।

बि भा संभने जेल-निदेशककी पत्र लिखकर भारतीय अधियोंको भोजनमें फिरसे भी दिने जानेकी माँग की।

नेटालके भारतीयोंने जयनिवेश-मन्त्रीको गिरमित मताधिकार तथा व्यापार-सम्बन्धी शिफायतोंके बारेमें प्रार्थनापत्र भेजा और संघीकरण कानूनके सदसियोंमें संघोपनकी माँग की।

जुलाई ११ हबीबिया मुस्लिम बन्धुम द्वारा आभोजित आम समारं ट्रान्सवाल और नेटाके सिष्टमण्डलके साथ सहानुभूति प्रकट की गई। केप टाउनकी ब्रिटिश भारतीय अधिगने प्रस्ताव पास किया जिसमें साम्राज्यीय सरकारसे ट्रान्सवालके सिष्टमण्डलकी बावोंको सहानुभूतिको साथ मुलनेका आग्रह किया।

जोहानिसबर्गमें हमीरिया मन्त्रिकके मंत्रालय में भारतीयोंकी आम सभा जिसमें साम्राज्यीय सरकारसे ट्रान्सवालके सिष्टमण्डलके निवेशनपर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने और नागपनकी मृत्युके कारणोंकी जाँच करवानेकी माँगके प्रस्ताव पास।

जुलाई १२ बि भा संभने पांडीजीको ठारसे नागपनकी मृत्यु और अस्वस्थताके कारण राठव मुहम्मदके रिहा किये जानेकी खबर दी।

बिस्मियम हॉस्तेल तथा १५ अन्य प्रमुख यूरोपीयोंने ट्रान्सवालके मज्जाम्यामवासी बठों

बनारसको प्रार्थनापत्र दिया कि नामपत्र तथा विवन नामक गोरे कैंडीकी मृत्युके कारणोंकी सुची जांच कराई जाये।

जुलाई १४ के पूर्व गांधीजीने स्थापमूर्ति अमीर अली।

जुलाई १४ इंडिया के सम्पादक एच ई कौटन घर रिचर्ड और लॉर्ड ऐंस्ट्रिलसे मेट की।
साम्राज्यीके नाम ट्रान्सवालकी भारतीय महिलाओंका प्रार्थनापत्र प्रेषित।

जुलाई १६ घर विधियम ली-बार्नर गांधीजीसे मिलने जाये।

१४ मास्टीपोंको ट्रान्सवालसे निर्वासितकर भारत भेज दिया गया।

जुलाई १८ प्रिटोरियाकी आम सभामें साम्राज्यीय सरकारसे अनुरोध किया गया कि वह सिष्टमण्डलके निवेशनोंपर सहायमूर्तिपूर्वक विचार करे।

जुलाई १९ मेजर विन्सनकी अध्यक्षतामें नामपत्रकी मृत्युके कारणोंकी सुची जांच की कार्यवाही शुरू।

जुलाई २ गांधीजीने लॉर्ड कू को पत्र लिखकर निजी ठौरपर मुलाकातका समय माँया।

जुलाई २१ गांधीजीने स्थापमूर्ति अमीर अली घर विधियम ली-बार्नर और विपोबोर मॉरिसनसे मेट की।

जुलाई २२ साउथ आफ्रिका में पत्र लिखकर उस समाचारपत्रके इस आरोपका खण्डन किया कि लॉर्ड ऐंस्ट्रिल और विलिंग आफ्रिका ब्रिटिश भारतीय समिति भारतके उच्चवर्गीय आन्दोलनसे सम्बन्धित है।

डॉ बमुरईमान और आइनरके नेतृत्वमें रंगदार लोगों और बतनियोंके सिष्टमण्डलके लॉर्ड कू से मेट की।

जुलाई २३ गांधीजीने गोखलेको पत्र लिखकर अनुरोध किया कि पोलक बिच कामसे भारत गये है उसमें वे जनकी मदद करें।

जुलाई २६ गांधीजी और हामी हबीब निजी ठौरपर लॉर्ड मॉरिससे मिले।

गांधीजीने लॉर्ड मॉरिसको पत्र लिखकर १९७ के अधिनियम २ और विहित भारतीयोंके प्रशासनपर प्रतिबन्धसे सम्बन्धित विधायकोंके अलावा भू-स्वामित्व और ट्रान्सवालमें पात्र करनेपर सभे प्रतिबन्धोंके विरुद्ध विद्रोह किया।

जुलाई २७ लॉर्ड सभामें विलिंग आफ्रिका संघ विधेयपत्रका द्वितीय वाचन।

जुलाई २८ कॉमन्स सभामें कर्नल सीलीने बताया कि ट्रान्सवालके भारतीयोंके बारेमें प्रवरल बोबाको निश्चित मुद्दा भेजे गये थे और वे सचमुच समस्याका कोई हल निकालनेकी उत्सुक हैं।

जुलाई २९ गांधीजीने लॉर्ड ऐंस्ट्रिलको पत्र लिखकर इस बातसे इनकार किया कि ट्रान्सवालके सत्पादक आन्दोलन और भारतके "राजदोही बल के बीच किसी प्रकारका कोई सम्बन्ध है।

प्रधानी वानुजमें संघोपन करनेका मुद्दा दिया ताकि प्रवासी अधिकांशको केवल ६ भारतीयोंको उपनिवेशमें प्रवेश देनेका अधिकार मिल सके।

लॉर्ड ऐंस्ट्रिलको ट्रान्सवालके भारतीयोंके मामलेका विवरण के भ्रूक भेजे।

जेम्स हॉलमें गांधीजीने महाबिकार आन्दोलन चलानेवाली महिलाओंकी सभामें भाग लिया।

वीमरी पैरहस्टसे मेट की।

रंगदार लोगों और बतनियाँके सिप्टमण्डलने घाइनरके नेतृत्वमें कॉमन्स समझे उबार
बलीय और मजदूररलीय सदस्यसि मेट की और मंच विधेयकमें संघोषन पेश करनेका
अनुदाव किया।

जुलाई ३१ नेटासका सिप्टमण्डल सभ्यन पहुँचा। गांधीजी और डूडरे लोगोंने अगवाणी की।
पाठन बम्बई पहुँचे।

अगस्त २ प्रिनोरियाकी महिलामोंने भारतीय महिला संघकी स्थापना की।

अगस्त ३ इंग्लिषमेंन को पत्र लिखकर गांधीजीने पंजीयन अधिनियम गिरमित प्रया आणिके
बारेमें छपी आमक बाठोंका अबाव दिया और कहा कि ब्रिटिश भारतीय १५ बपसि
गिरमित प्रया अन्व करनेके लिए आन्वोषम कर रहे हैं।

अगस्त ४ लॉर्ड ऐंस्ट्रिडको एक पत्र लिखकर इस बापेरका पूरी तय्य खणन किया कि
डान्सबाकक सत्याग्रह आन्वोषनको भारतसे सहायता या उतोजन मिलता है, और कहा
कि सत्याग्रह आन्वोषनका भारतकी हिंसावासी पार्टीसि कोई सम्बन्ध नहीं है।

मेजर डिक्सनने नागपनकी मृत्युकी खीचकी रिपोर्ट प्रकाशित की।

यूरोपीय समितिके अध्यक्ष विस्विम हाँस्केने जेठोंकी खुराकमें सुधारकी माँगका समर्पण
करते हुए जेठ-निवेसकसे पत्र-व्यवहार शुरू किया।

अगस्त ६ लॉर्ड ऐंस्ट्रिड डाप सुझावे बसे परिवर्तनों आधिके धामिठ करनेके बाद गांधीजीने
अपने "बकल्प" की प्रतिपां जन्हे भेजीं।

अगस्त ९ गांधीजी और लॉर्ड ऐंस्ट्रिडने स्मट्सके सुझावोंपर विचार-विमर्ष किया। गांधीजीने
स्मट्सको प्रवासी-प्रतिबन्धक अधिनियमके सम्बन्धमें संभोजन भेजा जिसके अनुसार
पबर्नरको यह अधिकार दिया जाटा कि वह किसी भी आतिके प्रवासियोंकी संख्या
धीमित कर सकता है।

डोक-सिहित (स्वयं गांधीजीकी) जीवनीके प्रूठ लॉर्ड ऐंस्ट्रिडको भेजे।

नेटासके भारतीय सिप्टमण्डलने लॉर्ड कू के पास प्रार्थनापत्र भेजा।

इंग्लिश गांधी तथा अन्य लोग हाइडेलबर्गमें पिया क्रिये पये और सोरावजी सपुरजी
वीपकपूठ जेठसे छोड़े गये।

अगस्त १ गांधीजी और हाजी हबीबने लॉर्ड कू से पेट की। गांधीजीने प्रवासी अधिनियममें
अपने सुझावे संघोषनके बारेमें जि मा संघ और पोसकको तार दिया।

माइनरके नेतृत्वमें रंगदार लोगों और बतनियोंके सिप्टमण्डलने कॉमन्स समझे मजदूर
बल्के सचस्योंकी बैठकमें भाग किया। बलने संघ विधेयकमें संघोषनका समर्पण करनेका
आवदासन दिया।

लॉर्ड ऐंस्ट्रिडने स्मट्स और गांधीजीसे बातचीत की।

मायमें स्मट्सको प्रवासी अधिनियममें संघोषनका मसविदा भेजते हुए अधिनियमको रद
करने और प्रतिबर्ष छ धिहित भारतीयोंको प्रवेसकी अनुमति देनेका अनुरोप किया।

अगस्त ११ गांधीजीने लॉर्ड कू से अनुरोप किया कि वे हस्तक्षेप करके १ ब्रिटिश भारतीयोंका
आसप निर्वासन रोके।

लॉर्ड ऐंस्ट्रिडको पत्र लिखा कि प्रवासी अधिनियममें प्रस्तावित संघोषनसे "किसी
महत्वपूर्ण निबन्धना हलन" नहीं होता।

सॉर्डे एंन्टहिङ्गने सॉर्डे जू को यह अनुरोध करते हुए पत्र लिखा कि वे गांधीजी द्वारा जनरल स्मट्सको सुझाये गये फ़ार्मूलेके आधारपर समझौता करनेमें मदद करें।

पारसी क़तमजीको ९ महीनेकी कैदकी और सजा दी गई।

बोहानिसद्वयमें भारतीयोंकी आम सभामें घोराबजी धानुरजी हरिभाऊ पांडी और बन्धु कोबोका स्वागत किया गया। सिप्टमम्बळ भेजनेके विचारका समर्थन किया गया। साम्राज्यीय सरकारसे हस्तक्षेप करनेका अनुरोध किया गया और नामप्पनकी मृत्युके बारेमें जाँच आयोगके सिफ़ायोंपर बसन्तोष व्यक्त किया गया।

अगस्त १२ सॉर्डे जूने नेटाळके भारतीय सिप्टमम्बळको सूचित किया कि वर्तमान क़ानूनोंकी रद्द नहीं किया जा सकता और संघकी स्थापनाके बाद हालतमें सुधार होगा।

अगस्त १३ नेटाळके सिप्टमम्बळने भारतके बाइस्टरोंको अपनी सिकायतोंका विवरण प्रेषित करते हुए उन्हें एक पत्र लिखा।

अगस्त १६ गांधीजीने बेल्लमें मुहम्मद खांके साथ किये गये दुर्घटनकारके सम्बन्धमें उसका सिकायतपत्र सॉर्डे जू को प्रेषित करते हुए उन्हें चिट्ठी लिखी।

सॉर्डे एंन्टहिङ्गको पत्र लिखा कि नामप्पनकी मृत्युके सिद्धांतमें जगाये गये आरोप जाँचसे काफ़ी हलक़ सिद्ध हो गये हैं।

अगस्त १७ मदनळाळ भीमराको फ़ौसी से बी गई।

अगस्त १८ बर्लनमें हुई नेटाळ भारतीय कांग्रेसकी सभामें ईन्लैंड जानेवाले सिप्टमम्बळका समर्थन किया गया और ट्रान्सवालके भारतीयोंके प्रति होनेवाले दुर्घटनकारकी आलोचना की गई।

अगस्त १९ गांधीजीने फ़्रीप्रेसके पुस्तकालयके लिए पुस्तकें ख़रीदीं।

अगस्त २ इंडियन ओपिनियन को भेजे गये अपने साप्ताहिक संवादपत्रमें इस बातपर जोर दिया कि यत्नाइह ही नेटाळके भारतीयोंकी मुक्तिका एकमात्र मार्ग है।

अगस्त २१ गांधीजी आइलरसे मिले।

विटवॉटर्सर्ड चर्च कीसिङ्गने एक प्रस्ताव पास करके क़ानूनियोंके लिए प्रतिनिधित्वकी माँग की।

अगस्त २२ गांधीजी म्हाइलेका प्राचीन शेष देखने गये।

अगस्त २५ पोल्डको सत्पाग्रह आन्दोलनके छात्रवर्गोंमें पैसा-बन्धा शुरू करनेका सुझाव देते हुए पत्र लिखा।

अगस्त २९ रायटरके प्रतिनिधिको भेंट देते हुए स्मट्सने कहा "अपने कुछ बहिषारी प्रतिनिधियोंद्वारा बसाये जा रहे आन्दोलनसे ट्रान्सवालके अधिकार भारतीयोंका भी एक चुका है।"

अगस्त ३ गांधीजीने स्वामी शंकरानन्द द्वारा भी गई इस्कामकी आलोचनाकी लिखा करते हुए उन्हें पत्र लिखा।

स्मट्सने सॉर्डे एंन्टहिङ्गको जग सुझावोंके बारेमें लिखा जो उन्होंने (एंन्टहिङ्गने) १९७ के अधिनियम २ को रद्द करने और एक सीमित संख्यामें सिद्धित भारतीय प्रवासियोंको स्वामी निवासके प्रमाणपत्र देनेके बारेमें सॉर्डे जू को भेजे थे।

सॉर्डे एंन्टहिङ्गने सॉर्डे जू से संसदमें ट्रान्सवालकी समस्याके बारे में बतलाव देनेका अनुरोध किया बादमें उनसे मिले गी और अधिकार के अन्तर्गत विचार किया।

सितम्बर १ गांधीजीने लॉर्ड ऐन्टहिफको सूचित किया कि रमटसके मुआवजे वा भारतीय अयमान और भी मम्मीर हो जाता है उन्होने स्पष्ट कर दिया कि "अधिकार" के प्रथमपर वे अपने मीमूवा रबीमें कोई परिवर्तन नहीं कर सकते।

सितम्बर २ गांधीजीने पोसकको स्मट्सके मुआवजे बारेमें तार भेजा और कहा कि बिम्बईमें डेरिफके सहयोगक बिना स्वतंत्र रूपसे आम समा आवोजित की जाये। स्मट्सने रयपटरको मुआवजा देते हुए समझौता जो उम्मेद किया था गांधीजीने लॉर्ड कू से उसके बारेमें सही जानकारी देनेका अनुरोध किया।

गांधीजीने लॉर्ड ऐन्टहिफको एक पत्र लिखा जिसमें भारतीयों और चीनियोंकी विरस्तायी फिरसे शुरू करके ट्रान्सवाल सरकारने जो बेहवार बोला था उसका स्वागत किया।

सितम्बर ६ उपनिवेश कार्यालयको पत्र लिखकर इस बातपर जोर दिया कि मैंने "समझौता" बातापर प्रतिफल प्रभाव न पड़े इस ख्यालसे सार्वजनिक गतिविधियोंसे अपनेको बिल्कुल अलग कर रखा है।"

अमीर अलीको पत्र लिखा कि मेरे जीवनका उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि हिन्दू-मुस्लिम सहयोग भारतीय मुक्तिकी अनिवार्य शर्त है।

सितम्बर ७ बुधवारको गांधीको लिखा कि पीतिसमें होनेवाले सभी काम धार्मिक हैं।

सितम्बर ९ कि मा संपने जोहातिशर्तके बेस-निदेशकसे अनुरोध किया कि रमजानके महीनेमें मुसलमान कैदियोंको विशेष सुविधाएँ दी जायें।

सितम्बर १ गांधीजीका उपनिवेश कार्यालयको पत्र लिखकर स्मट्स द्वारा रयपटरको दिये गये इस बकलम्यका खण्डन किया कि अधिकार भारतीयोंनि पंजीयन अधिनियम स्वीकार कर लिया है और इस बातका दावा किया कि अधिनियमके विचार भारतीयोंका विरोध जब भी पहले-पहिला ही प्रबल है।

इम्पीडमें मताधिकारकी माँग करनेवाली महिलाओंकी हिंसात्मक कार्रवाइयोंकी निन्दा करते हुए कहा कि भारतीयोंको सत्याग्रहणी उसबार कभी नहीं छोड़नी चाहिए।

कि मा संपने स्टार में एक पत्र लिखकर सुपरिन्टेंडेंट बरलान द्वारा अदास्तमें दिये गये इस बकलम्यक प्रति विरोध प्रकट किया कि एशियाइयोंका देशसे विकास बाहर करना चाहिए।

टाइम्समें प्रकाशित नेटास रिपोर्टके पत्रमें नेटासके भारतीयोंकी विहृष्ट निर्वाण-ताओंकी ओर ध्यान आकर्षित किया गया और साम्राज्यीय सरकारसे अनुरोध किया गया कि यदि ये विचारपूर्वक दूर नहीं की जायी तो भारतसे विरमिटिया मजदूरोंको जाना बन्द कर दिया जाये।

सितम्बर ११ टाइम्स ऑफ नेटास में समाचार प्रकाशित हुआ कि नेटास विधान समाने भारतीयोंकी उच्चविद्याके अनुदानमें कटौती कर दी है।

सितम्बर ११ गांधीजी स्वयंसे आयोजित पेट्टी-उत्सवमें सम्मिलित हुए प्रमुख भारतीय सत्या-ग्रहियोंका अभिनन्दन किया।

सितम्बर १४ बिम्बईमें आयोजित सार्वजनिक सत्रमें सही सरकारसे बहिष्कृत अधिकारों भारतीयोंके प्रति किम जानेवाले अत्यायको रोकनेकी अपील और नेटासमें विरमिटिया प्रवाके बन्द किये जानेकी माँग।

सितम्बर १५ काङ्ग्रेसिया चट्टियार खौर बन्धी मायडूके जेलसे छूटेनेपर ओहानिसचर्यमें उनके अमितन्दनके लिए सार्वजनिक समा आयोजित होत होंबई और अन्य यूरोपीयोंके भाषण ।
८ बीनी मत्याग्रही गिरफ्तार ।

सितम्बर १६ गांधीजी और हाजी हुबीब लॉर्ड्स नू से मिले और कहा कि यदि प्रवेशवा सीडा निकट अधिकार स्वीकार कर लिया जाये तो वे भविष्यमें अल्पबोहत न पसानेका बचन देनेको तैयार हैं ।

१७ बीनियोंपर ओहानिसचर्यमें पञ्जीयन प्रभावपत्र पेस न करनेका आरोप लगाया गया । बेस-निदेशकने रमजानमें मुसलमान कैदियोंको कुछ बिरोध सुनिषाएँ देनेके बारेमें बि मा संघकी प्रार्थनाको अस्वीकार कर दिया ।

सूत सार्वजनिक समामें पोसकका भाषण ।

सितम्बर १७ गांधीजीने छट्टारको आत्याये अधिक महत्त्व न देनेकी सीख देते हुए मणिकास गांधीको पत्र लिखा जिसमें यह बिचार भी व्यक्त किया कि कस्तूरजाके इन्कार करनेपर वे उन्हें क्वापि सोमांसका सूप नहीं देते भले ही इसके बिना उनकी मृत्यु हो जाती ।

सितम्बर १८ से पहले नेताकके सिष्टमन्धरने अखिल भारतीय मुस्लिम लीगके अली इमामसे मेट की ।

सितम्बर १८ लॉर्ड्स मौसंसे निवेशन किया कि मुसलमान कैदियोंको रमजानमें सुनिषाएँ न देना बर्नपर आषात होगा ।

लॉर्ड्स ऐन्टहिलको पत्र लिखा जिसमें स्मट्ससे प्रतिकूष उत्तर न मिले इस बुष्टिसे सर जॉर्ज फेडरकी सहानुभूति प्राप्त करनेका अनुरोध किया और स्मट्ससे प्रतिकूष उत्तर मिलनेकी इच्छामें सिष्टमन्धरके द्वारा सार्वजनिक कार्रवाईको आवश्यक बताया ।

सितम्बर २२ ओहानिसचर्यमें बीनी छत्पाग्रहियोंने अपनी बैठकमें सरयाग्रह संग्रामको समर्जन देते रहलका प्रण किया और बिरोध देने गये सिष्टमन्धरके प्रयत्नोके प्रति हमबर्नो बाहिर की ।
ई एच कुबाडिया और उमरजी साल डीपसकूष जेलसे छूटे ।

सितम्बर २३ गांधीजीने उपनिषेध कार्यालयसे पूछा कि उनके संशोधनके सम्बन्धमें लॉर्ड्स नू जो तार भेजनेवाले वे उसका स्मट्सकी ओरसे कोई बबाब आवा है या नहीं ।
पोसकको भारतमें सरयाग्रह-संघर्षपर एक निबन्ध प्रतियोगिताका आयोजन करनेका सुझाव दिया ।

सितम्बर २४ होपहरका मोशन रेबर्गेड एक बी मायरके साज किया ।

सितम्बर २७ पूनाकी सार्वजनिक समामें पोसक और पोसकने भाषण दिये ।

सितम्बर २८ गांधीजीने ऐंडबोकेट लॉक इकिया द्वारा पोसकपर लगाये गये आरोपोंका खण्डन करते हुए उक्त समाचार पत्रको एक बिट्टी लिखी ।

सितम्बर २९ स्मट्सने अपने एक कार्य-बिबरनमें इस बातसे इन्कार किया कि बरिब रिबर काकोनीमें अविहृत क्मसे बसे किसी भी एशियाईको ट्रांसवालसे निबाधित कर भारत भेजा गया है ।

पोसकने पूनामें महिलामोंकी समामें भाषण दिया समाकी अन्धधता समाबाई रतनेने की ।

सितम्बर ३ ट्रांसवाल सरकारने एक कार्य-बिबरनमें भारतीय कैदियोंके साज दुर्भ्यबहारकी टिकायतका खण्डन करते हुए अपनेको भाषणकी मृत्युके लिए जिम्मेदार माननेसे इन्कार किया ।

अनुबन्ध १ गांधीजीने टॉस्टॉपका सत्याग्रह आन्दोलन और उनके द्वारा लिखे "एक हिन्दूके नाम पत्र" के बारेमें लिखा।

अली इमामके सम्मानमें दिये गये भोजमें भाग लिया।

अनुबन्ध ४ उपनिवेश कार्यक्रममें गांधीजीको सूचित किया कि स्मट्सके मुझाबोंके अनुसार नया कानून बनाने-बनानेके बारेमें पहुँच करना उपनिवेश सरकारका काम है।

अनुबन्ध ५ गांधीजीने प्रभावशाली व्यक्तिवर्गको द्वांसबाहककी स्थितिसे अलग करनेके लिए आर्थिक कार्रवाई प्रारम्भ करनेकी इच्छा व्यक्त करते हुए लॉर्ड ऐंस्ट्रिचको सूचित किया।

सम्बन्धमें गुजरातियोंकी समामें भाग लिया और उन्हें अपनी मान्यताके प्रति अनुग्रह वृत्तिका विकास करनेकी सलाह दी।

अनुबन्ध ६ पोम्बक नाम एक पत्रमें इस बातपर जोर दिया कि माउन्टबेट्टे कि वह द्वांसबाहकके संघर्षको अपनी स्वतन्त्रताके आन्दोलनका ही एक हिस्सा मानना चाहिए।

लॉर्ड ऐंस्ट्रिचसे आध्यात्मिक कार्यक्रमके बारेमें विचार-विमर्श किया।

६ मा वि मा सचने नेहासके छिप्टमण्डलके स्वायत्तता आन्दोलन किया।

अनुबन्ध ७ गांधीजी महिमा मठाधिकारके सिद्धिसिद्धमें बायोविजय मन्त्रों के डोकने रीड डेकी मेक को जेसमें काफिरों द्वारा गांधीजीपर क्रिया के बारेमें लिखा।

टॉस्टॉपमन गांधीजीके अनुबन्ध १ के पत्रका उत्तर दिया।

अनुबन्ध ८ गांधीजीने गुजराती पत्र को भेजे सन्देशमें कहा कि ~~...~~ "जीवन मरणके संघर्ष में पूरी तरह रत है।

उपनिवेश कार्यक्रमसे स्मट्सके बारेमें ठीक-ठीक खबरों के माध्यमोंके मासिकता विवरण" नामकी पुस्तिकाकी शीर्षक दिया।

इससंज्ञकसम्बन्धी समामें कष्ट-सहनका गुण-मात्र किया।

दिन १७ भीमियाँपर एशियाई सम्प्रदायके सम्बन्ध में ~~...~~ कर दिये गये।

सर्वोच्च समितिकी भारतीय प्रवास सम्बन्धी ~~...~~ भारतसे मजबूर भागना बन्द करना पाठके ~~...~~

अनुबन्ध ११ मद्रासमें सुर्भी बाणिसम्बन्धी ~~...~~

अनुबन्ध १२ मणिमाल गांधीको लिखे ~~...~~ चीपना ही सचकी सिरा है।

विश्वविद्यालयोंकी मददके ~~...~~

अनुबन्ध १३ गांधीजीने हैम्पस्टडकी ~~...~~ सोमराटी] में "पूर्व और ~~...~~

अनुबन्ध १४ लॉर्ड ऐंस्ट्रिच मन्त्र ~~...~~ नहीं किया जाता ही ~~...~~

पोसकके नाम पत्रमें आधुनिक सम्प्रदायपर अपन वे विचार व्यक्त किये जिन्हें आगे बढ़कर हिन्य स्वराज्य में बिस्तारसे सिखा।

अक्तूबर १५ उपनिवेश कार्यालयने गांधीजीको सूचित किया कि जिन प्रस्तावोंको ट्रान्स्वाल्के कानूनका सम्भाव्य अपार कहा गया था वे स्मट्स द्वारा प्रस्तुत सुझाव वे न कि गांधीजी द्वारा प्रस्तुत।

अक्तूबर १७ भारतीय एकता समिति [इंडियन यूनियन सोसाइटी] की बैठकमें भाषण देते हुए वकी इमामने हिन्दू-मुस्लिम ऐक्यपर जोर दिया।

बम्बी नामक और अन्य व्यक्ति बोहानिसबर्नमें गिरफ्तार १-१ महीनेकी सजा।

अक्तूबर १९ गांधीजीने उपनिवेश कार्यालयको स्थितिकी सही-मही जानकारी देनेको सिखा। और भी भारतीय गिरफ्तार १-१ महीनेकी सजा। सोराबजी घापुरजी तथा एस बी मेड निवासित।

अक्तूबर २ वि भा संघके कार्यवाहक अध्यक्ष ई जाई अस्वातको तीन महीनेकी सजा। सोराबजी घापुरजी और एस बी मेड ट्रान्स्वाल् लौटते हुए फोक्सरस्टकी सीमापर गिरफ्तार।

अक्तूबर २४ गांधीजीने अन्दनमें बिचबाबसपी समारोहकी व्ययजता की और उक्त अवसर पर भाषण दिया।

अक्तूबर २५ नेटाल विधान सभामें भारतीय प्रवासी कानून संशोधन विधेयकका तीसरा वाचन। सोराबजी घापुरजी और एस बी मेडको निपिठ प्रवासी होनेके कारणमें १-९ महीनेकी सजा।

अक्तूबर २६ पोसक द्वारा पूरे मन्नास अहातेमें सफल समारोहकी सूचना।

अक्तूबर २९ गांधीजीने लॉर्ड ऐंटेडिलको दक्षिण आफ्रिका लौटनेके निर्णयकी सूचना की और ट्रान्स्वाल्की सीमापर गिरफ्तार होनेका इपवा भी बताया।

ऐस्मर मॉडसे सत्याग्रहके बारेमें विचार-विमर्श करनेके लिए मुझाकासका समय मीया और टॉस्टॉय द्वारा किसे एक हिन्दूके नाम पत्र" के प्रकाशनके सम्बन्धमें सजाह देनेको कहा। गांधीजीको पोसकका तार भिजा कि भारतकी भाषा करें।

वापस लौट जानेके लिए दक्षिण आफ्रिकासे तार।

अक्तूबर २९ के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसको सम्बोध मेला।

अक्तूबर ३ भारतीय एकता समिति [इंडियन यूनियन सोसाइटी] की समारोह भाषण दिया।

लॉर्ड ऐंटेडिलके नाम पत्रमें भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और आधुनिक सम्प्रदायपर अपने विचार व्यक्त किये।

नवम्बर १ हरिकाण गांधी फोक्सरस्टमें गिरफ्तार फिर ६ महीनेकी सजा दी गई।

नवम्बर २ गांधीजीने अन्दनकी एक समारोह भाषण किया कई भारतीयों और कुछ अंगरेजोंने स्वयंसेवकोंकी सूचीमें अपने नाम किशवाये।

नवम्बर ३ उपनिवेश कार्यालयने गांधीजीको सूचित किया कि लॉर्ड कू प्रवासके मासकेमें शैवाणिक समारोहको मासता दिखानेका कोई आरवाचन नहीं दे सकते।

नवम्बर ५ गांधीजीने ट्रान्स्वाल्के भारतीयोंके मासकेका विवरण" और अन्वयारोंके लिए तैयार किया गया सचका सार-संक्षेपमें प्रकाशनार्थ भेज दिया।

- नवम्बर ६ ट्रान्सवालके भारतीयोंसे सहानुभूति रक्तवाले अंग्रेजोंकी एक सभामें गये। बिदा लेते हुए उपनिवेश कार्यालयका पत्र लिखकर भाषा व्यक्त की कि ट्रान्सवालके प्रवासी कानूनासे रंगभेदपर आधारित प्रतिबन्धोंकी हटवानेके लिए कोई कू अब भी अपने प्रभावका उपयोग करेंगे।
- नवम्बर ७ टोंगाटमें आयोजित भारतीयोंकी एक सभामें निर्णय हुआ कि विरिमिटिया मजदूरोंका वेतन भेदना रक्तवानेके लिए एक शिष्टमण्डल भारत भेजा जाये।
- नवम्बर ९ गांधीजीने रायटरके प्रतिनिधिको भेंट की। टाइम्स ने लिखा कि ट्रान्सवालके एगियाई कानूनोंसे सम्बन्धित बातों विफल हो गई हैं। उपनिवेश कार्यालयने एक काय-दिवरणमें लिखा हम कानूनकी दृष्टिमें समानताके उनके [गांधीजीके] वाक्यने औरतसे इनकार नहीं कर सकते। यह एक बुनियादी सिद्धान्त है।"
- नवम्बर ९ डेसी एक्सप्रेस के प्रतिनिधिको भेंट देते हुए गांधीजीने कहा कि सरयायह खान्दासन "पूरे जोरसे जारी रहेगा। टॉल्स्टॉयके पत्रकी प्राप्ति सूचित करते हुए उन्हें एक पिट्टी लिखी बोक-सिद्धित अपनी जीवनीकी एक प्रति भी भेजी। पोलरुस प्राप्त बहु तार साईं कू को भजा जिसमें ट्रान्सवालके भारतीयोंकी सहानुभूतिमें होनेवाली सभाका संक्षिप्त विवरण दिया गया था।
- नवम्बर ११ डेसी टेलीग्राफ को एक पत्र लिखकर ब्रिटेनके समाचारपत्रोंसे अनुरोध किया कि वे ट्रान्सवालके संघर्षका समर्थन करें। गोमलेको पत्र लिखकर इंडियन आर्थिका जाने और संघर्षमें भाग लेनेका निमन्त्रण दिया। उपनिवेश कार्यालयको पत्र लिखा कि ट्रान्सवालकी असाफी बसाके खिलाफ की गई शिकायतें बहुत हद तक सच हैं।
- नवम्बर १२ अपना "वचनम्प भारतीय समाचारपत्रोंमें प्रकाशनार्थ भेजा। रैबरेंड मायर द्वारा आयोजित विवाह-सभामें भाषण दिया। सभामें अन्य लोगोंके अलावा डॉ एररपोई सर रेमंड बेस्ट सर फ्रेड्रिक मैली सर मंचरजी भावनयरी मोतीलाल मेहक और निच भी उपस्थित थे।
- नवम्बर १३ एम एस० टिन्डोनाल कैथिल नामक अहाससे गांधीजी और हामी हबीब इन्कीडसे इंडियन आर्थिकाके लिए रवाना। इंडियन औपनिषय में समाचार छपा कि ट्रान्सवालसे निर्वासित करके भारत भेजे जानेवाले प्रवासी भारतीयोंकी सहायताके लिए भारतमें जग्रा करनेके लिए एक प्रभाव वाली समिति बनाई गई है जिसके सदस्योंमें सर फीरोजशाह मेहता गोपाळ इन्धम मौखले मुहम्मद अली बिधा और जे बी पेटिट भी हैं।

शीर्षक-संकेतिका

अंग्रेजी हल, १७८-७९
 अष्टादशवीं शताब्दी, ३३
 हेलन मिर्ली और अन्य अष्टादशवीं, ५५-५६
 अष्टादश शताब्दी, १३१
 एम ए की परीक्षा, ९
 श्री अष्टादशवीं शताब्दी, १००
 श्री अष्टादशवीं शताब्दी विधि, १८५
 अष्टादशवीं शताब्दी के अंग्रेजी शैली, १५८
 कुछ भारतीयों, १ ?
 कुछ विचार, २३५
 केवल भारतीय २३३
 केमिस्ट्री सिद्धि १७-१६
 क्लासिकल कुछ शैली १९७-९५
 केवल और वा अष्टा ३३ २३६-३०
 केवल के अंग्रेजी १ ?
 ब्राह्मणिकों की विधि, १-८ ११ १६ ७०-७८ ६२-६९
 ८०-८९ २३६-२५० २३७-२४३
 अष्टादशवीं शताब्दी, १८३-८४
 अष्टादशवीं शताब्दी भारतीयों की शैली १९१
 अष्टादशवीं शताब्दी भारतीयों के अंग्रेजी विचार, २८७-३
 अष्टादश शताब्दी, १८८-८९
 अष्टा, -अष्टादश-शताब्दी, ८१ १०७; -एन एन एन
 शताब्दी, ३५० ३५०, ३६६ ३७९; -अष्टादश
 शताब्दी विधि भारतीय शताब्दी, २८-२९ ७९
 ८२, ८२, ९ २ २-१; -विधि भारतीय शताब्दी,
 ३५० ३३२
 अष्टादश शताब्दी, १०९
 अष्टादश शताब्दी का अष्टा, ९९ १
 (श्री) राज अष्टादशवीं शताब्दी, १९
 अष्टादशवीं शताब्दी, १०-११
 अष्टादश शताब्दी और अष्टादश शताब्दी, १ ३-५
 अष्टादश शताब्दी के अंग्रेजी १३२-३३
 क्लासिक १२१
 अष्टादश और अन्य शैली शताब्दी २५१-५२
 अष्टादशवीं शताब्दी और अष्टादश शताब्दी, ११७-११६
 अष्टादश शताब्दी भारतीय शताब्दी, १२३

अष्टादश शताब्दी का अष्टा ३३ ७२-७३
 अष्टादश शताब्दी, ५३
 अष्टादशवीं शताब्दी, ३३-३५
 अष्टादश शताब्दी, १३
 अष्टादश शताब्दी, ८३-८४
 अष्टादश शताब्दी, १३५
 अष्टादश शताब्दी के अंग्रेजी शैली १३६
 अष्टादश शताब्दी, २ ?
 अष्टादशवीं शताब्दी के अंग्रेजी विचार, ३२३-२९
 अष्टादशवीं शताब्दी के अंग्रेजी, ११८
 अष्टा, -अष्टादशवीं शताब्दी, १३७-८८, १२१-२३
 ५२०-२३; -अष्टादशवीं शताब्दी, ३३५-५० ३३७-५५
 ३९ ३३९-३३; -अष्टादशवीं शताब्दी, ३३६-२५
 अष्टादश शताब्दी के अंग्रेजी, ७५, १५९-५९; -अष्टादश
 शताब्दी, ३३३, ३३७-५८, ३८६-८७, ५१० ५२०
 २५ ५३५-३६ ५३७-५२, ५३३; -अष्टादश-शता
 शताब्दी, ३३७-२५; -अष्टादश-शताब्दी, ३१०-
 ११; -अष्टादश-शताब्दी, ३२ ७३; -५० ५५०
 शताब्दी, १ ८, १ २-३; -५० ५५० ५५० शताब्दी,
 २१२-१३ २८२-८७, ३०५-६, ३२१-२३, ३३५-६,
 ३५५ ३३५-६ ३३७-६८ ३८१-८२ ३८५-८६
 ३९३-९६ ३९३-९६ ३९६-९ ३९६-९८, ३९
 ३३ ३००-८१ ३९३-९७ ३९३-९५ ५००-९५
 ५१८ १९, ५३८-७०; -अष्टादश शताब्दी, ५३५; -अष्टा
 एम अष्टादश शताब्दी; -अष्टादश शताब्दी, ५०६-७,
 ५३३; अष्टादश शताब्दी अष्टादश शताब्दी, ३३७-३५
 -(अष्टादश) अष्टादश शताब्दी, १ ९; -(अष्टादश)
 अष्टादश शताब्दी, ३०३ ३९३; -अष्टादश शताब्दी
 अष्टादश; -अष्टादश शताब्दी, ३९१; - अष्टादश
 शताब्दी के अष्टादश; -अष्टादश शताब्दी, ३०७, ५३०-
 ३८१; -(अष्टादश) अष्टादश शताब्दी, ५१९-५२०,
 १०५-७६ १९९; -श्री एन अष्टादश शताब्दी, ५१०-१११;
 के अष्टादश, ९१ १ ९; -अष्टादश शताब्दी,
 ३९५-७० ५३ ५०५-९, ७० ७१ ७३; अष्टादश शता
 शताब्दी, २३३; -अष्टादश शताब्दी के अंग्रेजी शैली,
 ५२५-२६१; -अष्टादश शताब्दी, २५५-६ १

-टक्कू षोडशतौ, ५०-५१; -टीं कण्डुप्रमाणतो, ३५०-५१; -ती ई वक्रात्, २२५; -डली देहोष्णिकतो, ५४२; -नामस्तस्य वार्षिको, ३ २ ३८, ४५२-५३; -वर्षिको, ४८५; -मास्योप मन्वन्तरीको, ५४३-५५; -मन्वन्तस्य वार्षिको, १२ १०५ २०८-०९, ४८५; -अधिकस्य वार्षिको, २ १ २ २५, ३५१-५२ ३०० ३०८-०९, ३२०-१८ ४००-१८, ४३३, ४ ४ ४५५; -उपगतस्य वार्षिको, २०५; -रैव षड्जी मेरुको, १४०-५५, १५२-५ ३ अँटं वंमणिकतो, ३ ३-४ ३१३ १४ ३१० ३१८-९ ३२५ ३२०-२९, ३२९-३३ ३३४ ३४१-३२ ३४५, ३५३, ३५० ३५ ३५५ ३५४ ३५०-०८ ३६०-८१ ३९० ३९९-४० ४ ४-५ ४०० ४११ ४२३-२४ ४५४-५५, ४५९ ५ ४६८ ४७५ ४८० ५ ४-५ ५०५-५५ ५१५-१४ ५१० ५३३; -अँटं कर्तव्यको, १०१-०४; -अँटं कूके निमी संपिण्डो, ३ २-३ ३५२ ३५८ ५ ३६५ ४८ ३८-९ ३९८-९९, ४०५ ४२१-२२ ४२६ ४३३ ४५३ ४५९-५० ५० ३; -अँटं गण्डके निमी संपिण्डो, ३१५ ३१९, ४०६-० ४२३ ४३८, ४६८; -निमा योष्योष्यको, ४४३-४५, ५३३-३४; -कण्डुप्रको, १५५ १०; -कण्डुप्रको नाम १६६-१०; - (बीमती) वीणको, ३ ८; -स्य कान्ति कृतो, १००; -साराद्य जातिप्रकारो, ३ ४-५ ४६३-८४; -साराको ५०-५१ ५४-५५ ५५५-५३; -सार्वा संक्रमणको, ३०३; -दधीय मन्वन्त, २३०-४५; -वर्षिकस्य वार्षिको, १०४

प्रातिबिम्बे त्रिं मन्वन्त, ८३
 प्रातिबिम्बो विसृष्टी १९३-९४
 (बी) पालक वीर जगदा कर्त्त २ ३-४
 प्राची-प्रमाण, १४४
 प्रसाद, -अर्थप्रतिष्ठ समाने, ३२ २५४
 प्रसन्नता -अर्थप्रतिष्ठ समाने, १०-१८, ३०-३९; -रेजिस्ट्र मन्वन्तको, ९०-९८
 प्रीतिप्रदा वन्मन्वन्, १२२ १३०-४१
 प्रकल्पयन् सुप्रसा, १ ५५ १९६-९०
 प्रपणक तापुनिताप्रदा कल्पित १
 प्रपण्य वीर सत्त्व ३१०-११
 प्रपण्य सुप्रिय कंठो कण्डु घाताको त्रिं प्रसा कल्पित ३१९
 ९-४१

मरी संज्ञा, ११६ १८
 मर्या -अथवा वीर विक्रान्ती लक्षणसमामे २३४; समर्पण वन्मने, ४० ३; -गुणप्रतिष्ठोको समाने ४५४-५९; -वज्र-प्राणि, २३५; -अर्थप्रतिष्ठमे, २४२-४४; बोध-निष्कर्षोको समाने, २१८ १९, २२०-२१; -बाह्यप्रतिष्ठ-कर्म लक्षण-समाप्तोमे, ११०-११; -तमिक लक्षण-समाने, ११४; -अर्थिचर्य वन्मने, ५१५; -मिथेप्रियाकी समाने, २१४-१५; -मिथेप्रियामे, २१५; -मास्योष्योकी समाने ५१५; -मिथेप्रियामे, ५४५-५०; सार्धवर्षिक समाने, ३१ २५२-५३; -दधीयान्मन्वन्तान्मन्वन्तौ लक्षण-समाने, १११ १३; -दधीयान्मेमे ४०४-०६
 मंत्र -केप द्वाहससो २६६-६८; -अर्थप्रतिष्ठ लक्षण-समाने, ११ ३; -वेद्यो षसमेसक प्रतिप्रतिष्ठो, ५३३; -वेद्यो मन्वन्तौ प्रतिप्रतिष्ठो, १५०-५५; -वेद्यो मन्वन्तौ प्रतिप्रतिष्ठो ३१-८१ १२०-२२; -मिथेप्रिया कल्पितो प्रतिप्रतिष्ठो २१०; -वेद्यो पर्वोष्य प्रतिप्रतिष्ठो, २८ ३; -तमिक प्रतिप्रतिष्ठो, २०२, ५३३; -तमिकको, ४८; -रैव षड्जी मेरुको प्रतिप्रतिष्ठो, १९५; -साराके प्रतिप्रतिष्ठो, २२ ३ ३; -साराको, ५२
 मन्वन्तिका केके कर्त्तव्यो त्रिं प्रसन्नता २ ३-४
 मेरा केके कृत कण्डु ११, १२३-२४; [२], १४२-४३; [३], १४०-५१; [४], १६२-६३; [५] १८०-८३
 मेरा केके कृत कण्डु ११, २२०-२३; [२] २३८-४२
 (बी) वीरविक्रान्ती कर्त्त, १८८
 मन्वन्तिका सुप्रसा ३२-३३
 मन्वन्तौ त्रिं ९
 मन्वन्तिकाको वीर १९१
 मन्वन्तस्य कर्त्त वी ११०-११
 मन्वन्त, ३००-९ ३ ८१ ३२३-२५ ३३३-३८, ३५४ ३६३, ३६९-७३ ३८८-९९, ४ ०-२ ४२०-२१ ४२०-२१ ४२४-५२ ४०२-७३ ४८८-९२ ४२६ ९८, ४२८-९९ ५०१-५ ५३०-३१
 अँटं कूके सप्त मेरुका सत्त्व, ४ ८-११
 व सु कण्डु एवा कण्डु बोधोका सुप्रसा, ३९-४०
 वीरका केके-प्राणा ११८ १९
 वैकुण्ठके मन्वन्त १३३-३०
 विद्ययात्मक, २५०-५८
 विद्ययात्मको वाक्यो विद्यो ५२६-६
 विद्ययात्मको वता [१], २६८-७३; [-२] २०५-७८; [-३] २८०-८९; [-४] ३११ १९; [-५] ३१५

-[५] ३३५; -[०] ३५५; -[८] ३६३-५४;
 -[५] ३६५; -[१] ३८५-८०; -[११] ४ ३;
 -[१२] ४१६-१०; -[१३] ४३१; -[१४] ४३६;
 -[१५] ४४०-०१; -[१६] ४८१-८३;
 -[१७] ४९४-५५; -[१८] ५ ९१

अर्थ, १ १ १९२

संविधान, १९२-९३

छपूरी शिक्षा ८५

छात्रावसे सच १९२

छात्रावसी सैन हो सकटा है २२५-५०

सन्देश -उत्पि मासिकी, १९८; -दक्षिण वाकिदक
 मासिकी, १९०-९८; -मासिकी उत्पिकी सच

१ २-३; -मासिकी, १ ७; -छात्रावसी सैन
 सुते मासिकी, ९८-९९

सम्पन्न, १८५-८०

सामाज्य-सदस्यके सिवार, ९

सेठ सीम जो नही पूजो ९९

सर्गोम भीकरी पुजार्थ, ९६

संघी का रोज ३५

समाज सच ८३-८०

समाज सच ३६

समा सच १९६

सारे हुए सोसिके जि १८०

सिक्-सुक्तिम संवा, १३६

एक वर्षी १८ २३ -का कानूनही डिजाइन इत्यादींकर
 मरतीतोंको अन्य प्रजासत्तेकें उपाय करीं होय कोरे
 बाबा न्हो २४; -को पूरी उपाय एर कर बेसेते
 ही किम किदिता प्रतिहार समज २० -को एर
 कर करत प्रजाती प्रतिबन्ध अतिमित वन्ध क्रिया
 प्रस मारतीतोंके प्रियेमे वचन न्हो ३; -का एर
 करलेका गांधीजीका माण्ड, १३; -का एर करलेका
 कसल समसदा विचार, १८८; -को एर करलेकी
 मारतीतोंकी सौंग, ७७, १०३; -को एर करलेक सिव
 कसल कायम ठेवर, ५२३; -को एर करलेक सिव
 कसल कायम वकालत ७० ५२३; -की एर करलेक
 किलमे प्रसना १८-२, ३११; -को एर करला
 मारतीतोंका उलेस ५२३; -को एर करलेक सिव
 मारतीतोंका उलेस २८; -को कसल उरवार अरे
 मारतीतोंके बाब दुध गाल, १०५; -में कसल कलानी
 अनुयतिरोंका कसेर, १२५; -स एरिवार वरीतम
 उलोका अतिमित वचन १०

उत्तराज एरिवार वरीतम उलोका अतिमित १
 १० १ ३ १ ३, १ ९ पा रि ११४ १४४
 २५९ २११-२२ १ ८ ३२३, ३३३ ४ ४५५)
 -एरिवार कानून कसल, १०; -म मानके करण
 मारतीतोंको अतिहारिंको द्वारा मिडगी वच केसल उरवार
 ८२; -दोनों उरवोमे पान, १० -दोगू, १८; -या-
 एरिवार उरवार विचारणीय, २३; -कसल, १३, ७७;
 -के कसल न्हो दिने किा; असेर जे कानूनके उपा
 मरती कानून मी कसू ८२; -के कसली गांधीजीकर
 सुझया १०५; -के कसली इत्यादीं करींकर अतिमितो
 दार न कसल मरती १०५; -के कसली विमितम
 मरतिहा १८; -के उपा १३ मी डिजिन मरतीतोंको
 एरार होकी कसल कसल, २५; -के कसल
 मरतीतोंके उरवार वर हस तड उलेसका ठेवर न्हो
 १०३; -कर गांधीजी ३३; -में वर वा ही एरिवार
 ३; -में गुर्दिक सुकमम वरीतमकी वेरुसल मरी
 एरिवारो सुग २२
 इत्यादीं मरती प्रतिबन्ध अतिमित ३ ३३ ४८
 ५ पा रि ३ २९१ २९४ २५, ३३३
 ३४२; ४८७ ५२३-४ -असाव वरवरीत कसू
 न्हो, १ ९; -एरिवार कानून एर कर कसल
 उरवार डिजाइन मरतीतोंके प्रियेमे वचन न्हो,
 ३; -गांधीजीकी उरवार करींकर अतिमितो

उत्तराज कानून न्हो, ४ ८; -उपाय-उरवार द्वारा
 डिजिन मरतीतोंके प्रिये करण ही मरती, १८९;
 -की कसल कसल द्वारा की न्हो कसलके डिजिन
 मरतीतोंके विरि मरती, १०३; -के कसलके डिजिन
 मरतीतोंको विरि मरती मरती एरिवार कसल
 एर करलेकी कसल, १२३; -के कसली उलोका
 कसलके केसले अनुयतिर डिजिन मरतीतोंके विरि
 मरती न्हो १२८; -के कसली उपाय-उरवारकी
 पुक, १३; -द्वारा एरिवार-उपाय कसलके उपाय
 उरवार, २३, ५१; -में कसलके इत्यादीं उपाय
 कसल ठेवर न्हो, ४ ९; -में उलोकाके सिव
 कसल कायम द्वारा फे मरतिहा मरतिहा २९३;
 -में उपाय डिजिन कसलीके किलम, २४ ५१;
 -स एके करण न्हो १३ न्हो, २४
 एरिवार मरतीकी उपा अतिमित - कसल उरवार,
 ३ ९; -का मरतिहा, १९२, ३ ९; -कर गांधीजी,
 २३७
 कसल विरिडिला मरती कसल उलोका अतिमित
 ३४०
 मरती डिजिन उरवार अतिमित ३४ पा रि ५२
 पा रि; -विमित मरतीतोंके उपाय अनुयतिमे
 कसलके, ३८६; -एर करवा वेरुसल सिव मरी
 वेर, ७२; -के कसली विरि उरवार द्वारा वेरुसल
 उरवारके विरि मरती ४२; -द्वारा की न्हो उपाय
 सुकल ही उरवार ३४४

अतिमित मरतीतम, २३

कसलके १ १९ ३ २५५ वा रि; -३, १९५
 ५२ पा० रि; -५८ १८ ३ १९
 उत्तराज एरिवार कानून उलोका कसलके; -स
 एरिवारके विरि वरीतमकी कसलके, ४४३
 मरतिहा वर एरिवार अतिमित उलोका कसलके २३
 एरिवार उपाय कसलके १२८ २९५; -अतिमितकी
 एरिवार अरे कसलके सिव १९ २३ मरती, १ १; -का
 मरती प्रतिबन्ध अतिमित द्वारा कसल उरवार, १९,
 ५१; -की कसलके अनुयतिर वरी करलेके
 कसलके पूर्ण विरिडिलर ५४; -के कसली एरिवार
 कसलके वर उपायके प्रस विरिडिल २३; -के
 कसली डिजिन एरिवार उपायके प्रिये करलेके
 मरती, ५१; -के कसली अति उरवार वर मरतीतोंके
 प्रस विरिडिल ५१

कमी हावी वरील, २६ २ ; -हा छपविति काळक
छापनेने प्रकाश २५
कलानी अनुपतिपत्र ४ २२९, २४५, २६१; -टील माळक
किं वीरेरिओ पत्रक, ३३; कलानी अनुपतिपत्रों
-स कपडे मरिक्क मिथिद मनाही, १४५; -ने
कपडे मरिक्क कळकरो वनास निरीर १४५
कलान, ६ भाव (पत्र) ४४ १३३ २६०, १८४
१९५, २२४ २३४-२३५, २६९, २००, ५४१
पा दि ; -बोर कळे छपवितोकी टील-टील मरिक्को
केरवी सजा ४९४ -बोर किन वर मधीनी,
२६४) -ही बोरसे छोण्य काळकने पळसे गे
मळसेने बीनी छपवी छाळता ६८; -ही वृकळसे
'राम पळ मरुटीकका वळिवाल, २४८; -के वर
केरवोका वळता मुळनेके किं वकी मरिक्क,
१६८; -के वळ २१ मरुटीक विरवता, ४९३; -बरा
कळकिलानी वीरवता अनुपतर, १००; -बरा केळसे
कळकिल वळ छप, २४०

कलान ६ ३२ पा दि
कळक, ३४
कळक, वळवी, ९४
कळक, कळान, -हा कळकिल वळ, ५

मा

मार्गविका सुळकळ वळिअ ३ ८ १९, २८ ३५,
७२ पा दि ९६, ९८ १२४ १४९ २६९,
३९२, ३२०, ३४३ ३४९ १५४ ३९ ४ १
४२४-२५, ४३२ ३३ ४९५, ४०९, ४८८ ४९४
४९६, ५१६, ५१८ ५२९; -के वळका वळ, ३०१;
-बरा मरुटीकको कळक, ४२१
मळकळ, -किा पळका कळ कळकर विरवता, ४८
मळकळ, मेळिक्क, २, ७, केळकोजा-वेरे, २४०
मळकळी २८४ ३२० ३०९ ३९ ; -के छापवितने
कळकने पळ सजा ८ ; -से मेळवी विरवताकळका
वळ कळकर ३०५
मळक १ १; -हा वेळ-मिळकळ, ९२
मळकळी २०८
मळकळ, २८१ ५१६ पा दि ५२९
मळकोळ, -हा छापवित, ३ ९
मळकोळ छपवित विरवताकळ ३ ६
मळकोळ, कळकळ विरवती, ३९ ४४; -बो केळवी सजा,
४ ; -व वळ वीकळ सुळीगा, ४०

मळकोळ वृका वळ -हा मळ विरवितोकी कळ, ८
मळकळका, ४१८ पा दि
मळकळकळमळी, २ ८ २१४
मळकळकळ कळकळ, १९८ पा दि
मळकळी वेळिग वळकोळ, ३६१
मळकळी वळकळिद वळकळ, २०२ पा दि
मळकळी, ४३ पा दि
मळकळ कळकळी हावी ३४३
मळकळ, कळ हावी, २८०
मळकळ, हावी वळकळ, २४५-५
मळकळी वळ, ४२४-२५
मळकोळ विर वळकोळी, -ने वळिवाळ केळ वळकळ वेळकोळ
कळने, ७८; -ने मळकोळ कळि कळकळ, ११९
मळकळी, ३८४
मळकळी मळ, ३९; -हा छपका कळकळ, २५
मळकोळी, कळी मळ, ३ ९
मळकळ कळकळ, २४१

इ

इळिळकोळ ३९६, ३९८
इळकोळ विरवित, ४२९ पा दि ४९९
इळिया २९ पा दि २६३ पा दि २८१
पा दि २८६, ३८३ ४३ ५१८
इळियाळ कोपिविषय १ पा दि ५ पा दि
१५, १० पा दि ३२ पा दि ५ पा दि
५४ पा दि ५० पा दि ७० पा दि ७४
पा दि ९८ ९९ पा दि १ ३ पा दि १००
पा दि, १०८ पा दि १२४ पा दि १५५
वा दि १५९ पा दि १६४ पा दि १९८
वा दि २१ पा दि २१६ पा दि २२१
वा दि २४२ पा दि २४४ पा दि २५
२५१ पा दि २५५ पा दि २६४ पा दि
२६७ पा दि २८ पा दि २८४ ३०६
पा दि ३८ ३११ पा दि ३१४
३१९, ३२२ पा दि ३२५, ३२९, ३३
३२९, ३९४ पा दि ४२०, ४२८ पा दि ७
४२९ पा दि ४४ वा दि ४४१ ४४,
४४४ पा दि ४५ ४५६ पा दि ४६३
४७० पा दि ४८४ पा दि, ५ १ पा दि ७
५ ४ ५१ ५३ ५४५ पा दि ;

कर्म - अधिष्ठित पंक्ति में किरीटी कर्म, २११
 कर्म २, ११ ७, वैश्व दाम्पत्य अधिष्ठित पंक्ति में
 कर्म
 कर्म ३ १८८५, २३, १९१ २ २९८; कर्म
 १८ १८९० ५३
 कर्म ३३, १९ ८ वैश्व दाम्पत्य अधिष्ठित पंक्ति में
 अधिष्ठित
 का प्रवृत्ति कर्म, ११९
 का आचारिक कर्म, ११९
 दाम्पत्य आचारिक प्रवृत्ति कर्म, - और अधिष्ठित प्रवृत्ति
 प्रवृत्ति कर्म में कार्य समाप्ता नहीं, ८ ; - ही कर्मों का
 कर्मों के आचारिकों के साथ दाम्पत्य कर्मों को हर
 प्रकार की कर्मों के अधिष्ठित, ११८
 अधिष्ठित कर्मों कर्म ४१
 कर्म अधिष्ठित प्रवृत्ति कर्म ३३८
 कर्म अधिष्ठित कर्म, ३४३
 कर्म अधिष्ठित प्रवृत्ति कर्म, २९६, ३४३ ४४
 ३४७ - के कर्मों के अधिष्ठित मातृत्व आचारिकों के
 कर्मों ३४५ - के कर्मों प्रवृत्ति अधिष्ठित
 अधिष्ठित का मातृ ३४४ - के कर्मों प्रवृत्ति
 अधिष्ठित समाप्ति का ३४५ - के कर्मों मातृत्व
 आचारिकों प्रवृत्ति का कर्मों कर्म, ३४५-४८
 कर्म कर्म - के कर्मों मातृत्वों की अधिष्ठित
 अधिष्ठित अधिष्ठित कर्म, २९९
 कर्म प्रवृत्ति कर्म (कर्म) - और आचारिक
 प्रवृत्ति कर्मों कार्य समाप्ता नहीं, ८
 अधिष्ठित कर्म - का अधिष्ठित कर्म, ११२ - अधिष्ठित
 अधिष्ठित - ही कर्म अधिष्ठित १८ - के साथ मातृत्व
 अधिष्ठित कर्म अधिष्ठित ११३; - ही अधिष्ठित
 मातृत्व अधिष्ठित का कर्म, २ ९

कर्म, मातृत्व, २५३
 कर्म, अधिष्ठित १९१
 कर्म, अधिष्ठित, ५९ १९, १९-३१ १०० ४०५
 - के अधिष्ठित कर्मों, १९३
 कर्म, १९, १९, या दि २००, १११
 ११२, १९०,
 कर्म, अधिष्ठित ३०१
 कर्म, २४ ; - ही अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित
 कर्मों समाप्ता कर्म, २४१
 कर्म कर्म, अधिष्ठित दाम्पत्य अधिष्ठित पंक्ति में अधिष्ठित
 अधिष्ठित, अधिष्ठित - ही अधिष्ठित, २४०
 कर्म अधिष्ठित, २४९
 अधिष्ठित कर्म, ३, १९, २१५, २४९
 कर्म अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित
 अधिष्ठित ही अधिष्ठित, २ ८
 अधिष्ठित, अधिष्ठित - अधिष्ठित अधिष्ठित, ४३१; - अधिष्ठित
 अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित कर्म, ५९
 अधिष्ठित, २१३
 अधिष्ठित, - ही अधिष्ठित ही अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित
 अधिष्ठित ४०५
 अधिष्ठित, ११, १९
 अधिष्ठित, अधिष्ठित, अधिष्ठित, ४ ९४
 अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित ११९
 अधिष्ठित का ३८८-८९, ४ १; - अधिष्ठित का अधिष्ठित अधिष्ठित
 अधिष्ठित ४ १
 अधिष्ठित, १५
 अधिष्ठित, १४४
 अधिष्ठित, अधिष्ठित अधिष्ठित १३-१४ ३२ ४०० अधिष्ठित
 ४६, १५४ २४९, २५२ या दि २५३ २५३
 २०० २८८, २८९
 अधिष्ठित, अधिष्ठित २८०
 अधिष्ठित, अधिष्ठित अधिष्ठित ४३३ ४००, ४९३
 अधिष्ठित, ४४५
 अधिष्ठित, २४९
 अधिष्ठित - और अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित १०५ - अधिष्ठित
 अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित, १०५
 - अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित
 अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित
 अधिष्ठित, १९१३ - अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित
 अधिष्ठित अधिष्ठित २००५ - अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित

कर्म, अधिष्ठित, २ ७, ३५१
 अधिष्ठित का अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित
 कर्म, अधिष्ठित, - अधिष्ठित, १९३
 कर्म ५ १८८
 कर्म, अधिष्ठित २५४
 कर्म, अधिष्ठित २५१ २५३
 कर्म, अधिष्ठित ७, १२ १६, ६० ११३ २५६, २८६
 ४२१ ४४४ - अधिष्ठित, १९१ - अधिष्ठित अधिष्ठित
 अधिष्ठित, ५; - ही अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित अधिष्ठित
 अधिष्ठित अधिष्ठित, २८५ - ही अधिष्ठित अधिष्ठित, ५

बन्धुवामाझी येर ३१ ; -से मॅन्डी कोरें ठारिण
निविचा म्हाई, ३९४ -से विठ्ठलमळकी मुक्कळत
३५९, ३५४ ३५३, ४ ०८ ४१३; -से हूँ
मेर्या परिणम कोरें जॅन्डीको विच घने पयले,
४१६; -से हूँ विठ्ठलमळकी मॅन्द्या घार, ४ ८-२१;
-से हूँ विठ्ठलमळकी मुक्कळतपर गांधीजी, ४११

कान्डी, ३०१

कर्जाटें वें ४२९ ४३३; -बौर मल्लस गांधीजीकी
मुक्कळत ४४२; निर्वाकण स्वयं, म्हाई, ४४५; -वा
खनिर्वाकणवा पत्, ५३२

मिन्, विन्, ३१ ३९, २३५, २३१ २९१ ३ ०-३
३३१; -बौर मल्लस गांधीजी २३४; -गांधीजी
मठमे उल्लखके लाम २३५; -बारा कण्णकी
धर्मिणिने ५ पौठ म्हात्, ३८

ख

खडिखा, २५

खर्मिजा २४९, २३

खडानी, १३५, १३५; -बौर मुस्मल खडानीकी कालख
केरुमे हाज मुस्मरते मुप्पळत १३५

खे ५४५ पा दि

खाल, वी० क० ५२९

खतर ३५

खीमकळ, २४०

खुसानी, खुमान, ३ ९

खुनी कान्ठ, खेडा खडानी कान्ठ मॅन्दीक खडिनिम
खीमकळ ४३३

ग

गलारी, वारी वामोर कुम्भ, ९४

गनी, कान्ठ, ४९, ४१ २४९, २५ २१; -वा
बॅन्डिया मिठाल इन्ड सिन् पयाटाळ, ४३; -वा
डिळा, ४३; -वा मॅन्दि मुक्कळ तलक विच कण्ण,
४३; -बारा बॅन्डिया मिठाल ह्या लखनाड, २३

गनौर (इम्तकळ), -वा कान्ठडिण वारी कान्ठ उल्लखी
वुर्ण विचधियार वार, ५४; -बारा कान्ठस कण्ण
कान्ठकी कान्ठस वड ज्वा मिठाल खडिनि ५४

गनौर (वेळ) -को मिन्डे धर्मनाथस मडविडा, २ ३४;
-बारा वारी केरुमे खडानीक सिन् लता वडप्या
बोन्दिवा वारा १५३; ग गांधीजीकी वडप्या
१२३

गनौर खडा -गाठीलोको केरु वरेंत वल्लकळ, ८०
-से वल्लकळे मारणीको मिठ्या गांधीजीका वरेंत
बालेका लखण ख -से कुठ मारणीको वल्लकळ, ८१
गांधी, (मीमटी) इन्डिया १ ९, १५१ पा दि १५२,
१०५, १८ १९९, २ २, २०५, २१३, २३५,
४१८; -की वीमारीमे गांधीजी बालेमे कण्ण, १ ५
-के कण्ण इनेका उमावार केरुमे गांधीजीकी
उल्लख २ ५

गांधी, (मीमटी) कान्डी, ३०३ ३९१

गांधी, सुधाकळ, ४१८ ४५२; -स गांधीजीकी वारव-
वाडकी उम्ह वीच कोरुमी मीण, ४५३; -से उल्लख
गांधीजी नरनारकळी खनिमळमे हाम कोरुमी मीण,
४५३

गांधी (मीमटी) वल्लकळ, १०४ २ २, २०५, २ ८
२१३

गांधी इन्डिया सुधाकळ, २ ३, २१२-१४ २३३,
२८०, ३८१ ३९१-९३, ४१५, ४१८ ४३८ ३९,
४५२-५३ ४६५, ५१९; -बौर मल्लस गांधी
बारा केरुमी वरें केरुमे घार-सॅमळ, ४१५; -के
उल्लखमे गांधीजीकी वीमळकी कान्ठमे पळी
सुधाकळी लखळ, ३२२; -की गांधीजीका कण्ण
मिठकळ ४३०; -बारा कान्ठे मिठस घारकळ
गांधीकी खनिमळमे हाम कोरुमी मीण, ४५३

गांधी, केरुमे (वेळ), १५२, २ ८ २

गांधी, मारणकळ, ३९१ ४५३; -के गाठीलोको वरुमे
माल केरुमे विवरस गांधीजी कण्ण, ३९२; -की
गांधीजीकी खनिमळ बाण्डिया बालेकी उल्लख, ४५२

गांधी मल्लकळ २ ८ २१३, २४८, वा दि १९१
पा दि

गांधी मल्लकळ, १ ८ १५१-५२, १०५, १९९,
२ २३ ३८९, ४१५ -बौर इन्डिया वरुमी
बारा केरुमी वरें मंठे घार-सॅमळ, ४१२; -गांधीजीकी
रामे कण्ण कण्णकळे कण्ण, २१३; -के कोरुमे
पर गांधीजी, ४१३; -वा गांधीजीकी वरुमी मिठ
इन्डिया लखळ, ४५५; -वा गांधीजी बारा वरुमी
मल्लकळ, कोरुमे व लखणीका मल्लकळ वारा,
२ १ -वर वीमारीमे केरुमी लता कण्ण कण्ण
गांधीजीकी वरु ४१०

गांधी मल्लकळ कण्णकळ, ३ ७, १ १५, १०, १८
२ ७ ३ ४४ ४०-४८ ५१ पा दि ५५, ६१
३ ४ ९८ ७ १ ७ ११३, ११ १४५

मिर्मिड प्रवा, -धारी रकभते मारठील मातर्नाम कवकनन
 वृदि ८०-८१ -कव कर्लेके पक्षुमे मारठील्लोकी मनाही
 १४१) कव कससे मेराकक ठबोहोडा प्रारम्भमे कुक
 धाँठि ८१; -के क्दरम उरुन मारठील्लोकी सिधिमि जौर
 बासठाही सिधिमि बहुत कम धन्तर, ८१; -के सिधिमि
 मारठील्लो हाण बाबाकन, १११-१२० -क सिधिमि
 वेगमसुध सिधिमि, ८१

मिर्मिडिया १४८ ४ मिर्मिडिये -जौर कज्जी कर्ना-
 व कर्कोसर ठील पीकडा कज्ज कलित कर, १४०-
 -वेराकडो छुड कालेके सिधिमि कुकमोकी ठर
 मन्गुरी कजेसर मन्गुर, १००; -क मातर्ना केक
 वेपडामा ८४; मिर्मिडियो -का मसठ रोक कजेसर
 मारठील्लो समवा कक ही इक ८ -का कन्या
 किल्ली कली हा उक कव बरना बाबाकन, ८१;
 -का छुड कज्ज इर उक बाबाकन मिर्मिड, ८१; -की
 मर्ती कव कर्लेके सिधिमि बैरककरी ठौरपर जी
 कोपिसे बरना बाबाकन ४१५; -की सिधिमि
 बाबाकन छुडकडा कज्ज केक मिर्मिडो प्रवा कव
 कन्या, ८४; -की हाण छेदरमे कर्ती जी कन्या
 नर्ती ८४; क कर्कोसर मेराक वेकबडोडुकर,
 ८१; -के कर्कोसरका वेगकक मनाही कन्या, ८१;
 -के मर्तिके कर्कोसर छेडक मनाही मन्गुरके छुडक
 ८४; -के मर्तिकेके कर्कोसर बाबाकनो बाबा कलेकी
 मेराक पुबयडोडुकरची सिधिमि, ८४; -के मन्-
 पर ही मेराकको छुडि मिर्मिड, १४० १०; -के
 छम्पूनी कम्पू कालेमे मारठील मातर्ना समाकडा
 को ही हाण नर्ती, १२१, -की म्कोमम केर कुकलेकी
 मनाही बारी रकने उक मनाके साधि नर्ती, ८
 -की कले, व कजेसर सिधिमि कलेके सिधिमि
 निलुका ११८; -पर मिर्मिड ककम हंठे ही मारी
 कर, ११ ४ १; -पर मर्तिकेका कुकम ११

कुकठ मारठील छेड, २८ पा० डि
 कुकठारी, १५ पा० डि ४१; -मे म्काकिल हो
 कर्कोसर, ४८५-५
 कुकठारिणी -की समा, ४५२; -की समामे गांधीजीका
 मन्ग, ४५१-५
 कुकठारी वेक, -का गांधीजीका मन् ४५१
 कुकठारी साधि कलेके, ४५१ पा० डि
 कुकठ १११ ११० १०९
 कुकठक, -की छठ दिर्कोकी वैरची उवा १५

कुक, बाबा मुकम्म, १५
 कुक, व कव ११५ ५२१
 कुक, मन्, १०
 कुक, ४४८; -की मिर्मिडारीसर वेकडोके ४४८ ४९
 गैरिवाही १८९
 गैरिवाही, ५१
 गोलेके फा० वी ४१९
 गोलेके, मोफेर गौतमकुण्ड, २८१, १ १, १२८ १११
 पा० डि १११ पा डि ११० पा डि ४२९
 ४४१, ४४१ ४०० पा डि बाँर छर कीरीकुण्ड
 वेकडोका कवसि सिधिमि कलेके ठर, ४ ९; -का
 बाँरम कवडी कलेकेकेके करण कलेके, ५१०; के
 लालक-सुनावरसे गांधीजीका कवा कुक, ११५; -की
 गांधीजीका कुकडक कलेके मिर्मिड, ५१०, -की
 गांधीजी कदिम बाबाकनमे कले केकसिधिमि की
 पूरवा मस कले इर कलेके कम्पू, ५१८; -पर
 बाँरवी, ४४९

गौत, कव व० १४४; -की सपना सिधिमि कली
 १४४; -का सपना कदिरी हाण कव बाबाकन
 सपना कले नाम कलेकेके कलेके, १४४
 गोतक व १११
 गौत कवक १ १ ११४
 गोतकिया मन्कक कलेके १४; -का ठर ११
 मन् कक १११
 गौत, कर्को १०९; -की हंठिमे मारठील मातर्नाल्लोकी
 उवा कवा कदिम नर्ती, १४१; -क कलेमे
 कलित कर कवकन, १११; -की मातर्नाल्लो हाण
 केकी उवा, ११२; -हाण कलित कर केकेके कलेके,
 १११

घ

बाबाकन वेक उव, ०८
 वेक ४११
 वेककी मन्की मन्गुल, ११५, १४१ ४०, ४११
 वेक, ही० ही ५२९
 वेकका १८५८ २८

च

कलेके ४११
 कर्को -की समाको म्काकिल्लो सिधिमि कलेकेके कदिमको
 हाण मन् कलेके कन्या, ४१०

विशेषा अधिकायी, -ने केकेमं चर्वाजीकी सुमरुत, १ ३
बीकमेने, ११० ई ५२९

बाजिरी -बीर नरेशजीकी सुकुल सुभा २३४; -का
कलकामक प्रदितेन कनेच १४ सुकल ४२१; बी
नरेश नरेशजीकी मरु, १८; -बी मिश्रवारी ४२१
३८ ४ ३ ४४४; -का कर्जनेन कलकाम
कितेन ४२४

पंजी सुं, -बी कलकामकी बीरत सुनीच्य मज्जाकाम कलक
मे मसभेमे सुकलका ३८ -बी बीरत मिकन इरा
कनन समितेकी मेकनक मि ५ रीत मरु, १८; -के
दरकी का गोपीजी इरा बीके कू का नाम माधिका
३८; -का ५० रीकी रम रिचको मर, ३८

कलकाम, १४ १९३, २१९
केकुल, बी ५ (११ ११), २२१ पा रि
२५१-५४ २५३, ८८ ३ २ पा रि ४३४;
-बीरकलकामकी बीकबीच मसका सुकिलक कलकाम,
२८८; -कलकाम सुभा काके, १८९; -बी
कलकाम, २५३

केही सु, २६२
कही ५ बी ११४ ११५
कही सु २६२
कही सु २६२
कही बी २६२

कलकाम, ३४८ ५४३; -का कलकामा पदिकाकेके
कलकामने न कने केके कलकामा कलकामा कलकाम,
१३; -बी कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम
कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम, ०३; -के
कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम
कलकाम कलकाम कलकाम १०३

कलकाम बी के ५ ४; -मरुकी कलकाम, ५ १४;
-का कलकाम कने मे कलकाम कलकाम ५ ४
केके, ११४; -का कलकाम कलकाम कलकाम बी कलकाम
केके १०३, ८०; -बी कलकाम कलकाम कलकाम
कलकाम कलकाम, ८८ -बी कलकाम कलकाम कलकाम
कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम, ८८
कलकाम, -कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम
कलकाम, १४; -बी कलकाम कलकाम कलकाम, १४

४

कल २६२
का बीक सुकलकाम, ३१८

कलकाम कलकाम २१९
कलकाम ४२

ज

कलकाम १२
कलकाम ४५८
कलकाम पूर्वी कलकाम कलकाम -के कलकाम कलकाम
कलकाम कलकाम कलकाम, १ ६

कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम २४२
कलकाम, ११ ५३५
कलकाम कलकाम, ३ १
कलकाम कलकाम -का कलकाम कलकाम कलकाम, ५२४
कलकाम ३३२

कलकाम, मर २६
कलकाम, कलकाम, २४२ पा० रि०
कलकाम, -के कलकाम कलकाम कलकाम, ५ १; -का २२,
कलकाम कलकाम कलकाम, ५ २
कलकाम ४०

कलकाम कलकाम ४८८ ४९२
कलकाम, कल कल १११; -का कलकाम कलकाम कलकाम
कलकाम कलकाम कलकाम ११५; -बी कलकाम
कलकाम कलकाम, ३१-३३; -बी कलकाम कलकाम
११५ १६

कलकाम ४३
कलकाम कलकाम कलकाम, ५
कलकाम, कलकाम कलकाम, -का कलकाम कलकाम कलकाम ४९
कलकाम, कलकाम -का कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम १५
कलकाम, १३ ४४
कलकाम ३ ९

कलकाम कलकाम ३९ ४४; -का कलकाम, ४०; -का
कलकाम कलकाम ११; -बी ३ कलकाम कलकाम कलकाम
कलकाम ३ ४०; -का कलकाम कलकाम कलकाम, १९
कलकाम कलकाम -का ३ कलकाम कलकाम, २८
कलकाम कलकाम ०९ ३ ४३
कलकाम, ४५८

कलकाम, कल ६
कलकाम -का कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम
कलकाम, ११३; -का कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम
कलकाम कलकाम कलकाम १८०; -का कलकाम कलकाम
कलकाम कलकाम कलकाम, १८१; -का कलकाम कलकाम ३१
-का कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम कलकाम

गांधीजी १८२-८३; -बामेसे बनेलाज कोठे हात पंजीयन, २२५ -बामेवजे कोठेको स्वर होय न बसल, १८२ -बनेलाजोडी मार बना पारिविके कोठेका दर्शन २६३; -बिगमके लय सेरवजी पोरकएवडा ४४ -बा बांला गांधीजिके मठमे खंवा मठप २९६; -की एक दुःखर बनावा गांधीजी हात लखल, १६६; -की गुलाभर गांधीजी २३१; -की बामेमे न बडा लखेके कोठेको केटी बनेके की बाकलछा गरी, ६४ -की बकलवार गांधीजी १९४-९६, -की लखर गांधीजी, १६५; -की लिखेर गांधीजी, १२४; -के बकिडरिगे हात मारटील देविगेर कुप ६; -के बकिडरिगे हात मुकुलता देविगेरी बनिह मारटाकोठी लखा ५२२; -के बामेगेर गांधीजी, १२६, -के निमणेके बिकर गांधीजीकी छिबकण ११; -के योग्यकी कुछ योग्यके समकमे वधिवारगेकी बनिह बासि ८३ -के एउको एउ मारकर बनेवारगेको गांधीजिके मठमे वीछे इला कउमर, २२५ -के एउत बाम- कर गांधीजी, १४२, -मे काम करते सम वीगामाई केवई मुक्ति १४२, -मे काम करते सम मारटील देविगेरीका हाक, १४५, -मे कुछ लखवाई देविगेरी हात कोरीकी छिवा मार, १४७; -मे बनेका एका बहुत न्वा एका २३७; -मे गांधीजी हात एउका कोर, बसक मेरीलखीका बांला करि, बेकनके लिल एवा विमुकासठे समनीका ही पुकाकोका बकल, १८२, -मे गांधीजीकी हातीमे लखीक, २३३; -मे गांधीजिके मठमे बड गरी, ९८; -मे गांधीजिके छाल बण्टा बकल, ११; -मे गांधीजीके छाल कु बड बकलवाकी बीच, २३९; -मे इकरी काकर फिय ११७ -मे बीनटील गांधीजी, १८०; -मे मारटील देविगेरीका काम ९५; -मे मारटील देविगेरीकी गुला, ९५, -मे मारटील बकिडेसि बक, १२४; -मे मारटीलके छाल केक बकिडा कउतल डीक ९५ -मे मारटीलको गांधीजिके मठमे बनिहके मनुवार काम बना कसी, १४७; -मे मारटीलको ही बामेकाकी गुलाभर जिली ८०-८८; -मे ही गांधीजीको मेरमण्डा मनुक, १८१; -मे एनेकाकोकी बनेवा गांधीजिके मठमे बडर एनेकाकोकी विमरडिगे बनिह, ९८; ए गांधीजीका छमेर १९; -मे एनेकेर गांधीजीको कोकरकक सेठप

गायक हात सुवारडवारी, ११; -मे ही कोकी मुक, ४; -मे बडर एनेकाके मारटीलको करि करेय ३५, -मे रिवा कोठेको बपडे, ४२१; -मे रिवा होमेमे गांधीजी मकुल गरी, २१८
 के-निरेक ६२, ६४ ९८; -मोकल टाकिडमे परिबड बामेकी एपिय कोरे विवा-की करेको ठेग गरी, ७५ -का गांधीजिको लर, २३२ -का बाडकिना- को तर, ५३; -का बाज गांधीजी हात एकर फिर एकाकी कोर बाडकि २२३; -की कोरेके कउकिनाको मिके कुछ कोर एनेक ७५; -की गांधीजिके प्रति लौकता, २३३; -की केमेमे गांधीजिके मुककत, २३ -की राममे सेक बकिडे छाल ठेके विमरडे मनुवार बकल, ७५ -की बाडकिनाको सेक बकिडेके केमे ही गड बकलकोके बरेमे ए, ६२ -को गांधीजीकी बगी २३३; -की मारंग- पन विचारेके मिर वेकि, २४; -की छिबकणकी कोके लिय बाडकिनाका बकल, ७७; -हात मठमे मारटील देविगेरीकी ही बना मंभु, २३२; -मे बाडकिनाकी मोकल टाकिनाकी प्रति मेमेकी मारंग, ५३; -मे गांधीजीकी मुककत २३८ वेक, -मे बामेमे गांधीजीकी मे, १०७; -मे गांधीजीके केके मणकी बकिडिलकर बामेके, १००
 बोमी, करक, ९४ १४
 बोमी, ४ १९४ ११५, २२५, ४९४; -को निर्वरकता बक ४९६
 बोमी, बा कुमारी ५३
 बोमी, हरिचंद्र रकर ९४
 बिकडिनाकी बासर छे १५८ पा डि० १६० पा रि म्पूहाड बाडिकक ९६ पा० डि
 इ
 एकर, एकेरी, ३ ४२४; -एनेकाई वनीमडी केके बामेकी फेलाकी केके बामक इकलको मेरे ३३; -का मुकुला कोरनीकी बामेमे, ३२ ३३; -की बकली मनुमडिककी कपि बउकेके लिय ही गड बगी बनीकल, ३३; -के मुकुलेमे गांधीजी हात गबडि विर, ३३; -के मुकुलेमे वे की कउनेका बक, ३३; -के मुकुलेमे केक बाडकिनाका बक, ३३ -की बकिडरिगे वनीक हात इ मारका बकली मनुमडिक बक, ३३; -की केकी एवा ४ ३३
 वीगामाई, देकिर केवई वीगामाई

८

मैत्र, एच बाबू ४००
 दायम्, ए पा रि १८४ पा रि, ३१३ ३०४
 पा रि ४१३, ४८८) -कमल मारुहा सिंहा
 पीनेवाका ५१; -का संवैलिक परिषद ५१८)
 -में एच एरब अनुसर समसोतीकी बाल किमुज
 गला ४८३, ५१९ -में बन्दीकी सार्वजनिक समादा
 एर बल सम्बन्धी एर ३०८ -में मद्रासी समादा
 एर ४०० -में शिक्षकगण द्वारा महाविद्याली
 मीन हलमहा समाचार, ३०१ -में विप्लवगण
 पर ४ १
 दायम् आँक हँडिया २८३ ३२८ ३५ पा रि
 ३१६, ४३१
 दायम् आँक केराल, -सबना निदाये निर्वाचक;
 ३४५-४६; -की हथिये मारुतलोक परबने को
 बनेसे लडाए बरना मारुती प्राथमिक बलनको
 मी विनाक, ३४५
 वंम, ४ -की धौतवारिक गवर्नी ३९
 यंमस एर बी २६
 यंमस कुंठ एर एर, ३४
 यंम, १०८
 यंमस ११८ पा० रि २ ८ २१३ २३९ पा रि
 ४४०-४१ ४४३ ३२८ ४४४ पा रि ४४५
 पा रि ४४४ ५०६, ५ ० पा रि ३ -बौर
 एरिगरी विद्याली बर्नामिक बरना कीमिड-
 बोमहाड भेन २०३; -गुनेबरी विरुधराम,
 ४४८४९; -का विद्या गुना लाल ५३३; -के
 एरामरुएर गार्गीनी, ४४० पर गार्गीनी, ४८३
 यंमस ११८ पा० रि २ ८ २१३ २३९ पा रि
 मिडम, ८३
 एरिगल कैमल, ३०२
 एरवेन, ३११
 एरवेन, (बंजरी), ३१६, ४०३
 एरिगल, ४०३ ४०५
 एरमना-५, -बौर मरुतमे बालु बलाय बरुवेरु दुमलाल
 मरी, ११९; -विधि एरिगली मीबडा लालय
 मरु ५४० -का बलकमल प्रविण बरुव
 विद्याली एरुका मरी विरुधराम, ३९; -का बर्ना
 विरुधरीन बरु, ३३६) -का मरी कुंठ परमम
 एरुमे म ४६, ११०, ५३४ ५४९; -का मरी एर

मरुमे एरुम एरु ५३०) -की केरुली मीम-
 एरिगल सम्बन्धी निमार्थिक मरुतलमे इरुवेरु बरुमे
 एरुमिड एरिगल एरुम ०३; -की केरुमे मरुतल
 केरुलीकी एरु, ३५८ -की केरुमे मरुतल केरुलीके
 एरुमिड मीमल-एरिगल, ०१; -की नं एरुए इरुए
 एरुमिड बालु पर २९२, ५१६; -की बरुव मरु-
 एरुममकी एरुली मरुव, ३२५) -की बरुव मरुतलके
 बरुवसे गुल-बोरुकी कठीरी, २९४ -की बरुव
 रोमिडिक बालुके बरुलीएरु इरुमेड बरुम १११;
 -की बरुवका बरुमि बरुविका एरुवेरु केरु सम्बन्धी
 ३८० -की बरुवमे मरुतली मरी एरुमल, ०२; -की
 मरु बरुव दुमलराम मरुविका, १००; -की विरुवे
 कुमरी विरुवैम बरु एरु २८४) -की इरुमका
 मरुतल एरुमेड बरु ८; -के बरुविका मरुतल इरुए
 गुजमल केरुलीकी एरुम सम्बन्धी एरुविक केरुमे
 एरुए, ४२३; -के बरुवमेड मरुतल विरु मी मरु
 बरुमे बरुका मरी, ३२० -के बरुवमेड एरुमल
 बरु-बुए केरु बरुमे विरु, २३६) -में बरुवमेड
 मेरुमका एरुए सम्बन्धी ०३; -के बरुवमेड विरु
 बरुविका मरुतल मरु बरुमे सार्वजनिक समादा
 बरुविका, ३०५; -के बरुवमेड इरुमेड बरुममका
 एरुम मरुतल इरुए अनुम, ५२१; -के बरुव मरु
 बरुलीकी इरुए बरुवमिका मरु एरु एरुविका
 निमार्, ५२३; -के एरुविका रोमली एरुविका
 एरुविका एरु बरुविका केरुमे मरी विरुवली बरुम,
 ४ ०; -के मरुविका एरुमेड मरुव एरुमेड गार्गीनीका
 गुजल ५३८; -के मरुतलके एरुवेरु इरुमेड मरुव
 व एरुममेड विरु ११६, -के मरुतलके बरुव
 बरुम लरुवकी बरुव मरी, ४५१; के मरुतलके
 विरुव एरुममिका मरुविका विरु बरुमेड विरुवमका
 मरुव १९३ -के मरुतलके बरुमे एरुविका
 की मरी विरुवली ४ ४; -के मरुतलके मरुवकी
 एरुमेडक बरुम एरुए एरुविका मरुविका २९६;
 के मरुतलके मरुतलमे एरुविका एरुविका
 एरुमेड, ३१८) -के मरुतलके एरुमल एरुमल
 मरुतलके एरुविका एरुम १९५ -के मरुतलके
 विरुव एरुमल मरुतलके मरु, ११०; -के मरुतलके
 इरुए एरुविका बरुम एरु बरुमेड विरु एरुमल एरु
 एरुमेड गुजमल एरुमल मरुविका, ३११; -के
 मरुतलके इरुए बरुम मरु बरुमेड मरु एरुमेड एरु

समर्प करकेका संघीयता सुधार, २५८ -क सभा सुधारक करनेसे कोई कू द्वारा सुधार करनेकी सम्मानना, २५९; -क सभा कोई कू द्वारा वाद्यवीथ ४ ८; -को काठजिवाका ठार कोतानी ठावा लुट्टि सेनाका २००; -की बनरक उपरुक्त प्रथिभूक ठार करनेपर उक्त सिध बहिष नदियिका रचना होना सम्मन नहीं, ४२४ -की पोल्डकी भारतमें हीजुनूसे क्क उक्तक ४२१, की मर देना म्मेड भारतिका कर्तव्य २५९; -की मर सेक सिध स्वान-स्वामर समर्प करवा कर्ती, १५९; -की कोई कू का कर्तव्य, ५४४; -की समर्पितकी माडा ३०५ -दारा बर्षिकमें कर्त मारम्भ, २८२ -दारा इम्सवाकी मारठीको याम्मेका किरण पेड २८०-३ ; -दारा बहिष नदियी टाकनविठोकी क्क करनेका कर्तव्य, २८४; -दर माडा क्काला गांधीकी रानमें कर्त, २५९, ३१२

इम्सवाक हीदर २ २९२, ४ ९ ४८४ पा दि०; -कनाकामक प्रतिनिधित्व, ११४ -कौर सुडर दारा कलेवरी क्की माकाका, ३९३, ३९८ ३९९, ४ ३; -दारा केक-नदियिकरिसे क्कवाककी क्की निम्न, ३१ ; -की प्रकसित क्कके क्कमुनर प्रतिनिध केक ३ सिधित मारठीको प्रकसि क्कमुनर सिध कनेपर मारठी सुडर, ३०; -की सिधकककक प्रतिनिधिके नाम ३८८ इम्सवाकवासी विधिमा भारतकीका एक सिधित विपरव (ए क्कसवृष कौड कू विधिमा हीदिकल केस इन इम्सवाक) २८० पा दि

इम्सवाक वीथकी क्कवेरेड ३० पा दि
इम्सवाक संघ, -ककक वाकुड सिधिते, १९८ -की कर्त से काता कर्त ठर, १०३; -नेटक कौर इम्सवाकम कानून क्कमे क्करोक, ११५; -कक कर सेनेर उक्त बहिष नदियिके मारठीको दारा कुरी हीनेकी सम्मानना, ४२० -मारठके सम्मनकी उक्के सिध मारम्भ, ५१ -मारठीको सिध क्कविक नदियिकर प्रक करनेके क्कमेसे क्कक १९ -उक्तका सेके क्कक क्कक क्ककक, ९; -सुडर क्क क्किक मुक्क क्कमेसे क्क क्किकेकी क्क, १ ३; -का नाम क्कककक प्रतिठे उक्केका क्कक, १०; -का म्कक क्क मंक्कीको कूर्प क्कमे क्कक ४६३; -का सिधित सिधित, २९०-९१; -की क्कनिय प्रथिकी क्कमुने मारठीकोका क्कककक सम्मन १५३; -की म्कककक गांधीकी सिधित, १३३; -के क्क क्कक क्क क्कका

हीनेकी सम्मनका १; -के सम्मनकी सिधित मारठीक संघका प्रकनयन १०-२८ -क गांधीकी, ४२; -में सेका हीकी सुमरकी म्कककी कुरी माडा १४; -में मुक्कके सिध क्कककककीका क्कक, ४३; -में सुडर-बारठीको वेरेकी म्कक करनेकी सुडर, ३; -में उक्केके सम्मनों दारा क्कंधीकी क्ककक सभ सेके क्कक, १२३; -में मारठीकोकी याम्मक १ ३
इम्सवाक संघ, ५९, ३३१, ३३४- मारठीकोका कर्त प्रतिनिधित्व नहीं, ००

इम्सवाक सुडर २९५ -सिधित कानून ११ करनेकी उक्की, ३५ ; -कौर मारठीक सम्मके वीथके क्कक उक्त २०९, ३१५; -कानूनमें परिक्कनड हीनेकाके परिक्कका काम मारठीको सेके सिध कर्ती, ५४९; -उका क्ककककक प्रतिनिधित्व सिध क्ककककक प्रतिनिधकी सिधित म्कमेका क्कक, ३८ -मारठीकोकी याम्म-मर्तता कौर सम्मि कू केकी द्कक, १६१; -मारठीकोकी सिधित क्कक हीनेमें क्कक ११९; -सुत्ताकाकी उक्केके सम्मे सुडकेके सिध सिध १८९; -सम्मान्कूर्प उक्केकीके द्कक ३४१ -का मारठीक क्कककेकी कुरी-कुरी क्ककक सिधितों कौर सुडरी सुक्केसे सिधकेका सत्ता १४; -का मारठीक क्कवारिकेकी क्कक करनेका सत्ता २५३; -का सिधार मारठीकोकी मीग म्कक करनेका नहीं ४८९; -का सिधितकक सुडकेकी सिधित करनेका सेके २५३; -की याम्क क्कक मारठीक क्कवारी १५५; -की मीथिका क्कक क्ककेका क्कक ४२४ ४२१-२२; -की याम्क दारा यार्थीकी सिधितकेकी क्की माकोका ८८; -की मारठीक केकिकेकी मुक्की म्कक मारठीक सम्मकक रचना क्ककानीथि ०५; -की सुत्ताका क्कका उक्केकेके क्कक कर्किकों वा कर्ककेके सिधित सेका सेके १८ -की क्ककका कानूनकी क्ककेके करनेके क्कवारिकेके क्कक इर उक्केके क्कके करनेका कुरी क्किक, १३८; -को क्कककेका उक्केके ठारसे मेकि २८९; -का सिधित म्ककके सिधित प्रकान्केके सेके क्कककक कर्किकेसे क्ककेकी सेके क्ककेका इर नहीं, ५२५; -की उक्त सभा याम्कके केकिसे ती क्क क्कक केक क्किक, १४९; -की सुत्ताकाकीकेकेकेके कौर मारठीकोकी उक्केकी कुरी क्कक, १२३, -दरा क्किक सुक्क करनेसे संघ क्क क्ककेकी क्क

न

मनरी, ० ८० १३३ १६ - और बागोडी सर्पारिती
कोकराख एउठनर हुनका १६५ - का सम
मारी, १६

नकर विविध १८९५ - इ छय ३९६ कलगत
श्रीोरिवाक मारपीरौस मुकरमा, १९९

सेसन, बा ५ ३२३ ४१५ पा रि ४००,
५००, ५१

कोसन रौं कनगी ४९२

कनका मला, इतिर केमनी मनरी बाहुमर

मुमुनर काकनर ९६

बाग बाहु, इतिर दुकचक इतिर वं पवीसन म्बोम
मरिनिम १

करकुपु, ६

नरी, कवा बाघा ९४ - का मुकरमा, १ ५ - को
१ मरुका सरिपम करलमका १०५ - कर
न पर्वजन मरिनिमक कलगत कौंठो घा
इनेसे इकर करनका मारन १०५

न १०५, २३६

मरुगरी ०, ३९

मरुगरी, ८१

का, मीमरी) की ५ ९

नरुम, ३५० पा रि ११२, १८४ ५२८ - मरु-

सन मरुगरी मरुगे रि, २९०-९८; - को इरुवडी

देरिड र, ४८९) - को कुपु कनगी मीम दुर्क-

बागका मरुगे रि, ३१; - को कुपुटी कनम

(कुमरी) मरुगे रि, २८९; - को इरुगे

कनका मरुगरी इरा मरुगन १२५ - को

इरुगे कनका मरुगे रि, १०६; - को इरुगे

कनका मरुगरी इरा मरुगन १२५ - को

इरुगे कनका मरुगे रि, १०६; - को इरुगे

कनका मरुगरी इरा मरुगन १२५ - को

इरुगे कनका मरुगे रि, १०६; - को इरुगे

कनका मरुगरी इरा मरुगन १२५ - को

इरुगे कनका मरुगे रि, १०६; - को इरुगे

कनका मरुगरी इरा मरुगन १२५ - को

इरुगे कनका मरुगे रि, १०६; - को इरुगे

कनका मरुगरी इरा मरुगन १२५ - को

इरुगे कनका मरुगे रि, १०६; - को इरुगे

मरुगन, ५५ ६

नरुम, मारी, १६२

मरुगन, इतिर कमा रिकि नरुम

मरुगरी का ४१८ पा रि, - इरा इरुका (कुमरी)

इरुगी इरुका, ४१२; - को मरुगरीका मरुगन,

११४

मरुगन ४६४

नरुम, मरुगन २५३-५४ २८८

नरुम, ५३० मरु ११४ पा रि ११५

मरुम, ५३० मी ११५

मरुम, ५३० मरु, ६, १६२

मरुम, ५३० मरु, ६

मरुम, ६ मुगरी, २६२

मरुम, मारी ०, १५, ४४ ६९ १८९, २१९, २६४

पा रि ३ १४४ ५४३ पा रि - और

कन कोरुका मरुगन, २५२-५३; - मरु २५३;

- इरा का मरु मीमरी इरुका मरुगन मरु, २४०;

- का मरुगन १८८; - को ३ मरुगरी के ३९३

मरुम, मरुगन, ६

मरुम, मरुगन, ६

मरुम, मरुगन, २४६

मरुम, मरुगरी, ९४

मरुम, मरुगरी, २६२

मरुम, मी १०० मरुगरी, १६२

मरुम, मरुगरी, ६

मरुम, मरु ६

मरुम, मी २६२

मरुम, मी मुगरी, २६२

मरुम, मी के मी ६२ ११४ १५

मरुम, मरुगन, ६

मरुम, मरुगन ५३० मी ३६० पा रि

मरुम, मरुगन ३९४

मरुम, मरुगन, २४०

मरु, ५

मरुम - मरुगी मरुगरी मरुगरी मरुगरी मरुगरी

मरुम ११० ३००; - का मरुगन मरुगरी मरुगरी

मरुम मरुगन, ०२; - का मरुगन मरुगन १३; - को

मरुगन मरुगरी मरुगरी मरुगरी मरुगरी मरुगरी

का मरुगरी मरुगरी मरुगरी मरुगरी मरुगरी

का मरुगरी मरुगरी मरुगरी मरुगरी मरुगरी

का मरुगरी मरुगरी मरुगरी मरुगरी मरुगरी

मरु २०३

मरु मरुगन मरुगन ३ ६

प्रत्यक्ष विधानसभा ३९ ३४४ ४६५; -सभा जलिन
 र्जिन कर्जो लक्ष ही संविधित रखनेका बन्धुत्व, ३४४।
 -नेपालको दसका विकसण समसुत छेउरमे भेकनेके
 काममे कस ३६३; -का बाना कसि पकनकर
 ३०५; का पन दससमे प्रकसित, ४ ०-२; -का
 समसुती सरकारके प्रति आसन प्रकस, ३४३; -की
 बमरि कसिसे सें, ४३; -की कसी समसुते मुकसत
 ४२; -की जसिसे सनी वन कन समसुते मुकसत
 ३०० -की मारउते मरनेका, ३६९-००; -की मरु-
 को कसी समसुता बना ४४६; -की रजमे सेउल
 समसुती गीति कुरुसुते, ४२५; -की कसि कू से
 मुकसत ३५४; -की कसि सासि मुकसतकी
 मरनेका ३३०; -की सर मरकसिसे सें, ३८८; -के
 कसुम मरउतिसे कि कससुत, ३३० -के सरन
 गिरिमिरी छरी कसि ही राम कर केके कसमे, ३४०;
 -के सरकोडी सर मरकसी नन सेक हुसेन केकसमी,
 सेक हुसेन व गुणसे मुकसत ३३० -के सरसेति
 मिसेके कि कसि नसिदि मिदि मरउति सुमिसि
 कस वेक, ४०२; -को कसी सम हारा मर
 केका बना, ४२ -को कसि कूका छर, ४२;
 -हारा कसुत विकसण विविन कसमे कि कस, ४
 -हारा कसुत सीमी नौर कसि मरसे सें, ३८८;
 -हारा कसुत सीमसे विविन कस देकसी मरनेका
 ४; -हारा मरउतिसे कसुत विकसण मरउत
 ३४३ ४९; -हारा मरउतिसे मरिउत कि पन
 मरउतिसे कसमे कसुमसिउतकी मर, ४४६; -मर
 मरिउती, ३५४ ४४६, ४ ८ ४९६

केकसुत, की -को मरिउती हारा मुकसुते सें, ११८
 केक, मरिउतका, ५४५ पा डि
 मैदिउता कस -हारा मरिउतीका मरनेके कि कससिउत
 ४४६

मैदिउता समिसि कस, २८१ पा डि ४०२
 मरिउत, ४२
 मरिउती कससुत, ११ ३४ २६ ३१४ पा डि
 ३११-२६, ४२१ ४४६, ४६९; -के ८४ वी कस-
 कससुत मरिउती, १
 मरिउती, (मिसुती) कससुत -का मरउतमे केकसुत, २२;
 -की कसुत मरिउती, ३६

प

मरिउत मरिउत, १, ३ १८ ६ ८०-८९, १ ३,
 ११४ १९६, २१८, २२८ पा डि २५ २५१

पा डि २६१ २६४ २८९; -न कसुत सैमनी
 कससिउत मरिउत ६४; -न कसुत मरिउत कसुतके
 मरउते २,५ मरउतीको गिरकरी, ३२६, -सेउ
 कसुत और कसुतको कस देतेके कसुत कसुत
 मरउतीको ३ मरउती कसी केरकी कस, १९६;
 -की मरउतमे बापकी सें, ४; -का कसुत न
 कसुतके कसुत कसुत कसुतके कस मरिउती केकसी
 कस २४६; -मरिउत मरिउतको -से कसुतके
 कसुतको मरउत उकेनको सेउत, २

सेउती, ४२२, ४९८
 सेउत कसुत सेउ ९४
 सेउत कसुत २५
 सेउत, ६ कस -के मरउती केरिउतमे मरिउती, ९
 सेउत के पी ५२९
 सेउत, मरउतमे, ४६ ४०; कसुतमे, कसुतमे मरिउत
 सेउत, मुकसुत मरुती, -की मरिउतके कसुत केउते
 विविन, ९४८
 सेउत मरुती, ८८; -का कसुतके मुकसुत कसुत
 ६५ -को कसुतके ४४
 कसुत मरिउत, -को कसुतके मरिउत कसुतके कसुत
 कसुतके कसुतके कसुत कसुतके कसुत २६
 सेउत मरिउत, १९६, २४०; -हारा कसुतके मरिउतीके
 कसुतके कसुतके कसुत, १९५; -की कसुतके मरिउत
 मरिउतीसे मुकसुत १९४
 कसुत, -को मरिउती मरिउतीकी कसुत, ३८; -कसुतके
 -को कसुतके कसुतके मरिउतीके मरिउतके ३०
 ३९ -का कसुतके मरिउतके १५२-५३; -हारा
 मरिउतीके मरिउतीके कसुतके कसुतके १५३;
 -से कसुतके मरिउतके कसुतके मरिउतके कसुतके १५३

मरिउती, कसुत के २६२
 मरिउती, कसुत पी २६२
 मरिउती, कसुत के ६
 मरिउती, की २६२
 मरिउती कसुत, २६२
 मरिउती कसुत ६
 मरिउती की मरिउतके, ६
 मरिउती की मरिउतके, २६२
 मरिउती कसुत, २६२
 मरिउत, मरिउतके ३९२
 मरिउत मरिउतके, १९२

पत्रिका २२

पत्र - अग्निशमन-सामर्थ्याचा गांधीजींचा शुभचिन्तक मारुती-
 पोथि प्रकाश, ४२७; - अग्निशमन चक्रवर्ती, २९;
 - काठियावाड केस-निवेदन, ५०-५१; - देवेंद्रजींच्या
 गांधीजींचा ४२२; - गांधीजींचा केसलेखन ५०-५१,
 - गांधीजींचा काव्य क०, १९० ४८०; - गांधीजींचा
 ठमसका मारुती, २९८; - गांधीजींचा काव्य क०,
 ४२३; - का काव्य क०, ३९०; - अग्निशमन गांधीजींचा
 गांधीजींचा, ४२८; - केस-निवेदनका काठियावाड,
 ०३; - बोहराजिजींचे विद्यमानका, ४२४; - काव्यका
 स्वरूपे प्रकाशित २५२-५३; - मारुती काठियावाड
 ४४ - सुखोपनयनका गांधीजींचा, २ ०; - बोहराज
 गांधीजींचा ४ ३ - पोषणका विद्यमानका, ४२;
 - मंगल भागवतका गांधीजींचा केस किंवा विद्विग मारुती
 काव्य, २२; - येरीमेका ३ ३; रिक्तका ३२०
 - रिक्तका काव्य क०, २८१; - काव्य क० का
 गांधीजींचा, ५२८; - काव्यका नाम २९

पत्र, सुखोपनयन २

समाज, प्रोफेसर, २४२

समाज, - काव्यका २४; सारणे, - के किंवा फेरी
 काव्य मारुती फेरी काव्यका रिक्तका हीनेकी
 काव्य, ३; - के किंवा फेरीकाव्यका काव्यका काव्य
 काव्यका काव्य रिक्तका काव्यका काव्य २५; - के किंवा
 काव्यका काव्य काव्यका गांधीजींचा फेरीकाव्यका काव्य
 २३; - के किंवा काव्य काव्यका सुखी बोहराजि
 रिक्तका, २४; - के किंवा काव्य काव्यका काव्यका
 काव्य काव्यका काव्य मारुती काव्यका काव्य, ३; - के
 किंवा काव्य काव्यका बोहराजिजींचे काव्य मारुतीका
 काव्यका काव्य रिक्तका काव्यका काव्य २५; - के किंवा
 काव्य काव्यका फेरीकाव्यका काव्यका काव्य काव्य
 काव्यका काव्य २२

समाज विज्ञान ३६९; - काव्य समाज काव्यका रिक्तका
 काव्यका काव्य, ३४४; - के रिक्तका काव्यका काव्य
 काव्यका, ३५५-४६५ - समाज विज्ञान - के सुखी
 काव्यका, काव्य काव्यका, ३४५; - के काव्यका
 सुखीका काव्यका, ३४२

समाज काव्यका, - के किंवा काव्य काव्यका रिक्तका
 काव्यका काव्य काव्य मारुतीका सुखीका, २२-४०

पत्र, वेदिका - को ० रिक्तका काव्य, २५

काव्य, काव्यका ४५ ४५२, ४०३ ४५६, ५२५
 पा १८

वारंवार २०५

पत्रिका काव्यका २४२

पत्रिका, ३९५

पत्रिका, सुखीका, ४३

पत्रिका (काव्यका) २ २, ३९८; - को काव्यका
 काव्य २२२

पत्रिका - काव्यका रिक्तका काव्यका, २९३; - पत्रिका -
 काव्य काव्यका रिक्तका २९४ - काव्य काव्यका काव्यका
 काव्यका काव्यका काव्यका, २९८; - को काव्यका काव्यका
 काव्यका, २९३; - को काव्यका, २९३-९४; - को
 काव्य काव्यका काव्यका काव्यका २९३

पत्रिका काव्यका, ३१२

पत्रिका, काव्यका काव्यका ४५ ४५६, ४१६ पा १८;
 - को काव्यका, ४९६; - काव्यका काव्यका ४९६

पत्रिका, काव्यका, ३

पत्रिका रिक्तका, ४५; - का काव्यका, ४५२ ४०३

पत्रिका काव्यका काव्यका, २०९ ३ ९

पत्रिका, - को काव्यका काव्यका काव्यका २९३

पत्रिका (काव्यका), - के काव्यका गांधीजींचा काव्यका, २३९

पत्रिका, काव्यका काव्यका, २

पत्रिका काव्यका ६

पत्रिका, काव्यका, ६

पत्रिका, काव्यका २२२

पत्रिका, काव्यका २६२

पत्रिका, काव्यका, ३८२

पत्रिका काव्यका काव्यका काव्यका, ४०४ पा १८; - काव्यका
 गांधीजींचा काव्यका काव्यका, ४०८

पत्रिका काव्यका, ३९०

पत्रिका, काव्यका काव्यका, ३९६, ३९८ पा १८ ३८
 ८३ ३८६ ३९४ ४३४ ४४ ४२३; - काव्यका
 काव्यका काव्यका काव्यका काव्यका काव्यका काव्यका
 गांधीजींचा काव्यका काव्यका ३९४; - को काव्यका, ४०५;
 - से काव्यका काव्यका, ४०५

पत्रिका (काव्यका) काव्यका काव्यका, ४२८

पत्रिका काव्यका काव्यका काव्यका २०९

४ १) - काव्यका काव्यका काव्यका काव्यका,



विष्णु, १५ १५ १५० ४ १५ २ पा रि ४२
 ४४ ५९ १४९ १५१ १६५ २ ४ २०० २ ९
 २१५ २३९, २५३-५४ २६९ २८८ ३००, ३३०
 पा रि ३४३ पा रि, ४२० पा रि
 ४२६, ५१६ पा रि ५२५ पा रि ३-अर्थिक
 उपबन्धने बाह्यो लोकप्र क्रीडितस-बोधकमे संविध
 २०३; -पंचदशोत्तर बौद्ध इतिहासो हस्तिने केन
 मोगी बनेय, ४३४। -नूरी एव संवैधानिक कार्मि
 भक्षण, ४४; -विभिन्न भारतीय संकेत भूतविक
 छात्रक संविध संकेत, २०३; -मिथवर्ती कार्यकाल
 कमे भारत प्रेसि ३ ० -का एक पुराने बहुरी
 प्रक्रमे संकल्प, २०६। -का कार्य भारतमे कोटोपर,
 ३०५; -का भारतमे कार्य २०३; -का भारतीयोंके
 परिनिर्दिष्ट इतिहासो भारत प्रबन्ध, २०३; -का
 विषय ३०६ ४१; -का सामाजिक भारतीय
 विवरणप्रमाण उपपद, २०४; की भाषाभाषी भारतमे
 गूढ ४०१; -की इतिहासिक कर्मके कार्यमे संविधि
 मति भारी दिक्कती, ४०५, ४ ०, -की भारतीयोंके
 गांधीजी २०३-०४ -की मतभेदोंके बीच-बूझने
 विद्यमानकाको वक ४२६; -की भारतीय प्रवासिनों
 एका विचारके समूहके सम्बन्धन बाह्यभाषी वैचार
 २०६; -की कुशलकासे मीति-काको वर पाटी
 गण, २०४; -के कार्यके गांधीजी, ४४५; -के
 भारतीयोंके, २०३-०६। -के जनकका सम्बन्ध
 एकाक द्वारा अनेकी और कृमि एकाक प्रचारित
 बाह्यका वक ३८० -के उपग्रह-संविधि वि
 कता वक बाह्यक प्रबन्ध, २०३-०४। -की क्री
 सम्य द्वारा पूर्ण छात्रका लेखक वक, ४२६। -की
 गांधीजीका एव एका क्व संतोका विद्यमानका
 वक इनके वि एकी बाह्यक प्रबन्ध ३ ४ -की
 गांधीजीका क्वी गङ्गाके भारतीय संवैधानिक
 उपग्रहके वृत्तका गुण ३३६। -का गांधीजीकी
 दो बाह्यके संविधि विष्णु कमे व-व्यवहार कलेकी
 एका, ४२६, ४२७। की गांधीजीको मा-गण्य
 बाह्यकी कानकी एका, ३३२; -का गांधीजीकी
 भारतीय इतिहासके कता वक बाह्यकी एका
 ४२८ -की संविध कमे भारत एका, २०३; -की
 एवमे भारत, ४२६ -की भारतके वक कमे
 एकाके वकमेके विधि ३३८; -का इतिहास
 ए वर एके प्रबन्धन संविध एका प्रविधि

का इतिहास गांधीजीकी बाह्यके ३८३; -का बाह्यके
 भारतीय इतिहासका वक, २०४; -का की वर
 भारतीयोंकी सेवाका गूढ बाह्यका गांधीजीके वरमे
 क्वम्भ १५४; -का गांधीजीके कर्मन वक, २०४
 इतिहास एका, २०३; -का गांधीजीकी प्री गोल्ड-
 का एका ५३० -का गांधीजीकी प्री वर कठने
 मन्त्रका ३३० -का ४ वरके विधि भारतीय
 समाज कोम एक वैसा भी केनेक प्रका, ४३५
 -का केनेक बाह्य विधि सुकाक ४८; -का
 बाह्यके एक एकाके वरके एकाक एकाक
 वरमे वक, ४३५; -का वक, एकाक
 भारतीयोंके विचारके कता बाह्यका ८८; -का
 भारतमे वर कता २५४; -का की वर को
 भारतीयोंके वक, २५४; -का की वर
 एकाके वरके कता इतिहास एका, ४४
 वक, (बाह्य) की वर २२ २२२, २८३,
 ३०६, ३ ८ ३२२, ३३५ ३६२, ४२३, ४२०
 ४२९ पा रि ४०३ ४८६, ५ ८; -का वर
 एका द्वारा विधि, ४२५; -का वरके वरके
 एका कमेके वरके वरके ३२३; -की वरके
 वरके वरके गांधीजीका वरके वरके, ५३९;
 -के वरके वरके वरके वरके, ३३२; -का वरके
 वरके वरके वरके वरके ५३९; -का भारतीय
 इतिहासके वरके वरके वरके २०४
 वक के व २०३ ४५ ४०२ ५२९
 वक, (बाह्य) वरके २८१ पा रि २८२, ३ ३
 ३२२, ३३० ३३२, ३३८ ५ ८ ५२९ ५२८,
 ५३८; -वक वरके वरके वरके, ५३८; -की
 गांधीजीका वरके वरके वरके वरके वरके
 वरके ५३९
 वक, वरके, २२२, ३२२, ३३२, ४२३ ५३९ ४
 वक, (बाह्य) वरके, २८३ ३२२, ४२३ ५ ८
 ५२ ५३९; -वक वरके वरके, ५४
 वक, वरके ३९; -का गांधीजीके वरके वरके वरके
 वरके वरके वरके वरके वरके वरके ३३९
 वरके वरके वरके ५२ ५५ ५२, २५६, ३३४ पा रि
 ३३१
 वरके वरके, -की वरके, ४००
 वरके वरके, -वक वरके वरके वरके, ८३
 वरके, की ५३९

प्रमुख, १९८ २३६ पा दि
 विदित्पत्र डॉ. मधुसूदनजी ५ २ पा दि
 विदित्पत्र डॉ. सोमियाजी ५ २ पा दि
 विदित्पत्र, -के मास्टरों द्वारा देखे कि एक बार एक
 छात्र, ६९; -के मास्टरों १८९९ क नर दिनिष्पत्ते
 एक ३९ के वर्षान मुद्रया ४९९; -के मास्टर
 बनी, २४८; -के छात्रों एक बालेबालोंकी मरर करना
 करने २६३; -के गांधीजी केकी एक कोछने क, २२२

विदित्पत्रा म्युज २३६ पा दि ३६ पा दि ३;
 -के प्रतिनिधियों गांधीजी में, २१०
 विदित्पत्रा छवि १९३
 मेष पर्वी, -के प्रतिनिधियों गांधीजी में, २८
 मेरीकी फोटोसिखा, ३२३ ३८३

फ

छात्रान ५
 फरे, कुल्लो, ०
 फिजिकल, छर की, २५६
 फिज, सुकनार, -फिरपार, १९३
 फिजि ८३ ३१९
 फीनिश, -की बाला १२२; -की बालाकार
 गांधीजी १३०-४१; -के बालाकारों गांधीजी मरमे
 मुक बालकी, ४१२; -के बालोंके मेक किलेमें
 लकीको बालोंकी, ५३९; -के बाल-छात्रों बाली
 निरासिमें छात्रों एक बाल बाल ४१२; -में
 बाले बालकी प्रतिफल बाली ३८२; -में बालके
 बालोंके बालकार गांधीजी ८३

फीनिश बोला -का फेर बालोंके और हरिकली
 मुकमुक बालोंके बालीक करला ३०३
 फेर, ४९० -के बालोंके छात्रोंके सुकनया बाला
 बालका ४९०; -के बालोंके बालोंके सुकनया ४९०
 फेर, छर बाली २५६ ३२४ ३२२ ३३४ ४ ९ ४९४
 फेरबाले, -बाला बालकार, १३२ ३४; -बालोंके
 बालोंके बाल बालोंके सुकन बोलाके बालों
 १३३; -की बाल बाला बाला बालोंके
 छात्रोंकी छात्र बाली छात्र ३१; फेरबालों -का
 बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके १३३
 -का बाल, ६३; -की बालोंके बाल बालोंके
 छात्रोंके, ६३; -के बाल बाल बालोंके

बालोंके, १३३; -की बालोंकी बाल बालोंके
 बालोंकी छात्र, ३ ६३; -के बाल बालोंके
 बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके, ६३; -के
 बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके
 बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके, १३

फेर बालोंके ५ ८
 फेर, ४९४
 फेनी म पा पी १३-२४ ३२ पा दि ४६, ९५
 फेरबाले के, -बालोंके बालोंके ९५; -के बालोंके
 १ से मी बाला बालोंके बाल बालोंके
 बाल १२३; -के बालोंके बालोंके बालोंके
 बालोंके ९०-९८; -में बालोंके छात्र ७५ बाली,
 १२२; -में बालोंके बालोंके बालोंके बाल २२८;
 -में बालोंके बालोंके बालोंके १२५; -में बालोंके
 के बालोंके बालोंके, ४९-५५; -में बालोंके बालोंके
 बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके १३५,
 -में बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके
 बालोंके ४१९; -से बालोंके बालोंके बालोंके
 २२८; -से बालोंके बालोंके ६८

फेरि, बाला २४९
 फेरि, बाला, २६२
 फेरिती बालोंके -के बालोंके बालोंके बालोंके
 बालोंके बालोंके, २४१; -से बालोंके बालोंके बालोंके
 बालोंके बालोंके २४१
 फेरि (बालोंके), -द्वारा बालोंके बालोंके बालोंके
 बालोंके, ३०८
 फेरि बालोंके बालोंके ४४४ पा दि
 फेरि, २०२

ब

बालोंके बालोंके ३२४ पा दि ३२२
 बालोंके बालोंके ४ १३ ३९, ४६; -का बाल
 ४; -का बाला बालोंके फेर ४; -के बाल
 बालोंके, ४०; -के बालोंके बालोंके ४०
 बालोंके, बालोंके, २९
 बालोंके बालोंके, ३३० ३४३, ३४९, ४०२, ४२९
 ४३ ४६५; -का बाला बालोंके द्वारा बालोंके
 बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके बालोंके ३४६
 बालोंके पी ५२९
 बालोंके बालोंके, २८२ ४९६

वनिक, बोग -के केके बालेसे बीगोकी सुककरा १९५,
 -इरा केके पुलाकली रका, १९५
 कम्पनी गऊर, १३६, ४४१
 कम्पनी मेसीकमी क्वालिफिकेड ३८४
 कम्पनी-उत्तर, के कम्पनी किलेमे एमते फुके कम्पनीको
 कम्पनी कम्पनी ३८३; -इरा कम्पनी मूककर सेद प्रक-
 कर एमए कम्पनी कम्पनी प्रमन ३८० -इरा
 कम्पनी कम्पनी, ३९, ४ ३; -इरा कम्पनीको एमए
 न कम्पनी कम्पनी कम्पनी, ३८०
 कम्पनी -इरा कम्पनी कर कम्पनी कम्पनी कम्पनी
 कम्पनी १९९
 कम्पनी, -कम्पनी इरा कम्पनी कम्पनी १०५; -इरा
 कम्पनी के कम्पनीको इरा कम्पनी के कम्पनी
 कम्पनी १९९
 कम्पनी, १८९ २२ २४
 कम्पनी कम्पनी ५५ पा डि
 कम्पनी ३९१ ३९३ ४०१
 कम्पनी, कम्पनी कम्पनी, १२, २४ ४४ ४१ ४९
 १११ पा डि ११२, ११४ पा डि १२४
 ११६, १८१ २४९ २५४ पा डि
 कम्पनी कम्पनी एम कम्पनी ५२९
 कम्पनी १०
 कम्पनी १०५, ५ २
 कम्पनी, ४३२
 के, केक, ३ ९
 के के रिवा कम्पनी, ३ ९
 के कम्पनी ३ ९
 के, कम्पनी ३ ९
 के कम्पनी कम्पनी, ३ ९
 के कम्पनी कम्पनी, ३
 केक, ३९ पा डि
 केक, कम्पनी, ३
 केक, ३ ३
 केक, के के -कम्पनी कम्पनी कम्पनी ९
 कम्पनी, ८; -इरा कम्पनी कम्पनी के के, ८
 कम्पनी, २१५ -इरा कम्पनी कम्पनी के कम्पनी
 कम्पनीको कम्पनी, ४८४
 केके केक, ८१ २८०
 केके के कम्पनी -इरा कम्पनीको कम्पनी कम्पनी
 कम्पनी कम्पनी ३६; -इरा कम्पनीको कम्पनी
 कम्पनीको कम्पनी ३९

कम्पनी, कम्पनी कम्पनी कम्पनी केके कम्पनी, ३ ९ ३१२
 ३३० ३३२, ४५
 कम्पनी केके कम्पनी कम्पनी ३ ९ ३१२ ३३९, ४५-
 ५१; -इरा कम्पनी, ४५१
 केके १३३; -इरा कम्पनी कम्पनी केके कम्पनी
 कम्पनी ६५
 केके कम्पनी कम्पनी ६८; -इरा कम्पनी केके कम्पनी
 कम्पनी १८२
 केके ५३२
 केके कम्पनी, -इरा कम्पनीको कम्पनी कम्पनी
 कम्पनी २९१; -के कम्पनी कम्पनीको इरा
 कम्पनीको कम्पनी कम्पनी, २९१
 केके कम्पनी ३० ३९ ११६, १०४ पा डि
 २२ २५६, ३११ ३१४ ३११ ४५६, -इरा
 कम्पनी कम्पनी कम्पनीको कम्पनी कम्पनी कम्पनी
 कम्पनी के कम्पनी कम्पनी २५२; -के कम्पनीको
 कम्पनीको कम्पनी कम्पनी कम्पनी कम्पनी
 ३३१; -इरा केके कम्पनी इरा कम्पनी कम्पनी
 कम्पनी ५३ -इरा कम्पनी कम्पनी कम्पनी, ५
 केके ४९३
 केके कम्पनी पा ५२९
 कम्पनी ३११
 कम्पनी, कम्पनी; -इरा कम्पनीको कम्पनी ५५; -इरा कम्पनीको

१८९ -के केसर, १५० -के कापरमे बाक
 सरकार द्वारा बखाल मर्ग, १९१ -की मना
 माक-माता पूर्वी उपरसे बम देवेकी यापीबीकी सपर,
 १५५) -की रमैरडी बोक बापरी पेकिनी हरा
 बपुर मकिड माकडा किरम १५०; -की दूकने
 गोरीको बोक देवेकी सलाह २ -की मना कबला
 न देवेका बाह्यम जोडि मराठ हारा समने, १५५,
 -की नरामे सरकार कुकल देवेकी ठेकार ८११;
 -की परवाने प्राय करम पुरानेकी मना बरक ना
 दूरे ममामे साचारल म्वा मी पराम्म मर्ग
 १५५; -की कियोठा परवाना कथिमिमस बर,
 १५५; -की सरकारका कबाद कालम मरा
 १५६, -दर फेरिनामैर बोर सुम १३ -हरा
 समने मारी मकाल लाल, १०३; -पर कापरिक
 पराम न कर विना परवानेक कापर कामर
 मुदरमा कबला मक्ति १६८ -सेरदरनेमे परबना
 कथिदरिनी हारा मर्गुकी सिधम न देलक बरने
 पुबताम १४

विधि परतलिक सिधमक, -की मरबा व सपर
 म्वापरिमकी सरकार हरा परिपामे काल लाल
 २६; -की मर केकी काकिना हरा कडे कमेक
 मरबा, १०१; -हरा म्वापरिमकी सरकारक सम
 मारतलीकी धर्मबनिक समला बाबा म्वाक मरु,
 २६

विधि मारतलिक सं ८ २० ३१ पा दि० ३२,
 ४ ४५ ५ ५३, ५९, ६२ ७० ७१ ७३
 ७४ ७५ १ ०, १५५-५६, १५८ पा० दि
 १६०, १००-०१ १०४ २१५ २३४ २
 २५२, २५३ २५४ २६० २८९-९० ३१६ ३०
 पा दि ३१० पा दि ४५३ ५०१ ७३
 ५४२ पा दि ३; -मुमाल सकारमे हिले
 सुकले बरने हावप; ८०; -की कथिपरम
 मरनेम १०-२८; -की हारक ककल ककल
 मरमस कावा बोक सकि १०० -की हिले
 काल रर कलेके किलमे मरबा, १८०, -
 कमे, सरकारकी परिहास कि ही म्वा ककल
 कला कालक, १९; -की कथिपरम ककल
 मना कालु बस कलेके कडे मुद हारक
 कमेकी मरबा २३; -की दिदि सिधम
 कि दूकनामि लालमसे म्वाक मरबा १५

३ -की कथिपरम कि कथिपरम कथिपरम
 १६ १५५ १७ -के कथिपरम कथिपरम
 कथिपरम कथिपरम १८ १९ -के कथिपरम कथिपरम
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम कथिपरम २०
 -के कथिपरम कथिपरम कथिपरम २१ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम २२ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम २३ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम २४ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम २५ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम २६ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम २७ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम २८ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम २९ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३० -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३१ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३२ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३३ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३४ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३५ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३६ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३७ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३८ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ३९ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४० -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४१ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४२ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४३ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४४ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४५ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४६ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४७ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४८ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ४९ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५० -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५१ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५२ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५३ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५४ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५५ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५६ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५७ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५८ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ५९ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६० -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६१ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६२ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६३ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६४ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६५ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६६ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६७ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६८ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ६९ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७० -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७१ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७२ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७३ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७४ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७५ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७६ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७७ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७८ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ७९ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८० -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८१ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८२ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८३ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८४ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८५ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८६ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८७ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८८ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ८९ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९० -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९१ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९२ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९३ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९४ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९५ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९६ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९७ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९८ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम ९९ -के
 कथिपरम कथिपरम कथिपरम १०० -के

की
 मरसे
 १५) -के
 १) कथिपरमे
 १) कथिपरमे

म

सका मज ४५८
 मगबदुरिता २५ १८२, २४१ ४३९ पा दि
 म्, केदस्ता २४१
 मरत ४९९
 मर्दानी, ४३ -की फल म्दालेकी देरकी उद्य ८८
 -की गांधीजी देर बनेपर वरह, ८८
 ममावत् १०४
 मन्मथर मो रामकृष्ण पोतक ३ ६, ४२८ पा दि
 मामा सुभम्भ बरह, १३३; -बावुर्दुई कम्पे रिहा २४८
 ममल भास, २२, २४८ ३३० ३४८, ४ १ ४९५,
 ४०२, ५२८ -की रिहाकि वर हारकेपकि मरठी
 कक बनेको देवर, २४८; -के केके ईनेर भी
 कन्दी दूधमसे देरिनेको कर २४३; -की देरक
 उरकरका जक, ४४३; -करा उराम्भम उरकता
 देकर कवर, ४०३
 मरत मेके बालक विद्यमन्मथक उरत २५४; -की
 बालकि सम्प्राते कोई कम्पे म्दो, ४०५; -की
 कता और मिनेक उरककोई दीना म्दिकार, १
 ३; -की बालुपर क्क बरिने विवर ५०२
 ४; -की ममावोपर गांधीजी, ४९२; -के परम
 ककत म्दिकार बाम करकेका मरठीकोपर मरठी
 ३९०; -के रज्ज् विराम १; -के कि दूधमाम्भे
 कायुय कपमकक, २०९; -के विरामकी कम्पे
 कि दूधमाम्भे कम्पेकाम्भे प्रतिरील म्दो विराम-
 बाम ३२९; -की म्दम-माम्भे म्दिकार क्कम्पे
 हामि ५१४; -की दूधमाम्भे कम्पेकाम्भे कम्पे
 म्दिकार १ ३, १८४; -पर दूधमाम्भे मरठीको
 प्रति कम्पेकाम्भे क्क म्दम ८; -मे फल लम्पे
 उरिदि कम्पेको दूर्ध्व बालककता ४३९; -मे गीरे
 क्कम्पेको कम्पे लता १३०; -मे परकी
 उराम्भे कम्पे राल्म उराम्भे, १९३; -मे
 पम्पेका कम्पे कोरेपर, ३०२; -मे पम्पेकी बालककी
 म्दुल १०१; -मे क्कम्पे कम्पेकाम्भे क्क रीम,
 ४१; -मे मरठीको कम्पेका क्क म्दो म्दिकार
 उराम्भे, ३९८; मे कम्पे कोरेकाम्भे कोरेपर क्क-
 कम्पे ३२१ -मे क्कम्पेका कम्पेकोपर कम्पेकाम्भे
 प्रतिनेके म्दमकोपर कम्पेका ४२९
 मरठके रज्ज् विराम, केकि म्दोकी बराम्भे

मरठी कता मेमाल, ४४५ पा दि
 मरठील कुपक उर २६३
 मरठील राल्म कम्पे, २६३ पा दि ३२० पा
 दि ३३५, ४६१ पा दि ४००, ५ ८,
 ५१०-१२, ५४५ -की कोरेके क्क उरिदि
 कर, १८; -के म्दम दूधमाम्भे म्दमको क्क
 गांधीको उराम्भे ५३८
 मरठील उराम्भे उर (मिनेक उराम्भे क्कम्पे) ४९६,
 ५ ८
 मरठी १८
 मरठकी ए म्दमको मेराम्भे, ३ ९ ३११ ३४०
 ३०२, ३९५, ४२१ ४५ ४५२, ४६३-४४
 ४०२-०३ ४९३, ५ ६, ५४५ पा दि; -की
 मरठम क्क करके दूधमाम्भे उरकता केपर को
 ३०२, -की उरिदि उरिदि कम्पेकाम्भे क्क क्क
 म्दम, ४५१; -की उराम्भे मिनेकाम्भे म्दमको
 म्दो क्क करकेके कि वेर उरकरी टौर क्क
 कोरेके करता कम्पेक ४६५; -की उराम्भेको
 उरकताके कि दूध म्दमता ४५१; -की कम्पेकाम्भे
 कम्पेक, ४२१; -की कम्पेकी कम्पे क्क विराम, ३
 ३०३; -की दूधमाम्भे-उरको क्कता केराम्भे क्क
 क्कता पर कम्पेकाम्भे क्कम्पे ३३० -की उराम्भे-
 के करके क्कम्पे क्कम्पे क्कम्पे ३६९; -की
 उरकोका म्दम पूम्पेकाम्भे क्क ४६३; -मे केरकी
 विरामको म्दो ३८८; -मे विरामको उर
 म्दम २८१
 म्दमाम्भे, -कोरे क्कम्पेको उर कम्पेकी क्क देरकी
 उर १०५ -पर विराम म्दमो क्कम्पे क्कम्पे,
 १०५
 मेराम्भे, ३११

म

मंज राल्म ८०
 म्दम ए ५२९
 म्दम म्दम, ९४
 म्दम, ४१ देर क्कम्पे २८८, ३०८ ४५ ४६३
 म्दम, १ ३, २१३
 म्दमाम्भे -की कम्पेकाम्भे, ३२३, ४९० -की कम्पेकाम्भे
 क्कम्पेको म्दमकोकि वर कम्पेक, ५३१; -के कि
 कम्पेकाम्भे क्कम्पेको म्दमकोपर गांधीजी, ३२३-२४

३३०-३८ ३५४ ३०२-०३ ४ २, ४१०-३१
४४४ ४८८-८९ ४९० ५१०-३१; -के विद्य कबने-
वाकी मरिहामरिह ककलेर पंथीकी, ४०३; क
विद्य कबनेवाकी मरिहामरिह मारठीमिठी वुण कुस
धीकनेको, ३२५; -क विद्य ककनवाकी मिनी
पलिपवाकी विदिकी वामरिह विद्य ककल ४ २

मरिना हेमल रेकल ८

कन-कामे, २१०-२१

पदक सुकिस कौण, ५

मरिणी -देकक विद्य केकन, ४३ -मरिहामरिह; -की सम, ४३

४३ -क ककन सारे मेठा केकने विदिकककन, १८३

मरिह, ककल विदिक मारठीम समकनर ककाने मने

मारठीमरिह पनिरिह ककन ककल, २४४ -ककल

ककल मारठीम समकनर विना मने मरिहामरिह

मरिहामरिह मरिह विदिक, २४४

मनुसुवति २४२

मरिहामरिह, मरिहामरिह, मरिहामरिह २८३

मरिहाम, मरिहामरिह मरिहामरिह, २०५-०६

मरिहाम, ५३

मरिहामरिह मरिहाम, मरिहामरिह मरिहामरिह ३२२

मरिहामरिह मरिहाम ४२

मरिहाम, मरिहाम, मरिहाम (कु०) मरिहाम

मरिहाम ककन, ५०२-०३, ५३२,

मरिहाम, ५३२ ५३२, ५३२, ५३२ पाठ वि ३

-मरिहाम मरिहामरिह मरिहामरिह सुकककल ४४५

-क मरिहामरिह मरिहामरिह ककन, ४४५ -के मरिहाम

ककन, ५२२ ३ ; -के मरिहाम मरिहामरिह मरिहामरिह

मरिहामरिह, ४४५ -की मरिहामरिह ककल समकन

मरिहामरिह मरिहामरिह विद्य ककन, ५३५; से मरिहामरिह

मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह, ४२०; -ककल विदिकककन

मरिहामरिह विद्य ककन-मरिहामरिह मरिहामरिह, ५२२

मरिहामरिह मरिहामरिह ९४

मरिहाम, ३८८

मरिहाम, ककल मरिहामरिह मरिहामरिह ३८५

मरिहाम, मरिहाम ४०४ पाठ वि

मरिहाम, मरिहामरिह, २८२ ३०५, ३१२

मरिहामरिह, ३२३

मरिहामरिह मरिहाम, १०५; -के मरिहामरिह मरिहामरिह

मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

मरिहाम, ३०५

९-४८

मरिहामरिह मरिहामरिह ३ ४ ३१० पा वि

३१८ ३२१ ३०० ३०५ ४ ४ ४०० ४४३

४५ ४५४ ४०२ ४०४, ४९५, ५२४; -मरिहामरिह

मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह, ३८८; -मरिहामरिह

मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

३४ ; -मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह, ३१२,

-मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह ३९५,

-मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

मरिहाम, ४ ४; -ककल ककनर मरिहामरिह मरिहामरिह

ककल मरिहामरिह ३१३; -की मरिहामरिह ककल मने मने

मरिहाम मरिहामरिह ४ ४५५ -ककल मरिहामरिह मरिहामरिह

मरिहाम ८ ; -से मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

३०२, -से मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

३३०; -से मरिहामरिह ३१४, ३२२

मरिहामरिह (कुमारी) ४ ३

मरिहामरिह, ककल मरिहाम, ४ ३

मरिहाम, मरिहाम ४००

मरिहामरिह मरिहामरिह, ४४-४५, २८ ३२, ४५ पा वि ३

२९३; -मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह ४४५ -ककल

मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

-ककल मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह, १५, -की मरिहामरिह

मरिहामरिह विद्य मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह, ३३५ -की

मरिहामरिह मरिहामरिह, १५, ४ ५५-५६; -ककल मरिहाम

मरिहामरिह विद्य मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

-ककल मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

४ ५५-६३; -ककल मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

मरिहामरिह मरिहामरिह १५

मरिहाम, मरिहामरिह, मरिहामरिह, १३३

मरिहाम, मरिहाम १४ ; -ककल मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

मरिहाम, ४५

मरिहाम, मरिहाम २८२

मरिहामरिह मरिहामरिह, मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

मरिहामरिह, १४८

मरिहामरिह, मरिहामरिह ३ ५२, २९ ; -की मरिहामरिह मरिहामरिह

ककल मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह, २९८; -की मरिहामरिह

मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह, २४; -के

मरिहामरिह मरिहामरिह, २९२; -ककल मरिहामरिह मरिहामरिह

१८८५ के ककल ३ की मरिहामरिह मरिहामरिह मरिहामरिह

मरिहामरिह मरिहामरिह विद्य, २९२

मरिहामरिह, ३८२

सुविच, बाम बी० ५२९

सुवचन, —कान्ठिक निवृत्त न देवाचार्य, ३ —कवी हंसर
 ८३; —दत्तक बाबिजा और एक कथकारसस, ४
 —समाजक सुभाष ४०५ —कालिका ४२ —सूर्यदेवीका
 ४२; —दाधीवी तथा कथ कोठोका २१४; —दाधीवी
 पर गये कान्ठके कलकौठ २ ५; —दादा कपटीका
 २०५, —दादासाहेबका, २८९; —दीनी कृष्णा २०२;
 दाम्नी दासक और कथ कोठोका २५२; —दाम्नी
 दासक, २८८; दाम्नी दामोदका बी विविधपदी
 पत्रकमें केव २ ३; —दासक-सम्बन्धी और दूखोका
 २१४-१६, —दू कौलका ५३; —दादका ४२;
 —दीपदित्तके एक भारतीयस पुराने कान्ठके कलकौठ
 २३; —दिग्दर्शकके भारतीयस २८९के कथ विविधक
 कलकौठ, ४९९; —देवरस कीनी कलकौठ, ४९०
 —दारदरिका, २४८; —दाता रामजीका २१; —दत्त-
 काल बीरका ३ ९; —दुर्गादेवीका तथा हरिजाका
 कासिक २५; टीसरीका कोठोका पत्रकमें, ३२ ३३;
 —कथके बी लालके, २४६; —कलकीका, ४९९;
 —केलका, २६४

सुविच स्या २३

सुधु, २ ०
 सुधु, बीता ३२५ पा० दि
 सुवकी, बाम कपटी, ३
 सुवके बी कंठा ३
 सुवकी मनुमलिनर, देविर कलकी मनुमलिनर, ४
 सुवकर बी ३५८ ५४२; —दाधीवीकी कलकौठ कथ बी
 बामके कथक कथामरमे लंकन, २५; —दादा दाधीवी-
 की मेने गये कथा बंध ३५८ १९; —की केसमें
 दाधीवीके विविधक विर सुव बामके प्रथका ३५८;
 —की केसमें देविरके कथक काण्ड न देवकी
 सिद्धका ३५९; —के दाधीवीक कथामरमे बामके
 कथक कथामरमें, ५५

सुवकर, बाव, ३ ५, ८ १२ ३५, ४८ ६८ ७९, ९४
 ९८ ११३ १२४ १३३ १३६, १८०, २१५, २१८
 २२८ २५० २०० २८२, २८९, २९० ३५
 ३५५, ३५०, ३८६, ४१६, ४४४ ४९४; —दक्षिण
 बाबिनी भारतीयके विविधक केव २९०; —देवक
 भारतीय बामके कथक २९; —दीपक, २८९;
 दीपकके कथक विरा २९८; —दा कलकौठक
 प्रविष्टकी बाबुकी प्रथकके कथके कथक कोठक,

३५५, —दा दुम्पलाकके लवर विद्या मस कथ-
 कथिकेको दुम्पलाक केकथ मस देव केकथक
 कथक ७२; —की कोठोके दाधीवीके लक, २१५
 —की दुम्पलाकका मस एक इतिहास दुम्पलाक न
 कोठोके सार्वकिक केकथ ३५५, —की देवकेकथ
 दाधीवी, २९ २८१-८२; —की कलकौठकी सुवकर
 कथकेके भारतीय दक्षिण बाबिकामें कथक २९
 —की केवकेको परिपाम और मूलकी इतिहास को भी
 वा कथकेमें कथके २९ —दादा कौमदी कौमदी
 केव २९; —दे कोठकके केसमें सुवकर कथकेके
 और कलकौठकी सुवकरक २३५

सुवकर, बीता २८०
 सुवकर, कवी —दिग्दर्शककी कथके विरा ६९
 सुवकर, कथक ३४
 सुवकर, कथीम (माक) २४९-५
 सुवकर, कथी, ३६०, ४४२; —से विविधकी कथी कथी
 काण्ड केकथके कथक, ३८३
 सुवकर, कथेन बाम, ४५२
 सुवक ३८८
 सुवके प व ३२५ पा० दि०
 सुवकी, बीरकी १४; —को १४ विन्की कथी केसकी
 केव २ ४
 सुक मिलाकी लंकन लं —का विविधक, ३१४
 सुका, ५ —का टीके कथके कोठका कथक, २३
 सुकाकी, बाम, २५
 सुकाकी बाम ३९ पा दि २८५
 सुका —का दाधीवीको १ बाम सुकाक वा ३ मलाकी
 कथी केसकी केव देवकी सिद्धक २०५; —का
 कथककी कोठके केव २ ३
 सुका, कथेन बाम ४ ९४ १२४ २४४ २९४
 ४९५ ५९; —कथी कथ केसमें, ५ ७; —का
 केव केवके कथकेमें कथ १५; —की विविधक
 कथ, ४९३

सुवक, कथके कथ, २३
 सुवक पत्रकापत्र (मार्ग कथककथ) २१३
 सुवके, बाम केविक, २०९ ८४ २८९, ३०५, ३१३
 ३४ ३८८; —का कथ कथक कथ कथकेका, ३ ३;
 —की कथकेकी केविकके प्रति कथामुकी, २००
 —का दाधीवीको सुवकरके मसकेमें सुती कथका
 केविक कथ २००; —से कथकेमें दाधीवीकी केव, २००

रामदे (बीमारी) ४२८
 पेंसिव, बॉम्बे, १८ ; -द्वारा मराठीलोक संशोधन संस्थान
 स्थापित इतिहासी स्थितिमें सुधार इतिहास साहित्यस्य
 २९१; -से उद्योग क्षेत्री मार्वना २९१
 पेंसिव, राम, ८२ पा दि ३ ; -का विवेक, १३५
 एम २ ७, ४९९ ५ ८; पत्र महान् मराठी ४९८;
 -द्वारा देश-सेवाके लिये १२ वर्षके कलासमय जमीना
 ४९९

एम्मी माया -की विज्ञापनी, ११
 एमा ९
 रामायण, १ २४१ ५ ८
 एमी १४१ १९९ २ २, २ ५, २ ९
 रामायण, १२ २४१, ४१८; -पंजीनीके मध्ये पार्षिक
 बोली उचिते यैतयोक्ते अर्थे, २१३
 रामायण, बोलेक, ३७२, ३८९
 एम, ५ ८

राष्ट्रीय मराठी संघ २८३ पा दि ३ १
 रिच कन्वन्सन्स ९ पा दि २८ पा दि ८१
 पा दि २४ २८३ ३११, ३३ ३३०
 ३५४, ३४ ४३० ४५ ४२५, ४०९-७३, ४८१
 ४९० ५०४, ५ ८ ५१४ ५१४ पा दि ५१८
 १९ ५२९ ५४५ पा दि ३ ; -मराठीत कवी कवुली
 ३२६; -की सिटिक पंजीनी, ९; -को इन्वैटमें देता
 मेला कवु कवुली १९१; -को बीनी संघ द्वारा ५
 रीतिरिच एम मी, ४८; -की उद्योगसूचिका पत्र विज्ञापनी
 पंजीनीकी मराठीलोक संघ ३३८; -की १ रीठ
 येनेका नियम १५; -द्वारा कर्मिण-पंजीनी विज्ञ-
 मन्त्रके कामेदी दण्डा ३ २; -द्वारा कर्मिण पंजीनी
 मन्त्रका कवु, ११६; -से पंजीनी व इानी इतीली
 सुमन्त्र २८

रिच (बीमारी) ३२३ ३३८ ५ ८; -का शीला नालेयन,
 २८५; -का कवुला नालेयन ४८१, ४९३; -का
 विज्ञे नालेयन, ४९७; -की बीमारीत पंजीनी
 ३३०-३८; -की दण्ड सुमन्त्र, ४१३
 रिच एम कवुली, -की कर्मिण पत्र विज्ञापनी कवीर
 कवीकी पंजीनीका सुमन्त्र ३४ ; -से कवीर कवीकी
 सुमन्त्र ३ ५

रिचू क्रीड रिचू ३०५ पा दि ३११
 सत्यमी वरुणी ३ ८ १२, १४, २८ १५, ४८ ७९
 पा दि ७७ ९४ ९८ १२४ १२९ १४३,

२१५ २१८, २२८ २००, ३५ ४१० ४१८,
 ४५१ ४४४; -कमी केकरी, २८५; -का डेरिरीकी
 नालेयन केकरी ८०; -की एम मराठी केकरी ७४
 ३५३; -द्वारा पंजीनीकी केकरी सुकक येति १११
 -द्वारा कवुली कवीर कवीकी विज्ञापनी क्वि रीकी
 रीठ कवी, २९७- -पर पंजीनी ३५४

कवुली, ४९४
 रीवाकवर कवीरिण रीठ कवुली, २१३
 रीवाकवर कवुली रीठ कवुली, ३२३
 रीठ केकी मीक, ५० पा दि १४४ १५८ पा दि
 १५९, ५४१ पा दि ३; -से उद्योगसूचिका पंजीनी
 द्वारा कवुलीका १५९; -से उद्योग पंजीनी द्वारा
 मराठीलोक मन्त्रका कवुली मन्त्र १४५; -से
 मठिनिचिरी गांधीके मी १४९
 रीठ पंजीनीवर, -की रिच पा कवुली कवुलीका
 मन्त्र, ४५४

रेडिक्ल, -से कवुलीका कवीरिण इतिहास इत्यन कवुली
 कवी, १९१; -से इत्यन कवुली कवुली कवुलीका
 कवुली १९९; -से मराठीलोक वीठ १९१
 रीठन केकरी, ४९०

स

कवुली, १९ ४९९
 कवुली ४९
 कवुली सुकक कवी, ५१३
 कवुली कवुली संघ, २०३
 कवुली मीक २३४
 कवुलीका कवुली -का सुकक ४९९; -के सुकक
 पंजीनी ४९९; -के मीक सुक कवुली, केकी
 सुककके मीक कवुली ४९९; -की कवीकी इति
 निरिणी कवुलीका द्वारा कवुली ४९९
 कवुली, एम कवुली ३२१
 कवुली, (बीमारी), ३२४; -द्वारा मराठीत कवुलीके
 कवुली का कवुली, ३२५
 कवुली मया, ४५४ ५३१ ५३३; -द्वारा मीक कवुलीके
 कवुली, ५३१; -से कवुली कवुलीका एम मीक
 कवुली ३३८
 कवुली कवुली की कवुली, -की एम कवुली
 कवुलीका कवुलीके इतिहासके विज्ञापनी कवुली
 कवुली, २८३; -की इत्या ३

कमलका बुजराई

कामाई, कामाई १८ १२४

कामल पत्र ५२९

किशोरदास, १९ ४० २२३ -की कर्मसे वर्षावर्षावे
मुकामदा १२२, २३८ -से वर्षावर्षावी वेकमे काने

साल मू बाहरतकी सिद्धमल २३८

किशोर, -हारा संविधानकी रीखा करते हुए मारतीगोडी
विधितर आनुमूखिपूर्वक विचार करलेका अग्र १९३

किशोर एकाईम देविर बीमदा एकाईम

बीमदा एकाईम कामाई, -विराज, ६, १४

की-बीम, सर विजियम २८३, ३ ४५ ३१३।-से
विद्यमानकी मुकामदा २८१

कई, (बीमती) २०

केन्द्रीय, ४२९ पा० दि

केय, ३३१

केवी, सर वेदिक ३०१ ५४५ पा० दि ५५
पा दि

कवित, (बीमती), २८५

केन्द्रीयम बीरे ३२३।-के फल बाहर-मुकाम काम
हकर बीरेकी सर कार्यालय जी ५१५

क

पानी -बीररंगारविष्णुवन्ध, २१० -कानिओ बीर
पवित्रकोका कामा दलकाकी विविध सुकदा
संविधान वेकामाका मल ०८।-क कमलकाय मरिचिक
की कलाकर विविध काविधाकी काम १२।-के
कानि मारपील बीरे २९६।-की वर्षावर्षावा उपग्रहके
हविषरकी कसोमे कमेका उत्तर, २४३।-स
केमे विविध मारपील काम, १२४

पद्म भागवत -म हुकममुक्ता मारकाकी उत्तर ४८५
काम, बी १

कानि, क के ०।-का पौरुषिक मुकाममे काम, ३३
-का बलाय विविधाकीकी हविषे साकाकी विवि
का योग, ४०१-४२, ४१३।-की कामे पवित्रक
बीरे विविध कर बलाय मवेद क्रोमिषा हविष
४ ३ ४२९।-की हीकर का मार हरा की
कापीका ३९८९९ ४ ३।-क कामका विरा, ४१८
४१९, ४२३।-क बलायका साकर हरा
काम, क विरा काम दुनीयकी का ४२३।-की
विविध हरा मार, ३९८, ३९८, ३ ५ ८ ३।

-हारा कमलकाय मरिचिक बीरम मारपीलकी

कानि कृप मार, ३९९

कामक पत्र २६२

कालेबा -के (बीमती) मुकामकाय वेकाम २९

कानिबन्ध, कसम

कानि ४५

कानि का बी० ५२९

कानि बी० सी ५२९

कामागार, कामागार, -का देवनिबन्धकी एका ९६

कामागार काकामा, ३९ ४६।-म मुकाम ४।

केक मंगलमारी मी वेकमे

कानि, ३४४

कानि, सर विजियम कानि, -बीर बी काकामाका

उपनिषा कलाय विद्यमानकी (बी०)मे विविध कविक

२८३।-की मलकाय बीमदा हारा हारा ३ १।

-की हलाय कामाईमे कानि, ३ १।-की हलाय

वर्षावी ३ ०-३।-की हलाय विद्यमानका कामकी

काम, ३ १।-म लामाई हकारामका मार, ३०६

कामागार ३०८, ३०५, ४२९

कानि, २८० ३ ८

कानि, (बीमती), ३ ८

कानि विद्या बुककी, ३३६

कामागार उपनिषा (ईवीउपनिषा) १०६

कानि, १९

कानि, २८४ ४२०

कानि, १९

कानि ३२३

कानि, २६९

कानि (कुमती) कानि २८१ ३१२, ४२८

४२८ पा० दि ४२३ ४०० ५२९ ५२९।

-कामागारकी विविध मार १८, २८४।-का कामागार

कामागार विर बीमकाय कामागार २८४।-के

कामे मारपील काम, २८४

कानिबीबा, कामागार, १५३ -की कामा, १०० पा दि

कानि ८

कानिबीबा, ४९ ५ ८।-कामागार मुकामी मार

कामागार, ४९८।-के विर विमुको हरा काममे

मार, ४९८।-म वर्षावी, ४९८

कानिबीबा -कामागार विविध बीमकाय कामागार विविध,

२९२।-मारपीलकी कानिबीबा कामागार हरा

पाठ ३९४; -के अनुसार इत्येक परिचयार्थी विनाश्री
रिजल केना नालक, २९९; -पर सवायके इत्येक, ३५
-से एकल मध्य २९४; -द्विजल मरिचकी संव
भिक्षक ३२४ पा दि ३९३, ३०८ पा दि
३९५ मेवक परवला भिक्षक, ३४ पा दि मवाही
भिक्षक, २९२, ३

भिक्षक ही -की कवाकतमे रावजी बायोकेडा मुद्रयमा
पठ १ ३

भिक्षी, १९९ २ ०

भिक्षि ३०० -मे तीव करवलीकी कवा करमेसे कवाक, ३४२
वीरु, २२२

वीरिचन ३९

वीरु सव्य संज्ञा २४२

वेदनिर्मि २, २२४; -मे ई का एकेक माकवी
मीकमी ३, ४२; -मे मरुतीका द्वारा विद्यमानकवा
लाक २३९

वेदिकार, ३३३, ४४२

वेद, ५ ७ १४ २ ०८ २२२ पा० दि
१२४ ३२२ पा० दि ३९८ पा दि ४०४;
-कवाकत वीमार, ४२८; -कवा (कुमारी) केकवी
ही माकवी द्वारा देवमाक ४२२; -मंत्रर किरोविना-
से वीरिच ४२२; -की कवाकत गांधी कवा
मरिचक गांधी द्वारा कवे मेमेसे एकर-मैमाक ४२२;
-की वीमारमे कवा करकेके इत्येक गांधीकीकी मरिचक
पर र्ण ४२०; -की गांधीकीकी (मीमती) गांधीकी
वीमारके प्रतिदिन कुवेले निदकालेकी दिवस २ ८
केक, (मीमती) ५ ७ २ ३ २ ३; -की वीमार,
२२४

वेद (कुमारी) ४३; -द्वारकालेसे वीरिच ४२२

वेद, एर देवक ४०२, ५५५ पा० दि ५५ पा दि
बीरुस कवर बीमार ३२३

व्यापारिक परवले ०८, ८; -केला कव करके मारुती
कवासी पुनारके साकमेसे वरिच ४ २

व्यापारी कवा २५८ पा० दि

व्यापारिक, मरुतीका ४२९

व्याप, ० २२ २३ २५ ४४ २२५, २३५, २४२,
४२४; -कवा देविच कवेकवी वीरकक केके
दिवस, २२९

व्याप (मीमती) २४२

व्याप, ही वी २५२ पा दि

व्याप कवक, २३९

व्याप, ही वी २५२

व्यापके -मे देवकीकादिरोकी कवी ३९८

श

शंकरान्त, लाम्ही, २२ पा दि २०५ पा दि
२ ३, २ ९ २२४ २४२ ३०७; -की मीम वीर

दवासे मेमेकेके किं गांधीकी द्वारा कवाक, २०६
कवा -की कवा कवे विदक, १ १

शर्मा वीरिच माकुरमा २४२; -द्वारा भिक्षि कवमिचकी
मुमिचक गांधीकीका कवा ममत २०५

शर्माकुरि, ४३ २४९

शर्माकुरी संव, २८५ पा दि

शरिच वीर पंच केकक समिति ४२२

शरिच एका कवाकके कवुमिचिप, २३ ८९

शरुकी वीरकवी ८ २३, ४२ ४५, ९४ १ ३,
१२३-२४ २३३, २२८, २२८ ३३२, ४२३, ४२४,
४२४ ४२९ ५२; -कवा माकवी कवा मीमेकी

वेव, ३२; -केक मीमेकेके किं कवाककवी, ४४
-द्वारा कवाककवी कवाकतमे कुममिचिच कवे २४;

-निर्वाचित ४९३; -वीकी कव केके, ५; क
वीरकी वीमे विराल २४ ९३; -का कवाकी
मरिचकक वरिचिचक कवाकत कुमकवी मीमेके

२४; -का केककवा वीरकेके किं मरुतीका, २४;
-की कुमकवा कवाकेके मरिचि २४; -पर गांधीकी

२२२; -से कवाककवा कृता वीर कुक २९

शर, का वी ३२ पा० दि

शर, कवमक, २४२

शर, कवाकक, २४३; -का वीमसे कवा निचकक,
४२३; -की वीरककक कवाकेके म कवेकेके कवर
कवा माकवी केकवी कवा २४२

शर, कवी, २३५

शर, कुमक, ३९

शिक्षित मरुतीका २५२, ३३९; -कवाकी कवुमिचिच
केक वीमे कवेमे कवे ५२४; -परिचयार्थी कवाकेके
कवाकत केक कुक कव विद्या ७७; -कवर कवुमिचिच

द्वारा की वी मवाकी वरिचकक वरिचिचकवी कवा
से विचिच मरुती, २०३; -कवेकेके कवाककके केकेकेके
कवुमिचिच कुमककके कवाकी कवाकेके कवाकत मवाकी

की २२८; -विचिच मरुतीका कवे २४-२५

नहीं १९; -के ज्ञानदा वाक्यम् उक्तार्थे इत्या
 वाक्यम् १८४; -के शब्दोंकी ध्वनी ध्वनीमें ज्ञानमूर्ति
 उत्पन्न करवावानी २०८; -के प्रयोगमें मेराभी
 भारतीयोंका ग्रंथीकीनी क्रियित्वा प्रभा वय करे-
 की उक्त ८४ -के कश्चो पूर्वोत्पत्तयम् इत्या
 क्त उत्तरमें नहीं ३३३; -के उत्तममें उत्तरकी कुम्भ-
 वाले योगों द्वारा मग मना सुविष्णु १ १; -के
 उत्तममें पुण्यकी वाक्यम्में ग्रंथीकीदा मत् वाक्य
 इत् १८२; -के सिद्धांतके अनुसार विद्यमानका
 उत्तमत् इत् उक्तार्थ २५० -के उत्तम विष्णु,
 २३५; -की टीकाके विष्णु कर्त्तव्य उत्पन्न द्वारा वी वा
 रिक्तता कर्त्तव्य ५३३; -की इतिहास इत्यदी उक्तता
 कर्त्तव्य, २४; -पर ग्रंथीकी ८५, ३८२, ४३९;
 -पर वात् इतिहास विविध भारतीय उक्तकी कर्त्त-
 व्यमिति कर्त्तव्य १०४; -में वमी केवमें उचित
 उत्पन्न इतिहास इत्या, १३३; -में कर्त्तव्ये इत्या
 उक्त कर्त्तव्य केवमें, १९; -की धृष्ट वाक्त्तव्ये
 हिम्मत मत् पत्, ८८; -में उक्तता इतिहास वाक्त्त
 मात्रता इत्या कर्त्त ४०३; -में भारतीय उक्तकी
 मिश्रताके वाक्त्त २५५ -से विष्णु पत्ता ग्रंथीकी
 मत्में उक्तार्थ १९; -से उक्त, १२२

उक्तार्थ इत्या, में हीं मेरता इत्या कर्त्त ४५
 उक्तार्थी, -कलेदी वाक्त्तका उक्तार्थ उक्तता
 मत् इत्येके विष्णु ९; -कलेमें कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये २३३;
 -उक्त विष्णु ८५, -का रीता फलेक नहीं २२३;
 -की कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये इत्या इत्या २२५;
 -की वाक्त्त फलेक उक्त विष्णु उक्त कर्त्तव्ये विष्णु
 मी कर्त्तव्ये, २२३; -के उक्त २२७, २३३; -के
 विष्णु कर्त्तव्ये मत् कर्त्तव्ये वाक्त्त २२३; -के विष्णु
 उक्तार्थ उक्त इत्या वाक्त्त, २२५; -के उक्तार्थ
 विष्णु इतिहास मी कर्त्तव्य इत्या २ ९; -की
 ग्रंथीकी कर्त्त, ८९; -की उक्त इतिहास कर्त्तव्य,
 ३३९; में कर्त्तव्य कर्त्तव्य कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 विष्णु कर्त्तव्य इतिहास वाक्त्त, २२३; -उक्तार्थी,
 कर्त्तव्ये इत्या भारतीयोंकी ग्रंथीका उक्तार्थ, ९८ १९;
 का उक्तार्थ कर्त्तव्य कर्त्तव्य उक्त कर्त्तव्ये, ४०२;
 -का विष्णु कर्त्तव्य उक्त, २५९; -का विष्णु कर्त्तव्य
 २५०; -की उक्त भारतीय उक्त इत्या उक्तता, ५१ ;
 -की उक्तार्थी इत्या कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये, २३३

-की मीमें कर्त्तव्य कर्त्तव्ये विष्णु कर्त्तव्ये-कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये इतिहास मत् २५ ; -की कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये नहीं २३२; -की उक्तार्थी
 इतिहास कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये नहीं, २३३; -के
 उक्तार्थ कर्त्तव्ये इतिहासमें -२४१ क कर्त्तव्ये
 ग्रंथीकी, २३३; -के केवमें उक्तार्थ मी उक्तार्थ
 उक्तता उक्त इतिहास कर्त्तव्ये १९३; -की कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये इत्या १९२; -की ग्रंथीकी मत्में,
 इतिहास कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये मी कर्त्तव्ये
 वाक्त्तका नहीं, २३ ; -की केव कर्त्तव्ये उक्तार्थ
 उक्तार्थी वाक्त्तका २३ -में से कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये केवमें ग्रंथीकी ही उक्तता २३४

उक्तार्थ, इतिहास ग्रंथी (कर्त्तव्ये) उक्तार्थ
 उक्तार्थी: -कलेदी कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये, ४२; -कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये ही कर्त्तव्ये उक्तार्थ ४ ३; -कलेदी कर्त्तव्ये
 इत्या पूर्वी उक्तार्थ कर्त्तव्ये उक्तार्थ ४८१; -की कर्त्तव्ये
 ग्रंथीकी उक्तार्थ कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये ३५२; -इतिहास कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये, २९३;
 -इतिहास कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये नहीं ३३;
 -उक्तार्थी -का कर्त्तव्ये मत् विष्णु कर्त्तव्ये इत्या
 पूर्वी कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये इत्या कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये १२८; -की कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये, ३०५
 -की ग्रंथीकी मत्में कर्त्तव्ये उक्तार्थ ३०८; -की
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये ३५ ३५३, ३३३; -की कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये ४८९;
 -की कर्त्तव्ये इतिहास कर्त्तव्ये, ३९; -की कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये ३ ; -की कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये इत्या मत्, २९३; -के कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये इतिहास कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 १८; -के कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये इत्या कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये १९; -के कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 नहीं ४१८; -के कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये ४ ८;
 -के कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 वाक्त्तका नहीं, ८०; -पर ग्रंथीकी, १२८

उक्तार्थ, -उक्तार्थ कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये १८५; -का कर्त्तव्ये इतिहास कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये
 उक्तार्थ इतिहास कर्त्तव्ये, १८९ -मी कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये, २९४; के कर्त्तव्ये
 कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये २९४; -के कर्त्तव्ये कर्त्तव्ये

ह

पर कुम्हार्यी, ५२०१ -इसरा मौखिक कम्पे एडिवात्र
 कानून एर कालेका कला १२८) -इसरा रैव
 पाशोनिपर का सिवा प्रा माल ४५४) -इसरा कौर्ष
 हू क कालकी प्रतीका ४८४) -इसरा विद्यमानकाले
 एरलोको निरुपार कया एक कौी पूरु २६३)
 -इसरा कम्पौकेकी एय और विहित कृती मंग
 २९३; -इसरा कम्पौकेकी दोहरे मंग परिल्लनकम्प
 माउलीकोका कालेकिक एयामि एकीकल मंगलम
 कालमा २९३; -इसरा कालेकिक एयामि मरुतीको
 इसरा की एव मौपको कालेकिकको एका १०१ -इसरा
 एकीकल को वरुते ५२४) -इसरा कालेकिक एकीकल
 करा कालेक एडिवात्र कानून काल कालेका कला
 २९२; -इसरा की एव एका माउलीके एकाकाली
 होनेक काल कालेकिक, ११९; -इसरा की एव मरुती
 एडिवात्र कालेकिक एकीकल कालेकिक एडिवात्र
 निरुपार मरुती १०३; -एर कालेकिक एकीकल
 मंगलक कालेकिक एकीकल कालेकिक कालेकिक
 ३४९; -एर कालेकिक एकीकल कालेकिक कालेकिक
 निरुपार कालेकिक एकीकल कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक, ५४; -एर कालेकिक एकीकल
 की एव कालेकिक, ४८; -एर कालेकिक; -एर कालेकिक
 मरुतीक कालेकिक एकीकल कालेकिक कालेकिक, २१ ;
 -एर कालेकिक एकीकल कालेकिक कालेकिक कालेकिक, २८४
 -एर कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक, ४८, ४५४; -एर
 कालेकिक का कालेकिक कालेकिक ४ ३

स्विय (कुम्हार्यी) ३१६, ३२२, ४३ पा वि
 कालेकिक एकीकल -कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 एर का कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक ३३१; -इसरा कालेकिक कालेकिक कालेकिक एर
 कालेकिक कालेकिक, १०२; -इसरा कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 २९३; -इसरा कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक २९४;
 -इसरा कालेकिक कालेकिक इसरा कालेकिक कालेकिकको
 कालेकिक कालेकिक एर कालेकिक कालेकिक, ९ ; -क
 कालेकिकको कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक, १९; -क कालेकिक कालेकिकको कालेकिक, २४
 कालेकिक कालेकिक मंगलम १२३ १२४

इव, इरुपार, -की कालेकिक इसरा कालेकिक ११९
 इरु, कौ ८३
 इरु एर कालेकिक कालेकिक -क कालेकिक कालेकिक प्रा
 कुम्हार्यी कालेकिक कालेकिक कालेकिक, ३२०
 इरु, कालेकिक ५२९
 इरुपार, २२८-२९
 इरुपार, मंगल, -को कालेकिक कालेकिक २६४
 इरुपार कालेकिक ० ४३ २४९ २५४ २५९, २६३
 २६९ पा वि २६९ २७९ पा वि २८४
 ३ ९, ३ ८ ३१५ ३६, ३२९-२३ ३२० ३२०,
 ३४ ३५२, ३५६, ३६०-६८, ३७५, ३७६, ३८
 ३८९ ४०५, ४ ९, ४१६, ४२ ४२३ ४२६
 ४३९, ४५५ ४६ ४६४ ६०६, ४८८ ४९४
 ४९६, ५१६ पा वि ५१८ ५२९, ५३६, ५३८
 ५४३ ५४५ पा वि ; -कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक २८ ; -कालेकिक कालेकिक एर कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक, २८४; -कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक, ५३२; -कालेकिक कालेकिक इसरा कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक ४९३; -कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक २८५; -की कालेकिक कालेकिक कालेकिक, २६९;
 -की कालेकिक कालेकिक कालेकिक, ३१३; -की कालेकिक
 कालेकिक इसरा कालेकिक कालेकिक कालेकिक, १०८;
 -क कालेकिक कालेकिक, ४९; -इसरा कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक २५३; -इसरा कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक, ३८३; इसरा कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 ४९९; -इसरा कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 २८५; -इसरा कालेकिक कालेकिक कालेकिक, २५०; -एर
 कालेकिक, २०६ २८९

इसरा कालेकिक ४९१
 इरुपार कालेकिक कालेकिक, १०० ११२ १२४ २२९
 २८९, २५४ पा वि ; -की कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 १००; -की कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक, ११३; -की
 कालेकिक, ७; -की कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 ११३ ११३; -की कालेकिक कालेकिक कालेकिक कालेकिक
 कालेकिक, ११३

हर्मिद्विवा मरिचक, २५२ पा टि २८९; -क बहल्लेमे
 मरतीबोकी सभा २८०
 हरिद्वन्त, २३३ पा टि
 हकन्नामा, ३२५
 हर्षम बहमन २४९
 हर्षम मर्, इमाम् ८०
 हस्त, तुभेमान, -का प्क रिती लव, १४
 हाजत बोड काम्म, इकिर मिदिइ बोडसमा
 हाउसिन्, हिस्ता बापीये, ४२८ पा० टि
 होस्तुड हर पयसिन्, -को सिन्ने पवडा म्कन्तिरु गर्धीरी
 हाटा बीरै रॉयहिक्की मेकि ४५९-६ ; -ते गर्धी-
 बीकी कनीवपारिक मेकी प्रायन, ४३
 हाकिमी, बाठम २३९, ३३० ५२ -परिहासे वस्तु, ४५
 होक, १५८ पा टि
 हासै ८३ २६३
 हासैन्, विविम, ६ पा टि १३१ १०१ १८४
 १९०, ५२० ५५ ; -की बज्जलामे सिक्कत
 बुरेसिन् छिमिन्की मकिन्डुमी बोक्क परिपाम्मर
 भासि ५४१; -के सान व्यस कनरकडी बहलील
 ६९; को व ५६-६१ ६९; -हाटा मरतीबोका व
 कनरक लव्मडी मेलि ६९; -हाटा लक्कीमेडी
 वल बहम ६९
 हिन्दू, ३५ पा टि०

हिन्दुबो -बौर मुम्कम्मन्नेके विप मक्काल क्कड क्कामे
 विपिड, २१
 हिन्दू कर्मी -का इहल्य बाम्ना गर्धीबीका मलम हिन्दुबो-
 का ही मर्ती सारे मरतीबोका कर्मी, ९९
 हिन्दू-मुत्तिम र्ना -कक्करोका १३३
 हासकर्म २ १९, १११ २२४ २४५, ४००; -के
 देविबोको क्करी पव लक्कम्, २ ९; -के मरतीब
 मलमकी रिह्रिके वल केक बातेकी रैपय, २४८;
 -मे इल इमाम्म बलि लवा इल बाम्म कान्म-
 क्कपेर कुर्माना ४२; -मे सत्राम्मर् पेक्की गर्धी-
 बीते मुक्ककल १६४
 हुमे ३२२, ४३८; -मिक्कीका सौम्य मर्ती-वर्सन ल्कज
 बाकमे ल्कर्म ३२३
 हुमे, (कुमारी), ५२९
 हुमेन्, इमहिम ४ ९४
 हुमेन महम्मद, -का इल निहाकेकी सभा ९३
 हुयद, ३४
 हुक्केय ४३९; -म गर्धीबीका भाग, ४०४-०६; -मे
 भी इहिल बाम्मिन्नेके हुयद बायडकी विपलत क्कमे-
 क्कमे ४०८
 हुम्मेय विस, रैड बाम्मिन्नेम सौम्यर्, ४४२
 हुम्मेय सेयि २८ ३२३; -हुम्मी ल्कयके ल्कयके
 ल्कयामे भोज ३ ९